

श्री १०८ श्रीमन्महाराणा फतहसिंहजी बहादुर.

समर्पणम् ।

MOST RESPECTFULLY DEDICATED

TO THE

H. H. MAHARANA SAHAB BAHADUR

FATEH SINGHJI

G. C. S. I.

OODIPOOR.

BY

KHEMRAJ SHRIKRISHNDAS

SHRI VENKATESHWAR STEAM PRESS.

BOMBAY.

स्वस्ति श्रीयुत सर्वगुणसम्पन्न महाराजाधिराज हिन्दूपति रविकुलकमलदिवाकर श्री १०८ श्रीमहाराणा फतहसिंहजी बहादुर. जी. सी. एस. आइ. की सेवामें.

प्रभो !

श्रीमान् मेवाडके शासनकर्ता हैं और यह अपूर्व ग्रंथ श्रीमान्के पूर्वजोंकी कीर्तिका भंडार है श्रीमान् हमारे इष्टदेव श्रीरामचंद्र भगवानके वंशधर हैं हमारा धर्म है कि अलभ्यपदार्थ अपने महाराजको अर्पण कियाजाय, इसकारण इस अमूल्यरत्नका अधिकारी श्रीमान्को ही समझकर आदर और सन्मानके सहित इसको श्रीमान्के करकमलोंमें समर्पण करताहूं यदि असाधारण प्रजावात्सल्यसे यह अंगीकृत होगा तो मैं अपनेको कृतकृत्य और इसपरिश्रमको सफल समझूंगा.

श्रीमानका अनुग्रहभाजन-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम प्रेस-बंबई.



१. उदयसिंह	१५४१	८. अमरसिंह दूसरे	१७००	१५. भीमसिंह	१७७८
२. प्रतापसिंह	१५७२	९ संग्रामसिंह	१७१०	१६ जवानसिंह	१८२८
३. अमरसिंह	१५९७	१० जगतसिंह दूसरे	१७३४	१७ सरदारसिंह	१८३८
४. करणसिंह	१६२०	११. प्रतापसिंह दूसरे	१७५१	१८ स्वरूपसिंह	१८४२
५. जगतसिंह	१६२८	१२ राजसिंह दूसरे	१७५४	१९. शम्भुसिंह	१८६१
६ राजसिंह	१६५२	१३ अरिसिंह	१७६१	२० सज्जनसिंह	१८७४
७ जयसिंह	१६८०	१४ हमीरसिंह	१७७२	२१. महाराना सर फतहसिंह जी. सी. एस. आई.	१८८४

भूमिका।

भारतवर्षका इतिहास सर्वांग पूर्ण न पानेसे यूरोपमें बहुत कुछ निराशा हुई है, सबसे प्रथम जिस समय सर विलियम जौन्स साहब संस्कृत साहित्यकी महाखानकी खोजमें लगे थे उस समय बहुत सी आशाएँ कीगईं थीं कि इस साधनके द्वारा संसारके इतिहासकी बहुत कुछ प्राप्ति होगी, परन्तु वह आशाएँ आज तक भी पूर्ण न हुईं, किन्तु उत्साहके स्थानमें उदासीनता और विरसता होगई, इस बातको लोग स्वयं सिद्ध मानते हैं कि भारतवर्षका जातीय इतिहास नहीं है, और इस बातकी पुष्टिमें हम एक फरासीसी ओरियण्टलिष्टके कथनको यहाँ दिखाते हैं कि जिसने बडी बुद्धिमानीसे प्रश्न किया है कि हिन्दुओंके पुरातन इतिहासके निमित्त अब्बुलफ़ज़लने कहांसे सामग्री प्राप्त की थी। यथार्थमें मिष्टर विलसनने काश्मीरके राजतरंगिणी नामक इतिहासका अनुवाद करके इस विचारको बहुत कुछ कम कर दिया है, और जिससे यह बात स्पष्ट होती है कि ऐसा न था कि इतिहास लिखनेकी नियम बद्ध परिपाटी भारतवर्षमें न हो, और इस बातके सिद्ध करनेके लिये सन्तोषदायक प्रमाण मिलते हैं कि वर्त्तमान समयकी अपेक्षा किसी समय इतिहासकी पुस्तकें विशेष मिलती थीं यदि विशेष यत्न कियाजाय तो और भी ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त हो सकती है, यद्यपि कोलब्रुक, विलकिन्स, विलसन तथा हमारे देशके दूसरे विद्वानोंके परिश्रमने फ्रांस और जर्मनके बहुतसे विद्वानोंके उत्साहसे स्पर्द्धावाले होकर यूरोपवालोंपर भारतवर्षीय विद्याभंडारके कुछ गुप्त विषयोंको प्रगट कर दिया है, तो भी कोई दृढताके साथ नहीं कहसकता कि भारतवर्षीय ऐतिहासिक ज्ञानके द्वारेतक पहुँचनेके अतिरिक्त हम कुछ और विशेष करसके हैं, और इसी निमित्त इस विज्ञानके परिमाण वा गुणके विषयमें हम सिद्ध सम्मति देनेके निमित्त नहीं हैं इस भारतवर्षके भिन्न २ भागोंमें बडे २ पुस्तकालय, यवनोंके नष्ट करनेसे बच गये हैं, वे अबतक विद्यमान हैं, जिस प्रकार कि जैसलमेर और पट्टनके ग्रन्थ भंडार क्रूरदृष्टिवाले अलाउद्दीन खिलजीके अनुसन्धानसे भी

बचरहे जिसने इन दोनों राज्योंको विजय कर लिया था. और जो इन पुस्तकालयोंके साथ वैसा ही कठोरपनका वर्ताव करता, जैसा कि उसने सिकन्दरियाके * पुस्तकालयके साथ किया था, और भी दूसरे छोटे छोटे पुस्तकालय मध्यदेश और पश्चिम भारतमें अभी तक ऐसे विद्यमान हैं कि, जिनमें अब भी सहस्रों ग्रंथ हैं. उनमें कितनी एक तो वहांके महाराणाओंकी निजकी सम्पत्ति हैं, और कितने एक ग्रंथ जैनियोंके हैं ।×

जो हम महमूद गजनवीकी चढाईसे लेकर भारतवर्षके राज्यपरिवर्तन और घटनाओंका विचार करें तथा उनके अनुयाइयोंमेंसे बहुतोंके धर्मसम्बन्धी पक्षपातपूर्ण कट्टरपनकी ओर ध्यान लगावें. तो हमें इस देशकी जातीय ऐतिहासिक ग्रंथोंकी न्यूनताका कारण विदित होजायगा, हम लोग इस व्यर्थ विचारको अपने हृदयमें स्थान न देंगे कि, हिन्दूलोग उस बातसे जिसको दूसरे देशवाले आदि समयसे उन्नति देते चलेआते हैं परिचित न थे, क्या यह कभी होसक्ता है कि सद्विद्याओंके पूर्ण रूपसे प्रचारक. कला, शिल्प, कविता संगीत आचारादिके शिक्षक प्रत्येक जातिके लिये उत्तमोत्तम नियम बनानेवाले सभ्य हिन्दूजन

अपनी ऐतिहासिक घटनाओंके अपने राजा महाराजाओंके आचार व्यवहार तथा उनके राजशासनके कार्योंको लिखनेकी रीतिमें कुछ भी न जानते हों, जहां बुद्धिमानीके ऐसे चिह्न पायेजातेहैं। वहां हम कठिनाईसे यह विश्वास कर सक्तेहैं कि योग्य पुरुषोंकी घटनाओंके, लिखनेकी परिपाटीका ' जिसको समान कालके ऐतिहासिक लोग लिखनेके योग्य बतातेहैं, अभाव रहाहो । हस्तिनापुर, अनहिलबाडा, इन्द्रप्रस्थ, जैसेनगर चित्तौर और दिल्लीके विजयस्तम्भ गिरनार आबू सोमनाथ जैसेमंदिर, एलिफैण्टा ' और इलौराके गुफामंदिर यह सब इसी विषयके प्रमाणरूप होनेसे हम यह कभी नहीं विचारसक्ते कि इस कारीगरीके समयमें कोई इतिहासका लिखनेवाला नहीं था, इतनेपर भी महाभारतके समयसे आरंभकर सिकन्दरकी चढाई तक तथा इस महान युद्धसे महमूद गजनवीके समयतकका हिन्दू ऐतिहासिक तत्त्व कुछ भी विदित नहीं हुआ । दिल्लीके पिछले हिन्दू महाराजका वीरतामय इतिहास, जो उनके कवि चंदने लिखाहै, उसके देखनेसे हमको यह विदित होताहै, कि ऐसे ऐतिहासिक ग्रन्थ महमूद और शहाबुद्दीनके समय [सन् १००० से ११९३ ई०] के पहले विद्यमान रहे हों और इन यवनेश्वरोंके अत्याचारसे उनका लोप होगयाहो ।

अत्यन्त दुःखदायी कठोर यवनोंकी आठ सौ वर्ष पर्य्यन्त अधीनतामें रहनेसे तथा संस्कृतभाषाके मर्म न जाननेवाले असभ्य कट्टर और अत्यन्त क्रुद्ध शत्रुओंसे कई २ वार प्रत्येक राजधानी लूटने और वर्बाद होनेसे यह आशा कभी नहीं कीजासकी कि देशके साहित्यको दूसरी उपयोगी वस्तुओंके साथ २ वडी भारी हानि न पहुँचीहो, राजस्थानके इतिहासकी अपूर्णताकी समालोचना पर आगे लिखे वचनोंसे कई वार यथार्थ उत्तर दियागया है कि जब हमारे राजा महाराजा उनकी राजधानी छूटजानेपर एक दुर्गसे दूसरे दुर्गमें खदेडे जाते थे, और यही नहीं विशेषकर उनको पहाडोंकी कन्दराओंमें रहना पडता था, जहां यह शंका रहतीथी कि कहीं सामनेकी परोसी थाली भी न छोडनी पडे तब क्या उस समय ऐतिहासिक घटनाओंके लेख वद्ध करनेका विचार कियाजाता ?

जो पुरुष हिन्दू जातिसे वैसे ग्रन्थोंकी आकांक्षा करते हैं, जैसे रोम और यूनानकी इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें हैं, वे भारत निवासियोंके उन गुणोंकी उपेक्षा करनेमें वडी भूल करते हैं जो गुण उनको दूसरे देशवासियोंसे पृथक करतेहैं तथा जो उनके सब विद्या विषयक ग्रन्थोंको पाश्चिमीय विद्वानोंके ग्रन्थोंमे

अत्यन्त ही विलक्षण बनातेहैं उनके काव्य, उनके दर्शन शास्त्र, उनके शिल्प-शास्त्रसे उनकी स्वतन्त्र रचनाके गुण प्रगट होतेहैं, उनके इतिहासमें भी इसी बातके गुण होनेकी आशा कीजासकती है कारण कि उनकी रचना भी ऊपर कहीहुई विद्याओंके समान उनके धर्मसे घना सम्बन्ध रखतीहै, साथमें यह बात भी याद रखनी चाहिये कि जिस समय तक इंग्लैन्ड और फ्रांसकी साहित्यकी शैली यूरोपके पुरातन साहित्यग्रन्थोंके पठनपाठनसे ठीक नहीं कीगईथी, तबतक इन देशोंका इतिहास ही नही वरन यूरोपकी सम्पूर्ण श्रेष्ठ जातियोंके इतिहास अभी तक उसी प्रकार अनघड व्यवस्था रहित प्राचीन राजपूतोंके इतिहासकी समान शुष्क थे।

यद्यपि नियमबद्ध वास्तविक इतिहासके लेखोंका अभाव है तथापि दूसरे कई एक देशीय ग्रन्थ ऐसे हैं कि यदि वे किसी चतुर दृढ साहसी इतिहास शोधकके हाथमें पडे तो भारतवर्षके इतिहासके लिये थोडी सामग्री न होंगे, इन ग्रन्थोंमें सबसे प्रथम पुराण और राजाओंके वंशवर्णन हैं, जो धर्म सम्बन्धी कथाओं-रूपकों और असम्भव [चमत्कारी]वृत्तान्तके साथ मिलजानेसे प्रायः गोलमाल-से होगयेहैं, तो भी उनमें सत्य बातें ऐसी बहुतायतसे हैं कि जो इतिहासके जानने वालोंको पथदर्शकका काम देतीहैं दृमसाहबने मेक्सन सात राज्योंके इतिहासों और इतिहास लिखनेवालोंके संबन्धमें जो वाक्य कहे हैं वे राजपूतोंके सात राज्यों (मेवाड,मारवाड, अम्बेर, बीकानेर,जेसलमेर कोटा और बूंदी)के विषयमें यथार्थ रूपसे घटसकते हैं आशय यह कि उनमें घटनाओंका तो अत्यन्त अभाव है पर नामोंकी बहुतायत है वे परस्पर इस प्रकारसे गुथे हुए हैं कि परम चतुर लेखक भी उनको पाठकोंके लिये रुचिकर वा शिक्षाप्रद बनानेमें अवश्य हताश होजायगा। ईसाई साधू (जैसे राजपूतोंमें ब्राह्मण) जो सांसारिक कार्योंसे पृथक् रहते थे लौकिककार्य्योंको पारलौकिक कार्य्योंसे न्यून समझते थे इनको एक प्रकारकी शीघ्र विश्वासकरना, आश्चर्य भरी घटनाओंसे प्रेम और प्रपंच रचनेका स्वभाव पडगया था।

भारतवर्षीय युद्ध सम्बन्धी काव्य इतिहासका दूसरा साधन मानना चाहिये भाटलोग मनुष्य जातिके आदि इतिहास रचनेवाले हैं तब तक इन लोगोंको

ध्यान कल्पित कथाओंकी ओर न लगा था वा जबतक इतिहास ऐसी श्रेणीके महात्माओंसे उन्नतिको प्राप्त न हुआ था कि जिन्होंने इसे एक साहित्यका पृथक् विभाग बनालिया, तब तक भाटगण निःसन्देह सत्यघटनाओंको लिखने और अपने पूर्वजोंकी ख्यातिको अजर अमर करनेमें लगे हुए थे, जावके समकालीन व्यासजीके समयसे कवियोंमें कैलिऑपीकी पूजा मेवाडके वर्त्तमान विख्यात लेखक वेनीदासजीके समय तक होती चली आई, कविगण पश्चिम भारतके मुख्य इतिहास लेखक हैं, यद्यपि यह नहीं कह सकते कि उनके सिवाय कोई दूसरा नहींहै और उस प्रसंगमें उनकी कमी भी नहीं है, कसर है तो यह कि वह अपनी एक प्रकारकी मुख्य बोली बोलते हैं, जिसकी समझने योग्य साधुभाषामें अनुवादकी आवश्यकता है, तिसपर भी उनकी लेखनीसे वाग्बाहुल्यता और अस्पष्टताकी पूर्ति बहुतायतसे होती है राजपूत राजाओंकी कठोरताका प्रभाव कवियोंके काव्योंपर नहीं पडता, उनकी वाणीरूपधारा बे रोक टोक चली जाती है। हम व्यासजीको ९००० वर्षसे ऊपर हुए मानते हैं जावके समयके नहीं सम्पादक छन्द मात्राका नियम उनको अवश्य रोकताहै यह बात इतिहास लेखककी स्वतंत्रताके रोकनेके लिये कम नहीं है, इसके प्रतिकूल राजा और काव्यकर्त्ताके मध्यमें एक प्रकारका स्वार्थ रहता है, जो प्रशंसा करनेसे विशेष धनका भागी होताहै, इस बातसे इतिहासकी सत्यतामें कुछ दोष आजाताहै, यह सुख्यातिका व्यौहार जैसा कि भाटोंके कहनेकी शैली है, राजस्थानके कवियों और इतिहास लेखकोंके मध्यमें बराबर उस समय तक होतारहेगा जबतक पूर्ण शिक्षित और स्वतंत्र लोगोंकी एक ऐसी श्रेणी समाजमें प्रगट न हों कि जो साहित्यविषयक व्यवसायके निमित्त सर्वसाधारणपुरुषोंमें सम्मानित होनेके सिवाय और किसी प्रकारका पारितोषिक न चाहै।

इतनेपर भी इतिहासलेखक कभी २ ऐसी सत्यबातें कहनेका साहस करदिखाते हैं, जो उनके स्वामियोंको बहुत बुरी लगतीहैं जब उनका हृदय बहुत दुःखी होताहै, वा अनीति देखकर सात्त्विकताके कारण कविजनोंका क्रोध बढ जाताहै, तब वे इस बातकी परवाह नहीं करते, कि इस बातका परिणाम क्या होगा जो पुरुष उनको क्रोध दिलाताहै, उसकी बुराई होतीहै, बहुतसे हठी लोगों-

१ ईसाइयोमें जाव एक प्रसिद्ध ईश्वरभक्त ईसासे बहुत पहले हुआहै।

२ यूनानदेशमे वीररसात्मक काव्यकी अधिष्ठात्री देवीका नाम केलोपिआ था, जैसे हमारे यहां विद्याकी अधिष्ठात्री देवी सरस्वती है।

को उनके निन्दा और उपहासक काव्योंकी फटकारनेके लिये उपहासका पात्र बनादियाहै, यदि वे नायक उनको कुछ न करते तो उनके नामपर अपयशका धब्बा न लगता. राजपूत गण कवियोंकी विषमयी वाणीको शत्रुओंके बाणसे भी अधिक तीक्ष्ण समझतेहैं ।

राजपूतोंके दरबारोंमें सर्वसाधारणके व्यवहार सम्बन्धी बातोंमें कोई भी भेद की बात गुप्त नहीं रहती थी, उनमें सरदारोंसे लेकर नगरके द्वारपाल तक स्वार्थ लेतेहैं, इन घटनाओंको लेखबद्ध करनेवाला बड़ा लाभ उठाताहै, जब कि देशकी व्यवस्था रहित दशाके समय बड़े गम्भीर विषयोंका गुप्त रखना आवश्यक प्रतीत हुआ, और उदयपुरके राणासे किसीने कहा कि इन विषयोंको गुप्त रक्खाजाय, तो उन्होंने यह उत्तर दिया कि यह चौमुखी [चार मुखवाली शंकरकी मूर्ति] का राज्य है, भगवान एकलिंगजी इसके स्वामी हैं, मैं उनका प्रतिनिधि हूँ मेरा विश्वास उन्हींमें है, मैं अपनी पुत्ररूप प्रजासे कोई बात नहीं छिपाना चाहता सब प्रकारकी सर्वसाधारण रचना होनेपर भी इस प्रकारके गुप्त रहस्योंका प्रगटहोना देशके वैरियोंसे सामना करनेमें न्यूनताहोनेका एक बड़ाकारण समझाजाता है, परन्तु शासनमें इससे एक प्रकारका पिता पुत्र सम्बन्ध हो जाताहै, प्रजाजनोंके हृदयमें यदि पूर्ण राजभक्ति और देशभक्तिका भाव प्रगट न हो तो भी वह भाव कुछ न कुछ हृदयमें अंकित होही जाताहै ।

यह सब अवगुण रहनेपर भी इन देशी भट्टकवियोंके काव्योंसे बहुत सी कामकी उपयोगी बातें प्रगट होती हैं, यथार्थ घटनायें धर्मसम्बन्धी विचार व्यवहार प्रणाली जिनमें अनेकों उपयोगी बातें लिखी होनेके कारण ऐसी हैं कि उनके ऐतिहासिक प्रमाण होनेमें बहुत ही कम सन्देह है, चन्दकविने पृथ्वीराजरायसेमें बहुत सी ऐतिहासिक और भूगोलसम्बन्धी बातोंका वर्णन अपने महाराजाकी लडाईके वृत्तान्तमें दियाहै, कि जिन युद्धोंको उसने स्वयम् अपने नेत्रोंसे देखा था, कारण यह कि वह महाराज पृथ्वीराजका मित्र राजदूत न था, एलची था और अन्तमें बहुत ही शोकसे पूर्ण कार्य उसने यह किया कि अपने महाराजाकी अप्रतिष्ठा न होनेके निमित्त उनकी मृत्युमें भी सहायक हुआ मेवाडके बडे महाराणा अमरसिंहने जो शूर वीर साहित्यके सहायक तथा नीतिके जाननेवाले थे, चन्दकविके निर्माण किये हुए कवितावद्ध इतिहासोंको संग्रह कियाथा।

दूसरे प्रकारके ऐतिहासिक लेख मन्दिरोंके दान भेंट तथा उनके गिरने टूटने और पुनरुद्धारके विषयमें पाये जातेहैं, ब्राह्मण लोग जो कुछ लिखरखतेहैं, उनमें प्रसंग वश इतिहास और वंशावलियोंका वर्णन भी मिलताहै, धर्मस्थानोंके माहात्म्य तथा धर्मक्रिया शास्त्रोंके विधान तथा स्थानसम्बन्धी रीतियोंके साथ धर्मसे सम्बन्ध न रखनेवाली घटनायें मिलीहुई हैं, जैनियोंके शास्त्रार्थोंसे भी बहुतसी इतिहास सम्बन्धी बातें प्राप्त होतीहैं, जो विशेष कर गुजरात और नैहरवालोंके सम्बन्धमें चालुक्यवंशके समयकी हैं, यदि ध्यानसे जैनधर्मकी पुस्तकोंको वांचा जाय कि जिनमें उन सब विद्यासम्बन्धी बातोंका वर्णन है जिनको प्राचीन समयके जैन जानतेथे, तो हिन्दूजातिके इतिहासकी बहुत सी त्रुटि पूर्ण होसकती है, परस्पर विद्वेषी भारतके मतावलम्बी जैनोंका पक्षपात अवश्य ही इतिहासकी शुद्धताका द्वेशी था, जिसबातके आधारपर ब्राह्मणोंने अन्य जातियोंपर अपनी प्राधानता स्थापन की वह देशवासियोंका अज्ञान ही था और यह बात जानी जातीहै, कि भारतखण्डमें तथा इसी भाँति मिस्रमें भी पुराने समयमें धर्माचार्य और राजाओंके मध्यमें एक प्रकारका एका था और वह इस लिये कि वे मिलकर देशके सर्व साधारण जनोंको अज्ञानरूपी अन्धकारमें आच्छादित कर अपने आधीन बनाये रक्खें।

इस प्रकारके ऐतिहासिक और भौगोलिक वृत्तान्तसम्बन्धी पुस्तकें जिनका उपस्थित होना मुझे विदित है, राजाओंके छन्दोबद्धचरित्र, ऐसे पुराण संबंधी

लेख. जनश्रुतिके दोहे * तथा सनदपत्र और प्रमाण शिलालेख और ताम्रपत्र अधिकारोंकी सनदें जिनमें राजसम्बन्धी बहुत सी मुख्य बातें लिखी रहती हैं इतिहास लिखनेवालेके लिये यह कुछ कम सामग्री नहीं है इसके सिवाय इस समयके दूसरे वृत्तान्तोंसे भी सहायता मिल सकती है जो पुरातन समयके [illegible] आगेके और पश्चातके मुसलमान लेखकोंकी पुस्तकोंसे पुष्टिको प्राप्त किये जा सकते हैं. मेरा जबसे इस स्वर्गीय देशके साथ राजकीय सम्बन्ध हुआ. तभीसे इसके पुरातन ऐतिहासिक लेखोंकी खोजमें लगा. और यह इस निमित्त कि जिसका वृत्तान्त यूरोपके लोगोंको अबतक कुछ भी विदित नहीं है उस जातिके विषयमें कुछ ज्ञान प्राप्त हो, और जिसमें दोनों ओरके पक्षवालोंको ध्यान पड़े इस प्रकार मुझको इंगलिस्तानके साथ राजकीय सम्बन्ध बढ़ाना उचित जान-पड़ा। यदि इस विषयको इन्हें मैं स्पष्टतासे बताने लगूं तो पाठकोंको यह बात निश्चय प्रतीत होगी. कि मैंने राजपूतोंके छिन्न भिन्न इतिहासको किस प्रकार इकट्ठा करके इनके आगे धरा है पुराणमें वर्णित पवित्र वंशावलियोंसे मैंने अपना कार्य आरंभ किया है. महाभारत चन्द्रकविकी कृति. जयदेव मारवाड़ मेवाड़के छोटे बड़े ऐतिहासिक काव्य * खीची कोटा. बूंदी, तथा राठौरीय राजाओंके इतिहासोंका अवलोकन किया. जो उनके वर्तमान भाटोंके लिखे हुए हैं।

बहुत सी सामग्री विद्यमान थी, जो उनके क्रमानुयायी विषयवासनामें तत्पर स्वर्गवासी महाराजने एक वेश्याको अपना राज्य विभागकरनेके समय राज्य पुस्तकालयके बटवारेमें कदाचित देदी हो, राजस्थानभरमें यह पुस्तकालय सबसे उत्तम संग्रहका था, तैमूरवंशके कितने एक बादशाहोंकी समान जयसिंह भी अपना रोजनामचा लिखते थे, जिसका नाम उन्होंने कल्पद्रुम × रक्खा था, इसमें वे प्रत्येक घटना लिखतेथे, ऐसे समयके ऐसे पुरुषका लिखाहुआ ग्रन्थ मिलना इतिहासके लिये बहुमूल्य सामग्री है। महाराजा दतियासे मैंने उनके उस पुरुषाकी दिनचर्याकी पुस्तक प्राप्त की थी, जिन्होंने औरङ्गजेबकी फौजके बडे बडे सहायकारी राजाओंके बीचमें बडी प्रतिष्ठाका काम किया था, और स्काटने जिसमेंसे अपने दक्षिणी इतिहासमें बहुत सा लेख उद्धृत किया था। एक जैनीपंडितकी सहायतासे दश वर्ष तक में प्रत्येक ग्रन्थका सार निकालनेमें लगारहा; राजपूत इतिहासकी जिनमें कोई भी बात या घटना मिलसकती थी, उनके व्यवहार वा चालचलनका जिसमें कुछ भी पता लग सकता था, मेरा जैनी सहायक इस प्रकारके सब ग्रन्थोंका सार निकाल निकालकर संस्कृतसे निकलीहुई इन जातियोंकी सीधी बोलीमें अनुवाद करता जाता था। बहुत दिनोंतक साथ रहनेसे जिसे में सुगमतापूर्वक समझसकता था प्रतिदिन घंटोंतक परिश्रम करके तथा बहुत कुछ भी व्यय करके केवल उनके इतिहास ही प्राप्तकरनेका यत्न नहीं किया, किन्तु उनके धर्म सम्बन्धी साधारण विचार, उनके स्वाभाविक व्यवहारके ज्ञाता उनके सरदार और कवियोंके संग रहकर उनकी आख्यायिका और रूप भरी कविताओंको ध्यानसे सुनकर उसका सार निकाला, ज्यों ज्यों मैं विशेष शोध करता जाता था त्यों त्यों मुझे इस विषयमें अधिक ज्ञान प्राप्त होता जाता था; परन्तु जब मैं बहुधा रोगग्रस्त रहनेलगा, तब इस सुखदायक और परिश्रमी कार्यके छोडने तथा जन्मभूमि लौट जानेके निमित्त बाध्य हुआ, जब कि मैं हिन्दू जनोंकी पूजनीया मिनर्वा देवीकी ड्योढीमें जानेकी आज्ञा प्राप्त करचुका था, ठीक उन्हीं दिनोंमें

× जयसिंहकल्पद्रुमग्रंथ वेंकटेश्वरप्रेसमें छपाहै, यह रत्नाकरपंडितका बनाया है, इसमें वर्षभरके व्रतोंका वर्णन है दिनचर्याका ग्रंथ कोई दूसरा होगा।

१ मिनर्वारोमन लोगोंकी पुरातन कलाकौशलकी अधिष्ठात्री देवी है, जैसे हमारे यहां सरस्वती, ड्योढीका अर्थ पुस्तकालय है।

मुझे देश-जाना पड़ा तथापि वहांसे थोड़ी सी प्राचीन पुस्तकें मैंने अपने साथ लीं, जिनकी जांचका काम अब मैंने दूसरों पर छोड़ा. जो मैं संस्कृत और भाषा लिपि ग्रन्थोंका बड़ा संग्रह इंग्लैण्डको लाया था. वह मैंने रायल एशियाटिक सोसाइटीको देदिया, जहां कि वह पुस्तकालयमें धरा हुआ है, अभीतक भी उसमेंसे बहुत सी जांच नहीं हुई. सम्भव है कि जांच करने पर उसमें बहुत सी इतिहास सम्बन्धी नई बातें निकलें मुझे केवल इतने ही यशका पात्र बनना है. कि मैंने यूरोपखण्डके निवासियोंको उनसे परिचित कर दिया मुझे आशा है कि इससे दूसरे लोगोंको भी इसी प्रकारके यत्न करनेका उत्साह बढ़ेगा।

अबतक भी यूरोप निवासियोंको इन लोगोंका थोड़ा सा ठीक २ वृत्तान्त ज्ञात नहीं है इस कारण यूरोप निवासियोंको अन्यराज्योंकी अपेक्षा इस विभागके सत्त्वका कुछ मिथ्या भ्रम होगया है. यदि यह मानाजाय कि कविजनोंने उसके वर्णनमें अतिशयोक्ति की है तो भी इसमें कुछ संदेह नहीं कि राजपूत राज्योंका वैभव इस देशके पुरातन इतिहासके समयमें निश्चय ही बढ़ाचढ़ा होगा. प्राचीन समयमें इन्द्रप्रस्थ बड़ा ही धनी था, इस का सिंधु नदीके दोनों किनारेवाला भाग दोआबसे सबसे अधिक ऐश्वर्य शालिनी [illegible] थी, इसकी विविध घट- नाओंने इतिहासके लिये बहुत सी सामग्री प्रस्तुत करदी है. राजस्थानमें ऐसा कोई छोटा राज्य भी नहीं है, जिसमें थर्मापिलीके समान रणभूमि न हो और न कोई ऐसा नगर है कि जहांसे लियोनिडास जैसा वीरपुरुष उत्पन्न हो, परन्तु इन घटनाओंको समयने [illegible] सिवाय इतिहास लिख- नेवालोंकी [illegible] [illegible] [illegible] पार [illegible] [illegible]

लीवियन[1] महाराजकी समृद्धिकी समान ठहरता, और यदि पाण्डवोंकी सेनाका समूह जर्कसीजकी[2] सेनासे मिलाजाता तो उसकी सेनासमुदाय उसके सामने कुछ भी नहीं जॅचती, परन्तु हिन्दुओंके यहां या तो हेरोडाटसे[3] और जेनोफेनकी[4] समान इतिहास लिखनेवाले हुए ही नहीं और हुए हों तो अभाग्यवश उनके ग्रंथ लुप्त होगये।

यदि इतिहासके प्रभावसे लोगोंके चित्तमें सहानुभूति प्रगट हो तो इन देशोंका इतिहास लोगोंके मनको खैंचनेके लिये अत्यन्त ही मनोहर होता, कई पीढियोंतक स्वाधीनता रक्षाके लिये एक वीरजातिका लडाई झगडे करते रहना अपने पिता पितामहकी धर्मरक्षाके निमित्त अपनी प्रियवस्तुकी भी हानि सहना, और प्राणपणसे भी शूरतापूर्वक अपने सत्व और जातीयस्वतंत्रताको बचानेके निमित्त किसी प्रकारके भी लालचमें न आना, यह सब मिलकर एक ऐसा चित्र खैंचते हैं कि जिसका विचार करनेसे हमारे रोएं खडे होजाते हैं, जिन स्थानोंमें यह घटनायें हुई थीं यदि मैं उस उत्साहयुक्त आनंदका एक अंश भी अपने पाठकोंके हृदयमें प्राप्त करसकूं तो उस अपनी उदासीनतापर विजय प्राप्तकरनेमें उत्साहरहित न हूंगा, जिसके निमित्त हमारे देशवासी भारतसम्बन्धी अधिक ज्ञान प्राप्त करनेका कुछ भी उद्योग नहीं करतेहैं इस बातकी मुझे शंका नहीं है कि जो नाम हिन्दुओंके निमित्त प्यारे सार्थक तथा हितकारी हैं हमारे यूरोपनिवासी उन नामोंको सुनकर कर्णकटु और निरर्थक समझकर उकतावेंगे, कारण कि यह बात सदा यादरखने योग्य है कि पूर्व देशके सभी नाम किसी न किसी शारीरिक वा मानसिक गुणके बोधक होतेहैं, पुराने नगरोंके खंडहरोंमें बैठकर मैंने उनके टूटे फूटे विषयकी कहावतोंको ध्यान देकर सुनाहै अथवा उनकी वीरताकी चरचा उनके सन्तानोंके मुखसे उन स्मारक चिह्नोंके समीप स्थित होकर जो उनके स्मरणके निमित्त बनाये

१ यह बादशाह अपनी समृद्धिके लिये प्रसिद्ध था, लीविया एशिया माइनरका एक प्रसिद्ध भाग है, यह सम्राट ईसवी ५४६ और५६०के मध्यमे राज्य करताथा।

२ यह ईरानके बादशाहका पहला बेटा था; यह ईसासे ४६५वर्ष पहले हुआ इसने जल स्थल सम्बन्धी २६४१४६० सेना लेकर ईरानियोंको जीता था।

३ यह यूनानका विख्यात इतिहास लिखनेवाला हुआ है. ईसासे ४८४ वर्ष पहले इसका जन्म हुआथा, इसका लिखा इतिहास बडा प्रामाणिक है।

४ यह विद्वान इतिहासलेखक सुकातका मित्र और शिष्य था, इसका जन्म ईसासे ४४४ वर्ष पहले, ईरानकी राजधानी ऐथेन्समें हुआ था।

गयेहैं अवसरोंमें जिस समय मरहठे इस देशको नष्ट करहेथे उनके साथ रहकर मैंने बहुतसे स्थानोंमें निवास और भ्रमण कियाहै, जहांपर कोई परस्परकी लड़ाई वा युद्ध हुआ है, अथवा विदेशके वैरियोंने आकर आक्रमण कियाहै, इस प्रयोजनसे कि युद्धमें मृतक हुए प्राणियोंके सेवापनके स्मारक चिह्नों परसे उनके नाम तथा स्मारकका कुछ अंश पाठ करूं. उनके इतिहास और चालचलनकी अनेक बातें उनकी कहानियां और लेख बतातेहैं, किसी मंदिर वा किसी विजय-स्तम्भके बनने अथवा उनके जीर्णोद्धार विषयक कविता भी बीतेहुए समयके विषयमें हमारे ज्ञानकी कुछ वृद्धि करनेको समर्थ होसकतीहै, इस समय जो मध्य और पश्चिम ओरके भारतका शासन करतेहैं, उन राजकुलोंकी प्राचीनताके विषयमें हमें केवल दो खान्दान ऐसे मिलेहैं, कि जिनकी उत्पत्ति इतिहास सम्बन्धी सम्भावनाकी सीमाके बहिर्भूत है, और दूसरराज्योंकी वर्तमान स्थापना, तथा यवनोंकी युद्धसम्बन्धी उन्नतिके संगसंग होनेसे उनके इतिहासोंकी पुष्टि उनसे विजेता यवनोंके इतिहासोंसे होतीहै. जैसलमेर मरुस्थल और मेवाड़के कितने एक छोटे छोटे राज्योंके सिवाय. वर्त्तमान समयके सभी राजवंश यथार्थमें यवनोंकी चढ़ाइयोंके पश्चात् वर्त्तमान स्थानोंपर स्थित हैं। परमार और सोलंकियोंकी समान दूसरे बड़े बड़े राजा जो धार और अनहलवाड़ामें राज्य करते थे कई सौ वर्ष बीते कि वे लुप्त होगये।

क्षतापूर्वक सर्वसाधारणके सामने धरताहूं, दोनों जातियोंकी जो समानता मैंने प्रमाणित कीहै, यद्यपि उसमें विवाद होसकताहै तो भी विचारके साथ पढनेसे पाठकोंका श्रम निष्फल न होगा, किन्तु उनकी इच्छा इस विषयमें विशेष शोधकी होगी मुझे आशा है कि बुद्धिमान मेरी इस खोजकी सराहना करेंगे; जो मैंने इस विषयकी भूलीहुई कथाओं तथा अपूर्णलेखोंकी टिमटिमाती हुई ज्योतिके सहारेसे वडे अँधेरेवाले पुराने सोतमें प्रवेश करके उस बातको प्रकाशमें लानेके निमित्त यत्न कियाहै।

मुझे विदित है कि इस ग्रंथकी बहुत सी ऐसी बातेंहैं, जो सर्व साधारणको क्षमा करनी होगी; और उन त्रुटियोंके क्षमा करनेके लिये मुझे केवल यही कह-कर संतोष दिलाना होगा कि मेरा स्वास्थ्य बिगडगया था। और उसके अन्यायसे संग्रहवाले ग्रन्थको अपूर्ण स्थितिमें प्रगटकरना मेरे लिये कठिन ही नहीं किन्तु दुःसाध्य होगया था, यहां यह कहना भी अनुचित न होगा कि मैंने इस विषयको इतिहासकी कठिनाई भरी लेख शैलीसे गठित करना नहीं चाहा था, जिससे कि राजनीतिके जाननेवाले और जिज्ञासु विद्यार्थियोंकी लाभदायक बहुत सी वातें इसमें छूटजातीं, मैं इस ग्रन्थको ऐतिहासिक सामग्रीके एक बृहत संग्रहकी समान आगेके लिये इतिहास लिखनेवालोंकी सहायतार्थ उपस्थित करता हूं; इस विषयमें मुझे इस वातकी चिन्ता नहीं कि इस पुस्तकको मैंने वढादिया, पर चिन्ता यही है कि इसमें सर्व साधारणको लाभदायक वातें कहीं छूट न जायँ।

अब मैं वहुत न वढाकर इस भूमिकाको अपने मित्र तथा सम्वन्धी मेजर वागके निमित्त धन्यवाद दिये विना समाप्त नहीं करसकता कि जिन्होंने वडी वुद्धिमानीके साथ कारीगरीके उन चित्रोंको तैयार करके कि जिनका सम्वन्ध इस पुस्तकसे है जगत्को कृतज्ञताका परिचय दियाहै।

राजस्थानके हिन्दी अनुवादकी

भूमिका।



आज हम अपने देशवासियोंके सन्मुख एक ऐसी वस्तु लेकर उपस्थित होते हैं जिसका घनिष्ठ सम्बन्ध हमारे देशकी उन्नति और अवनतिसे है, भारतवर्ष संसारमें आदर्शरूप है. इसका सौभाग्य और दुर्भाग्य अलौकिक ही है, यहांका धर्मभाव अलौकिक है; जब कि पाश्चात्य शिक्षाका प्रभाव हमारी सब ही वस्तुओंपर हुआ. और इस समयके विद्वान इसी शैलीको अपनी उन्नतिका मार्ग मानते हैं इस विषयमें यदि विशेष विचार कियाजाय तो यथावत इतिहास शिक्षाकी बहुत आवश्यकता है, सम्पूर्ण बुद्धिमानोंका इस विषयमें एक मत है कि इतिहासकी शिक्षापर ही देशकी उन्नति और अवनति निर्भर है, यदि समयानुसार अच्छे और सच्चे इतिहास देशवासियोंको पढने और सुननेको मिलें तो उनका प्रभाव देशपर अच्छा और सच्चा होगा; पक्षपातसे भरे और व्यंग भाषासे लिखे इतिहास अपना यथार्थ प्रभाव दिखानेके बदले जनसमाजमें एक महाभ्रमका उदय उत्पन्न करते हैं; किसी भाषाका भंडार यथावत पूर्ण उस समय ही समझा जाता

लिखनेवाले दोनोंहीकी संख्या इनीगिनी है, अनेक कारण तथा समयानुसार आवश्यकताके ध्यानसे यह सब ही इतिहास किसी न किसी अंशमें अपूर्ण और उपयोगी हैं ।

अंग्रेजोंके लिखेहुए अनेक इतिहासोंके देखनेका अवसर प्राप्त हुआहै, उनमें जहाँ तहाँ भेद पायाजाताहै, एक लेखक पोरसकी कथा एक रीतिपर लिखताहै तो दूसरा दूसरी रीतिपर लिखताहै, एक सिकन्दरके पंजावसे आगे न वढनेका कारण उसकी सेनाका आज्ञा भंग करना वताताहै तो दूसरा वरसातके आजानेको ही प्रधान कारण मानता है इसी भाँति अनेक स्थलोंमें विदेशियोंद्वारा लिखित इतिहास संभ्रमसे पूर्ण और अग्राह्यहैं विदेशी लेखक हमारे देशके आचार व्यवहार धर्म कर्म रहन सहन किसीसे भी पूर्ण रूपसे परिचित नहीं हैं, इस वातको अनेक विद्वान् अंग्रेजोंने भी स्वीकार कियाहै, ऐसी अवस्थामें उन विदेशी लेखकोंकी आलोचना हमारे पुरातन धर्माचारपर कैसे ग्राह्य होसकती है प्रचलित इतिहासोंमें अधिकांश वात अनुमानसे लिखी गई हैं, किसी विषयका छायामात्र ज्ञान हुआ कि उसपर एक वडी आलोचना युक्त पुस्तक वना डाली एक ऐसा स्थान जिसमें कभी प्रवेश करनेतकका अवसर नहीं मिला जिसके विषयका इतना ज्ञान भी नहीं कि किस जातिका किस धर्मका कैसा आदमी इसका मालिक था, किस समय कैसे उसके अधिकारमें वह घर आया; और कवतक किस स्वभाववाले कितने स्वजनोंने उसमें निवास किया है,उस मकानके सहस्त्रों वर्षके पडे खण्डहर (कि जिसमें केवल एक दो। दीवारके सिवाय मट्टी ही मट्टी पडी है,) के पास खडे होकर आप कैसे कह सकते हैं कि इसमें इस ओर रसोईका मकान था; इस ओर वैठनेका कमरा था दुतल्ले पर घरके स्वामीकी स्त्री वैठती थी, वाहर उसके पशु वाँधे जाते थे इत्यादि यादि दैववश उसमें कहीं कोयले पडे मिल गये तो वस अनुसंधान करनेवालोंको मस्तक लडानेकी एक अच्छी समस्या मिलगई, एक कहैगा कि निश्चय है कि यह कोयलेवाला भाग इस मकानके रसोई वनानेका स्थान है, दूसरा कहता है नहीं यह मकान जलकर नष्ट हुआ है कोयलोंकी अधिकाई इसको स्पष्ट कर रही है यादि तीसरे तत्त्ववेत्ताने अपना मस्तक लडाया तो वह सिद्ध करताहै कि यह पूर्व समयकी लोहेके शोधनेकी भट्टी थी जव हम विचारके साथ पूछें कि इनमें किसकी वात सत्य है तो आप किसके वचनको ग्राह्य कह सकते हैं परोक्षकी वात है कोई उस समयका मनुष्य जीवित नहीं किसी पुस्तकमें उसका विवरण नहीं

अनुमान भी तीन पृथक् २ स्वरूपमें है ऐसे अवसरपर विचारशील यही सिद्धान्त करेंगे कि उस खण्डहरके आस पासके ग्रामोंमें जो जनश्रुति उसके सम्बन्धमें चली आती है उसको ध्यान पूर्वक सुनें उस देशका रहन सहन जो प्राचीन कालमें था उसको मनन करें फिर अनुमानसे निर्द्धारित फलोंको विचारें ऐसी अवस्थामें यदि उनको पूर्वकालका ज्ञान यथार्थ न होगा तो भी यथार्थके इतने निकट पहुंच जायेंगे कि वह सिद्धान्त सर्व ग्राह्य होगा।

यदि इसी प्रथापर हमारे देशके इतिहास तत्त्व प्रगट करनेवाले विद्वान अपने २ अनुमानके संग इस देशकी पिछली रीति नीति शासन प्रणाली रहन सहनका ध्यान करते हुए अपने यहांके इतिहासोंको लिखते तो आज हमको यह आपत्ति न करनी पड़ती, सब कुछ विद्यमान रहते भी भारतवर्ष इतिहास हीन नहीं कहा जासकता।

यह कहना ही पड़ताहै कि प्रचलित इतिहासोंके प्रकाशक गण पक्षपात और संकीर्णताको इतिहास लिखते समय हृदयसे पृथक् नहीं करसकेहैं, धर्म एक ऐसी वस्तु है जो मनुष्यकी बोलचाल खानपान पहनाव सबमें स्वयं मिश्रित रहताहै, किसी धर्म वा किसी जातिका लेखक अपनी लेखनीसे विपक्षियोंकी प्रशंसा नहीं करते तो कठोर आलोचना भी नहीं करते, वे अपने गुणगानका गर्व परिचय देसकतेहैं, परन्तु जिन विद्वानोंने भारतके हित अनहित पर कुछ ध्यान न देकर केवल एक दूसरेके आधारपर वा कल्पनामात्रसे स्वतन्त्र ग्रन्थ लिख डाले हैं, वह केवल इस दशाका विवरण देनेवाले इतिहास कहे जासकतेहैं, तिसपर भी अनेक इतिहास तो मिशनरी गणोंके निमित्त हैं वे तो विशेषकर इसी अभिप्रायसे निर्माण किये गये हैं कि हिन्दुस्तानिक अबोध बालक उन्हींसे ज्ञान लाभ करके अपने पितृओंको मांसाहारी, ब्राह्मणोंको स्वार्थी लिखेंगे, तथा ऐसी बातें सीखें और अपने धर्मको न पहचाननेवाले स्वदेशी भाँति ईसाइयोंके भक्त बनें।

प्रकाशित प्रथम पुस्तकसे आरम्भ कर अन्तिम पुस्तक तक खीष्ट धर्मके उपदेशोंसे तथा हिन्दूधर्मकी हीनतासे पूर्ण होगी तो वह किस प्रकारसे आर्यकुलके बालकको उसके धर्म कर्म और देश हितका ज्ञानोपदेश करसकतीहै ।

प्रायः इसी प्रकारकी दशा मैक्समूलर आदि संस्कृतके महा विद्वान् अंग्रेज लेखकोंके अंग्रेजी अनुवादमें पाई जातीहै; कोई आर्य्य कुलमणि पूर्वजोंको गोभक्षक सिद्ध करताहै, कोई वर्णाश्रम धर्मको आधुनिक प्रमाणित करताहै कोई विधवा विवाह सिद्ध करता है इस बातका न्याय हम विचारवान् पाठकोंपर ही छोडते हैं कि वेदप्रतिपादित हिन्दूधर्मके सिद्धान्त अनादि वा सादि हैं अथवा जैसा मेगस्थनीज मयु सन् २७८ का लिखना सत्यहै जो कि वेक्ट्रिया [तुरकिस्तान] के महाराजा सलूकसका दूत था और दश वर्षके लगभग मगधदेशके महाराज चन्द्रगुप्तकी सभामें रहाथा, वह लिखताहै कि उच्चवर्णमें ब्राह्मण और क्षत्रिय थे जो गोरे रंगके होतेथे इत्यादि खेदसे यही कहना पडताहै कि हमारे देशकी सच्ची अवस्थासे अनभिज्ञ तथा अन्यमतावलम्बी होनेके कारणसे ऐसे २ अविश्रान्त परिश्रम करनेवाले, संसारमें विद्या बुद्धिके सूर्य अकृत्रिम साहसके गुणोंसे अलंकृत, घोर अंग्रेजी विद्वान् भारतकी इस आवश्यक वस्तुकी उचित संयोजना न करसके ।

प्राचीन तथा नवीन मुसलमान लेखकोंके इतिहासोंको देखाजाय तो उनकी आलोचना भी ऊपरकी आलोचना पंक्तिको फिर उद्धृत करनेसे होजातीहै, वरन इनमें एक और भी विशेषता पाईजातीहै मुसलमानोंने अपने धर्म कर्म और रीति नीतिको हिन्दुओंमें प्रचार करनेके निमित्त ख्रिष्टधर्मावलम्बी पादरी गणोंकी सी युक्ति नहीं की, वरन अन्याय और वलसे उनमें परिवर्तन किया, इस कारण उनके लेख तो पक्षपातकी प्रतिमूर्ति ही हैं, फारसीका सर्वश्रेष्ठ इतिहास फरिस्ता ऐसे वादशाहकी आज्ञासे निर्माण कियागया था जो अपनी हठधर्मीके लिये प्रसिद्ध था, जिसके अत्याचार हिन्दुओंके भ्रष्ट देवालयोंके स्वरूपमें अभीतक विद्यमान हैं, ऐसे धर्मद्रोही वादशाहकी आज्ञासे वनाहुआ इतिहास हिन्दुओंके धर्म और नीति रीतिका सच्चा इतिहास कैसे कहा जासकताहै, दूसरी एक प्रथा मुसलमान लेखकोंमें व्यर्थ प्रशंसाकी पाईजाती है. ठकुरसुहाती कहनेमें वह किसी वातका ध्यान नहीं करते,यह दोष सत्यको छिपानेमें वडी सहायता देता है और ऐसे ही कारणोंवश इन इतिहासोंको भी ग्राह्यमानना हृदयकी शक्तिसे वाहर

होगयाहै, जिन लोगोंने हिन्दूधर्मके मिटानेके लिये वर्षों हिन्दूजातिका रक्त बहायाहै हिन्दुओंका सच्चा इतिहास वे लोग कब लिखसक्ते हैं।

अब इने गिने भाषाभंडारके इतिहासोंको देखें तो इनमें अधिकांश तो अंग्रेजों द्वारा लिखित अंग्रेजी इतिहासोंके अनुवाद हैं और वे देशी विद्वानोंद्वारा लिखित हैं, परन्तु शोकका विषयहै कि अपने रत्नभंडारकी कुंजी संस्कृत विद्याकी अनभिज्ञता तथा इसकी दूसरी भाषा पाली प्राकृत आदिका न जानना तथा पुरानी संस्कृत पुस्तकोंका हठी और उत्साहरहित सज्जनोंके हाथमें रहना आदि अनेक कारणोंने हमारे देशी लेखकोंको भी अपनी स्वतंत्र पुस्तकोंको अंग्रेजोंकी लिखित पुस्तकोंके आधारपर लिखनेको बाध्य कियाहै, और यह आवश्यक वस्तु एक प्रकारसे अनाविष्कृत ही रहगईहै।

सात आठ सौ वर्षके लगभग मुसल्मान राजाओंकी प्रजा बनी रहकर हिन्दूलेखकोंकी रीति नीतिने भी यवनोंकी समान प्रशंसाकी शैली स्वीकार की है, हिन्दी भाषाके सुयोग्य लेखक देशहितकारी राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द भी अपने अमूल्य इतिहास तिमिरनाशकको इस कलंकसे मुक्त नहीं करसकेहैं, अनेक लार्ड और गवर्नरोंके कार्यकी यथावश्यक आलोचना करनेमें वे हिचक गयेहैं, जिन गवर्नरोंको वे सत्याधिक अपनी जातिके गौरवस्तम्भ सुविज्ञ अनेक अंग्रेज स्वयं लिख गयेहैं, इन्हीं बातोंके लिखनेमें राजा साहबने अपने स्वार्थकी हानि जानी। ऐसे देशहितैषियोंने भी इस बातका ध्यान नहीं किया, कि बृटिशगवर्नमेंट कैसी सत्यप्रिय न्यायपरायण और उदार है, जिसने प्रत्येक व्यक्तिको अपने विचार स्वतंत्रतापूर्वक प्रकाश करनेका अधिकार देरक्खाहै, इस समय भी खुशामदी लेखोंकी भरमार हो तो फिर निस्तारका समय कौन सा होगा।

प्रकाशित पुस्तक एक ऐसी वस्तु है जो चिरकाल तक जैनसमाजपर अपना प्रभाव डालती है, और जब पुस्तकपर टिप्पणी नहीं रहतीं तो उसके सम्बन्धकी अनेक बातें कुछ की कुछ समझी जाया करती हैं, यदि मिथ्या तथा अपूर्ण सम्वादयुक्त ग्रंथ बहुत समयके पीछे जब उसके लेखक आदिका परिचय कुछ न रहाहो मिलै तो कौ न कहैगा कि इस पुस्तकमें अमुक बात पक्षपातसे लिखी गई थी यह निर्मूल है यह घटना छोडदीगई है, इस कारण या तो उन ऐतिहासिक ग्रंथोंपर टिप्पणी कीजाय या कोई सत्य इतिहास लिखाजाय।

भारतवर्षके उन इतिहास वेत्ताओंमें जिनकी चर्चा हम ऊपर करचुके हैं तीन चौथाईकी सम्मति यही है कि इस देशके पुराने विद्वानोंमें इतिहास लिखनेकी प्रथा ही न थी, बडे २ समारोहोंमें इन्होंने अपने मुखसे यही आक्षेप किया है कि भारतवर्षकी ऐतिहासिक विद्या बडी अल्प है, उनको अपने लिखे वाक्योंके प्रमाणमें यही प्रगट करते देखा और सुनागया है कि यदि ऐसा नहीं है तो कोई प्राचीन इतिहास इस देशमें क्यों नहीं पाया जाता, इस प्रमाणको ग्राह्य मान लेना ही वास्तवमें ऐतिहासिक तत्त्व प्रगट करनेवालोंके हतोत्साह की पहली सीढी है।

प्राचीन समयका शृंखलाबद्ध तथा क्रमानुसार इतिहास विद्यमान न होनेका कारण यहांके निवासियोंकी इस विषयसे अनभिज्ञता वा आलस्य नहीं है, परन्तु

Burke and Sheridon, of Fox and Francis, had not been India itself. I have no doubt that the view of Indian Government taken at the end of the century by Englishmen whose works and speeches are held to be models of English style has had deep effect on the mind of the educated Indian of this day. We are only now beginning to see how excessively in aceurate were there statements of fact and how one-sided were tbeia judgements."

सरहेनरी मेनने प्रशंसनीय सत्यतासे प्रगट कियाहै कि अंग्रेजी साहित्यभंडार पिछली शताब्दीके अन्तिम समयमे भारतीय घटनाओके सम्बन्धमे पक्षपातभरी युक्तियोंसे परिपूर्ण है, यदि बर्क शेरीडन तथा फाक्स और फ्राकिस सरीखे प्रसिद्ध लेखक और कविगण इस सालेका प्रधान विषय हिन्दुस्तानको न बनाते इतना हानिकारक न था, मैं निस्सन्देह कहताहूं कि शताब्दीके अन्तिम समयमे गवर्नमेण्टके कार्योकी आलोचना जो अंग्रेजोंके ऐसे अनुकरण योग्य भाषाके ग्रन्थ और व्याख्यानोंमे कीगई है, पढे लिखे हिन्दुओंके चित्तपर आज कैसा प्रभाव दिखा रही है, अब यह हमने विचारना आरंभ किया है कि वह घटनाओका कितना घोर मिथ्या विवरण था और उनकी निरधारणा कैसी एक पक्षकी थी।

दुर्भाग्य वश इस देशपर उत्तर पश्चिमके मार्गसे जो चढाई होती रही वही विशेष कारण है. चढाई करनेवालेके तीन प्रधान कर्त्तव्य होते थे: पहला यथा सम्भव देशको लूट लेना, अनेक यवन बादशाहोंने चढाई करते समय अपनी सेनाके सिपाहियोंको यही लोभ दिया कि किसी भांति खैबरकी घाटी पार करलो, फिर तो ऐसे देशमें पहुंचजावोगे जहां सुवर्ण उत्पन्न होताहै. दूसरा काम उन चढाई करनेवालोंका धर्म भ्रष्ट करनेका होता था, उनको यही लालसा रहतीथी कि जब देशको विजय करलिया तो क्यों नहीं वहांके निवासी विजेताके धर्मको स्वीकार करते, इस लालसाके पूर्ण करनेके लिये उनको बडे २ अत्याचार करने पडते थे. और देशकी विजयके लिये जितना रक्तपात होता था. उससे कहीं बढकर इस कार्यमें करना पडाथा, सौभाग्यकी बात है कि भारतीय समाजके धर्ममें दृढ होनेके कारण वे इस कार्यमें नाममात्रको ही सफलता प्राप्त करसकेथे।

तीसरा महानिन्दनीय कार्य इस देशको उत्तरोत्तर हीन और ह्रास करना था, उन्होंने अनेक शिल्प और कलाकौशल इस देशसे सीखकर कृतघ्नताकी यही गुरुदक्षिणा दी कि इस देशके शिल्पादिपर भी अत्याचार करना आरंभ किया, बडे २ विशाल मंदिर जो संसारमें शिल्पकार्यके लिये अद्वितीय थे. उनको नष्ट किया। बडे २ वैज्ञानिक ज्योतिषादि और ग्रंथादि भस्म किये गये, यहांतक भी विशेष पुस्तकोंके भंडारको ऐसा जलाया कि अनेक तो संसारसे लोप होगये।

इसभांति अनेक आपत्तियोंका झेलनेवाला भारतवर्ष, अपने सर्वस्वको खोदेनेवाला आर्य्यावर्त्त अपना पुराना इतिहास कहांसे प्रगट करसक्ताहै, जब इसके धर्मग्रंथ वेदमें [तमितिहासश्च पुराणश्च] इस प्रकार इतिहास शब्द विद्यमान है तब इसके यहां इतिहास होनेमें सन्देह नहींहै इसका जो कुछ शेष है वह इस बातके सिद्ध करनेको बहुत है कि यह देश इतिहास ऐसी आवश्यक वस्तुसे अनभिज्ञ नहीं था, इसका पूर्वकालीन अद्वितीय महाभारतग्रंथ आजतक इतिहासके नामसे विख्यात है। जहां इतिहास शब्द है, वहां उसका वाचक नहीं यह कब संभव होसक्ताहै, ऊपर लिखी दुर्घटनाओंको ध्यानमें लाकर यहांके निवासियोंको आलसीपनका लांछन लगना यथेष्ट जान नहीं पडता, वरन यह कहना उचित होगा कि फिर भी यहांके निवासी बडे दूरदर्शी और साहसी निकले जो इतना कुछ बचा रक्खाहै।

यह कहना अत्युक्त न होगा कि यूरोपीय समस्त इतिहासोंके मध्यभागमें ईसू ख्रीष्ट केन्द्रके समान विराजमान है प्रत्येक यूरोपीय देशनिवासी लगभग ईसासे उतने ही दिन पहलेकी शृंखलाबद्ध कथा कहसक्ते हैं—कि, जितने दिन ईसाको इधर बीत गयेहैं इस गणितसे ४००० अथवा ५००० से अधिकका इतिहास संसारमें लोप सा होगयाहै परन्तु भारतवर्षके इतिहासकी वह दशा नहींहै, इस देशका इतिहास इससे कहीं पुराने समयका मिलसक्ताहै, पॉच हजार वर्ष तो महाराज युधिष्ठिरको ही हुए हैं युधिष्ठिरका संवत् उनके राजसूय यज्ञसे चलाहै इसके ३०४४ वर्ष बीतनेपर विक्रमका संवत् चलाहै जिसको १९६२ में ५००६ वर्ष होतेहैं जिसके पीछे राज्य करनेवालोंकी एक तालिका भी हम यहां उद्धृत करते है।

अब यह सिद्ध होगया कि युधिष्ठिर कुरुवंशमें एक प्रकार पिछले चक्रवर्त्ती राजा हुएहैं इनसे पहले अनेक नृपति होचुकेहैं फिर केवल ५००० या चार सहस्र वर्षकी ही ऐतिहासिक घटनाकी अटकल लगाना भ्रम ही नहीं महाभ्रम है।

जिस विस्तृत ग्रन्थकी यह भूमिका लिखीजातीहै यद्यपि यह ग्रन्थभी अंग्रेजीका ही अनुवाद है परन्तु इस ग्रन्थके निर्माताने पच्चीस तीस वर्षतक इस देशके आचार विचारकी खोज कर इस ग्रन्थको लिखाहै। वह भूमिकामें लिखतेहैं कि भारतवर्षीय इतिहासके अनेक प्रधान स्रोत हैं, वेद, स्मृति, महाभारत, अष्टादशपुराण, राज्यवंशावली, स्थानिक जनश्रुति, जगा और भाटोंके द्वारा कथित चरित्रविशेष घटनासम्बन्धी कवितायें, टूटेफूटे इतिहास तथा शिलालेख आदि इन्हींमें

यथावश्यक परिश्रम करनेसे अनेक ऐतिहासिक तत्त्व ही नहीं निकलते वरन क्रमानुसार इतिहास प्रत्यक्ष होने लगताहै ।

टाड साहबने जिस श्रद्धा और भक्तिसे आर्यवंशकी क्षत्रियजातिका इतिहास लिखाहै ऐसी भक्ति सत्यपरायणता, और सच्चरित्रताका उल्लेख और किसी अंग्रेज लेखकसे बन नहीं पडाहै, टाड राजस्थानका अधिकांश सत्यपालनमें है और इसीहेतु यह ग्रन्थ देशमें सर्वमान्य और ग्राह्य होरहाहै. इस ग्रन्थमें मेवाड-वीरोंका चरित्र पढनेसे उनके आचार विचारपर ध्यान देनेसे उनकी धर्मपरायणता समझनेसे तथा स्त्रियोंकी पतिभक्ति विचारनेसे पढते २ मन ऐसा तदाकार होता है मानों यह सब वृत्तान्त आखोंके आगे होरहाहै मन कभी वीर कभी करुणा कभी वात्सल्य रसमें मग्न होजाताहै इस बातको पाठक पढकर ही समझ लेंगे कि इसमें बाप्पारावलसे आरम्भकर महाराणा भीमसिंहके चरित्रतक मानों मोतियोंकी लडी गुंथी गईहै. ।

परन्तु इसमें भी सत्यवीर भक्त टाट अपने इस बृहत् ग्रन्थकी भूमिकामें स्पष्ट लिखतेहैं कि " मेरा सिद्धान्त यही रहाहै कि भारतीय और पुराने यूरोपीय वीरजाति एकही वंशवृक्षकी पृथक् २ शाखाएं हैं और इसी बातको प्रमाणित करनेका मैंने उद्योग कियाहै ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

जिसको औरोंने अनुमानसे माना उसीको सिद्ध करनेका उद्योग करना प्रमाण है कि एक स्थानमें भूमिकामें ब्राह्मणोंको स्वार्थपरायण कहि यही निन्द्य भावनासे लिखाहै ।

प्रजाको अन्धकार और आधीनतामें बनाये रक्खें, मानो ब्राह्मणोंने ऐसा किया, सम्पूर्ण हिन्दूजाति जिन ब्राह्मणोंकी प्रधानताको अपना पैतृक धर्म मानतीहै, जिनको देवता कहकर पुकारतीहै। उनपर यह अप्रमाणित लांछन सहसा टाडसाहबके अन्य मतावलम्बी होनेका प्रत्यक्ष फल है, यदि टाड साहब हिन्दू होते तो कभी आर्य्यकुलको उन्नतिपर पहुंचानेवाले कार्य्यपरायण तथा ब्रह्मवादी बनानेवाले भारतमार्तण्ड ऋषिगणोंपर यह दोषारोपण न करते, और यहां तो राजाओंपर भी लांछन लगाया है कि प्रजाको वशीभूत रखनेके प्रयोजनसे ही प्रजाको अज्ञानी रक्खा जाता था, यह लेख उक्त महोदयका उन्हींके कथनके विपरीत है वह पहले ही कह आयेहैं कि—

The absence of all mystery or reserve with regard to public affairs in the Rajput principalities in which every individual takes an interest, from the nobles to the porter at the city-gates is of great advantage in the chronicler of events.

राजपूत . राजागण प्रजासम्बन्धी कार्योंमें कोई भेद वा गोपनीयता अपनी प्रजासे नहीं रखते थे। इन विषयोंमें प्रत्येक मनुष्य प्रधानसे लेकर नगरका द्वारपाल तक स्वार्थ लेता था यह वात इतिहास लिखनेवालोंके बडी उपयोगी होती है, इस कथनके समर्थनमें मेवाडके राणाका उत्तर भी टाड साहबने लिखा है कि किसी समयमें आवश्यकतावश किसी व्यक्तिने राणाको समझाया कि अमुकभेद गोपनीय रक्खे जावें परन्तु राणाजीने उत्तर दिया कि यह एकलिंग शिवजीका राज्यहै और मैं केवल उनका प्रतिनिधि हूँ मैं अपनी वालक (प्रजा) से कोई भेद नहीं रखता विचारिये तो जहां इस देशके राणागणोंकी यह सम्मति है वहां कैसे अनुमान किया जा सकता है कि उन्होंने प्रजाको अन्धा वनाये रखनेके लिये अनेक विषय प्रजासे छिपाये जैसा ऊपर कह आये हैं यह सर्वथा मान्य है कि टाड महोदयने अधिकांशमें पक्षपात रहित ही उल्लेख किया है। परन्तु जिन वातोंमें उन्होंने अपनी उक्तिसे काम लिया है उस वातमें अवश्य गोलमाल हुआहै। इसमें सन्देह नहीं कि पुराण फ्लासफी एक वडा गहन विषय है, उसमेंसे विषयोंका चुनना साधारण वात नहीं है, इसके लिये पुराण विद्यामें निपुण पंडितकी सहायताकी आवश्यकता थी, परन्तु टाड साहवको अन्यधर्मावलम्बी पंडितकी सहायता प्राप्त हुई जिससे प्रथम सृष्टिखण्डमें वहुत सी वातोंमें गडवड होगई है और जिसको हमने परिशिष्टमें दिखाया है शकुन्तलाका पति

अग्निवंशियोंकी कन्याओंको ब्राह्मणोंका पटाना वा स्वयं उनसे विवाह करना. अश्वमेध यज्ञको डीनकाल्डकी सेकांतिका त्योहार मानना. मेरुकी पूर्वोक्त नाम मेरु लिखना. आर्यावर्तकी पुण्यभूमिके आगे कुरुकी भूमि लिखना. अन्य देशोंके देवता तथा भारतके देवी देवता तथा ऋषि मुनियोंकी एकता सिद्ध करनेके लिये यूनानके शब्दोंका स्वयं निर्माण करना. ब्राह्मणोंको शान्तनुका पुत्र मानना इत्यादि बहुत सी बातें ऐसी लिखीगई हैं जिनका वर्णन पुराणोंमें अन्य रीतिसे लिखा गया है और टाड साहबने उनको अन्य प्रकारसे लिखा है इसको इस बातके माननेमें कोई सन्देह नहीं है कि टाडसाहबने इसमें पुरन्दरोंसे काम नहीं लिया उन्होंने बड़ी मिहनत उठाकर यह काम किया है और ऐसा लिखा है कि उनके अनुशीलनसे बुद्धिमान बहुत सी कामकी बातें जान सकते हैं।

यदि हम इस पुराणविरुद्ध ऐतिहासिक तत्त्वका अनुवाद करते समय टिप्पणी देकर शुद्ध करदेते तो पाठकोंको इसमें नीरसता प्रतीत होती इस कारण पुराणादि ऐतिहासिक वृत्तांत जो टाड साहबने लिखा है प्रथम छः अध्यायोंमें उसका सार लिखकर उसका पुनः वर्णन यदि टिप्पणी देकर परिशिष्टमें लिख दियाहै कि जिससे पाठकोंको ऐतिहासिक मर्म अच्छी भांति स्पष्ट होजायगा।

दीर्घायु मानी गई है और राजा परीक्षितकी कई पीढ़ी बाद तक भी कितने एक पुरुषोंने ८० अस्सी २ वर्षतक राज्य किया है, टाड साहबने २० वर्ष औसतके मानेहैं जो हमने आगे एक वंशावली उतारीहै उसमें युधिष्ठिरसे यशपाल तक १२४ राजाओंने ४१५७ वर्षतक राज्य कियाहै जिसका औसत निकालनेसे ३३॥ वर्ष प्रत्येकके राजसम्बन्धमें आते हैं और उस सूची देखनेसे यह भी ज्ञात होसकता है कि टाड साहबने जो वंशवृक्ष नंबर दो में परीक्षितसे वंश चलाया है इसके उसके नामोंमें कितना भेद है इस वंशावली देखनेसे विदित होताहै कि दिल्लीमें महाराज युधिष्ठिरसे यशपाल पर्यन्त १२४ राजा हुए हैं जिनका समय४१५७ वर्ष९महीने और चौदह दिन है टाड साहबकी दी हुई राजावलीकी वंशावली और इसमें बडा भेद है टाड साहबने युधिष्ठिरसे राजपालतक ६६ राजा लिखे हैं इसमें ६९ हैं पर नामोंमें बडा भेद है इस लिये हम लिखतेहैं—

	राजा	वर्ष	मास	दिन
१	युधिष्ठिर	३८	८	२५
२	परीक्षित	६०	०	०
३	जन्मेजय	८४	७	२३
४	अश्वमेध	८२	८	२२
५	द्वितीय राम	८८	२	८
६	छत्रमल	८१	११	२०
७	चित्ररथ	७५	३	१८
८	दुष्टशैल्य	७५	१०	१४
९	उग्रसेन	७८	७	२१
१०	शूरसेन	७८	७	२१
११	भुवनपाति	६९	५	५
१२	रणजीत	६५	१०	४
१३	ऋक्षक	६४	७	४
१४	सुखदेव	६२	०	२४
१५	नरहरिदेव	५१	१०	२
१६	शुचिरथ	४२	११	२
१७	शूरसेनदूसरा	५८	१०	८
१८	पर्वतसेन	५५	८	१०
१९	मेधावी	५२	१०	१०
२०	सोनचीर	५०	८	२१
२१	भीमदेव	४७	९	२०
२२	नृहरिदेव	४५	११	२३
२३	पूर्णमल	४४	८	७
२४	करदवी	४४	१०	८
२५	अलमिक	५०	११	८
२६	उदयपाल	३८	९	०
२७	दुवनमल	४०	१०	२६
२८	दमातः	३२	०	०
२९	भीमपाल	५८	५	८
३०	क्षेमक	४८	११	२१

यह सब मिलकर तीस पीढ़ी हुई वर्ष १७७० महीने ११ दिन १० हुए राजा क्षेमकके प्रधान विश्रवाने क्षेमकको मारकर १४ पीढी राज्य किया जिनके वर्ष ५०० मास ३ दिन १७ होतेहैं।

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ विश्रवा	१७	३	२९
२ परसेनी	४२	८	२१
३ वीरसेनी	५२	१०	८
४ अनंगशायी	४७	८	२३
५ हरिजित	३५	९	१७
६ परमसेनी	४४	२	२३
७ सुखपाताल	३०	२	२१
८ कद्रुत	४२	९	२४
९ सज्ज	३२	२	१४
१० अमरचूड	२७	३	१६
११ अमीपाल	२२	११	२५
१२ दशरथ	२५	४	१२
१३ वीरसाल	३१	८	११
१४ वीरसालसेन	४७	०	१४

इन वीरसालसेनको वीर महाप्रधा-नने मारकर १६ पीढ़ी ४४५ वर्ष ५ मास ३ दिन राज्य किया उसका ब्योरा—

१ वीरमहा	३५	१०	८
२ अजितसिंह	२७	७	१९
३ सर्वदत्त	२८	३	१०
[illegible]	१५	४	१०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३
[illegible]	[illegible]	८	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

राजा	वर्ष	मास	दिन
१० माणिकचन्द	३७	७	२१
११ कामसेनी	४२	५	१०
१२ शत्रुमर्दन	८	११	१३
१३ जीवनलोक	२८	९	१७
१४ हरिराव	२६	१०	२९
१५ वीरसेन(२)	३५	२	२०
१६ आदित्यकेतु	२३	११	१३

आदित्यकेतुको प्रयागके राजा धन्धरने मारकर ९ पीढ़ी ३७४ वर्ष ११ महीने २६ दिन राज्य किया इसका ब्योरा—

१ धंधर	४२	७	२४
२ महर्षि	४१	२	२९
३ सनरछी	५०	१०	१९
४ महायुद्ध	३०	३	८
५ दुरनाथ	२८	५	२५
६ जीवनराज	४५	२	५
७ रुद्रसेन	[illegible]	४	२८
८ [illegible]	[illegible]	१०	८
९ [illegible]	३६	०	०

[illegible] मारकर १ पीढ़ी राज्य किया

१ [illegible]	१४	०	०

[illegible]

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ विक्रमादित्य	९३ *	०	०

विक्रमादित्यको शालिवाहनके उमराव समुद्रपालयोगी पैठनकने मारकर १६ पीढी ३७२ वर्ष ४ मास २७ दिन राज्य किया जिसका व्योरा—

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ समुद्रपाल	५४	२	२०
२ चन्द्रपाल	३६	५	४
३ सहायपाल	११	४	११
४ देवपाल	२७	१	२८
५ नरसिंहपाल	१८	०	२०
६ सामपाल	२७	१	१७
७ रघुपाल	२२	३	२५
८ गोविन्दपाल	२७	१	१७
९ अमृतपाल	३६	१०	१३
१० वलीपाल	१२	५	२७
११ महीपाल	१३	८	४
१२ हरिपाल	१४	८	४
१३ सीसपाल[भीमपाल]	११	१०	१३
१४ मदनपाल	१७	१०	१९
१५ कर्मपाल	१६	२	२
१६ विक्रमपाल	२४	१३	१३

राजा विक्रमपालने पश्चिमके राजा मलूखचन्द वोहरेपर चढाईकी और मलूखचन्दने विक्रमपालको मारकर १० पीढी राज्य किया वर्ष १९१ महीना १ १६ दिन

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ मलूखचन्द	५४	२	१०
२ विक्रमचन्द	१२	७	१२
३ अमीनचन्द (मानकचन्द)	१०	०	५
४ रामचन्द	१३	११	८
५ हरीचन्द	१४	९	२४
६ कल्याणचन्द	१०	५	४
७ भीमचन्द	१६	२	९
८ लोवचन्द	२६	३	२२
९ गोविन्दचन्द	३१	७	१२
१० रानीपद्मावती	१	०	०

पद्मावती गोविन्दचन्दकी रानी थी जव यह मरगई तव कार्यकर्ताओंने राज वंशमें किसीको न पाकर एक हरिप्रेम वैरागीको गद्दीपर वैठाया और मुत्सद्दी राज्य करने लगे यह राज्य पीढी ४ वर्ष ५० दिन २१ तक रहा ।

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ हरिप्रेम	७	५	१६
२ गोविन्दप्रेम	२०	२	८
३ गोपालप्रेम	१५	७	२८
४ महावाहु	६	८	२९

यह महावाहु राज छोडकर वनमें तप करने चलागया यह समाचार पाकर वंगालके राजा आधिसेनने दिल्ली-में राज्याधिकार किया पीढी १२ वर्ष १५१ महीना ११ दिन २ इसका व्योरा

* परीक्षितसे विक्रमादित्यतक ३०६६ वर्ष होतेहैं यदि ३० वर्षकी अवस्थामें संवत् चलाना मानलिया जाय तो सवत् १९६४ तक ५०६० वर्ष होतेहैं और युधिष्ठिरके ३८ वर्ष मिलानेसे ५०९८ वर्ष होते हैं विक्रमका राज्य ९३ वर्ष लिखाहै इसमें कुछ भूल है ।

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ आदिसेन	१८	५	२१
२ विलावसेन	१२	४	२
३ केशवसेन	१५	७	१२
४ माधवसेन	१२	४	२
५ मयूरसेन	२०	११	२७
६ भीमसेन	५	१०	९
७ कल्याणसेन	४	८	२१
८ हरिसेन	१२	०	२५
९ क्षेमसेन	८	११	१९
१० नारायणसेन	२	२	२९
११ लक्ष्मीसेन	२६	१०	०
१२ दामोदरसेन	११	५	१९

दामोदरसेनने अपने उमरावको बहुत दुःख दिया इसलिये दीपसिंह उमरावने सेना मिलाके उसको मारकर राज्य किया पीढ़ी ६ वर्ष १०७ महीना ६ दिन २२ इनका व्योरा।

राजा	वर्ष	मास	दिन
१ दीपसिंह	१७	१	२६
२ राजसिंह	१४	५	०
३ रणसिंह	९	८	११
४ नरसिंह	४५	०	१५
५ हरिसिंह	१३	२	२९
६ जीवनसिंह	८	०	१७

जीवनसिंहने अपनी सेना कुछ कारणके लिये उत्तरकी ओर भेजी थी जिसके राजा पृथ्वीराज चौहानने यह समाचार पाकर उसपर चढ़ाई की और जीवनसिंहको मारकर यहां इन्द्रप्रस्थका राज्य किया पीढ़ी पांच वर्ष ८६ महीना० दिन २० इनका व्योरा—

राजा	वर्ष	मास	दिन
पृथ्वीराज	१२	२	१९
अभयपाल	१४	५	१७
दुर्जनपाल	११	४	१४
उदयपाल	११	७	३
यशपाल	३६	४	२७

इसके ऊपर शहाबुद्दीन गोरीने चढ़ाई की और इस राजाको पकड़कर संवत् १२४९ में प्रयागके किलेमें कैद किया और दिल्लीका राज्य अपने अधिकारमें किया इस राज्यकी पीढ़ी ५३ वर्ष ७४५ महीना १ दिन १७ [illegible]

[illegible]

इस प्रकार यदि पुराण और पुरातन ग्रंथोंकी विशेषरूपसे खोज कीजाय तो पुरानी वंशावलियोंका वहुत कुछ पता लगसकताहै, और ऐसा होनेसे एक वहुत वडा आक्षेपका विषय दूर होसक्ताहै, भारतवासी यदि प्राचीन इतिहासकी ओर झुकैं तो वहुत कुछ पता लगसक्ताहै, पर वे इस बातमें दत्तचित्त नहीं होते हां यदि परमात्माकी कृपा हुई तो अव कुछ ऐसा समय आताजाताहै कि केवल अंग्रेजी पुस्तकोंका ही अवलम्बन न करके शिक्षित पुरुष अपने ग्रंथोंकी ओर झुकेहैं, पर ऐसे बहुत थोडे हैं ज्यों ज्यों संस्कृतविद्याका प्रचार होताजायगा त्यों त्यों पुरानी बातोंकी खोज लगती जायगी वडे हर्षकी वातहै कि वहुत दिनोंके पीछे भारतवासियोंकी नींद अव खुलने लगी है, उन्हैं पता लगने लगा है कि हमारी कितनी हानि होगईहै, कितना माल असवाव जाता रहाहै किस उपायसे शेष सामग्री वच सक्तीहै, किस उपायसे गया धन लौट सक्ताहै, वे इस विषयकी मीमांसा करने लगेहैं यदि इस प्रकारकी मीमांसा और उद्योग होतारहा तो मुझे आशाहै कि वे इसमें एक दिन सफलमनोरथ होंगे, पर जहांतक मेरा विचार है वह यही है कि भारतवासी अपने पूर्वजोंकी रीति नीति आचार विचारको देखैं कि किन आचार विचारोंसे इस देशकी उन्नति हुई थी; और किन कारणोंसे देश अधोगतिको पहुंचाहै, तो अवश्य सदुपायोंका अवलम्बन करनेसे हम अपने देशका शिर ऊंचा करसक्तेहैं, इस राजस्थानके इतिहासमें इस वातका निर्णय दर्पणकी समान दिखाई देता है राजपूतगणोंको अपने देशका कैसा प्रेम था वे जननी और जन्मभूमिको स्वर्गसे भी विशेष मानकर उसका आदर करते हैं अपने देश अपने धर्म अपनी मानमर्यादाकी रक्षामें उन्होंने कितनी ही वार प्राणोंको विसर्जनकर देश और धर्मकी रक्षा कीहै, रजवाडेकी स्त्रियां पतिव्रत धर्मका आदर्श होगई हैं उनमें प्रातःस्मरणीया महारानी पद्मावती सवकी शिरमौर गिनी जासक्तीहैं, आज भी चित्तौर वीर क्षत्रियोंकी लीलाभूमिका स्तम्भ है शरणागतवत्सलता, ऐक्यता, कृतज्ञता, मानमर्यादाकी प्राप्तिके लिये उद्योग, निर्भयता, साहस, न्यायपरायणता, वन्धुत्व, आस्तिकता, भाषा वेष भोजन और भाव जैसा पूर्वजोंमें था वह सव वातें इस राजस्थानमें भलीभांतिसे

दिखाई देतीहै, जिस समय इसको पढनेके लिये पाठकगण बैठेंगे मुझे विश्वासहै कि उनके हृदयमें अपूर्वभावोंका उदय होगा और मन लगनेसे ऐसा विदित होगा मानो यह सब चरित्र आंखोंके सामने उपस्थित होरहाहै, वा हम कोई सत्यघटनाओंका उपन्यास पढरहेहैं ।

जहां जहां इस ग्रंथमें धर्मसम्बन्धी चर्चा आई है सुबीतके लिये हमने धर्म सम्बन्धी श्लोक भी वहां उतार दिये हैं जिससे धर्मभावमें दृढता हो तथा जो बात ग्रंथकर्ताकी भ्रममूलक प्रतीत हुई है वहांपर 'अनुवादक' इस संकेतसे बीच बीचमें टिप्पणी भी करदी है ।

मेरी समझमें क्या सब बुद्धिमान् इस बातको स्वीकार करेंगे कि राजपूत जातिके आचार विचार सम्बन्धमें क्रमानुसार वर्णन करनेवाला इससे उत्तम और कोई ग्रंथ नहीं है । इसमें यह प्रत्यक्ष दिखादियाहै कि किन उपायोंके अवलम्बन करनेसे देश उन्नतिको प्राप्त होसक्ताहै और किन विषय वासनाओंके तथा सत्यानाशी फूटके अवलम्बन करनेसे देश हीनदशाको प्राप्त होसक्ता है,साहससे मनुष्य क्या नहीं करसक्ता, महाराणा प्रतापसिंह इसके एक उदाहरण हैं, ऐसे वीर साहसी अब कहां हैं, पाठकमहाशयो ! इन सूर्यवंशी राजाओंके चरित्र पढते समय आप मुग्ध होजायंगे आपके मनमें एक बार पुरानेभाव समाकर आपके ध्यानको जननी जन्मभूमिकी ओर आकर्षित करेंगे,यह बडा अपूर्व ग्रंथ है, इसमें मनुष्यके सुधारकी सहस्रों बातें हैं, इसके अनुकरणसे मनुष्य शिक्षित और सन्मानित हो सक्ता है, हमने जिस भाव और देशहितैषितासे इस ग्रंथका अनुवाद कियाहै वह पढनेसे विदित होजायगा और मेरा यह ग्रंथ हिन्दीभंडारके लिये एक उपयोगी पदार्थ होगा ।

हिन्दीभंडारके निमित्त कोई उपयोगी ऐसा ग्रंथ जिसमें पूर्वजोंके आचार विचार धर्म कर्म देशके सुधार तथा आत्मिकसुधारकी ऐतिहासिक बातें विद्यमान हों—हिन्दीके मेरा बहुत दिनोंसे विचार था संवत १९[illegible] में मित्र लोगोंसे यह बात निश्चय हुई कि टाड राजस्थानका हिन्दी अनुवाद करके इस अभावको पूर्ण किया जाय,यह बात मुझे बहुत पसन्द आई परंतु यह कार्य महान था [illegible] । इसके करनेका साहस करके मैंने टाड साहबका अंग्रेजी ग्रंथ

तथा इसके अनुवाद जो बँगला मरहठी गुजराती आदि भाषाओंमें थे एकत्रित किये तथा इसके सम्बन्धकी और भी बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित कीगई, तो यह कार्य एक बडा उपयोगी विदित हुआ यह ग्रंथ एक बृहत् आकारका होगा इसके प्रकाश करनेमें बहुत व्यय होगा इस कारण मैंने अपने परम सुहृद हितैषी शास्त्रोद्धारक जगद्विख्यात वेंकटेश्वर, स्टीम् यंत्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीको इसकी सूचना दी जिन्होंने तत्काल मुझे इसके निर्माण करनेका उत्साह दिलाया और कहा कि आप इसे तैयार कीजिये हम सहर्ष इसको प्रकाश करेंगे, सेठजीके उत्साह दिलानेसे मैं इस कार्यमें प्रवृत्त हुआ, और संवत् १९५८ में मैंने इस बृहत् ग्रंथके प्रथमभागका अनुवाद करके सेठजी महोदयके पास भेजदिया, और दूसरे भागके अनुवादमें प्रवृत्त हुआ, परन्तु पहला भाग कुछ कालतक तो सेठजीके यहां धरा रहा जब इसके छपनेका समय आया तब एक महात्माने न जाने किस कारण इसमें यह पचडा लगा दिया कि इसके नामोंमें बहुत अन्तर है, इस कारण इसका छपना रुक गया और सेठजीके द्वारा यह ग्रंथ रजवाडेमें किन्हीं महोदयके पास भेजागया और वहां बहुत समयतक यह ग्रंथ पडा रहा जिसके कारण मेरा उत्साह भंग हो गया और आगेके अनुवादमें शिथिलता होनेलगी, अन्तमें बहुत सी लिखापढी करनेसे यह ग्रंथ वापिस आया, जब मैंने उसे खोलकर देखा तो उसका प्रत्येक पत्र अत्यन्त जीर्ण शीर्ण होगया था और कुछ पत्रे खो भी गयेथे पर प्रत्येक पत्रेपर सही होनेके हस्ताक्षर विद्यमान थे उसमें यद्यपि भूगोल और टाड साहबकी भूमिका सर्वथा कटफट गई थी, पर उसके साथ थोडी सी उपयोगी सामग्री भी प्राप्त हुई, जिसको मैंने धन्यवादपूर्वक स्वीकार किया और पुस्तकके पत्रे बहुत जीर्ण हो जानेसे इसके दुबारा लिखानेकी आवश्यकता पडी, परन्तु इस झंझटमें कई वर्ष लगगये, पर विना इस ग्रंथके दुबारा लिखाये यह कम्पोजके योग्य नहीं होसक्ता था इस कारण इसको दुबारा लिखानेके लिये दियागया, और पहले जो कहीं कुछ इसमें कसर रही थी इस दुबारा लिखनेमें टिप्पणी और शोधनमें वह दूर करदीगई।

जहांतक मुझसे होसकाहै मैंने इसका अनुवाद बहुत सरल सबके समझने योग्य सरस हिन्दीभाषामें कियाहै, यदि पाठक महोदयोंको यह रुचिकर होगा

तो मैं अपने परिश्रमको सफल जानूंगा. पर मुझे आशाहै कि महानुभाव इसको अवलोकन कर अवश्य प्रसन्न होंगे।

अंग्रेजीमें इस ग्रंथमें पहले खण्डमें हिन्दूजातिका पुरातन इतिहास, पश्चात राजपूतजातिके आचार विचार ९ अध्यायोंमें और फिर राजपूत जातिका इतिहास कनकसेनसे महाराणा भीमसिंहतक १८ अध्यायोंमें वर्णन कियाहै पीछे टाड साहबने २४ अध्यायतक मेवाडके पर्वोत्सव और शासन प्रणालीका वर्णन कियाहै पश्चात अपना मेवाड जानेका वृत्तान्त ६ अध्यायोंमें लिखकर इस ग्रंथको पूर्ण कियाहै. सब तीन अध्यायमें पूर्ण कियाहै परन्तु विशेष सरलता और रोचकताके हेतु मैंने हिन्दीअनुवादमें इस क्रमका थोडा परिवर्त्तन कियाहै अर्थात पहले खण्डके छः अध्यायोंमें पुरातन हिन्दूजातिका इतिहास सारूपसे लिखकर पश्चात सत्तरह अध्यायोंमें महाराजा कनकसेनसे महाराणा भीमसिंहतक इतिहास लिखकर महाराणा जवानसिंहजीसे श्रीयुत महाराणा साहब बहादुर फतहसिंहजी तकका इतिहास जो इस समय वर्तमान है चार अध्यायोंमें ग्रंथ कर्त्तासे विशेष वर्णन कियाहै इसके पीछे राजपूत जातिके पर्वोत्सव आचार विचार आत्मशासन प्रणाली और टाड साहबके मेवाड जानेका वृत्तान्त लिखा गयाहै इतने परिवर्तनका कारण यह है कि राजपूतजातिका इतिहास अत्यन्त ही चित्ताकर्षक है इसमें मन लगनेसे फिर पर्वोत्सव और आत्मशासन प्रणाली आदिको पाठक विशेष रुचिसे पढेंगे, इस कारण यह विषय पीछे लिखेगयेहैं और सबसे पश्चात् छः अध्यायोंमें इस हिन्दूजातिके पुरातन इतिहासका परिशिष्टभाग लगाया गयाहै जिसके अवलोकनसे पाठकोंको इतिहास सम्बन्धी बहुत सी बातें विदित होजावेंगी।

यथासंभव मैंने इस ग्रंथमें ग्रंथकर्त्ताका कोई विषय जानकरके नहीं छोडाहै परन्तु यदि इसमें कोई त्रुटि रहगईहो तो सूचना करनेपर आगामी बार पूर्ति अवश्य कर दीजावेगी।

यदि रघुकुलकमलदिवाकर प्रातःस्मरणीय भगवान् रामचन्द्रने कृपाकी तो [illegible] इस सेवका [illegible] आदर होगा और मैं जानताहूं कि इस समय [illegible]
[illegible]

भारतसम्बन्धी इतिहासकी खोजमें विद्वानोंकी रुचि बढैगी और आश्चर्य नहीं कि वे लोग भारतके सत्य इतिहासको खोजकर और इतिहास सम्बन्धी ग्रन्थोंको प्रकाश करके भारतके इस कलंकको दूर करनेमें समर्थ हों कि पहले भारतवासियोंको इतिहास लिखने नहीं आते थे, वा ऐतिहासिक ग्रंथोंमें उनकी रुचि नहीं थी ।

यद्यपि इस समय हिन्दीके प्रेमी बढते जातेहैं और उनसे बहुत कुछ आशा कीजाती है परन्तु नागरीप्रचारणी सभा आरा और नागिरीप्रचारणी सभा काशीसे कि जिनके कई एक सभ्योंसे मेरा प्रेम है इस विषयमें बहुत कुछ आशा कीजातीहै कि यदि इन महानुभावोंका वास्तवमें नागरीसे ऐसा ही प्रेम उत्तरोत्तर वृद्धिको प्राप्त होतारहा तो एक दिन हमारी नागरी सर्वगुणआगरी होकर फिर प्रकाशमान होकर अपने गुणोंसे सर्वसाधारणको सन्तुष्टकर सत्यधर्मका जयजयकार करादेगी ।

मेरी परम अभिलाषा * है कि यह ग्रंथ शीघ्रही प्रकाशित हो पर न जाने क्यों इसके प्रकाश होनेका समय अभीतक नहीं आता तथापि मैं अपने कर्त्तव्यमें लगा हुआ हूं दूसरा भाग भी शीघ्रही पूर्ण होकर दोनों भाग पाठकोंके सन्मुख उपस्थित होंगे ।

जो एक दो जगह मूलग्रन्थसे कहीं विशेष लिखागयाहै वह अमूलक न जानना वह भी पृथ्वीराज रायसे आदि दूसरे ऐतिहासिक ग्रन्थोंसे उद्धृत कर इसमें सन्निविष्ट किया गयाहै ।

इस प्रकार यह ग्रन्थ सब विषयोंसे अलंकृत कर सब प्रकारके सत्वसहित परमोदार सर्वगुणसम्पन्न जगद्विख्यात सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्ण-

---

* आपकी परम अभिलाषा इस ग्रंथके शीघ्र प्रकाशित होनेकी थी पर भगवान्‌को यह बात स्वीकार नहीं थी, ग्रन्थ दुबारा बम्बई पहुंचने न पाया था कि संवत् १९६२ श्रावण शुद्ध सप्तमीको विशूचिकारोगसे अकस्मात् इनकी मृत्यु होगई दूसरा भाग पूर्ण होनेमें थोडा ही शेष था जो पीछेसे पूरा कियागया ।

जब कि ग्रंथकर्ता मरहटोंके साथका युद्ध समाप्त होनेपर सन् १८०६ में सेंधियाके दरबारमें जानेवाले दूतके साथ भेजागयाथा, तबसे इस परिश्रमशीलताका आरंभ समझना चाहिये, इसी समय मैंने यह सामग्री संग्रह की थी, उस सेंधिया सरदारकी सेना उन दिनों मेवाड़में उपस्थित थी. और यूरोप निवासी उन दिनों इस देशसे इतने अपरिचित थे कि उदयपुर और चित्तौर यह विख्यात दो राजधानियें अच्छे नकशेमें भी उलटे स्थानोंपर लिखीगई थीं. उदयपुरसे पूर्व और ईशानकोणके मध्यमें चित्तौर होना चाहिये था, पर उसके बदले अग्नि-कोणमें लिखागया था, जो ऊपर लिखी हुई मेरी बातका पूरा प्रमाण देता है। और दूसरी बातोंके लिये तो उसमें कुछ लिखा ही न था. १८०६ ईसवीके बने नकशोंमें राजस्थानके पश्चिमी और मध्यवर्ती राज्य दिये ही नहीं गये; बहुत थोड़े समय पहले यह बात उनकी समझमें आई थी कि राजस्थानकी सब नदियें दक्षिणको बहती हुई नर्मदामें जा मिलती हैं. भारतवर्षकी भूगोल विद्याके तत्त्वज्ञ प्रसिद्ध रेनल साहबने इस भ्रमको पहले शुद्ध किया था।

टाड साहब कहते हैं मैंने इस अपूर्ण बातको पूर्ण किया. पहली पहल १८१५ ई० में नकशा तैयार करके पिंडारोंकी लड़ाईके थोड़े ही दिन पहले मार्किस आफ हेस्टिंगसको भेट किया. और उक्त सेनापतिको लाभदायक होनेके कारण मेरा दश वर्षका परिश्रम सफल होगया. यहां मैं यह कहना भी अपना कर्तव्य समझताहूं कि उसके पश्चात जितने नकशे बने उन सबमें भारतके मध्य और पश्चिमके देश इसीके अनुसार लिखे गये हैं।

उदयपुर जानेके लिये ऊपर लिखे दूतदलका मार्ग आगरेसे जयपुरके दक्षिण सीमामें होकर था. जिसका कुछ भाग डाक्टर [illegible] था. और

मैंने भी उनके खगोलनिरीक्षासे नियत किये चिह्नोंको अपनी नापमें आधाररूप माना, इन्हीं हण्टर साहबका बनाया हुआ मार्गका एक उपयोगी नक्शा सेंधियाके दरबारमें भेजे हुए रेजिडेण्ट ग्रीममर्सर महाशयके पास मौजूद था, १७९१ ई०में जिसके अनुसार राजदूत कर्नेल पामरने मार्ग तै किया था, उसके ठीक होनेका निश्चय कर मैंने अपनी पिछली पैमाइश उसीके सहारे आरंभ की, उसमें मध्य भारतके आगरा नर्वर झांसी दतिया सारंगपुर भोपाल उज्जैन आदि सब सीमांत स्थान दियेगये थे, और वहांसे लौटते हुए कोटा बूंदी रामपुरा टौंक तथा बयानेसे लेकर आगरेतक दर्ज थे, खगोल निरीक्षण द्वारा यह सब स्थान कुछ न्यूनाधिक शुद्धिके साथ अपने स्थानोंमें स्थापित कियेगये थे।

हण्टर साहबके नक्शेने रामपुरा तक मुझको पथदर्शकका काम दिया, यहांसे फिर उदयपुर तक नई पैमाइश आरम्भ की, जब सन् १८०६ जूनमासमें हम वहां पहुंचे तो विदित हुआ कि उस समय जो उदयपुरका स्थान बहुत ही अपूर्ण यंत्रों द्वारा नियत कियागया था, उसके रेखांशमें केवल एक कलाका परिवर्त्तन जानपडा, और उसके अक्षांशमें अनुमानसे पांच कलाका अन्तर जानागया।

पीछे हमारे साथकी सेना उदयपुरसे चित्तौरके समीप होती हुई मालवेके बीचमें होकर विंध्याचलसे निकलती हुई सब बडी बडी नदियोंका उल्लंघनकर खिमालसाके मध्य बुन्देलखण्डकी सीमापर पहुँची, वहां हमने कुछ समय तक विश्राम किया, पहले राजदूतके मार्गको इस सात सौ मीलकी यात्रामें मुझे दो बार उल्लंघन करना पडा और मुझे अपने नियतकिये स्थानोंको हंटर साहबके नियत किये स्थानोंसे मिलता देखकर बडी प्रसन्नता हुई।

१८०७ ई में जब उस सेनाका पडाव राहतगढ़पर पडा तब मैंने यह विचारा कि मैं इस समयको जिसे मरहटे व्यर्थ खोरहेहैं हाथसे न जानेदूं इससे मैंने थोडी सी सेना अपने साथ लेकर बित्वाके किनारे २ चंदेरीतकके अज्ञात स्थलोंमें होकर जानेका विचार किया, और उसी रेखामें कोटेकी ओर पश्चिमको बढकर एक बार उन सब नदियोंके मार्गका पूरा पता लगानेकी इच्छा हुई, जो दक्षिणकी ओरसे बहतीहै, तथा चम्बलके साथ काली सिन्धपार्वती और बनासके संगमस्थानके पता लगानेकी उत्कंठा हुई, इस कामकी पूर्ति मैंने ऐसे समयमें की जो वर्तमान समयसे बहुत ही भिन्नथा, कहीं लुटेरोंका सामना कहीं कोई विघ्न कभी २ आधी रातको डेरे उखाडकर कूंच करना पडता था, जो मार्गमें मुख्य मुख्य स्थान आये वह यह थे बेत्वाके किनारे कोटडा, पूर्वी उच्च समभूमिपर खनियादाता सिन्धुनदीपर बडौडनगर, शाहाबाद, पार्वतीनदीपर बाग-

कालपी, सिन्धुनदीपर, एलायचा बड़ौदा, शिवपुर, चम्बलके मार्गसे पाली, रण-थम्भोर करौली, मथुरा और आगरा थे।

जब मैं यह कार्य कर मरहठोंके लश्करमें लौटा तौ फिर भी मैंने आरम्भ पाकर पश्चिमकी ओर भरतपुर होकर मेरी होतेहुए जयपुर टोंक, रन्ड, रन्दुला, बूंदी, छपरा, गढ़ोगढ़, आरोन, कुरवाई, और भीलसाके मार्गसे सागरतककी यात्रा की, इस एक सहस्र मीलकी यात्रा करके जब मैं लौटा तो मैंने सरकारी सेना लश्कर उसी स्थानमें पाई जहां मैं उसे छोड़गयाथा।

इस प्रकार सैंधियाके साथ १८१२ ई० तक बराबर घूमता और पैमायश करता रहा जब यह दरबार एक जगह जमगया तब मैंने उन देशोंकी पैमाइशका प्रबन्ध किया कि जहां मैं स्वयं नहीं जासका था।

सन १८१०-११ में मैंने नापनेवालोंके दो समूह एक सतलजके दक्षिणी मरुस्थलकी ओर दूसरा सिन्धुनदीकी ओर रवाना किया, पहला दल बड़े योग्य पुरुष मशीअल्लाहकी आधीनतामें रवाना हुआ जो पहले इस भूगोल विद्या सम्बन्धी ज्ञानमें बहुत ही चतुर होगया था, इस भूमिसम्बन्धी राजस्थानके विस्तीर्ण प्रदेशमें ऐसा कोई भी स्थान नहीं था जहां यह साहसी पुरुष न पहुंचा हो, इस उत्साही उद्योगी विचारशील पुरुषने अपनी जानपर खेलकर मेरे कामको इस भांतिसे पूरा किया कि यदि कोई दूसरा पुरुष होता तो अवश्य मरजाता।

दूसरा दल शेख अब्दुल बरकतकी आधीनतामें पश्चिमकी ओरको गया, जिसने उदयपुरके मार्गसे गुजरात होकर कच्छ लखपत हैदराबाद सिन्धकी राजधानीमें होकर सिन्धनदी उतरकर तट ठट्ठाकी पैमाइश की, फिर उसने, दक्षिण दिशामें [illegible] सिन्धनदीके [illegible] उसके पश्चात् [illegible] पैमाइश की, जो [illegible] और [illegible] होकर [illegible]

सुराके रेतीले मार्गसे लौटकर जैसलमेर मारवाड और जैपुर होतेहुए नरवरके मुकामपर मुझसे आ मिला, यह भी वडी जानजोखमका कार्य था परन्तु शेख वडा साहसी और उद्योगी पुरुष था, तथा पढालिखा था तथा उसकी दिनचर्याकी पुस्तकमें वहुतसे भूगोलसम्बन्धी वृत्तान्त तथा उन देशोंके समाचार भी थे जिन देशोंसें होकर उसको जानापडाथा।

मैं मरहटोंकी सेनामें सन् १८१२ से १८१७ तक रहा इस अवसरमें दूरदूर देशोंके अच्छे २ जानकार लोग पारितोषिककी इच्छासे सत्य वृत्तान्त कहनेके लिये मेरे पास आते थे १८१७ तक सिन्धुके कछार घाट उमरसुराके मरुस्थल वा राजस्थानके किसी भी पुरुषको मैं चाहैं जव अपने पास बुलासक्ताथा, वहांके प्यादे जैसा उन लम्बे स्थानोंका ठीक ठीक वर्णन करते हैं उसपर यूरोप निवासी तो कोई बिरले ही विश्वास करैंगे।

यदि किसी एक देशके नापेहुए कोशका सही अन्दाजा लगजाय तो उसकी रेखा सरलता और शुद्धताके साथ सम धरातलपर खैंची ज़ासकतीहै, मैंने यह बात पक्की तौरसे जानीहै कि हिन्दू राजोंमें भी सडकोंकी पैमाइश होती थी, इस काममें जैसा यंत्र लायाजाता था उसका वर्णन आबूमाहात्म्यमें मिलताहै, देशियोंके अनुमान कियेहुए अन्तर भी किसी न किसी निश्चित नियमसे ही निकालेगयेहैं, उनको निरा अनुमान मानना ठीक नहीं है।

मेरा सन्तोष मदारीलालके दलकी पैमाइशके सिवाय अन्य दलपर नहीं होता था, परन्तु सदा एक दलके ज्ञानको उसी स्थानको गमन करनेवाले दूसरे समूहकी सहायताका आधार वनाता था, और इस प्रकारसे फिर एक दूसरे दलकी जानकारी और कामकी वातोंसे जिनको वह मेरे पास कहते, प्रत्येक स्थानकी पूरी जाँच परताल करनेसे मैं परम संतुष्ट होताथा।

इस प्रकार इस बृहत देशके मार्गोंकी रेखाओंसे मैंने कई जिल्दें भरडालीं, और जिन स्थानोंकी स्थिति निश्चय होचुकी थी उनका सही नक्शा वनालिया और उसमें अपनी समस्त जानकारी लिख दी, विशेषकर मैं पश्चिमी राज्योंका वर्णन करताहूं, कारण कि मध्यदेश वा उस देशकी पैमाइश प्रत्येक ओरसे जो या तो पछाहमें ऊंची अर्वलीसे वा दक्षिणमें विन्ध्यपर्वतसे निकलनेवाली चम्बल और उसकी सहयोगिनी दूसरी नदियोंसे सींचाजाताहै, मैंने स्वयं ऐसी ठीक शुद्धताके साथ की है कि जवतक वडी पैमाइश त्रिकोणमितिके अनुसार दक्षिण-

से आगे बढ़कर सारे भारतवर्षमें न हो तबतक यही प्रत्येक राजनैतिक और सैनिक पुरुषके लिये उपयोगी रहेगी।

इन देशोंमें उत्तर सतलज तक, और पश्चिममें सिन्धुनदीतक जो विस्तृत समान भूमि है और जहांपर भूगोलसम्बन्धी विषयोंका एक साथ समावेश करना इन स्थानोंकी अपेक्षा बहुत सरल है; जहां बीचमें पर्वती भूमि आगई है, इन भिन्न भिन्न रेखाओंको मैंने ऊपर लिखे नकशेमें अंकित करके इसको त्रिकोणमितिसे जांचनेकी इच्छा की।

मैंने कर्मचारियोंको फिरसे इस कामके लिये भेजा जिनसे वह भली प्रकार परिचित होगयेथे. उन्होंने वहां कार्य्य आरम्भ करदिया. और मैंने अनुभवसे भी इस विषयमें उन्हें बहुत चतुर करदिया था. जहां जिनकी स्थिति निश्चत होगई थी उनमेंसे प्रत्येकको उन्होंने केंद्र मानकर २० मीलके अंतर तक प्रत्येक नगरको जानेवाले मार्गको अंकित करलिया चुने हुए स्थान बहुधा समानिबाहु और त्रिकोण बनाते थे, यद्यपि उनकी जानकारीको क्रमपूर्वक लगाना बड़ा कठिन काम था. तो भी वह ऐसी रीति थी कि जिसके द्वारा देखनेवाला आपही अपनी अशुद्धता जान लेता था. कारण कि ये रेखाएं प्रत्येक दशामें एक दूसरेको काटती और परस्परको शुद्ध करती थीं. इस प्रकारके साधनोंसे मैंने इस अज्ञात देशमें कार्य साधा कि जिसका कुछ फल पाठकोंपर स्वयं प्रगट है, पर मैं क्या करूं मेरा स्वास्थ्य मेरी इच्छाके विरुद्ध बारबार भाग मुझसे त्याग कराता है, जो विचार कि इस यात्रामें १० दस जिल्दोंमें मैंने लिखा था वह बहुत थोड़ेसे अंतमें दिखागया।

नक्शोंमें स्थित रक्खी हुई हैं, यह उन नक्शोंकी बात है जो मुझसे पीछे बने हैं, और जो नई रेखा उनमें बढाई गई हैं, और भूगोलके ज्ञाता साहसी पुरुषोंने कई नये स्थान नियत किये हैं इस कारण मैं भी इस सुधारक अंशको बडी प्रसन्नतासे अपने नक्शेमें स्थान देता हूँ।*

१८१७ से सन् १८२२ तक मैंने कई पैमाइशी रेखा निर्माण कीं और यहां मैं अपने सम्बन्धी (कप्तान पी. टी. वाघ) दशवीं रजमट लाइट केवलरी बंगालके लिये कृतज्ञता प्रकाश किये विना नहीं रहसक्ता कि जिसकी सहायतासे मेरे भूगोल सम्बन्धी इस परिश्रममें सुधार हुआ, इस महोदयने एक वृत्ताकार पैमाइश की थी जिसमें मेवाडके लगभग सीमाके स्थान राजधानीसे आरंभ कर चित्तौर मण्डलगढ जहाजपुर राजमहल, और लौटते हुए भिनाय वदनौर, देवगढसे लेकर जहांसे वह चले थे वहांतक आगये, इस पैमाइशके आधारपर मैंने सीमाके मध्यस्थान भी नियत किये, जिसके निमित्त मेवाड अपनी स्थिति पहाडियोंके कारण उपयोगी समझ रहा है।

सन् १८२० ईसवीमें मैं अर्बलीको लॉघकर एक यात्रामें लगा जिसमें कुम्भलमेर पाली होकर मारवाडकी राजधानी जोधपुर वहांसे मेरते होकर लूनीनदीके मार्गका पता लगाता हुआ उसके मूल स्थान तक अजमेर पहुँचा, और चौहान तथा मुगल राजाओंके इस प्रसिद्ध स्थानसे आगे वढकर भिनाय वनेडाके मार्गसे मध्यभागोंमें होता हुआ उदयपुर लौटआया।

मेरे निश्चित किये जोधपुरके स्थानमें जो पश्चिम और उत्तरके भूगोल सम्बन्धी स्थलोंके नियत करनेमें मुख्य स्थानके समान काममें लायागयाहै, इसमें अक्षांशमें केवल ३ कलाका और रेखांशमें इससे कुछ ही अधिक अन्तर पडा, जिसके द्वारा मैंने वीकानेरका स्थान नियत किया था वह मिस्टर एलफिन्सटन्के अंकित किये हुए चिह्नसे सर्वथा आनमिला, जो वात उसने कावुलमें एलचीके समान जाते हुए अपनी यात्राके वृत्तान्तमें लिखीहै।

उदयपुर जोधपुर अजमेर आदिके स्थान जो मैंने निरीक्षणद्वारा नियत कियेथे, और हण्टर साहवके नियत किये अंकोंके सिवाय मैंने मिस्टर जे. वी.

---

* इस नक्शेमे मालवा देशतक ही लिखा गया है। जिसका भूगोल कप्तान डैंजरफील्डने बडे परिश्रमसे शोधकर सुधारा और बढाया, यद्यपि इस सब देशके भरनेको मेरी सामग्री दी बहुत थी, परन्तु मैंने इसमे उन मुख्य स्थानोको ही दर्ज किया जो इस राजस्थानमें मिलते हैं

कनल खुमाणरासेकी यात्रा नामक ग्रंथके निर्माताके लिये हुए थोड़ेसे नामोंसे [illegible] काम लिया कि जिनने सिंहोंसे नागपुर और जोधपुर होकर उदयपुरकी यात्रा की थी।

और गुजरात सौराष्ट्र सावद्वीप [डीसा] कच्छदेशका स्थल तथा जो [illegible] का सम्बन्ध दिखानेके लिये ही दर्ज किया गयाहै वह सर्वथा प्रसिद्ध भूगोल विद्याके जाननेवाले मूल जनरल रेनाल्डकी पुस्तकसे लियागया है, जनरल रेनाल्ड और मैंने इस एक ही अन्तरके बड़े भागका शोध किया, और इन देशोंके सीमाओं उलझनाके विषयमें मेरी साक्षी उचितहै, जिसमें हम स्वयं कभी नहीं गये, अब यह सिद्ध होगया कि इतिहास और उसके वर्णनकी पूर्ण सामग्रीसे रचा जाना नहीं होसकता। अब मैं शीघ्रतासे इन देशोंकी आकृतिका वर्णन करके इस निबन्धको समाप्त करूंगा इसके मुख्य स्थानोंके वृत्तान्त ऐतिहासिक विभागमें यथा स्थान लिखे जायगे।

यदि राजस्थानकी आकृतिकी ओर पाठकोंका ध्यान दिलाई और उन्हें आगे बढ़कर आबू पहाड़के सबसे ऊंचे गुरु शिखरपर बैठावें तो फिर प्रकृति की आकृति [illegible] और इस शिखरसे [illegible] [illegible] (जालोरी) तक [illegible] पहाड़ की आकृतिमें सबसे ऊंचे स्थानोंसे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

विख्यात चित्तौरके समीप इस उच्च समान भूमिपर चढकर ठीक पूर्वी रेखासे दृष्टिको कुछ हटानेके पीछे रतनगढ तथा सींगोली होकर कोटाको जानेवाले सीधे मार्गपर दृष्टि डाली जाय तो देखनेवालेको उस उच्च भूमिके क्रमसे तीन मैदान दीख पडेंगे, जो कि मानो रूसी तातारके मैदानोंके छोटे दृश्य हैं और वहांसे यदि चम्बलके आरपार दृष्टि डालीजाय तो शाहाबादके किलेसे रक्षित हाडौतीकी उस पूर्वी सीमातक देखनेसे और वहांसे एक साथ इस उच्च समभूमिसे नीचे आकर छोटी सिन्धुनदीकी तलैटीतक दृष्टिपसारने और फिर पूर्वकी ओर दृष्टि बढातेहुए चलै तो वह दृष्टि बुंदेलखण्डकी पश्चिमी सीमामें मंचकी आकृतिवाले पहाडपर जाकर रुक जायगी।

मैं इस बातको अधिक स्पष्टकरनेके लिये आबूसे लेकर बेतवापरके कोटडा-तकके ऊपर वर्णन कियेहुए देशकी उँचाई निचाईका एक चित्र देताहूं। यह चित्र बातमापक यंत्र द्वारा आबूसे चम्बलतक और चम्बलसे बेतवातक की हुई मेरी पैमाइश और साधारण निरीक्षाओंका फल स्वरूप है इसका नतीजा यह है कि कोटडाके स्थानपर बेतवा सागरकी सतहसे एक सहस्र फुट ऊंची, और उदयपुर तथा उसके पर्वतोंकी बीचकी भूमिसे एक सहस्र फुट नीची है, जिस उदयपुरकी उंचाई समुद्रकी सतहसे दो सहस्र फुट है, और वह रेखा जिसकी मामूली दिशा गरम कटिबन्धसे कुछ ही दूरपर है, वह अनुमान छः भौगोलिक अंश है, तो भी यह छोटा सा देश अपने रहनेवालों और भूमिसम्बन्धी गुप्त प्रगट [खनिज तथा वनस्पति] पदार्थोंसे और अनेक प्रकारके भेदोंसे भरा पडाहै।

जिसका रुख अबतक पूर्वकी ओरको है, अपने उस उच्च स्थानसे अब हम उस रेखाके दक्षिण और उत्तर दृष्टि डालैं जो रेखा मध्यदेश

—उक्ति भी ठीक नही है, अरवलीशब्द तो भाषा बोलचालमे आगयाहै, वास्तवमे यह आडावली नामवाला है अर्थात् रोकनेवाला वा बीचमे आया हुआ पर्वत, अर शब्दका देशमे कही भी पर्वत अर्थ नहीं है, टाड साहबकी यह निरी कल्पना है। अनुवादक

१ इन दर्शोंसे मेरा भली भाँति परिचय है और मुझे विश्वासहै कि जब बेतवासे कोटातक वैसी पैमाइश की जायगी, तो परिणाममे बहुत ही स्वल्प अशुद्धता होगी, सो भी इतनी ही कि कोटा थोडा सा अधिक ऊंचा, और बेतावाके बहावकी भूमि कुछ अधिक नीची नियत कीहुई विदित होगी।

२ मध्यभारतनामक प्रयोग मैंने मध्य और पश्चिम सम्बन्धी भारतके नकशेका नाम रखनेमे किया है, जो सन १८१५ ई० मे मार्किस—आफ हैस्टिंगकी भेट किया था और तभीसे यह नाम पडगया.

अर्थात राजस्थानकी मध्यभूमिको लगभग दो समान भागोंमें बांटता है, मेरे कहे मध्यदेशमें वह देश समझना चाहिये जो चम्बल और उसकी सहायकारी नदियोंके मार्गसे यमुनासंगम तक सब प्रकार उत्तम रीतिसे सीमाबद्ध कियागया है; और इसी प्रकार अर्वलीके ऊंचे पर्वतके पश्चिमवाले देशके पार्थिवी राजस्थान नाम देना बहुत ही उचित है।

इधर दक्षिणकी ओरको दृष्टि पसारकर देखाजाय तो विन्ध्याचलकी दूरतक फैलीहुई श्रेणीपर जाकर दृष्टि रुकजायगी जो हिन्द और दक्षिणकी स्पष्ट सीमा है। यद्यपि आबूके गुरु शिखरपर चढकर देखनेसे विन्ध्याचल एक छोटी सी ऊंची श्रेणीवाला जानपडेगा, और इसका कारण यह है कि इसके अवलोकन- के लिये हमारा यह स्थान उपयोगी नहीं है. हां यदि दक्षिणकी ओरसे देखा जाय तो स्पष्ट दिखाई देगा. और इस उतारभरमें कितने ही एक ऐसे ऊंचे विषम स्थान हैं. जो उतारके वैसे ही कठिन स्थलोंसे सैकडों फुट ऊंचे हैं।

अर्वलीकोभी विन्ध्याचलसे मिलाहुआ कहा जासकता है चंपानेरसे नगर उसके मिलनेका स्थान है और अर्वलीका विन्ध्याचलसे निकलकर फैलना कहना अनुचित भी नहीं है. यद्यपि उत्तरकी अपेक्षा यहां इसकी ऊंचाई बहुत न्यून है. परन्तु दक्षिणभरमें कुनावाटा. डूंगरपुर और ईडरसे आरंभकर अम्बा भवानी और उदयपुरतक अपना विशदरूप धारण किये है।

यदि आबूसे मारवाडकी उच्चभूमिपर दृष्टि डालें तो विन्ध्याचलकी सबसे ऊंची चोटियोंसे निकलकर उसकी काली मिट्टीके मैदान उत्तरकी ओरको [illegible] अनेक सोतोंसे [illegible] दिखाई देंगे. इनमें कई एक तो [illegible] सीधे जाकर चम्बलमें मिलते हैं, और इनमें [illegible] राजस्थानकी [illegible] भूमिमें [illegible] अपना मार्ग बनाती हुई चम्बलमें मिलती है।

यदि [illegible]

स्थानके रेखामें स्थित राजधानी उदयपुरसे लेकर औगणा, पानडवा, और मेरुपुर होते हुए सिरोहीके पासवाले पश्चिम ओरके उतारतक देखें कि यह अनुमानसे साठ मील तक सीधी रेखामें चलागया, और जिस स्थानमें उदयपुरकी ओरके चढावसे लेकर मारवाडके उतार तक पहाडीपर पहाडियें और पर्वतों पर पर्वतोंके सिलसिले उठे हुए दृष्टि लेआते हैं, और इस सारे प्रदेशमें सिरोहीकी सीमातक प्राचीन जातिके लोग निवास करते हैं जो अपनी जंगली अवस्थाकी स्वतन्त्रतामें प्रसन्न रहते हैं, न वह किसीको करदेते न वे किसीके आधीन हैं * इनके मुखिया रावत् उपाधिवाले एक ही वंशके होते हैं, औगणोंके रावत्के आधीन पांच सहस्र धनुषधारी एकत्रित होसकतेहैं, और दूसरे भी इसी प्रकार कितने एक योधा एकत्रित करसकतेहैं। और चराईका सुभीता देखकर बचावके स्थानोंके निकट यह छोटी २ जंगली वास्तियोंमे छिन्न भिन्न हुए रहते हैं।

यदि कुम्भलमेरके किलेके ऊपरसे उस पर्वतश्रेणीपर दृष्टि डालैं जो अजमेर तक उत्तरकी ओरको चली गईहै तो उसका मश्वाकार रूप थोडी ही दूरपर लुप्त होजायगा उसकी अनेक शाखा शेखावाटीके ठिकानों और अलवरमें

---

* महाराणा उदयपुरके यह लोग आधीन हैं और कर भी देतेहैं सम्पादक।

१ रावतके सिवाय और भी उनकी उपाधियें हैं अनुवादक।

२ मेरी इच्छा इनके स्थानोमे जानेकी थी और इनके स्वामियोसे बातचीत होनेपर उन्होंने मुझसे कहा कि हम आपको सत्कार पूर्वक उन स्थानोमे लेचलेंगे, और मुझे भी इस बातका पूरा विश्वास था कि सभ्यजातिकी अपेक्षा जगली लोग अपने वचनका विशेष ध्यानरखतेहैं, कई वर्ष पहले मेरे एक आदमी मदारीको इस देशमे होकर जाना पडा था. इन लम्बीवाद्रियोंके घाटमें दहाडका एक स्वामी मरगया था सब मनुश्य बाहर गयेथे, उसकी विधवा स्त्री अकेली झोपडीमें थी, मदारीने उससे अपना वृत्तांत कहा और मार्गमे जानेके लिये रक्षाके प्रबन्धकी इच्छा की तब उसकी स्त्रीने मृत पतिके तरकससे एक तीर निकालकर उसको दिया और कहा इसको हाथमे लिये चले जाओ कोई भय न होगा इस तीरने वहीं काम दिया जो सर्कारी कर्मचारी यूरोपनिवासीको मुहर छापवाला लम्बा चौडा परवाना देता।

३ मेरुशब्दका अर्थ संस्कृतमे पहाड है, इससे कुमल वा कुम्भमेरका अर्थ कुंभाकी पहाडी वा पहाड है. ऐसे ही अजमेर अजयकी पहाडी अर्थात् जीतनेमें न आनेवाली पहाडीका है। " यह अनुमान टाड साहबका कल्पित है अजमीढका बसाया होनेसे यह अजमेर बिगटकर होगया है अनुवादक।

ऊंचे २ कगारवाले होनेसे मनको चकित करते हैं, जहांसे वह ऊंचाई कम होते होते तट समान होजातीहै ।

कुम्भलमेरसे अजमेरतकका सम्पूर्ण देश मेरवाड़ा कहाताहै, और इस स्थानमें मेरजातिके पहाड़ी जाति निवास करतीहै जिनका आचार व्यवहार और इतिहास हम आगे चलकर लिखेंगे इसकी चौड़ाईका औसत ६ से लेकर १५ मीलतक है और इसकी उपत्यका तथा ढालुओंपर लगभग १५० से अधिक गांव और खेड़े पृथक् पृथक् बसेहुए हैं जहां जल और चारा बहुतायतसे होताहै और उनकी आवश्यकताके अनुसार खेती बारी भी होजातीहै, यह बात सत्य है कि ऊंचे स्थानोंपर अत्यन्त ही श्रमसे खेती होतीहै, जैसे स्विटजरलैण्डमें पहाड़ोंपर अंगूरकी खेती होतीहै ।

गाड़ीचलनेके मार्गका इस पर्वतश्रेणीके आसपास कोई भी चिह्न दिखाई नहीं देता, इस कारण इसका आड़ा अर्थात् रोकनेवाला नाम बहुत ही सार्थक है कारण कि इस समयकी युद्धसामग्रीके सबसे प्रधान अंग तोपखानेको भी पश्चिम ओरके अनार्य्य उतारनेसे बचनेके निमित्त इस श्रेणीके उत्तरभागसे पार कर लेजाना पड़ता ।

यदि इस पर्वतश्रेणीपर दृष्टि डालें तो दोनों ओरकी घाटियोंके बीच [illegible] उनके ऊपर कई किले दिखाई देते हैं और बहुतसे सोते निकलकर पर्वतोंके नीचे अपना टेढ़ा बांका मार्ग बनाते हुए नीचेकी ओरको बहते हैं । इन्हींसे नदियें बनास, कोठेसरी, खारी, डाई, यह सब नदियें मिलतीहैं, जो मेवाड़के उपजाऊ प्रान्तको उपजाऊ करती हैं, और खारी नदी आगे चलकर [illegible] मिलकर मारवाड़ और मेवाड़की सीमा कायम करतीहै, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होजातीहै ।

कुंभलमेरकी इस ऊंचाईसे इस पर्वतशिलाके क्रमरहित समूहका दृश्य चाहे कैसी ही विराट दृष्टिगोचर हो परन्तु यथार्थमें मारवाडके मैदानोंसे ही उसका पूर्ण महत्त्व अधिक स्पष्ट दिखाई देताहै, जहां उसकी अनेकों चोटियें अनेक रूपमें एक दूसरे पर उठीहुई दृष्टि आतीहैं, वा सघन वनसे ढके टेढे वेढे उतारवाले अंधेरिये ऊंचे नीचे एकान्त स्थानोंको क्रूरदृष्टिसे मानो देखरहेहैं।

मनमें तो विचार उपस्थित होताहै कि अर्वलीको हिंदुस्थानके ऐप्पिनाइन [इटलीदेशका पर्वत] अर्थात् प्रायद्वीपके मलवार तटके घाटोंसे सम्वन्ध रखनेवाला कहूं, मेरी इस कल्पनाको नर्मदा और तापीका मार्ग उसके मध्य संकीर्ण भागमें होनेसे मिथ्या नहीं करता, जो उनकी भीतरी दशा और वनावटका मिलान करनेसे और भी दृढ होसकती है।

अर्वलीकी प्राकृतिक वनावट ही उसका सामान्य रूप है ग्रेनाइट पत्थर वडे भारी ठोस तथा गहरे नीलवर्ण स्लेटके पत्थरपर पडा हुआ अनेक प्रकारके कोने वनाताहै, पूर्वकी ओरको इसकी साधारण ढाल है, यह स्लेट पत्थर अपने ऊपर स्थित ग्रेनाइट पाषाणकी सतह वा मूलसे कुछ ही ऊंचा पायाजाताहै, कई प्रकारके क्वार्टज और प्रत्येक रंगतके सिसूटस् स्लेट पत्थर भी भीतरी घाटियोंमें वहुतायतसे पायेजातेहैं जिनके देखनेसे घरों और मंदिरोंकी छतका विचित्र सादृश्य दिखाई देताहै, जिस समय उनके ऊपर सूर्यकी किरणें पडतीहैं तव अपूर्व शोभा होतीहै मध्यमध्यमें नीच और सादनाइट जातिके चट्टानभी दिखाई देते हैं तथा अजमेरके पश्चिम और अनेक दिशाओंमें विस्तृत श्रेणियोंकी शृंगावली गुलावी रंगके कांचकी समान क्वार्टज जातिके पाषणके विराट् समूहोंसे दृष्टिको चकाचौंध कर डालती हैं।

अर्वली तथा उससे सम्वन्ध रखनेवाली पहाडियोंमें खनिज पदार्थोंकी कमी नहीं है, और यही धातुएं इस वातका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि इन्हींके वलसे मेवाडके राणाओंने अपनेसे अधिक वलशाली वादशाहोंसे दीर्घकाल पर्यन्त मुकावला किया और ऐसे वडे स्थान वनवाये जिनके कारण पश्चिमी शासक आजतक अपना गौरव समझते हैं, इन खानोंकी पैदावार राणाके निज आयमें वृद्धि करती हैं, आन दान खान इन तीन शव्दोंसे मिली एक कहावत है कि राजस्थानके राजाओंका मुख्य स्वत्त्व अर्थात् प्रजाकी उत्कट राजभक्ति व्यापारसम्वन्धके कर, तथा खानोंके स्वत्त्व संयुक्त रूपसे प्रगट हैं, किसी समय रांगकी खानें मेवाडमें वहुत उपजाऊ थीं, और कहते हैं उनमें

चांदी बहुतायतसे निकलती थी. परन्तु खान खोदनेवाली जातिके नष्ट होने तथा राजनैतिक कारणोंसे धनकी प्राप्तिके ये द्वार बन्द होगये, यहां तांबा बहुत भी उत्तम निकलता है उसीके पैसे बनाये जाते हैं, सलुम्बर सरदार भी अपनी जागीर की खानोंसे तांबा निकलवाकर राजाज्ञासे पैसे बनवाता है. पश्चिमी सीमापर पुरुषा नामका नीलमणि. लहसनियां बिल्लौर और छोटे मूल्यके पन्ने भी मेवाड़में पाये जाते हैं. यद्यपि मैंने इनका बहुमूल्य नमूना नहीं देखा तथापि राणाने मुझसे यह बात कही थी कि हमारे यहां बहुमूल्य, और प्रायः प्रत्येक प्रकारके खनिज पदार्थ पाये जाते हैं ।

अब हम पठार या मध्य भारतकी उच्च समभूमिकी ओर दृष्टि डालते हैं कि जिसकी आकृति इस मनोहर देशकी अपेक्षा कम उपयोगवाली नहीं है । यह दक्षिणकी ओर विन्ध्याचलसे और पश्चिमकी ओर अरवलीसे पृथक् है, इस प्रकार इसकी रचना निश्चित प्रकारकी है. इसमें पिछली रचनाके या ढेर जातिके पत्थर हैं. नकशेमें इस उच्च समभूमिकी परिधि भलीभांतिसे दिखाई है इसका धरातल यद्यपि अत्यन्त ही विषमरूपसे दिखाई देता है. तथापि यह नताकृति रूपसे श्रेणियोंमें बराबर परिवर्तित होता चला गया है ।

अब हम मध्यभारतसे आगे दक्षिणकी ओर पग बढ़ाते हैं और उच्च समभूमि से पृथक् अलग खड़े हुए पहाड़ोंपर स्थित सिरोहीको पार्श्वभागमें छोड़कर, आगे आबू पहाड़को समझें (इसके निकट सम्बन्ध वाले पहाड़ोंके साथ कहीं)

कोटा और पालीके घाटके मध्यवाली थोडी सी समानभूमिको छोडकर जहां यह वडी नदी चट्टानोंकी रुकावटोंमें होकर बडे जोरसे बहती हुई दीखतीहै।

रणथम्भोरके समीप यह उच्च समभूमि ऊंची २ कतारोंके रूपमें परिवर्तित होजातीहै, जिसकी चोटियें धूपमें चमकतीहैं, आकृतिमें यह विषम और शिखर रहित है; यद्यपि यह पर्वतके सिल सिलेसे पृथक् है तथापि पहाडकी बनावट इसमें विद्यमान है, यहांकी पृथक् सात श्रेणी सात पडासे कम नहीं है, इनमें होकर बुनास नदी जाते जाते चम्बलमें जामिलती है, रणथम्भोरके आगे करौलीसे आरंभकर उस नदी तकका समस्त मार्ग एक असम मंचाकारकी भूमि है, जिसके शिखरके तटपर ऊत गिरि मण्डरायल और रणका विख्यात किला है, इसके पूर्वी पार्श्वमें एक दूसरा ढालू मैदान है, कहतेहैं कि सिन्धुके सोतेके समीप लाटौती स्थानसे यह आरंभ होताहै और चंदेरीखनियादाना नरवर तथा ग्वालियर होता हुआ देवगढ़के समीप गोहदके मैदानमें समाप्त होजाता है इसका उतार बुंदेलखण्ड और वेतयाकी वादीमें चलागया है।

यद्यपि मध्य भारतके धरातलमें यह देश प्रसिद्ध है तो भी इसकी चोटी विन्ध्याचलके शिखरकी सामान्य उँचाईसे कुछ ही अधिक ऊंची और उदयपुरकी वादी तथा अर्वलीके मूलकी समानतापर है इसीसे इन दोनों श्रेणियोंका ढालू उतार ऊपर कही हुई उच्च और समभूमिकी जडौंतक विस्तृत और विषम है जिसका स्पष्ट प्रमाण नदियोंके साधारण मार्ग हैं, जैसा यहां जलके वहावका वेग कठोर चढानोंको तोड़कर प्रबलतासे अपने मार्गको बनाता है, ऐसे पृथ्वीमें बहुत थोडे विभाग होंगे यहां चार नदी वडे प्रवल वेगसे वहतीहैं, जिनमेंसे चम्बल राइन [जो यूरोपकी रोन नदीकी बराबर है जो ६५० मील लम्बी है] इन नदियोंने पर्वती जलकी सतहसे आरम्भ कर चोटी पर्य्यन्त जो तीन सौ फीटसे छः सौ फीट तककी सीधी ऊँचाईपर है काट डालाहै, जिससे वहांकी चट्टान मनुष्यके हाथकी टांकी दी हुईके समान प्रतीत होतीहै, इसके सिवाय पुरातत्त्वके ज्ञाता प्रकृति तत्त्वके प्रेमी जनको जिसे प्रकृतिकी ऐसी विषम दशा देखनेकी इच्छा हो रामपुरासे कोटा तक ऐसे विशेष मनोरम स्थान बहुत थोडे मिलेंगे।

इस विषम भूमिका धरातल बहुत ही भिन्न प्रकारका है कोटेके समीप आगेको निकले हुए चट्टानपर कई एक स्थानोंमें तो वनस्पतिका चिह्न मात्र तक भी नहीं दीखता, तिसपर जहां वह तिरछा कोन निर्माण करता नदीके किनारेतक पहुंचताहै, वह भारतवर्षकी सबसे अधिक उर्वरा और उपजाऊ भूमिमेंसे एक है। और

यहां वृटिशभारतके प्रत्येक स्थानसे भी उत्तम जहां कहींं होतेहैं, जैसा किरा-नके समीप नागराजका झरना है, वैसे उसके कनारे व पार्श्वभागोंमें अत्यन्त विचित्र हैं और गहरे गहरे खाड़े हैं इनसे छोटी २ नदियें निकली हैं, और यहांकी कारीगरीका बहुत सा नमूना अबतक यहांके प्राचीन मंदिर और मका-नोंमें विद्यमान है, जो यहांके दर्शन करनेवालोंके नेत्रोंको सफल करताहै।

जैसा कि पहले कहाजाचुकाहै यह मध्यस्थ ऊंचाई पिछली रचनाकी है जिसको ट्रेप कहते हैं जहां चक्मकने इसको नष्ट करदिया है, वहां इसका रंग कुमरीके समान श्वेत है यह बड़ा कठोर है और मिलता दानेदार है, यद्यपि इसपर टांकी कठिनतासे चलसकती है, तो भी वाटेल्लीके पत्थरकी खुदाई का काम शिल्पकारके लिये उपयोगी होसकता है, पश्चिमकी ओर भी इसका रंग सर्वथा श्वेत है, टोड-के निकट श्वेत और धुंधली मिला हुआ, तथा शाहाबादके समीप लाल और गुलाबी है, जब जलवायुका प्रभाव इसके पृथ्वी उत्थापन पड़ता है, तो वह स्वरूप बदलकर धंकरीला होनेका भ्रम दिखाता है।

खनिज धातुओंसे भिन्न यह बनावट उपयोगी नहीं है, यहां केवल सीसा और तांबा ही प्राप्त होताहै, तथापि यह अलग अलग दशामें बहुतायतसे मिलते हैं, जिसमें तांबा अधिक मिलताहै, कहाजाता है ग्वालियर प्रान्तमें अनन्त सोने चांदीकी खानें थीं, जहांके नमूने भी मैंने मंगाये थे, परन्तु अब वह खानें बंद हैं, देशीलोग खनिज पदार्थोंके निकालनेमें डरतेहैं यद्यपि उनके यहां सोना चांदी बहुतायतसे पायेजाते हैं, तो भी वे अपने स्वार्थके वास्ते रत्नोंकी सामग्रीके लिये ही खानोंकी खुदाई और देखते हैं।

जोधपुर पहाड़ियोंका वर्णन होचुका अब मैं अपने पाठकोंका ध्यान उन पहाड़ोंकी ओर आकर्षित करूंगा जो इन शिलाओंसे निकलीहुई हैं और उपयोगी पत्थरोंकी ओर दिखाऊंगा।

उतार हिमालय और दक्षिणका विन्ध्याचलके मूलसे है, यद्यपि मेरे पास साधनकी कमी नहीं है तोभी मेरी यह इच्छा नहीं है कि मैं विस्तीर्ण और अनेक रूप धारण करनेवाले नर्मदाके मार्गोंका वर्णन करूं कारण कि जिस कालमें हम ग्रीष्मप्रधान विन्ध्यपर्वतके शिखरपर नर्मदाके कछारमें उतरनेके निमित्त चढते हैं तभी हमसे राजस्थान और राजपूतोंका सम्बन्ध छूटजाता है और हमारा मिलाप इस देशकी मुख्य प्राचीन जातियोंसे होजाता है जो इस भूमिके पहले स्वामी हैं इनका वर्णन मैंने दूसरोंके निमित्त छोड़दिया है और अपने वर्णनको मैं मध्यभारतकी नदियोंमें प्रधान नदी चम्बलसे आरंभ करके उसीमें समाप्त करूंगा ।

पहाडियोंके समुदायके बीचमें विन्ध्याचलके एक अति ऊँचे स्थानपर चम्बलके सोते हैं, उस स्थानपर इनका नाम जान पावा है, और उसी स्थानसे चम्बल चम्बेला और गम्भीर यह तीन सोते निकलतेहैं और दक्षिणी पार्श्वभागसे दूसरी नदियां निकलती हैं, जो नर्मदामें जाकर गिरती हैं और क्षिप्रानदी पीपलोदासे छोटी सिन्धु * देवाससे और दूसरी छोटी छोटी नदियां उज्जैनके पास होकर सबकी सब चम्बलमें पृथक् पृथक् स्थानोंपर उसके उच्च समभूमिमें प्रवेश करनेसे पहले मिलजाती हैं ।

वागडीसे काजी सिंधु और सोडादिया रावोगढसे उसकी छोटी शाखा, मोरसूकडी और मागडदासे नेवज वा जाम्नीरी, और आमलखेडाकी घाटीसे पार्वती निकलती है, जिसकी दौलतपुरसे विशेष पूर्वी शाखा निर्गत होकर फरहर स्थान पर उसके साथ जा मिलती है, विन्ध्याचलके ऊंचे शिखरपर इन सबके निर्गत स्थान हैं, जहांसे यह उच्च समभूमिमें अपना मार्ग निकालकर ऊंचे स्थानोंपरसे गिरती हुई अन्तमें नुनेरा और पालीके घाटोंपर चम्बलमें मिल जाती हैं यह सब दाहिनी ओरसे मिलती हैं ।

बनास नदी बाईं ओरसे इसके जलको बढारहीहै जो अर्वलीसे निकलकर बारहों मास बहनेवाली छोटी छोटी नदियों और उदयपुरकी झीलोंमे निकलने-

* यह चौथी सिधु है, पहली सिन्धु, छोटी सिन्धु, काली सिन्धु और चौथी लाटानीके समीप सिरोजके ऊपरवाली पश्चिमी उच्च समभूमिपर बहनेवाली सिन्धु । सिन् शब्द सीथियन नदीवाचक हैं यह अब प्रचलित नहीं है ।

१ कालीसिन्धुका गागरौनकी चट्टानोंके समीप और पार्वतीनदीका प्रवाह छत्राके समीप बहुत ही मनोहर और देखने योग्य है । यह वहांसे पांच मील है छत्रामें दो बार ठहरनेपर भी मैं वहां न जासका ।

वाली [illegible] इसमें आन मिलतीहै. मेवाड़ [illegible] सीमा और [illegible] पश्चिम [illegible] चम्बलमें मिलतीहै. [illegible] कई छोटी २ नदियें मिलती हैं जिनका [illegible] और [illegible] और [illegible] के मध्य [illegible] गंगापुर [illegible] मिलजातीहै।

छोटी २ [illegible] छोड़कर चम्बलकी लम्बाई पांच सौ मीलके [illegible] होगी. इसके किनारेपर [illegible] जातिके लोग निवास करतेहैं जैसा सिसोदिया. चन्द्रावत राठौड़ गौड़ हाड़ा [illegible] [[illegible]] [illegible] भदौरिया. कछवाहा. [illegible] चम्बल और [illegible] के मध्य [illegible] इस प्रकार [illegible] पूर्व और [illegible] तथा मध्यभागके राजस्थानकी [illegible] सामान्यरूपसे लिखके [illegible] ।

बहकर आनेवाली वैसे ही खारी जलसे पूर्ण नदियोंके बहावकी मिट्टी आदिसे बना है ।

यह रण १५० मील लम्बा है, और भुजसे बलियारी तक उसकी अधिकसे अधिक चौडाई ७० मीलके लगभग है, यात्री उसी मार्गसे इसको पार करते हैं कारण कि इस खारे दलदलके मध्यमें उनके ठहरनेके लिये एक पृथक् मनोहर भूमि है, गरमीके दिनोंमें उसकी धोखादेने वाली सतह पर जिसमें घोर भयानक रेती भरीहुई है, खारी नूनकी एक बडी उज्ज्वल पपडीके सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देता, वर्षामें वहां मैला और खारी दलदल होजाता है, बहुत स्थलमें इसकी गहराई ऊँटकी छाती तक होती है, यहां एक खारी कावा मनोहर स्थान है, यहां ऊँटके लिये चारा और यात्रियोंको विश्राम मिलता है ।

इस खारी दलदलके सूखे किनारोंपर मरीचिका भ्रमका दृश्य विलक्षण रूपसे दिखाई देता है जो थके यात्रियोंके सिवाय सबका मनरंजन करता है, कारण कि वहां पंक्तिबद्ध बुर्जों, शान्तिमय बस्तियों और सघन कुञ्जोंमें स्वर्गकी समान विश्राम स्थानोंको अवलोकनकर उसकी ओर मृग व्यर्थ धावमान होता है और ज्यों ज्यों यह आगे बढताहै त्यों त्यों वह दृश्य पीछे हटता जाताहै यहां तक कि सूर्य अपने तेजसे इन मेघसे ढके बुर्जोंको लुप्त करके उसकी दौडको भी निष्फल करदेताहै ।

मरुस्थलमें प्रायः ऐसे दृश्य बहुत दिखाई देतेहैं, और जहां विशेषकर लवणकी पपडियां होती हैं वहां यह दृश्य अधिकाईसे दीखते हैं, परन्तु भिन्न२ हेतुओंसे यह भिन्न २ प्रकारके होतेहैं, कभी २ यह प्रबलता पूर्वक आकार बढाकर प्रतिबिम्ब डालनेवाली वस्तु एक लम्बी सी दीखता है पहले यह घनी और अपारदर्शक लम्बी होतीहै, फिर ज्यों ज्यों गरमी बढती है, त्यों त्यों पतली होतीजाती है, और जब बहुत ही गरमी पडती है, तब यह अत्यन्त सूक्ष्म होकर पतली पडजाती है और बाफ होकर उडजाती है, यह दृष्टि सम्बन्धी धोखा वा कौतूहल सी कोट अर्थात् शीतकालका किला कहाता है, राजपूत लोग इसको भलीभाँतिसे जानते हैं, और विशेषकर यह शीतकालमें ही दीखताहै और यह भी संभव है, कि

---

१ यहापर गोरखर घूमते हैं वे जैसे अरबोंके पूर्वज उनके समयमें थे वैसेही अब भी हैं उनका स्थान जंगल वा खारी स्थानोंमें होता है यह भीडभाडसे घबरातांहै और हाकनेवालेकी चिल्लाहट पर कुछ ध्यान नहीं देता । जाबकी पुस्तक ३४ । ६ । ७ ।

लूनीनदीके वालोतरा स्थानसे आरंभकर सब घाट उमरसुमरा और जैसलमेरके पश्चिम ओरके विभाग दाऊद पोत्रा तथा बीकानेरकी दक्षिणसीमाओंके बीचके इस चौडे खण्डमें बिलकुल उजाड है, पर सतलज नदीसे आरंभकर रणतक पंचाससे सौ मील तककी चौडाई और पांच सौ मीलकी लम्बाईवाले देशमें पृथ्वीके अनेक भाग उपजाऊ पायेजातेहैं, जहाँ सिंधुके कछारमें आकर गडरिये अपनी भेडें चरातेहैं यहांके जलझरनोंके नाम तीरपार रार और दर है यह सब जलके वाचक हैं, जिनके समीप मरुस्थलके रहनेवाले सोडा, राजडा मांगलिया और सहराई लोग एकत्रित होते हैं । *

इस स्थानमें मैं सज्जीखारके क्षेत्रों लवणकी झीलों अथवा मरुस्थलोंके दूसरे पैदावारों अर्थात वनस्पति और खनिज पदार्थोंका कथन नहीं करूंगा यद्यपि कान सम्बन्धी वर्णन शीघ्रतासे किया जासकताहै कारण कि जैसलमेरके समीप पीले पाषाणकी केवल एक ही पहाडी है, जिसका पत्थर आगरेकी उस प्रसिद्ध इमारत शाहजहां वेगमके 'ताज' नामक रोजेमें वहुतायतसे लगाया गयाहै ऐसी वनावट अरबदेशमें मकानोंकी वहुधा होती है ।

अव यहां न तो सिंधुनदीके कछारका वर्णन कियाजायगा और न मरुस्थलके रेतीले टीवेकी अन्तिम सीमावाले उस नदीके पूर्वीभागका वर्णन करूंगा, किन्तु यहाँ अब इतना ही कहना बहुत होगा कि वह छुद्र नदी जो भक्खरके टापूसे सात मील दूर उत्तरमें दाराके समीप सिन्धुसे पृथक्‌होकर लखपतके धोरे सागरमें गिरती है और उस कछारके इस पूर्वी भागकी चौडाई प्रगट करती है जो मरु देशकी पश्चिमी सीमा बनाताहै, यदि कोई मुसाफिर इस खीची सिन्धुकी समानभूमिसे आगे पूर्वकी ओरको पग धरै तो वह मरुस्थलकी सीमाको उसके उन ऊंचेररेतीले टीवोंके सहित स्पष्ट रूपसे देखलेगा, कि जिनके नीचे सोकडा

---

* सहराई सहरा अर्थात् मरुस्थलसे बनाहै इस कारण सहराजन वा सहराघन सहरा मरुस्थल और जदन मारना इन दोनो शब्दोका संक्षिप्त अपभ्रंश है राहजनी—अर्थात् राहमे मारना । राह-वर—मार्गपर पिंडारोंने इसीको बिगाडकर लावर कियाहै, लावरके अर्थ उनके यहां लूटमारके हैं ।

१ घग्गरनदीकी धाराका नाम सोकडा है ।

राजस्थानइतिहास।

नदी बहती है जो सामयिक वर्षाकी बाढोंके सिवाय प्रायः सूखी रहती है यह बालूके बीच भी बड़े बड़े ऊंचे ऊंचे हैं और मोटी नदी अर्थात मोटा सागर (सिन्धुनद) के बाहरकी सीमा कहे जासकते हैं मोटा मज़ारण नदीका एक सीविस्तन नामकी नाम है जिसमें पंचनदसे आरंभ कर सागरतककी सिन्धुनदी ही तकका बोध होताहै।

इति।



अनुवादक–पं० बलदेवप्रसाद मिश्र–मुरादाबाद ।

विज्ञप्ति ।

प्रियभ्रातः !

यह तुम्हारा अनुवादित राजस्थानका इतिहास प्रथमभाग छपकर तैयार होगयाहै, यह तुम्हारे परिश्रमकी एक अमूल्य सामग्री है, इसके कितने ही अंश तुमने मुझे अनुवाद करते समय सुनाये थे, इसके शीघ्र छपनेकी तुम्हें बडी ही लालसा थी, पर वह तुम्हारी अभिलाषा उस समय पूर्ण न हुई, इस ग्रन्थके सम्पादन करनेके लिये आपने वहुत कुछ सामग्री सम्पादन की थी, जो तुम्हारे असमय परलोक सिधारनेके कारण स्वार्थीजनों द्वारा छिन्नभिन्न होगई, तुम्हारे इस कार्यके सम्पादनमें अनेक विघ्नोंका सामना हुआ जिनके ऊपर आपका वडा प्रेम था, वे भी सहायतासे मुख मोड गये, जिनके लिये आप सव कुछ करते तथा निरन्तर जिनके कार्य करते थे वे भी निष्प्रयोजन इसमें एक पंक्ति लिखने तकको भी सम्मत न हुए। इधर तुम्हारे वियोगने हृदयपर जैसा आघात किया वह अकथनीय है, एक वर्ष तक तो यह तुम्हारा ग्रन्थ उठाता और धरता रहा, कुछ करते न बना, इधर "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीके अनुरोधसे [जिन्होंने तुम्हारी कीर्ति अचल रखनेके लिये इस ग्रन्थको प्रकाशित किया तथा और भी कुछ करनेका विचार है] मैंने मनको सँभाला, और इस तुम्हारे ग्रन्थको सम्पूर्ण अवलोकन कर शुद्ध किया, मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सामने यह ग्रन्थ प्रकाशित होता तो तुम वडे ही प्रसन्न होते कारण कि तुम्हारा परिश्रम इसमें सबसे अधिक हुआ है, अब यह प्रथम भाग तैयार होगया है वेद शास्त्र और आर्ष वचनोंके विश्वासपर एक पुस्तक आपके पास भेजता हूँ तुम स्वयं पढना और जो तुम्हारी नई मित्र मण्डली हो उनको सुनाना और जो पुस्तकें और चाहियें तो और भी मँगाना. तुम्हारी नाग चन्द्रा तुम्हें वहुत याद करती हैं उनका भी स्मरण करना मुझे खेद है कि तुम अपनी अन्नपूर्णाको न देखसके न उसका तुम्हें देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ आपके

[illegible] में अपनी दशा क्या कहूँ, [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] भी' या 'मिल्यो न जगत सहोदर भ्राता' आप तो पहले ही लिख गये कि "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" पर [illegible] तो आपके [illegible] [illegible] गया, तुम्हारे निकट रहनेके कारण मैं तुम्हारे गुणोंको जानता. आपके [illegible] तुम्हारे विदेशी हितैषियोंने आज तक पं० [illegible]जी द्विवेदी, बाबू बाल-मुकुन्द गुप्त—भारतमित्र, "श्रीवेंकटेश्वरसमाचार", नागेन्द्र, ज्ञानसागर, मोहिनी आदिमें तुम्हारे गुण बखाने पर मैं तो कुछ भी न जानता मेरी यही दशा रही 'पर आये भगवान, जाने हम न अभागिया' अच्छा तुम भगवान रामचन्द्रके चरित्र रूप [illegible] में यह ग्रन्थ आपके पास भेजता हूँ स्वीकार करना।

मुरादाबाद, | तुम्हारा मित्र मैत्री-[illegible],
चैत्रशुक्लपूर्णिमा | ज्वालाप्रसाद.
संवत् १९५८. |



राजस्थानका सूचीपत्र।



(ग्रन्थकी पूर्ति)

परिशिष्ट भाग.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालय—मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



राजस्थानका इतिहास ।

(राजपूतजातिका वृत्तान्त ।)

प्रथम अध्याय १

पुराणमें कहा हुआ सूर्य और चंद्रवंशीय राजाओंका वृत्तान्त.

दोहा—वायुसूनु खलदलदलन, वंदों वारंवार ।
राजपूत गुण कहत कछु, द्रवहु समीरकुमार ॥ १ ॥
टाडमहोदय ग्रंथजो, आंगल भाषामाहिं ॥
लिख्यो जु चेष्टाकर बहुत, जाहिपढे भ्रम जाहिं ॥ २ ॥
सो भाषाकर कहत हों, अपनी मति अनुसार ॥
भ्रम प्रमाद जहँ होय कछु, बुधजन लेहिं सुधार ॥ ३ ॥
परमपूज्य गुणनिधि महा, ज्ञानी परम सुजान ॥
श्रीज्वालापरसाद यह, शोध्यो ग्रंथ महान ॥ ४ ॥
सेठ शिरोमणि विज्ञवर, अवनि अखण्ड प्रताप ॥
खेमराज छाप्यो मुदित, ग्रंथ बम्बई छाप ॥ ५ ॥



सर्वज्ञ सच्चिदानंद सर्वान्तर्यामी परमात्माको वारंवार प्रणाम करके राजस्थानका इतिहास आरंभ कियाजाताहै, कि जिस समय कुरु-क्षेत्रकी महासमरभूमिमें वीरपूज्य आर्य नृपतिगण अनन्त निद्रामें शयन करगयेथे, उनके साथ २ इस देशका इतिहास तथा यह-

मनुजीसे एक पीढी पीछे हुएहैं-कारण कि उन्होंने मनुसे एक पीढी पीछे उत्पन्न होकर उनकी कन्या इलाका पाणिग्रहण किया था, पुराणादि ग्रंथोंमें जो अन्यान्य राजाओंका वृत्तान्त पायाजाताहै वे सब इन्हीं दो वंशोंकी शाखा प्रशाखाओंमें उत्पन्न हुए हैं ।

किस समय सूर्य और चंद्रवंशके आदि पुरुष सबसे पहले भारतवर्षमें आये थे, इसका पता लगाना बड़ा कठिनहै, प्रसिद्ध पुराणोंमें जो कुछ वृत्तान्त पाया जाताहै उससे विदित होताहै कि सूर्य कुलकी प्रतिष्ठा करनेवाले मनु सातवें मन्वन्तरके समय प्रगट हुएथे, इस कालान्तक मन्वन्तरके वृत्तान्तको लेकरही संसारके प्रायः समस्त आदिसृष्टिके ग्रंथ रचे गयेहैं कारण कि, इस सम्बन्धमें प्रायः सबकी एकबात देख पड़ती है ।

इस ऐतिहासिक वृत्तान्त जाननेमें श्रीमद्भागवत, स्कन्दपुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण यह प्रधानहैं, यद्यपि उनमें स्थान स्थानमें अनैक्यता दिखाई देतीहै, परन्तु विचार करनेसे यह भली भांति जानलिया जाताहै कि सब पुराणोंने एकही अभिन्न असाधारण कार्यके निमित्त प्रगट होकर भूमिकी अवस्थाके अनुसार भिन्न २ मूर्ति धारण की हैं विचारसे देखाजाय तो उद्देश्यमें भेद नहीं है ।

संसारके चाहैं जिस किसी सृष्टिकी उत्पत्तिके बनानेवाले ग्रंथको पढो उन सबमें प्रायः एकही भाव दिखाई देगा, वही कल्प वही जलप्रलय वही भूमिकी उत्पत्ति और वही प्रजाका वर्द्धन मिलताहै, अग्निपुराणकी वह एक ही छाया सृष्टि उत्पत्तिके वर्णनमें सबके साथ एकाकार दिखाई देतीहै, वहां लिखाहै कि ब्रह्माजीके एकदिनमें चौदह मनु राज करतेहैं प्रत्येक मन्वन्तरमें ७१ इकहत्तर चौकड़ी युग अर्थात सतयुग त्रेता द्वापर और कलि बीत जातेहैं यह मनु बडे धर्मात्माहैं इन मनुओंके

१–स्वायभुव,स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, और इन्द्रसावर्णि यह चौदह मनुहैं, जितने कालमें एक मनु प्रजापालन करताहै, उतने कालको मन्वन्तर कहतेहैं यथा ''मन्वन्तरं मनोः काला यावत्पाल्यते प्रजाः ॥ एको मनुः स कालस्तु मन्वन्तरमितिश्रुतः ॥'' कालिकापुराण अ० २३

२–'' कृत त्रेता द्वापरञ्च कलिश्चेति चतुर्युगम् । दिव्यैर्द्वादशभिः [illegible] चैकसप्ततिः । मन्वन्तरं तु तज्ज्ञेयम् '' इति पद्मपुराण स्वर्गखण्ड २१ अध्याय.

मछली नदीके जलके साथ उनकी अंजलीमें आकर गिरी मनुजीने उसको नदीके जलमें फेंकदेना चाहा परन्तु मछलीने उनको निवारण करके कहा हे नरोत्तम! मुझे जलमें मत त्यागन करो मुझे जलके नाके आदि जलजन्तुओंसे बड़ी शंका होतीहै इस कारण मुझे किसी और स्थानमें रक्षित कीजिये मनुजीने यह सुनकर उस मछलीको एक कलशमें रक्खा परन्तु वह मछली पूर्वसे बड़ी होगई, और कहनेलगी मुझको इससे किसी बडे स्थानमें रखिये तब मनुजीने उसको सरोवरमें रक्खा, सरोवरमें पहुँचतेही देखते २ क्षणमात्रमें उस मछलीकी देह इतनी वढगई कि सरोवरमें न समा सकी, तब मनुजीने उसको समुद्रमें पहुँचाया वहां वह मत्स्य क्षण भरमें लाख योजनका होगया, तब मनुजीने अत्यन्त विस्मित होकर भक्तिपूर्ण वचनसे कहा हे भगवन्! आपको नमस्कारहै और किस कारणसे मुझे भ्रमा रहे हो, तब मत्स्यने उत्तर दिया कि, आजसे सातवें दिन समुद्र उफनकर सारे संसारको डुबादेगा, उस समय तुम प्रत्येक जीव, जन्तु, और वृक्ष लता,गुल्मादिका एक एक बीज लेकर सप्तर्षियोंके साथ नावपर चढजाना. पीछे मेरे प्रगट होनेपर उस नावको मेरे सींगमें बांधदेना तब तुम्हारी रक्षा होगी।

भविष्यपुराण देखनेसे जानाजाताहै मनुजी सुमेरु पर्वतपर राज्य करते थे उनका एक वंशधर ककुत्स्थनामक अयोध्यामें आनकर राज्य करने लगा, और क्रमसे उनकी बहुतसी सन्तति पर्वतके देशोंसे आकर संसारके सब देशोंमें फैलगई।

इस पवित्र सुमेरु* पर्वतके विषयमें भिन्न २ देशोंके धर्मग्रंथोंमें बडी विचित्र बातें देख पड़तीहैं भिन्न२ धर्मावलम्बी और भिन्न २ सम्प्रदायोंके उपासकोंने

---

* "दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेण तु। प्रागायतो महाभाग माल्यवान्नाम पर्वतः॥
पश्चिमे तु तथैवास्ते पर्वतो गन्धमादनः। पूर्वे समुद्रकूलात्तु भद्राश्वं नाम वर्षकम्॥
माल्यवानवधिस्तस्य केतुमालश्च पश्चिमे। गन्धमादनसीमान्त नवसाहस्रयोजनम्॥
परितस्तु तयोर्मध्ये मेरुः कनकपर्वतः।"

यह पर्वतराज सुमेरु दक्षिणमें नीलपर्वतसे उत्तरमें निषध पर्वतसे पूर्वमें माल्यवान पर्वतसे पश्चिममें गन्धमादन पर्वतसे व्याप्तहै, पूर्वमें समुद्रके किनारेसे भद्राश्व वर्ष है, माल्यवान नाम पर्वततक उसकी अवधिहै पश्चिममें केतुमाल वह गंधमादनकी सीमातक नौ सहस्र योजन है, इन्हीं दोनोंके बीचमें सुवर्णका पर्वत सुमेरु नामसे विख्यातहै।

सुमेरु पर्वतके विषयमें जो विवर्ण प्रकाशित हुएहैं उनकी यथार्थ भूमिका निर्णय [illegible] कठिन बातहै कारण कि उस समयसे इस समय पर्यन्त कितने [illegible] होनेसे इसके दीर्घकालमें इस भूमण्डलमें जितना विप्लव और परिवर्तन होगयाहै उससे यह बात [illegible] होसकतीहै कि पुराणोंमें जिनपर्वत और प्रदेशोंका वर्णन आयाहै उनमें बहुतसे अब समुद्रके [illegible]—

अर्थात् शक्तिके अनुसार भिन्न२ प्रकारसे वर्णन कर आने [illegible] निवासस्थान कहा है ब्राह्मणोंने इस पवित्र पर्वतको गणेश [illegible] ओंका जैनियोंने जैनाधिप आदिनाथका तथा ग्रीक लोगोंने [illegible] बनाया है. उनके मनमें इस स्थानमें ही सबसे मनुष्य जातिको [illegible] दूसरी सभ्यविद्याओंकी शिक्षा दी थी ।

इस सम्पूर्ण विषयका विचार करनेसे यह स्पष्ट प्रतीत होताहै कि संसारके ऐतिहासिक ग्रंथोंमें यह सम्पूर्ण भिन्न नाम एकही स्थानकेहैं, और एकही मनुके निवासस्थानहैं, उस समय हिन्दू और ग्रीक जातिमें कोई भेद न था सब मिलकर एक, साथ ही जीवन यात्रा निर्वाह करते थे, कारण कि आदिनाथ आदीश्वर असिरीश, वाघेश वेकश, मनु मीनेश और × नू यह एकही मानव पिताके भिन्न२ नाम हैं।

जिसदेशके विशाल वक्षस्थलको धोतीहुई आमुअक्षस वा जिहुन तथा अन्यान्य नदियें अपनी तरंगोंको विस्तारित करती हुई प्रवाहित हुई हैं, इन हीं नदियोंसे मेखलाभूत हुए सुमेरु पर्वतके पवित्र शिखरको सूर्य और चन्द्रवंशीलोग अपना कुलगुरु और आदि स्थान कहतेहैं। यह बात जेगतके इतिहाससे स्पष्टहै।

संसारकी समस्त प्राचीन जातियें उनका आदि वासस्थान इस उच्च भूमिको ही बताती हैं और किसी देशका निरूपण नहीं करतीं।

इस देवताओंसे सेवित उच्चभूमिको त्याग कर वैवस्वत मनु सिंधु गंगाके प्रवाहसे पवित्र हुई इस आर्य्यावर्त भूमिमें आयेथे और अपने विशाल वंशका बीज आरोपण किया और वह वृक्ष क्रमसे अनेक शाखा प्रशाखाओंमें शोभायमान हुआ और वे सब शाखा शनैः शनैः सम्पूर्ण भारतवर्षमें फैलगईं* ॥ ॥

× यहूदी और मुसलमान इस शब्दको नू कहते हैं, तो क्या यह नू मनु शब्दका ही अपभ्रंशहै ?

१ प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता सरवालटररेलेने अपने जगतके इतिहासमे स्पष्ट लिखाहै कि पानीके तोफानके पीछे भारत वर्षमे ही सबसे पहले वृक्ष लतादिकी उत्पत्ति और मनुष्योंकी वसती हुई थी, अपने मतके समर्थन करनेके निमित्त जो प्रमाण उक्तमहोदयने अपने ग्रंथमे दियेहैं, यदि उन सबको लिखाजाय तो एक बहुत बडा ग्रंथ तयारहो, इसकारण आवश्यकता समझकर उन प्रमाणोका एक ही अंश यहा लिखतेहैं, जो विशेप उपयोगीहै, वह कहतेहैं मूसाने जिस अरारट् पर्वतका नाम लियाहै उससे किसी एकही पर्वतका नाम ग्रहण नहीं होसकता कारण कि अर्मनी भाषामे अरारट् शब्दका अर्थ पर्वतमालाहै इसकारण यह अर्मनीमे न होकर काकेशस (कोहकाफ) की शैलमालाके किसी एक भागमे अवश्य स्थित होगा वह भाग अर्मनीकी अपेक्षा अधिक गर्म और उसके पूर्वकी ओर है इसप्रकार सरवाल्टररेलेके कथनसे प्रमाणित होताहै कि इन्होंने मनुजीकी वासभूमिको भारतवर्ष और शाकद्वीपके मध्यमे बतायाहै।

See Raleigh's History of the world.

* ऊपरके विचार टाडसाहब तथा विदेशी पुरुषोंकेहैं शास्त्रके गहरे विचारसे यह बात अच्छी भांति स्पष्ट होजातीहै कि आदिसृष्टिका स्थान भारतवर्षकी उत्तरीय पर्वतमाला और भारतवर्ष देशहै, उस भारतवर्षमेंही ब्रह्मावर्त्त आर्यावर्त्त देशहै "ब्रह्मणो ब्राह्मणा आवर्तन्ते उद्भवन्त्यत्रेति ब्रह्मावर्तः, आर्या आवर्तन्ते अत्रेत्यार्यावर्त्तः, ब्रह्मर्षीणां देशो मूलनिवासस्थान ब्रह्मर्षिदेश." जहां प्रजापति और ब्राह्मणोंने आदिसे निवास किया हो वह ब्रह्मावर्त्त, जहां आर्योने सदासे निवास किया हो वह आर्यावर्त्त, सरस्वती और दृषद्वतीके बीचका देश ब्रह्मावर्त कहाताहै, इसदेशमें जो आचार सदासे चला आता है वह सदा-

दूसरा अध्याय २.

सूर्य और चंद्रवंशी राजाओंकी वंशावली और [illegible] उनके होने या न होनेका विचार।

इन्द्रपुरी अमरावतीकी समान अयोध्यापुरीमें दीर्घकालसे जिन भारतीय आर्य नरपतियोंने राज्य किया था भुवन विदित श्रीरामचन्द्रजी जिनके कुलतिलक माने गये. उन पूर्णब्रह्म श्रीरामचंद्रजीका चरित्र सबसे पहले संस्कृत वाल्मीकिजीके द्वारा गाथाबद्ध हुआ. वाल्मीकिजीकी अनुपम [illegible] आजभी उन अयोध्याके राजाओंके वृत्तान्त वंशावली [illegible]

और आजतकभी उनकी नामावली प्रत्येक आर्यसन्तानकी जपमाला बनी हुई है, वाल्मीकिरामायणकी* रचनाके बहुतकाल पीछे कविकुलतिलक महर्षि कृष्णद्वैपायनने सूर्यवंशी राजाओंका धारावाहिक संक्षिप्त चरित्र अपने महाकाव्यमें संयुक्त किया, उन्होंने वाल्मीकिरामायणकी छायाका अवलम्बन करकेही सूर्यवंशका वर्णन कियाहै, परन्तु इन दोनों वंशावलियोंमें बहुतही भेद पाया जाताहै वहभी सामान्य नहीं दोनोंमें २१ पीढियोंका भेद पाया जाताहै ।

वैवस्वतमनु सूर्यवंशके आदि पुरुष हुएहैं, उनसे लेकर भगवान् रामचंद्रजीतक सब ३६ राजा वाल्मीकिजीके द्वारा और ५७ नरपति व्यासजीके द्वारा वर्णित हुएहैं, इन दोनों वंश सूचियोंमें इतना अन्तर क्यों दिखाई देताहै, इसका जानना बडा कठिन है, जो पुराण इस समय प्राचीन आर्यगौरवके एकमात्र आधारहैं, जो अंधकारमें प्रवेश करनेको मार्ग दिखानेके निमित्त एकमात्र दीपकके समानहैं, जब उन पुराणोंमें इतना अंतर दिखाई दे तब भारतके प्राचीन वृत्तान्तके जान्नेका उपाय क्या है, परन्तु साथही यहां यह प्रश्नभी उठताहै कि जो अपने असीम विद्यावलके कारण तीन कालका वृत्तान्त जान्नेवाले थे क्या वे भ्रममें पड़े, अथवा अपने आगे होनेवाले वंशधरोंको भ्रममें डालनेके अभिप्रायसे उन्होंने यह लेख लिखा ? नहीं ऐसा कभी नहीं होसक्ता वे महापुरुष थे वे परमात्माको जानेहुये थे उनके पवित्र हृदयमें किसीप्रकारभी ऐसी पापभरी वृत्ति नहीं समासक्ती, न उनमें असाधारण भ्रमकी वातें रहसकतीहैं, उन्होने जो कुछभी लिखा है वह सबकुछही शुद्ध और भ्रमरहित है, इस भेदका कारण हमको यह जानपडताहै कि उनके लिखे ग्रन्थ इससमय यथार्थ रूपसे नहीं पायजाते, इससमय जो ग्रन्थ प्रचलित हैं लिपिकारोंकी भूलसे उनमें बहुतसे अंश छूटगये हैं, और उनमें बहुतसा उलट फेर होगया है, इससमय इस झगड़े निवटानेकी हमको कोई बडी आवश्यकता नहीं है, इससमय विदेहवंशकी शाखाको इसवंशके साथ तुलना करके देखना चाहिये, कदाचित् ऐसा करनेसे थोडा बहुत इस भेदका पता लगजाय, एक वृक्षसे उत्पन्न हुई इन दो कुलशाकाओंकी समान करनेकी चेष्टा करके फिर सूर्य और चंद्रवंशी राजाओंकी समालोचना कीजायगी ।

---

* रामचंद्रके राज्यपर अभिषिक्त होनेपर त्रेताके अवसानमें वाल्मीकिरामायण लिखी गई है यथा— "प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषिः । चकार चरितं कृत्स्नं विचित्रपदमर्थवत् ।" उत्तरकांड.

विदेहवंशभी सूर्यवंशकी एक शाखाही है. इसशाखाके मूलपुरुष निमि [illegible], तमनुके ज्येष्ठपुत्र इक्ष्वाकुके पुत्र थे. कहते हैं महाराज इक्ष्वाकुके सौ पुत्र हुए थे. सबसे बड़े विकुक्षि पितृराज्यपर अभिषिक्त हुए. निमि और दंडकने मध्यप्रदेशका राज्य पाया, शेषपुत्रोंने अपनी २ इच्छाके अनुसार [illegible] अपना२ राज्य स्थापित किया.

महाराज निमिही विदेह वंशके प्रथम राजा और इसशाखाके प्रतिष्ठा करने-वाले हुए. निमिके पुत्र मिथि हुए. इनहीके द्वारा मिथिलापुरी बसाई गई. वाल्मीकिरामायणमें लिखाहै निमिसे लेकर जनक और कुशध्वजतक सब २१ राजा मिथिलाके सिंहासनपर आरूढ हुए. साध्वी जानकीजी इन जनकजीकी कन्या थीं जिनका नाम सीरध्वज था. जानकीजीका पाणिग्रहण श्रीरामचन्द्रजीने कियाथा, इससे महाराज सीरध्वज और महाराज दशरथका एकही समयमें होना निश्चित होता है और वाल्मीकिजीकी तालिकाके अनुसार इन दोनों शाखा-ओंको मिलायाजाय तो दोनोंमें ग्यारह पुश्तोंका अन्तर दिखाई देता है. [illegible] निमि इक्ष्वाकुके सबसे छोटे पुत्र थे इससे जनक और रामचन्द्र [illegible] पीछे हुए. इस ओर महाराज दशरथ जनक और रामचन्द्रके समकालीन [illegible] भी इक्ष्वाकुसे ३४ पीढ़ी पीछे हुए इसप्रकारसे [illegible] दशपीढी अधिक पाई जाती है।

और जो व्यासजीकी दी हुई वंशावलीमें देखिये तो [illegible] ३२ पीढ़ियोंकी अधिकता दीखपड़ती है [illegible] जनकका एक समयमें होना कैसे संभव [illegible] है।

अब कुछदेरके लिये सूर्यवंशको छोडकर चन्द्रवंशकी आलोचना करनी चाहिये पीछे दोनोंवंशोंके समसामयिक नरपतियोंकी जीवनीकी आलोचना करेंगे, चन्द्रवंश और सूर्यवंश दोनों वंशोंका बीज एकही कालमें बोया गया था परन्तु दोनोंकी पुष्टि ठीक एकही साथ नहीं हुई, चंद्रवंश धीरे धीरे पुष्ट हुआ, और काल क्रमसे धीरे धीरे उसने बहुत बल प्राप्त किया इसी बलके प्रभावसे एक समय एशियाका आधा खण्ड उनकी सहायताके लिये तयार होगया था, परन्तु सूर्यवंशकी यह शैली नहीं रही, उदय होतेही उसका प्रभाव एक साथही बहुत कड़ा होगया था, देखते २ असह्य होकर वह सम्पूर्ण भारतवर्षको दग्ध करने लगा, यहांतक कि एक समय भारत महासागरका प्रचण्ड लंकाद्वीपभी इसवंशकी दिग्दाही किरणोसे भस्म होगया था परन्तु सूर्यवंशकी अपेक्षा चंद्रवंशका बहुत विस्तार है ।

चन्द्रमाके पुत्र भगवान बुधने चन्द्रवंशकी प्रतिष्ठा कीहै बुधने वैवस्वतमनुकी कन्या इलाका पाणिग्रहण करके उसमें राजर्षि पुरूरवाको प्रगट किया, इनमहाराज पुरूरवाकी चौथी पीढीमें महाराज ययाति प्रगट हुए, इनकी दो स्त्री थीं एक तो शुक्राचार्यकी कन्या देवयानी, और दूसरी दानवेन्द्र वृषपर्वाकी कन्या शर्मिष्ठा महाराज ययातिनें देवयानीमें यदु और तुर्वसु नामक दो पुत्र और शर्मिष्ठामें द्रुह्यु अनु और पुरु तीन पुत्र उत्पन्न किये, इन पांच पुत्रोंमेंसे यह अनु और पुरु इनसे चन्द्र वंशकी विशेष पुष्टि और विस्तार हुआ, यदुकुलमें विश्वविजयी कार्तवीर्यार्जुन हैहय तालजंघ और भगवान् श्रीकृष्णने जन्म ग्रहण किया अनुके कुलमें अंगराज और रोमपाद और महावीर कर्णके पालक पिता अधिरथि सूत आदि राजाओंने जन्म ग्रहण किया, और सबसे छोटे पुत्र पुरुके वंशमें पाण्डव धृतराष्ट्र और द्रौपदीका जन्म हुआ ।

इसी पुरुवंशमें मगधदेशके अधिराज महाराज जरासंधका जन्म हुआ, कंसराजके वध करनेके कारण यह श्रीकृष्णजीके बडे शत्रु थे, और जरासंधके आतंकसे श्रीकृष्णकोभी सावधान रहना पड़ता था, युधिष्ठिरके मध्यमभ्राता भीमसेनने जरासंधका वध किया, अब इसके आगे हम यह विचार चलाते हैं कि इनमें परस्पर कौन किसके समयमें प्रगट हुआ है ।

चंद्रवंशके सम्पूर्ण राजा बुधकेही वंशधर हैं बुध चंद्रमाके पुत्र हैं इन्होंनें वैवस्वतमनुकी कन्या इलाके संग अपना विवाह किया, ऊपर जिन चंद्रवंशी राजाओंके नाम लिखेगये हैं, उनमें रोमपाद, कार्तवीर्यार्जुन, हैहय और तालजंघको छोडकर शेष सबही एक दूसरेके समसामयिक हैं, पाण्डव और धृतराष्ट्रके पुत्र

पुरुषोंका नाम पायाजाताहै, एक मान्धाताके पिताका जो इक्ष्वाकुकी अठारहवीं पीढीमें हुए थे दूसरे वह जो इक्ष्वाकुकी नवीं पीढीमें हुए थे.

४ सूर्यवंशी मान्धाताका चन्द्रवंशी शशविन्दुकी कन्या चैत्ररथीके साथ विवाह हुआ था, मान्धाता युवनाश्वके पुत्र थे इससे युवनाश्व और शशविन्दुका एकही समयमें होना निश्चयहै परन्तु खोजकरनेसे दोनोंमें चार पीढियोंका अन्तर पायाजाता है, शशविन्दु महाराज ययातिके पहलेपुत्र, यदुके दूसरेपुत्र क्रोष्टुके वंशमें उत्पन्न हुए थे, क्रोष्टु बुधकी सातवीं पीढीमें, और शशविन्दु क्रोष्टुकी छठी पीढीमें हुआ, इसकारणसे बुधकी बारहवीं पीढीमें इनका होना निश्चय हुआ और ऊपर यह सिद्ध कियागया है कि मान्धाताके पुत्र युवनाश्वने महाराज इक्ष्वाकुकी नौमी पीढीमें जन्म लिया था. इस ओर दोनों वंशोंमें तीन चार पीढियोंका भेद पायाजाता है यदि व्यासजीकी सूचीका यहांभी अवलम्बन कियाजाय तो इस सूर्यवंशकी शाखामें छः सात पीढियोंका अन्तर पड़जायगा.*

९ पुराणमें लिखे विवरणके अनुसार हरिश्चन्द्र, विश्वामित्र, परशुराम, कार्त्तवीर्यार्जुन और रामचन्द्र यह महात्मा एकही समयमें हुए हैं कारण कि हरिश्चन्द्र विश्वामित्रके समयकालीन थे, और विश्वामित्र रामचंद्रके समसामयिक थे, और परशुराम रामचंद्र तथा कार्तवीर्यार्जुन एकही समयके थे इससे परशुराम रामचंद्र समसामयिक हुए, और विश्वामित्र तथा उनके समसामयिक हरिश्चंद्र थे, आशय यह कि हरिश्चंद्र विश्वामित्र परशुराम कार्तवीर्यार्जुन और रामचंद्र एकही समयमें वर्तमान थे परन्तु यह बात सर्वथा असम्भव प्रतीत होती है पुराणोंके जान्ने वाले पाठक इस बातका विचार करके देखें कि पौराणिक आर्यवंशावलीमें कितनी गड़बड़ है,×

---

* एकवंशमे एक एक नामवालेभी कईपुरुष होगये हैं जिनपुराणोंसे वंशावली लीगई है उनमें पताभी लिखाहोता तो विचारनेमे सुबीता होता । अनुवादक ।

× विश्वामित्रके साथ हरिश्चन्द्र और रामचन्द्रजीका इतिहास मिलनेसे टाडसाहबने अनुमान करलिया कि यह सब एकही समयके थे, सो यह अनुमान ठीक नहीं, जिस इतिहासपुराणमें जो निर्णय कियाजाय उसके दूसरेभी कथा भाग अवश्य देखने चाहिये, वाल्मीकिजीने लिखा है कि विश्वामित्रजीने सहस्रोंवर्ष तपस्या की. दशसहस्रवर्षोंसे अधिक तो एकही दिशामें तपस्या कीथी, इनके समयमें कितनेही राजा होगये कारण कि इनकी बहुत बडी आयु हुई, यह ब्रह्मर्षि कहाते हैं, तो हरिश्चन्द्र त्रिशंकु तथा रामचन्द्रजीका विश्वामित्रके समयमें होना समझकर यह तीनों समसामयिक नहीं हो सकते, इसीप्रकार इक्ष्वाकुसे आरम्भ कर रामचन्द्रजीसे बहुत पीछेतक [illegible]

६ सूर्यवंशमें उत्पन्नहुए महाराज दशरथ और चंद्रवंशी रोमपादके [illegible] था. इसकारण यह दोनों समकालीनथे वाल्मीकिजीने लिखा है कि महाराज दशरथने पुत्रेष्टि यज्ञकी सिद्धिके निमित्त रोमपादके यहांसे ऋष्यशृंग ऋषिको बुलाया था. इससे रोमपाद और दशरथजी एकही समयके थे. परन्तु दोनोंमें अनेक पीढियोंका भेद पायाजाता है. महाराज दशरथजी [illegible] अनुसार इक्ष्वाकुकी चौंतीसवीं पीढीमें जन्मे हैं. और रोमपाद बुधकी [illegible] पीढीमें जन्मे. इसप्रकारकी गणनासे दोएक नहीं एकसाथही ग्यारह पीढियोंका अन्तर पायाजाता है यदि व्यासजीकी सूचीका अनुसरण कियाजाय तो और भी अन्तर पड़ता है कारण कि व्यासजीके मतसे महाराज दशरथजी इक्ष्वाकुकी [illegible] वीं पीढीमें जन्मे इसगणनासे रोमपादसे ३७ पीढी पीछे हुए इस अवस्थामें तो वाल्मीकिजीकी सूचीसे थोडा बहुत संयोजन निकल सकता है ।

यदि महर्षि व्यासजीकी वंशावलीका अवलम्बन करके सूर्यवंशीय राजाओंकी संख्या निरूपण कीजाय तो बडाही असमंजस होगा और समयका निर्णय नहीं हो सकेगा. अवश्यही यह बात माननी पड़ेगी कि श्रीरामचन्द्रजीके बहुत पीछे युधिष्ठिर कृष्ण और दुर्योधनादि हुए थे [illegible] और रामचन्द्रजीके बहुत समय पीछे कुरुक्षेत्रका युद्ध हुआ था. इस सम्बन्धमें [illegible] प्रमाणोंसे इसबातकी यथार्थता विदित होजायगी. श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि [illegible] नामक एक सूर्यवंशी राजा कुरुक्षेत्रके महासमरमें [illegible]

ओरसे संग्राम करनेको आयाथा, अर्जुनके पुत्र अभिमन्युके हाथसे उसकी मृत्यु हुई, यह वृहद्बल श्रीरामचंद्रजीके ज्येष्ठपुत्र कुशके वंशमें उत्पन्न हुआथा, और गणना करनेसे विदित होताहै कि यह श्रीरामचन्द्रजीकी तीसवीं पीढीमें जन्माहै, अब यह स्पष्ट होगया कि युधिष्ठिर श्रीकृष्ण और दुर्योधनादिके बहुतसमय पहले लंकाविजयी श्रीरामचन्द्रजीने अवतार लियाथा, परन्तु व्यासजीकी वंशावलीके अनुसार गणना करनेसे रामचन्द्रजी इनसे पूर्व प्रगट हुए विदित नहीं होते, किन्तु पश्चात् होना पायाजाता है वहभी एक दो पीढीका नहीं युधिष्ठिरसे सात आठ पीढी पीछे होना प्रमाणित होता है यह बडेही आश्चर्यका विषय है ऐसी जटिल वंशावलीसे ऐतिहासिक वृत्तान्तका पता लगाना बडी कठिन बात है ।×

इस कठिन स्थलमें यही कहा जासकताहै कि यदि वाल्मीकिजीकी लिखी वंशावलीपर निर्भर किया जाय तो दोनो ओरकी सरलता और श्रीरामचंद्रजीके पूर्वत्वकी अनेक अंशोंमें रक्षा होतीहै ॥

तीसरा अध्याय ३.

प्राचीन आर्य राजाओंके द्वारा भिन्न २ नगर और राज्योंका स्थापित होना ।

अयोध्या नगरीही सूर्यवंशी राजाओंकी प्रथम और प्रधान कीर्ति है भगवान् वैवस्वतमनुनें इसकी प्रतिष्ठा कीहै इस प्रसिद्ध नगरीके समयका निरूपण

× वृहद्बलका प्रमाण भागवतके ९ स्कन्ध अध्याय १३ मे लिखा है ।

"ततः प्रसेनजित्तस्मात्तक्षको भविता पुनः । ततो वृहद्बलो यस्तु पित्रा ते समरे हत ॥"

सपूर्ण इतिहास पुराणोसे यह बात सिद्धहै कि त्रेताके अन्तमें रामचन्द्र और द्वापरयुगके अन्तमें श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरादि जन्मे हैं, तब रामचंद्रके पहले होनेमें सदेह नहींहै, रही वंशावलीकी बात इसमें यही अनुमान होताहै कि वंशावलीमे कहीं मुख्य राजा लिखेगये हैं कहीं मुख्य और गौण, इससे उनमें भेद होनेसे वह भेद नही तथा जो योगबलसे दीर्घजीवी हुए हैं उनके दीर्घजीवनका भी विचार करना चाहिये और यहभी बात है कि परिश्रमके साथ यदि अष्टादश पुराणोंमें खोज कियाजाय तो सम्भव है वंशावली पूर्ण मिलजाय और यह शंका दूर हो हम मूलग्रन्थके अनुवादमें प्रवृत्त हैं इसकारण इस गहन विषयको यहां नहीं उठाते है ॥ अनुवादक ।

करना कठिनहै कि यह कब बसाई गई कविकुलगुरु वाल्मीकिजीकी रामायण पढनेसे विदित होताहै कि एकसमय यह नगरी मर्त्यलोकमें अमरावतीके समा थी वह ग्रंथ पाठ करनेसे ज्ञात होताहै कि रामचन्द्रजीके समय भारतवर्षमें अयोध्या समान दूसरी नगरी भारतवर्षमें न थी, परन्तु क्या अयोध्यापुरीने एकही काल ऐसी सुन्दरता और ऐसी समृद्धि प्राप्तकी थी, नहीं ऐसा कभी नहीं होसक्ता, अ श्यही धीरेधीरे सौन्दर्यमयी और समृद्धिशालिनी होतेहोते विस्तारभावको प्रा होकर एकदिन इसनेभारत वर्षके सम्पूर्ण नगरोंसे ऊँचा आसन प्राप्त किया था

अयोध्या नगरीकी प्रतिष्ठाके समयही महाराज इक्ष्वाकुके पौत्र मिथिने मिथि लापुरीकी स्थापना कीथी, मिथिके वंशधर जनकनामसे पुकारे जाते थे, क्रमश यह जनकशब्द इस वंशमें सबके साथ उपाधिरूपसे संयुक्त होगया, और सब कुलके नरपति जनक कहलाने लगे ।

इस बातका वर्णन कहींभी दिखलाई नहीं देता कि अयोध्या और मिथि लाके पहले भारतभूमिमें और कोई नगरी स्थापित हुईथी वा नहीं इन दोनों नगरियोंके बस जानेके पीछे वीतस चम्पापुर आदि कई एक छोटी छोटी नगरी मनुके वंशधरोंने बसाई थीं ।

भगवान् बुधका लगाया हुआ चन्द्रवंशका वृक्ष बडे विस्तारवाला है इस वृक्ष की भिन्न २ शाखाओंसे जो बडे पराक्रमी राजा उत्पन्न हुएथे उन सब-

नेही प्रायः भारतवर्षके भिन्न २ भागोंमें पृथक् पृथक् नगरस्थापन किये, उनमेंसे बहुतसे नगर इस समय कालरूपी समुद्रमें समागये, जो दो एक इस समय अपने अस्तित्वको दिखा रहे हैं वहभी प्रायः विध्वस्त और खड़हर होरहेहैं तोभी उस ध्वंस राशिसे उनका प्राचीनगौरव अबभी कुछ कुछ झलकतासा दिखाई देताहै बहुतोंका मतहै कि प्रसिद्ध प्रयागराजही चन्द्रवंशी राजाओंकी प्रथम कीर्तिहै, परन्तु विशेष विचार करनेसे एकनगरीकी प्रतिष्ठाका वर्णन औरभी पाया जाताहै इस नगरीका नाम माहिष्मती है जो इस समय नर्मदाके तटपर स्थित है हैहयकुलोत्पन्न महावीर कार्तवीर्यार्जुनके द्वारा माहिष्मती पुरी प्रतिष्ठित हुईथी, इससमयभी यह पुरी अपने प्राचीनस्थानपर * महेश्वरनामसे प्रसिद्ध है।

भगवान श्रीकृष्णजीकी प्रधानराजधानी कुशस्थली द्वारका थी, उसकी प्रतिष्ठा प्रयाग शूरपुर वा मथुरासे बहुत पहले हुई थी, भागवतमें लिखाहै कि महाराज इक्ष्वाकुके सबसे छोटे भ्राता आनर्तने इसनगरीको बसाया था. परन्तु यदुवंशी नृपतियोंने कब वहां प्रतिष्ठा पाई इसका वृत्तान्त उक्त ग्रन्थमें नहीं मिलता.

जैसलमेरके प्राचीनभट्ट ग्रन्थमें लिखाहै कि सबसे पहले प्रयाग फिर मथुरा और सबसे पीछे द्वारकाकी प्रतिष्ठा हुई परन्तु हम नहीं कहसक्ते कि प्रयागसे पीछे *मथुरापुरी बसी इसबातका विश्वास कहांतक किया जाय इन तीनों नगरोंकी

---

* वहाके रहनेवाले इस पुरीको सहस्रबाहुकी बस्ती कहतेहैं नर्मदाके किनारे अहल्याबाईके बनाये घाटोंकी इससमयभी बडी शोभाहै।

१ टाड साहबने आनर्तको कुशस्थलीका स्थापन करनेवाला और इक्ष्वाकुका भ्राता लिखकर धोखा खायाहै, भागवतमे ऐसा नहीं लिखा, यह आनर्त वास्तवमे इक्ष्वाकुके भतीजे थे इनके पिताका नाम शर्याति था. शर्यातिके उत्तानबर्हि, आनर्त और भूरिसेन यह तीनपुत्र थे, आनर्तका रैवतनामक एक पुत्र था, इस रैवतनेही कुशस्थलीको बसाया था, देखो भागवतस्कन्ध ९। अध्याय ३

उत्तानबर्हिरानर्तो भूरिषेण इति त्रय. । शर्यातेरभवन्पुत्रा आनर्ताद्रैवतोऽभवत् ॥ २७ ।
सोन्तः समुद्रे नगरी विनिर्माय कुशस्थलीम् । आस्थितोभुंक्त विषयानानर्तादीनरिंदम ॥ २८ ।

कुशस्थलीका दूसरा नाम आनर्तदेश है। भागवतमे लिखाहै कि [illegible] वहा द्वारकापुरी फिर बसाई और तबसेही यदुवंशियोंकी वहां प्रतिष्ठा हुई भागवत [illegible] ५०
'अन्तःसमुद्रे नगरं कृष्णाद्भुतमचीकरत् ।' ५० 'तत्र योगप्रभावेन नीत्वा सर्वजनं हरिः ॥ ५८ ।

+ भागवतमें लिखाहै कि लक्ष्मणके छोटे भ्राता शत्रुघ्नने मथुराकी प्रतिष्ठा की [illegible] सुरको मारकर मधुवनमे मथुरापुरी बसाई यथा–
"शत्रुघ्नश्च मधोः पुत्रं लवणं नाम राक्षसम् । हत्वा मधुवने चक्रे मथुरां नाम वै पुरीम् ॥ [illegible]
भागवतस्कन्ध [illegible]

अवस्था और प्रकृति हिन्दूमात्र जानतेहैं. इसकारण हमने इन नगरोंका कुछ विशेष वर्णन नहीं लिखा, इन तीनों नगरोंसे प्रयागही विशेष प्रसिद्धहै, एक समय पुरुवंशके प्रधान प्रधान राजा यहीं हुए थे, विख्यात यात्री मेगास्थिनीज अपनी भारतयात्राके समय इसनगरकी सुन्दरता देखकर एकसाथ मोहित होगया था.

एलिकजेण्डर सिकन्दरके समयके इतिहासवेत्ता कहतेहैं कि जब यह भुवन विजयी वीर सिकन्दर भारतके विजय करनेको आयाथा, उससमय मथुराके निकटके भूभाग शूरसेनदेश और वहांके रहनेवाले शौरसेनी कहे जातेथे. भगवान श्रीकृष्णजीसे बहुत पहले दो शूरसेन औरभी यदुकुलमें उत्पन्न होगयेथे, एक उनके पितामह और दूसरे उनसे आठपीढी पहले हुएथे, हम निश्चय नहीं कहसक्ते कि इन दोनोंमें किसने शूरपुरको बसाया. उक्त (सिकन्दरके समयके) ग्रीक [यूनानी] इतिहास लेखकोंने लिखाहै कि जब वह दिग्विजयी सिकन्दर भारतमें आया था, उस समय शौरसेनी देशमें मथुरा और क्लिशवुरानामक दो नगरी थी इस बातका समझना कठिनहै कि क्लिशवुरा शब्द शूरपुरके स्थानमें लिखाहै या कोई अन्य नगर है बड़े दुःखकी बातहै कि ग्रीक लोगोंने पौराणिक नामोंको बहुतही बिगाड़कर लिखाहै।

चन्द्रवंशीय विख्यात राजा महाराजा हस्तीने हस्तिनापुर बसाया था। एक समय जो हस्तिनापुर पौरव राजाओंके तीक्ष्णतेज प्रभावसे मध्याह्नकालीन मार्त्तण्डके समान जान पड़ता था, जिसकी प्रकाशयुक्त गौरव गरिमा एकसमय सारे संसारमें प्रचारको प्राप्त हुईथीः आज वही हस्तिनापुर भारतवासियोंके नेत्रोंसे दूर होगयाहै। आज अतीत कालके कठोर भयंकर हस्तनखाग्रसे उसका सम्पूर्णतासे नाश होगयाहैः कालके इस प्रचण्ड प्रहारसे जो कुछ नामको प्राप्त होकर यदि अपने प्राचीन गौरवके चिह्नको मलीनभावसेभी दिखलाता रहता तौभी इसभारत भारतवासियोंके हृदयमें कुछेक शान्ति रहती, परन्तु दुर्भाग्यवशसे रहती न रहा श्रीगंगाजी महारानी जगत् सुखदायिनीकी तीक्ष्णतरंगोंके प्रचण्डप्रवाहसे महाराज हस्तीकी यह प्रधानकीर्ति लोप होगई। और होतीजाती है। जिसतरंगोंसे गगनभेदी शिखरको तोड़ती फोड़ती पहाड़ोंको चीरती फाड़ती बहतीहुई श्रीगंगाजी जिस भारतवर्षके पुण्यस्थानमें उतरीहैं उस पवित्र हरिद्वारसे ८० कोस दक्षिणमें आजतक हस्तिनापुर अपने दीन, हीन, मलीन, शरीरसे दिखा रहाहै परन्तु गंगाजीके प्रवाहसे बराबर इस नगरका नाश होता चला जाताहै। इसके बचनेकी आशा नहींहै।

इस बातको प्रत्येक हिन्दूधर्मावलम्बी जानताहै कि महाभारतके समरसे बहुत पहिले हस्तिनापुरकी प्रतिष्ठा हुई थी। इस भयंकर युद्धके होजानेपर अनुमानसे कोई आठसौवर्ष पीछे प्रसिद्ध मेसिडोनीयन वीर एलेकजन्डर भारतपर चढ़ाई करके आया था। उसके साथ कईएक ग्रीक पंडितभी आयेथे, कि जिन्होंने भारतवर्षके अनेक नगरोंका वृत्तान्त अपने ग्रन्थोंमें लिखाहै परन्तु बडे आश्चर्यकी बातहै कि उन्होंने हस्तिनापुरका कुछभी वृत्तान्त अपने ग्रन्थोंमें नहीं लिखा।

महाराज हस्तीके पश्चात् चन्द्रवंशमें; अजमीढ, द्विमीढ, और पुरुमीढकी यह तीन विशालशाखा उत्पन्न हुई इन तीन शाखाओंमें अजमीढकी शाखाही, अधिक प्रतिष्ठाको प्राप्त हुईथी। बाकी दो शाखाओंका वृत्तान्त पुराणादिमें कुछ पाया नहीं जाता।

महाराज अजमीढसे चार पुरुष नीचे बाह्याश्वनामक एक राजा उत्पन्न हुआ। कहते हैं कि इस राजाने सिन्धुनदके निकटवाले किसी देशमें अपने राज्यको स्थापन किया था, बाह्याश्वके पांच पुत्र उत्पन्न हुए थे उनके द्वाराही विशाल पंचनद (पंजाब) देशमें प्रसिद्ध पांचालिक राज्य स्थापित हुआ था * इन पांच भ्राताओंमें एक भ्राताका नाम काम्पिल्य था, इसने अपने नामसे कांपिल्य नामक एक पुरी बसाई।

चन्द्रवंशमें प्रसिद्ध कुशनामक राजाके देवताओंके समान तेजस्वी कुशिक, कुशनाभ, कुशाम्ब और मूर्तिमान यह चार पुत्र उत्पन्न हुए। इन चारों भ्राताओंमें कुशनाभ और कुशाम्बही विशेष प्रतिष्ठावान थे। कहतेहैं कि कुशनाभने गंगाजीके किनारे महोदयनामक एक नगरी बसाई थी। कुछ कालके बीतजानेपर महोदय नामके बदले इसका कान्यकुब्ज. नाम हुआ। यह कान्यकुब्ज नगर बहुतदिनतक बडी प्रतिष्ठाके साथ विराजमान होता रहा। पश्चात् भारतविजयी शहाबुद्दीनके समयमें कान्यकुब्जके अयोग्य राजा जयचन्द्रके प्रायश्चित्तके साथही उक्त नगरके प्राचीन गौरवकाभी अंत होगया कान्यकुब्जका एक और पौराणिक नाम गाधिपुरहै। अब यह कन्नौज कहलाता है.

पुराणादि ग्रन्थोंमें कौशाम्बी नामक जो एक प्राचीन नगरीका वृत्तान्त पाया जाताहै। उस नगरीको कुशाम्बनेही बसाया था। एकसमय यह कौशाम्बी नगरी भारतमें विशेष गौरव, और प्रतिष्ठाको प्राप्त हुईथी। परन्तु आज उस गौरव और प्रतिष्ठाके स्थानपर केवल नामही नाम बाकीहै। तथापि कोई २ अनुमानके

---

* मुद्गल, यवीनर, बृहदिषु, सृञ्जय, काम्पिल्य, यह इन [illegible] नामहैं। इसके विषयमें प्रथम वंशपत्रिका देखो।

और निर्णय करके बतलातेहैं कि कन्नौजसे चलकर कुछ दक्षिणमें गंगाजीके किनारे देखभाल करनेसे कौशाम्बी नगरीके टूटे फूटे चिह्न दिखाई देते हैं।

कहतेहैं कि महाराज कुशके दो और पुत्रोंने धर्मारण्य और वसुमती नामक दो पुरी बसाई थी. परन्तु यह दोनों पुरी कहांहैं. इस बातका कोई अच्छा प्रमाण नहीं पाया जाता।

कौरवनाथ महाराज कुरुके सुधन्वा. और परीक्षितनामक जो दो महाधनु-र्धर पुत्र उत्पन्न हुए थे. उनमें सुधन्वाके गोत्रमें महावीर जरासन्ध और परी-क्षितके गोत्रमें शान्तनु और वाह्लीक उत्पन्न हुए पाण्डव और धार्तराष्ट्र शान्तनुके वंशधर कहलाए। जरासन्धभी इन्हीं कुमार लोगोंके समयमें था जरासन्धकी राजधानीका नाम राजगृह था।

धृतराष्ट्रके पुत्र प्राचीन हस्तिनापुरमें रहा करते थे। परन्तु पाण्डवोंने उनसे अलग रहकर इन्द्रप्रस्थनामक नगर बसाया था। बहुत दिनों तक नाम चलता रहा. फिर ईसवी आठवीं शताब्दीके मध्यभागमें इस नगरका नाम दिल्ली होगया।

वाह्लीकके पुत्रोंने पालिबोत्र और आरोड नामक दो राज्य स्थापित किये। पालिबोत्र गंगाके किनारे और आरोड सिन्धुनदके किनारेपर स्थापित हुआ। चन्द्रवंशके यह समस्त राजा महाराज ययातिके प्रथम और छोटे पुरु, यदु, द्रु-ह्यु. के वंशमें उत्पन्न हुए थे महाराज ययातिके दो पुत्रोंका वृत्तान्त इसमें नहीं जाना गया। परन्तु तथापि समझ पड़ताहै उनका कुछ वृत्तान्त लिखा जाताहै।

राजा ययातिके इन तीनों पुत्रोंसे अनेकों विख्यात वंश हुए। उनके वंशमें अंग. बंग. कलिंग. केकय. और मद्रक आदि राजा उत्पन्न हुए इन राजोंके

अपने २ नामके अनुसार एक २ नगर बसाया था। इन नगरोंमेंसे दो एक नगरोंका नाम अबतक इतिहासमें यथावत् वर्तमानहै। परन्तु यह नहीं कहा जासक्ता कि वह स्थान निश्चयही पुराण लिखित स्थानहै या नहीं ?

राजा ययातिके दूसरेपुत्र तुर्वसुकी कीर्तिका कोई वृत्तान्तभी नहीं पाया जाताहै ज्ञात होताहै कि वह भारत भूमिको छोड़कर और किसी देशमें चले गये थे। उनके तीसरे भ्राता द्रुह्युके कुलमें गान्धार और प्रचेतानामक जो दो राजा हुए उन्होंनेभी एक २ राज्य स्थापन किया पौराणिक गान्धार (वर्तमान कंधार) को गान्धारने बसाया। परन्तु प्रचेताकी कीर्तिका कोई विशेष वृत्तान्त नहीं जाना जाता। कहतेहैं कि वह किसी म्लेच्छदेशके राजा हुए थे।

कीलंजर, केरल, पाण्ड, और चौलनामक यह चार पुत्र महाराज दुष्यन्तके उत्पन्न हुए थे। इन चारोंने अपने २ नामसे एक २ राज्य बसाया।

कलिञ्जर, बुन्देलखण्डमें स्थापितहै। अतिप्राचीन कालसे इसकी प्रसिद्धि है। केरल, देश मालाबार देशसेही मिला हुआहै इस देशकोही कोचीन कहतेहैं।

मालाबारके उपकिनारे पर पाण्डुमण्डलनामक एकदेशका वृत्तान्त पाया जाताहै, कदाचित् इसको पाण्डुनेही बसाया हो। अंग्रेज भूगोलवेत्ता इसको " रेजीया पाण्डीयना,, कहतेहैं। हम जानतेहैं कि वर्त्तमान तन जोरही उक्त पाण्डुमण्डलकी राजधानीहै।

चौल, सौराष्ट्र देशमें प्रसिद्ध द्वारकाके निकट बसाहुआहै आजतक उसका यही नामहै।

भगवान् मनु और बुधसे लेकर भगवान् श्रीरामचन्द्रजी और श्रीकृष्णजीतक सूर्यवंशीय और चन्द्रवशीय राजाओंका संक्षिप्त वृत्तान्त लिखागया। इन महापुरुषोंका जीवनचरित्र और पवित्र कीर्ति विचार करते २ जो कुछ थोड़ासा ऐतिहासिक तत्त्व प्राप्त हुआ वही यथा स्थानमें मिलाया गया। विशाल समुद्रके समान पुराण शास्त्रोका मथन करते २ जिसदिन शास्त्ररूपी समुद्रमें रत्नोंके ढेर निकलेंगे. संसारमें उसदिन एक नये युगका आगमन होगा। उसदिनसे यह दीनभारत आरतपनको छोड़ मलीनतासे मुखमोड़ सत्यसे सम्बन्ध जोड़ नये जीवनको पाय: महाबलवान होजायगा वह दिन अब बहुतदूर नहींहै कालरूपी गर्भके कराल और विशाल राज्यको लांघता हुआ वह दिन धीरे २ भारतकी ओरको चला आताहै वह देखिये ! आज भारतके भविष्य भाग्य गगनमें प्राची दिशाके द्वारपर उस दिनकी महान २ किरणें अति मन्द २ भावसे उदय होरहीहैं।

आजकल पुराण शास्त्रोंका प्रचार होनेसे प्राचीन ऋषि, मुनि, और महीपाल गणोंके अनेक कार्य्यकलाप—क्रमानुसार प्रकाशमान होरहेहैं। यदि कोई सज्जन चेष्टा करेंगे तो अवश्य पुराण रूपी समुद्रको मन्थन करके अत्युत्तम रत्नराशि प्रकाशित होगी।

चतुर्थ अध्याय ४.

श्रीरामचन्द्रजी व राजा युधिष्ठिरके परवर्त्ती सूर्य और चन्द्रवंशीय राजाओंका संक्षिप्त वृत्तान्त व अन्यान्य राजवंशोंकी समालोचना।

महाराज इक्ष्वाकुसे लेकर श्रीरामचन्द्रजीतक और बुधसे लेकर श्रीकृष्ण व युधिष्ठिरतक सूर्य और चन्द्रवंशकी संक्षिप्त समालोचना करके इस समय हम निचले राजाओंका विचार करतेहैं।

जयपुर और बीकानेरके राजपूत राजालोग अपनेको श्रीरामचन्द्रजीके वंशमें उत्पन्न हुआ बतातेहैं। इधर वर्त्तमान जैसलमेर और कच्छ देशके राजपूतगण भगवान् श्रीकृष्णजीका वंशधर कहकर अपनी महान कुलगौरवका प्रचार करतेहैं। महाराज युधिष्ठिर, जरासन्ध अथवा और किसी चन्द्रवंशीय राजासे भारतवर्षका और कोई हिन्दू राजपूत वंश उत्पन्न हुआहै या नहीं क्रमसे इस विषयका विचारभी किया जायगा।

भगवान श्रीरामचन्द्र और श्रीकृष्णजीके परवर्त्ती कालमें सूर्य और चन्द्रवंशके मध्यमें जो राजालोग उत्पन्न हुएथे उनकी पवित्र नामावली पुराणोंमें वंश-पत्रिकामें प्रगट हुई है। इस पत्रिकामें क्रमानुसार तीन राजकुल सन्निवेशित हुए हैं।

१। सूर्य्यवंश और श्रीरामचन्द्रजीके वंशधरगण।

२। चन्द्रवंश और महाराज परीक्षितके वंशधरगण।

३। चन्द्रवंश और महाराज जरासन्धके वंशधरगण।

श्रीरामचन्द्रजीके लव और कुश नामक दो यमल पुत्र उत्पन्न हुयेथे। उनमें ज्येष्ठ लवसे* मिवाडके राणालोग अपनी उत्पत्तिका प्रमाण देतेहैं। छोटे पुत्र कुशसे माडवार और आमेरके राजालोग उत्पन्न हुएथे। कुशके वंशधर होनेके कारण उनका कुशावह (कछवाले) नाम हुआ है। इसप्रकारसे मारवाडके राजालोगभी उक्त कुशसे अपनी वंशोत्पत्तिका प्रमाण देकर अपनेको सूर्यवंशीय बताते हैं। परन्तु इस वातको वहुतसे हिन्दूलोग नहीं मानते। वह कहते हैं कि मारवाडके राजालोग राजर्षि विश्वामित्रके पूर्वपुरुष कुशसे उत्पन्न हुए।

जिसदिन रविकुलतिलक श्रीरामजन्द्रजीने भातृशोककी कठोर अग्निमें अपने जीवनको होम दिया; उसदिनसे जो राजालोग क्रमानुसार अयोध्याके सिंहासनपर बैठे, उनका वृत्तान्त भलीभांति श्रीमद्भागवतम्‌मेंही प्रकट हुआहै। उक्त महापुराणमें लिखाहै कि श्रीरामचन्द्रजीके पश्चात् अट्ठावन राजा अयोध्याके सिंहासनपर बैठे, उनके पिछले वंशधरका नाम सुमित्र हुआ! इस वातका किसी पुराणमें कोई वृत्तान्त नहीं पाया जाता कि महाराज सुमित्रके पीछे सूर्यवंशमें और कोई राजा हुआ वा नहीं। परन्तु आमेरके प्रसिद्ध नरनाथ पंडितवर जयसिंहने जो सूर्यवंशकी एक वंशावली संग्रह कीथी उसमें लिखाहै कि महाराज सुमित्रके पश्चात् सूर्यकुलमें अनेक राजा हुएथे। वह राजालोग मेवाड़के राणाओंके पूर्वपुरुष थे।

अभिमन्युके पुत्र महाराज परीक्षित् राजा युधिष्ठिरके उत्तराधिकारी हुए राजापरीक्षितसे लेकर सब समेत६६ राजा पाण्डवोंकी लीलाभूमि "इन्द्रप्रस्थ" के सिंहासन पर विराजमान हुए थे। इस वंशके शेष उत्तराधिकारीका नाम राजपाल था। राजतरंगिणी। और राजावलीके अतिरिक्त दूसरे किसी ग्रन्थमें इन राजाओंका स्पष्ट२ वृत्तान्त नहीं पाया जाता है। कहतेहैं कि महाराज राजपालने कमायूंके राज्यपर चढ़ाई की और वहींके राजा शुखवंतने उसको मारडाला। विजयी सुखवन्त इस जय पानेसे महाहर्षित होकर अपने देशके वैरी राजपालकी इन्द्रप्रस्थ नगरीपर अधिकार करनेके लिये उसकी ओर चढ़ धाया। जातेही राजधानीको अपने

---

* टाड्साहबका लवको श्रीरामचन्द्रजीका ज्येष्ठ पुत्र कहना ठीक नहींहै पुराणोंके मतानुसार कुशही बडाहै। यथाः—

"यस्तयोः प्रथमं जात. स कुशैर्मन्त्रसंस्कृतः। निर्म्मार्ज्जनीयो नाम्ना हि। भविता कुश इत्ययं॥ यश्चावरज एवासीद्‌लवणेन समाहित·। निर्मार्ज्जनीयो वृद्धाभिर्नाम्ना च भविता लव·॥"

वा॰रामायण.

अधिकारमें करलिया। परन्तु अधिक दिनोंतक वहां नहीं रहने पाया। क्योंकि शीघ्रही महाराज विक्रमादित्यके प्रचंड प्रतापने उसको इन्द्रप्रस्थसे निकाल बाहर किया.

चक्रवर्त्ती महाराज विक्रमादित्यने। कुमायूंके राजा सुखवन्तके ग्राससे इन्द्रप्रस्थको बचाया. परन्तु उसकी पूर्वशोभाके बचानेका कोई यत्न किया। यदि यत्न करते तो उसके सफल मनोरथ होनेमें कोई सन्देह नहीं था. क्योंकि उस समयमें महाराज विक्रमादित्यही भारतके सार्वभौम राजाथे। सम्पूर्ण भारतवर्षकी सुन्दरता और भारतीय आर्य्यकुलकी गौरवता उस काल उनकी अमरावती तुल्य नगरीमें इकट्ठी हुई थी।

यदि महाराज विक्रमादित्य चाहते तो पाण्डवोंकी लीलाभूमि इन्द्रप्रस्थको उसके प्राचीन गौरवकी ऊंची श्रेणीपर पहुंचासक्ते थे। पर ऐसा न करके उन्होंने केवल सुखवन्तके हाथसे इसका उद्धारही किया। और इन्द्रप्रस्थको छोड़कर अपनी नगरी उज्जयिनी नगरीको लौट आये। जिस दिनसे वह उसको छोड़कर चले आये तबसे लेकर आठ, दश, शताब्दीतक इन्द्रप्रस्थका सिंहासन खाली रहा। जो इन्द्रप्रस्थ अपने सौन्दर्य और गौरवसे एकदिन सुरनगरी अमरावतीके समान हुईथी. इसलिये कालकी अराजकतासे वह क्रमानुसार भयंकर श्मशानके समान होगया। फिर समयने अनंगपाल नामक राजाने उसको संजीवनी सामर्थ्यकी सहायतासे फिर जीवन दान दिया। भट्टग्रन्थमें अनंगपालको पाण्डुवंशीय क्षत्रिय कहाहै। पूर्वपुरुषोंकी कीर्तिको उक्त महाराजने रक्षित तो किया परन्तु इन्द्रप्रस्थके बदले उसका दिल्ली नाम रक्खा।

प्रसिद्ध राजावली ग्रन्थमें लिखाहै "भारतवर्षके उत्तरविभाग कुमायू गिरि-जौरसे सुखवन्त नामक एक राजाने आकर चौदहवर्षतक इन्द्रप्रस्थका राज्य किया। फिर महाराज विक्रमादित्यने उसको मारकर इन्द्रप्रस्थका उद्धार किया। भारत समरसे [illegible] ३०४४ [illegible]" इसी ग्रन्थमें और [illegible] ग्रन्थकारने लिखाहै "मैंने नानाप्रकार पौराणिक ग्रन्थोंके पाठ करके देखा, [illegible] [illegible] सुधिष्ठिर और पृथ्वीराजके मध्यसमयमें [illegible] [illegible] [illegible] राजाओंका नाम नहीं लिखा [illegible] [illegible] राज्य किया था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"।

[illegible]

अभिषेकतक इन्द्रप्रस्थके सिंहासनपर सब एकशत (१००) राजा बैठेथे । इन समस्त राजाओंका नाम उसी पुस्तककी दूसरी वंशपात्रिकामें लिखा गयाहै ।

विशाल चन्द्रवंशकी ओर एकबडी शाखाका वृत्तान्त प्रयोजन समझ कर हमने यहां पर लिखा है । इस शाखाकुलमें महाराज जरासन्ध विख्यात हुआ। इसकी राजधानी राजगृहनामक नगरमें थी । श्रीमद्भागवतमें लिखाहै कि जरासन्धका पुत्र सहदेव और पौत्र मार्जारिके महाभारत समर समयमें वर्तमानथे। अतएव यह महाराज परीक्षित समकालीनके हुए । महाराज जरासन्धके पश्चात् उसके वंशके २३ राजा मगधके सिंहासनपर बैठे थे। इस वंशके २३ वें राजाका नाम रिपुञ्जय था । इसरिपुञ्जयको इसके मंत्रीने संहार किया । क्रूर मंत्री शनकने राजहत्याके पापसे अपना मुहँ काला तो किया । परन्तु इस राज्यको स्वयं न भोगा। अपने पुत्र प्रद्योतको उस अधर्मप्राप्त सिंहासनपर आरूढ करके वह संसारसे विदा होगया.

राजघाती शनकके पुत्रसे लेकर उसके पांच वंशधरोंने मगधकी गद्दीका अभिषेक प्राप्त किया था। तदोपरान्त पिछले महाराज नन्दिवर्द्धनके साथ शनकके राजकुलका नाश होगया । इन पांच राजाओंने १३८ वर्षतक राज्य किया था।

उसही कालमें शिशुनागनामक एक विजयी राजा प्रचण्ड बलके साथ भारत भूमिमें आया । और जरासन्धके सिंहासनको अपने अधिकारमें किया। कहतेहैं कि वह तक्षक स्थान * नागदेशसे आया था । इस शिशुनागसे लेकर उसके वंशके पिछेले राजा महानन्दतक सब १० राजा मगधके सिंहासनपर बैठे थे । ऐसा वर्णन है कि महाराज महानन्दने शुद्धजात क्षत्रियराजाओंके साथ घोर युद्ध करके, उनमेंसे बहुतोंको मारडाला ऊपर कहेहुए १० राजाओंने ३६० वर्षतक राज्य किया । इनके पश्चात् कितनेएक शूद्रराजा मगधके राजसिंहासनपर बैठे थे ।

शिशुनागका वंश लोप होतेहोते मौर्यवंशने मगधके वंशपर अधिकार कर लिया । भुवनविख्यात महाराज चन्द्रगुप्त इस वंशके प्रथम राजा हुए । इन महाराज चन्द्रगुप्तकी कीर्त्ति और यश एकसमय इंगलेण्ड, जरमनी और फ्रान्सतक फैल गया था । इस वृत्तान्तको सभी विद्वान्लोग जानतेहैं । इस मौर्यवंशमें सब १० राजा हुए थे । इन दशराजाओंने १३७ वर्षतक राज्य किया था ।

---

* और इतिहास लेखकोंने तक्षक स्थानका नाम तक्षशिला [illegible] तुर्किस्तानहै ।

मौर्यवंशके पिछले राजा महाराज बृहद्रथको राज्यसे अलग करके अष्टमित्र-
मक एक राजाने बलात्कार मगधके सिंहासनपर अपना अधिकार किया ।
न अष्टमित्रसे पांचवें वंशकी मगधमें प्रतिष्ठा हुई । कहतेहैं कि, अष्टमित्र शृंगी-
शसे आया था । इसके वंशमें आठ राजा अवतीर्ण हुए । महाराज अष्टमित्र
इन्हीं आठ राजाओंके बीचमें हुआ । यह आठों राजा ११२ वर्षतक मगधके
हासनपर रहेथे । इस वंशके पिछले राजाका नाम देवभूत हुआ । महाराज
भूतके राजत्वकालमें भूमित्रनामक एक वीर कण्वदेशसे चढाई करनेके लिये मगध
शमें आया । और शीघ्रही देवभूतको संहार करके वहांके सिंहासनपर अपना अधि-
र किया । महाराज देवभूतके साथ २ ही शृंगीदेशके अष्टमित्रका वंश लोप हुआ ।
वीर भूमित्रने अपने विक्रमकी सहायतासे जिस सिंहासनपर अपना अधिकार
या; उस सिंहासनपर क्रमानुसार उसके २३ वंशधरगण राज्यकरगये । परन्तु इन-
से अधिक राजाही शूद्रकुलसे उत्पन्न हुएथे । भूमित्रसे चौथे पुरुषमें कृष्ण नामक
क राजा शूद्राणीके गर्भसे उत्पन्न हुआ । और इस राजासेही इस वंशमें शूद्र
का संचार हुआ । इस वंशके पिछले राजाका नाम शालाम्बुधी था । इस
लाम्बुधीको पाकर मगधमें राजवंशका लोप होगया । एक समय जिस मगध देश-
शासन दंण्डवीर जरासन्धके प्रचण्ड प्रतापसे प्रकाशित हुआ था, वही वंश उस
हाराजके वंश लोप होनेके साथ २ ही क्रमानुसार छः वंशोंके द्वारा चलायमान
कर अन्तमें केवल शून्य नामसे शेष रह गया । साथही मगधका सिंहासन सूना
आ । फिर उसपर कोई न बैठा । अनुपम वीर जरासन्धका सोयावंश—महानन्द
र चन्द्रगुप्तकी साधनभूमि—भारतके शोभनीय अंगः अतीत कालके कठोर
प्रहारसे आज छिन्नभिन्न होकर पृथ्वीमें लोपहोना चाहते हैं ।

पंचम अध्याय ५.

—◆—

जो जातियें भारतवर्ष पर चढाई करके आईथीं उनका सौक्ष वृत्तान्त ।

शाकद्वीपीय और स्कन्धनाभीय जातिके साथ राजपूत जातिकी समानताका विचार ।

पुरातन मनु और बुधसे लेकर वर्तमान शिलालेखोंसे लिये आजतक
स राजाओंका सौक्षिप्त वृत्तान्त में लिख आये; अब हम इस पवित्र [illegible]

कुछ देरतक छोड़ कर कितनी एक अनार्य जातियोंकी समालोचनों करेंगें। शाकद्वीप * स्कन्ध नाभ× वा और किसी अनार्य देशसे चढाइयॉं करके समय समय परभारतवर्षमें आईथीं, उनके आचार व्यवहारका विचार करनाही हमारे इस अध्यायका अभिप्रायहै, वह समस्त आचार राजपूज जातिके किस किस आचार व्यवहारसे मिलतेहैं वह सब बातें लिखी जायँगी।

जिन जातियोंको हम अनार्य कहतेहैं वे अश्व, तक्षक, वा जित् वंशसे उत्पन्न हुईहैं, इन सब जातियोंकी पौराणिक उत्पत्ति वंशविवरण आचार व्यवहार आदि आर्योंके साथ मिलानकर देखनेसे इतनी सदृशता पाई जातीहै कि उनका मिलान कर देखनेसे यह बात सहसा ध्यानमें आजातीहै, कि यह सब जातियां एकही वंशसे प्रगट हुईहैं।

इस बातका निरूपण करना कठिनहै कि यह अनार्य जातियें किस समय भारतवर्षमें आईं इहां यह बात सहजमें विदित होसकतीहै कि यह किन देशोंसे आईथीं।

जिन तातार और मुगल जातियोंका वृत्तान्त भारतके इतिहासमें लिखाहै और जिन मुगल सम्राटोंके हाथमें एक समय सारे भारतवर्षकी बागडोरथी, वहभी उन अनार्य जातियोंमें उत्पन्न हुएहैं, प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता अबुलगाजीने मुगल और तातारवालोंकी उत्पत्तिके विषयमें जो कुछ लिखाहै आगे वही बात लिखी जातीहै।

अबुलगाजीने कहाहै जिस महापुरुषने तातारियोंके वंशकी प्रतिष्ठा की उसका नाम मुगल था, उसके अगुज नाम एक पुत्र हुआ, इसने तातार और मुगल जातिकी प्रतिष्ठा की।

इस अगुजके महाबली छः * पुत्र हुए उनमें पहलेका नाम कायन और दूसरेका आय था, जिस ग्रंथमें अगुजके वंशका वृत्तान्त लिखा गयाहै तातारियोंके उस

---

* शाकद्वीप (Seythia) ग्रीक इतिहासवालोंने इसको शाकताइ और शिथियानामसे पुकाराहै, पुराणका मतहै कि इसका विस्तार जम्बूद्वीपसे दुगुनाहै ॥ यथा—"कथ्यमानं निबोधध्वं शाकद्वीपं द्विजोत्तमाः ॥ जम्बूद्वीपस्य विस्ताराद्द्विगुणस्तस्य विस्तरः।" मत्स्य पुराण ॥ इतिहास वेत्ता टोडाने लिखा है कि कास्पियन हृदका पूर्व स्थित देश शिथिया नामसे प्रसिद्ध है जहां बहुतसे पर्वत और नदियें है। सब नदियोंमें अक्सू (Oxus) नदी प्रधानहै। इस ओर पुराणवर्णित शाकद्वीपमेंभी इक्षु नामक एक नदीका नाम देखाजाताहै, यथा;—"इक्षुश्च पचमी ज्ञेया तथैव च पुनः स्मृ ॥ मत्स्यपुराण ॥" तो क्या यह इक्षु शब्दही टोडाके द्वारा अक्सनामसे पुकारा गयाहै ?

× स्कन्धनाभ। (Scandinavia) वर्त्तमान नारवे और स्वीडनका प्राचीन नामहै।

* अगजके इन छः पुत्रोंसे तातारियोंके छ. राजकुल उत्पन्न हुएहैं इसी प्रकार आर्य्योंमेंभी पहले दो राजवंशथे फिर उनमें अग्निसे उत्पन्न चार कुल और मिलजानेसे छः होगये अन्तमें घटते२ यही कुल छत्तीस प्रकारके होगये।

ग्रंथमें कायन और आयको सूर्य और चंद्रकी समान कहाहै पाठकगण विचारलें कि यह आय शब्द पुराणोक्त आयु शब्दका अपभ्रंश तो नहीं है।

तातारवाले आयको अपना गोत्रपति मानकर अपनी उत्पत्ति चंद्रवंशसे बताते हैं यह पहलेही कह दियाहै कि तातारियोंने आयुको चंद्रमाके समान कहाहै. तब वे अपनेको चन्द्रवंशसे उत्पन्न हुआ बतावें तो इसमें कोई विचित्रता नहीं है. यही कारण है जो तातारी जाति पुरुषभावसे चन्द्रमाकी पूजा करती है.

तातारी आयुके जुलहुन नाम एक पुत्र उत्पन्न हुआथा इस जुलहुनके पुत्रका नाम हयु* था, इसी हयुसे चीनका प्रथम राजकुल उत्पन्न हुआहै.

आयकी नौमी पीढीमें इलखां नाम एक पुत्र उत्पन्न हुआ इस इलखांके कियान और नागस नामक दो बलवान् पुत्र उत्पन्न हुए क्रमशः इन्होंका वंश वृद्धिको प्राप्त हो समस्त तातार भूमिमें फैलगया.

जिस महावीर चंगेजखांकी वीराग्निसे एक समय आधा संसार तप गयाथा वह चंगेजखां अपनेको इसी वंशसे उत्पन्न हुआ बताता था.

× पुराणोंमें जो जितनाग और तक्षक जातिका वृत्तान्त पाया जाताहै उसे हम जानतेहैं कि उनकी उत्पत्ति इस नागसकेही वंशमें हुई थी. प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डीगायनने तक्षकोंको तक्युक तुरुष्कनामसे लिखाहै.

पुराणोक्त चन्द्रवंशकी उत्पत्ति वृत्तान्तके संगसंग तातारियों और तुरुष्कों की वंशोत्पत्तिकी समानता दिखाकेभी मिलान करनेसे दोनोंमें स्थान स्थान पर सदृशता दिखाई दी पर यह समानता किस प्रकारकीहै सो आगे लिखेंगे तथा उनके गोत्रपति और प्राचीन देवताओंके विषयमें लिखेंगे.

की शासनशक्ति सर्वथा निर्जीव होगई उस समयमें भी मेवाडकी शासन प्रणालीमें कुछ भेद नहीं पडा।

यूरोपखंडमें जिस प्रकार बहुत समयतक परम्परा प्राप्त विधानके अनुसार भूमिके ऊपर स्वत्त्वाधिकार निर्द्धारित होतारहा उसी प्रकार रजवाडेमें भी वह परम्पराका विधान एक समय भूमिके स्वत्त्वाधिकारादिको निर्द्धारण कर देता था, समयके परिवर्तनके साथ उन परम्पराके सुने हुए विधान और प्रवाद वाक्योंने एकात्रित होकर अपनी पूर्ण मूर्ति धारण करी थी, ऐसा लेख देखाजाता है कि मेवाडके राणावंशके कई राजालोगोंने अपने राज्यके लिये कई नियम निर्द्धारित कियेथे, किन्तु उन प्रत्येक विधानके नियुक्त होनेके पहले जिस कारणसे वह विधान रचेगये थे उनके कारण राजाकी आज्ञाके पत्र दानपत्र और परम्परा श्रुत प्रवाद वाक्योंमें बँधकर इस समय चारों ओर विच्छिन्न होगये हैं, पाषाणोंकी स्तंभावलीकी दीवारपर आजतक वह सब विधान और राजाकी आज्ञा खुदीहुई दिखाई देती है, उन सबके एकत्रित करनेपर यह अवश्य ही स्वीकार करना होगा कि वह विधानावली समाजकी बाल्यावस्थाके लिये यथेष्ट हैं। उन सबके इकट्ठा करनेके पहले वह विषय निर्द्धारित करके पीछे वह स्तंभावली स्थापित की जाती थी; जिन सात शताब्दीतक निरंतर विजातीय शत्रुओंके द्वारा यह राजपूत राज्य आक्रांत और नष्ट होतेरहे। उस घोरतर दुर्दिनमें जातिकी शोचनीय अवस्थामें भी रजवाडेने अनेक गंभीर ज्ञानी और नरपति उत्पन्न कियेथे; राणा संग्र और उनके शत्रु सुलतान बाबरकी समान दोनों पौत्र अकबर और राणा प्रतापने भी बडी प्रसिद्धि प्राप्त की थी, जहांगीरके वैरी प्रतापके पुत्र अमरसिंहकी वीरता और पराक्रम कला असाधारण था इसको कौन नहीं जानता?।

राजपूत भूपालवंशकी ऐश्वर्य प्रकाशक जितनी विधान लिपि लिखी गई, और जनश्रुतिद्वारा रचित होती चलीआईहैं, उन सबके द्वारा विलक्षणतासे जाना जासकताहै कि वह राजपूत नरपतिगण कैसे नीतिकुशल शासनकर्त्ताओंमें समरकुशल वीर थे, तथा उच्चश्रेणीकी मर्यादाका निर्णय, वणिक और कृषक मंडलीके सम्बन्धकी रीतिके निर्द्धारणमें कैसी अच्छी योग्यता दिखागयेहैं, उन पाषाण स्तंभोंकी खोदित लिपियोंके पाठ करनेसे यह भी विदित होजाताहै कि राजा लोग सर्वत्र शासनके संबन्धवाली आमदनी और खर्चकी व्यवस्था भी कैसे

पूतजाति वैसे चिह्न व्यवहारमें अनभिज्ञ नहीं थी । × मेवाडकी प्रधान राजपताका लालरंगकी है और उस पताकाके ऊपर सूर्य्यकी सुवर्णकी मूर्त्ति अङ्कितहै। मेवाडके सामन्तोंकी पताकापर एक २ खड्गकी मूर्त्ति चित्रित है । अम्बेरकी राजपताका पाँच रंगयुक्त है। चन्देरी नामक छोटे राज्यकी पताकापर प्रमत्त सिंहकी मूर्त्ति चांदीद्वारा रञ्जित है। *

यूरोपखण्डमें यह प्रथा क्रूसेड्के पहिले प्रचलित नहीं थी; किन्तु विख्यात ट्रयराज्यके युद्ध होनेसे बहुत काल पहिले राजपूत जातिकी सब सम्प्रदायोंमें ही यह प्रबल रूपसे देदीप्यमान था। खृष्टजन्मके बहुत शताब्दी पहिले जिससमय महाभारतका युद्ध हुआ था, उस समय अर्जुनकी पताकामें हनुमानजीकी मूर्त्ति अंकित थी । यह बात महाभारतके पढनेसे विदित होसकती है।

यह व्यवहारके सम्पूर्ण चिह्न हिन्दुओंके धर्म्मविधान मूलक हैं और अपने देव देवियोंकी मूर्त्तियोंसे ही यह निर्वाचन करलिये हैं।

प्रत्येक राजपूतके राजमहलमें एक २ रक्षाकर्त्ता कुलदेवता है, और वह प्रायः ही युद्ध क्षेत्रमें लेजाया जाता था। राजा स्वयं घोडेपर सवार होकर उस मूर्त्तिको अपने साथ लेजाते थे। कोटेके राओ भीमहरने युद्धके समय अपने कुलदेवताके साथ जीवन विसर्जन किया था । खीची जातिके नेता स्वर्गवासी विख्यात जयसिंह अपने कुलविग्रहको विना साथलिये कभी इकले युद्धभूमिमें नहीं जाते थे। × वह जिस समय "हुंहुं" शब्दके साथ कुलदेवताकी जय उच्चारण करके युद्धसागरमें कूदतेथे। शत्रु महाराष्ट्र सेनादल उस समय महा भयभीत हो

अच्छे प्रबंधके साथ कल्पना करगये हैं, एक चेंटिया वाणिज्यके सिवाय कर ग्रहणमें नियम, वाणिज्यपर महसूलके नियम, पवित्र और पर्वतके दिन नौकरी करनेवालोंकी छुट्टियें, मुक्तिदान, अनुग्रह-वाणिज्यकी प्रधान सनदें, शांति और श्रेष्ठताकी रक्षाके लिये प्रजाके बीचमें समानरूपसे पंचायत स्थापन और प्रजाकी स्वतंत्रतामें रहनेकी विधि जिसके द्वारा वह राजनीतिके कार्यमें सर्वसाधारणका मत जाननेमें समर्थ हो, इन सब विषयोंकी व्यवस्था भलीभाँति करदी थी. शासनप्रणालीके सम्बन्धवाले नियम व्यवस्थाकी रीतियें जब मुझको राज्यप्रसादमें नहीं मिलीं तो मैंने दूसरे प्राचीन चिह्न, खोदित लिपि, अनुशासनपत्र, और पाषाणस्तंभोंपर खोदेहुए आदेश तथा पत्रावलीके तत्त्वानुसंधानसे उनको प्राप्त किया; यद्यपि अत्याचारी मुसलमानोंने सभ्यताके स्मृतिचिह्नोंमेंसे बहुतसे विध्वंस करदियेहैं, तथापि अब भी बहुतसे चिह्न ज्योंकेत्यों बनेहुए हैं, वह सब चिह्न विशेष कौतूहलके दिखानेवाले हैं । रजवाडेकी वाणिज्य व्यवसायके एक चेटिया और वाणिज्य कार्यमें किसी प्रकारका भी व्याघात नहीं होसकता था. इन सब विधानोंके द्वारा यह भी दृढ रूपसे प्रमाणित होताहै, यह सब खोदे हुए अनुशासन पत्र स्तंभोंका निर्माण बहुत पुराने समयसे ही प्रचलित होता आया-स्तंभावलीका नाम शिवरा अर्थात शाल्हे ।

जाते थे। जयसिंहके वह कुलदेवता स्वपक्ष और विपक्षके सैनिकोंके रक्तसे स्नान किया करते थे।

हिन्दू राजाओंके जितने पूर्व पुरुष ग्रीक विजेता अलिकजण्डरका भारतपर आक्रमण निवारणके लिये युद्धमें प्रवृत्त हुए थे, उन्होंने उक्त प्रथाके अनुसार अपने कुलदेवता बलदेवकी मूर्त्ति सेनाके शीर्षस्थानपर रखकर समराग्नि प्रज्वलित की थी।

ग्रीक इतिहासवेत्ता एरियन लिखते हैं कि अधीन सामन्तोंके ऊपर राजाकी प्रभुता जतानेवाली पताका दानकी रीति सिन्धुनदके तीरवर्ती राज्योंसे ही ग्रीक लोगोंने ग्रहण की है।

अलिकजंडर जिस समय उक्त प्रदेश विजय करनेके लिये बाहर हुए थे, और उन्होंने कस्पियन सरोवरके पूर्व तीरवासी राज्योंको जयपूर्वक उन प्रदेशोंको विभाग करके वहांके प्राचीन राजवंशियोंको दिये, उस समय उक्त राजोंने अलिकजंडरकी वश्यता स्वीकार करके करदान और निर्द्धारित संख्या सेनाद्वारा उनके भारत विजयमें सहायता करनेकी प्रतिज्ञा करी थी. अलिकजंडरने अपने हाथसे उन राजालोगोंको प्रचलित रीतिके अनुसार पताकायें दी थीं। स्थानीय किसी रीतिके मानने और उसके अनुसरण करनेमें वह असम्मत नहीं हुए। सामन्त शासनकी रीतिका यह केवल बाहरी आभासमात्र है, इस कारण हम और भी जितने पिछले समयके इतिहासमें पहुंचेंगे, उतने प्रणालीके सब प्रत्यंग हमारे नयनदर्पणमें प्रति बिम्बित होने लगेंगे। मुसल्मान जातिकी प्रथम शताब्दीमें ही जब प्रथम नवीन धर्म प्रचारार्थ भयंकर उत्पात हुए थे उस समय [illegible] कैसे शक्तिसम्पन्न थे, उस शक्तिका एक बड़ा चित्र सर्वोत्तम स्थानमें चित्रित हुआ है। उस चित्रमें क्या दिखाई देता है? जिस समय [illegible] यवन गण भारत आक्रमण और नवीन [illegible] लिये संग्राममें धावा करके आगे बढ़ते थे, उस समय [illegible] लिये [illegible] आगे [illegible] मित्र और [illegible] लिये [illegible] थे।

द्वारा तांबेका मुकुट वाणिज्यका एक चेटिया सर्वथा रहित करदिया गया * छींटके वस्त्रके ऊपर महसूल छोडदिया गया, और स्थानीय वस्त्र बनानेवालोंपर विना महसूलके निकटवर्ती ग्राम और नगरोंमें विक्रय करनेकी व्यवस्था हुई थी, यह एक दूसरे खोदेहुए स्तंभके ऊपर लिखा था। एक दूसरे स्तंभमें व्यापार प्रधान नगरसे युद्धसम्बन्धी कर ग्रहणका निषेध और स्थानकी भीतरी शासन व्यवस्था लिखी है × सामाजिक आचार व्यवहारका भी पता चलताहै, एक खोदेहुए स्तंभसे प्रगटहै कि "साधारण प्रकाशित भोजन सभासे कोई मनुष्य किसी प्रकार भोजन अपने घर नहीं लेजासकैगा।" ** जैनियोंके लिये एक विधान हुआ कि "संध्याके पीछे कोई मनुष्य किसी प्रकारका भोजन नहीं कर-सकैगा" पवित्र अमावस्या तिथिमें गौ आदि पशुओंको जो कोई श्रमके कार्यमें नियुक्त करैगा वह दंड पावैगा।

×* यह विधान भी खोदित स्तंभके ऊपर विराजमानहै। राजकर्मचारीगण राजकार्यके लिये किसी नगर वा ग्राममें जाकर शय्या और शीतवस्त्र नगर वा ग्रामवासियोंसे लेतेथे उस प्राचीन विधानके पुनः प्रचारकी आज्ञा भी स्तंभके ऊपर लिखीहै × * साधारण राजकार्यके लिये किसानोंकी गाडी और गौ आदि पशु तथा अन्यान्य सवारी बलपूर्वक लेनेका निषेध भी खुदाहै। उपरोक्त और अन्यान्य विधानोंको जो नकलें परिशिष्टमें लिखीगई हैं उन सबके फिर लिखनेकी आवश्यकता नहीं है।

इसके पीछे टाडमहोदय लिखतेहैं कि, "प्राचीन कालसे अबतकके प्रत्येक राणाके समयकी उक्त स्मारक लिपियें, अनुशासनपत्र, आज्ञाविधान और व्यवस्थावली यदि हम बहुतायतसे संग्रह करसकें तो उन सम्पूर्ण राणा-लोगोंके प्रतिभा, ज्ञान बुद्धि, राजनीतिज्ञता, प्रजापुंजका अभाव, आचार, व्यवहार और उनकी अवलम्बन की हुई कार्यप्रणाली जाननेके लिये इससे अधिक और किस सामग्रीकी आवश्यकता है? पश्चिमी राज्यके बीचमें प्रांतका बहुत पुराना विधान सन् १०८८ ईस्वीमें लिखा गया × किन्तु

[illegible]	परिशिष्ट—	१२	[illegible] देखो।	
४	"	१३	"	"
[illegible]	"	१४	"	"
[illegible]	"	१३	"	"
[illegible]	"	१५	"	"

[illegible]

प्रयोग की जा सकती हैं; महाबली विशालदेव, जिनका नाम दिल्लीके विजय स्तंभोंपर आजतक खुदा हुआ है, वह वीरश्रेष्ठ भारतआक्रमणके अभिलाषी यवनोंके विरुद्ध जितनी सेना लेगये थे, उसमें ८४ चौरासी हिंदू नरपतियोंकी पताका एकत्रित हुई थीं। विशालदेवने इस जातीय महायुद्धमें सहायता देनेके लिये अन्तर्वेद * प्रदेशसे पश्चिम सागरके किनारेके स्थानोंके राजालोगोंको जो निमंत्रणपत्र भेजा था; चन्द्रकवि उस निमंत्रण पत्रको स्पष्ट रूपसे लिखगये हैं। उन एकत्रित सेनादलोंने विशालदेवके द्वारा परिचालित होकर यवनोंके विरुद्ध जो जयप्राप्त की थी, उसके इतिहासमें भी भलीभाँति प्रमाण पायाजाताहै। चन्द्रकवि अपने काव्यमें भारतसम्राट पृथ्वीराजके शासन समयकी सामन्त शासन विधिका जैसा उत्तम वर्णन लिखगयेहैं; वैसा दूसरे किसी ग्रन्थमें दृष्टिगोचर नहीं होता। बडे आश्चर्य्यकी बातहै कि; यह महाकाव्य इतने अधिक समयतक अनादरमें पडारहा। चन्द्रकविके उस महाकाव्य और उसी प्रकारके अन्यान्य काव्योंके पढनेसे आर्य्योंके शासन और इतिहास सम्बन्धी बहुतसे विवरण मालूम होसकते हैं। विशेष करके उसके पाठसे राजपूतोंके आचार व्यवहारादि अनेक विषयोंमें विभिन्न जातिके साथ तुलना किये जासकते हैं।

उस अतीत कालकी उक्त घटनाओंको पढकर हम सहजमें ही निर्द्धारित करसकते हैं कि "तातारियोंकी कोरलताई, राजपूतोंकी चोगान और फ्रांसजातिका केम्पडिमार्स (Champde le Mars) एक ही कारणसे उत्पन्न हैं।"

वीर राजपूत समाज जिस भावसे अत्यन्त प्राचीन कालसे गठित है, जातिभेद जिस प्रकार प्रबल भावसे प्रचलित है, उससे नीची श्रेणियोंके निवासियोंके साथ उच्चवंशमें उत्पन्न हुए राजपूतोंका सामाजिक संमिलन असंभव कर रक्खा है। ऐसा भेद भाव बहुत पुरातन कालसे ही भारतमें प्रचलित है। इस जाति वा वर्ण भेदके विषयमें यहांपर कर्नल टाडने अच्छा बुरा मन्तव्य कुछ भी प्रकाशित नहीं किया. किन्तु [illegible] हम यहां दो एक बातें लिखते हैं। अंग्रेजी शिक्षित युवकमंडली आजकल जातिभेद प्रथा भारतवर्षसे बिलकुल दूर करनेके लिये बडी भारी चेष्टा कर रही है। अनेकोंका यही दृढ विश्वास है कि, [illegible] आज ही यह जातिभेद नीति

[illegible]

उस समय मेवाड उन्नतिकी सबसे ऊंची सीढीपर आरूढ था, और उसका व्यवहार वीरत्व, विक्रम, यश गौरव और सामन्तशासन सर्वत्र विदित था, तथा उस समय राणागण जैसी प्रबल सेनाकी सहायतासे राष्ट्रविप्लव और विजातीय शत्रुओंके आक्रमण निवारणमें अग्रवर्ती हुए थे. फ्रांस बहुत पुरुष पीछे भी वैसी प्रबल सेना उत्पन्न करनेमें समर्थ नहीं हुआ। दुर्भाग्यसे कई सौ वर्षों तक विजातीय वैरियोंके आक्रमण, उपद्रव, अत्याचार और अज्ञता तथा आलस्यताने इस मेवाडके निवासियोंको अपने पूर्वपुरुषोंके ज्ञान, नीतिज्ञता और विद्याके परिचय स्वरूप उन स्मृति चिह्न और खोदेहुए स्तंभावलीके यत्न तथा सन्मानको भुलादिया: राजपूत जातिने एक समय कहांतक गौरवगरिमा वीरत्वविलास और प्रताप प्रभुत्वसे जगत्में अक्षय यश संग्रह किया था, वह सम्पूर्ण स्मृति चिह्न ही इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, किन्तु अब सौभाग्यलक्ष्मीकी गोदसे गिरीहुई राजपूतजाति अन्तिम दशामें पूर्वपुरुषोंके इन सम्पूर्ण कीर्तिचिह्नोंके ऊपर यहां तक अनादर दिखारहीहै, कि उन सब स्मृतिचिह्नोंको तोडकर उनकी सामग्रीसे अपने घर निर्माण करनेमें भी लज्जित नहीं होती. इस कारणसे ही बहुतसे स्मृति चिह्न राजपूत सामन्तोंके मकान बनानेमें लगगये और बहुतसे पृथ्वीके गर्भमें समा गयेहैं।"

चला गयेहै। एक दूसरी श्रेणीके लोग कहतेहैं कि "यह बद्ध मूल जातिभेद प्रथा बिना दूर हुए हमारी राजनैतिक उन्नति होना असंभव है।" तथा एक श्रेणीके अंग्रेज भी हृदयके साथ हमारे इस जातिभेदकी निन्दा करते हैं। किन्तु हम सबसे पहिले यह कहना चाहते हैं, अत्यन्त गूढ कारणसे समाजकी विशेष प्रयोजनीयता देखकर ही हमारे पूर्व पुरुषगण यह जातिभेद प्रथा प्रचलित करगयेहै। समाजका मङ्गल साधन ही उनका मुख्य उद्देश था। शान्ति और समाज रक्षा करनेके लिये निर्द्धारित रीतिके अनुसार एक २ श्रेणीके ऊपर एक एक प्रकारका कार्य्यभार समर्पण अवश्य कर्त्तव्य है, उन्होंने विशेष परीक्षाके पीछे इस बातको निर्द्धारित किया था। जिस श्रेणीके लोग जिस कार्य्यमें विशेष दक्ष हैं; उस श्रेणीको केवल उसी कार्य्यमें नियुक्त रखकर उस कार्य्यका क्रमसे उत्कर्ष साधनभार समर्पण करना कर्त्तव्य समझकर ही हम एक २ श्रेणीके ऊपर एक २ प्रकारका सामाजिक कार्य्य समर्पित हुआ देखते हैं धर्म्म साधन, ज्ञान शिक्षा विस्तारमें ब्राह्मण मण्डलीको सर्वांशमें योग्य जानकर ही ब्राह्मण वर्णके ऊपर वह भार समर्पित हुआ, राज्यशासन, प्रजापालन, शत्रुके भय निवारण पक्षमें बलिष्ठ वीर क्षत्रिय जातिको सर्वांशमें योग्य जानकर ही उनके हाथमें राज्यभार समर्पित हुआ और इसी प्रकार दूसरी जातियोंकी योग्यतानुसार ही उनके ऊपर भी स्वतंत्र २ भार रक्खा गया। इसका फल यह देखाजाता है कि, जिस श्रेणीके ऊपर जो जो भार समर्पित था, वह २ श्रेणी वंशानुक्रमसे उसी विषयका अधिक उत्कर्ष साधन करगई है। विधि व्यवस्था और ज्ञानोन्नति जहांतक उन्नति होसकती है, ब्राह्मण वर्णने उसके करनेमें कोई त्रुटि नहीं रक्खी राज्यरक्षा, पुत्रकी समान प्रजापालन और बाहुबलसे भारतवर्षका गौरव [illegible] तक विस्तृत होसकताहै, सूर्य्य और चन्द्रवंशके भूपालकुल उसको विस्तृत

देखे जाते हैं, टाड साहबकी समान हम भी कहसकतेहैं कि, दुर्दान्त मुगल पठान और महाराष्ट्री लोग यदि उन खोदे हुए पाषाण स्मृति चिह्नोंको और स्तंभावलीको विध्वंस न करते तो इस विधि व्यवस्थाके आरंभके भेद निःसंदेह सहजमें ही उद्धार होजाते, कर्नैल टाडकी उक्तिसे यह भी सिद्ध होता है कि जिस विश्वविजयी बृटिशजातिने इस समय भारतकी सत्ताईस करोड प्रजाका शासन भार प्राप्त किया है, वह बृटिशजाति जिस समय संसारमें थोडी और अर्द्धजंगली थी तथा जिस समय वर्तमान सभ्यजगत् घोर अज्ञान और असभ्यताके अन्धकारसे ढका हुआ था उस समय यह राजपूतजाति प्रबल प्रतापसे राज्यशासन और सभ्यताके अङ्ग पुष्टि करनेमें नियुक्त थी यूरोपमें सामन्त शासन नियम रचनेके बहुत शताब्दी पहले भारतमें यह नियमावली चल रही थी, यह बात भी भलीभाँति सिद्ध होती है, ज्ञान शिक्षा और सभ्यताका बीज जिस प्रकार आर्यक्षेत्र भारतसे ही लेजाकर यूरोपमें बोया गया था यह सामन्त शासन विधि भी उसी प्रकार भारतकी रीति परही वहां प्रचलित हुई थी यथार्थके ज्ञाता इस बातको अवश्य ही स्वीकार करेंगे।

इसके पीछे टाड साहब फिर लिखते हैं कि, "प्रधान२ सामन्तमण्डली और सरदारोंको जो भूवृत्ति दीगई है,उसकी और राज्यके साधारण प्रधान राजनियम तथा धनकी सूचीकी पुस्तक लिखीहुई विद्यमान है। इन सबको अत्यन्त मूल्यवान पत्र मानना चाहिये। उनमें जिस समयतकका विवरण लिखाहुआ है, यदि हम उससे पहिले समयके इसी प्रकार लिखित पत्र प्राप्त करसकते तो उनके द्वारा निःसंदेह ही मेवाडके प्राचीन शासनमें भूवृत्तिका पूरा विवरण प्रगट होजाता।प्रत्येक सामन्तको जो भूवृत्ति दीगई है, पूर्वलिखित ग्रन्थमें उस विषयकी प्रत्येक बात लिखीहुई है, यहांतक कि, सामन्तगण भूवृत्ति पाकर उसके बदलेमें कई अश्वारोही और पदाति सेनाका संग्रह करके मेवाडेश्वरके अधीन किस प्रकार कितने दिन नियुक्त रहनेको वाध्य हैं यह सब बातें भी उसको पढकर विदित होसकती हैं। राजस्थानकी सामन्त शासनकी रीति और राज धनके साधारण नियम उक्त लिखित पत्रावलीके पाठसे विलक्षण रूपसे विदित होसकते हैं और वह सब लिखावटें विधान स्वरूप हैं,यह अवश्य ही स्वीकार करना होगा। यूरोपखण्डके फ्रांसराज्यमें खृष्टीय सोलह शताब्दीमें ऐसी सामन्तशासनकी रीति और राजस्व निर्णय विषयमें २८५ दो सौ पचासी विधान थे, यह बात उसके इतिहासमें प्रगट है, किन्तु उनमें केवल साठ विधान ही बहुत

एक राजकार्यालयमें यदि प्रत्येक राजपुरुषके कर्त्तव्यकार्य स्वतन्त्र २ निर्द्धारित न करके सबको ही कार्य सिद्ध करनेको कहाजाय तो क्या कार्यालयका फल सन्तोषजनक होसकता है ? भारतमें जिस समय इस जातिभेद वा वर्णभेदसे कार्य्यभेदकी व्यवस्था हुई, उस समय समाजकी कुमार अवस्था थी। समाजकी अवस्था देखकर पूर्व पुरुषोंने समाजकी मंगलकामनासे ही जातिभेद वा वर्णभेदके अनुसार कार्य्यसीमा निर्द्धारण कियेहैं बहुतसे लोगोंका विश्वासहै कि, ब्राह्मण जातिने विद्या बुद्धिबलसे सर्वश्रेष्ठ होकर अन्यान्य जातियोंको दास बनानेके लिये ऐसी व्यवस्था बनादी है। जिन लोगोंका ऐसा विश्वास है वह भूले हुए हैं × इस संसार राजपदके अतिरिक्त और कोई बडा और सुखदायक नहीं है। ब्राह्मणजाति यदि सबको दास बनाना चाहती तो वह स्वयं राजमुकुट धारण न करके क्षत्रियोंको राज्य-पर क्यों अभीषिक्त करती और संसारके सब ऐश्वर्य्य छोड गहरे वनमें जाकर क्यों फल मूल भोजन करती ? उनको सर्वसुख छोडनेसे क्या प्रयोजन था ? वह सहजमें ही राज्येश्वर होकर सबको क्रीतदास क्या नहीं बना देते ? इसमें कोई महाशय यह कहेंगे कि ब्राह्मणोंमें शारीरिक बल न्यून था इस कारण वह राज्य न पासके। यह बात भी बिलकुल भ्रांति पूर्ण है क्योंकि पहिले समयके ब्राह्मण क्षत्रियोंसे भी अधिक बलिष्ठ थे,। ऋषि मुनि और साधारण ब्राह्मण मण्डल दीर्घ-कालतक जीवित रहकर संसारका हित साधन कर गये हैं। जो लोग भारतके पुराने भीतरी तत्त्वोंको जानते हैं वह लोग उपरोक्त बातके स्वीकार करनेको अवश्य ही बाध्य हैं इसी कारण कहते हैं कि ब्राह्मणोंने अपने स्वार्थ साधनके लिये इस जाति भेद वा वर्णभेदसे कार्य्यभेद निर्द्धारण न करके समाजके मंगलके लिये ही इसको न्यायानुसार स्वीकार किया था। इस बातको ब्राह्मण जातिका त्याग स्वीकार–ऐश्वर्य आडंबर धनागमके ऊपर सर्वथा अनादर दिखाना ही विशेष रूपसे प्रमाणित कर रहा है।

वर्त्तमान समयमें जो लोग भारतमें जाति उठादेनेके लिये बडे भारी उत्कंठित हैं, तथा जो लोग प्राचीन समाज उत्तम नीतिके मूलमें कुठाराघात करके विलायती समाजके स्वेच्छाचार शासनकी रीति चलानेके अत्यन्त अभिलाषी हैं वह निश्चय ही घोर अन्धकार युक्त भ्रांति कूपमें गिरगए हैं। यदि उनका मनोरथ सिद्ध होजाय तो समाज उत्तरोत्तर उसके अवनतिके

× [illegible]

आवश्यकीय समझे जानिये। परन्तु मेवाडकी विधान संख्या जो मुझको विदित हुई है वह अधिक है, और उन सबमें जितनी विशेष प्रयोजनीय रीति हैं वह परिशिष्टमें लिखदीगईहैं।

राजपूत जातिकी श्रेष्ठ वंशमें उत्पत्ति।—राजस्थानके छोटे राज्यसमूहोंके जिनमें प्रतिष्ठायुक्त और बहुत प्राचीन वंशके लोग शासन करगयेहैं, और अब भी शासन कररहे हैं, उनके साथ यदि यूरोपखण्डके प्रसिद्ध वंशवालोंकी हम तुलना करें, तो यह अवश्य ही कहेंगे कि उनकी अपेक्षा राजपूतगण ही श्रेष्ठहैं। राजपूत जातिकी उत्पत्ति विषयमें बहुत पुराने समयके वृत्तान्त पढनेसे मैं यह कहसकताहूं कि यह जाति नीच वंशमें उत्पन्न या कम राजवंशवाली नहींहै। यद्यपि राजपूत जातिके गौरवगरिमा प्रताप प्रभुत्व और शक्ति इस समय बिलकुल हास होगई है, यद्यपि उनके अधिकृत राज्य इस समय क्षीण होगयेहैं, यद्यपि वह वंशका गौरव प्रकाशक और पदमर्यादाके जतानेवाले ऐश्वर्याडम्बरके चिह्न छोडनेको बाध्य होगयेहैं,

सागरमें डूब जायगा। यद्यपि हम प्रत्यक्ष देख रहेहैं कि इस समय हमारी उस प्राचीन जातिभेद प्रथाके मूलमें दारुण वज्राघात हो रहाहै, सामाजिक सुधामय रीति-नीति धीरे २ अदृश्य होती जातीहै, समाजनेताओंका अभावसा है, यहांतक कि मूल समाजतक विध्वंसप्राय है, तथापि इसको समूल नष्ट कोई नहीं करसकता। देशकाल और अवस्था भेदसे परिवर्त्तनको कोई निवारण नहीं करसक्ता यह हम भी स्वीकार करते हैं, किन्तु हमारा भाग्यचक्र इस समय जैसा परिवर्तित होरहाहै, उससे हमारी यह अवस्था परिणाममें अवश्य ही शोचनीय होजायगी। हम यदि इस समय विजातीय अनुकरण विजातीय शिक्षाके गुण और विजातीय शिक्षाके प्रबल स्रोतमें भासमान न होकर अपने पूर्व पुरुषोंके अवलंबित मार्गमें चलनेकी चेष्टा करें और समयकी अवस्थानुसार धर्मपर दृष्टि रखते हुए साधारण बातोंको कुछ बदल दें तो हमारा आर्य्यनाम अक्षय होगा, समाज शान्ति सौरभसे पूर्ण होगा, और जातीय गौरव रवि प्रबल तेजके साथ पूर्णरूपसे चमकेगा। नहीं तो हम लोग इस जगतमें एक अभूतपूर्व जातिमें परिणत होजायेंगे। जो लोग पूर्व पुरुषोंको अज्ञ,मूर्ख आदि उपाधि देनेमें लज्जित नहीं होते,वह लोग निश्चय जानें कि एक ऐसा समय आवेगा जिस समय उनके उत्तराधिकारी भी अधिक घृणाके साथ उनके प्रति उक्त उपाधियें वर्षानेमें कुछ भी लज्जित न होंगे। इस कारण पूर्व पुरुषोंका दिखाया मार्ग ही हमको सबसे पहिले अवलम्बन करना उचित है। एक श्रेणीके अंग्रेज यदि हमारे जातिभेदकी निन्दा करते हैं तो क्या हम भी उसका विशेष तत्त्वानुसंधान न लेकर अपनी प्राचीन प्रथाकी निन्दा करने लगें, यदि अंग्रेजोंकी सामाजिक दशाके ऊपर हम तीक्ष्णदृष्टि डालें तो हमारे नेत्रोंके आगे कैसा दृश्य प्रतिबिम्बित होगा ? हमारे समाजमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, यह चार वर्ण सृष्टिके प्रथमसे ही विराजमान हैं। हम इस बातको मानते हैं कि अंग्रेजोंमें प्रकटमें ऐसा वर्णभेद नहीं देखाजाता। किन्तु हम [illegible]

गये हैं । उनको पढते समय चित्तमें अभूत पूर्व आनन्द उदय होताहै । इङ्गलेंडकी अधीश्वरी एलिजवेथके द्वारा दूतरूपसे भेजे हुए सरटामस जिस समय भारतमें आये थे, वह उस समय इन राजपूत भूपालके ऐश्वर्य आडम्बर और बाहुबलके विषयमें जितनी अधिक प्रशंसा करगये हैं, वह ऐश्वर्य्य आडम्बर और प्रताप प्रभुत्व राजपूतजातिके इतिहासमें विशेष रूपसे प्रकाशमान है।

मारवाडके राठौरगण-राठौरजाति सम्मानित और महोच्च वंशमें उत्पन्न होनेसे गर्व करसकती है । राणाके परिवारके बहुत प्राचीन कालके वंशवृत्तान्तको मैं जिस निश्चयताके साथ प्रगट करसकताहूं, यद्यपि राठौरोंके प्राचीन कालका वंश विवरण मैं उतनी निश्चयताके साथ वर्णन नहीं करसकता, किन्तु यह मैंने सब विषयोंमें निःसंदेह रूपसे प्रगट करदियाहै कि, जिस समय फ्रांसवालोंके एक अपरिचित सम्प्रदायके नेता भविष्य फ्रांसराज्य स्थापनके लिये मार्ग साफ कररहे थे, उस समय राठौर राजके हाथमें कान्यकुब्ज देशका राजदण्ड समर्पित था। उस राठौर जातिकी प्रबल क्षमता और असीम शासनशक्ति व्यवहार हीन अवस्थामें होनेके कारण ही अकस्मात बारह शताब्दीमें केवल उस कान्यकुब्जदेशका ही पतन हुआ, किन्तु मारवाड राजछत्रके नीचे वह राठौरराजवंशधर ही बैठते चले आते हैं ।

कुईसआफलारेन्सके, साथ महारानी, विक्टोरियाकी कन्याके परिणयके दिन भोजसभामें केवल जात्याभिमानके लिये ही भारतके सम्राट् ७ सप्तम एडवर्डने एकत्र भोजन करना स्वीकार न किया । सामयिक समाचार पत्रोंमें यह बात भलीप्रकारसे छपीहुई है । लेने देनेके विषयमें भी प्रबल जात्याभिमान अंग्रेज समाजमें विराजमान है । कितने ही डिउक, मारकुईस, अर्ल और लार्डपुत्र मध्य वा अधम श्रेणीकी सुन्दरी युवतियोंके रूपमें मुग्ध हो पिता माताकी आज्ञाके विना विवाह करके कैसी २ घोर विपत्तियोंमें पडचुके हैं–उस सम्बन्धसे कितने काण्ड होचुके हैं और होतेहैं, भला ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदिकी समान विभिन्न वर्ण विना उत्पन्न हुए ही जब अंग्रेजसमाजमें जात्यभिमान ऐसा प्रबल देखाजाता है तो जो अंग्रेजदल हमारे जात्याभिमानसे घृणा करते हैं, उस अंग्रेज सम्प्रदायके कथनपर हम क्यों कर्णपात करें ? जात्यभिमान सृष्टिके प्रथमसे ही प्रभुत्व करता चला आरहा है, इतिहासवेत्ता इसको मुक्तकंठसे स्वीकार करेंगे । जहांपर जात्यभिमान नहींहै, वहांपर महत्त्व भी स्थान नहीं पासकता । हम " आर्य्यवंशधर हैं " यह एक महान जातीय गर्व है, दुर्भाग्यसे यह गर्व इस समय हमारे हृदयसे लुप्तप्राय होगयाहै, इसी कारण एक श्रेणीके अंग्रेजी शिक्षित युवक पूर्वपुरुषोंको अज्ञ, मूर्ख उपाधियोंद्वारा ढककर, विजातीय अनुकरण कररहे हैं ।

एक सम्प्रदायके लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि " इस जन्ममें जाति बदल जातीहै । " यह लोग यातो संस्कृत विद्याका विशेष ज्ञान न होनेके कारण ऐसा कहते हैं, अथवा पक्षपातसे कहतेहैं । उनको इतनी बातोंका विचार करना चाहिये कि स्वभाव माता पिताके रज और वीर्य्यसे बनता है और जन्मसे मरणपर्य्यन्त रहताहै, जैसे अग्निका जलानेका स्वभाव अग्निके साथ ही उत्पन्न होताहै और अग्निके नष्ट होनेपर साथ ही नष्ट होजाताहै । स्वभाव प्रत्येक मनुष्यका भिन्न २ उत्पन्न होताहै । माता पिताका रज वीर्य्य तानेबानेकी तरह सम्पूर्ण शरीरमें रहताहै । रज वीर्य्यके अनुसार स्वभाव बनताहै और स्वभावके अनुसार प्राणी कर्म्म करताहै । जैसे कर्म्म करताहै उसीके अनुसार जीवकी गति होतीहै । इसी कारण भगवान् कृष्णचन्द्र श्रीमद्भगवद्गीतामें लिखगयेहैं कि " चारों वर्ण गुण कर्म्मके अनुसार ही उत्पन्न कियेहैं, शम, दम, तप, शौच, शान्ति, [illegible], ज्ञान, विज्ञान और आस्तिक्य यह ब्राह्मणके स्वाभाविक कर्म्म हैं । शौर्य्य, तेज, धृति, चतुराई, युद्धसे न भागना, दान, ईश्वरभाव यह क्षत्रियोंके स्वाभाविक कर्म्म हैं । कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य यह वैश्यके स्वाभाविक कर्म्म हैं । और

मेवाडके सिसोदीयगण–मेवाडकी राजनीति समाजनीति और शासननीति अन्यान्य राज्योंसे सर्वथा पृथक् है, इस बातको सब जानते हैं। नवीन स्थापित राज्योंकी जिस समय बाल्यावस्था थी, मेवाडके राजवंशने उस समय प्राचीन पदवीमें पदार्पण किया था। मेवाडकी अवनति–राज्यक्षय किस प्रकार किन कारणसे होते रहे, इस बातको हम प्रगट कर सकते हैं, किन्तु मेवाड राज्य किस प्रकारसे विस्तृत हुआ, इस विषयको बडी कठिनतासे प्रकाश कर सकते हैं; इधर मारवाड, अम्बेर और अन्यान्य छोटे २ राज्योंने किस प्रकार राज्य सीमा बढाई, इनका लिखना भी बहुत सहज है। कई छोटे २ राज्य लेकर ही मारवाडकी उत्पत्ति हुई है; वह प्राचीन छोटे २ प्रदेश अन्तमें नवीन राठोर राजवंशके अधीन करदरूपसे वर्तने लगे राजगण सामन्त मण्डलीके ऊपर जिस विशेष स्वाधीनभावसे शासनशक्ति सञ्चालनमें समर्थ हुए, वह केवल उनके देशाधिकारकी रीतिसे ही स्थिर है। यूरोपकी सामन्त शासन प्रणाली जिस समय प्रचलित थी उस समयके सामन्तोंके स्वत्वाधिकारकी समान इनका स्वत्वाधिकार ज्योंका त्यों है।

सेवाकार्य्य शूद्रका स्वाभाविक कर्म्म है । " यह भगवद्वाक्य कभी अन्यथा नहीं होसकता । इस वर्ण व्यवस्थाका भलीभाँति पालन न करनेसे ही भारतकी यह दुर्दशा होगई है । जाति बदलनेकी प्रथा चलानेसे वर्णसंकर संतान होने लगेगी और सन्तानके वर्णसंकर होनेपर जातिधर्म्म और कुलधर्म्म नष्ट होजायगा । क्या ही अच्छा हो कि सबलोग वर्णव्यवस्थाके अनुसार अपने स्वाभाविक कर्मकी धर्म्मोन्नति करके भारतका पुनरुद्धार करलें ।

इसके अनंतर कर्नेल टाड लिखते हैं कि—" रजवाडेकी प्रचलित समाजनीतिके अनुसार केवल जिन मनुष्योंके पिता माता दोनोंके कुल ऊंचे वंशसे उत्पन्न शुद्धरक्तधारी हैं; केवल उस वंशके लोग ही मेवाडेश्वरके अधीनमें सामन्त पदपर अभिषिक्त होकर भूवृत्ति संभोग कर सकते हैं। जिनकी नाडियोंमें शुद्ध राजपूतरक्त बह रहा है, वह राजपूत यदि अत्यन्त निर्द्धन और एक चरसा भूमिके अधीश्वर हों तो उनके साथ सर्वश्रेष्ठ सामन्त भी आदान प्रदान चलन द्वारा अपनेको आ

पूतजाति वैसे चिह्न व्यवहारमें अनभिज्ञ नहीं थी। × मेवाडकी प्रधान राजपताका लालरंगकी है और उस पताकाके ऊपर सूर्य्यकी सुवर्णकी मूर्त्ति अङ्कितहै। मेवाडके सामन्तोंकी पताकापर एक २ खड्गकी मूर्त्ति चित्रित है। अम्बेरकी राजपताका पाँच रंगयुक्त है। चन्देरी नामक छोटे राज्यकी पताकापर प्रमत्त सिंहकी मूर्त्ति चांदीद्वारा रञ्जित है। *

यूरोपखण्डमें यह प्रथा क्रूसेड़के पहिले प्रचलित नहीं थी; किन्तु विख्यात ट्रयराज्यके युद्ध होनेसे बहुत काल पहिले राजपूत जातिकी सब सम्प्रदायोंमें ही यह प्रबल रूपसे देदीप्यमान था। खृष्टजन्मके बहुत शताब्दी पहिले जिससमय महाभारतका युद्ध हुआ था, उस समय अर्जुनकी पताकामें हनुमानजीकी मूर्त्ति अंकित थी। यह बात महाभारतके पढनेसे विदित होसकती है।

यह व्यवहारके सम्पूर्ण चिह्न हिन्दुओंके धर्म्मविधान मूलक हैं और अपने देव देवियोंकी मूर्त्तियोंसे ही यह निर्वाचन करलिये हैं।

प्रत्येक राजपूतके राजमहलमें एक २ रक्षाकर्त्ता कुलदेवता है, और वह प्रायः ही युद्ध क्षेत्रमें लेजाया जाता था। राजा स्वयं घोडेपर सवार होकर उस मूर्त्तिको अपने साथ लेजाते थे। कोटेके राओ भीमहरने युद्धके समय अपने कुलदेवताके साथ जीवन विसर्जन किया था। खीची जातिके नेता स्वर्गवासी विख्यात जयसिंह अपने कुलविग्रहको बिना साथलिये कभी इकले युद्धभूमिमें नहीं जाते थे। × वह जिस समय "हुंहुं" शब्दके साथ कुलदेवताकी जय उच्चारण करके युद्धसागरमें कूदतेथे। शत्रु महाराष्ट्र सेनादल उस समय महा भयभीत हो

पूत राजमें भी ठीक उसी प्रकार देखतेहैं । मेवाडेश्वरके प्रधान प्रासाद निर्म्माता चित्रकार, चिकित्सक, वंशकारिकाकार, दूत और राजधानीके प्रत्येक वंशधर भूवृत्ति पाते हैं । राजके सब पदोंपर वंशानुक्रमसे ही नियोग होताहै, अर्थात जिसपद पर जो पुरुष नियुक्त कियागयाहै,उस पदपर केवल उसके ही पुत्र पौत्र आदि उत्तराधिकारी लोग नियुक्त होते हैं । उन सबको उपाधि भी दी जातीहै यदि किसी विशेष कारणसे किसीकी भूवृत्ति लौटाली जाय तो वह उसके लिये सर्वथा अनधिकारी नहीं होजाता । मेवाडमें समय समय पर तीन चार पुरुषोंको " प्रधान " अर्थात् मंत्री उपाधि धारी भी देखागयाहै । " *

इसके अनन्तर कर्नेल टाड लिखतेहैं कि, " इस प्रकार साधारण मंतव्य प्रकाशके पहिले में यह सामन्तशासन रीतिका नियम पूर्वकालमें जिस प्रकार था और राणाके राज्यमें इस समय उसका जो २ अङ्ग जिस २ भावसे विराजमान है में उसको नीचे लिखताहूं ।–

मेवाडराज्यकी भूसंपत्ति वहुत श्रेष्ठरीतिसे विभक्त श्रेणीवद्ध और निर्णीत हुई है । राज्यके दक्षिण,पूर्व और पश्चिम इन तीनों सीमा प्रांतमें लुटेरे भील, मीरा और मीना जातिके लोग निवास करतेहैं। राज्यके चारों प्रांतके परिधिके मध्यवर्त्ती सम्पूर्ण प्रदेश सामन्तोंके लिये निर्द्धारित हैं, और राज्यके मध्यस्थलमें उर्व्वर और धनशाली प्रदेश खालिसा अर्थात राणाके साक्षात सम्वन्धमें अपने अधिकारकी करद भूमि विराजमान है । उक्त खालिसा भूमिके चारोंओर ही सामन्तमण्डलीके अधिकृत प्रदेश होनेसे वह भूमि विशेष रूपसे रक्षित है ।

सामन्तगणोंको जितना भूभाग वृत्तिरूपसे दियागयाहै, खालसा भूमिका परिमाण उसके चौथाई अंशकी समान होनेमें भी संदेह है । राणाकी निज अधिकारवाली खालसाभूमि ही राजशक्तिकी धमनी और मांसपेशी स्वरूप है. इस बातको पहिले राणालोगोंने भलीभांति हृदयङ्गम कर लिया था । विशेष प्रसंग-

मेवाडके सिसोदीयगण—मेवाडकी राजनीति समाजनीति और शासननीति अन्यान्य राज्योंसे सर्वथा पृथक है. इस बातको सब जानते हैं। नवीन स्थापित राज्योंकी जिस समय बाल्यावस्था थी, मेवाडके राजवंशने उस समय प्राचीन पदवीमें पदार्पण किया था। मेवाडकी अवनति—राज्यक्षय किस प्रकार किस कारणसे होते रहे, इस बातको हम प्रगट कर सकते हैं, किन्तु मेवाड राज्य किस प्रकारसे विस्तृत हुआ, इस विषयको बडी कठिनतासे प्रकाश कर सकते हैं: इधर मारवाड, अम्बेर और अन्यान्य छोटे २ राज्योंने किस प्रकार राज्य सीमा बढाई, इसका लिखना भी बहुत सहज है। कई छोटे २ राज्य लेकर ही मारवाडकी उत्पत्ति हुईहै: वह प्राचीन छोटे २ प्रदेश अन्तमें नवीन राठौर राजवंशके अधीन करदरूपसे वर्तने लगे राजगण सामन्त मण्डलीके ऊपर जिस विशेष स्वाधीनभावसे शासनशक्ति सञ्चालनमें समर्थ हुए, वह केवल उनके देशाधिकारकी रीतिसे ही स्थिर है। यूरोपकी सामन्त शासन प्रणाली जिस समय प्रचलित थी उस समयके सामन्तोंके स्वत्वाधिकारकी समान इनका स्वत्वाधिकार ज्योंका त्यों है।

तीन और राजका शुभ मूलक कार्य्य विना किये कोई पुरुष भी इस खालसा भूमिका थोडा अंश भी नहीं पाता था; उदयपुर राजधानीके निकट कुछ थोडी भूमि यदि कोई सामन्त बगीचा लगानेके लिये ग्राम करलेता था तो वह अपने आपको महा सन्मानित समझता था । जिस अर्धचन्द्राकार उपत्यकाके बीचमें उदयपुर राजधानी विराजमान है, उसमें कोई ग्राम किसी सामन्त वा किसी उच्चपदस्थ व्यक्तिको किसी विशेष क्षति पूरणके लिये ही दिया जाता था । किन्तु राणा भीमसिंह इतने हिताहित विचारशून्य दाता थे कि कुछ अधिक चार कोश परिधियुक्त इस खालसा भूभागमेंसे एक ग्राम भी राजभुक्त न रखगये. अर्थात उन्होंने सब ग्राम ही वृत्तिरूपसे अनेक व्यक्तियोंको देदिये ।

इस भूभागके कारण, सीमान्तवर्त्ती पहाडी जातिके उपद्रवसे और मुगल, पठान, महाराष्ट्रियोंके आक्रमणसे सामन्तलोगोंको बराबर युद्धमें संलिप्त रहना होता था । अर्थात् वीर सामन्तगण प्रायः सदा ही किसी न किसी कारणसे भूवृत्तिके बदलेमें सेनासहित राणाके अधीनमें नियुक्त होनेको बाध्य होतेथे ।

सम्पूर्ण प्रदेश जिले २ में विभक्त है; पचाससे सौ वा किसी २ स्थानमें इससे अधिक संख्यक नगर और ग्राम लेकर एक २ जिला बनाया गयाहै । सम्पूर्ण उपविभाग "चोरासी" नामसे विख्यात है । आजतक बहुतसे उपविभाग "चौरासी" नामसे कहाते हैं; जिहाजपुर और कमलमीरके "चोरासी" उपविभाग आजतक विराजमान हैं । कर्नेल टाड कहतेहैं कि "हमलोगोंका स्यक्सन प्रदेशोंके सम- यमें सैकडों ग्राम नगर मिलकर एक २ विभा

प्रथम पौराणिक–भगवान् वैवस्वत मनुकी कन्या इला एकदिन वनमें विचरण कर रहीथी कि ऐसे समय चंद्रपुत्र बुधसे उसका साक्षात् हुआ बुधने उसको अपनी पत्नी बनाया और उससे चंद्रवंशकी उत्पत्ति हुई ।

दूसरे चीनवालोंके प्रथम महाराज यू (आयु) का जन्म वृत्तान्त, एकदिन कोई स्त्री घूमतीहुई फो (बुध) नामक ग्रहके सामने पड़गई फोने बलपूर्वक उससे सहवास किया, उसको तत्काल गर्भ रहा और यथासमय उसके एकपुत्र जन्मा जिसका नाम यू रक्खा, इसी यूने चीन देशके प्रथम राजवंशकी प्रतिष्ठा की इस यूने चीन देशको नौ भागोंमें बांटकर ईसासे २२०७ वर्ष पहले राज्य करना आरंभ किया ।

इससे स्पष्ट होगया कि तातारी आय, चीनी यू और पौराणिक आयु उक्त तीनों जातियोंके चन्द्रवंशी स्थापन कर्ताओंके पृथक् २ नाममात्रहैं । पौराणिक चन्द्रपुत्र बुधकी छायाके द्वारा चीनवालोंका फो, यूरुपियन जातिवालोंका वो दिन तथा तुइतेतिसभी कल्पित हुएहैं ।

अब यह स्पष्ट प्रतीत होताहै कि बुधदेवने जिस धर्मका प्रचार कियाथा वह धर्म उस समयकी अनेक जातियोंका मुख्य धर्म होगया, वह जातियें बहुत दिनोंतक उस धर्मका एक भावसे प्रचार करतीरहीं क्रमशः जब सूर्योपासकोंका प्रचण्डप्रताप बढा तब उनकी तेजोमयी उपासना पद्धतिके सन्मुख बुधका धर्म स्थित न रहसका धीरे धीरे बदलनेलगा बदलते २ वर्त्तमान शान्तिमय जैन धर्ममें परिणत होगया ।

महात्मा डियाडोराने एक शक जातिकी उत्पत्तिके विषयमें जैसा वृत्तान्त लिखाहै, उससे हमारा लिखा हिन्दू चीन और तातारियोंका उत्पत्ति वृत्तान्त

---

१ (शक म्लेच्छजाति विशेष–इन्होने सूर्यवंशके बाहु राजाको राज्यसे निकाल दियाथा, तब बाहुके पुत्र महाराज सगरने इनको भली भांतिसे दण्ड दिया, कुलपुरोहित वशिष्ठजीके कहनेसे महात्मा सगरने इन लोगोको मारा तो नही परन्तु शकोंका आधाशिर, यवन और कम्बोजोंका सब शिर मुडवादिया, कम्बोजोको मुक्तकेश और पह्लव जातिको सदा डाढी मूछ रखनेकी प्रतिज्ञा कराकर इन विशेष २ दण्डचिह्नोको देकर देशसे बाहर निकालदिया। यथाहि–

“ततः शकान् सयवनान् कम्बोजान् पारदांस्तथा । पह्लवांश्चापि निःशेषान् कर्तुं व्यवसितो नृपः ॥१॥
ते हन्यमाना वीरेण सगरेण महौजसा । वशिष्ठं शरणं जग्मुः कर्त्तव्यानुरोधिनम् ॥ २ ॥
वशिष्ठः शरणापन्नान् समये स्थाप्य तान्मुनिः । सगरं वारयामास तेभ्यो दत्त्वाभयं तदा ॥ ३ ॥
सगरस्तान् प्रतिज्ञां तु निशम्य सुमहाबलः । धर्मं जघान तेषाञ्च वेशान्यत्वं चकार ह ॥ ४ ॥
अर्द्धं शिरः शकानान्तु मुण्डयामास भूपतिः । यवनानां शिरः सर्वं काम्बोजानामपि द्विज ॥ ५ ॥
पारदान्मुक्तकेशांस्तु पह्लवान् श्मश्रुधारिणः । निःस्वाध्यायवषट्कारान् कृतवान्स च ह ॥ ६ ॥”

पद्मपुराण स्वर्गखण्ड १५ अध्याय ।

बहुत कुछ मिलताहै इस स्थानपर आवश्यकता देखकर हम डियाडोरसकी लिखी बातको प्रकाशित करतेहैं डियाडोरसने लिखाहै।

अरक्सस नदीकी विशाल तीरभूमिही शक जातिकी आदि निवास भूमिथी. आधेमनुष्य और आधेसर्पके आकारवाली स्त्रीके गर्भसे वे जन्मेथे यह अपूर्व रूपवती स्त्री पृथिवीकी कन्या थी जुपिटरने उसके साथ विवाह करके उसके गर्भसे शीथिस नामक एक पुत्र उत्पन्न किया. शीथिसके वंशधर उसीके नामसे प्रसिद्ध हुए उनसे पलस और नापस नामक दो बड़े वीर पुत्र जन्मे, यह दोनों ऐसे पराक्रमी हुए कि एक समय इन्होंनें आफ्रीकासे लेकर नीलनद और पूर्व सागरके मध्यके विशालदेशतकको अपने अधिकारमें करलिया।

महावीर शीथिसके लगाये हुए विशाल वंशवृक्षसे बहुतसे राजकुल उत्पन्न हुए, उनमें शाकस. मस्साजिती और अरिस्पा सारियन प्रधानहैं एक समय इन वीरवंशवालोंने अपने पराक्रमसे असीरिया और मिडिया राज्य जीतकर वहांके निवासियोंको अरक्ससनदके किनारे पर बसादिया था।

आधे मनुष्य और आधे सर्पके आकारवाली स्त्रीसे उत्पन्न हुआ उनका वंश बहुत वृद्धिको प्राप्त हुआ प्रधान शकगीत शीथिसके लगाये विशाल वंश

किसी विश्वासी मनुष्यको प्रतिनिधि रूपसे भेज देते हैं। जिलोंका विचार भार एक दीवानीकर्म्मचारी और एक सैनिकके ऊपर अर्पित है। दूसरी श्रेणीके अधीन सामन्तमंडलीमेंसे प्रायः ही उक्त सैनिक विचारपति नियुक्त होते हैं। वह प्रत्येक जिलेके प्रधान स्थान अथवा दुर्गमें निवास करते हैं।

मेवाडके सामन्तगण जैसी भिन्न स्वतंत्र २ श्रेणियोंमें विभक्त हैं, उसको देख कर अनुमान होता है कि समाजकी अवस्था बहुत श्रेष्ठ न होनेपर ऐसा कभी नहीं होता। साधारणतया सामन्तमंडली तीन श्रेणियोंमें विभक्त है। यथा,—

प्रथम श्रेणी—सब सोलह सामन्त इस श्रेणीमें हैं; इनके प्रत्येकके अधिकार भुक्तभूभारकी वार्षिक आय पचास सहस्रसे एक लक्ष मुद्रा तक होगी। यह प्रथम श्रेणीके सामन्तगण राणा द्वारा किसी विशेष कार्यमें आमंत्रित होनेपर, पर्वोत्सवादिके और किसी धर्म्मानुष्ठानके समय राजभवनमें जाते हैं। प्रथम श्रेणीके सामन्तगण वंशानुक्रमसे बहुत कालसे राणाका मंत्रित्व करते आते हैं।

दूसरी श्रेणी।—इस श्रेणीके सामन्तोंकी वार्षिक आय पाँच सहस्रसे पचास सहस्र मुद्रातक है। यह सदा राणाके निकट रहनेको बाध्य हैं। इस दूसरी श्रेणीकी सामन्तमण्डलीमेंसे ही प्रधानतः सीमान्तरक्षक फौजदार और सैनिक कर्मचारी चुने जाते हैं।

तीसरी श्रेणी।—सामन्तोंमें यह तीसरी श्रेणी "गोल" नामसे विख्यात है। यह वार्षिक पाँच सहस्र मुद्राकी भूमिवृत्ति पाते हैं। और कभी २ राणा विशेष अनुग्रह दिखानेके लिये इस श्रेणीके किसी २ सामन्तको इससे अधिक आयकी भूमि भी देदेते हैं। यह साधारणतया स्वतंत्र भावसे ग्राम और भूमि भोगते आते हैं: पूर्वकालमें इस श्रेणीके सामन्तगण राणाके विशेष उपकारमें आते थे। इनका सदा ही राणाके निकट रहनेका नियम है। वास्तवमें यह सामन्तमंडली ही राणाकी राजशासनशक्ति संचालन और दृढ करनेके प्रधान सहायक स्वरूप हैं, कारण कि उच्चश्रेणीकी सामन्तमण्डली यदि किसी समय राजभक्तिके शिर पर लात मारकर राणाके विरुद्ध खडी हो, तो उस घोर विपत्तिके समय यह सामन्तगण राणाका पक्ष अवलम्बन करके विद्रोही सामन्तोंकी पापआशा व्यर्थ करनेमें समर्थ होतेहैं।

चौथी श्रेणी।—राणाके परिवारकी कनिष्ठ शाखामें उत्पन्न राजकुमारगण कुछ दिनतक मान्यसूचक "बावा" उपाधि धारण करते हैं. और उनके भरण पोषणके लिये स्वतंत्र भूवृत्ति निर्धारित कीजाती है। यही चतुर्थ श्रेणी भुक्त हैं।

शैली अनेक अंशोंमें अपूर्ण होनेपर भी विपत्तिके समय और विजातीय आक्रमणके समय उन दोनों सम्प्रदायोंमें वीरता दिखानेका सुबीता कर देती, और वह वीरता दूसरोंको शासन प्रणालीका शुभदृश्य दृष्टिगोचर करदेती। इसके उदाहरणमें इतिहास लेखक टाड साहव एक घटना लिखगये हैं, पाठक लोगोंके जाननेके लिये उसको नीचे लिखतेहैं।

जिस समय मुगल सम्राट जहांगीरने मेवाडकी प्राचीन राजधानी चित्तौर और दुर्ग अधिकार करके राणाको मेवाडकी पश्चिम प्रांतके पहाडी प्रदेश और गहन वनमें भगादिया, उस समय सीमामें स्थित कुछ भूमिको शत्रुओंसे फिर उद्धार करनेका अवसर मिला। राणा सव सामन्तोंको एकत्रित करके उस कार्य्यमें अग्रसर हुए। किसी प्रदेशके अधिकारके निमित्त राणाके किसी समय अग्रसर होनेपर, चन्दावत सम्प्रदाय ही सवसे आगे सेनासहित गमन करता था। यह सेनासहित सवसे आगे जाना राजपूत जातिके महा सन्मानका करानेवाला वहुत दिनसे गिना जाताहै। किन्तु उपस्थित घटनामें शक्तावत अपने प्रतिद्वन्दी चन्दावतकी समान हिरोल अर्थात् अग्रगामी रूपसे जाने और सन्मानपात्र होनेके लिये आग्रह करनेलगे। वास्तवमें शक्तावतगण अन्यान्य सम्प्रदायोंकी अपेक्षा जैसे वलशाली और महा साहसी थे उसके द्वारा वह अवश्य ही इस सन्मान प्राप्त करनेके सव अंशोमें अधिकारी थे। शक्तावत् लोगोंके उपरोक्त प्रस्ताव उपस्थित करनेपर चन्द्रावत लोगोंने सूचित करदिया कि "हमलोग परम्परासे यह हिरोल अर्थात् अग्रगमनका सन्मान प्राप्त करते चले आते हैं, अतएव हम ही सवसे आगे जाकर वीरता दिखावेगे।" धीरे २ यह विवाद यहांतक वडा कि दोनों सम्प्रदाय ही परस्पर आक्रमणपूर्वक तलवारद्वारा इसकी मीमांसा करना उचित समझने लगे, किन्तु बुद्धिमान राणाने यह संकट देखकर कहा कि, "अन्तला नामक जिस स्थानके अधिकार करनेकी वात होरही है, जो सम्प्रदाय सवसे पहिले उस अन्तला दुर्गमें प्रवेश कर सकेगा, वह संप्रदाय ही हिरोल प्राप्त करेगा। राणाकी यह वात सुनकर शक्तावत संप्रदायके लोग विवाद छांडकर सन्मान संग्रह करनेके लिये शीघ्रही अन्तलाकी ओर दौडे और इधर चन्दावत् संप्रदायने भी वीरत्व विक्रम प्रकाशकी शुभ अवसर प्राप्तिमें द्विरुक्ति न करके प्रतियोगी सम्प्रदायकी समान जय प्राप्तिके लिये वाहर होनेमें क्षणमात्र भी विलम्व न किया।

अन्तला राजधानी उदयपुरके पूर्वप्रान्तमें नौ कोसकी दूरीपर सीमाका दुर्ग स्वरूप है। इन स्थानमें चितौरकी ओर एक वहुत पुराना मार्ग गयाहै। अन्तला

विवाह कर। यह सब और और अन्यान्य कई प्राचीन और आधुनिक कर संग्रहीत होते आते हैं। युद्धका कर इस समय प्रजासे संग्रहीत नहीं किया जाता। पूर्व-कालमें सदा ही युद्धविग्रह उपस्थित रहते थे, इस कारण उसी कालसे अर्थसंग्रह भी राणाके लिये अत्यंत आवश्यक होगया था। शान्तिके समय जिस प्रकार खेतोंके उत्पन्न द्रव्योंका परिमाण स्थिर करके करलिया जाताहै युद्धके समय शीघ्रताके कारण उस प्रकारका परिमाण स्थिर असंभव और राणाके लिये सुबीता जनक न होनेके कारण ही, अनुमानके ऊपर निर्भर करके उक्त सामयिक कर संग्रहीत होता था। पहाडी प्रदेशोंमें यह कर निर्द्धारण ही अधिक सुबीतेका है, क्योंकि राज्यमें प्रचलित नियमानुसार अन्नका परिमाण देखकर यहां कर ग्रहण करना सर्वथा असंभव है। पहाडी प्रदेशमें पृथ्वीके परिमाणके अनुसार अन्न उत्पन्न नहीं होता, इस कारण अनुमानके ऊपर निर्भर करके कर लेना आव-श्यक होगयाहै।

किसी सामंत वा सरदारके नवीन अभिषेकमें अथवा किसी सरदारके पद परिवर्त्तनके समय सामन्त वा सरदार लोग राणाको जो नजर भेंट करते हैं, वह सामान्य होनेपर भी एक आयका उपाय कही जासक्ती है। इसके अतिरिक्त भूमिया सरदारगण निर्द्धारित नियमानुसार वार्षिक वा त्रैवार्षिक राजस्व देते हैं। नियमादि भङ्गकारी और अन्यान्य अपराधियोंके ऊपर जो अर्थ दण्ड होता है, वह भी आयमें गिना जासकता है। कर्नेल टाड लिखगये हैं कि, राणा-लोग अपराधीके पकडने और दण्ड देनेमें विशेष यत्न करें तो इस आयके अधिक वृद्धि होनेकी संभावना है।

ऊंचे भूखण्डके ऊपर स्थापित है चारों ओर अभेद्य पत्थरका बना ऊंचा परकोटा है और उसके बीच २ में ऊंची चोटीके महल विराजमान हैं। एक नदी परकोटेके नीचे २ निकल गई है। उस बीचमें शासनकर्त्ताका निवास भवन है. उसके चारोंओर भी परकोटा है। केवल एक द्वारमें होकर ही उस दुर्गमें प्रवेश किया जाता है।

सामर्थ्य और प्रभुत्वके लिये सदाके प्रति द्वन्द्वी वह शक्तावत और चन्दावत गण गौरव प्राप्त करनेकी इच्छासे प्रतियोगी बनकर एक समयमें ही सूर्योदयके पहिले अपने २ लक्ष्य स्थल अन्तलाकी ओर बडी वीरताके साथ दौड दिये। सन्मानका लाभ ही उनका उद्देश था दोनों सम्प्रदायके हृदय ही आशासे और इस कारण दोनों ओरके कवियोंने वीर राजपूतोंके हृदयोद्दीपक संगीत स्वरसे प्रत्येकको रणोन्मत्त करदिया। प्रबल उद्दीपना दोनों सम्प्रदायोंको ... वेगसे लेचली।

शक्तावत सम्प्रदायने अन्तला दुर्गके द्वारकी ओर ही चरण बढाये थे, इस कारण उन्होंने सूर्योदयके पहिले ही वहां पहुंचकर असावधान शत्रुगणको चौंका दिया। यवन सैनिक अकस्मात् राजपूतोंको आया हुआ देखकर तत्काल दुर्गके परकोटेमें आत्मरक्षाके निमित्त शस्त्र लेकर खडे होगये। उस समय समराग्नि प्रज्वलित होगई।

वाध्य होतेथे। किन्तु अन्तमें यह प्रथा यहांतक बढी कि किसी युद्धके विना उपस्थित हुए भी वह कर लिया जाने लगा। इस समय खड और काष्ठके वदलेमें धन लियाजाता है। नगरोंसे सेना दलके लिये रसद संग्रह करनेकी प्रथा थी। युद्धक्षेत्रमें जाते समय राणा जिस नगरमें विश्राम करते, उस नगर वा ग्रामका प्रत्येक पशुफल एक २ वकरा वा मेंढा और प्रत्येक किसान मैदा वा दूध देताथा। वह प्रथा अव भी कर रूपसे प्रचलित देखी जातीहै। फ्रांसकी सामन्त शासन रीतिमें भी यह प्रथा इसी प्रकारके कारणोंसे प्रचलित हुई थी, और अन्तमें राजालोग उसके वदलेमें धन लेने लगे, यह वात हालमके इतिहाससे भलीभाँति प्रगट है। फ्रांसके राजा जिस समय अपने २ राज्योंमें परिभ्रमण करनेके लिये वाहर होकर किसी सामन्तके अधिकृत प्रदेशमें पहुंचते, उस समय सामन्त वडे आदरके साथ राजाको ग्रहण करके उनके सन्मानके लिये घोडा और वस्त्रादि उपहार देतेथे। राजाके सन्मानमें जो व्यय होता था स्थानीय किसान और व्यापारी लोग उसमें अंश देतेथे।

मेवाडमें मद्य, अफीम और ताम्र मुकुटके ऊपर भी कर निर्द्धारित है। इसके द्वारा भी राणालोगोंको विशेष आय होतीहै।

चन्दावत सम्प्रदायके नेताने दुर्ग प्राकारमें सीढी लगाई और उसके ऊपर चढ-कर अपने सब अनुगामियोंको आनेकी आज्ञा दी। सीढीपर चढते ही शत्रुओंका गोला आकर गिरा।–उनकी आशा पूरी न हुई–हिरोलका सन्मान नहीं प्राप्त हुआ–उस गोलेके लगनेसे उनका शरीर प्राणशून्य होकर कटेहुए वृक्षकी समान सेनामें गिर पडा।

शत्रुओंकी सेना दोनों सम्प्रदायको ही व्यर्थ मनोरथ करनेकी चेष्टा कर रही थी। जिस समय चन्दावत सम्प्रदायके नेताके भाग्यमें यह शोचनीय बात उपस्थित हुई उस समय दुर्गके द्वारपर शक्तावत् सम्प्रदायके नेता क्रोधोन्मत्त सिंहकी समान महा गर्जन और महा विक्रमसे दुर्गाधिकार करनेकी विशेष चेष्टा कररहे थे। शक्तावत नेता सबसे पहिले बडे डीलवाले प्रमत्त हाथीपर चढ़े और भीतर जानेके लिये दुर्गद्वार तोडनेकी चेष्टा करने लगे। उन्होंने हाथीको आगे बढ़ाना चाहा, परन्तु किवाडोंमें बडी २ तीक्ष्ण कीलें लगी हुई थीं, इस कारण हाथी उसके तोडनेमें सम्मत न हुआ। शत्रुओंकी गोलियोंसे अपने सैकडों सैनिकोंको मरता हुआ देख और चन्दावत सम्प्रदायका भयानक शब्द सुनकर शक्तावत नेताको अपने पक्षकी जीतमें संशय होगया। उन्होंने विवश हो अपने प्राणोंका मोह छोडकर केवल अपने सम्प्रदा-यको हिरोल सन्मान दिलानेके लिये बडे साहसके साथ उन तीक्ष्ण कीलयुक्त किवाडोंपर अपना शरीर लगादिया, और महावतको उसके प्राणदण्डका भय देकर अपने शरीरके ऊपर हाथी चलानेकी आज्ञा दी। यद्यपि हाथीवान यह जानताथा कि स्वामीके ऊपर हाथी चलानेसे अवश्य ही उनके प्राण निकल जायँगे; तथापि अपने प्राण दण्डके भय और रणोन्मत्त प्रभुकी आज्ञासे उस विराटकाय हाथीको प्रभुके शरीरके ऊपर चला दिया। अमित बलशाली हाथीके देहभारसे दुर्गका द्वार उसी समय टूटगया, तत्काल हाथीसे पिसेहुए अपने स्वामीके शवपर होते हुए शक्तावत सैनिक दुर्गमें घुसकर यवनोंका संहार करने लगे। किन्तु शोक-यद्यपि शक्तावत् सम्प्रदायके नेताने अपने सम्प्रदायको हिरोल सन्मान दिला-नेके लिये अपना अमूल्य जीवन छोडदिया, किन्तु उस सम्प्रदायको वह सन्मान नहीं मिला. कारण कि शक्तावत सम्प्रदायके नेताके इस प्राण त्याग और शक्ता-वत लोगोंके दुर्गमें प्रवेश करनेसे पहिले ही अर्थात् जिस समय उन्होंने चन्दावत लोगोंकी भयङ्कर जयध्वनि सुनी थी, उसी समय प्रतिद्वन्द्वी चन्दावत सम्प्रदायके नेताका जीवन हीन शरीर उछलकर दुर्गमें गिरगया, और चन्दावत सैनिक दुर्गके भीतर घुस गयेथे।

तेंतीसवां अध्याय ३३.

व्यवस्था और विचार विभाग;-रोजाना भूवृत्ति प्राप्त सामन्त वा सरदारोंका सामरिक कर्त्तव्य निर्णय;-शासन प्रणालीकी अपूर्णता;-पाटवतोंका कर्त्तव्य कर्म।

कर्नेल टाड मेवाडके जिस समयका इतिहास लिखगये हैं, उस समय समयपरिवर्त्तनके साथ उस शासन विभागके सामान्य २ विषयोंमें कुछ २ रूपान्तर होगया है। टाड साहब मेवाडके जिस समय तकका इतिहास लिखगये, हमने उससे आगेके समयका इतिहास यथोचित स्थानोंमें लिख दिया है; उसके पढ़नेसे पाठकोंको यह अवश्य ही विदित होजायगा कि, मेवाडेश्वर राणाके साथ अर्थात सामन्त मण्डलीके सम्बन्ध बन्धनका इस समय कितना रूपान्तर होगया है। इस समय हमको उस रूपान्तरका पुनरुल्लेख न करके कर्नल टाडका अनुसरण करना ही उचित ज्ञात होता है।

ऊंचे पर्वतके ऊपर स्थापित है चारों ओर अभेद्य पत्थरका बना ऊंचा परकोटा है और उसके बीच २ में ऊंची चोटीके महल विराजमान हैं। एक नदी परकोटेके नीचे २ निकल गई है। उस बीचमें शासनकर्त्ताका निवास भवन है, उसके चारोंओर भी परकोटा है। केवल एक द्वारमें होकर ही उस दुर्गमें प्रवेश किया जाता है।

सामर्थ्य और मनुष्यके लिये सदाके प्रति इन्हीं पर शक्तावत और चन्दावत गण गौरव प्राप्त करनेकी इच्छासे प्रतियोगी बनकर एक समयमें ही सूर्योदयके पहिले अपने २ लक्ष्य स्थल अन्तलाकी ओर बड़ी वीरताके साथ दौड़े हिरौलके सम्मानका लाभ ही उनका उद्देश था दोनों सम्प्रदायके हृदय ही आशासे और इस कारण दोनों ओरके कवियोंने वीर राजपूतोंके हृदयोद्दीपक सङ्गीत स्वरोंसे सबके हृदयको रणोन्मत्त करदिया। प्रचण्ड उद्दीपना दोनों सम्प्रदायोंमें वेगसे उछली।

शक्तावत सम्प्रदायने अन्तला दुर्गके द्वारकी ओर ही चरण बढ़ाये थे, इस कारण उन्होंने सूर्योदयके पहिले ही वहां पहुंचकर असावधान शत्रुसेनाको घेर लिया। यवन सैनिक अकस्मात राजपूतोंको आया हुआ देखकर तत्काल ही परकोटेमें आत्मरक्षाके निमित्त शस्त्र लेकर खड़े होगये। उस समय समराग्नि प्रज्वलित होगई।

मंडली द्वारा नियमित रूपसे संपन्न होते थे। इस हितकारी पञ्चायत समाजका विषय पीछे भलीभाँति लिख चुके हैं, इस स्थानपर उसका लिखना अनावश्यक है। प्रत्येक विभागमें एक एक स्थायी कर्मचारी नियुक्त हैं और इसके अतिरिक्त प्रत्येक सीमान्तमें स्थित छावनीमें एक २ शासनकर्त्ता नियुक्त हैं, यह बात ऊपर यथोचित स्थानमें लिख चुके हैं। शेषोक्त राजपूत तीन प्रकारके कामोंमें नियुक्त हैं, प्रथम सामन्तोंके द्वारा प्रेरित हुई सीमाकी रक्षार्थ सेनाका एक संयोग करके उनको नियमित रखते हैं। दूसरे वाणिज्य शुल्क संग्रह और तीसरे—विचार कार्य्य संपन्न करते हैं। विचार कार्यकी "चबुतर" अर्थात् धर्माधिकरणसे ही निष्पत्ति होतीहै और "चोटिया" लोग उस धर्माधिकरणमें एकत्रित होकर विचार-करके विचार कार्यमें विशेष सहायता करते हैं। प्रत्येक नगर और ग्रामसे प्रजा द्वारा प्रतिनिधि स्वरूप एक २ मनुष्य चोटिया चुनाजाताहै, और निर्द्धारित चोटिया निरपेक्ष भावसे जबतक न्याय विचारकी सहायता करसके और विचार योग्य विषयके कूट प्रश्नोंकी यथार्थ व्याख्या करे उतने दिन तक उसके उस प्रति निधि पदपर बैठनेमें कोई विघ्न नहीं किया जाता।

राजस्थानके प्रत्येक प्रधान २ नगरमें "नगरसेठ" नामक एक प्रधान विचारक हैं। नगर वा ग्रामके विषेश मान्यपुरुष क्रमशः उस पदपर नियुक्त होते रहते हैं। उक्त चोटिया लोग उस प्रधान विचारकके सहकारी माने जाते हैं। साधारणतः पाटल और पटवारी लोगोंमेंसे चोंटिया चुनेजाते हैं प्राचीन इंग्लेंडके दशमांश कर संग्राहक फ्रांसके डिकेनस, और महाराष्ट्रियोंके दशन्दीकी समान पाटललोग कर संग्राहक हैं। पूर्वकालमें फ्रांसराज्यके "स्कावनी" * नामक विचारक सहकारीगण जिस प्रकार प्रजाके द्वारा निर्वाचिन होतेथे, रजवाडेके चोटिया और पञ्चायतें भी उसी प्रकार विचारक सहकारी रूपसे निर्वाचित होती हैं। किन्तु यह सब विचारालय केवल प्रत्येक प्रधान २ नगरके लिये विशेष रूपसे निर्द्धारित हैं. इसके सिवाय किसी २ साधारण आवश्यकीय विषयकी मीमांसाके लिये नगर वा ग्रामके सम्पूर्ण प्रतिष्ठित लोग पञ्चायत रूपमें बैठते हैं, पूर्वकालमें समाजकी प्रत्येक श्रेणीसे ही वह पञ्चायत निर्वाचिन होती थी।

जिन लोगोंका विश्वासहै कि "भारतवर्ष बहुत दिनसे यथेच्छाचार नीतिके अनुसार शासित होना चलाआता है और पहिले भी शासन विभागमें प्रजाको

---

* रोमके विचारालयके "जुडिसेस सिलेक्टी" समान यह लोग एक प्रकारके जूरी लिये जाते हैं।

चन्दावत सम्प्रदायके नेताने दुर्ग प्राकारमें सीढी लगाई और उसके ऊपर चढ-कर अपने सब अनुगामियोंको आनेकी आज्ञा दी। सीढीपर चढते ही शत्रुओंका गोला आकर गिरा।–उनकी आशा पूरी न हुई–हिरोलका सन्मान नहीं प्राप्त हुआ–उस गोलेके लगनेसे उनका शरीर प्राणशून्य होकर कटेहुए वृक्षकी समान सेनामें गिर पडा।

शत्रुओंकी सेना दोनों सम्प्रदायको ही व्यर्थ मनोरथ करनेकी चेष्टा कर रही थी। जिस समय चन्दावत सम्प्रदायके नेताके भाग्यमें यह शोचनीय बात उपस्थित हुई उस समय दुर्गके द्वारपर शक्तावत् सम्प्रदायके नेता क्रोधोन्मत्त सिंहकी समान महा गर्जन और महा विक्रमसे दुर्गाधिकार करनेकी विशेष चेष्टा कररहे थे। शक्तावत नेता सबसे पहिले बडे डीलवाले प्रमत्त हाथीपर चढ़े और भीतर जानेके लिये दुर्गद्वार तोडनेकी चेष्टा करने लगे। उन्होंने हाथीको आगे बढ़ाना चाहा, परन्तु किवाडोंमें बडी २ तीक्ष्ण कीलें लगी हुई थीं, इस कारण हाथी उसके तोडनेमें सम्मत न हुआ। शत्रुओंकी गोलियोंसे अपने सैकडों सैनिकोंको मरता हुआ देख और चन्दावत सम्प्रदायका भयानक शब्द सुनकर शक्तावत नेताको अपने पक्षकी जीतमें संशय होगया। उन्होंने विवश हो अपने प्राणोंका मोह छोडकर केवल अपने सम्प्रदा-यको हिरोल सन्मान दिलानेके लिये बडे साहसके साथ उन तीक्ष्ण कीलयुक्त किवाडोंपर अपना शरीर लगादिया, और महावतको उसके प्राणदण्डका भय देकर अपने शरीरके ऊपर हाथी चलानेकी आज्ञा दी। यद्यपि हाथीवान यह जानताथा कि स्वामीके ऊपर हाथी चलानेसे अवश्य ही उनके प्राण निकल जायँगे; तथापि अपने प्राण दण्डके भय और रणोन्मत्त प्रभुकी आज्ञासे उस विराटकाय हाथीको प्रभुके शरीरके ऊपर चला दिया। अमित बलशाली हाथीके देहभारसे दुर्गका द्वार उसी समय टूटगया, तत्काल हाथीने पिसेहुए अपने स्वामीके शवपर होते हुए शक्तावत सैनिक दुर्गमें घुसकर यवनोंका संहार करने लगे। किन्तु शोक-यद्यपि शक्तावत् सम्प्रदायके नेताने अपने सम्प्रदायको हिरोल सन्मान दिला-नेके लिये अपना अमूल्य जीवन छोडदिया, किन्तु उन सम्प्रदायको वह सन्मान नहीं मिला. कारण कि शक्तावत सम्प्रदायके नेताके इस प्राण त्याग और शक्ता-वत लोगोंके दुर्गमें प्रवेश करनेसे पहिले ही अर्थात् जिस समय उन्होंने चन्दावत लोगोंकी भयङ्कर जयध्वनि सुनी थी. उसी समय प्रतिद्वन्दी चन्दावत सम्प्रदायके नेताका जीवन हीन शरीर अन्दरसे दुर्गमें गिरगया. और चन्दावत सैनिक दुर्गके भीतर घुस गयेथे।

निर्णय करतेहैं, अपनी इच्छानुसार किसी कार्य्य करनेमें अग्रसर नहीं होते । मेवाडके राजनैतिक किसी गूढ प्रश्नके उपस्थित होनेपर सबसे पहिले प्रत्येक सामन्त अपनी २ सभामें उसका विशेष आन्दोलन करके यह निश्चय करते हैं कि राणाकी सभामें कैसा मन्तव्य प्रकाशित करना उचित है, इसके अनन्तर प्रधान सभामें जाकर प्रत्येक सामन्त युक्ति और प्रमाणसहित अपना २ मन्तव्य सूचित करदेते हैं ।

यदि किसी सामन्तको उपरोक्त मंत्रणा सभामें स्थान न मिले तो वह अपनेको महा अपमानित समझता है । उस महासभामें उक्त श्रेणीके प्रश्नके आन्दोलन और समालोचनासे सामन्तोंके द्वारा जो मन्तव्य दियाजाताहै, वह सामान्य नहीं होता । मेवाडेश्वर राणा राज्यशासनके लिये जिस प्रणालीसे सभा स्थापन और कर्म्मचारी नियुक्त करते हैं, सामन्त मण्डली भी उसी रीतिपर अपने २ अधिकृत प्रदेशोंमें पुरातन कालसे उसी प्रकार सभा और कर्म्मचारियोंको नियुक्त करती चली आतीहै । सामन्तके अधीनमें स्थित सरदारगण, प्रधान राजकर्म्मचारी, पुरोहित, कवि और दो तीन प्रजाके प्रतिष्ठित लोग प्रत्येक सामन्तकी सभामें एकत्रित होकर साधारण गंभीर प्रश्नके विषयमें मतवाद संगठन करतेहैं । राणा स्वयं जिस प्रकार अपने मंत्री और सभासदोंके साथ उस श्रेणीका प्रश्न लेकर आन्दोलन करनेमें नियुक्त होते हैं, सामन्तगण भी उसी प्रकार आन्दोलन करके अपना २ मन्तव्य स्थिर करतेहैं, अन्तमें महासभामें जाकर सब पूर्वक २ मन्तव्य प्रगट करदेतेहैं । इस प्रकार प्रत्येक राजनैतिक अनुष्ठान वा साधारण कार्य्य विशेष आन्दोलन और तर्कवादके पीछे राणा द्वारा निर्धारित होता है ।

चन्दावत सम्प्रदायके नेता गोला लगनेके कारण जिस समय सीढ़ीसे नीचे गिरगये, उसी समय उनके नीचेके अधिकारी और अतिनिकट आत्मीयने चन्दावतदलकी अध्यक्षताका भार ग्रहण किया। वह नवीन अधिनायक देवगढ़के सामन्त थे। वह जैसे गर्वी और निडर थे, वैसे ही सब विपत्तियोंमें आगे बढ़नेके साहसी थे, और भयङ्कर सिंहके साथ भी युद्ध करनेमें नहीं डरतेथे। देवगढ़ पतिके इस अद्भुत साहसको देखकर सबने उनको बातुल ठाकुरकी उपाधि दीथी। चन्दावत सम्प्रदायके नेताके गिरते ही देवगढ़ पतिने उनके शवको अपनी चादरमें बांधकर पीठपर लादलिया, और भाला हाथमें लिये साक्षात् यमराजकी समान संहार मूर्ति धारण करके सीढ़ीपर चढ़गये; दुर्गके परकोटेपर पहुंचकर बड़ी वीरताके साथ युद्ध करने लगे और मुहूर्त्तमात्रमें ही यवनोंकी सेनाका संहारकर दुर्गप्राकारके ऊपर स्वामीका शव स्थापन करदिया, उस समय उन्होंने भयङ्कर शब्दसे सब सेनाको सम्बोधन करके कहा कि, "हमने ही पहिले प्रवेश कियाहै ! हिरौल चन्दावत सम्प्रदायको मिलेगा।" देवगढ़पतिका वह शब्द क्षणमात्रमें ही सम्पूर्ण चन्दावत सैनिकोंद्वारा प्रतिध्वनित हुआ, और जिस समय शक्तावत लोग दुर्गमें प्रविष्ट हुए, उसी समय दुर्गप्राकार चन्दावत सैनिकों द्वारा अधिकृत होगया। यद्यपि इन शक्तावत सैनिकोंके द्वारा ही मुगल सेना बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट हुई थी और मेवाड़की जयपताका उड़ी थी, परन्तु हिरौल सम्मान चन्दावत सम्प्रदायने ही नाम रखाया।

वा शासक सम्प्रदायका आदर अधिक है, उस देशमें ही साधारण मतवाद है, ऐसा सब ही स्वीकार करते हैं, किन्तु जिस देशके शासक वा भूपाल साधारण मतवादका अनादर करते हैं, तथा साधारण मतानुसार राज्य-शासन वा किसी प्रकारका राजनैतिक अनुष्ठान, अथवा शासन विभागका कोई परिवर्त्तन वा संस्कार नहीं करते, उसदेशमें साधारण मतवाद होनेपर भी सब उसका अस्तित्व नहीं देखपाते । सामन्त शासनप्रणालीके अनुसार ही जब पश्चिमी जगत् एक समय उस शासन प्रणालीसे शासित होता था, तब उस पश्चिमी जगतने भारतके नृपति वृन्दके अनुकरणसे ही साधारण मतवादके ऊपर आदर करना सीखा था, यह अनुमान कल्पित नहीं है। किन्तु कालकी कैसी विचित्र लीलाहै ! उस पश्चिमी जगत्की एक जाति इस समय हमारी अधिनायक होकर भारतके साधारण मतवादके ऊपर आदर दिखानेमें बिलकुल उदासीन है, यथेच्छ शासनकारी उपाधि लेनेमें वह जाति इस उन्नीसवीं शताब्दीमें कुछ भी लज्जित नहीं होती। जितने अंग्रेज प्रसन्न होकर यह कहतेहैं कि भारतमें साधारण मतवाद पहिले नहीं था, हम कहते हैं कि, वह सब भारतसे ही साधारण मतवादका आदर करना सीखकर कैसी भ्रान्तिमें पडे हुए हैं। और नवीन रोशनीकी चकाचौंधमें आये हुए जितने मनुष्य राजनीतिका क, ख; सीखकर ही यह कहते हैं कि "इस देशमें साधारण मतवाद नहीं है, उन लोगोंको इस समय उपरोक्त बातोंको विचारकर मौन धारण करना उचित है।

मेवाड जिस समय उन्नतिके ऊंचे शिखरपर आरोहण करनेमें समर्थ हुआथा, राजपूत जातिकी बाहुबल गौरव प्रतिमा जिस समय भारतके प्रत्येक प्रान्तमें व्याप्त हुइ थी, जिस समय जातीय एकता, साहस, शौर्य्य, उद्यम और उद्दीपनाने राजपूत जातिको सुधामय फल भोगनेमें समर्थ कर दियाथा उस समय मेवाडपतिके अधीनमें पन्द्रह सहस्र अश्वारोही सेना अनेक प्रांतोंसे आकर सम्मिलित होती, और संग्राम भूमिमें संहारमूर्ति धारण करके दौडती थी। वह सैनिक राणाके निकटसे वेतनमें कुछ नहीं पाते थे। केवल भूवृत्ति संभोगके बदलेमें युद्धके लिये जानेको बाध्य होतेथे। यही सामन्तशासन प्रणालीका मूल उद्देश है। प्रथम श्रेणीके सामन्त जिस प्रकार अपने २ देशकी आयके अनुसार पचाससे अधिक सेनाको प्रत्येक युद्धके लिये उपस्थित करते हैं, उसी प्रकार सामान्य भूवृत्ति प्राप्त मनुष्य केवल एक अश्वारोही उपस्थित करनेको

साम्प्रदायिक प्रतिद्वन्दता और स्वदेश हितैषिता साधनमें प्रतियोगिताका केवल यही एक निदर्शन नहींहै, तथा साम्प्रदायिक द्वेषभावके जातीय शुभ साधनमें परिणतिकी केवल यही एक घटना नहींहै, किन्तु ऐसी घटनायें रजवाड़ेके प्रधान २ राज्योंमें विशेष करके मारवाड़के साहसी राठौरोंमें सैकड़ों वार होगई हैं ।

सम्प्रदाय समूहको परस्पर एक दूसरेके विरुद्ध इस द्वेषभाव युक्त कर रखनेसे एक पक्षमें अवश्य ही मंगल होताहै । उनके परस्परके विवाद समय २ पर देशके वड़ेरहित साधन करते हैं, और अधिपतिगण यदि शासन कुशल हों तो इन झगडालू सम्पदायोंके द्वारा वहुत इच्छित कामोंका उद्धार करलेते हैं । शक्तावत और चन्दावत इन दोनों सम्प्रदायोंमें एक न एक समय समय पर राणाके पक्षमें रहते थे, इस कारणसे ही उपरोक्त अनिष्टफल लुप्त होगया था । कर्नेल टाड जिस समय मेवाड़में थे, उस समय दोनों सम्प्रदाय ही राजभवनमें क्षमता और प्रभुत्त्व प्राप्तिके लिये वड़ी चेष्टा कर रहेथे । वहुत शताब्दी पहिलेसे ही दोनों सम्प्रदायोंमें पर्य्याय क्रमसे कोई न कोई " राजभक्त " और " विद्रोही " उपाधिको प्राप्त होते आते थे । जो सम्प्रदाय राणाका अनुग्रह पात्र हो वा जिस सम्प्रदायके नेता अपनी वुद्धि और वाहुवलसे राजमहलमें सवसे ऊंचा सन्मान प्राप्त कर सकैं, वह सम्प्रदाय ही प्रायः राज्यके सम्पूर्ण विषयोंमें सामर्थ्यका चलाना और प्रभुत्त्व प्रकाश करसकती है । इस कारण पूर्वकालमें एकपक्षके राणाका अनुग्रह भाजन होते ही दूसरा पक्ष विद्वेषके वशीभूत होकर समय २ पर वहुतसे अनिष्ट कारी कार्य्य करनेसे भी नहीं चूकता था । ऐसे साम्पदायिक विद्वेष इस समय प्रायः विलकुल दूर होगये हैं । कालचक्रके अनुसार राजपूत जातिकी जीवनगति, राजपूत जातिका नित्यकर्म, राजपूत जातिका चिर अवलम्बनीय व्रत इस समय रूपान्तरित होगयाहै।इस कारण उस विद्वेष भावका अभाव भी स्वतः ही दिखाई देताहै । कर्नेल टाड लिखगयेहैं कि. "शक्तावत लोगोंकी संख्या वहुत न्यून है, किन्तु वह लोग प्रतिद्वन्दी चन्दावत लोगोंकी अपेक्षा कई अंशमें साहसी और वलशाली विदित हैं । " कर्नेल टाड मेवाडकी राजपूत जातिके वीचमें शक्तावत लोगोंको ही अधिक वीर और साहसी कहकर सन्मान देगयेहैं ।

इसके अनन्तर कर्नेल टाड लिखते हैं कि, "भारतवर्षका प्रत्येक राज्य जबतक एक प्रकारकी मूल शासन नीतिके अनुसार शासित हुआ था, एक प्रकारकी सामन्त शासन प्रणाली जबतक सम्पूर्ण भारतवर्षमें प्रचलित थी, तबतक निःसंदेह ही यह शैली शुभ फल उत्पन्न करती थी, किन्तु राजशासन शक्ति प्रबल

बाध्य है । प्रधान २ सामन्त जिस प्रकार भूवृत्तिके बदलेमें राणाके निकट सेना भेजनेको बाध्य हैं, वह स्वयं भी उसी प्रकार अधीनके सरदारोंको भूवृत्ति देकर उनके निकटसे सेना संग्रह करलेते हैं । वर्त्तमानमें चारों ओर शान्ति विराजित होने और बाहरी शत्रुओंका भय बिलकुल दूर होजानेसे भूवृत्तिके बदलेमें सेना भेजनी नहीं होती, इस कारण उस प्रथाका थोडा परिवर्तन होगया है मेवाड इतिहास वृत्तिके शेष अंशमें हमने यह विवरण लिख दिया है । इस कारण उसका यहां लिखना अनावश्यक है ।

भूवृत्ति प्राप्त होकर उसके बदलेमें सामन्तोंको कितनी सेना भेजनी होती थी, इसकी निर्धारित रीति बद्ध नहीं है । पृथक् २ देशके सामन्तगण भिन्न २ संख्याके अनुसार ही सेना रखते हैं । किंतु प्रत्येक सहस्र मुद्रा आयके लिये तीन वा दो से कम नहीं होते । इस प्रकार अश्वारोही सेनाके देनेकी व्यवस्था है । विशेष करके जिस समय सनद वा भूवृत्ति दीजाती है, उस समयकी व्यवस्थाके अनुसार किसी २ को तीन अश्वारोही और तीन पैदल प्रतिसहस्र मुद्रा आयके लिये देनेकी व्यवस्था है । भिन्न २ भूवृत्ति दानपत्रोंको पढकर ही पाठकगण इन भिन्न २ व्यवस्थाओंका विशेष विवरण जान सकेंगे । × इंग्लेण्डके राजा विलियमने जिस समय अपना राज्य साठ हजार भागोंमें विभक्त किया था, उस समय प्रत्येक अंश

चन्द्रावत सम्प्रदायके नेता गोली लगनेके कारण जिस समय सीढ़ीसे नीचे गिरगये, उसी समय उनके नीचेके अधिकारी और अतिनिकट आत्मीयने चन्द्रावतदलकी अध्यक्षताका भार ग्रहण किया। वह नवीन अधिनायक देवगढ़के सामन्त थे। वह जैसे गर्वी और निडर थे, वैसे ही सब विपत्तियोंमें आगे बढ़नेके साहसी थे, और भयङ्कर सिंहके साथ भी युद्ध करनेमें नहीं डरते थे। देवगढ़ पतिके इस अतुल साहसको देखकर सबने उनको बातुल ठाकुरकी उपाधि दीथी। चन्द्रावत सम्प्रदायके नेताके गिरते ही देवगढ़ पतिने उनके शवको अपनी चादरमें बांधकर पीठपर लादलिया, और भाला हाथमें लिये साक्षात् यमराजकी समान संहार मूर्त्ति धारण करके सीढ़ीपर चढ़गये; दुर्गके परकोटेपर पहुंचकर वहीं वीरताके साथ युद्ध करने लगे और मुहूर्त्तमात्रमें ही यवनोंकी सेनाका संहारकर दुर्गप्राकारके ऊपर स्वामीका शव स्थापन करदिया, उस समय उन्होंने भयङ्कर शब्दसे गर्जन करके कहा कि, "हमने ही पहिले प्रवेश कियाहै? हिरोल चन्द्रावत सम्प्रदायको मिलेगा।" देवगढ़पतिका वह शब्द क्षणमात्रमें ही समस्त चन्द्रावत सैनिकोंद्वारा प्रतिध्वनित हुआ, और जिस समय शक्तावत लोग दुर्गमें प्रविष्ट हुए उसी समय दुर्गप्राकार चन्द्रावत सैनिकों द्वारा अधिकृत होगया। यद्यपि उन शक्तावत सैनिकोंके द्वारा ही मुगल सेना बिल्कुल नष्ट भ्रष्ट हो, भारतकी जयपताका उड़ी थी, परन्तु हिरोल सन्मान चन्द्रावत सम्प्रदायको प्राप्त हुआथा।

राजकार्य्य साधन और राणाका ऐश्वर्य्याडम्बर देखनेके लिये कुछ सामन्त-लोग एक वर्षके भीतर निर्द्धारित कई मासतक उदयपुर राजधानीमें रहते हैं; उनका निर्द्धारित समय समाप्त होनेपर, दूसरे कई सामन्त उसी प्रकार अपनी सेनासहित आकर पूर्वोक्त कार्य्यमें नियुक्त होतेहैं, उस समय पहिले सामन्त अपने २ देशोंको चले जाते हैं। प्रधान २ सामरिक पूर्वोत्सवके समयपर सब सामन्त राणाकी आज्ञानुसार राजधानीमें आते हैं, और किसी शत्रुके साथ युद्ध उपस्थित होनेपर सब सामन्त सेना और रसद सहित उपस्थित होते हैं, केवल विदेश वा बहुत दूरके स्थानमें युद्धकी आवश्यकता होनेपर, राणा सामन्तोंके सेना दलके लिये कुछ रसद देते हैं।

सामन्तोंको अर्थदण्ड वा पदच्युति।–यूरोपखण्डमें जिस समय सामन्त शासन रीतिके अनुसार राज्यशासित होता था। उस समय अधीश्वरकी आज्ञाका पालन न करनेपर राजा उनके ऊपर अर्थदण्ड करतेथे। मेवाडकी सामन्त मण्डलीको दियेहुए भूवृत्ति दानपत्रमें भी इसका विशेष उल्लेख देखाजाताहै। * किसी सामन्तके उद्धतता प्रकाश, बुरा आचरण, वा गर्वित व्यवहार करनेपर, उनको भारी अर्थदण्ड देते हैं, और कभी २ उनका संपूर्ण प्रदेश अपने अधिकारमें करलेते हैं। × रजवाडेके अधीश्वर सामन्तोंको पदच्युत करके उनका देश छीनलेनेकी अधिक इच्छा रखते हैं। सामंतोंके प्राचीन भूवृत्तिकी रीति रहित कर सकनेपर, उस भूभागकी आमदनीसे स्थायी खास सेना नियुक्त कर-सकनेके कारण ही अधीश्वर गण इस विषयमें सचेष्ट रहतेहैं, सामन्तगण यद्यपि राजकार्यके किसी अंशसे निष्कृति पानेके लिये अर्थ दण्ड देनेको प्रस्तुत रहतेहैं. परन्तु भूवृत्ति छोडनेकी किसी प्रकार इच्छा नहीं करते; कभी २ पैतृक भूभाग रक्षाके लिये प्राणोंका मोह छोडकर राणाके विरुद्ध भी खडे होजातेहैं। कर्नेल टाडके समयमें इस अर्थ दण्ड और सामन्तोंके देश अपने अधिकारमें कर-नेके लिये राणा जिसप्रकार चेष्टा करते थे, इस समय उस प्रकार नहीं देखे जाते। इस समय विश्व विजयी बृटिश गवर्नमेंटने सबके ऊपर स्वामी बनकर.इस विषयमें राणाकी पूर्वशक्ति बहुत न्यून्य करदीहै।

शासन शैलीकी अपूर्णता–जिस सामंत शासन प्रणालीका जन्म आर्यक्षेत्र भारतवर्षमें हुआ. जिस सामंत शासन शैलीके आदर्शपर एक समय पश्चिमी जग

---

*. परिशिष्ट–१६ संख्यकी अनुलिपि देखो।

× कर्नेल टाड लिखतेहैं कि, "अर्थदण्ड और पदच्युति इन दोनोंको मैंने देखाहै।"

साम्प्रदायिक प्रतिद्वन्दता और स्वदेश हितैषिता साधनमें प्रतियोगिताका केवल यही एक निदर्शन नहींहै, तथा साम्प्रदायिक द्वेषभावके जातीय शुभ साधनमें परिणतिकी केवल यही एक घटना नहींहै, किन्तु ऐसी घटनायें रजवाड़ेके प्रधान २ राज्योंमें विशेष करके मारवाड़के साहसी राठौरोंमें सैकड़ों वार होगई हैं।

सम्प्रदाय समूहको परस्पर एक दूसरेके विरुद्ध इस द्वेषभाव युक्त कर रखनेसे एक पक्षमें अवश्य ही मंगल होताहै। उनके परस्परके विवाद समय २ पर देशके वड़े२हित साधन करते हैं, और अधिपतिगण यदि शासन कुशल हों तो इन झगडालू सम्प्रदायोंके द्वारा वहुत इच्छित कामोंका उद्धार करलेते हैं। शक्तावत और चन्दावत इन दोनों सम्प्रदायोंमें एक न एक समय समय पर राणाके पक्षमें रहते थे, इस कारणसे ही उपरोक्त अनिष्टफल लुप्त होगया था। कर्नेल टाड जिस समय मेवाड़में थे, उस समय दोनों सम्प्रदाय ही राजभवनमें क्षमता और प्रभुत्त्व प्राप्तिके लिये वड़ी चेष्टा कर रहेथे। वहुत शताव्दी पहिलेसे ही दोनों सम्प्रदायोंमें पर्य्याय क्रमसे कोई न कोई "राजभक्त" और "विद्रोही" उपाधिको प्राप्त होते आते थे। जो सम्प्रदाय राणाका अनुग्रह पात्र हो वा जिस सम्प्रदायके नेता अपनी वुद्धि और वाहुवलसे राजमहलमें सवसे ऊंचा सन्मान प्राप्त कर सकें, वह सम्प्रदाय ही प्रायः राज्यके सम्पूर्ण विषयोंमें सामर्थ्यका चलाना और प्रभुत्त्व प्रकाश करसकती है। इस कारण पूर्वकालमें एकपक्षके राणाका अनुग्रह भाजन होते ही दूसरा पक्ष विद्वेषके वशीभूत होकर समय २ पर वहुतसे अनिष्टकारी कार्य्य करनेसे भी नहीं चूकता था। ऐसे साम्पदायिक विद्वेष इस समय प्रायः विलकुल दूर होगये हैं। कालचक्रके अनुसार राजपूत जातिकी जीवनगति, राजपूत जातिका नित्यकर्म, राजपूत जातिका चिर अवलम्वनीय व्रत इस समय रूपान्तरित होगयाहै।इस कारण उस विद्वेष भावका अभाव भी स्वतः ही दिखाई देताहै। कर्नेल टाड लिखगयेहैं कि, "शक्तावत लोगोंकी संख्या वहुत न्यून है, किन्तु वह लोग प्रतिद्वन्दी चन्दावत लोगोंकी अपेक्षा कई अंशमें साहसी और वलशाली विदित है।" कर्नेल टाड मेवाडकी राजपूत जातिके वीचमें शक्तावत लोगोंको ही अधिक वीर और साहसी कहकर सन्मान देगयेहैं।

इसके अनन्तर कर्नेल टाड लिखते हैं कि, "भारतवर्षका प्रत्येक राज्य जवतक एक प्रकारकी मूल शासन नीतिके अनुसार शासित हुआ था, एक प्रकारकी सामन्त शासन प्रणाली जवतक सम्पूर्ण भारतवर्षमें प्रचलित थी, तवतक निःसंदेह ही यह रीति शुभ फल उत्पन्न करती थी, किन्तु राजशासन शक्ति प्रवल

शासित होता था, अब भी जो सामंत शासन प्रणाली कुछ कुछ रूपांतरित होकर रजवाडेमें विराजमान है, कर्नेल टाडका मत है कि वह शासनशैली सर्वांग संपन्न नहीं है उसकी अनेक विषयोंमें अपूर्णता देखी जातीहै। उनकी इस उक्तिको अनेक अंशोंमें अवश्य ही सत्य कहना होगा. किंतु सामन्तशासन प्रणाली शुभ फलदायक नहीं, यह बात नहीं मानी जासकती। कर्नेल टाड लिखतेहैं कि संपूर्ण राजस्थानमें केवल नरपति वृन्दके चरित्रके ऊपरही राज्यकी उन्नति और मंगल निर्भरहै। प्रचलित शासन रीतिके केवल वही मूलदंड हैं; विधिके अन्यान्य बिखरे हुए अंशोंको यथोचित स्थानमें रखने और कार्य्यमें नियोग करनेकी शक्ति केवल वही रखतेहैं। राजा यदि क्षणमात्र भी अपनी कार्य्य सिद्धिसे मुंह मोडले तो सब रीति अपनी इच्छानुसार छिन्नभिन्न होकर गिर पडें। ऐसे समयमें अशान्ति, उपद्रव अत्याचार सबही प्रबल वेगसे दिखाई देने लगें। यदि एक प्रबल क्षमताशाली राजा इस शासनयंत्रको भलीभांति तीव्रतासे चलासके तो उनके परलोकगमनपर क्रमसे तीन राजा अत्यन्त अयोग्यता दिखानेपर भी इस शासनरीतिसे पहिलेहीके समान ही अपना कार्य्य सिद्ध करसकते हैं। इस समय यदि कोई बाहरी शत्रु प्रगट हो तो अवश्य ही विपरीत फल हो। इस सामन्तशासन रीतिके अनेक अंग अपूर्ण हैं; परन्तु राजपूत जातिकी राजभक्ति, देशहितैषिता, सदाचारिता धर्म्मविधानके ऊपर दृढभक्ति और जन्मभूमिके ऊपर गाढी प्रीति इस प्रणालीके अनेक आन्तरीय कारणोंको भुलादेती है। यूरोप वा एशियाके किसी देशमें

होनेपर यह प्रणाली कभी कार्य्यकर नहीं होसकती। जिस स्थानमें किसी पुरुष विशेषका स्वेच्छाचार सम्पूर्ण जातिको शासन करताहै, उस स्थानमें उस जातिकी स्वाधीनता अवश्य ही परिणाममें बहुत न्यून होजातीहै।" टॉड साहबकी यह उक्ति वास्तवमें नीतिपूर्ण है।

फिर टाड साहब लिखते हैं कि अपने प्रभुत्व और सामर्थ्यकी रक्षाके लिये रजवाडेके राजालोग दिल्लीके यवन सम्राटके हाथमें कुछ सामर्थ्य और स्वाधीनता समर्पण करनेमें वाध्य हुए थे। राजपूत नरपतियोंने यवन सम्राटोंके हाथोंमें नाममात्रको अपने २ राज्य सौंपकर सम्राटोंसे फिर सनदद्वारा राज्य प्राप्त किये थे। प्रत्येक राज्यके प्रत्येक राजाके पीछे नवीन भूपाल इसी प्रकार सम्राटोंके निकटसे राज्यशासनके लिये सनद ग्रहण करते थे, इस कारण ही वे यवन सम्राटको अपना सर्वोपरि स्वामी मानलेते थे। इस सनद देनेके समय सम्राट देशी राजोंको मान्यसूचक खिल्अत स्वरूप हाथी, घोडा, [illegible] और तलवारादि पुरस्कार देकर "महाराज" वा "राणा" की उपाधिसे सम[illegible]

वृक्षकी शाखासे उत्पन्न हुए वहुतसे राजकुल राजस्थानके छत्तीस राजकुलमें प्रतिष्ठित होगयेहैं परन्तु यह वृत्तान्त आगे चलकर लिखैंगे कि यह लोग किस समय दूसरे देश शाकद्वीपसे आकर भारतके राजस्थानमें वसे अव हम इस वातकी आलोचना करतेहैं कि आर्यवीर राजपूतोंके धर्मसमाज, व्यवहार सम्वन्धी रीति नीतिके साथ शाकद्वीपके रहनेवालोंकी रीति नीति कहांतक मिलतीहै, विचार कर देखनेसे विदित होताहै कि इनका मेल यहांतक मिलता है कि इनको पृथक् मानना कठिन विदित होताहै।

वेषपहनावा—प्रसिद्ध इतिहास लेखक × टसटिस कहताहै कि पहले जर्मनके लोग लम्वे और ढीले कपडे पहना करतेथे सवेरे विस्तर परसे उठतेही हाथ मुहँ धो डालतेथे डाढी मूँछोंके वाल कभी नहीं मुँडातेथे और शिरके वालोंकी एक वेणी वनाकर गुच्छेके समान मस्तकके ऊपर गांठसी वांध लेतेथे.

इस समय जर्मनवाले लोग शीतप्रधान देशमें रहतेहैं, इस कारण यह कभी नहीं माना जा सकता कि ऐसी रीति नीति और पहरावा उस देशके लिये उपयोगी हो.अवश्यही यह आचार व्यवहार उन्होंनें एशियाके ग्रीष्मप्रधान पूर्वदेशसे सीखा होगा।

देववंश—टुइष्ट (मंगल) और आर्था (पृथिवी) प्राचीन जर्मनवालोंके प्रधान देवताथे जर्मनवालोंके मतके अनुसार भगवान् मनुसके द्वारा अर्थाके गर्भसे टुइसर्की* उत्पत्ति हुईहै।

× इसके अतिरिक्त इनके नित्यनैमित्तिक और२कार्योंका जो वृत्तान्त पाया जाताहै उससे विदित होताहै कि कदाचित् यह लोग शाकद्वीपके जित् कात्ति किम्ब्री, और शैवी एकही वंशकेहैं, यद्यपि टसिटसने यह स्पष्ट नहीं लिखा कि जर्मनीकी आदि निवासभूमि भारतवर्षमें थी परन्तु वह यह कहताहै कि जिस जर्मनीमें रहनेसे शरीरके अंग प्रत्येक विकल होजातेहैं,उस जर्मनीमें एशियाके एक गर्मदेशको छोड आकर निवास करना क्या वुद्धिमानीका कामहै, इससे निश्चय यह कहा जासकता-है कि एशियाका कोई देश उनका आदिम स्थान था, और टसिटसको उसका वृत्तान्त विदित था.

१ ईस्वी सन्की पांचवी शताब्दीमे शालीन्द्रपुर (शालपुर) में जित जातिका एक राजा राज्य करता था, उसके राजत्वके सम्वन्धमे एक शिलालेख पायागयाहै उसमें एकस्थानपर उस राजाको टुइष्टके वंशका कहाहै तव यह टुइष्ट कोन है।

जर्मनवालोंने उक्त डुइष्ट (मंगल) और वोधन बुधको एकही करकर लिखा है जिससे स्थान स्थानपर उनको बहुत उलझनमें पड़ना पड़ता है।

पूजाविधि—स्कन्धनाम देशमें जित नामक एक महापराक्रमी जाति निवास करतीथी. इस जातिके वंशकी बहुतसी शाखायेंथी उन शाखाओंमें शेव और शैवी लोगोंकी विशेष प्रतिष्ठाथी कहतेहैं उक्त शेवलोग भगवती पृथिवीकी पूजा करतेथे और उसको प्रसन्न करनेके निमित्त अपने पवित्र कुंजोंमें नरबलि चढाते थे शेव लोगोंके धर्मग्रंथोंमें यहभी लिखाहै कि उनकी पूजनीया भगवती वसुमतीका रथ एक गौके द्वारा खेंचा जाताथा.

शैवी लोगभी मूर्ति पूजक थे, परन्तु वे आर्थाकी पूजा न करके ईशी (ईशानी वा गौरी) नामवाली देवीकी पूजा करतेथे उक्त ईशीको प्राचीन मिसरवालेभी अपने देवताओंमेंसे एक आराध्य देवता समझतेथे परन्तु वह मिश्रवालेके वल ईशी-हीकी पूजा न करके एक साथमें युगलमूर्ति अशिरिश और ईशी (हरगौरी) की पूजा करतेथे. उदयपुरमें विशाल सरोवरके किनारे आजतक जिस प्रकारसे भगवती ईशानीकी पूजा होतीहै वैसीही मिश्र देशमें होतीथी प्रसिद्ध इतिहास लेखक हेरो-डोडसने जो कुछ इस विषयमें लिखाहै उसकी साक्षीही देतेहैं।

वीरव्यवहार—यदुकुलमें एक बाराधनामक महातेजस्वी क्षत्रिय उत्पन्न हुआ था उसके वंशधर सिन्धुनद पार करके भारतके पश्चिमी देशोंमें फैलगये. उन क्षत्रिय कुमारोंके युद्धसम्बन्धी आचार व्यवहारका जैसा वर्णन पाया जाता है वैसाही वर्णन जित शैवी और स्कन्धनाभीय लोगोंका पायाजाताहै. कहतेहैं कि जित शैवी और स्कन्धनाभीयलोग भगवान हरिकुलेश वुद्ध वा वोधनके सन्मान सूचक गीत गातेथे, उनकी ध्वजा वा प्रतिमा लेकर संग्राममें जातेथे और युद्धके समय शूल वा मुद्गरको काममें लातेथे।

भारतके नाना प्रान्तोंसे उन सुसज्जित देशी राजालोगोंका सेनासहित मुगल सम्राट् राजधानीमें अथवा समरक्षेत्रमें सम्मिलन, कैसा ऐश्वर्य्य आडम्बर और महान प्रभुत्त्व प्रकाशक था, उसका सहजमें अनुमान नहीं होसकता ।

यद्यपि सम्राट हुमायूने भी कई राजपूत राजाओंको अधीनताकी जंजीरमें बांध लिया था, किन्तु उन वशीभूत राजपूतोंकी सहायता प्राप्ति उनके लिये अनिश्चित थी । उनके पुत्र अकबर ही सबसे पहिले राजपूत राजोंके ऊपर पूर्ण प्रभुत्त्व दिखानेमें समर्थ हुए थे, और अपने सिंहासनको आश्रय और उज्ज्वल अलङ्कार रूपमें परिणत करनेके लिये उन्होंने राजोंको हस्तगत कर लिया था । जो प्रबल शासनशक्ति उन्होंने संकलन करी थी और जिस शासनशक्तिके चलानेमें वह विशेष शिक्षित थे, वह शक्ति जैसी दुर्द्दमनीय थी वैसी ही अभेद्य थी, इधर उनकी सच्चरित्रता, साधुता और उनकी अनुष्ठित शासननीतिकी श्रेष्ठताने उनके बाहुबलसे अधिकार किये देशोंकी रक्षा की थी । उन्होंने बहुत विचारके पीछे निश्चय किया था कि, देशी राजाओंके ऊपर प्रताप विक्रम दिखाने और कठोर शासन करनेसे केवल बुरा फल ही नहीं उत्पन्न होगा, वरन उसके द्वारा महा विपत्तिमें पडनेकी संभावना है, इस कारण ही वह देशी राजाओंके हृदय अधिकार, सन्मान संग्रह और भारतमें मुगल शासन जिससे विना विघ्न बाधाके रह सके, उसके लिये उनके साथ सांसारिक सम्बंधमें भी अग्रसर हुए थे ।

विख्यात मुगल आगाजखांसे जंगेज, तमूर और बाबरकी नाडियोंके रक्तके साथ अकबरने शुद्ध राजपूत रक्तके मिलानेकी विशेष चेष्टा की । उन्होंने अनुमान किया कि, "वैवाहिक सम्बंध बन्धनमें बंधकर मुगल सम्राटके निकट और फिर राजपूत वीरांगनाके गर्भसे उत्पन्न हुए मुगल सम्राटके औरसपुत्रके निकट, राजपूतलोग जैसी वश्यता स्वीकार करेंगे केवल तातार सम्राटके निकट वैसी वश्यता कभी स्वीकार नहीं करेंगे । दूसरे–एक बार राजपूतोंके साथ विवाह बंधन प्रचलित करसकनेपर–यथा समयपर सबही कन्यादानमें सम्मत होजायेंगे। वास्तवमें सम्राट अकबरका यह अनुमान कभी भ्रान्त नहीं माना जासकता। यथा समय पर राजपूत वीरबालाके गर्भसे उत्पन्न हुए मुगल सम्राटके निकट राजपूत लोगोंने अनेक स्थानोंमें भक्ति और स्नेह दिखाया था । किन्तु राजपूत समाजमें केवल मेवाड़के राजवंशने सम्राट अकबरका मनोरथ पूर्ण नहीं किया था । यद्यपि [illegible] नाना कौशल और पराक्रम दिखानेसे अकबरके पीछे गद्दीपर बैठनेवाले यवन सम्राटोंने अनेक

और शोचनीय अभिनय कर दिखायाहै । * सामंत केवल आतमीय वा सम रक्त-वाही हो, तभी अधीनस्थ सरदार वा प्रजावर्ग उनकी आज्ञानुसार राजाके विद्रोही होनेसे भी भय नहीं करते थे, ऐसा ही नहीं, बरन सामन्त शासनकी मूल नीतिके अनुसार स्वामीकी आज्ञा पालन अवश्य कर्त्तव्य और कृतज्ञता प्रकाश उचित समझकर ही भिन्न रक्तवाही सरदारगण भी सामंतकी आज्ञा शिरपर धारण करतेहैं और उसके लिये जीवन बलिदान करदेनेमें भी भयभीत नहीं होते ।

साक्षात् सम्बन्धसे राजाके साथ जिन सरदारोंका कोई मेल नहींहै, जो राजाके निकटसे प्रवृत्ति न पाकर सामन्तोंसे पातेहैं, राजाको उनके ऊपर किसी प्रकारके प्रभुत्त्व चलानेकी सामर्थ्य नहीं यह बात ऊपर लिखी जाचुकी है । विशेष करके जो सरदार अपने प्रभु सामन्तका मनोरञ्जन और तुष्टि साधन करके उनके अनुग्रहपात्र होनेके अत्यन्त अभिलापी हैं, वह राजाके निकट सामन्तके अज्ञातमें किसी प्रकारका अनुग्रह चिह्न वा पुरस्कार कभी नहीं लेना चाहते । क्योंकि यदि किसी सामन्तका कोई सरदार राजाका अनुग्रह पात्र होनेकी चेष्टा करे, वा किसी प्रस्तावसे वह अनुग्रह वा किसी प्रकारका सन्मानचिह्न प्राप्त करे तो वह सरदार उस समय ही अपने स्वामी सामन्तकी विष दृष्टिमें गिरता है । देवगढके सामन्तने एक समय किसी कार्य्यके लिये अपने एक सरदारको राणाके भवनमें भेजाथा; भेजेहुए सरदारकी मिष्ट भाषिता, दक्षता, विज्ञता और व्यवहारसे महाराणाने महा सन्तुष्ट होकर अनुग्रह प्रकाशरूप उनको राजसभामें बैठनेको अधिकार देकर सन्मानित किया । कार्य्य समाप्त होनेपर सरदारने देवगढमें आकर सुना कि " सामन्त मेरे सन्मान लाभसे बहुत क्रुद्ध हुएहैं । " सामन्तने उन सरदारसे कहा कि " यह बडा अन्याय हुआ । " तबसे वह सरदार सामन्तके अनुग्रहसे बिलकुल वंचित रहेथे ।

अधीनस्थ सरदारवृन्द क्या २ आज्ञा पालन करनेमें बाध्य हैं उसकी सूची लिखना असंभव है. क्योंकि वह प्रायः सब ही आज्ञाओंका पालन करते हैं । सामन्तकी सभामें सदा उपस्थिति. उनका मृगयामें जाना. उनके साथ राजसभा वा दुर्ब्बृत्तमें गमन. यहांतक कि सामन्तके शत्रुद्वारा बंदित होनेपर भी सरदार उनके साथ ही शत्रुके दुर्गमें रहतेहैं ।

यहांपर हम कई बातें लिखतेहैं । जिनका यह विश्वास है कि "भारत सदा यथेच्छाचार शासनसे दग्ध होता आताहै यहांके निवासियोंकी व्यक्तिगत

---

* भरतपुरके इतिहासमें [illegible] सामन्तकी [illegible] और [illegible] विवाद इसका [illegible] [illegible] है ।

हिन्दू ललनाओंका पाणिग्रहण किया था, किन्तु सूर्यवंशावतंस मेवाड़के राजा लोगोंने प्राणान्तमें भी म्लेच्छके हाथमें कन्या देकर पवित्र रक्तको कलंकित नहीं किया। आजतक इसके कारण ही उदयपुरका राणावंश हिन्दू राजालोगोंमें सबसे अधिक मान्य और पवित्र गिना जाकर आदरके साथ पूजा जाताहै।

अम्बेर या वर्त्तमान जयपुर राज्य दिल्लीके पास है, इस राज्यके उस समयके राजा अत्यन्त क्षीणबल थे। उन्होंने ही सबसे पहिले भारतके इतिहासकी इस चिर स्मरणीय कलङ्कजनक घटनाको अर्थात यवन रक्तके साथ पवित्र राजपूत रक्त मिलानेमें प्रधान सहायता करी थी।

अम्बेरपति राजा भगवानदासने सम्राट हुमायूंके हाथमें अपनी कन्याका दान किया था, अन्तमें यह प्रथा यहांतक बढ़ी कि सुप्रसिद्ध मुगल सम्राटोंमें

स्वाधीनताकी सनदपर (Magna charta) हस्ताक्षर किये इस सनदसे इस सनदके अनुसार सामन्तोंके अभिषेकसमयमें नजराना निर्द्धारित संख्यासे अनुसार गृहीत होनेलगा। फ्रांसके नये अभिषिक्त सामन्तकी एक वर्षमें जितनी आय होती, राजा उसीको नजरानेमें लेतेथे। मेवाड राज्यमें इस प्रकारकी व्यवस्थाके अनुसार ही प्रत्येक नवीन सामन्त अभिषेकके समय राणाके निकट से नई सनद लेकर अपने अधिकृत प्रदेशकी एक वर्षकी आयके रुपये नजरानेमें देते आतेहैं फ्रांसकी उक्त प्रथाकी रीतिपर मेवाडमें यह प्रथा प्रचलित हुई पाठक ऐसा अनुमान न करें क्योंकि फ्रांसकी उक्त रीतिके चलनेके बहुत दिन पहिले मेवाडमें यह प्रथा प्रचलित थी।

जिन राजपूतोंने सम्राटोंको भगिनीप्रदान करीं थीं, उन सम्राटोंके परलोक सिधारनेपर व्यवहारके न जाननेवाले भाञ्जों (सम्राटों) का संपादनभार उनकेही हाथमें समर्पित होता था और वहलोग साम्राज्य शासनमें पूर्ण शक्ति चलानेके साथ २ अपने राज्यमें भी श्रीवृद्धि करलेते थे।

अकबर जिस समय भारतके सिंहासनपर विराजमान थे, उस समय उनके अधीन दोसौसे दश सहस्र तक अश्वारोही सैनिकोंके नेता, चारसौ सोलह मनसवदारोंमें सैंतालीस राजपूत थे, और उन राजपूत सेनापतियोंके अधीनमें (५३) तिरपन हजार अश्वारोही सेना थी। सम्पूर्ण मनसवदारोंके अधीन अश्वारोही सैनिकोंकी संख्या ५३०००० पाँच लाख तीस हजार थी, अबुलफजलके ग्रंथमें ऐसा लिखाहै, इस कारण मनसवदारोंके अधीन अश्वारोही संख्या दशांशका एक अंश थी। सम्राटके अधीनमें पदाति संख्या४००००००चालीस लाख थी, उक्त ग्रंथके पढनेसे यह बात भी जानी जासकती हैं।

सैंतालिस राजपूत मनसवदारोंमें सत्तरह पुरुषोंके अधीनमें एक सहस्रसे पाँच सहस्र अश्वारोही और तीस पुरुषोंके अधीनमें ५०० से १००० अश्वारोही थे।

अम्बेर, मारवाड, वीकानेर, बूंदी, जयसलमेर, बुन्देलखण्ड और सिखावतके राजालोग एक हजारसे अधिक अश्वारोहियोंके मनसवदार थे; किन्तु अम्बेर राजके साथ मुगल सम्राटके वैवाहिक सम्बंध बंधनमें केवल उन्होंने ही महा सन्मानसूचक पाँच हजार अश्वारोहियोंका मनसवदार पद पाया था।

मारवाडके राठौरराज स्थूलकाय नामसे विख्यात राजा उदयसिंह एक हजार अश्वारोहियोंके मनसवदार थे, किन्तु उन मारवाड राजवंशकी शाखामें उत्पन्न हुए वीकानेरके रायसिंहने चार सहस्र अश्वारोहियोंका मनसवदार पद प्राप्त किया था चंदेरी, करौली, दतियाके स्वाधीन राजगण और प्रधान २ राजपूत राज्यके कर देनेवाले राजालोग तथा सम्मिलित सिखावतलोग नीची श्रेणीके मनसवदार

वह जुवाति संप्रदाय राणाके निकट लौट आता है, अभिषिक्त सामंत राजप्रसाद पाकर अपनेको महा सन्मानित समझते हैं, और अपने पिताके देशमें आकर अपने स्वजनोंका आशीर्वाद लेतेहैं। उनके अधीनके सरदारलोग भी उस समय नवीन स्वामीके प्रति विशेष सन्मान दिखातेहैं।

नवीन सामंतके अभिषेकके समयकी समान ऊपर कही हुई "खड्गवन्धी" प्रथा राजपूतोंके प्रत्येक बालक जब बालकमात्रमें अस्त्र धारणमें समर्थ होतेहैं तब यह रीति की जातीहै। अर्थात् राजपूत बालकोंके खड्गधारणमें उपयुक्त होनेपर ही रजवाडेके चिर प्रचलित वीराचारकी सन्मान रक्षाके निमित्त उनकी कमरमें तलवार बांध दी जातीहै। कर्नेल टाड लिखते हैं कि, "प्राचीन जर्म्मन जातिमें भी इसी प्रकार बालकोंको भाले आदि दिये जाते थे। रोमके युवकगण भी इसी प्रकार नवीन अस्त्रोंसे विभूषित होते थे।" रजवाडेमें यह प्रथा यहांतक प्रबल है कि, स्वयं महाराणाका यह वीराभिषेक कार्य उनके अधीनमें स्थित एक प्रधान वीर सलम्बूरके सामन्त द्वारा सम्पन्न हुआ था। अर्थात् सलम्बूर पतिने राणाकी कमरमें तलवार बांधकर उनका वीराभिषेक कार्य्य संपादन किया था।

जिस समय राजवाडेके प्रायः संपूर्ण राजपूत राज्य विजातीय आक्रमण, अत्याचार और उत्पीडनसे बहुत ही हीन दशामें पहुंच गये थे, उस समय कई बलशाली सामंतोने अभिषेक कालमें दियेजानेवाले नजरानेसे अपनेको मुक्त करालिया था। उनके इस छुटकारेके द्वारा मूल प्रणाली गुप्तरूपसे बदल गई; अर्थात् नजराना लेना अधीश्वरका आधिपत्य सूचक है, अतएव उस नजरानेके छूट जानेसे अधीश्वर उन सामन्तोंके अधिकृत प्रदेशोंपर फिर अधिकार नहीं करसके, यह नजराना छुडानेका कार्य्य बडे शोचनीय समयमें संपादित हुआ था। अधीश्वरकी पूर्ण शक्ति वा प्रताप रहते ऐसा कभी नहीं होसकता।

भूस्वत्वका हस्तान्तरित होना। सामंत शासन प्रणालीमें भूस्वत्वके हस्तान्तरित होनेकी व्यवस्था नहीं है। भूस्वत्व क्रय वा हस्तांतरित प्रथा प्रचलित रहनेसे मूल प्रणालीके सर्वथा नष्ट होनेकी संभावना है। अधिपति किसी प्रकारसे भी किसी सामंतकी किसी भूमिका स्वत्व दूसरे सरदारको विक्रय नहीं करनेदेते तथापि विशेष प्रयोजनीय स्थलमें हस्तांतरित व्यवस्था रक्खी गईहै।

न्होंने कन्याओंका पाणिग्रहण किया था, किन्तु सूर्यवंशावतंस मेवाड़के राना लोगोंने नाशान्तमें भी म्लेच्छके हाथमें कन्या देकर पवित्र रक्तको कलंकित नहीं किया। आजतक इसके कारण ही उदयपुरका राणावंश हिंदू राजाओंमें सबसे अधिक मान्य और पवित्र गिना जाकर आदरके साथ पूजा जाता है।

अम्बेर या वर्त्तमान जयपुर राज्य दिल्लीके पास है, इस राज्यके इस समयके राजा अत्यन्त क्षीणबल थे। उन्होंने ही सबसे पहिले भारतके इतिहासमें इस चिर स्मरणीय कलङ्कजनक घटनाको अर्थात यवन रक्तके साथ पवित्र राजपूत रक्त मिलानेमें प्रधान सहायता करी थी।

अम्बेरपति राजा भगवानदासने सम्राट हुमायूंके हाथमें अपनी कन्याका दान किया था. अन्तमें यह प्रथा यहांतक बढ़ी कि सुप्रसिद्ध मुगल सम्राटोंमें बहुतसे राजपूत राजनन्दनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे।

कच्छके आरिजा। * यद्यपि मेवाड़के मध्यमें सामंतोंके अधीन स्थित सरदारगण, सामंतोंके निकटसे अपना भूस्वत्व स्वतंत्र करसकतेहैं, किंतु कोई सामंत मंडली सबका स्वत्व दूसरेके हाथमें नहीं करसकती। रजवाडेमें केवल धर्म्मोद्देश वा किसी प्रकारके धर्म्मानुष्ठानके लिये सामंतगण भूमिके स्वत्व को हस्तांतरित करनेमें समर्थ हैं, किंतु उसमें भी राजाकी अनुमतिकी आवश्यकता है। देवगढके सामन्तने राणाकी बिना अनुमतिके और सदारोंकी अनिच्छासे एक बार भूमिका स्वत्व हस्तांतरित करदिया था. यह देखकर राणाने उनकी सब वृत्ति छीन ली, अंतमें जब उन्होंने फिर पहिली व्यवस्था अवलंबन करी तो उनको वृत्ति लौटा दीगई थी।

जिन राजपूतोंने सम्राटोंको भगिनीप्रदान करीं थीं, उन सम्राटोंके परलोक सिधारनेपर व्यवहारके न जाननेवाले भाञ्जों (सम्राटों) का संपादनभार उनकेही हाथमें समर्पित होता था और वहलोग साम्राज्य शासनमें पूर्ण शक्ति चलानेके साथ २ अपने राज्यमें भी श्रीवृद्धि करलेते थे।

अकबर जिस समय भारतके सिंहासनपर विराजमान थे, उस समय उनके अधीन दोसौसे दश सहस्र तक अश्वारोही सैनिकोंके नेता, चारसौ सोलह मनसवदारोंमें सैंतालीस राजपूत थे, और उन राजपूत सेनापतियोंके अधीनमें (५३) तिरपन हजार अश्वारोही सेना थी। सम्पूर्ण मनसवदारोंके अधीन अश्वारोही सैनिकोंकी संख्या ५३०००० पाँच लाख तीस हजार थी, अबुलफजलके ग्रंथमें ऐसा लिखाहै, इस कारण मनसवदारोंके अधीन अश्वारोही संख्या दशांशका एक अंश थी। सम्राटके अधीनमें पदाति संख्या४०००००० चालीस लाख थी,

जितने लोग व्यक्तिगतपरिश्रम, वीरत्व वा बुद्धि संभूत कार्य्य द्वारा राणाका और राज्यका उपकार साधन करते हैं; उनको जीवन पर्यन्त संभोग करनेके लिये राणाने एक श्रेणीकी भूवृत्ति देदी है । इस कार्य्यके लिये ही वह भूमि स्वतंत्र निर्दिष्ट है । इसका नाम "चारउत्तर" है । जिसके पास यह भूमि है, उसके परलोक सिधारने पर उस भूमिपर राणाका फिर अधिकार हो जाता है । इसके अतिरिक्त वंशानुक्रमसे सम्भोग करनेके लिये भी राणागण उक्त श्रेणीके बहुतसे लोगोंको यह भूवृत्ति देते आते हैं । इस श्रेणीके पुरुषके परलोक गामी होने पर उसके उत्तराधिकारीका उस भूमिके ऊपर अधिकार होजाता है ।

नरपतिकी सहायता करण ।–राज्यमें समर उपस्थित वा अधिपतिका कोई सांसारिक कार्य उपस्थित होनेपर धनकी विशेष आवश्यकता होतीहै, उस समय राजा साधारण प्रजाके निकटसे सहायतामें आयके दशांशका एक अंश संग्रह करते हैं । राजाकी समान सामन्तलोग भी ऐसा ही किया करते हैं । राजकन्याका विवाह उपस्थित होनेपर इसी प्रकार सर्व साधारणसे सहायता लीजातीहै । कर्नेल टाड लिखतेहैं कि, कई वर्ष पहिले राणाकी दो कन्या और एक पुत्रके साथ जयसलमेर, बीकानेर, और कृष्णगढके अधिपति लोगोंके विवाहकालमें राणाने प्रजाको छः अंशके एक अंश परिमित धन देनेकी आज्ञा दी, किन्तु सम्पूर्ण धन संग्रहीत नही हुआ । इसी प्रकार विवाहके समय दूसरे साधारण लोगोंकी समान राजकर्मचारी लोग भी राणाको धनकी सहायता देतेहैं ।

केवल महान और शक्तिवान लोगोंसे ही उक्त प्रकारसे धन लिया जाताहो ऐसा नहीं, सामन्त मण्डली अपने अधीन साधारण प्रजासे भी धन लेती है । ऐसा धनदान कभी २ होता है, इस कारण प्रजा भी इनको आनन्दके साथ देनेमें कोई कष्ट नही समझती ।

पूर्वकालमें पश्चिमी राज्योंमें भी इस निमित्तसे धन संग्रह किया जाता था । इतिहासलेखक हालम साहब लिखते हैं कि "सामन्त शासन प्रणालीकी आरंभिक अवस्थामें किसी प्रकार भी कर निर्द्धारित नहीं था, केवल आवश्यकताके अनुसार उक्त प्रजाके धनकी सहायता ली जाती थी । किन्तु अन्तमें राजालोग धनवान होनेपर भी इस निमित्तसे कर लेने लगे ।

[illegible] प्रधान २ सामन्तगण भी अपनी कन्याके विवाहके समय उक्त प्रकारसे धन संग्रह करते हैं; प्रजा भी आनन्दसे इस धनको इच्छा-

नुसार देशोंहि अधिपति वा सामन्तकी कन्याके विवाहमें सहायता देना यह सन्मानका विषय समझते हैं। फ्रांसकी प्राचीन सामन्त शासन प्रणालीके अनुसार ऐसे धन देनेकी प्रथा प्रचलित थी और मागनाकार्टा अर्थात् इंग्लैण्ड सम्बन्धी साधारण प्रजाकी प्रधान स्वाधीनताकी सनदके अनुसार वहांके सामन्तलोग अपने ज्येष्ठ पुत्रके कुलीनताके पद ग्रहण, बड़ी कन्याके विवाहमें तथा वैरियोंके द्वारा स्वयं बन्दी हो जानेपर दण्डरूप धन देकर छुटकारा पानेकी आवश्यकता पड़नेपर साधारण प्रजा सबसे धनकी सहायता लेते थे. राजपूत राज्योंमें भी जिस समय मुगल पठान उपद्रव अत्याचार और हमले करके सामन्तोंको बन्दी कर लेते थे। उस समय उनकी प्रजा धन देकर सामन्तोंको वैरियोंके हाथसे छुड़ाती थी. कर्नल टाड लिखते हैं कि इंग्लैण्डेश्वर विख्यात सिंहविक्रमी रिचर्ड यदि राजपूतोंके अधिपति होते तो दीर्घकालतक उनको बन्दी बनके आष्ट्रियामें रहना न पड़ता।

ने सर्वाङ्गसुन्दर रूपसे कार्य्य साधन किया है, ऐसा देखाजाताहै । बहुत शताब्दी तक परीक्षाके द्वारा इस सामन्त शासन शैलीने राजनैतिक दृढता विलक्षण रूपसे संपादन करदीहै । इधर आठ सौ वर्षका समय मुगल पठानोंके प्रवल शासनकी भयङ्कर लीला करके इस समय अतीत उपाधि धारणमें अदृश्य होगया है ।

यदि राजपूत राज्य कुछ और अधिक उन्नतिकी सीढीपर चढ़सकते, यदि राजा अपने अधिकारमें किये देशोंकी दुर्दान्त लुटेरोंके ग्राससे वा अन्यायसे अधिकार करनेवाले सामन्तोंके हाथसे उद्धार और उन सबको उपजाऊ करनेकी चेष्टा करते, तथा सामन्तगण यदि राज्यकी शान्ति रक्षा और विजातीय आक्रमणसे राज्य रक्षाके लिये निर्द्धारित संख्यक सेना एक स्थानमें एकत्रित करते तो कभी भी धनके लोभी विधर्मी विजातीय सेनादलकी सहायता करनी नहीं पडती । यदि इसी प्रकार विधर्म्मी विजातीय सेनाको बहुत कालतक स्थान दियागया तो निश्चय ही सामन्त शासन प्रणालीका बिलकुल रूपान्तर होजायगा । धनके लोभी महाराष्ट्र और सैंधवीय सेना दलकी सहायता लेनेसे रजवाडेकी जैसी दुर्दशा होगई है, उसी प्रकार यूरोपमें भी इस श्रेणीकी सेना सहायतासे विषमय फल उत्पन्न हुआथा ।

सम्पूर्ण यूरोप खण्डके मध्यमें सबसे पहिले फ्रांसके अधीश्वर सप्तम चार्लसने जिस समय अपने राज्यमें अपनी स्थायी सेना नियत करके "टालि" नामक कर प्रचलित किया, उस समय फ्रांसके सामन्तगण विद्रोही होगयेथे। चार्लसके इस अनुष्ठानके पहिले यूरोपके किसी राज्यमें किसी राजाकी स्थायी सेना नहीं थी; सामन्तोंकी सेना द्वाराही सब कार्य्य सम्पन्न होतेथे । फ्रांसकी समान कोटेके अधीश्वर द्वारा प्राचीन प्रथाका परिवर्त्तन करनेपर, वैसा ही शोचनीय काण्ड उपस्थित हुआ । साठ वर्ष पहिले जब मेवाडके सामन्तगण विद्रोही होगये, और दूसरी ओरसे दुर्दान्त विजातीय लोगोंने आक्रमण आरंभ किया, तब मेवाड़ेश्वरने विशेष प्रयोजन समझकर ही अर्थके लोभी सिन्धवी सेनाकी सहायता ली, किन्तु उसका फल अत्यन्त हृदय भेदी उपस्थित हुआ और सामन्तगण परस्पर एक दूसरेसे लडकर क्षीणबल होगये, तथा राणाके ऊपरसे सर्वसाधारणकी भक्ति भी उठगई थी । जयपुरपतिने यह प्रथा अधिकताके साथ अवलम्बन करी थी. यद्यपि उन्होंने बहुतसे वेतनभोगी सैनिक नियत कियेथे, किन्तु वह सदा समय वेतन न पानेसे राज्यकी रक्षा नहीं करतेथे और विद्रोहमें भी उनका

भूस्वत्वाधिकारमें समय निर्णय। कर्नेल टाड लिखते हैं कि, मेवाडमें दो श्रेणीके भूस्वत्वाधिकारी [जमीदार] हैं, उनमें एक श्रेणीकी संख्या ही अधिक है। एक श्रेणीका नाम ग्रास्य ठाकुर और दूसरी श्रेणी भूमियाँ नामसे विख्यात है। जितने सामन्त राणाके निकटसे पट्टा लेकर ग्रास अर्थात् आत्मपालनके लिये भूमि पातेहैं, वह लोग ही ग्रास्य ठाकुर अर्थात् सामन्त नामसे विख्यात हैं। भूवृत्ति पाकर यह लोग सामन्त शासन प्रणालीकी रीतिके अनुसार निर्दिष्ट संख्यक सेना रखते हैं। राज्यमें किसी समय समर उपस्थित होनेपर, राणाके विदेशमें समरके निमित्त गमन करनेपर वह अपनी २ सेनासहित राणाके पीछे चलनेको बाध्य हैं। और इसके सिवाय वर्षमें कईमास मेवाडकी राजधानी उदयपुरमें रहकर राणाके कार्य्य साधन भी करते हैं। इस श्रेणीके किसी सामन्तके प्राण त्यागनेपर उनके पुत्र राणाके चरणोंमें नजराना रखकर अपनी पैतृक पद प्राप्तिके लिये प्रार्थना करते हैं, राणा प्रसन्न चित्तसे उनको सामन्त पदपर अभिषिक्त करतेहैं।

जो लोग भूमियाँ नामसे विख्यात हैं उनमें किसीके स्वर्ग सिधारनेपर उनके उत्तराधिकारीको दुबारा भूवृत्तिके लिये सामन्तोंकी समान सनद लेनी होतीहै। नवीन भूमियाँ वार्षिक निर्द्धारित कर दानके द्वारा ही उत्तराधिकारी उस पदको प्राप्त कर सकतेहैं। भूमियाँलोग जिस देशमें रहते हैं, वर्षके भीतर कई मास उस देशका राजकार्य्य निर्वाहके लिये नियुक्त होतेहैं। "भूमियाँ" शब्द ही प्रगट किये देताहै कि, यही वास्तविक मेवाडके जमीदार हैं। भारतमें जमीदार शब्द प्रचलित होनेके पहिलेसे भूमियाँ शब्दका व्यवहार होता आताहै। भूमियाँ और जमीदार समर्थ सूचक हैं। यवनोंके समयसे ही जमीदार शब्दने हमलोगोंकी भाषामें स्थान पायाहै। बङ्गालके जमीदार और मेवाडके भूमियाँ समान स्वत्वके अधिकारी हैं।

ग्रास्य—ग्रास शब्दसे ही ग्रास्य शब्द प्रगट हुआ है ग्रास अर्थात् अपने पोषण पालनके निमित्त भोजन सामग्रीका स्थापन दान—इससेही यह ग्रास्य शब्द निर्धारित हुआ है. हमारे देशमें साधारण बातोंमें जिस प्रकार 'रोटी कपडेका दान, यह शब्द उच्चारण किया जाता है. रजवाडेमें भी उसी अर्थको लेकर ग्रास और ग्रास्य शब्दका प्रयोग हुआ है इस विषयमें कर्नेल टाड साहब कहते हैं कि पश्चिमी यूरोपकी केलटिक भाषामें जो गोसाल (G- -s) शब्द प्रचलित है, उसका अर्थ दान है। यह गोसाल और ग्रास समान भावसे उत्पन्न हैं या नहीं. इसकी मीमांसा यह शब्द शास्त्रके तत्त्ववेत्ताओंके हाथमें सौंप गये हैं। हम कहते हैं दोनों

शब्दोंका कुछ २ उच्चारण समान होनेपर और अर्थ भी प्रायः दोनोंका समान होने पर भी दोनों शब्द समान भावसे उत्पन्न हुए हैं, यह कभी स्वीकार नहीं किया जासकता।

भूवृत्तिका पुनर्ग्रहण। —कर्नेल टाड लिखते हैं कि सामन्त मण्डली बहुत काल पूर्वसे राणाके निकटसे प्राप्त हुई जिस भूमिको भोगती आती है, उन सामन्तोंके किसी प्रकारके अपराध, अराजभक्ति, नियम भङ्ग वा किसी विशेष कारणके विना राणा अपनी इच्छानुसार वह प्रदेश पुनर्ग्रहण करसकते थे या नहीं इसमें संदेह है। यूरोपमें जो सामन्त शासनकी रीति प्रचलित थी, उस शैलीके निर्द्धारित विधानके अनुसार सामन्तलोग जितने दिन जीवित रहतेहैं, केवल उतनेही दिन उसको भोगते हैं, उनके परलोक सिधारनेपर वह देश फिर स्वामीके अधिकारमें होजाता है। किंतु मेवाड राज्यके किसी सामन्तके परलोक सिधारने-पर जितने कार्य प्रचलित होते आते हैं उनके द्वारा उस प्रश्नकी पूरी मीमांसा होगई है। मेवाडके किसी सामन्तके मरनेपर उनके उत्तराधिकारी, राणाके सन्मानार्थ जिस प्रकार नजराना देकर फिर सनद प्राप्त करते और राणाके द्वारा सामन्त पदपर अभिषिक्त होते हैं उसके द्वारा भलीभाँति प्रगट है कि राणा इच्छा करनेपर भूवृत्ति रहित करके उस देशको अपने अधिकारमें करनेकी शक्ति रखते हैं, किंतु राणालोग उस सामर्थ्यको कार्य्यमें न लाकर पूर्व समयसे सामन्तोंके यथार्थ उत्तराधिकारियोंको ही देते चले आते हैं, इस कारण उनकी वह शक्ति मृतप्राय सी होगई है। राणालोग सत्य २ ही पुनर्ग्रहणकी शक्ति रखते थे, उसके प्रमाणके लिये कर्नेल टाड लिखते हैं कि, राणा संग्रामसिंहके शासन समयमें मेवाडके सामन्तोंके अधिकृत देश वास्तवमें ही दूसरोंके हाथमें भी जाते थे। प्रायः दोशताब्दीसे यह प्रथा बिलकुल बंद है। उस समयके पहिले किसी राठौर सामन्तका अधिकृत देश निर्द्धारित समयके पीछे अर्थान्तर दूसरे सामन्तको देदेतेथे, उस समय वह राठौर सामन्त परिवार, गौ आदि पशु और अनुचरों सहित उत्तर प्रान्त छोडकर 'चुण्पान' की बंजरभूमि में जाकर वास करते थे; इधर उसी भावसे कोई शक्तावत सामन्त आरावली पर्वतोंमें आकर नये देशमें आश्रय लेतेथे; इधर चन्दावत सामन्त चम्बलतीरवर्ती देश छोडकर किसी प्रमार वा चौहान सामन्तके अधिकार किये मेवाडके प्रा

पक्षमें राजाके प्रति उसी प्रकार संमान प्रकाशक है। सामंतलोग कहते हैं, "महाराज यदि हमलोगोंको अपने अधीनमें नियुक्त रखकर, हमसे प्रसन्न रहेंगे, तभी वह हमारे स्वामी और नेता स्वरूप हैं, यदि वैसा न करें तो वह हमारे समानहैं, और हम उनके भ्राता रूपसे भूस्वत्त्वके समान अधिकारी हैं,तथा अधिकार लाभके लिये दावा भी करतेहैं।" नरपति और सामन्तका कर्त्तव्य इसके द्वारा ही विलक्षण रूपसे जाना जाताहै।प्रत्येक प्रत्येकके निर्दिष्ट कर्त्तव्य पालनके लिये यथासाध्य सचेष्ट रहनेपर सामन्त शासन प्रणालीमें कोई विघ्न नहीं होसकता, मारवाडके सामन्त यह बातें कहगयेहैं। इधर राजा यदि अपनी निर्द्धारित सामर्थ्यको वृथा चलावे तो वह उस सामर्थ्यसे हीन होकर, सामन्तोंके समान पदवाले होजाते हैं, यह भी उक्त व्याख्याका यथार्थ अर्थ है।

देवगढ़के सामन्तके साथ उनके आधीनवाले सरदारोंका जिस समय मनो विवाद हुआ, उस समय उन सरदारोंने भी मारवाडके सामन्तोंके कहे हुए मन्तव्यके अनुसार ही कथन किया था। मारवाडेश्वरके साथ उनके सामन्तगण जिस प्रकार संधिबंधनमें बँधे थे, देवगढ पतिके साथ उनके अधीन सरदारगण भी उसी प्रकार सन्धिमें जडित थे, इस कारण दोनों ही जातीय नीतिके पृष्ठ पोषणमें समभावसे यत्नवान् थे।

रजवाडेके अधीन स्थित सरदारोंके साथ सामन्तोंकी जैसी मूलनीति अनुगत शासन प्रणाली वा सम्बंधबन्धन विराजमान है पूर्वकालमें यूरोपकी सामन्त मण्डलीके साथ उनके अधीनके सरदारोंका वैसा ही सम्बंध बंधन और वैसी ही एक प्रकारकी शासन प्रणाली प्रचलित थी वा नहीं? कर्नेल टाड यहांपर उसकी भी मीमांसा करगये हैं। यूरोपके व्यवस्थाविद् लोग दीर्घकालसे जो यह प्रश्न करते हैं कि: "सरदार गण अपने प्रभु सामन्तके पताकातलमें एकत्रित होकर अपनी आत्मीय मण्डली अथवा देशके स्वामी राजाके विरुद्ध यात्रा करनेको बाध्य हैं कि नहीं?" राजपूत जातिने बडी सुगमताके साथ विख्यात प्रमाणोंद्वारा उसकी मीमांसा करदीहै। इस कारण वह मीमांसा ही प्रमाणित करसकती है कि यूरोप और रजवाडेमें उक्त प्रणालीके विषयमें किसी प्रकारकी भिन्नता है वा नहीं? यदि किसी राजपूतसे प्रश्न कियाजाय कि "तुम अपने स्वामी सामन्तकी आज्ञा पालनके लिये बाध्यहो अथवा राजाकी आज्ञा पालन करनेमें बाध्यहो।" वह तत्काल उत्तर देगा कि,

सीमान्तवर्त्ती पहाडी देशमें रहनेको वाध्य होतेथे। आशय यह है कि, पूर्व कालमें पट्टेका निर्द्धारित समय वीत जानेपर अधिपति सामन्त मण्डलीको भिन्न देशमें भूवृत्ति देते थे। इस कारणसे एक देशके सामन्त दूसरे देशमें भेजे जाते थे।

कर्नेल टाड लिखतेहैं कि " प्रति तीन वर्षके पीछे इसी प्रकार सामन्तगण स्थान परिवर्तन अर्थात् नये देशमें भूवृत्ति पाते थे। " महाराणा भीमसिंहने रजवाडेके इतिहासवेत्ताके सन्मुख प्रगट किया कि, यह परिवर्त्तन प्रथा सामाजिक नियमके साथ ऐसी जडित थी कि सामन्तलोग प्रति तीन वर्ष पीछे इस परिवर्त्तनसे कुछ भी असन्तोष प्रगट नहीं करते थे। किन्तु कर्नेल टाड इस विषयमें संदेह प्रगट कर गयेहैं। संदिग्ध होनेपर भी वह लिख गयेहैं कि,इस परिवर्त्तन प्रथाके द्वारा राणा लोगोंकी अवलंबित राजनीति-गुप्त अभिलाषा पूरी होनेमें कोई विघ्न नहीं होता था। एक देशमें सदाके लिये एक सामंतवंशका अधिकार रहनेसे, उस प्रदेशपर उस सामन्त वंशकी अधिक ममता होजायगी, निवासी लोग उस सामन्त वंशके अत्यन्त वशीभूत होजायंगे. इस कारण सामंत प्रवल शक्तिशाली होकर यथा समयपर राणाकी आज्ञाका अनादर करेंगे; अतः राजनीतिज्ञ राणा लोगोंने इस परिवर्त्तन प्रथाका प्रचार किया था। यह प्रथा जवतक प्रचलित थी, तवतक कोई सामंत प्रवल प्रभुत्त्व अर्ज्जन करके. राणाकी आज्ञा अमान्यकरनेके साहसी अथवा अपनी सामर्थ्य और प्रताप वृद्धिके लिये अधिकारी देशमें अभेद्य दुर्ग आदि भी निर्माण नहीं करसके थे। इस रीतिने मुख्य उद्देश पूर्ण अर्थात् सामन्तोंको दृढरूपसे राणाकी आज्ञाके आधीन कर रक्खा था, और दुर्द्दान्त मुगल सम्राटोंके विरुद्ध सवको एकता भावमें वांधकर सदा जन्मभूमिकी रक्षाके लिये प्रमत्त रक्खा था कर्नेल टाड यह भी स्वीकार करते हैं कि, इस शैलीके कारण ही भारतके सर्वनाशकारी दुर्दान्त यवन सम्राटगण सात सौ वर्षतक मेवाडपर अधिकार करनेमें समर्थ नहीं हुए थे। अंतमें मुगल सम्राटोंकी सामर्थ्य प्रताप, वीरत्व, विक्रम दूर होनेके साथ साथ ही जातीय अनेकता जातीय विद्वेषने ही मेवाडकी शोचनीय दशा उपस्थित करदी और अंतमें लुटेरे महाराष्ट्र दस्युदलने मेवाडको बिलकुल विध्वंस करडालाथा।

जिस समय इस प्रकारसे परिवर्त्तन रीति प्रचलित थी, उस समय सामंतगण चिरस्थायी अधिकारका पट्टा नहीं पाते थे। विख्यात इतिहासवेत्ता गिबिन लिखते हैं कि " प्राचीन आर्मिनक दशामें भी ऐसी व्यवस्था प्रचलित थी। मेवाडमें तीन श्रेणीकी सनदें प्रचलित हैं: पहिली मियादी, दूसरी चिरस्थायी

शब्दोंका कुछ २ उच्चारण समान होनेपर और अर्थ भी प्रायः दोनोंका समान होने पर भी दोनों शब्द समान भावसे उत्पन्न हुए हैं, यह कभी स्वीकार नहीं किया जासकता।

भूवृत्तिका पुनर्ग्रहण।—कर्नेल टाड लिखते हैं कि सामन्त मण्डली बहुत काल पूर्वसे राणाके निकटसे प्राप्त हुई जिस भूमिको भोगती आती है, उन सामन्तोंके किसी प्रकारके अपराध, अराजभक्ति, नियम भङ्ग वा किसी विशेष कारणके विना राणा अपनी इच्छानुसार वह प्रदेश पुनर्ग्रहण करसकते थे या नहीं इसमें संदेह है। यूरोपमें जो सामन्त शासनकी रीति प्रचलित थी, उस शैलीके निर्द्धारित विधानके अनुसार सामन्तलोग जितने दिन जीवित रहतेहैं, केवल उतनेही दिन उसको भोगते हैं, उनके परलोक सिधारनेपर वह देश फिर स्वामीके अधिकारमें होजाता है। किंतु मेवाड राज्यके किसी सामन्तके परलोक सिधारनेपर जितने कार्य प्रचलित होते आते हैं उनके द्वारा उस प्रश्नकी पूरी मीमांसा होगई है। मेवाडके किसी सामन्तके मरनेपर उनके उत्तराधिकारी, राणाके सन्मानार्थ जिस प्रकार नजराना देकर फिर सनद प्राप्त करते और राणाके द्वारा सामन्त पदपर अभिषिक्त होते हैं उसके द्वारा भलीभाँति प्रगट है कि राणा इच्छा करनेपर भूवृत्ति रहित करके उस देशको अपने अधिकारमें करनेकी शक्ति रखते हैं, किंतु राणालोग उस सामर्थ्यको कार्य्यमें न लाकर पूर्व समयसे सामन्तोंके यथार्थ उत्तराधिकारियोंको ही देते चले आते हैं, इस कारण उनकी वह शक्ति मृतप्राय सी होगई है। राणालोग सत्य २ ही प्रतिग्रहणकी शक्ति रखते थे, उसके प्रमाणके लिये कर्नेल टाड लिखते हैं कि, राणा संग्रामसिंहके शासन समयमें मेवाडके सामन्तोंके अधिकृत देश बारनबार ही दूसरोंके हाथमें भी जाते थे। प्रायः दोशताब्दीसे यह प्रथा बिलकुल बंद है। उक्त समयके पहिले किसी राठौर सामन्तका अधिकृत देश निर्द्धारित समयके पीछे अर्थात् दूसरे सामन्तको देदेतेथे, उस समय वह राठौर सामन्त परिवार, गौ आदि पशु और अनुचरों सहित उत्तर प्रान्त छोडकर 'चुप्पान' की वनैली भूमि में जाकर वास करते थे: इधर उसी भावसे कोई शक्तावत सामन्त आरावलीकी तलहटीमें आकर नये देशमें आश्रय लेतेथे: इधर चन्द्रावत सामन्त चम्बलतीरवर्ती देश छोडकर किसी प्रमार वा चौहान सामन्तके अधिकार किये मेवाडके पूर्व

आर्योंकी त्रिमूर्तिकी समान स्कन्धनाभवालेभी त्रिमूर्तिकी उपासना करते थे, खर, बोधेन और फ्रेया यह तीन नाम उनकी त्रिमूर्तिकेहैं, यह मूर्ति त्रिगुणात्मिका[१] थीं स्कन्धनामवालोंकी उपास्य देवताकी उक्त त्रिमूर्ति प्रतिमाको शैवीलोग अपने मंदिरोंमें प्रतिष्ठित रखतेथे ।

जिस समय वसन्तऋतुके आगमन होनेपर सम्पूर्ण पृथिवी एक नवीन जीवन धारण करतीहै उस समय स्कन्धनाभ निवासी फ्रेयाका महोत्सव आरंभ करते थे और उक्त देवताके सन्मुख जंगली वराहकी बली चढाते थे ।

शिवकी अर्द्धांगीनी वासन्ती देवी राजपूतोंकी पूजनीय देवताहैं वसन्तऋतुका आगमन होतेही राजपूतगण सेनाआदिको साथ लेकर आखेटको जाते और वराहका आखेटकर उसका मांस भक्षण करतेहैं उसदिन वह राजा अपने जीवनका माया मोह त्यागकर शिकारमें लगते हैं, कारण कि उन राजाओंके मतसे उसदिनकी जय पराजयके साथ सम्वत्सरका सुख दुःख निर्भरहै, अपने जीवनका मोह करके जो राजपूत उसदिन पराजित होजाताहै उसको भगवती महामायाकी क्रोध दृष्टिसे वर्षदिनतक कष्ट मिलते रहतेहैं ।

राजपूतोंके देवता सेनापति कुमारहैं, पुराणोंमें उनको *सप्तमुख वर्णन कियाहै परन्तु शाकसेनोंके रणदेवता छःमुखवाले हैं शाकसेन कात्ति शैवी जित और कम्ब्रीगण सवही उक्त षडानन (छःमुखवाले) समरदेवकी पूजा करते थे ।

समरविलासी राजपूतोंके रण धर्म और शिव पूजा पद्धतिके साथ हिन्दुओंकी दूसरी सम्प्रदायाकी बातें बहुतही कम मिलती हैं, कारण कि, हिन्दूजाति अधिकांशमें शान्तिप्रिय और अहिंसक होतीहै. कन्द, मूल, फल, स्वच्छ सुन्दर जल उनका प्रधान भोजन और पेय पदार्थहै. ध्यान धारणा देवताकी उपासना अथवा

---

१ त्रिगुणात्मिका उत्पत्ति पालन और संहार करनेवाली तीन मूर्ति । खर-संहारकर्त्ता। बोधेन-पालन कर्त्ता, फ्रेया—आद्याशक्ति प्रकृतिरूपिणी देवी हिन्दूशास्त्रभेभी यही कार्यकर्त्ता त्रिदेव कहातेहैं ।

* टाडसाहबने न जाने किस आधारसे षडाननको सप्तानन कहाहै कुमारको छः [illegible] साथ दूध पिलानेकी परम इच्छा करने लगीथीं इससे कुमारने उनकी प्रीति देख [illegible] धारण किये थे यथाहि—

"त कुमार ततो जात दृष्ट्वा सेन्द्रा मरुद्गणा. । तदा क्षीरप्रदानार्थं कृत्तिका [illegible] ॥
अन्योन्या. पिबतस्तासां तनयस्य मुखानि षट् । समभूवन् महाबाहो [illegible] ॥"

([illegible])

किसी प्रकारके दूसरे शान्तिमय कार्यमेंही वह अपना जीवन बिता देते हैं यदि इनकी उपासना विधिसे युद्धप्रिय राजपूतोंकी उपासना विधिका मिलान किया जाय तो दोनोंही पृथक् पृथक् ज्ञात होंगी आर्यवीर्य राजपूत लडाई दंगे तथा रक्तधारा बहानेसेही अत्यन्त सन्तुष्ट रहतेहैं। अपने २ इष्ट देवताको संतुष्ट करनेके लिये वह जोकुछ भोजन करने या पीनेके पदार्थ समर्पण करतेहैं। वहभी रुधिर या मांसके पदार्थ होतेहैं, या केवल रुधिर होताहै, अथवा सुरा होतीहै, नरकपाल इनका खर्पर होताहै। इन पदार्थोंको अपने इष्ट देवताको संतुष्ट करनेवाला जानकर राजपूत लोग अच्छा समझतेहैं। बालकपनहीसे इनके मनमें ऐसा विश्वास होजाताहै कि महादेवजी अपने उपासकलोगोंके शत्रुओंका रुधिर इस खर्परसे भरकर पिया करते हैं। इन समर देवताकी मूर्ति और वेष अत्यन्त बीभत्स होताहै सर्वांगमें राख लगीहुई, सर्प लिपटेहुए, दोनों आंखें भंग व धतूरेका सेवन करनेसे लाल२ होकर चलायमान, रहतीहैं इनकी बाईका जांघपर देवी पार्वतीजी बैठीहुई हाथमें रुधिरसे भराहुआ नरकपाल उसप्रकार भयंकर मूर्तिवाले महादेवजी राजपूत वीरोंके रणदेवहैं। भारतवर्षके जिस स्वदेश रेतीले मैदानमें आर्यवीर राजपूत लोग वास करतेहैं। क्या वहांपर इस बीभत्स्य वेषधारी देवमूर्तिकी कल्पना होसकतीहै ? हम नहीं जानते, परन्तु विचार करनेसे इस मूर्तिको हठात रणवीर स्कन्दनाभीय लोगोंके वीराचारकी प्रतिमूर्ति कह सकतेहैं। वीराचारी राजपूतगण मृग, वराह, हंस, और वनकुक्कुटको शिकार करके खाजातेहैं। सूर्य, खड्ग, और घोडेकी पूजा करतेहैं। ब्राह्मणोंके सम पूर्ण उपाख्यानोंको अपना इनको भट्टकविगणोंके रण संगीत प्यारे जान पडतेहैं। भट्टग्रन्थोंमें इनकी अटल, अचल भक्ति होतीहै। जिस दिन इस भक्तिका लोप होगा, उसी दिन राजपूतोंका नामभी पृथ्वीसे लोप होजायगा. आज जिस स्कन्दनाभदेशके वीरपूज्य लोगोंके साथ वीर राजपूतोंके साथ मिलानका विचार किया जाताहै, अब उनकी वह अवस्था कहांहै ? जिनके साथ बराबरीका विचार करनेसे स्वत भारतीय आर्यलोगोंके अतिरिक्त और समस्त वीर जातियें लज्जित होती [illegible]. आज [illegible] स्कन्दनाभ भूमिकी वह अवस्था कहां गई ? आज [illegible] कार्य व आचरण करनेसे [illegible] वर्तमान पत्रोंको [illegible] भारतभूमिकी समान. आज स्कन्दनाभ भूमि [illegible]

भट्टकवि—राजस्थानके राजपूत [illegible] [illegible]

सीमान्तवर्त्ती पहाडी देशमें रहनेको वाध्य होतेथे। आशय यह है कि, पूर्व कालमें पट्टेका निर्द्धारित समय वीत जानेपर अधिपति सामन्त मण्डलीको भिन्न देशमें भूवृत्ति देते थे। इस कारणसे एक देशके सामन्त दूसरे देशमें भेजे जाते थे।

कर्नेल टाड लिखतेहैं कि "प्रति तीन वर्षके पीछे इसी प्रकार सामन्तगण स्थान परिवर्तन अर्थात् नये देशमें भूवृत्ति पाते थे।" महाराणा भीमसिंहने रज_वाडेके इतिहासवेत्ताके सन्मुख प्रगट किया कि, यह परिवर्त्तन प्रथा सामाजिक नियमके साथ ऐसी जडित थी कि सामन्तलोग प्रति तीन वर्ष पीछे इस परिवर्त्त-नसे कुछ भी असन्तोष प्रगट नहीं करते थे। किन्तु कर्नेल टाड इस विषयमें संदेह प्रगट कर गयेहैं। संदिग्ध होनेपर भी वह लिख गयेहैं कि,इस परिवर्त्तन प्रथाके द्वारा राणा लोगोंकी अवलंवित राजनीति—गुप्त अभिलाषा पूरी होनेमें कोई विघ्न नहीं होता था। एक देशमें सदाके लिये एक सामंतवंशका अधिकार रहनेसे, उस प्रदे-शपर उस सामन्त वंशकी अधिक ममता होजायगी, निवासी लोग उस सामन्त वंशके अत्यन्त वशीभूत होजायंगे, इस कारण सामंत प्रवल शक्तिशाली होकर यथा समयपर राणाकी आज्ञाका अनादर करेंगे; अतः राजनीतिज्ञ राणा लोगोंने इस परिवर्त्तन प्रथाका प्रचार किया था। यह प्रथा जवतक प्रचलित थी, तवतक कोई सामंत प्रवल प्रभुत्व अर्ज्जन करके, राणाकी आज्ञा अमान्यकरनेके साहसी अथवा अपनी सामर्थ्य और प्रताप वृद्धिके लिये अधिकारी देशमें अभेद्य दुर्ग आदि भी निर्माण नहीं करसके थे। इस रीतिने मुख्य उद्देश पूर्ण अर्थात् साम-न्तोंको दृढरूपसे राणाकी आज्ञाके आधीन कर रक्खा था, और दुर्द्दान्त मुगल सम्राटोंके विरुद्ध सवको एकता भावमें वांधकर सदा जन्मभूमिकी रक्षाके लिये प्रमत्त रक्खा था कर्नेल टाड यह भी स्वीकार करते हैं कि, इस शैलीके कारण ही भारतके सर्वनाशकारी दुर्द्दान्त यवन सम्राटगण सात सौ वर्षतक मेवाडपर अधिकार करनेमें समर्थ नहीं हुए थे। अंतमें मुगल सम्राटोंकी सामर्थ्य प्रताप, वीरत्व, विक्रम, दूर होनेके साथ साथ ही जातीय अनेकता जातीय विद्रोहने ही मेवाडकी शोचनीय दशा उपस्थित करदी और अंतमें लुटेरे महाराष्ट्र दस्युदलने मेवाडको विलकुल विध्वंस करडाला था।

जिस समय उक्त प्रकारसे परिवर्त्तन रीति प्रचलित थी, उस समय सामंतगण चिरस्थायी अधिकारका पट्टा नहीं पाते थे। विख्यात इतिहासवेत्ता गिबन लिखते हैं कि, "फ्रांसकी आरंभिक दशामें क्या ऐसी व्यवस्था प्रचलित थी। मेवाडमें तीन श्रेणीकी सनदें प्रचलित हैं: पहिली स्थायी, दूसरी चिरस्थायी

अनेक स्थानोंमें बन्दूक, तलवार, और ढालधारी भूमियां विराजमान हैं । मंडलगढ नामक देशमें जिस समय इन भूमियां और राणाका स्वार्थ विपदयुक्त होजाता दुर्दान्त महाराष्ट्र और अन्यान्य लुटेरे लोग जिस समय प्रबल अत्याचार, उत्पीडन और लूटमारमें प्रमत्त हो उठते, उस समय यह अश्वधारी प्रायः चार सहस्र भूमियां रणवेषसे सजते थे । भूमियांगण राणा वा किसी दूसरेकी सहायता न लेकर क्रमसे आधी शताब्दीतक घोर विद्रोह और अराजकतामें इस प्रयोजनीय देशके दुर्गकी राणाके लिये रक्षा करनेमें समर्थ हुए थे । मेवाडमें मण्डलगढ एक विस्तृत प्रदेश है । इसके अन्तर्भुक्त तीन सौ साठ खण्ड नगर और ग्रामोंमे प्राचीन आचार व्यवहारके अनेक चिह्न देदीप्यमान हैं पूर्व कालमें यह देश सोलङ्कियोंके अधिकारमें था वही लोग इसमें निवास करते थे । यवन राजवंशके बहुतसे उत्तराधिकारी राव उपाधि धारण करके अब भी इस देशमे भूमि संभोग करतेहैं । *

यह सम्पूर्ण भूमियां लडनेके उपयोगवाली प्रजा राणाको साधारण कर देती है, और स्थानीय युद्धके कार्य्यमें अर्थात् सीमान्तमें स्थित दुर्गकी रक्षा आदिमें नियमित समयतक सेनारूपसे अवस्थान किरती है । किन्तु यदि कोई विदेशका शत्रु आकर मेवाड आक्रमणका उद्योग करे तो उस समय राणाके घोषणा पत्र प्रचार करते ही यह भूमियांलोग अपने२ अस्त्र शस्त्र लेकर आक्रमण कारियोंके विरुद्ध खडे होते हैं । किन्तु उस समय वह बिना वेतनके केवल भोजनसामग्री प्राप्तिसे ही जन्मभूमिकी रक्षाके लिये संग्राममें कूदते हैं । × यह भूमियां बहुत दिनसे यह कहकर आपत्ति कर रहेहैं कि "राणाको हमलोगोंसे कर लेना किसी प्रकार उचित नहीं है. क्योंकि हम युद्धकार्य्यमें जब बिना वेतनके नियुक्त होते हैं तो न्यायानुसार हमको कर दानसे छुटकारा देना उचित है ।

यह भूमियांलोग राणाके निकटसे इस भूस्वत्व संभोगके लिये किसी प्रकार-का पट्टा नहीं लेते । बिना पट्टेके भूमिका अधिकार स्वत्व मिलना यह लोग महा सम्मान और गौरवका विषय समझते हैं । "माजाभूम" अर्थात् मेरी भूमि यह स्वयं उक्ति सदा उनके मुखसे निकलती रहतीहै ।

सत्त्व मूलक और तीसरी वंशानुक्रमके अधिकारी है । किसी सामंतके परलोक सिधारनेपर उनके पुत्र पौत्र लोग उत्तराधिकारी क्रमसे भोग करते आते हैं, इस समय उस भावसे ही अधिकृत देशोंमें सामन्तोंका चिरस्थायी स्वत्त्व वर्त्तरहाहै। और उस देशमें राणाका निःसंदेह पूर्णस्वत्त्व विराजमान है अर्थात् वह इच्छानुसार किसी सामन्तके वंशधरको वृत्ति रहित करसक्ते हैं । इतिहास लेखक लिखतेहैं कि, यह प्रथा वहुत पुरानी है, सामयिक राजनीतिके अनुसार सामन्त मंडलीको आज्ञाधीन रखनेके लिये निःसंदेह इसका जन्म हुआथा।

साधु टाड यहांपर लिखते हैं कि जो राणागण गर्व्वित और उद्धत सामन्त मण्डलीके हृदयमें प्रवल भाव उद्दीपन करनेमें समर्थ थे, उनके प्रति अवश्य ही उच्च गन्तव्य प्रकाश करनेको वाध्य हैं । पुत्र अपने पिताकी उपाधि और सत्त्वके अधिकारसे आधीनके सरदारोंके प्रति पितासम्बन्धी सामर्थ्य विस्तार करनेमें समर्थ और पिताकी समान अपने प्रभु अधीश्वरकी अनुकूलता स्वीकार करनेमें वाध्य हैं, किन्तु उसके उल्लंघन करनेमें किसी प्रकार समर्थ नहीं है, यह भाव वहुत ऊंचा है, और इसीसे शुभफल होता है ।

सामन्त मण्डली जिससे परस्पर वैवाहिक भावमें वँधकर प्रवल शक्ति संग्रह पूर्वक राणाके विरुद्ध न उठे और राज्यमें विद्रोह फैलानेमें समर्थ न होसके, उसके लिये गूढ राजनीतिज्ञ राणाओंने सामन्तोंको भिन्न सम्प्रदाय भोगी और विदेशी सामन्तोंके साथ मिलाकर मङ्गलमय फल उपजाया था । किन्तु समयपर उन अवलम्बित नीतिका अनादर करनेसे आत्मविग्रह और विद्रोह अग्निने मेवाडकी जातीय भीतरी दशाको अत्यन्त हृदयभेदी और शोचनीय करदिया था।

मेवाडकी भिन्न श्रेणी भोगी सामन्त मण्डलीमें भिन्न रक्तधारी भिन्न देशीय राजपूत सामन्तोंको बुलाकर मेवाडमें रखनेसे राजनैतिक महान उद्देश्य पूर्ण होगा, पूर्व राणालोगोंने इस बातको भलीभांति समझ लिया था; और उसी उद्देश्यको कार्य्यमें लाये थे । राठौर, चौहान, प्रमार, सोलंकी और भट्टनागीय सामन्तोंके साथ राणालोग वैवाहिक प्रबन्ध बंधन द्वारा मिल गये थे । उक्त राठौर चौहान आदि जातिके सामन्तोंमें कई वंश दिल्ली और अनहलवाड़ा नगरके बड़े पुराने हिन्दू राजवंशमें उत्पन्न हैं । शुद्ध आर्य्यरक्त पवित्र रखनेके लिये ही मेवाडके राणालोग उक्त सामन्तोंकी कन्याका पाणिग्रहण करते थे, राणा-

पूर्वकालमें कोई उक्त श्रेणीकी स्वतंत्र प्रजा सामन्त पद पाने और पूर्ण शक्ति चलानेके लिये विशेष चेष्टा करती थी। किन्तु उनकी वह इच्छा प्रायः पूर्ण नहीं होती थी। देवलाके राठौर सरदारने अपने प्रभु वनेडाके राजासे पट्टा ग्रहण करके तीन प्रधान २ देशोंका अधिकार पाया था। क्रमसे सामर्थ्य और प्रभुत्व अर्जनके साथ उस सरदारने अपनेको सामन्त रूपसे गिनानेके लिये वनेडा राजकी अधीनता अस्वीकार करी। वनेडा राजको वह जिस प्रकार निर्द्धारित कर देते आते थे उसमें कोई व्यत्यय न करके निर्दिष्ट व्यवस्थाके अनुसार वनेडा राजके दरबारमें गमन और वहां रहनेमें सर्वथा उदासीनता दिखाने लगे। यह निश्चित था कि, किसी विदेशी शत्रुके आक्रमणके उपस्थित होनेपर उक्त सरदार पैंतीस सवार देंगे। किन्तु वैसी घटना अर्थात् विदेशी शत्रु उपस्थित होनेपर देवलापति सेना भेजनेमें सर्वथा उदासीन होगये। युद्ध समाप्तिके पीछे वनेडा राजने उक्त सरदारके ऊपर महा क्रुद्ध होकर उनको राजसभामें बुला भेजा। देवलाके सरदार पूर्ण स्वाधीनता का सुधामय फल भोग रहे थे, उनके स्वाधीनता स्वीकार न करनेपर वनेडा राजने देवला लौटा देनेकी आज्ञा दी। उसके उत्तरमें उक्त सरदारने सूचित किया कि मेरा मस्तक और देवला दोनों एक साथ बँधे हैं।" उनके इस उत्तरका अर्थ यह है कि देहमें प्राण रहते २ देवला कभी नहीं लौटा सकता। अन्तमें वनेडाधीशने सरदारके इस गर्वित आचरणको राणासे कहला भेजा, तब देवलादेश बलपूर्वक छीनकर राणाके अधिकृत भूखण्डके अन्तर्गत कर लिया गया। देवलाके अतिरिक्त और जितनी भूमि उस सरदारके पास थी वह केवल उसी भूमिमें राणाके आधीन रहने लगे, और उस भूवृत्तिके बदलेमें उनको स्थानीय शुल्कसम्बन्धी कार्य्य साधनेकी आज्ञा हुई। वनेडा राज्यमें बहुतसे स्वाधीन भूमियां रहते हैं। उनमें बहुतसे लोग छोटे २ ग्रामोंके भी स्वामी हैं। यह लोग किसी प्रकारके निर्द्धारित कर दानके बदले स्थानीय कार्य्य सम्पादन करते हैं। राजाके सारे किसी स्थानमें गमन करनेपर वनेडापति उनके भोजनकी सामग्रीका सब प्रबन्ध करदेते हैं।

रजवाड़ेमें यह भूमियां स्वत्व इतना सम्मान सूचक है कि, प्रधान २ सामन्तगण अपने सम्पूर्ण आधीनके ग्रामोंमें इस भूमियां स्वत्व पानेके लिये सदा चेष्टा करते हैं। साधारणतया पट्टेके द्वारा जो भूस्वत्व मिलता है; किन्तु पट्टेका यह [illegible] स्वत्व उससे अधिक चिरस्थायी और दीर्घ स्थायी है इस कारण सामन्तगण इस स्वत्वके भोग करनेके लिये सदा सचेष्ट रहते हैं।

लोग जिस प्रकार उक्त भिन्न देशीय राजपूतोंकी कन्याओंको स्त्रीरूपसे ग्रहण करते थे, राणा वंशके सामन्त भी उसी प्रकार जातीय रक्त पवित्र रखनेकी इच्छासे उक्त राजपूतोंके साथ वैवाहिक सम्बंध करते थे। विदेशके राजपूतगण इस प्रकार मेवाडके अधिपति और राणा वंशीय सामन्तमण्डलीके साथ वैवाहिक सम्बन्ध करनेसे वह भी राज्यका मंगल मनाने लगे, और मेवाडके ऊपर उनकी भी ममता और आसक्ति बढी थी, उसी वैवाहिक सम्बन्धसे ही मेवाडमें आत्मविग्रह और विद्रोह उपस्थित होनेपर, वह प्राणपणसे राणाका पक्ष समर्थन और सहायता करनेमें अग्रसर होतेथे। किन्तु जिस समयसे उक्त मंगलमय प्रथाके ऊपरसे सबकी दृष्टि हटगई, जिस समयसे मेवाडकी प्रधान २ राजपूत शाखाकी पुरुषसंख्या प्रबल होगई, जिस समयसे सबने दल बांधना आरंभ किया, उस समयसे ही राणाकी अधिकार की हुई भूमिकी सीमा क्रमशः घटने लगी, चारों ओर आत्मविग्रहकी अग्नि प्रज्वलित हुई और अत्याचारी दुर्दान्त महाराष्ट्र दल मेवाडमें घुसकर मेवाडको बिलकुल अन्तस्सार शून्य करने लगे थे। दिल्लीके मुगल सम्राटोंका जबतक अखण्ड प्रताप प्रभुत्त्व था, तबतक उन निष्ठुर हृदय महाराष्ट्रियोंकी समान किसी जातिने साम्राज्यमें किसी प्रकार अत्याचार वा अनिष्ट करनेका साहस नहीं किया। जिस समय मुगल शासनशक्ति सर्वथा विलुप्त होगई, घटना क्रमसे उस समय ही मेवाडकी गौरवगरिमा-सिसोदिया कुलका वीरत्व विक्रम भी सर्वभावसे अदृश्य होगया। यदि उस समय मेवाडके सिंहासनपर राणा प्रताप, जयसिंह, राजसिंह आदिकी समान कोई राणा विराजमान होते, यदि उस समय राजपूतजाति आत्मविग्रहानलसे मेवाडको छार खार न करती, तो महाराष्ट्रीलोग किसी प्रकार मस्तक ऊपर उठानेमें समर्थ न होते यह सहजमें ही स्वीकार किया जासकता है।

राठौर, चौहान, प्रमार आदि वैदेशिक सामन्तगण मेवाडमें बद्धमूल और सिसोदीय वंशके साथ वैवाहिक सम्बंध बंधनमें बंधनेके कारण राणालोग भिन्न श्रेणीका पट्टा प्रचलित करनेमें बाध्य हुए। यद्यपि समयके प्रभावसे वह भिन्नता सर्वथा दूर होगई, यद्यपि समर्थ होनेपर भी राणालोगोंने किसी सामन्तको किसी देशकी भूवृत्तिसे सर्वथा च्युत नहीं किया; वरन सब ही सम भावसे स्थायी स्वत्व भोगते चले आते हैं, तथापि उक्त पट्टा देनेके समय स्थायी स्वत्व नहीं दिया जाता था, और अब भी नहीं दिया जाता; यह बात निम्नलिखित विवरणके पढनेसे भलीभांति जानी जासकती है।

यह भूमियांस्वत्व किस प्रकार उत्पन्न हुआ ? भूमियां लोग किस २ विषयमें मेवाडकी अन्यान्य पट्टाधारी प्रजाकी अपेक्षा अधिक सुबीता पातेहैं, ? साधारण प्रजाके साथ भूमियांलोगोंका क्या भेद है ? परिशिष्ट पत्रमें हमने . जितने ताम्र-शासन, राजाकी आज्ञासे और स्मारक लिपियोंका अनुवाद दियाहै पाठकलोग उनको पढकर यह सब बातें भलीभांति जान सकेंगे ।

बनेडा और शाहपुरेके दो राजा ।—मेवाडकी सबसे ऊंची सामन्तश्रेणीमें बनेडा और शाहपुरेके दो अधिपति सबकी अपेक्षा मान्य, महान और शक्ति-शाली हैं । वह दोनों यद्यपि सामन्त पदवीपर हैं, किन्तु राजाकी उपाधिसे भूषित हैं, और उनमें एक यहांतक प्रभुता और प्रतापशाली हैं कि, उनको सामन्तके नामसे नहीं पुकारा जासकता । यह दोनोंही राणाकी समान समरक्तवाही हैं । राणा जयसिंहके जो यमल पुत्र उत्पन्न हुएथे । बनेडाके राजा उनमेंसे एकके वंशधर हैं, और शाहपुरेके अधीश्वर राणा उदयसिंहके वंशमें उत्पन्न हुएहैं ।

दोनोंमेंसे किसी एकके परलोक सिधारनेपर नवीन राजा मेवाडेश्वर राणाके निकटसे राज्यशासनकी सनद लेतेहैं । राणा स्वयं उनका अभिषेक कार्य्य संपन्न करके राजप्रसाद स्वरूप खिलअत अर्थात् महामूल्यके वस्त्राभूषण देतेहैं । यह बनेडा और शाहपुरेके राजा यद्यपि राणाके अधीन हैं. किन्तु अन्यान्य सामन्तोंकी समान नये अभिषेकके समय राणाको किसी प्रकारका नजराना नहीं देते; किन्तु राणाकी सभामें वर्षमें निर्द्धारित कई मासतक स्थिति और मेवाडके जिस सीमान्तमें बनेडा और साहपुरा स्थापित है वहांके सामरिक कार्य्यकी सहायता करनेमे भी बाध्य हैं । कर्नल टाड लिखतेहैं कि, " वह बहुत कालसे अपने इस कर्त्तव्य पालनमें पराङ्मुख हैं । केवल समयके गुणसे ही राणालोगोंके प्रताप प्रभुत्व घटनेके साथ ही वह उक्त कर्त्तव्य पालनमें उदासीन होगये । बनेडा और शाहपुरा दोनों देश ही दिल्लीके मुगल सम्राटके आधीन स्थित अजमेर देशके बहुत निकटवर्त्ती थे. इस कारण दोनों राजा अवस्था और समयकी विशेषतासे मुगलसम्राटकी आज्ञा पालनमें बाध्य होगये । मुगल सम्राटने ही दोनोंको राजाकी उपाधि दी थी. और शाहपुरेके अधिपतिने मुगलसम्राटके अनुग्रहसे अजमेरका कुछभाग पाया था । वर्त्तमान शाहपुराधीश्वर वृटिश गवर्न-मेन्टको वार्षिक कर देकर मुगलसम्राटके दिये हुए अजमेर प्रान्तके उस अंशको भोगते हैं ।

कालापट्टा ।—यथा स्थानमें लिखा जाचुका है कि राणा रायमल और राणा उदयसिंहके वंशधरलोग जिन दो प्रधान शाखाओंमें विभक्त हुए थे; उनके ही असंख्य वंशधर यथा समय भिन्न २ पैतृक उपाधियोंकी प्राप्तिसे होकर अनेक उपशाखाओंमें विभक्त होकर, मेवाडके प्रधान सामन्त और सरदार श्रेणीमें गिने गये थे।

चन्दावत और शक्तावत यह दो प्रधान शाखा हैं; पहिली दश और दूसरी छः शाखाओंमें विभक्त है। राजपूतोंमें चिर प्रचलित नियमके अनुसार वह कभी अपने वंशवालोंके साथ कन्याके लेन देनेका सम्बंध नहीं करसकते। यह बात सर्वथा निषिद्ध है। उक्त शाखा और उपशाखामें विभक्त सम्पूर्ण राजपूत एक जाति अर्थात "सिसोदीयकुल" नामसे विख्यात हैं सिसोदीयस्त्रीके साथ सिसोदीय पुरुषका विवाह किसी प्रकारसे भी नहीं होसकता; सिसोदीय लोग सब ही राजरक्तधारी रूपसे प्रसिद्ध हैं।

भूवृत्तिके ऊपर सिसोदीय राजपूतोंका जैसा प्रबल स्वत्वाधिकार है, वह राठौर, प्रमार, चौहान आदि जितने विदेशीय राजपूत मेवाडमें सामन्त पदपर प्रतिष्ठित होकर भूवृत्ति भोगते आते हैं उनका वैसा प्रबल स्वात्वाधिकार नहीं है। सिसोदीय गण राजवंशी हैं इस कारण उनका स्वत्त्व बलवान है। सिशोदीय सामन्तोंकी भूवृत्ति यद्यपि चिर स्थायी पट्टेके अनुसार नहीं है और राणालोग किसी सिसोदीय सामन्तको भी अपनी इच्छानुसार वृत्तिसे रहित नहीं करते, तथापि भूवृत्तिमें उनका मानो एक स्थायी स्वत्व वर्त्त रहा है। किन्तु प्रमार, चौहान आदि सामन्तोंके परवर्त्ती वीर पुरुष क्रमानुसार किसी भूवृत्तिके संभोग करनेपर भी वह यह नहीं कहसकते कि "भूवृत्तिमें हमारा स्थायी स्वत्व होगया है।" वह वैदेशिक सामन्तोंको जो पट्टा दिया जाता है वही "कालापट्टा" नामसे विख्यात है। वैदेशिक सामन्तगण विख्यात भी करते हैं कि, "हम कालापट्टा धारी हैं।" किन्तु उनके आत्मीय सिसोदीय सामन्तगण उन कालेपट्टेके अधीन न होनेके कारण गर्व करसकते हैं। कालेपट्टेका अर्थ यह है कि जब इच्छा हो तभी वह भूवृत्ति लौटा ली जासकती है, इसके सिवाय सिसोदीय सामन्तगण राणाके दिये हुए पट्टेके अनुसार आनेको जिस प्रकार अनेक विषयोंमें सुविधा सुयोग अनुभव करसकते हैं, विदेशी सामन्तगण उस प्रकार अनुभव नहीं करसकते।

पट्टेका आदर्श और उसमें लिखित व्यवस्था। राणा सामन्त और आधीनके प्रधान २ पुरुषोंको भूवृत्ति देनेके समय जितने प्रकारके पट्टे और सनदें देतेहैं परिशिष्टमें उनके कई नमूने लिखेगये हैं। उनके देखनेसे सामन्तोंका स्वत्व, अधिकार, सन्मान, अनुग्रह, अर्थ संग्रहका मूलकारण और किस व्यवस्थाके अनुसार वह भूवृत्ति दी गई यह सब बातें भलीभाँति ज्ञात होसकती हैं। अनेक वृत्ति प्राप्त राजासे अनुगृहीत सामन्तोंने समयके गुणसे राणाकी निर्बुद्धिता देखकर, अनेक विषयोंमें अपनी स्वाधीनता संग्रह करली थी। एक २ राणाने यहांतक अविवेकताका कार्य्य किया कि, नवीन सामन्तके अभिषेक कालमें जो नजराना लियागया, वही अपने प्रभुत्वका परिचायक जानकर दो एक सामन्तोंको उस नजरानेसे भी सर्वथा रहित कर दिया। आने और जानेवाली वस्तुकी चुंगी (पारावार शुल्क) और दूसरी इसी श्रेणीके अंश भी अनेक सामन्तोंने अपने संभोग करनेके लिये हत प्रताप मेवाडपतिके निकटसे सम्मति कर लेलिये बहुतसे अपने २ देशमें अपने २ नामसे ताम्रमुद्रा चलाने और दूसरे अनेक विषयोंमें राणाका प्रभुत्व प्रताप लोप करके अपना भण्डार पूर्ण करते थे। यह चित्र इस बातको भलीभाँति प्रगट करे देताहै कि मेवाडपतिके भाग्यमें घोर कालरात्रि आगई थी इसी कारण सामन्तगण अपनी स्वार्थ पूर्तिके साथ २ अन्यायसे शक्ति संग्रह करते थे।

महामना टाड यहांपर लिखतेहैं कि, "बहुत वर्ष हुए, जिस समय सबसे प्रथम पश्चिमी राज्यकी सामन्त शासन रीतिके साथ रजवाडेकी सामन्त शासन शैलीकी एकताने मेरे चित्तको आकर्षित किया, उस समयमें जयपुरके अधीश्वर की आधीनतामें स्थित एक सर्वप्रधान सामन्तकी सनद वा पट्टा लेकर, उसको क्रमानुसार देखने और प्रत्येक धारा और व्यवस्थाको पृथक् करनेमें नियुक्त हुआ। उक्त सामन्तके एक प्रधान कर्म्मचारीने उस विषयमें मेरी विशेष सहायता की। उस सनद वा पट्टेमें सामन्तके अधीनस्थ सरदार और अन्य प्रजा अधिकारियोंके स्वत्वाधिकारादि भी विशेष रूपसे विवृत देखे गये, और उसी समय से ही मैं इस प्रणालीके यथार्थ वृत्तान्त संग्रहमें कौतूहलयुक्त हुआ था।"

रजवाडेके राजा लोगोंके आदर्शपर ही आधीनमें स्थित प्रधान २ सामन्त भी अपने सम्पूर्ण कार्य करते हैं; प्रधान अर्थात् मंत्रीसे लेकर पनवाडी तक उसी प्रकार भिन्न २ नामसे कर्म्मचारी नियुक्त हैं, यहांतक कि सांसारिक सम्बन्धि विषयमें भी अधिपतिकी स्वीकार की हुई रीतिके अनुसार आडम्बर [illegible] आते ।

महामना टाड जिस समय विध्वस्त मेवाडका सुखसूर्य्य फिर उदित करने और अशान्ति, अत्याचार, उपद्रव, उत्पीडन दूर करने और बलहीन राणा भीमसिंहकी सामर्थ्य प्रताप फिर विस्तृत करने और यहांके निवासियोंके मंगल साधन कार्य्यमें प्रवृत्त हुए, उस समय मेवाडके सब सामन्तोंको पट्टे और सनदें उपस्थित करके महाराणा भीमसिंहके हस्ताक्षर युक्त नये पट्टेका ग्रहण करना आवश्यक होगया। उक्त उद्देश साधनके लिये राणाके प्रधान मंत्रीने स्वयं चन्दावतोंके नेता सलम्बूराधिपतिके उदयपुरवाले वासस्थानमें जाकर उनसे प्राचीन पट्टा दिखानेके लिये प्रार्थना की। राणाके दुःसमयमें सलम्बूरके सामन्तने राणाके अधिकृत कई ग्राम अन्यायसे अपने अधिकारमें कर लियेथे, इस कारण प्राचीन पट्टा उपस्थित करनेसे उनका वह निन्दित कार्य्य प्रगट होजाता। जब मंत्रीने पट्टा दिखानेके लिये विशेष अनुरोध किया, तब सामन्तने राणाके प्रासादकी ओर लक्ष्य करके साहसके साथ उत्तर दिया कि, "मेरा पट्टा इस प्रासादकी भीतकी जडमें है।" वीर तेजस्वी चंदके उत्तराधिकारीका यह ठीक ही उत्तर है, इसको कौन अस्वीकार करेगा? राजपूत सामन्तमण्डलीकी नस २ में कैसे तीव्र रसका सोत बहारहाहै, यह उत्तर उसकी पूर्ण साक्षी देरहा है। इस उत्तरको स्मरण करके कर्नेल टाड लिखगये हैं कि, "हमारे स्वदेशके अर्ल आफ वारनने ऐसे ही कारणसे एडवर्डके प्रतिनिधिको जो उत्तर दिया था, वह यह है 'मेरे पूर्व पुरुषोंने अपनी तलवारके बलसे इस भूमिपर अधिकार किया था, मैं भी उसी तलवारके बलसे इसकी रक्षा करूंगा।' उस समय यह उत्तर मुझे स्मरण होआयाथा।"

ऊपर हमने पुरानी दशाका ही वर्णन किया है। वर्त्तमान नियमानुसार वर्त्तमान सामन्तगण चिर जीवनके लिये पट्टा पाते हैं और अपनी उपस्थितिमें अपने पुत्र वा राणाकी सम्मति लेकर किसीको भी पोष्य पुत्र ग्रहण करनेपर वही सामन्त-पदपर अभिषिक्त होकर भूवृत्ति संभोग करते हैं। किन्तु कोई सामन्त यदि राणाके विरुद्ध कोई कार्य करे अथवा सामन्त पदवीकी अयोग्यता दिखावे तो राणा भूवृत्ति लौटा लेनेके अधिकारी हैं। किसी सामन्तके परलोक सिधारनेपर उनके उत्तराधिकारीको किस रीतिसे अभिषिक्त करना होताहै, यह बात हम यथोचित स्थानमें लिख आये हैं। सिसोदीय सामन्तके साथ प्रमार भट्टी आदि जातिके सामन्तोंके तत्त्वसम्बन्धी कुछ भी लिखना नहीं है। किन्तु संवत् १८८२ के विद्रोहके पहिले इन वैदेशिक सामन्तोंके स्वार्थके ऊपर राणालोग बहुत ही कम दृष्टि

सामन्त अपने स्वामीकी समान स्वाधिकृत प्रदेशमें "शीशमहल" * "वाडी महल" × और देवालय आदि निर्माण करके सुख स्वच्छन्दसे राजपदपर अभिषिक्त पुरुषोंकी समान वास करते हैं। अधिपतिकी समान सामन्त अपनी "दोरिशाला" में ⁂ जिस समय प्रवेश करते हैं, उस समय गाने बजानेवाले गीत बाजेके साथ सामन्तकी जयघोषणा करते हुए आगे बढते हैं। अन्तमें सामन्तके सिंहासनपर बैठते ही सम्पूर्ण कर्म्मचारी और अनुचरवर्ग पदमर्य्यादाके अनुसार दहिनी और बाई ओर श्रेणी बांध खडे होकर जय उच्चारण करते हैं। सामन्तके पत्यभिवादन करनेपर सब अपने २ आसनपर बैठ जातेहैं। जिस समय सब लोग पास २ होकर बैठते हैं, उस समय परस्पर ढालोंके संघातसे उत्पन्न हुए शब्द द्वारा सभागृह गूँज उठता है।

पश्चिमी राज्यमें किसी नवीन सामन्तके अभिषेकके समय वह सामन्त जिस प्रकार अधिपतिका हाथ चुम्बन और राजाकी अनुकूलता सूचक शपथ करते हैं, रजवाडेमें वैसी प्रथा प्रचलित नही है, कोई सामन्त अपने पैतृक पदपर अभिषिक्त होनेपर वह अपने नामसे अपने अधिकृत देशके सब स्थानोंमें "आन" ※ अर्थात् राजाके अनुकूलताका सूचक घोषणापत्र प्रचार करते हैं। मैं आपका पुत्र हूं, मेरा मस्तक और तलवार आपके अधीन है, मैं जीवन पर्यन्त आपकी आज्ञा पालन करूंगा।" राजपूतोंकी यह उक्ति ही राजभक्तिकी सन्मान रक्षाके लिये यथेष्ट है। अराज भक्ति और प्रभुके प्रति अवज्ञा किसको कहते हैं, राजपूत जातिने इसको किसी समय नहीं सीखा. वरन् उनकी अटल राजभक्ति, गाढ अनुरक्ति. प्रभुके प्रति दृढ आसक्ति और स्वार्थ त्याग यहांतक है कि, उनके अमूल्य प्राणतक देनेके असंख्य उदाहरण इस विस्तृत इतिहासमें विलक्षण रूपसे दृष्टिगोचर होंगे। "स्वामी ही धर्म स्वरूप है यह जिस जातिका ध्यान है सदासे जो जाति अधिपतिको देववंशावतंस कहती चली आती है. वह जाति राजभक्तिका महान् दृष्टान्त अनन्तकालतक दिखावेगी इसमें आश्चर्य क्या है? राजपूत कविके संगीतसे ही राजपूत बालकपनसे यही सीखते हैं कि, राजभक्ति इस संसार

* दर्पण [illegible]।

× [illegible]।

⁂ [illegible]।

※ [illegible] किसी प्रकारका [illegible] नहीं [illegible]। [illegible] "आन" अर्थात् [illegible]।

रखते थे। विदेशी सामन्तोंमें बेदला और कोथारियाके चौहान और मेवाडके मध्यवर्ती देशोंके प्रमार सामन्तगण प्रथम श्रेणीके सामन्त पदपर प्रतिष्ठित हैं।

रजवाडेके अधीश्वर यद्यपि अपनी इच्छानुसार किसी सामन्तको पदच्युत करके उसको भूवृति रहित और उसके अधिकृत देशको अपने अधिकारमें कर लेनेके अधिकारी हैं। किन्तु, किसी प्राचीन प्रबल शक्तिमान सामन्तको उस प्रकार पदच्युत करनेमें उद्यत होनेपर अधिपतिको अनेक विघ्न और विपत्तियें भोगनी होती हैं यद्यपि रजवाडेके राज्योंमें विदेशी सामन्तोंकी संख्या भी सामान्य नहीं है, किंतु स्वजातीय सामन्तलोग ही प्रबल शक्तिवाले हैं, और उन स्वजातीय सामन्त मण्डलीमेंसे एक सामन्त सबके नेता पदपर प्रतिष्ठित होते हैं यदि उनको स्वजातीय नेता प्राप्त न हो तो वह निकटवर्त्ती समीपी सामन्तको नेता पदमें वरण करलेते हैं। सम्पूर्ण आधीनके सरदार ही उसनेताके आज्ञाधीन रहते हैं। इस कारण किसी नेताको पदच्युत करनेमें उद्यत होनेपर वह आधीनके सब सरदार और उस सम्प्रदायके दूसरे सामन्त इकट्ठे होकर महाविघ्न करते हैं। अतः एक सामन्तको पदच्युत करने पर उस संप्रदायके सब ही विरुद्ध होजाते हैं। यदि कोई सामन्त राणाके विरुद्ध भारी अपराध करे वा सामन्त पदकी अयोग्यता दिखावे तो अधिपति उस संप्रदायके किसी योग्य पुरुषको उस पदपर अभिषिक्त कर देते हैं। सब प्रकारसे योग्य पुरुषको निर्द्धारित करनेके लिये राणाकी समान दूसरे सामन्त और सरदार भी विशेष तीक्ष्ण दृष्टि रखते हैं। यदि राणा किसी सामन्तका पद सर्वथा खाली करके अपने अधिकारमें करलें तो उस सामन्तके अधीनस्थ सरदारगण अपना प्रबन्ध अपने हाथमें ही रखकर साक्षात् संबंधमें राणाकी आज्ञाके आधीन रहते हैं।

जिस समय मेवाड उन्नतिकी ऊंची चोटीसे गिरकर अवनतिके समुद्रमें डूब गया जिस समय राणाकी शासन शक्ति बिलकुल क्षीण होगई प्रताप नष्ट होकर चारों ओर विद्रोह और आत्मविग्रहकी अग्नि प्रज्वलित होगई, उस समय चतुर प्रबल सामन्तोंने बल प्रकाश, नय प्रदर्शन और अन्यान्य अनेक प्रकारके गुप्त उपायोंसे राणाके अधिकारके अनेक देशोंको अपने अधिकारमें कर लिया दुर्बल और लुप्त प्रताप राणा तथा उनके मंत्रीके दुर्बुद्धि दोषसे भी अनेक ग्राम इसी प्रकार सामन्तोंके अधिकारमें आगये थे। अंग्रेज राजके प्रवेश कर जिस समय सब सामन्तोंके पट्टेके अनुसार उपभोग्य देशका निर्णय और व्यवस्था निर्धारण की उस समय उन उदार नीतियों द्वारा

मेवाडमें वही एक चरसा भूमि नामसे विख्यात है। बडे आश्चर्य्यकी वातहै कि रजवाडेकी सामन्त शासन रीतिके अनुसार नीची श्रेणीके सामरिक भूवृत्तिधारी लोग जितनी भूमि प्राप्त करते आतेहैं, इंग्लेण्डकी शासन शैलीके अनुसार उन श्रेणीके सैनिक ठीक उतनी ही भूमि वृत्तिस्वरूप पातेहैं। रजवाडेमें वह जिस प्रकार चरसा अर्थात् चर्म्म नामसे कही जातीहै, इंग्लेंडमें भी उसी प्रकार हाइड अर्थात् चर्म्म शब्दसे विख्यात है; और दोनोंका ही परिमाण समान है। ग्रेट ब्रूटनके एंग्लोसेक्सन शासनारंभ समयसे ही सम्पूर्ण भूमि हाइड परिमाणमें विभक्त होती थी। राजपूतानेकी एक चरसा भूमिके अर्थसे जिस प्रकार केवल एक हलसे खेंचने योग्य भूमि समझी जातीहै, इंग्लेण्डमें उसी प्रकार उस अर्थमें वह गृहीत होती थी। + इंग्लंण्डके नाइट (Knight) उपाधिधारी एक २ वीरको चार हाइड परिमित भूमि वृत्तिस्वरूप दीजाती थी; - उसका परिमाण वर्त्तमान समयमें प्रायः दश एकडकी बराबर है; × मेवाडमें एक चरसा भूमिका परिणाम पच्चीससे तीस बीघेतक है, अर्थात् सेक्सनके एक हाईडकी समान है।

प्रधान २ पट्टावत् सामन्तोंके अधीनस्थ नीची श्रेणीके पट्टाधारी सरदारोंका स्वत्वाधिकार, शक्ति कैसी है ?, दोनोंके बीचमें विधि व्यवस्था निर्द्धारित है, किस २ कार्य्य पालनमें दोनों भाग लेतेहैं? देवगढ देशके नीची श्रेणीके पट्टाधारी सरदारोंने उक्त देशके सामन्तके विरुद्ध जो व्यवस्था पत्र एक समय उपस्थित किया था, पाठकगण उसके पढनेसे सब विषय भलीभाँति जानकर उस संबन्धमें अपना मन्तव्य निश्चित कर सकेंगे। यह विचित्र बात है कि, देवगढके सामन्तके साथ उनके आधीनके सरदारोंका जिस कारणसे विवाद हुआ था इन्होंके प्रथम श्रेणीके सामन्तोंके साथ उनके अधीनस्थ सरदारोंका उसी प्रकार विवाद उपस्थित होनेसे, सन् १०३७ ईस्वीमें कनराडने जो विधान निर्द्धारित किया, देवगढके नीची श्रेणीके सरदारोंने उसी प्रकारका विधान करनेके लिये मेवाडेश्वरके निकट प्रार्थना करी थी।

सामन्तोंके करकमलसे उक्त प्रकारसे अनेक देशोंको निकाल लिया था। वर्त्तमान शासनमें कोई सामन्त भी वल प्रकाश वा भय दिखानेसे राणाके अधिकृत किसी देश वा ग्रामके स्वत्त्वाधिकार करनेका साहस न करसके। इस समय चारों ओर शान्ति विराजमान है, विद्रोह, आत्मविग्रह, वा विदेशियोंके आक्रमणका भय बिलकुल दूर होजानेसे और शासन विभागमें सच्चरित्र उपयोगी कर्मचारी नियुक्त होनेसे मेवाडकी सामंत मण्डलीका उस प्रकारका अन्याय आचरण द्वार बिलकुल वंद होगयाहै।

भूमियाँ।—मेवाडके इतिहासमें हमने लिखा है कि इस राज्यकी आरंभिक दशामें प्राचीन राणागणके वंशधरलोग भूमियां नामसे विख्यात थे और राज्यके प्रधान २ वडे पदोंपर प्रतिष्ठित होनेसे विशेष सन्मानित होतेथे मुगल सम्राट सुलतान वावरके समय और प्रतिद्वन्दीराणा संघके शासन समयसे पहिले उस प्राचीन राजवंशीय भूमियां संप्रदायकी अवनति हुई, अर्थात् परवर्त्ती राणागणके उत्तराधिकारी लोग सामन्तपद और सर्वत्र बहुत ऊंचा सन्मान पानेसे उनकी सामर्थ्य प्रताप और प्रभुताई सहजमें वढगई। और वह राज्यके सबसे ऊंचे पदपर अभिषिक्त होकर विशेष शक्ति अर्जन करते थे, इस कारण प्राचीन राजवंशधरगण भूमियां उपाधि धारण करके युद्ध सम्बन्धी स्वामीरूपसे रहनेको बाध्य होगये। भूमिके साथ उनका जो अखण्डनीय सम्बन्ध है, "भूमियां" उपाधि ही उसकी बतानेवाली है। मुसलमानोंने जिस जमीदार शब्दका प्रचलन किया. वङ्गदेशमें जिन जमीदारोंकी संख्या असंख्य है उस जमीदार शब्दकी अपेक्षा यह भूमियां शब्द ही अधिक भूस्वत्त्वको प्रकट करताहै। मेवाडके आरम्भिक अधिपतियोंके वंशधर यह भूमियां लोग इस समय मेवाडके अनेक प्रान्तोंमें निवास करतेहैं। कमलमीर. चप्पनके वनमय देश और मण्डलगढके समतल क्षेत्रमें यह भूमियांलोग बहुत कालसे राणाके अधीनमें अतुल वीरत्व विक्रम प्रकाश और विजातीय आक्रमण कारियोंके उत्पीडन अत्याचारमें अपनी सुधामय स्वाधीनता रक्षा करते आते हैं। उक्त प्रदेशोंमें वह भूमियांगण बहुत कालसे कृषि कार्य द्वारा संसार यात्रा निर्वाह करते हैं।

मेवाडके इन आरंभिक राणा वंशधर गण भिन्न २ समय भिन्न २ अधिपतिके वंशमें जन्म ग्रहण करके विभिन्न शाखाओंमें हुए, यह बात उनके कुम्भावत, लूनावत, रणावत आदि साम्प्रदायिक नामोंसे ही प्रगट है। यथा समय परवर्त्ती राणाओंके वंशधरोंकी सन्मानवृद्धि और प्रभुत्व वृद्धिके साथ यह भूमियांगण राज-

कर्नेल टाड यहां पर लिखते हैं कि, " सामन्तोंके अधीनके पट्टाधारी सरदारोंके अधिक परिवारके कारण भूवृत्ति इतने भागोंमें खण्ड २ होगई है कि, वह राज्यके साधारण मंगल और विजातीय आक्रमणके हाथसे राज्य रक्षाके पक्षमें विशेष विध्वंसकारी गिनी जासकती है। एक २ देशमें यह भूस्वत्व इतने अधिक खण्डोंमें विभक्त होता जाताहै। कि वह विभक्त एक २ अंश एक मनुष्यके भी भरण पोषण योग्य नहीं है। इस कारणसे अधिपति भी प्रजाओंके द्वारा इच्छित सहायता नहीं पासकते। सामान्य भूखण्डके अधिपति सामन्तों के अधिकारमें यह घटना जितनी देखी जाती है, प्रधान प्रधान सामन्तोंके अधिकार भुक्त देशोंमें उतनी नहीं देखी जाती। कच्छके झारिजा, काठियावाडके साधारण निवासी और प्रधान २ पश्चिमी राजपूत राज्योंके सीमामें स्थित गुजरातके छोटे २ स्वाधीन देशोंमें यह भूविभाग बहुत अधिक होताहै। इग्लेण्डमें मेंगनाकार्टा अर्थात् जाति संबन्धी प्रधान स्वाधीनता सनद द्वारा * ऐसा भूविभाग जिस प्रकार रहित होगया है, उसी प्रकार राज विधान द्वारा यह भूविभागका विषेला फल निवारण होना अत्यन्त आवश्यक है। "

"राजपूतानेका भूस्वत्व जो बहुतसे भागोंमें खण्ड २ होता जाता है, साधारणतया उसको " भायाद अर्थात् भ्रातृभाव सूचक कहना चाहिये। फ्रांसमें एक समय फिरेज Frer.ige शब्द उस भावसे ही इस श्रेणीमें प्रचलित था। राजपूत युवा होते ही कहते हैं कि "भायादमें" मेरा जितना अंश है वह मुझको समझा-

---

२-विचारकगण जो आज्ञा देंगे वह पुरुष उसके विरुद्ध सम्राटके निकट अभियोग कर सकेंगे।
३-किसी भूमिके अधिकारीकी मृत्यु होनेपर उनके पुत्र, पौत्र अथवा वंशका लोप होनेपर एक पिताके और सगे भ्राता उसके स्वत्वाधिकारी होंगे।—सामन्त अपने आधीनके सरदारोंकी सम्मतिके विना उस भूमिके स्वत्वको विच्छिन्न नहीं करसकेंगे।

रखते थे। विदेशी सामन्तोंमें वेदला और कोठारियाके चौहान और मेवाडके मध्यवर्ती देशोंके प्रमार सामन्तगण प्रथम श्रेणीके सामन्त पदपर प्रतिष्ठित हैं ।

रजवाडेके अधीश्वर यद्यपि अपनी इच्छानुसार किसी सामन्तको पदच्युत करके उसको भूवृत्ति रहित और उसके अधिकृत देशको अपने अधिकारमें कर-लेनेके अधिकारी हैं । किन्तु, किसी प्राचीन प्रबल शक्तिमान सामन्तको उस प्रकार पदच्युत करनेमें उद्यत होनेपर अधिपतिको अनेक विघ्न और विपत्तियें भोगनी होती हैं यद्यपि रजवाडेके राज्योंमें विदेशी सामन्तोंकी संख्या भी सामान्य नहीं है, किंतु स्वजातीय सामन्तलोग ही प्रबल शक्तिवाले हैं, और उन स्वजातीय सामन्त मण्डलीमेंसे एक सामन्त सबके नेता पदपर प्रतिष्ठित होते हैं यदि उनको स्वजातीय नेता प्राप्त न हो तो वह निकट-वर्त्ती समीपी सामन्तको नेता पदमें वरण करलेते हैं । सम्पूर्ण आधीनके सरदार ही उसनेताके आज्ञाधीन रहते हैं। इस कारण किसी नेताको पदच्युत करनेमें उद्यत होनेपर वह आधीनके सब सरदार और उस सम्प्रदायके दूसरे सामन्त इकट्ठे होकर महाविघ्न करते हैं। अतः एक सामन्तको पदच्युत करने पर उस संप्रदायके सब ही विरुद्ध होजाते हैं । यदि कोई सामन्त राणाके विरुद्ध भारी अपराध करे वा सामन्त पदकी अयोग्यता दिखावे तो अधिपति उस संप्रदायके किसी योग्य पुरुषको उस पदपर अभिषिक्त कर देते हैं। सब प्रकारसे योग्य पुरुषको निर्द्धारित करनेके लिये राणाकी समान दूसरे सामन्त और सरदार भी विशेष तीक्ष्ण दृष्टि रखते हैं। यदि राणा किसी सामन्तका पद सर्वथा खाली करके अपने अधिकारमें करलें तो उन सामन्तके अधीनस्थ सरदारगण अपना पूर्वपद अपने हाथमें ही रखकर साक्षात संबंधमें राणाकी आज्ञाके आधीन रहते हैं।

जिस समय मेवाड उन्नतिकी ऊंची सीढीसे गिरकर अवनतिके समुद्रमें डूब गया जिस समय राणाकी शासन शक्ति बिल्कुल क्षीण होगई प्रताप सूर्य्य लुप्त होकर चारों ओर विद्रोह और आत्मविग्रहकी अग्नि प्रज्वलित होगई, उस समय चतुर प्रबल सामन्तोंने बल प्रकाश, भय प्रदर्शन और अन्यान्य अनेक प्रकारके असत उपायोंसे राणाके अधिकारके अनेक देशोंको अपने अधिकारमें कर लिया। दुर्दीन और लुप्त प्रताप राणा तथा उनके मंत्रीके दुर्बुद्धि दोषसे भी अनेक ग्राम इसी प्रकार सामन्तोंके अधिकारमें होगये थे । कर्नेल टाडने मेवाडमें पहुंच कर जिस समय सब सामन्तोंसे पट्टेके अनुसार उपभोग्य देशका हिसाब और व्यवस्था निर्द्धारण की उस समय उन उदार नीतिमार्ग टाडने इ

सामन्तोंके करकमलसे उक्त प्रकारसे अनेक देशोंको निकाल लिया था। वर्त्तमान शासनमें कोई सामन्त भी वल प्रकाश वा भय दिखानेसे राणाके अधिकृत किसी देश वा ग्रामके स्वत्वाधिकार करनेका साहस न करसके। इस समय चारों ओर शान्ति विराजमान है. विद्रोह, आत्मविग्रह, वा विदेशियोंके आक्रमणका भय विलकुल दूर होजानेसे और शासन विभागमें सच्चरित्र उपयोगी कर्मचारी नियुक्त होनेसे मेवाडकी सामंत मण्डलीका इस प्रकारका अन्याय आचरण द्वार विलकुल वंद होगयाहै।

भूमियां।—मेवाडके इतिहासमें हमने लिखा है कि इस राज्यकी आरंभिक दशामें प्राचीन राणागणके वंशधरलोग भूमियां नामसे विख्यात थे और राज्यके प्रधान २ बडे पदोंपर प्रतिष्ठित होनेसे विशेष सन्मानित होतेथे मुगल सम्राट सुलतान वावरके समय और प्रतिद्वन्द्वीराणा संघके शासन समयसे पहिले उस प्राचीन राजवंशीय भूमियां संप्रदायकी अवनति हुई, अर्थात् परवर्त्ती राणागणके उत्तराधिकारी लोग सामन्तपद और सर्वत्र वहुत ऊंचा सन्मान पानेसे उनकी सामर्थ्य प्रताप और प्रभुताई सहजमें वढगई। और वह राज्यके सवसे ऊंचे पदपर अभिषिक्त होकर विशेष शक्ति अर्जन करते थे, इस कारण प्राचीन राजवंशधरगण भूमियां उपाधि धारण करके युद्ध सम्वन्धी स्वामीरूपसे रहनेको वाध्य होगये। भूमिके साथ उनका जो अखण्डनीय सम्वन्ध है, "भूमियां" उपाधि ही उसकी वतानेवाली है। मुसलमानोंने जिस जमीदार शब्दका प्रचलन किया, वङ्गदेशमें जिन जमीदारोंकी संख्या असंख्य है उस जमीदार शब्दकी अपेक्षा यह भूमियां शब्द ही अधिक भूस्वत्वको प्रकट करताहै। मेवाडके आरम्भिक अधिपतियोंके वंशधर यह भूमियां लोग इस समय मेवाडके अनेक प्रान्तोमें निवास करतेहैं। कमलमीर, चप्पनके वनमय देश और मण्डलगढके समतल क्षेत्रमें यह भूमियांलोग वहुत कालसे राणाके अधीनमें अतुल वीरत्व विक्रम प्रकाश और विजातीय आक्रमण कारियोंके उत्पीडन अत्याचारसे अपनी सुधामय स्वाधीनता रक्षा करते आते हैं। उक्त प्रदेशोंमें वह भूमियांगण वहुत कालसे कृषि कार्य द्वारा संसार यात्रा निर्वाह करते हैं।

मेवाडके इस आरंभिक राणा वंशधर गण किस २ समय किस २ अधिपतिके वंशमें जन्म ग्रहण करके विभिन्न शाखाओंमें हुए, यह वात उनके कुम्भावत, लूनावत, रणावत् आदि साम्प्रदायिक नामोंसे ही प्रगट है। यथा समय परवर्त्ती राणाओंके वंशधरोंकी सन्मानहानि और प्रभुत्व वृद्धिके साथ वह भूमियांगण राज-

सिंहासन और दूसरे पुत्रोंको राज्यका एक २ देश देते आते हैं। प्राचीन जातीय प्रथाके सन्मान रक्षा करनेमें उसीके अनुसार अटल रूपसे चलनेके हम दृढ अभिलाषी हैं। विजातीय किसी विषयकी रीतिका अनुकरण करनेमें हम घृणा करते हैं। हमारी जातीय प्रथामें जो शुभ विधान नहीं है, उसहीको हम दूसरी जातिके निकटसे लेनेको आग्रह पूर्वक तैयार हैं, जो है उसको अन्य प्रकारके होनेपर भी, सहसा उसे क्यों छोडदे ? देशकाल और पात्रभेदसे जिस किसी विधिके परिवर्त्तन करनेकी अत्यन्त आवश्यकता हो, उसको अवश्य बदल दे। परन्तु इस परिवर्त्तनमें धर्म्मके ऊपर अवश्य ही लक्ष्य रखना होगा, कारण कि जिस आर्य्यजातिका धर्म्म ही प्राण है, वह धर्म्मके ऊपर पैर रखकर उन्नतिकी ओर नहीं बढ सकती। आज उन पूज्यपाद महर्षियोंके बनाये मार्गपर न चलनेके कारण, अन्य विदेशी लोगोंकी शिक्षा, रीति, नीति, आचार व्यवहारमें लिप्त होनेसे भारत वासियोंकी यह दुर्दशा होरही है। समाज इस समय नष्ट होरहा है, समाजके नेताओंका सर्वथा अभाव है। धर्मसे पराङ्मुख होनेके कारण ही भारतवासियोंकी यह दुर्दशा हुई है, इस कारण उस धर्म्मपर आरूढ होनेसे ही भारतकी उन्नति होसकती है।

हम यह कभी नही कह सकते कि अंग्रेजोंकी समान हमारे देशमें दायभागकी प्रथा चलाई जाय। जिनको अंग्रेज समाजकी दशा विदितहै, वह भलीभाँति जानते हैं कि, अंग्रेजके ज्येष्ठ पुत्र ही पिताकी सम्पूर्ण स्थावर सम्पत्ति और उपाधिके अधिकारी होते हैं। इस कारण वह ज्येष्ठ पुत्र विना परिश्रमके अतुल विपय सम्पत्ति पानेकी आशासे, बाल्यावस्थामें ही विद्या शिक्षामें मन नहीं लगाते और सम्पत्ति मिलने पर भोगविलासमें तत्पर होकर समाजका कुछ भी उपकार नही करते; और न देश और जातिके उपकारमें मन लगाते हैं। सबसे छोटा पुत्र अंग्रेज पिता माताके आदरका धन है; इस कारण अस्थावर सम्पत्तिका अधिक अंश उसको ही मिलता है। यह भी समाजका उपकार नहीं करता। मध्यम तीसरे और चौथे पुत्र ही परिश्रमसे धन संग्रह करके आजीविका चलाते हैं; और समाजका उपकार करते हैं। यह कितने अंधेरकी बात है कि एक पुत्र तो सम्पत्ति लेकर भोग विलास करे, और दूसरा मार्गका भिखारी बने। बडा भाई राजपाट भोगे, और अन्य भ्राता घोर परिश्रम करके परिवारका पालन करें। इस प्रथाको हम कभी अच्छा नही कह सकते। इस कारण हमारे प्राचीन महर्षियोंने सब पुत्रोंको यथोचित भाग मिलनेकी व्यवस्था करी थी।

सभामें गमन और राजकार्य्यमें नियोगकी प्रार्थना अनुचित समझकर ही जीविका निर्वाहके लिये कृपिकार्य्यमें नियुक्त हुए । यद्यपि वह वीर राजपूतजाति राणाके वंशकी होकर भी साधारण कृपिकार्य्य अवलम्बन करनेमें बाध्य हुई थी, तथापि इन्होंने कभी जातिके अवलम्बित वीर व्रतको नहीं छोडा । तलवार, भाला, और धनुष बाण इनके चिर सहचर बने हुए हैं । यद्यपि वह आरावलीके स्थान २ में हल चलाने और पशुपालनेमें आनन्दपूर्वक नियुक्त हैं, किन्तु वह जातीय दर्प, वीरतेज, गौरवगरिमा और वंशमर्य्यादा इनके हृदयमें उसी प्रबल भावसे विराजमान है । भूमियां लोगोंके वर्त्तमान आत्मीय कुटुंब सामन्त जो इस समय शिक्षित,सभ्य और राणाकी संगतिसे अपनेको बहुत ऊंचा मानते हैं, कर्नेल टाड लिखते हैं कि उनकी अपेक्षा उक्त भूमियांगण अधिक बुद्धिमान् शान्त और धीर हैं । भूमियांलोगोंमें बहुतसे लोग प्राचीन समयसे अपनेसे छोटी जातिवाले आरंभिक निवासियोंकी कन्याका पाणिग्रहण करते आते हैं, इस कारण वर्त्तमान राजवंशधरगण इनका उपहास करतेहैं । उपहासका कारण यह है कि उन विवाहोंसे जितनी सन्तानें उत्पन्न हुईहैं, वह परिचय देते समय दादा और नाना दोनों गोष्ठीकी मिलीहुई उपाधियें प्रगट करती हैं ।

उक्त भूमियां लोगोंमें बहुतसे एक २ ग्रामके अधिकारी हैं । वह उसके लिये बहुत साधारण कर देतेहैं । आवश्यकता होनेपर स्थानीय शासनकर्ता उनको स्थानीय सेनारूपसे उल्लेख करतेहैं । उस समय अर्थात् जिस समय वह राणाकी आज्ञानुसार राज्यरक्षा, विग्रह निवारण वा शत्रुओंके विरुद्ध खडे होनेके लिये, सेनारूपसे नियुक्त होतेहैं, उस समय वह केवल भोजनके सिवाय और कुछ नहीं पाते। सामन्त शासन शैलीके अनुसार यही लोग मेवाडकी अधीन प्रजा हैं और मेवाडके

[illegible]

पैंतीसवां अध्याय ३५.

रेकोयाली कर;—दासत्व;—वसी [शी] गोला और दास:—राजपूतप्रधान वा मंत्री ।



रेकोयाली—पूर्वीराजकी सामन्त शासन शैलीके साथ पश्चिमी राजकी सामन्त शासन शैलीकी समानता पहिले अनेक विषयोंमें दिखा चुके हैं, करनेल टाड साहब यहां पर और एक विषयकी समानता लिख गये हैं, पञ्चायती प्रबन्ध शिथिल होने, तथा चारों ओर अशान्ति फैलनेसे, और उस समयके अधीश्वरोंकी शासन शक्तिका ह्रास होनेसे प्रजाके धन और प्राणकी रक्षामें असमर्थ होनेके कारण रजवाडेमें जिस प्रकार रेकोयाली करका प्रचार हुआ यूरोपमें भी इसी कारणसे सालवामेण्टा (Salvamenta) का जन्म हुआ, रेकोयाली शब्दका अर्थ रक्षा करना. और आश्रय देनेके सम्बन्धका है, करनेल टाड लिखते हैं कि राजपूत राज्योंमें इस प्रकारका कर पूर्व कालमें भी कुछ २ प्रचलित था, जिस समय मेवाडमें महाराष्ट्र पठान आदि दस्युदलने संहार मूर्ति धारण करके अत्याचार लूट मार और उपद्रव आरंभ किया था, जिस समय मेवाडकी प्रत्येक प्रजाकी धन प्राणकी रक्षा अत्यन्त दुस्साध्य होगई उस समयमें ही यह रेकोयाली कर शोचनीय रूपसे प्रजाओंका खून चूसता था, धन प्राण और भूमि सम्पत्तिकी रक्षाके लिये ही प्रजा सबल सामन्तोंके आश्रयको ग्रहण करके रक्षाके बदलेमें यह रेकोयाली कर देनेको विवश हुई थी. प्रायः नगदरुपये अथवा रक्षा करनेवाले अधीश्वरकी भूमिको कई मास तक बिना कुछ लिये यह जोत देते थे, इसके सिवाय आश्रय देनेवाले सामन्त इन आश्रित जनोंसे अपनी इच्छानुसार दूसरे स्वार्थ भी पूर्ण करलेते थे विशेष कर सामन्तगण भूमियां लोगोंके निकटसे अनेक उपाधियोंसे उनकी भूमिका अधिकार लेलेनेका विशेष यत्न करते थे, कारण कि सामन्तगण यदि राणाके द्वारा किसी प्रकारसे सामन्त पदसे विच्युत—राज्यसे अन्यत्र छोडनेमें बाध्य होते. तो इस भूमियांस्वत्व संग्रह द्वारा राज्यमें रहके निर्वाह करते थे भूमियांस्वत्व राणा किसी प्रकार भी अपने अधिकारमें नहीं ले सकते । इस कारण चतुर सामन्तगण भूमियांस्वत्व संचयके लिये ही [illegible]

भट्टकवि *कहलातेहैं। महात्मा टसिटसके अनुपम इतिहासग्रन्थसे इसका भली भांतिसे प्रमाण मिलताहै कि इसप्रकारके गाथाकर्त्ता प्राचीन जर्मनवालोंमेंभी थे। टसिटस कहताहै " समर यात्राके समयमें जब वह वीर रसामोदी कवि लोग, अमृत वर्षानेवाली वीणातंत्रीकी मन मोहन ध्वनिमें अपने मृदु, गम्भीर कंठस्वरको मिलाकर समर संगीतको गाया करतेथे तब वास्तवमें वीररसका आगमन होनेके कारण प्रत्येक वीर अपने जीवनकी माया मोहको छोडकर मतवाला होजाताथा."

युद्ध रथ–भारतवर्षके हिन्दूलोग और शाकद्वीपके रहनेवाले संग्रामके समय वह सबही लोग युद्धरथका व्यवहार करतेथे। यही कारणहै जो रथ, इन वीर लोगोंकी चतुरंगिणी सेनाका एक अंगहै। महाराज दशरथजीके समयसे लेकर उस समय-तक कि जब मुसलमानोंने भारतको विजयकिया, जितने युद्ध हिन्दीवीरोंने किये सबहीमें रथका व्यवहार होतारहा। परन्तु जिस दिनसे मुसलमानोंने भारतवर्षके स्वाधीनतारूपी रत्नको छीनलिया, जिसदिनसे हतभाग्य भारत सन्तान उस अन-मोल रत्नको खोकर दासपनकी जंजीरमें बंधे, उसही दिनसे; उसही समयसे;– उनकी चतुरंगिणी सेनाका एक अंग भंग होगया। तबसेही उन्होंनें युद्धरथका व्यवहार छोडदिया। कुरुक्षेत्रके महासमरमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द-कंदनें अपने प्रियमित्र अर्जुनका रथ चलायाथा। वैसेही जब जरक्सिशने ग्रीकसे शैलमंडित मैदानमें अपनी विजयी सेनाको चलायाथा, और दारायुस जिस समय विशाल अरवल्ली क्षेत्रपर अपनी विजय पताका फहराईथी, तब युद्धरथही दोनोंका प्रधान बल गिनागयाथा। ×

परन्तु पहिले कहीबातके बहुत दिन पीछेतक भी भारतके दक्षिण पश्चिम प्रान्तस्थित विशाल स्थानमें युद्धरथका व्यवहार होताथा। जिन जातिवालोंने रथ-

---

*ब्रह्मवैवर्त्त पुराणमें लिखाहै कि शूद्रके औरससे वैश्याके गर्भमें भट्ट जाति उत्पन्न हुई। यथा,– "वैश्यायां शूद्रवीर्येण पुमानेको बभूव ह। स भट्टो वावदूकश्च सर्वेषां स्तुतिपाठकः॥" १० अध्याय। इसी पुराणमें और एक जगह लिखाहै कि क्षत्रीके औरस और ब्राह्मण कन्याके गर्भसे भट्टजाति हुईहै॥ " क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां भट्टोजातोनुवाचकः ॥" इन दोनों भट्टजातियोंमेंसे यहांपर पिछली भट्ट जातिहीका वर्णनहै।

१ चतुरंगिणी सेनामें हाथी घोडे रथ और पैदल होतेहैं यथा "हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्या-च्चतुष्टयम्"

× फारस राजके दारायुके साथ महावीर सिकन्दरके जो संग्राम हुआ था। कहतेहैं कि उ[illegible] उसमें दोनों युद्धरथ सजाकर लायाथा।

का व्यवहार कियाथा. उनमें काठ्ठि. कोमानि. और कोमारी गणही प्रसिद्ध हैं यह जातियें आजतक सौराष्ट्र देशमें वास करके अपने पूर्वपुरुष शक लोगोंके आचार व्यवहारका बराबर विचार करतीहैं। आजभी इनके पहले पाषाणस्तम्भोंमें स्पष्ट २ लिखा है कि उक्त जातियोंके पितृ पुरुषगण रथपर चढेहुए युद्धकरते २ शत्रुओंके हाथसे मारेगयेथे। स्त्रियोंके प्रति व्यवहार—आर्यवीर राजपूतगण अपनी गृहलक्ष्मियोंके साथ जैसा श्रेष्ठ व्यवहार करतेहैं, प्रचीना जर्मनवाले तथा स्केन्ड-नाभवाले और जित् लोगभी अपनी नारियोंके साथ ठीक वैसाही व्यवहार किया-करते थे, इसबातमें इन जातियोंमें जैसा मेल दिखाईदेता है वैसा मेल और किसी विषयमें दिखाई नहीं देता।

टसीटसने लिखाहै कि जर्मनवाले विपत्तिके समय स्त्रीकी सम्मतिको पवित्र देववाणीकी समान जानतेथे, चन्द्रकविने अपने अमृतमय काव्यग्रंथमें राजपूतोंके सम्बन्धमें ऐसाही लिखाहै, कदाचित इसी लिये राजपूत अपनी कुलकामिनि-योंके नामके पीछे देवीशब्द उपनाम की भांति लगादिया करतेहैं, स्त्री राजपूत और जर्मनवालोंके जीवनकी जीवनरूपिणी और हृदयकी अर्द्धभागिनी है, जबतक उनके शरीरमें प्राण रहतेहैं, तबतक यह दुखदायी ध्यानभी कि जो रमणी शत्रु-ओंके द्वारा पकडी जायगी, उसका वे धर्म बिगाड देंगे उनके हृदयको खंडखंड करडालता है वीरराजपूत और जर्मन जिनके पवित्र हृदयमें सदा इनकी प्रीति विराजती है जो हृदय दिनरात उनके मंगलको मनायाकरताहै समय पडनेपर अपने हाथोंसे उन अपनी सुकुमारसन्तानका शिर काटनेमेंभी सोच विचार नहीं करते. परन्तु ऐसा प्रयोजन क्या सदा पडाकरता है नहीं. ऐसा काम वे उस समय करते हैं जब आशाका अन्त होजाता है. जब वे एकदम निराश और निरुपाय होजाते हैं. जब वे यह देखतेहैं कि प्रचण्डवेग वैरीके भीषण आक्रमणसे अब स्वाधीनतारूप लक्ष्मीकी रक्षा नहीं की जा सकती. और जब वे यह जानलेतेहैं कि, हृदयकी अर्द्धभागिनी रमणियोंका सतीत्व सतीत्वरत्न पापी शत्रुके द्वारा लूटा-जा चाहताहै ऐसे संकट और निराशाके समय वे वेतकी राजपूतगण अपने हाथोंसे उनका शिर काटने अथवा जीतेजी उनको आगमें जलानेके लिये औरोंके सहायकता- उपासन करते हैं इस हृदयविदारक दृश्यका पूरा वर्णन आगे ऐसा समय आनेके साथ लिखाजायगा।

करके रेकोयाली स्वरूप अपनी आश्रित प्रजाको सर्वस्व रहित करके, उनका भूमियॉस्वत्व अपना कर लेते थे।

दासत्व। —राणाके निज अधिकारवाले भूखण्डकी विपद युक्त प्रजा कभी २ धन प्राण रक्षाके लिये निकटवर्त्ती सामन्तोंके आश्रयमें रहनेकी प्रार्थना करै तो राणा उसको अस्वीकार नहीं कर सकते। सामन्त मण्डली जिन प्रजाके धन और प्राणोंपर आक्रमण करनेवाले अत्याचारियोंके हाथसे रक्षा करनेका भार लेती, आश्रित प्रजागण नगद रुपयोंके वदले समय २ पर उनका दासत्व करनेमें वाध्य होती। वह प्रजा वर्षके भीतर निर्द्धारित कई मासतक आश्रय दाता सामन्तोंकी आज्ञानुसार उनका कृषिकार्य्य निर्वाह करती थी। यथा समय पर इस रेकोयाली नियमसे मेवाडमें वहुतसे स्वतंत्र दारुण कष्ट आरंभ हुए थे। अन्तमें सन् १८१८ ईसवीमें राणाके साथ सामन्तमण्डलीका जो नवीन सन्धि वंधन हुआ, उससे वह शोचनीय काण्ड सर्वथा दूर होगये।

कर्नेल टाड लिखते हैं कि मेवाडमें जिस समय चारों ओर अशान्ति, विद्रोह अत्याचार और विजातीय आक्रमण प्रबल होते उस समय साधारण प्रजा दल बॉधकर, रक्षा कर्त्ताके मोल लिये दास रूपसे चाहे न हों, पर उसीकी समान पद अपनी इच्छानुसार लेनेको वाध्य होती *जो सामन्त उन उपायहीन क्षीणवल प्रजाओंके ऊपर यह भयानक प्रभुत्व स्थापन करते थे; वह प्रथम भलीभॉतिसे उनके रक्षण कार्य्यमें यथासाध्य श्रम और यत्न करते थे यह अवश्य ही स्वीकार करना होगा।

की वार्षिक आय १००००००) दश लाख रुपये थी। मेवाडके मंडलगढ नामक जिस देशमें उन्होंने राणाके निकटसे भूवृत्ति पाई थी, उस मंडलगढमें ही उनके शत्रुका भी अधिकार था। दोनोंके देश परस्पर संलग्न और कुछ भूमि दोनों देशोंमें मिश्रित होनेके कारण सदा विवाद, भयदर्शन, यहांतक कि युद्ध भी होजाता था। दोनों देशके किसानलोग भी उस विवादमें प्रमत्त होकर परस्पर विनारक्त पात किये शान्त न होतेथे। दिलालनामधारी उक्त भूमियां शाहपुरापतिकी अपेक्षा अल्प शक्तिशाली थे; केवल देशग्राम उनके अधिकारमें होनेसे, वह वार्षिक कुछ अधिक १२०००) बारह सहस्र रुपये अपने धनके पाते थे। किन्तु सम्पूर्ण प्रजाको न्यायानुसार शासित करनेसे दिलाल सबके प्रिय होगये, और उनके स्वजातीय भ्रातागण उनके लिये सब समय तलवार धारण करनेमें तत्पर रहतेथे। एक शिखरके ऊपर दिलालका दुर्ग महल स्थापित और उसमें पश्चिम मुखवर्ती (साहपुराके सन्मुख) ऊंची चोटीवाले महलके ऊपर कई तोपें सज्जित रहती थीं। दुर्गप्रासादके चारोंओर ही गहन वन है, केवल दो तीन दुर्गम मार्गोंमें होकर उस प्रासादमें प्रवेश किया जासकताहै, उस कारण कोई शत्रु सहसा उसमें घुसकर आक्रमण नहीं करसकता था। अतएव शाहपुरा पतिके प्रवल सामर्थ्ययुक्त और रणक्षेत्रमें सहस्र योद्धा उपस्थित करनेमें समर्थ होनेपर भी दिलाल निर्भय वास करता था। दोनोंमें विवादाग्नि समय समय पर भयानक वेगसे प्रज्वलित और कभी २ क्षीण शक्ति भी होजाते थे। राजाके अधिकारके ग्राम दुर्ग बद्ध न होनेसे वा अन्य किसी प्रकारके उपायसे आत्मरक्षामें असमर्थ होनेसे दिलाल सहजमें ही निकृष्ट उपायसे उन ग्रामोंके प्रति अपनी बदलेकी वृत्ति चरितार्थ करलेते थे। दिलाल समय २ पर शाहपुरा राजके अधिकारी ग्रामोंमें घुसकर गौ आदि पशु लूट लेते और धनवान प्रजाओंको बंदी करके अमरगढके भयङ्कर कारागारमें डाल देतेथे। वह बहुत साधन देनेपर छुटकारा पाते थे। इस निरन्तर रहनेवाले विवादमें दोनों पक्षके किसानोंकी यथेष्ट हानि होती थी, कृषिकार्य्य बिलकुल बन्द होगया और शाहपुरके पति उम्मेदके मण्डलगढके समीपी ग्रामोंकी आधी प्रजा प्राण लेकर अन्यत्र भागनेको बाध्य हुई। शाहपुरके राजाकी अपेक्षा उनके शत्रु दिलाल अपने निवासियोंके अधिक सहानुभूतिके पात्र थे. क्यों कि शाहपुराधीश्वर स्वेच्छाचारसे सर्वसाधारणके अत्यन्त अप्रिय होगये थे. और दिलालको पदानत करनेके अभिलाषी होनेसे

बसी।—यद्यपि क्रीत दास रखनेकी प्रथा पश्चिमसे इस समय बिलकुल दूर होगई है। तथा बृटिश शासनमें भारतवर्षसे भी दास व्यवसायने इस समय नूतन उपाधि धारण करलीहै। किन्तु कर्नेल टाड लिखते हैं कि, पूर्वकालमें पश्चिमी राज्य की सामाजिक प्रत्येक अवस्थामें ही जिस प्रकार कृषिदास देखे जातेथे रजवाडेमें पूर्वकालमें उस प्रकारके कोई नहीं थे। स्वाधीन राजपूत और राजालोगोंके अधीन स्थित गोला नामक* उपाधिकारी दासोंमें बसी नामक एक श्रेणी में दासोंका उल्लेख देखाजाता है। यह बसीगण सालिकफ्रांकोंके प्राचीन सारभिनामक दास श्रेणीके प्रायः समान हैं। हालम साहब लिखते हैं कि, सरभिदासों की निजकी सम्पत्ति होनेपर भी वह अपने प्रभुके अधीनमें कृषिकार्य्य और प्रभुके अधिकृत देशमें ही निवास करनेको बाध्य होतेथे। हारावलीकी एक श्रेणीके किसान जो इस समय हाली नामधारी हैं, उनकी दशा भी अब ऐसी ही होगई है। पूर्वकालमें जो खेत उनकी निजकी सम्पत्ति थे, इस समय सामन्तगणोंका उन क्षेत्रोंके ऊपर अधिकार होजानेसे वह हाली लोग × उन सामन्त मण्डलीके दासरूपसे उन प्रभुकी आज्ञानुसार खेत जोतनेमें नियुक्त होते हैं।

हालम लिखते हैं कि, "छोटे २ भूस्वामिगण लूट मार और अत्याचारके समय भूस्वत्वसे वंचित होनेपर अपनी व्यक्तिगत स्वाधीनता भी खो बैठते हैं।" कर्नेल टाड लिखते हैं कि; "हारावली देशके हालीगण इस उक्तिकी सत्यता भलीभांति प्रगट करदेते हैं। विद्रोह विदेशीय आक्रमण आदिके कारणसे पहिले छोटे २ भूस्वामी जनोंके सामन्तोंका आश्रय लेनेपर उनके द्वारा ही बसी दास श्रेणीकी उत्पत्ति हुईहो, ऐसा ही नहीं किन्तु भीतरी अत्याचार उत्पीडन भी उनका मूल है। कोटा राज्यके हालीगण यद्यपि दासस्वरूप हैं, किन्तु वे दास उपाधिको धारण नहीं करते। बसी लोगोंकी दशा उनकी अपेक्षा शोचनीय है। क्योंकि उनकी निजकी किसी प्रकार की धनसम्पत्ति वा भूमि नहीं है। पहिले जिस भूमिमें उनका अधिकार था, इस समय उस भूमिमें ही वह सामन्तोंकी आज्ञानुसार जीविका निर्वाहके लिये कृषिकार्य्य करनेमें बाध्य हैं और

दूसरे भूमियांलोग उनसे महारुष्ट होगये । इस निरन्तर विवादसे प्रजा पुञ्ज भी " बरमादोहाई " * कर देते २ सर्वस्वान्त होगई।

शाहपुराके राजा उम्मेद एक अस्थिर चित्त और कठोरहृदयपुरुष थे । एक समय उन्होंने क्रुद्ध होकर अपने पुत्रकी कमरमें रस्सी बांधी और शाहपुरेके देवालयकी ऊंची चोटीमें बांधकर नीचे लटकादिया, तथा उसीकी माताको बुलाकर वह हृदय भेदी दृश्य दिखाया था! वह सदा घोडेपर अथवा शीघ्रगामी ऊंटपर चढकर अनेक स्थानोंमें अकेले घूमा करते थे। बीचरमें कई दिनतक उनका कुछ समाचार नहीं पाया जाता था। एक दिन राजा उम्मेद इसी प्रकार अकेले भ्रमण करते हुए अपने शत्रु दिलालके अमरगढमें पहुँच गये, और दैव योगसे दिलालकी दृष्टिमें पड गये। दिलालने देखा कि एक ऊँचे पदके सामन्त उनकी दयाके अधीन हैं, उस समय उन्होंने कोई शत्रुताका आचरण नहीं किया, और विनय नम्रभावसे प्रणाम करके उनको अपने दुर्ग प्रासादमें लेगये। बडे आदरसे राजाके पदोचित सन्मानके साथ उनका अतिथि सत्कार करके राजाके स्वास्थ्यकी कामनासे "मनुवार प्याला" × पिया, फिर दोनोंने परमानन्दके साथ भोजन करके परस्परकी शत्रुता सदाके लिये छोड देनेकी प्रतिज्ञा करी थी।

राजा उम्मेद और सामन्त दिलालके मध्यमें इस शत्रुताकी अग्नि बुझजानेके कुछ दिन पीछे दोनों ही उदयपुर राजधानीमें राणाकी सभामें बुलाये गये। राणाके साथ मुलाकात होनेके पीछे राजाने प्रस्ताव किया कि; दोनों एक साथ ही स्वदेशमें जायेंगे। अन्तमें दिलालको अपने घर ले जानेके लिये सादर निमंत्रण दिया। दिलालने उस आमंत्रणको स्वीकार करके अपने वीर अस्सारोही राजपूत सैनिक और आवश्यकीय वस्तु साथ लीं. तथा राजाके साथ शाहपुराको ओर घोडा हांक दिया। राजा उम्मेदने सामन्त दिलालको अपनी राजधानीमें लेजाकर बडा आदर किया और यथेष्ट आत्मीयता दिखाकर दोनोंने एक

दूसरे पक्षमें सामन्तके ऋणजालमें फँसे हुए हैं । अन्यत्र भागनेकी कोई भी आशा नहीं है; क्योंकि उनके ऊपर तीक्ष्ण दृष्टि रखनेके लिये पहरेवाले नियुक्त हैं। किन्तु, इस समय इस वसी श्रेणीकी शोचनीय दशा सब प्रकार दूर होगई है ।

गोला——दास——केवल दुर्भिक्ष ही रजवाडेमें पहिले व्यक्तिगत स्वाधीनता अधिकताके साथ नष्ट करदेता था। एक २ प्रबल दुर्भिक्षके समय सहस्र २ मनुष्य दास रूपसे बाजारमें बेचे जाते थे । लूटमार करनेवाले पिण्डारी और पहाडी दुर्दान्त जातियोंके द्वारा यह दास बेचनेकी प्रथा बहुत कालसे प्रचलित थी । वह लोग निरीह राजपूतोंको पकडकर अन्यत्र बेच आतेथे । फ्रांकोंमें दासगण जिस प्रकार अपनी माताके द्वारा स्वाधीनता पातेथे, रजवाडेमें भी उसी प्रकार गोलालोग माताके गुणके अनुसार स्वाधीनता पातेथे । गोली अर्थात् दासीके पुत्रगण अवश्य २ ही गोला अर्थात् दास बननेमें बाध्य होजाते थे। इस कारण ही राजपूत परिवारोंमें जो अनगिन्त गोला थे, उनकी उपपत्नियोंके गर्भसे उत्पन्न हुई सन्तान आजतक मेवाडमें देखी जातीहैं । पश्चिमी देशके प्राचीन सेक्सन दासोंकी समान वह भी दास चिह्न स्वरूप गलेके बदले वाम हाथमें चांदीका खडुआ पहरते हैं। उनके स्वामी उनके प्रति बहुत सद्व्यवहार करते हैं, और उनमेंसे बहुतसे शिक्षित सैनिकोंमें गिने जाते हैं। * किन्तु पहिले ही लिखचुके हैं कि वह अपनी माताके वंश और गुणके अनुसार ही आदर पातेहैं । राजपूतानी, मुसलमानी वा नीच जातिकी गोली अर्थात् दासियोंके गर्भसे उत्पन्नहुए पुत्र भिन्न २ प्रकारसे अनुग्रह भोग करते हैं। राजपूत सामन्तोंके औरस और दासियोंके गर्भसे जो लोग जन्म लेतेहैं, उनका भी देशमें अनादर नहीं होता. वरन उन सामन्तके अधिकृत देशके सब विश्वस्त पदोंपर ही वह नियुक्त होते थे। कर्नल टाड लिखते हैं कि, "देवगढके मृत सामन्तके प्रपितामह अपने सेनादलके साथ राजपूत औरससे उत्पन्न तीन सौ अश्वारोही गोले सहित उदयपुर राजधानीमें आया करते थे । उन प्रत्येक दासके बायें हाथमें एक २ सुवर्णका खडुआ पडा रहता था। और उनका जीवन सब प्रकारसे उन सामन्तके अधीन था। उक्त सामन्त उस समय अपने अधीनस्थ सरदारोंसे दो सहस्र सैनिक लेकर रणक्षेत्रमें जाते थे।" १

* [illegible] ।

१ [illegible] ।

भोजन किया × दिलालके प्रसन्न करनेके लिये नाचरंग भी खूब हुए। बीती हुई शत्रुता सदाको भूल जानेके लिये शपथ करनेकी इच्छासे दोनों देवमंदिरमें गये। किंतु दोनोंके सीढियोंपर चढते ही अमरगढके सामन्तका शिर कटकर गिरगया!— उनके रक्तसे सम्पूर्ण मंदिर रँग गया। अत्यन्त निष्ठुर कायर आतिथ्य धर्म्म विधानके भङ्गकारी राजा उम्मेद् नीच पुरुषकी समान केवल दिलालका शिर काटकर ही प्रसन्न न हुए वरन उनके शरीरपरसे सब भूषण भी उतार लिये। पापरूप बदलेकी वृत्ति चरितार्थ करनेकी इच्छासे उसने अत्यन्त नीचजातिकी समान सुननेके अयोग्य दुर्वचनोंको कहकर कटे हुए शिरपर लात मारकर अपने नीच हृदयका और भी पूरा प्रमाण दिया। विश्वासघाती उम्मेदद्वारा अपने पिताकी उस शोचनीय मृत्युको सुनकर दिलालके पुत्रने बदला लेनेके लिये अधीर चित्तसे अपनी सेनाको सज्जित किया। फिर पहिलेकी समान अत्याचार, उत्पीडन प्रवल वेगसे वहने लगे। राणा इस समाचारको सुनकर शान्ति स्थापन, दुष्ट दमन और दिलालपुत्रकी हानि पूर्ण करनेके लिये मध्यस्थ हुए। राजा उम्मेदने दिलालके जितने अलंकार, धन और अनुचरोंके घोडेआदि जो कुछ लेलियेथे, राणाने वह सब लौटवा दिये और शाहपुराधीश्वरके पाँच ग्राम मुण्डकाटी अर्थात् दिलालके क्षतिपूरण स्वरूप उनको देकर, शाहपुरा पतिके अधिकारके मण्डलगढके शेष ग्रामोंको राणाने अपने अधिकारमें कर लिया।

आर्य्या और शिवगढके दो सामन्तोंने प्रतिहिंसावृत्ति चरितार्थ करनेके लिये पिशाचमूर्त्ति धारण करके जो संहार नाटक कियाथा, वैसे सैकडों दृष्टान्त यहाँपर दिये जासकते हैं। स्पष्टाक्षरोंमें दोष स्वीकार, क्षमा प्रार्थना और शत्रुपुत्रके साथ अपनी कन्याका विवाह करके भी राजपूत जाति इस आत्मक्लेशकी निवृत्ति करलेती है। परस्पर मित्रभावसे मुलाकात और शत्रुता छोडनेकी प्रतिज्ञा करनेकी अपेक्षा यही उत्तम उपाय है। ✽

पूर्वकालमें जर्म्मन जातियोंके मध्यमें द्यूतक्रीडा प्रचलित होनेसे किस प्रकार विषमय फल उत्पन्न और व्यक्ति गत स्वाधीनता लुप्त होती थी, टासिटस उसका भलीभांति वर्णन कर गयेहैं; जुयेमें परास्त होने पर वह दासरूपसे बाजारमें बेचे जाते थे। उस जर्म्मन जातिकी समान राजपूत जाति भी अत्यन्त द्यूतक्रीडाके आसक्त है, यह बात यथास्थानमें लिखी जा चुकी है। टासिटसने जर्म्मनकी जिस समयकी द्यूतक्रीडाका उल्लेख कियाहै, उसके सैंकडों वर्ष पहिले– यहांतक कि ड्रुइडों देवोपासकोंके द्वारा जर्मनके गहनवन बस्ती पूर्ण होनेके बहुत वर्ष पहिले राजपूत वीरोंमें यह सर्वनाशकारी द्यूतक्रीडाकी रीति प्रचलित थी, भारत-वर्षके इतिहास पुराणोंसे इस बातका पता चलता है। इस द्यूतक्रीडाने भारत वर्षके कितने प्राचीन वंशोंका नाश किया है, इस बातको हिन्दूपाठक भलीभांति जानते हैं महाराज युधिष्ठिर यदि द्यूतक्रीडामें आसक्त न होते, यदि वह पणमें राज्यधन–और अन्तमें प्राणप्यारी कृष्णा तकको न हारदेते तो कभी कुरुक्षेत्रका महासमर न होता, कभी भी उस युद्धाग्निमें करोडों भारत सन्तानकी जीवनाहुति न दीजाती, तथा भारत अनन्त श्मशानमें परिणत–हिंदूजाति अन्तःसारशून्य और उस कारणसे भारतका गौरव रवि अस्ताचल चूडावलम्बी न होता। उस द्यूतक्रीडासे ही भारतके सम्राट् युधिष्ठिरको दासत्व करना पडा था। भारतवर्षके रजवाडोंमें अब भी अनेक हिन्दूजातियें जुआ खेलनेमें उन्मत्त हैं। प्रबल वृटिश शासनने यद्यपि इस विषमयकी प्रथाको बहुत कुछ दूर करदियाहै, किंतु अब भी छिप २ बहुत लोग उस खेलमें आसक्त रहते हैं।

राजपूत सामन्तोंके औरससे उत्पन्न दासीगर्भ संभूत पुत्र जिस प्रकार गोला नामसे विख्यात हैं, राणालोगोंके औरससे उसी प्रकार राजपूतानी दासियोंके गर्भसे जो जन्म लेते हैं, वह भी उसी प्रकार दासकी उपाधि प्राप्त करते आते हैं। यह दासलोग यद्यपि राणागणके द्वारा जीवनयात्रा निर्वाहके लिये भूवृत्ति और धनादि पाते हैं किन्तु उनको सभी पंचायतमें कोई प्रतिष्ठित पद नहीं दियाजाता। यह लोग अपनी इच्छानुसार दास नामसे विख्यात हैं, और गोलालोग वंशानुक्रमिक दास नामसे कहे जाते हैं। गोला केवल गोली अर्थात दासीहीके साथ विवाह करसकते हैं। राणालोगोंके औरससे उत्पन्न जाति दासोंको बहुत सामान्य दशावाले राजपूत भी अपनी कन्या देना नहीं चाहते। यह लोग भाग्य परिवर्तनके साथ अपना और दासत्व छुटाकर व्यक्तिगत स्वाधीनता लिये [illegible] सकते हैं, किन्तु गोलालोग ऐसी स्वाधीनता पाना नहीं चाहते क्योंकि [illegible]

सीमा विवाद लेकर ही सामन्तोंमें सदा विवाद और आत्मकलह उपस्थित होता था। जयसलमेर और बीकानेर इन दोनों राज्योंके सीमान्तवर्त्ती दोनों देशोंके सामन्तोंमें सीमान्त विषयपर कभी २ ऐसा क्लेश उपस्थित होताथा कि, अन्तमें उस कारणसे दोनों राज्यके अधिपति युद्ध करनेको वाध्य हुए थे। प्रतिहिंसा प्रवृत्ति यद्यपि आजतक राजपूत जातिके हृदयमें विराजमान है, किन्तु समयके गुण और कठोर शासनसे सामन्त मण्डली वा साधारण प्रजामें संहार मूर्त्ति धारण करके यथेच्छाचार नहीं होसकता। सीमान्त विषयका विवाद इस समय विलकुल दूर होगया है। इस समय केवल रजवाडेमें ही नहीं वरन भारतके सम्पूर्ण देशी राज्योंमें शान्ति नृत्य कररही है।

राजपूत मंत्री।—रजवाडेकी सामन्त मण्डली अधीश्वरोंकी किस २ आज्ञा पालनमें वाध्य है, और राजसभामें कितने दिनतक रहकर क्या क्या कार्य्य करती है, इन सब बातोंको यथास्थानमें लिखचुके हैं। सामन्तगण जिस समय राजकार्य्यसे सीमान्तमें गमन वा सीमान्त रक्षामें नियुक्त अथवा अधिपतिकी आज्ञानुसार अपने अपने अधिकृत देशमें नहीं रहते, उस समय वह सपरिवार राजधानीमें ही रहनेको वाध्य है। पूर्वे वर्षभर किन्ही सामन्तोंको भी राजधानीमें रहना नहीं पडता; एक २ सम्प्रदायके कई २ पुरुष करके सामन्त अपनी निर्द्धारित संख्यक सेना और अनुचर सहित राजधानीमें स्थिति और राज सभाका कार्य्य निर्वाह करते थे। इस सुन्दर नियमके अनुसार उदयपुर राजसभा सदा ही सामन्तोंसे पूर्ण रहती थी। किन्तु मेवाडमें ऊंची श्रेणीके सामन्त अधिक अनुग्रह और स्वाधीनता भोगते हैं। रजवाडेके अन्यान्य राज्योंके सामन्तोंको जितना शृंखला बद्ध और अधीश्वरकी आज्ञा पालनमें सदा वाध्य देखा जाता है, मेवाडकी ऊंची श्रेणीकी सामंत मंडली उतनी अधीनता शृंखलामें बद्ध नहीं है। मेवाडमें विशेष २ पर्वो-त्सव और राजकीय नवीन अनुष्ठानोंके समय वह प्रधान श्रेणीकी सामन्तमण्डली

सूवृत्ति पानेपर भी अपनी दशाको श्रेष्ठ नहीं बना सकते हैं, अर्थात् जन्म दोषसे राजपूत समाजमें वह किसी उपायसे भी सन्मान संग्रह वा शुद्ध राजपूत रक्त धारियोंके साथ मिश्रित होनेमें सर्वथा असमर्थ हैं। बसी लोगोंको ऐसा कोई जन्मका कलङ्क नहीं है, वह क्रीत दास होनेपर भी अपने चिर अवलम्बित कार्य्य साधन और सामाजिक रीति नीतिके अनुसार आदान प्रदान करसकते हैं। किन्तु वह सामन्तकी अनुमतिके विना स्वाधीनता संग्रह नहीं करसकते।

रजवाडेमें एक दूसरी श्रेणीका दासवंश विराजित था। शत्रुगण विजातीय वा डाकुओंके द्वारा जो लोग पहिले बन्दी होतेथे, जो सामंत वा राजपूत वीर उन बन्दियोंका उद्धार करदेते वह उद्धार पाये हुए बन्दीलोग उसके बदलेमें छुडानेवालोंके दास होजाते थे। यहां तक कि किसी २ समय इसी प्रकार विपत्तिमें पडकर किसी २ विभागके सम्पूर्ण नर नारी धन प्राण धर्म्म सन्मान रक्षाके लिये उद्धार कर्त्ताके दास दासी पदपर इच्छापूर्वक नियुक्त होते थे। कर्नेल टाड लिखगये हैं कि ऐसी घटनाके बहुतसे उदाहरण देखे जाते हैं। बिजली देशके अधिकांशवासी ही वहांके प्रमार जातीय सामन्तोंके वशीस्वरूप हैं। इस समय वह सब उनकी प्रजा हैं, राणा यद्यपि सबके प्रभु हैं। किन्तु उन वशीलोगोंके ऊपर उनका कोई अधिकार नहीं है। कर्नेल टाड लिखते हैं,"बारह वर्ष हुए उस समय वर्त्तमान सामन्तके पूर्वपुरुष इस वशी श्रेणीके साथ मेवाडमें आये थे, राणाने उनका बडा आदर किया, और मेवाडके सीमामें स्थित भूखण्डका बडा देश उन संपूर्ण लोगोंके निवास करनेके लिये दियाथा।"[१]

गोलालोग जिस प्रकार अपने बायें हाथमें दासके चिह्नरूप खड्आ पहरतेहैं, वशी दासोंके मस्तकपर उसी प्रकार एक बालोंका गुच्छा रहताहै। वशी शब्द गोलाशब्दकी समान अत्यन्त अपमानसूचक नहीं है। बसना वा बस्ती शब्दसे ही वशी शब्द बनाहै। वशी शब्दका यथार्थ अर्थ उपनिवेशी वा निवासकारी है। पूर्वकालमें बहुतसे सामन्त अनेक कारणोंसे अपनी पैतृक भूमि छोडकर अपने २ सम्पूर्ण अनुचरोंके साथ भिन्न भिन्न देशोंमें जाकर वास करतेथे, उस भावसे ही

१ इस समय, जिन्होंने वशी लोगोंको लेकर सबसे प्रथम मेवाडमें आकर निवास स्थापन किया उन्होंने इन वशी लोगोंको दुर्दान्त [illegible] के हाथसे उद्धार किया, [illegible] उनकी [illegible] किया. कर्नेल टाड इस [illegible] करतेहैं। (वशी शब्द [illegible] है वशी [illegible] नहीं [illegible] अनुवादक)

सेना सहित राजसभामें आकर राणाकी सेनाके साथ योगदान नहीं करती। कोई राजनैतिक साधारण प्रश्न उपस्थित होनेपर मेवाडके सम्पूर्ण सामन्त पञ्चायत स्वरूप उस प्रश्नकी समालोचना और उस विषयमें मतवाद प्रगट करते हैं। राणा उनका मतवाद विना सुने वैसा धारण कोई राजनैतिक कार्य्य अनुष्ठान नहीं करसकते। उस प्रकारका कोई राजनैतिक प्रश्न उपस्थित होनेपर उस विषयमें मतवाद प्रकाशके लिये अथवा किसी विदेशी राजदूतको सन्मान सहित ग्रहण करनेके लिये प्रथम श्रेणीके सामन्तोंका राजधानीमें उपस्थित होना आवश्यक होनेसे राणा निमंत्रण सूचक पत्रके साथ एक राजकर्मचारीके द्वारा उनको बुलाते हैं। किसी प्रधान २ पर्वोपलक्षमें त्रिपोलियासे तीन वार निर्द्धारित समयपर नगाडा बजाया जाताहै। तीसरी वेरके बाजेका शब्द सुनते ही सामंतगण अपने २ भवनसे निकलकर शीघ्र राणाके साथ संमिलित होतेहैं।

सामन्त लोग जिस समय राजधानीमें स्थिति करते हैं; उस समय प्रत्येकको सप्ताहमें एक २ दिन अपने २ अनुचरों सहित सभागृह और प्रासादकी रक्षामें नियुक्त होना होताहै। उक्त कार्य साधनके लिये सामन्त अपने अनुचरों सहित प्रासादके सन्मुख स्थित आंगनमें प्राप्त होकर वाहर प्रतीक्षा करते हैं। अन्तमें उनके आनेका समाचार सुनकर राणा उनका सन्मानके साथ अभिनन्दन लेतेहैं। इसके अनन्तर अनुचरोंसहित सामन्त वडे "दरीखाने" अर्थात् सभामण्डपमें प्रविष्ट होतेहैं। वहां उनके वैठनेके लिये वडा गलीचा पहिलेहीसे विछादिया जाताहै। भोजनके समय जब राणा उक्त सामन्तको भोज न करनेके लिये बुलातेहैं, तब सामन्त "रसोरा" * अर्थात् भोजनशालामें जाकर राणाके साथ भोजन करतेहैं। उक्त प्रासादके रक्षणका भार लेकर सामन्त रातको उसी कमरेमें शयन करते हैं और दूसरे दिन प्रातःकालमें पहिले दिनकी समान राणाके प्रति सन्मान दिखाकर विदा होतेहैं। यदि किसी समय राणा किसी कारणसे सामन्तोंको बुलावे तो सामन्त शीघ्रही वहां उपस्थित होजातेहैं। सामन्तोंकी पदमर्य्यादाके अनुसार ही रुक्वा अर्थात् वह आह्वानपत्र लिखकर भेजा जाताहै। प्रधान २ सामन्तोंका आह्वानपत्र राणाके गोपनीय पुरुष अपने हाथसे लिखकर राणाके नामकी मोहर अंकित करते हैं

---

* [illegible] हैं। [illegible] | [illegible] अतिरिक्त [illegible] है।

भारतके अनेक प्रान्तोंमें बहुतसे देश वस्ती वशी नामसे पुकारे जाते हैं। टोंक (रामपुरा) राज्यके निकटमें विख्यात वशी नगरका नाम इसी कारणसे उत्पन्न हुआहै। सबसे पहिले सोलङ्की राजने विजातीय आक्रमणसे अपना पैतृक राज्य गुजरात छोडकर उक्त देशमें वस्ती स्थापन करी थी। उनके आधीनकी सब प्रजाने भी इस कारणसे विजातीय शासनमें रहना अनुचित समझ अपनी इच्छानुसार उनके साथ आकर ऊपर कहे स्थानमें निवास करना आरंभ किया। कर्नेल टाड लिखते हैं कि विजलीकी मूल घटना भी कदाचित् इसी प्रकार हुई थी। किन्तु इसके निवासीलोग अवतक वशी नामसे गिने जाते हैं। कृतज्ञ चित्तसे बहुतसे राजपूत यही कहते हैं कि "मैं आपका वशी हूं, आप मुझको दास रूपसे वेच सकते हैं। ×

आत्मकलह।—कर्नेल टाड लिखतेहैं कि, "राजपूत समूहकी जिस समयकी अवस्थाका चित्र यहां अङ्कित होताहै, जिस समय राणाके व्यक्तिगत चरित्रके ऊपर सवही निर्भर होता था, उस समय सबको ही स्वेच्छाचार वृत्तिके पूर्ण करनेकी इच्छा और राजपूत जातिकी दुर्दमनीय बदला लेनेकी इच्छा अवश्य ही प्रवल होगई थी। समयके गुणसे जातिसाधारण अवनतिके साथ आत्मक्लेशने भी इस देशका सर्वनाश साधन कियाहै। इस आत्मक्लेशकी अग्निने भयानक रूपसे प्रज्वलित होकर वीतीहुई अर्द्धशताब्दीके समयमें मेवाडको जैसी शोचनीय दशामें फेंक दियाहै, जो आत्मक्लेश और कुछ समयतक प्रबल रहता तो मेवाडको अनन्त श्मशान और गहन वनमें परिणत करदेता, उस आत्मकलहके कई दृष्टान्त और किस उपायसे आत्मकलहमें उन्मत्त हुए राजपूत लोग बदला लेकर अपना नाम चरितार्थ करलेते थे, इस स्थानमें उस विवरणके पढनेसे समाजकी उस समयकी अवस्था पाठकगण बहुत कुछ जान सकेंगे।

और उसको बंद करके उसके ऊपर राणाकी गुप्त अंगूठी चिह्न भी अंकित करदेते हैं।

कर्नेल टाड लिखगये हैं कि, रजवाडेके सम्पूर्ण राज्योंमें ही सामन्त श्रेणीमें जो सबसे चतुर, वीर, साहसी, बुद्धिमान और षडयंत्रकुशल हैं, वही राजाका चित्त प्रसन्न करके मंत्रीपदपर अधिकार करलेते हैं। अधिराज उन प्रियपात्रके अत्यन्त वशीभूत होकर, उनकी इच्छा, योग्यता और आकांक्षाके अनुसार मंत्रित्व भार उनके हाथमें सौंपते हैं। किन्तु वह राजपूत सामन्त मंत्री दीवानी शासन विभागमें किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकते: एक स्वतंत्र मंत्री उस विभागका सम्पूर्ण कार्य्य सम्पन्न करतेहैं। किन्तु वह दोनों ही एकमत होकर कार्य्य करनेमें विरत नहीं होते। राजपूत मंत्री देशके युद्ध विभागके अमात्य रूपसे गिने जातेहैं। और अधीनकी सामन्त श्रेणीका राजनैतिक शासनभार उनके हाथमें समर्पित होताहै। दीवानी विभागके मंत्री पदपर राजपूत जातिका कोई पुरुष नियुक्त नहीं होसकता। देशभेदसे मंत्रियोंकी उपाधियें भी विभिन्न हैं। उदयपुरमें "भञ्जगड" जोधपुरमें "प्रधान" जयपुरमें (दिल्लीकी सम्राट सभाके अनुसार जयपुर पतिने अपने कर्म्मचारियोंके नाम यावनी भाषामें रक्खे हैं) "मुसाहिब" और कोटेमें "किलदार" तथा "दीवान" नामसे यहलोग विख्यात हैं। वह राजपूत सामरिक मंत्री अपने गुणोंसे अधीश्वरको वशीभूत करके राज्यमें एक सर्वप्रधान शक्तिशाली पुरुष होजाते हैं सर्व साधारण उनकी ही आधीनता स्वीकार करके उन्हीके द्वारा अधिराजाके निकट सब प्रार्थनायें भेजते हैं, क्योंकि उनके अनुरोध करनेसे सफलताकी पूरी संभावना रहतीहै। राजपूत मंत्री राज्यकी सामरिक श्रेणी और नीची श्रेणीके कर्म्मचारियोंके ऊपर पूरी सामर्थ्य रखते हैं।

सौभाग्यवश इस समय धीरे २ ऐसा शुभ समय आता जाताहै कि राजस्थानका परम रमणीक उद्यानस्वरूप मेवाड फिर पहिलेकी समान सुखशान्ति और सौन्दर्य्यसे विभूषित होसकेगा। मेवाड ध्वंस होनेमें कुछ शेष न था। भयानक हिंस्र व्याघ्र और बनैले शूकरोंने राजधानी उदयपुरमें भी आश्रय लियाथा! राजप्रासादके रमणीक कमरोंमें गीदड निर्भय होकर रहने लगेथे, प्रासादके सन्मुखस्थ जिस बडे आंगनमें सामन्तगण अपनी २ सेनासे घिरकर एक समय परम शोभाकी वृद्धि करते थे, वह भूमि भी घास फूँससे भर गई, और "सौराज वंशधर" राणा एक समय उस घासफूँसवाले आंगनके मध्यमें बहुत छोटी पगडंडीसे होकर अपनी ध्वंसावशिष्ट राजधानीमें प्रविष्ट होतेथे।" यह चित्र अत्यन्त हृदयभेदी है, स्वदेश हितैषी मात्रही मेवाडकी उस शोचनीय दशाको स्मरण करके निःसंदेह दुःखी होंगे। कर्नेल टाडकी समान हमने भी इस विस्तृत इतिहासके अनेक स्थानोंमें प्रगट कियाहै कि, आत्मकलह ही राजपूत जातिके पतनका दूसरा प्रधान कारण है। कर्नेल टाडने यहांपर भी हमारी उक्तिको सत्य प्रमाणित कर दिया है।

रजवाडेके प्रत्येक राज्यमें ही बदला लेनेकी प्रवृत्ति अधिक प्रबल है प्रत्येक राजपूत उस बदला लेनेके दासहैं। किसीके किसीका अपमान वा किसी प्रकारकी स्वार्थहानि करनेपर चाहे वह कितनी ही सामान्य क्यों न हो, कोई राजपूत यदि उसका बदला न लेकर चुप होजाय तो सब उसको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जिस देशमें राज नियम व्यक्तिगत अत्याचार और स्वेच्छाचार दमन करनेमें असमर्थ है, उस देशके मनुष्य जिस प्रकार यथेच्छाचरण करनेमें निर्भय प्रवृत्त होतेहैं, राजपूत जातिमें भी हम उसी प्रकार देखते हैं। राजपूत जातिकी बदला लेनेकी वृत्ति यहांतक प्रबल है कि, दो भिन्न वंश वा सम्प्रदायोंमें एक वेर किसी कारणसे विवाद होजानेपर, बहुत पीढीतक परस्पर बदला लेते चले-जातेहैं। जितने दिनतक वह बदला सर्वथा न निबट जाय, उतने दिनतक तलवार म्यानमें रखना कलंक समझते हैं और राजपूत कहते हैं कि, वह कलङ्क कभी छूट नहीं सकता। कर्नेल टाड लिखते हैं कि, "आत्मसन्मान रक्षाके लिये हमारे सेक्सन पूर्वपुरुषसे बहुत शताब्दीके अग्रवर्त्ती हैं।" प्राचीन सेक्सन लोगोंमें यह विधि प्रचलित थी कि यदि कोई किसीके शरीरका कोई अंग नष्ट करता तो उसको हानि पूरण स्वरूप अर्थदण्ड देना होता था। उंगली अंगूठे आदि प्रत्येक अवयवका मूल्य निर्धारित था; किन्तु वीरवर राजपूत जाति इनके

(T[illegible] Anglo-Saxons. Vol. [illegible] P. [illegible])

होसकते हैं. अन्यथा नहीं। दूसरे एक मंत्री सदाके लिये किसी राजाके अधीन नहीं रहसकता। मूलबात यह है कि मंत्रिगण पोलिटिकल एजेंटकी आज्ञामें रहकर जिससे चलसकें, कूट राजनीतिने इस समय वही स्थिर करदियाहै। किन्तु कर्नेल टाडकी उक्तिके अनुसार पूर्वकालमें मंत्रियोंमेंसे किसीकी मृत्यु होनेपर, उनके पुत्र उस पदपर अभिषिक्त होते थे, मेवाडके इतिहासमें पाठकगण इस बातको जानचुकेहैं। भारतवर्षके अन्यान्य राज्योंमें जिस प्रकार मंत्री राजाका जीवन नाश करके अपने शिरके ऊपर मुकुट धारण कर गये हैं, राजवाडेके मंत्रीवर्ग राजाकी समान प्रभुतायुक्त होनेपर भी उस प्रकार सिंहासनपर नहीं बैठसकते थे।

जिस समय मेवाडेश्वर राणाके साथ बृटिश गवर्नमेंटका सबसे प्रथम सन्धि बंधन हुआ, उस समय राणाके दूतोंने अंग्रेज प्रतिनिधिके निकट यह अभिलाषा प्रगट करी, कि, सन्धिपत्रमें एक यह धारा लिखी जाय कि "मेवाडके प्रधान अर्थात् सामरिक मंत्री पदपर सलम्बूरका सामन्त वंश जिस प्रकार सदासे नियुक्त होता आरहा है; वह पद उसी प्रकार उक्त वंशधरोंको ही मिल सकेगा गवर्नमेंट ऐसी प्रतिज्ञा करै" कर्नेल टाडने कहा कि यथार्थमें ही उक्त पद सदासे सलम्बूर सामन्त लोगोंको मिलता चला आता है, और प्राचीन सलम्बूरके सामन्तगण वीरत्व, साहस, क्षमता और योग्यताके बलसे उस पदको पाते चले आते हैं, किंतु यथा समय उस प्रणालीके द्वारा ही मेवाडका सर्वनाश और चारों ओर विद्रोहाग्नि फैली थी।

जिस दूतने यह प्रस्ताव किया था, वह उस समयके सामन्तके पितामह थे। सलम्बूरके सामन्त उस समय छोटे थे, इस कारण वही अपने बडे भाईके पोतेके प्रतिनिधि होकर तीस वर्ष तक मेवाडकी राजनैतिक प्रत्येक घटनामें सम्मिलित और राणाकी सभामें विशेष प्रभुत्व करते थे। उन्होंने अपनी चतुरता, राजनीतिज्ञता और बुद्धिमानीके बलसे राणाको बिलकुल वशीभूत कर लियाथा। कर्नेल टाडने अनुमान कियाथा कि, उक्त प्रधान प्रतिनिधिने मरणपर्यन्त अपनी सामर्थ्य और प्रभुत्व बचानेके लिये प्रधान पदपर स्थिति करनेकी कल्पना करली थी। वह उक्त अप्राप्त व्यवहार (नाबालिग) सलम्बूरके सामन्तको जिस भावसे राजनीति शिक्षादान षड्यंत्र सृष्टिके उपाय निर्देश और प्रभुत्व प्रकाशका मार्ग प्रगट करनेकी शिक्षा देते थे, उससे राणाको अवश्यही उनकी आज्ञामें चलकर अत्यन्त असुविधा भोगना होता। समय परिवर्तनके साथ राणाने इस प्रकार प्रतापशाली सलम्बूर

भारतके अनेक प्रान्तोंमें बहुतसे देश वस्ती वशी नामसे पुकारे जाते हैं । टोंक (रामपुरा) राज्यके निकटमें विख्यात वशी नगरका नाम इसी कारणसे उत्पन्न हुआहै । सबसे पहिले सोलङ्की राजने विजातीय आक्रमणसे अपना पैतृक राज्य गुजरात छोडकर उक्त देशमें वस्ती स्थापन करी थी । उनके आधीनकी सब प्रजाने भी उस कारणसे विजातीय शासनमें रहना अनुचित समझ अपनी इच्छानुसार उनके साथ आकर ऊपर कहे स्थानमें निवास करना आरंभ किया। कर्नेल टाड लिखते हैं कि विजलीकी मूल घटना भी कदाचित् इसी प्रकार हुई थी । किन्तु इसके निवासीलोग अबतक वशी नामसे गिने जाते हैं । कृतज्ञ चित्तसे बहुतसे राजपूत यही कहते हैं कि, "मैं आपका वशी हूं, आप मुझको दास रूपसे बेच सकते हैं । ×

आत्मकलह ।–कर्नेल टाड लिखतेहैं कि, "राजपूत समूहकी जिस समयकी अवस्थाका चित्र यहां अङ्कित होताहै, जिस समय राणाके व्यक्तिगत चरित्रके ऊपर सबही निर्भर होता था, उस समय सबकी ही स्वेच्छाचार वृत्तिके पूर्ण करनेकी इच्छा और राजपूत जातिकी दुर्दमनीय बदला लेनेकी इच्छा अवश्य ही प्रबल होगई थी । समयके गुणसे जातिसाधारण अवनतिके साथ आत्मक्लेशने भी इस देशका सर्वनाश साधन कियाहै । इस आत्मक्लेशकी अग्निने भयानक रूपसे प्रज्वलित होकर बीतीहुई अर्द्धशताब्दीके समयमें मेवाडको ऐसी शोचनीय दशामें फेंक दियाहै, जो आत्मक्लेश और कुछ समयतक प्रबल रहता तो मेवाडको अनन्त श्मशान और गहन वनमें परिणत करदेता, उस आत्मकलहके कई दृष्टान्त और किस उपायसे आत्मकलहमें उन्मत्त हुए राजपूतलोग बदला लेकर अपना नाम चरितार्थ करलेते थे, इस स्थानमें उस विवरणके पढनेसे समाजकी उस समयकी अवस्था पाठकगण बहुत कुछ जान सकेंगे ।

सामन्तके हाथसे छुटकारा पाया। बृटिश गवर्नमेंटके साथ सन्धिबंधनके समयसे ही षड्यंत्र जाल फैलानेवाले सामन्तोंका प्रताप प्रभुत्व बिलकुल दूर होगयाहै।

हिंदूकुलसूर्य्य राणा जिस समय किसी कारणसे राजधानी छोडकर बाहर जाते, उस समय उक्त सलम्बूर सामन्तके हाथमें ही नगर शासन और प्रासाद रक्षणका भार सौंपा जाता था। राणाके वंशधरगण जिस समय तलवार धारण करनेमें समर्थ होते, उस समय केवल यह सलम्बूरके सामन्त ही अस्त्रदीक्षा गुरु पदपर वरण होते थे। अर्थात् सबसे पहिले " खड्गबंधन और नवीन राणाके अभिषेकके समय यह सलम्बूरके सामन्त ही राणाके माथेपर राजटीका लगाते थे। राणाके साथ चलनेके समय वह दाहिनी ओर चलना, युद्धके समय सबसे आगे सेना लेजाना, और किसी विदेशीके राजधानी उदयपुरपर आक्रमण करने पर वह सूर्य्यकुल और उससे लगे हुए दुर्गकी रक्षा करते थे। उस दुर्गमें ही सलम्बूरके सामन्त सपरिवार एक मनोरम महलमें रहते थे। वह महल इस समय विध्वंस प्राय है।

कर्नेल टाडके समय सलम्बूर देशके सामन्त पदपर जो प्रतिष्ठित थे, वह पद्म-सिंह उनके (कर्नेल टाडके) परम प्रियपात्र हुए थे। उनकी माता बडी बुद्धिमती थीं। प्राणान्तके समय तक उन्होंने अपने पुत्रको नेत्रोंके सामने रक्खा। किसी कार्य्यसे राजधानीमें जानेपर सामन्त सदा ही कर्नेल टाडके स्थानमें स्थित उनके ग्रंथोंका निरीक्षण, उनके साथ मृगयामें गमन, और मत्स्य पकडनेमें सम्मिलित होते थे। कर्नेल टाड लिखते हैं कि, वह एक अद्वितीय अश्वारोही थे, अपने पुत्रके कल्याण साधन, और तीक्ष्ण दृष्टि रखनेके लिये उनकी माता बीच २ में कर्नेल टाडको बडे२ पत्र लिखा करती थीं। पद्मसिंहके एक पूर्वपुरुषने राणाके विरुद्ध विद्रोही होकर एक दूसरे पुरुषको राणा पदपर प्रतिष्ठित करनेके लिये विशेष चेष्टा करी थी. मेवाडके इतिहासमें पाठक इस बातको पढचुके हैं। किन्तु राजपूत जातिके हृदयमें स्वदेश हितैषिता इतनी प्रबल है कि, राणा जब अपने राज्यमें शान्ति स्थापनके लिये विदेशियोंकी सहायता लेनेमें उद्यत हुए, तब वह विद्रोही सलम्बूरपति शीघ्रही विद्रोहिता छोड राणाके साथ मिलकर राज कार्यकी रक्षामें नियुक्त होते थे। मेवाडकी चिर प्रचलित रीतिके अनुसार सलम्बूर के ये सामन्तगण " प्रधान " पदपर नियुक्त होतेथे. इस कारण [illegible] [illegible] उनके [illegible] [illegible] करनाये हैं किन्तु [illegible] हैं कि, [illegible]

सौभाग्यवश इस समय धीरे २ ऐसा शुभ समय आता जाताहै कि राजस्थानका परम रमणीक उद्यानस्वरूप मेवाड फिर पहिलेकी समान सुखशान्ति और सौन्दर्य्यसे विभूषित होसकेगा। मेवाड ध्वंस होनेमें कुछ शेष न था। भयानक हिंस्र व्याघ्र और बनैले शूकरोंने राजधानी उदयपुरमें भी आश्रय लियाथा! राजप्रासादके रमणीक कमरोंमें गीदड निर्भय होकर रहने लगेथे, प्रासादके सन्मुखस्थ जिस बडे आंगनमें सामन्तगण अपनी २ सेनासे घिरकर एक समय परम शोभाकी वृद्धि करते थे, वह भूमि भी घास फूँससे भर गई, और "सौराज वंशधर" राणा एक समय उस घासफूँसवाले आंगनके मध्यमें बहुत छोटी पगडंडीसे होकर अपनी ध्वंसावशिष्ट राजधानीमें प्रविष्ट होतेथे।" यह चित्र अत्यन्त हृदयभेदी है, स्वदेश हितैषी मात्रही मेवाडकी उस शोचनीय दशाको स्मरण करके निःसंदेह दुःखी होंगे। कर्नेल टाडकी समान हमने भी इस विस्तृत इतिहासके अनेक स्थानोंमें प्रगट कियाहै कि, आत्मकलह ही राजपूत जातिके पतनका दूसरा प्रधान कारण है। कर्नेल टाडने यहांपर भी हमारी उक्तिको सत्य प्रमाणित कर दिया है।

रजवाडेके प्रत्येक राज्यमें ही बदला लेनेकी प्रवृत्ति अधिक प्रबल है प्रत्येक राजपूत उस बदला लेनेके दासहैं। किसीके किसीका अपमान वा किसी प्रकारकी स्वार्थहानि करनेपर चाहे वह कितनी ही सामान्य क्यों न हो, कोई राजपूत यदि उसका बदला न लेकर चुप होजाय तो सब उसको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जिस देशमें राज नियम व्यक्तिगत अत्याचार और स्वेच्छाचार दमन करनेमें असमर्थ है, उस देशके मनुष्य जिस प्रकार यथेच्छाचरण करनेमें निर्भय प्रवृत्त होतेहैं, राजपूत जातिमें भी हम उसी प्रकार देखते हैं। राजपूत जातिकी बदला लेनेकी वृत्ति यहांतक प्रबल है कि, दो भिन्न वंश वा सम्प्रदायोंमें एक वेर किसी कारणसे विवाद होजानेपर, बहुत पीढीतक परस्पर बदला लेते चलेजातेहैं। जितने दिनतक वह बदला सर्वथा न निबट जाय, उतने दिनतक तलवार म्यानमें रखना कलंक समझते हैं और राजपूत कहते हैं कि, वह कलङ्क कभी छूट नहीं सकता। कर्नेल टाड लिखते हैं कि, "आत्मसन्मान रक्षाके लिये हमारे सेक्सन पूर्वपुरुषगण बहुत शताब्दीके अग्रवर्त्ती हैं।" प्राचीन सेक्सन लोगोंमें यह विधि प्रचलित थी कि, यदि कोई किसीके शरीरका कोई अंग नष्ट करता तो उसको हानि पूरण स्वरूप अर्थदण्ड देना होता था। उंगली अंगूठ आदि प्रत्येक अवयवका मूल्य निर्धारित था। किन्तु वीरवर राजपूत जाति रक्तके

(Turners Anglo-Saxons Vol. [illegible] P. 130)

सलम्बूरके सामन्तगण पहिले २ देश स्वजाति और मेवाडेश्वर राणाके लिये जैसा असीम साहस विषम वीरत्व और प्रवल प्रतापसे युद्ध सागरमें कूदकर जातीय गौरव गरिमा उद्दीप्त करगये हैं, उससे परवर्त्ती समयमें देश और जातिके अवस्था गुणसे कई सामन्तोंके षडयंत्र जाल फैलानेसे, उक्त रीतिका विषमय फल घोषणा करना उचित नहीं है। मेवाड अधः पतनके समयमें चारों ओर जैसे शोचनीय दृश्य दृष्टि गोचर होतेथे उससे सामन्तोंका विपरीत आचरण समयके प्रभावसे ही स्वीकार करना उचितहै।

मेवाडकी समान मारवाड राज्यमें अहोयाके सामन्तके वंशधर उत्तराधिकारी क्रमसे वहाँके "प्रधान" अर्थात् सामरिक मंत्रीका पद और वडा सन्मान पातेथे। मारवाडके प्रति हिंसाप्रिय और दुर्दान्त महाराज मानसिंहके साथ अहोयाके सामन्त कुशलसिंहके वादका विषय पाठकगण इतिहासलेखकके भ्रमण वृत्तान्तमें पढचुकेहैं। वह सामन्त कुशलसिंह राजाके विरुद्धमें जिस समय मरेथे, उस समय वह शपथपूर्वक कहगये थे कि, " अबसे हमारे वंशका कोई पुरुष राजसभामें पूर्वपद अर्थात् " प्रधान " पद न लेवे।" कुशलसिंहके परलोक सिधारनेपर मारवाडके " प्रधान " पदपर आसोपका सामन्त वंश नियुक्त हुआथा। कर्नल टाडके समय आसोपके जो सामन्त जीवित थे, वह मारवाड राजके जीवित पिशाचकी समान राज्यमें हत्याका सोता वढते देखकर राजसभा छोडनेको वाध्य हुए थे। इस कारण निमाज और पोकर्णके दोनों सामन्तोंने एकत्र सम्मिलित होकर कुछ दिनतक राज्यमें प्रधान मंत्रीकी प्रभुता चलाई थी किन्तु अन्तमें निमाजके सामन्त राजाकी विष दृष्टिमें पडकर अपने प्राण वलिदान करनेमें वाध्य हुए थे। निमाजके उन राठौर राजपूतके असीम साहस और वीरत्व विषयको पाठकलोग भलीभाँति जानते हैं।

पोकर्णके उन समयके सामन्तके परदादा देवीसिंह अपने पाँच सौ सैनिक सहित जोधपुरके प्रासादके प्रधान सभाकक्षमें रात्रिके समय सोते थे। देवीसिंह जैसे साहसी और पराक्रमी थे, वैसेही वीर भी थे। वह सदाही घमण्डके साथ कहा करतेथे कि "मारवाडका सिंहासन मेरी इस तलवारके ऊपर है।" उनकी वह उक्ति साफ कहती थी कि उनका अथवा मारवाडराजका जीवन एक दिन शोचनीय रूपसे नष्ट होगा। मारवाडराजने घटना क्रमसे पोकर्णके उक्त सामन्तको अपने आधीन करके तत्काल उनके प्राणदण्डकी आज्ञा दी। उनके सिरके ऊपर तीक्ष्ण तलवार उठने पर भी उन वीर सामन्तने अभूतपूर्व साहसके

लिये रक्तही लेती है। जो राजपूत नरपति वदला लेकर अथवा शत्रु राजाके किसी पुत्र वा प्रधान आत्मीयका शिर काटकर, उस राजाको " मुण्डकाटा" के लिये क्षतिपूरण स्वरूप धन वा देश लेनेमें वाध्य कर सकते हैं, वह राजा ही राजपूत जातिके निकट प्रवल प्रतापयुक्त गिने जाते हैं, अर्थात् शत्रुपक्ष यदि प्राण नाशके कारण वदला लेनेके लिये प्राणनाशक राजाके प्राणनाश करनेमें तत्पर न होकर, केवल दूसरी प्रकारसे हानि भरकर ही प्रसन्न होजाय तो वदलेकी वृत्ति पालनेमें शिक्षित राजपूत जाति उस राजाको महावली कहकर पूजा करनेमें स्वतः ही वाध्य है। *

इतिहासलेखक टाड लिखते हैं कि, केवल एक उपायके द्वारा ही यह विषम आत्मकलह वा प्रतिहिंसा निवारित हो सकती है, किन्तु वह कार्य्य राजपूत जातिमें घृणित समझा जाता है। परस्परमें विवाद आरंभ और उस कारणसे दोनोंके वदला लेनेमें प्रमत्त होनेपर, यदि क्षतिग्रस्त पुरुष क्षमा प्रार्थना करे, अथवा अत्याचारी यदि उसके अधिकारके स्थानमें जाकर क्षमा चाहे; तो परस्परकी शत्रुता दूर होजाती है। क्योंकि ऐसे किसी वदलेके लेनेपर समाजमें अत्यन्त कलङ्कित और अपमानित होता है। ऐसी घटना पहिले प्रायः नहीं घटती थी, अर्थात् राजपूतगण पूर्वकालमें किसी प्रकार ऐसे आत्मक्लेशमें अग्रसर नहीं होते थे। वर्त्तमान निर्जीव और जातीय गुणोंसे हीन राजपूतगण ही अब इस मार्गका अवलम्बन करते हैं।

हम यह ऊपर ही लिख चुकेहैं कि शाहपुराके राजा राणावंशमें उत्पन्न और मेवाडमें एक प्रवल वलशाली पुरुष थे। एक समय उन शाहपुराके उमेदसिंह नामक अधिपतिके साथ अमर गढ़के भूमियां स्वत्वाधिकारी राणावत सामन्तका महा क्लेश उपस्थित हुआ। शाहपुराधीश्वर केवल राणाके दियेहुए भूखण्डके अधीश्वर ही नहीं थे, किन्तु दिल्लीके सम्राटका दियाहुआ एक और देश भी उनके अधिकारमें था। वाणिज्य शुल्कके सिवाय उक्त दोनों देशोंकी उस समय-

सामन्तके हाथसे छुटकारा पाया । बृटिश गवर्नमेंटके साथ सन्धिबंधनके समयसे ही षड्यंत्र जाल फैलानेवाले सामन्तोंका प्रताप प्रभुत्व बिलकुल दूर होगयाहै ।

हिंदूकुलसूर्य्य राणा जिस समय किसी कारणसे राजधानी छोडकर बाहर जाते, उस समय उक्त सलम्बूर सामन्तके हाथमें ही नगर शासन और प्रासाद रक्षणका भार सौंपा जाता था । राणाके वंशधरगण जिस समय तलवार धारण करनेमें समर्थ होते, उस समय केवल यह सलम्बूरके सामन्त ही अस्त्रदीक्षा गुरु पदपर वरण होते थे । अर्थात् सबसे पहिले " खड्गबंधन और नवीन राणाके अभिषेकके समय यह सलम्बूरके सामन्त ही राणाके माथेपर राजटीका लगाते थे । राणाके साथ चलनेके समय वह दाहिनी ओर चलना, युद्धके समय सबसे आगे सेना लेजाना, और किसी विदेशीके राजधानी उदयपुरपर आक्रमण करने पर वह सूर्य्यकुल और उससे लगे हुए दुर्गकी रक्षा करते थे। उस दुर्गमें ही सलम्बूरके सामन्त सपरिवार एक मनोरम महलमें रहते थे। वह महल इस समय विध्वंस प्राय है ।

कर्नेल टाडके समय सलम्बूर देशके सामन्त पदपर जो प्रतिष्ठित थे, वह पद्म-सिंह उनके (कर्नेल टाडके) परम प्रियपात्र हुए थे । उनकी माता बडी बुद्धिमती थीं। प्राणान्तके समय तक उन्होंने अपने पुत्रको नेत्रोंके सामने रक्खा । किसी कार्य्यसे राजधानीमें जानेपर सामन्त सदा ही कर्नेल टाडके स्थानमें स्थिति उनके ग्रंथोंका निरीक्षण, उनके साथ मृगयामें गमन, और मत्स्य पकडनेमें सम्मिलित होते थे । कर्नेल टाड लिखते हैं कि, वह एक अद्वितीय अश्वारोही थे, अपने पुत्रके कल्याण साधन, और तीक्ष्ण दृष्टि रखनेके लिये उनकी माता धीरे २ से कर्नेल टाडको बडे २ पत्र लिखा करती थीं। पद्मसिंहके एक पूर्वपुरुषने राणाके विरुद्ध विद्रोही होकर एक दूसरे पुरुषको राणा पदपर प्रतिष्ठित करनेके लिये विशेष चेष्टा करी थी. मेवाडके इतिहासमें पाठक इस बातको पढचुके हैं। किन्तु राजपूत जातिके हृदयमें स्वदेश हितैषिता इतनी प्रबल है कि, राणा जब आगे राज्यमें शान्ति स्थापनके लिये विदेशियोंकी सहायता लेनेमें उद्यत हुए, तब वह विद्रोही सलम्बूरपति शीघ्रही विद्रोहिता छोड राणाके साथ मिलकर [illegible] कार्यों [illegible] में नियुक्त होते थे। [illegible] चिर प्रचलित रीतिके अनुसार [illegible] और सामन्तगण " प्रधान " पदपर नियुक्त होतेथे. इस कारण [illegible] इस रीतिसे उनके [illegible] करना [illegible] करनाहै [illegible] किन्तु [illegible]

द्यूत जुआ—क्या राजपूत क्या जर्मन क्या सीथीय सभी प्राचीन जातियोंमें द्यूतप्रियताका विवरण पाया जाता है इस अनर्थकारी खेलसे महाअनिष्ट होते देख और सुनकरभी न जाने यहलोग क्यों इसखेलमें मन लगातेथे यह आश्चर्य है।

जर्मनलोग अपना सबकुछ यहांतक कि अपनी स्वाधीनताकीभी बाजी लगाकर इसअनिष्टकारी खेलको खेलते थे यदि हारजाते तो जीतनेवाला उनको दास भावसे बेचदिया करता था। इस सर्वनाशकारी द्यूतविलासितासे मोहित हो एक समय पांडवलोग अपनी समस्त सम्पत्तिको हारकर अन्तमें अपने हृदयको अर्द्ध-भागिनी द्रौपदीको दांवपर लगाबैठे। पाण्डवोंकी उसभयंकर द्यूताशक्तिसे भारत वर्षका जो महाअनिष्ट हुआ है, उसका प्रकाशित चित्र आजतक कुरुक्षेत्रके भयंकर मैदानमें स्पष्टभावसे विराजमान है। उस चिह्नका—आर्यजातिके नष्टकारी प्रकाशमान निदर्शनका—और भारत माताके हृदयमें उस गंभीर अस्त्ररेखाके अंकितहोनेका भयानक वृत्तान्त जानकरभी आर्यवीर राजपूतगण उस अनिष्टकारी खेलको बडे चाओंसे खेलाकरते हैं। कैसा आश्चर्यहै कि यह भयंकर पापाचार उनके पवित्र धर्मग्रंथोंकी निधानपंक्तियोंमें स्थान पाएहुए हैं * उसविधानका अनुसरण करनेके लिये राजपूतलोग प्रतिवर्ष आजतक "दिवाली"× उत्सवपर भगवती लक्ष्मीजीको प्रसन्नकरनेके लिये उस अनर्थकारी खेलको खेलाकरते हैं।

शाकुनिक और सामुद्रिक गणना, पक्षियोंके उडने, शब्दकरने, पंख फटफटाने व और अंगोंके फडकनेसे आर्यलोग अपने शुभाशुभका विचार किया करतेहैं विहंग किस ओरसे किस भावसे उड़ गया, किससमयपर किसप्रकारसे शब्द किया या अपने पंखोंको फैलाया, इन वातोंको जित और जर्मन लोग भली भांतिसे देखकर अपने शुभाशुभका विचार किया करतेहैं। इसके सिवाय देवन और सामुद्रिक जाननेवालेके विचार पर इन समस्त प्राचीन जातियोंका अटल विश्वास है।

मदिरापानमें विकट आसक्तिः—जर्मन और स्कन्दनावीय आसिलोगोंके वीरोंका जितकुलसे उत्पन्न होनेका प्रमाण उनकी सुराप्रियताका विचार करनेसेही प्राप्त होजाता है। हिन्दूवीर राजपूतलोगभी इसविषयमें किसीप्रकारसे

---

* हिन्दूशास्त्र द्यूतक्रीडाका निषेध करता है। "द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैरकरं महत् ॥ तस्माद्द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥ मनु०

× इस उत्सवमें सनातनधर्मावलम्बियोंके घर २ रोशनी हुआकरती है। [illegible] दिवाली कहीपर नहीं होती। जुआ खेलनेका विधान धर्मशास्त्रमें नहीं किन्तु निषेध है [illegible] कि इस दिन कोई [illegible] इतनामात्र करले जिससे अपनी [illegible]

का व्यवहार कियाथा. उनमें कात्ति. कोमानि. और कोमारि गणही प्रसिद्ध हैं यह जातियें आजतक सौराष्ट्र देशमें वास करके अपने पूर्वपुरुष शक लोगोंके आचार व्यवहारका बराबर विचार करतीहैं। आजभी इनके पहले पाषाणस्तम्भोंमें स्पष्ट २ लिखा है कि उक्त जातियोंके पितृ पुरुषगण रथपर चढ़कुए युद्धकरने २ शत्रुओंके हाथसे मारेगयेथे। स्त्रियोंके प्रति व्यवहार—आर्यवीर राजपूतगण अपनी गृहलक्ष्मियोंके साथ जैसा श्रेष्ठ व्यवहार करतेहैं, प्रचीना जर्मनवाले तथा स्केंदनाभवाले और जित् लोगभी अपनी नारियोंके साथ ठीक वैसाही व्यवहार किया करते थे, इसबातमें इन जातियोंमें जैसा मेल दिखाईदेता है वैसा मेल और किसी विषयमें दिखाई नहीं देता।

टसीटसने लिखाहै कि जर्मनवाले विपत्तिके समय स्त्रीकी सम्मतिको पवित्र देववाणीकी समान जानतेथे, चन्दकविने अपने अमृतमय काव्यग्रंथमें राजपूतोंके सम्बन्धमें ऐसाही लिखाहै, कदाचित् इसी लिये राजपूत अपनी कुलकामिनियोंके नामके पीछे देवीशब्द उपनाम की भांति लगादिया करतेहैं. स्त्री राजपूत और जर्मनवालोंके जीवनकी जीवनरूपिणी और हृदयकी अर्द्धभागिनी है. जबतक इनके शरीरमें प्राण रहतेहैं, तबतक यह दुखदायी ध्यानभी कि जो रमणी शत्रुओंके द्वारा पकड़ी जायगी. उसका वे धर्म बिगाड देंगे उनके हृदयको खंडखंड करडालता है वीरराजपूत और जर्मन जिनके पवित्र हृदयमें सदा उनकी प्रीति चि-

सलम्बूरके सामन्तगण पहिले २ देश स्वजाति और मेवाडेश्वर राणाके लिये जैसा असीम साहस विषम वीरत्व और प्रबल प्रतापसे युद्ध सागरमें कूदकर जातीय गौरव गारिमा उद्दीप्त करगये हैं, उससे परवर्त्ती समयमें देश और जातिके अवस्था गुणसे कई सामन्तोंके षडयंत्र जाल फैलानेसे, उक्त रीतिका विषमय फल घोषणा करना उचित नहीं है। मेवाड अधः पतनके समयमें चारों ओर जैसे शोचनीय दृश्य दृष्टि गोचर होतेथे उससे सामन्तोंका विपरीत आचरण समयके प्रभावसे ही स्वीकार करना उचितहै।

मेवाडकी समान मारवाड राज्यमें अहोयाके सामन्तके वंशधर उत्तराधिकारी क्रमसे वहाँके "प्रधान" अर्थात् सामरिक मंत्रीका पद और बडा सन्मान पातेथे। मारवाडके प्रति हिंसाप्रिय और दुर्द्दान्त महाराज मानसिंहके साथ अहोयाके सामन्त कुशलसिंहके वादका विषय पाठकगण इतिहासलेखकके भ्रमण वृत्तान्तमें पढचुकेहैं। वह सामन्त कुशलसिंह राजाके विरुद्धमें जिस समय मरेथे, उस समय वह शपथपूर्वक कहगये थे कि, "अवसे हमारे वंशका कोई पुरुष राजसभामें पूर्वपद अर्थात् "प्रधान" पद न लेवे।" कुशलसिंहके परलोक सिधारनेपर मारवाडके "प्रधान" पदपर आसोपका सामन्त वंश नियुक्त हुआथा। कर्नेल टाडके समय आसोपके जो सामन्त जीवित थे, वह मारवाड राजके जीवित पिशाचकी समान राज्यमें हत्याका सोता वहते देखकर राजसभा छोडनेको वाध्य हुए थे। इस कारण निमाज और पोकर्णके दोनों सामन्तोंने एकत्र सम्मिलित होकर कुछ दिनतक राज्यमें प्रधान मंत्रीकी प्रभुता चलाई थी किन्तु अन्तमें निमाजके सामन्त राजाकी विष दृष्टिमें पडकर अपने प्राण वलिदान करनेमें वाध्य हुए थे। निमाजके उन राठौर राजपूतके असीम साहस और वीरत्व विषयको पाठकलोग भलीभाँति जानते हैं।

पोकर्णके उस समयके सामन्तके परदादा देवसिंह अपने पाँच सौ सैनिक सहित जोधपुरके प्रासादके प्रधान सभाकक्षमें रात्रिके समय सोते थे। देवसिंह जैसे साहसी और पराक्रमी थे, वैसेही वीर भी थे। वह सदाही घमण्डके साथ कहा करतेथे कि "मारवाडका सिंहासन मेरी इस तलवारके ऊपर है।" उनकी वह उक्ति साफ कहती थी कि, उनका अथवा मारवाडराजका जीवन एक दिन शोचनीय रूपसे नष्ट होगा। मारवाडराजने घटना क्रमसे पोकर्णके उक्त सामन्तको अपने आधीन करके तत्काल उनके प्राणदण्डकी आज्ञा दी। उसके शिरके ऊपर तीक्ष्ण तलवार उठने पर भी उस वीर सामन्तने अभूतपूर्व साहसके

अनुगमन स्वीकार करके कैसा अनुष्ठान करतेहैं ? मेवाडके इतिहास और राजा अजितसिंहके समयसे मारवाडके इतिहास पढनेसे हम लोग वह वात भलीभाँति जानसकते हैं। शेष इतिहासमें हम असीम राजभक्तिका निदर्शन देखते हैं। जिन मारवाड राजको उनकी प्रजाने भी नहीं खाया, जो नरपति दुर्दान्त अत्याचारी, नराधम औरंगजेबके कराल गालसे अपनी प्राणरक्षाके लिये जन्मसे व्यवहारको न जानकर एकान्त वास करनेको वाध्य हुए थे, वह केवल अपने नामके मोह-मंत्रसे सामन्त मंडलीको एकतामें बाँधकर जिस दिन तलवार चलानेमें समर्थ हुए, उसी दिन उन्होंने सम्पूर्ण सामन्त और सेनाके साथ अपना पैतृक राज्य अधिकार मुक्त करलिया था। वीस वर्ष तकके मारवाडके उस महोच्च गौरवसूचक इतिहासको सर्वांशमें योग्य लेखककी लेखनी ही लिखसकती है। दुर्भाग्यवश हमने उस युद्धका धारावाहिक सम्पूर्ण वृत्तान्त नहीं पाया, केवल किसी स्थलके किसी २ युद्धका आंशिक विवरण हमको मिला है। उसमें हम राजपूत जातिकी राजभक्ति और स्वदेशहितैपिता भलीभाँति देखतेहैं।" कर्नेल टाड राजपूत जातिके राजभक्ति विपयमें जो कुछ लिखगये हैं उससे अधिक एक वात भी लिखनेकी आवश्यकता नहीं है, पाठकगण इसको अवश्य स्वीकार करेंगे।

साथ अपने सम्प्रदायके राठौरोंसहित सभास्थानमें बैठकर अपनी निर्भयताका पूरा प्रमाण दियाथा। उससमय मारवाडराजने तीव्र स्वरसे प्रश्न किया था कि, "विश्वासघाती ! जिस तलवारके ऊपर मारवाडका भाग्य निर्भर करतेथे, अब वह तलवार कहांहै ?" मृत्यु मुखमें गिरेहुए उस सामन्तने तत्काल उत्तरदिया कि "पोकर्णमें अपने पुत्रके पास उसको रख आयाहूं।" उस गर्वभरे उत्तरसे महाराजने अपनेको महा अपमानित समझकर तत्काल उस सामन्तके शिर काटलेनेकी आज्ञा दी, घातकने सङ्केत पाते ही उस वीरश्रेष्ठका शिर दो टुकडे करदिया ! देवीसिंहके पुत्र सुबलसिंहने पिताकी समान संहारमूर्त्ति धारण करके राजाके विरुद्ध विषम विपद् उपस्थित करदी थी। मारवाडराज विशेष चेष्टा करके भी पोकर्णके अभेद्य दुर्गपर अधिकार नहीं करसकेथे।

कोटा और जयसलमेरके दोनों सामन्तोंकी शक्ति असीम थी। फरासीसी इतिहासलेखक मान्टेस्कू प्राचीन फ्रांसके मंत्री पिपिल लोगोंकी क्षमताके विषयमें जो कुछ वर्णन करगये हैं, यहांपर उसके उद्धृत करनेसे कोटा और जय-सलमेरके मंत्रियोंकी समान ही प्रभुता जँचेगी वह लिखते हैं कि, "पिपिल लोग अपने राजाको मानों बंदी दशामें प्रासादके भीतर ही रखते थे, केवल वर्षमें एक दिन ही बाहर निकालकर प्रजाको दर्शन कराते थे। उस दिन वह मंत्रीवर्ग जो कुछ कहदेते, राजा प्रजाके सन्मुख वही बोलते थे, और किसी विदेशी राजदूतको ग्रहण करनेकी आवश्यकता होनेपर, उन मंत्रियोंके सिखाये वाक्योंसे ही उस दूतके साथ बातचीत करते थे।" *

कर्नेल टाड रजवाडेके जिससमय तकका इतिहास लिखगयेहैं, और जिस समयकी मंत्रियोंकी योग्यता, प्रभुत्व और प्रतापके परम प्रमाणसे जो मन्तव्य प्रगट करगयेहैं, अब वह समय नहीं है समय परिवर्त्तनके साथ २ रजवाडेके राज्योंकी अनेक विषयोंमें अवस्था बदल गईहै। जो कुछ भी हो मंत्री नियुक्त करनेके विषयमें हम केवल इतना ही कह सकतेहैं कि, गवर्न-मेंट यदि अपने स्वार्थके ऊपर अधिक दृष्टि न देकर कर्नेल टाडकी समान देशी राज्योंकी सब प्रकारसे मंगल मूलक राजनीति अवलम्बनके साथ [illegible] मान शिक्षित राजाओंको उनकी इच्छानुसार योग्य पुरुषोंको मंत्री पदपर स्थापन करनेकी सर्वा सामर्थ्य दे तो रजवाडेके विषयोंमें विशेष लाभकी संभावना होसक्ती है।

---

1. [illegible]

राजनीतिज्ञ टाडकी अन्तिम उक्ति, "जो लोग केवल बाहिरी दृश्य देखकर सिद्धान्त गठन करते हैं; वह सहजमें ही अनुमान करसकते हैं कि, दीर्घकालतक विजातीय आक्रमणसे राजपूत जातिके उद्यम प्रतिभा, वीरत्व विक्रम बिलकुल दूर होगये हैं किन्तु यह कल्पना बिलकुल भ्रान्तिपूर्ण है। विजातीय उत्पीडन तथा अत्याचारसे राजपूत चरित्रमें इस समय जितने शोचनीय लक्षण दिखाई देतेहैं, शान्ति विस्तारके साथ २ ही वह सब दूर होजायँगे और स्वदेशकी सुख समृद्धि जितनी ही बढ़ेगी, उतने ही उनके हृदयमें नये २ भाव उत्पन्न होकर प्रत्येक जातिसम्बन्धी आचार व्यवहार तथा सद्गुण पूर्ण मूर्तिसे दिखाई देंगे। राजपूत जाति उस समय कुंकुमवर्णकी पोशाक धारण करके ×[जो लोग निःस्वार्थ भावसे उनके मंगल साधनमें सदा तत्पर हैं उनके लिये] संग्राम स्थलमें निश्चय ही उपस्थित होसकेंगे। इतिहासके ऊपर लक्ष्य रखकर हमको राजनैतिक मार्गका अवलम्बन करना उचितहै। बहुत बडे साम्राज्य शासन और अनगिन्त भिन्न राज्यके साथ सम्बन्धसे जो महाविपत्ति निवारण नहीं होसक्ती, उसके प्रमाण संग्रहके लिये हमको प्राचीन रोमके ऊपर दृष्टि देनेकी आवश्यकता न होगी। भारतवर्षमें बाईसदेशी प्रधानराज्य–जिनमें अधिकांश ब्रटिश साम्राज्यके अधीन हुए हैं, यहांतक कि एक सौ वर्ष पहिले उन सबने राजशासनके परम रमणीय दृश्य दिखाये थे। एक सम्राटको जिस विशाल साम्राज्यका सफलतासे शासन करना अत्यन्त कठिन था उसको कई सौ वर्षतक मुगल शासन करगयेहैं। किन्तु जब उन सम्राटोंने देशीय राजा और राजपूत नरपतियोंके स्वत्त्व पर हस्तक्षेप करके उनके सामाजिक आचार व्यवहार और धर्मके प्रति अत्याचार आरंभ किया, उस समयसे ही सम्पूर्ण देशी राजा और राजपूत भूपालोंने सम्राटकी आधीनता अस्वीकार करके सर्वथा पृथक्भाव अवलम्बन किया. तथा देशीय लोग इसी कारणसे उत्तेजित होकर मुगल अत्याचारियोंके विरुद्ध खडे हुए। उस समय जिस मुगल सम्राट् औरङ्गजेबके नामसे सम्पूर्ण भारत कांपताथा [illegible] उस मुगल सम्राटका नाम विश्वविख्यात सिंहासन एक ब्राह्मणके कल्याणार्थ [illegible] था और महाराष्ट्रके एक किसानके पौत्रने [illegible] लोगोंको [illegible]

छत्तीसवां अध्याय ३६.

पुत्रके गोद लेनेकी रीति;-सामन्त शासन रीतिके विषयमें कर्नेल टाडका मत;-

उपसंहार।

वंशके क्रमानुसार उत्तराधिकारकी रीति जिस प्रकार रजवाडेकी राजपूत जातिके गुण दोष और धर्म अधर्मकार्योंको सदा अटलभावसे रक्षा करती आती है, वही रीति वीर राजपूत जातिकी राजनीति सम्बन्धी स्थिति, और जातिके चरित्रोंकी ज्योंकी त्यों स्थितिमें रखनेकी सहायकहै, यह उत्तराधिकारकी नीति सदा रहनेवाली है, समयका फेर और जातिके चरित्रकी अवस्था बदलनेपर यह रीति उसका विरोध करनेमें समर्थ है, राजपूत जातिमें अटल भावसे यह रीति विराजमान होनेसे समाज सम्बन्धी धर्म सम्बन्धी जाति और राजनीति सम्बन्धी पुरानी शैलीको किसी प्रकारसे नहीं बदलनेदेती, टाड साहब लिखते हैं कि अपने राजाकी समान मेवाडके किसी सामन्तने भी किसी समय प्राण नहीं त्यागे, वह केवल पुनर्जन्म धारणके लिये ही संसारसे अदृश्य हुए थे, यथार्थमें यह बात सत्य है। राजपूतानेके उत्तराधिकारकी रीति जिस प्रकार सनातनसे चली आती है, उससे कोई सामन्तवंश सर्वथा लुप्त नहीं होसक्ता, मेवाडके अधिपति राणाकी समान उनकी आधीनमें रहनेवाली मंडलीके उत्तराधिकारीका अभाव कभी नहीं होता, सन्तान उपाधि और वंशरक्षाके निमित्त ही पुत्रके गोद लेनेकी रीति प्रचलित है. इस कारण राजस्थानके प्रधान २ सामन्त औरस पुत्रके न होनेपर गोद लियेहुए पुत्रसे वंशकी रक्षा करते हैं. कर्नेल टाड लिखते हैं कि "यह पुत्रका गोद लेना चाहे कितना ही दूषणयुक्त समझाजाय और चाहे कोई पंडित सबसे इस रीतिको दुष्ट कहें किन्तु जिस भावसे पुत्र गोद लिया जाता है वह अत्यन्त शुद्धि दीनताका बनानेवाला और शोचनीय

करके रक्खा था'' राजनीतिज्ञ कर्नैल टाडके इन गंभीर उपदेश पूर्ण वचनोंके ऊपर विशेष दृष्टि रखकर बृटिश गवर्नमेंट राजपूतोंके प्रति उदार व्यवहार करै, उपसंहारमें हमारी यही अन्तिम प्रार्थना है। सबको ही स्वीकार करना होगा कि छोटे द्वीप बृटिनके गौरांग जिस प्रबल प्रतापसे भारत शासन करते हैं, वह शासन केवल सेना और नीतिके बलसे नहीं है किन्तु परम करुणामय परमेश्वरके बलसे है। वह अनुग्रह स्मरण करके उदारनीतिद्वारा भारतवासियोंका मंगल साधन करनेमें बृटिश गवर्नमेंट जबतक यत्नवान रहेगी, कर्नैल टाडकी समान हम भी कहते हैं कि उतने दिन तक वह सर्वशक्तिमान अवश्य ही भारतमें बृटिश शासनशक्ति प्रबल रक्खेंगे। इतिहासके ऊपर दृष्टि रखकर भारतके शुभ साधनमें सदा तत्पर रहना ही बृटिश गवर्नमेंटका प्रधान कर्त्तव्य है। उस कर्तव्य पालनमें त्रुटि होने और अत्यन्त संकीर्ण अनुदारनीतिका अवलम्बन करनेपर कैसे फल उत्पन्न होनेकी सम्भावना है, भारतका इतिहास उसको गम्भीर शब्दसे कीर्त्तन कर रहाहै।

[राजस्थानकी सामन्तशासनप्रणाली समाप्त हुई.]

है, केवल युद्ध सम्बन्धवाली जातिकी दुर्दशा और गणाओंकी शक्तिके लोपसे ही यह शोचनीय दृश्य समय २ पर देखे जातेथे।"

जिस समय सन्तानोत्पत्तिकी किसी प्रकार आशा नहीं रहती। प्रायः उस समय ही सामन्तगण अपनी जीवन दशामें पुत्र गोद लेते हैं। सामन्त सबसे पहिले अपनी स्त्रीके साथ एकान्तमें परामर्श और विचार करतेहैं। किसीको पोष्यपुत्र बनाना उचित है स्त्री पुरुष पहिले यह स्थिर करते हैं, फिर सामन्त अपने आधीनके सरदारोंको बुलाकर अपने मनका भाव प्रगट करदेते हैं। जिसको पोष्यपुत्र बनाया जायगा, वह यदि अति निकट आत्मीय और गुणवान् हो तो सरदारगण उसको स्वीकार करके राणाके निकट निवेदन करतेहैं राणा उस बातको ठीक जानकर सरदारोंकी वह इच्छा पूर्ण करते हैं। इस पुत्रके गोदलेनेके समय सामन्तको अनेक विषयोंमें तीक्ष्ण दृष्टि, विशेष विचार और बहुत सी चिन्ताओंमें निमग्न होना होताहै; वह अपनी इच्छानुसार किसी प्यारे बालकको भी पोष्यपुत्र पदपर वरण नहीं करसकते हैं। आधीनके सम्पूर्ण सरदार पहिले परीक्षा करके देखतेहैं कि, मनोनीत शिशु; सामन्तका अति निकट सम्बन्धी, राजपूत सामंतोंके सब गुणोंसे भूषित, प्रतिभाशाली और नेतापदके योग्य है वा नहीं। यदि निकट-का सम्बन्धी न हो तो परिणाममें दूसरे समीपी विवाद खडा करके विद्रोहकी अग्नि प्रज्वलित करदेते हैं। इस कारण वह पहिले सब अंशमें योग्य और आत्मीय पुरुषको ही नियत करतेहैं।

यदि किसी अपुत्रक सामन्तकी पुत्र गोदलेनेसे पहिले ही सहसा मृत्यु होजाय तो प्रचलित विधानके अनुसार उनकी स्त्री निकटके सम्बन्धी और सरदारोंके साथ सम्मिलित होकर पोष्यपुत्रको निर्वाचन करलेती हैं। जबतक पोष्य-पुत्र नाबालिग रहै, तबतक उस सामन्तकी पत्नी प्रतिनिधि रूपसे वह देश शासन करती हैं।

कर्नेल टाड कहते हैं कि, मेवाड़के सोलह प्रधान सामन्तोंमेंसे देवगढ़के एक सामन्त अपुत्रक दशामें परलोक सिधार गये। मृत्युशय्यामें शयन करके उन्होंने अपनी स्त्री और सरदारोंसे अनुरोध करदिया कि, "नाहरसिंहको ही पोष्यपुत्र बनावें।" नाहरसिंह संग्रामगढ़के आधीन सामन्तके पुत्र थे। नाहरसिंहके साथ उक्त सामन्तका ग्यारहवीं पीढ़ीका सम्बन्ध था, [illegible] और [illegible] पीढ़ीके भी [illegible] पुरुष उस समय जीवित थे। [illegible]

परिशिष्ट ।

कर्नेल टाड द्वारा लिखित ।

ताम्रानुशासनपत्र;-सनद;-पट्टा;-दानपत्र;-व्यवस्था पत्र;-राजके आदेशपत्र;-आवेदनपत्र और खोदित लिपियोंका अविकल अनुवाद ।

प्रथम-संख्या १.

मारवाडके निर्वासित सामन्तों × के द्वारा पश्चिमी राज्योंमें स्थित बृटिश गवर्नमेंटके पोलिटिकल एजेंटके निकट प्रेरित पत्रका ज्योंका त्यों अनुवाद ।

यथोचित सम्भाषणके अनन्तर निवेदन यह है कि, हम आपके निकट एक विश्वासी पुरुषको भेजते हैं, वह हमारी दशाके विषयमें आपको सब बातें सूचित करेंगे । सरकार कम्पनी ईष्ट इण्डियाकम्पनी हिन्दुस्थानकी अधिपति है: हमारी दशा इस समय कैसी शोचनीय है. इस बातको आपलोग भली-भाँति जानते हैं । यद्यपि हमारे और हमारे देशका कोई विषय भी आपसे छिपा नहीं है, किंतु अपने विषयका एक विशेष वृत्तान्त आपको सूचित करना अत्यन्त आवश्यक है ।

श्रीमहाराज और हमलोग एकही वंशमें उत्पन्न हैं और सबही राठौर हैं । वे हमारे अधिपति, हम उनके अनुगत दास हैं, किन्तु इस समय वे महा क्रोधमें भरे हुए हैं, और उन्होंने हम अपने स्वदेशके सम्पूर्ण स्वत्व और विषय विभवसे वंचित होगयेहैं । हमारी पिताके अधिकारकी भूमि महाराजने खालिसा अर्थात अपने अधिकारमें करली है, और जितने सामन्त वर्तमान राजनीतिक विप्लवके समयमें दूर रहनेकी इच्छा करते हैं, उनके भाग्यमें भी वैसे ही फल लाभ होरहता है । महाराजने अनेक सामन्तोंको अभयदान और प्राणरक्षा दे,

विराटकाय * तीन सामन्त अपुत्रक दशामें, प्राण छोड देंगे, यह किसीने नहीं विचारा था, यदि सोचते तो उनके अति निकट आत्मीयगण उनके पदपर प्रतिष्ठित होनेके लिये भली प्रकार शिक्षित होजाते। उक्त सामन्तकी मृत्युके समय निकट आत्मीय लोगोंमें जितने पुरुष जीवित थे, वह राजसभामें शिक्षित न होकर दूसरे स्थानोंमें सैनिक रूपसे जीविका अर्जन और कृषिकार्य्यमें समय काटते थे। दो पुरुषोंमेंसे एक राणाकी सेनाके अश्वारोही पदपर यियुक्त थे और दूसरे निष्कर्म रूपसे राणाकी सभामें आते जाते थे। वह दोनों ही देवगढके सामन्त पदके अयोग्य थे। किन्तु कई पुरुषोंके अनुरोधसे राणाने उनमेंसे एकको देवगढके सामन्त पदपर वरण करनेकी इच्छा की।

देवगढके प्रथम श्रेणीके पट्टावत् लोगोंमें वहुतसे पुरुष प्रतिभाशाली, वीर और बुद्धिमान् थे राणाकी सभामें यह षड्यंत्रजाल जिस समय फैलाया जारहा था, उस समय पट्टावत् लोगोंने मृत सामन्तकी इच्छा और आज्ञानुसार नाहरसिंहके शिरपर मृत सामन्तकी पगडी वांध दी, और उनके नामसे उक्त सामन्तका मृत्यु सम्वाद घोषणा करादिया। उस घोषणापत्रमें यह भी लिखा था कि, आशौचके समाप्त होनेपर नाहरसिंह अपने इष्ट मित्रोंके साथ मुलाकात करेंगे। इसके पीछे नाहरसिंहने देवगढके मृत सामन्तके पुत्र रूपसे उनका प्रेतकृत्यादि सव कार्य्य सम्पन्न करादिया।

देवगढके सरदारोंके उक्त आचरण और नाहरसिंहके सामन्त पदपर प्रतिष्ठित होनेके समाचारसे राणा वहुत ही क्रुद्ध हुए संवत् १८४७ (सन् १७९२ ईस्वी) में मेवाडमें जो विद्रोहाग्नि प्रज्वलित हुईथी, मृतदेवगढपति उस समय उस विद्रोहिदलमें सम्मिलित हुए थे। यद्यपि राणाने परिणाममें देवगढपतिका वह विद्रोहिताका अपराध क्षमा करदिया था, किन्तु इस समय उनकी विना अनुमति लिये सरदारोंके नाहरसिंहको सामन्त पदपर वरण करनेसे राणाके हृदयमें वह विद्रोह फिर जाग उठा, उन्होंने महाक्रुद्ध चित्तसे देवगढके साम्प्रदायिक संगावत्का नाम सर्वथा लुप्त कर देनेकी इच्छा कर ली।

प्रतिज्ञापूर्वक आधीन करके, अन्तमें अनेकोंको वञ्चित, निहत और दूसरे सबको कारागारमें डाल दियाहै। मुत्सद्दी और राजकर्म्मचारी पकडे जाकर वन्दी हो रहेहैं, और उनके ऊपर ऐसे २ शोचनीय अत्याचार किये जारहेहैं, जिनका लिखना हमारी लेखनीसे वाहर हैं। महाराज! इस समय ऐसे नृशंसचित्त हुए हैं कि जोधपुरके राजालोगोंमें वैसा किसीको भी नहीं देखाजाता। उनके पूर्व पुरुषगण वहुत शताब्दीतक राज्य शासन करगये हैं;–हमारे पूर्व पुरुषगण उनके मंत्री और उपदेष्टा स्वरूप थे, और राज्यके सब विषयोंके कार्य उसी सम्मिलित सामन्त मण्डलीकी इच्छानुसार सम्पन्न होतेथे। महाराजके पूर्वपुरुषोंके लिये उनकी आज्ञानुसार और उनहींके सामने हमारे पूर्वपुरुष समर क्षेत्रमें मरे थे, और सम्राटगणके * अधीनमें नियुक्त रहकर वही जोधपुरको वर्त्तमान धन मान और गौरवसे पूर्ण कर गयेहैं। मारवाडमें जब जो कुछ घटना हुई है, विपद् और विजातीय आक्रमणमें हमारे पूर्व पुरुष सबसे आगे उपस्थित होकर तथा समय विशेषमें जीवन दान करके मारवाड राज्यकी रक्षा करगये हैं। जिस२ समय नावालिग नरपति मारवाडसिंहासनपर वैठ गये हैं; उस २ समय हमारे पूर्व पुरुषोंके ज्ञान वुद्धि और कर्त्तव्य कार्य्यसे ही मारवाडमें पूरी शान्ति विराजगई है तथा इस प्रकारसे ही नरपतिगण मारवाडके सिंहासनपर एक २ पुरुषसे दूसरे २ पुरुषतक वैठते आते हैं। उन (राणा मानसिंहके) नेत्रोंके सामने हमने राजभक्ति प्रकाशक वहुतसे कार्य्य किये हैं जिस घोर संकट समयमें (सन १८०६ ईसवी) जयपुर राजने सेनासहित जोधपुर घेर लिया उस समय युद्धमें हमने जयपुर राज्यको आक्रमण कियाः हमारा जीवन और भाग्य विपत्तिमें पडगया; किन्तु दयामय भगवानने हमलोगोंको ही विजय दी थी वह सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ही हमारा साक्षी है। इस समय उच्च पदस्थ उदार चित्त कोई पुरुष भी महाराजके निकट नहींहै, इस कारणसे ही यह विरागत घटना उपस्थित है। यदि वह हमको अनुगत करें और हमारे सत्वाधिकार हमको प्रदान करें तभी वह हमारे अधीश्वर और प्रभु हैं;

कुछ राणाने शीघ्रही देवगढ़ देश अपने अधिकारमें करके, एक राजकुमारको यह आज्ञा देकर वहां भेजा कि, देवगढ़के निवासियोंने जो अन्न बोया है, वह सब काटकर ले आओ, क्योंकि स्थानीय सरदारोंने मेरी बिना सम्मति लिये मेरा अपमान करनेके निमित्त अपनी इच्छानुसार एक पुरुषको सामन्त पदपर स्थापित कर लिया है। देवगढ़के सरदारोंने राणाकी आज्ञा सुनकर विशेष चतुराईके साथ उत्तर दिया कि, "हमने केवल गोकुलदासका एक पुत्र निर्वाचन कर दिया है देवगढ़का उत्तराधिकारी निर्वाचन नहीं किया है, वह निर्धारणकी सामर्थ्य केवल राणाको ही है, हमारा दृढ़ विश्वास है कि, राणा देवगढ़के सहस्रों राजपूतोंके नेता पदपर किसी योग्य पुरुषको ही निर्वाचित करेंगे। सरदार लोगोंने उक्त निवेदनके साथ नाहरसिंहके गुणग्राम प्रकाश और उनको ही सामन्त पददेनेका भी अनुरोध कर दिया था। देवगढ़के कविवर उस समय राणाके चिकित्सकरूपसे राजधानीमें नियुक्त थे। * उन्होंने सरदारोंके द्वारा अनुरोध अपनी विज्ञता और चतुराईके द्वारा राणाको प्रसन्न करके, उनकी क्रोधाग्नि बिलकुल शान्त कर दी। अन्तमें राणाके नाहरसिंहको अभिषिक्त करनेमें सम्मत होनेपर, युवक नाहरसिंह राजधानीमें आये। उसी समय नाहरसिंह मेवाड़के सबसे अधिक समृद्धिशाली और विक्रमी राजपूतोंकी वासभूमि देवगढ़ मदारियाके सामन्त पदपर वरण किये गये। देवगढ़का प्राचीन नाम मदारिया है। नाहरसिंह जिस संग्रामगढ़के उत्तराधिकारी थे, वह संग्रामगढ़ [illegible] सन्तानोंसे विच्छिन्न होगया, और अन्तमें किसी उपद्रवी राजाके अधिकारमें होगया।

कर्नेल टाड राजवाड़ेकी सामन्त शासन प्रणालीके विषयमें ऐसे वर्णन लिखते हैं कि, "राजपूत जातिके मध्यमें सामन्त शासन प्राचीन [illegible] स्थान पाया था, और इस कारणसे ही राजपूत राज्य अवनतिके [illegible] और राजपूत जातिकी दशा शोचनीय होनेपर भी इस रीतिके [illegible] दिखाई देते हैं। किन्तु वर्तमान समयमें विदेश [illegible]

[illegible]

अन्यथा वह हमारे भ्राता ज्ञाति और देशोंके अधिकारी है और वही अधिकार पानके लिये हम प्रार्थना करते हैं । वह हम लोगोंको हमारे भूमिस्वत्वसे बिल्कुल वञ्चित करना चाहते हैं किन्तु हमलोग क्या वह सत्व सहजमें ही छोड सकते हैं अंग्रेजलोग सब हिंदुस्तानके स्वामीहैं।......सामन्तने अपने प्रतिनिधिको अजमेर भेजा था । उनसे दिल्ली जानेके लिये कहा गया । उस उपदेशके अनुसार ...... ठाकुर दिल्ली गये, किन्तु उनको कुछ आज्ञा नहीं दी यदि अंग्रेज अधीश्वर हमारी प्रार्थना न सुनेंगे, तो फिर कौन सुनेगा ? अंग्रेज कभी एकका स्वत्व दूसरेको अन्यायरूपसे अधिकार नहीं कर देते मारवाड हमारी जन्मभूमि है इस कारण हम लोग मारवाडसे अवश्य ही अन्नजल ग्रहण करेंगे। हजारों राठौर शोचनीय दशामें पडे हैं वह कहां जायें केवल अंग्रेज जातिके प्रति असण्डनीय सन्मानके कारण ही हमलोग इतने दिनोंतक मौन रहेहैं । हमारा अभिप्राय क्याहै, वह पहिले विदित न करनेसे आप पीछे हमको अपराधी बना सकतेहैं, इस कारण ही इस समय आपको सब बातें विदित करके आपके निकट हम निर्दोषी होतेहैं । मारवाडसे हम जो कुछ धन रत्न लायेथे और यहां ऋण लेकर जो कुछ संग्रह किया था, वह सबही समाप्त होगयाहै । इस समय अन्नाभावसे जब हम नष्ट हुआ चाहते हैं, तो उस अन्नके लिये हमारी जो इच्छाहै उसीके करनेमें उद्यत हैं ।

अनुष्ठान करनेपर, निश्चय ही इन संपूर्ण चिह्नोंके सब प्रकार विलुप्त होजानेकी संभावना है। हम लोग यदि राजपूत राज्योंकी भीतरी शासन प्रणालीमें हाथ डालैं तो राजपूत राजगण अपने आधीनके सामन्तों और सरदारोंके साथ जिस सम्बन्ध शृंखलामें बँधे हैं, हम उस शृंखलाके तोडनेमें कारण होंगे, और उससे राजपूत राज्योंमें सनातनसे प्रचलित शासन रीतिका समूलोच्छेदन करके उसके बदलेमें किसी दूसरी रीतिके चलानेमें समर्थ न होसकेंगे। दूसरे विचारमें राजपूत जाति सामन्त शासन प्रणालीके सिवाय और किसी प्रकारकी शासन रीतिमें अभ्यस्त नहीं है। हम लोगोंके साथ राजपूत राजगण मित्रतामें बँधनेसे उनको बाहिरी शत्रुओंका भय बिलकुल दूर होगयाहै और यथासमयपर वह दूसरे शत्रुओंसे भी छुटकारा पासकेंगे। राजपूत राजोंका प्रताप प्रभुत्व फिर जितना विस्तृत और सामन्त तथा प्रजाके ऊपर आधिपत्य जितना ही प्रबल होगा, उतनी ही प्राचीन राजसम्बन्धी रीति नीति फिर प्रतिष्ठित और नजराना, खड्गबन्धी तथा शुल्क प्रदान आदि जो इस समय पुरानी प्रथा कहकर प्रचलित हैं यथा समय वह यथार्थरूपमें प्रचलित होसकेंगी। राजगणकी शक्ति प्रभुत्व फिर विस्तृत और प्राचीन राजनैतिक प्रबन्ध फिर प्रचलन करनेकी सहायता करना प्रत्येक उदार नीतिक पुरुष और वृटिश गवर्नमेंटका अभिप्रायहै। किन्तु हम जिन विषयोंमें बिलकुल अनभिज्ञ हैं, उन सब विषयोंमें हस्तक्षेपके बदले निरपेक्षभावसे स्थिति करनेपर वह उद्देश बहुत सहजमें उत्तमरूपसे सिद्ध होंगे यही मेरा विश्वास है।"*

दूसरी संख्या २.

देवगढके सामन्त गोकुलदासके विरुद्ध उनके अधीनस्थ सरदारोंका अनुयोग ।

१ म । बहुत प्राचीन कालसे प्रचलित विधिव्यवस्था और राजनीतिके प्रति वह (सामन्त) सन्मान नहीं दिखाते ।

२ य । प्रत्येक राजपूतकी ही एक २ चरसा परिमित भूमि है किन्तु उन्होंने वह भूमि अपने अधिकारमें करली है ।

३ य । जो पुरुष उनको रिश्वत देसकताहै, वही उनके निकट सच्चरित्र गिना जाताहै, और जो लोग उसके देनेमें असमर्थ हैं वह चोर और घृणित समझे जाते हैं ।

४ र्थ । उनके अधीनस्थ पट्टाधारियोंने जो १० । १२ ग्राम स्थापन कियेथे, वह उन्होंने अपने अधिकारमें कर लियेहैं, और उक्त पट्टाधारी अन्नाभाव और स्थानके अभावसे महा कष्ट पाते हैं ।

५ म । सनातनसे देवालयमें शरणागतको अभय देकर आश्रय दान, और उसके ऊपर किसी प्रकारका दण्ड वा अत्याचार न करने की प्रथा प्रचलित है, किन्तु उन्होंने वह प्रथा बिलकुल उठा दी है ।

६ ष्ठ । किसी विशेष विपदमें गिरकर अथवा अपना स्वार्थ साधनेके लिये, वह अपनी प्रजाके निकट शपथपूर्वक प्रतिज्ञामें बंधते हैं, किन्तु उसके पीछे उनका सर्वस्व लूट लेतेहैं ।

७ म । पूर्वकालमें ऐसी रीति प्रचलित थी कि, किसी समय सामन्तके (देवगढ़के) अधीनस्थ सर्दार वा आत्मीयलोगोंके सामन्त सभामें उपस्थित होनेकी आवश्यकता होनेपर पत्रद्वारा उनको बुलाया जाता था, किन्तु वह उसके बदलेमें इस समय चर्व दण्डके द्वारा बुलवाते हैं । इसके द्वारा सबकी ही पद मर्य्यादा नष्ट करी जातीहै ।

८ म । उक्त पत्रवाहक नेगमें एक रुपया पाता था, इस समय दो रुपये लिये जातेहैं ।

९ म । पहिले देवगढ़के सामन्तके सर्दारों देशमें किसी व्यक्तिके द्वारा अपमान वा सर्व्वनाश होनेपर सामन्त उसकी क्षति पूर्ण करतेथे, किन्तु इस

कर्नेल टाड साहब जिस समय राजपूतानेके पोलेटिकल एजेण्ट पदपर स्थित थे, उस समय बृटिश जाति जिस प्रणाली और नीतिसे भारतका शासन करती थी, उस समय राजनीतिज्ञ टाड साहबकी नीति बहुत कुछ काममें लाई जाती थी किन्तु उनके जानेके साथ साथ ही बृटिश नीतिने भिन्न मूर्ति धारण की, जिससे राजपूत राज, राजपूत नरपति, राजपूत सामन्त, राजपूत सरदार, राजपूत प्रजाकी दशाका ही परिवर्तन होगया, यद्यपि गवर्नमेण्टने इस समय देशी राजाओंकी भीतरी नीतिमें सर्वथा हस्तक्षेप नहीं किया है, किन्तु मूलतत्त्वके जाननेवालोंको इतना अवश्य ही कहना पडैगा, कि इस समय राजा महाराजाओंको रेजिडेण्ट वा पोलीटिकल एजेण्ट लोगोंकी आज्ञाके आधीन ही सर्वथा रहना पडताहै, जिस प्रकार मुगल शासनके समयमें राजा महाराजा अपने २ राज्यमें स्वाधीनताके साथ प्राचीन रीति नीतिका पालन तथा सामाजिक विधानके अनुसार अपने कार्य करनेमें समर्थ थे यदि सत्यताका सन्मान रखनेके लिये इस समय उस बातकी तुलना कीजाय तो यह स्वीकार करना होगा कि इस समय उस प्रकारकी पूर्ण स्वाधीनता संभोग वा उस प्रकार शक्तिका व्यवहार अब नहीं करसक्ते साथमें यह भी मानना पडताहै कि राज्योंमें अब वैसा प्रताप भी नहीं है । कर्नेल टाडका उपदेश अब सब प्रकारसे ग्रहण नहीं होता, उन्होंने कहाहै कि देशी राजा जितने शक्तिसम्पन्न सामर्थ्यवान् प्रभुता युक्त होंगे जितनेही वे राजा धनधान्य सैन्यबल सम्पन्न होंगे उतना ही बृटिश गवर्नमेण्टके शासनमें मंगल होगा इस कारण देशी राजाओंको वैसी स्वाधीनता समर्पणमें मंगल है परन्तु इस समयकी नीतिसे यह देखा जाताहै कि देशी राज्य दुर्बल निस्तेज और शक्तिहीन होते जातेहैं, और जहांतक देखा जाताहै वीरत्व प्रताप प्रभुता प्रायः लोप सी होती जाती है, हमारा इसमें यह कहना है कि जो लोग राजपूत जातिके चरित्र प्रतिज्ञा और व्यवहारोंको भलीभांतिसे जानतेहैं वे लोग इसी बातका समर्थन करेंगे कि देशीराज्योंकेबलकी जितनी २ वृद्धि होती जायगी उतना ही बृटिश राज्यका प्रताप बढकर भारतका मंगल होगा ।

समय किसी व्यक्तिके इस प्रकार आक्रान्त वा धन नष्ट होनेपर यथास्थानमें हानि पूर्तिके लिये प्रार्थना करनेपर कोई फल नहीं दीखता, क्योंकि डॉकू लोग लूटे हुए द्रव्यका चतुर्थांश फौजदारको * देतेहैं। मीरा अर्थात् पहाडीलोग इस समय बिलकुल स्वाधीन होगये हैं, पहिले कभी कोई हत्या नहीं करतेथे किन्तु इस समय वह जिस प्रकार हमारे आत्मीय लोगोंका सर्वस्व लूटते हैं उसी प्रकार हत्या भी करते हैं। इस डकैती और नर हत्या निवारणका कोई उपाय नहीं दीखता, यहांतक कि डॉकूलोग देवगढनगरमें लूटका माल बेचते हैं।

१०म। केवल अर्थ दण्ड करनेकी इच्छासे वह निरपराधियोंका अधिकार किया भूमिस्वत्त्व अपने अधिकारमें कर लेतेहैं और अर्थ दण्ड दिये जानेपर वह खेतोंका सब अन्न अपने घोडोंके लिये कटवा मँगाते हैं।

११ श। अधीनस्थ सरदारोंके खेतोंमेंसे सब किसानोंको बलात्कारसे पकड कर अर्थदण्ड करते हैं और उनके गौ आदि पशु और हल बेचकर धन वसूल करलेते हैं। इस कारण खेतीका काम बिलकुल बंद होगयाहै और निवासी लोग देश छोडकर अन्यत्र भाग रहेहैं।

१२ श। देवगढ नगरके विचारपतिगण × उनके प्रबल अत्याचारके कारण रायपुरमें भागनेको विवश हुए हैं। वह उनको पकडवाकर उनसे भी धनदण्ड लेनेके लिये तीक्ष्ण दृष्टि रक्खे हुए हैं।

१३ श। बलपूर्वक अकारण अर्थ संग्रहके लिये वह आधीनके सरदारोंको अपने पास बुलाते हैं। यदि वह किसी उपायसे भाग जाय तो उनकी स्त्री और कन्याओंको कारागारमें डाल देतेहैं। इस घोरतर अपमानसे अनेक स्त्रियोंने कूएमें गिरकर आत्मघात कियाहै।

१४ श। यदि कोई पुरुष किसीका ऋणी हो तो वह मध्यस्थ बनकर उसके ऋण चुकता देनेमें प्रवृत्त होते हैं। और उन ऋणीकी स्थावर जंगम सब सम्पत्ति निकालकर आधा धन आप लेलेते हैं।

में समर्थ हों तो हमारे भयका विषय कुछ भी नहीं है, राजपूत जातिके इतिहासके ऊपर गहरी दृष्टि डालनेसे यह भलीभाँति सिद्ध होजाता है कि राजपूत जातिमें एकता नहीं है यहां तक कि जन्मभूमिकी रक्षाके निमित्त भी यह कभी एक न हुए, एक जातिके कविने अपनी कवितामें यदि दूसरी जातिपर आक्षेप युक्त शब्द लिख दिये तो इसपर दूसरे पक्षमें विद्वेषकी अग्नि प्रबल हो उठती थी, इसी प्रकार महाराष्ट्रियोंमें भी सम्पूर्ण महाराष्ट्रदलके नेता पदपर कभी एक पुरुषको प्रतिष्ठित होते हुए नहीं देखा, दूसरे प्रत्येक राजपूत राजा केवल अपने ही राज्यमें शक्ति प्रकाशित करनेको समर्थ हैं इस कारण इस अनेकताकी दशामें स्वतंत्र रूपसे यह प्रत्येक कभी हमारे लिये भयका कारण नहीं होसके यह कहना बाहुल्यमात्र है।

राजनीतिके ज्ञाता टाड साहब फिर लिखते हैं कि "प्रतिवासी राज्योंमें यदि सामन्त शासनकी रीति चलती रहे तो वह राज्य कभी अनिष्ट साधनमें समर्थ नहीं होसक्ते जिस देशमें ऐसी शासन रीति प्रचलित है देखा गयाहै कि वह देश अपनी रक्षामें सर्वथा ही असमर्थ निकले। दूसरे वे देश परराज्योंके आक्रमणमें भी सदा अयोग्य रहे, राजपूत राजाओंके साथ हमारी सब प्रकारसे निष्कपट मित्रता स्थापन और दोनोंके कल्याण साधन तथा दोनोंका निज २ स्वार्थपूर्णमें यत्नवान होना उचित है. वह कार्य ठीक है जिसने देशी राजोंका विराग उत्पन्न न हो, उनसे अनुचित कर लेने तथा उनके विरुद्ध चर आदिके नियुक्त करनेमें विरत होना ही उचित है, किसी प्रकारका उनको संकट न हो ऐसा उपाय किया जाय अथवा उनके साथ इस भावसे सन्धि स्थापन करीजाय, जिससे दोनोंमें अकृत्रिम मित्रता उत्पन्न हो, वाणिज्य स्वाधीनता रहे, और परस्पर शत्रु मित्रता मित्रकी पहिचान कर सकें। इसप्रकारकी मित्रता उनके साथ उत्पन्न करनेपर यदि विदेशीय तातार, वा रूसी लोग हम दोनोंके पूर्वी, राज्यमें आक्रमण करनेको उद्यत हों, तो उस समय समरक्षेत्रमें पचास सहस्र राजपूत सेनाकी सहायता कभी भी अनावश्यक ज्ञात नहीं होगी।" विचार कीजिये, टाड सा० जो इतने सार वचन स्वरचित ग्रन्थोंमें लिखगये हैं, वर्तमान इंग्लिश राजपुरुषोंको उन वचनोंका स्मरण करके उनके उपदेशानुसार नीति अवलम्बन करना उचित है. क्योंकि राजनीतिज्ञ इस बातको अवश्य स्वीकार करेंगे।

१५ श। यदि किसी मनुष्यके पास कोई उत्तम घोडा हो तो सदुपाय अथवा अन्तमें असत् उपायोंसे उसको लेलेते हैं।

१६ श। देवगढ़ देश जिस समय प्रथम स्थापित हुआ, उस समय हमारे पूर्व पुरुषोंको भी भूमि मिली थी। इस कारण देवगढ जिस प्रकार उनकी पैतृक सम्पत्ति है। उसके भीतरकी वह भूमि भी उसी प्रकार हमारी पैतृक सम्पत्ति है। उक्त भूमियोंकी श्रेष्ठता साधनादिके लिये हजारों रुपये खर्च हुएहैं। किन्तु वह हमारे सन्मान अनुग्रह स्वत्वाधिकारमें अपमानके साथ हस्त-क्षेप करते हैं।

१७ श। हमारे पूर्व पुरुषगण उक्त जितने ग्राम स्थापित करगये हैं। वह अपनी इच्छानुसार उन सब ग्रामोंसे चार वा पाँच चरसा भूमि लेकर विदेशियोंको देरहे हैं और उससे प्राचीन भूमिके अधिकारी गण क्रमशः दीन दशामें गिर कर नष्ट होते जाते हैं।

१८ श। बहुत प्राचीन कालसे ही देवगढके सामरिक सामन्तगण अपने २ आत्मीय कुटुम्बियोंको प्रतिदिन भोजन अथवा अन्न देते आते थे, किन्तु चार वर्षसे उन्होंने यह प्रथा बिलकुल बंद करदी है।

१९ श। प्राचीन कालसे प्रचलित रीतिके अनुसार देवगढ़के सामन्तगण पट्टावत् अर्थात् पट्टाधारी आधीनके सरदारोंके साथ मिलकर परामर्श पूर्वक कार्य करतेथे। किन्तु वह इस समय केवल विदेशी लोगोंके साथ परामर्श करतेहैं। उसका फल यह हुआ कि, पहाडी देशोंसे जो सैकडों रुपये राजधनके संगृहीत होतेथे, इस समय वह आमदनी बिलकुल बंद होगईहै।

२० श। भायादोंके अधिकारवाले प्राचीन भूखण्ड समूहोंमें पहाडी डॉकू निवासियोंके गौ आदि पशु लूटकर लेजाते हैं। फौजदार वह सब लौटाकर अधिकारीको नहीं देते, वरन् चातुरी पूर्वक डाकुओंको निवासियोंके निकटसे रेकोयाली कर लेनेमें उद्दीन करदेते हैं।

२१ श। धनद्वारा विचार बेचाजाता है, धनके विना विचार नहीं होता। जिसके पास धन है, वही न्यायविचार पाताहै। धन प्राण रक्षाके लिये महाजन और व्यौपारी विदेशमें भाग गयेहैं, किन्तु वह एक वार पूंछते भी नहीं कि वह कहां गये ?

२२ श। हमारे गौ आदि पशुओंके फाटके ऊपर चलेजानेपर, पहाडी उनको पकडलेते हैं, और हम स्वयं वहां जाकर उनसे वह पशु छीन लाते हैं, तो

राजपूत बांधव टाड फिर लिखतेहैं कि, "औरङ्गजेबकी आज्ञासे समरक्षेत्रमें राजपूत जातिने कैसा व्यवहार किया था, वह हमको स्मरण रखना उचित है: अब भी उनके हृदयमें वही भाव विराजमान है। कृतज्ञता, आत्म सन्मान रक्षा और विश्वास पालन एक समय राजपूत जातिके समस्त सद्गुणोंकी मूल भूमिथे। आजतक प्रत्येक राजपूत उस कृतज्ञता, आत्मसन्मान और विश्वस्तताका मूल अर्थ समझतेहैं: किन्तु केवल अपने भाग्यके बलसे ही समय परिवर्त्तनके साथ वह लोग उस कृतज्ञताका प्रकाश आत्मसन्मानरक्षा और विश्वास पालनके पूर्ण उदाहरण दिखानेका कोई उपलक्ष नहीं पातेहैं। किसी राजपूतसे यह प्रश्न कियाजाय कि, "सबसे भारी अपराध क्या है?" वह तत्काल उसके उत्तरमें कहेगा कि "गुणछोड" अर्थात् कृतघ्नता। राजपूत जातिकी आत्माके साथ मानो कृतज्ञता जडीहुई है, वह लोग जीवनके प्रत्येक अनुष्ठानमें कृतज्ञताकी पूजा करते हैं, और उस कृतज्ञताके मान रक्षाके लिये ही वह समधर्मी राजाके साथसे वियुक्त नहीं होसकते। जो राजपूत उस कृतज्ञतासे हीन है, वह राजपूत इस संसारमें रहनेके योग्य नहीं है, उसको दूसरे जन्ममें साठ सहस्र वर्षतक नर्कमें निवास करना पडता है, यही उसके लिये निर्द्धारित है, राजपूत जातिका यही विश्वासहै।" *

इसके अनन्तर कर्नल टाड लिखते हैं कि, "राजपूत जाति चाहे कितनी ही उग्र स्वभावयुक्त हो, उनके हृदयमें राजभक्ति और देशहितैषिता भलीभांति विराजमान है। यद्यपि राजपूतलोग बीच२ में अपने पिता और अधीश्वरके प्रति उद्धतता सूचन करते रहते हैं, किन्तु किसी विजातीय शत्रुके जन्मभूमि अधिकारमें उद्यत होनेपर, वह किस प्रकार वीरमूर्त्ति धारण कर एकता पूर्वक राजाको

---

* [illegible]

वह हमारे ऊपर धनदण्ड करके कहते हैं कि, "पहाडियोंको उक्त प्रकारसे पराजय करनेकी शक्ति हमने दी है।" इस प्रकार वह हमारी मर्य्यादा घटा देते हैं। अथवा हम उक्त हत्याकारी डांकुओंमेंसे किसीको भी पकडते हैं, तो वह छुडानेके लिये एक अस्त्रधारी दल भेजते हैं और उससे फौजदार रिशवत लेते हैं। फिर छूटे हुए डांकूके साथ कलह होता है और उससे निराश्रय राजपूत अपनी पैतृक भूमि छोडनेको विवश होजाते हैं। देवगढमें अब प्रजाको सहायता और आश्रय पानेका कोई उपाय नहीं है। सामन्त बिलकुल हिताहित विचार शून्य हैं और सन्मान रक्षाके प्रति यहांतक उदास हैं कि, "पहाडियोंको धन देकर अपनी कलंकित सम्पत्तिका उद्धार करलो। ऐसा कहते हैं जबसे वर्त्तमान फौजदार नियुक्त हुए हैं तबसे हमारे अदृष्टमें हालाहल विष लिखागया है। विदेशी लोग सर्व कर्ता धर्ता हैं देशी दूर फेंक दियेहैं। दक्षिणी (महाराष्ट्र) और लुटेरे उनके (सामन्तोंके) स्वजातीय लोगोंकी भूमि भोग रहे हैं। विना अपराधके सरदारोंकी भूमि छीन ली जातीहै। उसके फिर प्राप्त करनेमें बहुत सा समय और धन व्यय करना होता है। न्याय विचार बिलकुल लुप्त होगयाहै।

राणा भवनमें उन (सामन्त) का जैसा अनुग्रह भोग और स्वत्वाधिकार विराजित है उनके निकट भी हम उसी अनुग्रहके अधिकारी और स्वत्ववान हैं। जबसे आप (कर्नेल टाड)ने मेवाडमें पदार्पण किया है, उससे बहुत पहिले दूसरोंके द्वारा अन्यायसे अधिकृत भूमियोंका उद्धार किया जाता है। हमने ऐसा क्या अपराध कियाहै जो अब अपने पैतृक स्वत्वसे वञ्चित रहें?

हमलोग महा विपत्ति सागरमें मग्न हैं।

तीसरी संख्या ३.

महाराज श्रीगोकुलदास।

देवगढ़के चार मिसल अर्थात चार श्रे-
णीके प्रधान सरदार प्रति आवेदन करते हैं।

लिखित है—

द्यूत जुआ—क्या राजपूत क्या जर्मन क्या सीथीय सभी प्राचीन जातियोंमें द्यूतप्रियताका विवरण पाया जाता है इस अनर्थकारी खेलसे महाअनिष्ट होते देख और सुनकरभी न जाने यहलोग क्यों इसखेलमें मन लगातेथे यह आश्चर्य है।

जर्मनलोग अपना सबकुछ यहांतक कि अपनी स्वाधीनताकीभी बाजी लगाकर इसअनिष्टकारी खेलको खेलते थे यदि हारजाते तो जीतनेवाला उनको दास भावसे बेचदिया करता था। इस सर्वनाशकारी द्यूतविलासितासे मोहित हो एक समय पांडवलोग अपनी समस्त सम्पत्तिको हारकर अन्तमें अपने हृदयकी अर्द्धभागिनी द्रौपदीको दांवपर लगाबैठे। पाण्डवोंकी उसभयंकर द्यूताशक्तिसे भारत वर्षका जो महाअनिष्ट हुआ है, उसका प्रकाशित चित्र आजतक कुरुक्षेत्रके भयंकर मैदानमें स्पष्टभावसे विराजमान है। उस चिह्नका—आर्यजातिके नष्टकारी प्रकाशमान निदर्शनका—और भारत माताके हृदयमें उस गंभीर अस्त्ररेखाके अंकितहोनेका भयानक वृत्तान्त जानकरभी आर्यवीर राजपूतगण उस अनिष्टकारी खेलको बडे चाओंसे खेलाकरते हैं। कैसा आश्चर्यहै कि यह भयंकर पापाचार उनके पवित्र धर्मग्रंथोंकी निधानपंक्तियोंमें स्थान पाएहुए हैं * उसविधानका अनुसरण करनेके लिये राजपूतलोग प्रतिवर्ष आजतक "दिवाली"× उत्सवपर भगवती लक्ष्मीजीको प्रसन्नकरनेके लिये उस अनर्थकारी खेलको खेलाकरते हैं।

शाकुनिक और सामुद्रिक गणना, पक्षियोंके उडने, शब्दकरने, पंख फटफटाने व और अंगोके फडकनेसे आर्यलोग अपने शुभाशुभका विचार किया करतेहैं विहंग किस ओरसे किस भावसे उड़ गया, किससमयपर किसप्रकारसे शब्द किया या अपने पंखोंको फैलाया, इन बातोंको जित और जर्मन लोग भली भांतिसे देखकर अपने शुभाशुभका विचार किया करतेहैं। इसके सिवाय दैवज्ञ और सामुद्रिक जाननेवालेके विचार पर इन समस्त प्राचीन जातियोंका अटल विश्वास है।

मदिरापानमें विकट आसक्तिः—जर्मन और स्कन्दनावीय आसिलोगोंके वीरोंका जितकुलसे उत्पन्न होनेका प्रमाण उनकी सुराप्रियताका विचार करनेसेही प्राप्त होजाता है। हिन्दूवीर राजपूतलोगभी इसविषयमें किसीप्रकारसे

---

* हिन्दूशास्त्र द्यूतक्रीडाका निषेध करता है। "द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैरकरं महत्॥ तस्माद्द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान्॥ मनु०

× इसउत्सवमें सनातनधर्मावलम्बियोंके घर २ रोशनी हुआकरती है। [illegible] नहींपर नहीं होती। जुआ खेलनेका विधान धर्मशास्त्रने नहीं किन्तु निषेध है [illegible] कि इस दिन कोई कृत्य इतनामात्र करले जिससे [illegible] ।

कमती नहीं है। स्कन्दनाभीय और जर्मनलोगोंके समान यह लोगभी, अनेकप्रकारसे वारुणी देवीकी पूजाकिया करते हैं। समरविजय देवपूजा, अतिथिसत्कार यहांतककी सबही बातोंमें राजपूतलोग मदिराका व्यवहार करनेका विशेष, आडम्बर किया करतेहैं। स्थानपर अतिथिके आतेही राजपूतलोग सबसे पहले सुरापूर्ण "मनोआप्याला" हाथमें लेकर अभ्यागतका मधुर स्वरसे सन्मान कियाकरते हैं। एक समय जो भयंकर शत्रु–जिसका कलेजा काटनेके लिये राजपूतका खड्ग सदा तैयार रहता था; यदि वह शत्रुभी पहुनई स्वीकार करके राजपूतके दिये "मनोआप्यालेसे सुरापान करे तो वीर हृदय राजपूतगण समस्त शत्रुताको भूलकर बन्धुभावके द्वारा उसको भेटते हैं।" इस सुरापूर्णपानपात्रका गुणकीर्त्तन करते करते राजपूत और स्कन्दनाभीय कविलोगोंकी वीणासे बराबर अमृतकी धार निकलती रहती है। इस सुराको वहलोग अमृतमयी जानकर पृथिवीके समस्त सारद्रव्योंमें अच्छा मानते हैं। राजपूत और जित, वीर लोगोंका दृढ विश्वास है कि यदि हम देशकी रक्षा करते हुए संग्राममें मारेजावेंगे, तो अनन्तसुखके स्थान स्वर्गलोकमें अप्सराये मदिरासे भरा प्याला लेकर हमारा सान करेंगी। इसीविश्वासको हृदयमें धारणकरके वह अतिउत्साहके साथ रणांगनमें गमन करते हैं यदि रणभूमिमें घाव लगनेसे गिरभी गये तोभी बड़े सुखसे [illegible] करते हैं–"मैं मनुष्यजन्मसे छुटकारा पाकर स्वर्गके नित्य सुखदायी स्थानमें देवताओंके साथ सुरामृतको पान करूंगा।"

स्कन्दनाभीय वीरलोगोंके उपास्यदेवताका नाम [illegible], उनके मतसे नरखोपरी ही उक्त रणदेवताका पानपात्र है। हमजानतेहैं कि वीर स्कन्दनाभीयलोगोंकी या देवकल्पना, राजपूतलोगोंके संग्रामदेवता महादेवजीसे संपूर्ण [illegible] है। इसीतरहका वर्णन इन लोगोंके काव्यग्रंथोंमें इसप्रकारसे पायाजाता है कि संग्रामके समयमें उक्त रणदेव भयंकर मूर्ति धारण करके नरखोपरी हाथमें ले रणभूमिमें [illegible] के बीचमें गिरे शत्रुओंका रुधिर [illegible] पान किया करते हैं।

यदि कोई व्यक्ति किसी प्रकारका अपराध सूचक कार्य्य करेगी तो हमारे स्वजातीय चारमिसल अर्थात् चार श्रेणीके द्वारा उसका विचार और दण्ड व्यवस्था होगी ।

उनके साथ किसी विषयमें किसी समय विना परामर्श किये मैं किसीको भी किसी प्रकारका दण्ड नहीं करूंगा । *

श्रीनाथजीके नामसे मैं यह शपथपूर्वक कहताहूं और इस प्रतिज्ञासे मैं किसी समय नहीं हटूंगा । संवत् १८७४, षष्ठी, पौष ।

चौथी संख्या ४.

मेवाडपति महाराणा अरिसिंहद्वारा सैन्यवी सेनाके नेता अब्दुलरहीम बेगको वृत्ति दानपत्र ।

श्रीरामो जयति ।

गणेशः प्रसीदतु । एकलिङ्गः प्रसीदतु ।

श्रीमहाराजाधिराज महाराणा अरिसिंह मिर्जाअब्दुलरहीमबेग आदि लवेगोतके प्रति आदेश करते हैं:—

इस समय हमारे अधीनस्थ कई सामन्तोंके विद्रोही होने, और धूर्त्त रत्नसिंहको अधिपति रूपसे वरण करने, दक्षिणी सेनादल (महाराष्ट्रियों) को बुलाने, तथा उदयपुर राजधानीपर अधिकार करनेके लिये तोपें सज्जित करनेसे [illegible] करके आपके द्वारा हमारी राजशक्ति रक्षामें यथेष्ट सहायता पहुंचीहै, इसी कारण आपके ऊपर अनुग्रह प्रकाश करनेके लिये मैंने यह भूवृत्ति दान निर्द्धारित कर दी, यह आप और आपके पुत्र पौत्रगण सदा भोगते रहैं । आप विश्वासके साथ कार्य्य करतेरहें । यदि हमारे वंशका कोई आपके उत्तराधिकारियोंसे इस स्वत्वको छीनेगा, तो उसको एकलिङ्गजीका शाप और चित्तौर नष्ट करनेका पाप स्पर्श करेगा ।

विशेष विवरण ।

१ म २०००००) की आय रुपये मूल्यकी भूसम्पत्ति ।

२ द । वार्षिक नगद २५०००) रुपये ।

३ द । [illegible] २०००० बीघे भूमि ।

---

* [illegible]

जो पुरुष इन वचनोंको स्मृति पटपर अङ्कित कर रक्खेंगे, उनके सब पाप दूर होजायँगे ।

द्वार शिवके पुत्र खोदक शिवनारायण द्वारा खोदित और कविराज वुतेनाने यह कविता निर्माणकी है ।

इक्कीसवीं संख्या २१.

वूंदी राज्यके तीन कोश पूर्वमें रामचन्द्रपुरा नामक स्थानमें एक कूप खोदनेके समय जित्‌जातिके सम्बन्धकी निम्नलिखित खोदित लिपि पाईगई कर्नेल टाडने उसको लेकर, लन्दनकी एशियाटिक सोसाइटीकी चित्रशालामें भेजदिया ।

वुत्तिवंशमें राजा थोतने जन्म लिया; उनकी यश किरण सब पृथ्वीमण्डल पर व्याप्त हुई ।

राजा चन्द्रसेन पवित्रचित्त; अमित वलशाली और प्रजापुञ्जके परम प्रियपात्र थे । (१) जिन्होंने अपने शत्रुओंको विलकुल दुर्वल करदियाः और जिन्होंने युद्धमें तलवार चलाते समय ऐन्द्रजालिककी समान विचित्र वाहुवल प्रकाश किया; उसका विषय किस प्रकार कहाजासकता है ? प्रजाके प्रति वह वडा उदार व्यवहार करते और उस कारणसे वह शुभमय फल पातेथे । उन विख्यात चन्द्रसेनके औरससे कार्त्तिकने जन्म लिया । उन कार्त्तिकका वाहुवल सर्वत्र विख्यात था और मनुष्य समाजमें उनकी वडी प्रशंसा थी । वह अपनी जिन रानीको प्राणोंकी समान चाहते थे, उन रानीका विषय किस प्रकार वर्णन किया जाय ? जिस प्रकार अग्निसे शिखाको अलग नहीं किया जासकता, उसी प्रकार वह रानी अपने पतिके साथ मिलित थीं—वह सूर्य्यकी किरणकी समान थीं और उनका नाम गुण निवास था, उनका आचरण उनके नामके समान था । उन रानीके गर्भसे कार्तिकके माणिक्यकी समान भुवनरञ्जन दो पुत्र उत्पन्न हुए बडेका नाम मुकुन्द छोटेका नाम डालक था उनके सौभाग्यको देखकर शत्रुओंका हृदय विदीर्ण होता था. और उनके अनुगामी लोग अनन्त सुख भोगते थे । देवताओंको जैसे कल्पवृक्ष प्यारे हैं. वैसे ही वह दोनों भ्राता अपनी प्रजाके प्रिय थे । वह प्रजाकी प्रार्थना पूर्ण करके जिन वंशमें जन्मलिया था उस वंशकी गौरव-

---

(टीका १) [illegible] था । [illegible] हो । [illegible]

४ थ। रहनेके लिये "भारत सिंहकीबाटी" नामक घर।

५ म। उद्यान बनानेके लिये नगरके बाहर एक सौ बीघे भूमि।

६ ष्ठ। काष्ठ और तृणादिके निमित्त उपत्यकाका भितुना नामक ग्राम।

७ म। अजमेरसिंग, जो युद्धभूमिमें मारे गयेथे. उनके समाधि मन्दिरकी रक्षाके कारण एक सौ बीघे भूमि।

अनुग्रह और सन्मान।

८ म। दरबारमें एक आसन और सादरीके सामन्तकी समान सब विषयोंमें सन्मान और पदमर्य्यादा। *

९ म। राजप्रासादास्थित तोरणके बहिर्देशमें अपना नगाडा बजासकेंगे, किन्तु केवल एक लकडी द्वारा।

१० दशहरा उत्सवमें अमर घोडा और × सन्मान सूचक पोशाक।

११ श। आहरमें विजयढक्का बजासकेंगे। अन्यान्य सब विषयोंमें सलुम्बर के सामन्तकी समान आपका वंश भी सदा सन्मान पासकेगा। इस कारण अपनी भूवृत्ति मूल्यके अनुसार आप राजाकी आज्ञा पालन करते रहेंगे।

१२ श। आप स्वयं जिस किसी भ्राता वा भृत्यको पदच्युत करेंगे, मैं उनको आश्रय न दूंगा, और मेरे सामन्तलोग भी उनको आश्रय न दे सकेंगे।

१३ श। राजसभाके सिवाय अन्यत्र जब आप अकेले रहेंगे, तब चमर और किरनिया व्यवहार करसकेंगे

१४ श। सुनवरबेग, अनवरबेग, चमनबेगको सिंहासनके सम्मुख आसन लेनेकी आज्ञा दीगई। अमरघोडा और दशहरेके समय मानसूचक पोशाक आपको दी जायगी और आपके दूसरे दो तीन आत्मीय सन्मानके सहित राजसभामें आसन पासकेंगे।

१५ श। आपके वकील अपने पदोचित सन्मानके साथ राजसभामें स्थिति करसकेंगे।

आदेशकर्ता—
[illegible]।

संवत १८२६, (सन १७७०ई०)
११ वीं भाद्र सोमवार

गरिमा फैलाते थे कर्नेल टाडने यहांके कई श्लोक निष्प्रयोजन समझ कर उनका अनुवाद नहीं किया। मूल लिपिके अभावसे हम भी अनुवाद नहीं करसके।

दारुकके कुहल नामक एक पुत्र उत्पन्न हुए। कुहलके औरससे धुनकका जन्म हुआ। उन्होंने बडे २ कार्य्य सिद्ध किये। वह मनुष्यके हृदयका भाव अनुभव कर सकतेथे, उनका चित्त समुद्रकी समान गंभीर था। उन्होंने पर्वती मीना जातिको परास्त, विताडित और सर्वथा विध्वस्त कर दिया था, उनको फिर कहीं स्थान न मिला वह अपने छोटे भ्राता दोकके सहित देवता और ब्राह्मणोंकी पूजाकरते थे। उन्होंने अपने धनसे अपनी प्राणप्यारीकी प्रसन्नताके लिये सूर्यके उद्देशसे यह मंदिर स्थापन किया।

जबतक सुमेरु सुवर्ण वालुकाके ऊपर खडा रहेगा, तबतक यह मंदिर विराजमान रहेगा। जबतक जगद्धारिणी हथनियोंके देहमें प्राण रहेगा (१) जबतक आकाश रहेगा, जबतक लक्ष्मी धनदान करेंगी, तबतक उनका यश और मन्दिर अक्षयभावसे विराजमान रहेगा।

कुहलने यह मन्दिर और इसके पूर्व पार्श्वमें महेश्वरके मन्दिरकी प्रतिष्ठा करी थी। महाबली महाराज यशोवर्म्माके पुत्र अचलके द्वारा इसकी प्रतिलिपिफलोर।

बाईसवीं संख्या २२.

चित्तौरनगरके मध्यस्थ मान सरोवरके तटमें महाराजगणके द्वारा संस्थापित स्तंभपर खोदित लिपि।

जलपति वरुणदेवके द्वारा आप रक्षित हों! जिस नीरनिधिके किनारेपर स्थित मधुपूर्ण लाल फलोंसे शोभित वृक्षावलीमें मधुमक्षिकादल विहार करता है, जिस समुद्रसे सैकड़ों शाखातरङ्गिणी उत्पन्न होकर उसकी शोभा बढ़ाती है, इस जगतमें उस जलधिका उपमा स्थल और क्या है? जो जलनिधि पारिजात [२] की गन्धसे आमोदित है जिस समुद्रने कल्पवृक्ष सुरा, रत्न और अमृत प्रदान किया था, वह समुद्र आपकी रक्षा करे.

यह एक बड़ी उदारताका स्मारक चिह्न है। यह सरोवर बड़ा गंभीर है, [illegible] शोभित करता है। इसके ऊपर अनेक शोभित [illegible] पक्षी [illegible]

पाँचवीं संख्या ५.

मेवाडके सर्वश्रेष्ठ सोलह सामन्तोंमेंसे अन्यतर रावत् लालसिंहको
भैंसोरका पट्टा—दानपत्र ।

महाराज जगत्‌सिंह—रावत लालसिंह किशोरी सिंहोतके * प्रति आदेश करतेहैं;—

इस समय आपका ग्रासस्वरूप आपको सम्पूर्ण भैंसोर परगना × प्रदान कियागया;—

भैंसोर नगरकी वार्षिक आय .. ३०००) १५००)

अन्य ५२ खण्डग्राम (सबके नाम अनावश्यक हैं) और राजधानीसे संलग्न उपत्यका मध्यमें स्थित

एक अन्य ग्रामकी पूरी वार्षिक आय ... ६२००० ३१००० ‡

दो सौ अड़तालिस अश्वारोही और दो सौ अड़तालिस पैदल सेना सहित (श्रेष्ठघोडा और राजपूत सेना सहित) आपको राजाकी आज्ञाका पालन करना होगा ।

उक्त सेनामेंसे अड़तालीस अश्वारोही और अड़तालीस पैदल आपके दुर्गकी रक्षामें सदा नियुक्त रहेंगे । इस कारण आप दो सौ सवार और दो सौ पैदल सहित जिस किसी स्थानमें आवश्यकता हो आज्ञा पाते ही कार्य्य साधनको उपस्थित हों संवत १७९८ के पौषमासमें आपको प्रथम पट्टा दिया गया था, किन्तु उस समय आपकी आय अनुमानसे करी गई थी, यह जानकर महिमवरने इस समय आपको वार्षिक साठ सहस्र मुद्रा आयकी भृवृत्ति दानकी आज्ञादी ।

छठी संख्या ६.

मेवाडके महाराणा संग्रामसिंहद्वारा अपने भानजे जयपुर सिंहासनके
उत्तराधिकारी मधुसिंहको भूवृत्ति दानपत्र ।

क्रीडा करते हैं, तथा इसके तटकी भूमि प्रत्येक प्रकारके वृक्षोंसे शोभितहैं । आकाशभेदी शिखरसे गिरकर स्वाभाविक मनोहर सुन्दरता प्रगट करतीहुई इस सरोवरमें तरंग आकर, प्रबल वेगसे गिरती है सर्पराज मातोलीने [१] समुद्र मन्थनके पीछे थकित चित्तसे इस सरोवरमें विश्रामके निमित्त आश्रय लियाथा ।

इस पृथ्वी मण्डलपर महेश्वर [२] नामक एक महाबली राजाथे । उनके राज्यमें उनके किसी शत्रुका भी नाम नहीं सुनाजाता था, उनकी गौरवगरिमा आठों ओर [३] फैली थी । वह जगत्के निर्मल चन्द्रमाकी समान थे। स्वयं ब्रह्माजीने अपने मुखसे तस्य [४] जातिकी प्रशंसा विख्यात करी थी ।

राजा भीम [५] कामदेवकी समान परम सुन्दर और पराक्रमी थे, वह सैकडों कमलोंमें जलविहारके समय राजहंसोंको अपने हाथसे भोजन दिया करतेथे । उनकी मधुर मूर्तिसे यशकी किरण निकलती थीं । वह राजाभीम संग्रामसमुद्रमें एक चतुर पैरनेवाले थे ।

---

(१) वासुकीके स्थानमें कर्नेल टाड यहांपर मातोली नाम लिख गयेहैं । ज्ञात होताहै रजवाडेमें वही नाम प्रचलित है ।

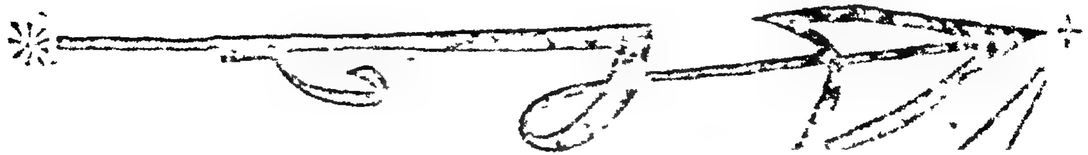
(२) तक्षक वंशके प्रमारजातिवाले राजगणकी वंशकारिकामें इन महाराज महेश्वरका नाम प्रशंसा और विख्यातीके साथ लिपिबद्ध हुआ दीखताहै । इस तक्षक प्रमार जातिमें मरीनामक एक शाखा सबसे प्रधान है । उक्त महाराजने नर्मदा नदीके दक्षिण तीरमें सुविख्यात "महेश्वर" नामक नगर प्रतिष्ठित कियाथा । अवन्ती और धार (मरिराजगणकी दो प्रधान राजधानी) नगरसे जो छोटी नदी दक्षिणकी ओर गईहै, यह नगर उसके ही पूर्वभागमें स्थापित है । "यहां अहल्याबाईके घाट बहुत सुन्दर बनेहैं पूजास्थान बहुत सुन्दर है मैंने स्वयं देखाहै" (अनुवादक)

(३) हिन्दू शास्त्रोंने ऐसा लिखाहै कि, पृथ्वीकी आठ दिशाओंमें आठ हाथी स्थित होकर पृथ्वीको धारण कर रहेहैं ।

(४) तस्थ वा तक्षक जाति विख्यात प्राचीन नागवंशीय है । यह ही अनिश्चय है चित्तौर-राज्य यदि तक्षक जातिके द्वारा प्रतिष्ठित हुआहो, तो स्पष्टताहै, चित्तौरको ही प्राचीन "तक्ष-शीलनगर" अर्थात् तक्षकोंके द्वारा निर्मित नगर लिख गयेहैं, यह अत्यन्तही सम्भव होसकताहै ।

श्रीरामो जयति।

श्रीगणेशः प्रसीदतु। श्रीएकलिङ्गः प्रसीदतु।



रामपुरा प्रदेशका पट्टा।

अतएव एक सहस्र अश्वारोही और दो सहस्र पदाति सहित तुम शान्तिके समयतक राज्य कार्य्यमें नियुक्त रहोगे, और किसी समय विदेश जानेकी आवश्यकता होने पर, तीन सहस्र अश्वारोही और तीन सहस्र पैदल सहित तुमको युद्धक्षेत्रमें उपस्थित होना होगा।

उक्त प्रदेश (रामपुरे) में जबतक मस्जिद राणाका स्वत्व स्थिर रहेगा, तबतक तुमको इस अधिकारसे जानेका कुछ भय नहीं है।

यहांतक कि, जिस स्थानमें पवित्र जलवाली गंगाने अपनी तरंगें विस्तार करी है (१) उन्होंने वह दूरवर्ती स्थान भी विजय करलियाथा। उनकी राजधानी अवन्ती थी (२) वह अपने शत्रुओंकी जिन स्त्री कन्या आदिकोंको हरण करके लाते, जिन स्त्रियोंके मुखमण्डल शरदऋतुके चन्द्रमाकी समान निर्मल थे जिन कामनियोंके अधरोंमें उनके पतियोंके प्रेमानुराग सूचक काटनेके चिह्न दिखाई देतेथे, राजा भीम उन सुन्दरियोंका हृदय भी अधिकार करतेथे। वह अपने बाहुबलसे अपने शत्रुओंका भय दूर करते थे। वह यहांतक उदार थे कि शत्रुओंको सर्वथा विध्वस्त न करके उनको भ्रान्तिकूपमें गिरेहुए कहकर क्षमा कर देते थे। उनकी मूर्त्ति अग्निकी समान प्रकाशमान थी। वह समुद्रगामी नाविक लोगोंको भी शिक्षा देनेमें समर्थ थे। (३)

उन राजा भीमके औरससे महाराज भोजने (४) जन्म लिया। जिन महाराज भोजने अपने बाहुबलसे रणक्षेत्रमें तलवारद्वारा विशाल हाथीका मस्तक

प्रियवत्स ! मैंने तुमको रामपुराप्रदेश प्रदान किया, जितने दिनतक मेरे अधिकारमें रहेगा, उतने दिनतक तुमको इस अधिकारसे वञ्चित नहीं होना पडेगा इति ।

सातवीं संख्या ७.

रक्षण और आश्रय दानके कारण संवत् १८०६ (सन् १७५० ईसवी) पहले श्रावणमें दोंगला ग्रामके निवासियोंने महाराज खुशाल सिंहको रेकोयाली स्वरूप जो भूमिदान और अर्थादि दान किया, उसकी अनुलिपि ।

१ म। डेढ सौ वीघे कृषिक्षेत्र. उसमें छत्तीस वीघे कुएँके सहित खेत ।
२ य। एक सौ दो वीघे पतित और कुएँसे रहित भूमि यथा;–

तेली गोविन्दद्वारा कर्पित छः वीघे ।
तेली हीरा और ताराके अधीनकी तीन वीघे ।
हंस और तेली लालद्वारा कर्षित सत्तरह वीघे ।
गोविन्द और हीरा आदिके अधिकारकी चार वीघे ।
पतित और वनकी भूमि । उक्त समस्त विधि भूमि ।

अर्थादिदान ।

मुद्रा ... ... १२ वारहखण्ड ।
अन्न .... २४ मन ।

राखी, दिवाली, होली उत्सवके समय ग्रामके प्रत्येक घरसे एक २ ताम्रमुद्रा दीजायगी ।

नेरानो * ... . धान्य काटनेके समय ।

ब्राह्मणोंके निकटसे मुकर्रर

वाणिज्यके द्रव्य रक्षणके कारण प्रत्येक माल लदे छकडे [गाडी] पर एक२ पैसा और प्रत्येक बोझा ढोनेवाले बैलपर आधा पैसा ।

प्रत्येक परिवारके विवाहके समय दो पात्र अन्न ।

आठवीं संख्या.

[illegible] निवासियोंने संवत् १८१४ (सन १७५८) में

* [illegible]

दो टुकडे करदियाथा, उस हाथी (१) के शिरके गजमोती उनकी छातीपर परम रमणीय रूपसे शोभा पातेथे; राहु केतु जैसे चन्द्र और सूर्य्यका ग्रास कर लेते हैं; वह भी वैसे ही अपने शत्रुओंको समूल नष्ट करते थे। जो इस विषयको चिर स्मरणीय करनेके लिये विशाल जयस्तंभका निर्म्माण करागये हैं,उन महा राज भोजकी महिमा किस प्रकार वर्णन करी जासकतीहै?

उनके ही औरससे माननामक पुत्रने जन्म लिया वह बडे गुणवान थे और सौभाग्य लक्ष्मीने उनके निकट आश्रय लियाथा। एक समय एक वृद्धके साथ उनका साक्षात् हुआ, उस वृद्धका जीर्ण, शीर्ण और दुर्बल देह देखकर उन्होंने मनमें निश्चय किया कि, यह मनुष्यदेह केवल छायास्वरूप-क्षयशील है, देह पिञ्जरमें जो आत्मा वास करताहै, केवल वही सुवासित पुष्प कदम्बकेशरकी समान है। राजपद, धन, ऐश्वर्य्य सबही तृणाङ्कुरकी समान असार हैं, और प्रचण्ड सूर्यकी किरणोंसे प्रकाशित दिनमें जैसे दीपक प्रज्वलित करनेपर वह दीपक प्रभाहीन और पवनके चलते ही बुझ जाताहै मनुष्यका जीवन भी वैसे ही कभी है कभी नहीं। ऐसा मनमें विचारनेके पीछे उन्होंने अपने पूजनीय पूर्वपुरुष और अपने सत्कार्य्योंका कीर्तिस्वरूप यह सरोवर प्रतिष्ठित किया। यह सरोवर जैसा महान् लम्बा चौडा है, वैसाही असीम गंभीर है। जब मैंने समुद्रकी समान इस विशाल सरोवरके प्रति दृष्टि डाली, उस समय मेरे मनमें यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि, इस सरोवरसे ही महाप्रलय संसिद्ध होगी।

महाराज मानके आधीनमें सामन्त मण्डली और वीर पुरुष अत्यन्त समर कुशल, महासाहसी,पवित्र चरित्र और विशेष विश्वासी थे। (२) राजा धर्ममें

दोहनमो । *

होली और दशहरा पर्वोंके समयमें नारियल मिलेगा।

बोझा ढोनेवाले प्रति सौ बैलोंपर बारह आने शुल्क लेसकोंगे। ×

जिहाज पुरके भीतर जितने घोडे बिकेंगे, उनमें प्रतिघोडा २ आने मिलेंगे।

जितने ऊंट बिकेंगे, उनमें एक ऊंट पीछे एक आना पाओंगे।

तलीकी घानीपर एक २ पला पाओंगे।

प्रत्येक लोह खानसे सिकीमुद्रा।

प्रत्येक सुरा प्रस्तुतके कारखानेसे सिकीमुद्रा।

प्रत्येक छाग बलिदानमें एक पैसा।

जन्म और विवाहके समय पाँचपात्र अन्न। †

प्रत्येक नाजरा फलकी एक २ अंजुलि।

भूमि सम्बन्धी अन्यान्य अधिकार और अनुग्रह।

कूपादियुक्त भूमि (पिवुल)	...	..	५१ बीघे
कूपहीन भूमि (माल)	...	...	११० बीघे
पहाडी भूमि (सुग्र)	....	...	४० बीघे
तृणाच्छादित भूमि [बीडा)	....	...	२९ बीघे
			कुल २२६ बीघे

आषाढ संवत १८५३ (सन् १७९७ ईसवी)

यहांतक कि, जिस स्थानमें पवित्र जलवाली गंगाने अपनी तरंगें विस्तार करी हैं (१) उन्होंने वह दूरवर्ती स्थान भी विजय करलियाथा । उनकी राजधानी अवन्ती थी (२) वह अपने शत्रुओंकी जिन स्त्री कन्या आदिकोंको हरण करके लाते, जिन स्त्रियोंके मुखमण्डल शरदऋतुके चन्द्रमाकी समान निर्मल थे जिन कामनियोंके अधरोंमें उनके पतियोंके प्रेमानुराग सूचक काटनेके चिह्न दिखाई देतेथे, राजा भीम उन सुन्दरियोंका हृदय भी अधिकार करतेथे । वह अपने बाहुबलसे अपने शत्रुओंका भय दूर करते थे। वह यहांतक उदार थे कि शत्रुओंको सर्वथा विध्वस्त न करके उनको भ्रान्तिकूपमें गिरेहुए कहकर क्षमा कर देते थे । उनकी मूर्त्ति अग्निकी समान प्रकाशमान थी। वह समुद्रगामी नाविक लोगोंको भी शिक्षा देनेमें समर्थ थे। (३)

उन राजा भीमके औरससे महाराज भोजने (४) जन्म लिया। जिन महाराज भोजने अपने बाहुबलसे रणक्षेत्रमें तलवारद्वारा विशाल हाथीका मस्तक

ग्यारहवीं संख्या ११.

झालरापाटन नगरमें संस्थापित स्तम्भकी खोदित लिपिका अनुवाद ।

संवत् १८५३ (सन् १७९७ ईसवी) १७१८ शकाब्द, दक्षिणायन, शीतऋतुका सुखमय कार्तिकमास, पूर्णिमा, सोमवार ।

महाराजाधिराज उमेदसिंह देव * फौजदार × राजा आलिमसिंह और कुमार माधोसिंह, झालरापाटनके संपूर्ण निवासी, पटैलगण, ‡ पटवारी समूह † महाजनगण और सम्पूर्ण ३६जातियोंके प्रति जो आदेश करते हैं,वह लिखा गया।

इस समय सब निर्भय और निरापद होकर गृह निर्माण और निवास करते हैं ।

इस देशमें वलपूर्वक कर आदि ग्रहण और भूमिवृत्ति अपने आधीन करनेकी प्रथा उठाई गई । वलमनसी (क) नामसे चलित कर आन्नाईकर (ख) और रेकवरार कर (ग) और उसके साथ भेंटवेगार [घ] बिलकुल बन्द किया गया।

उक्त उद्देशसे ही यह स्तम्भ स्थापित किया गया और इसीके अनुसार सदा मंगल रहै । इस देशमें अब कोई किसीके ऊपर किसी प्रकारका पीडन नहीं करेगा । हिन्दूके लिये गोवध और मुसलमानके लिये शूकर वधकी शपथ दी गई । कप्तान दिलालखाँ, चौधरी स्वरूपचन्द, पटेल लल्लू, माहेश्वरी पटवारी बालकृष्ण, भास्कर कालूराम और पत्थर खोदक बालकृष्णके सामने यह खोदित लिपि संस्थापित हुई ।

---

* कोटेके राजा ।

× कोटेके सेनापति और राज प्रतिनिधि ।

‡ [illegible] ।

† [illegible] ।

(क) [illegible] कर ।

(ख) [illegible] कर ।

(ग) [illegible] कर ।

(घ) [illegible] ।

दो टुकडे करदियाथा, उस हाथी (१) के शिरके गजमोती उनकी छातीपर परम रमणीय रूपसे शोभा पातेथे; राहु केतु जैसे चन्द्र और सूर्य्यका ग्रास कर लेते हैं; वह भी वैसे ही अपने शत्रुओंको समूल नष्ट करते थे । जो इस विषयको चिर स्मरणीय करनेके लिये विशाल जयस्तंभका निर्म्माण करागये हैं,उन महा राज भोजकी महिमा किस प्रकार वर्णन करी जासकतीहै ?

उनके ही औरससे माननामक पुत्रने जन्म लिया वह बडे गुणवान थे और सौभाग्य लक्ष्मीने उनके निकट आश्रय लियाथा । एक समय एक वृद्धके साथ उनका साक्षात् हुआ, उस वृद्धका जीर्ण, शीर्ण और दुर्बल देह देखकर उन्होंने मनमें निश्चय किया कि, यह मनुष्यदेह केवल छायास्वरूप-क्षयशील है, देह पिञ्जरमें जो आत्मा वास करताहै, केवल वही सुवासित पुष्प कदम्बकेशरकी समान है । राजपद, धन, ऐश्वर्य्य सबही तृणाङ्कुरकी समान असार हैं, और प्रचण्ड सूर्यकी किरणोंसे प्रकाशित दिनमें जैसे दीपक प्रज्वलित करनेपर वह दीपक प्रभाहीन और पवनके चलते ही बुझ जाताहै मनुष्यका जीवन भी वैसे ही कभी है कभी नहीं । ऐसा मनमें विचारनेके पीछे उन्होंने अपने पूजनीय पूर्वपुरुष और अपने सत्कार्य्योंका कीर्तिस्वरूप यह सरोवर प्रतिष्ठित किया । यह सरोवर जैसा महान् लम्बा चौडा है, वैसाही असीम गंभीर है । जब मैंने समुद्रकी समान इस विशाल सरोवरके प्रति दृष्टि डाली, उस समय मेरे मनमें यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि, इस सरोवरसे ही महाप्रलय संसिद्ध होगी ।

महाराज मानके आधीनमें सामन्त मण्डली और वीर पुरुष अत्यन्त समर कुशल. महासाहसी,पवित्र चरित्र और विशेष विश्वासी थे । (२) राजा धर्ममें

अठारहवीं संख्या १८.

जयतसिंह चन्दावतको मुण्डकाटि अर्थात् क्षतिपूरण
स्वरूप भूमि दान ।

पटेलके पुत्रने अपने गृहमें अपनी स्त्रीको लानेके लिये जैतासिंहके राजपूत सैनिकोंकी रक्षामें गमन किया । वह सब मार्गमें ताडित हुए, रक्षक सैनिक मारे गये, और हत्याकारियोंको दंड विधान तथा क्षतिपूर्णका कोई उपाय न होनेसे, मुण्डकाटि स्वरूप यह छब्बीस बीघे भूमि दीगई ।

उन्नीसवीं संख्या १९.

रावत् मघसिंह द्वारा उनके भ्राता यमुनादासको पट्टा प्रदान कियागया:—

रायपुरग्राम मूल्य	४०१) रुपये
मोगरा पुष्पका एक उद्यान	११) रुपये
	कुल ४१२) रुपये

विश्वासके साथ स्वदेश और विदेशमें कार्य्य करते रहो; तथा प्रचलित रीतिके अनुसार कर और शुल्क दान करने तथा अधीनस्थ सरदारोंकी समान आज्ञा पालनमें तत्पर रहो ।

बीसवीं संख्या २०.

तक्षकजाति और जैनियोंके द्वारा राजपूत इतिहासके समय निर्द्धारक खोदित लिपिका अनुवाद ।

पञ्चमशताब्दीके जित जातीय नरपतिके स्मरणार्थ एक ताम्रलिपि ।
यह सन १८२० ईस्वीमें कोटा राज्यके दक्षिणमें चम्बल नदके तटपर कंसनाम स्थानके एक मन्दिरमें पाई गई ।

मेरुकी समान थे जो सामन्त उनके अनुग्रहकी दृष्टिमें गिरे थे, वह सौभाग्य लक्ष्मीका सम्पूर्ण अनुग्रह भोगनेमें समर्थ हुए। जब उनके चरणकमलोंपर इतर राजोंका मस्तक अर्पित हुआ, तब उनकी चरणरेणुने उस मस्तककी अनुपम शोभा बढाई।

जिस सरोवरके चारों ओर अनगिन्त वृक्ष विराजमान हैं, अनेक जातिके पक्षी जिन वृक्षोंकी शाखामें रहकर निरन्तर मधुर शब्द करते हैं. परम सौभाग्यवान श्रीमान् राजा मानने बहुत धन व्यय और परिश्रमसे यह सरोवर खुदवाया था। प्रतिष्ठाके पवित्र नामके अनुसार ही इस सरोवरका नाम "मानसरोवर" रूपसे जगतमें विख्यात है। नागभट्टके पुत्र अलंकार शास्त्र विशारद पुष्पने यह श्लोक रचे हैं। सात सौ सत्तर वर्ष वीते कि, मालवके अधीश्वर द्वारा (१) यह सरोवर निर्मित हुआ। क्षेत्रीसङ्गके पौत्र शिवादित्यने यह श्लोकावली खोदी।

तेईसवीं संख्या २३.

सौराष्ट्रके निकटवर्ती सोमनाथ पत्तनमें सन् १८२२ ईसवीमें मिलीहुई प्राचीन वल्लभी राजाओंके शासन समयकी करनेवाली देवनागरी अक्षरोंमें खोदित लिपिका यथार्थ अनुवाद।

जगत्के प्रकाशस्वरूप सर्वान्तर्यामी प्रभुकी चरण वन्दना करता हूं। जिनकी मूर्ति अवर्णनीय है, जिनके चरणोंमें सब प्राणी सदा नमस्कार करते हैं, उनके चरणकमलोंमें प्रणाम करता हूं (२)

जिनके वीरत्व बाहुबलसे शालपुरी देश रक्षित होता था; मैं अब उन राजाजितका यश वर्णन करूंगा। प्रबलाग्निशिखा जिस प्रकार अपने शत्रुको भस्मीभूत करके फेंक देतीहै; राजाजितका प्रताप भी उसी प्रकार प्रबल था। महा बलशाली जित् शालेन्द्र (२) परम रूपवान् पुरुष थे; और वह केवल अपने बाहुबलसे वीर पुरुषोंके अग्रणी हुए थे; चन्द्र जिस प्रकार पृथ्वीको प्रकाशमान करतेहैं, वह भी उसी प्रकार अपने शासित देश शालपूरीको देदीप्यमान करतेथे। सम्पूर्ण संसार जित् राजकी जयघोषणा कर रहाहै; वह मनुष्य लोकमें चन्द्रस्वरूप–दुर्द्धर्ष साहसी महा २ बलिष्ठ लोगोंमें पङ्कके बीचमें कमलकी समान बैठकर स्वजातीय गौरवगरिमा प्रकाश करतेथे। भुवन मंडलके राजालोगोंके शिर उनके चरणके अंगूठेकी पूजा किया करतेथे। उनकी अमित बलशाली दोनों भुजाओंके मनोहर मणिमाणिक्यके आभूषणोंका प्रकाश उनकी मूर्त्तिको उज्ज्वल कर देताथा। असंख्य सेनाके अधिनायक थे; और उनका धन रत्न असीम था, वह उदार चित्त और समुद्रकी समान गंभीर थे। जो राजवंश महाबली वंशोंमें विख्यात है, जिस वंशके राजालोग विश्वासघातियोंके परम शत्रु थे, जिनके चरणोंपर पृथिवीने अपना सम्पूर्ण धनधान्य अर्पण

—वीरगण; मेरुदण्डसे चारणगण, जिह्वासे भविष्यद्वक्ता भाटगण और उनके शिरकी जटासे जाट वा जित्लोग उत्पन्न हुए। शिवकी जटामें सर्प और महाकाल रहतेहैं। कर्नेल टाड कहतेहैं, इसके द्वारा विदित होताहै कि जित्गण तक्षकजातीय अर्थात् सर्पके वंशधर हैं. वह उन जटासे रक्षित हो। जटासे जिस प्रबल तरंगकी बात उल्लेख करीगई है वह तरंग पवित्र जलवाली गंगा हैं। शिवकी मूर्त्ति अर्धनारी युक्त है, इसी कारणसे उनके केश श्वेत और लाल आभाके लिखे हैं। कर्नेल टाड कहतेहैं, शिखीन जित्गण रणदेवकी यह मूर्त्ति कल्पना जाक्षरतीयके किनारेसे भारतमें लायेथे। वह लोग वहां इसको बालनाथ और बल नामसे पूजा करतेथे।

(२) उक्त जित्राजकी राजधानीका नाम शालपुरा था, और वह शालेन्द्रके नामसे कहे जातेथे, पर उनका असली नाम नहींहै, शालनगरके अधीश्वर होनेसे ही शालेन्द्रशब्द प्रयोग कियाहै। यह शालपुरी किस स्थानमें थी? कर्नेल उसके विषयमें लिखतेहैं कि, संवत् १२०७ में अनहलवाडेके नरपति कुमारपाल जो कोटिन स्तंभ स्थापन करगये थे, कर्नेल टाड उसके विचारसे जानतेहैं कि, यह शालपुरी पंजाबके "[illegible]" पर्वतमूलमें स्थापित थी। कर्नेल टाड इस उक्तिके प्रमाणमें [illegible] अनुवाद यथा[illegible] (२५ [illegible]) में [illegible] कहतेहैं कि, डि॰ [illegible] (D. Guegnie.) लिखतेहैं कि, [illegible] पर होकर, [illegible] अधिकार करलेनेपर [illegible] शालपुरीको [illegible] है। [illegible]

मोहम्मदी वर्ष ६६२, विक्रमाब्द १३२०, श्रीमत वल्लभी संवत् ९४५ (१) और शिवसिंह संवत् १५१ रविवार त्रयोदशी १३ आषाढ ।

असंख्य नरपतियोंके द्वारा वन्दितअलपुर पत्तनके अधीश्वर चालुक्य जातीय भातरिक श्री अर्ज्जुनदेव (२) उनके प्रधानमंत्री श्रीमालदेव, राज्यके सम्पूर्ण कर्मचारियोंके साथ और अमीर रुकनुद्दीनके शासकदेशके कर्म्मचारी विनाकुलके हरमुज और नाखोदा नूरउद्दीन फीरोजके पुत्र हरमुजेर ख्वाजा इब्राहीम और पालक देव, रामणिक श्रीसोमेश्वर देव और भीमसिंह जातिके चार सामन्त और समस्त चौरा तथा अन्यान्य सब जातिके सब श्रेणीके लोगोंके एकत्रित होनेपर,–

देवपत्तन निवासी चौराजातीय नानसिराज सब वणिकको (३) एकत्रित करके, देवालयोंके संस्कार और मूर्तियोंकी सेवाके निमित्त यह विधि निर्द्धारित करते हैं कि, जो पुष्प, तेल और जल नियमित रूपसे रत्नेश्वर,(४) चौलेश्वर,(५)पालिन्दा देवीके (६) मन्दिरमें और अन्यान्य मूर्तियोंके मन्दिरोंमें देने होंगे तथा सोमनाथके मन्दिरके चारों ओर ऊँचा परकोटा और उत्तरांशमें तोरण वनवाना होगा। चौराजातीय मदोलाके पुत्र कीलनदेव और जवानके पुत्र लुनासि, वालजी तथा करुणानामक दो वणिक उस कार्यके साधनार्थ व्योपारकी सम्पूर्ण साप्ताहिक आमदनी देनेकी प्रतिज्ञा करते हैं जबतक चन्द्र सूर्य उदित रहेंगे, तवतक यह प्रतिज्ञा स्खलित न होगी । जिससे यह आज्ञा पालित हो और पर्वोत्सवके समय जिससे नियमित पूजाका उपहार दियाजाय, और इसके सिवाय धनादि और उपहार द्रव्य जिससे प्रथमोक्त उद्देशसाधनके लिये धनागारमें रक्खाजाय, उसके प्रति दृष्टि रखनेके लिये फीरोजको आज्ञा दीगई । एकत्र उपस्थित चौरा सामन्तवर्ग

कियाथा और जिस वंशके नरपतियोंने शत्रुओंके सब देश अपने अधिकारमें कर लिये थे, यह वही सूर्य्य वंशधर हैं। (३) होम यज्ञादिके द्वारा यह नरेश्वर पवित्र हुए थे, इनका राज्य परम रमणीय तथा तक्षका दुर्ग भी अजेय है। इनके धनुषकी टंकारसे सब ही महा भयभीत होतेथे यह क्रुद्ध होनेपर महा समराग्नि प्रज्वलित करदेते थे, किन्तु मोती जिस प्रकार गलेकी शोभा बढाताहै; अनुगत लोगोंके प्रति इनका आचरण भी वैसा ही था, लाल तरंगोंसे समरक्षेत्र रंगनेपर भी यह संग्रामसे नहीं हटते थे। प्रचण्ड मार्त्तण्डकी प्रखर किरणोंसे पद्मिनी जिस प्रकार मस्तक नवाती है, उसी प्रकार इनके शत्रुदल इनके चरणोंपर नवते थे, और भीरु कायर लोग युद्ध छोडकर भागते थे।

इन राजा शालेन्द्रसे दोगलाकी उत्पत्ति हुई, आज इतने समयके पीछे भी उनका यश सर्वत्र फैला हुआ है।

इनसे शम्बुकने जन्म लिया। शम्बुकके औरससे देगालीने जन्म लिया। उन्होंने यदुवंशकी दो कन्याओंके साथ विवाह किया था। (४) उनमें एकके गर्भसे प्रफुल्लित कमलकी समान वीर नरेन्द्र नामक पुत्रने जन्म लिया था। आमके कुञ्ज अर्थात् जिन आमके वृक्षोंकी खिली हुई मञ्जरीमें सहस्रों मधुमक्खिका विराजमान हैं जिन वृक्षोंके नीचे थके हुए यात्री आनकर विश्राम करते हैं उन आमके वृक्षोंकी कुञ्जमें यह मन्दिर स्थापित हुआ, जबतक समुद्रकी तरङ्गें बहैंगी, और जबतक चन्द्र, सूर्य्य और पर्वतमाला विराजमान रहेगी, तबतक मानो इस मन्दिर और मन्दिर प्रतिष्ठाका यश फैला रहेगा। ५९७ संवत नातिर्की नदीके तटपर मालवमेंके शेष सीमान्तमें वीरचन्द्रके पुत्र शालिचन्द्रके द्वारा (५) मन्दिर प्रतिष्ठित हुआ।

और नाखोदा नूरुद्दीनके प्रति यह आदेश दियागया कि, वह सब श्रेणियोंके ऊपर इस आज्ञाको प्रबल करनेका यत्न करें । जो लोग इस आज्ञाका पालन करेंगे उनको स्वर्ग मिलेगा और जो लोग इस आज्ञाका अनादर करेंगे, उनको निश्चय ही नरकवास मिलेगा ।

चौवीसवीं संख्या २४.

आइतपुरके ध्वंसावशेषमें मिलीहुई खोदित लिपि ।

संवत् १०३४ वैशाख मासके सोलहवें दिन नानकस्वामीने यह आवासमंदिर प्रतिष्ठित किया ।

आनन्दपुरसे विप्रकुलसंभूत महीदेव श्रीगोहादित्य आयेथे । उनसे ही गोह-जाति इस जगतमें सर्वत्र विख्यात और प्रबल शक्तिशालिनी हुई ।

उनके पुत्र [२] भोज [३] महीन्द्र (४) नागादित्य । (५) । शिला-दित्य । (६) । अपराजित । [७] महीन्द्र, पृथिवीमण्डलपर इनकी समान महाबली कोई भी न था । (८) कालभोज, सूर्य्यकी समान दीप्तिमान थे । (९) खुमान, यह बड़े वीर थे; उनके पुत्र (१०) भ्रातृपद, त्रिभुवनके तिलक थे, उनके औरससे उत्पन्न [११] सिंहजी, वीरव्रतातलक्ष्मी राष्ट्र (राठौर). जातिकी महालक्ष्मी उनकी रानी थीं, उनके गर्भसे जिन पुत्रने जन्मलिया उनका नाम [१२] श्रीउद्धृत । वह सागरपर्य्यन्त पृथ्वीका अधिकार करके उसके अधी-श्वर हुए । उनके औरससे हरियादेवीने जन्म लिया । उन हरियादेवीकी प्रशंसा हर्षपुरतक फैली थी । उनके गर्भसे महाबलवान एक वीरने जन्म लिया । उन वीरकी भुजामें जय लक्ष्मीने आश्रय लियाथा । वह वीर रणक्षेत्रमें अपने शत्रुओंको बिलकुल निर्मूल करदेते थे । वह परम सौभाग्यशाली और महापंडित थे । उनके पुत्र (१३) नरवाहन, चौहानजाति श्रीजाटजाकी कन्याके गर्भसे उनके एक पुत्रने जन्म लिया था । उनका नाम (१४) शालिवाहन, [illegible] ऊपर जिन राजा लोगोंके नाम लिखेहैं, वह सबही गुणवान थे । शालिवाहनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, उनका नाम, (१५) शक्तिकुमार । इस जगतमें इनकी समता कहां है ? इन्होंने त्रिभुवनजित * के [illegible]

[illegible]

अन्त्येष्टिक्रिया-हिन्दूवीर राजपूत लोग जैसा शवदेहका संस्कार किया करतेहैं, स्कन्दनाभवाले और शाकद्वीपवालोंके आचरण कियेहुए उस विषयके सम्बन्धमें प्रायः वैसाही वृत्तान्त पाया जाता है। इस अन्तिम संस्कारके साधन करनेके समय भिन्न२ जातिवालोंके बीचमें जैसा मेल देखा जाता है उससे स्पष्ट २ ज्ञात होताहै कि उक्त रीति भांति मनुष्य जातिके किसी आदिम वंशसे उत्पन्न हुई है, स्कन्दनाभीय उक्तविधिको जिसकालमें जिसप्रकारसे पालनकरतेथे उस समय वह उसही रूपसे उनके पौराणिक ग्रन्थोंमें वर्णित हुई है, अर्थात् जिस समय वह मृतक देहको जलाते थे वह काल "अग्नियुग" और जिस कालमें उसको पृथ्वीमें गाड देते थे वह काल "मेरुयुग" कहलाताथा।

स्कन्दनाभवालोंके प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखाहै कि वह पहले शव देहको जलाते नहीं थे पृथिवीमें गाड देते अथवा पर्वतकी कन्दरामें डाल देते थे। वोथेनकी शिक्षासे विशेष अवस्थाको प्राप्त हो वह लोग उस समयसे मृतक देहको जलादिया करते थे। कहतेहैं कि मृतकके अग्निसंस्कारके साथ उसकी विधवा स्त्री भी जल जाती थी हेरोडोटस कहता है कि यह सब पृथा शाकद्वीपसे वहां पर आई हैं।

सती होनेके सम्बन्धमें स्कन्दनाभके शैवी लोगोंमें और एक नई रीति फैली हुईथी। यदि मृतक पुरुषके बहुतसी स्त्रियें होती थीं तो सबसे पहली विवाहिता-स्त्रीहे उस मृतकके साथ जल सकतीथी। कहते हैं कि "वोथेनके साथ जितने महापुरुष गण स्कन्दनाभमें गयेथे. उनमेंसे एकका नाम वलदार था। उक्त वल-दारकी मृत्यु, होनेपर "नन्ना" नामक उसकी बडी स्त्री ही उनके साथ एक चिता पर भस्म हुई थी"। परन्तु क्रम क्रमसे स्कन्दनाभवाले इस रीतिपर अश्रद्धा करने लगे। मृतक देहको आगमें जलाकर उसकी प्रेतात्माको महा पीडा देना है ऐसा विचार उनके मनमें युक्ति सिद्ध माना गया तब वह लोग धीरे २ इस पृथाको छोडने लगे।

हेरोडोटस कहताहै कि शाकद्वीपके निवासी जब मरते थे तब उनके साथ उनके प्यारे घोडे जलाये जाया करते थे. और स्कन्दनाभके जिनमरते थे उनके साथ घोडे भी पृथ्वीमें गाड़ जाते थे। इस प्रकारके संस्कारका मूल कारण उनका यही विश्वास था कि विना घोडेके परलोकमें पैदल तो भगवान वोथेनके समीप नहीं पहुंच सकते हैं। स्कन्दनाभीय और शाकद्वीपवालोंके इस व्यवहारके साथ राजपूतलोगोंके अन्त्येष्टि विधानकी समालोचना का जावनो दोनोंमें बहु-

तभी एकता जान पडती है । आर्यवीर राजपूतलोग अपने अस्त्र शस्त्रसे सजधज कर उस शेष यात्राके लिये जाया करते हैं। उनका प्यारा घोडा भी उनके साथ २ जाताहै । यद्यपि वह घोड़ा जीवित ही भस्म नहीं किया जाता, तथापि उत्सर्ग करके पुरोहितको दे दिया जाता है ।

चिताकी जिस अग्निमें इसप्रकारका रूपलावण्य और वीरविक्रम भस्म हो जाता है । वह चिता जहां पर जलती है वह स्थान अतिपवित्र माना जाताहै। इस पवित्र स्थानके विषयमें सब जातियोंके बीचमें अनेक प्रकारके उपाख्यान कहेजाते हैं कहतेहैं कि उन पवित्र चितावेदियोंके भीतर भीमरूपवाली डाकनी शाकनी सदा रहती हैं । और जो कोई भाग्यहीन इच्छानुसार वहां पर चला जाता है, फिर उसका छुटकारा नहीं होता, वह भयंकर डायनें वसेही संहार करके उसके हृदयका रुधिर पिया करती हैं । राजपूत लोग वार्षिक पिण्डदान करनेके समय ही उन डायनोंके रहनेके पवित्र स्थानोंमें प्रवेश करते है ।और किसी समय वहां पर नहीं जाते ।

बहुधा सब देशोंके रहनेवाले मनुष्योंके मुखसे सुना जाताहै कि भयानक श्मशान भूमिमें प्रत्येक रात्रिको एक प्रकारका प्रकाश दिखाई दिया करता है । इस प्रकारके विषयमें स्कंदनाभवालोंके पौराणिक ग्रन्थोंमें लिखा है कि चौंसठ अपने आप ही घूमती हुई, उल्काओंकी अग्निसे अपने वीर उपासक गणोंके समाधिक्षेत्रको तस्कर भयसे रक्षा करतेहैं ।

स्कन्दनाभवाले । और जाक्षर्तासके किनारे रहनेवाले जितलोग सदासीर मृतक पुरुषकी भस्म पर ऊंची वेदिका बनाया करते थे । आर्यवीर राजपूत लोगोंका भी ऐसा ही वृत्तान्त पाया जाता है ।

अपने आधीन करलियाथा । यह भ्रातृपदकी समान सौभाग्यवान् थे । धनरत्नके कोषस्वरूप श्रीआइतपुरमें वह राजालोगोंसे वेष्टित होकर वास करतेथे । वह अपनी प्रजाके लिये कल्पवृक्षस्वरूप थे । इनके पैदल सैनिक असंख्य थे, उनका कोषागार अपरिमित धनसे पूर्ण था । उनके सौभाग्यचन्द्रकी किरणें स्वर्गतक पहुंचीथीं । अनेक स्थानोंके असंख्य व्यौपारियोंके आनेसे उनकी राजधानीने परम रमणीय मूर्त्ति धारण करी थी । उस राजधानीमें केवल एक ही अनिष्ट विराजमान था–अर्थात् अनुपम लावण्यमयी युवती कामिनियोंके प्रथम कटाक्ष उन राजाकी प्रजाओंका हृदय विद्ध करलेते थे ।

पचीसवीं संख्या २५.

महाराज कुमारपालने सोलंकी पंजावके अन्तर्गत शालपुरी जीतकर चित्तौरमें स्थित ब्रह्माके मन्दिरमें जो स्मारक लिपि खोदित करी थी, उसका अनुवाद ।

जो देवदेव महादेव समुद्रके जलमें शयन करके परम संतोष प्राप्त करते हैं, जिनके जटाजूटसे अविश्रान्त अमृत निकल रहा है, उन महादेवजी द्वारा आप सपरिवार रक्षित हो ।

जो चालुकजाति अतुल ऐश्वर्य्य बाहुबल सम्पन्न थी, जिस जातिमें बहुतसे गुणवान् वीर उत्पन्न हुएथे, वह चालुकवंशीय मूलराज इस जगत्के अधीश्वर थे। प्रकाशमान पद्मरागमणिकी समान उनके यशकी प्रभा पृथ्वीमंडलपर फैली थी और वह मनुष्यसमाजमें सुख और शान्तिकी वर्षा करतेथे । इस जगत्में उनकी तुलना कहां है ? यद्यपि उनके पूर्वपुरुषोंमें बहुतलोग महाबली थे; किन्तु उनकी समान कोई भी महादाता अथवा पवित्रचित्त नहीं था ।

बहुतवर्षके पीछे उस वंशमें विश्वविख्यात सिद्धराजने जन्म लिया । विजय प्राप्त धन रत्नोंसे उनका शरीर भूषित हुआ था. और उनकी यशोध्वनि पृथ्वीपर सर्वत्र प्रतिध्वनित हुई थी । उन्होंने अपने बाहुबल और सौभाग्यबलसे अक्षय, असीम धन रत्न उपार्जन कियाथा ।

उनके औरससे कुमारपाल देवने जन्म लिया । उन्होंने अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा और बाहुबलसे अपने सम्पूर्ण शत्रुओंको विच्छिन्न कियाथा । उनकी आज्ञा गंगा तक सब राजा मानते थे । उन्होंने शाकम्भरीके अधीश्वरको अपने चरणोंमें गिरनेके लिये विवश कियाथा । उन्होंने हिमाचलतक अपनी सेना चला करके.

तामें सन्देह करना पाप समझाजाय तो यह समझना तो बहुत ही कठिन होगा कि कला कौशल और विद्याओंकी उन्नति किस प्रकार हुई थी, और फिर यह जानना तो और भी कठिन होगा कि पिछले अवनत पुरुष उसमें संस्कार करसकें इससमयके धर्म्माचार्य पंडितोंकी पीढियोंसे यही इच्छा चली आती है, कि जो कुछ पुराना लिखा हुआ है हम उसके जानने योग्य बनें, और पिछले निर्माण किये हुए ग्रन्थोंपर भाष्य लिखें, उन भाष्योंपर सैकडों भाष्य लिखे जाचुके हैं, और उन्हीं पर बराबर लिखेजारहे हैं, यदि कोई उनमें सुधारका साहस भी करै तो उसे इस भेदको मनमें ही गुप्त रखना पडता है ये पुरानेधर्मग्रन्थोंका टीकामात्र करनेवाले हैं, इससे कुछ विशेष करैं तो उनपर धर्म विद्रोहकी आशंका आपडती है, परंतु इस प्रकारकी दशा सदा नहीं रही होगी।

हिन्दु सन्तानने भी दूसरी जातियोंकी समान विद्याओंमें धीरे २ ही पूर्ण उन्नति की होगी, और यदि हम उनको उन विद्याओंके आविष्कारका यशोभाजन न मानें और दूसरोंको उन विद्याओंका निकालनेवाला मानें तो इसके विरुद्ध होसक्ताहै, यह पिछले समयकी बनावट ही बुद्धिके निमित्त दासवत बन्धन है और इसके द्वारा सहजमे ही यह जान लिया जासक्ता है कि एक संगही विद्या और धर्मका अवरोध भारतमें हुआहै, बुद्धिकी सामर्थ्य और प्रवृत्तिपर इस प्रकारके धर्मका अवरोध किस प्रकारसे पडा होगा यह सहजमें अनुमान होजाता है, जहां ऐसा विषय है वहांकी विद्या किसप्रकार चिरस्थायी रहसक्ती है, वह अवश्य अवनतिको प्राप्त होगी, यदि हम इतना भी जानजांय कि यह धर्म कार्य्य - किससमयमें सर्वसाधारणके करनेका पेशा न रहकर पैतृक होगया (वंशावलियोंके देखनेसे इसबातका प्रमाण मिलताहै तो हम उस समयका अनुमान करसकेंगे जब कि विद्या उन्नतिके शिखरतक पहुंच चुकी थी।

झालपुरी नगरमें पहाडी अधिराजको प्राप्त कियाथा ।

छत्रकोटेश्वरके देवालयोंके मध्यस्थलमें सबसे ऊंची चोटीपर उन्होंने यह खोदित स्मारकलिपि स्थापित करी । कारण ? कि जिससे यह मूर्खोंके हस्तगत न होसके, इस कारण ही सबसे ऊंचे शिखरपर स्थापित हुई ।

निशानाथ जिस प्रकार पृथ्वीकी सुन्दरी कामिनियोंके निर्मल मुखमण्डल देखकर अपने शरीरके कलंक चिह्नोंके स्मरणसे लज्जित होते हैं, उसी प्रकार इस शिखरकी चोटीपर इस लिपिके प्रतिष्ठित होनेसे छत्रकोट लज्जित होताहै ।

संवत् १२०७ (तारीख और महीना लुप्त: होगयाहै) ।

[समाप्त]

दोहा ।

सीता लक्ष्मण भरतयुत, वंदों श्री रघुराज ॥
जिनकी कृपाकटाक्षसे, सिद्धहुए सब काज ॥
रिपुसूदन पदकमलगहि, वंदौं श्रीहनुमान ॥
भानुवंशको चरित यह, बरनो सुखद महान ॥ २ ॥
राजस्थान सुग्रंथको, प्रथमखण्ड अनुवाद ॥
हिन्दीभाषामें कियो, द्विज बलदेवप्रसाद ॥ ३ ॥
मेवाडेश्वरको चरित, युग युग वंश अपार ॥
रहे राज सुस्थिर सदा, जबतक जगसंसार ॥ ४ ॥
सेठ शिरोमणि सकलगुण–मंडित पंडित पाल ॥
वेंकटेश्वरयन्त्रपति, खेमराज गुणमाल ॥ ५ ॥
कियो प्रकाशित ग्रंथ यह, राजनीतिको सार ॥
पढैं सुनैं मन लाय जे, पावहिं मोद अपार ॥ ६ ॥
नन्द अंबुधि निधि इन्दुयुत, संवत शुभ मधुमास ॥
पूर्ण कियो शुभग्रंथ यह, सुजननको सुखरास ॥ ७ ॥

शुभमस्तु ॥

मुद्रक तथा प्रकाशक-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम् प्रेस-बंबई.

जिससमय सूर्य और चन्द्रवंशोंका आदिकाल था, उससमय नियत कुटुम्बोंमें धर्मगुरुका पद परंपरा सम्बन्धी नहीं था, किन्तु यह एक साधारण वृत्ति थी, और यह भी देखाजाता है कि इनजातियोंकी शाखा अपने क्षत्रियकृत्यको पूर्ण करके धर्मसम्बन्धी शाखा वा गोत्र आरंभ करनेमें प्रवृत्त हुई तथा उनके वंशवालोंके पुनः अपना क्षत्रियधर्म धारण करनेके वंशावलियोंमें उदाहरण मिलते हैं इक्ष्वाकुके दश पुत्रोंमेंसे तीन पुत्रोंके विषयमें लिखाहै कि वे संसारके व्यवहारोंको त्यागकर धर्मकार्यमें प्रवृत्त होगये, और इनमेंसे एक कानिनके विषयमें लिखागयाहै कि वह प्रथम पुरुष था, जिसने अग्निहोत्र ग्रहण किया, अग्निकी पूजा की एक दूसरे पुत्रने व्यापारमें मन लगाया, चन्द्रवंशी पुरूपोंके छः पुत्रोंमेंसे चौथेका नाम रहे [रय] था इसकी पन्द्रहवीं पीढीमें हारीत हुआ, यह अपने आठ भ्राताओंके साथ धर्मकार्यमें प्रवृत्त हुआ, इसीने कौशिक गोत्र चलाया जो ब्राह्मणोंकी एक शाखा कहातीहै ।

भरद्वाज नामक राजाके नामसे ययातिकी चौबीसवीं पीढीमें "भरद्वाज" नामक प्रसिद्ध गोत्र निकला, इस गोत्रवाले इससमय भी इसी नामसे विख्यात होकर राजपूत जातियोंके पुरोहित हैं ।

छब्बीसवें राजा मन्युके दो पुत्रोंने धर्मात्मा होकर प्रसिद्ध गोत्र स्थापन किये अर्थात् महावीर्य—कि जिनके सन्तान पुष्कर ब्राह्मण हुए और संस्कृति कि जिसकी सन्तति वेदपाठी हुई यह धर्मगुरुओंकी शाखा अजमीढके वंशसे बराबर विभक्त होती रही ।

मिसर तथा रोमन देशके पुरूषोंकी समान बहुत पुरातन समयसे सूर्योदयी नरपति राज्याधिकारके साथ साथ धर्माचार्यका कार्य भी करते थे, चाहे वह ब्राह्मण धर्मावलम्बी हों, चाहे बौद्धमतावलम्बी महाराज रामचन्द्रसे लेके

परिशिष्ट

अध्याय १.

राजपूत जातिकी वंशावली; पुराणराजपूतोंकी सीथिक (शक) जातियोंका सम्बन्ध निरूपण।



भारतकी मध्य और पश्चिम जातियोंका इतिहास संक्षेपसे लिखनेके प्रथम हम इस बातका निर्णय करना उचित समझते हैं कि उनकी उत्पत्ति कहांसे हुई है, वे किस वंशमें हैं, इस कार्यके निमित्त मैंने उदयपुरके महाराणाके पुस्तकालयसे उनके पवित्र ग्रन्थ पुराणोंको लेकर उन्हें पंडितोंके सामने रक्खा, इन सबका अधिष्ठाता पंडितवर यति ज्ञानचंद्र था, इसके द्वारा इन ग्रन्थोंसे सूर्य्य और चन्द्रवंशके महान् कुलोंकी वंशावली तथा इतिहास और भूगोल सम्बन्धी विषय छांटगये।

बहुधा पुराणोंमें इतिहास और भूगोल सम्बन्धी वृत्तान्तका अंश थोड़ा बहुत मिलताहै. परन्तु भागवत स्कन्द अग्नि और भविष्य इनमें मुख्य हैं, हिन्दुओंकी सृष्टिकी उत्पत्तिका वर्णन जिनेसिसकी उसी घटनासे आरम्भ होताहै जो सब जातियोंके इतिहासमें पाई जाती है, जो प्रलय मनु [नूह] ने देखी थी, यह मनु हिमालय पर्वतके निकट रहते थे, कृतमाला नदीमें तर्पण करते समय मछलीसे संवाद हुआ और प्रलय उठी, इन मनुके पुत्र ककुत्स्थने अयोध्याका राज्य प्राप्त किया था।

मेरी समझमें हिन्दूलोग पृथ्वीके उत्तरी ध्रुवको सुमेरु कहते हैं परन्तु यह लोग इस नामका एक पवित्र पर्वत भी मानते हैं मेरुका अर्थ पर्वत और सु उपसर्गका नाम अच्छा है इससे सुमेरुका अर्थ पवित्र पर्वत है,

और पीछे वहुतसे राजाओंने अपने जीवनका विशेष समय तपस्वियोंके[1] समान व्यतीत किया था, इसीसे पुरानी मूर्ति और चित्रोंमें उन महीपतियोंके मस्तक योगियोंकी जटाओंकी समान राजमुकुटोंसे शोभित मिलतेहैं ।*

इन राजर्षि और महर्षियोंके संग वडे २ महाराजा अपनी कन्याओंका विवाह करतेथे, महावीर[2] पाँचालकी कन्या अहल्यागौतम ऋषिको व्याहीगई, यदुकुलकी वडी शाखा अर्थात् हैहयवंशमें उत्पन्न महिष्मतीके राजा सँहस्रार्जुनकी[3] पुत्रीसे महर्षि जमदग्निका विवाह हुआ था ।

हेरोडाटसके कहनेके अनुसार मिसरदेशमें धर्माचार्यको राजसिंहासन मिला करता था, कारण कि वे वावीरजातिके पुरुष ही पृथ्वीके स्वामी होसक्तेथे, और वलकनके पुजारीसे थोसने भी वीर जातिकी पृथ्वी छीनकर विद्रोह उपस्थित करदिया था ।

जमदग्निसे आरम्भकर महाराष्ट्र पेशवातक ब्राह्मणोंके युद्धके वहुतसे उदाहरण भारतवर्षमें राज्य अधिकारके निमित्त मिलतेहैं, मिथलाके महाराज जनक जिन राँजर्षि विश्वामित्र और वशिष्ठजीको पूज्य जानकर उनके आगे हाथ जोड

---

१ मेवाडके राणा इस समय भी राजकाजके साथ धर्माचार्यका काम करतेहैं जब वे अपने कुलदेव एक लिंगजीके मंदिरमे जातेहैं, तो उसदिन मुख्यपुजारीका सब कार्य अपने हाथसे करतेहैं, यह सादृश्यता सब प्राचीन जातियोंमें अवतक पाई जातीहै ।

*- चौथेपनमे राजोंको वनमे जाकर तपस्या करना धर्मशास्त्रमें लिखाहै इसमें धर्माचार्यता नहीं हुई (अनुवादक)

२ पंजाब–सिन्धुके पूर्वकी पाँच नदियोंके देशका राजा ।

३ इस राजाने अपने जामाता वशिष्ठकी गौ हरण की थी जो रामायणमें दूसरी प्रकारसे वर्णन कियागयाहै, और जमदग्निके पुत्र परशुरामने अवतार लेने और क्षत्रियोंके नष्ट करनेकी ऐसे अलंकारसे लिखीहै जिससे स्पष्ट होताहै ब्राह्मणोंने पृथ्वीको पवित्र गौरूपसे वर्णन कियाहै, पर कि ब्राह्मणोंकी सामर्थ्य क्षत्रियोंसे राज्य लेलेनेकी हुई, तब इससे जाना जाताहै कि यह युद्धोंमें कितने अधिक होगये थे ।

शालपुरी नगरमें पहाडी अधिराजको प्राप्त कियाथा।

छत्रकोटेश्वरके देवालयोंके मध्यस्थलमें सबसे ऊंची चोटीपर उन्होंने यह खोदित स्मारकलिपि स्थापित करी। कारण? कि जिससे यह मूर्खोंके हस्तगत न होसके, इस कारण ही सबसे ऊंचे शिखरपर स्थापित हुई।

निशानाथ जिस प्रकार पृथ्वीकी सुन्दरी कामिनियोंके निर्मल मुखमण्डल देखकर अपने शरीरके कलंक चिह्नोंके स्मरणसे लज्जित होते हैं, उसी प्रकार इस शिखरकी चोटीपर इस लिपिके प्रतिष्ठित होनेसे छत्रकोट लज्जित होताहै।

संवत् १२०७ (तारीख और महीना लुप्तः होगयाहै)।

[समाप्त]

दोहा।

सीता लक्ष्मण भरतयुत, वंदों श्री रघुराज ॥
जिनकी कृपाकटाक्षसे, सिद्धहुए सब काज ॥
रिपुसूदन पदकमलगहि, वंदों श्रीहनुमान ॥
भानुवंशको ... यह, वरनो सुखद महान ॥ २ ॥
राजस्थ ... प्रथमखण्ड अनुवाद ॥
हिन्दी ... प्रसाद ॥ ३ ॥
... ॥
... ॥ ४ ॥
सेट ...
वेंकटेश्वर ...
कियो प्रका ...
पढैं सुनें मन ... ॥
चन्द्र ... अंक ... ॥
यों कियो शुभग्रंथ यह ... गुणगान ॥ ७ ॥

... सुमस्तु ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास

बहुतसी जातियोंने अपने मूल स्थानके नियत करनेमें जहाँसे कि उनका निकासहै बडी अभिलाषा कीहै, और इस ऊंची मध्यभूमि वा एशियाकी मध्यदेशकी अपेक्षा ऐसे बहुत थोडे सुन्दर स्थान होंगे, जहांसे आमू आक्सस जेहून और दूसरी नदियें निकली हैं और जिसके मध्यमें सूर्य्य और चंद्रवंशके पुरुष उस पर्वतके होनेका विश्वास करते हैं जो उनके आदिपुरुषके नामसे पवित्र गिनाजाता है, और जहाँसे चलकर पूर्वकी ओर उनका आगमन हुआ है।

राजपूत जातियें भारतके गरम मैदानोंमें साथियन जातिसे मिलते हुए अपने कितने एक स्वभाव और असत्य विश्वासोंको कठिनाईसे प्राप्त करसक्ती थीं।

—आर्य्यावर्त * लिखाहुआहै, और यह बृहत् इमास उसके उत्तरकी सीमा है तो अवश्य उसको अपना अराण्ट् स्वीकार करलेते।

काकेशशको हिन्दूकुश वा इन्दूकुश (कोह) कहतेहैं, जिसका अर्थ चन्द्रका पर्वत होताहै।

१ मेरुका अर्थ पर्वतकाहै, यथा जैसलमेर शब्दमे (जो पश्चिम मरुदेशमें भाटी राजपूतोंकी राजधानीहै) जैसलका पर्वत यह अर्थ होता है। मेरवाडा पहाडीदेश और उसके रहनेवाले मेर अर्थात् पर्वतनिवासी जाने जातेहैं, इसीप्रकार रामायण महाकाव्यके बालकाण्ड पृष्ठ २३६ मे एक पर्वती अप्सराका नाम मेरा लिखाहै जो मेरुकी पुत्री और हिमालयकी स्त्रीथी, जिसके गंगादेवी और पार्वती अप्सरा यह दो कन्या जन्मीं महाभारतमें यह शैलकी पुत्री लिखीहै शैल हिमालयका दूसरा नामहै, इसी कारण पर्वत मूलवाली नदियोंको संस्कृतमें शैलेती वा शैलोदका कहते हैं शैलाके गुण एशिया माइनरके एक देश फ्रिगियाके मनुष्योंकी सायबेली (जुपिटरकीमा) से मिलतेहैं वह भी इसी नामके पर्वत सायबालकी कन्या थी, शैला सिंहपर चढतीहै, सायबेलीके रथमें सिंह जुताहोताहै, इसीप्रकार यूनानियोंने पर्वत पामीरको परोपमिसन लिखाहै, और उन्होंने यह नाम कामिरके पश्चिम ओरके पर्वत हिन्दूकोह (हिंदूकुश) का रक्खा था परन्तु पर्वतपति पामीरको चन्द्रनामक कविने उस देशमें महापुरुषमें होना लिखाहै, जिसकी तराईमें दिल्लीपति पृथिवी राजका सामन्त हमीर निवास करता था, यदि यह परोपमिसन होता जैसा कि कई ग्रन्थकार अनुमान करतेहैं तो यहीं इसका नाम पडाहै उसके साथ अधिक संयोग मिलता कारण कि [illegible] और मेरुके समीप होनेसे उसका नामान्तर पर्वत वा पहाड होता, और परोप मिसन पुराणोंका निषध पर्वत व निषध पर्वत मानाजाता।

---

* आर्य्यावर्त [illegible] हिमालयके [illegible] भारतके समान मैदानोंको नहीं [illegible] देश वा [illegible] भूमि [illegible]।

[illegible]

[illegible]

कर निवेदन करते थे उससमयका स्मरणकर अब भी यहांके ब्राह्मणगणोंको–अधिकार और सत्कारकी बड़ी इच्छा रहती है ।

बहुत सी राजपूत जातियोंमें इसप्रकारका ब्राह्मणोंका सन्मान बहुत कमहै पूर्व प्रवृत्तिके कारण वे उनका बाहरी आदर करतेहैं जबतक उनको कोई भय वा प्रयोजन उनसे न आनपडै तबतक चारण और भाटोंकी अपेक्षा भी उनका सन्मान कम करतेहैं ।

गाधिपुरके नरेश विस्वामित्र और ब्राह्मण कुलकमलदिवाकर वशिष्ठजीकी कथा जो वाल्मीकिरामायणके बालकाण्डके कितने ही अध्यायोंमें लिखीगई है, अलंकारकी ओटमें अधिकारके निमित्त ब्राह्मण और क्षत्रियोंमें संग्राम होनेका उदाहरण बताती है, उससे वर्णव्यवस्थाके स्थिर होनेका समय भी विदित हो सक्ताहै, यदि हम उसके अलंकार भागको छोड़दें तो यह कथा उस समयको बताती है जब कि वर्णव्यवस्थाकी दशा अपूर्ण थी, और युद्धकी प्रबलतासे हम-यह फल निकाल सक्ते हैं कि क्षत्रियोंको ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेका यह अन्तिम समय था ।

यह विश्वामित्रजी कौशिक वंशी गाधिपुरके राजा गाधिके पुत्र थे और इक्ष्वाकुकी चालीसवीं पीढीमें उत्पन्न अवधके राजा अम्बरीषके समकालीन थे इससे भगवान रामचन्द्रसे दो सौ वर्ष पहले उत्पन्न हुए थे जिस वर्ण व्यवस्थाकी स्थिरताका हम प्रमाण करना चाहतेहैं वह इससे १४००० वर्ष प्रथम विदित होतीहै ।

यह वंशावली सिकंदरके समयमें विद्यमान थी, यदि इन बातका प्रमाण मिल-सकै तो बहुत काम सिद्ध होसकता है. पुराणोंमें लिखी हुई चन्द्रवंशकी उत्पत्तिकी कथा इस विषयकी साक्षीरूप है ।

महाभारत नामक वीररसात्मक बृहत्काव्यके निर्माता व्यासजी इन्द्रप्रस्थके राजा शान्तनु (हस्तिकुल) के पुत्र थे जो योजनगन्धा नामवाली एक धीवर कन्यासे जन्मे थे इस कारण यह अनौरस पुत्र थे वह शान्तनुके दूसरे पुत्र तथा उत्तराधिकारी विचित्रवीर्यकी पुत्रियों अर्थात् अपनी भतीजियोंके धर्मपिता वा शिक्षक नियत हुए थे ।

विचित्रवीर्यके कोई पुत्र नहीं था. उसकी तीन कन्याओंमेंसे एकका नाम पाण्डवा था और शान्तनुके कुलमें केवल एक व्यास ही पुरुष रहजानेसे उन्होंने अपनी भतीजी तथा धर्मपुत्री पाण्डवाको अपनी स्त्री बनाकर पाण्डुके पिता बने. पीछे जो पाण्डु इन्द्रप्रस्थका राजा हुआ ।

दूसरा अध्याय २.

वंशावलियें;–पुराणकथा;–राजा सम्बन्धी और धर्माचार्य सम्बन्धी गुणोंकी एकता;–यूनानी इतिहास लेखकोंकी पुष्टकीहुई पुराणसम्बन्धी कथाएँ।

इस समय हम भागवत तथा अग्निपुराणमें लिखीहुई इतिहास सम्बन्धी सूर्य औरचन्द्रकुलोंकी वंशावलीकी परीक्षा करतेहैं, इनमें पहला ग्रन्थ तो वंशकी गणना करनेसे विक्रमादित्यके ६०० सौ वर्ष पीछेतक पहुँचता है, जिससे विदित होताहै कि इस समयके ओरेधोरे ही इन ग्रन्थोंका दूसरा नवीन संस्कार हुआ होगा, वा उनपर टिप्पणी लिखीगईहोंगी पर हम किसीप्रकार भी इसको बनावटी नहीं मान सक्ते।

यद्यपि सर विलियम जोन्स, मिस्टर बेंटले और कर्नल विल्फर्डने इन वंशावलियों-का कुछ भाग एशियाटिक रिसर्चेजकी जिल्दोंमें प्रकाशित कियाहै, तो भी किसी पुरुषार्थीको केवल दूसरेकी खोज पर ही संतोष नहीं करना चाहिये, यदि वह मूल सोतेतक पहुंच सके तो उसको स्वयं खोज करनी चाहिये।

और यदि विवादकी बातोंको छोडकर यह स्वीकार करलिया जाय कि भारतवर्षके प्राचीन कुलोंकी यह वंशावली कल्पितहै तो भी यह मानना ही पडेगा कि यह कल्पना भी प्राचीन है. और पुराने लेखकोंकी जानकारी यही है, जातियोंके यथार्थ पुराने इतिहाससे पूरा परिचय प्राप्त करनेका दूसरा यह श्रेष्ठ उपाय है कि जिन घटनाओंसे वे जातिकुल विख्यात हैं उनका पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय.

इसमें संदेह नहीं कि पुराणोंमें जब कि वे प्रारम्भमें लिखेगये थे बहुत सा उपयोगी ऐतिहासिक विषय विद्यमान था, परन्तु जिससमय क्षेपक मिलानेवालों और टिप्पणीकारोंने स्वार्थवश उसमें निकृष्ट मिलावट की है तो उससमय थोडी हुई बातोंका भी उनमेंसे निकाल लेना कठिन होगयाहै, मैंने तो केवल इनके इन्हीं भागोंपरही ध्यान दिया है परन्तु हमारे योग्य पुरुषको खोज करनेमें

एरियनने इसकथाको इसप्रकार लिखाहै कि उस हर्क्यूलीजके बुढापेमें एक पुत्री जन्मी और उसके योग्य वर न मिलनेसे उस हर्क्यूलीजने * स्वयं उसके साथ अपना विवाह करलिया।

–व्यासजीका बडा सत्कार किया, उसके विदुरजी हुए, विचित्रवीर्यके कोई कन्या नहीं थी न व्यासजी उनके शिक्षक थे यह कथा साहित्यके बिगाडनेके अभिप्रायसे वा अन्यसम्प्रदायके द्वेषसे ऐसी लिखीगई है (अनुवादक)

पराशरद्वारा उसमे व्यासजी जन्मे। आनन्द रामायण और वाल्मीकिमे वाल्मीकिजी प्रचेताके पुत्र लिखेहैं, वह बालकपनमे लुटेरोके हाथ पडगये और वही काम करनेलगे, एक समय जब सप्तऋषियोंको लूटनेपर उतारू हुए तब उनके उपदेशसे इनको ज्ञान हुआ, और मरामरा जप कर सिद्ध होगये। ('प्राचेतसम्कल्मषम्' (अनुवादक)

* यह जातिवाचक शब्द हरिवंशी राजाओंके निमित्त है, परन्तु एरियनने इसका प्रयोग एक मुख्यपुरुषके समान कियाहै, जिस हरिकुलमें व्यासजी थे महाभारतके एक अंशमे उसका वर्णनहै

एरियनने थीब्ज़वालो और हिन्दुओंके हर्क्यूलीजकी × समानता प्रतिपादन कीहै और सल्यूकसके राजदूत मेगेस्थिनीजके लेखका इसविषयमे प्रमाण दियाहै, उसने लिखाहै कि हिन्दुओंके हर्क्यूलीज तथा थीब्ज़वालोके हर्क्यूलीजका वेश एकसाहै, विशेषकर शूरसेनदेशके निवासी उसकी पूजा करतेहैं जिनके अधिकारमे मथुरा और क्लसोबोरस दो बडे बडे नगरहैं।

डायोडोरसने भी कुछ २ हेरफेरकर इसीकथाको लिखाहै, उसने लिखाहै कि हिन्दूजातिमे हर्क्यूलीज जन्मे यूनानियोंके समान वे भी उसको दण्ड और व्याघ्रचर्मका धारणकरनेवाला बताते हैं, उनका बल सबसे विशेष था, और पृथ्वीके सबराक्षस तथा हिंसक जीवोंको उन्होंने नष्ट करदिया था, उसके बहुतसे पुत्र और एक कन्या थी, कहाजाताहै उसीने पाली बोथा [पालटीपुत्र] नगर बसाया, और अपने पुत्रों [पलिके बेटों] को अपना सारा राज्य बाँटदिया, उन्होंने कभी कोई बस्ती नहीं बसाई, परन्तु समयान्तरमें सिकन्दरके आक्रमणतक प्रजातंत्र शासनप्रणाली का सा राज्य होगयाथा; जिन हर्क्यूलीजके संग्रामोंका उल्लेख डायोडोरसने कियाहै वे वही युद्ध हैं जो हरिकुलियोंने अपने पैतृक स्थानसे निकालेजाकर द्वादश वर्ष पर्यन्त वनवासके समय किये थे जिनका वर्णन कथाओंमे पायाजाता है।

और वह अबतक उनमें विद्यमान हैं यहां इतनी अधिक गरमी होती है कि वे पुरुष बडे उत्साहके साथ दक्षिणके मार्गसे आकर उत्तरके अर्धगोलेको खिलानेवाले भगवान भास्करका स्वागत प्रसन्नतापूर्वक कभी नहीं करसक्ते, यह धर्म विशेषकर शीतप्रधान देशोंका ही होसक्ता है, जिस धर्मको वे अपनी आदिजन्मभूमिसे लायेथे जहांसे जेहून [आक्सस वा आमूदरिया] और जेगजार्टिस [सेहन वा सिरदरिया] नदियें निर्गत हुई हैं, और यह विशेषरूपसे सम्भवहै, कि अश्वमेध वा घोडेका यज्ञ [सूर्यका चिह्न] नामक पर्वोत्सव अर्थात् बडा संक्रान्तिका त्योंहार जिसे सूर्यके पुत्र वैवस्वत मनुकी सन्तानि मानती थी, उसको सीथियन देशसे एक ही समय उनलोगोंने भारतमें लाकर प्रचलित किया, और ओडिन वोडन वा बुधके पुत्रोंने पश्चिमकी ओर स्कंडीनेविया में लेजाकर प्रचलित किया, जहां यह शीतसमयकी संक्रान्तिका हिएल वो हिउल नामक पर्व विख्यात हुआ, यह उत्तरकी जातियोंका एक बडा महोत्सव था, और ईसाई धर्मके आरम्भके समयमें इसके प्रचलित होनेका समय समीप होनेसे ईसाइयोंके आरम्भके पादरी इस घटनाके स्मरण रखनेके लिये इसको प्रसन्नतापूर्वक माननेथे ।

दूसरा अध्याय २.

वंशावलियें;–पुराणकथा;–राजा सम्बन्धी और धर्माचार्य सम्बन्धी गुणोंकी एकता;–यूनानी इतिहास लेखकोंकी पुष्टकीहुई पुराणसम्बन्धी कथाएँ।

इस समय हम भागवत तथा अग्निपुराणमें लिखीहुई इतिहास सम्बन्धी सूर्य औरचन्द्रकुलोंकी वंशावलीकी परीक्षा करतेहैं, इनमें पहला ग्रन्थ तो वंशकी गणना करनेसे विक्रमादित्यके ६०० सौ वर्ष पीछेतक पहुँचता है, जिससे विदित होताहै कि इस समयके ओरेधोरे ही इन ग्रन्थोंका दूसरा नवीन संस्कार हुआ होगा, वा उनपर टिप्पणी लिखीगईहोंगी पर हम किसीप्रकार भी इसको बनावटी नहीं मान सक्ते।

यद्यपि सर विलियम जोन्स. मिस्टर बेंटले और कर्नल विल्फर्डने इन वंशावलियों-का कुछ भाग एशियाटिक रिसर्चेजकी जिल्दोंमें प्रकाशित कियाहै, तो भी किसी पुरुषार्थीको केवल दूसरेकी खोज पर ही संतोष नहीं करना चाहिये, यदि वह मूल सोतेतक पहुंच सके तो उसको स्वयं खोज करनी चाहिये।

और यदि विवादकी बातोंको छोडकर यह स्वीकार करलिया जाय कि भारतवर्षके प्राचीन कुलोंकी यह वंशावली कल्पितहै तो भी यह मानना ही पडेगा कि यह कल्पना भी प्राचीन है. और पुराने लेखकोंकी जानकारी यही है, जातियोंके यथार्थ पुराने इतिहाससे पूरा परिचय प्राप्त करनेका दूसरा वह श्रेष्ठ उपाय है कि जिन घटनाओंसे वे जातिकुल विख्यात हैं उनका पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय.

इसमें संदेह नहीं कि पुराणोंमें जब कि वे प्रारम्भमें लिखेगये थे बहुत सा उपयोगी ऐतिहासिक विषय विद्यमान था, परन्तु जिससमय अनेक सिद्धान्तवालों और टिप्पणीकारोंने स्वार्थवश उनमें निकृष्ट मिलावट की है तो उससमय थोड़ी शुद्ध बातोंका भी उनमेंसे निकाल लेना कठिन होगयाहै. मैंने तो केवल इनके ऊपरी भागकी ही [illegible] है परन्तु हमारे योग्य पुरुषों [illegible] खोज करनेमें

जिससे भारतवर्षका राजगद्दीके निमित्त कोई पुरुष उत्पन्न हो उस कन्याका नाम पाण्ड्या था, और जिस ओर वह उत्पन्न हुई थी उसीके नामसे उस प्रान्तका नाम विख्यात * होगया।

यह वही पुराणोंकी गाथाहै जिसमें व्यासजी हरिकुलईश अर्थात् हरिकुलके मुख्य पुरुष थे, और उसकी धर्मपुत्री पाण्ड्याका उल्लेख है, जिनसे पाण्डुका महान् वंश प्रचलित हुआ जिससे दिल्ली और उसके आधीनके सम्पूर्ण राज्योंका नाम पाण्डुराज्य हुआ था।

उसकन्याके वंशधरोंने ईसासे ११२० वर्ष पूर्वसे लेकर ६१ वर्षतक इकतीस पीढीतक राज्य किया जब कि वहांके सरदारोंने अन्तिम पाण्डुवंशके महीपालको राज्याधिकारके सब कार्योंमें असावधान देखकर उसके विरुद्ध विद्रोह उपस्थित करके उसी कुलके सम्बन्धी एक सैनिक मंत्रीको राजा चुना, पाण्डु राजाके पदच्युत होने तथा परलोकगामी होनेपर वहां नये वंशका प्रवेश हुआ।

इसप्रकार सैनिक मंत्रियोंके + राज्य अतिक्रमण करनेके कारण राजा विक्रमादित्यके समयतक दो दूसरे वंशोंने राज्य किया, उसके साथ युधिष्ठिरके संवत् और पाण्डवोंके राज्य इन दोनोंकी समाप्ति होगई।

–शाखा विशेष है, जिसका अवसर आनेपर अलंकार भाग छोडकर वर्णन होगा, जिनको एरियनने प्रासी बताया है, वे पुरुराजाके वंशमें होंगे, उनका उत्पत्तिस्थान उनके इतिहासके अनुसार प्रयाग जानाजाताहै, जो इससमय इलाहाबाद भी कहाताहै और जिसका नाम इरनबोअस है वह यमुना होगी जहॉ गंगा यमुना मिलतीहैं, प्रासी (प्रासी) पुरुओंकी वह राजधानी हम मानते हैं।

* पाण्ड्याके नामसे देशकी प्रसिद्धि भी मनमानी यहतहै यूनानी भारतके इतिहाससे सर्वथा अनभिज्ञ थे इससे उन्होंने मनमानी बातें लिखदीहैं, उनके साथ पुराणादि कथाओंकी सादृश्यता किसप्रकार होसकतीहै जैसे विचित्रवीर्यकी कन्याओंका कहीं उल्लेख नहीं इसीप्रकार शान्तनुका पाण्ड्या देश नहीं यह तो दक्षिणके एकदेशका नामहै। बहुत क्या यह सारी कथाएँ मनगढन्तहैं। इसीप्रकार आगे इरनके अवको यमुना बताया है वह हिरण्यबाहु अथवा अरभ्रंश और स्वर्णनद (सोनभद्र) का नाम होसकता है जो पहिले पटनेसे कुछ दूर गंगामें गिरती थी (अनुवादक)

+ जितने भारतवर्षके महाराजे या उनके सम्बन्धी होनेका नियम लोगमानते उसका यह [illegible] ही उदाहरण नहीं है. [illegible] दूसरे दो उदाहरण मिलतेहैं, [illegible] पिताके [illegible] हैं।

([illegible] परन्तु [illegible] एक [illegible] उसके [illegible]–

जब उत्तरकी ओरसे भारतकी राजधानी उठकर दक्षिणमें नियत हुई तब विक्रमके ८०० संवत्‌तक वा कितने एक ग्रन्थकारोंके लेखानुसार ८०० संवत् तक दिल्लीमें कोई राजा न रहा. इसके पीछे अपनेको पाण्डवोंके वंशमें माननेवाली राजपूत तुवर जातिने फिर युधिष्ठिरके सिंहासनपर अधिकार किया. और इसी समय यह प्राचीन इन्द्रप्रस्थनाम देहली वा दिल्ली नामसे विख्यात हुआ. और इसके पश्चात् स्थापन पहले अनंगपालका वंश बारहवीं शताब्दीतक स्थिर रहा. इसके पश्चात इसने अपने धेवते भारतके अन्तिम राजपूत सम्राट पृथिवीराजको अपना सिंहासन सौंपदिया, जिस महाराजके पराजय होनेपर भारतमें मुसल्मानोंका प्रवेश हुआ।

इस खान्दानकी पूर्ति भी एक नाममात्रके बादशाहके साथ होगई और इससमय नैऋत्य पश्चिम ओरके बडी दूरसे आये हुए वीरपुरुष ही पाण्डु तथा तैमूर राजसिंहासनके अधिकारी हैं।

जो कुरु और इल्वाके वंशधरोंने बनवाये थे इन्द्रप्रस्थके वे स्मारकचिह्न पाण्डवोंके लौहस्तम्भ जिनकी नींव पातालतक पहुंची है जो स्वतन्त्र विजयके स्मारकमें बनाये गये थे. और जिनके लेख इस प्रकारकी लिपिमें हैं जो इस समय

जो वे समय २ पर भक्तिके साथ इन वस्तुओंको प्रणाम किया करतेहैं। अपनी तलवार हाथमें लेकर शपथ करते हैं शाकद्वीपके जितलोगोंमें भी यह पृथा ठीक इसही भांतिसेहै। जिस समय जितलोगोंकी वलाग्निसे सम्पूर्ण यूरूप संताप पा रहा था। उस काल यह पृथा विशेषकर उन्नतिपर पहुँच गई थी। कहते हैं कि प्रचण्ड जित वीरोंने अटिला और एथेन्स नगरमें महाधूम धामके साथ अपने अस्त्रशस्त्रादिकोंकी पूजा की थी। महात्मा गिवनने अपने वनाये इतिहासमें इस विषयका अतिमनोहर चित्र खींचाहै; परन्तु यह इतिहास लेखक यदि राजपूतोंकी खड्गपूजाको देखता तो नहीं कहा जा सक्ता कि उसका चित्र गुणमें कितना मनोहर व हृदय ग्राही हुआ होता।

अश्वमेध-चराचर जगत्में ऐसी वहुत ही कम वस्तुयें देखनेमें आतीहैं जो कभी न कभी मनुष्य जातिकी पूजनीय न हुई हो; सूर्य, चन्द्रमा, ग्रहमंडल, खड्ग, नद. नदी, पाषाण, सर्प, सरीसृपादि और गौ इत्यादिक पशुगण भी एक समय मनुष्य जातिके द्वारा पूजे गयेहैं। परन्तु गवादि पशुगणमें अश्वके समान और कोई जन्तु भलीभांतिसे पूजित नहीं हुआ यह अश्व केवल विभिन्न पूजाका पदार्थ ही नहीं माना जाता था वरन इसके साथ और भी एक महान् पदार्थकी पूजा हो जाती थी इस पदार्थका नाम सूर्यहै।

ऊषाकी सुषमामय गोदको त्यागकर रात्रिके अन्धकारको दूर करके जिसदिन तेजपुंज भगवान् मरीचिमाली अज्ञानान्ध मनुष्यके आंखोंके सामने प्रकाशित हुए उस दिन उनका वह प्रकाशमानतेज उनकी वह विराट्मूर्ति निहार कर मनुष्य विस्मय आनन्द और भक्तिके रसमें मग्न हो गया। उसी दिनसे सूर्यभगवान्को अपना देवदेव और जगतका ज्ञानरूप समझ कर पूजा करने लगा। तदोपरान्त जिस.दिन उस मनुष्यके ज्ञाननेत्र खुलगये—उसही दिनमें वह समझने लगा कि सूर्यसे ही दिन, रात, शीत, ग्रीष्म, वर्षा और शरदादि ऋतुयें उत्पन्न होतीहैं. जीव-जन्तु. वृक्ष लता आदि उत्पन्न होते और पुष्टिपातेहैं उसही दिन उसका विस्मय दूर होगया उसके हृदयमें आनंद और भक्तिरस उमड पड़ा और सहसा ऊंचे स्वरसे बोल उठा "जो महापुरुष जगतके सविता (हर्त्ताहैं) जो हमारी बुद्धिवृत्ति प्रेरणा करतेहैं हम उनके वरणीय तेजका ध्यान करतेहैं" फिर तो कान्तार (तातार) के मैदानों लिवियाके जलते हुए रेगिस्तानों पारसके घने पर्वतों. गंगाके किनारों और अरनी नोकोंके विशाल महावन आदि सभी स्थानोंमें सूर्यदेवकी समानरूपसे पूजा होने लगी।

जिसदेशके लोगोंका जैसा आचार व्यवहार जैसी रुचि और जिस प्रकारकी रीति नीति थी. उस देशके पुरुष उसीरीतिके अनुसार सूर्यदेवकी स्तुति और पूजा करने लगे. एशियाके बलपूजक और ब्रिटेन तथा गालके बलीनसदेवके उपासना करनेवाले अपने उपास्यदेवके संतोषके निमित्त नरबलि उत्सर्ग पूर्वक भयंकर नरमेध यज्ञका अनुष्ठान किया करते थे. उसमें यह बंधुजनोंकी बलिभी कर देते थे. इस ओर मिथांस पूजक बेबिलोनके लोग बल. और गंगा तथा जाह्नवीके किनारेके सूर्योपासक आर्य तथा जित अश्वका उत्सर्ग कर अपने उपास्यदेवकी प्रीति लाभकरतेथे, इसस्थान पर यह भी अवश्य जान लेना चाहिये कि एशियाके बल. ब्रिटेन और कालके बलीनस, बेबिलोनोंके मिथांस यह समस्त भगवान सूर्यके ही भिन्न नाम हैं।

जित अश्व स्कन्दनाभीय और राजपूत गण यह सब भिन्न २ देशीय और भिन्न २ जातीय होनेपर भी इस महोत्सवको एक ही समय किया करते थे. शास्त्रके अनुसार यह समस्त जातियोंके उत्सवका समय प्रसिद्ध 'शीतसंक्रान्ति' है।

हिंदू वीरराजपूत लोग जिस महाआडम्बर और उत्तम विधिके अनुसार उक्त अश्वमेध यज्ञको किया करते थे। उसका वृत्तान्त भगवान वाल्मीकि और भगवान व्यासजीके अमृतमय महाकाव्यमें भलीभांतिसे पाया जाता है। जिसदिन अन्तिम वीर पृथीराजके नाश होनेके साथ २ भारतका नाश हुआहै। उसी दिनसे य जातीय महायज्ञ. भारतीय आर्य राजाओंके विस्मयकर वीराचारका प्रकाशमान उदाहरण भारतवर्षसे एक साथही लोप होगया है। अब इस बातकी आशा क रनेका कोईभी साहस नहीं होता कि कभी औरको फिर य वीरपूजा. विषाद रूप अन्धकार छाये निर्जीव भारतवर्षमें प्रचारित होगी!"

पढे नहीं जाते और उन प्राचीन नगरोंके खंडहर जो संसारके सबसे बडे नगरकी अपेक्षा भी विशेषकर भूमिको घेरेहुएहैं और जिनके बृहत् आकारसे बड़े दृढ किले और बुर्जोंके नष्ट होनेसे उनके नामतक मिटगये, जो संसारके बल तथा प्रतापकी क्षणभंगुरता दिखानेके लिये एक बडा दृश्य उपस्थित करते हैं, अब इन स्थानोंका अधिकारी ब्रिटिनहै परन्तु यह ब्रिटिन अपने इस राजके होनेवाले आगामी उत्तराधिकारीके निमित्त भी कोई चिह्न स्मारकरूपसे छोडेगा, कोई नहीं, इसके सिवाय जातीय उपकाररूपी अधिक चिरस्थाई रहनेवालाभी स्मारक चिह्नहै तथा और भी अनेक बातैं हमारे अधिकारमें हैं बहुतकुछ सत्त्व दियागयाहै. और आनेवाले अधिकारियोंको इसका फल प्राप्त होगा ।

–मैरस्ति निर्मिता ॥१ ॥ प्रतोल्या च वलभ्या च येन विश्रामितं यशः " यह तोमरोकी बसाई ढिल्ली फारसीवालोने देहली की, फरिस्ता कहताहै यहाँकी मिट्टी नरमहै, और ढीलीहै उसमें कठिनाईसे मेख दृढ गडतीहै, इसीसे उसका नाम ढिल्ली रक्खागयाहै, मोरीवंशके राजा अशोकके पाषाणस्तम्भ विजयस्तम्भ नहीं किन्तु धर्मस्तम्भ हैं १३५६ ई० के लगभग टोपरासे फीरोजशाह तुगलक लायाथा वही दिल्लीमे गाडदिये (अनुवादक)

१ कदाचित् शाहपुरको लोग अब न जान्तेहो मुझे एक बुर्जके खडहरसे उसके विस्तारका पता लगा यह कुतुबमीनार और हुमायूके मकबरेके मध्यमे है जब कि सन् १८०९ ई० मे मैंने चार महीनेतक अवधके वर्तमान शाहके पूर्वज सफदरजगके मकबरेमं निवास किया था जो वर्तमान दिल्लीसे कईमीलकी दूरीपर इन्द्रप्रस्थके खडहरोंमे है, जो खडहर देहलीतक बराबर चलेगयेहैं मैं अपने मित्र लफटिनेण्ट मेकार्टनी (जो अब संसारमे नहीं हैं और जिनका नाम बडी प्रतिष्ठाके साथ विख्यातहै) के साथ इस एकान्तस्थानमें गयाथा, यमुनाके आरम्भ अर्थात् शिवालक पर्वतमालासे कि जहांमे यह नदीपर्वतोंसे निकलकर भारतवर्षके मैदानोंमें प्रवेश करतीहै वहांसे जो नहरे निकलतीहैं उनकी नाप करनेके लिये ही हम दोनो नियत हुए थे यमुनाजीसे यह नहरें दोनो ओर जल लेतीहैं, और एक देहली नगरसे और दूसरी सामनेकी ओरसे फिर यमुनामें ही मिलजातीहैं ।

अग्निपुराणके एक लेखसे ऐसा पायाजाताहै कि इक्ष्वाकुके अधिष्ठातावाले सूर्यवंशी पुरुष मध्यएशियासे आकर भारतके बसनेवालोंमें सबसे पहलेके थे तो भी हमें चन्द्रवंशके आदि पुरुषको समकालीन मानना पडताहै, कारण कि ऐसा लेखहै कि उसने एक दूरदेशसे आकर इक्ष्वाकुकी भगिनी इलासे अपना विवाह किया।

चन्द्र वंशकी वृद्धि करनेवाले कृष्ण और अर्जुनके वंशधरोंका वृत्तांत लिखनेसे पहले हम उनके पुरुपाओंके बसाये हुए मुख्य २ राज्योंपर प्रथम विचार प्रगट करेंगे और पश्चात् उनके वंशधरोंका वर्णन करेंगे।

और उनके मामा कंसतक पहुँचकर समाप्त होजातीहै, ययातिसे लेकर ५७ और ५९ पीढियां होती हैं, और युधिष्ठिर [दिल्लीपति] शल जरासंध वृहद्रथतक जो सबही श्रीकृष्ण तथा कंसके समसामयिक थे, उनके एक ही वंशधर ययातिसे क्रमानुसार ५१ । ४६ । और ४७ पीढियाँ होती हैं, सूर्यवंश और चन्द्रवंशके यदुकुलकी शाखामें बडा भेद है, परन्तु यहां जो वंशावली दी गई है; वह मुझे प्राप्त हुई अन्यवंशावलियोंकी अपेक्षा बहुत पूर्ण है, जो वंशावली सर विलियम जौन्सकी दी हुई है, उसमें सूर्यवंशकी नामावलीमें ५६ और चन्द्रवंशकी सूचीमें बुद्धसे युधिष्ठिर पर्यन्त ४६ नामहैं अर्थात् इसके साथ दी हुई वंशावलीमेंसे प्रत्येकमें एक २ नाम कम है, और जो प्रधान शाखा कृष्णजीके साथ समाप्त होतीहै, उसका नाम तो उसने दिया ही नहीं, सर विलियम जौन्सने और मैंने जो वंशावलियें भिन्न २ ग्रन्थोंसे संग्रह की हैं उनमें इतनी साद्दश्यता पाई जातीहै जिनके अवलोकनसे यह प्रतीत होताहै कि यह सब एकही विश्वास योग्य मूलस्थानसे प्रगट हुई हैं ।

मिस्टर बेंटलेने (एशियाटिक रिसर्चेज जि० ५ पृ० ३४१) में जो नामावली दीहैं वे सर विलियम जौन्सकी नामावलीसे मिलतीहैं, उनमें भी सूर्यवंशकी ५६ और चन्द्रवंशकी ४६ पीढियें लिखी हैं, परन्तु विशेष ध्यान करनेसे जाना जाताहै या तो उसने नकल उतारली है या दोनोंने एकही पुस्तकसे लिखी हैं, पीछे उसने कुछ नामोंको ऊंचे नीचे रखदियाहै, जिससे उसकी कल्पनाका प्रमाण मिलता है, परन्तु वह लेख इतिहास विषयक विश्वासके अनुकूल नहीं समझा जाता.

कर्नेल विल्फर्डकी लिखी हुई सूर्यवंशकी सूची तुच्छ है, परन्तु चंद्रवंशकी पुरु और यदुकुलकी दोनोंवंशकी सूची बहुत अच्छी है और जरासंधसे लेकर चन्द्रगुप्ततककी पुरुवंशशाखाकी प्रकाशित हुई सब नामावलियोंमें उन्हींकी अच्छी और शुद्धहै ।

हमको इस बातका आश्चर्य है कि विल्फर्डने सर विलियम जौन्सके लिखे सूर्यवंशके समयका निरूपण नहीं किया कदाचित वह श्रीरामचन्द्रको श्रीकृष्णके समयके निकटवर्ती कहनेमें डरगये. क्योंकि रामचन्द्रजीका होना [illegible] पुरुसे चार पीढी पहलेका निश्चित होताहै ।

हमको विश्वास है कि चंद्रवंशकी वंशसूची हमको पूर्ण नहीं मिली है और उस [illegible] की इसमें ऐसा ही विश्वास है और विल्फर्डने भी इसीको

अग्निपुराणके एक लेखसे ऐसा पायाजाताहै कि इक्ष्वाकुके अधिष्ठातावाले सूर्यवंशी पुरुष मध्यएशियासे आकर भारतके बसनेवालोंमें सबसे पहलेके थे तो भी हमें चन्द्रवंशके आदि पुरुषको समकालीन मानना पडताहै, कारण कि ऐसा लेखहै कि उसने एक दूरदेशसे आकर इक्ष्वाकुकी भगिनी इलासे अपना विवाह किया।

चन्द्र वंशकी वृद्धि करनेवाले कृष्ण और अर्जुनके वंशधरोंका वृत्तांत लिखनेसे पहले हम उनके पुरुषाओंके बसाये हुए मुख्य २ राज्योंपर प्रथम विचार प्रगट करेंगे और पश्चात् उनके वंशधरोंका वर्णन करेंगे।

चौथा अध्याय ४.

भिन्न २ जातियोंद्वारा राज्यों और नगरोंका स्थापित होना।

सूर्यवंशियोंने सबसे प्रथम अयोध्यानगरी बसाई जो बहुत [illegible] थी. इनके वंशका नाम आजतक प्रसिद्ध है और यह नाम इक्ष्वाकु [illegible] नामसाम्यसेही अधिकारी हैं, और जिस देशका [illegible] प्रायः वही सीमा थी जो सूर्यवंशियोंके पुराने राज्य कोशल की थी. [illegible] सब ही पुरानी राजधानी बड़े ऐश्वर्य सम्पन्न थीं. इनमें अयोध्याका [illegible] अधिक था. इस समय प्रसिद्ध लखनऊ नगर प्राचीन [illegible] में एक था जिसका नाम भगवान रामचन्द्रने अपने भाई [illegible] निमित्त लक्ष्मणपुर रक्खा था।

सर विलियम जौन्सकी वंशावलीके विषयमें इसकारण कहताहूं कि इसके सिवाय पूर्ण वंशावलीमें अनपृथु और उनकीमें अनेना और पृथु ये दो नाम हैं, फिर अठारहवें नाम पुरुकुत्समें केवल अक्षरोंका भेद है, मेरी सूचीमें इरीशौक (त्रिशंकु) का नाम २३ सवां है और जौन्सवालीमें छब्बीसवॉ है, एक.नामावलीका कारण तो ऊपर कह चुका हूं और इरिसदद्य और हयाश्व × यह दो नाम मेरी वंशसूचीमें नहीं है. इनके सिवाय हमदोनोंकी वंशावली एक सी हैं हॉ अक्षर मात्रामें अन्तर है, परन्तु विहारमें चंपापुरके बसानेवाले सत्ताईसवें राजा चंपके वंशानुयायियोंके विषयमें मैं सहमत नहीं हूं सर विलियमने सुदेवको चम्पका उत्तराधिकारी लिखा है, उसके पीछे विजयको राजा हुआ लिखा है, परन्तु जो प्रमाण मुझे मिलेहैं उनके अनुसार यह दोनों चम्पके पुत्र थे, जब सुदेव तप करने चलागया तब छोटे विजयने चम्पका राज्य पाया, जौन्सने ३३ और ३६ वें दो नाम केशी और दिलीप छोडदिये हैं, इसके सिवाय और भी एक वडे विख्यात अंबरीष राजाका नाम उसने छोड दियाहै, जिसका पिछले वंशके साथ वडा सम्बन्धहै, और जिससे पुरातन इतिहासकी समकालीनताका बहुत पता चलसकताहै, जो कन्नौज बसानेवाले गाधिका समसामयिक था, नल. सुरूर (सर्वकाम) और दिलीप मेरी वंशावली ४४ । ४९ । ५४ नम्बरपर है सर विलियम जौन्सने यह सब नाम छोडदिये हैं ।

इन बड़े वंशोंकी सूचीका मिलानकर जो वृत्तान्त लिखागया है वह संतोषप्रद होगा. ऐसी मुझे आशाहै, मेरी दीहुई नामावली उस राजपुस्तकालयकी वंशावली-से तथा पुराणोंसे उद्धृत कीगई है, जो अपनेको सूर्यवंशका वंशधर कहता है, जिसमें न्यूनाधिककी वहुत कम सम्भावनाहै, ऐसा कोई ही महाराज होगा जिनको अपने पुरुषोंकी वंशावली कंठ न हो, मेवाड़के महाराणा भीमसिंहकी स्मरणशक्ति इसमें विशेषहै इसका पेशा करनेवाले भाट और चारणोंने इन वंशावलियोंको अवश्य कंठ किया होगा. पहले वंशवृक्षमें सूर्यवंशमें होनेवाले अयोध्या-नरेश और मिथिला, तिरहुतवाली मैंने और कहीं नहीं पाई उसमें चंद्रवंशकी चार वडी और तीन छोटी शाखा भी लिखी हैं और यदु (इन्दु) वंशकी आठवीं शाखाको जेसलमेरके भाटियोंके इतिहाससे संग्रह कियाहै ।

इसप्रकार प्राचीनजातियोंके वंश इतिहासकी समालोचनाके पहले श्रीराम-चन्द्र, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरोंके मध्य हिन्दुओंके ज्ञानयुगकी समाप्ति और

× हेटी ।

इस समयके निकट ही इक्ष्वाकुके पोते मिथिलने मिथिलापुरी बसाई रोहतस और चम्पापुर इन दोनों राजधानियोंके पीछे बसे हैं, प्राचीन हैहयवंशकी एक छोटी शाखा इस समय भी नमर्दाके निकट बघेलखण्डके अन्तर्गत घाटीकी चोटीके निकट सुहागपुरमें विद्यमान है, यह अपनी प्राचीन वंशपरम्पराको नहीं जानते परंतु यह वीरतामें बडे प्रसिद्ध हैं।

भागवतमें लिखाहै कि इक्ष्वाकुके भाई आनर्तने कुशस्थली द्वारका बसाई, प्रयागराज जो गंगा यमुनाके संगम पर स्थित है, प्रासी पुरुष प्रयागके राजा पुरुके वंशधर थे, शकुन्तलाका विख्यात पति भरत भी प्रयागमें ही रहता था।

रामायणमें लिखाहै कि जब सूर्यवंशियोंसे हयहयवंशवालोंका युद्ध हुआ तो शशबिन्धी [यदुवंशियोंकी एक शाखा] पुरुष भी उनमें संयुक्त थे और इसी वंशमें चेदीका बसानेवाला शिशुपाल कृष्णके शत्रुओंमेंसे एक था शूरसेननामक दो राजा हुए हैं, इसमेंसे एकने शूरपुर बसायाहै।

---

१ सीता रामचन्द्रजीकी पत्नीके पिता कुशध्वज भी जनक कहलाते हैं, यह इस वंशका साधारण नाम है, जिसको मिथिलाके सुवर्णरोमा राजासे तीसरे राजाने ग्रहण किया था (सीताके पिताका नाम कुशध्वज नही सीरध्वज था) (अनुवादक)

२ बुधके हयहयवंशी लोग चीनजातिमे हुए पहले राजा लोगोसे अपना सम्बन्ध बताते हैं।

३ आनर्त इक्ष्वाकुका भ्राता नहीं किन्तु उनके भाई शर्यातिका पुत्र था, और कुशस्थली उसने नही बल्कि उसके पुत्र रेवतने बसाई थी।

४ भरत शकुन्तलाका पति नही किन्तु पुत्रहै, यहाँ ग्रन्थकर्ताने बडी भूल की है (अनुवादक)

५ शशबिन्धी शिशोदिया शब्दकी उत्पत्ति भी इसी शब्दसे कहीजातीहै (पुराणोमे इनको शशबिन्दु लिखाहै सिसोदा ग्राममें रहनेसे सिसोदिया कहाये) (अनुवादक)

६ चेदी राजधानी नही है, किन्तु जब्बलपुरके समीपके विस्तृत देशका नाम है जिसकी राजधानी त्रिपुरी थी जिसे अब तेवर कहतेहैं।

७ यह देश इससमय यमुनामे डूबगया है सन् १८१४में मैंने इसके शेषभागकी खोज की थी जिससे मुझे हर्ष प्राप्तहुआ, इसके एक भागमे तो वटेश्वरका पवित्र तीर्थस्थान है, उसकी खोजसे मुझे दूना आनन्द मिला, जब कि मैंने यूनानियोके कहे शूरसेन देशका पता लगाया, उस समय मुझे अपोलोडोटस नामक एक प्रसिद्ध राजाके समयका सिक्का मिला, जिसने सिन्धुके मुहानेतक और यह भी सम्भव होसकताहै कि यादवोंके राज्यके मध्यतक आक्रमण किया था, बाक्ट्रियाके नरेशोंकी नामावलीमे बेयरने इस नामका उल्लेख नहीं कियाहै, हमको भी उस वंशका वृत्तान्त अपूर्ण ही मिलाहै श्रीमद्भागवतमें×लिखाहै कि बाल्हिदेश वा बाक्ट्रियामें १३ यवन वा आयोनियन—

× भागवतमें १३ बाल्हीक राजाओंके नामहैं जो विधुनन्द और उनके भाई यशोनन्दीके पुत्र कहेगयेहैं स्कन्द० १२ अ० १ श्लो० ३३।३४ परन्तु उनसे पहले जहाँ यवनराजाओंके—

सर विलियम जौन्सकी वंशावलीके विषयमें इसकारण कहताहूं कि इसके सिवाय पूर्ण वंशावलीमें अनपृथु और उनकीमें अनेना और पृथु ये दो नाम हैं, फिर अठारहवें नाम पुरुकुत्समें केवल अक्षरोंका भेद है, मेरी सूचीमें इरीशौक (त्रिशंकु) का नाम २३ सवां है और जौन्सवालीमें छब्वीसवाँ है, एक.नामावलीका कारण तो ऊपर कह चुका हूं और इरिसदश्व और हयाश्व × यह दो नाम मेरी वंशसूचीमें नहीं हैं. इनके सिवाय हमदोनोंकी वंशावली एक सी हैं हॉ अक्षर मात्रामें अन्तर है, परन्तु विहारमें चंपापुरके बसानेवाले सत्ताईसवें राजा चंपके वंशानुयायियोंके विषयमें मैं सहमत नहीं हूं सर विलियमने सुदेवको चम्पका उत्तराधिकारी लिखा है, उसके पीछे विजयको राजा हुआ लिखा है, परन्तु जो प्रमाण मुझे मिलेहैं उनके अनुसार यह दोनों चम्पके पुत्र थे, जब सुदेव तप करने चलागया तब छोटे विजयने चम्पका राज्य पाया, जौन्सने ३३ और ३६ वें दो नाम केशी और दिलीप छोडदिये हैं, इसके सिवाय और भी एक वडे विख्यात अंबरीष राजाका नाम उसने छोड दियाहै, जिसका पिछले वंशके साथ वडा सम्बन्धहै, और जिससे पुरातन इतिहासकी समकालीनताका बहुत पता चलसकताहै, जो कन्नौज बसानेवाले गाधिका समसामयिक था, नल, सुरूर (सर्वकाम) और दिलीप मेरी वंशावली ४४ । ४९ । ५४ नम्बरपर है सर विलियम जौन्सने यह सब नाम छोडदिये हैं ।

इन वड़े वंशोंकी सूचीका मिलानकर जो वृत्तान्त लिखागया है वह संतोषप्रद होगा, ऐसी मुझे आशाहै, मेरी दीहुई नामावली उस राजपुस्तकालयकी वंशावली-से तथा पुराणोंसे उद्धृत कीगई है, जो अपनेको सूर्यवंशका वंशधर कहता है, जिसमें न्यूनाधिककी वहुत कम सम्भावनाहै, ऐसा कोई ही महाराज होगा जिसको अपने पुरुषोंकी वंशावली कंठ न हो, मेवाड़के महाराणा भीमसिंहकी स्मरणशक्ति इसमें विशेषहै इसका पेशा करनेवाले भाट और चारणोंने इन वंशावलियोंको अवश्य कंठ किया होगा. पहले वंशवृक्षमें सूर्यवंशमें होनेवाले अयोध्या-नरेश और मिथिला, निरहुतवाली मैंने और कहीं नहीं पाई उसमें चंद्रवंशकी चार बडी और तीन छोटी शाखा भी लिखी हैं और यदु (इन्दु) वंशकी आठवीं शाखाको जैसलमेरके भाटियोंके इतिहासमें संग्रह कियाहै ।

इसप्रकार प्राचीनजातियोंके वंश इतिहासको समाप्तकरनेके पहले श्रीराम-चन्द्र, श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरोंके साथ हिन्दुओंके द्वापरयुगकी समाप्ति और

× हैरी ।

अजमीढकी चौथी पीढीमें वाजरव (वाह्यास्व) राजा हुआ जिसके पांच पुत्रोंके नामसे देशका नाम पांचालिक पडा।[1]

कुशनाभने गंगाकिनारे जो नगर बसाया वह कन्नौज कहाता है, अब्बुल फजलने इसके लिये लिखा है कि प्राचीनकालमें यह नगर ३५ मीलके घेरेमें था, इसमें पान बेचनेवालेंकी ३०००० दुकानें थीं, छठी शताब्दीमें इसकी वडी शोभा थी, और यह नगरी पांचवीं शताब्दीसे राठौरोंके अधिकारमेंथी, जो अधिकार बारहवीं शताब्दीमें जयचंदके साथ समाप्त होगया, इसका विशेष वृत्तान्त चन्दकविके लेखसे विदित होता है।

कुरुके सुधनु और परीक्षित हुए, सुधुनुका वंश जरासंधके साथ जिसकी राजधानी राजगृह, इस समय जिसको राजमहल[3] कहते हैं, जो सूबे विहारमें गंगाके किनारे है समाप्त हुआ, परीक्षितके वंशमें शान्तनु और बाह्लीक हुए बाह्लीकके पुत्रोंने दो राज स्थापन किये गंगाके निचलेभागमें पालीवोथरा [पाटलीपुत्र] और शलने सिन्धु नदीके पूर्वी किनारेपर अरोर[4] बसाया।

ययातिके वंशकी एक बृहतशाखा जो उस वाउर वसुके नामसे विख्यात है जिसको दूसरे लेखकोंने तुर्वसु लिखाहै चली उसका वर्णन अभी शेषहै।

---

१ अजमीढ़की भार्या नीलासे पाँच पुत्र हुए जिनकी शाखाएँ सिन्धुनदीके दोनो किनारे फैलगई इनके तीन पुत्रोके विषयमे पुराणोने कुछ नही लिखा, जिस्से पायाजाताहै वे लोग कही दूरदेशको चलेगये, ऐसा भी हो सकताहै कि उन्हींसे मीड वंशकी उत्पत्ति हुई हो, मीढीलोग मनुके तीसरे पुत्र ययातिकी सन्तानहैं मीढियोका मूलपुरुष मेडाई जाफेटके वंशमे हुआ है, वाजस्व (वाजसनेई) शाखाके मूलपुरुष अजमीढका नाम अज अर्थात् बकरेके नामसे लिखागयाहै, बाइबिलमे असीरिया देश मीढीबकरेके नामसे उल्लेख कियेगये हैं।

२ पाँच पाँडव भ्राताओंकी स्त्री द्रौपदी इसी घरानेकी थी, यह अनोखी चाल सीथियादेशमे पाईजातीहै।

३ राजगृहको इस समय राजगिर कहतेहैं, पहले इसको गिरिव्रज कहतेथे; चीनीयात्री हुएन्सगने इसका नाम कुशाग्रपुर लिखाथा राजमहल इसका नाम नहीं है, इसनामका एक दूसरा शहर है बंगालदेशके सताल पर्गनेमे हैं।

४ अरोर वा आलोर पहले समय सिन्धदेशकी राजधानी था जो सिन्धुनदीकी एक शाखा दराके समीपसे निकली है, उसके ऊपरका पुलही सिकन्दरके समयकी सोगडीकी इस राजधानीका दबाकुचा चिह्नमात्र है, मरुस्थलके गडरियोंने अब उस स्थानपर एक बडी बस्ती बसाई है जो भक्खरके टापूसे सात मीलकी दूरीपर पूर्वकी ओर सिन्धुके बायकी पहुँचके बाहर सिटीमग जातिके भापणकी पराटीपर बसाई है। प्रमरवंशकी सोढानामक एक प्रबल शाखाके लोग बहुत पुराने समयसे इन देशोंके अधिकारी थे और बहुत समयतक उमरकोट और उमरसुमरा इनके अधिकारमें रहा, सिन्धदेशमें अरोर नगर था।

परशुरामके पराक्रमसे क्षत्रियजाति विनष्ट हुई उस समय उनके हाथसे सहस्रबाहुके पाँच पुत्र बचे थे, जिनकी नामावली भविष्यपुराणमें है ।

परस्पर स्पर्द्धा करनेवाले चन्द्र और सूर्यवंशके बीचमें कठिन संग्राम रहतेथे पुराण और रामायण इसके साक्षीहैं, भविष्य पुराणोंमें सगर और तालजंघके युद्धका वृत्तान्त है जिसमें हयहयवंशवालोंको इतनी हानि उठानी पडी जैसी उनके पुरुषाओंने सगरके पुरुषाओंके साथ युद्ध करके उठाई थी, परन्तु परशुरामजीके पीछे उन्होंने अपना बल फिर बढाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सगरके पिताको राजधानी अयोध्या छोडकर वनमें जाना पडा, यह सगर और तालजंघ हस्तिनापुरके राजा हस्ती और अंगदेश तथा अंगवंशके स्थापक बुधके वंशधर अंगके समकालीन पाये जातेहैं ।

एक और दूसरी समकालीनताका पता रामायण बताती है, वह यह कि सूर्यवंशके चालीसवें वंशधर अयोध्याधिपति महाराज अंबरीष कन्नौजके स्थापक महाराज गाधि और अंगदेशाधिपति महाराज लोमपादके समकालीन थे।

अन्तकी समसामयिकता श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरकी है जिनके साथ द्वापर युगकी समाप्ति और कलियुगका आरम्भ होताहै, परन्तु यह समसामयिकता चन्द्रवंशकी है, हम ऐसा कोई साधन नहीं रखते कि जिसके द्वारा सूर्यवंशके श्रीरामचन्द्र और चन्द्रवंशके श्रीकृष्णके मध्यका समय निर्णय होसके।

इसभाँति क्रोष्टाकुलका मथुरापति कंस बुधसे उनसठवां था और उसके भानजे श्रीकृष्णजी अट्ठावनमें पायेजातेहैं और पुरुकुलमें अजमीढ देवमीढके

१ सगरके पिता असित जब हयहय तालजंघ और शिशुबिन्धी राजाओंसे युद्धमें पराजित होकर हिमालयकी ओर दो रानियोंके साथ चलेगये थे और अपनी एक रानीको गर्भवती छोड परलोकवासी हुए. वहां उस गर्भवती रानीको उसकी सौतने विष दिया पर वह विष ऋषिके आशीर्वादसे कुछ न करसका, और गर (विष) सहित बालक उत्पन्न होनेसे उसका नाम सगर रक्खा, जब इसप्रकार सूर्यवंशको चन्द्रवंशद्वारा हानि उठानी पडी तब उनकी सहायताको परशुरामने [illegible] धारण किया, इससे स्पष्ट है कि सूर्यवंशी ब्राह्मण धर्मके माननेवाले थे, और चंद्रवंशी इसके विरुद्ध अपने [illegible] धर्मको मानतेथे और इसीसे सूर्यवंश [illegible] चन्द्रवंशोत्पन्न [illegible] [illegible]।

२ [illegible]

३ [illegible] ४१

द्रुह्युसे उत्तरदेशमें एक वंश स्थापित हुआ, कहाजाता है कि आरुद्वान और उसके पुत्र गांधारने राज्य स्थापन किया और प्रचेत म्लेच्छ वा असभ्य देशका अधिकारी हुआ।

भरतराजाकी स्त्री विख्यात शकुन्तलाके पिता दुष्यन्तके संग यह वंश पूर्ण होगया, जिसके विषयमें हिंदूजातिका कथन है कि कोई देवता उनसे अप्रसन्न होगया था, और उसीने इस वंशपर अनेक आपत्तियें डालीं।

दुष्यन्तके पोते केरलके विषयमें यही कहसकते हैं कि, वह बारहवीं शताब्दीमें होनेवाले छत्तीस राज्य वंशोंकी नामावलीमें नाम पाताहै पर इसकी राजधानी हमको विदित नहीं।

मालावारमें चौवोल (चोल प्रसिद्ध है)

जो दूसरी शाखा बभ्रुसे निकली वह भी प्रसिद्ध हुई, इसके चौंतीसवें राजा अंगने अंगदेशको वसाया, चम्पा मालिनी इसकी राजधानी थी, जो ईसासे १५०० वर्ष पहले कन्नौजके संग बसाई गई थी, उसके साथ इस वंशका नाम भी बदलगया, और यह लोग इतिहासमें अंगवंशी कहलाने लगे,

---

–बलिक (वाहीक) तथा इण्डोमीडिज अनेक शाखाओंके सिवाय कुरुके बहुतसे पुत्र भी इन देशोंमे फैलगये थे जिनमें हम पुराणमे लिखेहुए उत्तरकुरुको भी संयुक्त करसक्तेहैं, यूनानी इसको आटरी कुरी लिखतेहैं, जब सूर्यचन्द्रके अधिकृत प्रदेशोंमें जनसंख्या विशेष बढजाती थी तब वे अपने यहाँके मनुष्योंको उन दूरदेशोंमे सदाके लिये रहनेको भेजदेते थे और संभव है कि उस कालमे सिन्धुनदीके पूर्व पश्चिममे निवास करनेवाली इन जातियोंमे अनादिकालका एकही धर्म माना जाता हो।

१ टाड् साहबने यह बडे भ्रमकी बात लिखी है, शकुन्तलाके पिता दुष्यन्त नहीं किन्तु पति हैं, और भरत शकुन्तलाका वेटा है, शकुन्तलाका चरित्र तो बहुत विख्यात है टाड् साहबसे यह बडी भूल कैसे हुई [अनुवादक]

२ समुद्रकिनारेके चौवालसे जूनागढकी ओर जातेमे सात मीलपर एक प्राचीन नगरके खंडहर पायेजातेहैं [अनुवादक]

३ अंगदेशके स्थापन करनेवाले राजा अंगसे लोमपाद छठी पीढीमे था, इसने चम्पा मालिनी बसाई. राजा दशरथके यहाँ जानेकी कथा रामायणमे पाई जातीहै, जिससे वह पहाडी देश पायाजाताहै इसके सघन वन और नदियोंके कारण यात्रामे बडा कष्ट हुआथा, इससे अनुमान होता है कि, कर्नल फ्रैंकलिनने चम्पा मालिनी नामक स्थानवाले जिस बंगालभागको पाली बोथराके निबन्धमे लिखाहै और इसे अंगदेश मानाहै यह उनका कथन असंगत है (अनुवादक)

हमारी सम्मतिमे टाड्साहबका कथन असंगत है फैंकलिनका कथन सत्यहै–(अनुवादक)

वंशधर जरा, जरासंध, तथा युधिष्ठिर क्रमानुसार ५१। ५३। और ५४ में वंशधर होतेहैं।

अंगवंशोत्पन्न पृथुसेन बुधसे त्रेपन ५३ वां था जो भारतके युद्धमें युद्ध करके बचगया था।

इसप्रकार सबका औसत लगानेसे बुधसे श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरतक पचपन पीढी होतीहैं, और प्रत्येकका शासनकाल बीसवर्षका लगावें तो इन्हीं पीढियोंमें ११०० वर्ष होतेहैं, फिर यदि यह ग्यारहसौ वर्ष ईसासे ५६ वर्ष पूर्व होनेवाले विक्रमादित्य और श्रीकृष्णके मध्यवर्ती राजोंके समयके साथ और मिलावें तो सूर्य और चंद्रवंश दोनोंके समयका निर्णय ईसासे [illegible] वर्ष पहलेका निकलताहै, कि जिसके कुछ दिनों पीछे ही मिश्र चीन और आसीरिया राज्योंका स्थापित होना कहुवा मानाजाता है, और यह आरम्भ महाभारतकी घटनासे [illegible] वर्ष पीछेसे जानना चाहिये।

और इस समय तक चीनी तातारकी सीमापरका तिव्वतका उच्चप्रदेश अंगदेशसे विख्यात है ।

प्रस्तुसेन (पृथुसेन) पर अंगवंशकी पूर्ति होगई महाभारतके युद्धमें यही राजा वचा था, संभव है कि, इसके वंशके लोग उन देशोंमें फैले हों जहां कि, जातिभेद न माना जाता था ।

इसप्रकार मनु बुधसे लेकर भगवान राम और श्रीकृष्णजीतक सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओंकी संक्षेपसे समालोचना कीगई हमको आशा है कि इससे कई एक नई वातें सिद्ध होगई होंगी. और इससे हमारे मनोरथमें कुछ दृढ़ता भी हुई होगी.

इन महाराजाओंके स्थापित किये बड़े २ नगरोंके खंडहरोंका अवतक पता लगताहै इक्ष्वाकुवंशकी राजधानी सरयूके किनारे अयोध्या, इन्द्रप्रस्थ, मथुरा, सूरपुर और प्रयाग यमुनाके किनारेपर, गंगाजीके किनारे हस्तिनापुर, कान्यकुब्ज, और राजगृह, नर्मदाके किनारे माहेश्वर, सिन्धुके किनारे अरोर, पश्चिम सागरके किनारे कुशस्थली द्वारका, इनमें अवतक पुराने समयका कोई २ चिह्न पायाजाता है यदि विशेष पता लगायाजाय तो अब भी बहुतसे चिह्न पाये जासकतेहैं ।

पाँचालिकमें अभी एक देश और भी पता लगानेको है; जिसमें उसकी राजधानी काम्पिलनगर तथा वे सब नगर संयुक्त थे जो बाजस्व पुत्रोंद्वारा सिंधुके पश्चिममें वसायेगये थे ।

यदि कोई यात्री साहस करके आक्सस नदीके आगेके देशोंमें जाकर नाइसोपोलिस और इस्कन्दरियाके सबसे उत्तरी स्थानोंमें बलख तथा वामियाकी कन्दराओंमें ढूंढ भाल करे तो होसकताहै कि पुराने इण्डोसीथिक [भारतकी शक] जातिके चिह्नोंकी खोज लग सके ।

अबतक अनेक प्राचीन नगर भारतभूमिमें विद्यमान हैं जिनके खंडहरोंसे कुछ २ वृत्तान्त जाना जासकताहै. जहां ऐसे लेख शिलाओंपर लिखे पाये जातेहैं जो अबतक पढे नहीं जाते परन्तु उनकी सदा न पढनेकी सी दशा नहीं रहेगी, यदि इस विषयकी बराबर खोज होती रही और एक दिन उनके पढनेकी कुंजी हाथ लगगई तो इस विषयमें बड़ी सहायता प्राप्त होगी, जिस २ स्थानमें कुरु इन्द्र और यदुवंशियोंका राज्य रहा है वहां वहां ऐसे शिलालेख मिलेंगे जो अबतक पढनेमें नहीं आते ।

षष्ठ अध्याय ६.

राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंका संक्षिप्त वृत्तान्त।



हिन्दूवीर राजपूतोंके आचार व्यवहार समाजनीति, राजनीति और धर्मके साथ संसारकी और दूसरी प्राचीन जातियोंका मिलान करके अब हम राजस्थान के ३६ राजकुलोंकी संक्षिप्त समालोचना करतेहैं । जहांतक समालोचनासे जाना गया वहांतक सम्पूर्ण विषयही एक आदि वृक्ष—वंशसे संगृहीत हुए हैं ।

पहिलेही वर्णन होचुका है कि भारतवर्षके प्राचीन हिन्दूनृपतिलोग दो महान् वंशसे उत्पन्न हुएहैं । समयके अनुसार बृहत्फलरूप और एकबड़ा कुल अर्थात् अग्निकुल इन दोनों कुलोंके साथ मिल गया । इस अग्निकुलके राजालोग एक समय प्रचण्डप्रतापके साथ भारतवर्षमें राज्य करतेथे । यहांतक कि सूर्य और चन्द्रकुलकी पूर्व गौरवप्रभा अत्यन्त मलीन होजाने परभी उक्त अग्निकुलके राजाओंने अपने महान् तेजसे भारतवर्षको प्रकाशमान कियाथा इन तीन विशाल राज वंशोके साथ धीरेधीरे औरभी ३३ छोटे राजकुल संयुक्त हुए । उक्त नृपकुलोंके मध्यमें कुछएक राजालोग कदाचित् विशाल सूर्य और चन्द्रवंशवृक्षकी शाखासे उत्पन्न होकर समयानुसार एक पृथक् वंशवालेही होगये हों। परन्तु विचार करनेसे यही मानलिया जाताहै कि इन कुलोंकी प्रतिष्ठा करनेवाले अधिकांश मुसलमान जातिकी उन्नतिके वहुत पहिले भारतवर्षमें आयेथे और यहीं उन्होंने प्रतिष्ठा पाई। स्वर्णप्रसू भारतभूमिकी उपजाऊ शक्ति और रमणीयता देखकर वह राजा अपने देशकी माया ममताको छोड इस विदेशकोही स्वदेशसे अधिक समझने लगे कालके क्रमसे इन आनेवाले सरदारोंने अपने २ नामके अनुसार एक२पृथक् कुल स्थापन करके इस संसारमें अपने नामको अमर किया । उन छत्तीस राजकुलोंका विचार क्रमसे अब किया जाता है ।

ग्रहलोट. वा गिह्लोट । भगवान् श्रीरामचन्द्रजीसे यह लोग अपनी उत्पत्ति बताते हैं । राजस्थानके भट्टलोग भी इनके मतका समर्थन करतेहैं । पहिलेही कहाहै कि सुमित्रके पश्चात् और किसी सूर्यवंशीयराजाका नाम किसीपुराणमें

नहीं देखा जाता । परन्तु यह ग्रहलोट कुलवाले उक्त सुमित्रसे ही अपनी उत्पत्ति बताते हैं ।

किसी अवस्थामें पड़कर किसप्रकारसे इनके पितृ पुरुषगण पवित्र कोशल राजको छोड़आये । और इस राज्यको छोड़ इन्होंने किस २ स्थानमें अपने विशालवंशकी शाखा उपशाखाओंको जमायाथा । संक्षेपसे. अब इन्हीं विषयकी समालोचना कीजाती है । इसके अतिरिक्त इस कुलमें जो २ महात्मा राजा उत्पन्न हुए थे उनका विस्तारित वृत्तान्त मेवाड़के इतिहासमें लिखा जायगा ।

इसका अनुमान करना बहुत ही कठिन है कि ग्रहलोटोंका आदिगोत्र पति ठीक किस समयमें अयोध्या नगरीको छोड़कर आयाथा । तथापि विचारके अनुसार जहांतक जाना गया है उससे एकप्रकारका अनुमान होता है । कि श्रीरामचन्द्रजीसे कई पीढ़ी पीछे अनुमान सम्वत् २०० (सन १४४) में कनकसेन नामक एक सूर्यवंशीय राजाने पितृराज्यको छोड़कर सौराष्ट्रमें आकर अपने पितृपुरुषोंके विशाल वंशवृक्षको जमाया । राज्यधनको गवांकर पाण्डवलोगोंने जिस वैराटगढ़में अपनेको छिपाकर अज्ञात वासकर समयबिताया था. श्रीरामचन्द्रजीके वंशधर महाराज कनकसेनने सौराष्ट्र देशमें आकर उसी विराटगढ़में अपने नये राजपाटको स्थापित किया । तदोपरान्त कईवर्ष पीछे विजयसेननामक उनके एक वंशधरने इसदेशमें विजयपुर नामक एक नगर बसाया था ।

महाराज कनकसेनके वीरकुलमें उत्पन्न हुए राजाओंने बहुत दिनतक वलभीपुरका राज्य किया । क्रमानुसार वह राजा—"बालकराय" नामसे परिचित हुए । इसका अनुमान करना कठिन है कि सूर्यकुलतिलक भगवान श्रीरामचन्द्रजीके वंशधर किसप्रकार और किससमय "बालकराय" नामसे विख्यात हुए । सन

यदि पुराणोंमें लिखेहुए ऐतिहासिक और भूगोलिक वृत्तान्तको कोई विशेष-रूपसे मनन करै तो उसको बडा लाभ होसक्ता है परन्तु मैं इसबातका विश्वास नहीं करता कि, भगवान रामचन्द्रका इतिहास और कृष्णजी तथा पाँडवोंका महाभारत × इतिहास रूपकमात्र है मुझे आश्चर्य है कि उनके वंश नगर तथा मुद्रा आदिके इससमय तक रहते भी कितने एक लोग ऐसा क्यों कहते हैं जिस समय हम दिल्ली प्रयाग, और मेवाडके स्तम्भों तथा जूनागढ और अर्बलीकी विजोल्याके चट्टानों और भारतवर्षके पृथक् २ जैन मंदिरोंके शिला-लेखोंको पढकर उनका ज्ञान प्राप्त करसकें तो हमको और भी सन्तोषदायक निर्णय प्राप्त होसकताहै।

× पाण्डवोंका और हरकुलियो (कृष्ण बलदेवजी) का वृत्तान्त और उनके पराक्रमके कार्य भारतके प्रत्येक प्रान्तमे दूर २ तक प्रसिद्ध हैं, सौराष्ट्रदेशकी घने वृक्षोसे आच्छादित पर्वतमाला-मे हिडम्ब तथा विराटके घने वन और कन्दराओमें जहाँ अबतक जंगली भील और कोलिये रहते हैं और चम्बलके पथरीले किनारोंमे अबतक जनश्रुति चलीआती है कि, यमुनातटसे हटाये जाकर इन स्थानोंमे वे पाण्डव वीर निवास करते थे (जब उनको वनवास हुआ था) पर्वतोंकी गुफाओमे काटकर बनाई मूर्तिये विशाल मदिर और गुफाओके शिलालेख जो पढे नहीं जाते वे सब ही पुराणसम्बन्धी कथाओके पुष्टिकारक हैं ।

१ जूनागढ गिरनारपर्वतकी तलैटी उसकी रक्षा करनेवाली प्राचीन राजधानी है, अब्बुलफजल कहता है कि, बहुतदिनोंतक यह अज्ञात अवस्थामें उजाड पडी रही, अकस्मात् ही इसकी खोज लगगई, विशेष वृत्तान्त विदित न होनेसे इसे जूना पुरानागढ—कोट कहतेहैं, परन्तु मैं विश्वासके साथ कहताहूं कि, गिहोटोका लिखाहुआ यह अशिल दुर्ग या असिल गढहै उसमें उल्लेख है कि, असिलने डाबीवंशके राजा अपने मामाकी अनुमतिसे गिरनारके समीप अपने नामपर एक दुर्ग निर्माण कराया था ।

---

२ जूनागढके समीप एक चट्टानपर राजा अशोककी चौदह धर्माज्ञाएँ और दूसरी ओर क्षत्रपवंशी संवत् २१५ में होनेवाले राजा रुद्रदामाका लेख है जिसपर एक मंदिर बनाकर उनकी रक्षा कर [illegible] धन्यवाद लिया है। बीजौल्या (मेवाड) में एक मील दूर दो चट्टानो पर खुदे लेख हैं [illegible] संवत् १२२६ का [illegible] लेख है जिसे [illegible] इतिहास [illegible] है कोई कहते असिल गढका नाम [illegible] है [illegible] २१५ [illegible] हुआ है, और उसका नाम [illegible] है। [illegible] (अनुवादक)

महाराज युधिष्ठिरके पीछे उनके उत्तराधिकारी परीक्षितसे लेकर विक्रमादित्य तक चारों वंशावलियां बराबर दी गई हैं जिनमें राजपाल पर्यन्त छयासठ राजाओंकी नामावली लिखी है जो राजपाल शुकवन्तके हाथसे कुमाऊंके आक्रमणमें मारागया, विजयी कुमाऊंपतिने दिल्लीको अपने अधिकारमें किया, परन्तु विक्रमादित्यने अल्पकालहीमें दिल्लीको उससे लेलिया, और इन्द्रप्रस्थके बदलेमें अपनी राजधानी उज्जैन [अवन्ती] में स्थापन की, और उसी समयसे उज्जैन हिंदूजातिके ज्योतिश्शास्त्रका याम्योत्तर वृत्त मानाजानेलगा ।

फिर आठसौ वर्ष तक इन्द्रप्रस्थ राजधानी नहीं रहा पीछे तुवर वंशके स्थापन करनेवाले राजा * अनंगपालने दिल्लीको फिर अपनी राजधानी बनाया यह अपने आपको पाण्डववंशी कहता था और इसके समयसे ही इन्द्रप्रस्थका नाम दिल्ली हुआ ।

राजा शुकवंत कुमाऊंके उत्तरीपर्वतोंसे आया था, और इसने चौदह वर्ष तक राज्य किया. इसको विक्रमादित्यने मारडाला और भारतके युद्धसे इस वृत्तांततक २९१५ वर्ष बीते हैं ।

हम इतना समय ६६ राजाओंके राज्यका मानें तो औसतसे ४४ वर्ष आतेहैं यदि इस विषयको हम असम्भव मानें तो सर्वथा विश्वास भी नहीं करसकते ।

दूसरे स्थानमें ग्रन्थकर्त्ता रघुनाथ कहताहै कि मैंने बहुतसे ग्रंथ पढे हैं सबका निचोड यही निकलता है कि युधिष्ठिरसे पृथ्वीराज पर्यन्त ४१००वर्षोंके× मध्यमें

–हम विश्वासके साथ कहते हैं कि, हर्क्यूलीजकी यह वैसी ही प्रतिमा थी जैसा कि एरियनने लिखा था, कि, सिकन्दर और पोरसके युद्धमें पोरसने जो मूर्त्ति अपनी ध्वजापर दिखाई थी, इस नगका चित्र रायल एशियाटिक सोसायटीके ट्रानसेकशनमें दियाजायगा ।

पांचवाँ अध्याय ५.

भगवान् रामचन्द्र और श्रीकृष्णचन्द्रजीके पश्चात् की वंशावली ।

महाराज इक्ष्वाकुसे लेकर श्रीरामचन्द्रजीतक और बुध [चन्द्रवंशका आदि पुरुष जो शाकद्वीप अथवा सीथियासे भारतवर्षमें आयाथा] से आरम्भकर श्रीकृष्णजी तथा युधिष्ठिरपर्यन्त बारहसौ वर्षके समयकी आलोचना करके अब वंशसूचीके दूसरेभाग और दूसरे वंशवृक्षकी समालोचना करनेमें प्रवृत्त होते हैं।

मेवाड जयपुर मारवाड और बीकानेरके नरेश अपनेको महाराज रामचन्द्रके वंशधर कहकर सूर्यवंशी बतातेहैं. और उनकी शाखाएँ भी अपनेको सूर्यवंशी कहती हैं. इसी प्रकार जैसलमेर और कच्छके राजपुरुष [भाटी और जाडेजा जो सतलज नदीसे समुद्रपर्यन्त भारतवर्षके मरुस्थलमें सब जगह फैले हुए हैं, अपनी उत्पत्ति चन्द्रवंशमें बुध और श्रीकृष्णजीसे बताते हैं ।

श्रीरामचंद्रजी श्रीकृष्णजीसे बहुत पहले नहीं हुए. कारण कि. उनके इतिहासलेखक वाल्मीकि और व्यासजी समकालीन थे जिन्होंने अपनी आंखों देखी घटनाएं लिखी हैं ।

सूर्यवंश, इन्दुवंश. और जरासंधकी वंशावलियें भागवत अग्निपुराण, और पाण्डवंशमें राजतरंगिणी तथा राजावलीसे उद्धृत कीगई हैं । सूर्यवंशी राजपूत

नौ क्षत्रिय राजा दिल्लीकी गद्दीपर बैठेहैं इनके पीछे यह गद्दी गवर×जातिके लोगोंके अधिकारमें आई हमको इस बातसे बडा हर्ष है कि ग्रन्थकर्ताओंने केवल राजाओंके राजत्व समयकी वृद्धि ही की है परन्तु राजाओंकी संख्या ज्योंकी त्यों रहनदी है, इससे बचेकुचे ऐतिहासिक तत्त्वोंका पता मिलताहै, युधिष्ठिर और विक्रमादित्यके मध्यमें ६६ पीढियोंका उल्लेख सर्वथा सत्यहै ।

हमको युधिष्ठिरसे पृथ्वीराजपर्यन्त १०० राजाओंके होनेमें कोई विरोध नहीं है यद्यपि विक्रमादित्यसे पहले और पिछले राजाओंकी संख्याका कोई ठीक विभाग नहीं हुआहै. कारण कि उससे पहले ६६ और पीछे होनेवाले ३४ राजा बताये जातेहैं. तथापि इन दोनों समयोंमें पचास वर्षोंका भी अन्तर नहीं पडसकता ।

हमारी परीक्षाके अनुसार युधिष्ठिरसे पृथ्वीराजतक १०० राजाओंका समय २२५० वर्ष होना चाहिये ।

हमारी यह जांच राजवाडेके मुख्य २ राजाओंके राजत्वके समयके [illegible] से ६६३ वर्षतक अथवा पृथ्वीराजसे इस कालतकका औसत निकालकर की गईहै ।

मेवाडके राजा ३४ × प्रत्येक राजाके निमित्त वर्ष .. ... १०.

मारवाडके २८ .... २३

आमेरके २०. .... २२

जैसल्मेरके २८ ... ... २३

—[illegible] जन्म संवत् ११११ में हुआ [illegible] यदि ४१०० [illegible] ११२५ [illegible] और चौहानोंके रीतिरिवाजके अनुसार पृथ्वीराजके जन्मके [illegible] ।

१११५ में पृथ्वीराजका जन्म नहीं किन्तु ११२५ के लगभग होना चाहिये [illegible] [illegible] पृथ्वीराजको [illegible] [illegible] ११२५ में जन्म [illegible] ।

[illegible] ([illegible])

[illegible]

अपनेको रामचन्द्रके दूसरे पुत्रों तथा भ्राताओंके वंशमें होना बताते हैं ऐसा मुझे विश्वास नहीं है।

मेवाडके राणा अपनेको सूर्यवंशी बताते हैं इसी प्रकार बडगूजरलोग जो पहले वर्त्तमान आमेरदेशमें बडे पराक्रमी थे और जिनके वंशवाले अब गंगाजीके किनारे अनूपशहरमें रहते हैं उसी वंशसे अपना उत्पन्न होना बताते हैं।

नरवर और आमेरके कुशवाहे (कछवाहे) राजा और उनकी अनेक शाखायें कुशसे निकली हैं यद्यपि ऐश्वर्यमें आमेर सबसे प्रथम है, परन्तु वह नरवरकी एक शाखा है जो लगभग एक वर्ष पहले वहांसे आकर बसी थी, जिसका राजा विख्यात राजा नलका प्रतिनिधि है, जो अपने पुराने राज्यके एक छोटेसे जिलेका अधिपति है।

इसी कुलमें अपनेको मारवाड राज्यवंश कहते हैं,पर यह बात वंशावली लिखने वालोंकी भूलसे उन्होंने मानी है, जिन्होंने कुशके वंशको कन्नौज तथा कौशाम्बी नगरीके कौशिक वंशसे मिलाकर बडा धोखा खाया है, और परम्परा सूचीको गडबडा दिया है सूर्यवंशकी वंशावली लिखनेवालोंने भी इस मनमानी वंश परम्पराको स्वीकार नहीं कियाहै।

आमेरके राजाने जो अपनी वंशावली तयार की है उसमें मेवाडके राजवंशकी नामावली श्रीरामचन्द्रके ज्येष्ठपुत्र लवसे सुमित्र तक दी गई है

---

१ इस समय कछवाहा लिखा और बोला जाताहै (कुशवाहा) शब्द टाड्साहबका कल्पित विदित होताहै, पुराने लेखोंमे कच्छप घात और कच्छपारि लिखा मिलता है (अनुवादक)

२ आमेरके कछवाहे नरवरसे आयेहुए ग्वालियरके कछवाहोंकी छोटी शाखाके अन्तर्गत हैं। ग्वालियरके राजा वज्रदामाके पुत्र मंगलराजाके दो पुत्रोंसे दो शाखा चली थी। इनमें कीर्तिराजके वंशधर कुतुबुद्दीनके समयतक जयपुरमे राज करतेरहे, और छोटे पुत्र सुमित्रके परपोते देवानीकके बेटे सोढदेवने संवत् ११२५ मे राजपूतानेमे आकर राज्य स्थापन किया (अनु०)

३ यह मध्यभारतके उच्च प्रदेश शाहाबादके निकट है।

४ इस वंशावलीका सत्य असत्य रूपसे चाहै जैसा सम्मान कियाजाय परन्तु प्रत्येक राजा और प्रत्येक पढा लिखा हिन्दू इस बातको मानताहै कि, मेवाडके राणा भगवान रामचन्द्रके वंशधर सूर्यवंशी हैं, इससे उन्हींका नहीं उनकी राजधानीका भी प्रत्येक हिन्दू जाति सन्मान करतीहै।

जिस समय मेवाडके राणाने एक राजद्रोही सरदारको जो चित्तौरमें था दूर करनेके लिये माधोजी सेंधियाको सहायतार्थ बुलाया उस समय उस निर्भीक मारोठीपर उस स्थानका प्रभाव ऐसा पडा कि, जिसके भीतर सर्वसम्मतिसे श्रीरामचन्द्रकी गद्दी स्थापित है,सो मानी गई है उस किलेकी दीवारोंपर वह गोली चलानेको राजी न हुआ, तब राणाने स्वयं गोली चलाकर उनके सन्देहको दूर करदिया।

इसक्रमसे प्रत्येक राजाके राजत्वकालका औसत २२ वर्ष निकलताहै प्रत्येक राजाके शासनके लिये इससे विशेष समय मानना ठीक न होगा, और जिन वंशांकी नामावली विस्तारवाली है उनके लिये तो औसत समय कमसे कम १८ वर्ष ही मानना ठीक होगा, युधिष्ठिरसे लेकर विक्रमादित्य पर्यन्त ६४ राजाओंके निमित्त तो इतना समय माननेकी भी आवश्यकता नहीं कारण कि उतने समयके बीचमें राज्यका उलटफेर चार बार हुआ था, और राज्य एकके हाथसे दूसरेमें गया।

भागवतसे ग्रहण की हुई जरासंधकी शेष वंशावली बहुत कामकीहै उससे भी हमको दूसरे विचारका समय मिलैगा।

जरासंध राजगृह वा विहारका शासन करनेवाला था इसका पुत्र सहदेव और पोता मार्जारी था वह दोनों भारतमें समसामयिक हैं, इससे दिल्लीके सम्राट महाराज परीक्षित्के समसामयिक हुए।

जरासंधके स्ववंशमें २३ राजा लिखेहैं उनमें पिछला राजा रिपुंजय हुआ, इसके सचिव सुनकने इसको मारकर यह सिंहासन अपने अधिकारमें किया, इस शुनकका वंश पाँच पीढीतक चला, इसमें पिछला राजा नन्दिवर्धन था, इस राजके छीननेसे सुनकको कुछ लाभ नहीं हुआ कारण कि उसे उसी समय अपने बेटे प्रद्योतको सिंहासनपर बैठाना पडा इन पांचों राजाओंका समय १३८ वर्ष माना जाताहै।

शेशनाग नामक विजेताकी आधीनतामें शेषनाग देशसे कितने एक नवीन जातिके पुरुष भारतवर्षमें आये जिन्होंने पाण्डुके सिंहासनपर अपना अधिकार जमाया,

---

१ इतिहास लिखनेवाले इन परिवर्तनोंका होना उचित समझतेहैं, और अपनी समीक्षामें लिखतेहैं कि जो राजा पदभ्रष्ट होते थे, उनमें राज्यकी सम्भालकी योग्यता नहीं होती थी।

२ यह देश विहारकी राजधानी राजगृह वा राजमहल है।

३ अलंकारके अनुसार विचार किया जाय तो यह सर्पराजका देश कहावेगा, कारण यह कि नाग तक्ष वा तक्षक यह तीन शब्द एक ही अर्थके कहनेवाले हैं, मैं इनदेशको ग्रन्थोंके लिखेहुए पुराने सीथिन्टाचरिका वा चीनियोंके तक्ष [illegible] तुर्किस्तानके वर्तमान [illegible] निवास स्थान मानताहूं, मेरी समझमें जिसको पुराणोंने [illegible] और [illegible] सीथियांस अर्वेव्यों (अरकसीज) पर राज्य करती थी, यह वही जाति [illegible] शिशुनागदेशको शेषनाग मानकर इस देशसे इस वंशका आना लिखाहै, पुराणोंमें शिशुनागोंके वर्णनमें शेषनागदेशका कोई वृत्तान्त नहीं है, [illegible] पाण्डुकी गद्दीपर (अनुवादक)

कुर्मोसे नहीं जैसा कि सर विलियम जोन्सने जिस ग्रन्थसे वंशावली तयार की है उस ग्रन्थमें और कई एक पुराणोंमें पाई जाती है ।

जिस ग्रन्थके सहारे सर विलियम जोन्सने अपनी वंशावली तयार की है परन्तु नामोंका हेर फेर करके उसको बिगाड दिया है और उसके लिये जो प्रमाण दिये हैं, वे भी अधूरे हैं, तथा वह हिन्दुओंके सिद्धान्तके विरुद्ध हैं, जिनको युधिष्ठिरका समसामयिक माना है उन बृहद्बल और बृहत्शूरके नामोंको देखकर उन्होंने अपनी वंशसूचीमें तक्षक तथा बहुमानके मध्यके दश राजाओंके नाम उलट पुलट करदिये हैं ।

- बाहुमान [लम्बी भुजावाला] राजा श्रीरामचन्द्रजीसे चौतीसवीं पीढीमें है, और उसके राज्यशासनका समय रामचन्द्रजीसे छःसौ वर्ष पीछे वा सुमित्रसे उतनाही प्रथम होना चाहिये, कारण कि वह रामचन्द्र और सुमित्र वा उसके समकालीन विक्रमके बीचमें है ।

भागवत पुराणके देखनेसे सुमित्रके साथ सूर्यवंशकी समाप्ति होती है, और मेवाडके वर्तमान वंशका जिस जयसिंहके साथ सम्बन्ध बतायागया है, उसका मिलान कई वंशसूचियोंसे किया, और विशेषकर जैनियोंकी वंशसूचीसे मिलान किया गया है जैसा कि मेवाडके इतिहासमें लिखागया है ।

और दश पीढीतक जिनका वंश चलकर अन्तमें अनौरस राजा महानन्दके साथ पूर्ण हुआ. इस वंशका नामक अन्तिम राजाने शुद्धवंशी राजाओंसे ऐसा युद्ध किया कि उनका सर्वथा विनाश करदिया, पुराणोंमें ऐसा आयाहै कि शेषनागके समयसे ही राजा शूद्र होगये. इन दश राजाओंके राजत्वका समय ३६० वर्ष माना गयाहै ।

इसी तक्षकवंशके चन्द्रगुप्त मौरीवंशसे चौथी वंशावलीका आरम्भ होताहै. इस वंशमें दश राजा हुए और १३७ वर्ष पर्यन्त इनका राज्य रहा ।

पांचवंशके आठ राजाओंने शृंगी देशसे आकर १०२ वर्षतक राज्य शासन किया, और कण्व देशके एक राजाने आकर अन्तिम राजाको मारडाला. और उसका राज हरण करलिया. इनमें चार तो शुद्धवंशके थे. और पीछे शूद्राणीसे उत्पन्न कृष्ण नामक राजा हुआ. यह कण्वदेशी वंश २३ पीढीतक चलता रहा और इसके पिछले राजाका नाम सुलोमधी था ।

इस प्रकार महाभारतसे पीछेकी छः वंशावली दीगईहैं जिनमें जरासंधके उत्तराधिकारी सहदेवसे आरम्भ कर बयासी राजाओंकी अविच्छिन्न शृंखला सुलोमधीतक बराबर चली गई है ।

कितनी एक छोटी वंशावलियोंके निमित्त भी उचित समय दियागयाहै परन्तु प्रथम और अंतिम वंशावलीके लिये ऐसा नहीं हुआ है, इस कारण पहली जांचकी रीति काममें लानी चाहिये. जिससे उनका समय विक्रमके संवत ६०४ तक १७०४ वर्ष होंगे. इस रीतिसे राजा वसुदेव विक्रमका समकालीन होगा.जो राजा सहदेवसे छठी वंशावलीमें पचपनवां है,और कनरदेशसे आकर राज्य छीननेवाला

भगवान रामचन्द्रसे आरम्भकर पुराणोंमें लिखे इस वंशके अन्तिम राजा सुमित्रतक सूर्यवंशमें ५६ राजा हुए, जौन्सने ५७ लिखे हैं, यदि हम इनमें प्रत्येकका राज्यशासन समय बीस २ वर्ष मानें तो सुमित्रतक जो विक्रमादित्यसे थोडे ही काल पूर्वमें हुआ है, रामचन्द्रजीसे लेकर ११०० वर्षोंकी संख्या हम पूर्वमें लगाचुके हैं, इससे यह सिद्ध होगया कि, महाराज इक्ष्वाकुसे सुमित्रतक २२०० वर्ष बीते हैं।

इन्दुवंश अर्थात् पाण्डुवंशी युधिष्ठिरकी सन्तानकी वंशावली राजतरंगिणी तथा राजावलीसे संग्रह कीगई है, यह दोनों ग्रन्थ पंडित विद्याधर जैन और पंडित रघुनाथके निर्माण किये हुए राजवाडेमें वंशावली और ऐतिहासिक घटनाके लिये विख्यात हैं, यह उस समयके सबसे अधिक विद्वान् आमेरके सवाई जयसिंहके समयमें निर्माण हुए थे, जिनमें युधिष्ठिरसे आरम्भ करके विक्रमादित्यतक इन्द्रप्रस्थमें शाशन करनेवाले पृथक् २ वंशोंकी वंशसूची लिखी है, उनमें यद्यपि ऐतिहासिक वृत्तान्त नहीं है, तो भी ऐसे अन्धेरेके समयमें कुछ यह उपयोगी ही समझे जासक्तेहैं।

तरंगिणीमें जैन देवताओंकी वंशावलीहै, उसका प्रारम्भ आदिनाथ वा ऋषभदेवसे हुआ है, जिनकी समालोचना ऊपर लिखचुके हैं उन कुलोंके मुख्य २ नरपतियोंका समाचार लिखकर उन्होंने धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा उनकी सन्तानोत्पत्तिका वृत्तान्त लिखा है और उनका परस्पर विद्वेष तथा विस्तारसे महाभारत युद्धका वर्णन किया है।

पूर्व और पश्चिम सभी देशोंके राजवंशोंकी उत्पत्तिके साथ बहुतसी कल्पित कहानियां लिखी गई हैं, पाण्डुकी उत्पत्ति उसी प्रकारसे विश्वासके योग्य हो सकती है, जिसप्रकार कि, रोमूलस वा दूसरे वंशके स्थापन करनेवालोंकी है।

---

१ टाड् साहबकी यह कल्पनामात्र है, बीस ही वर्षका औसत क्यों लगाया जाय जब कि महारानी विक्टोरिया पचास वर्षसे अधिक राज्य करचुकी थी, तब पहले पुरुष तो बडे बली और निरोग होतेथे, फिर उनकी आयु बडी होती थी इससे यह वर्षगणनाका अनुमान ठीक नहीं (अनुवादक)

२ पाण्डुको शाप था कि स्त्री संगम करते ही मृतक होजायगा, जब वह वनमें तपस्या करने गये तब उनकी रानीने मंत्रबलसे देवताओंको बुलाया युधिष्ठिर (धर्मराजमिनोस) से, भीमसेन-पवन (इयोलस) से, अर्जुन इन्द्र (जुपिटरजिपिटलस) से उत्पन्न हुए, इन्द्रने ही अर्जुनको धनुर्विद्या सिखाई, जिससे महाभारतमें बहुतोंका संहार हुआ, नकुल और सहदेव दूसरी रानी माद्रीके देवताओंके वैद्य अश्विनीकुमार (एस्कूलेपियस) से उत्पन्न हुए।

माना जाता है, और यदि ये गणनायें किसी प्रकारसे सत्य हों तो भागवतमें जो वंशावली विक्रमादित्यके पीछेकी पांचसौ ५०० संवतके ✻ अन्ततक दी है, हम उसको भविष्यवाणीरूपसे तो नहीं मानेंगे, बरन हम उससे यह अनुमान करते हैं कि उन्होंने सलोभधीके राज्यमें अर्थात् संवत् ६०० और सन् ५४६के लगभग इस अपने पुराने इतिहासका नया संस्कार किया होगा।

ऊपर जिन वंशावलियोंका वृत्तान्त लिखागयाहै, उनके राज्यशासन वर्षोंके औसत निकालनेमें पहले हमने जो गणना की है, उससे संसारके दूसरे देशोंके राज्यशासनका समय निकालनेमें बडा लाभ होगा, और उनके इतिहासोंका मिलान करनेसे अपनी मानी रीतिकी सत्यता जाननेका भी हमको अवसर मिलैगा।

जिस समय दश जातियोंने रेहोवोमके विरुद्ध विद्रोह किया था, उस समय जेरूसलमके विजय होनेतक जो ३८७ वर्षका समय आताहै, जिसकालमें २० वीस राजा जिंहाके सिंहासनपर स्थित हुए जिन प्रत्येकका समय १९ वर्ष औसत निकलताहै, और यदि इसमें पहले सालडेविड दाऊद और सुलेमान इन पहले राजाओंका समय और मिलादेवें जो कि विद्रोहके पहले गद्दीपर वैठे थे तो प्रत्येकका राजत्वसमय औसत २६ वर्ष निकलैगा।

सार्डेना पोलर्सके आधीनमें ईसासे ९०० वर्ष पहले असीरिया + राज्यके

✻ विस्टर वेटलेका हिन्दुओंकी ज्योतिषप्रणालीपर एक लख एशियाटिक रिसर्चेज जि० ८ पृ० २३६–३७ मे पायाजाताहै, उसमे लिखाहै कि सवत् ✻५८३ अर्थात् सन् ५२७ ई०मे ब्रह्मगुप्त ज्योतिषी हुआ, जिसका समय सलीमधीके राज्यशासनसे कुछ ही पहलाहै, उसने ब्रह्माके कल्पकी रीति स्थापन की, इसके अनुसार सृष्टिकी इस समयकी गणना चलरही है, इस रीतिसे उसके ऐतिहासिक समयका भी परिवर्तन हुआ, इससे मेरी गणना की और भी दृढता होतीहै, परन्तु इस अनुचित कटाक्षने मि० वेटलेके प्रमाणकी दृढताको बहुत शिथिल करदियाहै, जो उन्होंने मिस्टर कोलब्रुकपर किया, जिसका विस्तारपूर्वक ज्ञान अनुमानकी बातोंको सर्वथा न माननेके कारण बहुमूल्य है।

१ यह सुलेमानका वेटा और जहाका राजा था।

२ यह एशिया माइनरका बाइबिल प्रसिद्ध प्राचीन नगरहै।

३ वह एशिया माइनरके एक विभागका नामहै।

४ असीरियाका एक बादशाह।

+ मैंने इन सवतो और पीछेके सवतोको मेनगोमट साहबकी ओरिजन आफ लाज पुस्तकमेंकी लिखीहुई वंशसूची कालक्रमके मानचित्रोंसे ग्रहण कियाहै।

✻ सलोमधी राज्यकी समाप्ति सन् ५४६ मे नहीं सन् ३०० के पहले ही हो चुकीथी, ब्रह्मगुप्तने ब्रह्म स्फुटसिद्धान्त संवत् ६८५ सन् ६२८ मे बनाया है यह ५२७ मे नहीं होसका।

(अनुवादक)

हम अनुमान करतेहैं कि, पाण्डुवंशकी किसी बडी दुर्नामता छिपानेके लिये ऐसी कथाओंकी कल्पनाएँ कीगईहैं, जिनका सम्बन्ध ऊपर लिखीहुई व्यासजीकी कथा तथा हरिकुल वंशकी शाखाके हलकेपनसे हो. पाण्डुराजाके परलोकवासी होनेपर उसके भतीजे तथा अन्धे धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनने हस्तिनापुरमें अपने बन्धुवर्गोंके समीप युधिष्ठिरादिको पाण्डवोंका क्षेत्रज अनौरस होना बताया । तिसपर भी ब्राह्मणों तथा अंधे धृतराष्ट्रकी सहायतासे पाण्डुके ज्येष्ठपुत्र युधिष्ठिरको हस्तिनापुरका राज्य अधिकार सौंपागया, तब दुर्योधन पांडव और उनके सहायकारियोंके विरुद्ध षड्यन्त्र करनेलगा जिसके कारण विवश होकर पांचों भ्राताओंको अपनी पैतृक राजधानी छोडकर कुछ समयके लिये गंगाकिनारे जानापडा, पीछे उन्होंने सिन्धुके निकटवर्ती दूसरे देशोंमें निवास किया. सबसे प्रथम पंचालके राजा द्रुपदने उनकी रक्षा की. द्रुपदकी राजधानी काम्पिल नगर थी, जब उसने अपनी पुत्री द्रौपदीका स्वयंवर किया, तब समीपके कितने ही नरेश उपस्थित हुए, पर वह कन्या तो निजदेशसे निर्वासित हुए पाण्डवोंके भागमें थी. वहां अर्जुनने अपनी धनुर्विद्याके प्रभावसे उसको प्राप्त किया. उस सुन्दरीने अर्जुनके गलेमें जयमाला पहराई. उस समय दूसरे राजोंने निराश होकर पाण्डवोंसे युद्ध किया परन्तु अर्जुनने उन सबकी वह दशा की जैसी पतिलोपसे विवाहकी इच्छा करनेवालोंकी हुईथी, विजयी अर्जुन दुलहिनको अपने घर लाया वह समानरूपसे पांचों भ्राताओंकी स्त्री हुई, निःसन्देह, यह रीति शक

छिन्नभिन्न होनेके समयसे आरम्भ करके बेबलोनिया असीरिया और (१) मीडियाकी पीछेवाली तीन मिलाई हुई वंशसूचियोंका मिलान करनेसे पृथक् २ औसतके वर्ष निकलतेहैं ।

जब हम आसीरियाकी वंशावली देखतेहैं तो इससे मध्यम औसतका समय दीखताहै, बेबलोनियां और मीडियाकी वंशसूचीका औसत बहुत अधिक निकलताहै. बेबलोनियां देशपर असीरियासे पृथक् होनेके समयसे आरम्भकर पीछे उसीमें संयुक्त होनेतक राज्य करनेवाले नौ राजाओंके समयके ५२ वर्ष आतेहैं परन्तु साठवर्षतक जिसने राज्य किया वह मीडियाका राजा दारा सबसे अधिक दिनोंतक जीवित रहा, इन दोनों राज्योंके अलग होनेके समयसे लेकर उनके फिर संयुक्त होनेतक दाराके वंशके छः राजा १७४ वर्षके मध्यमें हुए जिनमें प्रत्येकके राज्यशासनका औसत २९ वर्ष निकलताहै ।

यदि देखाजाय तो असीरियाके नरपतियोंके राज्यका समय बहुत मध्यमश्रेणीका है. प्रत्येक राजाका राजत्त्व समय नेबुकेद नेजरसे आरंभ कर सार्डेनापालसतक औसत २२ वर्ष होताहै, परन्तु उस समयसे समाप्तितक औसत निकालें तो १८ वर्ष ही निकलतेहैं ।

ईसासे १०७८ वर्ष पहलेके लेसी डीमनकाहेरोक्लाइडी कहलानेवाले स्पार्टाके सिंहासनसे लेकर पहले ११ राजोंका राज्यशासनका समय औसतसे ३२ होताहै, और लगभग उसी समयसे आरंभकर एथेन्सके प्रजातंत्र राज्यमें मृत्युपर्यन्त स्थिर रहनेवाले प्रधान अधिपतिके शासनकालसे आरंभ कर उससमय पर्यंत जब कि यह पद सातवें ओलेम्पियडके समयमें दश २ वर्षका होगया था, जबतक मुख्यशासनोंकी संख्या बारह हुईथी जिसका औसत २८ वर्ष निकलताहै ।

इसप्रकार यहूदियोंका स्पार्टावालोंका और एथिनलोगोंके राजत्वकालका समय मिलताहै जिनका आरंभ ईसासे ११०० वर्ष पहले हुआ था अर्थात् मनमानसे पचास वर्षसे भी अधिक दूर नहीं, और इनके संग्रहा बेबिलन, असीरिया मीडियाके राज्यके समयके, जिनका प्रारंभ यूनानी राज्यकालको छोडके समयसे मिलाहै, या ईसासे आठवीं शताब्दीमें और यहूदियोंका राजत्वकाल [illegible] शताब्दीमें हुआ था ।

लोगोंकी है हस्तिनापुरमें इन पांचों भाइयोंके इस कामकी चर्चा फैलगई और धृतराष्ट्रने अपने पुत्र दुर्योधनको दबाकर उन्हें फिर हस्तिनापुर बुलाया और भीतरी द्वेषमिटानेके लिये पाण्डुराजके विभाग करदिये, दुर्योधनके अधिकारमें हस्तिनापुर रहा, और इन्द्रप्रस्थनामक एक राजधानी युधिष्ठिरने स्थापित की फिर जब महाभारतका युद्ध होगया तब युधिष्ठिरने अपने नामका संवत् चलाकर अपने भतीजे परीक्षितको वहांका राज्य सौंपदिया, ११०० × वर्ष तक यह संवत् चलता रहा पीछे उसी वंशके तुवर राजा विक्रमादित्यने इन्द्रप्रस्थको विजय करके अपना संवत् चलाया।

जब राज्य विभक्त होचुका तब हस्तिनापुरकी अपेक्षा इन्द्रप्रस्थका राज्य बहुत ऐश्वर्य सम्पन्न होगया, इन पांचों भ्राताओंने समीपी सब राजाओंको अपने वशीभूत करके इनसे करदेनेके पायनामे[1] लिखालिये।

इस प्रकार अपने राज्यको दृढ़ करके युधिष्ठिरने अपने "राजाधिराज" पद प्राप्तिके स्मरणमें पवित्र अश्वमेध[2] और राजसूय यज्ञ करनेका संकल्प किया.

इन महायज्ञोंके सम्पूर्ण कार्य राजा ही सम्पादन करते हैं, यहाँतक कि इनमें द्वारपालतकका कार्य राजा ही करतेहैं।

अर्जुनकी रक्षामें अश्वमेधका घोडा छोडा गया, जो एक वर्षतक अपनी इच्छानुसार अनेक नगरोंमें भ्रमण करता रहा, जब उसको पकडकर कोई युद्ध न करसका तब वह फिर इन्द्रप्रस्थमें लायागया, इस अवसरमें यज्ञशाला निर्माण होचुकी थी, और सब देशोंके राजा यज्ञमें बुलायेगये थे।

—शकलोगोंकी रीतिका जो हेरोडाटसने वर्णन कियाहै वह उनके वंशोंमें अबतक चलती है 'अपनी स्त्रीके द्वारपर जूतोंकी जोडी' इसाक जातिके सब पुरुष इस मर्मको भलीभांतिसे जानतेहैं देखो फिन्सटनकी काबुल नामक पुस्तक जिल्द २ पृ० २५१

१ पायनामा यह एक मुख्य शब्द है, जो बडे राजाओंकी आधीनता सूचन करता है, चाहे वह आधीनता धन वा सेवाके द्वारा होतीहो इसकी उत्पत्ति पाय—पैरसे हुईहै।

२ इसमें सूर्यको अश्वकी बलि दीजातीहै, जिसका वर्णन आगे करेंगे।

× टाड महोदयने ११०० वर्षतक युधिष्ठिरका संवत् चलना मानाहै परन्तु यह बात [illegible] विरुद्ध है। युधिष्ठिर संवत् ३०५० वर्षतक चला (अनुवादक)

३ दुर्योधनने बडे वंशमें होनेके कारण [illegible] आदि पुरुष [illegible] पद [illegible] [illegible] शान्त [illegible] पालन करनेके कारण युधिष्ठिरने [illegible] [illegible] दोनोंके युद्धका नाम कुरुक्षेत्र युद्ध कहाताहै।

हमारे सूर्य और चन्द्रवंशके मुकाबलेमें चाहें यह औसत कम भी हो तो भी इस समयके हिन्दू राजवंशोंके राजत्वकालके औसत समयके साथ मिलकर उस समयका अनुमान करनेमें विचारको बडी भारी सहायता देंगे जो समय उन ज्ञात वंशोंके लिये नियत किया जायगा और जो ब्राह्मणोंने असम्भव काल नियत किया है उसके अनुकरणकी अपेक्षा इस विचारमें अधिक सहायता प्राप्त होगी।

और अनुमानसे काल निर्णयमें यह बात जानी जातीहै कि जिस देशका जल वायु स्वच्छ होता है और जहांके नरेश सादगीसे रहते हैं वे बहुत काल-तक जीते हैं, इसी हेतु स्पार्टीके राजाका राजत्वकाल अधिक तर ३२ वर्ष और विषय वासनामें लिप्त ऐथेन्सवालोंका औसत २८ आता है, सौलके समयसे आरम्भ कर बेवलनको निकालनेके समय तक यहूदीराजाओंका औसत २६ वर्ष होता है, मीडियावालोंका औसत लेसिडिमोनियांवालोंकी समान है, तात्पर्य यह कि सब इतिहासोंके समीक्षणसे यह बात जानी जातीहै कि इनकी समानता अनहलवाडादेशके राजाओंके साथ की जासकती है, और जिसमें चामुण्डका राजत्व समय तो दाराके ही लगभग समान था।

और विद्रोहके समयसे आरम्भ कर पृथक् की हुई दश जातियोंमें बन्धमें होनेके समयतक इसराईल जातिके वीस राजाओंके राज्यका समय दोसौ वर्ष है इसका औसत निकालनेसे प्रत्येक राजाका समय दश वर्ष आता है।

असीरिया और स्पार्टावालोंका राजत्वकाल अधिकसे ३२ और न्यूनसे न्यून १८ वर्ष निकलताहै और प्रत्येकका औसत २५ वर्ष आताहै और मानसो वर्षके मध्यमें हमारे चार हिन्दू वंशका औसत २२ वर्ष आता है।

इस प्रकार ऊपर लिखेप्रमाणोंसे पचास राजाओंकी शृंखलाके निमित्त वर्षोंका औसत २० से २२ वर्ष तक होनेकी मेरी सम्मतिहै।

यदि मेरी इस खोजका परिणाम संतोष दायक हो और उन ग्रन्थकारोंकी उल्लिखित वंश सूची ठीक हो तो बेंटले साहबकी समान हमरा भी सिद्धांत होगा जिसने वडी पंडिताईके साथ ज्योतिष तथा वंशसूची सम्बन्धी नियमोंका

कौरवोंका हृदय पाण्डवोंके इस महान पद प्राप्त होनेसे जलनेलगा, कारण कि हस्तिनापुरके राजाको प्रसाद बाँटनेपर नियुक्त होना पडा था ।

इन दोनों कुलोंमें फिरसे वैरानल धधकउठी, परन्तु दुर्योधन अपने शत्रु युधिष्ठिरको हानि पहुँचानेके लिये जितने उपाय करता सबमें विफल मनोरथ होता तब उसने युधिष्ठिरके धर्मात्मापनको अपनी सफलताका साधन बनानेकी दृढ प्रतिज्ञा की और जुआ खेलकर उसमें लाभ उठाना चाहा जो सीथियेन जातिसे मिलती हुई रीति राजपूतोंमें आजतक चली आतीहै, युधिष्ठिर उसके प्रपंचमें फँसगये और द्यूतमें अपना समस्त राज्य स्त्री तथा अपनी और अपने भ्राताओंकी स्वतन्त्रता बारहवर्षके लिये हार दी, और सब कुछ छोडकर यमुना-किनारेपर अपने देशसे बाहर होगये ।

हिन्दूजातिकी पुरानी कथाओंमें पाण्डवोंके वनवासके समयके आख्यान उनके अज्ञातवासके स्थान इस समय अति पवित्र मानेजाते हैं जब वह पीछे अपने स्थानपर लौटे और फिर जो महासमर हुआ उसकी आख्यायिका बहुत ही मनोहर है ।

इस परस्पर होनेवाले युद्धके निमित्त काकेशससे लेकर सागरपर्यन्त प्रत्येक जातिके विख्यात राजा कुरुक्षेत्रमें आये थे, और उस स्थानमें इस महाभारतके पीछे भी भारतसाम्राज्यके निमित्त अनेक बार संग्राम हुए और यह देश एकके हाथसे दूसरेके पास जाता रहा ।

इस युद्धसे यदुकी छप्पन शाखाओंका प्रबल प्रभाव प्रायः नष्ट होगया, यह युद्ध बराबर अठारह दिनतक होतारहा, और इसमें सहस्रों मनुष्य काम आये, उस युद्धमें पिताने पुत्रको और गुरुने शिष्यको न पहचाना ।

अन्तमें युधिष्ठिरकी विजय हुई, पर विजय प्राप्त करके भी उनको कोई सुख न हुआ, इष्ट बन्धुजनोंके मारेजानेसे उनको संसारसे विराग हुआ, और उन्होंने छोडनेकी इच्छा की, और भीमसेनके हाथसे मृतक हुए दुर्योधनको द्वारिका

मिलान कर जगत्की उत्पत्तिसे २८२९ वर्ष पीछे युधिष्ठिरके संवत्का समय माना है. यदि संसारकी सृष्टिसे लगाकर ईसाके जन्मतक ४००४ मेंसे निकाल दियाजाय तो ईसासे ११७९ वर्ष पहले अर्थात् विक्रमादित्यसे ११२३ वर्ष पहले युधिष्ठिरके वंशका प्रारम्भ सिद्ध होजायगा *।

पुराणोंमें तुरुष्क कहाहै यह वही जाति जानपडतीहै जो शाकद्वीप वा सीथियामें अरकसीजपर राज्यशासन करती थी ।

---

* प्रायः अंग्रेजोंके लिखे निबन्धोंमें सबका यही सिद्धान्त रहताहै कि सृष्टिकी उत्पत्तिको पांच सहस्र वर्षसे कुछ अधिक हुएहैं, परन्तु हिन्दुशास्त्रके परंपरा सिद्धवंशसे तथा पंचागसे और राजतरंगिणी आदिके मतसे ५००० हजार वर्षसे कुछ विशेष कलियुगको बीतेहैं, और सृष्टिकी उत्पत्ति तो करोडो वर्षकी है. जिसका वृत्तान्त प्रतिदिनतकके संकल्पमें बद्ध रहताहै. इसके लिये विशेष करनेकी आवश्यकता नहीं, संस्कृतके ज्ञाता विज्ञ पुरुष इसको जानतेहैं ।

सम्पादन की थी, जिस दुर्योधनकी ऐश्वर्यकी आकांक्षा और अधर्मने इस सर्व नाशकारी संग्रामको उठाया था।

अपने राज्यपर स्थित होकर युधिष्ठिरने अपना संवत् चलाया और अर्जुनके पोते परीक्षित्को इन्द्रप्रस्थका राज्य देकर कृष्ण बलदेवके संग द्वारकाको चले गये उस युद्धसे लगातार इस पुस्तकके लिखने तक ४६३६ वर्ष बीत चुके हैं [देखो राजतरंगिणी १७४० सन्की बनी]

इस युद्धसे बचेहुओंको संग लेकर युधिष्ठिर बलदेव और श्रीकृष्णजी जब द्वारकाको चले कि, शीघ्रही युधिष्ठिर और बलदेवजीको श्रीकृष्णके गोलोक जानेका दुःख भोगना पडा, जिनका गोलोकगमन एक अनार्य भीलजातिके बाणसे हुआ जिससे वह अशक्य होनेके कारण युद्धके योग्य न रहे तब युधिष्ठिर और बलरामजी कुछ मनुष्योंको संग लेकर सर्वथा भारतको छोडकर चलेगये और सिन्धके मार्गसे उत्तरमें हिमालयके पर्वतोंमें गये, यहांतककी कथा हिन्दू-पुराणोंमें लिखीहै, और आगे लिखागयाहै कि, वे हिमालयमें गलगये * ।

---

१ यह कथा टाड साहबने बहुत भ्रमसे लिखी है, परीक्षित्को राजसिंहासनपर बैठानेसे पूर्व ही प्रभासक्षेत्रमें श्रीकृष्ण और बलरामजीने अपनी मानवलीलासंवरण की राजतरंगिणीका कर्ता जैन पंडित है उन्होंने भी इस चरित्रको बहुत बिगाडकर लिखाहै, तथा जैनी पंडित पास रहनेके कारण पौराणिक वृत्तान्तोंमें टाड साहबसे बहुत स्थलोंमें भूलें हुईहैं बलदेवजी कृष्णसे पूर्व ही अपने स्वरूपमें मिलगये, युधिष्ठिरके साथ उनका जाना कैसे होसक्ताहै, पाँच पांडव और द्रौपदी भी हिमालयगलनेको महाप्रस्थान करगये ।

* पश्चिम और पूर्वके मध्यकी हर्क्यूलीजकी समानताका अनुमान करके पीछे मैं उसे और भी आगे लेचलनेका परिश्रम करूंगा, यद्यपि पुराणकथा हरिकुलियोंको उनके मुखिया युधिष्ठिर और बलदेवजीकी आधीनतामें काकेशसपर्वतके हिममें छोडदेती है, परन्तु जो सिकन्दरने पाँचालिकमें अपने वेदिकायें निर्माण की हैं जहांपर कि, पुरु और हरकुलियोंके बराबर निवास करतेथे, तो—

---

१ पुराणकथा तो बीचमें नहीं छोडती, पुराणकथाने तो युधिष्ठिरको स्वर्गतक पहुँचायाहै और [illegible] है, पाँच पाण्डव और एक उनकी स्त्री हिमालयको गये टाड साहबने अपना मेल मिलाने और दूसरे देशोंके नामोंकी एकता करनेकी धुनमें कथाओंको कुछका कुछ करदिया है, इसीप्रकार राजतरंगिणी और राजा [illegible] आयारसे जो दिल्लीके राजाओंकी सूची [illegible] है उसमें भी गडबड है कारण कि, उसके लिये न तो कोई प्रमाण है न कोई ऐसा शिलालेख पायाजाता है (अनुवादक)

इसी प्रकार भारतके प्राचीन [illegible] नामोंको यूनानके प्राचीन [illegible] मिलाना [illegible] की है, [illegible] युधिष्ठिर [illegible] भी [illegible] ।

(अनुवादक)

छठा अध्याय ६.

विक्रमादित्यके पश्चात्की राजपूतजातियोंका वंश सूची सम्बन्धी इतिहास;-विदेशी जाति भारतमें कब आई सीथिया राजपूत और स्कैण्डेनेविंयाकी जातिका परस्पर मिलान।



इस अध्यायका बहुत सा अंश प्रथमके पॉचवें अध्यायमें आचुका है उसके सिवाय जो कुछ अधिक कहना है उसीको यहां लिखा जायगा।

इस भाँतिसे भारतकी प्राचीन जातियोंका इतिहास सृष्टिके आरम्भसे युधिष्ठिर और श्रीकृष्णजीके समयतकका तथा युधिष्ठिरसे विक्रमादित्यके समयतकका लिखकर अब उन जातियोंका वर्णन करते हैं जिन्होंने उस समय भारतवर्षपर आक्रमण किया, और इस समय राजस्थानके ३६ राजवंशोंमें जिनका उल्लेख पाया जाताहै और जिनका वृत्तान्त लिखनेसे कितनी एक आश्चर्य जनक घटनायें प्रकाशित होजायँगी।

तातारियोंके आदि पुरुष मुगलके पुत्र ओग्जके छः पुत्र थे पहला कायन वा किउन दूसरा अयँ, यही पुराणोंके चन्द्रसूर्यसमझे जासक्तेहैं।

पुराणके आयुके एक पुत्र यदु हुए जिसे जदुभी कहते हैं, जिसके तीसरे पुत्र हय [ह्यू] से हिन्दू इतिहास लिखनेवाले किसी वंशकी उत्पत्ति नहीं मानते, और उसीके द्वारा चीलियोंने अपनेको इन्दुवंशोत्पन्न बनाया है सीथियनलोग

---

१ मुगल और औग्ज शब्दोंका समास करें तो मेगाग शब्द बनजायगा जो बाइबिलमें [illegible] जैफेटका पुत्र था।

२ बाकी चार पुत्र चार तत्व हैं जिनको दाने नवके समान किया है।

३ सर विलियम जोन्सने कहा है कि चीनवाले अपनेको हिन्दुओंसे उत्पन्न मानते हैं, और यह दोनों इन्दुजाति विचारनेसे सीथियनलोगोंसे उत्पन्न विदित होती हैं।

४ पुराणोंमें शाकद्वीप वा सीथियालिखा है [illegible]। [illegible]ने हैरोडटसको शाकद्वीप और भारतवर्षके [illegible] बताया है।

—ऐसा माननेसे हमें क्या हानि है कि युधिष्ठिर और बलदेवकी आधीननामिक एक दल इससे आठ सौ वर्ष पहले यूनानमें जाकर बसगया हो, वे अस्त्र शस्त्र और वैज्ञानिक व्यवहारोंके ओगर चतुर तो थे ही, सम्भव है कि, सरलतासे उन्होंने यूनानियोंको जीतलियाहो, जिस समय पंजनदके स्वतंत्र नगरोंपर सिकन्दरने आक्रमण किया तब तो अपनी पताका पर अपने पूर्वपुरुष था उस समय जब पुरुवंशी और हरिकुलियोंने उसका सामना किया हरकूलीजका चिह्न दिखाया, यदि हिन्दू जाति और यूनानियोंकी देवकथाका परस्पर मिलान किया जाय तो सिद्ध होजायगा कि, यह एकही सिद्धान्तसे प्रगटहुए हैं, और प्लेटो अर्थात् अफलातून कहता है कि यूनानियोंने अपनी देवकथाओंको मिश्र और फिनिशियोंसे संग्रह कियाहै, मैं पूछता हूं हरकुलियोंका दल क्या हेराक्लाइडी लोग नहीं होसके, जो वालनेके कहनेके अनुसार पेलोपोनिससमें ईसासे १०७८ वर्ष पहले जा बसेथे, और यह समय हमारे निर्धारण किये हुए महाभारतके समयके बहुत ही समीप समयका है।

हेराक्लाइडीलोग अटरियसके वंशधर होनेका दावा करतेहैं, और हरिकुल पुत्र ओर [illegible] अपनेको कहतेहैं।

आरक्सीज नदीके किनारे निवास करते थे, इलामें जुपिटर [बृहस्पति] से एक पुत्र उत्पन्न हुआ. उसका नाम सीथिस था. इसके पलस [पालास] नापस वा [नापान] दो पुत्र हुए।

हम पूछते हैं क्या यह नातारियोंकी वंशावलीका नागवंश है जो अपने महान् कार्योंके निमित्त प्रसिद्ध था, जिन्होंने देशोंके विभाग किये, उन्हींके नामसे उनका नाम पालियन वा पाली विख्यात हुए, उनकी सेना नीलनदी-तक मिसरमें पहुँची, बहुत सी जातियोंको अपने आधीन किया और अपने सीथियन राजको पूर्वमें महासागर कासपियन सागर और मोई टिसकीलतक बढाया, इस जातिके अनेक राजा हुए जिनके वंशमें सैकन्स [सैकी] मेसे-जेटी [जटवाजिट] एरी अस्पियन एशियाके अश्व नामक पुरुष और दूसरी अनेक जातियां हैं जिन्होंने असीरिया और मीडियों जीतकर राज्यको तहस नहस करदिया. और वहांके निवासियोंको अरक्सस नदीके किनारेपर लेजा-कर बसाया।

हमारे छत्तीस वंशोंमें सकी जट अश्व और तक्षक ऐसे नाम पाये हैं और यही नाम यूरोपके प्रारंभिक सभ्यताके समयकी दूसरी जातियोंमें भी पायेजाते हैं, इससे उनके मूल निवास्थानके खोजनेमें और भी बहुतसे प्रमाण खोजनेकी आवश्यकता है।

देवोंका कथन है कि जो समस्त जातियां कास्पियनझीलके पूर्वमें रहती हैं उन सबको सीथिक कहतेहैं, उनमें उसी समुद्रके निकट दाही (दाहि) जाति

कुछवर्षोंके बीतजानेपर ग्रहलोटगण ईडरको छोडकर अहाड * नामक स्थानमें चले गये। इसके अनुसार ग्रहलोटनामके वदले इन्होंनें आह्लर्यनाम धारण किया। इसही नामसे थोडे दिनोंतक विख्यात होते रहे। परन्तु शीघ्रही इस नई आख्याके वदले "शिशोदीय" नाम पड़गया, कालक्रमसे यही नाम वलवान होगया। सम्पदविपदमें—भाग्यचक्रके वरावर घूमते रहनेमेंभी फिर यह नाम नहीं वदला। एकदिन जिन राजाओंने अपने प्रचण्डप्रतापसे सौभाग्यकी ऊँची सीढीपर और भारतीय राजाओंके ऊपरीस्थानमें चढकर जिस शिशोदिया नामकी गौरव गरिमाका प्रकाशमान उदाहरण दिखाया था उनके वर्त्तमान वंशधर गणभी उस शिशोदियानामसेही आजतक विख्यात होरहेहैं।

यद्यपि शिशोदिया नाम सब नामोंसे वलवानहै तथापि राजस्थानके भट्ट कविगणोंने इसको ग्रहलोटवंशकी एक शाखा कहकर वर्णन कियाहै।

यह ग्रहलोट कुल चौवीस शाखाओंमें विभक्तहै। इन चौवीस शाखाओंमें आहर्य और शिशोदियाही अधिक प्रसिद्धहैं।

यदु—यद्यपि महाराज ययातिनें वड़ेपुत्र यदुको भारतवर्षका सार्वभौम अधिपत्य न देकर कनिष्ठपुत्र पुरुकोही दिया था। तथापि कालक्रमके अनुसार यदुवंशही विशेष उन्नतिपर पहुंचगया था।

भगवान् श्रीकृष्णजीके अन्तर्द्धान होनेपर जव पाण्डवगण महाप्रस्थानको चले तव उनके साथ यदुकुलतिलक श्रीकृष्णजीके वंशवालेभी चले थे. परन्तु आगे न वढ़ सके और पंचनद क्षेत्रके दुआवे × गिरिदेशमें पहुँचकर कुछ समय विताया, जव वहां सव वातोंमें असुभीता हुआ तो उस शैलमंडित भूभागको छोड़कर सिन्धुनदके दूसरीपार जावालिस्थान नामक देशमें गये. और तहांहीं अपने राजपाटके स्थापन करनेकी अभिलाषा करके प्रसिद्ध गजनी नगरीकी प्रतिष्ठा की। उस जावालिस्थानमें यादव लोगोंका राज्य दृढ़ताईसे स्थापित होगयाथा एक—समय वह था कि जव वहराज्य समरखण्ड (आधुनिकसमरकन्द) तक अप्रतिहत प्रभावसे विस्तारित होगया था परन्तु विधिलेखके अवश्य होनहार विधानके अनुसार यादवलोग वहुत

* यह अहाडा ग्राम उदयपुरसे १ मीलपूर्वकी ओर रेल्वे स्टेशनके पास है [illegible]-का दग्धस्थान यहीहै और यह ग्रामतीर्थभी माना जाताहै।

× यादवलोग जिस गिरिव्रजमे जा वसेथे वह सिन्धुनदके दोआवेमेंहै [illegible] उसको "जदुवाडुंग" कहतेहैं।

दिनोंतक राज्य नहीं करसके। भट्टग्रन्थमें पाया जाताहै कि यह लोग कहांसे चले आये और फिर भारतवर्षमें आश्रय लिया।

यह विषय स्थिर करना असम्भवहै कि किस दैवदुर्विपाकसे श्रीकृष्णजीके वंशधरगण फिर भारतवर्षमें आये। तथापि इस विषयमें ऐतिहासिकतत्त्व लोगोंने जो मत प्रकाश कियेहैं उन सबका सार ग्रहण करनेसे यही अनुमान किया जा सकताहै कि सिकन्दरसे परवर्ति राजाओंने उनको कहांसे निकाल दिया होगा। भट्टग्रंथोंके पढ़नेसे इतना अवश्य ज्ञात होजाताहै कि श्रीकृष्णजीके वंशधरगण किसी दैवदुर्घटनाके वशसेही पुनर्वार भारतवर्षमें आये थे।

पुनर्वार भारतभूमिमें आनेपर यादवलोग पंजाबमें बसे और वहांपर शालिवाहनपुरनामक एक नगर बसाया। इस नये नगरमें यह लोग बहुत दिनतक न रह सके, शत्रुके द्वारा ताड़ित होकर शीघ्रही राजस्थानके मरुस्थलमें आये इस मरुस्थलमें पहले लंगा, जोहिया और मोहिल आदि जातियें वास करती थीं। यादव लोगोंने उनको निकालकर उसदेशको अपने अधिकारमें करलिया। यहांतक कि क्रमानुसार वहांपर राजा होकर राज्य करने लगे। समयानुसार फिर कई एक नगर स्थापन किये। उन समस्त नगरोंमें तनोत, डेरावल और जैसलमेर ही विशेष प्रसिद्ध हुए।

कुसमयके प्रचंडप्रभावसे जाबालिस्थानसे दूर किये जाकर जब यादवलोग दुबारा भारतवर्षमें आयेथे तब उनमें बहुतसे छोटे २ गोत्र निकलेथे। उन गोत्रोंमें भट्टिलोग विशेष पराक्रमी हुए। समयानुसार इस ही गोत्रकी अधिक प्रतिष्ठा हुई थी।

निवास करती हैं, इनमें प्रत्येक जातिके एक मुख्य नाम होते हैं, यह सब एक ही स्थानपर नहीं रहतीं यह भ्रमण करती हैं, इनमें असी पसियानी टाचरी सैकरैन्ली सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं, इन्होंने वाक्ट्रियादेश यूनानियोंसे लेलिया था, इन शकजातियोंके एशियामें वैसे ही आक्रमण हुए हैं, जिस प्रकार कमेरियनलोगोंने किये थे, उन लोगोंका वाक्ट्रियाको अपने अधिकारमें करलेना ज्ञात होताहै, इसी प्रकार उन्होंने आर्मोनियाके सबसे श्रेष्ठ देशको भी अपने आधीनमें करलिया था जो उनके नामसे सैकसैनी[३] कहलाता है।

राजस्थानकी कौन २ सी जातियां इन्दुवंशके अश्व और मीडियाकी संतान हैं और जिनके नये नये नाम होगये हैं, इनके खोज करनेके लिये अब हमको ठहरनेकी आवश्यकता नहीं है।

केवल आक्रमणके विषयमें ही अब हम अपनी चित्तवृत्ति लगातेहैं और इस बातका प्रमाण भी देंगे कि यह आक्रमण उसी समय हुए थे जब कि इनका दल यूरोपमें प्रविष्ट हुआ था, इसी हेतु यूरोप तथा राजपूतोंकी उत्पत्तिका एक ही मूल पुरुष होनेका सिद्धांत निकल आता है,जिसकी पुष्टिमें हम उनके देवी देवताओंकी कथा, वीरताकी रीतियोंकी कविता शिल्पकी सुन्दरता भाषा गानकी समानता भी दिखासकते हैं हिन्दू सीथिक जेटी तक्षक और असी जातिका भारतमें प्रथम आना और शेषनागतक्षकका [टीचरिस्थान] शेषनागदेश वा

---

१ पुराणोमे इन शाकद्वीपकी असी और टाचरी जातियोंको अश्व तक्षक और तुरुष्क नामसे लिखा है।

२ मेरी समझमे शकीशब्द संस्कृतकी शाखा शब्दका अपभ्रंश है जिसका अर्थ शाक वा जाति है।

३ टर्नर साहबके ऐंगलोसैक्सन जातिके इतिहासमे सैकेसेनी लोगोंको सैक्सन लोगोंका पुरुषा लिखा है।

४ हेरोडाटस्ने कहा है कि जबसे जेटी लोगोंने मेरियन लोगोंको निकालदिया, और वे क्रीमियामे जाकर रहे उस समय यहांपर थिसि जेटी वा पश्चिमके जेटी लोग निवास करते थे, और उसी समयसे जेटी और किम्बरी जातियें बाल्टिक सागरके किनारे जा बसीं।

डेस्टीकिपचकके जहांसे इन जातियोंका निकास है, पहली [illegible] लोगोंकी जातिके स्मारक चिह्नोंका वृत्तान्त लिखते हुए कहते हैं, कि उनके स्मारक चिह्न और पत्थरोंके [illegible] बेल्ट वा ड्रुइड पुरुषोंके बचे हुवे स्मारक चिह्नोंकी समान हैं।

[illegible] काठीजातिकी एक शाखा [illegible] है जिनके [illegible] लोग जिनको [illegible] कहते हैं, [illegible] जाति भी [illegible] है।

(स्कन्धावार) के त्रिदेव कहाते हैं, यह सूर्य चन्द्र वंशकी त्रिमूर्ति है, थोर अर्थात् गर्जनेवाला युद्धका देवता, यही हर वा महादेव-संहारकर्त्ता। दूसरा वोडन-बुध-रक्षाकर्त्ता, और तीसरी फ्रेया उमा उत्पन्न करनेवाली शक्ति है।

टैसिटसे पचास वर्ष पीछे होनेवाले टालेमीके लेखको उद्धृत करके पिंकर्टन कहता है कि जेटलोगोंके देश युटलैण्ड वा जटलैण्टमें छः जातियां थीं जिनमें लिंगई [सुएवी × वा सुइयोनीज] कही और हेर्मन्द्री भी संयुक्त थी, जो एल्ब और वेजर नदीके मुहानेतक फैलगई थीं, उस स्थलमें उन्होंने 'युद्धके देवताके नामपर' इर्मनस्युल नामक एक स्तंभ खडा किया था, जिसके निमित्त सैमिज इस प्रकारसे वर्णन करता है कि कोई लोग इसे मार्स (मंगल)का और कोई हर्मीज साल अर्थात् मर्क्यूरी (बुध) का स्तंभ कहते हैं, उसने स्वभावसे ही यह प्रश्न किया है कि बुध (मर्क्यूरी) के यूनानी नामसे सैक्सनलोग कैसे परिचित हुए।

संस्कृतमें यज्ञके स्तंभोंको सुर वा सूल[2] कहतेहैं जिसे भारतके युद्ध देवता हरके साथ जोडदेनेसे हरसूल होजाता है, राजपूत तर्वारयुद्धके समय अपनी सहायताके लिये हरको त्रिशूलि सहित बुलाता है, उनका रण शब्द मार मार कहा जाता है।

युटलैण्डकी छः जातियोंमेंसे किंब्री जाति अधिक विख्यात है वह कहती है हमने अपना नाम अपनी वीरताकी नामवरीसे पाया है।

कुमारे जो युद्धके देवता हैं उनके सात[6] शिरहैं।

---

१ हिन्दुओंके देवता मुख्य तीनहैं कृष्ण रक्षाकरनेवालेहैं यह इन्दुवंश बुधके वंशधरहैं कि जिनकी पूजाने स्वयं देवता मानेजानेके प्रथम करतेथे [कृष्णका वेद धर्म है (अनुवादक)

× जिसको टैसिटसने सीवीजाति लिखाहै।

२ यज्ञस्तम्भका नाम संस्कृतमें सुर वा सूल नहीं उसका नाम स्तम्भहै और यह शब्द शूलहै जो लोहेका नोकदार एक आयुध होताहै शिवके पास त्रिशूलहै [अनुवादक]

३ हरस्कैंडिनेवियाका थोरहरी बुध हर्मीज वा मर्क्यूरी है,

४ मेलेटने इसको कम्पाकरसे निकालाहै जिसका अर्थ लडनाहै।

५ कु उपसर्ग है जिसका अर्थ बुरेका है इससे कुमारका अर्थ बुरा मारनेवाला होता, कदाचित् इसीसे रोमके युद्ध देवमार्सकी उत्पत्ति हुई हो, जैसी हिन्दूजातिमें कुमारकी उत्पत्ति वैसे ही जाह्नवी देवी [जूनो] से विना मैथुनके यूनानियोंके युद्धदेवकी उत्पत्ति हुईहै, इनके साथ सदा मोर रहताहै जो जूनोका पक्षीहै।

६ कुमारके सात शिर नहीं छ. शिरहैं और कुमारका अर्थ बुरा मारनेवाला नहीं है इसका अर्थ क्वाराहै (अनुवादक)

कर पैरोपैमिसनको उल्लंघनकर जैगजार्टीज वा जेहूनपर होकर साकिटाई वा शाक्द्वीपमें पहुँचनेकी इच्छा करते हैं. और वहांसे इसी प्रकार डेस्टी किपचकसे तश्कजेर्टीकिमेरीकट्टी और हूनजातिको भारतवर्षके मैदानोंमें लानेकी इच्छा करते हैं बहुतसे विषयोंकी इन अजान देशोंमे हमको जानकारी प्राप्त करनेकी इच्छा है यहां पुराने समयमें सभ्यताको स्थान मिलाथा. और यह बडे २ नगर चंगेजखांकी चढाईके समयतक विद्यमान थे, जो यह सोचते हैं कि एशियाकी उच्च भूमिकी, जातियां पशुमात्रको चराया करती थीं, वे बडी भूलमें पडे हैं, डिडिगनीजने पुराने प्रमाणोंसे इस वातको सिद्ध करदियाहै कि जबमूलोगोंने यूची वा जिट जातिपर चढाई की तो उन लोगोंका ऐसे नगर संख्यामें सौसे अधिक मिले जिनमें भारतकी सौदागरीकी वस्तुएं थी, और उन लोगोंमें जो मुद्रा प्रचलित थी उसपर वहांके राजाओंकी मूर्ति अंकित थीं।

मध्य एशियाकी यह दशा सन् ई० से बहुत पहले की थी जो इन देशोंमें होनेवाली लडाइयोंसे वरबादी हुई जिसका निदर्शन यूरोपमें नहीं पाया जाता. और जिनके कारण यह देश निर्जन और उजाड हो रहाहै और इस कालमें जेटिक जातिके साथ तमूरकी लडाईमें उसके लुब्ध पूर्वजोंके संहारकारी जीवनका निदर्शन होगा।

साइरसके समयमें ईसासे छः सौ वर्ष पहले इन बडी जेटिक जातिके राजकीय प्रभावकी यदि हम परीक्षा करें तो यह बात हमारी समझमें आजायगी कि तैमूरकी उन्नत दशामें भी इन जातियोंका पराक्रम नाश नहीं हुआ था यद्यपि २० बीस शताब्दीका समय व्यतीत हो चुकाथा, उस [१३३० ई.] में जेटिक जातिके पिछले राजा तुगलक तैमूरखांके राज्यशासनमें चगताई राज्यकी पश्चिम ओरकी सीमा डेस्टी किपचिप और दक्षिण ओरकी जगजार्टीज और जेहून नदी थी और जिसके नदपर टॉमिरिसके समान जेटीजातिके रानकी राज-

किम्ब्रीचर्सोनीजका छः शिखाला मार्स देजर नदीके किनारे जिसके नामसे इर्मिनस्योल बनाया गया था, सेक्सनी, कटी सीबी वा गुएबी (शेवा) जोटी वा जेटी और किम्ब्री जातिके लोग उसकी पूजा करते थे जिनके नाम तथा धर्म सम्बन्धी आचार विचारसे भारतवर्षके वीर पुरुषोंके आचार विचारका एकही मूलसे प्रगट होना विदित होता है ।

इतने बडे विस्तारित विषयके मिलान करनेमें उनकी समस्त रीति और व्यवहार तथा धर्मसम्बन्धी विश्वास भी संयुक्त किये जावेंगे, इसकारण हम इस विषयको एक पृथक ग्रन्थके लिये रखछोडतेहैं । हेविर्योंकी अप्सराओंमेंसे दो जोरिया वहने सुएवी वा सीबीजातिकी वल्काइरी वा नाशकरनेवाली भगिनियोंकी अप्सराओंमेंसे जाननी चाहिये, जो समरभूमिसे वीरराजपूतोंको अपने समीप बुलातीहैं, तथा जो यूनानियोंके हेलियाडी लोगोंके एल्सीनियम [स्वर्ग] के समान है, ऐसे सूर्यलोकमें उन वीरोंको लेजातीहैं, जहां पहुंचनेकी स्कैंडिनेविया (स्कन्धावार) को गेवासी ओडिनके वंशधर तथा सीथियाके मैदानोंके रहनेवाले तथा गंगातटवासी, बुध और सूर्यके वंशधर सबही इच्छा करते हैं ।

युद्धके दिन प्रत्येक वीरजातिमें हम देखतेहैं कि यशके निमित्त [illegible] उत्तेजित होकर मृत्युकी कुछ भी चिन्ता नहीं करते और युद्धको रणरंगभूमिपर नाटक करनेवाले यह पात्र चाहे देवलोक चाहे मर्त्यलोक सम्बन्धी [illegible] दोनों एक ही प्रकारसे आचार विचार करते तथा अभिनय करते दिखाई देते हैं, और अर्थात गर्जनेवाले देवताको सीथिजातिके लोग स्वर्गमें लेजाते हैं, और

धानी थी, कोजेन्ट, ताशकन्द उट्टार * साइरो पोलिस और सबसे उत्तरकी ओर इस्कन्दरिया चकताईराज्यकी सीमाके भीतरे थे ।

जेटीजोट वा जिट और तक्षक जातियां जो भारतवर्षके छत्तीस राजवंशोंमें संयुक्तहैं, यह सब ही सकटाईदेशसे आई हैं हम पुराणोंसे सबसे पहले समयमें उनके दूसरे स्थानमें जानेका पता लगावेंगे, परन्तु उनकी इस समयकी चढाइ-योंके विषयमें जो कुछ वृत्तान्त है उस बातको महमूदगजनवी और तैमूरका इतिहास हमको भलीभांतिसे परिचित करताहै ।

जो ऊदके × पर्वतोंसे आरम्भ करके मकरानके किनारेतक और श्रीगंगाजीके किनारे २ जिटजाति * बहुतातयसे फैलीहुई है और केवल शिलालेख वा पुराने ग्रन्थोंमें तक्षकजातिका नाम पायाजाताहै ।

उनके आदिनिवासस्थानोंमें और उन जातियोंके वीच जिनको इससमयके पुरुष पृथक् २ नामोंसे पुकारतेहैं, विशेष खोजकरनेसे उनका असलीनाम प्रकाशित होगा, जिसको इससमय सिन्धुनदीके तटपरके रहनेवाले भलीभाँतिसे जानतेहैं, और संभवहै कि ताजक लोगोंमें तक्षक वा तकिउकका पता लगजाय, जो अबतक अपने पुराने स्थानमें रहतेहैं, जो पुराने ग्रन्थकारोंका लिखाहुआ ट्रांस-आक्सियाना और चौरस्मिया, ईरानवालोंका मावेरुनहर देशी भूगोलमें दिया-हुआ, तूरान तुर्किस्तान वा टोचारिस्तान और टाचरी तक्षक वा तुरुष्क नामके भारतवर्षपर चढाई करनेवालोंका निवासस्थानहे, जिनका वर्णन विद्यमान शिला-लेख और पुराणोंमें मिलताहै ।

जेटीलोग वहुत समयतक अपनी स्वाधीनता बनाये रहे जिससमय साइ-रिसने उनको अपने वशीभूत करनेके लिये चढाई की तो टोमरिस उसके सन्मुख हुआ, जब निरन्तर लडाई करते २ उनको सतलजके पार उतरना पडा तो भी उनका पुराना स्वभाव नागया, जिसका वर्णन हम आगे चलकर करेंगे, यद्यपि

---

* उट्टार कदाचित् यह प्राचीन भूगोलवालोंका ओटोराकुरोहै, उत्तरीकुरु यह इन्दुवंशकी एक शाखाहै ।

× रैनलेके नकशेमें दियाहुआ जिद्का डांगजोडीजई यदुनामक एक पर्वत जो पंजाबमें ऊपर-की ओर है और जहांपर सौराष्ट्र देशसे निकाले जानेके पीछे यदुजातिने अपनी एक बस्ती बसाई थी ।

* नूनरी वा लमडीजातिके लोग बलोचिस्थानमें रहनेवाले जिट .. यह, लोग नहीं हैं जिनको रैनेलने लोमडी भी लिखाहै ।

शिवजी तथा हरजी भारतवर्षियोंके जीव जोव हैं, अपने ही उपासकोंको लेजाते हुए युद्धमें देखते हैं, जिसमें रक्षा करनेवाले स्वयं भगवान कृष्ण और अर्थात् भवानी भी संयुक्त होतीहैं।

युद्धका रथ—दशरथ * तथा महाभारतमें भी रथोंसे युद्ध होना जेग्जर्टीजके किनारे जेटियोंने यूनानमें जर्कसीजको, अर्वेलोमें दाराको दी थी उस समय उनके साधन रथ ही थे।

सौराष्ट्रकी काठी × कोमानी और कौमारी जातियोंमें सीथियन रहन इस समयतक वर्तमान है।

* दशरथ रामचन्दजीके पिताका नाम है और रथीका बोधक है।

१ हेरो डाटसने इस प्रकार लिखाहै कि, ईरानके सूबोंमे डेरियस वा दाराका भारतीय सबसे अधिक धनसम्पन्न था, उससे उसको सोनेके छः से टैलैण्ट मिलते थे, और एरिय लेखसे यह बात सूचित होती है कि, उसकी एण्डोसीथिक प्रजाकी उस समय उसके पास सर्वोत्तम सेना थी जब कि, सिकन्दरके साथ दाराका संग्राम हुआ था, सैकसेनीके सिवाय और भी ऐसी जातियोंके नाम ३६ राजकुलोंके समान हैं और विशेपकर दाहि (दाहियां ; छत्तीस कुलोंमेंसे एक नाम है।

इस इण्डोसीथिक सेनामें १५ हाथी और दोसौ युद्धके रथ थे जो पार्गियन पुरुषोंके साथ दाहनी ओर तथा दाराके समीप रक्खे गयेथे, सिकन्दरने जिस सेनाकी कमान स्वय की थी उस सेनाके सामने वे लोग डटे थे।

वह अपने प्राचीन इतिहासको नहीं जानते, तो भी यह अपने पुराने नियमके अनुसार लाहौरके जिटअधिपतिके अधिकारमें रंगरूट सवारोंकी समान बीकानेर और भारतवर्षके मरुस्थल और दूसरे प्रदेशोंमें भी चरवाहों [राजचरवाहों] की समान रहतेहैं, थोडे समयसे ही इन्होंने चरवाहोंका कार्य छोडकर किसानी करनी आरम्भ करदीहै, ट्रान्स और आक्सियानाकी जो निरन्तर भ्रमण करनेवाली जाती थीं उनके वंशधर अब भारतके जंगलोंमें सबसे उत्तम खेतीका कार्य करनेवाले हैं ।

विचारसे यह बात जानीजातीहै कि इन हिन्दूसीथिक जातियों अर्थात् जेटी तक्षक. असीकट्टी राजपाली, हूनकेमेरीकी चढाइयोंके कारणसे ही चन्द्रवंश वा इन्दुवंशके स्थापन करनेवाले बुधकी पूजा आरंभ हुई है ।

हेरोडोटसने जेटीलोगोंको आस्तिक * बताया है, और कहाहै कि वे आत्माके अमर होनेका सिद्धान्त रखते थे, यही बौद्धलोगोंका सिद्धान्तहै ।

परन्तु हम पहले असी वा अश्वजातिके विषयमें कुछ आलोचना करके पीछे असी जेटी वा स्केण्डेनेवियाके जट जिनके द्वारा किम्बरीक चिरसोनीजका नामकरण हुआहै और सीथिया तथा भारतवर्षकी जेटीजातिके धर्मविषयकी समानताका उल्लेख करेंगे ।

अश्वका इन्दुवंश [देवमीढ और बाजश्वके वंशधर] सिन्धुनदीके दोनों तटोंपर बसगया, और सम्भव है कि इस अश्वनामसे ही 'एशिया' खण्डका नाम पडगयाहो ।

हेरोडोटस लिखताहै कि यूनानवालोंने प्रोमिथियसकी स्त्रीके नामपर एशिया नाम रक्खा है, और कोई ऐसा कहते हैं कि यह मेनसके एक पोतेके नामसे हुआ था, जिससे आदिपुरुष मनुके वंशधर अश्व जातिका ही ज्ञान होता है ।

आशासकम्भरी · माता आशाकी देवी है, जो जातियोंकी रक्षा करने-

क्योंकि सन्मान भी राजपूतोंमें जर्मनकी भाँति हैं सन्मानके लिये उनके पीछे देवी वा देव शब्द लगाते हैं, उनके लिये ही जुहारव्रतको करते हैं शाकाबन्धकी इसीविपर राजपूतोंका गर्व रहता है. जो यह रीति शाका करनेसे ही प्राप्त होती है, यह सीथियन और जेटीलोगोंकी ससिया रीतिसे मिलती है जैसा कि, स्ट्रॉबोने लिखा है ।

सब ही राजपूत आशा पूर्ण मनोरथकी पूर्ण करनेवाली देवीकी पूजा करते हैं अथवा शाकम्भरी अर्थात् रक्षा करनेवाली देवी प्रत्येक कार्यके आरम्भमें स्तुति प्रार्थना पूर्वक पूजी जाती है।

यह अश्व जाति इन्दु वंशकी ही थी, पर यह नाम सूर्यवंशकी एक शाखाका भी था, इससे विदित होताहै कि यह लोग एक विख्यात अश्वारोही थे * इस जातिमें अश्वकी पूजा होती थी, और सूर्यके निमित्त उसीकी बलिदेते थे, शीतकालकी संक्रांतिपर अश्वमेध महायज्ञ होता था, यह इस बातका एक बडा निदर्शन है, कि इन अश्वजातिका तथा जेटिक जातिका निकास सीथियनजातिसे ही है जो पिंकर्टनके इस सिद्धान्तको प्रमाणित करतीहै कि कास्पियन समुद्रसे लेकर गंगा पर्यन्त सीथियन लोगोंकी एक बडी जाति फैली हुई थी।

सन् ई० से १२०० वर्ष पहले तक सूर्यवंशी राजा गंगा और सरयूके किनारे अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान करते थे, जिस प्रकार जेटी जाति साइरसके समय करती थी, हेरोडाटसने कहा है कि सृष्टिक्रममें जितने जीव उत्पन्न हुए हैं उनमें सबसे अधिक शीघ्रगामी जीवको ही अपने इष्ट देवताके निमित्त बलि देना यह जाति उचित समझती थी, इस समय तक राजपूतोंमें घोडेकी पूजा और बलिकी रीति चली आतीहै, इस बडे नियमका वृत्तांत अपने मुख्यदेवता सूर्यके प्रतिरूपी इस अश्वपूजनकी जेटीजातिके असीलोगस्कैण्डिनेवियामें लेगये, और इसीप्रकार सू सुएवीकट्टी (कत्ती) सुकीम्ब्री और जेटीनामकी सब पुरानी जर्मनजातियोंने इस रीतिका जर्मनके जंगलों और एल्प तथा वेजर नदियोंके किनारोंपर प्रचार किया।

दूधकी समान श्वेतरंगका घोडा देवताओंकी सूचना देनेवाला समझा जाताथा, उसके हींसनेसे भविष्य बातोंका निर्णय करतेथे बुध (वोडन) के वंशधर अश्वजातिके लोगोंका यमुना और गंगाके किनारेपर भी उससमयमें यही विश्वास था, जब कि स्कैन्डिनेवियाके पर्वतों और बाल्टिक सागरके किनारोंपर किसीमनुष्यका पांव भी नहीं रक्खागया था, और इसीशकुनसे डॉग-यस हिस्टास्पस [हींसने हिनहिनाने] को राजछत्रकी प्राप्ति हुईथी, चन्द्रभाट भी इसके शब्दसे अपने मुख्य वीरोंकी मृत्यु सूचना मानगयाहै।

मस्तिष्क सम्बन्धीकार्योंमें प्रवृत्ति न रहनेसे वीर राजपूत बहुधा आलसी और इन्द्रियोंकी विषयासक्तिमें मग्न रहतेहैं, और जब इन बातोंसे सचेत किया जाताहै तो उत्साहके मारे उन्मत्त होजाते हैं, और समय किसी ऐश्वर्यसम्पन्न बड़े राज्यके प्रबन्ध और यथार्थ शैलीपर च[illegible] शिक्षा रहती है तो उसमें भी वैसेही आमोद और प्रमोद तथा [illegible] एक अंश वैसे ही पायेजातेहैं, जो जेहूनके तटपर रहनेवाले जेटियां और [illegible] के निवासियों और यहांके राजपूतोंमें समानरूपसे मिलती जुलती पाई ती है ।

जर्मन जातिसे मिलते हुए ही राजपूतोंके शकुन और भविष्य हैं [illegible] मद्यपानमें राजपूत सीथिया वा यूरोपकेलोगोंसे कम नहीं है, यद्यपि शास्त्रोंमें मादकद्रव्योंके पानका निषेध है और तो भी इस रीतिसे मुझे [illegible] हुआ है कि यह बात इनको भारतवर्षसे प्राप्त नहीं हुई है । ओडिन [illegible] मीडनामक मद्यको इतने प्रेमसे कभी नहीं पीते कि जितने प्रेमसे राजपूत मध्वा * पीते हैं, वरदाईने उसको अमृतका × प्याला कहा है, वह कहता है लाल मणिकी समान अनारके दानोंसे चमकता हुआ अमृतका प्याला पी भाट ॰ निर्भय हो जातिका बखान करने लगा कि, हे राजन्! आप और शत्रुको दान देनेमें समान उदारतावाले हो, आप दीर्घ जीवी हो ।

यदि टीमिरियको सेकी जातिके निवाससे इस उत्सवकी उत्पत्ति हुई तो यह [illegible] पूर्व और पश्चिमीय देशोंमें निवास करनेवाले सेकी लोगोंकी समानताको निश्चय कि, इतना [illegible] होरहा है पुष्टि करनेके लिये प्रमाण स्पष्ट होसक्ता है, ।

* मध्वा एक मादक रस है यह मधुशब्दसे निकलता है जिसका अर्थ संस्कृतमें मधुमक्खी मीड नामक मद्य शहदसे बनना प्रसिद्ध है, यदि जर्मनवालोंका मीड शब्द हिन्दुस्थानियोंके म[illegible] निकला हो तो यह एक बड़े आश्चर्यकी बात होगी, ऐसा होनेसे प्याला और स्वर्ग ये इन दो के नाम उन्नतस्थानके लिये प्रतीत होंगे ।

× [illegible] निषेध करनेवाला [illegible] है, इसभाँतिसे इस स्थान अर्थात् [illegible] [illegible] है यह जर्मनका और हिन्दुस्तानियोंकी समानताका प्रगट [illegible] ता है ।

॰ [illegible] मदको भोजनके समय जब अपने हाथसे प्याला दिया । उसने यह शब्द कहेथे ।

वह अपने प्राचीन इतिहासको नहीं जानते, तो भी यह अपने पुराने नियमके अनुसार लाहोरके जिटअधिपतिके अधिकारमें रंगरूट सवारोंकी समान बीका-नेर और भारतवर्षके मरुस्थल और दूसरे प्रदेशोंमें भी चरवाहों [राजचरवाहों] की समान रहतेहैं, थोडे समयसे ही इन्होंने चरवाहोंका कार्य छोडकर किसानी करना आरम्भ करदीहै, ट्रान्स और आक्सियानाकी जो निरन्तर भ्रमण करनेवाली जाती थीं उनके वंशधर अब भारतके जंगलोंमें सबसे उत्तम खेतीका कार्य करनेवाले है।

विचारसे यह बात जानीजातीहै कि इन हिन्दूसीथिक जातियों अर्थात् जेटी तक्षक, असीकट्टी राजपाली, हूनकैमेरीकी चढाइयोंके कारणसे ही चन्द्रवंश वा इन्दुवंशके स्थापन करनेवाले बुधकी पूजा आरंभ हुई है।

हेरोडोटसने जेटीलोगोंको आस्तिक * बनायाहै, और कहाहै कि वे आत्माके अमर होनेका सिद्धान्त रखते थे, यही बौद्धलोगोंका सिद्धान्तहै।

परन्तु हम पहले असी वा अश्वजातिके विषयमें कुछ आलोचना करके पीछे असी जेटी वा स्कैण्डेनेवियाके जट जिनके द्वारा सिम्बरीक चिरसोनीजका नाम-करण हुआहै और सीथिया तथा भारतवर्षकी जेटीजातिके धर्मविषयकी समा-नताका उल्लेख करेंगे।

अश्वका इन्दुवंश [देवमीढ और बाजश्वके वंशधर] सिन्धुनदीके दोनों तटों-पर बसगया, और सम्भव है कि इस अश्वनामसे ही 'एशिया' खण्डका नाम पडगयाहो।

हेरोडोटस लिखताहै कि यूनानवालोंने प्रोमिथियसकी स्त्रीके नामपर एशिया नाम रक्खा है, और कोई ऐसा कहते हैं कि यह मैनसके एक पोतेके नामसे हुआ था, जिससे आदिपुरुष मनुके वंशधर अश्व जातिका ही ज्ञान होता है।

आशानकस्सरी * माता आशाकी देवी है, जो जातियोंकी रक्षा करने-वाली माता है।

वल हल्लाके समान जो इन्द्रलोक हिन्दुजातिका स्वर्ग है वहां स्कैनियाकी स्वर्गीय हीर्वीकी जोरिया वहनें वीर राजपूतोंको अपने हाथसे मद्यका प्याला देतीहैं जिसकी जिटी - वीर इच्छा करताहै ।

राजपूतोंकी मदोन्मत्त दशा बहुत ही कम प्रतीत होती है, परन्तु इस समय एक विशेष हानिकारक और नवीन कुचालकी रीतिने निमंत्रणके उस प्यालेकी प्रतिष्ठा बहुत घटादी है, और उस पवित्र पुर्ष्पके स्थानपर अफीम खानेकी रीति बहुत प्रचलित होगई है, उससे प्रत्येक उत्तम गुण नष्ट होजाते हैं, जो बात जर्मनीके इतिहास लिखनेवाले लोगोंने वेजर और एल्बनदीके किनारोंपर रहनेवाली जातियोंके विषयमें उनके उन्मत बनानेवाले नशीले द्रव्योंकी प्रीतिके विषयमें लिखी है. इस हानिकारक स्वभावके विषयमें इनके निमित्त हम भी उन्हीं शब्दोंका प्रयोग करेंगे, वह उन लोगोंके लिखे शब्द यह हैं कि उनको मतवाला होने दो उनके निमित्त तुमको अपने आयुधोंका भय दिखानेकी आवश्यकता न होगी, उनकी कुरीतियें उनको स्वयं तुम्हारे आधीन बनादेंगी ।

स्कैंडिनेवियाके लडाईके देवताका नाम थोर है शत्रुकी खोपड़ी उनका पानपात्र है ।

हर इन सब लोगोंकी रक्षा करते हैं जो लडाई या तीव्र मादक द्रव्योंसे प्रेम रखते हैं, राजपूत वीरोंकी विशेषकर उनमें शक्ति होती है. इस कारण रक्त या मद्य इस देवताके अर्चके मुख्य द्रव्य हैं. हरवल या सूर्यके मुख्य पुजारी गुसाँई लोग होते हैं वह सब मादक पदार्थ मांटा और सेवन करतेहैं व्याघ्र चीते या मृग चर्म पर बैठा करते हैं. केशोंका जूटा बांधे शरीरमें भस्म लगाये चीमटा लिये

सब ही राजपूत आशा पूर्ण मनोरथकी पूर्ण करनेवाली देवीकी पूजा करते हैं अथवा शाकम्भरी अर्थात् रक्षा करनेवाली देवी प्रत्येक कार्यके आरम्भमें स्तुति प्रार्थना पूर्वक पूजी जाती है।

यह अश्व जाति इन्दु वंशकी ही थी, पर यह नाम सूर्यवंशकी एक शाखाका भी था, इससे विदित होताहै कि यह लोग एक विख्यात अश्वारोही थे * इस जातिमें अश्वकी पूजा होती थी, और सूर्यके निमित्त उसीकी बलिदेते थे, शीतकालकी संक्रांतिपर अश्वमेध महायज्ञ होता था, यह इस बातका एक बडा निदर्शन है, कि इन अश्वजातिका तथा जेटिक जातिका निकास सीथियनजातिसे ही है जो पिंकर्टनके इस सिद्धान्तको प्रमाणित करतीहै कि कास्पियन समुद्रसे लेकर गंगा पर्यन्त सीथियन लोगोंकी एक बडी जाति फैली हुई थी।

सन् ई० से १२०० वर्ष पहले तक सूर्यवंशी राजा गंगा और सरयूके किनारे अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान करते थे, जिस प्रकार जेटी जाति साइरसके समय करती थी, हेरोडाटसने कहा है कि सृष्टिक्रममें जितने जीव उत्पन्न हुए हैं उनमें सबसे अधिक शीघ्रगामी जीवको ही अपने इष्ट देवताके निमित्त बलि देना यह जाति उचित समझती थी, इस समय तक राजपूतोंमें घोडेकी पूजा और बलिकी रीति चली आतीहै, इस बडे नियमका वृत्तांत अपने मुख्यदेवता सूर्यके प्रतिरूपी इस अश्वपूजनकी जेटीजातिके असीलोगस्कैण्डिनेवियामें लेगये. और इसीप्रकार सू मुएवीकट्टी (कत्ती) सुकीम्ब्री और जेटीनामकी सब पुरानी जर्मनजातियोंने इस रीतिका जर्मनके जंगलों और एल्प तथा वेजर नदियोंके किनारोंपर प्रचार किया।

दूधकी समान श्वेतरंगका घोडा देवताओंकी सूचना देनेवाला समझा जाताथा, उसके हींसनेसे भविष्य बातोंका निर्णय करतेथे बुध (वोडन) के वंशधर अश्वजातिके लोगोंका यमुना और गंगाके किनारेपर भी उससमयमें यही विश्वास था, जब कि स्कैन्डिनेवियाके पर्वतों और बाल्टिक सागरके किनारोंपर किसीमनुष्यका पांव भी नहीं रक्खागया था, और इसीशकुनसे डॉर-यस हिस्टास्पस [हींसने हिनहिनाने] को राजछत्रकी प्राप्ति हुईथी, चन्द्रभाट भी इसके शब्दसे अपने मुख्य वीरोंकी मृत्यु सूचना मानगयाहै।

...कों चिताते रहते हैं, इनका यह जंगलीरूप इस वातकी सूचना देता है कि ये रक्त तथा वधके देवताकी आज्ञा पालन करनेवाले योग्य पुरुष हैं।

यह यदि युद्धके देवता हरका पुजारी साधारण व्यवहारके विरुद्ध मृत्युको प्राप्त हो जाय तो उसे भूमिमें गाड देते हैं, उसके ऊपर एक गोल समाधी वनाते और किसी २ सम्प्रदायके गुसॉइयोंमें छोटी २ समाधी वनाते हैं, जिनकी आकृति अग्रभाग विहीन शंकुके समान होती है, एक ओर सीढियां वनी होती है और उस समाधिकी चोटीपर एक वेलनकी समान पत्थर * रख-दिया जाता है।

मृतक क्रिया ओडन वुधने पिछली रीति चलाई और शरीरके भस्म होनेके पीछे वहां समाधीका वनाना प्रचलित किया, स्त्रीकी पतिके साथ सती होनेकी रीति उनके सीथियन पुरुषाओंके द्वारा प्रचलित हुई थी जिस समय वे एशियाके गरम देशमें निवास करते थे, जो उनका आदि निवास स्थान कहा जाता है।

जेटी जातिके मृतक वीरके साथ उसका घोडा × भी गाड दिया जाता था मृतक वीरका जलाया जाना और उसके साथ उसकी स्त्रीका सती होना यह विख्यात रीतियें हैं, तो भी जहां वे वीर जलाये जाते हैं, उस स्थानपर वडी २ छत्रियें वनाई जातीहैं, जिन छत्रियोंके विषयमें यूरोपियन लोग कम परिचय रखते हैं, वा उनके देखनेको वे वहुत कम जाते हैं, हम सात राजपूतोंके राज्यकी उन्नति और अवनतिका वहुत वडा स्मारक छत्रियोंको मानते हैं पुत्र अपने पिताके स्मारक चिह्नरूप उस छत्रीको वनवाता है, भक्ति वा कीर्त्ति वडाई और अहंकार यह मानो पिछला स्मारक खजानेकी दशाके अनुसार होता है. उन सन्तानोंमें राज्यका ऐश्वर्य इसी कार्यसे स्मरण होता है जब कि उसके पिताकी छत्री उसके पूर्व अधिकारीसे विशेष हो, यह वात प्रत्येक राजा और सरदारोंके लिये एकसी है।

---

* मैंने इनके सव समाधिस्थान तथा और भी वहुत सी पृथक् २ समाधियें [illegible] और तपस्याके इन्हीं स्थानोंमे रहनेवाले शिष्य अपने गुरुकी पूजा करते [illegible] हरे वृक्षोंकी पत्तियें और शुद्ध जल समाधियोंपर चढाया जाताहै।

× कैलट जातिके फ्रैंकलोगोंमे भी यही रीति प्रचलित थी, [illegible] की अस्थियें जिसपर वे ओडनके समीप उपस्थित किया जानेवाला [illegible] मिलीथी मेलेटकी नार्दर्न ऐंटिकिटीज अध्याय १२ देखो।

अस्गार्डके मंदिरमें स्केंडिनेवियाकी लडाईके देवताका घोडा स्थापित कियाजाता था. जो लडाईके पीछे सदा ही पसीनेसे भीजा हुआ और मुंहसे आग-उगलता पायाजाता था, टसीटसने लिखाहै कि घोडेकी आकृति बनीहुई देखकर ही जर्मनलोग मुद्रा (सिक्के) का व्यवहार करतेथे अन्यथा नहीं ।

एड्डामें लिखाहै कि स्कैण्डिनेवियामें प्रवेश करनेवाले जेटी वा जिटलोग असीनामसे विख्यात थे उनकी प्रथम वस्ती असगर्ड़थी × परन्तु पिंकर्टनएड्डाका प्रमाण स्वीकार नहीं करते, और टर्फियसकी सम्मतिमें अपनी सम्मति मिलातेहैं. जिसने आइसलण्डके इतिहास और वंशसूचियोंके लेखोंसे सन्ई०से ५०० वर्ष पहले डेरियस हिस्पास्टसके समयमें ओडनका स्कैण्डेनेवियामें आना मानाहै ।

यही अन्तिम बुद्ध वा महावीरका समय है ई०से ५३३ और विक्रमसे ४७७ वर्ष पहले जिनका संवत चलाथा ।

ओडनका उत्तराधिकारी गोतम स्कैण्डिनेवियामें था, और यह गोतम अन्तिम बुद्ध महावीरका उत्तराधिकारी था । जिसकी पूजा अबतक मलकाके जल डमरू-मध्यसे लेकर कास्पियन समुद्रतक गोतम वा गोदम नामसे होतीहै ।

पिंकर्टन साहब कहतेहैं जो ईसवीसे एक सहस्र वर्ष पहले मुख्य देवता गिनाजाता था वह दूसरा ओडन दूसरे प्राचीन वृत्तान्त बतलातेहैं ।

मैलेटने भी दो ओडनका होना मानाहै, परन्तु पिंकर्टनकी सम्मति है कि उस लेखको टार्फियसके मतके अनुसार ई० से ५०० वर्ष पहले ओडनका मानना उचित था ।

...जाते हैं जहां मनी, होती है उनके पवित्र मंदिरोंमें डाकिन ... निवास ... हैं. समाधिपर भोजन द्रव्यादि जो चढ़ाये जाते हैं, जो लोग समाधि- ...दिरसे या भोजनको उठा ले जातेथे सलिक आईन दशवों अध्याय ...लोगोंके दण्डविधानमें है ऐसे पवित्र स्थानमें जो लोग चोरी करते थे उनको ...और अति कोई नहीं देसकता था ।

...का ४ एक प्रकारकी अग्नि है जो स्थानपरिवर्तन करके फिर फिर ...ती है युद्ध क्षेत्र या महासर्नोंके स्थानोंमें यह बड़ी मनोहर दिखाई देतीहै, ...भी इससे उदासीनताका भाव प्रगट होताहै हिन्दू जातिके हृदयमें इससे ...। विश्वासका भय और भक्ति उत्पन्न होती है, जिसकी उत्पत्तिका स्वाभाविक ...वहीं है जो ओडिनकी स्थानपरिवर्तनशील ज्वालाका है अर्थात् मृतकोंके ... फासफोरस सम्बन्धी एक प्रकारका खार उत्पन्न होता है ।

...डे नेवियाके रहनेवाले मृतकोंकी गोरपर गुम्बज बनातेथे और जेगजर्टांज ...किनारेपर रहनेवाले भी इसी प्रकार करते थे और इसी प्रकार हिन्दुओंके ...इनके पुजारी भी गुम्बज बनाते हैं ।

वाफ्ट्रिया और जोहूननदीके किनारेपर रहनेवाली यूचीजाति पीछेसे जेटा वा पेटन ❋ कहाने लगी, जिसका प्रयोजन जेटियोंसे है, एशियाके इस प्रान्तमें बहुल समयतक इनका अधिकार रहा, इतनाही नहीं किन्तु हिन्दुस्थानके भीतर भी कहीं २ इनका अधिकार था, इन्हीं लोगोंको यूनानी इण्डोसीथीके नामसे पुकारते थे, उनका आचार विचार * तुर्कोंकी समानहीहै, पूर्वके देशोंमें जो राज्यके उलटफेर हुए थे उनका परिणामी प्रभाव दूरदूरतक व्यापा था ×

इन इतिहास लेखकोंने जो समय इन सीथिक जातियोंका यूरोपमें आकर निवास करनेका नियत कियाहै वही समय उनका भारतमें पदार्पण करनेकाहै।

छठी शताब्दीमे शेषनाग देशसे तक्षक जातिके आनेका समय माना गया है और इसी घटना वा राज्य समयसे आरंभकर पुराणोंमें लिखा गयाहै कि इससे आगे " शुद्ध वंशका कोई राजा नहीं पायाजायगा, किन्तु शूद्र तुरुश्क और यवन सर्वत्र फैल जांयगे "

चढाई करनेवालों और इन सब हिन्दू सीथिकलोगोंका बुद्ध धर्म था, और इसीसे स्कैण्डिनेवियावालों और जर्मन जातियों और राजपूतोंकी आचार विचार और देवता सम्बन्धी कथाओंकी सदृशता तथा उनके वीर रसात्मक काव्योंका मिलान करनेसे यह वात अधिकतर प्रमाणित होजाती है।

भाषाबोलीकी अपेक्षा धर्म विषयक व्यवहारोंकी समानता ही मूल उत्पत्तिकी एकताका दृढ प्रमाण है,भाषा सदा बदलती रहती है परन्तु बदलते हुए भी रीति-भाँतिमें मुख्य वातें शेष रहजाती हैं, और जब छुटी हुई रीतियोंका पता उनके मूलतक लगाया जाय जो जलवायुके विरुद्ध होतेनक भी मानी गई हों तो इस प्रमाणको कोई अस्वीकार नहीं करसकता।

जातीय स्वभाव और पहरावा टेसिटसके लेखानुसार प्रत्येक जर्मनका बिस्तर-परसे उठकर स्नानकरनेका स्वभाव जर्मनीके शीतप्रधान देशका नहीं होसक्ता, परन्तु यह पूर्वदेशकाहै और दूसरीरीति नीति जातीय स्वभाव तथा सीथियन किम्ब्री जरकट्टी सुएवी जातिके मिथ्या विश्वासोंका हुआ होगा, जो उसी नामकी

जेटीजातियोंके सदृशहैंहै. जिनका वृत्तान्त हेरोडाटस, जसटिन. और स्ट्रेबोने कियाहै और जो व्यवहार राजपूतशाखामें इस समयतक विद्यमानहै।

अब हमें वह समानता मिलानी उचितहै जो इतिहाससे धर्म और आचार विषयमें पाईजातीहै. सबसे प्रथम धर्म विषयक समानताकी आलोचना करतेहैं। देववंश तथा देवोत्पत्ति जर्मनियोंके आदि देवता टुइसटो मर्क्यूरी [बुध] और अर्था (पृथ्वी) थे।

टुइसटो×—इला और मनुसे उत्पन्नहैं, लोगोंने भूलसे इसको ओडिन वा वोटेन समझाहै, जो पूर्वी जातियोंका बुधहै, इससे बडी गडबड हुईहै यद्यपि वे इन जातियोंके मंगल और बुधहैं।

धर्मसम्बन्धी रीति—सुओनीज वा सुएवी [शैवी] जो स्कैंडिनेवियाकी जेटी-जातियोंमें सबसे अधिक बलिष्ठ जाति थी, वह बहुतसे सम्प्रदाय जातियोंमें विभक्त होगई, जिनमें सेसू [यूची वा जिट] लोग अपनी वर्गीचियोंमें अर्थाको मनुष्यबलि देते थे और अर्थाका रथ एक गाय खैंचती थी।

सुएवी लोग ईसिसकी पूजा करते थे जो राजस्थानके ईसिस और गौरिस अर्थात् हरगौरीहैं, जिसकी रीतिमें—एक जहाजकी मूर्ति होतीहै, इसिदस कहता कि यह रीति विदेशी होनेकी सूचना देती है. जिसप्रकार मिसर देशमें, ईसिस और ओसीरिसका उत्सव होताहै. उदयपुरकी भीलपर वैसा ही ईश, गौरीका उत्सव होता है, हेरोडाटस इसके वृत्तान्तको इस प्रकार लिखता है कि ओसीरि-सके हाथमें जो अपनी नीसे दूसरी कक्षाके हैं खिले हुए प्याजके फूलोंकी एक लकडी रहती है. जिसको मिसरके लोग पवित्र मानते हैं, परन्तु हिंदू जाति इससे घृणा करती है।

इस मालाका प्रसिद्ध मंदिर सुएवी वा सुइयोनीज लोगोंने बनवाया था, और उसमें उन्होंने थोर, वोडन और फ्रेयाकी मूर्तियोंकी स्थापना की. यही स्कैंडिनेविया

कि जारिजा लोगोंने उस शिवस्थानमेंही अपने राज्यको जमाया था। सिकन्दरके समयके इतिहासग्रन्थोंमें यह बात सिद्ध होचुकीहै, कि वहांपर जारिजा लोगोंनें अखंड प्रतापके साथ राज्य किया था। कहतेहैं कि मसीडोनीयाके वीरोंने जिस समय चढाई करके भारतवर्षमें युद्धका डंका बजायाथा; तब उक्त जारिजा कुलसें उत्पन्न हुआ शाम्बनामक एक राजा उनके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये सामने आया। महाराजा शाम्बके निशानके नीचे जो शामन्त इकट्ठे हुए थे उनमेंसे अधिक लोग हरिकुलके थे। यद्यपि उस समय उनकी अवस्था बहुतही कम होगईथी। तथापि अपने बसाते उन्होंने अपने पूर्वपुरुषोंके प्राचीन गौरव देनेमें किसी प्रकारकी कसर न की। उनकी चेष्टाका फल बहुतही अच्छा हुआ।

महाराजा शाम्ब श्यामनगरमें राज्य करतेथे। परन्तु ग्रीकवाले इसको श्याम-नगरके बदले मीनगढ बतातेहैं।

अनर्थकारी महाभयंकर उपद्रवसे यद्यपि भगवान् श्रीकृष्णजीका विशाल वंश लोप होगया था, परन्तु उसकालरूपी उपद्रवसे जितने यादवगण बचगये थे, उनकी संख्याभी कुछ कम नहीं थी। उनमेंसे प्रत्येक यादवका वंश कालके क्रमसे असंख्य शाखा उपशाखाओंमें विभक्त होकर आज भारतके अनेकस्था-नोंमें फैल गयाहै। यदुकुलकी आठ शाखाओंमें केवल भट्टि और जारिजा शाखा ही विशेष प्रतिष्ठावान् हैं।

तुआर—बहुतसे मनुष्य तुआरकोभी यदुकुलकी शाखा समझते हैं परन्तु महाकविचन्द्रने इसको महाराज पाण्डुका एक शाखाकुल कहा है यह अनु-मान करना कठिनहै कि इन दोनोंमें कौनसा मत विशेष युक्तिसिद्ध है। क्योंकि इस कुलके नामकरण सम्बन्धमें हमको किसीप्रकारका कोई हेतुवाद दिखाई नहीं देता है। यदि इन बातोंको छोड़कर केवल प्रतिष्ठा और विख्या-तताकेही विषयमें भलीभांतिसे विचार करके देखाजाय तोभी इसको राजस्था-नके छत्तीस राजकुलोंमें एक ऊंचा आसन दिया जासकता है।

वह प्रतिष्ठा और ख्याति जिन दो महापुरुषोंके द्वारा उपार्जित हुई थी, उनके नामकी आजतक प्रत्येक हिन्दू सन्तान माला जपताहै। आजतक भी हत भाग्य हिन्दूसन्तान गण उन पवित्र नामोंका जप करते २ अपनी वर्त्तमान दुखस्थाको भूल जाते हैं, और अतीतके गहरे पर्देको भेद कर अज्ञानवश उनके उस स्वर्गीय सुखमय राजत्वकालमें विचरण किया करते हैं। वह काल भारत-वर्षके लिये स्वर्णयुग था। जगन्मान्य पंडितोंके द्वारा संकलित हो उसमय

यह भारतवर्ष समस्त जगतके शीर्षस्थान पर अधिकार कर बैठा था। अब अधिक क्या कहें केवल इतनाही कहना बहुत है कि तुआर कुलमें उत्पन्न हुए उन दोनों महापुरुषोंके चरित्र गुणोंसे इस भारतवर्षमें दो नये और प्रतिष्ठित युग विराजमान होरहे थे। उन दोनो महापुरुषोंमें प्रथम हिन्दूराज्यचक्रवर्ती उज्जयनीनाथ महाराज विक्रमादित्य, और दूसरे, हिन्दूराजकुलतिलक दिल्लीश्वर महाराज अनंगपाल थे। कुरुक्षेत्रके, रुधिरसे पूर्ण महासमरेवरमें आर्यगौरव रविके डूबजानेपर यह भारत बहुत समयतक विषादरूपी अन्धकारमें डूबा रहा था। परंतु उस गाढ़ अन्धकार राशिको दूर करता हुआ उस अस्तहुए आर्यगौरवरूपी सूर्यका आदर्शरूप होकर कौन महापुरुष, अमरावतीके समान अवन्तीके सिंहासनपर उदय हुआ था, किसकी कीर्त्तिसे और किस गौरवरविसे समस्त भारतवर्ष प्रकाशमान होगया था? वह किसकी सभाथी कि जिसके पंडितलोग भारतमाताके कण्ठमें अमोल रत्नहारकी माला होकर पहिरे गयेथे;—कौन नहीं कहेगा,—कौन नहीं स्वीकार करेगा—कि उस महापुरुषका नाम महाराजाधिराज महाराज विक्रमादित्यहै? आज महाराज विक्रमादित्यका वंश कालके अनन्त समुद्रमें लीन हो गया है। आज उस वंशका कोई चिह्नभी नहीं पाया जाता, जिसदिन उस वीर विक्रमने इस पुण्यधाम भारतवर्षमें अवतीर्ण होकर एक स्वर्णयुगका प्रचार करदिया था, उस दिनको गये आज सैकड़ों हजारों वर्ष बीत गये हैं; भारतभूमिके हृदयपर कितनेही उपद्रवोंका पानी फिरगयाहै, कितनेही विदेशीय और विजातीय राजालोग भारतसन्तानके भाग्यचक्रको निरामित करके फिर न जाने कहांको चले गये। उनकी नामावली, उनकी कीर्तिभी अधिकतासे उनके साथही सिधार गई; परन्तु यह कितने हिन्दूसन्तान हैं कि जो महाराज विक्रमादित्यके वीर व पवित्र नामको भूल गयेहैं। क्या कोई उस पवित्रनामको भूल सकेगा, हमको तो विश्वास नहीं होता। इस संसारमें जिसदिन संस्कृतशास्त्रका नाम उठ जायगा—जिसदिन उक्त महाराजका प्रतिष्ठित सम्वत भारतमें [illegible] [illegible] चलानेमें असमर्थ होगा उसदिनभी कदाचित भारतवासी उस महारा[illegible] धारण करे रहेंगे। उस दिनकी कल्पना करते हुएभी हृदय [illegible] मान होताहै। जिससे [illegible] सब रोम खड़े उठते हैं।

यदि महाराज अनंगपालका कुछ [illegible] वृत्तान्त [illegible] पर कुछ अधिक नहीं लिखा जायगा। केवल इतनाही लिखना [illegible] कि [illegible] महापुरुषने अपने [illegible] [illegible] [illegible]

तथा जैग्जरटीज और गंगाके तटोंपर सूर्यके निमित्त अश्वकी बलि चढाई जाती थी।

हेरोडाटस जो इतिहासका आदि निर्माता है उसने लिखा है कि, मध्य एशियाकी बडी जेटी जातिमें इस बातका विश्वास था कि, जो जीव सृष्टिमें उत्पन्न हुए जीवोंमें सबसे अधिक चलता है वह सृष्टिक्रमसे रहित पदार्थमें जो सबसे अधिक शीघ्रगामी है उसकी भेंट किया जाय. उनका यह अनुमान उचित था, शीतकालकी संक्रांतिपर स्कैंडिनेवियांवालों तथा जहून नदीके किनारे पर निवास करनेवाली अश्व और जेटी जातियोंका यह सूर्य सम्बन्धी त्योहार शीतकालकी संक्रांतिपर होता था, जिस प्रकार संक्रांतिका त्योहार राजपूत तथा हिन्दूजातिमें होताहै।

संस्कृत तथा उससे निकली भाषाओंमें घोडेको ही हय हयवर और अश्व कहते हैं, गाथिकमें उसका नाम हर्सा, ट्यूटानिकमें हार्स और सेक्सनमें हार्स है।

बालटिक सागरके किनारे रहनेवाली जर्मन जातियोंको बृहत् उत्सव पूर्व लिखित हीडल वा हिएल था, और गंगाकिनारे पर निवासकरनेवाली सूर्यकी सन्तानोंको अश्वमेध बडा उत्सव था।

अश्वमेधमें * बहुतही व्यय होता है, और भयके कारण इस समयके राजा उसे नहीं कर सकते इसके द्वारा जो भयंकर परिणाम हुए हैं भारतीय इतिहासके प्रारम्भसे अन्तिम राजा पृथिवीराजतक इसके बहुत उदाहरण हमारे पास हैं रामा-

---

–विद्यमान हैं, और सौराष्ट्रमें कई एक बलपुर [महादेवके] मन्दिर हैं, यह सबही सूर्यके रूप हैं बलहीके नामपर सुलेमानका मदिर बना था, हिन्दूधर्मके स्थूल विश्वासोको उस समयके सबही मूर्ति पूजक मानतेथे, ऐसा पायाजाताहै [बलदेवके निमित्त किसी भी पशु आदिकी बलि नहीं दी-जाती थी, नहीं मालूम टाड साहबने यह बात कहांसे लिखी न सांडकी बलिका लेख है]

(अनुवादक)

* अश्व [मेघ–मारना] इस शब्दसे वाजस्वके पुत्रोंसे उत्पन्न पुरानी जातियोंके नामोंकी उत्पत्ति हमको प्राप्त होतीहै, जिनका सिन्धुनदीके दोनो किनारोंपर निवास था, और सम्भवहै कि एशिया नामकी उत्पत्तिका कारण भी यही शब्दहो, सिकन्दरके इतिहास लिखनेवालोंने जिसको अरिअस्थी लिखाहै, वह अस्ससेनी जाति, और अस्पासियानी, जिसकी शरणमें असीसिज सेरस केसके पाससे पलायनकरके गयाथा, और ट्रैबोने जिसको एक जेटीजाति लिखाहै, यह सब एकही मूलकारणसे निकलीहैं, इसकारण असिगढ अर्थात् असिलोगोंका गढ जिसको भ्रमसे हांसी कहा जाताहै, और असगर्ड स्कैंडिनेवियामें जेटी जातिये जो असीलोगोंकी थीं पहले निवास करती थी।

भट्टग्रंथोंमें देखा जाता है कि राजर्षि विश्वामित्रका आदिस्थान गाधिपुर (कन्नौज) ही राठौरोंकी आदिम आवास भूमि है। पांचवीं ईस्वी (शताब्दी) के आरम्भमें यह लोग वहांपर विराजमान थे। इस समयसे पहिलेका इनके विषयमें कोई विशेष विवरण नहीं देखा जाता है। जो कुछ मिलता है सो वह बहुतही बढ़ाकर लिखा गया है। अतएव इस विस्तारमेंसे सत्यबातका निकाल लेना एक प्रकारसे असम्भवहै यद्यपि राठौरलोग कोशल राजाओंके साथ समानता साधन करके अपनेको सूर्यवंशीय बतलाते हैं परन्तु इसके सम्बन्धमें कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता।

यदि ईसवी पांचवीं शताब्दीको राठौरलोगोंके ऐतिहासिक जीवनका प्रथम युग कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। क्योंकि इसी समयसे वह ऐतिहासिक सत्यमें आयेथे। इसी समयसे इनका जीवन चरित्र स्पष्ट और विशद देखा जाता है। इसी समयसे इनका विशेष उदय दिखाई देताहै। भट्ट ग्रन्थोंमें लिखाहै। कि मुसलमान वीर शाहबुद्दीनके समयमें राठौरगण भारतका सार्व-भौम्य अधिकार प्राप्त करनेके लिये दिल्लीके तुआर और अनहलवाड़ाके बालका-राय लोगोंके साथ बैर कर रहे थे।

राज्य, धन, गौरव, सबही अनित्य और सबही चलायमानहैं; परन्तु इसइस अनित्य और चपल राज्य व गौरवको प्राप्त करनेके लिये राठौरोंने महा अनर्थ किया कि जिससे इनका सत्यानाश होगया। सम्पूर्ण भारतवासियोंके गलेमें इसलामोंकी गुलामीकी जंजीर पड़गई। यदि राठौरलोग इस अनर्थ कारिणी गौरवलिप्साके वशमें पड़ते तो कभी मुसल्मान लोगोंका भारतमें आना संभव न था।?

गठौरोंकी सत्यानाशकारी जयचन्द्रसे ही भारतका नाश होगया. आगे और पृथ्वीराज आदिके साथमें गिरगये। समरक्षेत्रमें समरसिंहके समान [illegible] दान किया और उधर म्लेच्छद्रोही पृथ्वीराजनन्दनने गंगाजीके जलमें [illegible] अपनी निजगौरवावलम्बना, वीरता, और चतुरताका [illegible] पाया।

राठौर राजके पुत्र जयचन्द्रके भतीजे [illegible] शिवजीने भारतके मारवाड़में [illegible] आरम्भ किया, उस देशमें [illegible] नामक एक प्राचीन नगर था। जिसमें उस समय [illegible] [illegible] राठौर [illegible] [illegible]

यण महाभारत और चन्दकविके महाकाव्यमें इस प्रभावशाली यज्ञ और उसके परिणामके उदाहरण विद्यमान हैं × ।

वाल्मीकिरामायणमें अश्वमेधका वर्णन बडी उत्तमतासे कियाहै रामचन्द्रके पिता महाराज दशरथने यज्ञके निमित्त इस प्रकारकी आज्ञादी थी यज्ञका सामान इकठा करके सरयूके उत्तर किनारेपर यज्ञभूमि विधानकी जाय ।

जब वर्षदिन बीतगया और समस्तदेशोंमें घूमकर घोडा लौटआया तब जहांसे वह छोडागया था वहां यज्ञभूमि निर्माणकीगई ÷ केकय, काशीके राजा अंगदेश

कुल-मणि सम्राट् अकबरके शासनकालमें अनेक राजपूतकुल क्रम २ से हीन होगये थे। परन्तु उस समयमें आमेरके कछवाहे वीर अपने गौरव और मर्य्यादाके शिरमौर हो रहे थे।

अग्निकुल—सूर्य और चंद्रमासे जिस प्रकार सूर्य और चन्द्रवंश उत्पन्न हुए हैं, वैसेही अग्निकुलको अग्निसे उत्पन्न हुआ बतलाते हैं हिन्दुकुलाचार्य लोगोंके मतसे उक्त वंशतरु चार शाखाओंमें विभक्त है। प्रथम परमार, द्वितीय—परिहार, तृतीय—चौलुक्य, वा शोलंकी और चतुर्थ चौहान है।

कहते हैं कि जिस समय धर्मवीर पार्श्वनाथ ने उदय होकर हिन्दू समाजमें घोर विप्लव मचादिया था, ठीक उसही समयमें अग्निकुल उत्पन्न हुआ था। उसही भयंकर धर्मके संघर्ष कालमें वीर पराक्रमकारी जैन लोगोंकी सत्तासे अपने धर्मकी रक्षा करनेके लिये ब्राह्मणोंने इस अग्निकुलको उत्पन्न कियाथा।

राजस्थानमें आबू वा आर्बुधनामक एक पर्वत है; इस पर्वतके ऊंचे शिखर परही यह भयंकर धर्म विप्लव हुआ। कहते हैं कि शैल शिखरके उस ऊंचे भाग परही ब्राह्मणोंने अग्निकुंडको प्रज्वलित करके उक्त वीरकुलको उत्पन्न किया था। यह पवित्र अग्निकुंड जिस स्थानमें जलाया गयाथा आज भी वह स्थान दिखाई देता है। बहुतसे लोगोंका अनुमान है कि दैवी शक्ति संपन्न ब्राह्मणोंने नास्तिकोंके आक्रमणसे सनातन हिन्दूधर्मकी रक्षा करनेकेलिये उन अग्निवीरोंको अपने धर्ममें दीक्षित कर लिया था। और उनकी ही सहायतासे उस भयानक धर्म-संग्रामको करने लगे थे।

तिब्बत वा आवा] के राजा लोमपाद; मगधदेशके कोशल और सिन्धुदेश सौवीर [जिसका पता म नहीं जानता] और सौराष्ट्र [काठियावाडका प्राय-द्वीप] देशके राजाओंके बुलानेको निमंत्रण भेजागया।

यज्ञस्तम्भ खडेहोचुकनेके उपरान्त यज्ञ आरम्भ हुआ, इसमें एक रीति जिसे यूपचर्य्या कहते हैं उसका वर्णन इसप्रकार कियाहै।

इक्कीस स्तम्भ[1] अठपहलू खडे कियेगये, जो इक्कीस २ फुट ऊंचे थे, और जिनका व्यास चार फुट था, उनके शिखरपर मनुष्य हस्ती वा वलीवर्दकी मूर्ति वनीहुई थीं, वे यज्ञसम्बन्धी भिन्न २ प्रकारके काष्ठके बनाये गये और उनपर सुवर्णके पत्तर मढेहुए थे, उनपर जरीकलावत्तूके कामहुए कपडे लपेटेगये, उनपर फूलोंकी तोरण बन्दनवार लटकाई गई, जिस समय वे यज्ञस्तम्ब खड़े किये गये उस समय यज्ञके आचार्य होतासे आज्ञापाकर आध्वर्यु मंत्रोंको उच्चारण करनेलगे।

गरुड़के आकारवाले यज्ञकुंड तीन पंक्तियोंमें निर्माण कियेगयेथे, और इनकी संख्या अठारह थी. इन्हीं कुंडोंके समीप पक्षी जलजन्तु और घोड़ा यह वलिके निमित्त रक्खेगयेथे।

महारानी कौशल्याने तीन चार इस अश्वको यज्ञकुंडकी प्रदक्षिणा कराई,

---

१ पाषाणनिर्मित यज्ञस्तम्भ वहुत पुराने समयके मैंने देखेहैं, वहुत काल हुआ जब कि राजपूत राज्योंमे मरहटे उत्पात मचारहेथे, सूरतके एक बडे धनी त्रिवेदी उपाधिवाले एक बडे योग्य पुरुष-ने जिसे राम और कृष्णके वंशवालोंको उनके हाथसे दुःखी होता देखकर बडी करुणा हुई थी, आंखमे आंसू भरकर मुझसे कहा, कि मेरी समझमे. जयपुर राज्यकी आपत्तियोका कारण यह विदित होताहै, कि यज्ञस्तम्भोके सुवर्णपत्र उखडवाकर वहांके राजा जगतसिंहने अपने खजानेमे भिजवाकर महापाप कियाहै, रहोवोमके कुकर्मसे भी यह कर्म गर्हित समझागया, जिसने सुलेमानकी निर्माण कराई हुई सोनेकी ढालोको खजानेमे पहुंचाकर उनके स्थानमे मंदिरमे पीतलकी ढालें रखादी थीं, जिस समय उनके सिक्के ढालगये, और लडाईके व्ययके निर्वाहार्थ मरहटोंके पास भेजेगये वा उससे भी अधिक निकृष्ट कार्य अर्थात् रसकपूर नामक पासवानके निमित्त लगायेगये जैसी इस राजाकी मूर्खताकी कार्यवाही होती थी वैसी ही यह भी इस राजाकी मूर्खताकी कार्यवाही थी, यह स्तंभ जयसिंहके निर्माण कियेहुए थे, और अपने देशका गौरव बढायाथा, यह इसका दूसरा संस्थापक था, और उसके राजत्व समयमे उसकी उन्नति हुई थी अब उसकी अवनति हुई।

सामन्तने एक २ राज्य स्थापन किया। गहिलोत कुलके उदय होनेके समय पंवार लोगोंका पूर्व गौरव बहुतायतसे लोप होगया था। परन्तु पंवार कुलमें एक भोजनामक महाबली पराक्रमी राजा उत्पन्न हुआ। इन्हीं महाराजके गुणों और कीर्तिकलापके द्वारा इसका कुल अबतक प्रकाशमान हो रहा है। हिन्दूराज चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्यके समान इस महाराजकी सभामें भी नवरत्न थे। महाराज भोजके समयमें संस्कृतविद्याकी बहुत ही उन्नति हुई थी। इसी कारण पवारकुलमें उत्पन्न हुए महाराज भोजका नाम कोई भी हिन्दू सन्तान नहीं भूल सका है—इस पृथिवी पर जबतक अमृतके समान संस्कृत भाषाका प्रचार रहेगा। तबतक कोई भी इस पवित्र नामको न भूल सकेगा—तबतक किसीप्रकारसे महाराजभोजका पवित्रनाम आर्यराजाओंकी पवित्र नामावलीसे नहीं निकाला जायगा।

पंवार कुलमें भोज * नामक तीन राजा पाये जाते हैं। वह तीनों विशेष विद्यानुरागी और विशेष पराक्रम शाली थे। यह नहीं कहा जा सकता है कि यहांपर कौनसे भोजका नाम लिखा है।

जिस चन्द्रवंशकी महान कीर्ति और प्रतिष्ठाका वर्णन भारतवर्षके इतिहासमें सुवर्णके अक्षरोंसे लिख रक्खा है; उस महाराजको और ऐतिहासिक लोग सिकन्दरका प्रचंड प्रतिद्वन्द्वी कहते हैं, चन्द्रगुप्तका जन्म पंवार कुलकी मौर्य नामक शाखामें हुआ था। पंवारकुलके विषयमें जो प्राचीन शिलालिपि मिली हैं उनके देखनेसे पाया जाता है कि उक्त शाखा कुलका प्रधान पुरुष तक्षक कुलमें उत्पन्न हुआ था।

हिन्दूराज चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्यके सिंहासनको स्पर्श करनेवाला प्रचण्ड बाहुबलशाली महावीर शालिवाहन भी तक्षकवंशमें उत्पन्न हुआ। उज्जयिनीनाथ विक्रमादित्यके सिंहासनको कम्पित कर जिस शालिवाहनने उज्जयिनीके सिंहासनको अधिकारमें किया और महाराज विक्रमादित्यके सम्वत्‌को स्थगित कर शाके अपने सम्वत्‌को चलाया।

और जिस समय ब्राह्मण मंत्रोच्चारणकर प्रसन्नतासे कोलाहल करनेलगे उस समय उसका बलिदान * कियागया।

उस समय मुख्य ऋत्विजने महाराज और महारानीको अश्वके समीप बैठाया. वहां वे पक्षियोंका निरीक्षण करते हुए सब रात बैठे रहे, पुरोहितने शास्त्रानुसार घोडेके हृदय निकालकर तैयार किये. जिस समय उन हृदयोंका हवन किया गया महाराजने उनकी सुगंधि ली. और जिन कर्मसे अपराध किये थे उसी कर्मसे महाराजने उनको स्वीकार किया।

उस समय यज्ञ करनेवाले १६ ऋत्विज शास्त्रानुसार घोडेके अवयवोंको अग्निमें हवन करनेलगे, इनमें घोडेका हव्य बेतके डण्डेसे, और शेषजीवोंका हव्य लकडीके डण्डेसे कियागया।

जिससमय यज्ञ पूर्ण हुआ. तब भविष्यद्वक्ताओंको पृथिवी दान की गई. उनमें जो पवित्रकुलके ब्राह्मण थे. उन्होंने केवल सुवर्णदान स्वीकार किया. इसकारण उनको एक करोड जाम्बुनद × दियेगये।

इस प्रकार यह सबसे पुरातन और अधिक प्रभावशाली अश्वमेधका वृत्तान्त ग्रीफिथसाहिबने यहां विस्तारपूर्वक लिखाहुआ है दूसरी जातियोंमें भी जो इसी प्रकारकी रीतियें हैं उनमेंकी रीतियोंमें ईश्वरके निमित्त लोगोंसे आरंभ करके रोमके कैथोलिक मनुष्योंतक. और कैथोलिकधर्मकी पार्स्वाकारकी रीतियोंके सम्बन्धमें समानता लिखनेकी आवश्यकता नहीं है।

एकसमय चौहान लोग ऐसे बलवान होगये थे कि उनकी प्रचण्ड वीरताके सामने भारत वर्षके और राजाओंका गौरव प्रभावहीन होगया । यद्यपि राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंमें बहुतसे मनुष्य बलवान् प्रचण्डपराक्रमी और प्रतिष्ठित थे, यद्यपि "लाख तरवार राठोरन" अर्थात् लक्षराठोरोंकी वीरता भारत विदित है, तथापि विशेष विचार करनेसे ज्ञात होगा कि वीर केसरी चौहानोंने न्यायानुसार राजपूतोंके शीर्षस्थानमें आसन पाया है ।

इस प्रसिद्ध राजकुलकी उत्पन्न हुई शाखाओंनेभी अपने मूल वंशवृक्षका यथार्थ गौरव बचाकर चौहान नामको सार्थक किया था । इसकुलकी शाखाओंमें हार, खीची, देवरे और शनिगुरु आदिही विशेष प्रसिद्धहैं, इन शाखाओंकी वीरता, प्रतिष्ठा और गौरवका वृत्तान्त आजतक भट्टकविजनोंके मधुर काव्योंमें सुनहरी अक्षरोंसे लिखा हुआहै । आजतक इस वंशके मनुष्य इस भट्टगाथाको पढ़ते २ अपनी वर्तमान अवस्थाको भूलजातेहैं, और मुहूर्तभरके लिये पूर्वजोंकी प्रचण्ड वीरताको नेत्रोंके सन्मुख देखने लगते हैं ।

चौहानकुलकी प्रतिष्ठा करनेवाले वीरवर चौहानका अत्यन्त मनोहर जन्मवृत्तान्त यहांपर बचेहुए तीन कुलोंकी उत्पत्तिके साथ लिखा जाताहै ।

पहलेही कहा जा चुकाहै कि प्रसिद्ध सुमेरु और कैलाशके समान अर्बुद (आबू) भी पवित्र पर्वतहै । अग्निकुलमें उत्पन्नहुए वीरलोग इस पर्वतको देवदेव अनलदेवका स्थान कहतेहैं । कन्द, मूल, फलका भोजन करनेवाले, ईश्वरपरायण और शुद्धात्मा तपस्वियोंके तपकरनेका स्थानहै । सरलशील ब्राह्मण लोग, पापरूपी दैत्योंके आक्रमणसे अपने पवित्र सनातनधर्मकी रक्षा करनेके लिये इस अति ऊंचे पर्वतके शिखरपर रहा करते थे । परन्तु वहांपरभी उन दुष्टकर्मकारी दानवोंके पहुंचनेसे उनके तपमें विघ्न हुआ करता था ।

एकसमय जब कि अत्यन्त धर्मानुरागी ब्राह्मणगण निर्जन कोणमें अपने होम कुंडको खोदकर देवताओंको आहुति देरहेथे । उसकाल दस्य और असुरोंने आकर धूली प्रचण्ड आंधी उठाई कि सम्पूर्ण आकाश धूलिसे [illegible] । उससमयमें दुराचारी दैत्यगणोंने रुधिर, मांस, हड्डी, और भी अनेक प्रकारके दुर्गन्धयुक्त [illegible] पदार्थोंकी वर्षा की उन दुष्टोंके उपद्रवसे उन ब्राह्मणोंका [illegible] [illegible] अपनी मनःकामना पूर्ण करने लगे । [illegible]

सनातनधर्मविरोधी, पापाचारी, दैत्योंके [illegible] [illegible] ब्राह्मणोंका देश और पवित्र [illegible]

शीतकालमें ही संक्रान्ति * वा शिवरात्रि पड़ती है इसी समयमें ... नाथके निमित्त अश्वका बलिदान कियाजाता था।

सबसे बडी रातको स्केंडिनेवियावाले रात्रिमाना ... सिद्धान्त यह था कि इसी रातमें संसार उत्पन्न हुआहै. ... अर्थात् बलवाबेलिनसकी ज्वाला, उत्तरमें निवास करनेवाले ... हियुल और अश्वमेध वा सूर्यकी पूजाके यज्ञकुण्डकी ... गंगाके तटपर, सीरीयन और गीरोमर्टा लोग ... जिसकी पूजाकरतेथे।

फिनीशियावाले हेलिओपोलिस वालबेक * वा टाडमोरकी + वेदियां ... देवताके निमित्त पवित्र थी, सरयूके किनारे वा सौराष्ट्रदेशके अन्तर्गत ... वेदियें वलपुरमें विद्यमानथीं जिनके कुण्डोंमेंसे शत्रुओंके विजयकरनेके निमित्त उनके लेजानेको सूर्यके घोडे निकलतेथे।

केलटिक ड्रुइड लोगोंके शिक्षकोंका सीरियांसे आगमन हुआ था इनके ... मनुष्योंका वलिदान होताथा, जिन्होंने वेलेनसके नामपर कम्ब्रिया और केले-डोनियांके पर्वतोंके ऊपर स्तम्भ खडेकियेथे।

---

* तिलके दाने और तिलके लड्डू जिनमे भरेरहतेहैं ऐसे छोटे छोटे कीमखावके बटुए इस अवसरमे राजोंद्वारा मित्रमण्डलीमे बाँटिजातेहै, मै (टाड) इस ग्रन्थको जिस समय लिखरहा हूं युवकमरहटा महाराज हुलकरके भेजे हुए ऐसे दो बटुए मेरे सामने धरेहैं।

× कदाचित पितृरात्रि शिवरात्रि हो जगतपिताही शिव कहातेहैं।

* भारतके बादशाहोंके इतिहासलेखक फारिश्तेने इसे फारसी आरबी शब्दोंसे बनाहुआ बतायाहै वल सूर्य—वेक मूर्ति।

+ यह शब्द बिगडकर पाल्माइरा होगया मेरे विश्वासके अनुसार इसकी उत्पत्ति अबतक कभी नहीं दीगई हमारी समझमे यह टाडमोरका ही रूपान्तर है ताडका वृक्ष संस्कृतमे तालवृक्ष कहाताहै, मोरका अर्थ मुख्यहै, भारतमे एक नगर तालपुर वा ताडोंका नगरहै, और सिन्धदेशके हैदराबादमे जो जाति शासन करती है, उसीसे उसका नाम तालपुर है जहासे उसका प्रथम आवि-ष्कार हुआ है।

लगा। दोनों दलोंमें भयानक संग्राम हुआ! दुष्ट दैत्यलोग, अनहिलके प्रचण्ड विक्रमको सहन न करसके और घोर पराजित हुए। बहुतसे तो लड़ाईमें मारे गये, और जो जीते रहे वह भागते हुए पातालमें घुसे। इसप्रकार दुराचारी दानवोंके पराजित होनेसे ब्राह्मणलोग निरुपद्रव हुए। इसही चौहानवीरके पवित्र कुलमें वीरवर पृथ्वीराजने जन्मलियाथा।

चौहान कुलकी सूचीमें देखा जाता है कि वीरवर अनहिलसे लेकर महाराज पृथ्वीराजतक इस चौहानकुलमें सब उनतीस राजा हुए।

परन्तु इसबातका विचार करनेका कोई उपाय नहीं पायाजाता कि वह सूची शुद्ध था नहीं। विशेष विचार करके देखनेसे स्पष्ट ज्ञान होजायगा कि कदाचित वह सूची शुद्ध न हो। कारण कि भट्टकवियोंके ग्रन्थोंमें यह वर्णन है कि महाराज पृथिवीराजसे पहले अग्निकुंड बनायागया था और इधर इतिहासमें देखाजाताहै कि महाराज पृथ्वीराज विक्रमादित्यके १२ १५ वर्ष पीछे हुएथे. भला फिर उस दीर्घकालके बीचमें केवल इतनीसही राजाओंका अस्तित्व किस प्रकार युक्तिसिद्ध मानकर ग्रहण किया जा सकता है।

इस चौहानकुलमें अजयपालनामक एक प्रतिष्ठावान राजा उत्पन्न हुआथा। अजयमेरु (अजमेर) के प्रसिद्ध दुर्गको उसनेही बनाया था जिन नगरोंमें पहिले चौहानगण प्रतिष्ठित हुए थे अजमेरभी उननगरोंमेंसे एक नगर गिनाजाता है।

बहुतसे पुरुषोंका अनुमान है कि उक्त अजमेरनगरकी प्रतिष्ठाके आसपासही प्रसिद्ध शम्भरहृदके किनारे शम्भरनामक एक और नगरभी चौहानोंने स्थापित किया था। शम्भरके नामानुसार इसनगरके राजालोगभी शम्भरीराय कहलाए। चौहान लोगोंका गौरव और प्रताप दीर्घकालतक इसनगरमें सतेजतासे विराजमान था। फिर जिसदिन हिन्दूराज चक्रवर्ती महाराज पृथ्वीराज चौहान दिल्लीमें अपने नानाके सिंहासनपर बैठे। उसीदिन चौहानकुलमें प्रतापका फिर नया तेज आगया. परन्तु वह तेज निर्वाण होनेके दिनोंमें एक दीपकके प्रकाशके समान कुछसमयतक स्थाई रहा. अतएव उसके साथ २ ही चौहानकुलका गौरव और तत्पश्चात् समस्त नगर क्रमानुसार श्रीहीन होगये।

जिस समय परमेश्वरकी दृष्टिमें जुडह् पापी ठहरा तब उसने प्रत्येक ऊंचे पर्वतोंपर प्रत्येक वृक्षके नीचे ऊंचे २ चौंतरे मूर्ति और बगीचे बनाये जो बलिके निमित्तथे और स्तम्भ भी अनेकप्रकारके निर्माणकिये जिससे यह रीति निकलीहुई विदित होतीहै ।

इसप्रकारके मिलान करनेसे सहजसे ही यह बात सिद्ध होजाती है कि सबका आदिमूल एकही पुरुषहै और एकही जातिकी रीतियें रूपान्तरको प्राप्तहोगई हैं ।

परिशिष्ट सम्पूर्ण ।

शुभमस्तु ।



"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालय-मुंबई.

विशालदेव जो इस युद्धमें जय प्राप्त करसकाथा. उसकी यथार्थता दिल्लीके प्राचीन विजयस्तंभके ऊपर लगीहुई शिलालिपिके पाठ करनेसे भली भांति ज्ञात हो जायगी।

यद्यपि विशालदेवके प्रचण्ड विक्रमके सामने मुसलमान वीर उसदाद पराजित हुए, तथापि मुसलमान लोगोंका उत्साह पराजय न हुआ. वह झुंडकेझुंड बारम्बार हिन्दुस्थानमें आकर भारत वासियोंपर अत्याचार करनेलगे। उनके बराबर चढते रहनेसे भारतीय राजाओंके राज्यमें घोर अशान्ति फैलगई। क्रमर से उनका गौरव और विक्रम लोप होता चला। अन्तमें चौहानकुलके पिछले राजा महाराज पृथ्वीराजके कारावास और मरणके साथ २ भारतमें चौहानोंके विक्रम और यश का लोप होगया।

सब समेत चौहानकुल चौबीस शाखाओंमें विभक्तहै। इन चौबीस शाखाओंमें हाड़ावती जनपदके बूंदी और कोटाके राजवंश विशेष प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपने पूर्व पुरुषोंके प्राचीन गौरवकी भली भांतिसे रक्षा की थी। इन दोनों राजकुलोंके बीचमें छः वीरोंने पितृद्रोही निठुर औरंगजेबके हाथसे वृद्ध शाहजहांको बचानेके लिये प्रसन्नतासे अपने हृदयका रुधिर दान किया था।

चौहान कुलके अनेक सामन्त राजाओंने अपनी जन्मभूमिकी रक्षाकरनेके लिये पितृपुरुषोंके पवित्र सनातनधर्मका त्याग कियाथा। कहते हैं कि पृथ्वीराजके भतीजे ईश्वरदासनेही सबसे पहिले घृणित उदाहरण दिखाया।

चौलुक्य वा सोलंकी—पहिलेही कहाहै कि सोलंकी कुल भी इसी समयमें उत्पन्न हुआथा। जब कि पंवार और चौहान कुल उत्पन्न हुएथे। परन्तु परम्परागत वृत्तान्तके योग्य सामग्री न मिलनेके कारणसे सोलंकी लोगोंका प्राचीन विवरण विदित नहीं होता। भट्टकवियोंके काव्यग्रन्थोंमें पायाजाता है कि जिस समय राठौर वीरोंने कन्नौजको अपने अधिकारमें किया उस समय सोलंकी कुल विशेष प्रतिष्ठित होगयाथा। इसके पीछे पत्तन [illegible]

कहते हैं कि महाराज सिद्धराजके उत्तर अधिकारियोंने किसी कारणसे पृथ्वीराज चौहानको कुपित करदियाथा। इसी कारणसे महाराज पृथ्वीराजने उन लोगोंको राज्यसे अलग किया।

सिद्धराजका उत्तराधिकारी जब सिंहासनसे अलग हुआ, तब उस सिंहासन पर कुमारपालनामक एक राजा बैठा। उसके सिंहासनपर बैठनेसे अनहलवाड़ा पट्टनकी उस उत्तराधिकारिणी विधिसे जो कि सदासे चली आई थी। उलट फेर हुआ क्योंकि कुमारपालने चौहानकुलमें उत्पन्न होनेपर भी सोलंकी सिंहासनपर अपना अधिकार कियाथा। महाराज सिद्धराज और कुमारपाल यह दोनोंही बौद्धधर्मके विशेष उपासक थे। दोनोंकेही राजत्वकालमें स्थापित (धर्मकार्य) की विशेष उन्नति हुईथी क्योंकि उस कालमें जो कईएक शिखर स्मरण बनाए गये हैं। उनकी निर्माण कौशलको देखकर अत्यानन्द प्राप्त होताहै। यहांतक कि धर्मकार्यकी ऐसी उन्नति किसी हिन्दू राजाके समयमें नहीं हुई।

नगरको जीवदान दिया। महाराज विक्रमादित्यसे आठशताब्दी पीछे यह महाराज सम्वत् ८४८ (सन् ७९२ ई०) में इन्द्रप्रस्थके सिंहासनपर विराजमान हुए। उक्त महाराजने सिंहासनपर बैठतेही इन्द्रप्रस्थके नष्टहुए गौरवको अधिकाईसे उद्धार किया।

महाराज अनंगपालके पश्चात् क्रमानुसार बीस राजाओंने उस वंशमें जन्मलेकर इन्द्रप्रस्थका राज्य कियाथा इस वंशके पिछले राजाका नामभी, अनंगपाल था। यह दूसरा अनंगपाल अपुत्रक रहा। यह किसी दूसरेको उत्तराधिकारी न पाकर अपने धेवते चौहान पृथ्वीराजको सम्वत् १२२० (सन् ११६४ ई०) में राज्यभार सौंपकर निश्चिन्त हुआ। और बुढापेके समय शान्तिमयी मुनिवृत्तिको धारण किया। तदोपरान्त जिसदिन वह पिछला अनंगपाल इस संसारसे विदा होगया, उसही दिन और उसके साथ प्रसिद्ध तुआर कुलका अंत हुआ*

राठौर–इसकुलकी उत्पत्तिके विषयमें, अनेकप्रकारके वृत्त सुने जाते हैं। यह लोग श्रीरामचन्द्रजीके बड़े पुत्र कुशसे अपनी उत्पत्ति कहते हैं। यदि इनकेही मतको युक्तिसिद्ध मानकर ग्रहण कर लिया जाय तो अवश्यही कहना पड़ेगा कि राठौरगणभी पवित्र सूर्यकुलसे उत्पन्न हुएहैं; परन्तु राजस्थानके भट्टगणोंने इस सन्मानसे वंचित रखकर, इनकी उत्पत्तिके वृत्तान्तको और ही प्रकारसे वर्णन करनेकी चेष्टा कीहै यह लोग कहतेहैं कि " राठौर लोगोंका यह प्रमाणित करना कि रविकुल तिलक भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके जेष्ठपुत्रसे हमारी उत्पत्ति हुई है, सम्पूर्णतः भ्रमहै। यह लोग, महर्षि कश्यपके वंशमें उत्पन्न हुए किसी राजाके वीर्यसे किसी दैत्यकुमारीके गर्भसे उत्पन्न हुए हैं।" यदि इस मतको मानें तो राठौर लोगोंको एकसाथही पवित्र आर्यकुलोचित सन्मानसे अन्यायके द्वारा वंचित करना होता है परन्तु हमें यह मत समीचीन और न्याययुक्त नहीं ज्ञात होता।

राठौरोको सूर्यवंशमें उत्पन्न हुआ न मानियेः तथापि उनको पवित्र आर्य कुलोचित सन्मानसे वंचित नहीं रक्खा जा सक्ता। चन्द्रवंशके विशालवंशमें उनको न्यायानुसार स्थान दिया जा सकताहै। राजर्षि विश्वामित्रसे जो पुरुष पहिले जो कुशनामक महापुरुष उत्पन्न हुआ था उसके कुलमें राठौर लोग स्थान पासक्ते हैं।

---

* तुआर कुलने जो विशालराज्यथे आज उनमेसे केवल [illegible] नगर उनके [illegible] स्मृतिचिह्नके भांति बचेहुएहैं। एक तुआरगढ (चम्बलकेदाहिने किनारेपर [illegible] । दूसरा,— पट्टन तुआरवती. इससमय यह नगरी जयपुरराजके अधिकारमें है।)

खण्डके नामसे पुकारा जाताहै । महाराज सिलरावके वंशधरगण बहुत दिनोंतक इस चन्देलखंडके सिंहासनपर अधिकार कर रहेथे ।

परीहार या पुरीहार—यद्यपि पुरीहार कुल अग्निकुलके नीचे आसनपर बिराजे तथापि इसके विषयमें अनेक गौरवसूचक वृत्तान्त पाए जातेहैं । यह लोग किसीभी समयमें स्वाधीन राज्यको नहीं भोग सके भट्टकविजनोंके काव्यग्रन्थोंसे पाया जाताहै कि पुरीहार कुलके राजालोग सदा दिल्लीके (तुआर) अथवा अजमेरके चौहान राजाओंके अधीनमें सामन्त राजा बनकर रहा करतेथे इस अधीन जीवनके बीचमें स्वाधीनता पानेके लिये पुरीहारगण जो चेष्टा किया करतेथे उससे ही उनका जीवनचरित्र सुवर्णके अक्षरोंमें लिखनेके योग्य होगयाहै । केवल एकही वीरके विस्मयकर वीराचरणसे पुरीहारकुल विख्यात होगयाहै । यह प्रसिद्ध और प्रचण्ड-वीर नाहरराव. पृथ्वीराजके अधीनमें सामन्तराजा रूपसे विराजमान था । अधीन राज्यमें रहकरभी उसने एक समय स्वतन्त्रता और स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये कठोर उद्यम कियाथा. इसीसे उसका नाम अन्यान्य राजपूत वीरोंकी पवित्र सूचीमें लिखा गयाहै । यद्यपि उसका वह पवित्र उद्यम फलवान नहीं हुआ तथापि इसके द्वारा नाहरराव अपनी वीरताका प्रकाशमान दृष्टान्त छोड़ गयाहै ।

माड़वार राज्य स्थापित किया। देखतेही देखते इस राज्यने विराट मूर्त्ति धारणकी। और राठौर वीर शिवकी सन्तान सन्तति विपुलवल संग्रह करके महा-पराक्रमवान होगई। एक समय राठौर वीरोंके एक लक्ष भ्राताओंनें अपने हृदय रुधिरको देकर मुगल शहनशाहोंकी सहायताकी थी, परन्तु आज उनकी वह वीर कीर्त्ति,—वह तेजस्विता मानो स्वप्नकीसी बात होगईहै। आज उस शिवजीके वर्त्तमान वंशधरोंको देखनेसे उनमें प्राचीन गौरवका कुछ भी निदर्शन नहीं पाया जाता। *

कछवाहे (कुशावह)—भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र कुशसे कछवाह कुल उत्पन्न हुआहै। कहते हैं कि जिस कौशलराज्यसे दो शाखा कुल उत्पन्न हुए थे। इतनेमेंसे एक शाखाकुलने पंचनद देशमें आकर प्रसिद्ध लाहौर नगरको स्थापन किया, दूसरेने वहुत आगे न बढकर सोननदके किनारे रोतासको बसाया।

इस कुलके जो लोग पंजावमें आए थे उन्होंनें भी थोड़े समयतक लाहौरमें रहकर फिर नरवरनामक एक नगर वसायाथा। कहतेहैं कि नरवर प्रसिद्ध राजा नलकी लीलाभूमि है। राजा नलके वंशधरगण वहुत दिनतक प्रचण्ड प्रताप्के साथ राज्य करते रहे, वरन तातारवाले और मुगल लोगोंके शासन कालमें वे अपने पितृपुरुषोंके उस प्राचीन राज्यासनपर जमे रहे थे। वहुतदिनतक राज्यभोगनेके पीछे महाराज नलके वंशवालोंका दुर्द्धर्ष राज महाराष्ट्रियोंनें खोदिया।

महाराज कुशके वंशधरगण वहुत दिनतक नरवरमें एकसाथ रहे। फिर ईस्वी दशमी शताब्दीके मध्यभागमें इनकी दो शाखा हुई। एक शाखाकुल तो वहीं-पर राज्य करने लगा। दूसरा कुल स्वदेशको छोड़कर अनार्य और असभ्य मीन-लोगोंकी निवासभूमिमें गया. कि जहांपर इस कुलने वड़ीभारी चेष्टा करके मीनलोगोंको निकाला और उस देशमें आमेरनामक एक नगर वसाया।

उस अनार्य मीन देशके मध्यभागमें महाराज कुशके वंशवालोंका वसाया हुआ आमेरनगर राजस्थानके सव नगरोंमें क्रमानुसार विशेष प्रसिद्ध होगया। क्रम-

---

* राठौरगण—धांहुल—भेदल, चाकित, दुहुरिया, खेवड़, गन्देव, [illegible], [illegible], जयसिंह, आविया, जोवसिया, जोरा, हुन्द, कटैंचा आदि चौबीस शाखाओंमें विभक्त हुए हैं। राठौरोंके इस कुलके गोत्राचार्य हैं माध्यन्दिनी शाखा, शुक्राचार्य गुरु, गर्भपट अग्नि, पंखिनी देवी है, गौतम गोत्र होनेसे महात्मा टाडसाहवने इनको बौद्धधर्मावलम्बी अनुमान किया है।

बन्दरकी विशेष प्रसिद्धहै. सौराष्ट्रकी सीमापर एक छोटा टापू था इसको देवबन्दर कहाजाताथा. नेमिनाथजीके प्रसिद्ध मन्दिरके अतिरिक्त सौरकुलवालोंने और भी छोटेछोटे कईदेवालय स्थापित कियेथे।

कहतेहैं कि देवबंदरके स्वामी डाकुओंकी समान दूसरेदेशके व्यापारियोंके जहाजोंसे धनादि लूटलेतेथे. इसीकारण समुद्रने रुष्ट होकर उनका नगर ग्रासकरलिया देवबंदर इतनी नीची भूमिमें बनाहुआथा कि इस प्रकारकी किम्बदन्ती सहसा असत्य नहीं गिनी जा सकती यदि उस समयके भारतवाणिज्यका विचार किया जाय तो एक और सत्यताका पता लगताहै. उसकाल अरबदेशके साथ भारतका वाणिज्य होताथा. अरबी सौदागर जहाज और धन लेकर सौराष्ट्रमें आतेथे क्योंकि यही राज्य उस समय भारतवर्षका प्रधान वाणिज्य स्थल मानाजाताथा. सम्भवित देवबन्दरके अधिपतिने उनपर कोई अत्याचार किया. जिससे उन्होंने बदलेमें आकर इस देशको विध्वंस करडाला हो. आगे चलकर मेवाड़के इतिहाससे भी एकप्रकार यह बात प्रमाणित होजायगी कि इसी प्रकारकी किसी दुर्घटनाके कारण देवबन्दर विध्वंस होगयाथा. उस राज्यके ऐतिहासिक ग्रन्थोंके देखनेसे विदित होताहै कि जब सौरकुलवाले देवबन्दरसे हटायेगये तब [illegible] राजाओंके यहां उन्होंने आश्रय पाया।

पीछे सम्वत ८०२ सन् ७४६में सौरकुलके राजाओंने अनहिलवाड़ा पट्टन स्थापित किया. इससे पहले बलभी सौराष्ट्रकी राजधानीथी. परन्तु अनहिलवाड़ा पाटन स्थापन होनेपर बलभीका गौरव घटगया. [illegible] राजधानीने उसका गौरव पाया।

९८८ सकमें सौरवंशी अन्तिम [illegible] अधिकारमें रहा. यहां उन्होंने आठ पीढ़ीतक राज्यकिया. फिर इस वंशका [illegible] राजा भोज [illegible] होगया.

ब्राह्मणोंके अद्भुत तपोवलके द्वारा अग्निके मध्यसे जो वीरकुल उत्पन्न हुआ था। वह अनेक दिनतक अपने प्रचण्ड प्रताप और धर्मानुरागको अटल रख सकाथा । परन्तु मुसलमानोंकी चढाईके समयमें अग्निकुलके अधिकांश लोग ब्राह्मण धर्मको छोडकर जैन या बौद्ध धर्मावलम्बी होगये ।

पॅवार—प्रसिद्ध अग्निकुलमें पॅवार ही सवसे पहले प्रतिष्ठाको प्राप्त हुएथे । सोलंकी और चौहानकुलके समान यह लोग यद्यपि विशेष संपत्तिवान और पराक्रमी नहीं हुए, तथापि इन तीनोंकुलोंका इतिहास देखनेसे स्पष्ट ज्ञात होगा कि उक्त चौहान और चौलुक्य लोगोंकी अपेक्षा पॅवार लोगोंनें ही सवसे पहिले राज्योपाधि धारण की थी । यहाँतक कि अग्निकुलकी शाखासे उत्पन्न हुए परिहारलोग पॅवार लोगोंके अधीनमें वहुत दिनतक सामन्त राजाकी समान रहे थे ।

कहते हैं कि वीर श्रेष्ठ कार्तवीर्य्यार्जुनकी प्राचीन माहिष्मती नगरीमें (प्रमार) पॅवार लोग सवसे पहले प्रतिष्ठाको प्राप्त हुए थे । इस प्रसिद्ध माहिष्मती पुरीमें कुछ कालतक राज करके इन्होंने विन्ध्यके शिखरपर धारा और मांडु नामक दो नगरी स्थापन कीथीं । वहुतसे मनुष्य कहतेहैं कि प्रसिद्ध उज्जयिनी नगरीको भी इन्होंनेही वसायाथा । *

पॅवार कुलका राज्य नर्मदा नदीको लांघ कर वहाँसे दक्षिणको वहुत दूरतक फैल गया था । भट्टग्रन्थोंमें पाया जाता है कि संवत ७७० (सन् ७१४) के प्रारम्भकालमें रामनामक एक प्रतिष्ठावान् राजा इस कुलमें उत्पन्न हुआ था इसने तैलंग देशमें एक स्वतंत्र राज्यको प्रतिष्ठित किया । कविवरचन्द्रभट्टने लिखा है कि रामपॅवार भारत वर्षका चक्रवर्ती राजा था । उसके आधीनमें वहुतसे राजपूत राजा सामन्तकी भांति रहते थे× रामपॅवारके स्वर्गवासी होतेही एक [illegible]

---

* पँवारलोगोंके अधिकारमे जो नगरथे । उनमेसे कई एक विशेष प्रसिद्ध हैं यथा-महेश्वर, (माहिष्मती) धारा, मान्डु, उज्जयिनी, चन्द्रभागा, चित्तौर, आबू, चन्द्रावती, मऊ, मैदान, [illegible]रवती । अमरकोट, बिखार, लोहदुर्वा, और पाटन इन नगरोंमेसे किसीको इन लोगोंने [illegible] था, किसीको वसाया था ।

× प्रसिद्ध वर्दाई ग्रन्थमे लिखाहै कि तैलंगके राजचक्रवर्ती महाराज रामपॅवारने [illegible] बैठकर राजस्थानके छत्तीस राजकुलोको भूमि वृत्ति दी थी । [illegible] चौहानोको आमेर, कामध्वजोको कन्नौज, परिहारोको मन्देश, [illegible] दक्षिण दिशा, पारणोको कच्छ, धौहरोको काठियावाड और [illegible] देकर उन्हें अपना सामन्त किया ।

लोग समझतेहैं. उस तत्वका प्रगट करना कोई बड़ी बात नहीं एकबार विचार करनेसे वह आपही प्रगट हो जायगा।

जिससमय महावीर सिकन्दरने भारतपर चढ़ाई कीथी उससमय पारोपमिसस × पर्वतके निकट एक तक्षकोंकी जाति रहतीथी. कहतेहैं कि जिस तक्षकने अपने पुरुका पक्ष छोड़कर सिकन्दरका साथ दियाथा. वह इसी तक्षक वंशका एक राजाथा. भट्टोंके इतिहासमें लिखाहै कि जाबालिस्थान (जबुलिस्तान) से इधर आकर भारतवर्षमें प्रवेश करनेके समय इन्होंने तक्षकोंकी प्राचीन निवासभूमि जो सिन्धुनदीके किनारेथी छीनलीथी. तक्षकोंकी शालिवाहन नाम एक नगरी थी भट्टियोंने यह नगरभी उनसे लेलिया युधिष्ठिरके ३००८ सम्वतमें यह घटना हुई, अब यह स्पष्ट होगया कि शालिवाहनने हिन्दूराज्यचक्रवर्ती महाराज [तुआर] विक्रमको पराजित कियाथा। वा इसीने इस शालिवाहन पुरी प्रतिष्ठा की।

बहुतलोग अनुमान करतेहैं कि ईसासे छः सौ साल शताब्दीके पहले तक्षकोंने शिशुनागनामक अधिपतिके साथ भारतवर्षमें प्रवेश कियाथा. यह अनुमान सत्य मानाजासकताहै कारण कि दूसरे इतिहासोंसे विदित होताहै कि ठीक इसी समय

जो पँवार अपने प्रताप और विपुल गौरवके प्रभावसे एक समय राजपूत राजाओंके शिरमौर हुए थे। अभाग्यसे आज उनपर पहिले प्रताप और गौरवका साधारण चिह्न भी नहीं है। भारत वर्षके स्थान २ में जो उनकी कीर्ति विराजमान थी। कालके कठोर करप्रहारसे आज वह सब चूर २ हो गई। आज उनका चूराही इस कुलके पूर्व गौरवका प्रतिविम्ब हो रहा है। संसारमें इस कालके माहात्म्यको कौन समझ सक्ता है? काल ही सृष्टि कर्ता और कालही संहार कारी है। काल ही सुख दुःखका नियामक है। महाधनवान होकर गर्व व अहंकारके वश होनेसे आज जो मनुष्य सम्पूर्ण संसारको तिनकेकी नाईं तुच्छ विचारता है। अपने नौकर चाकर इष्ट मित्रोंसे पशुसमान व्यवहार करताहै;—आश्चर्य नहीं कि कल या दो दिन पीछे सर्व नियन्ता कालके विधानानुसार उसका छिन्नमस्तिष्क श्मशानमें लौटता हो,—असम्भव नहीं जो गीदड़, कुत्ते आदि घिनोने जानवर उस मस्तकपर लातें मार-रहे हों। जिसकालके अखण्ड माहात्म्यसे प्रतिदिन यह अवश्य होनहार बातें होती रहतीं हैं। उसही कालकी अपार महिमासे आज पँवारकुलके गौरवका साधारण चिह्नभी दिखाई नहीं देताहै। चन्द्रगुप्तादि भुवनविदित महाराजोंकी प्रदीप्तकीर्त्तिसे जो यहकुल दमक रहाथा, मुगलराज वीर हुमायूं, वीर तैमूरके सिंहासनसे अलग किया जाकर एकसमय जिस वंशके साधारण वंशजके आश्रयमें रहा था, आज भारतका मरुभूमिके* धात नगरका वर्तमान राजाही उस पँवारवंशके पूर्व गौरव और प्रतापका साधारण नमूना है।

पँवार कुलमें पैंतीस शाखाहैं। इनमें विहील शाखाही विशेष प्रसिद्ध है। इस शाखाकुलमें जो राजा उत्पन्न हुए थे उन्होंने बहुत दिनोंतक अरावलीकी पश्चिमओर वसी हुई प्राचीन चन्द्रावती नगरीके सिंहासनपर राज्यकिया था।

चाहुमान वा चौहान—इससे पहले इस कुलके गौरवादिका वर्णन बहुतायतसे होचुकाहै—अतएव यहाँ अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं समझी जाती। हां जो बातें पहले नहीं लिखी गई हैं, वह आगे लिखी जायँगी। पवित्र अग्निकुलसे उत्पन्न हुई शाखाओंमें चौहान शाखाही विशेष बलवान हुई। कहते हैं कि

---

* यह पँवारकुलकी शाखा सोदा गोत्रमे उत्पन्न हुई इसी शाखाने [illegible] हुआथा, सिकन्दरके समयके इतिहासलेखक इन सोदाको सगदि कहतेहैं। इस सोदानामक [illegible] अमर व समर नामक दो प्रतिष्ठित राजा उत्पन्न हुए थे। इन दोनोंके नामसे अमरकोट और [illegible] नामक दो नगर बसेहै।

आत्माके अमरहोनेका उनको विश्वासथा, और डिगायननें चीनी इतिहास वेत्ताओंके लेखोंका सार लेकर लिखाहै कि बहुत प्राचीन कालमें उनका बौद्ध धर्म था।

जितोंके सम्बन्धमें जितनी जनश्रुति सुनी जातीहैं उनका सार ग्रहण करनेसे विदित होताहै कि सिन्धुदेशके पार पश्चिम दिशाका कोई देश इनका आदि निवासस्थान था, टाडसाहबने ईस्वी पांचवीं शताब्दीकी × एक शिलालिपिका पता लगायाहै उसमें लिखाहै कि इस वंशके किसी राजाने यदुकुलकी एक रमणीके साथ विवाह • कियाथा कदाचित इसीसे जितलोग अपनेको यदुवंशी कहते हैं।

इसबातका पता नहीं लगता कि पांचवीं शताब्दीके कितने पहले यहलोग राजस्थानमें आये परन्तु ध्यान देकर उनकी जीवनी पढनेसे स्पष्ट विदित होताहै कि सन् ४४० ईस्वीमें वे नवीन गौरवसे युक्त हुएथे और उससमय उनके सरदारने तक्षसे रूशिया और यूरुप खण्डको एकबारगी दग्ध करदियाथा।

गिन्दूरीरूके शालिवाहन पुरसे निकलके यादवोंने यात्रा (.......) पारकरके

बार अग्निकुण्डको जलाया और उसकुंडके चारोंओर बैठकर मंत्रोंको पढतेहुए देव-देव महादेवजीको प्रसन्न किया।

उस पवित्र अग्निकुण्डसे * एक मूर्ति निकली परन्तु उसके सर्वांगमें किसी प्रकारका कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया यह देखकर। ब्राह्मणोंनें उसको प्रतिहारी बनाकर द्वारपर खड़ा किया। फिर दूसरी मूर्ति निकली। परन्तु चुलुकके समान आकार देखकर ब्राह्मणोंनें उसका नाम चौलुक्य रक्खा। फिर उस अग्निकुण्डसे क्रमानुसार तीसरी मूर्ति प्रकाशित हुई ब्राह्मणोंने उसका नाम (प्रमार) पँवार रक्खा। इसमें वीरताके चिह्न पाये जातेथे वीर चिह्नधारी और युद्धमें सामर्थ्य रखनेवाला होनेके कारण ऋषिगणोने उस वीरको असुर लोगोंके विरुद्ध समरमें पठाया। यद्यपि पँवार वीरजनोंके साथ मिलकर दैत्योंसे संग्राम करने लगे; तथापि उनको विजय लक्ष्मी प्राप्त न हुई।

तदनंतर वशिष्ठजी फिर आसनमारकर बैठे और बराबर मंत्र पढकर देवताओंको आह्वान करने लगे। अबके जैसेही महर्षिने आहुति दी, वैसेही उस पवित्र अग्निकुंडसे एक वीरमूर्ति प्रकट हुई; इस मूर्तिका आकार बड़ा, ललाट ऊंचा, और चौड़ा, बाल अंजनके समान काले, नेत्र बड़े और घूमते हुए, छाती चौड़ी और सुडौल हुई. उस भयानक मूर्तिके सर्वांग वर्मसे ढके हुएथे। कमरमें बाणोंसे भराहुआ तरकश, हाथमें विशाल धनुष और प्रचण्ड तलवारथी। चारों हाथोंमें अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्रथे। अत्यन्त बलवान् देखकर ब्राह्मणोंनें उस मूर्तिका नाम चौहान रक्खा।

वह महाबली और पराक्रमी चौहान वीर बहुत शीघ्र असुरोंसे लड़नेके लिये भेजा गया। तपोधन वसिष्ठजी, उस चौहानवीरको समरमें भेजनेके समय भगवती आशापूर्णाकी प्रार्थना करने लगे। कुछही समयमें त्रिशूल धारिणी शक्ति-देवी सिंहपीठपर सवार होकर उन सबके सामने प्रगट हुई। और चौहान वीरको आशीर्वाद देकर अत्यन्त उत्साहसे दैत्यसे संग्रामको भेजा। आशापूर्ण कालिका इसप्रकार भक्तोंको समझा बुझाके अन्तर्द्धान होगई। ब्राह्मणोंने उस चौहान वीरका अनहिल नाम रक्खा, और आनंद सहित जय २ शब्द करने लगे। अनन्तर वीरवर अनहिल महाउत्साहसे अपनी सेनाको साथले असुरोंसे युद्ध करने

* जहांपर ये अग्निकुंड जलाया गयाथा। वहांपर स्वर्ग [illegible] इस स्थानमें आदिनाथकी एक [illegible] मूर्ति वेदीके ऊपर रक्खी हुईहै।

करके गजनियोंका सामना किया, शीघ्रही दोनों दलोंमें घोर संग्राम हुआ, परन्तु मुसल्मानोंकी नौकाओंके आगे जो लोहेकी शलाकायें लगीहुईथीं उनसे टक्कर खाकर जिनोंकी बहुतसी नावें फटकर जलमें डूबगई जो रहनेसे बची वह गोलोंकी वृष्टिसे छिन्न भिन्न हो नष्ट होगई। इसप्रकार इसयुद्धमें बहुत थोड़े लोगोंनें अपने प्राणोंकी रक्षा पाई बचेहुए जिनोंको भागजानेवाले जिनोंसेभी अधिक कष्ट उठाना पड़ा व सब बन्दी बनालियेगये।

इसबातपर किसीप्रकारभी विश्वास नहीं किया जा सकता कि इसयुद्धमें जिनवंश सर्वथा निर्मूल होगयाथा, अवश्यही कुछलोग शेष रहगयेथे जिन्होंने महमूदके हाथसे छुटकारा पानेके निमित्त दूसरे स्थानमें जाकर आश्रय लिया, परन्तु उन्होंनें पंजाबको एकसाथही नहीं छोड़दिया कारण कि अपना देश छोड़कर जिस पंजाबदेशमें वे रहनेको आयेथे सहज २ विपद पड़नेसेभी वह उनसे न छोड़ागया × यद्यपि महमूदके दारुण कोपसे वे उजड़गये परन्तु जो श्रेणि जो युद्धमें बचगयेथे समय पाकर वे बड़े बलवान हुए और प्रतिष्ठाके सबसे ऊंचे शिखर पर आरूढ़ हुए.

यह पवित्र अग्निकुल केवल चौहानवीरगणोंकी अपूर्व वीरता और गौरवगरिमासेही अमर होगया है इसकुलमें जितने धुरन्धर राजा उत्पन्न हुए, उनमें माणिकरायभी एक था। दुर्धर्ष मुसलमान लोगोंके प्रचण्ड आक्रमण प्रभावसे कम्पायमान होते हुए-पंजावको माणिकरायनेही सबसे पहिले रोका था।

माणिकराय और पृथ्वीराजके सिवाय औरभी अनेक महावली व पराक्रमी चौहानराजाओंका वृत्तान्त पायाजाता है भिन्नजातिका इतिहास पाठ करनेसे यह भलीभांति ज्ञान होताहै। कि एक समयमें वह राजालोग अत्यन्त बलवान थे मुसलमान तवारीखवाले भी मानते हैं कि जब दुर्द्धर्ष मुसलमान वीर महमूद प्रचंडसेनाको साथ लेकर सूरतको जा रहा था।तब अजमेरनगरमें ही एक प्रतापी राजाने* उसको भलीभांतिसे पराजित और अपमानित किया उस चौहानवीरके प्रचंड असि-बल प्रभावसे महमूदको विजयकी आशा छोड़कर युद्ध-क्षेत्रसे लौटना पड़ा था।

हिजरीकी प्रथम शताब्दीके शेषकालमें खलीफ़ावलीदके विख्यात सेनापतिकासिमने माणिकरायको घेर लियाथा। इतिहासमें लिखाहै कि उस संग्राममें भली भांतिसे मुसलमानोंका बल मथा गया था। यह लोग इसी समयसे कईवार भारतमें आये और बहुतसे धन-रत्न लूटकर लेगये। जिससमय महाराज विशालदेव अजमेरके सिंहासन पर विराजमान थे। उससमय मुसलमानलोग और एकबार भारत वर्षमें आए। इसही चढ़ाईको उनका तीसरा आक्रमण कहना चाहिये। देशवैरी और सनातन धर्म विद्वेषी मुसलमान लोगोंके अपवित्र ग्राससे अपने राज्य और धर्मकी रक्षा करनेके लिये चौहानवीर विशालदेव विशाल अनीकिनीको सजाय उनके सामने हुआ। शीघ्रही घोर संग्राम होने लगा। उस भयंकर संग्राममें पराजित होकर मुसलमानगण युद्धसे भागे। उस भयंकर समरके समय, प्रतापवान् धीरधारी बहुतसे भूपालगण सामन्त बनकर महाराज विशालदेवकी सहायता करने आये थे। जो राजा सहायता करनेके लिये आएथे उनमेंसे पंवारकुलमें उत्पन्नहुआ वीर उदयादित्यही विशेष प्रसिद्ध है। प्रायः सवही भट्टग्रन्थोंमें लिखाहै कि सन् १०९६ ई०में वीर उदयादित्यकी मृत्यु हुईथी। इस नियत समयका अवलम्बन करनेसे निश्चयही प्रतिपन्न होगा कि यह महासमर महमूदके चौथे पुरुष विख्यात इमदादवादशाहके संग हुआथा। महाराज

* उस चौहान वीरका नाम धर्मविराजहै। यह विशालदेवका पिता था।

चुकाहै कि जिससमय भट्टीलोग मरु भूमिमें आनकर वसेथे। तब लंगहो और तुगरों आदि कितनेएक यवन लोगोनें उनसे विरुद्ध शत्रुताकी थी। कहतेहैं कि उक्त लंगह और तुगरगण पवित्र सोलंकी कुलमें उत्पन्न हुए, व काल क्रमसे मुसलमान होगयेथे। पहिले यह लोग मालावारके उपकूलमें वसतेहुए कल्याण नगरमें वास करते थे। इस कल्याण नगरमें इन लोगोंके पूर्व गौरवके चिह्न अधिकाईसे पाएजातेहैं इस नगरसे सोलंकी कुलकी एकशाखा निकल कर समयके हेरफेरसे अनहलवाड़ा पाटनमें प्रतिष्ठित हुईथी।

प्राचीन सौर कुलमें भोजनामक एक राजा उत्पन्न हुआ। उसके पश्चात् फिर और किसी सौरराजाको सिंहासन प्राप्त नहीं हुआ। क्योंकि संवत् ९८७ सन् ९३१ ईसवीमें राजाकी मृत्यु होनेपर, उसके धेवते मूलराजने इस सिंहासनको अपने अधिकारमें किया।—मूलराजने * नानाके सिंहासनपर क्रमानुसार अठारह वर्षतक राज्यकिया। पश्चात् मूलराजकी मृत्यु होनेपर इसका पुत्र सिंहासनपर बैठा। इसके ही समयमें दुर्द्धर्ष मुसलमान वीर मुहम्मदग़ज़नवीने विजयी सेनाके साथ अनहल-वाड़ा पट्टनमें पहुँच कर नगरका सत्यानाश किया,। इस सर्वसंहारकारी संग्राममें मुहम्मदग़ज़नवीने इतना धन रत्न लूटा कि जिसको श्रवणकरके विश्वास नहीं होता है। परन्तु यदि इस बातका विचार कियाजाय कि उस समय अनहलवाड़ा पट्टनका वाणिज्य कहांतक उन्नतिपर था लक्ष्मीने कहांतक इस नगरमें अपना दृढ़ निवास किया था तब अवश्यही विश्वास करना पड़ताहै कि महमूदग़ज़नवीने इन रत्नोंकी अवश्य वड़ी भारी लूट की। उस समयमें यह अनहलवाड़ा समस्त भारत वर्षके बीच वाणिज्य व्यौपारमें प्रसिद्ध था। यद्यपि महमूदग़ज़नवी और उसके उत्तराधिकारियोंको वारंवार भयंकर आक्रमणसे अनहलवाड़ा पट्टनका समस्त रुधिर सूख गयाथा। तथापि क्रमानुसार उसने अपने बलको संग्रह करलिया जिस राजाके समयमें इस देशकी विशेष ख्याति हुईथी. इस महारा-जका नाम सिद्धरावजयसिंहहै × कर्नाटक और हिमाचलके बीचमें बसेहुए २२ नगर एकसमय सिद्धरायके छत्रकी छायामें थे। परन्तु इस विस्तारित राज्यको सिद्धरायके वंशधर वहुत दिनतक नहीं भोगसके।

---

१ मालखासे उत्पन्न होनेके कारण यह मालखानी कहातेथे इन मालखानियोंने [illegible] मुसल-मानी धर्मग्रहण कियाथा।

* मूलराजके पिताका नाम जयसिंह था, जयसिंहका विवाह भोजराजकी बेटीसे हुआ था।

× सिद्धराज जयसिंहने सम्वत् ११५० से १२०१ तक राज्य किया प्रसिद्ध [illegible] (एल पद्मिनी) इसकी राजसभामें [illegible], पद्मिनी कहतेहैं कि [illegible]

कि ठीक कौनसे समयमें यह लोग सूरत देशमें आयेथे, तथापि केवल इतना जानाजाता है कि, जब सबसे पहले मुसलमानोंने चितौरको घेरा था तब भारतवर्षकी और और वीरोंकी समान झाला लोगोंने भी अपनी २ सेनाके साथ चित्तौर नाथकी सहायता करनेकेलिये संग्राम भूमिमें गमन कियाथा ।

जत्व, जित्व, जटवा, वा. कामारीः—अति प्राचीन कालमें इन लोगोंकी प्रतिष्ठासूरत देशमें हुई थी, समस्त कुल सूचियोंमें कामारियोंको राजपूत लिखाहै। परन्तु किसी राजपूतके साथ इनके सम्बंधका होना किसी जगह भी नहीं पाया-जाताहै ।

कामारी लोगोंके प्राचीन जीवन सम्बन्धमें कुछ थोडासा वृत्तान्त अबतक प्रगट हुआहै परन्तु यह वृत्तान्तभी कपोल कल्पित बातोंसे इकट्ठा है. भट्ट ग्रंथोंमें देखा जाताहै, कि कामारी लोग गुमलीनामक नगरमें वास करतेथे। अपनेको महावीर हनुमानजीसे उत्पन्न हुआ कहते हैं. और सबको दृढ करनेके लिये अपने राजा लोगोंको "पुच्छरिया" अर्थात् सीधे पुच्छ कहकर सर्वसाहित अपना वर्णन करते हैं। भट्टग्रंथोंमें देखा जाताहै, कि गुमलीनामक नगरीमें इनलोगोंके एकसौ तीस राजाओंने राज किया था, तब ईसवीकी आठवीं शताब्दीमें यह लोग यहांतक बढ गये कि इन्होंने उनतारा अनंगपालकी कन्यासे विवाह कियाथा कि जिन्होंने पुनर्वार दिल्लीकी प्रतिष्ठा की थी परन्तु जेठवलोग उस गौरवको बहुत दिनोंतक नहीं भोगसके । भट्टग्रंथोंमें लिखाहै कि बारहवीं शताब्दीमें शिल्लकामारी इनके एक राजाको राठौरोंने गुमली राजधानीसे निकाल दियाथा उसदिन जेठवे लोगोंने जो सीसदेना तो फिर फिरके ऊपरको मुंह नहीं उठा सके ।

गोहिलः—यहलोग एक एक समय बडे प्रसिद्ध और सौभाग्य गयथे. परन्तु कालकी कठोर विधिके अनुसार वह प्रतिष्ठा और वह [illegible] आज [illegible]

किया। उसके भयंकर आक्रमणको सहन न करके महाराजा गिहलकर्ण समर क्षेत्रमें गिरगये। इनके साथही अनहलवाड़ा पट्टनकाभी नाश होगया।

उस हिन्दू विद्वेषी तातार राजके निठुर प्रतिनिधि लोगोंनें भयंकर दुष्टता और दुराकांक्षा करके गुर्जर और सौराष्ट्र (सूरत) से धनशाली नगर व उपजाऊ शस्य-क्षेत्र श्मशानके समान कर दिये। चारोंओर महल दुमहलोंके खँड़हरोंका दिखाईदेना, चारोंओर प्रकृतिका भयंकर वेश हृदयको बिषादसे व्याकुल करनेलगा। इस समय ऐसा ज्ञात होताथा कि नगरके सब स्थानोंमें मानों मुसलमान लोगोंका घोर अत्याचार मूर्तिधारण करके प्रगट होरहाहै। उन्होंनें प्रचण्ड डाह और दुष्ट स्वभावके कारण आदिनाथका पवित्र मन्दिर चूरा २ करके उसकी टूटी फूटी सामग्रीसे वहांपर एक मुसलमान फकीरका समाधि मन्दिर बनाया इस प्रकारसे जो कुछ सुन्दर और जो कुछ पवित्र था। वह सबही दुर्दान्त मुसलमानोंके विषम विद्वेषसे नष्ट भ्रष्ट होगया।

सनातनधर्म विद्वेषी निठुर मुसलमानोंके अत्याचारसे विशाल सौराष्ट्र देश जिसदिन इस प्रकारसे श्मशान भूमि होगयाथा, उसहीदिन शोलंकी राजकुलकी राजलक्ष्मी इस देशको छोड़ गई। इसवंशके मनुष्य अपने पितृपुरुषोंके राज्यको खोकर आश्रय प्राप्त करनेके अर्थ भारत वर्षमें चारों ओरको दौड़े तबसे लेकर सौ वर्षतक शोलंकी कुलका राज्यसिंहासन शून्य रहा। इस दीर्घकालके मध्यमें कोईभी हिन्दू राजा उस सिंहासनपर न बैठा।

उस दीर्घकालव्यापिनी अराजकताके पश्चात् सौराष्ट्र देशके भग्नसिंहासनपर तक्षक वंशीय एक वीरपुरुष बैठा और शीघ्रही कुछ २ उस देशकी पूर्वशोभाको फिर जीवित किया यद्यपि सिंहरण तक्षकने सौराष्ट्रके पूर्वगौरवका उद्धार किया। परन्तु सोलंकी कुलके लोपहुए गौरवको वह फिर उद्धार न करसका। इसका कारण यह है कि उस महाराजने अपने पूर्व पुरुषोंके धर्मको जलांजलि देकर इसलामधर्मका अवलम्बन किया। मुसलमान धर्मको धारण करनेके पश्चात वह सिंहरण तक्षक मुजफ्फरनामको ग्रहण करके गुर्जरा राज्यको शासन करनेलगा।

अत्याचारी मुसलमानोके भयंकर उपद्रवसे सोलंकी वंशवृक्षके मूलसहित उखड़नेसे पहले इससे १६ शाखाकुल उत्पन्न हुए थे। इन शाखाकुलोंमें बघेले विशेष प्रसिद्ध हैं। यहलोग * जिस देशमें रहा करतेथे वह देश अबतक बघेल

---

* कदाचित् महाराज सिद्धराजके पुत्र भाण्डराजसे ही इस [illegible] हुआहै।

ढार्थी कहतेहैं कि महाराज सिन्धराजजयसिंहने इनको अपने राज्यसे एकसाथही निकाल दियाथा परन्तु आज वह गौरव केवल नाममात्रको शेष रहगयाहै । आज बौद्धधर्मावलम्बी कितनेएक वणिक लोगोंके सिवाय और किसीकोभी इस नामसे पता बतातेहुए नहीं देखा जाता ।

देवी या दावी—एक समय यह जाति सौराष्ट्रमें प्रसिद्धथी। परन्तु आजकल कोई विशेष वृत्तान्त इनलोगोंका नहीं देखाजाता । केवल कहावतही इनकी प्राचीन विख्यातिका पता बतातीहै । इनकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कोई विशेष संतुष्टकर प्रमाण नहीं पाया जाता किसी २ भट्टने देवी लोगोंको यदुकुलकी शाखा कह कर वर्णन कियाहै । परन्तु इसबातका कोई ठीक प्रमाण नहीं मिलता ।

गर या गौर—यद्यपि यह जाति एक समयमें राजस्थानके बीच सन्मान और प्रसिद्धिको प्राप्त हुईथी परन्तु विशेष प्रतिष्ठा और प्रभुता इनको कभी प्राप्त नहीं हुई । बहुतसे आदमी यह कहतेहैं कि बंगदेशके लोगोंने इसही कुलसे उत्पन्न होकर अपने नामानुसार लक्ष्मणावती नगरीका नाम रक्खाथा ।

प्राचीन भट्टलोगोंके काव्यग्रन्थोंमें इन लोगोंको "अजमेरकेगर" कहकर वर्णन कियाहै । इससे ज्ञात होताहै कि यह लोग चौहानोंसे पहले इसदेशमें प्रतिष्ठित हुएथे । बहुतसे भट्टग्रन्थोंमें यहभीहै कि गर लोगोंने संग्रामके समय अनेकबार आर्यवीर महाराज पृथ्वीराजकी सहायता कीथी। परन्तु दुःखसे कहना पड़ताहै कि इनके प्राचीन गौरवका कोई उदाहरण आजकल दिखाई नहीं देता ।

डर या डोडा—यद्यपि समस्त वंशपत्रिकाओंमें इनका नाम लिखाहुआ देखा जाताहै, परन्तु चरित्रका कोई विवरण भट्टग्रन्थोंमें नहीं देखा जाता एक समय चौहान वीरमहाराज पृथ्वीराजने इनपर विजय प्राप्त करके अपने आपको धन्य मानाथा आज अनन्त कालसागरकी तरंगोंमें इसजातिका इतिहास डूब गयाहै ।

बर्गवाल या बरवाल—इस कुलमें देवीसिंह होगयाथा. जिसे राजपूतोंमें । ऐसा जानपड़ताहै कि इसही कारण इनको राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंमें आसन प्राप्त हुआहै । परन्तु अबतक किसी राजपूतने इनलोगोंके साथ शादी ब्याह शादी नहीं की । इससे पहले यह बर्गवाललोग काठियावाड़में रहतेथे । इन लोगोंका एक शाखाकुल [illegible] नामसे पुकारा जाताहै । [illegible]

राहुपने मन्दाद्रिपर आक्रमण करके उनको पराजित किया और अपनी जयका निदर्शन दिखानेके लिये पुरीहार राजाओंकी राणा उपाधि छीन ली *

आजकल भारतमें चारोंओर पुरीहार कुल फैल गयाहै। परन्तु दुखकी वातहै कि इसकुलके वीचमें किसी राजाकोही स्वाधीन जीवन सम्भोग करते हुए नहीं देखा जाता कोहारी, सिन्द, और चम्वल नदीके संगम स्थानमें पुरीहारलोगोंका एक प्राचीन उपनिवेश अवतक दिखाई देता है। इस उपनिवेशमें २४ ग्राम और अगणित छोटी २ पल्लियेंहैं। पुरीहार कुलका यह प्राचीन स्थान पहले संधियाके अधिकारमें था, परन्तु अव वृटिशसिंहने अर्थात् अंगरेज़ सरकारने आवश्यकता समझ कर उसको अपने विराट् राज्यमें मिला लिया है।

परिहारकुलकी वारह शाखाओंमें इन्दो और सिन्धिलही विशेष प्रसिद्धहैं अवतक लूनीनदीके× किनारे इन दोनों शाखाकुलोंका साधारण चिह्न पाया जाता है।

सौर।—एक समय भारतके इतिहासमें यह जाति विशेष प्रतिष्ठित होगईथी। भारत वासियोंने इस जातिकी कीर्ति और गौरव कथाकोहर्पसहित गायाथा। परन्तु अभाग्यकी वातहै कि आज भारतवर्षके किसी स्थानमेंभी इस जातिकी कीर्ति. और गौरव व प्रतिष्ठाका चिह्न कहींपर भली भांतिसे नहीं दिखाई देता। यदि भट्टलोगोंके काव्यग्रन्थोंमें सौरकुलका समस्त वृत्तान्त न लिखा होता. तो ज्ञान होताहै कि अवतक भारतके इतिहासमें इसका लोपहोगया होता। सौर कुलके उत्पत्ति वृत्तान्तको हम कुछभी नहीं जानतेहैं क्योंकि चन्द्र और सूर्य इन दोनोंही कुलोंमें इस कुलका नाम नहीं पायाजाता। †

यदि वीर भारतभूमिको इनकी आवासभूमि नहीं मानाजायगा तौभी यह अवश्य मानना पड़ैगा कि प्राचीनकालसे इनका वंशवृक्ष भारतवर्षमें वोयागयाथा कारण कि भट्टग्रन्थोंमें लिखाहै. कि मेवाड़वालोंके पूर्व पुरुषागण [illegible] राज्य कररहेथे तब सौरलोगोंने इनके साथ विवाहका सम्बन्ध स्थापन किया।

सौरगणोंका सूर्योपासक होना [illegible] नामसे सौराष्ट्रका ‡ नाम करण हुआहै इनके स्थापन किये हुए अनेक नगरोंमें [illegible]

* जिस पुरीहार राजको पराजित करके राहुपने [illegible]

× मारवाड़के दक्षिण पश्चिम भागमें यह नदी वहतीहै।

[illegible]

‡ सौराष्ट्र—[illegible]।

से यह बात सहजमेंही जान ली जातीहै कि इस कुलने कभीभी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं की इस समय यह कुल असंख्य शाखाओंमें विभक्त होगया है।

देहिया—यह राजकुल प्राचीनहै इसकेलोग सिंधु और सतलजके संगमके समीप रहतेथे, जैसलमेरके भट्टग्रन्थोंमें इनका कुछ वर्णन मिलताहै, इनके नाम और राजस्थानके विषयपर विशेष ध्यान देनेसे विदित होगा कि सिकन्दरके कहेहुए डाही यही हैं।

जोहिया, यह लोग देहिया लोगोंके साथ बहुतायतसे रहा करते हैं और यही कारण है जो देहियाके साथ इनका नाम लिखा जाता है। कुछ काल-तक एक साथ रहनेके पीछे यह लोग गाराके पारहुए और भारतवर्षकी मार वाड भूमिमें बडी प्रतिष्ठाको प्राप्तकिया प्राचीन भट्टग्रंथोंमें इन लोगोंको "जंगलदेशपति" के नामसे पुकारा है।

मोहिलः—इसबातका समझना बडा कठिन काम है, कि कौनसे गुणके होनेसे यह लोग राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंमें गिने गए भट्टलोगोंके काव्यग्रंथोंमें जो इनके सम्बंधका कुछ पुराना वृत्तान्त पाया जाता है उससे ज्ञात होताहै कि आजकल जहां बीकानेरका राज स्थापित है, यह लोग वहीं पर राज करतेथे. फिर राठौरलोगोंने उसदेशमें आकर इनको निकाल दियाथा।

निकुम्प—समस्त भट्ट ग्रंथोंमें देखा जाता है. कि एक समयमें निकुम्प जाति प्रसिद्धथी। परन्तु इनका वर्णन कुछभी नहीं पाया जाता कि कौनसे

१ तक्षक अतिप्राचीन कालमें जो वीरगण चढाई करके दूरदेश शाकद्वीपसे भारतवर्षमें आये उनमेंसे तक्षकही प्रधानहैं इसकुलके विशाल वंशवृक्षसे भिन्न २ शाखायें निकलकर चारोंओर फैलगई थीं जो जितवंश अनेक गोत्रोंमें विभक्तथा जिसके असंख्य गोत्रोंसे अनेक महावीरोंने उत्पन्न होकर एकसमय अपने वीररूपसे सारे भूमंडलको कँपा दियाथा वहभी इस तक्षक वंशसे पहले प्रतिष्ठाको नहीं प्राप्त हुआथा।

अबुलगाज़ीने उक्त तक्षकको तुर्कका × पुत्र तनक कहाहै चीनके इतिहासवालोंने तुकशू और ष्ट्रावोंने तकारि वर्णन कियाहै इन तकारियोंने ग्रीकवालोंके प्रसिद्ध बख्तियार राज्यको ध्वंसकरके एशियामंडलके एक देशको अपने नामानुसार नकारिस्थान (तुर्किस्तान) नामसे पुकाराथा।

इससे पहले वर्णन होचुकाहै कि टेस्ट तक्षक और तकारी जातिके इतिहासके सम्बन्धमें बहुतसे शिलालेख राजस्थानके कईस्थानोंमें पायेगयेथे उन शिलालेखोंमें इन तक्षकोंके आचार विचारके सम्बन्धमें जिसप्रकारसे लिखाहै पुराणोंमें लिखी तक्षक जातिके साथ उसका बहुत कुछ मेल पायाजाताहै. भगवान कृष्णद्वैपायन व्यासके लेखसे इसबातका पूरा प्रमाण मिलताहै, कि इन तक्षकोंके द्वारा भारतीय राजाओंकी बहुतही हानि हुईथी, बहुतेरे राजा इनकीक्रूरताके कारण अकालमेंही संसारसे विदा होगये व्यासजीके काव्य ग्रन्थमे जो ऐतिहासिक रत्न छिपे हुएहैं यदि वे प्रकाशित कियेजायँ तो एक नवीन युग उत्पन्नहो. पौरव भूपाल महाराज परीक्षितजी जब क्रूर चरित्रवाले तक्षकके दंशनसे अनन्त धामको पधारे तब उनके पुत्र जन्मेजयने पिताके मारनेवाले दुष्टोंके क्रूराचरणसे दुखी हो उसका फल देनेके लिये जिस महासर्पसत्रका अनुष्ठान कियाथा उसबातको प्रत्येक आर्यसन्तान जानतेहैं, परंतु इस रूपकके परदेमें जो ऐतिहासिक सत्य छिपाहुआहै उसको कितने

एकताही दिखाई देतीहै इन तीनो मतोके पढनेसे विदित होताहै कि १३१में [illegible] होनेपर चौटस्योंके राजाने जो सौरकुलकी किसी स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआथा, पाटनका [illegible] पाया, पर यही पता नही लगता कि उस स्त्रीके स्वामी अथवा पुत्र [illegible] विशेष विचारसे यह सिद्धान्त निकलताहै कि नानाकी मृत्युहोनेसे उनके [illegible] उसका सिहासन प्राप्त कियाथा परन्तु उसके नाबालिग होनेकेकारण उनके [illegible] सभालाथा।

× अबुलगाजी कहताहै कि [illegible] बाट दी उसके पहले दो पुत्र और २ [illegible] [illegible]

लसे अपनी जान बचाई थी। उस दुर्दिनमें भारत वर्षके उस सर्वग्रासी प्रलय कालमें हतभाग्य भारत संतान की घोर अवनतिके साथ, पृथ्वीराजके मुख्य सहायक. यवनगर्वखर्वकारी महावीर चमुण्डरायके वीर दाहिमा कुलका जड मूलसे विनाश होगया। ×

× पृथ्वीराज रिश्तेसे चोयन्द रावके भगिनीपतिथे, महाराज पृथ्वीराजका पुत्र रणजीतसिंह, इस दाहिमवीरकी भगिनीके गर्भसे उत्पन्न हुआथा दाहिम कुमारीके साथ पृथ्वीराजका विवाह वृत्तान्त महाकवि चन्द्रभट्टने अत्यन्त सुन्दरताईसे वर्णन कियाहै। चोयन्दरावको किसीने चान्दराय लिखाहै।

प्रथम खण्ड समाप्त.



"श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम्-यन्त्रालय-बंबई.

में मिश्र और सीरिया राज्योंमें प्रवेश करके इन्होंने वहां बड़ी वीरता दिखाकर बड़ी गड़बड़ मचाडालीथी ।

पुराने तक्षककुलके सम्बन्धमें यहां विशेष बातें लिखनेकी आवश्यकता नहीं है इससे अब हम इसकुलके वर्तमान वंशधरोंके विषयमें लिखतेहैं, भट्टोंके काव्यग्रंथोंमें लिखाहै कि गिल्होटोंका अधिकार होनेसे प्रथम तक्षक कुलका एक राजा चित्तौरके आसनपर आरूढ था, फिर वहांके सिंहासनपर गिल्होटोंका अधिकार होनेसे जिससमय मुसलमानोंने आक्रमण किया उससमय अनेक आर्यराजाओंने अपने देश और स्वजातिके प्रेमसे उत्साहित होकर चित्तौरवालोंकी सहायता की थी, उनसहायक राजाओंके नामके संग असीरगढके राजा * तक्षकराजका नामभी पाया जाताहै, असीरगढमें तक्षकोंने बहुत दिनोंतक राज्य कियाथा चन्दकविने कहाहै कि इसवंशका एक मनुष्य दिल्लीनरेश पृथिवीराजकी सेनाका प्रधान अधिपति बनाया गयाथा × ।

यह प्रथम वर्णन होचुकाहै कि तक्षकवंशके शिहरण नामक राजाने अपना पुरानाधर्म छोड़कर मुसलमानी धर्म स्वीकार कियाथा इस शिहरणके पीछे चौदह राजा गुर्जरके सिंहासन पर अभिषिक्त हुए। फिर जिस दिन वहांके पिछले राजा मुजफ्फरने अपना शरीर त्यागा उसदिनसे तक्षक वंशके विशाल वृक्षकी मूल सदाके लिये उखड़गई ।

जिसमहाबली तक्षक जातिने अपूर्व पराक्रम और गौरव पाकर राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंमें आसन पायाथा,भारतमें आज उसका कहीं कुछ चिह्नभी नहीं दीखपड़ता ।

जित–राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंकी प्राचीन सूचीमें जितोंका नामभी पाया-जाताहै परंतु इसकुलके लोग कहींभी राजपूत नहीं लिखेगये. न किसी राजपूत कुलने इनके साथ विवाहादि सम्बन्ध किया।

जितोंके पुराने इतिहासके सम्बन्धमें पहले बहुतकुछ लिखचुकेहैं इससे यहां उनबातोंकी फिरसे लिखनेकी आवश्यकता नहींहै. महाराज शालिवाहनके समयसे लेकर इस्वी चौदहवीं शताब्दीतक इनका सामाजिक और राजनैतिक व्यवहार समान रहा, पर इसके पीछे इन्होंने अपना प्राचीन धर्म त्यागकर मुसलमानी धर्मग्रहण किया, हरोडोटस कहताहै कि इनसे पहले जितलोग एक. [illegible]

* यह स्थान [illegible] और इस समय [illegible]

× चन्द कविने [illegible]
[illegible] ।

आठ भागोंमें बटेहुये इस विशाल राजस्थानमें मेवाड और जैसलमेर यह दोनों राजही विशेष प्राचीनता और गौरवमें प्रसिद्धहैं जिस दिन भारत भूमिने अपनी स्वाधीनताको खोया उसदिनसे आजतक लगभग आठसो वर्ष बीतगये इस दीर्घकालमें व्यापी हुई पराधीनताके बीचमें कितनेही राजनैतिक हेरफेर होगये। कितनेही विदेशीय और विजातीय भूपालोंने भयंकर गर्व करके भारत संतानके भाग्य चक्रको जलायाहै। और भारतके हृदयके रुधिरको चूसाहै। उनके कठोर शासन दंडके प्रहारसे भारतवर्षके कितनेही राज एक साथ चूर चूर होकर खाक धूलमें मिलगये। बहुतसे राज्य ऐसे होगये कि आज जिनका निशानतकभी कहीं दिखाई नहीं देता, इस दीर्घ समयके बीचमें भारतवर्षके दूसरे जनपदोंकी समान मेवाडराजभी अनेक बार कठोर शत्रुओंके प्रहारसे कितनेही बार चलायमान होगयाहै. कितनेही हिन्दू विद्वेषी आक्रमण कारियोंने इस पर चढाई करके धन रत्न मालखजानेको लूटाहै मेवाडके नगर और गांवोंको तहस नहस करदियाहै। परन्तु इस राज्यका जैसा विस्तार तबथा. वैसाही अबहै, इसमें किसी भांतिकी कमती बढती नहीं हुई एक समय मेवाड अपने महान गौरवके बलसे सम्पूर्ण राजस्थानका शिरमौर होगयाथा, यद्यपि आज समयके हेर फेरसे ऊंचा आसन खोकर नीचेमें आगिराहै. परन्तु इसका विस्तार. इसके मनुष्य अबतक जैसे के तैसेही हैं, जिस समय मेवाड इस प्रकार अपने गौरवसे दीप्तिमान होरहाथा. उससे बहुत समय पहिले जिसदिन वीरपराक्रमकारी महमूदगजनवी सिन्धु नदके "नीलेजल" के पार हो चढाई करके भारत वर्षमें आयाथा उस समयमें मेवाड राज्यका जितना विस्तारथा आज इस आठसो वर्षके पीछे मेवाडकी इस वर्तमान शोचनीय दशामेंभी मेवाडका उतनाही विस्तार देखा जाताहै। जिन प्राचीन ग्रंथोंमें मेवाड राजका ऐतिहासिक वृत्तान्त थोडा बहुत लिखाहुआ है. उन सबमें "जयविलास" "राजरत्नाकर" और "राजविलास" विशेष प्रसिद्ध और विश्वासके योग्यहै इनके सिवाय खुमानरासा मामदेव प्रशस्ति तथा अनेक जैन और भट्टग्रंथोंमें मेवाडका कुछ २ वृत्तान्त देखा जाताहै. इन ग्रंथोंमें अनेक

मरुभूमिनिवासी देहिया और जोहिया नामक राजपूतोंके नगरमें आश्रय लिया, वहां उन्होंने दिरावलकी स्थापना की वहां कुछदिन निवास करनेके पीछे मुसलमानोंसे पीड़ित होकर उनको इसलामधर्म स्वीकार करना पड़ा, मुसलमान होनेपर वे लोग जावद (जाट) कहलाने लगे यदुवंशियोंके प्राचीन भट्टग्रन्थोंमें इन जाटोंके सम्बन्धमें चौवीश शाखाओंका वर्णन पाया जाताहै, इसप्रकार यह जित जाति पंजावमें स्थित होकर वहुत दिनतक अपने अटल प्रतापसे विराजमान रही, महमूदगजनवीकी चढाईका वृत्तान्त पढनेसे इस वृत्तान्तकी सत्यता भली भांतिसे प्रमाणित होतीहै कि जव महमूद सौराष्ट्र (सूरत) का युद्धकर अपने देशको लौटा जाताथा उस समय जितोंने उसे इतना दुखी और तिरस्कृत किया कि ४१६ हिजरी सन् १०२६ में उसने वड़ी सेना लेकर फिर पंजावपर आक्रमण किया, फारसी भाषाके तारीख फरिश्तेमें इस युद्धके विषय में जो कुछ लिखाहै उसका अनुवाद हम यहां प्रकाश करतेहैं ।

" जौद × पर्वत मालाके चरणोंको धोतीहुई जो नदी वहतीहै उसके किनारेपर वसेहुए मुलतानके चारोंओर जो स्थानहैं उनमें जितलोग रहतेथे, महमूदने मुलतानमें आकर देखा कि जितलोगोंकी वासभूमि वड़े २ नद और नदियोंसे घिरीहुई है इससे जलयुद्धके सिवाय और किसीप्रकारके युद्धका सुवीता न जानकर उसने १५०० नावें † वनवाई महमूद इसवातको भी जानताथा कि जितलोग जलयुद्ध करनेमें चतुर होतेहैं इसकारण उसने अपनी नावको निरापद रखनेके निमित्त एक एक नावके शिरेपर लोहेकी छः छः शलाकायें लगवाई एक एक नावपर वीस २ धनुर्धर सिपाही नियत किये और गोली वारूदकी भी वहुत सामग्री एकत्रित की, यह [illegible] करके वह मुलतान में आकर युद्धकी प्रतीक्षा करने लगा. इनओर जितोंने अपने वाल वच्चोंको सिन्धु सागर÷में भेजकर चारसहस्र [किसीके मतमें आठसहस्र] नौका [illegible]

एक शिलालेख पाया गयाहै उसमें लिखाहै कि महाराज [illegible] सेना लेगयेथे ।

× यदुकुलध्वज होनेपर वचेहुए यादव अपने [illegible] तक सिन्धुके दुआवेमें जा रहेथे, इससे उसदेशका नाम यदुवाडु[illegible] ।

† १३०० वर्ष पहले इसीस्थानके निकट सिकन्दरने [illegible] गईथी ।

÷ इतिहासवेत्ता [illegible] [illegible] ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि महाराज कनकसेन लोहकोट × राज्यको छोडकर सौराष्ट्रदेशमें आवसे थे, परन्तु वे किसमार्गसे होकर दक्षिणको गयेथे सो निरूपण करना असम्भव है, कारण कि भट्टग्रंथोंमें इसका कोई वर्णन नहीं पाया जाता। कहतेहैं कि जब वह सौराष्ट्रमें पहुँचे तब वह देश पँवार वंशके किसी राजाके अधिकारमें था। राजा कनकसेन उसपँवार राजाको हराकर उसके सिंहासनपर आप बैठा. और शीघ्रही अपने राजको दृढ करनेमें मन लगाया. तदुपरान्त सन् १४४ ई० में उसने वीरनगरनामक एक नगर बनाया।

कनकसेनसे नीचे चौथीपीढीमें विजयसेन * नामक एक राजा उत्पन्न हुआथा. कहतेहैं कि इस विजयसेनने ही विजयपुरको स्थापित किया था। बहुत लोगोंका यह अनुमानहै कि सौराष्ट्रके उत्तर अंशमें. विजयपुर बसा हुआथा. समयानुसार वह नगर ऊजड होगया उसके खंडहरपर वर्तमान धोलकानगरी स्थापित हुई है. भट्टग्रंथोंमें देखाजाताहै. कि महाराज विजयसेनने वल्लभीपुर और विदर्भ नामक औरभी दो नगरी बसाईथीं। उक्त नगरोंके बीचमें वल्लभीही विशेष प्रसिद्धहै, परन्तु दुःखकी बातहै, कि वल्लभीपुर कहां प्रतिष्ठितहै. इस बातका निरूपण करना कठिनहै, तथापि अनुसन्धान करनेवाले, पुरातत्त्वको जाननेवाले परिव्राजकोंके सूक्ष्म खोजके बलसे यह निश्चय होगया है कि वर्तमान भाव नगरसे पांच कोश उत्तर पश्चिममें वल्लभीनामक जो एक नगरी दिखाई देतीहै, वही प्राचीन वल्लभीपुरका बचाहुआ भागहै।—"शत्रुंजय—माहात्म्य" नामक एक जैनधर्म ग्रंथसे उक्त राज्यकी सत्यता सम्पूर्ण भावसे प्रमाणित होगई है।

बहुतसे लोग यह कहा करतेहैं, कि उक्त वल्लभीपुरसेही मेवाडका राजवंश उत्पन्न हुआहै, यह बात सत्यहै या नहीः इसका निश्चय करनेमें इससे पहिले इनेक लोगोंके अनेक मत देखे गयेथे. परन्तु कुछही काल बीता कि गनाके राज्यसे दूर की ओर एक भग्न शिवालयके खंडहरमेंसे एक शिलालेख निकला। इस लेखमें मेवाड राजकुलका पूर्व वर्णन संक्षेप रीतिसे लिखाहुआहै. अपने जानके अनुसार सम्पूर्ण बातोंका वर्णन करके लिपिकर्ताने अपने प्रगट किये हुए वृत्तान्तकी सत्यता को प्रमाणित करनेके लिये एक स्थानमें लिखाहै. "यह बात सत्यहै या नहीं. इस

प्राचीन भट्टग्रन्थोंसे विदित होताहै कि जिस समय मुसलमानोंनें सबसे पहले चित्तौर पर चढाई कीथी, उससमय उसकी रक्षाके लिये जिनराजाओंने खड्गधारण कियाथा, उनमें हूनोंके राजा उङ्गटसीभी थे इतिहासवेत्ता डिगायनसाहब कहतेहैं कि 'उंगुट, हूनो अथवा मुगलोंकी एक बड़ी समितिका नामहै परन्तु अबुलगाजी इस शब्दका दूसराही अर्थ करताहै वह कहताहै जो तातारों चीन देशकी बड़ी दीवारकी रक्षा करतेथे वे उंगुट नामसे पुकारे जातेथे इन उंगुट लोगोंका एक स्वाधीन राजाथा, जो इनसे बहुत पुरस्कार और सन्मान पाताथा प्रसिद्ध डैन विल साहब कहतेहैं कि हून भारतवर्षके उत्तरीय भागमें निवास करतेथे यदि उनका यह मत ठीक मानलियाजाय तो अवश्यही कहना पड़ैगा कि हूनोंनें भारतवर्षमें क्रमशः प्रवेश करके सौराष्ट्र और मेवाड़में प्रतिष्ठा प्राप्त कीथी।

अतिप्राचीन समयमें चम्बल नदीके किनारे बरोली नाम एक नगरी थी कहतेहैं कि सबसे पहले हून लोगोंनें इस नगरीमेंही अपना पड़ाव डालाथा. यहां यह जाति थोड़े समयमें ही विशेष प्रतिष्ठाको प्राप्तहुई और इसी स्थानमें अपने गौरव और सम्पत्तिका चिह्न रखनेके निमित्त कईएक अटा अटारियें बनवाई इससमय उस स्थानपर भिनूसरोर बसाहुआहै कहतेहैं वहां हूनोंनें एक विशाल और रमणीक सेनगढचोरीनामक आनन्दभवन बनवायाथा।

गुजरातके इतिहासमें इनलोगोंके लिये जो कुछ लिखाहै उससे निश्चय होताहै कि हून लोग बारहवीं शताब्दीमें विशेष प्रतिष्ठित हुयेथे, इससमय यद्यपि वह इस प्रतिष्ठा और गौरवसे हीन होरहेहैं तोभी विशेष जाच करनेसे ज्ञात होजायगा कि उनके पूर्व गौरवके दो चार चिह्न अबतक सौराष्ट्र देशके स्थान स्थानमें दिखाई देतेहैं, एक समय जिन भयंकर पराक्रमी हूनजातिको प्रचण्ड पदाघातसे सम्पूर्ण एसिया और यूरूपखण्ड कम्पायमान हुआथा, सैकड़ों नगर कसबे और ग्राम जिनकी भयंकर वीर्याग्निसे भस्म होगयेथे आज यूरूप और एशियाके भिन्न २ स्थानोंमें उनका बहुत थोडा चिह्न दिखाई देताहै.

कात्तियो (काटियों)के सम्बन्धमें पहले बहुतकुछ कहा जा चुकाहै इस समय इनके आचार विचार और रीति नीतिके विषयमें [illegible] भी कुछ कहना-

इस बातका निरूपण करना कठिनहै कि कौनसी म्लेच्छ जातिने वल्लभीपुरको विध्वंश कियाथा। अवश्य यह लोग पौराणिक शाकद्वीपसे जन्मे हुए होंगे। परन्तु कोई इतिहास वेत्ता निश्चय नहीं करसका कि यह लोग कौन जातिके थे। प्राचीन इतिहासोंके देखनेसे ज्ञात होताहै ईसवीकी दूसरी शताब्दीमें सिन्धुनदके किनारेपर बसे हुए श्यामनगरमें थोडेसे पारदलोग रहते थे, ज्ञात होताहै कि उन्होंनेही वल्लभीपुरपर चढाई कीथी, कहतेहैं कि प्राचीन यादवलोगोंने इस श्यामनगरमें बहुत दिनोंतक राज कियाथा! पंडित एरियनने श्यामनगरको मीनगढ * और अरबके भूगोलवालोंने मनकर नामसे लिखाहै।

सिन्धुनदके किनारेजिस विशाल देशमें पारदगण निवास करतेथे वह अबतक अनेक विदेशी आक्रमण करनेवालोंके निमित्त द्वारकी भांति खुलकर रहाथा। उस खुले हुए द्वारमें प्रवेश करके अनेक जातियोंने पवित्र भारत भूमिमें आकर भारतको

उसेही पसन्द करते हैं, जिससमय अच्छे घोड़ेपर सवार हो हाथमें त्रिशूल लिये काठीवीर पथिकोंसे पथकर ग्रहण करने लगते हैं उससमय उनके आनंदकी सीमा नहीं रहती ।

वल्ल—क्या नवीन और क्या प्राचीन सभी भट्टग्रन्थोंमें छत्तीसराजकुलके आसन पर वल्लजाति विराजमान है भट्टलोगोंने इनको 'ठट्टमुलतानके राव, इसनामसे पुकाराहै, इससे निश्चय होताहै कि यह लोग सिन्धुनदके किनारे रहते थे वल्लगण अपनेको सूर्यवंशी कहते हैं और अपनी जातिका परिचय दृढ करनेके निमित्त यह कहाकरते हैं कि रामचंद्रजीके पुत्र लवके वंशमें वल्ला अथवा वप्पा नामक एक वीरने जन्म लिया था, वही हमारा गोत्रपति हुआ । वल्लगण सौराष्ट्र देशमें आयकर प्राचीन धंक नगरमें स्थित हुएथे । प्राचीनकालमें इस धंकनगरका नाम मंगीपाटन था । कुछदिनोंके पीछेही इनलोगोंने उक्तनगरके चारोंओरके देशोंको जीत लिया । यही कारण है जो उस देशका नाम वल्लक्षेत्र हुआ ।

वल्लोगोंके एक और दलका विवरण पायाजाता है, वे लोग अपनी उत्पत्ति चंद्रवंशसे बतातेहैं । वह कहतेहैं कि सिन्धुनदके किनारे बसे हुए आरोरनगरमें वाह्लिकराजालोग रहतेथे । वेही हमारे पूर्वपुरुषहैं, अतएव इससमय वह मीमांसा करनी बड़ी कठिनहै कि वल्लवंशकी उत्पत्ति किससे हुई ? सन्ईसवीकी तेरहवीं सदीमें वल्ललोग विशेष बढ़गयेथे । इससमय वह कभी २ मेवाड़में छापा मार जातेथे । कहतेहैं, कि इसकारणसे गहिलोत वीर हमीरने इन लोगोंको पराजित करके इनके राजाको वध कियाथा ।

झालामकवाहन । झालाकुलको राजपूत कहते हैं, परन्तु चंद्र सूर्य और अग्निकुलमें इनका कोई वृत्तान्त नहीं पाया जाता । ऐसा ज्ञान होताहै कि यह लोग भारतके उत्तरदेशसे सूरतदेशमें चले आयेथे ।

केवल एक कार्यके होजानेसे झालाकुल भारतवर्षमें विशेष प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित होगयाथा । वह कार्य असाधारण हुआ. वह कार्य विस्मयकर वीरता और अमानुषिक आत्मत्यागका मानो दूसरा नाम था । जिस दिन वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंह दिल्लीश्वर अकबर की भयंकर सेनासे घिरगये उस दिन एक झालावंशीय वीर पुरुषने अपने जीवनकी आहुति देकर उनके प्राणको बचायाथा । इस अपूर्व प्राणोत्सर्ग और वीराचरण करनेके लियेही झाला वंशवाले उस दिनसेही राजपूतोंमें विशेष सन्मानको प्राप्तहुए । किसी इतिहासमेंभी झालाकुलका पूर्वतन वृत्तान्त नहीं पाया जाता और इस विषयकाभी कोई वृत्तान्त नहीं ज्ञात होता

उसको बीजमंत्रकी शिक्षा दीथी। एक दिन सुभगाने असावधानीसे उस मंत्रका उच्चारण करलिया. तब भगवान् दिवाकरने प्रगट होकर उसको आलिंगन किया और तत्कालही अन्तर्द्धान होगये; थोड़े दिनोंमेंही सुभगाको गर्भके लक्षण जानपड़े, तब देवादित्य मनहीमनमें अत्यन्त व्याकुल हुआ परन्तु जब योगबलसे इसके मूल कारणको जाना, तब उसका खेद और समस्त व्याकुलता जाती रही। परन्तु सुभगाको अपने घरमें न रखकर एक दासीके साथ वल्लभीपुरमें भेजदिया। इस नगरीमें आय सुभगाके एक पुत्र और साथही एक कन्या उत्पन्न हुई। बड़ा होनेपर सुभगाका पुत्र विद्यालयमें भेजा गया. उसके इष्ट मित्रगण गूढ़ जन्म वृत्तान्तको जानकर उसे गैबी (गुप्त) नामसे पुकार कर उसपै अनेक अत्याचार किया करतेथे. इन अत्याचारोंसे "गैबी" का हृदय अत्यन्त दुःखित होने लगा, शयन, स्वप्न, या भोजनके समयभी वह किसी प्रकारसे सुखी नहीं होताथा. मनमें महाचिन्ता रहती, भांति २ का संदेह होता, सहपाठी लड़के पिताका नाम पूंछते तब निरुत्तर होजाता यह क्या कुछ कम दुःखकी बात है ? जो पिता जगतमें लाया, उसी पिताको नहीं जान सका कि कौन है ? एक बार उसको देखातक नहीं, कभी भी पिता कहकर पुकारा नहीं ? यह पीड़ा उस बालकके हृदयमें अत्यन्त कसकने लगी। अल्प कालमेंही बालकका कोमल हृदय चिन्तारूपी विषके कारण जर्जर होने लगा "गैबी" सहपाठी लड़के पिताका नाम पूछ कर उसे बहुतही जलाया करते. सबके दुःखको मनमेंही छिपाकर वह रोता हुआ घरको चलाआता. और अपनी मातासे सब वृत्तान्त कहकर पिताका नाम पूछा करता, परन्तु सुभगा कोई उत्तर न देती. पुत्रको गोदीमें लेकर अनेक प्रकारसे समझाया बुझाया करती. इस प्रकारसे कुछ काल व्यतीत होगया. क्रमसे बालकको ज्ञान होगया ज्ञानोदयके साथही उसका हृदय अत्यन्तही दुःखित हुआ।

एक समय "गैबी" सहपाठियोंके अत्याचारसे अत्यन्त दुःखित होनेसे, भरे सिंहकी समान अपनी माताके निकट जा पहुंचा. और कहा आजातेरे कहा कि यदि मेरे पिताका नाम न बतावेगी तो इसी समय मेरा प्राण संहार कर डालूंगा, "गैबी" के इस उग्रवचन वाक्यके पूर्ण होनेसे पहिले सूर्य भगवान उसके सामने प्रगट हुए और सब वृत्तान्त कहा. फिर एक पत्थरका टुकड़ा "गैबी" के हाथमें देकर बोले इस पत्थरके टुकड़ेको हाथमें लेकर तुम जिसको छूओगे वही तत्काल गिर जायगा "गैबी" ने इस पत्थरके टुकड़ेसे [illegible]

लोप होगई। आज उन लोगोंके वर्तमान वंश धरगण उस पहले गौरवकी यादको भूल कर बनजव्योपारमें लगे हुए किसी प्रकार सुख दुःखसे अपने दिन काट रहे हैं।

सबसे पहले यह गोहिललोग लूनी नदीके किनारे बसे हुऐ जूनाक्षीरनामक देशमें स्थित हुए थे।

परन्तु इसका निरूपण करना जरा कठिनहै, कि यहलोग किस समय और कहांसे यहां आनकर बसेथे कहतेहैं कि खिरवानामक एक भीलराजाका संहार करके गोहिल लोगोंके पूर्वपुरुषोंने इसदेशको अपने अधिकारमें कियाथा।

उक्त क्षीरगढके सिंहासनपर गोहिल लोगोंने वीस पीढीतक राज कियाथा तदोपरान्त बारहवीं शताब्दीके शेषभागमें दुर्द्धर्षराठौर वीरोंनें बढकर इन लोगोंको उसदेशसे निकाल दिया इसके पश्चात् गोहिल लोगोंनें सूरतदेशके अन्तर्गत परमगढ़नामक स्थानमें कुछ कालतक राज किया। परन्तु इनकी मन्द भाग्यतासे यह नगर थोडेही दिनोंमें विध्वंस होगया तब इनलोगोंके दो दल होगये, और दोनोंनें पृथक् २ स्थानोंमें आसरा लिया एक दल बगवानाम जनपदमें जाकर वहांके राजाकी रक्षामें रहा। दूसरेने शिहोरमें जाकर उसके निकट भावनगर और गोगोकी स्थापना किया। यह भावनगर सिंही उपसागरके किनारेपर स्थापित है गोहिल लोग आजकल यहींपर रहतेहैं। गोहिल लोगोंके नामानुसार सौराष्ट्र उपद्वीपका पूर्वभाग गोहिलवाड कहलाताहै। सारव्य व सारियास्थ। इनकी ख्याति वा प्रतिष्ठाका कोई वृत्तान्तभी भारतवर्षमें नहीं पाया जाता आजके लोगों की गप्पों और कहावतोंसेही इनकी पूर्वप्रसिद्धि और पूर्व प्रतिष्ठा जान होतीहै। भट्टकविकुलके कुलाख्यान ग्रन्थोंमें सारव्यगण "सत्रियसार" के नामसे पुकारे गयेहैं, परन्तु शोककी बातहै कि इनकी सारताका कोई उदाहरणभी किसी ग्रंथमें नही पाया जाता।

सिलार वा सुलार—सारव्य लोगोंकी समान इन सिलार लोगोंका केवल नामही आज कालके विशाल समाधिक्षेत्रमें शेष रह गयाहै। आजकल नामही उनके पहले जीवनकी गुप्त और पिछली परछांईहै और यही उनके जीवनका पिछला चिह्नहै।

विलायतके टोलिमी (Ptolemy) और दूसरे प्राचीन इतिहासकार सौराष्ट्र प्रदेशको लारिक नामसे पुकारतेहैं। बहुतोंका अनुमान है कि इस लारिक [illegible] इस सुलारसे उत्पन्नहुआहै एक समय इन सुलार जातिके सौराष्ट्र प्रदेशमें [illegible] प्रति-

अंतिम साहसपर भरोसा रखकर अपनी सेनाके साथ भयंकर शत्रुओंका सामना किया. परन्तु उनके प्रचंड विक्रमको न सहकर सेनासहित समरशायी हुए उसदिन महाराजकी शोचनीय मृत्युके साथ २ वल्लभीपुरसे उनका वंश वृक्षभी जडसे उखडगया ॥ -

---

यह अनुमानहै कि बुन्देल शब्दसेही बुन्देलखण्ड नाम रक्खा गयाहै। समयके अनुसार यह बुन्देला नामही घरवालनामके बदले प्रसिद्ध होगया कालिंजर मोहिनी महोवा इसके प्रसिद्ध नगरहैं।

ईसवीकी बारहवीं शताब्दीमें मानवीरनामक एक वीरपुरुष इस बुन्देला कुलमें उत्पन्न हुआ इस मानसेही इन लोगोंके गौरवका आरम्भ हुआ। मान वीरसे पीछे तेरहवीं पीढ़ीमें मधुकरशाहनामक एक महापराक्रमी राजा उत्पन्न हुआ। इसने प्रसिद्ध उरछा राज्यको स्थापित किया। बादशाही राज्यसे लेकर बुन्देला लोगोंकी वीरता विशेषतासे देखी जातीहै। मुगल बादशाहकी अनुकूलताकेलिये इन लोगोंनें एक समय जिस असीमवीरता और प्रभुभक्तिको प्रकाशित कियाथा उसका वृत्तान्त अकबरशाहेजहाँ व औरंगजेबके जीवनचरित्रमें चमकीले अक्षरोंसे लिखाहुआहै।

वीरगूजर–भट्टगण इन लोगोंको सूर्यवंशीय कहतेहैं। गहिलोतोंकीनाई यह लोगभी अपनी उत्पत्ति श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र लवसे बतातेहैं। एकसमय वीरगूजरने धुन्दर देश * में अत्यन्त प्रतिष्ठा पाईथी, मछेरीका प्रसिद्ध पहाड़ी दुर्ग राजोर × बहुत कालतक इनकी राजधानी रहीथी, राजगढ और अलवाभी इनके अधिकारमेंथे परन्तु कुशावहोंने इनको उन स्थानोंसे निकालकर वहां अपना आधिपत्य जमाया।

सेंगर–इनका कोई विशेष वृत्तान्त नही पाया जाता और यहभी नही जाना जाता कि इन्होंने कभी गौरव वा प्रतिष्ठा प्राप्त कीथी वा नही यमुनाके किनारे पर जो जगमोहनपुर बसाहुआहै, वही इनके गौरव कीर्तिकी साक्षी देरहाहै।

सीकरवाल–सेंगरोंकी भांति इसकुलनेभी कभी राजस्थानके राजकुलमें प्रतिष्ठा वा प्रसिद्धि नहीं पाई, चम्बल नदीके किनारे चतुर्वेदीके समीप इनलोगोंने सीकरवार नाम एक नगर स्थापित किया था वह इस समय ग्वालियर राज्यके आधीनहै।

वाईस या वैस–इसकुलनेभी राजस्थानके छत्तीस राजकुलोंमें स्थान प्राप्त किया परन्तु चन्दवरदाई और कुमारपालचरित्रमें इनका वर्णन नहीं पायाजाता.इन-

* जयपुर और म(दे) छारी. प्राचीन धुन्दर [illegible]।

× वर्तमान राजगढसे आठकोश पश्चिमकीओर [illegible] दिखाई देताहै, इसमें भगवान नीलकंठका एक पुराना मन्दिर [illegible] लिपियोंसे भराहुआहै।

आशा भरोसा जातारहा: शोकके वेगके न सह सकनेके कारण रानी वहींपर मूर्च्छित होगई । अभागिनी पुष्पवतीने आशाकीथी कि राजमाता होजाऊंगी, परन्तु वह आशा सफल होकरभी पूरी न हुई ।

क्या यह साधारण दुखकी बातहै ! साथकी सखियोंने भली भांतिसे यत्न-किया; सावधान होकर रानी बारंबार विलाप करती हुई, अपने भागको धिक्कार देने लगी । आशाके फलवती होनेका रानीको कुछ दुःख न था, दुःख तो केवल यहीथा; कि जिनके सहारेसे जीवितथी, निठुर कालने उसी प्राणप्यारे वीर शिलादित्यको अपने गालमें रखलिया, रानीपर यही गाज काम करगई, यदि गर्भवती न होती तो तत्कालही सती होकर स्वामीके पास पहुंच जाती। परन्तु क्या करे ? बिचारी निरुपाय रही इसकारण संतान होनेके समयतक जीवन धारण करनेकेलिये मलियानामक शैलमालाकी एक गुफामें जा रही । वहां समयको पारकर एक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

उस मलिया शैलमालाके निकटही वीरनगरनामक एक साधारण बस्तीमें कमलावतीनामक ब्राह्मणी रहती थी, रानी पुष्पवतीने उस ब्राह्मण कुमारीके हाथमें अपने बालक कुमारको समर्पण कर स्वामीका अनुगमन करनेकेलिये चिताकी दहकती हुई आगमें प्रसन्नतासे प्रवेशकिया और पतिके साथ अनन्त धाममें पहुँचगई। जिस दिन सती होनेको थी, उस दिन सबेरे ही कमलावतीके चरण धारणकर विनयपूर्वक कहा हे देवि ! अपने हृदयके धन प्राणप्यारे कुमारको तुम्हारे हाथमें सौंपतीहूं, अब तुमही इसकी माता हो, देखो, इसको अपना पुत्र समझकर ही लालन पालन कीजियो, तथा एक प्रार्थना यह भी है, कि कुमारको ब्राह्मणोचितशिक्षा देकर समयानुसार पर राजपूत कन्याके साथ विवाह भी कर दीजियो ।

ठीक और प्रमाणिक इतिहास अबतक नहीं लिखागया, मुसलमान लोगोंने जब सबसे पहिले चित्तौरको घेरा, उस समय जो राजालोग चित्तौरनाथकी सहायता करनेके लिये संग्राम भूमिमें गयेथे, उनके बीचमें देवलके राजा दाहिरका नामभी देखा जाताहै। सिंधुदेश इनके अधिकारमें था, अब्बुलफजलने जिस देवलपति राजाकी शोचनीय मृत्युका वृत्तान्त लिखा है, वह इसी दाहिर कुलमें उत्पन्न हुआथा।

दाहिमा—एक समय इस राजकुलने बडी प्रतिष्ठा और सामर्थ्य पाईथी। इस जातिके वीर चरित्र राजाओंके प्रकाशमान गौरवसे समस्त राजपूत कुल गौरवमान हुएथे, परन्तु अत्युन्नत कालसागरके प्रचंड प्रवाहमें गिरकर न जाने वह सामर्थ्य, वह प्रतिष्ठा वह गौरव गरिमा कहांको विलागई? सो नहीं कहसकते, वियाना नामक प्रसिद्ध पहाडी किला इनके अधिकारमें था, और चौहान वीर पृथ्वीराजके अधीनमें यह लोग सामन्त राजा होकर रहतेथे। उस सामन्तभावके समयमें इन लोगोंने एक समय जिस प्रचंड वीरताको प्रकाशित कियाथा, उसका प्रत्यक्ष वर्णन महाकवि चंदभट्टके महाकाव्यमें स्पष्ट लिखा हुआहै। दिल्लीश्वर पृथ्वीराजके समयमें इस वीरवंशके तीन वीर भ्राता महाराजके अधीनमें तीन ऊँचे पदोंपर नियुक्तथे। इन तीनों भाइयोंका नाम कैमास पुण्डीर और चोयन्दराय था, बडा भाई कैमास महाराज पृथ्वीराजका एक प्रधान मंत्रीथा, वह जब तक इस पदपर आरूढ रहा तबतक चौहान राजका जीवन चरित्र दमकीले प्रकाशसे चमक रहाथा, दूसरा पुण्डीर भारतके सन्मुख भाग लाहौरकी रक्षा करनेके लिये विराजमान था, तीसरा चोयन्दराय पृथ्वीराजका प्रधान सेनापति हुआ। कग्गर नदीके किनारे घोर कठोर संग्राममें जिसदिन भारत वर्षका गौरव रवि अस्ताचलचूडावलम्बी हुआ. उसदिन दाहिम वीर चोयन्दरायने जिस अद्भुत वीरताको प्रकाश किया था, उसके प्रकाशित वर्णन महाकाव्य चंदाई ग्रंथमें अच्छी-भांतिसे लिखाहै, वरन शहाबुद्दीनके समयमें जो मुसल्मान इतिहासकार थे. उन्होंने दाहिम वीरकी उस विस्मयकर वीरताको स्वीकार करके अपने इतिहास ग्रंथोंमें लिखाहै कि 'मजकूर खांडेराओकी* खौफनाक तलवारसे शहाबुद्दीनने बडी मुसीब-

* मुसल्मानोंने चोयन्दरायको खांडेराओ लिखाहै।

अपने पुत्रोंको न देकर अपनी इच्छा और प्रसन्नतासे अपना सिंहासन उसको दिया. कुमारने उसही भीलराजका प्राण संहार किया । इस बातका निश्चय करना कठिन जान पड़ताहै कि किस कारणसे राजकुमारने ऐसा कठोर काम किया था अब्वुलफजल और भट्टगणभी इसमें कोई कारण नहीं बताते गोहका नाम उसके वंशधरोंका गोत्र होगया । गोहके वंशधर उसही दिनसे 'गहिलोत या "गिह्लोट" नामसे पुकारे जाने लगे ।

इन प्राचीन राजालोगोंके जीवनचरित्रके बारेमें थोडा ही सा वृत्तान्त पाया जाता है उस थोड़ेहीसे वृत्तान्तमें यह प्रतीति होता है कि गोहसे नीचे आठवीं पीढीतक उस गिरिकानन पूर्ण इडुर देशमें गहिलोतोंका राज रहा । आठ पीढी तक बराबर स्वाधीनता प्रिय भील लोगोंने राजपूतोंके चरणोंमें अपने स्वाधीनता रत्नको बेचकर सुख दुःखसे विजातीय पराधीनताको सहन कियाथाः परन्तु वे सदासे स्वाधीनताके चाहनेवाले थेः स्वाधीन जीवन सदासे उनको प्यारा था । उनके पितृ पुरुषगण उस स्वाधीन जीवनको भोग करके यथार्थ स्वर्गसुखको भोगकर गये हैं । आज किस पापका उदय होनेसे वे उस सुखसे हटाये जाकर पराधीनताकी जंजीरको पहर रहेहैं ? अधिक क्या कहें आगेको भील-गण न सह सके। गोहसे नीचे आठवीं पीढीमें नागादित्यनामक एक राजा उत्पन्न हुआ । एक समय वह राजा शिकारके लिये वनमें जाकर हरिनके पीछे पड़ा. उसीसमयमें भीललोगोंने प्रचंड विक्रमके साथ राजाको घेर लिया और उसका संहार करके अपने ईडुर राज्यपर अधिकार किया ।

जिस दिन अभागे नागादित्तने भीलोंके हाथसे प्राण खोये उसही दिन उसके परिवारमें हाहाकार पड़गया ।—विपदकी विकट मूर्ति सबको ही ...
दिखाने लगी ! चारोंओर भील्ही भील हैं:—कहा भागकर जाय, कौनसे, उन्मत्त हुए उन भील लोगोंकी क्रोधाग्निसे कौन राज परिवारकी रक्षा करे, कदाचित ग्रहादित्यका वंश उस समय निर्मूल हुआ ... इस भांतिसे राजपुत्र, अत्यन्तही व्याकुल हुए. चिन्ता बारम्बार उनको सताने लगी । उस समय नागादित्यके बप्पा नामक एक तीन वर्षका पुत्र था. उस पुत्रके ... परिवारको और भी अधिक चिन्ता हुई परन्तु भगवान उस अनाथ राजकुमारके सहाय थेः नागरवर्णोंकी अपार करुणाके बलसे शीघ्रही बालकके ... गयी । वीर नगरकी कमलावती कमलावतीने जिस प्रकार ... बनाया था. उसी कमलावतीके वंशवालोंने, ... समय ... [illegible]

दूसरा खण्ड।

मेवाड।

प्रथम अध्याय १.

विषय.

राजस्थान विभाग, प्रमाणके लिये अनेक सद्ग्रंथ और शिलालेखोंका वर्णन, कनकसेन, सौराष्ट्र देशमें कनकसेनका प्रवेश, वहां उपनिवेशका स्थापन करना वल्लभीपुर, शिलादित्य, म्लेच्छोंकी वल्लभीपुर पर चढाई वल्लभीपुरका ध्वंस होना।



आर्यवीर राजपूत जातिकी वंशावली और उत्पत्तिके सम्बंधमें यथाशक्ति अनुसंधान करके इससमय राजस्थान देशका इतिहास लिखनेकी चेष्टा की जातीहै।

विशाल राजवाडा आठभागोंमें बटा हुआ है जिस क्रमसे टाडसाहबने यहविवरण लिखाहै उसीका यथार्थ अनुवाद करके यहां समस्त वर्णन लिखा जायगा।

पहला मेवाड वा उदयपुर।
दूसरा मारवाड वा जोधपुर।
तीसरा बीकानेर व किशनगढ।
चौथा कोटा। } हारावती।
पांचवां बूंदी। }
छठा आमेर वा जयपुर।
सातवां जैसलमेर।
आठवां भारतवर्षकी मरुभूमि।

इन शान्त और गंभीर वनस्थलियोंमें वृन्दावन भगवान् महादेवजीकी पूजा-विधि बहुत समयसे चली आती है। यद्यपि आज वर्तमान मेवाड़राज्यकी शोच-नीय अवस्थामें उनकी पूजाका आडम्बर बहुत कम होगयाहै. तथापि शिवरा-त्र्यादि विशेष उत्सवोंमें उदयपुरकी शिवपूजा देखने योग्य होतीहै: यहांतक कि भिन्न धर्मावलम्बी जैन और वैष्णवलोगभी उन उत्सवोंमें बड़े हर्ष और चावसे मिलतेहैं। आजतक मेवाड़के राजालोग अपनेको " एक लिङ्गका दीवान " कह कर गौरवके साथ परिचित करतेहैं। गंगा यमुनाकी तीरवाली बस्तियोंमें यदि अनेक देवी देवताओंकी उपासनाका प्रचार न होता, तो कदाचित् शिवपूजा अबतक पूर्ण प्रतापसे होती रहती। गहिलोत कुलके सर्वश्रेष्ठ प्रधान उपास्य-देवता भगवान् एकलिंग आजतक अखंड प्रतापसे अपनी पूजाको भोग करते

मत भिन्न २ पाये जातेहैं, परन्तु भलीभांतिसे विचार करलेनेपर उन पृथक २ पुस्तकोंसे एक अभिन्न ऐतिहासिक सत्य प्रगट होसकताहै, हम ऐसे सत्यकी सहायतासेही मेवाडका इतिहास तैयार करनेको तत्पर हुएहैं।

पहले कहआयेहैं कि राजस्थानके भट्टकविगण महाराज कनकसेनकोही मेवाडका बसानेवाला कहते हैं। उनका मतहै कि कनकसेन भारतवर्षके किसी उत्तर देश (संभवहै कि लोहकोट) में वास करते थे समयके फेरसे उसदेशको छोड सम्वत् २०० (सन् १४४ ईस्वी) में सौराष्ट्रके राज्यमें आये। भट्टलोगोंका यह मत जयपुराधीश महाराज जयसिंहने मानलिया है। पंडितवर जयसिंहने अपने बनाये इतिहासमें इसमतकी पोषकता करके सूर्यवंशके साथ राजवंशकी समानता सिद्ध कीहै *

---

* महात्मा टाडसाहबको मेवाडका इतिहास बनानेमे जिनग्रंथोसे सहायता मिलीथी उनके नाम अभी लिखचुके हैं। अब नीचे इसविषयको अधिकतासे लिखते हैं, जिससे ज्ञातहोगा कि टाडसाहबको इसग्रंथके बनानेमे कितना परिश्रम पडाहै।

उदयपुरकी राजसभामे गमन करनेसे अनेक वर्ष पहिले भट्टलोगोंके पाससे टाडसाहबको मेवाडके राजाओंकी वंशपत्रिकाके कई खर्रे मिले व औरभी कईएक वंशपत्रिका मिलीं राणाकी सम्मतिसे उनके पुस्तकालयके पुराने खर्रे पढे तथा प्रयोजन समझकर विशेष २ ग्रंथोंकी नकल कीथी। उनमेसे कई एक ग्रंथोकी सूची दी जातीहै।

(१) खुमानरायसा—यद्यपि यह ग्रंथ कुछेक आधुनिकहै, तथापि सबमे अधिक प्रसिद्ध और प्रयोजनीयहै, श्रीरामचन्द्रजीसे लेकर इसके बनानेतक सूर्यवंशी राजाओंका क्रमानुसार वर्णन इसमे लिखा हुआहै।

(२) राज विलास।—मानकुवेश्वरके द्वारा यह सम्पूर्ण ग्रंथ व्रजभाषामे लिखा गयाहै।

(३) राज रत्नाकर।—सदाशिवभट्टरचित। इन दोनो ग्रंथ [illegible] समयमे बनाए गये।

(४) जय विलास।—राजसिंहके पुत्र राणा जयसिंहके समयमे यह [illegible] राजाओंकी बहादुरी और संग्रामके पूर्व समयकी बातोको [illegible] करके इस ग्रंथकी [illegible] गईहै।

(५) मानदेव परिशिष्ट कमलमीरके देवमन्दिरमे जो शिलालेख [illegible] उन्हीसे संग्रह किया हुआ ग्रंथहै।

(६) [illegible] ।—(जैनग्रंथहै)।

ऊपरके ग्रंथ हस्त लिखित हैं इनके सिवाय [illegible] शिलालिपियों ताम्रपत्रों जैनग्रंथों, [illegible] अनेक [illegible] ग्रंथोंसे मेवाडका ऐतिहासिक [illegible] किया।

सोचा कि साधारण वार्ताके प्रकाशित होनेसेभी विपत्तिमें पडूंगा। इस कारण अपने सखा गोपलोगोंको विशेष सावधान करदिया। गोपलोग बप्पाकी जैसी भक्ति करतेथे. और बप्पा कुमारकी जैसी प्रभुता उनपरथी. इसको देख सुनकर इसवृत्तान्तके प्रकाशित होने की कुछभी सम्भावना नहीं थी। तथापि कुमारने एक कठोर प्रतिज्ञासे उनको बांधलिया। उसप्रतिज्ञाका विवरण नीचे लिखा जाता है। एक छोटासा गढा खोदकर अपने हाथमें एक पत्थरका टुकड़ा उठाय बप्पाने धीर गंभीर स्वरसे कहा "शपथ करो. सुख. दुःख. सम्पद. विपदमें मेरे साथी रहोगे. प्राण जानेपरभी मेरी कोई बात किसीसे न कहोगे, दूसरोंकी सब मुझसे कहोगे। कहो–शपथ करो। यदि ऐसा न कर सकोगे तो तुम्हारे पितृ पुरुषोंके सत्कर्म समूह इस पत्थरकी समान धोबीके गढेमें गिरेंगे ×" कुमारने यह कहकर उस पत्थरकेटुकड़ेको गढेमें डालदिया। समस्त गोपने तत्कालही एकमत होकर वह शपथकी. उन्होंने कभी अपनी शपथको मिथ्या नहीं किया। परन्तु जिस गूढ बातके ऊपर कमसे कम छः सौ राजपूत बालाओंके भाग्यकी गांठ लगीथी वह कबतक छिपा रहेगा? इसकारण थोड़ेही दिन पीछे इसबातका समस्त भेद सोलंकीराजको मालूम होगया, उनको निश्चय होगया कि यह सारी करतूत कुमार बप्पाकी है।

इसओर कुमारके साथियोंने इस बातको सुनकर सारा वृत्तान्त उससे कह सुनाया, कुमारने सुनकर समझा कि इससे मुझपर विपत्ति आनेकाहै ऐसा विचार कर पर्वतमालाके एक गुप्त स्थानमें जारहे। वह गुप्तस्थान अत्यन्त निर्जन था। कुमारके वंशधरगण अनेक बार वहां आनकर छिपेथे। भागनेके समय बालीय और देवनामक भीलोंके दो लडके उसके साथ गये. बालीय उन्द्रीका रहनेवाला और देव अगुनपानोर नामक भीलोंकी बस्तीका रहनेवाला था. उन दोनों भीलकुमारोंने दुःख सुख. सम्पद विपद तो क्या संकट समयमेंभी आगमरनेके लिये भी कुमारको अकेला नहीं छोड़ा उनका जीवन बप्पाकुमारके साथ जुड़ा हुआ था। जब भाग्य लक्ष्मीकी प्रसन्नतासे कुमारबप्पाने चित्तौरके सिंहासनपर आरोहण किया. उससमय बालीय और देवने अपने लोहुसे ... कुमारके माथेपर राजतिलक लगाया।

की प्रकाशित साक्षी वल्लभीकी दीवारें हैं" इसके अतिरिक्त राणा राज्यसिंहके समयकी बातोंका अवलम्बन करके जो एक ग्रंथ बनाया गयाहै उसकी अवतरणिकामेंही लिखा है कि "पश्चिममे सौराष्ट्रनामक एक देश प्रसिद्धहै। म्लेच्छोंने उसपर चढाई करके बालकनाथोंको जीत लियाथा. जिससमय वल्लभीपुरका यह नाश हुआ था उससमय बालकनाथराजकी बेटीके सिवाय और सब मारे गएथे" और एक कुलाख्यान ग्रंथमें देखाजाताहै, कि वल्लभीपुरके विध्वंस होनेपर तहांके रहनेवाले मरुदेशमें (मारवाड़में) भागे और वहां वल्ली संदेरी और नादोलनामक तीन नगर बसाये यह तीन नगर अबतक एकही भावसे प्रसिद्ध होरहे हैं, छठी ईस्वी शताब्दीके आरंभमें जिसदिन म्लेच्छोंने। वल्लभीपुरको विध्वंश कियाथा, उस दिन वहां पर जैन धर्मका प्रचार था और आज उन्नीसवी शताब्दीके पिछले भागमेंभी वह प्राचीन जैनधर्म वहांपर उसी प्रकारसे चलताहुआ दिखाई देताहै इन तीन नगरोंके सिवाय बहुतसे खरोंमें और एक नगरका नामभी पाया जाताहै उसका नाम गायिनी[1] है। कह तेहैं कि वल्लभीपुराधीश महाराजा शिलादित्यका परिवार सौराष्ट्रसे भाग कर इस गायिनी नगरमें पिछली बार जा रहाथा। भट्टलोगोंके और एक काव्यग्रंथकी सूचनामें लिखाहै कि "म्लेच्छ लोगोंने महाराज शिलादित्यके गायिनी नगरको जीता उस नगरकी रक्षा करनेमें महाराजके सहकारी प्रधान २ वीरगण समर भूमिमें गिर गये: वंश निर्मूल होगया. केवल उनका नाममात्र शेष रहगया।"

---

[1] गायनि वा गजनि। यह वर्तमान कान्वेका प्राचीन नामहै, [illegible] दक्षिणमे इसका खडहर अबतक दिखाई देताहै, भट्ट ग्रंथोंमे इस प्रकार [illegible] इस नगरोंका नाम पाया जाताहै. इन नगरोंका वर्णन [illegible] बालक रायगण भारतके दक्षिण देशमें राज करतेथे. भट्ट [illegible] नाम देवगट प्राचीन कालमें निलिविलपुर कहनके [illegible] मेवाट [illegible] पूर्व [illegible] राज करतेथे। [illegible] यथार्थ [illegible]

सम्पूर्ण भारत वर्षमें केवल अगुण पानोरके रहनेवालेही एक प्रकारकी स्वाभाविक स्वतन्त्रताको भोगतेहैं। यह स्वतन्त्रता और किसीराजाके अधीनमें नहीं है; और किसी राजाके साथ यह अपना संबंध नहीं रखते। इनका स्वामी। "राणा" उपाधिको धारण करके कानन विराजित कमसे कम सहस्रों ग्रामोंके ऊपर अपना अधिकार रखताहै, आवश्यकता पडनेपर कमसे कम पांच हजार धनुषधारी भीलोंकी सेनाको साथ लेकर संग्राम भूमिमें उपस्थित होसकताहै। सोलंकी राजकुमारियोंके गर्भ और भूमि या भीलके औरससे इन लोगोंके पूर्व पुरुष उत्पन्न हुएथे। इसही स्वरूपसे वह अपनेको राजपूत बतातेहैं। अगुणाके इन भील कुलमेंही महात्मा देवने जन्म लिया था प्रयोजन समझकर हम मूलवार्तासे दूर चले आये हैं. अब फिर कुमार बप्पाकी ओर चलते हैं।

नष्ट करादिया, जित हून कामारि काठी मकवाहन वल्ल और अश्वारियां आदि प्रचण्ड विक्रम कारियोंने आकर एक समय सूरतदेशमें वडी प्रतिष्ठा पाईथी, यह सवलोगभी भारतवर्षके उस खुले द्वारसेही आयेथे, उस समय इन जातियोंके लिये मानो यह सुवर्ण युगथा, उस समय यह मध्य एशियाकी उच्च भूमिको छोड़ कर एक साथही यूरूप और भारतकी ओर चल पडेथे, प्रसिद्ध-यात्री परिव्राजक काससस चीन नरेश * जस्टीनियनके राज्य शासन समयमें भारतवर्षमें विद्यमान था, वह वल्लभीराजका कल्याणनगर देखने गयाथा, उसने अपनी भ्रमण पुस्तकमें लिखाहै कि ठीक वल्लभीपुरके नष्ट होनेके समय कुछ हून सिन्धुनदके किनारेके देशमें अपनी वस्ती स्थापन करके निवास करने लगेथे, उस समय जो उनका राजा वा सरदार था उसका नाम गोलसथा।

इस ओर एरियनकी लिखावटसे दूसरीही वात विदित होतीहै ईस्वी दूसरी शताब्दीमें एरियन साहव वरना [भडौच] नगरमें थे, वह कहतेहैं कि सिन्धु और नर्मदाके बीचके विशालदेशमें उस समय पारदोंका विस्तृत राज्य स्थापित था. मीनगढ उनकी राजधानी थी, अव यहां यह पता नही लगता कि कासमसने पारदोंकोही हून नामसे लिखा है अथवा हूनोंने पारदोंको निकालकर वहां अपना आधिपत्य जमायाथा, परन्तु यह तो अवश्यही मानना पडेगा कि इन्हीं दोनों जातियोंमेंसे किसीने वल्लभीपुरको विध्वंस कियाथा।

सूर्य वंशी महाराज कनकसेनसे आठवीं पीढीमें शिलादित्य नाम एक राजा उत्पन्न हुआ, इसीके राज्य समयमें म्लेच्छोंने वल्लभीपुरपर आक्रमण करके उसको तहस नहस करादिया महाराज शिलादित्यके समन्धमें एक विचित्र किम्वदन्ती सुननेमें आतीहै उस कथाके जिस अंशमें उनके जन्म और उनकी बाल्यावस्थाका जो विवरण प्रगट होताहै प्रयोजन समझकर हम उसको यहां लिखते हैं. वह यह कि गुर्जरराज्यमें कैयर नाम नगर है उस नगरमें देवादित्य नाम एक वेदवेदांगका जाननेवाला ब्राह्मण रहताथा।

उसके सुभगा नामक एक बेटीथी। देवादित्यने अपनी कन्याका विवाह कर दिया. परन्तु अभागिनी विवाहकी रातमेंही विधवा होगई। सुभागाके गुरुने

* इतिहाससे इस बातका पता लगताहै कि [illegible] पर [illegible] था, [illegible] उसने दूत भेजेथे।

धोकर पीनेके लिये दूध उपहारमें देते और पूजाके योग्य फूल बीनकर ला देतेथे । ऐसी कपटहीन भक्ति देख तपोनिधि हारीत परम प्रसन्न हो कुमारको अनेक प्रकारकी नीति सिखाने लगे । इस प्रकारसे कुछ काल बीतगया, क्रमानुसार योगीजी यहांतक संतुष्ट हुए कि कुमारको शैव मंत्रकी शिक्षा दे गलेमें यज्ञोपवीत पहरा दिया और महा गौरवके चिह्नस्वरूप "एकलिंगका दीवान" उपाधि दानकी, वप्पा कुमारकी अकपट भक्ति और गाढ़ शिवपूजा देखकर भगवती भवानीभी अत्यन्त प्रसन्न हुईथीं । वे कुमारको आशीर्वाद देनेके लिये स्वयं सिंहासनपर सवारहो सन्मुख प्रगट हुईं । तथा अपने हाथसे उनको विश्वकर्माके बनाये शूल धनुष वाण तरकश असि चर्म और एक बहुत बड़ा खड्ग इत्यादि उत्तमोत्तम दिव्यास्त्र दिये ।

इस प्रकारसे आदिदेव भगवान् महादेवजीके पवित्र मंत्रसे दीक्षित और भगवती भवानीजीके द्वारा दिव्यास्त्रसे सज्जित हो कुमार वप्पा शत्रुओंके लिये अजित होगये । तब उनके गुरू महर्षि हारीतने शिव लोकमें जानेका विचार किया और कुमारसे यह विचार कह सुनाये और कहा जिस दिन हम शिवलोकको जायँ उसदिन तुम शीघ्रही यहां पर आना । परन्तु कुमारको उसदिन बड़ी गाढ़ी नींद आई. और वे ठीक समयपर वहां न पहुंचकर देरमें पहुंचे पश्चात उस नियत समयके बीत जानेपर उन्होंने शीघ्रही वहां पहुंचकर देखा कि योगी श्रेष्ठ हारीत अप्सराओंसे खेंचे जाते हुए रथपर सवार होकर आकाश मंडलमें कुछ दूरतक पहुचगयेहैं महर्षिने अपने प्यारे शिष्यको पिछला अनुराग दिखानेके लिये रथकी चालको रोका और आशीर्वाद देनेके लिये वप्पा कुमारको समीप उठनेके लिये कहा देखतेही देखते कुमारकी देह एकसाथ बीस हाथ बढ़गई परन्तु तोभी गुरुके निकट न पहुंच सके । तब मुनिने मुख खोलनेके लिये कहा तत्काल उन्होंने आज्ञाका पालन किया हारीतने उनके मुखमें थूक दिया परन्तु अपनी [illegible] दोषसे कुमार एक अमूल्य वस्तुको ग्रहण न करके उसकी घृणा और अवज्ञा करके मुख बंद करलेनेपर वह निष्ठीवन चरणोंपर गिरा. यदि कुमार घृणाके साथ गुरुजीके दिये हुए स्नेहोपहारका अपमान न करते तो निश्चयही अमर होजाते. परन्तु यह उनके भाग्यमें न था. इस कारण अमर पदवी न मिलसका, तथापि वे

लड़कोंको पराजित किया, शीघ्रही वह समचार वल्लभीके राजा पर गया, वह राजा "गैवीको" बुलाकर अनेक प्रकारसे डरवाने लगा. तब "गैवी" ने भगवान सूर्यके दिये हुए पत्थरके टुकड़ेसे राजाको स्पर्श करके उसको पराजित किया और सिंहासनपर अपना अधिकार जमाया ।

उस कालसे गैवी शिलादित्यके नामसे पुकारा जानेलगा *

वल्लभी पुरके राजा महाराज शिलादित्यके सम्बन्धमें इस प्रकारकी औरभी अद्भुत व मनोहर कहावतें सुनी जातींहैं, कहतेहैं कि वल्लभीपुरमें उसकाल "सूर्यकुण्डथा" जहां कोई संग्राम आपड़ता वैसेही शिलादित्य उस कुण्डके समीप जायकर भगवान भास्करकी प्रार्थना करतेथे, उनके प्रार्थना करतेही सूर्यके रथको खेंचनेवाला सप्ताश्व नामक एक बडा घोड़ा कुंडसे निकलता था, उस प्रचंड घोड़ेको अपने रथमें जोतकर शिलादित्य शत्रुओंको जीत लेताथा. परन्तु अपने किसी पापात्मा मंत्रीकी विश्वासघातकतासे राजा शिलादित्य संग्रामके समय इस पवित्र देवानुकूलतासे वंचित रहा, महाराज शिलादित्यका पापात्मा मंत्री इस गूढ़ विषयको जानता था. उसने शत्रुओंको यह भेद बतादिया, और सलाह दी कि उस पवित्र कुंडमें गौरक्त डालदो. तदनुसार वह पवित्र कुंड इस प्रकारसे अपवित्र होगया, तब महाराज शिलादित्यके सौभाग्य मार्गमें कांटा लग गया उसके नाशका आरंभ हुआ, म्लेच्छगण प्रचंड विक्रमके साथ उसके नगरको घेरकर गगनभेदी शब्दसे वारम्वार सिंहनाद करने लगे ।

उसकाल महाराज शीघ्रतासे कुंडके समीप गये और कातर स्वरसे वारम्वार इष्ट देवताको पुकारने लगे, परन्तु पुकारना वृथा हुआ, अति करुणा और विनयके साथ वारम्वार पुकारनेसेभी वह सात मुखवाला देवअश्व दिखाई न दिया ! निराशा-घोर निराशाकी विषम अंकुशकी चोटसे शिलादित्यका हृदय अत्यन्तही दुःखी हुआ उनको चारोंओर अंधकार दिखाई देने लगा. तथापि ।

---

* भारत वर्षके इतिहासमें एक दूसरे शिलादित्यका नाम [illegible], परन्तु [illegible] और ईस्वी सातवीं शताब्दीके मध्य भागमें कन्नोजके [illegible] निवासी हियनसंग ने महाराज शिलादित्यकेही [illegible] कन्नोजके [illegible]

Vide Travels of H[illegible]

P. [illegible]

शिलालेख निकला है, इसके पढ़नेसे जाना जाताहै कि उसकालमें राजस्थानके बीच सामन्तप्रथा अधिकाईसे चलरही थी। राजपूत सामन्त गण बहुतसी भूमि कीर्तिको भोग करके नाना राजाकी सहायताके लिये संग्राम भूमिमें आगे शत्रुसे भिड़ जातेथे इससे पहिले महाराज मानको समस्त सामंत गण बहुत मानते थे. तथा महाराज भी उनसे विशेष प्रसन्न रहतेथे. परन्तु जिस दिन कुमार बप्पा महाराज मानकी प्रीतिमयी आंखोंमें पड़ा उसी दिनसे सामन्त लोगोंने अनुराग करना छोड़ दिया, समस्त लोग समझगये कि यह बप्पाही इस अनर्थकी जड़है, अतएव कुमारसे महा डाह करने लगे और कुछ बुरा करनेका यत्न सोचते रहे।

इसी समयमें एक विदेशीय शत्रुने आकर चित्तौरपुरीको घेरलिया तब महाराजने सामन्तोंको शत्रुओंसे लड़नेकी आज्ञादी। परन्तु उन्होंने अपनी भूमिवृत्तिके पट्टे अत्यन्त दर्पके साथ दूर फेंकदिये. और कहा कि "महाराज अपने प्यारे सेनापतिको युद्धमें भेजें" कुमारने यह बातें सुनीं परन्तु वह उससे कुछभी भीत वा शंकित नहीं हुए; वरन दूने उत्साहसे उत्साहित होकर अकेलेही उस देशवैरी शत्रुके साथ संग्राम करनेको चले गये। विद्रोह करनेवाले सामन्तोंने अपनी २ भूमिका-वृत्तिको त्याग करतो दिया. परन्तु लोकलाजके मारे वहभी कुमारके साथ गये। कुमारके प्रचंड विक्रमको न सहन करके शत्रुगण हारगये। बप्पा कुमार शत्रुओंको जीतकर विजयी वेशसे चित्तौरमें न आये वरन अपने पितृपुरुषोंकी राजधानी गजनी नगरमें चलेगये। उसकाल गजनी नगरमें एक म्लेच्छ राजा राजथा. इस राजाका नाम सलीम कहते थे। बप्पाने उसको सिंहासनसे उतारा और उस गद्दीके ऊपर एक सूर्यवंशी सामन्तको स्थापित किया और अपनी सेनाको साथले चित्तौर आये, व उसही समयमें आपने उस सलीमकी बेटीसे विवाह किया।

दूसरा अध्याय २.

विषय

गोहिलके जन्मका वृत्तान्त,–ईडुर राज्यकी प्राप्तिः–"हिल्लोट" शब्दकी उत्पत्ति; वप्पाका जन्मः–

गिह्लोट लोगोंकी पुरानी पूजाविधिः–वप्पाका वर्णन अगुणा पानोरः–वप्पारावलका शिवमंत्र ग्रहण करना;–चित्तौरके राज्यकी प्राप्ति;–वप्पाका आश्चर्यकारी वर्णन–दूसरी और ग्यारहवीं शताब्दीके वीचवाले मेवाड इतिहासके चार प्रधान समयका निरूपण।

विश्वासघातक म्लेच्छ लोगोंकी भयंकर विक्रमानलमें महाराज शिलादित्य पतंगकी समान भस्म होगए, उनका वल्लभीपुरभी विध्वंस होकर शोचनीय श्मशान भूमिकी समान बनगया, इष्टमित्र, बंधु, बांधव सबही शस्त्र धारण करके संग्राम भूमिमें शयन करगये।

महाराज शिलादित्यके बहुतसी रानियां थीं उनमें रानी पुष्पवतीके सिवाय और सबही राजाके साथ सती होगईं। विन्ध्य पर्वतकी तलेटीमें चन्द्रावतीनामक एक नगरीहै। इस नगरीमें उस समय प्रमार वंशके राजा राज्य करतेथे, रानी पुष्पवतीका उसी प्रमार कुलमें जन्म हुआथा। इन अनर्थकारी घोरसंग्रामके होनेसे पहिले रानीको गर्भके लक्षण दिखाई दियेथे रानीने पुत्रकी कामनासे अनेक देवी देवताओंकी–विशेष करके जगदम्बा देवी भवानीकी जो उसके राज्यमें वर्तमानथी बहुतसी पूजाकी। इस समय कामना सिद्धिके सम्पूर्ण लक्षण देख कर षोडशोपचारसे भवानीजीकी पूजा करनेके लिये रानी अपने पिताके घर चली आईथी। पूजाविधि समाप्त करके पतिगृहमें लौट आनेके समय मार्गमें महाघोर संकटका समाचार सुना पुष्पवतीके मस्तकपर मानो वज्र टूटपड़ा,–मा

पूरी एकसौ वर्षकी आयु पाकर वीरकेशरी महाराज बप्पाने परम धामको पयान किया। देलवाडा नरेशके पास एक प्राचीन ग्रंथहै, उसमें देखा जाताहै कि महाराज बप्पाने इस्फहानकन्धार, काश्मीर ईराक, ईरान, तूरान, और काफरिस्तान आदि पश्चिम देशके राजाओंको पराजित करके उनकी बेटियोंसे विवाह किया, तथा अन्तमें तपस्वीलोगोंके समान रहकर मेरु पर्वतकी तलेटीमें अपने जीवनको व्यतीत किया था, कहतेहैं कि महाराजने जीवित शरीरसेही समाधि ली। इन सब स्त्रियोंके गर्भसे महाराज बप्पाके १३० पुत्र उत्पन्न हुएथे, जो इतिहासमें नौशेरा पठान कहलाये। उनके एक २ पुत्रने एक २ वंशकी प्रतिष्ठा कीथी। हिन्दू स्त्रियोंसे ९८ पुत्र जन्मेथे वे सबही "अग्नि उपासी, सूर्यवंशी नामसे प्रसिद्ध हुए।"

भट्टग्रंथोंमें औरभी एक विचित्र वृत्तान्त पाया जाताहै, कहतेहैं कि महाराजके परम धाम सिधारनेपर मुसलमान तो यह कहते थे कि हम देहको समाधि देंगे, और हिन्दू कहते थे कि हम दाह करेंगे। इस कारण दोनो पक्षमें घोर विवाद होरहाथा, दोनो अपनी२ ओरको खेंचते थे, वाद विवादमें कोई नही हारा, अतएव इस दुरूह प्रश्नकी मीमांसा न हुई, इस प्रकार झगड़ा करते २ उन्होंने महाराजके शरीरपर ढकाहुआ कपड़ा उघाड़कर देखा, कि उस नाशवान पंच तत्त्वमय देहके बदले वहांपर फूलेहुए कई एक कमल जिनका रंग श्वेत था विराजमान हो रहेहैं। वहांसे उन कमलफूलोंको उखाड़कर लाके सरोवरमें जमादिया गया। फारस देशके नौशेरवां बादशाहके सम्बन्धमेंभी ठीक ऐसाही वृत्तान्त सुना जाताहै।

मेवाड़के राजवंशके आदि प्रतिष्ठापक वीरवर बप्पा रावलका संक्षिप्त जीवनचरित्र यहांपर लिखा गयाहै इस समय हम ठीक २ यह लिखेंगे कि वह कौनसे समयमें हुएथे। पहलेही लिखा जा चुकाहै कि महाराज शिलादित्यके राजत्त्व काल सम्वत् २०० में वल्लभीपुर पतन हुआ और उनकी नौवीं पीढीमें बप्पा रावलका जन्म हुआ परन्तु आश्चर्यकी बातहै, कि राणाके भाटोंमें जो भट्टग्रंथ रक्खे हुएहैं, उन सबमें देखा जाताहै कि संवत १९१ सन १३५ ई० में बप्पा रावलने जन्म लिया था। इस और एक शिलालिपिसे [illegible]

थी, परन्तु गोहस उसको एक क्षण भरके लिये भी सुख नहीं मिलता था, कारण कि राज कुमार अत्यन्त ढीठ और दुष्ट होगया । आयुकी वृद्धिके साथ उसकी दुष्टताभी दिन २ बढने लगी वह कमलावती की आज्ञाको लंघन करके हमजोली राजपूतकुमारोंके संग दिन रात खेलता फिरता, और विद्याके सीखनेमें एक पलभरको भी मन नहीं लगता था, कभी २ पक्षियोंके बच्चे पकड़कर निर्दईपनसे उनको मार डालता. कभी २ गंभीर वनमें प्रवेश करके शिकार खेलता, इस प्रकार एक २ वर्ष करके कुमारने ग्यारहवें वर्षमें पांव रक्खा उस काल उसकी दुष्टता पूर्णमात्राको पहुंच गई पालन करनेवाली ब्राह्मणी किसी प्रकारसे उसको न रोकसकी यहांपर भट्ट कविगणने कहा है ।—भला यह कैसे रोक सकती सूर्य भगवानका प्रचंड तेज क्या ढका जा सकता है?

मेवाडके दक्षिण पार्श्वकी घनी शैलमालाके भीतर ईडरनामक एक भील-राज्य है, मंडलीकनामक एक भीलराजा उस कालमें सिंहासनपर विराजमान था, गोह इन ईडरवाले भीललोगोंके साथ दिन रात वन २ में घूमा करता था भील लोगोंकी ऊधमी आदतके साथ गोहका स्वभाव भली भांतिसे मिलगया था इसी कारणसे वह शान्तस्वभाव ब्राह्मणोंके संगको छोड़कर उनके साथ दिन रात रहना पसंद करता था । भील लोगभी उसपर विशेष प्रीति करते थे । क्रमानुसार उन वन पुत्रोंका अनुराग इतना बढगया कि एक समय उन्होंने शैल काननयुक्त संपूर्ण ईडर भूमिको गोहके हाथमें सौंपदिया अब्बुलफजल और भट्टकविगण इस वर्णनको इस भांतिसे लिखते हैं । कहते हैं कि एक समय राजपूतबालक गोहके साथ भीलोंके लड़के खेल रहेथे, उसी समयमें उन भील बालकोंका खेल २ हीमें यह विचार हुआ कि अपनेमें से किसी को राजाकरें: जितने बालक वहां पर थे सबने इस कार्यकेलिये राजकुमारको भलीभांतिसे योग्य और उचित समझा । तदनुसार एक भील बालकने तत्काल अपनी उंगली काटकर उसके रुधिरसे नये राजाके माथेपर राजतिलक खेंच दिया । उसदिन—उस गंभीर सघन वनके भीतर [illegible] खेलमें भील कुमारगणने जो राज तिलक गोहके माथेपर खेंच दिया, फिर उस राजतिलकको कोई भी न मिटा सका वृद्ध भीलराज माण्डलिकने यह वृत्तान्त सुनकर बड़ी प्रसन्नतासे गोहको राज भार सौंपदिया और स्वयं वृद्धताके कारण [illegible] इस बातका उपसंहार अत्यन्त बुरा और घिनौना है इससे गोहके स्वभावमें कृतघ्नता और विश्वास घातका घोर कलंक लगा हुआ है । कहते हैं कि भीलोंके जिस राजाने

सिंहासनपर बैठनेके समय महाराज बप्पाकी आयु १५ वर्षकी थी परन्तु, यह अभी दिखाया जा चुकाहै कि उसका जन्म सम्वत मौर्य शिला लेखसे एक, वर्ष कमहै अर्थात सम्वत ७६९. में उसका जन्म हुआथा, इस प्रकार सम्वत ७६९+१५=७८४ अथवा[७२८ ई०] में उसने चित्तौरका सिंहासन प्राप्त किया. और इसी सम्वतसे गिह्लोटोंका आधिपत्य प्रारंभ हुआ. इस समयसे लेकर ११०० वर्षतक ५९. राजा मेवाडके सिंहासन पर बैठे।

गिह्लोटकुलतिलक वीर श्रेष्ठ बप्पा रावलकी उत्पत्तिका ठीक समय निरूपण किया गया, और उसकी प्राचीनता प्रमाणित होगई. यह थोडे हर्षकी बात नहीं है कि वह अपने समयके पृथिवीके अन्यान्य वीरोंसे पहले प्रगट हुआथा. उस समय कार्लोविंजका वीरवंश पश्चिमी देशमें प्रचण्ड बल प्राप्त करके और अपना विराट मस्तक उठा रहाथा. और खलीफा वलीदकी विजयिनी सेनायें इबो नदीके किनारे अपने हरेरंगकी पताका उडाकर बडी वीरतासे समस्त यूरोप देशको कम्पायमान कर रहीथीं।

मेवाड राज्यमें आयुतपुरनामक एक प्राचीन समृद्धशाली नगरथा. वह नगर इस समय बहुत टूटी फूटी तथा बुरी अवस्थामें है, असभ्य भील और जंगली जन्तु अब वहां निवास करतेहैं, बहुत लोग अब इस नगरका नामभी नहीं जानते. उस आयतपुरके खंडहरोंमें एक शिलालिपि पाई गईहै उसमें महाराज शक्तिकुमारतक मेवाडके चौदह राजाओंका धारावाहिक वंश विवरण लिखाहै उक्त शिलालिपिमें वीरकेशरी महाराज बप्पाकाभी वर्णन शैल नामसे किया गयाहै। भट्टग्रंथ और राज-परिवारकी पत्रिकाके साथ उक्त शिलालिपिकी सब बातोंमें ही प्रायः एकताहै। केवल उससे एकही नाम अधिक लिखाहै।

हम मान्य करतेहैं कि यद्यपि कविगण अपनी कल्पनाके बलसे यथार्थ ऐतिहासिकोंको क्लिष्ट करदेतेहैं। यद्यपि वे अपनी इच्छाके अनुसार सत्य बातोंकोभी अनेक अलंकारोंसे सजा देतेहैं। परन्तु जब किसी प्राचीन नगरके

राजवंशकी रक्षा करनेके लिये फिर अपनी छातीको अड़ादिया। उन्होंने विचार कर लिया कि चाहे इस छातीपर हजारों वज्र गिरैं, तथापि बालककी रक्षा अवश्य ही करैंगे। वह लोग उस समय गहिलोत राजकुमारके कुलपुरोहित थे, आज पुरोहित नामको सार्थक करनेके लिये अपने प्राणोंको संकटमें डाल राजकुमार वप्पाकी रक्षाकरनेके लिये तइयार होगये। नागादित्यके बालक राजकुमारको लेकर सत्यपरायण ब्राह्मणोंनें भांडेर * नामक किलेमें गमन किया। वहां पर एक भीलनें जो कि यदुवंशी था उन ब्राह्मणोंको आश्रय दिया। परन्तु तहाँ बालकको सब प्रकारसे निरापद न समझकर पराशरनामक स्थानमें लेगये। वह वन बडे २ और घने २ वृक्षोंसे परिपूर्ण था। उस दीर्घवृक्षश्रेणीकी निविड़ शाखा पत्रोंको भेद कर ऊंचा मस्तक किये त्रिकूट पर्वत खड़ा हुआ है।— त्रिकूटगिरिकी तलैटीमे नागेन्द्र × नामक एक साधारण नगर बसा हुआ है। उसमें शिवोपासक शान्ति युक्त ब्रह्मण गण परम सुखसे वास करते थे। वप्पाको उन शान्त शील ब्राह्मणोंके हाथमें सोंपा गया। इस निविड़ महावनकी गंभीर शान्तिमय शीतल छायामें ऊंचे पर्वतकी विशाल प्रान्तभूमिमें भगवद्भक्त शान्तचित्त ब्राह्मणगणोंके द्वारा रक्षित होकर राजकुमार वप्पा १ स्वच्छन्दतासे इच्छानुसार भ्रमण करने लगा।

उस पराशरनामक महावनके गंभीर स्थानमें जहाँ कि विराट त्रिकूट पर्वतकी घोर कंदरायें हैं, जहाँ मेघोंसे युक्त होकर बड़े पर्वतशिखर शोभायमान होरहे हैं, जहाँसे प्रत्येक नदियां निकली हैं वहां पर अनेक प्राचीन देव मंदिर दिखाई देते हैं। प्रकृतिकी मधुर मुसकान शान्तरसमें मिलकर वहाँ पर एक [illegible] अ[illegible]-भावको उदय करदेती हैं। कि इस मनुष्य शून्य वनमें प्रवेश करते ही हृदयमें महान भक्ति, भय और आनन्दका विकाश होताहै। इस पवित्र वनके रहनेवाले अति प्राचीन कालमें केवल महादेवजीकीही पूजा करतेथे। यहां तक कि "वनकुमार" असभ्य भीलगण भी उनकी भुजंग भूषित मूर्तिको और उनके वाहन वृषभको अति-पवित्र समझकर भक्तिके साथ पूजा करतेथे।

---

* जारोलीके १५ मील दक्षिण [illegible] स्थित है।

× वर्तमान भाषामें इसको नगदा कहते है। उदयपुरसे वह [illegible] तीर्थस्थान कहाता है। महात्मा टाडसाहबको यहींसे [illegible] लिपि मिली थी।

१ प्यारा नाम बप्पा था. इसीसे इस राजकुमारका नाम [illegible]

तीसरा अध्याय ३.



बप्पा और समर सिंहके मध्यवर्ती राजाओंका वृत्तान्तः—बप्पाकी सन्तान सन्तति;—अरबवालोंका भारतवर्ष पर चढाई करना:—चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये जिन हिन्दू राजाओंने खड्ग धारण किया था उनका संक्षेप वृत्तान्त। इससे पहिले वर्णन हो चुकाहै, कि गिह्लोट कुलतिलक महाराज बप्पा सम्वत ७८४ सन् ७२०.मे चित्तौरके सिंहासनपर बैठेथे। वह जिस दिन चित्तौरके राज्यको छोड़कर ईरानको चलेगये, उस दिनसे लेकर महाराज समरसिंहके राजतक भट्टग्रथोंके वृत्तान्तसे सामर्थ्यके अनुसार ऐतिहासिक वृत्तान्त संग्रह किया जाताहै, उस समयमें सारे मेवाड़हीं क्या वरन सारी भारतभूमिमें एक नवीन युगका अवतार हुआथा। जिस दिन प्रचंड मुसल्मान वीरोंके गगन विहारी भरवसिंहनादसे आर्य लक्ष्मी चंचल हुई, भारतवर्षका राजमुकुट भारतवर्षीय आर्यराजाओंके मस्तकसे उतारा जाकर यवनोंके सिरपर स्थापित हुआ, इस बातको कौन स्वीकार नहीं करेगा, कि उस दुर्दिनके सत्य सम्पूर्ण भारतवर्षमें एक नवीन युगका संचार हुआ। वीरवर बप्पारावलका ईरानमें जाना और समरसिंहका सिंहासनपर बैठना इस अन्तरमे चार शताब्दी बीत गई, उन चारसौ वर्षके बीच मेवाड़के सिंहासनपर सब अठारह राजा बैठे थे। इनके राज्यका ठीक वर्णन भट्टलोगोंके काव्यग्रंथोंमे यद्यपि नहीं पाया जाता, तथापि जो कुछ पाया जाता है, इससे यथार्थ ज्ञान होताहै, कि वह राजा महाराज बप्पाके योग्य वंशधरथे। उनकी अनुपम कीर्तिकथा आजभी राजस्थानके अनेक गिरि गात्रोंमें अक्षय भावसे विराजमान हो रही है।

वाले होकर झूलनलीलाके मेलेमें मिल जाते हैं। कहतेहैं कि उसकाल नगेन्द्र नगरमें कोई सोलंकीवंशीय राजा राज करताथा। ऊपर कहेहुए झूलनोत्सवके आनेपर उस राजाकीलड़की अपनी सहेलियोंके साथ व नगरकी और २ लड़कियोंकोभी संगमें ले विहार करनेके लिये कुंजवनमें गई। परन्तु वहां झूला डालनेकी रस्सी न थी, इसकारण सब इधर उधर देखनेलगी। इतनेहीमें राजकुमार वप्पा वहां आपहुंचा वप्पाको देखतेही राजकुमारियोंने उससे रस्सी मांगी. परन्तु कुमार चंचलस्वभाव और हँसमुखथा इस कारण हँसकर कहा 'कि जो तुम पहिले मुझसे विवाह करलो तो मैं अभी रस्सी लादूंगा।'' कौतुकके ऊपर कौतुक हुआ,–तमाशा देखनेकी लालसासे राजपूत लड़कियोंने इस बातको मानलिया, फिर क्याथा विवाह होगया। सोलंकी राजकुमारीके दुपट्टेसे वप्पाके दुपट्टेकी गांठ बांधीगई व और सम्पूर्ण लड़किये परस्पर एक दूसरी का हाथ पकड़ेहुए उनके सहित एकसाथ पांति बांधकर एक बडे आमवृक्षके चारों ओर प्रदक्षिणा करनेलगीं। वप्पा कुमारने इस बातका विचार नहीं कियाथा कि आज–इस शारदीय शुभ झूलनोत्सवके दिन इस विशाल आम्रवृक्षकी छायाके नीचे जो नकली विवाह हुआहै, वह अन्तकालमेंभी यथार्थ विवाह होजायगा। इस होनहारसे कुमारके भाग्यका चमकना आरम्भ हुआ। परन्तु नागेन्द्रनगरका रहना कठिन पड़गया, शीघ्रही नगरको छोड़ा? यद्यपि उसी दिनसे कुमारका भाग्याकाश चमका. परन्तु वह सारी राजपूत कुमारियें उसके गलेका हार होगई। उन लड़कियोंके वंशवाले आजतक इस लीलाविवाह का वृत्तान्त कहकर अपनेको वप्पाकुलसे उत्पन्न हुआ कहतेहैं।

खेल तमाशा पूरा हुआ–राजपूतोंकी लड़किये अपने २ घर लौटकर इसविवाहके वृत्तान्तको भूल गई। राजकुमारियोंने यह न सोचा कि विधाताने भाग्यकी ओटमें बैठकर कुमार वप्पाके साथ हमारे भाग्यका गृठबन्धन करदिया है। इस भांति कुछदिन बीतनेपर क्रमानुसार सोलंकी राजकुमारी विवाहके योग्य हुई। पिताने वर खोजकर विवाहकी सम्पूर्ण तय्यारी की। इतनेहीमें नगरके एक ज्योतिषी ब्राह्मणने आय राजकुमारीके हाथको देखकर [illegible] 'इसका विवाह तो पहलेही होचुकाहै।'' इस अद्भुत बातके सुनते [illegible] कुलाहल पडगया। [illegible] विघ्न और [illegible] जिनने चातुरी दिखाई [illegible] चारों ओर [illegible] गये। कुमार [illegible]

हृदयमें भरा हुआहै ।—वे दोनों भील जिस पवित्र चरित्रको संसारमें प्रचार कर गयेहैं, उसकी समान चारित्र और कितने पुरुषोने दिखायाहै, जो कुछ उन्होंने प्रतिज्ञा कीथी वह पूरीकी । इसप्रतिज्ञाके कारण उन्होंने घरका रहना, इष्ट मित्रोंका संग शरीरका सुख सबही छोड़कर कुमार बप्पाके साथ कष्ट कर वनवास स्वीकार किया ।

अनेकबार अनेक विपत्तियोंमे पडे, कितने दिनतक बराबर रातोंको जागे तथापि एक दिनके लियेभी अपनी प्रतिज्ञासे टलजानेका विचार नहीं किया, कभी कुमारको अपने साथसे अलग करनेका विचार नहीं किया । वास्तवमें यही कुमार बप्पाके जीवनसखा, और उसके सुखमें साथी थे. यदि कुमारको ऐसे मित्र न मिलते तो न जाने उसके भाग्यका पलटा किस ओरको होता, कदाचित् अज्ञात वासमें रहकर चित्तौरके राजसिंहासनको प्राप्त न करसक्ता, कदाचित् आज उनका नाम वीरकुलके नमूनेमें न गिनाजाता । महात्मा भील जातिके दो मित्रोंने जो उपकार कुमारका कियाथा कुमारने उस उपकारको कभीभी चित्तसे नहीं भुलाया, उनके साथ रहनेसे अपनेको सन्मानित और सुखी समझा और अनेक प्रकारसे उनकेप्रति कृतज्ञता दिखाना भला विचारा. आजभी उन पवित्र कृतज्ञताका चिह्न मेवाडमें अटल भावसे विराजमान होरहाहै. जिसदिन वीरकेशरी महाराज बप्पाने उन दो भीलमित्रोंके साथ अपार आनन्दको भोग कियाथा आज वह दिन अनन्त कालसागरकी सबसे पिछली तलीमें लीन होगयाहै. जिस चित्तौरके सुवर्णमय सिंहासनपर विराजमान होकर महाराजने पवित्र हृदयसे उन दोनों मित्रोंका दियाहुआ राजतिलक ग्रहण कियाथा, वह चित्तौर आज खंडहर बना हुआहै । चूर २ होकर धूरमें लोट रहाहै: एकदिन जो भूमि जगन्मान्य राजकुलकी क्रीडाभूमि थी आज वनके हिंसक जीव वहांपर विहार करतेहैं ।

यद्यपि कालचक्रका इतना परिवर्तन होगयाहै.—तथापि उन्हीं [illegible] वंशधरगण अबतक उस बालीय और देवके वंशवालोंका दियाहुआ राजतिलक आनन्दसे ग्रहण करके अपनेको सन्मानित समझतेहैं ।

---

* अभिषेकके समय देवका [illegible] राजाका [illegible] बालीयके वंशका भील [illegible] और [illegible] नेके [illegible] मेवाड़की [illegible] परन्तु आज [illegible] । [illegible] पश्चात् इस प्रथाने कुछ [illegible] देखी गईहै ।

बैठतेही भारतवर्षकी भीतरी परीक्षा करनेके लिये दूत भेजा, और आपभी चढ़ाई करनेके लिये बड़ी भारी सेनाको सजाने लगा. परन्तु उस मानका अरमानभी दिलका दिलहीमें रहगया। कुछ समयके बीतनेपर जब खलीफा अलीबुगदाद सिंहासनपर बैठा तब उसके सेनापतियोंने सिन्धुदेशको जीता था. परन्तु वह सेनापतिभी बहुत दिनतक इस देशपर अपना अधिकार नहीं करसके। खलीफाके मरनेपर उसपर ऐसी आपत्तियें आपड़ीं कि विवश होकर भारतवर्षको छोड़नापड़ा तदुपरान्त खलीफा अब्दुलमलिक और खुरासानके बादशाह इर्जादके समयमेंभी इस प्रकारसे भारतवर्षके जीतनेकी तइयारियें हुईथीं, परन्तु वह अपनी सब तइयारियोंसे वंचित रहा। इस प्रकारसे कुछ काल बीतगया, तब अवश्य होनहार लेखके अनुसार भारतकी कठोर भवितव्यताका समय धीरे २ भारतकी ओरको पांव बढ़ाने लगा। इन बातोंके पीछे खलीफा वलीद पिताके सिंहासनपर बैठा, राज्यको पातेही विशाल सेनादलको सजाकर वह भारतवर्षपर चढ़ धाया। इस प्रचण्ड चढ़ाईको कोईभी नहीं रोक सका क्रमसे सिन्धुराज्य और निकटके कई स्थान खलीफाने ले लिये। कहतेहैं कि गंगाके पश्चिमी किनारेपर बसे हुए देशोंके राजालोगभी, विजयी वलीदके प्रचण्ड विक्रमसे हार कर अपना कृतकार्य करनेके लिये कर देने लगे। मुसलमान वीरोंकी इस समय सब बरात होरहीथी। कारण कि उस समय उनके विक्रमकी आग जिस तेजीसे जलरहीथी, उसको बुझानेके लिये बहुतसे राजा तइयार हुए, और पतंगोंकी समान जलगये. उस वीरता और उत्साहके वृत्तान्तका पाठ करनेसे हृदय धड़क जाताहै। अधिक क्या कहें उस काल एक साथही पूर्व और पश्चिम मंडलके दो विशाल राज्य मुसलमानोंके प्रचण्ड विक्रमसे विध्वंस होगयेथे। इस ओर सिन्धुनदके किनारेसे बसे हुए देवलाधिपति दाहिरराज्यकी अवनतिके साथही भारतवर्षके सत्यानाश होनेकी सूचना हुई, उधर वीरवर [illegible] अपने [illegible] राज्य और [illegible] अंत किया।

समझा कि कुमारही एकान्तमें इस गायका दूध पीजाता है। धीरे२ यह सन्देह उनके मनमें जमने लगा वे ब्राह्मणलोग बडी सावधानीके साथ कुमारके प्रत्येक कार्य-की परीक्षा करने लगे। कुमारने सब समझा, परन्तु क्या करे? जबतक इस सन्देहके दूर करनेका यथार्थ उपाय दृष्टि नहीं आता तबतक मनके दुःखको मनमेंही रखकर धीरभावसे कार्य करनेलगे। कुमारने गायपर विशेष दृष्टि रखनेकी प्रतिज्ञा की। दूसरे-दिन जब गायें चरनेके लिये जंगलको चलीं तौ कुमार उसही गायके पीछे२ भ्रमण करनेलगे। वह जिस ओरको गई, वे भी उसही ओरको गये। गइया एक निर्जन कन्द-रामें घुसी कुमार वप्पाभी उसके पीछे २ वहीं पर पहुँचे। अकस्मात् एक अद्भुत दृश्य देखा। कि गइया एक बेलपत्तोंके ढेरकी चोटीपर दूधकी धार छोड़ रहीहै। कुमार विस्मित हुए। उन्होंने उस लताके ढेरके निकट जाकर देखा कि उसमें एक शिवलिंग स्थापितहै और उस शिवलिंगकी चोटीही पर गायके थनमेंसे दूधकी धार निकलकर गिर रहीहै।

कुमारने समझा कि इसी कारणसे गायका दूध थनमेंसे निकल जाताहै, उन्हों-ने शिवलिंगके निकट और एक विचित्र दृश्य देखा, कि उसके सन्मुखवाले एक वेंतवनके भीतर ध्यान किये हुए एक योगी विराजमान हैं, कुमार जैसेही उस निर्जन वनमें गए वैसेही उस योगीका ध्यान टूटगया। परन्तु करुणानिधान तप-स्वीने ध्यानमें विघ्न करनेवाले कुमारसे कुछ न कहा।

यह गिरिकंदरा अतिनिर्जनहै, शांतिने इसके भीतर अपना घर बनालियाहै पूर्वकालके योगी और तपस्वियोंके अतिरिक्त और किसीने उस पवित्र स्थानको कभी नहीं देखा, कुमार बड़े पुण्यवान्थे, नहीं तो विना चेष्टा और यत्नके वह पवित्र स्थान * कैसे देख सक्ते। उस तपस्वीका नाम हारीत था। योगीवर हारीतभी उस गायकी दुग्ध धारको प्राप्त करतेथे।

हारीतका ध्यान भंग होनेपर कुमारने उनके चरणपर गिरकर साष्टांग प्रणाम किया, योगीने आशीर्वाद देकर नाम धाम पूंछा। राजकुमार नहीं [illegible] अपने वृत्तान्तको जानते थे. अकपट भावसे कहगये. उपरान्त मुनिवरका आशीर्वाद पाय उसदिन अपनी गायोंको लेकर आश्रममें चलेगये। दूसरे दिनसे प्रतिदिन कुमार योगीके पास आने जाने लगे, प्रति दिनभक्तिके साथ उनके दोनों चरणोंको

---

* ठीक इसी स्थानमें एकलिंगजीका पवित्र मन्दिर बना है। [illegible]
उस मन्दिरमें था, वह महर्षि हारीतके [illegible] [illegible]
शिवपुराणभी दिखाया।

सेनापति इजीद जब बागी होगया तो सम्राट्की क्रोधाग्निसे अपनी रक्षा करनेके लिये उसका बेटा सिन्धुदेशको भाग गया यह बहुतही साधारण बात है। अतएव इसको ढूंड भाल करनेसे कोई लाभ नहीं। जिस समय अल्मनसूर स्वयं खलीफा नहीं किन्तु खलीफा अब्बासका एलची था उस समय सिन्धुराज्य और भारतके अन्यान्य पार्श्वीराज्य उसके अधिकारमें थे। उसके ही समयमें वीर वर बप्पारावल अपने देशको छोड़कर ईरानको गयेथे।

गहिलोटराजा और मुसलमान बादशाहोंकी एक संक्षिप्त सूची यहां लिखी जातीहै जो कि एकही समयमें हुएथे।

गहिलोट.	राजका समय.		मुसल्मान राजा.	राज्यका समय.	
	सम्वत	सन ई.	बुगदादके खलीफा	हिजरी.	सन ई.
बप्पाका जन्म	७६९	७१३	वलीद (११वां.)	८६ से ९६तक	७०५ से ७१५
चित्तौर अधिकार	७८४	७२८	उमरावउमर(१३वां)	९९ से १०१	७१८ से ७२०
मेवाड़ शासन	,,	,,			
चित्तौरत्याग	८२०	७६४	हसन (१९ वां)	१०४ से [illegible]	७२३ से [illegible]
अपराजित	,,	,,	मनसूर (२१ वां)	१३६ से १५८	७५४ से ७७५
खलभोज	,,	,,			
खुमान	८६८से ९२२तक	८१२ से ८३६तक	हारूनरशीद(२४वां)	१७० से १९३	७८६ से ८०९
भर्तृभट	,,	,,	मामून (२६ वां)	१९८ से २१८	८१३ से ८३३
[illegible]	,,	,,			
नरवाहन	,,	,,			
शालिवाहन	,,	,,	गजनीके सुलतान.		
शक्तिकुमार	१०२४	९६८	अलप्तगीं	३५०	[illegible]
अम्बाप्रसाद	,,	,,			
नरवर्म	,,	,,	सुबुक्तगीं	३६६	[illegible]
[illegible]	,,	,,	महमूद	३८७ से ४२१	[illegible]

अमर न होसके तथापि उनका देह सर्व प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंसे अभेद्य होगया। यहभी उनके लिये साधारण सौभाग्यकी वात नहीं थी इस ओर महर्षि हारीत धीरे२ आकाश मण्डलको उठगये और वह विमान दिखाई नहीं दिया।

"जिस दिन कुमारपर भगवत्की यह कृपा हुई, उसी दिनसे उनके भाग्याकाशमें चमक आगई, उसी दिनसे उन्होंने मूल मंत्रकी साधनाके कठोर कार्य क्षेत्रमें आनेकी प्रतिज्ञा की, कुमारने अपनी मातासे सुनाथा कि मैं चित्तौरके सूर्यवंशी राजाका भानजाहूं, जो कि उस समय वहाँ राज करतेथे इस निकट सम्बन्धका वृत्तान्त जानकर यह कुमार अपना प्रयोजन सिद्ध करनेमें दूने उत्साहित होगये। चरवाहोंके आलसी जीवनसे अत्यन्त घृणा उत्पन्न होगई।" कुमार कितने एक साथियोंको लेकर गंभीर वनवासको छोड़कर वस्तीमें आगये। पहली वार वस्तीके दर्शन हुए। इससे पहिले उन्होंने नहीं देखा था, कि नगरकी वस्तीका स्थान कैसा होताहै। इस समय वस्तीवालोंका श्रेष्ठ उद्यम देखकर और भी उत्साहित होगये। भाग्य वलवान होनेसे चन्द्रसाक्षी सन्मुख होजाताहै उस निविड़ वनवास भूमिसे निकलनेके समय मार्गमें नाहरा मगरानामक गिरिकूट ·· की तलेटीसे वनमें प्रसिद्ध गोरखनाथ सिद्धके दर्शन हुए। गोरखनाथजीने एक दुधारी तलवार कुमारको दी तलवारमें यह गुणथा कि यदि मंत्र पढकर चलाई जाती तो पहाड के भी दो टुकडे हो जातेथे। कुमार वप्पाके सौभाग्यका मार्ग इससे पहिले निर्मल हो चुकाथा, उस समय जो कुछ विघ्न शेषथे वह भी इस सिद्धदत्त तलवारकी सहायतासे दूर होगए अब तो आठों सिद्धि करतलगत होगई। ×

मौर्य वंशवालेभी प्रमार कुलकी शाखा हैं. जो इससे पहिले मालवके सिंहासन पर विराजमानथे, और भारतके चक्रवर्ती राजाथे, जिस समय कुमार वप्पाने चित्तौरमें आगमन किया उस समय इस नगरमें मौर्य वंशका मान नामक राजा राज करता था, महाराज मानने अपने आये हुए भानजेको भली भांतिसे आदर कर ग्रहण किया व अपने अधीनका सामन्त बनाय भरण पोषणके लिये थोडी भूमि दे दी। मौर्य महाराज मानसिंहके राजके समयका जो

·· उदयपुरके पूर्वमें जो पहाड़ी मार्गहै, उससे ७ मील दूर नाहरा मगरा अर्थात् [illegible]।

× राजपूत लोगोंसे ऐसा सुनाहै कि राणा [illegible] उसी दुधारी [illegible] प्रतिवर्ष किया करतेहैं। टाडसाहवको राणा कुलके प्रधान [illegible] उन्होंने इस वृत्तान्तको कहनेके समय [illegible]

"गुरु गोरखनाथ, देवदेव एकलिंग [illegible] महर्षि, हारीत [illegible] आघात कर।"

कुमारसेनके हृदयमें यह मनोविकार उत्पन्न हुआथा; पश्चात् उसकीही अनुपम शूरता और गुणावलीसे मोहित हो उनलोगोंने सन्मानके सहित उसकोही अपना सरदार बनाया। राजका लालच कैसा भयंकरहै! इसकी मोहिनी मायासे मोहित होकर मनुष्यको हिताहितका ज्ञान नहीं रहता। धर्म ज्ञान जाता रहताहै और कृतज्ञताके मस्तकपर लात मारकर उपकारी मित्रका सत्यानाश करनेमेंभी संकोच नहीं होता! दुराकांक्षी कुमार वप्पाने यही किया! जो मौर्यवंशीय राजा, कुमारका मामा था। जिसका अनुग्रहही कुमारके लिये सौभाग्यका प्रधानद्वार हुआ; जो राजा कुमारके लिये अपने सामन्तोंका विरागभाजन हुआ; कुमार वप्पाने उस मामाके समस्त उपकारोंको भूलकर—छातीके आगे पत्थर रखकर उसकोही सिंहासनसे उतार दिया और उन विद्वेषयुक्त सामन्तोंकी सहायतासे चित्तौरका सिंहासन प्राप्त किया। भट्टकविगणोंने यहांपर वर्णन कियाहै कि:—"वप्पाने मौर्य राजाके समयसे चित्तौरको छीन लिया, और उसदेशके "मोर" अर्थात् मुकुट स्वरूप होगये। चित्तौरके सिंहासनपर बैठतेही सर्व साधारणकी सम्मतिसे "हिन्दू सूर्य" "राजगुरु" और "चकवै" सार्वभौम यह तीन पदवी धारण की।

महाराज वप्पाकी बहुतसी संतान थीं। उनमेंसे कुछ संतान तो अपने पितृपुरुषोंके प्राचीन राज सौराष्ट्र काठियावाड क्षेत्रमें चलीगई, और समयके अनुसार महा पराक्रमशाली हुई, आईन "अकबरी" में देखा जाताहै कि उनके मध्यमें पचास हजार वीर तो अकबरके समयमें अत्यन्तही प्रभावशाली होगयेथे। वप्पाके दूसरे कुमारोंमेंसे पांच पुत्र मारवाड़ देशमें जा बसे वहां उनका गोहिल नाम हुआ, परन्तु थोड़ेही दिनोंमें निकाले जाकर वह लोग इस समय वल्लभीपुरके उजाड़ मैदानमें अतिदीन भावसे समयको व्यतीत कर रहेहैं. आज वे लोग अपने गौरव कुलगौरवको भूल कर अरबवालोंके साथ बनिज व्योपार करतेहैं।

महाराजाधिराज वप्पाके अंतिम जीवनका वर्णन सबसे अधिक अद्भुतहै। इस अद्भुत वृत्तान्तको गुप्त रखनेकेलिये उनके जातिवालोंकी बहुतसी अभिलाषा रहतीहै। जिस समय महाराज वप्पाकी आयु पचास वर्षके लगभग हुई उस समय वे अपनी मातृभूमि संतान सन्तति और इष्ट मित्रोंको छोड़कर खुरासान राज्यमें चलेगये और उन देशोंको जीतकर वहांकी बहुतसी म्लेच्छकन्याओंसे विवाह किया उनके गर्भसेभी महाराजके बहुतसे पुत्र और कन्या हुई। -

---

यह बात सत्यहै, प्राचीन [illegible]
सम्वत् ८१० [illegible] । [illegible]

है, तथापि अनुसन्धान करनेपर उनमेंसे बहुतसा ऐतिहासिक वृत्तान्त इकट्ठा होसकता है। खलीफालोगोंके समयमें तो हिन्दुस्थानपर मानो साढ़सातीही आगईथी। कितनेही अभागे राजा गद्दीसे उतारे गए, कितनेही जानसे मारडाले गये उस काल चारों ओरसे मार २ की ध्वनि आतीथी, चारों ओरसे प्रजा इसप्रकार हाय २ करतीथी कि जिसको सुनकर कलेजा थर्राने लगताथा। जिस कठोर मुसलमान वीरने भारतवर्षमें यह द्वन्द्व मचादियाथा। हिन्दु इतिहास ग्रंथोंमें उसका वर्णन अनेकानेक प्रकारसे पाया जाता है। उस हिन्दुविद्वेषी यवनको कहीं दैत्य कहीं राक्षस और कहीं पर जादूगरके नामसे पुकाराहै। कभी वह सिन्धुराज्यसे आया, कहीं जहाजपर चढ़कर समुद्रके मार्गसे आया; मूल बात यह है कि:—भारतकी शान्तिको नाश करनेवाला वह प्रचंड वैरी कौन था, उसके विषयमें अनेक प्रकारके भिन्न भिन्न मत सुने जाते हैं।

गिह्लोट चोहान सोर और जादवलोगोंके इतिहास ग्रंथोंमें पाया जाताहै कि, सम्वत ७५० से ७८० तक सन् ईस्वी ६९४ से ७२४ तक उपरोक्त नृपति कुलके राज्यमें महाकुलाहल मचाथा। परंतु यह नहीं जाना जाता कि, यह कुलाहल किसने मचायाथा। कहते हैं कि हिजरी ७२ सम्वत् ७५० में एक यदुवंशीय भट्ट राजाने अपनी राजधानी शालपुरसे निकाले जाकर शतद्रु नदीके पूर्व पारको मरुभूमिमें आनकर आश्रयग्रहण किया। जिस शत्रुने उस राजाको इस शोचनीय दशाको पहुंचायाथा, भट्टग्रंथोंमें उसका नाम फरीद लिखाहै, और फिर इधर देखा जाता है कि अजमेरके चौहानराजा माणिकरायनेभी ठीक इसीही समय शत्रुओंसे घिर जानेपर अपने देशकी रक्षा करनेकेलिये समरभूमिमें प्राण दियेथे।

पंजाबदेशका सिन्धुसागरनामक दुआबा उस समय गोरीवंशके पालि राजाके अधिकारमें था। और हारस कुलके पूर्व पुरुषगण सोरठ देशमें रहतेथे। सो दोनों अपने राज्यसे एकही समयमें निकालेगये। जिस शत्रुने इनको राज्यसे दूर किया,

है, कि सम्वत् ७७० सन् ७१४ में चित्तौरके मध्य मौरमान राजाका अधिकार था। राणाके राजभवनमें भट्टग्रंथ रक्खेहैं, वे स्पष्टाक्षरसे प्रकाशित करतेहैं, कि वप्पारावल महाराजके भानजे थे। पन्द्रहवर्षकी उमरमें वप्पारावलके मामाने भानजेको अपने सामन्तोंमें नियत कियाथा। महाराज वप्पाने सरदार लोगोंकी सहायतासे महाराज मानको गद्दीसे उतार चित्तौरपर अधिकार किया। अब इन अमेलमतोंमेंसे किसको ठीक समझकर ग्रहण किया जावे? इसके ग्रहण करनेसे यथार्थ समय कैसे हाथ आवेगा? यदि महाराज वप्पाको मौर राजाका भानजा और उसका समकालीन निर्णय किया जावे तोभी ठीक नहीं फिर क्या गहिलोत कुलतिलक वीरकेशरी महाराज वप्पाका वृत्तान्त अलीक और कल्पनाही समझा जायगा? सौराष्ट्रमें सोमनाथ* के मंदिरमें एक शिलालिपि मिलीहै उससे यह सन्देह दूर होजाताहै, उस शिलाखण्डमें वल्लभीनामक एक स्वतंत्र सम्वत्के विषयमें कुछ लिखा है, यह सम्वत् विक्रम सम्वत्के ३७५ वर्ष पीछे प्रचालित हुआ है।

ऊपर कहचुके हैं कि २०५ सम्वतमें वल्लभीपुरविध्वंस हुआथा, अब निश्चय होगया कि संवत् २०५ यही वल्लभी सम्वत् था, और यह सम्वत् वैक्रमीय सम्वतके ३७५ वर्ष पीछे आरंभ हुआ तब ३७५ में २०५ जोडनेसे ५८० विक्रम सम्वत् [अथवा सन् ५२४ ई०] में वल्लभीपुर म्लेच्छोंने विध्वंस किया।

इधर मौर्य राजाओंके शासन सम्बन्धी शिलालेखसे विदित होताहै कि वप्पा का जन्म ७७० सम्वत्में हुआ अब यदि ७७० मेंसे ५८० वर्ष घटादिये जांय तो १९० बचतेहैं, इसमें केवल एकही वर्ष जोड देनेसे भट्टकवियोंका बताया समय ठीक हो जाताहै. भट्टोंने लिखा है कि सम्वत् १९१ में वप्पाका जन्म हुआथा अब यह स्पष्टहै कि हमारे निरूपित किये समयमें केवल एक वर्षका अन्तर रहजाताहै, ऐसी अवस्थामें यही मानना होगा कि एक वर्षकी न्यूनाधिकता कोई वस्तु नहीं है।

उस भयंकर उपद्रवके समयमें अपनी स्वाधीनताकी लीला भूमि चित्तौरपुरी की रक्षा करनेके लिये जो राजालोग युद्धमें मानराजाकी सहायता करने गयेथे, उनके नाम नीचे प्रगट कियेजातेहैं ।

अजमेर, सूरत, और गुर्ज्जरके नृपतिगण इनराज अंगुत्सी उत्तर देशाधिपति हूणा, जारिजाम राजकुमार शिव, जंगलदेशका स्वामी जोहिया और अर्जालिया, शिवपत, कुहर, मालून, ओहिल और दल इत्यादि साधारण २ राजा अत्यन्त उत्साहसे अपनी सेनाको लेकर वैरियोंसे लडनेके लिये संग्रामभूमिमें गयेथे, इनके सिवाय और राजाओंके नामभी पाये जातेहैं परन्तु इससमय उनके वंश सम्पूर्णतः लोप होगयेहैं, इन समस्त राजाओंमें "देविलदेशका स्वामी दाहिरही प्रसिद्धहै ।" यद्यपि लेखकोंकी कमसमझीसे इस देविलके बदले तुवर राजधानी दिल्ली लिखी गईहै । तथापि सेनापति कासिमके युद्धवृत्तान्तसे उक्त दाहिर-राज्यकाही विशेष पता लगता है । जब सिन्धुराज दाहिरको कासिमने मार डाला तब उसके पुत्रने चित्तौरनगरका आश्रय लेकर पितृघाती यवनसे संग्राम कियाथा ।

म्लेच्छोंकी उस प्रचण्ड चढाईमें चित्तौरपुरीकी रक्षाकरनेके लिये वीरबालक राजकुमार बप्पानेही सबसे अधिक वीरता प्रगट कीथी । कारण इस कुमारकेही प्रबल विक्रमसे शत्रुगण हारकर त्रस्त और सिन्धुगढनमें भागनेको विवश हुए । बप्पाराव शत्रुओंको दबाते २ अपने पितृराज्य गजनी नगरमें पहुंचे । पहिले ही कहा जा चुकाहै कि सलीमनामक एक म्लेच्छ बादशाह उस समय गजनीमें गद्दीपर बैठा हुआ था । महाराज बप्पाने उसको सिंहासनसे उतारकर अपने भानजेको वहांका राज्य दिया, और उस मुसलमान बादशाहकी बेटीसे ब्याह करके चित्तौर चलेआये ।

इतिहासकारहैं, तब उनके गहरे रँगेहुए वृत्तान्तके भीतर यथार्थ वृत्तान्तभी सदाही मूलभावसे विराजमान रहताहै।" उनका यह ज्ञानगर्भ वाक्य इस स्थानपर भली भांतिसे चरितार्थ होताहै। कारण कि निर्जन और विध्वंस हुए आईतपुरके खँडरके साथ जिनके नामकी सूची धीरे २ मनुष्योंकी आंखसे लोप हुई जातीथी मेवाड़के भट्टकुलके मोहनकारी सघन ढकनेमें वह समस्त नाम गुप्त भावसे ज्योंके त्यों विराजमान हैं. वीरवर बप्पाके समयमेंही मुसलमान लोग सिन्धुनदके पार हो सबसे पहिले भारत भूमिमें आयेथे। हिज्री सम्वत् ९९ में खलीफा वलीदका सेनापति मुहम्मद बिनकासिम सिन्धुदेशको जीतकर भागीरथी गंगाजीके किनारे-तक चला आया था। यह वृत्तान्त अरबवालोंकी तवारीखोंमें लिखाहुआ है। यद्यपि एलफिंस्टनके ग्रंथमें मुसलमानोंके द्वारा सिन्धराजपर चढाई करनेका वृत्तान्त पाया जाताहै, तथापि उस समय जो अवस्था भारत वर्षकी थी, उसका विचारकरनेसे भली भांति विदित हो जायगा. कि उसकाल भारत वर्षके अनेक देश विदेशीय शत्रुकुलके आक्रमणसे तित्तर बित्तर होगयेथे, अजमेरके राजा माणक-रायका राज्य ईस्वी आठवीं शताब्दीके मध्यमें शत्रुओंके द्वारा उजाड़ा गयाथा, कहतेहैं कि वह शत्रुगण नावपर सवार होकर आये और अंजननामक स्थानमें उतरेथे। यद्यपि उस आक्रमण कारीको कोई कासिम समझनेमें सन्देह करे तो सिन्धुराज दाहिरका वृत्तान्त पाठ करनेसे वह सन्देह दूर हो जायगा। अबुलफ-जल कहताहै कि हिज्री ९५में (सन् ७१३ई०) में कासिमने दाहिर राजाको मारा और राज्यको विध्वंस कियाथा राजाका बेटा चित्तौरमें भागकर सांगराजाके पास चलागया।

बप्पासे लेकर शक्तिकुमारके बीचतक (दो शताब्दियोंमें) चित्तौरके सिंहासन पर दश राजा बैठे इनमें चार बड़े वीर और प्रतापी निकले इन दोनों शताब्दियोंके बीचमें जो चार धुरन्धर राजा उत्पन्न हुए उनको लेकर मानो चार प्रधान युगोंकी अवतारणा हुई है पहले कनकसेन सन् १४४ ई०में दूसरे शिलादित्य सन् ५२४ ई०-इन्हीके समय बल्लभीपुर विध्वंस हुआथा तीसरे बप्पा सन् ७२८ में चौथे शक्तिकुमार सन् ९६८ में।

"कन्नौजसे राठौर, छोटियालासे बल्ल, पीरनगढ़से गोहिल, जेसलमेरसे भाटी लाहौरसे बुस"

"रनीजासे संकला, खरलीगढ़से शिहद, मंडलगढ़से निकुम्भ, राजोरसे बड़गूजर, कुरनगढ़से चंदेल"

चढ़ाई हुईथी। महाराज खुमानने सन्‌८१२ ई०से लेकर सन्‌ ८३६ ई०तक राज कियाथा।

भारतका इतिहास इस समय घोर अंधकारसे ढकाहुआ था। अतएव उस अंधकारमय अतीतकालके गर्भमें प्रवेश करके भारतके ऐतिहासिक वृत्तान्तका उद्धार करना कठिन कार्यहै। तथापि भट्टकवि, आईनअकवरी और फरिश्ता आदि जो ग्रंथ इस अंधकारमें साधारण उजालेकी समान विराजमान होरहे हैं. हम उनकीही सहायतासे अपनी सामर्थ्यके अनुसार मेवाड़के इतिहासका उद्धार करेंगे अतएव इस समय पहिले महाराज वप्पाकी सन्तान सन्ततिका वर्णन करतेहैं।

पहिलेही कहा जा चुकाहै कि गिह्लोटकुलमें सर्व समेत चौवीस शाखाएँ हैं। इन चौवीस शाखाओंमेंसे कुछ शाखायें महाराज वप्पासे उत्पन्न हुई। चित्तौर जीतलेनेके कुछ दिन पीछेही महाराज वप्पा सूरतदेशमें गये सूरतदेशके निटक जो बंदरद्वीपहै उस कालमें वहां पर इस्फ़ुगुल * नामक राजा राज करता था इस राजाके एक बेटी थी महाराज वप्पाने उसके साथ विवाह किया और उसको लेकर चित्तौरमें आये। उस समय देवबन्दरमें बाणमाता नामक एक मूर्त्ति थी। नवीन दुलहनके साथ महाराज वप्पाजी उस बाणमाताकी पवित्र प्रतिमाकोभी साथही राजधानीमें ले आये। उन्होंने उस पवित्र मूर्त्तिको जिस मन्दिरमें स्थापन कियाथा, आजतकभी वह मूर्ति वहांपर वैसेही विराजमान होरहीहै। भगवती बाणमाता आजभी मेवाड़के इष्टदेव भगवान एकलिंगके साथ समान पूजाको प्राप्त करती हैं, देवबन्दरके राजा इस्फ़ुगुलकी बेटीके गर्भसे महाराज वप्पाके अपराजितनामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके पहिले महाराजने द्वारकाके निकट बसे हुए कालीबावनगरके परमारराजाकी बेटीसेभी विवाह किया था, उसके गर्भसे असिलनामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ. जो सबसे बड़ा था। परन्तु पिताके राज्यको छोड़ कर मामाके यहां रहता था इस कारण चित्तौरका राजमुकुट इसको प्राप्त नहीं हुआ. छोटा सौतेला भाई अपराजितही राजसिंहासनपर बैठा × असील यद्यपि पिताके राज्यको प्राप्त नहीं करसका,

निर्दोष ब्राह्मणोंके रुधिरसे अपने हाथ कलंकित करके जिस सिंहासनपर अधिकार कियाथा उसको अधिक दिनतक न भोगसका। शीघ्रही मंगलनामक पुत्रने उसे मारडाला, और अपने आप गद्दीपर बैठा। यद्यपि साधारण सिंहासनकी प्राप्तिके लिये मंगलने अपने हाथसे पिताको मारा, परन्तु उस सिंहासनको अधिक दिन अधिकारमें न रखसका, मेवाड़के सरदारोंने मिलकर उसे गद्दीसे उतार दिया। मंगल राज्यसे निकालाजाकर उत्तरमरुके मैदानमें जा बसा, और वह लोदड़वानामक स्थानपर अधिकार करके उसी स्थानपर अपने वंशधरोंको बसा दिया। उस लोदड़वा पट्टनमें उनके वंशवाले मांगलीय गहिलोत नामसे पुकारे जातेहैं।

योंकी सेना म्लेच्छोंके साथ घोर संग्राम करने लगी। मुसलमानोंने बुरे मुहूर्तमें चित्तौरपुरीको घेरा था, बुरेदिन उन्होंने गर्वके मदसे मतवाले होकर महाराज खुमानसे कर मांगा था। आज उन्होंने अपने इस अपमान करनेका फल भली भांतिसे पा लिया। क्षत्रियोंने ऐसी बहादुरी दिखाई कि बहुतसे मुसलमान खेत रहे। जो बचे वह अपने प्राणोंको लेकर इधर उधर भाग गये। परन्तु तोभी उनका पीछा न छूटा विजयी खुमानने पीछा करके उनके सेनापति महमूदको पकड़ लिया और उसे चित्तौरमें ले आये परन्तु यह महमूद कौनसा मुसलमान वीर था? इस समरसे दो शताब्दी पीछे जो प्रचंड मुसलमान वीर गजनीके पहाड़ीदेशसे भारतवर्षपर चढ़ आया था, उसके नामके साथ इसके नामका मेल होताहै, तथापि क्या एक नाम एकही आदमीका हो सकता है? इस प्रश्नका उत्तर देनेके लिये भारतवर्षके साथ अरबदेशके उस समयका समय निर्णय किया जाताहै। किस बुरे क्षणमें भारतवर्षके लाल जवाहर विदेशियोंकी खटकती आंखोंसे देखे गये, इस धन रत्नके लोभसे यह लोग यमदूतोंका भेष बनाकर भारतवर्षमें आये और वीरमूर्ति धारण कर भारतके मालखजानेको लूटने लगे। भारतसंतानगणको इन्होने बडी २ कठोर पीड़ा दीहै-भारतके नगर ग्रामोका सत्यानाश कर डाला है। जिस समयमें खलीफा उमर बुगदादके सिंहासनपर विराजमान था, उस समयमेंही मुसलमानलोग सबसे पहिले भारतवर्षमें आये। उस समय वाणिज्यके लिये भारतके दो स्थान विख्यात थे, गुर्जर और सिन्धुराज्य। इन दोनोंमें सम्पत्तिशाली राज्योंके सौदागरी मालको अधिकारमें करनेके लिये खलीफा उमरने टाइग्रेसनदके किनारेपर बसोरा शहर बनाया। भारतके बनज ब्योपारकी पूरी उन्नति देखकर उसकी दुरभिलाषा धीरे २ बढ़तीही गई. सौदागरी मालके बदलेसे वह दुरभिलाषा पूरी न हुई इस सुवर्णकी उत्पन्न करनेवाली भूमिमें बड़े मोलके रत्न और बनज ब्योपारकी सामग्री किस प्रकारसे उत्पन्न होतीहै इसको देखनेके लिये अब्बुलआयसनामक सेनापतिके साथ एक बड़ीभारी सेना भारतवर्षकी ओरको भेजी गई। अब्बुलआयस अपनी सेनाको लेकर सिन्धुराज्यमें आया। परन्तु तबतक कभी भारतवासियोंका वीर विक्रम शान्त नहीं हुआथा। म्लेच्छोंके दुष्टपन करनेसे अल्पकालमेंही अगेरनामक स्थानमें आर्योंके विक्रमकी आग प्रचण्ड तेजसे सुलग उठी। आयस उस आगमें तिनकेकी समान जलगया उसकी आत्मा और प्राण एकही साथ बुझगई परन्तु आयसके मरनेसे भी खलीफाकी दुराशा मिट सकतीथी। उसके मरनेपर खलीफाका उस मानसर्दीसे छूटा। और खलीफा

देश किस हिंदूराजाके अधिकारमें था। उसका विचार करना आवश्यकीय ज्ञात होताहै। अतएव महात्मा चन्द्रभट्टके प्रसिद्धग्रंथसे उसका यथार्थ अनुवाद किया जाताहै, कि— शरीर चौलुक्य राज भोलाभीम पाटननगरमें स्थितहैं। आबू पर्वतपर प्रमारवंशीय जित, रणक्षेत्रमें भुवनत्रयको समान अचल अटलहैं. मेवाड़में समरसिंह हैं. जो अत्यन्त पराक्रमीसेभी कर ग्रहण करतेहैं. और दिल्लीश्वरके शत्रु कठोर यवनोंके मार्गको रोकनेवाले लोहेकी शलाकाको समान विराजमान हैं. मरुभूमिके प्रतापस्वरूप अपने बलसे बलवाना नित्य तेजवानमुकुन्द राज नाहर इनसबके मध्यमें विराजमानहैं. दिल्ली नगरीमें सबके स्वामी महाराजाधिराज अनंगपाल स्थितहैं. इनकी आज्ञाको शिरपर धारण करके, मंडोड़. नागोर. सिंधु. जलावन और इनके निकट बसेहुए दूसरे देश जैसे. पेशावर. लाहोर. कांगड़ा. और इनके पर्वतीराजालोग तथा काशी प्रयाग और देवगिरिके राजालोग अतिविनीतभावसे आज्ञापालन करनेके लिये तैयार रहतेहैं। सीमरके अधीशगण इनके प्रचंड पराक्रमके भयसे सदा विशेषही शंका करते रहतेहैं। दिल्लीके पिछले तुवर सम्राटके राजत्वकालमें यह समस्त हिन्दूराजालोग भारतके अन्यान्य स्थानोंमें अपना राज करतेथे महाराजा अनंगपाल उन दिनोंमें इन सब राजाओंके शिरमौर थे।

मान सेनापतिके पंजेमें फँसकर उस राजाको अपना राज्य धन, वीर गौरव वरन प्राणोंतककी आहुति देनीपड़ी थी। विजयी विनकासिमने जय और लूटकी सामग्रीके साथ क्षत्रियराज्यकी दो लावण्यमयी कन्याओंकोभी खलीफाके पास भेंटकी भांति भेजा परन्तु इन दोनों वीर वालाओंसेही विनकासिमका नाश हुआ। आईन अकवरी और फरिश्ता इतिहासमें यह लिखाहै, कि जव वह दोनों क्षत्रियकुमारी दमिश्कनगरमें पहुंचीं तो खलीफाने उनके रूप लावण्यकी वड़ी प्रशंसा सुनी उसका हृदय जो कि विजयकी प्राप्तिसे फूल रहाथा दूना फूलगया। उन दोनों सुन्दरियोंको अनुपम लावण्य राशिको भोग करनेके लिये उसके हृदयमें पापकी प्यास उत्पन्न हुई। विहार भवनमें आकर खलीफाने वड़ी राजकुमारीको अपने सामने लानेका हुक्म दिया, शीघ्रही आज्ञाका पालन हुआ क्षत्रियकुलकी कमलिनी कामसे उन्मत्त हुए हाथीकी समान निर्दई यवनके सामने लाई गई!

सहायरहित-निराश्रय-आनाथा राजपूतवाला म्लेच्छकी विलास भोग होनेके लिये कठोर स्थानमें भेजी गई! कौन रक्षा करे? सिन्धुराज दाहिरके पवित्र कुलको अनन्त कलंकसे कौन वचावे? सत्यानाश हुआही चाहताहै-राजपूतोंका सन्मान अभिमान आज सव जायाही चाहता है!-वड़ी राजकुमारीने अपने सतीत्व (धर्म) रत्नकी रक्षा करनेका और कोई उपाय न देखकर चतुराईसे काम लिया। खलीफाके सामने आते ही वह रोने लगी और कहा, "कि शाहन्शाह सलाम! आप मुझको न छुऐं यह जिस्म आपके दस्त मुवारकसे छुआ जानेके काविल नहीं है, नालायक कासिमने जवरदस्ती करके पहिलेही हम दोनोंकी इज्जत ले लीहै" इस अद्भुत वातको सुनकर खलीफा आगवबूला होगया, उसके नेत्रोंसे चिनगारियां निकलने लगीं. उसने शीघ्रतासे कासिमके लिये कठोरदंडकी आज्ञा दी "कासिमको जीताहुआही दुर्गंधवाली कच्ची खालमें भरवा कर यहांपर ले आओ" वहुत जल्दी वादशाहकी आज्ञाका पालन हुआ। हतभाग्य कासिमने खलीफाके क्रोधाग्निमें पडकर अपनी प्रतिष्ठा और जान दोनोंको खोदिया. पवित्र हृदयवाली राजपूतसतीने चतुराईसे अपनी पवित्रताको वचाया चक्रवर्ती यवनराज इसभेदको नही जानसका।

इतिहासग्रंथोंमें इसका कोई वर्णन नही पाया जाताहै कि उसीसमय घटनाके पीछे मुसल्मानोंने भारतमें आकर हिंदू राज्यको अपने अधिकारमें लिया। केवल इतनाही पाया जाता है कि खलीफेके पीछे [illegible]

करतेथे. इस कारण बुढापेमें उनकेही हाथमें अपने विशाल राज्यका भार सौंप कर इस लोकसे चले गये।

जयचंदका आशा भरोसा गया. वह जन्मसे यह चाहताथा कि दिल्लीका सिंहासन मुझे मिले, न्यायसे इस राज्यके मिलनेका जयचंदको अधिकार भी था क्योंकि वह बड़ी पुत्रीसे जन्मा था परन्तु भाग्यके आगे कोई क्या करसकता था. पृथ्वीराजकी अवस्था ८ वर्षकी थी तथापि जयचंदको दिल्लीका सिंहासन न मिला. उसको पृथ्वीराजनेही पाया, यह अन्यायका पक्षपात जयचंदसे सहा नहीं गया. उसके हृदयमें डाहकी दारुण आग जलने लगी, इस [illegible] ज्वालाके बुझानेमें उसने आपही अपने पांवमें कुल्हाडी मारली और समस्त भारतको गारत करडाला, महाराज पृथ्वीराज दिल्लीके सिंहासनपर बैठे, परन्तु जयचंदने उनके सार्वभौमत्वको अंगीकार नहीं किया. वरन वह इसबातकी तयारी करने लगा कि मैंही भारतका सार्वभौम सम्राट होजाऊं. मन्दोरका परिहार राज्य और अनहलवाडा पट्टनके राजा चौहानकुलके पुरुषोंसे शत्रु थे. इस भीतरी झगडेके समय उन्होंने जयचंदका पक्ष अवलम्बन करके पृथ्वीराजके विरुद्ध उसको अत्यन्तही उभारा. यद्यपि महाराज पृथ्वीराज इस बातको जानगयेथे. तथापि पहिले उपरोक्त दोनों राजाओंसे कुछ न बोले, परन्तु फिर पुरीहार राजने महाराजका ऐसा अपमान किया कि इन्होंने उसके विरुद्ध तलवार पकड महाराज पृथ्वीराजके सिंहासनपर [illegible]

भुवन विदित नरपति शिरमौर शार्लिमानके समकालीन खलीफा हारूं-रशीदने अपने पुत्रोमें राज बांटनेके समय दूसरे पुत्र अलमामूनको, खुरासान, जबूलिस्तान, काबुल सिंधु और भारतवर्ष देदिया था, पुनः खलीफाके मरनेके कुछदिन पीछे मामूनने अपने बड़ेभाईको गद्दीसे उतारा, और सन ८१३ ई०में आप खलीफा बनबैठा, मामूनने ८३३ ई० तक राज भोगा इसके शासनमें महाराज खुमान चित्तौरके सिंहासनपर विराजमान थे उदयपुरके राजभवनमें जो भट्टग्रंथ रक्खे हैं उनमें देखाजाता है कि खुरासानाधिपति महमूदने जबूलिस्तानसे आकर चित्तौरपर चढ़ाईकी, इसचढाईका जो समय निरूपित हुआहै उसके बीच खलीफा लोगोंके इतिहासग्रंथमें खुरासानके किसी महामूदका नाम नहीं पाया जाता इससे ज्ञात होताहै कि लिखनेवालोंने धोखेसे मामूनके बदले महमूद नाम लिखा दियाहै।

इस घटनाके पीछे फिर २० बीस वर्षतक भयंकर पराक्रमी मुसलमानोंने फिर भारतवर्षमें प्रवेश नहीं किया,इस समय उनका प्रभाव धीरे धीरे तेज हीन होनेलगा, भारतवर्षके जिन देशोंपर उन्होंने अधिकार कियाथा उनमेंसे सिन्धुदेशको छोड़-कर और सब देश उनके हाथसे निकलगये उस समय हारूरसीदका पोता मुता-विकेल बुगदादकी गद्दीपर बैठा उस समय ईसवी सन् ८५० था, मुताविकेलके मरनेपर उसके बडे बूढोंकी पुरानी बादशाहत खोखली जड़वाले शालके वृक्षके समान बारंबार कम्पायमान होनेलगी, इस राज्यके अधःपतनके समाचारको पढ़कर जी उमड़ आताहै जिस बुगदादके खलीफाने अपनी वीरतासे किसी समय यूरूप और एशियामें हलचल मचा दीथी वह बुगदाद साधारण सौदागरी वस्तु-ओंकी समान खुले आम नीलाम करदीगई जिसने अधिक दाम दिये उसीने खरीदी।

जिस दिन बुगदादकी यह शोचनीय दशा हुई उसी दिनसे खलीफाओंका भारतवर्षसे रहा सहा सम्बन्धभी टूट गया, तबसे भारतभूमिने मुसल्मानोंके आक्र-मणसे कुछ दिनको छुट्टी पाई। परन्तु दुर्भाग्यसे यह छुट्टी बहुतही थोड़े दिनोंकी हुई कारण कि भारतके भावी नाशका बीज बोनेके लिये शीघ्रही खुरासानका शा-सन करनेवाला *सुबुक्तगीं अपने दल बल सहित आपहुंचा, ३६० हिजरी सन [illegible]

---

* टाडसाहबने कहाहै सुबुक्तगीके बापका नाम [illegible] था, परन्तु [illegible] मिगप्रभृति इतिहास वेत्ताओंके मतका अवलम्बन कर [illegible] वह अलिप्तगीका मोल लिया हुआ गुलाम था तुर्किस्तानके [illegible] फिर उसके अच्छे गुण देखकर उसे बड़े ओहदेपर [illegible] फरिश्ता [illegible] कहाहै कि अलिप्तगीने [illegible]

शत्रुओंके हाथमें पडगई। आज नन्दनवन श्मशान बनगया !! आज इसी भार-
तमें–परशुराम, कार्त्तवीर्यार्जुन, अर्जुन, भीम, भीष्म, द्रोण, कर्ण इत्यादि, प्रातः
स्मरणीय भारत वीरगणोंकी माता घोर कठोर जंजीरोंसे जकडी पडीहै।

महाराज पृथ्वीराजके प्रचंडशत्रु पाटन और कन्नोजके दोनों राजा महाराज स-
मरसिंहसेभी शत्रुता करतेथे। इस कारण महाराज समरसिंहकोभी खड्गधारण करना
पडा। इसके अतिरिक्त अपने प्यारे मित्र पृथ्वीराजको उन्होंने कई बार सहायता दी
थी। नागौरकोटके किसी स्थानसे दबेहुए ७०००००००सातकरोड रुपये निकले।
कहतेहैं कि यह खजाना प्राचीन कालसे वहां गडाहुआ था, महाराज पृथ्वीराजने जब
उन रुपयेको लिया तो कन्नोजके राजा और पाटनके राजाके मनमें अत्यन्त शंका
उत्पन्न हुई। एक तो महाराज पृथ्वीराजकी सेनाही बहुत बडी है, दूसरे उनको यह
बडी भारी सम्पत्ति मिली अतएव–उनके ऊपर जय पानेकी आशा किस प्रकारसे
की जाय इस शंकाके फेरमें पडकर उक्त दोनों राजाओंने पृथ्वीराजके प्रतापसूर्य-
को रोकनेके कारण बादशाह शहाबुद्दीनसे सहायता चाही। जिस दिन इनके
मनमें यह सत्यानाशी कल्पना उत्पन्न हुई उसीही दिन भारतके सौभाग्य आका-

समय यवनराजकी शिरमौर मानीगईथी आज उसही गजनीकी घोर दुर्दशा होरहीहै मानो उस खँडहरमेंसे प्रकृति ऊँचे और गंभीर स्वरसे यह वचन कहरहीहै कि मनुष्यका जीवन कितने दिनके लिये है ? अखर्व गर्व कितने दिनके लियेहै ।

हिजरीकी पहिली शताब्दीसे लेकर चौथी शताब्दीके शेषतक खलीफा लोगोंके साथ भारतवर्षके राजाओंका जो अल्पवर्ण पायागया, उसकी संक्षेप समालोचना कीगई । आवश्यकता समझकर हम अल्प वर्णनसे वहुत दूर चले आयेथे, इस समय फिर अपने मौलिक वृत्तान्तपर आतेहैं । पहिले कहा जाचुका है कि मौर्यवंशी चित्तौरनाथ महाराज मानसिंहके राज्यसमयमें म्लेच्छोंने उनके राज्यपर चढ़ाई कीथी, और उसही समयसे वीरश्रेष्ठ महाराजाधिराज वप्पारावलकी उन्नतिका आरंभ हुआथा । ऐसा ज्ञात होताहै कि इजीद इन्हीं म्लेच्छोंका अगुआथा । अथवा महम्मद विनकासिमने सिन्धुदेशसे आयकर मानराजापर चढ़ाई कीथी । इस वातका निर्णयकरना वहुत कठिन जान पड़ताहै, कि कौनसे मुसलमान वीरने चित्तौरपर चढाई कीथी, क्योंकि मुसलमानी तवारीखोंमें इस वातका कोईभी जिकर नहीं पाया जाता । जिन लड़ाइयोंमें खलीफाके लोगोंने अथवा उनके सिपहसालार लोगोंने हिन्दुओंपर जो विजय प्राप्त कीथी मुसलमानी तवारीखोमें केवल उन्हींका वर्णन लिखाहै. परन्तु खलीफाके सेनापति और विद्रोही लोग जो वहुधा भारतवर्षपर चढ़ आया करतेथे उनकाभी कोई वर्णन इन तवारीखवालोंने नहीं किया । अपनी जातिवालोंकी अप्रतिष्ठा या निरादर छिपानेके लिये कदाचित उन्होंने उनके हालातोंको न लिखा हो । उन संग्रामोंका वृत्तान्त केवल एक भट्टलोगोंके काव्यग्रंथोंमेंही पाया जाता है * यद्यपि वह सव वहुतही मिले झुले लिखे गये

राजपूत सिपाहियोंकी मारनेमेंही मुसल्मान [illegible] उनका [illegible] साथ इनके सामने हुए, दोनों सेनाओंमें घोर संग्राम होनेलगा। परन्तु इन संग्राममें किसीकी जय पराजयके कोई लक्षण न दिखाई। इस तरहसे [illegible] बड़े संग्राम हुए, परन्तु विजय लक्ष्मी किसीकी अंकशायिनी न हुई। इस ओर महाराज पृथ्वीराज [illegible] आनन्दसे [illegible] मिलने आमिले। इसप्रकार दोनों वीरोंका प्रचंड विक्रम एक होकर भयंकर [illegible] हुआ। इस भयंकर विक्रमाग्निमें असंख्य मुसल्मान तिनकेकी समान जलगये।—मुसल्मान वीर शहाबुद्दीन बड़ी कठिनाईसे अपने प्राण लेकर भागा। उनके सेनापतिको विजयी राजपूतोंने कैद करलिया।

महाराज पृथ्वीराजकी जीतहुई। और समस्त भारत [illegible]। मुसल्मानोंकी जमीनमें जो गड़ाहुआ खजाना उनको मिलाथा, उसका आधाअंश महाराज पृथ्वीराजने समरसिंहको देदिया। परन्तु समरसिंहने स्वयम् उसको ग्रहण न करके अपनी सेनामें बांटदिया। महाराज पृथ्वीराजने अपनी सेनामें औरभी [illegible] द्रव्य बांटा। फिर महाराज समरसिंह विदा लेकर अपनी राजधानीमें चलेगये।

इस प्रकारसे कई वर्ष बीतगये। [illegible] जीतकर पृथ्वीराज और समरसिंह कुछ कालतक सुख भोगतेरहे, इधर [illegible] दिन [illegible] नहीं होनेवाले कालरात्रि करालरूपसे आनापहुंची। पहलेसे इधर [illegible] महाराज पृथ्वीराजने विचारा था कि इसी [illegible] साथ [illegible] दिन [illegible] अपना निश्चिन्तासे [illegible] साथ [illegible] दिन [illegible] व्यतीत करेंगे। परन्तु विधिके [illegible] दिन [illegible] होनेलगा। कालानुसार समय आगया। महाराज पृथ्वीराजसे [illegible] जानकर शहाबुद्दीन असंख्य सेनाके साथमें फिर [illegible]।

भट्टलोगोंने उसको दानवके नामसे पुकाराहै उसका नाम "गैर-आराम" अर्थात् विश्राम होता था। कहतेहैं कि गंगोत्रीके निकटके "ग़ज़लिवन्द गजारण्यराय" नामक किसी पहाडी देशसे वह असुर भारतवर्षमें आयाथा तथा पट्टन नगरकी प्रतिष्ठा करनेवालेका पूर्व पुरुषभी ठीक उसही भयंकर समयमें सूरतके अनुकूलमें वसेहुए द्वीपवन्दरसे दूर कियागयाथा। आश्चर्य है! एक समयमेंही भारतके भिन्न २ देश किस विदेशीकी आखोंमें खटकने लगेथे। किसने भारतमें यह महाउपद्रव मचाकर भारतसन्तानोंको शान्तिसुखसे अलग कियाथा? हिन्दू इतिहासकारोंकी लिपिसे इस वातकी मीमांसा नहीं होसकती? मुसलमानी तवारीखोंसे ज्ञात होताहै कि ईजिद ठीक इस समयमेंही खलीफाका प्रतिनिधि वनकर खुरासान राज्यमें रहता था, तथा खलीफा वलीदकी विजयिनी सेना गंगाजीके किनारेतक वढ आईथी, इसके सिवाय इस समयमें और किसी मुसलमान वादशाहकी चढाईका वर्णन किसी ग्रंथमें नहीं पायाजाता। इससे यह ज्ञात होता है, कि ईजिदकासिम अथवा वालीद इनमेंसे, किसीके प्रतिनिधि या सिपहसालारने भारतवर्षमें चढ़कर इस उपद्रवको मचायाथा, परन्तु मुसलमानोंकी कुल तवारीखोंमेंही ईजीद और कासिमकीही विशेष २ चढाइयोंका वृत्तान्त पाया जाताहै अतएव निस्संदेह यही अवगत होताहै कि ईज़िदने या कासिमने भारतवर्षके राजाओंको सतायाथा, मौर्यवंशीय चित्तौरनाथ मानराजाकी सहायता करनेकोलिये जिनराजाओंने तलवार पकडीथी उनके नामोंको पढनेसे हमारा लिखना सत्यही जानपडेगा। महाराज मानने मौर्यकुलमें जन्म लियाथा, उनका विशेष वृत्तान्त पहिले ही लिखा जाचुकाहै। मौर्यकुलके मूलवंशसे उत्पन्नहुए प्रमार राजालोगही उस समय भारतवर्षके चक्रवर्ती राजाथे। भट्टग्रथोंमें लिखाहै कि वह राजालोग कभी२ उज्जयिनी में अपनी राज्य पीठको स्थापित कियाकरतेथे। *

---

* मौर्यराजाकी राज्यसभामें जो सामन्त वर्तमान रहतेथे उनका वृत्तान्त पाठ करनेसे जाना जाताहै, कि महाकवि चन्द्रभट्टने जो उन सामंतोका वर्णन कियाहै जो कि रासप्रमारके अधीनमेंथे। वह समस्त सत्यहै। कारण कि प्रमारगणही उस कालमें भारतके चक्रवर्ती राजाथे। सिल्युकसके समयवाले ग्रीकइतिहास लेखकोंके ग्रथ पढनेसे इस वाक्यकी सत्यता भली भांतिसे विदित होजाती। कहतेहैं कि ग्रीकके महाराज सिलीयुक्सने मौर्यवंशीय महाराज चंद्रगुप्तके साथ अपनी बेटीका व्याह करके उनके साथ गाढी मित्रता करलीथी। ग्रीकके इतिहासग्रंथोंमें यह बात साफ २ लिखी हुईहै कि महाराज चन्द्रगुप्तके आधीनमें बहुतसे ग्रीक सिपाही नौकरी करतेथे।

न्यौछावर करदेतेहैं; जो गौरवके साथ मृत्युको आलिंगन करतेहैं; वे मरकरभी सदैव जीवित रहतेहैं। मैं अल्पबुद्धिवाली स्त्री आपको क्या समझाऊं? आप स्वार्थको मनमें स्थान न दीजिये। और ऐसा उपायभी कीजिये कि जिससे मृत्युलोकके बीच आपका नाम अमर होजाय। स्वामी! इस कराल करवालको लेकर शत्रुओंका संहार कीजिये मेरे लिये सोच न कीजिये। अभीसे ऐसे कार्यके करनेमें यत्न करतीहूं कि जो आपकी अर्द्धाङ्गिनीके योग्य होगा।"

महाराज पृथ्वीराजने सभामें आकर भट्टकविको बुलाय समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। भट्टने उसका भावार्थ कहा। और राजकुल गुरुने एक जयकवच लिख दिया। दिल्लीश्वरने उस मंत्रपूर्ण कवचको अपनी पगड़ीके भीतर रक्खा। इस और नवग्रहको प्रसन्न करनेके लिये सहस्र कलशोंमें भराहुआ उत्तम और जल दूध चन्द्रदेवताको पानार्थ दिया गया।

दश दिग्पालोंके लिये दश भैंसे उत्सर्ग किये गये, दीनहीन मनुष्योंको चांदी सोना दिया गया, परन्तु ईश्वर या इनको उत्सर्ग करके अथवा दान ध्यान करके क्या कोई कभी होनहारकी गतिको रोक सकता है?

"यदि रोकसकता तो नल और पाण्डवोंको वह कठोरविपत्ति कभी न भोगनी पड़ती।"

उस विभागके अनुसार उसके दूसरेबेटे मामूको खुरासान, सिन्धुदेश और समस्त भारतीय यवनराज्य दियागया । उक्त मासूं जब कि खुमानके समयमें था, तव विशेष विचारकर देखनेसे निश्चय ज्ञात होजायगा कि उसके वदले नकल करनेवालोंने महमूद नाम लिखाहै । इतिहासमें उससमयका लिखाहुआ वहुतही थोडा वर्णन पाया जाताहै । जो कुछ पायाभी जाताहै,वह नीरसहै क्योंकि उसमें थोडे हिन्दूराजाओंके नामकी सूची पाई जाती है ।

परन्तु नीरस और अप्रीतिकर होनेपरभी प्रयोजन समझकर हम उसका विचार करतेहैं । "गजनीसे गिह्लोट, असीरके टाक नादोलके चौहान, राहिर गढ़के चालुक्य"

"सेतबन्दरके जीरकेडा, मंडोरके खैरावी, मांगरोलके मछवाना, जेतगढसे जोडिया ।"

"तारागढ़से रेवड़, नरवड़से मछवाहे, शंचोरसे कालम जूनागैढके यादव"

"अजमेरसे गौड, लोदरगढ़से चन्दाना, कसौदीसे डोर्डर, दिल्लीसे तुवॅर, पाटनसे चावडा"

"मालोरसे शोनगडे, शिरोहीसे देवरा, गागरोनसे खीची, पाटरीसे झाला जैनगढसे दुसाना"

---

(१) सेतबन्दर मलावारके किनारेहै, परन्तु इसके स्वामी जोरकेराका कोई वर्णन नहीं पाया जाता ।

(२) मंडोरसे आयेहुए खैरावीके सम्बन्धमे जो कुछ वर्णन पाया जाताहै, उससे [illegible] यही समझा जाताहै कि यह प्रमारकुलकी एक शाखाहै ।

(३) जूनागढ (गिरनार) से जो जादवराजा आयेथे उनके वंशवालोंने बहुत दिनतक उन-देशका राज्य कियाथा ।

(४) डोड और उसकी राजधानी कंसूदीके सम्बन्धमें जो कुछ प्रगट हुआहै [illegible] यहही निरूपित होसकताहै कि उक्त नगर गंगाजीके किनारे कन्नौजसे कुछ दक्षिणमें बसा हुआहै ।

(५) यह साधारण दुःखकी वात नहींहै, कि किसी भट्टग्रंथमेंभी दिल्लीके [illegible] नहीं पाया जाता. परन्तु विचार कर देखनेसे स्पष्ट ज्ञात होगा. कि [illegible] पहिले अनगपालने पुनर्वार दिल्लीकी प्रतिष्ठा कीथी ।

(६) मलोरसे जो शोनगडेके राजा आयेथे वे चौहानोंके [illegible] । [illegible] उनके वंशधरोंने कितने समयतक इन दुर्गपर अधिकार कियाथा सो नहीं [illegible] ।

कर खड्ग खप्पर गप्परं । मुख्ख डंभु डंभु भाप्परं ॥
पृथिराज कीन्ह रणामरं । बोल्यो न बीर रतामरं ॥
तहां देव रावल समर्ग्गी । छंड्यो न आसन स्वर्ग्गी ॥
पृछ्छंत चन्द सुवत्तियं । कहो होनहार सुकत्थियं ॥
यह होनहार महाबहं । दिल्ली न थिरता रावहं ॥
पुनि म्लेच्छ दलबल जोरहं । अर सहर दिल्लीय तोरहं ॥
पृथिराज युद्ध न जीतहं । रण समर रावल बीतहं ॥
चामुण्ड राय गुरु रामही । कर परसी भारत कामही ॥
पृथिराज बंधही पावही । रह मारि विपति विरावही ॥
नृप साह चंद्रक तीनयं । रह एक ठौर सुलीनयं ॥
रोरी सुदिल्ली आनयं । पुनि बस्त हिन्दुस्थानयं ॥
तिहि दुर्ग देवल भाजयं । अति आलस्य न गाजयं ॥
बरसे न बरसां डोबरे । तो पीछ नरता आवरे ॥
हिंदवान दंड भरावही । नृप बर बर हि तिय दयारगी ॥
रथ नाद मुंडल आवही । तिहि तखत दिल्ली न पावही ॥
ता पीछे डोंगी आवही । बहु रुक्स रुक्म नचावही ॥
रावी सुराजा वज्जही । हिन्दू तुरक सर भज्जही ॥
इति तखत दिल्लीय आवही । नृपविंवर्गी सुभ पावही ॥

"सीकरीसे सिकरवार, ओमरगढ़से जेतवा पल्लीसे वीरेगोत खुनतरगढ़से जारिजा जीरगांसे खेरवरे"

"और काशमीरसे पुरीहर × परिहार आयेथे।"

जब खुरासानके वादशाहने चित्तौर नगरपर चढ़ाई की, तब चित्तौरनाथ खुमानकी सहायता करनेके लिये यही समस्त हिन्दूराजा अत्यन्त उत्साहके साथ देशके प्रेममें आयकर अपनी २ सेनाको साथ ले चित्तौरनगरमें आयेथे। देशवैरी कठोर म्लेच्छोंके करालग्राससे चित्तौरपुरीकी रक्षा करनेके लिये उन्होंने जो प्रचंड वीरता अनुमरण कौशल और अद्भुत प्राण न्योछावरका प्रकाशमान उदाहरण दिखायाथा, वह आजतक भारतीय इतिहासमें चमकदार अक्षरोंसे लिखा हुआहै। महाराजखुमान चौबीस वार शत्रुओंके विरुद्ध अस्त्र धारण करके संग्रामभूमिमें गयेथे। उन लड़ाइयोंमें जो अद्भुत वीरता उन्होंने प्रकाशित की उससे उनका पवित्र नाम रोमसम्राट् सीज़रके समान उनके वंशवालोंके लिये गौरवकी सामग्री हुआथा। उनके स्वदेशी राजपूतगण उनके अपूर्व गुण ग्रामसे ऐसे मोहित हुएथे, कि अवतक प्रातःस्मरणके लिये और दूसरे राजाओंकी पवित्र नाममालाके साथ खुमानके नामकी मालाभी जपा करतेहैं।

यदि उदयपुरमें कोई ठोकर खाकर गिरताहै या गिरनेको होताहै तो वैसेही पासमें खड़ाहुआ दूसरा मनुष्य ऊंचे स्वरसे यह कहकर आशीर्वाद करताहै, कि खुमान तुम्हारी रक्षा करें, ब्राह्मण लोगोंकी सलाहसे महाराजा खुमानने अपने छोटे पुत्र जगराजके हाथ राज्यका भार सौंप दियाथा, परन्तु थोड़ेही कालमें उनका भाव वदल गया फिर स्वयं राज्य ग्रहण करनेका संकल्प किया और जिन ब्राह्मणोंने महाराजको राजदेनेकी सलाह दीथी उनको मारकर पुत्रके हाथसे राज्य ले लिया वह ब्राह्मणोंसे ऐसे अप्रसन्नहुए कि उनके नामपर लोगो धिक्कार देतेथे, इसी कारण समस्त ब्राह्मणोंको राज्यसे निकाल दिया। खुमानको इस पापका फल हाथोंहाथ मिला।

× उस भयकर उपद्रवके समयमे जिन हिन्दूराजाओंने महाराज खुमानकी [illegible] लिये शत्रुके साथ संग्राम कियाथा, उनकी सूची लिखी गई। [illegible] वर्णन पहिलेही विस्तारसे लिखा जा चुकाहै और यही कारणहै जो [illegible] हम यहांपर कुछ न कहेंगे। तिमअसीरगढमें तक्षकराजाका राज्य था, [illegible] राज्यमें मिला हुआहै। नादौटसे चौहान आयेथे, वह [illegible] हुएथे, इनका गोत्र झालोरके सोनगढ़ेहैं, और सिरोहीके देवगढ़में [illegible]।

वसुधा सदा किसीके पास नहीं रही । वसुधा उसके अधिकारमें रहने की दुराशा करतेहैं ! राजा नल, विश्वंभर, युधिष्ठिर, हिरण्याक्षादि, बहुतेरे राजा होगए परन्तु पृथ्वी किसीकी न हुई । महान धार्मिक बलीराजा होगया, परन्तु वामनजीने उसको पातालमें भेजा । ऐसेही मान्धाता, व नलनृप राजा थे, उनकी कैसी दशा हुई ! साक्षात भगवानके अवतार पृथुराजा हुए । परशुरामजीने अवतार लेकर २१ बार क्षत्रियोंका संहार करके ब्राह्मणोंको पृथ्वीका राज दिया, शिवभक्त महाबली और पराक्रमी लंकापति रावण होगया । दुर्योधन कैसा बली योद्धा था, परन्तु अर्जुनके साथ लड़कर अपनी अठारह अक्षौहिणी सेनासमेत मारागया; किसी कविने कहा है—

दानीको दिलीप मानधाताको महीप भयो, जाके गुण वेदहेतु सबहीको जानिये ।
योद्धा ऐसो बलवान को भयो जहान बीच, रावण समान को प्रतापी अनुमानिये ॥
बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे, जाके गुण वेदव्यास भारतमें मानिये ।
केते केते शूर भये चातुरी विरंचिहूने, ते न चतुर कर [illegible] भये [illegible] ॥

सारांश यह है, कि रणक्षेत्रमें जो वीर लड़तेहैं, उनको कभी [illegible] कभी मौत मिलतीहै । धन, दौलत, इज्जत, मित्र सब मिलता है, किन्तु [illegible] वे सदा अमर रहतेहैं । इसप्रकार [illegible] वीरभद्र [illegible] होगया । [illegible] हद गईथी पर [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] होगई ।

अभिन्न मित्रता करली। और हिन्दू विद्वेषी मुसलमानोंके प्रचंड प्रतापको रोकनेके लिये संग्रामभूमिमें विराजमान हुए । महात्मा राजपूतोंके चरित्रका यह अपूर्वगुण केवल भट्टग्रंथोंमेंही नहीं लिखाहै, अनेक शिलालेखोंमेंभी उसका प्रदीप्त विवरण पाया जाताहै।उन शिलालेख और ग्रंथोंमें उनके आचरणका वृत्तान्त जिस प्रकारसे मिलताहै,उससे बोधहोताहै कि वे स्वभावसेही वर्ण ज्ञान हीन और तेजस्वी थे, प्रचंड मूर्तिधारण करके यौवनके समय परदारादि हरण करके बुढापेमें ऐसे ऐसे पापोंको दूर करनेके लिये मंदिरादि बनातेथे । हथियार, घोड़ा और शिकार उनके हृदयकी प्यारी सामग्री थी, उन्हीं बातोंमें वह अपने अधिकांश समयको बिताते और जब शत्रुकुलके आक्रोशसे छुटकारा पाकर मेवाड राज्यमें शान्तिसुख भोगा करतेथे तब वे अपने सहकारी सामन्तोंके साथ अकारणही लडाई झगडा करके उस शान्तिको भंग करदेतेथे ।

चौथा अध्याय ४.

महाकवि चंदलिखित ऐतिहासिक विवरणः—अनंगपाल—:समर सिंहः—तातार वासियोंका भारतको जीतनाः—समरसिंहकी वंशावली;राहप तथा राहपके उत्तराधिकारी गण ।

सम्वत् १२०६ में समरसिंहने जन्म लिया। यद्यपि समरसिंहके जीवन चरित्रका चित्तौरके राजभट्टकविगणोंने भली भांतिसे अनुशीलन कियाहै । तथापि हम केवल महाकवि चन्द्रभट्टके प्रगट किये हुए वर्णन × से महाराजके पवित्र जीवन चरित्रका विचार करेंगे । इस जीवन चरित्रका विचार करनेसे पहिले हम एक अत्यन्त प्रयोजनीय ऐतिहासिक वृत्तान्तकी समालोचना करतेहैं । [illegible] दिल्लीनगरीसे वीरचरित्र तुवर राजवंशका राज्य जब लोप होगया उस समय भारतके राजनैतिक चित्रने किस मूर्तिको धारण किया और हिन्दुस्थानका कौन

× कविवर चन्द्रभट्ट प्रणीत वरदाईरासा एक उत्तम ग्रंथहै । [illegible] वर्णनाके परदेमें उन्होने ऐतिहासिक रत्न टाकेहैं, उसका पाठ करनेसे हृदय [illegible] कृतज्ञताके रससे परिपूर्ण होजाताहै, इस ग्रंथमें ६९ सर्ग हैं।
राजस्थानके प्रायः समस्त वंशोंका वृत्तान्त इसने लिखा हुआ है ।

संयुक्ता अपने हाथसे प्राणनाथको सजाने लगी—कवच पहिराकर प्राणपतिकी कमरमें खड्ग बांधदिया। इतनेहीमें आकाशमंडलको विदीर्ण करते हुए रणके मारू बाजे बजनेलगे। उन गम्भीर बाजोंकी ध्वनि आकाशमें लीनभी नहीं होने पाईथी कि राजपूत गणभी सिंहनाद करने लगे।

महाराज पृथ्वीराज विस्मित हुए। उन्होंने यह नहीं समझा था कि विश्वासघातक यवन इतने सवेरेही लड़ाईका ढोल बजादेंगे। अतएव उन्होंने तत्कालही रणभूमिमें प्रस्थान किया। उस पिछले रणरंगमें भारतके उस शोक गौरवके दिन—भारतके अनुपम वीर महाराज समरसिंह और उनका पुत्र कल्याण महापराक्रमके द्वारा शत्रुसेनाका संहार करके स्वदेशप्रेम तथा अद्भुत वीरताका प्रकाशमान उदाहरण दिखाकर अपनी तेरह हजार १३००० राजपूतसेना और प्रसिद्ध सामन्तोंके साथ सदाके लिये समरभूमिमें शयन करगये। उसीदिन दृषद्वतीके उस तीरपर मिले जलमें भारतवर्षका गौरवसूर्य सदाके लिये डूबगया. भारतकी सम्पूर्ण आशा लोप हो गई. वीरश्रेष्ठ समरसिंहकी पतिव्रता महारानी पृथाने जब यह भयंकर समाचार सुना. कि प्राणनाथ वीरशिरोमणि समरसिंह आततायी यवनोंके कपटजालसे मारे गये. प्यारे भ्राता पृथ्वीराज जंजीरोंसे बांधे गये—भारतका आशा भरोसा और भारतके गौरवका इस समय [illegible] जो कि कगगर नदीके किनारे बनाया गयाथा सदाके लिये शयन कर गये—तब उसने प्राणरक्षाकी चिन्ता न की। [illegible] किसीका समझाना न सुना. शीघ्रही चिताग्निमें तन त्याग करके पतिलोकको चलीगई। इतिहासमें [illegible] आज [illegible] है।

जिसके पवित्र [illegible]

[illegible]

उनकी उन्नतिका आरंभ हुआथा। इस समयसे उनका वीरविक्रम क्रमानुसार बढ़ताही गया। भारतीय इतिहासमें वर्णनहै कि पृथ्वीराजके अधीनमें अरवलेश-नायक एक प्रसिद्ध सेनापति था जिसको भाटीराजका सहोदर कहतेहैं।

पहिलेही लिखा जा चुका है कि उसकाल महाराज अनंगपाल भारतके चक्र-वर्ती राजा थे, महाराज अनंगपाल दिल्लीके प्रथम तुवर राज्य विहलनदेवसे १९ पीढी पीछे हुए। महाराज विक्रमादित्यके द्वारा भारतवर्षकी प्रधान राजपीठ जब उज्जयिनीनगरीमें स्थापित होगई तब महाराज युधिष्ठिरकी लीलाभूमि सैकड़ों वर्षतक शोचनीय श्मशानकी भाँति पड़ीरही उस बहुत समयकी अराज-कताके पीछे जिस महापुरुषने संजीवन मंत्रसे उसको पुनर्वार जीवित किया उसका नाम विहलनदेव था।उक्त महाराजने असाधारण यत्न और परिश्रम करके दिल्लीको पूर्वशोभासे फिर शोभित करदिया। तथा अनंगपाल नामको धारण करके दिल्लीके सिंहासनपर विराजमान हुआ। उसके उत्तराधिकारियोंके राजत्वकालमें अजमेरके चौहानगण दिल्लीके अधीनमें सामन्तोंकी भांति रहतेथे, परन्तु चौहानराज्यके विहलनदेवके अत्यन्त विक्रमशाली होनेसे आधीनताकी यह जंजीर नाममात्रको बाकी रहगई। समयकी अपूर्वमहिमासे वह अधीनता चौहानोंके लिये कुछभी कष्टदाई न हुई। कारण कि उस समयसेही चौहानोंका भाग्यरूपी आकाश सौभाग्य लक्ष्मीकी प्रसन्नतासे क्रमानुसार निर्मल होनागया तथा इस बातका भी सूत्रपात होगया कि शेषमें भारतका राज यहीलोग करेंगे।

जिस समय दिल्लीके सिंहासनके ऊपर महाराजा शेष अनंगपालके साथ कन्नोजके राठौरोंका घोर संग्राम हुआ उस समय सोमेश्वरनामक एक चौहान-राजा अजमेरके सिंहासनपर विराजमान था। सोमेश्वरने उस संग्रामके समय महाराज अनंगपालकी विशेष सहायता की जिससे यह उनपर बहुत प्रसन्न हुए और अपनी बेटीका उसके साथ विवाह करदिया। इनही लड़कीके गर्भसे पृथ्वीराजका जन्म हुआ। इसके पहिले महाराज अनंगपालने अपनी एक कन्या-का विवाह कन्नोजके राजा विजयपालसे करादियाथा, क्रूरचरित्र स्वदेशद्रोही जयचंद इसही संभोगका विषमय फल हुआ। जयचन्द और पृथ्वीराज दोनोंही दिल्लीश्वर अनंगपालके धेवतेथे, वीरश्रेष्ठ पृथ्वीराजसे जयचन्द बड़ाथा। दोनोंही अपने नानाको अत्यन्त प्यारे थे। दुर्भाग्यसे नानाके उस स्नेहको खो-दिया, महाराज अनंगपाल पुत्रहीन होनेके कारण पृथ्वीराजका अत्यन्त आदर

ताका फल भली भांति मिलगया। जब मुसल्मानोंने उसके कन्नौज राज्यपर अपना अधिकार किया तो वह दुष्ट नावपर चढ़ाहुआ गंगाजीके मार्गसे भागा जाताथा, कि वह नाव डूबगई और प्राणोंके साथही दुष्ट जयचंदकी आशाभी लोप हुई। फूटका यही फलहै कि दोनों बरबाद हों—उस दिनसे हिन्दूविद्वेषी निठुर मुसल्मानोंने भारतका जो सत्यानाश आरंभ किया उसका शोचनीय वृत्तान्त भारत सन्तानके रुधिरसे लिखा रहकर आजतक दमकके साथ विराजमान हो रहाहै।

कैदमें जानेके पीछे महाराज पृथ्वीराजका क्या हुआ? इसके सम्बंधमें दो मतहैं। टाडसाहब लिखतेहैं कि "शत्रुने पकड़कर पृथ्वीराजको मारडाला. उनकी प्रियभार्या संयुक्ता उनके साथ सती होगई।" राजा शिवप्रसाद बनारसीभी इसी बातको मानतेहैं। दूसरा मत यहहै कि केवल पृथ्वीराजको कैदही करलिया, मारा नहीं. गलेमें सोसनका तौक और बेड़ी हथकड़ी डालकर गजनीके कैदखानेमें रक्खा। वहांपर एकसाथ शहाबुद्दीन. कविचंद और महाराज पृथ्वीराजकी मृत्यु हुई। इस प्रकारका लेख पाया जाताहै। कि जिस समय युद्ध होरहाथा. उस समय चंद बरदाईका देवीके मंदिरमें जाना ऊपर लिख आयेहैं। चंदने वहां बैठकर "रासा ग्रन्थ सम्पूर्ण किया। फिर मंदिरसे बाहर आनकर देखा तो समस्त दिल्लीको उजाड़ पाया तथा यहभी सुना कि यवनगण राजाको कैद करके गजनी लेगये. चंदने विचारकिया कि राजाको किसी उपायसे अवश्यही छुड़ाना चाहिये. और जाकर कविवर चंदने अतिचतुराईसे पृथ्वीराज [illegible] बादशाहसे मिलकर देखा कि दुष्टोंने राजाकी आंखें फोड़कर अंधा करदियाहै। गलेमें तो [illegible] पड़ी हुईहै। यह देखकर चंदको अत्यन्त दुःख [illegible] [illegible]

[illegible]

चित्तौरके राजा समरसिंहने दिल्लीश्वर पृथ्वीराजकी वहन पृथाका पाणिग्रहण कियाथा, इस मंगलमें संवन्धको बढ़ानेके लिये वह दोनों मित्रता की जिस कठोर जंजीरसे जकड़े गयेथे सहस्रों आपत्तियोंके आजानेसेभी वह बंधन ढीला नहीं पड़ा इन दोनोंने कभी क्षणभरके लिये भी अमित्रभावका वर्त्ताव नहीं किया। जिस दिन यह दोनों स्वदेशप्रेमी परममंत्रका जप करके कग्गरके किनारे परमधामको सिधारे उसीही दिन संसारमें उनका विछोहा हुआ, परन्तु यह कौन कहसकताहै कि अनन्त सुखधाममें उनका मिलाप नहीं हुआ होगा। हाय! किस कुघड़ीमें भारतके मध्य फूटका वीज वोया गयाथा, किस कुघड़ीमें अभागी भारत संतानने सजाती भाइयोंके हृदयरुधिरका बहाना सीखा था, उसी कुदिनसे भारतके उजाड़ होनेका आरंभ होनेलगा, विश्रामस्थान भारतवर्ष असीम दुःखका कारागार और अनन्त यंत्रणामें अंधनरककूपकी भांति होगयाहै। कुरुक्षेत्रकी भयंकर श्मशानभूमि आर्यगणोंकी गृहफूटका रुधिरमय नमूना दिखारहीहै। सब वातोंको जानवूझकरभी भारत संतान किस लिये परस्पर लडा भिड़ा करतेहैं इस मर्मको भगवानही जानै भारतभूमिने किसी समयभी फूटसे निस्तार नहीं पाया। इसके माया मोहमें पड़कर न जाने अवतक कितने भारत संतान अकालमें इस लोकसे चले गयेहैं। मतवालेसे होकर अपनाही सत्यानाश कर बैठेहैं, इनकी गिनती कोईभी नहीं करसकता, इसका शोकदायक आदर्श आजतक स्वर्णप्रसू भारतवर्षमें चमक रहाहै, किन्तु भारतसंतानके गृहविवादमेंभी एक विचित्रता पाई जातीहै। यह घराऊ झगडे कभी सदाके लिये अथवा कभी वरावर प्रचंडभावसे नहीं चलते रहे। वह झगडेकी आग कभी प्रचंडतेजसे वल उठतीथी। कभी वुझजातीथी, कभी तेज कभी हीनतेज होजातीथी। जब यह आग वहुतही तेज होजाती थी तो भट्टकुलाचार्यगण परस्पर विवादकरनेवाले राजाओंके वीचमें पडकर उनके कुलकी प्रशंसा करते हुए दोनोंको शान्त करदेतेथे, और उनकी विवादाग्निमें शान्तरूपी जल छिडक कर उस शत्रुभावको मित्रतामें वदलकर अत्यन्त दृढ़ प्रीतिवंधनमें दोनोंको वांध देतेथे। वहुधा इस प्रकारकी शान्ति परस्परके विवाहवंधनसे हुआकरती थी, परन्तु दुःखकी वातहै कि वह मित्रभाव दो पीढीसे अधिक नहीं ठहरता था।

फिर वही प्रचंड वैर! परस्परमें घोरविद्वेष!! फिर परस्पर पिशाचीमूर्ति धारण करके एक दूसरेका खून पीनेके लिये तैयार होजाते! भारतके राजाओंकी सन्तानें यही राजनीत रही। अभागिनी भारतमाताकी भाल लिखनको जरा देखिये तो! इसही दुराचारके वश हो उन्होंने अपने अपने पांवमें कुल्हाडी मारी. अपने सौभाग्यके मार्गमें अपने हाथसे कांटे वोये, उनकी इन दुर्नीतिसे भारतभूमि निरन्तर

दोहा—चार वंश चौबीसगज, अंगुल अष्ट प्रमान ॥
एतेपर सुलतानहै, मत चूके चहुआन ॥

औरभीः—

इही बाण चहुआन, राम रावण उत्थप्यो।
इही बाण चहुआन, कर्णशिर अर्जुन कट्यो ॥
इही बाण चहुआन, शंभु त्रिपुरासुर भेद्यो।
इही बाण चहुआन, भ्रमर लछमन कर वेध्यो ॥
सो बाण आज तो कर चड्यो, चडे विरद सांचो चवे।
चहुआन राज संभर धनी, मत चूके मोटे तवे ॥

प्रगटरूपसे चंदकी कवितासे कुछ दुराग्रह नहीं पाया जाता परंतु महाराज पृथ्वीराज इसके गूढार्थको समझे। निश्चय होनेके अनुसार तवेपर कंकड़ मार आवाज करनेपर बादशाहने अत्यन्त उत्कंठासे मंचसे बाहर शिर निकाल कर-तब देखनेके लिये चंदकी पूर्वसूचनाके अनुसार "शाबास"! कहकर उच्चारा किया। इतनेमें महाराज पृथ्वीराजने मुहफिराकर धनुषसे बाण चलाही तो दिया. वह बाण शहाबुद्दीनका मस्तक वेधकर पार निकलगया। बादशाह अचेत होकर मंचसे नीचे गिरा और तत्काल मरगया.

बादशाहकी मृत्यु होनेही बड़ा अनर्थ हुआ सारे दरबारमें हाहाकार मचगया। शहाबुद्दीनके सिपाही पृथ्वीराजके ऊपर धाये। चन्द और पृथ्वीराजने पहिलेही यह विचार करलियाथा कि म्लेच्छके हाथसे मरनेसे सद्गति नहीं मिलेगी। इसकारण चंदने महाराज पृथ्वीराजका मस्तक खड्गसे उड़ाया और साथही महाराजके खड्गसे कविचंदका मस्तक पृथ्वीपर गिरा। इसप्रकार भारतके दोनों महावीर एकसाथ समाप्त होगये।

गयाहै। उसको पढ़नेसे स्पष्टही जानाजाताहै, कि उसने अपने जीवनको अपने देशपरही बलिहारी करदियाथा, तथा देशपरही प्राणोंको नेवछावर करके वह वीर अनन्त सुखधाममें चलागया, जिससमय शहाबुद्दीन विशाल अनीकनीको साथमें लेकर भारतवर्षके ऊपर धाया उसकाल उस राजपूत वीर चण्डपुण्डीरनेही उसकी प्रचंडचालको रोकनेके लिये रावी नदीके किनारे अपना भयंकर शूल गाडदिया था। यद्यपि वह अपनी मनोकामना पूर्ण नहीं करसका तथापि जो वीरता उस समय दिखाईथी, उसके द्वाराही उसका पवित्र नाम सदाके लिये इतिहासमें अटल रहेगा।

दूत श्रेष्ठ चण्डपुण्डीर दिल्लीश्वरसे बहुतसीभेंट पायकर महाधूमके साथ चित्तौरमें आया। महाराज समरसिंहने आदरपूर्वक उसको ग्रहण किया, तथा वासकरनेके लिये उत्तम स्थान दिया। कुछ कालतक विश्राम करनेके पीछे उसने महाराजका दर्शन करनाचाहा। शीघ्रही मनोकामना पूर्ण हुई। समरसिंहने तत्काल उसदूतको अपने सामने बुलाया। महाराज समरसिंह उससमय अपने विश्रामग्रहमें व्याघ्रचर्मके आसनपर बैठेथे, लाल वस्त्र धारण किये सब अंगोंमें विभूति लगाये मस्तकपर जटा बढाये गलेमें कमलगट्टोंका हार पहिरे विराजमानथे। दूतके आतेही सादर कुशल पूछी और बैठनेके लिये सामनेही आसन दिया। महाराजकी वह शान्ति गंभीर मूर्ति तपस्वियोंके योग्य भेष और अत्यन्त उदारव्यवहार देखकर दूतके हृदयमें अपूर्व भक्ति उत्पन्न हुई। उसने महाराजको योगीन्द्र नामसे पुकारकर भक्ति गद्गद स्वरसे कहा "आप यथार्थमेंही भगवान महादेवजीके प्रतिनिधिहैं। यह समस्त वृत्तान्त और इसके पश्चात् जो कुछ वार्ता परस्पर हुई उसका यथार्थ वर्णन चन्द्रवर्दाईने अत्यन्त तेजस्वी भाषामें अपने ग्रंथके बीच वर्णन कियाहै।

दो एक दिनके बीचमेंही महाराज समरसिंह अपने प्यारे मित्र व बान्धव पृथ्वीराजका नेवता मानकर सेनासहित दिल्लीको चले। दिल्लीश्वरने आगे बढकर उनकी अगवानी की और मानके साथ ग्रहण किया परस्पर कुशल प्रश्न करके फिर कर्त्तव्य कार्यका विचार होने लगा। शीघ्रतासे दो कर्त्तव्य निश्चय किये गये, प्रथमः—पत्तनराजके गर्वका दूरकरना, दूसरेः—मुसलमानोंके आक्रमणमें विघ्न करना, समरसिंह पत्तनराजके साथ वैवाहिक सम्बन्धमें बंधे हुएथे: अतएव उससे युद्धकरनेका विचार करके मुसलमानोंकी चढाईको रोकनेके लिये दिल्लीमें रहे। इधर महाराज पृथ्वीराज सेनासहित पट्टनकी ओर बढे शीघ्रही रणोन्मत्त

चहुआन और चंद भट्टहै राजपूतलोग स्वभावसेही तेजस्वी होतेहैं। उनका हृदय धीरता, गंभीरता, इत्यादि गुणोंसे शोभायमान होताहै। इन्हीं कारणोंसे वे कठोर अत्याचार सहन करके भी शत्रुसे बदला लेनेके लिये अवसर देखते रहते हैं कभी तो राजपूत वीरोंने प्रचंड उद्यम व कठोर वीरता से शत्रुकुलका संहार किया है, कभी निरुपाय और आश्रय हीन होकर धीर-भावसे कठोर अत्याचारको अपने ऊपर सहन किया है। इनके विक्रमसे मुसल-मानोंकी शतशः राजधानियें धूरिमें मिलगई हैं। कितनेही मुसलमानोंका वंश एकसाथ लोप होगया है। परंतु इन सब बातोंका कोई भी फल नहीं हुआ। उन उजड़े हुए स्थानोंमें नये राज्य बस गये। यह समस्त वंश अत्यन्तही अत्या-चारी हुए, सबने हिन्दुओंसे वैरभाव किया। जिस पाशवी स्वभावसे उनके प्रत्येक-जातीय चलायमान होते थे। उसही स्वभावसे उनका हृदय कठोर होने लगा। उस पाशवी प्रवृत्तिके कुटिल नेत्रोंके आगे पाप पुण्य धर्माधर्म और न्याया-न्यायका विचार कुछभी नहीं है! उन्होंने अपनी स्वभावकी दुर्नीतिसे नरहत्याको पवित्र मानाहै—परसम्पत्ति हरण और परदारा हरण उनकी समझमें न्यायका काम है। इस भयंकर दुर्नीतिके पीछे चलकर यवनलोगोंने भारतकी पवित्र छातीपर जोजो भयंकर उत्पात कियेथे, उन उत्पातोंके सर्व संहारक प्रभावसे कितनेही हिन्दूराज्य और राजवंश समयके अनन्त सागरमें न जाने किधरको बहगये हैं! आज तो उनका नामही नाम सुनाजाता है।

राजका सिंहासनभी मानों उसके साथही साथ डोलनेलगा। और उनकी नींदटूटी, उससंकटसे छुटकारा पानेके लिये उचित उपायखोजनेलगे और अपने प्यारे मित्र समरसिंहसे सहायताचाही। अवतक जिस मनमोहनीके अनुपम प्रेमसे मोहित होकर महाराज संपूर्णतः आलसभावसे ही समयको व्यतीत करतेथे। आज वही मनमोहनी सावधान होकर खडी होगई और यथार्थ वीरनारीकी समान प्राणपतिसे संग्रामभूमिमें जानेके लिये कहा। महात्माचन्दने यहांपर जैसा वर्णन किया है। उसकाही अनुवाद ठीक २ नीचे किया जाताहै।

जिसदिन पिछलीबार शहाबुद्दीन पृथ्वीराजके ऊपर सेनासहित चढ़ा; उसही दिन रात्रिके समय महाराजने एक भयंकर स्वप्न देखाथा। तिससे उनका हृदय व्याकुल होगया और मनमें अत्यन्त चिन्ता उत्पन्न हुई। प्रभात होतेही प्राण-प्यारी सयुंक्तासे वह अपने स्वप्नका वृत्तान्त इस प्रकारसे कहनेलगेः–

" कल रात्रिके समय जब कि निद्राकी कोमलगोदीमें विश्राम कररहाथा, उस समय देखा कि रम्भाकी समान एक परमरूपलावण्यवती स्त्रीने आकर कठोर भावसे मेरा हाथ पकडलिया। तत्पश्चात् ही उसने तुमको आक्रमण किया: तुम अपनी रक्षाके लिये अनेक प्रकारके यत्न करनेलगीं। इतनेहीमें–अहो! भयानकः–भीम दर्शन राक्षसकी समान एक बडा मदमत्त हाथी शूंड हिला-ताहुआ मेरी ओरको आया। भयसे नींद टूटगई। भीत और चकित नेत्रोंसे चारों-ओरको देखा। तो उस रंभाकोभी न देखा और न उस हस्तीको देखपाया, हृदय कॉपगया; सर्वाङ्ग कंटकित होगये; दबेहुए कंठके द्वारा मीठी वाणीसे "हर, हर" कहकर उठबैठा, देखो अबतक हृदय कांपरहाहैः–अबतक भी रोएं खडेहैं:–भगवान्‌ही जाने भाग्यमें क्या बदाहै।"

स्वप्नको सुनते हुए महारानी संयुक्ताके प्रभात कमलतुल्य वदनमंडलपर एक अपूर्व जोति प्रकाशित होगई; और मृदु गंभीर कंठसे कहा. "हे चौहान कुलके गौरव सूर्य! इस जगतमें आपकी समान इतनी सम्पत्ति और इतने सुख व ऐश्वर्य कौन भोग रहाहै? तथापि आपकी तृष्णाकी शांति कहांहै? आप साधारण स्वप्न देखकर होनहारकी शंकासे किसकारण व्याकुल होतेहैं? हे प्राणनाथ! मृत्यु तो सबहीके लिये हैः इस दुर्निवार मृत्युके हाथसे देवतागणभी छुटकारा नहीं पासकते! पुराने छोडकर नए कपडे पहरनेकी किसकी इच्छा नही होती? परन्तु हे नाथ! विचारकर देखिये जो श्रेष्ठ कार्यमें अपने प्राणोंको

मिके उस गौरव धर्म और उस स्वाधीनताकी रक्षाके लिये उनके वंशधरगण आनंदसे अपने हृदयकी रुधिरधाराको निकालते चले आयेहैं।

महाराज समरसिंहकी मृत्युके पीछे उनकी विधवारानी कर्मदेवीने थोडे दिनतक राजकार्य किया, जबतक राजकुमार कर्ण * समर्थ नहीं हुए तबतक राजका भार रानीकेही हाथमें रहा, रानी कर्मदेवीका जन्म पत्तनके राजकुलमें हुआ था. अपने पिताके महान वीरकुलसेभी महान कुलमें वे समर्पण की गईथीं, वीरनारी वीरदुहिता वीरवधू वीरवती कर्मदेवीने अपने पिता और पतिके गौरवकी रक्षा करनेमें किंचित्भी आलस्य नहीं किया, पुत्रकी बाल्यावस्थामें जब राज्यका भार महारानीके हाथमें था उस समयमें जो अद्भुत वीरता उन्होंने दिखलाईथी. इसीकारणसे उनका नाम वीरनारी राजपूतबालाओंका शिरमौर बना हुआहै, महारानीके उस अपूर्वविक्रमके प्रभावसे वीरवर कुतुबुद्दीन घायल हो हारमान अत्यन्त कठिनतासे अपने प्राण लेकर भागाथा, मेवाडपर चढाई करनेके अभिप्रायसे यवन प्रतिनिधि सेना सहित चला आताहै, यह समाचार शीघ्रही महारानी कर्मदेवीने सुना. क्रोध रोष और वैरस्मरण करके उनके रोमरोमसे अग्निकी चिनगारियें निकलने लगीं, महारानीने भलीभांतिसे उनके दुराचारका फल देनेके लिये अपने सिपाही और सामन्तोंको बुलाय संग्राम करनेकी आज्ञा दी. और स्वयंभी संग्राम करनेको तयार हुई महारानीने आपने सुकुमारशरीरपर लोहेका बख्तर पहरा, जिन हाथोंमें मणि मुक्तासे जडे कंकन शोभायमान होतेथे आज उनमें लोहेके तरवार लियेगये. बाल खोले भयंकररूप धारणकिये घोडेपर चढ़कर महारानी कर्मदेवी रणचंडीके वेषसे यवनदलका संहार करनेको संग्रामभूमिमें आई. नौ क्षत्रियराजा और रावत उपाधिधारी ग्यारह सामन्त उनकी सहायता करनेकेलिये साथ आये. महारानी कर्मदेवीने अम्बरके निकट कुतुबुद्दीनकी सेनाको देखा. शीघ्रही वह अपनी सेनाको सजाय युद्ध करनेकेलिये खडी होगई. क्रमानुसार दोनों दलोंमें घोर संग्राम होनेलगा. महारानीकी सेनासे संग्राम करके कुतुबुद्दीन घायल हुआ. उसकी सेना

कार्य किया उसका विषमय फल उन सबको शीघ्रही भोगना पड़ा। शीघ्रही यवनोंकी दासत्व जंजीरमें वे सबके सब बँधगये।

दिल्ली यात्राकी समस्त तइयारी होगई। राज्य कार्यका भार अपने छोटेपुत्र करणसिंहके हाथमें समर्पण करके महाराज समरसिंह अपने इष्टमित्र और सेना सामन्तको साथ ले दिल्लीकी ओर चले × चित्तौर छोड़नेके समय अचानक उनका हृदय कांपने लगा। मानो किसीने अचानक उनके कानमें आकर कहा "देखो! जी भरकर एकबार चित्तौरको देखलो, अब तुमको यह नगर देखनेको नहीं मिलेगा" समरसिंह चकित होगये। परन्तु तत्काल अपने उत्साह को सँभाला और अपने इष्टदेवताका स्मरण करके चलदिये। चंदवरदाईके महासमरनामक पिछले सर्गमें महाराजसमरसिंहकी इस शेष दिल्ली यात्राका वृत्तान्त उत्तमतासे लिखाहै; वही नीचे लिखा जाताहै।:–

इसके उपरान्त महाराज पृथ्वीराजने समरसिंहके आनेका वृत्तान्त सुना, और दरबारमें जाय समस्त सरदारोंको बुलाय उत्साहका डंका बजाया। सबके एकत्र होनेपर धूम धामसे सवारी निकली, महाराज पृथ्वीराज इस समय बहुतायतसे महलोंमेंही रहा करतेथे। आज मित्रका सत्कार करनेके लिये बाहर आये हैं, बहुत दिनके पीछे अपने महाराजका दर्शन पाकर सारी प्रजा आनन्दमें मग्न होगई। घर घर रोशनी होने लगी आनन्दके बाजे बजने लगे। उस समय दिल्लीकी शोभा अपूर्वथी। महाराज पृथ्वीराज समरसिंहको साथ लेआये, और उसदिन बड़ा दर्बार किया। महाराज पृथ्वीराज और समरसिंहको बराबर बैठाहुआ देखकर समस्त प्रजा अत्यन्त प्रसन्न हुई। इस प्रकारके बाजे बजे कि कानपड़ी आवाज नहीं सुनी जातीथी।

इस भांति आनन्द होरहा था कि राजदर्बारके चौककी बिचली शिला फटगई, और उसमेंसे सदाशिवका वीरभद्रनामक गण बाहर निकला। कविवरचन्द्रने यहां इस प्रकारसे लिखाहै:–

रंग राग बागन थदयं॥ घन घोर सोर प्रगदयं॥
सुनि अलख वीर सजग्गयं। सिर पलट ऊंधिम पग्गयं॥
लम्बी असीं गज सज्जग्यं। पच्चास चौडिय गज्जयं॥
दश गज सुदल परमानयं। तिही गुफा खुली अमानयं॥
रुद्राक्ष मुद्रा धारयं। मुख शंभु शंभु उच्चारयं॥

× छोटे पुत्र कर्णसिंहपर यह आलौकिक अनुराग देखकर बड़ा पुत्र कुम्भकर्ण [illegible] अप्रसन्न हो. कितने एक साथियोंको साथ ले पिताके राज्यको छोड़ दक्षिण [illegible]। वहांपर विदौर नामक एक हवशी बादशाहके आश्रयमें उसने एक नये राज्यकी [illegible]।

राजपरिवारके एक प्राचीन भट्टके मनमें उदय हुई, उसने इस होनहार अनर्थको रोकनेके लिये वृद्ध भरतके निकट गमन किया.और उनको सब समाचार सुनाकर कहा कि आप शीघ्रही मेवाडके राज्यमें चलिये. भरतने शीघ्रही सिन्धुदेशीय सेनाके साथ अपने पुत्रको चित्तोरकी ओर भेजा. इस ओर शोनगडेके सरदार इस बातको जानकर राहुपके अभिप्रायको व्यर्थ करनेके लिये सेनासहित आगे बढा, मार्गमें पल्लीनामक स्थानमें दोनों दलोंके मध्य मुठभेर हुई युद्ध होनेलगा. विजयलक्ष्मी राहुपकी अंकशायिनी हुई. इस शुभसमाचारके पातेही चित्तोरके सरदार और सामन्तगण बडे आनन्दके साथ विजयी राहुपकी जयपताकाके निकट एकत्रित हुए. और उनको उद्धार करनेवाला जानकर चित्तोरके सिंहासनपर अभिषिक्त किया. राज्य पदपर प्रतिष्ठित होतेही राहुपने अपने पिता माताको लानेकेलिये सिन्धुदेशमें दूत भेजा अनन्तर सम्वत १२०७ (सन् १२०१ ई०) में महाराज राहुप चित्तोरके सिंहासनपर विराजमान हुए. राज्याधिकार प्राप्त होनेके कुछ दिन पीछे उन्होंने यवन सेनापति शमसुद्दीनके साथ घोर संग्राम किया.यह संग्राम नगरकोटके मैदानमें हुआथा, संग्राममें राहुपकी जीत हुई. राहुपके राज्यकालमें मेवाडमें दो महान हेर-फेर हुए. अबतक तो मेवाडका राजकुल केवल गिल्होट नामसे पुकारा जाता था परन्तु महाराज राहुपके समयमें गिल्होटके बदले सिसोदिया नाम प्रसिद्ध हुआ. दूसरी बात यह कि इस समयतक गिल्होटके राजाओंकी रावल उपाधि होतीथी. परन्तु अब वह राणा. नामसे पुकारे जानेलगे. इन नये नामोंके प्रसिद्धिका वृत्तान्त नीचे लिखा जाताहै ।

शम्भु' उच्चारण करता हुआ वीरभद्र वाहर निकला। पृथ्वीराजने उस भयंकर मूर्त्तिवाले पुरुषको आगे बढकर प्रणाम किया। परन्तु वह पुरुष कुछभी न बोला, तव सदाशिवके भक्त महाराज समरसिंहरावलने उसको आगे वढ़कर प्रणाम किया, उस समय चन्द्रने वीरभद्रसे कहा कि अव आगे क्या २ होगा सो महाराजको वताइये, तव वीरभद्र सवके सन्मुख इस प्रकारसे कहने लगा, "मैंने दक्षप्रजापतिका यज्ञ विध्वंस करके, अपने पिता महादेवजीके क्रोधको शांत किया. फिर उनकी आज्ञा लेकर यहां निश्चिन्तहो विश्राम लेनेके लिये आया। इस समय मैं गाढ़ी नींदमें सो रहाथा,परन्तु आज इस तुम्हारी विलक्षण गड़वड़ी और कुलाहलसे मेरी नींद टूटी तथा मैं वड़ा दुःखी हुआ। महादेवजीने मुझे वर दियाथा कि जो कोई तेरी निद्रा भंग करेगा, उसका नाश होजायगा। इसी कारणसे अव तुम्हारा नाश होगा। अव आगे म्लेच्छलोग प्रवल होकर दिल्लीको जीत लेंगे, पृथ्वीराजकी पराजय होगी। इस समय रावल समरसिंह वहुत काम आवेंगे, चामुंडराय और रामगुरु युद्धमें कट जायंगे, पृथ्वीराज पराजित होकर छः मासतक वंदी रहेगा और दुःख पावेगा। शहावुद्दीन गोरी प्रवल होकर हिन्दुस्थानमें अत्यन्त उपद्रव मचावेगा, हिन्दूराजाओंके किले व मंदिर छिन्न भिन्न करेगा, इस प्रकार एक वर्षतक वड़ाभारी अनर्थ रहेगा। अनन्तर मुगलोंकी चढ़ाई हिन्दुस्थानपर होगी, और यहभी अत्यन्त उपद्रव करेंगे। वे राजालोगोंके घरोंमें घुसकर उनकी वेटियोंके साथ व्याह करेंगे। फिर दक्षिणसे कुछ सेना उनको पराजित करनेके लिये आवेगी। इस सेनासे उसका कुछ प्रवंध न होगा। फिर टोपीवाले आवेंगे उनके राजकी मालिक रानी होगी जो कि सव हिन्दू मुसलमानोंको अपने वशमें करलेगी। वह दिल्लीके तख्तपर अपनी स्थापना करके राज्याभिषिक्त होगी, उसके राजमें सवको सुख मिलेगा। वह धर्मानुसार राज्य करके न्यायपूर्वक प्रजाका प्रतिपाल करेगी परन्तु आगे जैसेही उसकी न्यायरीतिका वन्धन छूटेगा वैसेही टोपीवालोंको निकालकर कावुल और वलखवाले तथा एक भट्टीराजा एकत्र होकर दिल्लीपर अपना अधिकार जमावेंगे, इनकी अमलदारी छः वर्षतक दिल्लीमें रहेगी। फिर उदयपुरके शिशोदिया वंशवाले राजा होंगे। वह ३६ वर्षतक राज करेंगे। फिर अजमेरका पीर उठेगा। तत्पश्चात् तुवर और तुवरके पीछे कठोर वंशका राजा होकर वह धर्मनीतिको स्थापन करेगा।"

वीरभद्रकी भविष्य वाणी सुनकर पृथ्वीराजको अत्यन्त शोक हुआ। तब वीरभद्र कहने लगा। हे राजन्! किसी वातका शोक न करना चाहिये! तुम

हासके दूसरे प्रसिद्ध वंशकी समालोचना करते हैं यद्यपि यहांका वृत्तान्त सम्पूर्णतः ऐतिहासिक है, परन्तु आदिसे अन्ततक इस प्रकारकी औपन्यासिक सुन्दरतासे शोभायमान है कि जिसके देखनेसे यही प्रतीत होताहै कि मानो हम एक उपन्यास पढ रहेहैं ।

पंचम अध्याय ५.



राणा लक्ष्मणसिंहः—चित्तौरपर अलाउद्दीनकी चढाईः अलाउद्दीन की दगाबाजी । भीमसिंहको उद्धार करनेके लिये चित्तौरके सर्दारोंका खड्ग पकड़ना; राणाजी तथा उनके पुत्रोंका अपूर्व आत्मोत्सर्ग; तातारवालोंका चित्तौरको उजाड़ना; राणा अजयसिंह;—हमीर;—हमीरको चित्तौरकी प्राप्तिः—मेवाड़की प्रसिद्धिः—श्री वृद्धिका वर्णनः—क्षेत्रसिंहः—लाक्ष्म ।

राणा लक्ष्मणसिंह सम्वत् १३३१ (सन् १२७५ ई०) में चित्तौरके सिंहासनपर बैठे । यहांपर यह कहना उचित होगा कि इनके समयमें चित्तौरके लिये एक नये युगका अवतार हुआ । कारण कि जो चित्तौर पहले वीर-विक्रम और स्वाधीनताका दुर्गम दुर्गथा, भारतकी अन्यान्य नगरियें यद्यपि यवनोंके कठोर अत्याचारसे उजड़ होगईथीं, तथापि इतने दिनतक जो चित्तौर सही सलामत था, बेरहम, दुराचारी कठोर अलाउद्दीनके गुस्सेकी आगमें आज वही चित्तौर सम्पूर्णतः भस्म होगया । इस हिन्दूवैरी बादशाहने दोबार चित्तौर पर अपनी चढाईका वार कियाथा । यद्यपि उसकी पहली चढाईमें भयानक प्रधान २ वीरोंने चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये अपने २ प्राण देदियेथे, तो भी अलाउद्दीन चित्तौरको हाथ नहीं लगासकाथा, अतएव उसके सबसे मनोरथ ... नसे यह नगर निकल आया । उसके पश्चात् दूसरी चढाई हुई—मुसलमानोंकी इस दूसरी चढाईमें चित्तौरनगर ध्वंस और उजड़ होगया । चित्तौरकी सारी सुन्दरता नष्ट होगई ।

तथा पृथ्वीका वारम्वार कम्पायमान होना, महाभय उत्पन्न करताथा। किस मार्गसे कौन दिशामें और किस प्रकारसे श्रेणीबद्ध होकर राजपूत वीरोंको बढना चाहिये, मार्गमें कहां कहां विश्राम करना उचितहै ? इन सब वातोंमें समरसिंहका परामर्श लियागया। महाराज समरसिंहकी सलाहके विना महाराज पृथ्वीराज कोईभी कार्य नहीं करते थे। महाकवि चन्दभट्टने समरसिंहको राजपूत सेनाका इयुलिसीस कहकर वर्णन कियाहै। वह साहसी धीरस्वभाव और समरचतुरथे। वे धर्मनिष्ठ, सत्यप्रिय और शुद्ध चरित्रथे। शृगाल विहंगादिकी चाल और दूसरे लक्षणोंको देखकर कोई शाकुनिक या दैवज्ञ उनकी समान सुन्दर रूपसे भावी फलाफलको नहीं बता सक्ताथा। समरसिंहके इन अनुपम गुणोंके कारण गहिलोत और चौहान समस्त सैनिक और सामन्त अधिकारी उनमें अत्यन्त श्रद्धा भक्ति करतेथे। सांझको जव संग्राम होजाता तव राजपूतवीर और सामन्तगण उनके डेरे में आया करतेथे। वे उनसे स्नेह पूर्वक सादर संभाषण करके अनेक प्रकारकी नीतिशिक्षा देकर उपदेश करतेथे। इस मनोहर शिक्षा और वक्तृताको श्रवण करते २ समस्त डेरेवालोंमें परमानन्द छाजाताथा। महाकवि चन्दभट्टने मुक्तकंठसे स्वीकार कियाहै कि मेरे महाकाव्यमें राजशासनकी जितनी नीतिहै उनका अधिक अंश महाराज समरसिंहके उपदेशसे लिखाहै। और धर्मनीति राजनीति समाजनीति, मंत्रीनिर्वाचन और राजदूतोंके आचरण विशेष करके राजा और राजपूतोंका जो कुछ कर्तव्य था। तथा जो सुन्दर उपाख्यान व रूपकालंकार मैंने अपने काव्यमें लिखेहैं। उन सबके वक्ता-चित्तौराधिप सुपंडित महाराज समरसिंह हैं।

पुण्यभूमि ब्रह्मावर्तके मैदानमें वहनेवाली पवित्र जलमयी दृषद्वती (आजकल इसको कगगर कहतेहैं) के किनारेपर क्षत्री और मुसलमानोंका घोर संग्राम हुआ, यह संग्राम तीनदिन तक वरावर होता रहा। प्रथम दो दिनतक तो किसी ओर की जय पराजयके कुछ लक्षण दिखाई न दिये। क्रमसे तीसरा दिन कालनिशा होकर भारतके प्राची द्वारपर दिखाई दिया। राजपूतगण दृषद्वतीके पवित्र जलमें स्नान कर प्रातःकृत्यादि समाप्त करनेलगे। भगवान् मरीचिमाली मानो सदाके अनन्तकालके लिये भारत सन्तानका गौरव देखनेको धीरे २ उदयाचलपर विराजमान हुए। इस ओर महाराज पृथ्वीराज अपनी प्यारी नारी संयुक्ताके निकट खडे होकर विदा लेरहे हैं।

अपराधोंको क्षमा करके इष्टमित्रकी समान आदरसत्कार किया। जबतक शत्रुभी अतिथि सत्कारकी रक्षा करेगा, तबतक वहभी मित्रसे अधिक प्यारा है। इसी-कारणसे महाराणा भीमसिंहने अलाउद्दीनकी विशेष पहुनई की, और उसको पहुंचा-नेके लिये सिंहपोरतक चलेगये। उससमय अलाउद्दीनभी महाराणा भीमसिंहसे अपना अपराध क्षमा करानेलगा। इस प्रकारसे अनेक वार्तालाप करते २ महाराणा, बादशाहके साथ जारहेहैं कि इतनेहीमें एक गुप्त स्थानसे कितनेएक अस्त्रधारी यवन सिपाहियोंने आकर असावधान राजपूतलोगोंको एकसाथही बन्दी कर डाला, और शीघ्रतासे उन सबको अपने डेरेमें लेगये। हा! दुराचारी विश्वासघाती यवनोंने क्या राजपूतोंके पवित्र और गाढ़ विश्वासका यही बदला दिया! महाराज भीमसिंह जो कि सीधेसाधे आदमी थे, कपटीबादशाहके धोखेमें आगये। फिर उस दुराचारीने यह प्रचार करदिया कि:—"पद्मिनीको पानेही भीमसिंहको छोड़दियाजायगा—नहीतो नहीं।"

पवित्र जलवाली देव तरंगिणी नृत्य करती हुई बहतीथी, आज उसकी वह पुण्यमयी सैकतभूमि भयंकर श्मशान बनगईहै। उस भूमिके ऊपर अगणित शृगाल व कुत्ते और गृद्ध विकट उच्चस्वरसे शब्द कर रहेहैं। आज उसकी स्वच्छ छाती नररुधिरसे गीली हो रहीहै, उस बीभत्स श्मशान दृश्यमें भुजा बढ़ाकर पिशाचकी समान यवनसेना, गिरेहुए आर्यवीरोंके अंगरागको हरण करने लगी। हो अब कौन उस पिशाचोंकी प्रचराड गतिको रोकैगा ? कौन स्वदेशप्रेमभक्तिके पवित्र मंत्रसे प्रेरितहो हाथमें खड्ग लेकर यवनोंको दूर करेगा? कोई नहीं! संसारने विकट शब्दसे कहा—कोई नहीं!। भारतकी राजलक्ष्मी यवनोंकी जंजीरसे जकडी जाकर हाय हाय करती हुई बोली—कोई नहीं ! भारतभूमि आज अनाथिनी पतिपुत्र हीन होकर शत्रुओंकी कैदमें पड़ गईहै !

उस भयंकर श्मशानभूमिकी भयंकरताको बढ़ाता और रणभूमिमें पड़ेहुऐ राजपूतवीरोंके कटे हुऐ शिरोंको ठुंकराताहुआ विजयी शहाबुद्दीन दिल्लीकी ओर चला। उस काल दिल्लीके पिछले आर्यवीर चौहानकुलप्रदीपके कुलदीपक वीर युवक रणसिंहने अत्यन्त पराक्रम दिखाकर संग्रामभूमिमें अपने प्राणोंको न्यौछावर करादिया। इसकी शोचनीय मृत्युसे दिल्ली अनाथ होगई। उस रक्षकहीन श्मशानकी समान नगरमें प्रवेश करके यवनलोगोंने पाण्डवप्रवर महाराज युधिष्ठिरके पवित्र सिंहासनको अपने अधिकारमें किया। इस ओर क्षत्रियकुलकलंक कायर जयचंदकोभी उसकी विश्वासघातकता और स्वदेशद्रो-

---

गोरीशाहबुदीनेन गजनीशेन सगरम्। कुर्वतोऽखर्वगर्वस्य महासामंतशोभिनः ॥ २५ ॥
दिल्लीश्वरस्य चौहाननाथस्यास्य सहायकृत्। स द्वादशसहस्रैःस्वैर्वीराणां सहितो रणे ॥ २६ ॥

अर्थ—समरसिंहने भूपति पृथ्वीराजकी बहिन पृथाके पति होनेके कारण बडे प्रेमसे १२००० वीरोंके साथ चौहाननाथ (पृथ्वीराज) दिल्ली अधिपतिको जो बडे२ सामन्तोंसे सुशोभित थे गजनीके बादशाह शहाबुद्दीन गोरीके साथ युद्धमे प्रवृत्त होनेपर सहायता की।

भीखारायसाभे लिखाहै कि समरसिह पृथ्वीराजके समयमे हुवे। उन्होंने अन्तिम [illegible] स्वर पृथ्वीराजकी बहिन विवाही थी और शहाबुद्दीन गोरीके युद्धमे अपने [illegible]

यदा गोरिपति दैवात् स्वर्यातः सूर्यबिंबभित् ॥ २७ ॥
भीखारासापुस्तकेस्य युद्धस्योक्तेस्तु विस्तरः

यह श्लोक समरसिंहजीके संबन्धमे एक हस्तलिखित पुस्तकमे था जो [illegible] हाडौति और टोंकके एजन्टके अनुरोधसे सर जान मिल्को [illegible] खरीदकरदी थी।

(इतिहास [illegible])

ओरको आनेलगीं। प्रत्येक पालकीमें कपटवेष धारणकिये और गुप्त शस्त्र लगायेहुए छः छः सैनिक कहार लगे हुएथे। यह सब सिपाही थे। प्रत्येक डोलेके भीतर चित्तौरका एक एक साहसी वीर गूढभावसे विराजमानथा। धीरे धीरे वह ७०० डोले बादशाही डेरोंके सामने आपहुंचे। उनपर डेरोंके चारों ओर कनातें लगी हुईथीं। प्रत्येक डोला तम्बूके भीतर पहुंचगया। महारानी पद्मिनी को देखनेके लिये महाराज भीमसिंहको केवल आधे घंटेका समय दियागयाथा। तदनुसार महाराज जैसेही उन डोलोंके निकट आये, वैसेही चित्तौरके वीर सिपाहियोंने उनको एक पालकीमें गुप्तभावसे सावधान करके विराजमान कराया, और तत्कालही उस पालकीको लेकर डेरोंसे बाहर होगये। साथमें कुछ और पालकियेंभी चलीं। जो सैनिक वहां रहे वे सब अलाउद्दीनके आगमनकी बाट देखते हुए धीर और गंभीर भावसे पालकीके भीतरही अपनी मूर्तिको गुप्त किये बैठे रहे। आधा घंटा बीतगयाः तथापि भीमसिंहको लौटता हुआ न देखकर अलाउद्दीनके मनमें अत्यन्त डाह हुआ। डाहसे सन्देह और सन्देहसे क्रोध आगयाः बादशाहकी इच्छा नहीं थी कि भीमसिंहको छोडा जाये। इससमय विलम्ब होता हुआ देखकर उसे महाक्रोध आया, और न सहसका, वह स्वयं उन पालकि-

प्रकार कर्तव्यहीन होगया, अब उसको अधिक पीडा देना आपसे वीरलोगोंको उचित नहींहै।" इस प्रकारकी उत्तम व मधुर वाणी सुनकर बादशाहने डेढसौ मनकी बेडी डालनेकी आज्ञा न दी। तत्पश्चात् चंदने बादशाहसे कहा "मैं इस कारणसे यहाँ आयाहूं कि राजाको इसदुःखके वक्तमें तसल्लीदूं, लेकिन आँखोंके जानेसे राजा सम्पूर्णतः दीन हीन होरहाहै उसपर यह भारी वजनकी बेडियोंने उसको औरभी दुख दे रक्खाहै। राजाको कैदसे रिहाई देकर उससे बडे २ चमत्कार सीखिये, वह अत्यन्त गुणवानहै शब्दभेधी होनेसे उसका शरसन्धान अत्यन्त तीव्रहै यद्यपि वह अंधा होगयाहै तथापि सौ सौ मन वजनके सात तवे तला ऊपर रक्खे हुऐ अवश्यही वेध करदेगा। यह अद्भुत कार्य देखनेके लायक है।" शहाबुदीनने जब इस कर्त्तबको देखनेका निश्चय किया तब चंदने कहा कि "इस समय पृथ्वीराज असमर्थ हो रहाहै उनके हाथ पांवोंकी जंजीर निकालकर पुष्ट भोजन दिया कीजिये तब वह अवश्यही इस प्रकारके कौतुक दिखावेंगे।" यह सुनकर शहाबुद्दीनने ऐसाही करनेकी आज्ञा दी और इसप्रकार भोजन पानेसे महाराज शीघ्रही पूर्ववत सामर्थ्यवान होगये। फिर चमत्कार देखनेकी तारीख मुकर्रर की। तारीख आनेपर महाराज पृथ्वीराजको तीर कमान देकर सब तैयारियां की गईं। राजाने धनुष हाथमें लेकर जैसेही कमान चढाई कि तत्काल टूटगई। दूसरा धनुष दियागया, वह भी टूटगया, इस प्रकार सात आठ धनुषोंके टूट जानेपर शहाबुद्दीनने स्वयं महाराज पृथ्वीराजका धनुष मँगवादिया। यह धनुष तातारखां यहांपर लायाथा भंडारमें रक्खाहुआथा। यद्यपि यह वेधकार्य देखनेका उत्सव कियागया तथापि इस समय महाराजको वही पूर्वोक्त १०० मन की जंजीर हाथ पांवमें पहिरादी थी। इस चमत्कारको देखनेके लिये दरबारमें अत्यन्त भीड हुई। स्वयं शहाबुद्दीन सजेहुऐ एक ऊंचे मंचपर सिंहासन बिछाकर बैठा, दूसरी ओर सात तवे रक्खेगये तवेपर कंकडी मारकर आवाज कीजाय, तब शहाबुद्दीन 'शाबास' कहकर महाराज पृथ्वीराजको उत्साहदे, और तत्काल महाराज पृथ्वीराज तीर छोडकर उनतवोंको वेधे. कविचंदने इस प्रकारसे शहाबुद्दीनसे निश्चय कर रक्खा था। हाथ पांवमें जंजीरें डालकर महाराज पृथ्वीराजको चौकमें खडा कियाथा, उनकी दाँई ओर कविश्रेष्ठ चंद खडेथे. आसपास शहाबुद्दीनके पहिरेदार हथियार लगाएहुए खडेथे. निशाना लगानेसे पहिले कविचंदने महाराज पृथ्वीराजको अपनी भाषाकी कवितामें इस प्रकार सूचित किया।

फिर बताओ कि मेरे प्राणप्यारेने संग्रामभूमिमें किसप्रकारकी वीरताकी।" बादलने फिर उत्तर दिया: "हे मातः! अब अधिक क्या कहूं! उनकी अतुल वीरता-का कहांतक वर्णन करूं? उनकी वह अद्भुतवीरता देखकर शत्रुगणोंने भीत और चकित होकर अनेक प्रकारसे उनकी प्रशंसा कीथी। आज उनसे एकभी नहीं बचा।" वीरवर गोराकी विधवा भार्याने हंसकर बादलको बिदा दी और "विलम्ब करनेसे प्राण प्यारे मेरा तिरस्कार करेंगे।" यह कहकर जलतेहुए अग्निकुण्डमें कूदकर अपने प्राणोंका होम करदिया।

हैं । जो चित्र आगेके पृष्ठमें दिया जाताहै, यह एक फोटोग्राफसे उतारा गयाहै तथा यह फोटोग्राफ जिस तसवीरसे लिया गया है, उसको जयपुरके एक चित्रकारने एकसौ वर्ष पहिले खैंचाथा । हमने दोनों मतकी वातें सामने उतार धरीहैं अब इसमें सत्यासत्यका निर्णय करना पाठक गणोंपर निर्भर है ।

यवनगणोंने भारतके शोभायुक्त नगर ग्राम व मंदिर चूर्ण करदिये । भारतके असीम धन रत्नको लूट लिया;-भारतसन्तानके हृदयका रुधिर चूंस लिया ! मानो समस्त भारत एक बड़ाभारी श्मशान वनगया !-मानों एक सर्वसंहार कारिणी विकट पिशाची भयंकर मूर्त्ति धारण करके भारतके घरघरमें घूमने लगी ! जिन पवित्र वस्तुओंका भोगादि देवताओंको लगाया जाताथा नीच पुरुष जिन्हें छूनेभी नहीं पातेथे; पापी म्लेच्छोंने उन वस्तुओंको तोड़ ताड़कर पावोंसे ठुकराया ! जो सुन्दर वस्तुएं भारतके शिल्पमें कारीगरीका नमूना थीं कठोर हृदयवालोंने उन सवको ध्वंस करदिया ! मानों भारतका प्रलयकाल आ पहुंचा ! परन्तु इस भयंकर प्रलयकालके कठोर अत्याचारोंको सहकरभी आर्यवीर राजपूतोंका जातीय जीवन वीरभावसे स्थिर रहा, तथा यथाकालमें यवनलोगोंको इस अत्याचारका :वदलाभी भली भांतिसे दिया गया । वह महान तेज किसी भांतिसे नष्ट नहीं हुआ ।-यद्यपि यह आज अत्यन्त तेजहीन होगया है, परन्तु कौन कह सकता है कि वह कलको दूने तेजसे प्रकाशित न होगा ! प्रतीच्य जगतकी वीरता और स्वाधीनताके विहारस्थान रूम और ग्रीस पतित हुएथे परन्तु उनका जातीय जीवन नष्ट नहीं हुआथा । इसी कारणसे वह दोनों फिर उन्नतिको पहुँचे हैं ! फिर क्या भारत-वीरता सत्यता, स्वाधीनताकी आदि जननी-भारतभूमि फिर न उठ सकेगी नही नहीं यह अलीकस्वप्न ! और उन्माद प्रलापहै ! !

जिनके हाथमें धनुष वाण हैं, गलेमें जंजीर पड़ीहैः जो वीचमें खडेहैं, यह महाराज पृथ्वीराज चौहान हैं । शहाबुद्दीन गोरीने इनको अन्धा करदिया है । महाराज पृथ्वीराजके सामने भाला हाथमें लिये कविवर चंद विराजमान है । पृथ्वीराजके सामने वॉई ओर लोहेके सात तवे टंगेहैं । उनको बाण मारकर वेधनेका निश्चय किया गयाथा । पृथ्वीराजके सामनेही ऊंचे स्थानपर शहा-बुद्दीन गोरी दरवारियों सहित वैठाहै, महाराज पृथ्वीराजका बाण बादशाहके मस्तकमें लगा जिसके लगनेसे वह तख्तपरसे नीचे [illegible] गिर पडाहै । फिर नीचेकी ओरसे परस्पर एक दूसरेकी गर्दनमें खड्ग मार रहेहैं [illegible] पृथ्वीराज

रसे वह शब्द हुआ था उस ओरको देखाः वैसेही एक अपूर्व दृश्य दिखलाई दिया। दीपकके उस क्षीण प्रकाशमें महाराणाको दिखाई दिया कि पत्थरके खंभोंके बीचमें चित्तोर की अधिष्ठात्री देवी भयंकर रूपसे प्रगट हुई हैं। भगवती को देखतेही महाराणाका हृदय घोर अभिमान और विषादसे पूर्ण हो गया।

उन्होंने शोकपूर्ण स्वरसे चिल्लाकर कहा-" अबतक तुम्हारी क्षुधा शान्ति नहीं हुई? पिछले दिनोंमें हमारे राजवंशके आठ हजार वीरपुरुषोंने संग्रामभूमिमें प्राण नेवछावर करके तुम्हारे भयंकर खप्परको पूर्ण किया, क्या इनसेभी तुम्हारी दारुण रुधिर-पिपासा दूर न हुई ?" "मैं राजबलि चाहतीहू, जो राजकुलके बारह राजकुमार चित्तोरकी रक्षा करनेके लिये संग्राम भूमिमें प्राण न देंगे तो मेवाड़का राज्य शिशोदीयकुलके हाथसे निकल जायगा।" देवीजी इतना कहकर अन्तर्हित होगई।

एक राजस्थानही उसका नमूना है ! निर्दयी निठुर, यवन लोगोंके पैशाचिक अत्याचारसे राजस्थानके कितने ही जनपद कितनेही नगर और कितनेही गांव सम्पूर्णतः श्मशान वनगये हैं । बहुतसे राजपूतकुलोंका नामनिशानतक मिटगया है । परन्तु केवल राजपूतोंके जातीय जीवनकी रक्षा होनेसे अमितप्रभाव सैकड़ों उपद्रवोंको सहन करकेभी स्थितिस्थापक पदार्थकी समान फिरभी तत्काल चैतन्य होगया है! समस्त विघ्न विपत्ति और अत्याचारोंने शानाशिलाकी नाईं उनके साहसरूपी अस्त्रको सहस्रगुण तीक्ष्णकर दिया है । रोमनलोगोंके एकही आघातसे प्राचीन ब्रिटनगण घोर अवनतिको पहुंच गये थे! उस दारुण अवनतिसे निकलकर उन्नति प्राप्त करनेमें और रोमनलोगोंके कराल कौरसे अपने प्राचीनधर्म और रीतिनीतिका उद्धार करनेके लिये उन्होंने कितने परिश्रम कियेथे? परन्तु सबही निरर्थक—कोईचेष्टा फलवती नहीं हुई । रोमन लोगोंकी अधीनतारूपी जंजीरसे वे छूटनाही चाहतेथे कि इतनेहीमें शाकसेन लोगोंने उन्हें अपने दासपनकी बेडियाँ पहिरादीं ! परन्तु इससे भी छुटकारा नहीं मिला फिर दीनामार लोगोंने आकर इनके बंधे बंधाये हुए शरीरको और भी जकडकर बांधा! इसके उपरान्त इन जेत और विक्रीत दलोंके संयोगसे जो कईएक संकरजातियें उत्पन्न हुईं, उन सबको दुर्द्धर्ष नार्मन लोगोंने उजाड दिया, केवल एकही युद्धमें उनके भाग्यकी मीमांसा होगई । वे जन्मभूमिसे निकाले गये, अथवा नया राज्य जीतकर उसमें जा बसे. उनकी रीति नीति उनका धर्म्म जीतनेवालोंके धर्ममें लोप होगया । परन्तु आर्यवीर राजपूतलोगोंके साथ उनका मिलान करके देखिये कि वे किसी भांतिसे इनकी समानता नहीं पासकते। अपने कितनेही राज्योंसे राजपूतलोग अलग होगये. तथापि कभी तिलभरभी उन्होंने अपने बडे बूढोंके सनातन धर्म और आचार विचारको नही छोडा। इनके कितनेही राज्य एकसाथ राजपूतानेकी अधिकार सीमाके नक्शेमेंसे सदाके लिये निकल गयेहैं।

जातिवैर स्वदेश द्रोहिताका विषमय फलस्वरूप गर्वित राठोरोंका अहंकारयुक्त कन्नौजका, तथा गौरवान्वित चालुक्य राज्यके अनहलवाडेका आज केवल नामही नाम शेष रह गयाहै. अकेले मेवाडहीने पवित्र धर्मके अटलदुर्गमें सैकडों उपद्रवोंको सहन करकेभी रक्षाके बदले कभी अपने प्राचीन गौरवको नहीं खोयाहै उसही महान पुण्यके बलसे आजतक मेवाड इतनाभी विद्यमान है. जिस दिनसे आर्यवीर समरकेशरी महाराज समरसिंहने स्वदेशानुरागके स्वर्गीय मंत्रको सिद्ध करनेके लिये संग्रामभूमिमें अपने प्राण दिये. उस दिनसे मेवाड-

इसके उपरान्त महाराणाजी अपने हृदयके रुधिरका दान करके देवीजीका खाली खप्पड़ पूर्ण करनेके निमित्त तइयार होनेलगे। इस भयंकर संग्रामके होनेसे पहले एक भयंकर कार्यका करलेना अत्यन्त आवश्यक समझा गया।

इस भयंकर कार्यको "जुहार" या "जुहारव्रत" कहतेहैं। राजपूतकुलबालाओंको प्रज्वलित अग्निकुण्डमें डालकर विजयी शत्रुओंके हाथसे उनके सतीत्व और स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिये यह भयंकर "जुहारव्रत" किया था। जब शत्रुके प्रचण्ड आक्रमणसे राजपूतगण अपने देशकी रक्षा व स्वाधीनताके बचानेका कोई उपाय नहीं देखते, जब उनका सकल आशा भरोसा लोप होजाताहै: उस भयंकर समयमें—आशाके इस अन्तसमयमें राजपूतगण इस भयंकर व्रतका उद्यापन करनेके लिये तइयार होतेहैं। चित्तौरमें आज वही भयंकर समय आ पहुंचा है:—आज चित्तौर की रक्षाका कोई उपाय बाकी नहीं है: अतएव इस भयंकर जुहारव्रतका उद्यापन करना आवश्यक है।

प्रतिष्ठा नहीं पासके.* वहुधा समस्त भट्टग्रंथोंमेंही देखा जाताहै कि कुमार कर्णसिंहके माहुप और राहुप दो पुत्र उत्पन्न हुएथे, परन्तु विशेष विचार करनेसे यह वात ठीक प्रमाणित नहीं जानपडती, महाराज समरसिंहके सूर्यमल्लनामक एक भ्राताथे, इनके भरतनाम एक पुत्र उत्पन्न हुआ, समरसिंहके पुत्र कर्णसिंहका विवाह चौहानवंशकी एक राजकुमारीके साथ हुआथा, इस राजकुमारीके गर्भसे माहुपका जन्म हुआ, जब कर्णसिंह मेवाडके राजसिंहासनपर वैठे तव सरदार लोगोंने कपटजाल फैलाकर भरतको मेवाडसे निकालदिया, भरत सिन्धुदेशकी ओर चलागया, सिंधुदेशके अरोर नगरमें उस समय एक मुसलमानका राज्यथा, भरतको उस मुसलमानने अरोर नगर देदिया, पुंगल भट्टराजकी वेटीसे भरतका विवाह हुआथा, इस शुभ विवाहका फल राहुप हुआ। महाराज कर्णसिंह भरत को पुत्रसेभी अधिक प्यार करतेथे, जिसदिन भरत कर्णसिंहको राजके समय छोड गया उस दिनसे कर्णसिंहका हृदय अत्यन्त दुःखित रहनेलगा, फिर इसके ऊपर एक मानसिक पीडा औरभी आपड़ी, कर्णसिंहका पुत्र माहुप अत्यन्त निकम्मा था, दिनरात मामाके यहां पडा रहताथा, एकतो भरतके वियोग और शोकसे उनका हृदय अत्यन्त पीडित रहताथा, तिसपर पुत्रकी यह दशा? मर्माहत महाराज कर्णका हृदय दिन २ दुर्वल होनेलगा, अन्तमें इस लोकसे विदा होकर सव दुःखोंसे छूटगये।

महाराज कर्णसिंहने अपनी इकलौती वेटीका विवाह कालौरके सोनगढ वंशवाले सरदारके साथ कियाथा, इस राजकुमारीके गर्भसे रणधवल नाम एक पुत्र उत्पन्न हुआ, सोनगढेके सरदारकी अभिलाषाथी कि अपने पुत्र रणधवलको चित्तौरके सिंहासनपर स्थापन करूं, प्रतिदिन इस अभिलाषाको पूर्ण करनेकेलिये शुभ अवसरकी वाट जोह रहाथा, कि इतनेहीमें वह अवसर आपहुंचा, महाराज कर्ण परलोक सिधारे, उनका सिंहासन सूना हुआ. यह समस्त समाचार विदित होनेपरभी माहुप सिंहासनपर अधिकार करनेकेलिये न आया, इसी अवसरमें क्रूरकर्म कर्ण कालौरसर्दारने चित्तौरके प्रधान प्रधान सरदारोंको मारकर अपने पुत्रको उस सिंहासनपर स्थापित किया. गिल्होरकुलकेसरी वीरवर वप्पाका सिहासन क्या साधारण मर्दोंके अधिकारमें रहेगा. यदि यही होगा तो मेवाडसे एकसाथही गिल्होरका नाम लोप होजायगा यह गंभीरचिन्ता

---

* महाराज कर्णके भीवाननाम एक पुत्रने [illegible] भीवानिया नामसे प्रसिद्ध हैं।

पितृगणोंको पिंडदेनेके लिये पुत्रतो वर्तमान हैही. बाप्पा रावलका वंशलोप नहीं होनेपाया । फिर अब क्या चिन्ताहै ?

इस समय राणा निश्चिन्त और निश्शंक होकर रणभूमिमें प्राण त्यागनेके लिये उत्साहित हुए, तथा प्रचंड रणभेरी बजाकर अपने सर्दारोंको पास बुलाया। आज समस्त सर्दारगण मतवाले हो रहेहैं, अपने देहकी चिन्ता जातीरही है;– जीवनकी ममता छोडदीहै । किलेका फाटक खोलकर अपने स्वामीके साथ प्रचंड विक्रम करतेहुए शत्रुकी विशाल सेनामें कूदपडे । उन रणोन्मत्त भयंकर राजपूतों- की तलवारसे अनेक अभागे मुसलमान तिनकोंकी समान काट डालेगये। परन्तु इनका मारनाभी कुछ काम न आया ! उफनेहुए समुद्रकी समान विशाल यवन- सेनाके बीचमें यह थोडेसे वीर इस प्रकारसे शीघ्र विलाय गये कि जैसे पानीके बबूले पानीमें बिला जातेहैं । आज चित्तौरपुरी जीवनशून्य हुई ! आज इस अपूर्व नगरीने श्मशानका वेष धारण किया । इधर उधर अगणित मृतकदेह पडे हुए हैं; समस्त स्थान मनुष्यके रुधिरसे भींगे हुए हैं! किसीके हाथ पांव कट गयेहैं;-किसीका शिर दो टुकडे होगयाहै: कोई किसी यवनके मुंहपर अपने विकट दांतोंको लगा- येहुए वीभत्स भावसे गिर पडाहै । मानो अबतक भयंकर प्रतिहिंसा उनके चित्तको उन्मत्त भावसे शत्रुके चबाजानेको तइयार है । हृदयको पानी करदेनेवाले उस महाश्मशानके भयंकर रूपको सौगुणा बढाकर यवनोंकी सेना पिशाचोंकी समान इधर उधर घूमने लगी ! पिशाचवृत्ति बादशाह अलाउद्दीनने उस जीवनशून्य

राहुपने अपने नगरमें लौटकर विजयके चिह्नरूप राणा उपाधिको धारण किया, तबसे गिलहौट कुलके राजा राणा कहेजाने लगे, महाराज राहुप अडतीस वर्षतक राज्य करके परलोक सिधारे, मेवाडराज्यके नष्टहुए गौरवका उद्धार करके घोर संकटके समय उन्होंने इसप्रकार चतुराईसे राज्यकाजका संचालन किया कि जिससे उनके राज्योचित गुण भलीभांतिसे विदित होतेहैं।

महाराणा राहुपसे नौ पीढी पीछे राणा लक्ष्मणसिंह हुए,* यह नौ पीढी आधी शताब्दीके मध्यमें व्यतीत होगईं, इनमेंसे छः महापुरुषोंने तो संग्रामभूमिमें अपने प्राण गमाये, यवन लोगोंके अपवित्र ग्राससे पवित्र गया तीर्थको उद्धार करनेके लिये उसही पवित्र तीर्थमें उन राजोंने अपने शरीरको बलिहार करदियाथा, इन छः राजपूत वीरोंमें जिस महापुरुषने अपने हृदयका रुधिर बहाकर सनातन धर्मकी रक्षा कीथी उसका नाम पृथिवीमल्ल था, स्वधर्मप्रेमी और स्वधर्मानुरागी इन कई एक राजपूत वीरोंके प्रबल धर्मानुराग और प्राण निछावरका महान उदाहरण देखकर यवनगण भीत और स्तंभित हुएथे, इसी कारणसे उन्होंने महाराज पृथिवीमल्लकी देह छूटजानेके पीछे बहुत दिनोंतक सनातन धर्मपर हाथ नहीं डाला। यही कारणहै जो अलाउद्दीनके समयतक सनातन धर्मावलम्बियोंने बहुत दिनतक निर्विघ्नतासे अपने धर्मका अनुष्ठान किया, परन्तु इस शान्तिमय समयके बीचमेंभी एकवार चित्तौरनगर शिशोदीय कुलके हाथसे निकल गयाथा, भट्टग्रंथोंमें देखा जाताहै कि राहुप और राणा लक्ष्मणसिंहके मध्यवर्ती समयमें गिह ×नामक एक शिशोदीय राजाने अपने पितृपुरुषोंकी निवासभूमि चित्तौरनगरीका पुनः उद्धार करके प्रजाको अपनी राणाउपाधि स्वीकार करानेके लिये विवश कियाथा, इससे स्पष्ट विदित होताहै कि उपरोक्त राजाके समयसे पहले चित्तौर किसी दूसरी जातिके अधिकारमें था, महाराज राहुप और लक्ष्मणसिंहके मध्यवर्ती कालमें जो नौ राजा हुएथे उनके मध्यमें केवल दो बातें प्रसिद्धिके योग्य हुईथीं, इनके अतिरिक्त और जो वृत्तान्त पाया जाताहै उसके पढनेसे प्रमाणित होताहै कि उनका राज्य अनेक प्रकारके उपद्रव और झगडे झंझटसे व्याकुल था, किसी विशेष विवरणके न मिलनेसे इस समय हम मेवाड [illegible]

※ मेवाडके रहनेवाले चलितभाषामें इनको राना [illegible] कहतेहैं।

× मनसिंहके दूसरे पुत्र चन्द्रको चम्बल नदीके किनारे एक भूमिखंड [illegible] [illegible] वाले चन्द्रावत नामसे प्रसिद्ध हैं यह वंश मेवाडके [illegible] [illegible] भूमि इसका नाम रामपुर ([illegible]) है [illegible]

उसकाल यह राठौर लोग, पुरीहार राजालोगोंके अधीनमें सामन्त राज बन कर रहतेथे। उस अधीन जीवनमेंही धीरे२ वह लोग अपना सिर उठा रहेथे। परन्तु कुशावह जाति उस समयतक घोर कुदशामें पड़ी हुई थी। इस दुरवस्थामें पड़ा हुआ देखकर असभ्य मीनगण उनको वारम्वार सताते और चढ़ाई करतेथे। मीन लोगोंकी इस चढ़ाई और इस दुःख देनेको कुशावह जातिवालोंसे न रोकागया। इधर विजयोत्सवमें मत्त होकर कई दिनतक अलाउद्दीन चित्तौरमें रहा। इस समयमें वादशाहने चित्तौरके शोभायमान अटा अटारी देवमन्दिर और अत्यन्त विचित्र बनेहुए स्तम्भ महल दुमहले व चैत्यादि सबकोही तुड़वा दियाथा। परन्तु केवल महाराणी पद्मिनीका महलही उसके सर्व संहारक हाथके भयंकर प्रहारसे बच गयाथा। ज्ञात होताहै कि पद्मिनीपर अनुरागी होनेके कारण अलाउद्दीनने उसको नहीं तुड़वाया।

इस भयंकर संग्रामके पीछे शिशोदीय कुलको पिण्ड देनेके लिये केवल अजयसिंह जीवित रहे। पहलेही कह आये हैं कि कुमार अजयसिंह केवलवाड़ा नामक देशको चलेगये। मेवाड़में पश्चिमकी ओर आरावली पर्वतमालाकी तलैटीमें शेरोनल्ल नामक एक सम्पत्ति युक्त देश है। उसकीही चोटीपर केवलवाडा बसाहुआ है। उस पहाडी देशमें निकाले हुए की समान रहकर राणा अजय सिंह हृदय को थामकर अपने पितृराज्यके उद्धार करनेका उचित अवसर देखने लगे। जो चित्तौर उनके पूर्व पुरुषोंकी लीलाभूमि है, उसही चित्तौरमें आज एक सरदार राज्य करताहै। आज वही चित्तौर पराया होगया है। इस प्रकार अनेक भांतिकी चिन्ताओंसे ग्रस्त होकरभी राणा अजयसिंह किंचित भी हताश या निरुत्साह न हुए। वरन दूने साहस और आग्रहके साथ अपना कार्य सिद्ध करनेके लिये उचित तयारियें करनेलगे। जिस समय राना लक्ष्मणसिंह संग्राममें जातेथे उस समय उन्होंने अजयसिंहसे कहाथा कि तुम्हारे पीछे तुम्हारे बडे भ्राता अरिसिंहका पुत्र सिंहासनपर बैठेगा। इस बातको अजयसिंहने भलीभांतिसे याद रक्खा। सोते, जागते, और कष्टोंमें पड़कर भी अरिसिंहके पुत्रकी याद राना अजयसिंह किया करतेथे, परन्तु बडे भाईके उस पुत्रका कहींभी पता न लगता; और अजयसिंहके पुत्र किसी कार्यके नहीं थे; इधर बुढापाभी आयाही चाहता था, ऐसी अवस्थामें वह समझते थे कि पिताका उपदेशही फलवान होगा। जिस पुत्रके लिये महाराणाने कहा था, उसका नाम हमीर था। इस हमीरनेही शिशोदिया कुलके नष्टगौरवको,

लमें रहतेथे । रानी पद्मिनीकी जगद्विख्यात सुन्दरताही शिशोदीय-लोगोंके लिये महा अमंगलदायक हुई । उनकी लावण्यता व सुन्दरताका यहाँतक बखान था कि सारे भारतवर्षमें एक रानी पद्मिनीही सर्वाङ्ग-सुन्दर समझी जाती थी । इस पवित्र नामका गौरव राजपूतोंके वंशमें बराबर बढतागया । आजतक बहुतसे राजपूत अपनी कन्या और बहनोंका नाम पद्मिनी रक्खा करतेहैं । देवांगनाकी समान रानी पद्मिनीकी सुन्दरता, गुण गौरव, महिमा और मृत्युका वृत्तान्त व महारानीकी सम्पूर्ण बातें राजवाडेमें भलीभांतिसे प्रसिद्धहै। भट्टलोगोंने अपने ग्रन्थोंमें वर्णन कियाहै कि पद्मिनीको प्राप्तकरनेके लियेही अलाउद्दीन चित्तौरपर चढ़ाथा; नहीं तो वह डाह या यशकी प्राप्तिके लिये नहीं आयाथा । कहतेहैं कि उसने चित्तौरको घेरकर सर्वत्र यह ढँडोरा फेरदियाथा कि पद्मिनीको पातेही मैं अपने देशको लौटजाऊंगा । परन्तु और २ ग्रन्थोंको देख कर विचार करनेसे जानाजाताहै कि बहुत कालतक चित्तौरके घेरे रहनेसे जब कोई फल न हुआ, तब अलाउद्दीनने यह ढँडोरा फेराथा । बादशाहकी ओरका यह समाचार पातेही राजपूत क्रोधमें भरकर उन्मत्त होगयेथे । क्या जीवनकी जीवनरूप गृहलक्ष्मी यवनकी अंकशायिनी होगी ? क्या देवकन्याको पापिष्ठ दनुज भोग करेंगे इस घृणित अपमानकारी प्रस्तावको कौन हृदयवान अनुमोदन करसकताहै ? क्या राजपूतगण वीर नहींहैं ? क्या उनकी देह निर्जीव मांसपिण्ड है ? क्या उनकी नाड़ियोंमें पवित्र आर्य शोणित प्रवाहित नहीं होताहै ? फिर क्या वह इस घृणित प्रस्तावको मानलेंगे ?—कभी नहीं । दुराचारी अलाउद्दीनकी यह दुरभिलाषा सफल नहीं हुई, तथापि वह रानी पद्मिनीका ध्यान अपने हृदयसे दूर नहीं करसका । फिर उसने यह प्रस्ताव किया कि रानी पद्मिनीकी मोहिनी परछांईको दर्पणमें निरखतेहीमें चित्तौरसे कूंच करजाऊंगा । महाराणा भीम-सिंहने इस बातको मानलिया ।

अलाउद्दीन इसबातको भलीभाँतिसे विश्वास करताथा कि राजपूतलोग मिथ्यावादी या विश्वासघातक नहीं होते । इस विश्वासके बलसे वह कईएक शरीररक्षकही अपने साथ लेकर चित्तौरनगरमें गया और स्वच्छ दर्पणमें रानी पद्मिनीकी मोहिनी परछांई निरखतेही अपने डेरेको लौटा । जिस दुराचारीसे चित्तौरको अत्यन्त हानि पहुँची. जिसने पवित्र राजपूतकुलमें कलंक लगा-नाचाहाथा आज वही अतिथि बनायागया । अतिथि होनेके कारणसे आज वह निडर होकर चित्तौरमें आया । वीरहृदय तेजस्वी राजपूत महाराजने उसके सम्मान

अपने साथियोंके साथ शिकार खेल कर कुमार अरिसिंह राज भवनको जा रहे थे कि मार्गमें फिर वह युवती मिली । उस काल वह क्षेत्रपालवाला अपने सिर पर दूधका एक वर्तन धरे हुए दोनों हाथोंसे भैंसके दो बच्चोंको हांक रहीथी । अरिसिंहके साथ जो उनके मित्रथे उनमेंसे एकने कौतुकसे दूधका वर्तन पृथ्वीमें गिरानेके अभिप्रायसे उस कन्याकी ओरको अपना घोड़ा चलाया । कृपकवाला इस अभिप्रायको समझगई और उस मुसाहवको निकट आताहुआ देखकर चालाकीसे भैंसके एकबच्चेको सवारके घोडेके अगले पाँवमें इस प्रकारसे लिपटा दिया कि वह कौतुकामोदी रसिकवर राजाका सखा घोडेके साथही पृथ्वीपर गिरपड़ा। खोज करनेसे राजकुमारको ज्ञात हुआ कि चंदानीकुल * के मध्यमें एक दीन राजपूतके घर इस वलवान कन्याने जन्म लियाहै । राजपूतकी वेटीहै तो क्या उसके साथ राजकुमारका व्याह नहीं होसकताहै ? दूसरे दिन अति सवेरे उन्होंने अपने मित्रोंके साथ, वहां जाकर उस कन्याके पितासे मिलना चाहा । कुमारका एक सखा उस बूढे राजपूतके घरमें गया और उससे राजकुमारका आशय कहा। बूढ़ा तत्काल उसके साथ राजकुमारके स्थानपर चला आया । राजकुमारने उसका अत्यन्त आदर करके सामनेही वैठनेको आसन दिया। वृद्ध उस आसनपर न वैठकर राजकुमारकेही आसनके एक कोनेमें वैठ गया। उसका यह प्रगल्भ व्यवहार देखकर राजकुमारके मित्रगण हँसने लगे; परन्तु जब उन्होंने देखा कि राजकुमारने इस व्यवहारसे किंचितभी अप्रसन्न न होकर अत्यन्त आदरके साथ अपना विवाह करना चाहा, तव वे समस्तही विस्मित हुए। फिर जराही विलम्बके पीछे जब उस बूढेने राजकुमारकी वातको अस्वीकार किया. तव तो समस्त इष्ट मित्र मंडलीके विस्मयकी सीमा न रही। आशाको पूर्ण होता हुआ न देखकर कुमार अरिसिंह कुछ अनमने हुए। परन्तु भाल लिखी लिपिको कौन मेट सकताहै ? उस बूढे राजपूतने घर आकर यह समस्त वृत्तान्त अपनी स्त्रीसे कहा, स्त्री विशेष बुद्धिमतीथी उसने स्वामीका यह घोर अनुचित कार्य सुनकर उसे वहुत फटकारा और राजकुमारके साथ मिलकर उनसे क्षमा माँगनेके लिये कहा । भार्याके ताडन करनेसे राजपूत चैतन्य हुआ और शीघ्रही राजकुमारके निकट आय अपनी कन्याके देनेको कहा । अल्प कालमेंही कुमार अरिसिंहका विवाह उस वलवती कन्याके साथ होगया । इसही शुभ संयोगका फल वीरवर हमीर हुआ । जब चित्तोरमें उपरोक्त महासंग्रामकी तय्यारियें हो रही

* यह चौहान कुलकी एक शाखाहै ।

राणीजीने इनको बुलाया और गुप्तपरामर्श करने लगी । इस गुप्तपरामर्शका यही प्रधान उद्देश्य था कि महाराणीजी किस प्रकारसे अपने पातिव्रतधर्मको बचाकर महाराणाका उद्धारकरें । सुखकी बातहै कि उद्देश्य सिद्धहुआ । उन दोनों चतुर राजपूत वीरोंने जो विचार किया, उससे सती साध्वी पद्मिनीजीके पातिव्रतधर्ममें तिलमात्रकाभी अन्तर नहुआ, और महाराज भीमसिंह अला-उद्दीनके फंदेसे निकल आये ।

इसके उपरान्त शीघ्रही अलाउद्दीनके पास दूत भेजागया । उस दूतने बाद-शाहके पास जाय शिरझुकाकर निवेदन किया कि "महाराज ! चित्तौरको आक्र-मण करनेसे छोड़कर जिससमय आप अपनी फौजको उठालेंगे महाराणी पद्मिनी उसही दिन हजूरके पास आजावेंगी । "दूतने यहभी कहा "हजूर ! आप खुद बादशाहहैं, और महाराणीजीभी राजपूतोंके आली खान्दानसेहैं, इस लिये दोनों तरफकी महमानदारी और खातिरदारीमें किसीतरहका दरेग न हो । वह अपने कुलशासनके साथ हजूरकी कदम बोसीहासिल करेंगी । राजपूतोंकी जो औरतें उनकी सहेलीहैं, जो बिना उनके देखे लहमाभरभी नहीं जीसकतीहैं, वह सब उनको उम्रभरके लिये रुखसत करनेको इसडेरेतक उनके साथ आवेंगी । इनके सिवाय जो राजपूतोंकी मस्तूरात उनके साथ देहलीमें जायंगी, वहभी सब हम-राह होंगी । यह सब खान्दानी औरतेहैं, उन्होंने कभी घरके बाहरतक कदम नहीं रक्खा; आज हजूरके हुक्मकी तामील करनेके लिये वहभी अपने पुश्तेनी रवाज-को छोड़कर यहाँपर आवेंगी ।

हजूर ! अब सिर्फ इतनीही गुजारिशहै कि वे जिसतरहसे जहांपनाहके खुश करनेको अपने खानदानका तौरतरीका छोड़कर यहांपर आतीहैं वैसेही हजूरकोभी उनकी इज्जतआबरूहका खयाल रखना चाहिये। कहीं ऐसा नहो कि कोई बिला-वजहकी दिल्लगी करनेको उनकी पालकीके पास जापहुंचे । अगर ऐसा हुआ तो उनके कायदेमें खलल आजायगा । "अलाउद्दीन इसबातसे राजी-होगया । मोहमयी आशाके छलावेके फेरमें पडकर उसने एकबारभी न सोचा कि पतिव्रता हिन्दूललनागण अपने हाथसे अपने हृदयकोभी छेदसकतीहैं, हंसती २ अग्निकी शिखामें अपने प्राणोंका होम करसकतीहैं, तथापि प्राणोंसे तथा पुत्रसेभी अधिक प्यारे सतीत्व धनको नहीं छोडसकतीं ।

इस मुलाकातके लिये जो दिवस निश्चय कियागयाथा वह आनपहुंचा । बातकीबातमें ७००पालकी चित्तौरके द्वारसे बाहर निकलकर बादशाहके डेरोंकी

लिये आगे बढ़े । विदा लेनेके समय कुमारने अपने चचाके चरणोंको छूकर कहा कि "मुंजका सिर काटकर देशमें आऊंगा, नहीं तो नहीं ।" इसके उपरान्त थोड़ेही दिनोंके पीछे सबने देखा कि मुंजके कटे हुए सिरको भालेकी नोंकपर लटकाये कुमार अपने घोड़ेपर चढे कैलवाराके पर्वतमार्गसे आरहेहैं।कुमार हमीरने धीर और नम्रभावसे अपने जयकी भेंटको चचाके चरणोंमें रखकर शान्तभावसे कहा "तात अपने शत्रुका मस्तक पहिचान लीजिये ! अजयसिंह अत्यन्त आनन्दित हुए। तत्कालही राणा लक्ष्मणसिंहकी भविष्यद्वाणी उनको याद आई । वह समझ गये कि विधाताने कुमार हमीरके भाग्यमेंही राज्यकी प्राप्ति लिखीहै । उन्होंने परम प्रसन्न हृदयसे विजयी भतीजेका मुंह चूमलिया, और उस विजित शत्रुके कटेहुए मस्तकसे रुधिर लेकर कुमारके ललाटपर राजतिलक खेंच दिया । उसही मुहूर्तमें अजयसिंहके दोनों पुत्रोंके गूढभाग्यकी लिखन हमीरके कपाल फलकपर रक्तके अक्षरोंसे साफ २ दिखलाई दी । वे समझ गयेकि हमको राज्य नहीं मिलेगा । पराये आसरेसे रहकर जीवन व्यतीत करना पड़ेगा । इस भयंकर चिंताके डसनेसे दुर्बलहो बड़े अजीमसिंहने कैलवाड़ामें शरीरत्याग करदिया और सुजनसिंह इस लिये दूसरे राज्यमें भेजा गया कि कदाचित् यह किसी प्रकारका झगड़ा झंझट न उठावे । इस बातसे अत्यन्त दुःखित होकर सुजनसिंहने दक्षिण देशमें जाकर अपने वंश वृक्षको बोया। आगे इसही वंशमें एक महावीरने जन्म लियाथा, उस वीरके प्रचण्ड प्रतापसे एक समय समस्त भारतवर्ष कम्पायमान होगया था। उस महावीरका–महाराष्ट्र कुलतिलक यवन-दर्पहारी महाराज शिवाजी नाम था* ।

सम्वत् १३५७ (सन् १३०१ई०) मे वीरश्रेष्ठ हमीरका मेवाड़राज्यपर अभिषेक हुआ । परन्तु उनके राज्य, धन और सहायता सावल सबपरही शत्रुका अधिकार था । जिस दिन राणा जयसिंहने अपने भतीजेके माथेपर राजतिलक खेंचा । उस दिनसेही क्रमानुसार चौंसठवर्षके बीचमें राणा हमीरसिंहने मेवाडके नष्ट हुए गौरवका भली भांतिसे उद्धार करलिया । राजस्थानमें "टीका दौड़" नामक एक रीति अबतक प्रचलितहै । राजपूत नृपतिगण पितृराज्यपर अभिषिक्त होनेही सैन्य सामन्तको साथ लेकर निकटके या दूरके किसी शत्रुराज्यपर चढ़ाई

---

* मेवाड़के भट्टग्रन्थोंमें शिवाजीके [illegible] पाया जाता है, प्रत्येक [illegible] [illegible] लिया गयाहै । अजयसिंह, सुजानसिंह, [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] और [illegible], इनके पीछे [illegible] महाराष्ट्रमें [illegible] ।

बारह वर्षकी उमरके राजपूत बालक बादलका अद्भुत रणकौशल देखकर यवनसेना विस्मित और चकित होगई। उसकी तलबार और भालेने अनेक यवनोंको यमलोकमें पहुँचाया। उसके अपूर्व रणरंगसे कितनेही रणविशारद हिन्दू और मुसलमानोंके गर्व खर्व होगये। पद्मिनीके सन्मान और शिशोदीय कुलके गौरवकी रक्षा करनाही बादलका मूलमंत्रथा। उसके ही वीरमंत्रसे उत्साहित होकर राजपूत वीरगण प्रचण्ड वेगसे शत्रुके सामने डटगये। उस महासमरमें वीरवर गोराने अद्भुत वीरता दिखाकर अनन्त कालके लिये शस्त्रशय्या पर शयन किया। बहुतसे राजपूतोंने उसका साथ दिया। उस भयानक संग्रामसे केवल बादल और कितनेएक राजपूत बचकर चित्तौरमें आये। कुछ दिनके लिये अलाउद्दीनकी दुरभिलाषा रुकगई। राजपूतोंके कठोर उद्यम व वीरताको निहार तथा अपनी सेनाका संहार देखकर बादशाहने कुछ दिनके लिये युद्ध करनेका विचार छोड़ दिया।

इस घोर संग्राममें वीरवर गोराने अपने प्राणोंको निवछावर करदिया। उनका भतीजा बालक बादल रुधिरसे भीजाहुआ घायल होकर अपनी चाचीके पास आया। उसको अकेला आताहुआ देखकर राजपूतबालाके हृदयमें अत्यन्त शोक उपस्थित हुआ। परन्तु इसही बातका उसको धीरजथा, कि प्राणनाथने स्वदेशकी रक्षा करनेके लिये संग्रामभूमिमें अपने प्राण दियेहैं। वीर बालक बादलको चुपचाप सन्मुख खडाहुआ देखकर, गोराकी शोकार्ता विधवा भार्याने धीरे २ कहा;—"बादल! अब और क्या कहोगे; मैं सब जान चुकीहूँ; अब जो पूछतीहूं सो बताओ कि प्राणेश्वरने युद्धमें किसप्रकारकी वीरता प्रकाशित करके देहका त्याग किया। कहो बेटा? मुझे इस बातके श्रवण करनेसे शान्ति मिलेगी।" यह सुनकर बादलके बडे २ नेत्र डबडबा आये, उसके घावोंसे रुधिर बहने लगा। उसने कहा।"—मय्या! अपने तातकी वीरताका क्या वर्णन करूं! आज केवल उनकेही वीरविक्रमसे शिशोदीय कुलके गौरवकी रक्षा हुईहै; शत्रुकी अगणित सेनाको उन्होंने सरलतासे तिनकेकी समान काट डाला। मैंने तो केवल उनके पीछे घूम २ कर शत्रुके दो टुकडे हुए शरीरोंको घाव पहुँचायेहैं। उनके कराल ग्राससे जो दो ४ मुसल्मान बचगयेथे. मैंने तो केवल उनकाही संहार कर पायाहै। इसप्रकार अलौकिक वीरता प्रकाशित करके वे लाल शय्यापर—शत्रुकुलके मृतक शरीरोंका बिछौना बिछाकर अनन्त निद्रामें सो रहेहैं! उनके तकियेकी जगह एक यवन राजकुमारका द्विखण्डित देह लगाहुआहै।" राजपूतबालाने फिर पूछा:—"बेटा बादल! फिर

लिये नये नये घर बनाने लगे। महाराणा हमीरने देशवैरी मुसलमानोंके ऊपर यथासंभव अत्याचार करनेमें कोई कसर नहीं रक्खी। जब प्रजामंडली मेवाड के जनस्थानोंको छोडगई तब राज्यके मार्ग घाट अत्यन्त दुर्गम होगये। शत्रुगण जब उस ओरसे आते जाते तब महाराना हमीर अपने दलके साथ उनके ऊपर टूटपडते और उनका संहार करके फिर अपने उन स्थानोंको चले आते कि जो एकान्तमें बने हुए थे। महाराना हमीरसिंह इस प्रकारकी नीतिका सहारा लेकर धीरे २ शत्रुओंका संहार करने लगे। शत्रुओंने बहुतेरी चेष्टा की परन्तु वह किसीभांतिसे भी दुर्गम वनके घाटोंमें उनको न खोज सके। इस प्रकारसे शत्रुओंकी बहुतसी सेना मारी गई। राणा हमीरके इस प्रकार आचरण करनेसे मेवाडकी तलैटियें श्मशान बनगई। जिन मैदानोंमें हरे हरे नाजकी लहरें लहराया करतींथीं, आज वह मैदान जंगली घासफूसोंसे छागयेहैं। पेंठ, वाणिजागार, हाट बजार सब सूने होगये; सबही टूटफूटकर खंडहर हुए! इस प्रकारसे समयानुसार नीतिका अवलम्बन करके वीरवर हमीरने अत्यन्त बुद्धिमानीका कार्य किया था इसप्रकारकी नीति गिह्लोट कुलके लिये पूर्णतासे लाभदायक हुई। सन् ईसवीकी दशवीं शताव्दीके मध्यभागमें जिससमय महमूद गज़नवीके भयसे समस्त भारतभूमि कम्पायमान होरही थी। उससमयसे लेकर अठारहवीं शताव्दीमें दिल्लीश्वर महम्मदके समयतक, मेवाड़के राजालोग अत्याचारी यवनोंके महा अत्याचारसे गिह्लोट कुलकी प्रतिष्ठाको बचानेके लिये कभी २ इसही प्रकारकी नीतिका अवलम्बन करतेथे। मेवाडके इतिहासमें इसका वर्णन विस्तारसे किया गयाहै।

महाराणा हमीर कैलवाडेमेंही रहने लगे। जो कैलवाडा * देश अबतक सूना पहाडीदेश कहलाता था. आज महाराणा हमीरकी अद्भुतचतुरतासे वह मनुष्योंसे भराहुआ स्थान बनगया। उनकी प्रजा मेवाडकी तलैटीको छोड़कर उसदेशमें आनबसी, कि जहांपर कोईभी बसना नहीं चाहताथा। ऐसे संकटके समयमें ऐसे दुर्गम स्थानमें बस्ती बसाकर महाराज हमीरने बडी चतुरता कीथी। यह देश असंख्य पहाडियोंके बीचमें स्थापित है। इन पहाडियोंके बीचमें दो चार गुप्त मार्गभी बने हुएहै. कभीही ऐसा होताहै कि उन कूट मार्गोंको लांघकर कोई

* यहांपर महाराणा हमीरने एक तड़ाग बनवाया, जिसका नाम हमीरसर [illegible] इसके किनारे मेवाड़की अधिष्ठात्री देवीका एक मंदिरभी प्रतिष्ठित किया था। इन [illegible] दर्शन करनेसे स्पष्ट ज्ञान होताहै कि महाराणा हमीर एकान्तमें वास करतेथे।

परन्तु क्या चिन्ता है, चित्तौरपुरी अबभी वीरशून्य नहीं है ! क्या विना विवाद और विना विघ्नके यवनलोग स्वाधीनताकी लीलाभूमि चित्तौरपर अधिकार करलेंगे ? नहीं, ऐसा कभी नहीं, हो सकता । जबतक वीर्यवान राजपूतोंकी नाडियोंमें रुधिरकी एक बूंदभी रहैगी-जबतक उनकी देहमें प्राण रहैगा तबतक वह कभीभी स्त्रीका अंचल पकडकर घरके एक कोनेमें न बैठेंगे । तबतक वह किसी प्रकारसे भी अत्याचारी देशवैरीके विरुद्ध रण क्षेत्रमें खड्ग धारण करनेसे विमुख न होंगे । जैसेही अबकी बार अलाउद्दीनने चित्तौरपुरीको घेरा वैसेही चित्तौरके समस्त वीरगण प्रचंड क्रोधमें आकर बदला लेनेके लिये मतवालेसे होगये और यवनोंके दुराचरणका फल भली भाँतिसे देनेके लिये खड्ग लेकर उनके सामने आये ।

खुमानरासग्रन्थके बनानेवालेने इस भयानक संग्रामका वृत्तान्त अपनी मोहिनी लेखशक्तिसे रंग बिरंगा वर्णन किया है । उन रंगोंमेंसे एक रंग सबसे उत्तम चढाहै । दिनके समय घोर संग्राम करके एक दिन आधीरातके समय महाराणा लक्ष्मणसिंह अपने विश्राम भवनके भीतर बैठेहुए घोर चिन्ता कररहेहैं । रात्रिका दूसरा पहर व्यतीत होना चहता है; समग्र संसार निद्रादेवीकी गोदीमें शयन कर रहाहै; कहीं चुँचकारका शब्द भी नहीं होता । केवल निशाकी समीरण हहर २ कर बारम्बार प्रचंड वेगसे विश्रामभवनकी किवाड़ोंको टकरातीहै; तथा सियारोंके घोर शब्दसे हुहुआनाभी रात्रिके मौन धारणमें विघ्न डाल रहाहै । इस गंभीर रात्रिके समय महाराणा विश्राम भवनमें एकान्त मनसे मानो चित्तौरके होनहार भाग्यपटकी गूढ लिखनका पाठ कर रहेहैं । चित्तौरके मुख्य २ सर्दार लोग, प्रचंड यवनाक्रमणमें चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये प्रतिदिन संग्रामभूमिमें शयन करते जाते हैं,—मानो शिशोदिया कुलकी राजलक्ष्मी मलीन और शोकाकुल होकर चित्तौरको त्याग करनेकी तय्यारियें कर रही है;—अब चारों ओर संकटहै, चारों ओर विपत्ति है,—चारों ओर भयका सामनाहै ! अब कौन चित्तौरपुरीकी रक्षा करेगा । इस घोर संकटके समय कौन शिशोदीयकुलके गौरवका उद्धार करेगा ? इस महासंकटके सर्व संहारकारी ग्राससे किस प्रकार महाराणाके बारह पुत्रोंमेंसे केवल एक जन भी जीता जागता रहकर पितृगणोंको पिण्डदान करनेके लिये उद्धार हो सकेगा ? राणाजी इस प्रकारसे अनेक विचार कररहेथे कि इतनेहीमें इस घोर रात्रिकी गंभीर शान्तिको भंग करके कोई गंभीर कंठसे कहउठा कि—मैं भूखा हूं । माहाराणाकी प्रचण्ड चिन्ता निद्रा बिना टूटगई । वे चकित होकर—[illegible]

समयमें मालदेवने किस अभिप्रायसे प्रचंड शत्रु हमीरके साथ अपनी
विवाह करना चाहाहै, इस बातको कोई समझ न सका । मंत्रियोंको इस
अनेक संदेह होनेलगे । परन्तु महाराणा हमीरसिंहने किसीकी बात न मा
विवाह करना अंगीकार किया । राणाने एक बारभी इस बातका विच
किया कि इस भयंकर संग्रामके समयमें मालदेवने किस अभिप्रायसे
सम्बन्धकी सूचना करनेके लिये नारियल भेजाहै । क्या राणा ह
अपमानित करनेके लिये या विपत्तिमें डालनेके लिये यह चाल चली
राणाके इष्टमित्र अनेक प्रकारका शोच विचार करनेलगे । परन्तु र
कुछभी चिन्ता नहीं थी. इष्टमित्रोंने बहुतेरा चाहा कि यह सम्बन्ध
जब उन्होंने बहुत कहा, तब राणाने धीर और गंभीर भावसे
दिया कि "तुम क्यों होनहारकी चिन्तासे इतने व्याकुल हो
मालदेवका जो कुछ अभिप्राय हो सो हो, नारियलके ग्रहण करनेमें व
हानि है ? यदि उसने कोई चाल चलीहै तो इसका भी मुझे कोई डर नह
इस विवाहके होनेसे मुझे इतना अवसर तो प्राप्तहोगा कि जहां हमारे पि
रहतेथे वहांके दर्शन तो हो जायगे । करोड़ों हजारो विपत्तिभी चाहे
साथ आनकर घेर लें, उन सबको सहनेके लिये राजपूतोंको छाती खो
तइयार रहना चाहिये । साहससे कमर बांधकर और मूलमंत्र हृदयमें
करके राजपूतकार्य करनेको चलेंगे तो विजय लक्ष्मी अवश्यही प्राप्त हो
मानलिया कि एक दिन संग्राममें घावभी खाये. अपना स्थान भी छू
परन्तु भलीभांतिसे स्मरण रक्खो कि दूसरेही दिन विजय मुकुटको धारण
सिंहासनपर विराजमान होंगे । राजकुमारकी यह प्रतिज्ञा देखकर फिर कि
कुछ न कहा ।

विवाहकी तइयारियें होगई । महाराणा हमीर ५०० घुड़सवारोंको
लेकर पितृराज्यकी ओर चले । विवाहको तो जातेहैं, परन्तु हृदयमें चित्
उद्धार करनेका मूलमंत्र जपा जाताहै । मनही मनमें प्रतिज्ञा कीहै कि यातो
साधन करेंगे, नहीं तो चित्तौरकी अंगनाईमें प्राणोंको छोड़कर अपने पितृ
मिलेंगे ।

क्रमसे धीरे २ चित्तौरके निकट पहुंचे. नहीं दुर्गके शहरका ऊंचा
दिखाई देने लगा । चौहानके पांच पुत्रोंने अगवानी करके उनको सादर

और संस्कारके अनुसार भली भांतिसे उचित माना जा सकता है। यद्यपि देवीजीकी आज्ञा कठोरथी परन्तु राजपूतगण उसको पालन करनेके लिये उत्कंठित हुए। वे लोग इस बातको किसी प्रकारसे सहन नहीं करसकते कि उनके जीवित रहते हुए दुराचारी यवनलोग चित्तौरपुरीमें प्रवेश करके उनका सर्वस्व लूटें; उनकी प्राणाधार स्त्रियोंके सतीत्व धनको छीनलें। इस कारणसे समस्त राजपूतगण भगवान एकलिंगकी शपथ करके देवी चतुर्भुजाकी आज्ञाका पालन करनेके लिये संग्रामभूमिमें आये और प्रतिज्ञा की कि जवतक हमारी देहमें प्राण रहैगा, तबतक चित्तौरके भीतर किसी प्रकारसे मुसलमानोंको न घुसने देंगे। अब राणाजीके बारह पुत्रोंमें यह तर्क वितर्क होने लगा कि सबसे पहिले कौनसा कुमार देवीजीकी आज्ञाका पालन करे। सबसे बड़े अरिसिंह सबसे बड़े होनेका हेतु दिखाकर देवीजीकी आज्ञाके अनुसार राज्यासनपर विराजमान हुए। फिर तीन दिनतक यथायोग्य राजसन्मान प्राप्त करके चौथे दिवस यवनसंग्राममें भयानक विक्रम दिखाय इस नाशवान संसारसे सदाके लिये बिदा लेकर अनन्तधाममें चलेगये। तदनन्तर उनसे छोटे अजयसिंह बडे भ्राताके पीछे जानेको तइयार हुए! परन्तु महाराणा समस्त पुत्रोंकी अपेक्षा इससे अधिक स्नेह करते थे, अतएव किसी प्रकारसे भी अजयसिंह संग्रामभूमिमें न जाने पाये। अजयसिंहने बहुतेरा चाहा, परन्तु पिताने एक न मानी। विवश होकर अपने छोटे भ्राताओंको देवाज्ञा पालन करनेके लिये संग्रामभूमिमें जानेकी अनुमति दी। इस प्रकारसे ग्यारह राजकुमारोंने संग्राममें जाय स्वदेशप्रेमका उदाहरण दिखाय हर्षसहित अपने २ प्राणको जन्मभूमिके ऊपर बलिहारी करदिया। इस समय केवल अजयसिंह राणाके पुत्रोंमेंसे शेष रहे। अजय प्राणोंसे भी अधिक प्यारा है, प्राण जाँय तो जावें, परन्तु प्राण रहते इस पुत्रको रणमें न जाने देंगे। हाय! अजयसिंहके संग्रामभूमिमें जानेसे शिशोदीयकुल निर्मूल हो जायगा। वीरवर बाप्पारावलके पवित्र पितृगणको कोई अंजलिभर पानी देनेके लिये भी जीवित न रहेगा! फिर क्या होगा:— यवनलोगोंके भयंकर आक्रमणसे कौन चित्तौरदुर्गका उद्धार करेगा:— कौन है जो गिह्लोट कुलको अनन्त नाशसे बचा लेगा? तदनन्तर महाराणाने स्वयं संग्रामभूमिमें जाकर प्राण निछावर करनेके अभिप्रायसे सर्दारोंको निकट बुलाकर कहा "अबकी बार हमारा कार्य पूर्ण होगा; हम अपने चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये संग्रामभूमिमें अपने प्राणोंको निछावर करेंगे।"

आपको समर्पण कियाहै, उस कारणको मैं जानतीहूं, यदि आज्ञा हो तो श्रीचरणोंमें निवेदन करूं।" हमीरने उस बालिकाके मुख मंडलकी ओर देखाकि वह मुख सुकुमार है; सरलताका आधार है, उस पर विमल प्रकाशकी आभा विराजमानहै। उन्होंने आदर स्नेह और प्रेमपूर्ण हृदयमें अपनी भार्याको पृथ्वीपरसे उठाया और अभय देकर उस गूढ वृत्तान्तके प्रकाश करनेको कहा। राजपूतबालाने कहना आरम्भ किया। "प्राणपति! आप विस्मित न हों, मैं विधवाहूं, परन्तु इस दासीसे आप घृणा न करें। अतिबालकपनमें भट्टवंशीय किसी राजकुमारके साथ मेरा विवाह हुआथा, उस समय मैं इतनी छोटी थी कि विवाहकी बातभी याद नहीं है; यहभी स्मरण नहीं है कि स्वामी किसप्रकारके थे। परन्तु जो कुछ मातासे सुना है, वही आपसे निवेदन करूंगी। विवाहके थोडेही दिन पीछे संग्राममें स्वामी मारेगये: तबसेही मैं अभागिनी विधवा और अनाथा हुई। आज आपको प्राप्त होकर मेरे मनका दुःख दूर होगया; परन्तु नहीं कहसकती कि अब मेरे भाग्यमें क्या बदाहै?" बालासे और न बोलागया वह सरला बालिका अपने प्राणप्यारेके हृदयमें अपना मुँह छिपाकर रोनेलगी। उसकी सरलता, सत्यप्रियता और गाढे प्रेमको देखकर कुमारने उसके आँसू पोंछ दिये, और भली भांतिसे समझाया बुझाया। स्वयंभी सन्देहके कारणसे छुटे। उससमयके राजपूतलोग विधवा विवाहको अतिघृणित और अपमानकारी समझते थे। आज मालदेवने चाल करके राणा हमीरका अपमान किया, तेजस्वी कुमारने केवल भार्याका मुख देखकर इस अपमानको सहन किया*। उस पतिव्रता राजपूतबालाने इस अपमानका बदला लेनेके लिये स्वयं प्राणपतिको उत्साह दिलाया. तथा इसके विषयमें

---

* विवाहके होजानेपर हमीरने जिस कारण इसमें मौनता स्वीकारकी उसके यह कारण हैं उन्होंने सोचा कि इस बातका विवाद उठानेसे अब प्रतिष्ठामें बाधा पड़ेगी. और दूसरे उनका [illegible] कारण होगा फिर इस बालिकाका ऐसे समयमें विवाह हुआहै कि इसको अपने पतिकी सुधभी नहीं है और सबसे विशेष उन्होने यह बात समझ रक्खीथी, कि इस सम्बन्धसे इस चित्तौरका पुनः उद्धार करसकेंगे, यही विचारकर उन्होंने इसमें आनाकानी न की, यद्यपि राजपूतोंकी छोटी जातियोंमें लोग विधवा स्त्रीकारकी प्रथा बतातेहैं, परन्तु [illegible] जातहै, विधवासे सम्बन्ध करनेवाले नातरायत राजपूत [illegible] नाता होताहै, जिन राजपूतोंमें नाता नहीं होता वे [illegible] कुछ कालमें उनका अभेद हो जाताहै [[illegible]] [illegible] [[illegible]] [illegible] [illegible] उनमें भेद नहीं रहता पर यह प्रथा [illegible] नहीं है।

तत्काल ऊपरसे भयंकर शब्दके साथ सुरंगका बडा और भयानक लोह-कपाट बंद हुआ। एक पलभरके बीचमें अगणित हतभागनियोंका करुणा-शोकनाद लीन होगया!—और कुछभी न सुनागया! —हाय! आज समस्तकी समाप्ति होगई!—रूप, यौवन, लावण्य, गौरवादि सबकोही सर्वसंहारकारी अग्निनें भस्म करदिया। *

इस भयंकर और कठोर "जुहरव्रतका उद्यापन करके महाराणा स्वयंही लडाईमें जानेकी तइयारी करने लगे, परन्तु प्यारे पुत्र अजयसिंहने उनके जानेमें बाधा दी। अजयसिंहकी इच्छा किसीभांतिसेभी महाराणाको रणमें भेजनेकी नहीं थी। पिता पुत्रमें बहुतसा तर्क वितर्क हुआ, परन्तु अन्तमें राणाही जीते। विवशहो अजयसिंहको पिताकी आज्ञाका पालन करना पडा और वह चित्तौरको छोड गये। तथा कितनेएक सिपाहियोंको साथ ले शत्रुके डेरोंके बीचमें होकर वेखटके कैलवाडादेशमें जा पहुँचे। अब राणाजीको किसी बातकी चिन्ता न रही;—

* "हमलए चित्तौर" नामक नाटकमे स्त्रियोंके चितामे जलनेका वर्णन अत्यन्त मनोहरतासे किया है। राजपूत ललना गण चितामे भस्म होनेके समय कहतीहैं। [ठुमरी पीलू] अगन अब राखो लाज हमारी ॥ टेक ॥ हम सब बाला निपट विहाला पतिविन परम दुखारी। वेग चिताभकि भस्म करो प्रभु हम सब सखा तिहारी ॥ टेक ॥ सुन रे यवन अधम चण्डालो हृदय दियो तुम जारी, साखी सुर प्रति फल पाओगे भोगोगे दुख भारी ॥ टेक ॥ दूसरा गति ॥ केहि सुख[illegible] गगन प्रान, पिता पुत्र पति रनमे जैहैं, अबहे कहां कल्यान ॥ टेक ॥ दुग्ध भयो [illegible] ननद्रम गांड़े, शोक करे खोई पान ॥ टेक ॥ दूरहो भूषन वसन, रतन सब पतिबिन आज [illegible] ॥ टेक ॥ खोलकेश परवेश अगन कर अब सुख नाही आन। केहि सुख लागि [illegible] ॥ टेक ॥ अगन सहाय होऊ याही छिन पतिनसो करहु मिलान। असहाय अबला [illegible] ॥ २ ॥ (गीत तीसरा) जग देख खोलकर नयना। हम पतिव्रतामें [illegible] ॥ [illegible] गगन सकल सुर देखो, देखो यवन अचैना। तृणसम प्राण अनलमे [illegible]।

"जब समस्त स्त्रियें चितामे भस्म होगई तब अलाउद्दीन बादशाह [illegible] आया लेकिन घर २ मे चिताके धुएके सिवाय कुछ न पाया. तब [illegible] कर कहने लगा।"—"गजल—

"आयेथे [illegible] वास्ते बस [illegible]। [illegible]
दिलकी जो भी हसिरत [illegible]। [illegible]
[illegible] जिंदगीके लिये [illegible]। [illegible]
बस [illegible]। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

चित्तौरपर कुमार हमीरने अधिकार किया वैसेही नगरके बालक वृद्ध और युवा पुरुषोंने शपथ करके उनकी आधीनताको स्वीकार किया ।

शोनगडा मालदेव शत्रुओंको जीतकर शीघ्रही चित्तौरमें आया, परन्तु यहांकी अवस्था देखकर उसका आनन्द, निरानंद होगया । मालदेवको चित्तौरमें आता हुआ देखकर सर्दारोंने एक पटाका छोड़कर उसका सन्मान किया । इस प्रकारकी उपहासकारी सलामी देखकर मालदेवके मनमें विषम सन्देह पैदा हुआ । नगरमें प्रवेश करतेही समस्त समाचार जाने, आशाका अन्त होगया । हमीरसिंहने जिस प्रकारसे चित्तौरके सरदारोंको अपने वशमें कियाथा उससे मालदेवको सिंहासन पानेकी तिलभर भी आशा न रही । अतएव वह निरुपाय होकर अलाउद्दीनके उत्त-राधिकारी महम्मद खिलजी * के पास अपना दुःख सुनानेके लिये दिल्लीकी ओर चला आज राणा लक्ष्मणसिंहकी भविष्यद्वाणी पूर्ण हुई । आज अरिसिंहके पुत्र वीर हमीर उस भविष्यद्वाणीको पूर्ण करके चित्तौरके सिंहासनपर विराज-मान हुए । चित्तौरनिवासियोंके आनन्दकी सीमा न रही । दुराचारी यवनोंके कराल ग्राससे मेवाड़भूमिको छुटाहुआ देखकर नगरके समस्त नर नारी महा-

---

* तवारीखफरिस्तामें इस युद्धका वृत्तान्त नहीं पाया जाता । अतएव इस बातका जानना कठिनहै कि यह महम्मद कौन था । हिन्दोस्थानके इतिहासमें लिखाहै कि अलाउद्दीन खिलजीके बाद खिलजीके वंशका केवल एकही बादशाह दिल्लीके तख्तपर बैठा था । उसका नाम मुबारक था। यह अलाउद्दीनका तीसरा बेटा था । मुबारकके मरनेपर दिल्लीमें खिलजीके वंशका अंत होगया । यहां प्रश्न होताहै कि फिर यह महम्मदखिलजी कौन था । एल्फिन्स्टन साहबने लिखाहै कि अलाउद्दीनकी वफातसे पहिले (सन् १३१२ ई०)में राणा हमीरने चित्तौरपर अधिकार कियाथा । सन् १३१६ ई० की १९ दिसम्बरको अलाउद्दीन परलोकगामी हुआ । यदि इस मतको लेकर विचार किया जाताहै, तो स्पष्ट ज्ञात होताहै कि अलाउद्दीनके मरनेसे चारवर्ष पहिले राणा हमीरने चित्तौरको ले लियाथा परन्तु यह नहीं लिखा कि हमीरके हाथसे चित्तौरको लेनेके लिये फिरभी अलाउद्दीनने कोई चेष्टा कीथी या नहीं ? [illegible] [illegible] और भी [illegible] [illegible] दुनियांको छोड़गया।अतएव [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कोशिश कीथी, [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] History of India P.P. [illegible]

उस धूमराशीके स्पर्श करनेसे वह बिकट सुरंग उस शोचनीय दिनसे पवित्र गिनी जाने लगी। उसदिनसे कोई किसी प्रकारसेभी उस सुरंगमें प्रवेश नहीं करसकता। उसके साथका दीपक उस भयंकर अजगरके श्वॉस लेनेके पवनसे तत्काल बुझ जाताहै। *

इस प्रकारसे अमरावती तुल्य चित्तौरपुरी सन् १३०३ ई० में अलाउद्दीनके भयंकर दंडप्रहारसे आधी ऊजड होगई। चित्तौरनगरपर अपना अधिकारकर झालौरके शौनगडे वंशीय मालदेवनामक एक सरदारके हाथमें अलाउद्दीनने उसका शासनभार अर्पण किया। बादशाह अलाउद्दीन एक तेजस्वी और पराक्रमी बादशाह था, मतलबके सिद्धहोजानेमें कपटता एक अमोघ उपायहै; इस बातमें बादशाह अव्वल दरजेका होशियार था; यही कारण है जो बहुधा उसकी जय हुआ करतीथी। इस विषयमें वह हिन्दूवैरी औरंगजेबकी समान गिना जाताथा। अलाउद्दीनने तख्तपर बैठतेही "सिकन्दरसानी" (अर्थात् दूसरा सिकन्दर) की उपाधि धारण की, और जिसको उसने अपने चलाये हुए सिक्केपरभी खुदवा दियाथा, उसकी यह उपाधि कभी निरर्थक न हुई, उसके कठोर हाथके भयंकर प्रहारसे राजस्थानके सैकडों नगर ग्राम ऊजड होगये। गर्वित अनहलवाडा प्राचीन धारा और अवन्ती तथा सुन्दर और देवगढादि जिन गौरववाले नगरोंमें एक समय शोलंकी परमार पुरीहार व तक्षकादि प्रसिद्ध राजाओंके पवित्र सिंहासन विराजमान हुयेथे, उन सबकोही अल्ला-उद्दीनने उजाड़दिया जिस अग्निकुलके उत्पन्न हुए राजाओंके भृकुटी विलाससे एक समय समस्त भारतवर्षका भाग्य चलायमान होता था, आज उस प्रचण्ड मुसलमान वीरके अत्याचारसे उनका नाम निशानतक मिटगया। जिस जयसलमेर, गाग्रोन और बून्दीको भट्टलोग, खीची और हारवंशके राजाओंकी लीलाभूमि कहाकरते थे, आज अलाउद्दीनके अत्याचारसे उनकी दशा अत्यन्त हीन होगई है। परन्तु कालके अवश्य होनहार प्रभावसे वह समस्त राज्य उस नीची अवस्थासे फिर निकल आये हैं। जिस समय अलाउद्दीनके प्रचण्ड अत्याचारसे राजस्थानके देश ऊजड होगयेथे, उस समयमें मारवाडके राठौर और अम्बरके कुशावह लोग भारतके इतिहासमें नाममात्रको किसीने लिखेथे।

डाल दियागया । वहांपर तीन महीनेतक अत्यन्त कष्ट उठाकर बादशाहने अजमेर, रणथंबौर, नागौर, शुआ शिवपुर और पचासलाख रुपये व १०० हाथी अपने बदलेमें देकर छुटकारा पाया । खिलजीको विदाकरनेके समय तेजस्वी हमीरने कहा, "यह न समझना कि दिल्लीका बादशाह समझकर डरसे आपको छोडा गया है। आपकी मुआफिक सैकडों दुश्मनोंका हमला रोकनेके लिये मेरी शमशीर हमेशा तइयार रहैगी । आप नाहक मगरूर होकर चित्तौरको अपनी कदीमी दौलत समझकर फौज लेकर आये, इसही लिये आपका यह हाल किया गया । इसमें कोई शक नहीं कि आप बडेही जलील हुए, अगर कुछ दम रखतेहो फिर मेरे राजपर चढकर आना; हमीर हमेशा आपकी खातिरदारी करनेके लिये चित्तौरके दरवाजेपर खडा मिलेगा ।"

जब मालदेवका समस्त परिश्रम विफल हुआ । तब उसके बडेपुत्र बनवीरने राणाकी आधीनताको स्वीकार किया, हमीरने उसका आदर करके नीमच, जीरण, रतनपुर और कैवारादि कितने एक देश इस लिये उसको देदिये कि जिससे सुसरालवाले मर्यादाके साथ अपनी जीविकाको चलाये जॉय । उस भूमिवृत्तिके दानपत्रपर हस्ताक्षर करनेके समय महाराणा हमीरने अपने सालेसे कहा कि "विश्वासी होकर हमारी सेवा करतेरहो और अपना पालन किये जाओ । एक समय तो तुम तुरकोंके दासथे: परन्तु आज स्वधर्मवाले हिन्दूके दास हुए, यह ठीक है कि तुम अपने पिताका राज्य जानेसे दुःखी हुए होगे, परन्तु जरा विचार कर एकबार देख तो लो कि यह राज्यहै किसका ? मैंने किसके राज्यपर अधिकार कियाहै? यह तो हमाराही राज्यहै: बस अब तो यह समझना चाहिये कि हमारी चीज हमें मिलगई । जिस मेवाडके पहाडोंपर हमारे बडे बूढोंका रुधिर लगाहुआहै, आज सौभाग्य लक्ष्मीकी कृपासे उसही देशको पायाहै. और वही सौभाग्य लक्ष्मी हमको सब विपत्तियोंसे बचावेगी ।

तुम यह न समझना कि इस राज्य और इस धनको स्मर्णाकी पूजा करनेसे स्वाहा कर दूंगा ।" बहनोईके उपदेशवाक्य बनवीरके हृदयमें गडगये उसने उनको सार्थक करनेके लिये मेवाडराज्यके बढानेका संकल्प किया और थोडेही समयमें भिनसरोर शहरके राज्यपर चढाई करके उसको जीता और मेवाडमें मिलादिया । इस प्रकार वीरवर हमीरके अनन्त स्वभावसे मेवाडके गौरवका उद्धार होगया । यह देखकर राजस्थानके समस्त राजा परमानंदमें डूब गये अपनी ,

उद्धार कियाथा । मेवाडके भट्टीय काव्यग्रन्थोंमें हमीरके जन्म और बालकपनका वर्णन अत्यन्त विस्तारसे किया है ।

राणाके प्रथमपुत्र अरिसिंह कितने एक युवा सर्दारोंके साथ अन्दवानामक वनमें शिकार खेलनेको गये । वहाँ एक वराहको देखकर उन्होंने वाण चलाया । परन्तु निशाना चूक जानेसे सूकर भागकर जुवारके एक खेतमें घुसगया । अरिसिंहभी उसे पछियाते हुए खेतमें चलेगये । उस खेतमें एक टॉड़ बनाथा उसपर एक स्त्रीको इन्होंने देखा, अरिसिंहको देखकर वह स्त्री टॉड़से नीचे उतरी और नम्रवचनसे बोली । "अब आपके परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं है; मैं अभी इस वराहको लाये देतीहूं ।" इस खेतमें जो जुवारके पेड़ थे वे सात या आठ २ हाथके बड़े होंगे । राजपूतवालाने उनमेंसे एक वृक्षको उखाड़ा और उसकी नोंकको अत्यन्त तेज करलिया, फिर वह अपने टॉड़पर चढ़ी और उसलकड़ीके भालेको धनुषपर चढाकर ऐसे वेगसे मारा कि लगतेही शूकर तत्काल मरगया । तब वह उसको राजकुमारके निकट लाकर अपने कार्यको चलीगई । वीर्यवान राजपूतवालाओंकी अपूर्व वीरता और प्रचण्ड भुजबलका वृत्तान्त राजकुमारको भली भाँतिसे विदित था, परन्तु ऐसा अद्भुत कार्य उन्होंने कभी नही देखा । राजकुमार अरिसिंह और उनके साथी अत्यन्त विस्मित हुए और उस वीरवालाके विक्रमका वर्णन करते २ सबही एक नदीके किनारे पहुंचे । वहांपर भोजनकी तइयारियें होनेलगीं । क्रमानुसार भोजनके पदार्थ तइयार करके सजाये गये ।

भोजन करनेके समयभी सबही उस बालाके असीम बाहुबलकी प्रशंसा करते जातेथे, उसही समय उस ज्वारके खेतकी ओरसे एक मिट्टीका ढेला आकर राजकुमारके घोड़ेके लगा, वैसेही वह तुरंग तत्काल गिर पड़ा । सबने चकित होकर उस खेतकी ओरको देखा कि वही स्त्री टॉड़पर चढ़ीहुई ढेले फेंककर पक्षियोंको खेतसे उड़ा रही है । तब लोग समझगये कि इसके [illegible] हुए ढेलेसेही घोड़ेका पाँव टूट गया । वह स्त्रीभी तत्काल इस वृत्तान्तको जानकर अपना अपराध क्षमा करानेके लिये राजकुमारके पास आई । उसकी [illegible] सभ्यता और शीलको देखकर राजकुमार अपने साथियों सहित प्रशंसा करने लगे । साधारण कृषककन्याने क्या इस प्रकारके अद्भुत गुण [illegible] करना तो एक ओर रहा, उन्होंने इस कार्यको [illegible] । [illegible] कुमारके हृदयमें इस कुमारीका ध्यान बैठगया ।

कईएक विशाल मंदिर और स्तम्भ बनाए गयेथे उनके व्ययका अनुमान करनेसे हमारी उक्ति भली भांतिसे प्रमाणित होगी । उस समय इस प्रकारके एक जयस्तम्भके बनवानेमें एक राजाको अपने समयकी सारी आमदनी लगा-देनी पड़ती थी। यदि उस समयके मेवाडकी दश वर्षकी आमदनीभी एक स्तम्भ-को लगा दी जाय तोभी उसका तइयार होना कठिन हो। पहिलेही कह आयेहैं कि महाराणी पद्मिनीके महलके अतिरिक्त और समस्तही सुन्दर २ स्थान अला-उद्दीनने तोड दियेथे, परन्तु एक औरभी जैन धर्ममंदिर उसके करालग्राससे बच-गयाथा। जैन सम्प्रदायके प्रतिष्ठित सज्जनोंने इस मंदिरको बनवायाथा। ऐसा ज्ञात होताहै कि जैनधर्मावलम्बियोंकी एकेश्वरवादिताको जानकर अलाउद्दीनने उनके पवित्र धर्ममंदिरको विध्वंस न किया होगा। इन स्थानोंका दर्शन करनेसे साफ मालूम होगा कि शिशोदियाकुलके राजालोग शिल्पशास्त्रके अत्यन्त अनु-रागी थे । भूमिकरके सिवाय हिन्दूराजाओंको उस कालमें और कोई विशेष आमदनी नहीं थी, परन्तु केवल भूमिकरकी आमदनीसे किसप्रकार इतने २ खर्च करके वह अपनी विशाल सेनाका निर्वाह करते थे इस बातका विचार करनेसे हृदय विस्मित होताहै। अतएव निश्चय यही जान पडता है कि शिशोदीय राजा-लोग दीर्घकाल तक राज्य भोग करके अपने राज्यको धीरता, चतुरता और सुशृं-खलतासे पालन करते थे।

यदि ऐसा न करते तो इस प्रकारकी महान् कीर्तियें किसी प्रकारसे प्रतिष्ठित नहीं होतीं। उस उच्च और संपत्तियुक्त अवस्थामें मेवाडकी प्रजाने भी अपने कीर्तिस्तम्भोंको राजकी समान स्थापित कियाथा। परन्तु कालके कठोर और प्रचण्ड प्रहारसे वह समस्त कीर्तिस्तम्भ आज टूट फूट कर विध्वंस हो गये। राज स्थानके त्यागे हुए विजनदुर्गम देशोंमें आजतक उनके खंडहर दिखाई-देते हैं गौरव और सम्पत्तिके ऊंचे आसनपर विराजमान होकर महाराणा हमीरने वृद्ध अवस्थामें परलोक यात्रा की। महाराणा हमीर अतिवीर, तेजस्वी, साहसी और चतुर थे. उनके अपूर्व गुणोंका वर्णन आजतक मेवाडवाले किया-करतेहैं। वे लोग आजतक गिह्लोट कुलके इतने पवित्र और माननीय राजाओंके साथ वीर, धीर हमीरके नामका जप किया करतेहैं।

महाराणा हमीरके परलोकवासी होनेपर उनका बड़ापुत्र क्षेत्रसिंह (खेतसिंह) पिताजीके किये हुए विशाल राज्यभारको लेकर सम्वत १४२१ (सन १३६४ ई०) में चितौरके सिंहासनपर बैठा। बालक क्षेत्रसिंह अपनी मनस्विता,

थीं, उस काल हमीरकी आयु केवल बारह वर्षकी थी। उस समय उसको कोईभी नहीं जानता था, उस काल वह कृषीजीवनका सुख अनुभव करके मामाके यहां सुखपूर्वक रहतेथे। किन्तु इस शान्तिको वह अधिक दिनतक भोग नहीं करसके। सन्मुखही कठोर कार्यक्षेत्रहै; भयंकर तलवारको हाथमें लेकर वह चित्तौरके नष्ट गौरवको उद्धार करनेका विचार करनेलगे.

दिल्लीकी यवन सेनाके पग धरने से तबतकभी मेवाडकी भूमि प्रत्येक पलमें कम्पायमान हो रहीथी। उस कालतकभी विजयोन्मत्त तातार सेनाका भयंकर कुलाहल चित्तौरके परकोटेपर सुनाई देताथा। आज स्वर्गपर दानवोंकी सेनाने अधिकार कियाहै। आज निष्ठुर हृदयवालोंने आर्यलक्ष्मीको जकड़कर बांध-लियाहै, और उसको निष्ठुर रूपसे पद दलित करतेहैं। इस विपत्तिसे कौन चित्तौरपुरीका उद्धार करेगा? ऐसा कौनहै जो स्वदेशप्रेमिकताके महामंत्रसे उत्साहित होकर पीडित निगृहीत और पददलित आर्यलक्ष्मीका उद्धार करेगा? केवल महाराणा अजयसिंहका नामही इस विषयमें लिया जासकताहै। परन्तु वह अकेले क्या क्या करेंगे? उनके पास न किसी प्रकारका बलहै, न कुछ धन सम्पत्ति है! एक ओर तो मुसलमानोंके ग्राससे चित्तौरका निकालना अत्यन्त आवश्यकहै और दूसरी ओर उन पहाडी भील सरदारोंके अत्याचारोंका रोकनाभी कर्तव्य कार्यहै। इस समय पहिले किस कार्य्यको करना चाहिये। महाराणा इसका कुछभी विचार न करसके। उन भील सरदारोंमें मुंजाबलेचा नामक एक महावीर था। अजयसिंहसे इसकी घोर शत्रुता थी एक समय इस भीलने राणाके स्थान शेरोमल्लपर चढाई करके उनके साथ भयंकर द्वन्द्वयुद्ध कियाथा। उस द्वन्द्वयुद्धमें राणाजीने उस भीलके मस्तकपर भाला माराथा। राणाके दो पुत्रथे बडा आजीमसिंह. और छोटा सुजन सिंह। एककी उमर पन्द्रह और दूसरेकी सोलह वर्षकी थी। इस तरुण अवस्थामें ही राजपूतोंके वीरचरित्रका उदाहरण दिखाई देजाताहै, परन्तु अजयसिंहके विपत समयमें इन दोनों पुत्रोंने बहुतही थोडा कार्य किया, इस विपत्तिकालमें चित्तौरके इस शोचनीय विपत्तिकालमें अजयसिंहने बहुत खोजनेके पीछे हमीरको उसके मामाके यहांसे बुलवाया। बारह वर्षके राजपूत कुमार शान्तिमय जीवनको छोडकर स्वदेशका उद्धार करनेके लिये समरकी रंगभूमिमें आये। सबसे पहिले तो महाराणा अजयसिंहने कुमार हमीरसिंहको अपने प्रचण्ड वैरी भील सरदार मुंजाके ऊपर चढाई करनेको भेजा। कुमार [illegible]

तसे सप्तधातु*पाई जातीहैं, परन्तु इस समय यह वार्ता ठीक नहीं जानपडती। सोनेका तो कोई पताही नहीं पायाजाता हां चांदी, टीन, तॉवा, सीसा और रसांजन यह वस्तु वहुतायतसे निकलतीहैं। परन्तु चॉदी और टीन जिस एकही खनिज पदार्थसे निकलती थीं, और जिनको उसपदार्थसे पृथक् २ करलिया जाताथा, आज वहुतसी टीनको पृथक् करनेपरभी थोडीही चॉदी निकलतीहै ×

लाक्षराणाके शाशनकालमें मेवाडकी अत्यन्त श्री वृद्धि हुईथी। और महाराणाका गौरवभी अत्यन्त वढ़ाथा। अम्बरके अन्तर्गत नगराचलनामक स्थानमें शंकलावंशके कितने एक राजपूत वास करतेथे, राणा लाक्षने उनकोभी पराजित किया। केवल अपनी जातिके विरुद्धही उन्होंने खड्ग नहीं धारण कियाथा, वरन दिल्लीके वादशाह लोदीसेभी उन्होंने संग्राम किया था, और विदनौरनामक स्थानमें वादशाहकी भलीभांतिसे खवर लीथी। राणा लाक्ष जिस प्रकारके वीरथे, वैसेही वीरोचित पवित्र कार्यमें उन्होंने अपने प्राणोंको नेवछावर करदियाथा, उपरोक्त संग्राम होनेसे कुछही दिन पीछे पुण्यभूमि गयाजीपर म्लेच्छोंने चढ़ाई कीथी। पापी म्लेच्छोंके द्वारा गयातीर्थके विरजानेपर, सनातनधर्मकी विपत्तिके समयपर क्या सनातनधर्मावलम्वी वीर भूपाल गण चुपचाप रहसकते हैं? सम्पूर्ण भारतवर्षमें एक वार संघर्षण हुआ। क्षत्रीवीरगण, यवनोंके कलुषमय कवलसे पुण्यभूमिका उद्धार करनेके लिये अपनी। २ सेनाको लेकर चले। शिशोदीय वीर राणा लाक्षभी इस धर्मयुद्धमें अपनी सेनाको लेकर गयेथे। महाराणाने उस धर्म्मयुद्धमें अनुपम वीरता प्रकाशित करके वहींपर अपने प्राणोंको न्योछावर करदिया। स्वधर्मानुराग और स्वदेश प्रेमिकताहीके कारणसे उनका नाम माननीय मेवाडके प्रसिद्ध और प्रातःस्मरणीय राजाओंकी पवित्र नाममालाओंमें ऊंचस्थानको प्राप्त हुआ-

करतेहैं, यदि देशमें चारों ओर शान्ति विराजमान रहतीहै, यदि किसीके साथ शत्रुता अथवा विद्वेषभाव नहीं रहताहै, तो नवीन राजा उस शान्तिको भंग नहीं करता, उस समय वह लीलाके अभिनयसेही अपने पूर्व पुरुषोंके प्राचीन वीराचारकी रीतिको पूरी किया करतेहैं। महाराज हमीरने जिसदिन राज्यका भार ग्रहण किया उसही दिन इस वीरभावके करनेको तइयार हुए। तथा अपने चचाके वैरी बलैचाके राज्यपर आक्रमण करके उसके सेलिओ नामक गिरिदुर्गपर अपना अधिकार किया। इस सिद्ध टीकादौड़की रीतिपर जो प्रचण्ड वीरता महाराज हमीरसिंहने प्रकाशितकी थी, उससे ज्ञात होगयाथा कि यही महावीर चित्तौरके नष्टगौरवका उद्धार करेगा।

भट्टग्रन्थमें लिखाहै कि "जिसदिन अजमल्ल (अजयसिंह) ने अपरंमार्ग (परलोक) की यात्रा कीथी, उसदिनका खुलाहुआ हमीर राणाका खड्ग फिर उनके हाथसे न छूटा।" वास्तविक बात यहहै कि हमीरसिंहका सम्पूर्णजीवन, प्रचंड देशवैरीके, विरुद्ध खड्गधारण करनेमेंही वीत गयाथा। हम ऊपर लिख-चुकेहै कि अलाउद्दीन चित्तौरका राज मालवदेवको सौंप गयाथा सो मालवदेव दिल्लीकी सेनाके साथ चित्तौरमें रहताथा।

हमीर राणाकी सहायताके लिये जो लोग उस समय थे यदि उनको मुट्ठीभरभी कहा जाय तो ठीक होगा। फिर वह किस प्रकारसे थोड़ीसी सेनाको साथ ले दिल्लीकी विशाल अनीकिनीके सामने आवे? ऐसी अव-स्थामें उन्होंने जिस मार्गका आश्रय लिया, उसके द्वारा उनका कार्य भलीभाँतिसे सिद्ध हुआ। वह शत्रुओंके लिये केवल परकोटायुक्त नगरोंको छोड़कर शेष देश २ और गाँव २ को ऊजड़ करने लगे! अनन्तर इस प्रकारका ढंडोरा फेर दियागया कि "जो लोग महाराना हमीरसिंहको अपना स्वामी मानें वह अपने २ वासस्थानको छोडकर परिवारके सहित पूर्व और पश्चिम प्रान्तमें स्थित हुए गिरिमार्गके भीतर आन बसें, नहीं तो वह शत्रुओंमें मिल-जांयगे और उनको अत्यन्त कष्ट मिलेगा।" इन ढोंडोंके फिरतेही लोग अपने घरोंको छोडकर झुंडके झुंड आरावली पर्वतकी उपत्यकाके भीतर जाय बसने

षष्ठ अध्याय ६.।



राजपूतोंके नारी विषयक शिष्टाचार;–मेवाड़में बड़ेपुत्रके उत्तराधिकारकी रीतिमें फेर। न्यायानुसार उत्तराधिकारी चण्डके बदले छोटे भ्राता मुकुलजीको सिंहासनकी प्राप्ति;–मेवाडमें राठौर लोगोंकी अन्याय प्रभुतासे अनेकप्रकारके झगडोंका उत्पन्न होना: उनको चित्तौरसे निकालकर वीरवर चण्डका मन्डोर-नगर प्राप्त करना;–मेवाड और मारवाडराज्यके बीचमें परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध-का बन्धन मुकुलजीका राज्यशासन, और उनकी हत्याका वृत्तान्त।

आजकल बहुतसे महाशय यह कहतेहैं कि जो लोग स्त्रीजातिके विशेष अनुरागीहैं वह सबसे अधिक सभ्यहैं। यदि इससिद्धान्तका अनुमोदन कियाजाय, यदि स्त्रीजातिके प्रति अनुराग और शिष्ट व्यवहारके परिमाणके अनुसार जातीय सभ्यताकी बराबरीकी तुलना करनीहो. तो अवश्यही राजपूतलोगोंको सभ्यताका अग्रनायक स्वीकार करना चाहिये। राजपूतलोग अपने हृदयमें आराध्य देवताकी भांति स्त्रीकी पूजा किया करतेहैं; यदि इस देवताका किंचितभी अपमान होजाय यदि उसके सन्मान या शिष्टाचारमें जराभी अन्तर पड़ जाय तो तेजस्वी राजपूतोंके हृदयमें आगसी बलउठतीहै. और जबतक अपमानकारीके हृदयके रुधिरसे अपनी आग नहीं बुझालेते, तबतक किसी प्रकारसे उनकी शान्ति नहीं होती। आगा पीछा न सोचकर साधारण उपहासकी रीतिसे इस रीतिमें विघ्न डालनेवाले एक बन्धुकोभी राजपूतोंने भयंकर शत्रु गिनाथा। जो राठौर और कुशावहलोग बहुत दिनसे एक अभिन्न सौहार्दकी डोरीमें गुथेहुएथे.इस शिष्टाचारके विरोधी विद्वेषात्मक वाक्यसे वे परस्पर एक दूसरेके शत्रु होगये। इस शत्रुतासे दोनोंओरकी बडीभारी हानि हुई।जिससमय वे दोनों मित्रभावसे रहतेथे तब उन दोनोंका बल एक साथ मिलकर अत्यन्त दुर्धर्ष होगयाथा। यहांतक कि प्रचण्ड महाराष्ट्री भी उनके सामनेसे तृणकी समान उडगयेथे। परन्तु जब इस अनर्थ विवादसे दोनों अलग २ होगये तब उन महाराष्ट्रियोंने सुयोग पाकर उन दोनोंको पराजित करके उनकी घोर हानी की। अतएव समझना चाहिये कि तेजस्वी राजपूतोंके लिये रमणी विषयक शिष्टाचार साधारण बात नहींहै। क्योंकि दिनसे अतिसाधारण परिहास करनेसे मेवाड़के स्वामी महाराणा लाखाने जो नीति अपने बड़ेपुत्र चंडके हृदयमें जगादीथी. वह सहजमेंही नहीं बुझी। इसके

विदेशीय यात्री वहापर निरापद पहुँचसके। कैलवाडा, पहाड़के शिखरपर वसाहुआ है। उस शैलशिखरपरही, उपरोक्त वार्ताके वहुतदिन पीछे कमलमेरका प्रसिद्ध किला बनाहै। देखनेमें कैलवाड़ा अतिमनोहर है,इसके चारों ओर सघनवन विराजमानहै; बीच २ में असंख्य सोतेवाली नदियें कल २ करतीहुई वही जातीहैं, और प्रकृतिके गंभीर भावको दूना वढातीहैं। जगह २ वडे २ खेत और चारणक्षेत्र सुंदर भावसे शोभायमान हैं। यहांपर भाँति २ के स्वादिष्ट कन्द मूल फलभी पाये जातेहैं। इस देशका विस्तार २५ कोशमें है। यह देश पृथ्वीसे आठसौ और समुद्रकी समतल भूमिसे दोहजार हाथ ऊंचा है। इस ऊंचे पर्वतके चारों ओर अगणित गुप्तमार्ग विराजमान हैं। उन कूटमार्गोंसे उतरकर वहांके निवासी, गुर्जर मारवाड अथवा पश्चिम प्रान्तमें स्थित हुए सुहृद्भाव पूर्ण भीलोके राज्यमें आते जाते और आवश्यकतानुसार उनसे सहाय वलभी पाया करतेथे। अगुनापानोरके उन भीलोसे गिह्लोटके राजालोगोंको समय २ पर कितना उपकार प्राप्त हुआहै, उसकी संख्या नहीं की जा सकती। राणाओंकी रक्षा करनेके लिये भीललोगोंने प्रसन्नमुखसे अपने प्राण दियेहैं—अनाहार रहकर—रातोंभर जागकर तथा अत्यन्त कष्टोंको सहकरभी उन्होंने गिह्लोटकुलके लिये पान भोजनकी सामग्री पहुंचाई है। हाथमें धनुष वाण धारण करके उनकी सहायता करनेमें लगे रहते इसप्रकार यह भील राजपरिवारकी सर्व विपत्तियोंसे रक्षा करते थे। इसही कारणसे मेवाड़के राजालोग उनके साथ कृतज्ञताके वन्धनसे वँधे हुएहैं, यह वन्धन किसीप्रकारसेभी शिथिल नहीं होसकता। इस महोपकारका यथार्थ वदला होही नहीं सकता, यह महोपकार पवित्र और स्वर्गीयहै। इसके अतिरिक्त मेवाड़के पूर्वप्रान्तमें स्थित विशाल पर्वतमालाके वीचवाले सघन वन और निर्जन कन्दराओंके भीतर आश्रय ग्रहण करके मेवाडके निवासी, अत्याचारी मुसल्मानलोगोंके हाथसे वचगयेथे; परन्तु निठुर अलाउद्दीनने ढूंढ २ कर उन सबका सत्यानाश करडाला।

जिस समय मेवाड़की यह दशा हो रहीथी, जिस समयमें इस देशके निरे और उत्तम २ नगर शत्रुओंके अधिकारमें थे, वहांके मंदिर और [illegible] स्थान जब राणा हमीरकी कठोरनीतिके अनुसार भयानक श्मशान बनगयेथे, उनही समय चित्तौरके राजा मालदेवके यहांसे एक नारियल आया। इस संवादसे

सुना । पुत्रके इस सिद्धान्तको अनुचित कहकर राणाने वारंवार उसको बहुतेरा समझाया, परन्तु चण्डके एकभी ध्यानमें न आया। वे चंडके दृढसंकल्पको किसी प्रकारसे भी नहीं टाल सके। राणाको उभय संकट हुआ! एकओर चंडकी कठोर प्रतिज्ञा और संकल्प, दूसरीओर मारवाडके राजा रणमल्लका घोर अपमान। क्रमसे यह अपमान अनिवार होने लगा । कारण कि राणाके हजारों उपदेश, स्नेहवचन, अनुरोध, आदेश अन्तमें भयदिखानाभी निष्फल होगया । दृढ़प्रतिज्ञ चंडने किसी प्रकारसे उस विवाहमें अपनी सम्मति न दी । तव तो राणा पुत्रसे अत्यन्त अप्रसन्न हुए, और रणमल्लको अपमानसे बचानेके लिये स्वयं उस विवाहको करना स्वीकार किया । कहां तो बुढापेमें संसारकार्यको छोडकर अन्तसमयको शान्तिसे विताना सोचा था, परन्तु सो न होकर फिर संसारके चक्रमें घूमना पडा । जिस पुत्रको प्राणोंसेभी अधिक समझते थे, जिसको यौवराज्यपर अभिषेक करके संसारसे छुटकारा लेनेकी तइयारी कीथी; उस पुत्रका ऐसा आचरण? पुत्रहोकर पिताके सुखदुःखका कुछभी ध्यान न किया-पिताके मुखकी ओरभी न देखा!-फिर वह पुत्र किसकाम आवैगा? राणा इन वातोंको सोचकर अत्यन्त रुष्ट हुए। क्रोधके मारे अत्यन्त तिरस्कार किया तेजस्वी चंड चुपचाप है—मौनभावसे पिताके समस्त तिरस्कारको सहा । दारुण अपमानके मारे उसका हृदय खलबलाने लगा। परन्तु वह स्थिरभावसे खडा रहकर उस भयंकर तिरस्कारको सहन करता रहा। कुछभी उत्तर न दिया। फिर राणाने गंभीरकंठसे कहा "अच्छा मैंही उस स्त्रीका पाणिग्रहण करता हूं; परन्तु तुम निश्चय जानियो कि उसस्त्रीके गर्भसे यदि कोई पुत्र हुआ तो तुम्हारे उत्तराधिकारका अधिकार जाता रहेगा—शपथ करो।" इस कठोर वचनको सुनकर तेजस्वी चंडके शिरका एक केशभी तो कम्पायमान नहीं हुआ । वह अचल अटल और स्थिरभावसे खडे रहकर धीरभावसे बोला । "हां पिता! मैं भगवान एकलिंगकी शपथ करके कहताहूं कि पुत्र होनेपर मैं अपने उत्तराधिकारको स्वयं ही छोड़दूंगा ।

होनहारकी गूढ़ लिखनको कौन मेटसकताहै? बारहवर्षकी कन्यासे पचास वर्षके महाराणाका विवाह हुआ । इस विचित्र संयोगसे होनेवाले पुत्रका नाम मुकुलजी हुआ. जब मुकुलजी पांचवर्षका हुआ तो राणाने सुना कि यवनलोगोंने पुण्यतीर्थ गयाजीपर चढ़ाई की है और उन दुराचारियोंके हाथसे इस पवित्रक्षेत्रका उद्धार करनेके लिये भारतवर्षके समस्त राजालोग उसही ओरको चलेहैं । तब महाराणा लाखानेभी उस कठोर व्रतका अवलम्बन करके अपने अन्तकालको पवित्र करनेका

किया, परन्तु नगरके सिंहद्वार पर तोरण * या विवाह सूचक किसी प्रकारका चिंह्न न देखकर हमीरके मनमें महाशंका हुई। उन्होंने विचारा कि इष्टमित्रोंका कहना ठीकही होता दीखताहै।

तिसपरभी उन्होंने अपने हृदयसे धीरभावको न जाने दिया। मालदेवके पुत्रोंसे कुमारने इसका कारण पूछा, उत्तरमें जो कुछ सुना उससे संदेह भली भांतिसे तो न गया परन्तु हृदय शान्त होगया। क्रमानुसार वरात चित्तौरके बीचमें पहुँच-गई। वीर पूज्य पितृपुरुषोंकी असीम वीरता और गौरवकी विशाल स्तम्भश्रेणी आज पहली पहलही कुमारने देखी। एक साथही हृदयमें सैकडों दुःख सुखकी चिन्ता उदय होगई। इस प्रकार चिन्ता करते २ अपने बडे बूढोंकी विशाल अटाअटारियोंके भीतर पहुँचे। वहांपर मालदेव, तथा उसके पुत्र वनवीरने सब सरदारोंके साथ हाथ जोडकर कुमारका आदर किया। कुमार विवाहमंडपमें आये। परन्तु वहांभी विवाहकी कोई धूम धाम न पाई गई: मालदेवने शीघ्रही अपनी पुत्री-को लाकर हमीरके हाथमें समर्पण किया। परंतु विवाहकी कोई रीति भांति न हुई। केवल गँठजोडा हुआ और वर कन्याका हाथ एक दूसरेके हाथपर रक्खागया। कुल पुरोहितने धीर और नम्र वचनसे कहा कि धैर्य धारण कीजिये, कल समस्त कामना पूर्ण होंगी। कुमार इन बातोंके मर्मको न समझे। उनके हृदयमें अनेक प्रकारके सन्देह और खटके उदय होने लगे। तदनन्तर वर दुलहिन एकान्त गृहमें लाए गये। परन्तु कुमार उस समय चिन्ताग्रस्त थे। उनको इस प्रकारसे म्रिय-माण और अत्यन्त शोकाकुल देखकर नववधू चरणोंमें गिरकर आम्रवाणीसे कहने-लगी "प्राणपति हृदय नाथ! इस दासीके अपराधको ग्रहण न कीजिये! आपकी विकलताके कारणको मैं जानती हूं। पिताने जिसकारण इस दासीको गुप्तरीतिसे

और अद्भुत आत्मत्याग देखकरभी राणाके मनमें सन्देह हुआ इससे युद्धमें जानसे प्रथमही उन्होंने मुकुलजीको राजपर अभिषेक करदेना चाहा, शीघ्रही अभिषेककी सामग्री एकत्र हुई। पाँचवर्षके वालक मुकुलको राजसिंहासनपर विराजमान करके चंडने सवसे पाहिले उसको राजोपयोगी सन्मान और आदर दिखाया, व उसके निकट अनुगत और विश्वासी रहनेकी प्रतिज्ञा की। इस महान स्वार्थ त्यागके वदले मंत्रभवनमें उनको सवसे ऊंचा आसन दिया गया और यह भी विधि होगई कि उस दिनसे जिस किसी सामन्तको भूमिवृत्तिका दान किया जायगा, उसके दानपत्र-पर राणाके हस्ताक्षरोंसे ऊपर चंडके खड्गका चिह्न वना रहैगा। चित्तौरके राजाओंने उस दिनसे जिसको जो कुछ भूमिवृत्ति दान की उस दानपत्रके ऊपर सालुम्बा * पतिके खड्गका चिह्न वना हुआ दिखाई देताहै।

कुमार चंद्रका हृदय जिस महत्त्व, वीरता सहनशीलता और उदारता आदि सुन्दर गुणोंसे भूषित था, यदि मुहूर्तभरतक उनके आत्मत्यागका विचार किया जायगा तो भली भांतिसे यह वात प्रमाणित होगी; कि पिताके पीछे अपने लघुभ्राता मुकुलका और सम्पूर्ण मेवाडराज्यकी भलाई व श्रीवृद्धिके लिये अति-चतुरताके साथ समस्त राज्यभारको भली भांतिसे देखने लगे। परन्तु मुकुलकी माता उनके प्रवन्धसे अत्यन्त अप्रसन्नथी। यह चाहतीथी कि मुकुलके समर्थ होनेतक मैं स्वयं राजकार्यका प्रवन्ध करूंगी। परन्तु उसकी यह आशा पूर्ण न हुई; इस कारणसे मनमें महादुःख हुआ। कुटिल हिंसा और विद्वेषके चलायमान करनेसे उसने पवित्र कृतज्ञताको हृदयमें स्थान न दिया ! उस समय उनका हृदय पशुकी समान होगया था। नहीं तो जिस चंडके स्वार्थ त्यागके विना वह कभी भी "मेवाडकी राजमाता" न होसकती थीं; हृदयपर पत्थर रखकर यथार्थ राक्षसी और पिशाचनीकी मूर्त्ति वनाय उसही चंडके अपूर्व गौरवको भूल गई। तथा उसहीका वुरा चीतनेके विचारमें लगीं ! वीरवर चंडके प्रत्येक कार्यको वह राज-माता डाह और घृणाके साथ देखने लगीं। फिर पीछे किसी प्रकारका छिद्र न देखपानेसे केवल अमूलक संदेह और विनाने स्वभावके वशमें पड़कर चंडके सीधे साधे कार्योंमें भी दोष लगाकर कहा। "राजकार्यको चलानेके वहानेसे चण्ड स्वयंही राणा वने जातेहैं, यद्यपि वह अपनेको राणा नहीं कहते हैं, परन्तु इस उपाधिको केवल नाममात्र रखना चाहतेहैं। धीरे २ वह

* चंडके वंशवाले चण्डावत (चन्दावत) नामसे पुकारे जाते हैं। उनमें स्वामी [illegible] [illegible] रहनेका स्थान सालुम्बा है। मेवाडके सरदारोंमें [illegible]

परामर्शभी की कि किस प्रकारसे मनोरथ सिद्ध होकर चित्तौरका उद्धार हो सकताहै। स्त्रीके परामर्शके अनुसार हमीरने अपने श्वसुर मालदेवसे दहेजमें जलधरनामक एक सरदारको मांग लिया, मेहतावंशीय जलधर चित्तौरका अतिचतुर कर्मचारी था। मालदेव जामाताके कहनेको टाल नहीं सका, इसके उपरान्त एक पखवाडेके पीछे कुमारहमीर जलधरको साथ लेकर स्त्री सहित अपने कैलवाडा नगरमें पहुँचगये, और चित्तौरके उद्धारका अवसर देखते हुए सावधानीके साथ समय विताने लगे।

कुछकाल वीतनेपर हमीरसिंहके, मालदेवकी पुत्रीके गर्भसे एक पुत्र हुआ। इस आनन्दोत्सवके समयमें मालदेवने राणा हमीरको वह समस्त पहाडीदेश दे दिये। जो कि अपने अधिकारमें थे। कुमार क्षेत्रसिहने जब बारहवें मासमें पांव रक्खा तब एक गणक आया और उसने विचार करके कहा कि "इस लडकेपर चित्तौरके पुत्रकदेवता क्षेत्रपालकी कुदृष्टि पडी है, अब इसका खंडन नहीं किया जायगा तो राजकुमारका अमंगल होना सम्भव है।' हमीरकी महाराणीको यह कुअवसरभी सुअवसर होगया। रानीने विचार किया कि इस सुअवसरपर चित्तौरमें जाकर प्राणप्यारेका मनोरथ सिद्ध करनेमें सहायता करूंगी। इसही कारणसे शीघ्रता पूर्वक ग्रहशान्तिका उपाय मालदेवको पत्रमें लिख भेजा। मालदेवने इस पत्रको पातेही अपनी कन्या और धेवतेको बुलानेके लिये कई एक हथियारबंद सिपाहियोंको भेजा। महारानी उनके साथमें पिताके घरपर आई। आतेही देखा कि पिता मादरियाके मैरलोगोंको दमन करनेके अभिप्रायसे राज्यके प्रधान २ सरदारोंको साथ लेकर गयेहैं। इस अवसरकोही हमीरके सौभाग्यका द्वार समझा गया। उस समय क्षेत्रसिंहकी माताने उन सरदारोंको जलधरकी सहायतासे शीघ्रतासे अपने वशमें कर लिया, कि जो मालदेवके साथ न जाकर चित्तौरमें रह गयेथे। इस ओर कुमार हमीरभी दल बल सहित चित्तौरके निकट

महानताके कितने चित्र मनुष्योंके इतिहासमें दिखाई देते हैं? इस अद्भुत स्वार्थ-त्याग करनेके बदलेमे उनको क्या मिला? हिंसा द्वेष, स्वार्थपरता और घातकताके भंडार इस संसारमें उसके साथ कौनसी भलाई की? वे अपने पितृराज्यको छोड़कर चले गये, दुष्ट राजमाताने एकवार भी उनके ठहरनेके लिये न कहा, एकवार भी उनके लेआनेकी चेष्टा न की। वरन उलटी प्रसन्न हुई. विशेष करके पिता भ्राता और मैकेके दूसरे कुटुम्बियोंके आनन्दकी सीमा न रही। मन्दोरनगरको छोडकर वे लोग क्रम २ से चित्तौरमें आने लगे। सबसे पहिले मुकुलके मामा जोधने (इन्होंने ही जोधपुर वसाया) मारवाडकी मरुभूमिको छोडकर मेवाडकी शीतल छायामें आनकर विश्राम लिया। कुछदिन पीछे जोधके पिता रणमल्ल और अगणित सेवकादिभी आगये। ज्वारकी रोटी खाते २ मारवाडमें जिनके गले सूखगये थे आज वह लोग हरे भरे मेवाडकी गेहूँकी वनी रोटियें खाकर परम प्रसन्नतासे वालक मुकुलका जय २ कार करने लगे।

ऐसे कितने आदमी हैं, जो क्रूरनीति मनुष्योंके हृदयका भाव समझ सकते हों? मारवाडके गरम रेतीले मैदानमें बैठकर जो लोग उस स्थानको स्वर्गके सुखका भंडार समझकर गर्व करते थे, आज वही महानुभाव वीरगण उस "स्वर्गादपिगरीयसी" जननी जन्म भूमिको छोडकर मेवाडकी भूमिमें किस कारणसे आये हैं? कौन जाने कि उनके हृदयमें कौनसा विचार उदय हुआ है? अपने वालक धेवतेको गोदमें लेकर वे वाप्पा रावलके सिंहासनपर विराजमान हुए। राणाके छत्र चामर और किरण उनके चारोंओर शोभा पाते थे. उनके हृदयमें सुखकी कितनी ही लहरें उठा करती थीं, मनही मनमें अनेक प्रकारके स्वप्न देखा करते थे। जिस समय वालक मुकुल खेलनेके लिये राजसभासे चलाजाया करता था; तब वह अकेले ही सिंहासनपर बैठे रहते थे। वे समस्त राजचिह्न उससमयभी उनके मस्तकपर शोभायमान रहते थे। कोई इन वातोंको देखकर भी न देखताथा। कोई भी साहस करके उनसे इस विषयकी पूछ पाछ न करता था। परन्तु केवल एकजन इस अभिप्रायको समझा। राठोरराज्यका यह व्यवहार देखकर वह मनमें अत्यन्तही दुःखित हुआ। सिसोदिया कुलकी वह एक पुरोधात्री थी राजकुमारकी रक्षाका भार इसके ही हाथमें था। कथा चौरव वाप्पा रावलके

* [illegible]
[illegible]
[illegible]

त्सव करने लगे। शिशोदिया जातिके राजकुमारने आज शिशोदीय कुलकी उस स्वाधीनता व मान गौरवका फिर उद्धार किया है, आज फिर वीरकेशरी वाप्पा रावलकी सुवर्ण–प्रतिमा–खचित प्रचंड विजय–वैजयन्ती–चित्तौरके दुर्गपर फहराने लगी। उसको निहारकर निर्वासित नगरनिवासी अत्यन्त हर्षित हो कमलमीरके वनका रहना छोड़कर चित्तौरनगरमें आने लगे। आज सबके हृदय आनन्दसे परिपूर्ण हैं। इस प्रकार हमीरको उद्धारकरता मानकर मेवाडके दलके दल लोग आकर उनके झंडेके नीचे इकट्ठे हुए। उनके मनोरथकी रक्षा करनेके लिये सबही मालदेवके विरुद्ध संग्राम करनेको तइयार हुए। राणा हमीरने इस सुयोगको हाथसे नहीं जानेदिया। प्रजाकेही बलसे राजा राज्यकी रक्षा करसकताहै। वही प्रजा आज हमीरके लिये अपना प्राणतक देनेको तइयारहै। बुद्धिमानलोग कभी ऐसे अवसरको हाथसे नहीं जानेदेते। इसी समयमें यह समाचार आया कि मालदेवकी सम्मतिके अनुसार महम्मदखिलजी अपनी फौजको साथ लेकर चित्तौरपर चढा आताहै। हमीरपर विलम्बकरना नहीं सहागया। वेभी अपनी सेना और सामन्तोंको लेकर बादशाहकी गति रोकनेके लिये उसही ओरको चले। महम्मद बुरी घडीमें चित्तौरपर चढ़ाई करके आयाथा, जीतना तो दूसरी बातहै, उसको वीरहमीरके हाथमें अपनी स्वाधीनतातक गवानी पड़ीथी। अपनी दुर्बुद्धिसे विषम भ्रममें पतित होकर वह उन दुर्गम मार्गोंसे जो कि मेवाड़के पूर्वप्रान्तमें थे, अपनी सेनाको लाया, ऐसा करनेसे उसकी बड़ी हानि हुई। वह देश इतना जटिल है कि उसमेंसे वाहिर न निकल पाकर बादशाहकी [illegible] सेना एकसाथ नावास होगई। बहुतने आदमी मरगये। इस प्रकार [illegible] कष्ट और संकटोंका सामना करके बादशाहने सिंगोलीनामक स्थानमें छावनी डाली। महाराणाकी सेनाने वहींपर उसका सामना किया। दोनों दलोंमें घोर संग्राम होनेलगा। महाराणा हमीरसिंह प्रचंड केशरीकी समान [illegible] नाको दलित करने लगे। इस स्थानमें महाराणा हमीरने मालदेवके पुत्र हरिसिंहके साथ घोर युद्ध किया। परन्तु इस द्वन्द्वयुद्धके अन्तमें [illegible] अभागा हरिसिंह मारागया।

साथ हुआ करती है। इससमयमें राणासे लेकर राज्यका भिखारीतक इस धूम-धाममें मिलजाता है ※

अब तो राजमाताकी शंका और चिन्ताकी सीमा न रही। वह समझगई कि जब इस दुराचारीने रघुदेवको मारडाला तो अब मुकुलके संहार करनेका भी शीघ्रही विचार करेगा। वे इसविपत्तिसे बचनेका उपाय खोजने लगी। जिस ओर देखतीं;उस ओर संकटही संकट दिखाई देताहै। चारोंओर शत्रुही शत्रुहैं, रणमल्लके आदमी चारोंओर लगे हुएहैं। चित्तौरमें जितने बडे २ पदहैं, उन सबपर रणमल्लके आदमी डटेहुए हैं। उनके सिवाय चित्तौरके सबसे बडे आसन पर जयसलमेरका एक भट्टी राजपूत विराजमानहै।

रणमल्लने सबकोही अपने वशमें कर लिया है; वह सबकोही पुतलीकी तरह नचाताहै। फिर इससमय ऐसा कौनहै जो रानीकी ओर खडा होकर शिशोदिया कुलकी लाजके जहाजको न डूबने दे। वाप्पारावलके लगायेहुए वंशवृक्ष कौन इस आंधीसे बचावैगा?—कोई नहीं। केवल एक आदमीः—वही देवताकी समान उदारहृदय वीरवर चंड। क्रमसे रानीका आशा भरोसा लोप होने लगा। वह चारोंओर अन्धकार देखने लगीं। इस संकटमें पडकरही उन्होंने चंडको याद कियाथा। चंडकी कहीहुई होनहार वाणी उनके कानोंमें गुंजार रहीथी। ज्यों ज्यों समय बीतताथा, त्यों त्यों रानीका हृदय सूना होता जाताथा, राणी हाथमलकर पछताई और जब दुःख न सहागया तो चंडके पास अपना सारा वृत्तान्त कहला भेजा। यद्यपि चंड उससमय दूरथा, परन्तु चित्तौरके समस्त समाचार उनको प्रतिदिन मालूम होजाते थे। वह पहलेसेही जानगयेथे कि पीछे पछताकर मुकुलकी माता मेरीही सहायता चाहेगी। दुराचारी राठौरलोगोंके ग्राससे चित्तौरका उद्धार करनेके लिये वह पहिलेसेही तइयार होगये थे। इससमय विमाताका पत्र पाकर

※ दशहरेके दिन मेवाडमें एक उत्सव हुआकरता है। उस उत्सवके दिन [illegible] दशों दिन मेवाडके प्रत्येक घरमें रघुजीकी वेदी [illegible] होजाती है। उनकी मूर्ति [illegible] उस वेदीपर रखते हैं। राजपूतोंकी स्त्रियें उनकीही पूजा करके उनसे [illegible] कामना करती है, और राजपूतलोग [illegible] [illegible] एक [illegible] मेवाडके [illegible] कोई उनकी पूजा नहीं करता। [illegible] [illegible] है। रघुदेवकी [illegible] [illegible]

इच्छानुसार विधि विधानसे महाराणा हमीरकी पूजा करने व आवश्यकतानुसार अपनी सेनाको भी भेजकर उनकी सहायता करनेलगे।

उस कालमें सारे भारत वर्षके बीच महाराणा हमीरही एक प्रबल पराक्रमी राजा थे, भारतके प्राचीन राजवंश उससमय बहुधा मुसलमानोंके सतानेसे ऊजड होगयेथे। माडवार और जयपुरके वर्तमान राजाओंके पूर्व पुरुषगण और बूंदी, ग्वालियर, चन्देरी, सरैसीन, सीकरी, काल्पी और आबू आदिके राजालोग अति विनीत-भावसे चित्तौरके चक्रवर्त्ती नरेश महाराज हमीरकी पूजा करके उनकी आज्ञा-को देववाक्य समझकर पालन करते और अपनी २ सेना लेकर उनकी सहायता करनेको शत्रुसे संग्राम करते थे।

जिस कुदिनमें भारतकी स्वाधीनताका हार तातारियोंके गलेमें डाला गया: उसही दिनसे मेवाड़ राज्यका पूर्वप्रताप बहुतायतसे मंद होगया था। यद्यपि वह प्रताप विशेष अधिक और प्रचंड था, परन्तु उसके चलेजानेसे मेवाड़की कोई विशेष हानि नहीं हुई। कारण कि एक ओरसे जिसप्रकार वह कम हुआ, दूसरी ओरसे वैसेही राज्यकी प्रभुता अखण्ड भावसे स्थापित होगई। यदि विचार कर देखा जाय तो ज्ञात होगा कि मेवाड़का यह दृढ़ीकरण वीर हमीरकेही राज्यमें सबसे पहिले हुआ। बाबरके समयतक मेवाड़ इसी प्रकारसे दृढ़ रहा। उन दिनोंमें बड़े २ प्रतिष्ठित राजा मेवाडके सिंहासनपर बैठेथे। यद्यपि वह निष्कं-टक राज नहीं करसके, यद्यपि, मालव, गुर्जर, और दिल्लीके मुसल्मान बाद-शाह बारंवार उनसे वैर किये जातेथे, तथापि चित्तौरकी वह दृढ़ प्रभुता किसी प्रकारसे खंडित न हुई। चित्तौरके राजालोग क्रम २ से शत्रुओंकी चेष्टाको व्यर्थ करने लगे। विशेष करके जब दिल्लीके सिंहासनके विषयमें खिलजी, लोदी और सूरवंशके बादशाह आपसमें झगड़ा करने लगे तब मेवाड़की दशा अत्युत्तम होगई थी। कारण कि उस आपसके झगड़ेके समय सुभीता पाकर मेवाड़के राजाओंने अपनी उस दृढ़ प्रभुताको दूना दृढ़ करलिया-था। उस कालके राजालोग दुर्गवासियोंके आक्रमणकोही रोककर चुपचाप नहीं रहतेथे, वरन अपनी २ विजयिनी सेनाके [illegible] यात्रा करते थे. एक ओरसे नगरकोटके पहाड़ तक और दूसरी ओर [illegible] [illegible] अपनी विजयकी छापसी लगा देतेथे। उस समय [illegible] केवल [illegible] नहीं भोगी थी वरन [illegible] [illegible] होगयेथे। कारण कि इस समय [illegible]

दिखाया, कि जो सन्मान राजालोगोंका किया जाता है, और अपने चुनेहुए आदमियोंको लेकर चित्तौरके सिंहद्वारपर शीघ्रतासे जा पहुँचे । जो रहगये वोभी उनके पीछे २ जाने लगे । अबतक किसीने चंडकी गतिको नहीं रोका। इससमय "रामपोल" * नामक द्वारपर पहुँचतेही द्वारपालोंने इनके सामने आकर पूछा कि आप लोग कौनहैं ? कुमार चंडने उत्तरदिया । " कि हम सब राजपूत सरदार हैं; चित्तौरके ओरे धोरेके गाँवमें रहते हैं राजकुमारके साथ गोमुण्डा गये थे हम लोग, अब दुर्गमें उनको पहुचानेके लिये साथ आये हैं ।" यह सरल उत्तर सुनकर फिर किसीको कोई संदेह न हुआ, और यह विना किसी रुकावटके किलेके भीतर चले परन्तु जब बाकी लोगभी जो पीछेथे आगये तो द्वारपालोंका संदेह बढगया सोचनेलगे इनबातों-का प्रयोजन क्याहै; वह समझगये कि शीघ्रही हमारा सत्यानाश होजायगा । यह विचारकर समस्त द्वारपाल तलवार लेकर कुमार चंडके सामने हुए: कुमारभी तत्काल नंगी तलवार हाथमें ले क्रोधित हुए सिंहकी समान उनकी ओर झपटे, दोनों दलोंमें घोर संग्राम हुआ । इस ओर चंडकी मेघगंभीर सिंहनादको सुनकर उनके सेवक शबरगणभी अपनी मूर्तिको धारण करके द्वारपालोंका संहार करने लगे । यहाँ पर चतुर चंडने भट्टीसरदारको जो किलेदार था शीघ्रतासे पकड-कर कैद करलिया ।,दारुण क्रोधके वश होकर उसने चंडके सामने आना चाहा: परन्तु उनके सवारोंकी गतिको न रोक सकनेके कारण आगे न बढ़सका और दूरसेही चंडको ताककर अपनी तीखी तलवार ऊपर फेंकी। वह तलवार चंडके लगी, घावमेंसे रुधिर निकलने लगा । परन्तु तेजस्वी चंडने तत्काल धावाकरके उसे नीचे गिरा दिया । इधर कुमारकी सेनाने द्वारपालोंको भी टुकडे कर डाला। तथा प्रत्येक राठौरको उनके नौकर चाकरोंके साथ हो गुप्त स्थानोंसे पकड २ कर लाये और कठोरभावसे संहार करने लगे ।

चतुर्दशीकी उस गंभीर रात्रिमें केवल दो चार ही राठौर चंडके विक्रमसे निस्तार पागयेहोंगे । परन्तु इनमेंसे अभागे रणमल्लकी मृत्युका वृत्तान्त पढकर शोकके स्थानपर हँसी आती है । इस दुराचारीने उस दिन अपनी कन्याकी किसी दासीपर, जो अत्यन्त सुन्दर थी मोहित होकर बलात्कार कर अपनी काम-वृत्तिको चरितार्थ किया था । वह इस बातको नहीं जानताथा कि बाहर क्या हो रहाहै, न उनको यह विदितथा कि शत्रुगण मेरे समस्त इष्टमित्र और बन्धु

* [illegible] "रामपोल" [illegible] ।

और बुद्धिमानीके प्रभावसे बहुत शीघ्र पिताका योग्य पुत्र हुआ। अल्पकालमेंही पिताकी प्रचण्ड जिगीषा, वीरता और तेजस्विताका अनुकरण करके उसने अजमेर और जहाजपुरको जीता और मंडलगढ दसूरि तथा समस्त चंपनको अपने विशाल राज्यमें मिला लिया। वकरौलनामक स्थानमें दिल्लीश्वर हुमायूँ *के साथ उसकी एक लड़ाई हुई। दिल्लीकी विशाल फौजको उसने भली-भांतिसे जीतलिया। परन्तु कुभाग्यतासे उनका वह विजय गौरव, वह वीरता तेज-स्विता अतिसाधारण बातपर इति होगई! उसके अनमोल जीवनकी पवित्र गांठ, इस लोकके मध्य अकालमें टूट गई। मेवाड़के भीतर जो वनोदानामक स्थान बसाहुआहै, उसके हारावंशीय सामन्तराजकी बेटीसे क्षेत्रसिंहकी सगाई हुई थी, परन्तु अभाग्यतासे उस सुविवाहके होनेसे पहिलेही, उस हारासरदारने क्षेत्रसिंहको गुप्तभावसे मारडाला। कौनसी पाशवी वृत्तिका पोषण करनेके लिये इस दुराचारीने अपने राजाको मारडाला इसका भेद कुछभी ज्ञात नहीं हुआ।

जब क्षेत्रसिंहकी इस प्रकारसे अकाल मृत्यु हुई तब राणालाक्ष (लाखा) (सम्वत् १४३९)(सन् १३८३ ई०)में चित्तौरके सिंहासनपर बैठे। सिंहासन-पर बैठतेही राणा लाक्षने मेरवाडानामक पहाड़ी देशको जीता, और वहांके प्रसिद्धदुर्ग विराट्गढ़को ऊजडकरके उसके ही खंडहर पर बिदनौरके प्रसिद्ध दुर्ग स्थापन किया। राणा लाक्षने एक सबसे बडाकार्य औरभी किया कि जिनके करनेसे वह भलीभांतिसे प्रसिद्ध हुए और इसीसे उनका राज्य बढ़ा। राणा क्षेत्रसिंहने भीलोंके जिस चप्पनदेशको जीत लिया था, उसके भीतर बसे हुए जावरानामक स्थानमें चाँदी और टीनकी एक खानि निकली। कहतेहैं कि उसखानिमें बहुतास-

उस समय नगरके दक्षिण भागमें था। पिता और इष्ट मित्रोंकी यह गति सुन शत्रुके हाथसे छुटकारा पानेके लिये वह एक तेज घोडेपर सवार होकर वहांसे भागा। उस दिन उसदिवाली उत्सवके उपलक्षमें—उस कृष्णचतुर्दशीकी घोररात्रिके समय कपटी दुराचारी, राठौरोंने अपनी विश्वासघातकता और पराई स्त्रीके धर्म्म विगाड़नेका फल भली भाँतिसे पालिया। और वे सब शिशोदियावीरोंकी क्रोधाग्निमें भस्म होगये।

इतनेपर भी कुमारचंडका क्रोध कुछ भी शान्त नहीं हुआ। जोधरावके भागजानेपर वह उसको पकड़नेके लिये उसके पीछे मन्दोरनगरकी ओर चले। जोधरावचंडके प्रचंड बलको किसीप्रकारसे सहन न करसका और मन्दोरनगरको छोड़कर हरवाशंकलनामक एक पराक्रमी राजपूतके यहाँ आश्रय लिया। इस ओर वीरचंडने सावधानीसे मन्दोर नगरपर अधिकार किया, और जबतक कन्होजी और मुंजाजीनामक इनके दोनों पुत्र नई सेनाको लेकर उनके साथ न मिलगये, तबतक वह नगरसे बाहर न हुए। जिस दिन राठोरोंको उनकी विश्वासघातकता और कपटाचारिताका भलीभाँतिसे फल दिया गया, उस दिनसे लेकर बारहवर्षतक मन्दोरनगर शिशोदियाकुलके अधिकारमें रहा था। बारहवर्ष बीतनेपर राठोरोंने फिर उसको अधिकार किया। जोधपुरके बसानेवाले जोधराजको यहाँपर ही छोड़कर इस मेवाड़का इतिहास लिखते; परन्तु ऐसा करनेसे एक पूरा वृत्तान्त छूटा जाता है, इसकारण इसको न छोड़सके। इस समय शिशोदीय और राठौरकुलमें जो भयंकर वैर बँध गया उस वैरकी

—सिवाय कुछ भी नहीं है। हम निश्चय कहते हैं कि ऐसा समझना उनकी बड़ी भारी भूल है, उन लोगोंने भारतवर्षके इतिहासको जराभी नहीं देखा। दुःखकी बात है कि ऐसे आदमी पराई [illegible] सुनकर पराई बातोंपर अन्धा विश्वास करके अनेक प्रकारके अनाप और भ्रान्तमतिका उल्लेख [illegible] करते हैं, जिसकी जो इच्छा हो सो कहो परन्तु हम निश्चय जानते हैं और [illegible] कि भारतवर्षवाले अतिप्राचीन समयसे ही तोप बन्दूककी समान आग्नेयास्त्रको जानते थे, और [illegible] चलानेमें भी होशियार थे। नीति शुक्रनीतिमें [illegible] लिखे गये हैं, उनमें [illegible] बन्दूक और तोपको नालीक नामसे पुकारा है। यथा –

“ नालीके [illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]

है । माहाराणा लाक्ष जिसप्रकारसे स्वदेशानुरागी थे, वैसेही शिल्पकेभी प्रेमी थे। अपने देशकी शोभाको बढानेके लिये वे जिनशिल्पकार्योंको करगयेहैं, आजतक वह कार्य ज्योंके त्यों वर्तमान रहकर उनकी गंभीर शिल्पप्रियताकी साक्षी देरहे- हैं । राज्यके स्थान २ में बडी २ पुष्करणियें और नकली सरोवर उन्होंने बनाये । जिनखानियोंका हम पहिले वर्णन करआएहैं उनसे जो कुछभी आम- दनी होती वह समस्त देशोन्नतिके कार्यमें लगादीजाती थी । विशेषकरके दुष्टअलाउद्दीनने जिन सुन्दर स्थानोंको और देवमंदिरोंको तुडवादिया था, महाराणा लाक्षने उस विपुलसम्पत्तिकी सहायतासे उन सब स्थानोंको फिरसे बनवादिया । महाराणी पद्मिनीका महल जिसप्रकारसे बनाथा, ठीक उसहीप्र- कारका एक दूसरा मनोहर महल बनाया गया । इस महलका कुछ अंश आजतक दिखाई देताहै । इनसबके सिवाय राणाजी बहुत धन लगाकर ब्रह्माजीकाभी एक बडा मंदिर बनवाया । यह अद्वितीय मंदिर एकेश्वरदेव भगवान ब्रह्माजीके नामपर उत्सर्ग किया गया । इसही कारणसे इसमें किसी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा नहीं हुई । ज्ञातहोताहै कि इसहीसे हिन्दूविद्वेषी आक्रमण कारियोंकी प्रचण्ड विद्वेषानलसे इसने निस्तार पाया है । नहीं तो अभीतक इसका भी खंडहरही दिखाई देता ।

राणा लाक्षके बहुतसी सन्तान हुईथी । अवसर आनेपर इस समस्त सन्तानने राजस्थानके भिन्न २ देशोंमें अपने २ नामका एक २ गोत्र स्थापित किया । उनमें लूनावत और दुलावतवाले प्रसिद्ध हैं । आजभी अगुणा पानोरके पास और आरावलीके दूसरे देशोंके रहनेवाले स्वाधीन ज़िमीदारलोग उस दुलावत और लूनावतके नामसे अपना परिचय बताते हैं — महाराणा लाक्षके बडेपुत्रका नाम चण्ड था । सबसे बडा होनेपरभी चंड पिताके सिंहासनपर नहीं बैठा । किस प्रकारके कारणसे सदाकी रीतिमें अन्तर आगया. और इससे मेवाड़ राज्यमें कैसे २ अनर्थ हुएथे उनकी यथायोग्य समालोचना आगेके छठे अध्यायमें जायगी ।

लेते हैं। यह हरवा शंकल राजपूत भी इस ही प्रकारका क्षत्रिय सन्यासी था। इस सम्प्रदायकी शाखाएं आजतक राजवाड़ेके बहुतसे स्थानोंमें दिखाई देती हैं। पहाड़ोंके ऊंचे २ शिखरोंपर, हिंसक जन्तुओंसे बसेहुए सघन वनोंमें, श्मशानमें अथवा शान्तिमय मनोहर तपोवनोंमें इन महात्माओंके पवित्र आश्रम दिखाई देते हैं। इनकी पहुनई " सदाव्रत " नामसे प्रसिद्ध है। यह सदाव्रत केवल इस संप्रदायके मनुष्योंकी अनुकूलतासे ही नहीं चलता, वरन राजा, प्रजा, सर्दार सामन्त व और २ संप्रदायवाले भी प्रसन्नतासे इसकी सहायता किया करते हैं। मेवाडकी इसशोचनीय अवस्थामें भी यहांके रहनेवाले अपने राणाके सहित सदाव्रतकी सहायता करनेमें किंचित्‌भी कसर नहीं करते। बहुतसे लोग यह कहते हैं कि मनुष्य अपनी अर्द्धसभ्य अवस्थासे ही अतिथि सत्कार करना आयाहै। यदि कुटिल कपटता और स्वार्थपरताहीको सभ्यता-का फल कहा जाय। यदि एकभ्राताको भोजनादि न देकर अपने उदरके भरनेसे ही सभ्यता प्रकाशित होती हो, तो ऐसी सभ्यताको लेकरके हम क्या करेंगे? यह संसार सदाही असभ्यताकी गोदमें पडा सोता रहै, तथापि इसप्रकारकी सभ्यताको हम पलभरके लिये भी ग्रहण नहीं करसकते। जो हरवाशंकलकी समान श्रेष्ठ और विश्व प्रेमिक महात्मागणभी अर्द्धसभ्य गिनेजायँ, तो फिर इस संसारमें सभ्य कौन है? उत्तम वस्त्र भूषण पहरनेसे जो सभ्यता होतीहै; अनाथ, दीन, दरिद्र, और भिक्षा-र्थीको भगा देनेसे जो सभ्यता होती है; उस सभ्यताका नाम पशुसभ्यताहै। हरवाशंकलकी समान परमकारुणिक महात्मागण स्वार्थको छोड लोभसे नाता तोड़ संसारका महान् उपकार साधन करते हुए जिस विमल स्वर्गसुखको भोग करतेहैं, क्या आज कलके, स्वार्थी, कपटाचारी सभ्य महोदयगणोंने एक पलभरके लियेभी उस अमृतके स्वादको चाखाहै?

आधीरात्रिका समय है। सदाव्रतका कार्य शेष करके संन्यासी हरवाशंकल शयन करनेको विश्राम भवनमें जा चुका है। इस ही समयमें १२० अनुचरोंको साथ लिये जोधराव इस आश्रममें पहुंचा। हरवाने उठकर भलीभांतिसे उनका आदर सत्कार किया। सब आसनपर बैठे। अब हरवाशंकलको इस बातका विचार हुआ कि इनके खाने पीनेका क्या प्रबंध किया जाय, गृहमें जो कुछ सामग्री थी वह सब चुक गई। पास कोई गांव या नगर भी नहीं है कि शीघ्रही जहांसे सब सा-मान आजाय। इस प्रकार सोचते विचारते थोड़े ही समयमें कोई बात निश्चय

बुझानेमें राज्यकी एक पुरानी रीतिको उलटा करना पडा और उसके उलटा करनेसे मेवाडमें जो अनिष्ट हुआ, वैसा अनिष्ट मुसलमान या महाराष्ट्रियोंके आक्रमणसे भी होना सम्भव नहींथा ।

सुखदुःखसे अपने दीर्घजीवनको व्यतीत करके राणा लाक्ष बूढेहोनेको आये। इससमयमें अनर्थकारिणी विषयचिन्ताको छोडकर परमार्थचिन्तामें मन लगाय अन्तमें अपने समयको शान्तिसे व्यतीत करना चाहतेथे । उनके बेटे पोते यथायोग्य वृत्ति और भूसम्पत्तिको पायकर परमानन्दसे समयको व्यतीत कररहेहैं। अब उनको किस बातकी चिन्ताहै ? अब केवल बडेपुत्र चण्डको यौवराज्यपर अभिषेक करदेनेसेही वे निश्चिन्त होकर भगवानका भजन करेंगे । परन्तु विधाताने वामहोकर फिर उनको संसाररूपी नदीकी धारके भँवरजालमें डाला । राणाकी परमार्थचिन्तामें विघ्न हुआ, शान्तिके मार्गमें कांटा पडा । वह इस विषमयी संसारचिन्ताके सोतेसे किसीभांति न निकलसके ।

एक दिन राणा लाक्ष मंत्री, पारिषद और प्रतिष्ठित सामन्तोंके साथ अपनी राजसभामें बैठे थे कि इतनेहीमें मारवाडके राजा रणमल्लका पठाया हुआ एक दूत वहां " नारियल " लेकर आया । राणाने उस दूतका यथायोग्य सन्मान करके मारवाड़के भूपालकी कुशल पूछकर उसके आनेका कारण पूछा । दूतने कहा-" महाराणाके बडे पुत्र युवराज चण्डके साथ अपनी कन्याका व्याह ठहराकर महाराज रणमल्लने यह नारियल भेजाहै । " चंड उस समय राजसभामें नहीं था, इस कारणसे राणाने दूतको कुछदेरतक टहरनेके लिये कहा और धीरे २ बोले कि " इसीसमय चंड सभामें आकर इस विवाहमें अपनी सम्मति देगा । " अनन्तर अपनी डाढ़ीको चढ़ाते हुए हँसकर बोले कि "मैं जानताहूं कि मेरे समान सफेद डाढी मूंछवालेके लिये आपलोग इस प्रकार खेलकी सामग्रीको नहीं भेजते । " राणालाक्षके मधुर और कौतुक । युक्त वचन सुनकर समस्त सभासद परम पुलकित हुए और रसीले वचनकी विशेष प्रशंसा करके बारम्बार उसबातको कहने लगे ।

इतनेहीमें कुमार चण्डने सभामें आकर इस समाचारको सुना । पिताने कौतुकके वश होकरभी जिस सम्बन्धको उसकेलिये अच्छा समझाहै, फिर पुत्र उससम्बन्धको किस प्रकारसे अपना सकता है ? चण्डके हृदयमें यह कूट चिन्ता खटखटाने लगी । बारंबार इस प्रकारसे विचार करके चंडने निश्चय किया कि यह सम्बन्ध मैं किसी भांतिसे नहीं करूंगा। चण्डने इस [illegible]

जब हरवाशंकलने ऐसे उत्साहित वचन कहे तो इन सबने इसकोभी अपने दलमें मिला लिया। तथा उसको संगमें लेकर मीवोनामक स्थानके सर्दारके पास गये इस सर्दारके असतबलमें १०० घोडे चुने हुए थे। स्वयं मिवोंका सर्दार और पवनजीनामक एक दूसरा राजपूत सरदार भी अपने "अंगारकृष्ण"* घोडे पर चढकर जोधरावके दलमें मिलगये। इस प्रकारसे और भी दो चार राजपूत सर्दारोंकी सहायता पाकर पितृराज्यके उद्धार करनेका संकल्प किया और मन्दोरनगरकी ओर चले। चंडके दोनों पुत्रोंको इसका कुछभी समाचार ज्ञात नहीं था। वह निश्चिन्त होकर राज्य करते थे, कि इतनेमें ही जोधरावने सेनासहित वहाँ पहुँचकर उनपै हमला किया। यद्यपि यह चढाई गुप्तभावसे की गई थी, परन्तु शिशोदिया वीरगण उत्साहित होकर शत्रुसे घोर युद्ध करने लगे। कंटोजीने एक वार भी इस वातका विचार न किया कि जोधरावका वल कैसा है? या कौन २ वीर उसकी सहायता करनेके लिये आये हैं? वरन वह उसकी सेनाको अतितुच्छ समझकर संग्राम करनेके लिये सामने आया। इस अदूर दर्शिता और मूर्खताका फल उसने हाथों हाथ भोगा। जोधरावके वलको सहन न करसकनेके कारण कंटोटाजी अपनी वहुतसी सेनाके साथ लडाईमें मारा गया। इधर छोटा भाई मुंजजी अपनी रक्षाका कोई उपाय न देख शीघ्रगामी घोडेपर चढकर भागा। परन्तु जोधरावके कराल ग्राससे छुटकारा न पाया, गोढार राज्यकी सीमापर पहुंचते ही विजयी जोधरावने उसको जा पकडा और वहींपर मरवा डाला। इस प्रकारसे जोधरावने शिशोदियाकुलसे अपने पिछले वैरका वदला लिया। परन्तु भलीभाँति विचार करनेपर ज्ञात हो जायगा कि दोनों ओरकी प्रतिहिंसा वरावर न हुई। कारण कि मंडोरके एक राजपूत सरदारके वदलेमें चित्तौरके दो राजकुमारोंका प्राण संहार किया गया। पितृराज्यका पुनरुद्धार और वहुतसी हत्या करनेपर भी जोधरावके जीकी शंका न मिटी। उसको दिनरात यही ज्ञान होता था कि कुमार चंड भयंकर मूर्ति धारण किये हुए मेरे पीछे २ आरहा है। इस प्रकार चिन्ता करके एक वार अच्छी रीतिसे अपनी अवस्थाको विचार तो जान लिया कि चंडकी और मेरी अवस्थामें पृथ्वी आकाशका अन्तर है। मैं पराई सेना और पराये वलके भरोसे ही इस कठोर कार्यके करनेको सामर्थ्य हुआ हूं। मानलिया कि मित्रोंने एक वार या दो वार मेरी सहायता की, परन्तु जव

---

* [illegible] । (Coal black Steed)

संकल्प किया। भारतवर्षके सनातनधर्मावलम्बी राजाओंका ऐसा विश्वास था "कि राज्यकरनेसे राजाको अनन्त पापका भागी होना पड़ताहै।" अन्तकालके समय राज्य धन और विषयवासनाको छोड़कर कठोर मुनिवृत्तिका अवलम्बन करके व्रतानुष्ठान, परमार्थचिन्ता, तीर्थगमन और दानादि पुण्यकार्यका अनुष्ठान न करनेसे किसीप्रकार इसपापसे निस्तार नहीं होता। इसही विश्वासको हृदयमें धारण करके इस कठोर संग्राममें प्राण देनेको तइयार हुए। परन्तु इसलाम धर्मावलम्वी तातारवाले जिसदिन हिन्दुओंके सनातनधर्मको कलंकित करनेके लिये तइयार हुए, और जिसदिन वे उस कुअभिप्रायको सिद्ध करनेके लिये खड्गसे काम लेनेको तइंयार हुए; उसही दिन हिन्दूराजाओंने उस शान्तिमय जीवनको त्यागकर कठोर वीर धर्म्मके धारण करनेका लक्षण दिखाया। उसही दिन उन्होंने शतद्रू और कग्गर नदीके विशाल किनारे रक्तसे रंगादिये और गया तीर्थका उद्धारकरना उनका प्रधान साधन हुआ। उनका दृढ़ विश्वास था कि यदि वे लोग पापिष्ठ यवनोंके कलुषित ग्राससे पुण्यतीर्थ गयाधामका उद्धार करलेंगे तो पुनर्जन्म न होगा। तथा अप्सरागण दिव्यविमानमें वैठालकर उस साधन भूमिसे स्वर्गलोकमें ले जोयगी। विश्वासही कार्यका प्रधान प्रणोदक और अग्र नायक होताहै। इसही विश्वासके वशवर्ती आर्य नृपतिगण बुढापेमें दुर्द्धर्ष म्लेच्छोंके साथ घोर संग्राम करनेके लिये तइयार हुए। उनकी तपस्या यहीहै। आज महाराणा लाक्ष उसही कठोर तपस्याको करनेके लिये भयंकर संग्राम करनेको अवतीर्ण हुए। इस दुस्साध्य व्रतको अवलम्बन करनेसे पहिले उन्होंने विचार किया कि अपने राज्यकी व्यवस्थाभी करदें। राज्यसे विदा गृहण करने पर किसी प्रकारका झंझट न हो इस बातका प्रवन्ध करनाही उन्होने परम कर्तव्य समझा। उसकाल महाराणाने चण्डसे इस बातका कोई परामर्श न किया कि उत्तराधिकारी कौन होगा? अथवा यह राज्य किसको दिया जायगा। केवल इतनाही कहा कि—"मैं जिस कठोर व्रतको करनेके लिये जाता हूं, इसमें ऐसी आशा नहीं है कि फिर उद्यापन करके भी देशमें लौट आऊं। यदि मैं न लौट सकूं तो फिर मुकुलको उत्तराधिकार क्या उपाय होगा? फिर मुकुलके लिये कौनसी सम्पत्ति निर्धारित होगी." तेजस्वी चण्डने स्थिरभावसे खड़े होकर धीर और गंभीर भावसे उत्तर दिया कि "चितौरका राजसिंहासन।" कदाचित इस सत्य और उदार उत्तरसे महाराणाके मनमें कुछ सन्देह हो इस लिये बुद्धिमान चण्डने [illegible] पहिलेही मुकुलके अभिषेक कार्यको करनेका विचार किया। [illegible]

वार इस समय मेवाडपर चढनेकी तइयारी कीथी। परन्तु विचारनेसे ज्ञान हो जायगा कि भट्टलोगोंने जिसको फीरोजशाह कहाहै, वास्तवमें वह फीरोजशाहका पोता था। अतएव यहांपर भट्टलोगोंने धोखा खायाहै÷ भारतका इतिहास पढनेसे हमारे इस लेखका प्रमाण मिलैगा। तैमूरके भयंकर हमलेको वरदास्त न करसकनेके सबबसे फीरोजशाहका यह पोता दिल्लीको छोडकर गुजरातकी तरफ भागगया। इस कारणसे यह वात संभव होसकती है कि मेवाडके भीतर होकर जानेके समय उसने मेवाडपर चढाई करनेका विचार किया हो। जो कुछ भी हुआ हो। चाहें जिसने मेवाड्की शान्तिमें विघ्न डाला हो, पर राणा मुकुल पहलेसेही उसके अभिप्रायको जान गयेथे, और शत्रुकी फौजको रोकने के लिये आरावलीके दूसरे प्रान्तमें वसे हुए रामपुरनामक स्थानमें उसका सामना किया। उस रामपुरके संग्राममें राणा मुकुलने ऐसी अद्भुत वीरता दिखाई थी कि उसको देखकर वादशाहकी फौज तित्तर वित्तर होकर भागगई। भागनेपर भी विचारोंको छुटकारा न मिला। राणाने उनका पीछा करके वहुतसी सेनाको मार डाला, और सांभरनामक देश और उसकी लवणझीलको अपने अधिकारमें करलिया। यहांपर यह करना वहुत ही ठीक होगा कि तैमूरकी चढाईसे भारतवर्षमें घोर खलवली मचगई थी, उसने मुकुलके सौभाग्य और प्रतिष्ठाके मार्गको वहुतायतसे कंटकहीन करदिया था। इसी सुअवसरमें राणा मुकुलने अपने राज्यको और अपनी सेनाको दृढ करके मेवाड़के दूसरे भागोंमें भी अपना राज्य जमा लिया था। वहुतसे शोभायमान अटा अटारी और देवमंदिर भी इन्होंने वनाये। इनमें लाक्षभवननाम राणाका महल × और चतुर्भुजा देवीका मन्दिरही विशेष प्रसिद्ध है।

राणा मुकुलके तीन पुत्र हुए और परम रूपवती एक कन्या उत्पन्न हुई। कन्याका नाम लालवाई था। गागरौनके खीचीवंशवाले सर्दारके साथ लालवाईका विवाह हुआ। इस सर्दारने विवाह करनेके समय राणाको शपथ दिलाकर यह प्रतिज्ञा करा ली थी कि "मैं आपसे और कुछ नहीं चाहता, केवल

÷ इसका नाम महम्मद तुगलक था। वह नासिर [illegible] फीरोजशाहके [illegible] लडका था।

× लाक्षभवनमें [illegible] इस महलका बनाना [illegible] ... [illegible]

[illegible] है।

समस्त बातें चण्डने सुनीं । वे भलीभांतिसे अपने हृदयको पवित्र और सरल-भावको जानतेथे, उनको दृढविश्वास था कि छोटे भाईके मंगलके लिये और राज्यकी संपत्ति वृद्धिके लिये हमने राजसन्मानको न्योछावर कर दियाहै ! हा क्या इनबातोंका यही बदलाहै ? यह चण्ड यहभी जानतेथे कि पुत्रके स्वार्थके लिये माताका हृदय बारंबार व्याकुल और संदेहयुक्त रहताहै । परन्तु कैसाही हो, कहीं हितकारी मनुष्यकी सरलता, उदारता और स्वार्थत्याग, यह बातें क्या कुटिल कपटतामें गिनी जायँगी । संसारमें तबतो किसीकोभी सरल-व्यवहार नहीं करना चाहिये ।

चंडके उदार हृदयपर घोर घाव पहुँचा । वह समझगये कि करनेका समय नहींहै शत्रुकी भयंकर छूरीको हृदयमें गृहण किया जा सकताहै, परन्तु इस प्रकारका अन्याय और कलंक पलभरको नहीं सहा जा सकता । इस अन्याय और दुर्नामता तथा संदेहके लिये उन्होंने माताको मधुर तिरस्कार करके कहा "आपकी समझमें फेरहै, यदि मुझको चित्तोरके राजसिंहासनपर बैठनेका अभिलाष होता, तो आज कौन आपको राजमाता कहकर पुकारता । अच्छा, इससे मेरी कोई हानि नहीं न कुछ दुःखही है: केवल यह पछतावा रहा कि चित्तौरके राज्यको छोड़कर जाता हूं । चित्तौरके भाग्यमें तो गाढी स्याहीसे भयंकर होनहारका होना लिखाहै, उसहीका विचार करनेसे मुझे दुःख होताहै । अच्छा, मैं जाताहूं;राज्यका समस्त प्रबन्ध आपही लीजिये. अब केवल आपही-के ऊपर राज्यका सुख, दुःख सम्पत्ति, विपत्ति. इत्यादि समस्त विषय निर्भर करते हैं, देखियो ! शिशोदिया कुलका गौरव कहीं नाश नहीं होजाय । चंड चित्तौरको छोडकर मान्दूराज्यकी ओर चला गया । वहांके राजाने भलीभांतिसे आदरमान करके अपने यहां रक्खा. और हल्लनामक राजस्थान जागीरमें उनको भूमिवृत्तिमें देदिया ।

पृथ्वीके किस स्थानपर यथार्थ कृतज्ञताहै ?—यह कृतज्ञताका पवित्र और स्वर्गीय धनहै । हिंसा. द्वेष. स्वार्थपरता. और विश्वासघातकताके नरक, जहां कहीं यह स्वर्गीय रत्न रह सकताहै?—जिनके हृदयमें यह दिव्यरत्न विराजमानहै वह मनुष्य होनेपर भी देवता है:—वह अत्यन्त साधारण होनेपर भी समस्त संसार-का पूजनीय है । कुमार चंडने राज्यादि स्वार्थको छोडकर अपने [illegible] छोटे सौतेले भइयाके मस्तकपर अपने हाथसे [illegible] योग्यभी नहीं [illegible] उनकी [illegible] और

नाम पूछा गया। चौहान सामन्त उनके निकट ही बैठेथे वे जानकर भी अजान हो गये और धीरेसे राणाजीसे कहा; "महाराज! मैं नहीं बतलासकता, आप इन दोनों भाइयोंमेंसे एकको पूछिये, वह अवश्य इसका पूरा २ विवरण जानते होंगे।" सीधे साधे राणाने चौहान सर्दारके कुटिल और गूढ़ वाक्यका अर्थ न समझकर सरलतापूर्वक पूछा, "काका! इस वृक्षका नाम क्याहै?" राणाके इस कपटहीन प्रश्नको सुनकर चाचा और मैरके हृदयमें तीर सा लगगया! उन्होंने समझा कि बढ़ईकी कन्यासे हमारा जन्म हुआ है,इस ही कारणसे राणाने अपमान करनेके लिये हमसे यह प्रश्न किया उनका यह विचार धीरे २ पक्का होगया। वह क्रोधके मारे मतवालेसे होगये। एक दिन संध्याके समय संध्याकृत्यको समाप्त करके राणा भगवानके नामकी माला जपरहे थे कि इतनेमें ही उन हत्यारोंने तलवारसे उनकी बाह काट डाली और शिर गिराया! यह दोनों पिशाच, नरलपति मुकुलका संहार करके अपने २ घोडोंपर चढकर चित्तौरकी ओरको दौडे, उनकी अभिलाषा थी कि इस समय चित्तौरपर अधिकार करेंगे। परन्तु इस समय चित्तौरके निकट पहुँचते ही उन्होंने देखा कि दुर्गका द्वार बन्द है।

यद्यपि पहिले कहे हुए श्लेष प्रश्नके अतिरिक्त राणा मुकुलकी शोचनीय मृत्युका कारण और कोई नहीं पाया जाता तथापि ध्यान धरकर देखनेसे स्पष्ट ज्ञान होजायगा कि राणाके विरुद्ध एक चक्रान्त पहिलेसे ही बनाया जा रहा था। राणा मुकुलके बडे पुत्र कुंभने किसी प्रकार इस चक्रान्तका समाचार पा लिया था, और यही कारण था कि दुराचारी चाचा और मैरके प्रवेश करनेसे पहले ही उसने चित्तौरके फाटकको बन्दकर लियाथा। जब हत्यारोंकी आशा पूर्ण न हुई तब वह उस किलेमें चले गये कि जो मदेरियाके निकट बना हुआ था। इधर बालक कुंभने इस संकटसे रक्षा पानेके लिये दूसरा कोई उपाय न देखकर मारवाड़वालोंकी मित्रता और दयाशीलतापर निर्भर किया।

राजपूतोंकी महिमा कोई भी वर्णन नहीं कर सकता। जिन सिसोदियोंके द्वारा राठौरोंका राजा मारा गया, राठौरोंका राज्य छीना गया, आज सिसोदियोंके राजा कुंभने विपत्तिमें पड़कर राठौर राजपुत्रसे सहायता मांगी। उदार हृदयवाले राजपूतकुमारने पिछले वैरको सम्पूर्णतः हृदयसे भुला दिया, और तत्काल प्रतिज्ञा की कि जबतक इन दोनों हत्यारोंको भली भांतिसे दंड नहीं दिलवाऊंगा, और जबतक बालक कुंभको चित्तौरके सिंहासनपर न बैठाल दूंगा तबतक सिरसे पगड़ी नहीं उतारूंगा सेजपर शयन न करूंगा। यथार्थ बात यह है कि

सिंहासनपर राठौरलोग अधिकार करेंगे। क्या दुजर्नकी विश्वास घातकतासे शिशोदियाकुल सदाके लिये पातालमें चला जायगा? धात्रीके मनमें इस प्रकारकी गूढ़ चिन्ता होने लगी।

दारुण, दुःख घृणा और अभिमानसे जर्जरित होकर मुकुलकी माताके पास जाकर कहा। "क्या तुम कुछ देखती नहींहो। क्या कुछ समझमें नहीं आता? क्या तुम्हारे पिताका कुटुम्ब तुम्हारे बच्चेको चित्तौरके सिंहासनसे अलग रक्खैगा?" मंगलकी अभिलाषा करनेवाली धाईके मुखसे यह बात सुनकर राजमाताको अत्यन्त सन्देह हुआ; अबतक इसप्रकारकी चिन्ताका उनको स्वप्नमेंभी ध्यान नहीं था। अब वह समझी कि हमारी दशा संकटमें पहुँच गई है अब विपत्तिसे उद्धार पानेकी फिकर पड़ी। परन्तु अब कौनसा उपाय है? उन्होंने मतिभ्रममें आकर आपही अपने पांवमें कुहाडी मारी। यदि कुमारचंड चित्तौरमें होते तो किसीप्रकार यह विपत्ति न पडती, परन्तु उन्होंने पिशाचिनी बनकर अपने आपही अपना सत्यानाश किया। विपत्तिसे छूटनेका कोई उपाय न देखकर महाराणी अपने पिताके पास गई और तीव्र अभिमान करके उनसे उपरोक्त बातोंका कारण पूछा, उत्तरमें जो कुछ सुना उससे उनका हृदय व्याकुल होगया, शिर चकराने लगा, उनके हृदयमें दृढविश्वास होगया कि पिता रणमल्ल, प्राणप्यारे मुकुलका जीवन नाश करके स्वयं राज्य लेना चाहता है। इस विपत्तिकालमें राजमाताने सुना कि चंडके दूसरे भाई रघुदेवको रणमल्लने गुप्तभावसे मार डाला। इस कुसमाचारके सुनतेही राजमाता अत्यन्त व्याकुल हुई। रघुदेवको कल्वाडा और कवेरीगाँवनामक दो भूमिवृत्तिये मिली थी। रघुदेव कल्वाडेमेंही रहते थे। एक समय रणमल्लने उनके पास एक सन्मानसूचक पहरावा भेजा पहिरावा प्राप्त करतेही राजपूतलोग पहर लिया करते हैं

किया कि राठौरराजा और शिशोदिया नृपाल, इन दोनोंका प्रचंड क्रोध भयंकर दावानलकी समान जलकर इस दुर्गम स्थानमेंही हमको भस्मकर देगा। अब तो यह लोग निशंक होकर पापके ऊपर पाप करने लगे। अन्तको उन पापोंसे ही दोनोंका सत्यानाश होगया, सुजान नामक एक चौहानकी अनूढा कन्याको पकडकर यह दोनों बलात्कार उस दुर्गमें ले आये थे। सुजान क्रोधित होकर इस अपमानका बदला लेनेके लिये मजदूरोंके साथ गुप्त भावसे मिलकर राताकोट किलेपर गया, और वहाँ जानेके समस्त मार्गोंको भलीभांतिसे देख आयाथा। इस प्रकार प्रचंड क्रोधको शान्त करनेके लिये सब भांतिसे तयार होकर सुजान अपने राजाके पास आयाथा, कि इतनेमें उसने दूरसेही कुंभ और राठौर राजाकी सेनाको देखा। तब तो उसकी आशा लहराने लगी। दोनों हाथोंसे मुँहको ढककर वह रोने लगा, और अपने वंशकी कलंक कहानी महाराजोंसे स्पष्ट२ कहडाली। उनपापियों अत्याचारके श्रवण करनेमें जितने आदमी वहाँ थे सबके हृदयमें दारुण दुःख हुआ तथा क्रोध चढ़ आया। इस राताकोट दुर्गसे थोडी ही दूरपर दलवाडानामक एक स्थान है, सेनाने दिनका समय वहींपर व्यतीत किया। रात्रिके होते ही वीरगण राताकोट किलेकी ओरको चले। अतिसावधानीसे किलेके नीचे पहुंचकर उसके ऊपर चढ़नेका विचार करने लगे। शीघ्रही पर्वतपर बडी २ कीलें ठोकी जाने लगीं। घनी २ लता गुल्म और दनेले वृक्षोंकी शाखाओंको पकड़ २ कर उन कीलोंका सहारा लेते हुए वीरगण धीरता और सावधानीसे उस पहाड़ी किलेपर चढ़ने लगे। रात्रि घोर अँधियारी है। जो अगणित तारे उस अन्धकारको हटानेके लिये प्राणपणसे परिश्रम कररहे थे. उन सबका प्रभा हीन और टिमटिमाता हुआ प्रकाश, उन घनेवन–वृक्षोंके पत्तोंको भेदकर कभी २ सेनाके वीरोंको दिखाई देजाताथा। उस गंभीर अंधकारके चादर पर्देको उठाय राठौर और शिशोदिया वीरगण उत्साह और क्रोधके साथ परस्पर एक दूसरेका अंगरखा पकड़ २ कर धीरे २ ऊपरको चढ़े। शत्रुसे बदला लेनेके लिये सुजान चौहान अत्यन्त मतवाला व उतावला होरहा था। इस कारण वह मार्ग दिखाता हुआ सबसे पहिले आगे २ चलता था। सुजान जब कि पर्वतके ऊंचे स्थानपर चढ़गया था तब किसीको दो तीन रेखाओंने उसकी दृष्टिको अपनी ओर खेंचा। उसने चकित हो ध्यानसे देखा तो जान हो गया कि एक खाविन्दीके प्रकाशमान नेत्रोंसे यह किरणें सी निकल रही थीं। सुजान

शीघ्रही चित्तौरकी ओर चले। जब पहले चित्तौरको छोड़कर कुमार चण्ड मांदूनगरमें गये तब दोसौ (२००) अहेरिये भील (शवर) अपने स्त्री पुत्र और परिवारको चित्तौरमें छोड़कर उनके साथ चलेगये थे। इससमय चंडकी अनुमति लेकर वेभी अपने भाई वन्धु और स्त्री पुत्रोंसे मिलनेके लिये चित्तौरके भीतर गये थे। दुर्गप्रवेश करतेही वह द्वारपालोंकी सेवा करने लगे। वहाँपर सेवा करनेमें दिन विताते हुए विश्वासी भीलगण अवसरकी वाट देखते रहकर बडी सावधानीसे कार्य करने लगे। इसओर कुमार चंडने सौतेली मातासे कहलाभेजा कि "चारोंओरके गॉव गोटमें भोजन वॉटनेके वहाने प्रतिदिन वहुतसे विश्वासी दास दासियोंको भेजा करो, और अवसर पाकर उनकेही साथ मुकुलको लेकर तुमभी चली आया करो,। क्रमानुसार फिर उन गॉवोंमेंभी आया-करो जो चित्तौरसे वहुत दूरपर हों। परन्तु यादरहै कि दिवालीके दिन * गोसुण्डानगरमें पहुँचजानेको न भूलियो। यदि भूलजाओगी तो फिर कोई उपाय न चलैगा।"

इस उचित उपदेशको पाकर मुकुलकी माताका हृदय सावधान हुआ। चंडकी आज्ञाके पालन करनेमें उन्होंने एक घडीकाभी विलम्ब न किया। वरन वे दूने उत्साह और दूनी सावधानीके साथ कार्य करने लगीं। धीरे २ दिवालीका त्यौहार आगया। अपने आदमियोंको साथ लेकर मुकुल चित्तौरसे गोमुण्डानगरमें आगया। राजमाता सारेदिन नगरवासियोंको उत्तम २ भोजन कराकर रात्रिके होनेकी वाट देखने लगी। धीरे २ संध्याका सूक्ष्म अंधकार सम्पूर्ण संसारमें विस्तार पागया; तथापि चंडका आगमन नहीं हुआ। फिर संध्याका कुछेक गंभीर तिमिर कृष्णचतुर्दशीकी रात्रिके गाढे तममें लीन होगया, तथापि कुमार चंडके दर्शन न हुए। पुरोहित, धात्री, और उनके संगी साथी निराश होने लगे। अन्तमें यह सब राजकुमारको लेकर [illegible] नासक कोट-भीतके निकट पहुँचेही हैं कि इतनेहीमें पीछे घोडोंकी टापोंका शब्द सुनाजाने लगा। शब्दको सुनकर सबके हृदयमें नवीन आशाका संचार हुआ। वातकी वातमें चालीस सवार अतिशीघ्रतासे घोडोंको चलातेहुए उनके आगेसे चलेगये। इन सवारोंमें सबके आगे कुमार चंड थे, [illegible] हुआ था। छोटे भ्राता मुकुलके आगे पहुँचते चंडने [illegible] सम्मान

सातवाँ अध्याय ७.

कुम्भका सिंहासन पर बैठना। मालवपति महम्मदको जीतकर और कैद करके राणा कुम्भका चित्तौरमें लाना; राणा कुम्भके गौरवकी बढती;—पुत्रके द्वारा राणा कुम्भकी गुप्त हत्या;—पिताके मारनेवालेको निकालकर रायमल्लका चित्तौरके सिंहासनपर बैठना;—दिल्लीके बादशाहका मेवाड़को घेरना। रायमल्लकी विजय;—घरेलू झगड़े;—रायमल्लकी मृत्यु।



सम्वत् १४७५ (सन् १४१९ ई०) में राणा कुंभ (कुंभाजी) चित्तौरके सिंहासनपर बैठे। इनके राज्यमें मेवाड़ उन्नतिके शिखरपर पहुंच गया था। हजारों विघ्नोंके रहते भी भली भांतिसे अपनी प्रजाका लालन पालन करते थे। परन्तु यदि मारवाड़के राजाकी * सहायता न मिलती तो इस उन्नति होनेमें सन्देह था। कारण कि जैसी उमरमें उनपर बड़े २ संकट पड़े थे, यदि उस समय राठौरके राजा उनको अपना समझकर सहायता न करते तो न जाने आज मेवाड़के इतिहासका क्या आकार होता। राठौरराजने अत्यन्त परिश्रम, यत्न और चेष्टाकरके कुंभकी सहायता करनेमें मन लगाया था। इसके बहुतसे कारण देखे जाते हैं। उनमेंसे एक विशेष कारण यह भी मानलेना होगा कि राणा कुम्भने उनसे सहायता मांगी थी। यदि उस प्रार्थनाको वह पूरा न करते तो उनके कलंककी सीमा न रहती। दूसरी बात यह है कि राणा कुम्भ राठौरराजके भानजे थे। सिद्धान्त यह है कि कुछ तो कर्तव्य ज्ञानसे और कुछ

---

* [illegible]

बान्धवोंका संहार करके अब यहाँको चले आतेहैं। मदिरा अफीमके खाने पीने और सबसे अधिक प्रेमके आसवसे मतवाला हो यह बूढा अपनी प्यारी कामिनी-के गलेमें बाँहें डाले अचेतनकी समान पड़ा हुआथा। कामकी नीच वृत्तिके वशहोकर दुष्ट रणमल्लने सतीस्त्रीके अन्मोल रत्नको छीन लिया, अभा-गिनीके निर्मल चरित्रमें कलंक लगा दिया। आज स्त्रीकी शापाग्निमें यह अभागा भस्म हो जायगा। आज इस लोकको छोड़कर उसे नरककी अनन्त ज्वालामें गिरकर छटपटाना पड़ैगा, राजपूत ललनाके स्वर्गसे भी उत्तम सतीत्व धनको जिसपाखण्डी-ने हरण किया है, क्या राजपूतबाला अपमानित और पददलित होकर उसको क्षमा कर सकतीहै?—कभी नहीं। रणमल्लसे पापाचारका बदला लेनेके लिये वह अवसर ढूँढ रही थी; आज वह अवसर आपसे आप आगया। इस समय राजपूतबालाने धीरे२ बिस्तरसे उठकर उस दुष्ट मारवाडीकी * पगडी खोली, और पगडीके द्वारा उसको चारपाईसे भलीभांति कसकर बाँध दिया। बाँधनेसे भी रणमल्लकी नींद न टूटी। इस प्रकारसे अभागे रणमल्लको भाग्यको सौंपकर राजपूतललना घर छोड-कर चली गई। थोडीही देरमें चंडके यमदूत समान सिपाही उसके घरमें पहुँचे। तब भी वह पाखण्डी न जागा! परन्तु जैसेंही उन सिपाहियोंने गगन विदारी सिंह नाद किया, वैसेही उस पापीका सारा मतवालापन उतरगया। आँखें खुलनेपर जानगया कि बडा कुसमय आन पहुँचा। देखा कि रणोन्मत्त शत्रुओंने घर भरगयाहै। सबही तलवार उठाए हुए प्रचंड वेगसे सामनेको चले आतेहैं। क्रोध और घातक स्वभावके मारे उसके सब अंग जलने लगे, अभागेने शीघ्रतासे उठनेकी चेष्टा की, परन्तु उस मनमोहिनीकी कठोर प्रेम जंजीरने उसको बारंबार रोका। बहुतसा बलकरनेपर मूढ खड़ा न होसका बलकरनेसे भी उस कठोर प्रेम बन्धनसे निस्तार न पाया, फिर अभागा चारपाईके साथ ही खड़ा होगया। वह चारपाई उसकी पीठपर लगी हुई ऐसी शोभायमान होती थी मानो कछुएकी पीठ लग रहीहै। पासही [illegible] बना-हुआ एक पानपात्र गिलास रक्खा था. और कोई अस्त्र न पाकर [illegible] होकर पान-पात्रकेही आघातसे रणमल्लने कईएक सिपाहियोंको [illegible] दिया। [illegible] की अगणित सेनासे वह कबतक जीवित [illegible] [illegible] उसमें [illegible] गोली × लगी कि जिससे वह मर गया। [illegible]

करनेवाली राजनीतिकी समालोचना करेंगे । जिस दिन यवनवीर शहाबुद्दीनने भारतके स्वाधीनता रत्नको छीन लिया, जिस दिन समरकेशरी समरसिंहने उस रत्नके पुनरुद्धार करनेमें दृषद्वतीनदीके किनारे अपने प्राणोंका बलिदान करदिया; उस दुर्दिनको महाराणा कुम्भके समयतक २२६ वर्ष वीतगये हैं । इन दोसौ वर्षके वीचमें दो विशाल राजवंशोंमें २४ यवन राजा हुए; इनमें यवनोंकी एक बेगम भी होगई, तथा विद्रोह और पदच्युति आदि कुटिल चक्रमें पिसकर, धीरे २ यह समस्त बादशाह कालके गालमें चलेगये । यदि मेवाड़के साथ मिलान किया जायगा तो इन दोनोंमें बहुतसा भेद दिखाई देगा । क्योंकि उपरोक्त समयके बीचमें केवल ११ राणा मेवाड़के सिंहासनपर बैठे । इनमेंसे बहुतसे तो ऐसे थे कि जिन्होंने मातृभूमिकी या किसी पुराणतीर्थकी रक्षा करनेके लिये संग्राममें अपने प्राण दिये थे । इस समय स्पष्ट ही ज्ञात होता है कि जो लोग प्रजा हितकारी नीतिके अनुसार राज्य पालन करते हैं, वे बहुतदिनोंतक राजसिंहासनपर विराजमान रहते हैं ।

जिस समय खिलजी वंशके पिछले बादशाहका जमाना था उस समय विजयपुर, गोलकुण्डा, मालवा, गुजरात, जौनपुर और काल्पी आदि देशोंके राजा लोग, दिल्लीश्वरको अयोग्य जानकर अपनी२ अधीनतारूपी शंकलको काटकर अलग २ स्वतन्त्र राज्यकी प्रतिष्ठा करने लगे । जब राणाकुंभको राजचितोरका राजसिंहासन मिला, उस ही समय मालवे और गुजरातके दोनों नवाब सेना बढ़ाकर अपने राज्यको बढाने लगे, वे मेवाड़राज्यकी उन्नतिका वृत्तान्त जानकर डाह करने लगे । फिर दोनों एक साथ मिलगये और सम्वत् १४९६ (सन् १४४०ई०)में बड़ी भारी प्रचंडसेना साथ लेकर मेवाड़राज्यकी ओर धाये ।

राणा कुंभने शीघ्रही इस समाचारको जान लिया । उनको अत्यन्त क्रोध हुआ । दोनों नवाबोंको भलीभांतिसे दंड देनेका विचार महाराणाने किया, वह एक लाख घोड़े व पैदल, और १४०० हाथी साथमें लेकर उन दोनों यवनोंके सामने आये । दोनों सेना आमने सामने खड़ी होगई । घोर संग्राम हुआ । राणाकी सेनाके सामने मुसल्मानोंकी फौज ठहर न सकी, राणा कुम्भ मालवेवाले महमूद खिलजीको बांधकर चितौरमें लेआये ।

अबुलफज़लनेभी अपने बनाए हुए इतिहासमें राणा कुंभकी इस समय वृत्तान्तका वर्णन किया है । मुसल्मान होनेपर भी इसने हिन्दुराणाके साहस्य और उदारताके

भीतरी बातें परस्पर इस प्रकार मिलीहुई हैं कि एक बातके छोडदेनेसे दोनोंका भीतरीपन और दोनोंकी रमणीयता जाती रहै गी। अतएव इसही कारणसे यहाँपर कुछ उपरोक्त बातोंका वर्णन किया जाता है। शिशोदिया लोगोंने किसप्रकारसे गोद्वारदेशको पायाथा, तथा राठौर वीर जोधने किस प्रकारसे फिर मन्दोरनगरपर अपना अधिकार किया था, इसकाही वर्णन आगे किया जाता है। इसका वर्णन होजानेके पीछे मुकुलजीके राज्यका इतिहास लिखा जायगा।

"विपत्तिकी उपयोगिता" सुफल दिया करती है। विपत्ति ही सम्पत्तिकी माताहै जो मनुष्य विपत्तिके समय धीरधारण करके कार्यकरताहै, उसको शीघ्रही सम्पत्ति मिल जाती है, फिर उसपर कभी भी विपत्ति नहीं आती। महावीर जोधरावका राज्य जातारहा, इष्ट मित्र सबही मारे गये। परन्तु यह विपत्ति ही उनके लिये सम्पत्तिकी देनेवाली होगई। यदि जोधराव कायरपुरुषकी समान मूढ बनकर व्याकुल हो जाते तो नहीं कहा जासकता कि राठौरकुलके भाग्यमें क्या होता?—और उनके विशाल कीर्तिक्षेत्र जोधपुरकी प्रतिष्ठा कौन करता? उनपर सब प्रकार विपत्ति पड रही थी परन्तु वे एक पलके लिये भी निराश नही हुए। केवल अनन्त साहस कठोर उद्यम और परिश्रम करनेसे ही वह महान सम्पत्तिशाली हुए थे।

पहिले ही कहा जा चुका है कि विपत्तियोंमे घिरकर जोधरावने हरभाईकलनामक एक पराक्रमी राजपूतका सहारा लिया। राजस्थानमें एक प्रकारकी धर्मसम्प्रदायक है। इस सम्प्रदायके लोग सदा कुमार रहते हैं विवाह नहीं करते। यद्यपि यह लोग क्षत्री होते हैं, तथापि इन क्षत्रियोचित और धर्म्मके साथ तापस धर्म्मके अपूर्व मेलसे इनका जीवन पवित्र और स्वर्गीय स्वभावसे परिपूर्ण रहता है। अतिथिसेवा और परोपकार करना ही इनके धर्मका मूलमंत्र है। यदि आधीरात्रिके समयमें भी कोई पाहुना आजाय तो यह सर्वभाँतिसे आदर सत्कार करके तत्काल उनके खाने पीनेका प्रबन्ध करदेंगे। पाहुनेका आदर सत्कार करनेमें चाहे अपनेको अनाहार रहना पड़े, तो भी वीर तापसगण दुःखित नही होते। यदि कोई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो जाय तो यह [illegible] और विद्रुपको भूलकर आदर सत्कारके [illegible] [illegible] शरण करते हैं, और इनको बचानेके लिये अपने प्राणोंको भी [illegible] [illegible]

मुल्लालोग दिनरात मसजिदोंमें फतवा पढ़ा करतेथे कि बादशाह दिल्लीकी इज्जत बरकरार रहे । अकेले मालवेके शासन कर्त्तानेही दिल्लीके पिछले सुलतान गोरीको पराजित कियाथा ।

विदेशीय लोगोंके आक्रमणसे मेवाडभूमिकी रक्षा करनेके लिये जो ८४ दुर्ग वहांपर बनेहैं. उनमेंसे ३२ महाराणा कुंभनेही बनाये थे । इन बत्तीस किलोंमेंसे उनका बनायाहुआ कुंभमेरु कमलमीर दुर्गही विशेष प्रसिद्ध है । यह किला जैसे स्थानमें बनाया गया है, और इसके चारोंओर जैसी ऊंची दीवारें बनी हुई हैं, इस कारणसे उसको चित्तौरके किलेके सिवाय मेवाडके और दुर्गोंमेंसे श्रेष्ठ कहा जासकताहै । कुंभमेरुकी यह दीवारें जहांपर बनी हुई हैं वहांपर एक प्राचीन किला बना हुआथा, यह किला बहुत दिनोंसे पहाडी भीलोंके अधिकारमें था; महाराणा चन्द्रगुप्तके वंशमें संप्रीतनामक एक जैन राजा सन् ईसवीकी दूसरी शताब्दीमें हुआथा, बहुतसे आदमी कहते हैं कि इसनेही उस किलेको बनाया था । इस प्राचीन दुर्गके स्थान २ में जो जैनियोंके मंदिर दिखाई देतेहैं, उनकी अत्युत्तम बनावटको देखकर इस कहावतके ऊपर विश्वास करनेको जी चाहताहै । इस कुंभमेरु किलेके एक प्रधान द्वारका नाम "हनुमान द्वार" है वहांपर वीराग्रगण्य महावीरजीकी एक बड़ी मूर्ति विराजमान होकर उस द्वारकी रक्षा कर रहीहै । जिस समय कुंभराणाने नगरकोटको जीता था उस समय इस नगरके सुन्दर किवाडोंके साथ हनुमानजीकी यह मूर्तिभी वह अपने नगरमें ले आयेथे । आबू पहाड़के एक शिखरपर परमारोंका एक बडा किला बना हुआ था. महाराणा कुंभने उसमें एक बडा महल बनवाया था । बहुधा वह इसही महलमें रहा करते थे । इस विशाल दुर्गका अस्त्रागार और रक्षकशाला आजतक महाराणा कुम्भके नामसे प्रसिद्ध है । मेवाडनिवासियोंके बहुतसे कार्योंसे इस बातका प्रमाण पाया जाताहै कि महाराणा कुंभ प्रजाको अत्यन्तही प्यारे थे । आबूपर्वतके कूटपर बसे हुए उस किलेके भीतर कुछेक मंदिर दिखाई देतेहैं । उनमेंसे एकके भीतर कुंभकी और उनके पिताकी मूर्ति विद्यमान है । अनेक मेवाडके रहनेवाले देवता जानके उन मूर्तियोंकी पूजा करते हैं । जिस दिन महाराणा कुम्भने उस पहाडी किलेके भीतर विश्राम किया था, उसदिनसे आज कई सौ वर्ष बीत गये. उनके वंशवालोंने अपने अनन्त सिरका रक्त सिंचित किया था. आज सभी अनन्त समुद्रके किसी गंभीर स्थानमें लीन होगये, तथापि इन समस्त कीर्तियोंका विचार करनेसे मनमें आनंद और आ-

करली।उस समय वहाँ पर + मुजदनामक एक प्रकारका काठ रक्खाथा,जो कि जलानेके काममें आतीथी। परन्तु अकाल या अन्न कष्टके आपड़नेपर मारवाड़के रहनेवाले दीन दुखियालोग इसको ही खाकर अपने प्राण रखते थे।अन्नके न होनेसे हरवाशंकलको इस अवसरपर यह लकडी ही व्यवहारमें लानी पड़ी।इस लकडीके टुकडोंको पीसकर मैदा, चीनी और मसालेके साथ मिलाया गया।फिर एक साथ पकाकर इनका ही उत्तम भोजन तैयार हुआ।हरवा संन्यासीने जोधराव व उनके नौकर चाकरोंके आगे यह भोजन परोस कर विनीतभावसे कहा । "भिक्षा करके जो कुछ प्राप्तकिया था उसका अधिकांश चुक गया। इस समय जो कुछ वाकी था उससेही एक प्रकारका भोजन वनाकर आपलोगोंको निवेदन करता हूँ। रात्रिअधिक होजानेसे और कुछ न कर सका, अनुग्रह करके आज इससे ही प्रसन्न हूजिये। कल प्रभात होते ही खाने पीनेका उत्तम प्रवन्ध होजायगा। "संन्यासीकी नम्रता और शीलता देखकर सवही परमप्रसन्न हुए, और उसके अतिथि सत्कारकी वारंवार प्रशंसा करके भोजन करने लगे। थोडे ही समयमें निद्राकी कोमल गोदमें शान्ति प्राप्त करके यह समस्त यात्री ऐसे सोये कि चित्तौरकी सव वातोंको भूल गये।

"मुज' की लकडीके मेलमें उनकी डाढी मूछें रँग गई थी।प्रभातकालके समय जाग कर सवही अत्यन्त विस्मित हुए और एक दूसरेका मुंह देखने लगे। किसीने इस वातको न जाना कि डाढी मूँछें कैसे रँगी गई। परन्तु चतुर संन्यासीने इसके गूढ कारणको छिपाकर उनको उत्साह देनेके लिये कहा "वृद्धापेके केशोने जिस प्रकार नवीन जीवनकी ऊपाने नवीन रंग धारण किया है, वैसेही मैं निश्चय कहता हूं कि आपके भाग्यको नवीन जीवन प्राप्त होगा और आपलोग फिरसे मंदोरनगरपर अधिकार करेंगे।

शिल्पप्रिय और प्रतिष्ठावान थे वैसेही कविभीथे । राजस्थानके दूसरे कवियोंकी अपेक्षा राणाकी कविता विशेष प्रसिद्धहै । कारण कि राणाने दूसरे कवियोंकी नाई अपने विक्रमके वर्णनमें या अपनी प्राणप्यारियोंकी सुन्दरताके कहनेमें अपनी बुद्धि और कवित्वशक्तिको खर्च नहीं किया। उन्होंने आध्यात्मिक रसका स्वाद चखनेवाले कविलोगोंकी विशुद्ध रुचिके पीछे जाकर अमृतमय " गीतगोविन्द " की एक सुन्दर परिशिष्ट बनाई है ।

मारवाडके श्रेष्ठ सामन्त मैरतानिवासी राठौर सर्दारकी मीराबाई नामक कन्यासे महाराणा कुम्भका विवाह हुआ था।×मीराबाईजी जिस प्रकारसे अत्यन्त सुन्दरीथीं वैसीही धर्ममेंभी आस्था रखती थीं । इनके गुणोंकी बराबरी उसकाल कोईभी राजकुमारी नहीं करसकती थी।मीराबाईजी कविता रचनामें परम प्रवीण थीं। भगवान कृष्णचन्द्रजीकी स्तुतिके उन्होंने अनेक पद बनाये थे। वैष्णवलोग इनकी कविताका बहुतही आदर करते थे । अबतक बहुतसे राजकुलोंमें मीराबाईजीके पवित्र भजन सुने जाते हैं । * अबतक वैष्णवलोग उनके सुन्दर भजनोंको गाते २ प्रेमानन्दमें मगन हो जातेहैं, राणाकुम्भाजीभी कवि थे, परन्तु मीराबाईजीने उनसेही कुछ सीखाथा इस बातका निरूपण करना कठिनहै, स्वधर्मपरायण पंडिता मीराबाईजीका जीवनचरित्र उपन्यासकी यथार्थ सुन्दरतासे परिपूर्ण है । यमुनाजीके किनारेसे लेकर द्वारकापुरीतक भगवान श्रीकृष्णजीके जितने मंदिर थे. उन सबको मीराबाईजी देख आई थीं । पुरुषोंकी समान व्यवहार करनेसे उनके कलंककी बहुतसी कहानी सुनी जातीहै. परन्तु वे सब मिथ्या हैं और उनके चरित्रके अयोग्य हैं ।

वीर होनेके साथ राणाकुम्भ प्रेमिकभी थे। शृंगार और वीररसके अपूर्व मिश्रणसे उनका हृदय अपूर्व सुन्दर होगया था । मालवाजनपदके स्वामीकी [illegible] साथ एक राठौर राजकुमारका विवाह निश्चय किया गया । परन्तु उस विवाहके

× [illegible] देवीप्रसादजी [illegible] "मीराबाईके जीवनचरित्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] मीराबाई [illegible] [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] । "

* [illegible] हैं ।

मेवाडकी विशाल अनीकिनी मेरे ऊपर चढ धावेगी, तब किसकी सहायतासे अपनी रक्षा करूंगा, तिसपर हमारे पिता रणमल्लका ही इस विषयमें अधिक अपराध है, और वही इस झगडेके कारण हुएथे, अतएव इस अवस्थामें जहाँ-तक हो झगडेका मिटा देना ही आवश्यकीय कार्य है। इस प्रकार सात पाँच विचारकर जोधरावने चंडके पास सन्धिका पत्र भेजा और सन्धि प्राप्त करनेके लिये उनको मुण्डकाटि * अर्थात् रुधिरके बदलेमें दंडकी भाँति समस्त (गोढ्वार) देश देनेके लिये सम्मतिदी।

चंडका दूसरा पुत्र मुंज जहाँपर गिरा था वह स्थान मारवाड और मेवाड राज्यकी सीमा माना गया। इस प्रकारसे संधि करके दोनों कुल पुराने वैर भावको भूलगये। और परस्पर एक दूसरेको हृदयमें धारण करके कुछदिनके लिये गाढ़े मित्र हुए। इस संधिसे मेवाडके राणाको गोढ्वारदेश हाथ आया, इसको तीनसौ वर्षतक मेवाडके राजाओंने अपने अधिकारमें रक्खा सदाके चले आये हुए उत्तराधिकारमें अन्तर पडनेके कारण ही (गोढ्वार) देश मेवाडवालोंके हाथ आया था, और तीनसौ वर्ष पीछे इस ही कारणसे निकल भी गया था।

मुकुलका सौभाग्य सूर्य; वीरवर उदार चरित कुमार चंडहीकी अमोघ सहायतासे उदय हुआ, परन्तु वह बहुत देरतक प्रकाशमान नहीं हुआ। मध्याह्नके ऊंचे आकाशमें पहुँचते न पहुँचते अकस्मात् राहुने ग्रस लिया। यद्यपि अल्प वयसमें ही राणा मुकुल राजाओंके योग्य गुणोंसे शोभायमान होकर शिशोदियाकुलके राज्य करनेको समर्थ हो गयेथे. परन्तु विधाताने उनको वह गौरव बहुत दिनतक न भोगने दिया। सन १३९८ ई०में जब वह चित्तौरके सिंहासनपर बैठे, उससमय संपूर्ण भारतवर्षमें एक नवीन युगका आरंभ होगयाथाः—भारतकी ऐतिहासिक धारा—एक नई ओरको प्रवाहित हो रहीथी। वीरकेशरी तैमूर अपनी विजयी सेनाको साथ लेकर इस समय भारतवर्षपर चढ आया था। उसकी वीर [illegible] चरणोंसे दिल्लीका सिंहासन चूर होगया. परन्तु मेवाडको उसके आक्रमणसे कोई हानि नहीं पहुँची। भट्टग्रन्थोंमें केवल इतनाही लिखाहै कि दिल्लीके [illegible]

---

* [illegible] "[illegible]" है। [illegible] [illegible] होनेसे भी [illegible] थी।

किले और मंदिरादि द्वार अपने राज्यको दृढ़ व शोभायमान करके जन्मभूमिकी अनन्त प्रतिष्ठाके साथ अपनी कीर्ति और प्रतिष्ठाकी नीम गाड़दी। ऐसे समय मेवाड़के ऐसे गौरवके समयमें राणाके बलवान वृक्षकी जड़में एक पाखण्डी नर राक्षसने कठोर कुहाडा मारा। जो वर्ष मेवाड़देशके अतुल आनन्द और उत्सवका वर्ष गिना जाता था आज पिशाचकी करतूतसे शोक सागरकी समान होगया। इन वर्षोंमेंसे एक वर्षके कुदिनमें जो भयंकर कुकार्य हुआ उसके द्वारा भारतके इतिहासका एक पूरा अध्याय कलंककी स्याहीसे कलुषित हो गया। परमगुणाधार राणाकुंभ दीर्घकालसे शान्तिको भोग करते हुए बुढ़ापेके मार्गमें घूम रहे थे; उनका पवित्र प्राण एक पिशाच घातककी छूरीके आघातसे अकालमें ही इस लोकसे पयान करगया। यह घातक पिशाच और कोई नहीं था. राणाके पुत्रनेही इस भयंकर कार्यको किया था।

इस प्रकारसे संवत् १५२५ (सन् १४८९) का वर्ष इस भयंकर कुकार्यके होजानेसे कलंकित होगया। जिस नरराक्षस पिशाचने अपने हाथसे अपने जन्मदाता पिताका संहार किया; उसका पापी नाम सनातनधर्मावलंबियोंके पवित्र इतिहासमें लिखनेके लायक नहीं है! उस नामका मुँहसे कहनाभी पाप है। उस पाखण्डी पितृघातीका नाम "उदा" (या उदयसिंह) था। राजस्थानके भट्टकविगण इसके घिनौने नामके बदले "हत्यारा" और "नरहन्ता" के नामसे इस अभागेको पुकारा करते हैं; जिस राज्यके लालचमें ऐसा बुरा कार्य किया, उस राज्यको वह बहुतही थोडे समयतक भोग सकाथा। और इस थोडे समयमें भी एक पलको भी सुख नहीं पाया। पग २ पर जातिवालोंके विद्वेष रूपी विषको पान करते हुए उसको अपना समय व्यतीत करना भारी पड़गया था। सगे, भले, इष्ट, मित्र, बन्धु, बान्धव, सबनेही उसको त्याग करदिया था। इस घृणित अवस्थाको पहुंचकर जब इस दुराचारीने अपनेको बचानेका उपाय न पाया, तब एक नीच पुरुषके साथ मित्रता की। कपट मित्रतासे अपने जालमें फांसनेके लिये पापी उदाने देवड़ानामक सामन्त राजाको आबूपहाडपर स्वाधीन राजाकी भांति स्थापित करदिया। तथा जोधपुरके राजाको सांभर अजमेर और उनके निकटके कईएक परगने दे दिये। परन्तु तोभी उस दुष्टका मनरथ न सरा। उदाने जिस प्रकार राज्य धनके बदलेमें इस मित्रताको

[illegible]

इतनी प्रतिज्ञा कीजिये कि जिस समय शत्रुगण मेरे राज्यको घेरें उस समय आप मेरी सहायता करें।" राणाने इस बातको मान लिया। विवाह होजानेसे कई वर्ष पीछे मालवेके शासन कर्ता हुसंगने गगरौनपर चढ़ाई की; खीचि सर्दारका बेटा धीरज, राणाके पास सहायता लेनेके लिये आया। परन्तु उस काल राणा मादेरियाके पहाडियोंका विद्रोह दबानेको सेना सहित चले गये थे। धीरज वहीं पर जाकर राणासे मिला, तथा आवश्यकतानुसार सेना साथ लेकर अपने देशको लौटा। राणा मुकुलजीके लिये यह मादेरियाही जीवन नाटककी अन्तिम रंगभूमि हो गई; इस काल रंगभूमिमें दो आततायी विश्वास-घातकोंके द्वारा उनकी संसारलीला समाप्त हुई। इन दोनों पाखण्डियोंका नाम चाचा और मैर था। यह दोनों राणाके चचा थे। इन दोनों दुराचारियोंने विना किसी दोषके, शीलवान् तथा नीतिवान् राणा मुकुलका संहार किया।

राणा मुकुलके दादा राणा क्षेत्रसिंहके औरससे किसी नीचकुलकी सुन्दरी दासीके गर्भमें इन दोनों पाखंडियोंका जन्म हुआ था। बहुतसे ऐसा कहतेहैं कि वह दासी बढईकी लडकी थी। मेवाडमें ऐसे पुत्रोंको "पाँचवाँ पुत्र नामसे पुकारा-जाताहै। राजाके औरससे जन्म ग्रहण करने परभी वे लोग किसी प्रकारका राजसन्मान नहीं पा सकते। यद्यपि राजालोग अनुग्रह करके कभी २ उनको अपने कार्यमें लगा दिया करते हैं, तथापि वे ऐसे अभागे हैं कि मेवाड़के दूसरे दरजेके सर्दारोकी समान भी नहीं गिने जाते। चाचा और मैरकी प्रतिष्ठा भी इससे अधिक नहीं बढ़ी थी। मेवाडके शुद्ध सर्दारलोग इनसे आन्तरिक घृणा करते थे; तथापि राणा मुकुलजी अनुग्रह करके मानसौ सवारोंका अफसर बनाकर इनको अपने साथ मदेरियामें लेगये थे। दासीपुत्रोंके ऊपर इस प्रकारका अनुग्रह देखकर सर्दारोंको अत्यन्त डाह हुआ. उन्होंने समझा कि चाचा और मैरको उनकी योग्यतासे अधिक पद दियागया है। यह सिद्धान्त करके वे सब इनको अपमानित करनेका अवसर देखने लगे। [illegible] उनकी मनोकामनाके सिद्ध होनेकी घड़ी भी आई। परन्तु इन [illegible] नेमें राणा मुकुलका प्राण जाता रहा। जिन दिनों मदेरियामें [illegible] होरही थी, उस समय एक दिन राणा [illegible] प्रसाद हुजमें बैठे थे इन ही समय वनमें उन्होंने एक [illegible] कि [illegible] नाम उनको ज्ञान नहीं था। जितने [illegible] बैठे थे [illegible]

कर उनको अपने राज्यसे निकाल दिया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि चारणोंको ऐसा कठोर दंड देकर राणाने अदूरदर्शिताका कार्य कियाथा। कारण कि आज-तक कोई ऐसी हिम्मत नहीं रखता जो ब्राह्मणोंको एक साथ ऐसा दंड दे। परन्तु चारणलोगोंको देशनिकालेका यह कठोर दंड बहुत दिनोंतक नहीं भोगना पडा। युवराज रायमलकी कार्य तत्परतासे इन-को इस दंडसे छुटकारा मिला। युवराजरायमल एकवार किसी अद्भुत प्रश्नको पूछने लगेथे * इसलिये राणा कुंभने इनको भी देशसे निकाल दियाथा. तब वह ईदरदेशमें चलेगये, वहां एक चारणने विशेषतासे इनकी सहायता की। उसही चारणने कौशल करके उनको प्रसन्न कर राणाका अनुग्रह और अपनी भूसम्पत्तिको पुनर्वार प्राप्त कियाथा। परन्तु जिस कुटिल ज्योतिषीने यह प्रश्न लगायाथा यदि, उसका शिर काटलिया जाता तो उसका होनहार वचन निश्चय निष्फल होता; परन्तु कुभाग्यसे वह होनहार बात बहुत शीघ्र पूरी हुई×

---

*एक समय राणा कुम्भने यवनराजके ऊपर [illegible]नामक स्थानमें जय पाई, उसके पीछेसे उन्होंने यह नियम किया कि किसी आसनको ग्रहण करनेसे पहले एक मन्त्रको पढकर अपने खड्गको तीनवार मस्तकपर घुमाते थे, रायमलने एकवार ऐसा करनेका कारण पूछा, इसही कारणसे राणाने क्रोधित होकर उनको राज्यसे बाहर निकाल दियाथा।

राजपूतोंके जीवनचरित्रमें इस प्रकारकी उदारता और सत्य प्रतिज्ञाके बहुतसे उदाहरण देखे जाते हैं। यह लोग स्वभावसे ही तेजस्वी और ऊधमी होतेहैं। इनका हृदय केवल एक ही चोटके लगनेसे खलबला जाता है। जबतक कि वे उस चोटके मारनेवालेपर चोट नहीं पहुँचा लेते, तबतक हृदय किसी प्रकारसे शान्त नहीं होता। वे जरासे झगडेसे ही तेज हो जाते हैं और बदला लेनेके लिये कठोर प्रतिज्ञा कर बैठते हैं। विना प्रतिज्ञाके पूर्ण किये शान्ति नही मिलती। परन्तु जिस समय वह प्रतिज्ञा पूर्ण होजाती है, तब वैर निकालनेकी प्यास बुझ जातीहै और पिछले समस्त वैरभावको भूलकर परस्पर मित्र बन जातेहैं। उस समय भट्टलोग दोनों पक्षवालोंका परस्पर विवाह कराकर वर कन्याका हाथ एक साथ बाँधनेके समय दोनों कुलकी कीर्तिका बखान किया करतेहैं। भट्टलोगोंके मुखसे उस गौरवके कीर्तनको सुन २ कर राजपूतोंके हृदयमें अपूर्व आनन्द हुआ करताहै।

बहुत दिनोंसे राजपूतलोग इस नीतिके अनुसार व्यवहार करते आये हैं। और जबतक उनकी विक्रमरूपी आगकी एक चिनगारी भी शेष रहेगी तबतक इस नीतिका व्यभिचार न होगा।

राणा मुकुलके बालक पुत्र कुंभने घोर संकटमें पडकर मारवाडके राजासे सहायता माँगीथी। राठौरराजाने दुराचारियोंका दमन करनेके लिये अपने पुत्रको सेनापति बनाकर सेनाके साथ भेजा। वे उस काल राज्यकी सीमापर थे। इस कारणसे राजकुमारने थोडेही समयमें उनको घेर लिया। मेवाड़ और मारवाड़के महावीरोंका प्रचंड आक्रमण न रोक सकनेके कारण चाचा और मेरे उस किलेको छोडकर पाईनामक स्थानमें भागगये। पाई नाग-वली पर्वतमालाके बीचमें बसीहुई है। इसके निकट ही गनाकोटनामक पर्वतका एक ऊंचा शिखरथा। दुष्टोंने यहीपर एक दुर्गस्थापन करके स्वाधीनतासे रहनेका विचार किया। उदयपुरके चारोंओर जो विशाल शिखर शोभा-कारसे विराजमानहै. उसके शिखरपर इस गनाकोटका टूटा फूटा भाग आज-तक भी दिखाई देताहै।

उस गनाकोटमें पहुँचकर इन दोनों दुराचारियोंने अपनेको [illegible] समझा और निर्भय होकर वहां रहनेलगे. और समझलिया कि अबकोई [illegible] हमको नहीं देख सकेगा। परन्तु उन दुष्टोंने एक [illegible] इस बातका विचार न

होतीथी। अंतमें गयासुद्दीनने विजयकी कोई सम्भावना न देखकर अपने समस्त सत्व छोडकर राणासे सन्धि करनेकी प्रार्थना की। उदार हृदय रायमल्लने सन्धि करना स्वीकार कर लिया। तबसे मेवाड़के राज्यको निष्कंटक होकर राणाजी पालन करने लगे। क्योंकि उस समय भारतवर्षमें कोई ऐसा राजा या बादशाह नहीं था कि जो रायमल्लके प्रचंड प्रतापके आगे घड़ीभरकोभी रह सकता। इस समयसे पीछे लोदीका खान्दान दिल्लीके तख्तपर बैठा। मेवाड़के उत्तरी परगनोंकी बाबत कईवार राणाजीने लोदी वंशवालोंसे संग्राम कियाथा।

पहलेही कह आयेहैं कि राणा रायमल्लके सांगा, पृथ्वीराज और जयमल्ल यह तीनों पुत्र महा पराक्रमी उत्पन्न हुएथे। सांगा और पृथ्वीराज विशेष प्रसिद्ध हुए। सांगाने वीरवर बाबरसे संग्राम कियाथा, और पृथ्वीराज उस समय भारतवर्षमें एक अनुपम महावीर गिना जाताथा। छोटा जयमल्लभी वीरतामें इनकी बराबरही था। यदि यह तीनों भाई मिलकर जननी जन्मभूमिका हित करते तो न जाने आज भारतका भाग्यचक्र किस ओरको फिरा होता। परन्तु भारत-भूमिके कुभाग्यसे तो यवनोंकी आधीनता लिखी हुई थी. वह लेख कैसे मिटता; इसही कारणसे इन तीनों भाइयोंमें फूट पैदा हुई. और यह परस्पर एक दूसरेके खूनके प्यासे होगये। इनके झगड़े झंझटमें राणा रायमल्लजी बहुत दुःखी हुए, उनके सुखमें बाधा पड़ गई। उनको चारों ओरसे विपत्तिका घेरा दिखाई देने लगा। और फिर महाक्रोधित हुए। राणाने तीनों पुत्रोंको अपराधी समझा और अपने राज्यमें शान्ति रहनेके लिये तीनोंको देशनिकाला देनेका विचार किया। बड़ा पुत्र (सांगाजी) तो उस भयंकर झगड़ेमें अपनी रक्षा करनेके लिये स्वयंही देशको छोडकर चलागया, पृथ्वीराजको राणाजीने निकाला और छोटा जयमल्ल एक अन्याय कार्यके करनेसे इस लोकको छोड़गया। राजपूतोंके चरित्र पर दृष्टि (?) डालनेसे (?) ज्ञान होताहै कि वह लोग बड़े कठोर होतेहैं, इस चरित्रका अनुशीलन करनेसे स्पष्ट, ज्ञात होजायगा कि जब देशवैरी उनको लड़ने खानेको नहीं होता तो वह लोग मूर्खताके कारण लड़ झगड़ कर एक दूसरेका नाश करते। सांगा और पृथ्वीराज सगे भाईथे उनकी माता झाला वंशकी थी जयमल्ल उनका सौतेला भाई था, देहलीके चौहान राजा पृथ्वीराजका नामभी पाठकोंको स्मरण होगा, इस चौहान पृथ्वीराजसे इस सिसोदिया पृथ्वीराजकी अनेक बातें मिलतीथी. उस पवित्र नामके ऊपर माहात्म्यका विचार करनेसे बड़ा आनन्द होताहै. उन दोनोंमें ऐसी समानता थी कि यदि हम उनको एक दूसरेकी आकृति कहें तो अनुचित न होगा. सिसोदिया वीर पृथ्वीराजकी वीरता

घवड़ाया और अपने निकट खड़े हुए एक राजकुमारको इशारेसे वह वाघिनी दिखाकर पीछे हटने लगा।

राजकुमारने उसके भयका कारण देखकर तत्काल उस वाघिनीको तलवारसे मार डाला। राजपूतलोग ऐसी वातोंका होना शकुन समझते हैं। इस शकुनके होनेसे सबके हृदयमें दूना उत्साह होगया। धीरे २ समस्त वीरगण रातकोट-के शिखरपर पहुँच गये। कोई वीर तो दुर्गकी भीतपर चढगया था और कोई चढ रहाथा कि इतनेमें ही सबसे आगे चढेहुए भाटका पाँव फिस-लनेसे वह भीतके नीचे गिरा। गिरते ही उनका ढोल * घोर शब्दसे बज उठा। इस शब्दसे चाचाकी बेटी जो कि सो रही थी, जाग उठी। कन्याको फिर सुला-नेके लिये चाचाने कहा "क्यों क्या डर है? किसका भय है? केवल ईश्वरका भयकरके सुखसे सोओ। भादोंमासका मेघ गर्ज रहा है, साथमें वर्षा भी हो रही है, इसी कारणसे ऐसा शब्द होताहै। नहीं तो यह और कुछ भी नहीं है। हमारे शत्रु इस समय कैलवाड़ेमें हैं उनकी कोई चिन्ता नहीं।" चाचा इस प्रकार कह-रहा था कि किलेमें महाकुलाहल होने लगा। राठौर और शिशोदिया वीरगण किलेमें आकर महाभयंकर सिंहनाद करनेलगे। इस सिंहनादको सुनकर चाचाका हृदय कंपायमान होनेलगा। वह विस्तरसे शीघ्रतापूर्वक उठा और शस्त्र लेकर बाहर जाया ही चाहता था कि इतनेमें चंदानो सरदारने प्रचंड मूर्ति धारण करके उसको घेर लिया और वहीं पर दो टुकड़े करडाले। भाटको गिरता हुआ देखकर दुष्ट मैर भागना चाहता था, परन्तु राठौर राजकुमारने उसको भी पकड़ कर जमीनपर गिरा दिया। इस प्रकार इन दोनों पापियोंको उनके पापका प्राण-दंड दिया गया। राठौर और शिशोदिया वीरगण उस किलेके धनरत्न लूटकर जय गान करते हुए अपने २ देशमें आये।

अंशको भोग करेंगे । इस बातको जानकर पृथ्वीराज तलवार निकालकर सांगाजीका शिर काटनेको चला । सूरजमलने तत्काल बीचमें पड़कर पृथ्वीराजके आघातको निष्फल किया ।

इस तरफ चारणी देवीकी सेविका अपनी रक्षा करनेके लिये भागी । तब पृथ्वीराजने सूरजमलको ललकारा । उस मन्दिरके भीतर दोनोंका घोर युद्ध होने-लगा । सहजसे यह युद्ध शांत नहीं हुआ । दोनोंही अगणित घावोंके लगनेसे निबल होगये, घावोंसे रुधिर निकलने लगा । सांगाजीके एक बाणका घाव लगा और पांच घाव तलवारके लगे वे तो तत्काल वहांसे भागे; बाणके लगनेसे उनका एक नेत्र जाता रहा । उस विषम द्वंद्वस्थानसे भागकर वे चतुर्भुजा देवीके मंदिरकी ओर चले और शिवान्ति नगरके बीच २ में जाते २ बीदानामक एक राजपूतका सहारा लिया । इस राजपूतका जन्म ऊदावत वंशमें हुआथा । बीदा विदेशको जानेके लिये कुल तइयारी करके घोड़ेपर चढ़-नाही चाहता था कि इतनेमें ही रुधिरसे व्याप्त घायल हुए सांगाजीने आकर इनसे सहायता मांगी । उदार राजपूतने तुरन्त ही उनको घोड़ेसे उतारा, इसी अवसर में जयमल घोड़ा दौड़ाता हुआ वहां पहुंच गया और सांगापर वार किया । शरणागतकी रक्षा करनेके लिये बीदा जयमलके सामने हुआ, और वहींपर अपने प्राण दे दिये । इस अवसरमें सांगाजी वहांसे चलदिये ।

जब घाव भरगये तो तेजस्वी पृथ्वीराज अपने प्रचंडशत्रु कुमार सांगाजीकी तलाश करनेको चला । सांगाजीको यह समाचार ज्ञात हो गया और वे अपना प्राण बचानेको गुप्त स्थानोंमें घूमने लगे । इस अज्ञात वासके समय उनको अत्यन्त कष्ट हुआ । जो विशाल मेवाड़राज्यके युवराज हैं, आज वे अपने प्राणोंकी रक्षा करनेके लिये अनाथकी समान दीनभावसे वन २ में भ्रमण करने लगे । विवश होनेसे जब कोई उपाय न सूझा: तो बकरी चरानेवाले गड़रियोंके पास गये, और बकरियां चराने लगे । बकरियें चरानी नहीं आती थीं इस लिये कभी वे गड़रिये अप्रसन्न होकर निकाल देते थे, जब आपसी विनय करते तो फिर रख लेते थे, गडरियोंने इनको बकरियें चरानेमें चतुर न देखकर रोटी बनानेमें नियुक्त किया, यह रोटी बनानेमें भी अनजान थे । इस कारण गड़रिये लोग सदा यह कहकर उनका तिरस्कार किया करते थे कि "खाना तो जानता है, और पकाना तो नहीं जानता ।" इस प्रकार दीन दशामें कुमार अपने दिन काटते थे । एक समय कईएक राजपूत उधरको आये, उन्होंने कुछ [illegible]

स्नेह ममताके वश होकर उन्होंने कुंभके लिये इतना परिश्रम और इतना कष्ट उठाना स्वीकार कियाथा।

मेवाडका राज्य जिस प्रकार चतुर और तेजस्वी राजाओंके द्वारा बहुत दिनों-तक शोभायमान होतारहा, ऐसा सौभाग्य और किसी राज्यको प्राप्त नहीं हुआ। राणा कुंभके समयमें मेवाड़का गौरव दुपहरके सूर्यकी समान प्रचंड हो रहाथा। हिन्दू विद्वेषी मुसलमानोंके घोर अत्याचारसे जिस भारतके नगर और ग्राम ध्वंस होकर खँडहर बनगये थे, आज उन यवनोंका पताभी नहीं पाया जाता था। मुसलमानोंके जिस प्रचण्ड वीरने भारतकी स्वाधीनताको छीन लिया था, आज सौ वर्ष बीतगये कि उसका शरीर परमाणु बनगया। यह कहना ठीक होगा कि इन सौ वर्षोंके बीचमें मेवाडके बीच नया युग वर्तमान हुआ। जिस भयंकर संग्रामके होनेसे ब्रह्माकी कठोर लिपि फलवती हुई। उसमें वीरवर समरसिंहके साथ जो राजपूत वीरगण संग्राम भूमिमें सोगयेथे, आज उनकी भस्मछारसे अगणित शिशोदिया वीर उत्पन्न होनेलगे। इस समय मेवाडमें किसी बातकी कमी नहींहै। बल, वीर्य, गौरव, प्रतिष्ठा आज सबही शोभाओंसे मेवाड़ शोभायमान है। तथापि मेवाडके जाननेवाले महाराणा कुम्भ निश्चिन्तभावसे न रहकर अपने होनहार दर्शनके अद्भुत बलसे भारतकी होन-हार भाग्य लिपिको एकान्त चित्तसे पढने लगे। उन्होंने देखा कि काकगश पर्वतमालाके ऊंचे २ शिखरोंसे और उनके नीचे बहती हुई काकगग नदीके बडे किनारेसे घनघोर घटा घुटकर घटाटोप बांधे हुए धीरे २ भारतवर्षकी ओरको फैलती जाती है। उस घोर घटाके भयंकर गुप्त गर्भमें जो प्रचंड बिजली धीरे २ उत्पन्न होरही थी, वह अल्पकालमें ही पूर्ण रीतिसे जलकर मेरे पोंने गाँगा-पर गिरैगी। इस होनहारको राणा पहलेही जान गयेथे-अतएव उन दक्षिणके विश्वदा-ही तेजको रोकनेके लिये इससमय उचित उपाय करने लगे जिन उपायोंकी महान-तासे उन्होने बड़े२कठिन कार्योंका साधन किया था. जिन उपायोंकी सहायतासे उन्होंने हमीरकी तेजस्विता, कार्य कुशलता. राणा लाखका सुन्दर शिल्पप्रियता वरन इन दोनोंसे भी अधिक गुणवान होनेका परिचय दिया था:—यहांतक कि एक समय राणा कुंभने समरसिंहकी संग्राम भूमि कग्गरनदीके किनारेपर भी "मेवाड़का लाल झंडा" फहरा दिया था। आज उन्हीं गुणोंके द्वारा वे शत्रुसे बचनेका उपाय सोचने लगे। क्योंकि हिन्दूराजाओंकी प्रजा हित-कारिणी राजनीतिके साथ इस. उस कालके मुसलमानोंकी अत्याचार

एक तो राणा कुम्भकी अकाल मृत्युसे मेवाडकी शान्ति नष्ट होगई थी, तिसपर इन घरेलू झगडोंसे राज्यमें खलबली पडगई । वास्तवमें मेवाडका एक २ परगना-विशेष करके गोढ़ारदेश तो सम्पूर्णभावसे अरक्षणीय होगया। आरावलीके निकटही गोढ़ार बसाहुआहै । अतएव उस पर्वतके रहनेवाले असभ्य मीनगण उस देशके जनस्थानमें आकर देशको लूटने लगे। गोढ़ारकी राजधानी नादोल नगरमें जो राजकीय सेना थी, उसको मीनोंने कुछ न समझा। और वह सेनाभी इनकी प्रचंड गतिको नहीं रोकसकी । पृथ्वीराजने यह समाचार सुनकर वालियोहकी ओरको जानेके समय कुछ देरतक नादोल नगरमें विश्राम करनेकी इच्छा की और प्रयोजनीय द्रव्यादिको मोल लेनके लिये वहांके ओझा नामक व्यापारीके पास अपनी अंगूठीको गिरवी रखनेके लिये गये । भगवानकी महिमाका पार कोई भी नहीं पासकता।इसही ओझाने कुमारके हाथ यह अंगूठी बेची-थी उसने तत्काल पृथ्वीराजको पहिचान लिया, और उनके गुप्त वेश धारण करनेके कारणको भलीभांतिसे जानकर प्रतिज्ञा की कि मैं भलीभांतिसे आपकी सहायता करूंगा। वीर पृथ्वीराजने इस व्यापारीकोभी अपने दलमें मिलालिया । और उसकी सलाहसे मीनलोगोंको दमन करके गोढ़ार राज्यमें शान्ति स्थापन करनेकी चेष्टा करने लगे । पृथ्वीराज, वीर साहसी और तेजस्वी थे। पिताने इन गुणोंके कारणही उनको राज्यसे निकाल दियाथा,इससे क्या उनका पुरुषार्थ नष्ट हो जायगा, । उनको निश्चय था कि राजकुलमें जन्म लेनेपर भी अपने पुरुषार्थ सहायतासे हम राजमुकुटको धारण कर सकतेहैं । आज पिताके द्वारा त्यागे जानेपर भी अपने पुरुषार्थके बलसे ही बलवान होकर कुछ आदमी इकठे करलिये; उन्होंने प्रतिज्ञा की कि किसीसे सहायता न भी मिलेगी तथापि हम अपने मूलमंत्रको सिद्ध करेंगे । इस प्रकारकी प्रतिज्ञा करके दुराचारी मीनलोगोंके कराल ग्राससे गोढ़ार राज्यके उद्धार करनेका उचित अवसर देखने लगे । मीनलोग पहलेसेही इन पहाडियोंपर रहते आते थे । उनकेही अधिकारमें यह समस्त परगने थे, समयानुसार राजपूतोंने चढाई करके इन समस्त परगनोंपर अपना अधिकार किया ।

जिस समय कुमार पृथ्वीराज नादोलनगरमें थे, उस समय एक "मीन" इसीप्रकार मीनसमाज नदारननामक नगरमें अपनी राजधानी स्थापन करके उसका राज करताथा । [illegible] उसका [illegible] मानता था कि [illegible] राजकुलभी उसकी सेवाकरते थे। ओझाके परामर्शके अनुसार पृथ्वीराजने [illegible]

वश हो वारम्वार उनकी तारीफ की है । उसने कहा है;—"कि उदार चरित्रवाले राणा कुम्भने विना किसी तरहका जुरमाना कियेही अपने शत्रु महम्मदको छोड दिया, वरन उसको अनेकप्रकारकी भेंट देकर आदरमानके साथ उसके राज्यमें पहुँचा दिया " इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दूजातिका चरित्र ऐसाही उदार होता है । विनीत शत्रुको कृपा करके छोड देनाही हिन्दू वीरोंका सनातनधर्म्म है । वे सदाही इस धर्मके अनुसार कार्य कियाकरते हैं। महम्मदखिलजीके छूटनेका वर्णन भट्टग्रन्थोंमें औरप्रकारसे लिखा है । उन्होंने लिखाहै कि राणा कुंभने छः मासतक महम्मदको कैद रखकर छोड दिया। कहते हैं कि जय प्राप्त करनेके चिह्नकी भाँति और २ वस्तुओंके साथ राणाने उसके ताजको अपने पास रहने दिया था । वीरवर वावरने सांगाके वेटेसे इस-ताजको नजरमें पाकर अपनी जिंदगीके हालमें इस वातको भी दर्ज किया है, अतएव राजा कुम्भकी प्रतिष्ठाके लिये यह कुछ साधारण वात नहीं है । परन्तु इन सवकी अपेक्षा एक दूसरा स्मृतिचिह्न वहुत दिनसे उस विजय वानीका गान कर रहाहै । महाराणा कुंभका वनायाहुआ एक विशाल विजयस्तम्भ इस विजयका चिह्न माना गया । "उफनेहुए महासागरकी समान विशाल सेनाको साथ लेकर पृथ्वीको कंपायमान करते हुए गुजरात और मालवेके दो वादशाहोंने मध्य पाट * पर चढाई की " इसके पश्चात् जो कुछ हुआथा वह समस्त इस विजय स्तम्भपर लिखा हुआहै । इस लडाईमें ग्यारह वर्ष पीछे राणाने इसका वनवाना आरम्भ किया । और दश वर्षके वीचमें वनकर पूरा होगया । जो विशाल विजयस्तम्भ तइयार होकर आज मेरु-पर्वतकी ओर घृणाकी दृष्टिसे देखताहै उसका दश वर्षके वीचमें तइयार होजाना कुम्भरानाकी कार्य तत्परताको सूचित करताहै । परमेश्वरसे हमारी यही प्रार्थना है कि यह विजयस्तम्भ अचलभावसे विराजमान रहकर मेवाडके राणाओंका गौरव मान कियाकरै । राजाकुम्भकी उदारता और महानताके वश होकर माल-वेका वादशाह उनका मित्र होगयाथा । भट्टग्रन्थमें लिखाहै कि एकवार दिल्ली-श्वरकी सेनाके साथ झुंझनूनामक स्थानमें राणाका युद्ध हुआ. महम्मदखिलजीने इस लडाईमें अपनी फौजको राजा कुम्भकी सहायताके लिये भेजाथा । राणाकी विजय हुई । उस समय दिल्लीके वादशाहकी सामर्थ्य कमतर जाती रहीथी कि

---

* [illegible]

जब विजयी राजकुमारने उसको देसोडीनगर और उसके परगने – सदाके लिये गुजारा करनेके लिये देदिये । तब उसे विवश हो इनके पक्षमें होना पडा, जब यह समाचार राणा रायमलको शीघ्रतासे पहुंचा तब उन्होंने प्रसन्न होकर पृथ्वी-राजको अपने राज्यमें बुला लिया ।

कुमार पृथ्वीराज लौट आये; उस काल जयमलके मारे जानेसे इनका मार्ग अधिकाईसे साफ होगया, आवश्यकता समझकर यहां पर जयमलकी मृत्युका वृत्तान्त लिखा जाताहै । प्राचीन तक्षशीला अब × तोडातङ्कके नामसे पुकारी जाती है, उस काल वह तोडातंक राव शूरथाननामक एक राजपूतके अधिकारमें था । जिन चौलुक्य राजाओंने बहुत दिनोंतक अनहलवाडापट्टनमें राज्य कियाथा, राव शूरथान इनके ही वंशमें उत्पन्न हुआथा । सन् ईस्वीकी तेरहवीं शताब्दीमें यवनवीर अलाउद्दीनके प्रचंड बाहुबलके प्रभावसे शूरथानके पितृपुरुषगण पट्टनसे निकाले गये और उन्होंने मध्यदेशमें आनकर आश्रय लिया । वहांपर बसकर इन चौलुक्य वंशवालोंने प्राचीन तक्षक कुलका उस तोडातंक पर अपना अधिकार किया । परन्तु उनके वंशवाले बहुत दिनोंतक इस नगरका राज्य नहीं भोग सके इसके उपरान्त लील अफगानने शूरथान; रावको वहांसे निकाल दिया । और शूरथान राव विवश होकर आरावलीके नीचे बसेहुए बदनोरनगरमें रहताहुआ सुख दुःखसे अपने दिन बिताता रहा । इसके ताराबाईनामक एक परम सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुईथी. इसको देखकरही वह प्राणधारण कररहाथा । कभी २ जब वह मानसिक कष्टोंसे अत्यन्त दुःख पाता और शोकाकुल होता. तब हृदयानन्ददायिनी कन्याके मुखकमलको देखकर सब दुःख भूल जाताथा. यदि ताराबाईको उसका प्राण या उसकी आशा कहा-जाय तोभी कुछ अनुचित न होगा । ताराका सारा जीवन दुःखमें बीता था । वह राजकुमारी थी. और बलवान पवित्र सोलंकी कुलकी कमलिनी थी; परन्तु भाग्यदो-षसे आज पहिले गौरवका चिह्नकभी बाकी न रहा. बालक ताराको गोदमें लेकर शूरथान अपने बडे बूढोंकी कीर्ति उसको सुनाया करताथा. वहभी कान लगाकर मनोहर कहानियें किसी भांति सुनाकरतीथी । वह उपाख्यान—बालकपनकी वह

× [illegible]

के पूर्वगौरवका वृत्तान्त याद आ जाता है । मेवाडके पश्चिम प्रान्तको और आबू पहाडके वीचमें बने हुए मार्गोंको परकोटे आदिसे दृढ़ करके महाराणा कुंभने भानशिरोहीके निकट वसन्तीनामक एक किला वनाया । इसके अतिरिक्त आरावलीके रहनेवाले मैरलोगोंकी चढ़ाईसे देवगढ़ और शेरोनल्लकी रक्षा करनेके लिये भी उन्होंने एक किला वनवाया था, इस किलेका नाम माचीन है । तथा जारोल और पानोरके दुर्द्धर्षभूमि या भीलोंको वशमें रखनेके लिये महाराणाने आहौरकी तथा दूसरे औरभी प्राचीन किलोंकी मरम्मत कराई और मारवाड़राज्यकी सीमाको नियत किया ।

इनके सिवाय राणाकुम्भकी और कीर्तियेंभी वहुतायतसे थीं कि जिनका धर्मसे सम्बन्ध था । इनमें छः अधिक प्रसिद्ध हैं ।–एक–कुंभश्याम । कुंभश्याम आबू पहाड़के ऊपरकी भूमिपर वना हुआ था, यदि किसी और स्थानपर वना होता तो अपनी सुन्दरतासे जगतमें प्रसिद्ध होजाता । परन्तु, यह स्थान अनेक सुन्दर पदार्थोंसे घिरा हुआ है, इस कारणसे कुंम्भश्यामकी सुन्दरता हठात् अनुमान नहीं की जासकती । दूसरी अटारी वहुत वड़ी है । इसको वनानेमें दश करोडसे कुछ अधिक रुपये खर्च हुएथे । राणाने खास अपने कोषसे इसके वनानेको आठ लाख रुपये दिये थे । यह विशाल अटारी मेवाडके पश्चिम भागमें वने-हुए माद्रिनामक पहाडी मार्गके वीचमें वनी हुई है । राणाकुंभने श्रीऋषभदेव* जीके नामपर इस अटारीको उत्सर्ग कियाथा । मुसलमान लोगोंका सर्व संहारक हाथ इस कारणसे इस अटारीको नहीं तोड़सका कि यह पर्वतके दुर्गममार्गके किनारे वनीहुई है । परन्तु दुःखकी वातहै कि इस समय यह सम्पूर्णतः त्यागदी-गईहै । ऋषभदेवजीका जो पवित्र मंदिर एक समय मेवाडका पवित्र स्थान समझा जाताथा, जहांपर प्रतिदिन अगणित नरनारी आते जाते थे. आज वहां पर मनुष्यका नामतक नही. केवल जंगलही जंगलहै । आज वनैले हिंसक जीवोंने उस अटारीके कमरोंमें अपने रहनेके स्थान बनाकर इस दुर्गम देशको औरभी अधिक दुर्गम करदियाहै । राणाकुंभ [illegible]

---

* राणाका एक मन्त्री जैनधर्मावलम्बी था, यह मंदिर उसके [illegible] हुआ था । [illegible] सन् १४३८ ई०में यह मंदिर वनवाया । इसके वनानेमें [illegible] । [illegible] है । [illegible] हुआहै । [illegible] इसकी कारीगरी देखने योग्य है [illegible] इस मंदिरके [illegible] है ।

"जिस मूर्खने कुकर्मके करनेसे एक प्रतिष्ठित, सज्जन और विशेष करके विपत्तमें पडे उस राजपुत्रका अपमान करना चाहा था, उसको उसकी करनीका फल मिलगया।" उदार राणा रायमल इतना कहकरही मौन न हुए वरन उन्होंने उस सोलंकी सर्दारको बेदनोरनामक जनपद वृत्तिमें दे दिया।

जयमलका संहार होनेके समय कुमार पृथ्वीराज भी देश निकालेका दंड भोग-रहेथे परन्तु अधिक दिनतक उनको यह दंड न भोगना पडा। मीन लोगोंका दमन करनेसे राणा-रायमलजी पृथ्वीराजसे प्रसन्न होगये और उन्हें देशमें बुला-लिया। कुमार पृथ्वीराजकी वीरताका यश देशमें फैल गयाथा। परमसुन्दरी ताराने भी कुमारका यश सुनकर उन्हींको अपना प्राण सौंप दिया था। कुमारका देश-में आना सुनकर ताराको आनन्दकी सीमा न रही। इस ओर पृथ्वीराजने भी दे-शमें आकर ताराके रूपगुणकी प्रशंसा सुनी। और उसके पानेकी आशा बलवती हुई। उसी आशाका भरोसा रखके वह अपनी प्राणप्यारीके देखनेको बेदनोर-नगरकी ओर चले। राव सूरथानने उनका बडा आदर मान किया, चित्तहारिणी तारा शीघ्रही कुमारके सामने आई, परस्पर दोनोंने एक दूसरेको मन भरके देख लिया। दोनोंके हृदयमें अनेक प्रकारकी आशा और चिन्ता उदय हुई। पृथ्वी-राज सूरथानके आगे अपनी आशाका वृत्तान्त कहकर बोले:—"आप कुछ चिन्ता न करें मैं शीघ्रही तोडानंकसे मुसलमानोंको निकाल दूंगा आप देखलेंगे कि एक सप्ताहके पीछे वहाँपर मुसलमानोंका नामभी बाकी न रहेगा।" बिदाके समय कुमार ताराके देखनेको गये और प्रेमभरी मनोहर वाणीसे कहा "हे सुन्दरी! तुम्हारे प्राप्तकरनेकी आशासेही मैं इस कठोर कार्यके करनेको तय्यार हुआ हूं, देखियो! इस आशासे कहीं निराश न करना।" ताराने नम्रतासे उत्तर दिया "हे वीरवर! यह हृदय आपहीका है, अनेक कष्ट और विपत्ति सहकर यह अबतक आपहीकी आशासे अटूट रहाहै; अब यही निवेदन है कि आपने जिस कठोर व्रतका आरंभ किया है उसका उद्यापन भलीभांतिसे करनेकी चेष्टा कीजिये। दुराचार यवनोंका संहार करके यथार्थी राजपुत्र वीरका परिचय दीजिये।" पृथ्वीराज विदा होकर अपनी इष्ट सिद्धिका अवसर देखने लगे। भगवानकी कृपासे शीघ्रही वह शुभ समय आगया मुसलमानोंका मुहर्रम त्यौहार आनेवाला था उस समय पृथ्वीराज पांचसौ चुनेहुए सवारोंको साथ लेकर तोडानंककी ओर चले, वीरनारी ताराभी उनके साथ सजकर चली। [illegible] रणचण्डी [illegible] वेश धारण करके यवनोंका संहार करनेके लिये [illegible] निराकमान होगी। आज वीर लोग यवन लोगोंकी रक्षा होगी.

होनेसे पहलेही राणाकुंभने उस राजकुमारीको हरण करलिया। इससे पहिले राठौर और शिशोदिया राजाओंमें जो मित्रता होगई थी, महाराणा कुम्भके व्यवहारसे वह टूट गई। फिर दोनों कुलोंमें प्राचीन कालका वैरभाव बँध गया प्रेमविमूढ राठौर राजकुमारने अपने प्राणप्यारीका उद्धार करनेके लिये अत्यन्त चेष्टा की, परन्तु दुर्भाग्यवश उसके सारे परिश्रम निष्फल होगये। तोभी वह राजकुमार उस लावण्यवतीकी आशाको नहीं छोड सका। रातदिन सन्दोरकी अटारीके सूने कमरेमें बैठकर वह उस सुन्दरीकी सुन्दरताईका ध्यान करता था वर्षाके होनेपर जब आकाश साफ होजाता था तब कुम्भके ऊंचे प्रासाद-शिखरसे मंदोरका किला साफ २ दिखाई देता था। उस समय राठौर राजकुमार प्राणप्यारीके वासस्थानका दर्शन किया करते थे। अनेक चिन्ता अनेक विचार उनके हृदयमें उदय हुआ करते;—कभी सुख कभी दुःखः-कभी आशा और कभी निराशा उनके हृदय पर अपना अधिकार किया करती थीं। कभी२ विरह व्यथा सहते २ बहुतही अधीर होजाते थे। तथापि उस मोहकरी आशाको नहीं छोड सकते थे। या उस एकान्त स्थानकोभी नहीं छोड सकते थे। रातदिन वह कुंभमेरुके महलको ही देखते रहते थे। कुम्भमेरुके दीपकका उज्ज्वलप्रकाश तारेके प्रकाशकी समान दूरसे उनको दिखलाई दिया करताथा; वह ध्यान लगाकर उसेही देखा करते। बहुतोंका यह अनुमान था कि कुम्भमेरुकी अटारीमें जो दीपक रातको जलाया जाताथा वह झालावारकुमारीके प्रेमका निदर्शन था। उसने राठौर राजकुमारकोही अपना प्राण समर्पण करदियाथा। महानकुलमें पहुंचनेपर भी राजकुमारी बालकपनकी प्रीतिको नहीं भूल सकी। पिताने धनके लालचसे अपनी कन्याको उनके प्रणयपात्रके शत्रुको विवाह दिया। बेटीके सुख दुःखका कुछभी विचार न किया। राजपूतबाला दिनरात अपने भाग्यको धिक्कार दिया करती थी। इस प्रकारसे कई वर्ष बीत गये। विरहमें जलते हुए राजकुमारने अत्यन्त चेष्टा की परन्तु प्राणप्यारीका दर्शन किसी प्रकारसे न पाया। एक दिन वह राजकुमार उस वनमें होकर जो कि कुम्भमेरुके पश्चिमओर था, किलेपर चढ़ गया। भट्ट-कविगणोंने यहां कहाहै कि "वह राजकुमार आकाशमें तो [illegible] आयाथा, परन्तु झालनीके समीप किसी प्रकारसे नहीं आसका"

भलीभांतिसे प्रजा पालन और अखंड [illegible] ५० वर्षतक [illegible] राणाने बुढ़ापेमें विष पाये। उनकी [illegible] [illegible] [illegible] विक्रम मंत्रसे मोहित हुए सर्पकी समान [illegible]। [illegible]

आशाभी वहीं जाकर मधुर वचनसे उनको उत्साहित करती थी। उस आशाने यहाँतक उत्साह दिलाया कि आखिर कार वे अपनी मनोकामना सिद्ध करनेके लिये विपत्तियें झेलनेको भी तइयार होगये। परन्तु कुमार पृथ्वीराजके देशमें लौट आनेसे उनके मार्गमें कांटेका खटका होगया। उस कांटेके दूर करनेका कोई उपाय न दिखाई दिया तब सूरजमल, सारंगदेवनामक एक राजपूतके साथ मिलकर मालवेके बादशाह मुजफ्फरके पास गये उसने मददके लिये अपनी फौज भेजी; उस फौजकी मदद पाकर सूरजमलने मेवाडके दक्खिनी परगनोंपर चढाई की और थोडेही समयमें सादी. वाटुरा और नाई तथा नीमचके बीचमें स्थित एक बडे परगनेको अपने अधिकारमें करके चित्तौरपर अधिकार करनेकी चेष्टा करने लगे। अब तो राणा रायमलसे न देखा गया, वे पलभरकी देरभी न करसके तथा अपनी थोडीसी सेनाकोही साथ लियेहुए राजद्रोहीको दंड देनेके अर्थ संग्रामभूमिमें गये। चित्तौरके निकट बहती हुई गंभीरी नदीके किनारेपर दोनों सेना आमने सामने डटकर खडी होगई। युद्ध होने लगा, राणा स्वयं खड्ग हाथमें लेकर साधारण सिपाहीकी समान प्राणपणसे युद्ध करने लगे, बराबर तलवार चलायेजानेसे उनके बाईस घाव लगे। सब शरीर घावोंसे भरगया. बराबर बाईस घावोंसे रुधिर निकल रहा है: तथापि विश्राम नहीं लेते: क्रमसे अंग प्रत्यंग पथराने लगे. मूर्च्छा आनेके पूर्व लक्षण प्रकाशित हुए। उसही समयमें वीरवर पृथ्वीराज एक हजार घुडसवारोंके साथ आकर पिताके साथ मिलगये. और राणाजीको युद्धसे अलग भेज करके कुमार भीम विक्रमसे शत्रुदलको मथित करने लगे: और उस समय सूरजमलको लडनेके लिये खोजने लगे: युद्ध निपुण सूरजमल उनके सामने आये पृथ्वीराजने बडी शीघ्रतासे उनपर आक्रमण किया दोनोंमें घोर द्वंद्व युद्ध होने लगा। सूरजमलको देहमें अगणित घाव लगे. परन्तु पिछाडीको पाव नहीं रक्खा। बहुत कालतक संग्राम होतारहा. परन्तु किसी ओरकी सेनाने पीठ नहीं दिखाई। इसके उपरान्त फिर संग्राम बंद होगया. और सबही अपने २ डेरोंमें चलेगये।

डेरोंमें लौटनेपर रणकी थकावटको दूर करके कुमार पृथ्वीराज, अपने चचा सूरजमलसे मिलनेके लिये उनके तम्बूमें गये उस समय परस्पर जो कुछ बातचीत हुई थी. उसके पढनेसे राजपूत जातिके अनन्त माहात्म्यका प्रकाशित

[illegible]

मोल लियाथा, उसका वह आशय पूरा न हुआ। मनमें अभिलाषा थी कि वह मित्र मेरे खोटे कामोंके करनेमें भी सहायता करेंगे, परन्तु मुँह खोलकर मित्र-सेभी अपने भेदको प्रकाशित न करसका। यदि कहता तोभी उसके कहनेके अनुसार कार्य होनेमें सन्देहही था तब तो मनहीमनमें अत्यन्त दुःख पाने लगा; और अपनी कामनाको सिद्ध करनेके लिये राज्यमें भाँति २ के अत्याचार करने आरंभ किये। इसके अत्याचार और बुरे २ व्यवहारोंसे धीरे २ राज्यका नाश होने लगा। महाराणा कुम्भने वर्षोंतक परिश्रम करके जिस मेवाडराज्यको उन्नतिके शिखरपर पहुँचा दिया था, ऊदाने पाँच वर्षके बीचमेंही उस राज्यकी हीन दशा करदी। इस प्रकारके अत्याचार करने पर भी दुष्टको शान्ति न मिली। जिनको बहुतसा धन देकर मित्र बनाया था, वहभी पापीको छोड गये और बाततक न सुनी। तब अभागा अपने स्वार्थकी रक्षाका दूसरा उपाय न देखकर दिल्लीके मुसलमान राजाके पास चलागया। और अपनी कन्या देनेका वचन देकर उनसे सहायता माँगी, " परन्तु भगवानने उसके इस दुगुने दुराचारको दूर करके दुरपनेय कलंकसे, वाप्पारावलके पवित्र वंशकी रक्षा की, और भलीभाँतिसे पापका फल दिया " जब कि यह पापी ऊदा बादशाहसे विदा लेकर " दीवानखाने " से बाहरको आताथा, उसही समयमें शिरपर बिजली गिरी, और तत्काल यह पापी पृथ्वी-पर गिरकर यमराजके यहाँको चला गया। कठोर पापका कठोर प्रायश्चित्त हुआ; इस पापजीवन नाटकका परदा सदाके लिये पड गया। इस कठोर कार्यमें भट्टवंशके एक आदमीने भी ऊदाकी सहायता कीथी. यही कारण है जो भट्टलोगोंने अपनी जातिकी दुष्टता छिपानेके लिये इस वृत्तान्तको साधारण रीतिसे वर्णन किया है।

राजस्थानके जो ब्राह्मण, यति, चारण और भाटगण दान लिया करतेहैं वे मंगता कहलातेहैं। इन लोगोंमें परस्पर अत्यन्त विद्वेष होताहै. एक दूसरेके ऊपर प्रभुता करने और हुक्म चलानेको बहुतही अच्छा समझतेहैं। परन्तु वीर-वर हमीरके समयसे इन लोगोंमेंसे चारण बहुतही बढ गये थे। एक ज्योतिषी ब्राह्मणने ज्योतिषके अनुसार प्रश्न लगाकर बतलाया था कि एक चारणके हाथसेही राणा कुंभ मारेजायंगे। इससे पहलेही राणा कुंभ किसी कारणसे चारणोंके ऊपर अत्यन्त अप्रसन्न हुए थे, इसकारण ज्योतिषीके वचन सुनकर और भी क्रोध आया. और चारणलोगोंकी समस्त धन सम्पत्ति छीन-

रात्रि बीत जानेपर प्रभात हुआ। ऊषाकी मनोहर ललाईके छिपनेसे पहिलेही पृथ्वीराज और सूरजमल प्रचंडयुद्ध करनेके लिये तइयार होकर आगये। उसकाल न चाचाने भतीजेका मुँह देखा, न भतीजेने चचापर कुछ दया दिखाई। माया, ममता, प्रीति, दया सबको पानी देकर अपने२ मनोरथ सिद्ध करनेको दोनों तत्पर होगये। उस दिन सारंगदेवने सबसे अधिक वीरता दिखाई। तलवारके प्रचंड प्रहारसे वह पृथ्वीराजकी सेनाको व्याकुल करनेलगा; सारंगदेवके ३० घाव लगे, उस भयानक संग्राममें दोनों ओरकी बहुतसी सेना खेतरही। यहांतक कि प्रत्येक राजपूतकुलके वीरगण समरभूमिमें शयन करगये। डेढ़ घंटेके बीचमेंही तलवार, शेल, शूल और भाले आदिके हथियारोंके ढेरके ढेर दिखाई देने लगे। यद्यपि विद्रोहियोंकी बहादुरी भी कुछ कम नहीं थी, परन्तु वह पृथ्वीराजकी सिंहहीके आगे कबतक ठहर सकते थे। अन्तमें लडाईसे हटकर सादड़ीनगरकी ओरको भागे। विजय गौरवके हेममुकुटको शिरपर धारण करके कुमार पृथ्वीराज नगरमें लौट आये। इस संग्राममें कुमारके सात घाव लगेथे। पराजित होकरभी विद्रोही सूरजमल अपनी आशाको न छोड़सका। जिस आशाके मोहिनी मंत्रसे मोहित होकर उसने कठोर कष्ट और विपत्तियोंको सरलतासे सह लिया, जिसकी सफलता सिद्ध करनेके लिये आज अपने प्राण देनेको भी तइयार होगया,—इस आशाको—प्राणोंकी प्राणरूप उस आशाको वह किस प्रकारसे छोडे? अतएव वह किसी भाँतिसे उस आशाके त्याग करनेमें समर्थ न होकर दिनरात चितौरके लेनेकी कामनासे युद्धकी तइयारी करने लगा।

इस प्रकारसे बहुत दिन बीत गये। चचा भतीजोंने कई बार संग्राम किया, परन्तु कोई फल न हुआ। सूरजमलकी आशा न मिटी। पृथ्वीराजके साथ जबही उनकी मुलाकात होती तबही पृथ्वीराज कहते कि "जबतक मेरे शरीरमें रुधिरकी एक बूंदभी रहेगी, तबतक तुम्हें सूईकी नोकके बराबरभी मेवाड़की भूमि नहीं दीजायगी।" सूरजमलभी वैसेही कठोर वाक्योंसे कहता, "तुम्हारे शासन करनेके लिये जितनी भूमिकी आवश्यकता होगी उससे [illegible] अधिक भूमिपर भी तुम अपना अधिकार नहीं कर सकोगे।" सूरजमलकी [illegible] आशा [illegible] तेजस्वी भतीजेके [illegible] [illegible] पृथ्वीराजकी [illegible] [illegible] भागने [illegible] और सूरजमलने सादड़ीनगर [illegible] [illegible] किया और [illegible] [illegible] [illegible]।

अपने विक्रम और अपनी सामर्थ्यके प्रभावसे राणा रायमल सम्वत् १५३० (सन् १४७४ ई०) में राणा कुंभके सिंहासनपर बैठे। सिंहासनपर बैठनेके पहिले उन्होंने पितुघाती ऊदाके विरुद्ध खड्ग धारण कियाथा। पाखण्डी इस युद्धमें हारकर दिल्लीके बादशाहके पास गया और वहां उनसे अपनी कन्याके देनेकी प्रतिज्ञा की । परन्तु विधाताने उसकी प्रतिज्ञाको पूर्ण नहीं होने दिया। ऊदाके सिंहेशमल्ल और सूरजमल्लनामक दो पुत्र थे, अभागेकी शोचनीय मृत्युके पीछे बादशाह उन्हीं दो लड़कोंको साथ लेकर मेवाड़पर चढ़ आया। आज कलका नाथद्वारा उन दिनोंमें शियार्हनामसे प्रसिद्ध था। बादशाह यहीं अपने डेरे लगाकर युद्धकी वाट देखने लगा। मेवाड़के सर्दार और सामन्तभी राणा रायमल्लकी तरफ हुए, कारण कि वह रायमल्लकोही न्यायानुसार चित्तौरका राणा समझते थे। राणाकी पताकाके नीचे इस समय सरदारों और सामन्तोंके झुंडके झुंड इकट्ठे होने लगे।आबूका राजा तथा गिरनारका नरेश यह दोनों भी सहायता करनेके लिये आये।ग्यारह हजार पैदल और अट्ठावन हजार सवारोंकी सेना लेकर राणा रायमल्लने घासानामक स्थानमें शत्रुओंका सामना किया। शीघ्रही भयंकर संग्राम हुआ। पितुघाती ऊदाके दोनों पुत्र प्रचंड विक्रमको प्रकाशित करके राणारायमल्लकी सेनाको मथने लगे। नदीके किनारे मनुष्योंके रुधिरसे भीग गये परन्तु राणा रायमल्लके भयंकर विक्रमको यह लोग किसी प्रकारसे न सह सके। अन्तमें पराजित होकर राणाके आधीन होगये। राणाने समस्त अपराध क्षमा करके उनको आदरपूर्वक ग्रहण किया। बादशाह इस समरमें ऐसा घोर पराजित हुआथा, कि फिर जिन्दगीभर उसने मेवाडकी सरहदपरभी पांव नहीं रक्खा।

राणा रायमल्लके दो कन्या और तीन धुरन्धर पुत्र उत्पन्न हुए थे। गिरनारके राजा यदुवंशीय शूरजी और शिरोहीके देवरा राज्य जयमलका इन दोनों कन्याओंसे विवाह हुआथा। जयमलके साथ कन्याका विवाह करनेके समय रायमल्लने विवाहके दहेजमें आबूपहाड भी उनको दे दियाथा। राणाने भलीभांतिसे अपने बडे बूढोंके गौरवकी रक्षा कीथी मालवेके स्वामी गयासुद्दीनके साथ राणाका सदैव वैर होगया था. इसहीके कारण बहुतसे युद्ध हुए. सब युद्धोंमें राणा रायमल्लकी जय हुई राणाके भतीजे सिंहेशमल्ल और सूरजमल्लके प्रचंड विक्रमसे [illegible] विजय

फिर राणाने [illegible] एक [illegible] [illegible] हुवे. और [illegible] [illegible] ।

सूरजमलने पलभरतक विचार करके कपटहीन होकर कहा, " मेरा शरीर अत्यन्त दुर्बल है, अतएव मेरे न जानेसे तुम दुःखित न हो ओ मैं सारंगदेवको अपना प्रतिनिधि करके भेजदूंगा।" पृथ्वीराज इस बातपर संमत हुए। प्रभात होतेही काली पूजाकी तइयारी करके सब लोग गये, बलिदान करनेका समय आया, कालिकाजीको एक भैंसा बलि दिया गया, फिर छागबलिकी तइयारियें होने लगीं। इस समय पृथ्वीराजने अपना खड्ग निकाल कर सारंगदेवको जा-दबाया। सारंगदेवके पासभी हाथियार थे, दोनोंका घोर युद्ध होने लगा। दोनोंके बहुतसे घाव लगे। परन्तु सारंगदेव हार गया। और पृथ्वीराजने उसका शिर काटकर कालकाजीके खप्पड़में रख दिया। पीछे सूरजमलकी झोपडी वनमें जाकर तोड दी तथा सब असबाबको लूट लिया और शीघ्रही बादोरनगरपर अपना झंडा जा गाडा।

अब सूरजमलके दुःखकी सीमा न रही: आशा टूटी, पग २ पर संकटका सामना करना पड़ा और कुछभी न हुआ। भाई, बन्धु, इष्ट, मित्र, सबको छोडना पडा, सदाके लिये राजद्रोही कहलाये, तथापि आशा पूरी न हुई। अपने प्राण बचनेका कोई उपाय न देखकर सूरजमल सादरीकी ओरको भागा। वहाँ पहुँचकर उसके मनमें एक नई आशाका संचार हुआ। उसने पहिले प्रतिज्ञा कर ली थी कि यदि सादरीकी सम्पत्ति मैं न भोग सकूंगा तो ऐसे आदमीको दे जाऊंगा कि जिससे राजाभी किसी प्रकार न छीन सके. यह विचार कर ब्राह्मण और भट्टलोगोंको सादरीका दान करके मेवाड़भूमिका त्याग किया, सूरजमलने खनयलनामक महावनके भीतर जाते २ देखा कि एक छागके बच्चेको ले जानेके लिये एक व्याघ्र बारम्बार चेष्टा कर रहा, परन्तु छागीके भली भांतिसे रखानेपर व्याघ्रका दाव नहीं लगता। इस बातको देखतेही सूरजमलको यह बात याद आ गई कि जिसको चारिणी देवीकी दासीने कहाथा। वह समझा कि यहांपर रहनेसे कोईभी त्याग अधिकार नहीं छीन सकेगा। यह विचार कर वहीं ठहर गये और वहांके आदिम निवासियोंको परास्त कर उसही स्थानमें देवलनामक एक किला बन-

मेवाडके लोग इतने मुग्धहैं कि मेवाडकी इस वर्तमान गिरीहुई अवस्थामें भी उसकी वीरताका स्मरण करके वे अपना सब कष्ट भूल जाते, और चिन्तासे शांति पाते हैं कभी २ अहेरसे लौटनेके पीछे जब शिशोदीयलोग एक संग भोजन करने बैठते हैं, या ग्रीष्म कालमें संध्या समय ठंढी हवा सेवन करनेके निमित्त गलीचा बिछाकर किसी उच्चस्थानमें एकत्र बैठते शर्वत पीते तथा पान चबाते हुए भाटोंके मुखसे वीरवर पृथिवीराजकी वीरताका वर्णन सुनतेहैं, तब उनके आनन्दका ठिकाना नहीं रहता, सांगा और पृथिवीराजमें बहुत अन्तर था, यद्यपि दोनों समान वीर और साहसी थे, परन्तु सांगा विचार-कर लडाईमें हाथ डालते, और पृथ्वीराज प्रतिक्षण युद्धके लिये तत्पर रहतेथे, क्षणभरभी अपनी तलवार म्यानमें रखना उनको पसन्द न था, तल-वारके बलसे अपनी भविष्य उन्नतिके विषयमें वे कहा करते " कि ईश्वरने मेवाड राज्यका शासन करनेके निमित्त मुझे उत्पन्न कियाहै " सांगा उनके बडे भाईथे, पिताके प्रथम पुत्र होनेके कारण राज्यका अधिकार पानेयोग्य वही थे, परन्तु पृथ्वीराजके वे इस स्वत्वकाभी भोग न करसके. अन्तमें इस बातपर राणा रायमल्लके इन दोनों पुत्रोंमें झगडा होने लगा, कि चित्तौरका अधिकारी कौन होगा, प्रत्येक अपना २ प्रयोजन सिद्धकरनेके निमित्त उद्योग करने लगा ।

समय बहनोईके महलके पास पहुँचे सदर दरवाजा बंद था, इस कारण सीढियोंपर चढकर दीवार लांघ गये, और जहाँपर बहन शयन करती थी, सीधे वहीं पहुंचे, घरमें पहुँचतेही भगिनीकी दुर्दशा अपनी आँखोंसे देखली। बहनकी कोमल देह कठिन पृथ्वीपर लोट रहीहै; नींद छूट गई है: मुखपर लावण्यका पता नहीं, आखोंसे आंसुओंका तार बँध गयाहै। भइयाको सामने देखकर हिया उमड आया, रुका न गया, रोने लगी। पृथ्वीराजने उसको समझाकर अपना खड्ग निकाला, और पाभूरायके गलेपर रखदिया। परन्तु "पतिव्रता राजपूतबाला भइयाके चरण पकडकर रोतीहुई बोली। भीख दो भीख दो मुझको विधवा न करो, अपने विधवा करनेके लिये मैंने तुम्हें नहीं बुलायाहै।" पाभूरायभी विनीत होकर पृथ्वीराजसे अपने प्राणोंकी भिक्षा करने लगा। पृथ्वीराजने बह-नोईसे कहा। "यदि तुम मेरी बहनकी जूतियोंको अपने शिरपर रक्खो, तो क्षमा कर-सक्ताहूं, यदि तुम उसके पाँव छूओ, तो मैं तुमको क्षमा करसक्ताहूं" पाभूराय इस बातपर सम्मत हुआ। पृथ्वीराजने फिर उसको बन्धु भावसे माना और सब अपराध क्षमा किया। हृदयमें प्रेमानन्द उछलने लगा। पृथ्वीराज समझे कि पाभूरायभी इस बातको भूलगया, परन्तु यह इनका भ्रम था, इस भ्रमसेही उनके प्राण गये। पाभूराय उनकी पहचानमें न आया। उन्होंने इस बातका विचार न किया कि बहनोई साहब कुटिल कपटी और विश्वासघातक है। पाभूरायने कुमारको पांच दिनतक अपने यहां ठहराना चाहा, पृथ्वीराजने आनन्द सहित उसके अनुरोधकी रक्षा की।

आनन्दपूर्वक पांच दिन बीतगये। छठादिन आतेही पृथ्वीराज अपनी बहि-नसे बिदा लेकर कमलमेरकी ओरको चले। पाभूराय एक प्रकारके लड्डू बनाया करता था। सालेको बिदा करनेके समय उसने अपने बनाये हुए कई मोदक कुमारको भी दिये। पृथ्वीराज किंचित्भी नहीं जानते थे कि उस पापीने इनमें विष मिला दिया न उनको इस प्रकारका संदेह था। कमलमेरके सामने पहुंचतेही उन्होंने कलेऊके लियेएक उन लड्डूओंमेंसे खाया। उसके खातेही सिर घूमने लगा। समस्त अंग प्रत्यंग शिथिल

घोड़ा कुमारको दिया व इनको साथ लेकर श्रीनगर * के राव करमचंदनामक एक सरदारके पास गये। प्रमार वंशका यह सरदार डाके डालकर अपना निर्वाह करता था। सांगाजी भी इसही दलमें मिलकर डांका डालनेको विवश किये गये। सारे दिन लूट मार करके एक दिन कुमार सांगाजी विश्राम करनेके लिये वरगद वृक्षकी छायामें घोड़ेसे उतर पड़े। तलवार शिरहाने रख लेट गये। शीघ्रही नींद आगई। उस वृक्षसे थोड़ीही दूर पर जयसिंह वालिया और जैमूनामक विश्वासी सेवक उनके लिये भोजन वनाने लगे; तीनों घोड़े भी निकटही चरनेको छोड़ दिये गये। उस विशाल वट वृक्षके घने पत्रजातको फोड़कर सूर्यभगवानकी एक तीक्षण किरण सांगाजीके मुखमंडलपर गिर कर सहज २ कांप रहीथी। धूपकी उस तेजीको अनुभव करके एक वड़ा सर्प सोते-हुए सांगाके मस्तकपर अपने विशाल फनको धीरे २ उठा रहाथा। यह देखकर देवी नामक × एक मंगलकारी पक्षी उस सर्पके मस्तकपर ऊंचे शब्दसे वोलनेलगा। मारू नामके एक शकुन जाननेवाले अजपालकने इस वृत्तान्तको देखकर सव वात समझली, और जैसेही सांगाजी सोकर उठे वैसेही इसने उनको राजसन्मान दिया। परन्तु चतुर सांगाजीने झूंठी अप्रसन्नताके साथ उसके आदर मानको अस्वीकार किया। मारूने करमचंदसे यह समस्त वृत्तान्त कहा। सरदार करमचंद सव वातोंको छिपाए रहा और सांगाजीके साथ अपनी वेटीका विवाह करदिया। जवतक सॉगाजीने अपने सिंहासनको नहीं पाया, तवतक करमचन्दने उनको अपने स्थानपरही रक्खा।

कुछ दिनोंके पीछे इस समाचारको राणा रायमलने सुना। यह जानगये थे कि पृथ्वीराज अपने उग्र स्वभावसे मेरे उत्तराधिकारीका ही संहार करना चाहता-था। पृथ्वीराजके ऊपर उन्होंने अत्यन्त क्रोध किया व उसे अपने सामने बुल-वाकर वहुत फटकारा और कहा। "तुम अभी मेरे राज्यसे निकल जाओ। तुम सरलतासे अपना निर्वाह करलोगे कारण कि तुम लडाइ झगडेको अच्छा समझ-तेहो, तुममे साहस और उद्यम वहुत है।" पिताकी आज्ञाको पृथ्वीराजने धीरज धारण करके सुना. पलभरके लिये भी उनको घवडाहट या चंचलता उत्पन्न न हुई। केवल पॉच सवारोको साथ लेकर † पिताके राज्यको छोड़ [illegible] नामक नगरकी ओर चला, यह नगर गोडवाड देशके अन्तर्गत था।

---

* यह श्रीनगर अजमेरके पास बना हुआ है।

× यह पक्षी चिड़ियाकी समान होता है।

† इन पांच सवारोंके यह नाम थे — [illegible]
[illegible]

आठवाँ अध्याय ८.

राणा संग्रामसिंहका सिंहासनपर बैठना;-मुसलमानोंके राज्यका वृत्तान्त;-मेवाडका गौरव;-सांगाजीकी जय;-भारतपर भिन्न २ जातिकी चढाईका वृत्तान्त;-भारतपर बाबरकी चढाई;-दिल्लीके बादशाहका बाबरसे हारकर मारा जाना;-राणा साँगाका बाबरपर चढ़कर जाना;-कनूयास्थानका युद्ध साँगाजीकी पराजय:-साँगाकी मृत्युका वर्णन, तथा उनके चरित्र;-राणा रत्नका सिंहासनपर विराजमान होना;-उनकी मृत्यु;-राणा विक्रमाजित;-विक्रमाजितके आचरण:-सरदारोंसे विद्वेष;-चित्तौरपर मालवेके शाहकी चढाई:-चित्तौरध्वंस;-जुहारव्रत:-मुसलमानोंका चित्तौरको भली भाँतिसे लूटना:-चित्तौरकी रक्षाके लिये हुमायूँका आना:-चित्तौरका उद्धार करके उसके सिंहासनपर फिर भी विक्रमाजितको बिठलाना:-सरदारके द्वारा विक्रमाजितका सिंहासनसे उतारा जाना:-बनवीरको राना बनाना:-

विक्रमाजितके मारेजानेका वृत्तान्त।

सम्वत १५६५ (सन १५०९) में राणा संग्रामसिंह चित्तौरके सिंहासनपर विराजमान हुए। इनकी सुन्दर राजनीतिसे मेवाड़का राज्य उन्नतिके ऊंचे शिखरपर पहुंचगयाथा। भट्टग्रंथोंने इनका वर्णन करनेके समय न्यायके [illegible]

साहित उस मीन राजाके यहां नौकरी करना स्वीकार किया। राजपूत होकर भी उन्होंने अपनी जातिको छिपाया और उस असभ्य राजाकी सेवा करने लगे। वह गोद्वार राज्यके उद्धार करनेका शुभ अवसर टटोलते रहे, सौभाग्य वशसे यह अवसर आपही आप आ पहुँचा। भील लोगोंमें अहेरिया अर्थात् शवरोत्सव नामक एक बडा उत्सव हुआ करताहै। इस उत्सवके आनन्दमें नौकर चाकर-लोगोंको कई दिनकी छुट्टी होजाती है, पृथ्वीराजको भी कुछदिनकी छुट्टी मिली। इस अवसरपर कुमारने अपनी अभिलाषाके सिद्धकरनेका विचार किया। नगरके वाहिर आकर उन्होंने अपने दलके राजपूतोंको बुलाया और उनको इस अवसरपर मीनराज्यपर आक्रमण करनेकी आज्ञादी। आज्ञा पातेही वे राजपूत मीनोंके ऊपर इस प्रकार टूटपडे कि जैसे क्रोधित सिंह मृगझुंडपर टूट-पड़ताहै। नगरमें हाहाकार पड़गया महाबलवान राजपूतोंकी मार खाकर भयसे मीनगण इधर उधर भागने लगे। कुमार पृथ्वीराज नगरके वाहिर खड़ेहुए गुप्त-भावसे इस संग्रामको देखते रहे। धीरे २ महाभयंकर संग्राम होनेलगा। मीनोंका राजा डरसे घोडेपर चढ़कर नगर छोड भागा। भागतेही कुमार पृथ्वी-राजने पीछाकरके उसको पकड़ लिया। पकड़कर एक जंगली पेड़से बांधा, और अपने भालेसे उसको जीता हुआही छेद डाला, मीनराजको उसके अत्या-चारका भलीभाँतिसे फल मिलगया। इसके उपरान्त कुमार पृथ्वीराजने नद्रा-लय और उसके साथके नगर गाँव और छोटी २ बस्तियोंमें आग लगाकर पशुकी समान मीनोंका संहार किया। मीनगण अग्निसे भस्म होनेके डरसे व्याकुल हो चारों ओर भागने लगे. परन्तु किसी प्रकारसे उनके प्राण न बचे, कुमार पृथ्वीराज और इनके बांके वीरोंने प्रायः सबहीका संहार कर डाला। इस प्रकार केवल किलेके सिवाय और समस्त देश पृथ्वीराजके अधिकारमें आगया: इस बचेहुए किलेका नाम टर्मोड़ी था. उस समय इसमें चौहान सोढा लोग राज करते थे।

संग्रामसिंह एसेही प्रतापवान थे। आठ हजार घुड़सवार, ऊंची श्रेणीके सात राजा, नौ राव, और "रावल" व "रावत" उपाधिधारी १०४ सर्दार और पाँचसौ रणमतवाले हाथी लेकर उपरोक्त राजालोग महाराणा संग्रामसिंहकी सहायता करनेको युद्धमें गएथे।

विपत्तिके समयमें जिन्होंने महाराणा संग्रामसिंहकी सहायता कीथी वे उनको सम्पत्तिके समयमें भी नहीं भूले अर्थात् उन्होने सबकाही कुछ न कुछ प्रत्युपकार करके अपनी कृत्यज्ञताका परिचय दियाथा। उन्होने श्रीनगरके करमचंदको अजमेरकी एक भूमिवृत्ति दान कर दी थी। इस करमचंदके जगमलनामक एक पुत्रथा। चंदेरीनामक जनपदपर अधिकार करनेके समय जगमलने राणाकी सहायता कीथी, इस कारणसे राणाने उसको रावकी उपाधि दीथी।

घरेलू झगडेके समय राज्यमें जो अशान्ति मच गईथी राणा संग्रामसिंहके सिंहासनपर बैठतेही पुनर्वार शान्ति स्थापित होगई और सब झगडे दूर होगये। जोरके साथ यह बात कही जा सकतीहै कि राणा संग्रामसिंह वीर्यवान और साहसी महाराज थे। इसपर यदि कोई कहने लगे कि फिर वह अपने उत्तराधिकारको छोडकर वन २ में किस कारणसे मारे २ फिरे; इस प्रश्नके उत्तरमें इतनाही कहा जा सकताहै, कि इससे कायरपन या साहसहीनताका परिचय नहीं पाया जाता, वरन उसमें उनकी अपूर्वभावदर्शिता, वीरता, धीरता और सहनशीलता दिखाई देतीहै; यदि वह उस भावदर्शिताके बलसे मेवाडकी होनहार भाग्यलिपिको न पढलेते; यदि वह आगा पीछा न विचारकर स्वार्थसाधनके लिये सकटमेंही विरोध करनेलगते तो निस्सन्देह मेवाडकी अत्यन्त हानि होती।

संग्रामसिंह समर-विशारद महाराणा थे। उन्होंने श्रेष्ठ रणनीतिके अनुसार अपनी सेनाको शिक्षित कियाथा। इसही सेनाको साथलेकर तैमूरके खानदानवालोंके साथ संग्राम करनेके पहिले दिल्ली और माल्वेके बादशाहोंसे अठारहवार लडाई की, और सबमें जय पाई। दिल्लीका इब्राहीम लोधीही दो बार महाराणासे भिडगया था, परन्तु दोनों बारही राणाके प्रचंड पराक्रमसे उसने नीचा देखा। विशेषतः बारीके पिछले संग्राममें यवनदलपर ऐसी मार पडी थी कि दो एक सिपाही ही प्राण लेकर रणसे भाग सके थे। बादशाहके सिवा सिकन्दरखांको भी संग्रामसिंह उस लडाई-में कैद करलाये थे। मेवाडराज्यकी सीमा इसप्रकार बहुत दूरतक फैलगईथी।

उसके हृदयसे लोप नहीं हुई। बडी होनेपर जब कुछ २ समझने लगी तो अपने पूर्व पुरुषोंके साथ अपनी अवस्थाका मिलान किया करती। आज कलकी अवस्थासे तारा तृप्त न होती। सुकुमार अवस्थासेही उसके हृदयमें चिन्ता होने लगी। कभी इस कारणसे वह अधीर भी हो जाती थी। सैकडोंवार अपने भाग्यको धिक्कार दिया करती। अल्प वयसेही स्त्रियोंके आचार विचार और पहिरने ओढ़नेके आडम्बरसे उसको घृणा होगई, घोडेपर सवार होना और धनुर्विद्याका अभ्यास उसको भली भाँतिसे होगया। यह दोनों विद्या उसको इतनी सिद्ध होगई थीं कि शीघ्रतासे अश्वको चलातीहुई निशानेपर वाण मारदेती थी। शूरथानने जितनी बार तोडातंकके उद्धार करनेको ,संग्राम किया। तारा प्रचंड काठियावाडी घोडेपर चढ़कर उन सब लडाइयोंमें पिताके साथ गईथी। उसके अपूर्व रणविक्रमको देख बडे२ वीरोंनेभी माथा नीचा करलिया था। बहुतसे मुसलमानवीर उसके अमोघ वाणका निशाना हो गयेथे। धीरे२समस्त राजस्थानमें इस युवतीकी वीरताका यश फैल गया। बहुतसे राजपूतोंको इस रत्नके प्राप्त करनेकी आशा हुई। परन्तु शूरथानकी प्रचंड प्रतिज्ञाको सुनकर सबकी आशा टूटगई। राव शूरथानने प्रतिज्ञा कीथी "कि जो कोई राजपूत यवनोंके हाथसे तोडातंकका उद्धार करदेगा, उसकेही साथ ताराका विवाह करदिया जायगा।" इसको सुनकर कुमार जयमल वेदनौरमें आया और ताराके साथ विवाह करनेकी इच्छा प्रगट की। परन्तु वीरनारी ताराने दम्भपूर्वक कहा कि "पहले तोडातंकको उद्धार कीजिये फिर मेरे साथ विवाह होगा।" जयमलने इसवातको स्वीकार किया. परन्तु वह अपने कुकर्मसे इस सुन्दरी नारीको प्राप्त न करसका। ताराके रूपसे वह ऐसा मोहित होगयाथा कि विना अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण किये वह मूर्खताके कारण एक कुकर्मके करनेकी चेष्टा करने लगा: इस कारण शूरथानने क्रोधित होकर जयमलको मार-डाला। भट्टलोगोंने यहांपर वर्णन कियाहै कि:-"जयमलके भाग्याकाशके लिये तारा अनुकूल तारा न हुई।"

जयमलके मारेजानेके समय सांगाजी छिपेहुए रहतेथे! पृथ्वीराजजी देशसे निकाले हुए इधर उधर फिरतेथे. जयमलने उनके रहनेसे केवल यही निश्चय करलिया था कि वही मेवाडका उत्तराधिकारी होगा. परन्तु अपने अभाग्यसे वह शूरथानके द्वारा मारागया। रायमलको इसमें अवश्यही क्रोध होना उचित था। सभासद्गणोंने जयमलके मारे जानेका वृत्तान्त रायमलजीको सुनाकर कहा कि शूरथानसे पुत्रका बदला लीजिये: परन्तु रायमलजीने उदारभावसे उत्तर दिया कि

चढ़कर आया था, उससमय अकेले पंजाबमेंही छोटे २ बहुतसे राज्यथे, बहुतसी जगह प्रजातंत्र प्रणाली प्रचलित थी । सिकन्दरके बाद ईरानवाले हिन्दोस्थानमें आये। कहतेहैं कि दारायुने अपने अधिकारके समस्त राज्योंमें भारतभूमिकोही उत्तम और श्रीमान् देश समझा था। इसही प्रकारसे तक्षक, जिन, पारद, हून, कात्ति, ग्रीक, यूनानी, तातारी, गोरी और चकतई इत्यादि दुर्द्धर्ष अनार्यलोग क्रमानुसार भारी सेनाको लेकर बारंबार भारतवर्षपर आतेथे और यहांके धन रत्नको लूटकर चल देते थे।

किसी२ने भारतहीके उपजाऊ मयदानमें अपने वंशका वृक्ष लगादिया और अपनी जन्मभूमिके शोकको भूल गये। जो जाति भयंकर सेना लेकर आई, उसनेही कुछकालतक यहांका राज्य किया और कुछदिन पीछे न जाने कहांको बिलाय गई। परन्तु राणा संग्रामसिंहके प्रबल शत्रु वीरवर बाबरने अभागी भारतसंतानोंके हाथोंमें जो पराधीनता की हथकड़ियें पहराई वे हथकड़ियें आजतक नहीं उतरीं। जबतक ज्ञानरूपी सलाईके द्वारा भ्रमान्ध भारतवासियोंके अज्ञानसे अन्धेहुए नेत्र नहीं खुलतेहैं, जबतक सभ्यताकी माता भारतभूमि नवीन बलको पाकर नहीं जी उठतीहै; तबतक वह हथकड़ियें—वह परवशताकी जंजीर किसी प्रकारसे नहीं खुलेगी: उस समयतक भारतकी दुःखनिशाको कोईभी दूर नहीं कर सकेगा। परन्तु सातसमुद्रोंके पारसे आकर जिसने एक श्वेतद्वीपनिवासी ब्रिटिनवीरोंने मीद, पारद और तातारवालोंकी सल्तनतको अस्तव्यस्त कर डाला, तब तो आशा की-जासकतीहै, कारण कि सदा किसीके दिन एकसे नहीं रहते; न कोई सदा सुख पाताहै, न कोई सदा दुःखी रहता है। सुखके बाद दुःख और दुःखके पीछे सुखका देना ही परमेश्वरका नियम है। फिर भारतके लिये इस सदाके नियममें कोई परिवर्तन होजायगा? नहीं ऐसा कभी नहीं होसकता?—यदि ऐसा हो तो संसारी नियमोंमें बाधा पड़जाय, सारा विश्व चूर्ण होकर परमाणुओंमें लीन होजाय। इसही नियमके अनुसार संसारके और अनेक राज्य हीनदशाको पहुंच गए हैं; कोई तो फिर उन्नतिको प्राप्त कररहाहै, कोई भारतकी समान गंभीर निद्रामें डूब रहाहै। परन्तु यदि उन्नत समस्त देशोंकी समानताकी बराबरी कीजाय तो भारतवर्षमें एक बातकी प्रधानता देखी जातीहै। विजातीय और विधर्मी जेता और शासनकर्त्ताओंके कठोर अत्याचारसे दूसरे देशोंके राज्यका मौलिक धर्मभी नष्ट होगया; प्राचीन जातीयता लोप होकर अनेक संकर जातियोंकी उत्पत्ति होगई। उनके प्रथम

जब राजपूतलोग तोडातंकमें पहुँचे उस समय यवनलोग ताजिया महासमारोहसे दुर्गके बाहर निकल रहेथे। पृथ्वीराज भी अपने दलके साथ उनमें मिलगए, पहिले तो उनको देखकर मुसलमानोंने कुछ विशेष सन्देह न किया इस कारण कार्य सिद्ध करनेका भला अवसर प्राप्त हुआ। क्रमसे ताजिया बादशाहके महलके निकट पहुँचा, उस समय बरामदेके ऊपर खडाहुआ यवनराज वस्त्राभूषण पहिन रहाथा; अनजाने सवारोंको देखकर वह मनमें भांति २ की चिन्ता करने लगा फिर पीछे घोर संदेह हुआ, वह इन सवारोंका नाम धाम पूछनेको ही था कि इतनेमें वीरनारी ताराने ताककर उसके एक तीर मारा साथमें पृथ्वीराजने भी अपने हाथका भयंकर शूल चलाकर उस अभागे अफगानको पृथ्वीपर लुटा दिया ! अफगानके गिरतेही यवनोंमें हाहाकार होने लगा। सबही डरके मारे इधर उधर भागने लगे, पृथ्वीराजने सेनाके साथ यवनोंका संहार करना आरंभ किया। इस प्रकार मार धाड़ करते हुए नगरके तोरण द्वारपर पहुँचे, परन्तु निर्विघ्नतासे उसमें प्रवेश न करसके। एक प्रचंड मतवाला हाथी शूँडको हिलाता हुआ उस द्वारके मार्गको रोक रहा था ताराने एक विशाल फरसा लेकर उस हाथीकी शूंडको काट डाला। दारुण पीडा होनेके कारण वह हाथी चिंघाडता हुआ दूर भागगया। उस काल यवनलोगभी प्राणोंका मायामोह छोड धरवारसे नाता तोड पृथ्वीराजके ऊपर आ टूटे। शीघ्रही दोनों दलोंमें घोर संग्राम होने लगा। कुमार पृथ्वीराज, क्रोधित हुए केशरीकी नाई यवनलोगोंको दलित करने लगे मुसलमानोंके पाँव उखडगये; और वह मोरचे छोडकर इधर उधर भागे. परन्तु भागकर कहां जांयगे ? संसारमें इन अभागोंको किस स्थानमें सहारा मिल सकताहै ! पृथ्वीराजके प्रचंड क्रोधसे कौन बचसकता है। इस प्रकार यवनलोग जिस ओरको भागते थे, पृथ्वीराज और उनके वीरगण उसही ओर उनको घेरकर मार डालते थे। इस प्रकारसे तोडातंकका उद्धार करके वीरवर पृथ्वीराजने अपनी प्रतिज्ञाको पूरा किया। इस कार्यके होजानेपर शुभ लग्नमें ताराके साथ उनका विवाह होगया।

जिस झगडेकी प्रबल तरंगोंमें पडकर कुमार पृथ्वीराज, सांगा और जयमल्ल तीन तेरह होगये थे इसके पैदा करनेवाले चतुर सूरजमल्ल थे। जिस दिन चारणी देवीकी परिचारिकाने कहाथा उन्हें यह मालूम हुआ कि [illegible] मिलजाना संभव है, उस दिनसे एक नई आशाने उनके हृदयमें [illegible]। वे पलभरको भी उस आशाको अलग नहीं करते [illegible]

इनकी ही विजयपताका उडीथी. एक समय इन्हीं लोगोंकी तलवारसे समस्त यूरोप और एशिया कॉप गईथी। यह अपने पुराने वासस्थानको छोडकर संसारमें चारों ओर फैलगएथे। एक समय इन शितलोगोंके एटिला, एलारिक इत्यादि वीरोंके प्रचंड विक्रमसे बालटिकसे मेडिटरेनियनसमुद्रतक समस्त देशोंमें थरथरी मचगई थीः इन वीर लोगोंकी वीरताका विचार करनेसे स्वयंही उसदेशकी महिमाका ज्ञान होजाताहै। परन्तु उनमें बहुतसे वीरलोग लोकसंख्याकी अधिकाईसे या राज्यके लोभसे उत्कंठित हो पूर्वोक्त देशोंमें आनेके लिये विवश हुएथे। परन्तु उन प्रतिकूल तरंगके समयसे भाग्य उनपर अत्यन्त अनुकूल हुआ और उनके सौभाग्यके मार्गको साफ करदिया। वे लोग भाग्यके प्रभावसेही २००० अनुचरोंको साथ लिये हुए भारतवर्षमें चले आये और पाण्डवोंके सिंहासनपर अपना अधिकार जमा लिया।

बादशाह बाबर सब भांतिसे संग्रामसिंहकी बराबर था। राजपूत वीर सांगाकी समान वीर बाबरभी सदा मुसीबतमेंही रहाथा विपत्तिके विद्यालयमें राणाजीकीही समान परिणामदर्शिताका पाठ पढा था। यद्यपि संग्रामसिंहकी अपेक्षा बाबर बादशाहका जीवनचरित्र उपन्यासोंकी सुन्दरताईसे विशेष शोभायमानहै, तथापि वह संग्रामसिंहकी ही भांतिसे अद्भुत परिणामदर्शिताके अनुसार सब कार्य किया करता था। उसने कभीभी अपनी बहादुरी या तेजीपर भरोसा रखके प्राणोंको विपत्तिमें नहीं डाला। सन् १४९४ ई०में बादशाह बाबर फरगानाकी गद्दीपर बैठा. उसकाल बादशाहकी उमर केवल १२ ही वर्षकी थी। इस छोटी उमरमेंही उसकी वीरताकी सूचना होनेलगी थी। गद्दीपर बैठनेसे चारवर्ष पीछेही बहुतसे बादशाहोंको जीतकर फिर समरकन्दको फतह किया. फिर दो वर्ष बाद एकवार समरकन्द अधिकारसे निकल गयाथा. परन्तु अत्यन्त परिश्रम करके बादशाहने उसको फिर अपने करमें करलिया। इसप्रकार सम्पद् विपद् तथा जय पराजयके अद्भुत मेलसे उसके जीवनचरित्रको अद्भुत कर डालता है. वह कभी तो अपना [illegible] दूसरोंके देशोंका राज्य करता था. कभी वहांसे निकाल दिया जाता था. कभी [illegible] था और कभी पराजित होकर अपने साथियोंकी रक्षा करनेके लिये किसी कोनेमें भागजाता था। कभी अपनी मनःकामनाके सिद्धकरनेके लिये [illegible] के साथमें अकेलाही युद्ध करता और कभी पराजित–लांछित और [illegible] [illegible] किसी [illegible] नहीं हुआ करता। इन संग्रामोंमें [illegible]

परिचय पाया जाताहै संसारमें और कोई ऐसी जाति नहीं है कि जिसके चरित्र घनेभावसे मिले रहतेहैं। जिस दिन यह माहात्म्य संसारसे लोप हो-जायगा। उसही दिन राजपूतोंका नामभी पृथ्वीपरसे लोप होगा। हाय ! उस दिनकी बात याद करनेसे अबभी हृदय विदीर्ण होताहै। अस्तु पृथ्वीराजने चचाके डेरेपर पहुंचकर देखा कि वे एक साधारण बिस्तरेपर लेटे हुए हैं, देहके घावोंसे रुधिर निकल रहाहै। एक नाई घावोंको धोधो कर सी रहाहै और पट्टी बाँधता जाताहै। जो भतीजा उनका प्रचण्ड विरोधी है, जो उनका प्रचण्डशत्रु है। जिसके द्वारा वे इस दुर्दशाको पहुँचे हैं, जिसका संहार करनेके लिये संग्रामभूमिमें प्राणपणसे परिश्रम कियाहै आज उसकोही सामनेसे आताहुआ देखकर वीर सूरजमल बिस्तरेसे उठ खडे हुए और भली भाँतिसे आदर मान करके उनको ग्रहण किया। दोनोंके आकार और चेष्टासे उस समय ऐसा ज्ञात हुआ कि मानो इनके बीचमें कभी कोई झगड़ा फसादही नहीं हुआथा। मानो सूरजमलको कोई पीडाही नहीं है। बिस्तरे परसे उठनेके समय झटका लगनेके कारण उनके घाव फट गये और उनसे रुधिर निकलने लगा। यह देखकर पृथ्वीराजके हृदयमें चोट पहुँची। परन्तु सूरजमलके मुखपर कष्टका कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया। वरन अपने भतीजेको आदरसहित आसनपर बिठलाया। फिर दोनोंकी वार्ता आरंभ हुई।

पृथ्वीराजने कहा;-" काकाजी ! तुम्हारे घाव कैसे हैं ?"

सूरजमल।-" बेटा तुमको देखकर अब मेरी समस्त पीडा जातीरही ?" पृथ्वी-राज।-"काकाजी ! मैं अभी दीवान* जीसे नहीं मिला, आपको देखनेकी शीघ्रतासे यहाँ चला आया, परन्तु मुझे इस समय क्षुधा बहुत व्याकुल कर रहीहै, आपके पास क्या कुछ भोजनकी सामग्री है ?"

सूरजमलने अत्यन्त आनन्दित होकर शीघ्रही भोजन मँगादिया ? दोनोंने एक साथ भोजन किया: पृथ्वीराजको कुछभी सन्देह न हुआ. उन्होंने विदाके समय४ पान खानेमें कुछभी इधर उधर न किया। चचासे विदा होनेके समय पृथ्वीराजने नम्रतासे कहा " काकाजी ! कल प्रभातके समय मेरे और आपके युद्धकी संग्रामकी समाप्ति हो जाय ?"

सूरजमल। " बहुत अच्छा. बेटा ! बहुत सबेरे चले आना।

---

* एक लिंगके दीवान [illegible]

४ [illegible]
[illegible]।

अंतमें जो उसको छुटकारा मिला, सो बलकी, या चालाकीकी सहायतासे नहीं मिला। केवल एकदेशकेही विश्वासघाती, कलंकी और नराधमकी अनुकूलतासे बाबर इस विपत्तिसे निकल गया। यदि इस अमद उपायका अवलम्बन न किया जाता तो उस पीततरंगिणी *के किनारे सेनाके साथ बाबरको समरभूमिमें सोना पडता। उसका मुकुटशोभित पवित्रमस्तक शृगाल और कुत्तोंके पांवोंसे ठुकराता फिरता। बाबरने इस बातको समझकरही एकसमय शोकसे कहाथा कि "क्या-इस समय ऐसा कोई नहीं है कि जो इस संकटके समयमें पुरुषोचित वार्ता कहकर साहस और उत्तेजना दे।" ?

चित्तौरनाथ राणा संग्रामसिंहके प्रचण्ड बलको रोकनेके लिये आगरेके तोरण-द्वारको छोडकर वीर बाबर अपनी सेनाको साथले उनके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये सीकरी × की ओर चला। इसओर राजपूतकुलशेखर वीर चूडामणि महाराणा संग्रामसिंहभी सेनासहित उसके सामनेको चले। राजस्थानके प्रायः समस्तही राजा राणाकी सहायता करनेके लिये चित्तौरनाथकी पताकाके निकट आनकर एकत्र हुए। संवत् १५८४ (सन् १५२६ ई०) कार्तिक वदी ५ को ·· राणाजी कनवा और बियाना नामक स्थानमें बाबरके सामने आये। उससमय बाबरके आगे १५० तातारी सेनाथी। राणाने उन सबका संहार किया! जो दो चार मुसलमान बचगए उन्होंने मूलदलमें जाकर यह समस्त समाचार सुनाया। इस पराजयका समाचार पातेही बाबरकी समस्त सेना उत्साह हीन होगई। छावनीके चारोंओर परिखा खोदकर वीरगण सशंकभावसे डेरोंमें काल व्यतीत करने-लगे! इस साहसहीन दलकी सहायता करनेके लिये जो और सेना आई वहभी संग्रामसिंहकी प्रचंड सेनाके रोकनेमें असमर्थ होकर अपने२ डेरोंकी ओर भागी. विजयी राजपूतोंने उस भागती हुई सेनाका पीछा किया और बहुतोंको पकडकर जानसे मारडाला। बाबर घोर संकटमें पडगया। परन्तु पलभरके लियेभी उसका उत्साह न गया। बालकपनसे कष्ट सहते २ उसको सहनशीलता का अभ्यास होगया–

वनके भीतर उनके आदमी और घोडेभी रहने लगे। एकदिन रात्रिके समय उस गंभीर वनमें सारंग देवके साथ बैठेहुए आग तापकर संग्रामके विषयमें अनेकप्रकारकी बातचीत कर रहेथे, कि इतनेहीमें असंख्य, घोड़ोंकी टापोंके शब्द और हिनहिनानेकी आवाज आने लगी। उनकी बातचीत बंद होगई। सारंगदेवकी ओरको देखकर डरेहुए सूरजमलने कहा "कोई और नहीं,-यह पृथ्वीराजही आता है।" वह यह कहही रहेथे कि अपनी सेनाको साथ लियेहुए पृथ्वीराज वहां आ पहुँचे। अत्यन्त कुलाहल होने लगा। अस्त्रोंकी झनझनाहट तथा वीर सिपाहियोंके सिंहनादसे सारा वन गुंजार गया। पृथ्वीराज छलांग मारकर घोडेसे पृथ्वीपर उतरे और अपने चचाको घेर लिया। कुमारके एकही आघातसे सूरजमल पृथ्वीमें गिरपड़े परन्तु सारंगदेवने उनको बचाकर पृथ्वीराजसे कहा "इस समयका एक मूकासी, पहिले हथियारोंके बीस घावोंसे अधिक असह्य है।" इसपर सूरजमलने कहा, "और जब कि वह मूका मेरे भतीजेके हाथसे लगे।" अस्तु इस रात्रिको सूरजमलसे युद्ध नहीं कियागया। उन्होंने धीरे २ पृथ्वीराजसे कहा। "बेटा यदि मैं यहाँ मारा जाऊंगा, तब तो कुछभी हानि नहीं है क्योंकि मेरे पुत्र राजपूत हैं, देशमें लूट मार करके भी अपना निर्वाह करलेंगे, परन्तु तुम मारे गये तो चित्तौरकी क्या दशा होगी? मेरे मुँहपर कलंक लग जायगा। फिर कैसे किसीको मुँह दिखाऊंगा, सदाके लिये अपयश होगा।"

युद्ध रोक दिया गया। चचा भतीजेने अपनी २ तलवारको म्यानमें लिया. कुछ देरके लिये दोनोंही शत्रुताको भूल कर एक दूसरेके गले मिले पीछे पृथ्वीराजने सूरजमलसे कहा; "काकाजी! मेरे आनेके समय आप क्या करतेथे।"

सूरजमलने स्नेह सहित उत्तर दिया," बेटा! और क्या करता? भोजनादि करके इधर उधरकी बातें कर रहा था।"

पृथ्वीराज।" काकाजी! मेरी समान शत्रुके निकट रहते हुए आप किस प्रकारसे निश्चिन्त होगयेथे।"

सूरजमल।" बेटा फिर क्या करूं तुमने तो [illegible] नाश करदिया फिर कहीं किसी प्रकारसे तो अपने दिन काटूं?"

कुछ देरतक दोनों चुप रहगये। नदीके [illegible] और [illegible] नेकी चेष्टा करने लगे. कुछदेर पीछे पृथ्वीराजने [illegible] काकाजी! इस [illegible] निकट जो कालिका देवी है. सुनाहै कि [illegible] लिखाहै कि [illegible] करेंगे? अथवा अपने [illegible]

अवलम्बन करके एक तेजस्विनी वक्तृता दी* इस वक्तृताको सुनकर सेना कुछ २ उत्तेजित हुई। जब बावरने देखा कि अब कुछ काम चलगया तब प्रत्येक वीरके हाथमें कुरान देकर मेघगंभीर वाणीसे कहा कि "अहद करो, कुरानको छूकर खुदाका नाम लेकर कसम खाओ कि यातो फतहही करेंगे वरना इस जंगमें अपनी जान देदेंगे।" सबके हृदय उत्साहित हुए, सबही वीरगण बावरकी आज्ञामें अपनी सम्मति देकर भयंकर सिंहनाद करने लगे सेनाका उत्साह देखकर बावरने शीघ्रही छावनीको तोड दिया और विना विलंब किये सेनाके साथ एककोश आगे बढआया और आगे न बढ सका। राजपूतोंके झुण्डझुण्ड उसकी तोपोंके आगे आकर तातारी सिपाहियों पर हमला करने लगे। बावरको विवश होकर वहीं पर छावनी डालनी पडी। परन्तु सीमादंड× और तोपोंके एकसाथ रहनेमें छावनीके

---

* बावरके जीवन–चरित्रका ३५७ सफा देखो। Memoirs of Baber, P. 358.

× छावनीके चारो ओर सीमा निश्चय करनेके लिये जो लकडीके डंडे गाडे जातेहै, उनको सीमा दंड कहतेहैं।

बावरने लिखाहै कि ९३३ हिजरी पहली जेमादीके तेरहवें दिन सोमवारको घोडेपर सवारहो अपनी फौज देखने चला, मार्गमें मुझे बडी चिन्ता हुई मैं प्रतिज्ञा करचुका था कि जो काम हमारे मतके विरुद्ध होंगी मैं उनमें हाथ न डालूंगा, तथा अपने किये पापोंका प्रायश्चित्त करूंगा, इसका पालन आजतक न होसका, इसपर जो उसने कहा उसका भाव यहहै "कि कितने दिन तू पापतक [illegible] सुख भोगता रहेगा, पछतावा कडवा नहीं है उसका स्वाद ले। हे [illegible] तू पापोंसे [illegible] निकृष्ट हुआ निरनामें पडकरके तैंने क्या सुख भोगा? कितने दिनतक तू ऐसा दास बना रहा, तेरे जीवनका कितना समय व्यर्थ गया, आगे [illegible]। [illegible] तुरंत मुक्ति मिले [illegible] पानेके लिये जो मनुष्य अपना जीवन त्याग करना [illegible] नहीं [illegible] नहीं [illegible] है; [illegible] पानेके लिये सब सुखभोग और [illegible] को त्याग, और [illegible] हृदयमें [illegible] इन सबको छोड [illegible]।

[illegible]

वाया। इस नये किलेके चारों ओर जो छोटी२सहस्र वस्तियें थीं वहभी थोडेही समयमें प्राप्त होगई। इस प्रकारसे प्रतापगढदेवल स्थापित हुआथा। कुमार पृथ्वीराज देशको लौट आये, राणा रायमलने आदर सहित उनको ग्रहण किया। एक समय जो पृथ्वीराज पिताके अत्यन्त विरागभाजन थे, आज राणा-ने उनकोही हृदयमें धारण करके अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया, और सुखसे दिन विताने लगे पुत्रके गौरवसेही उन्होंने अपना गौरव समझा, परन्तु ब्रह्माकी कठोर लिखनके वाधा डालनेसे वहुत दिनतक पृथ्वीराज इस सुखको नहीं भोग सके। कपटीकी कपटता दुष्टतासे कुसमयमें उनका शरीर छूटा। चचा सूरलमलके ऊपर विजय प्राप्त करके कुछ दिन चित्तौरमें ठहर कर कुमार पृथ्वीराज अपने वास-स्थान कमलमेर दुर्गको चलेगये। वडे भ्राताकी तलासभी करते रहे और प्राण-प्यारी ताराके साथ आनन्दसे समय व्यतीत करने लगे। एक दिन कुमारने अपनी वहिनका एक पत्र पाया। यह वहन सिरोहीके राजा *पाभूरायके साथ-व्याही गई थी। यह पाभूराय नशा अधिकाईसे खाया पिया करता था। प्रति-दिन रात्रिके समय कुसुमरस या अफीम खाकर मतवाला हो जाता और बुराई भलाईको भूलकर अपनी स्त्रीको अनेक प्रकारसे सताता था। कभी गालियें देना कभी मार धाड करना-कभी रातभर पृथ्वीमें लुटाये रखता था। फूलकी समान वह सुकुमारी राजकुमारी पृथ्वीपर रातभर लोटती रहती थी। परन्तु दुराचारीको अपनी स्त्रीपर जराभी दया न आती। राजपूतबाला अनेक समझाती बुझाती थी, कुमार्गसे सुमार्गमें लानेकी वहुतेरी चेष्टा करती थी, परन्तु किसी बातसे कुछभी काम न चलता, तव विवश होकर राजकुमारीने अपना समस्त वृत्तान्त खोलकर लिखके एक पत्र पृथ्वीराजके वापके पास भेजा। ऊपरही इस पत्रका वर्णन कर आयेहैं।

पृथ्वीराजने आरम्भसे लेकर अंततक अपनी भगिनीके पत्रको पढा. उनके क्रोध चढआया. पापीको दंड देनेके लिये वह भगिनीकी ओर चले और [illegible]

---

* चौहानोंकी देवडा शाखाने पभूरायका जन्म हुआ [illegible] गयाहै।

चारों ओर कोई रोक न की जा सकी, इस कारण बहुतसा असुभीता उठाना-पडा और वह अपनेको बेखटके नहीं समझ सका । परन्तु बाबरका समय अच्छा था,इस कारणसे राणा संग्रामसिंहने उससमय कोई आक्रमणही नहीं किया । विपत्तिमें पडेहुए शत्रुको घेरना, राणा संग्रामसिंहकी समान रणविशारद क्षत्रीके लिये नीतिविरुद्ध कार्य माना जा सकताहै. परन्तु इसकार्यसे राणाजीकोही बडी भारी हानि हुई । बाबरपर संकट पडा जानकर वह जितनी देर करते थे उतनीही उनके लिये बुराई होती जाती थी । शत्रुगण धीरे २ बलवान होते जातेथे । इस पर भी यदि राणाजीकी सेना वीरधर्मके साथ संग्रामभूमिमें विराजमान होती, यदि संग्रामसिंहकी भांति सेनाके हृदयभी स्वदेशप्रेम और वीरधर्मसे दीक्षित होते तो किसी प्रकारसे चित्तौरकी कोई हानि नहीं होती । परन्तु भारतवर्षके अभाग्यसे हितमें विपरीत हुई । राणा संग्रामसिंह उदारथे उन्होंने अपने सामन्त और सर्दारोंको भलीभांतिसे पहिचाना नहीं: उन्होंने इस बातको नहीं जाना कि यह लोग केवल भूमिके अभिलाषा करनेवाले लोभी जीवहैं. इसही कारण भली-भांतिसे उनका विश्वास करते थे । वह समझते थे कि शत्रुगण कैसाही तटयारी करें राजपूतगण अवश्यही प्राणका दान लगाकर युद्ध करेंगे । यह विश्वासही उनके लिये कालरूप होगया । वे निश्चिन्त हो बादशाहके आगे बढनेकी बाट देख रहेथे: कि इतनेहीमें बाबरका एक दूत सन्धिका प्रस्ताव लेकर उनके पास आया । राणाजीने आदरसहित उसको ग्रहण किया । परन्तु उसके आनेका यथार्थ कारण न जाना । सन्धिका प्रस्ताव करतेही राणा अत्यन्त विस्मित हुए: क्योंकि बाबरका सन्धिकरना असंभव बात थी । उन्होंने सर्दारोंसे पूछा " बादशाह कौन २ से नियमोंसे सन्धि करना चाहतेहैं । " सर्दारोंने नम्रतासे उत्तर दिया " इस बातको उन्होंने आपहीके ऊपर छोडा है " सिलादित्यनामक एक तुवर राजपूत उससमय गढासिनका हाकिमथा । संग्रामसिंह उसपर अत्यन्त स्नेह करतेथे और प्रयोजनीय कार्योंमें उससे परामर्श भी ली जातीथी । सन्धिके समय राणाने उसकोंही बुला भेजा और उससे संमति पूछी कि कौन २ से नियमोंसे सन्धि करनी चाहिये । तर्क वितर्कके पश्चात निश्चय हुआ कि दिल्ली और उसके सा परगने बाबरके पास रहेंगे और बीनाके समदानसे बहनेवाली [illegible]

होने लगे । बड़े कष्टसे देवी माताके मंदिरके आँगन तक पहुँचे, फिर एक कदम भी आगे न बढ़ा गया । विवश होकर वहीं पडरहे और प्राणप्यारी ताराको समाचार देनेके लिये आदमी भेजा । परन्तु अब वह अपनी जिंदगीमें प्यारी ताराको नहीं देखसके । तारा नगरसे आ रहीथी कि इसी बीचमें तेजस्वी वीरने सुरपुरको पयान किया । भारतका एक प्रकाशमान नक्षत्र अपने स्थानसे टूट कर महागंभीर समुद्रके नीरमें डूबगया! सारा संसार हाहाकार करके रोने लगा । मानो त्रिलोकी किसी भयंकर भूपचालसे काँप उठी! मानो किसी अपरिचित स्थानसे हृदय विदारी महाविलाप कलाप सुना जाने लगा! कैसा शोक है कि ताराने अपने प्राणनाथको इससमय जीवित न पाया? पृथ्वीराजकी निर्जीव देहको हृदयसे लगाकर वह जीतेजी आगमें जलमरी ।

राणा रायमलके ऊपर यह कठिन वज्र टूट पड़ा । जिसको पाकर वे सांगाके चले जानेका दुःख भूल गयेथे—जयमलके मारेजानेका शोक भूल गयेथे। जिसकी अतुल वीरताके द्वारा वह अपनी प्रतिष्ठा समझते थे; उसही कुमार पृथ्वीराजको आज कालने विना समयही अपने गालमें ग्रास करलिया । पुत्रके शोककी आग उनसे न सहारी गई और प्राणोंको नेवछावर करके पुत्रका साथ दिया । मेवाड राज्यमें महा हाहाकार होने लगा । पृथ्वीराज और राणाके विषम शोकसे सवही रातदिन विलाप करने लगे ।

यद्यपि राणा रायमल अपने वड़ेबूढ़ोंकी समान गुणवान नहीं थे. तथापि देश-में उनका यश फैल रहा है । वड़े २ कष्ट और संकटोंमें पड़कर उन्होंने जिस श्रेष्ठ रीतिसे अपनी प्रजाका लालन पालन किया और बड़े बूढ़ोंके गौरवकी रक्षा की. इन कारणोंसे उनकी अवश्यही एक बुद्धिमान गुणनिधान राणा [illegible] । प्रजागण हृदयके साथ उनकी भक्ति करते थे. यही कारण है जो राणा रायमल-की मृत्युसे सर्वसाधारणको अत्यन्त शोक हुआ ।

व्याकुलताके साथ देखा कि विश्वासघाती पापी सिलादित्य बादशाह बाबरकी ओर चला गया। उनका हृदय मथित होने लगा, चारों ओर अंधकार दिखाई दिया।

हा! विश्वास करनेका क्या यही फल है! राणाजीने विश्वास करके उस दुराचारीके हाथमें सेनाके सन्मुख भागकी रक्षा करनेका भार दिया था; पर उस विश्वासघातीने इस विश्वासका यह प्रतिफल दिया! हा नराधम—आततायी विश्वासघातक—देशका नाश करके रजपूतोंके माथेपर कलंकका टीका लगाकर—देशके वैरी यवनोंकी ओर जाकर मिल गया। पीड़ा और शोकसे व्याकुल होकर महाराणा संग्रामसिंह संग्रामभूमिसे चले गये। जो राजपूत वीरगण स्वदेशप्रेमिकताके पवित्र मंत्रसे उत्साहित होकर अपनी सेनाके साथ उनकी सहायता करनेके लिये वहां आए थे, वे सबही स्वदेशानुरागी आत्मोत्सर्ग करनेवाले वीरोंका अकाट्य उदाहरण दिखलाकर अनन्त कालके लिये रणशय्यापर सो गये। डूंगरपुरके रावल उदयसिंह और उनके दोसौ चतुर सिपाही; सालुम्ब्राके राजा रत्नसिंह और उनके तीनसौ चन्द्रावत सिपाही, मारवाड़के सर्दार राजकुमार रायमल और उनके सरना सिपाही दो भाई वीर क्षेत्रसिंह और रत्नसिंह; सोनगड़ा सर्दार रामदासरावः झालापति आला, परमार वीर गोकुलदास, मेवाड़के चौहान मानकचंद व चंद्रभान और निम्नश्रेणीके बहुतसे राजपूत वीर तथा सामन्त और सर्दारगणोंने हृदय चीरकर इस भयंकर यवन समरमें अपने रुधिरको दान किया था। इनके अतिरिक्त दो मुसल्मान वीर भी महाराणा संग्राम सिंहकी सहायता करनेके लिये आकर रणभूमिमें गिर गये थे। इनमेंसे एक तो पदच्युत अभागे इब्राहीमलोदीका इकलौता पुत्र था—दूसरा, मिवातका स्वामी हुसेनखां था।

यह समस्त वीर अपनी २ सेनाके साथ रणभूमिमें विक्रम [illegible] करके अनन्त निद्रामें सोगये। इनकी [illegible] तलवारें और [illegible] विकराली [illegible] [illegible] [illegible]

थे। "परन्तु दुःखकी बातहै कि मेवाड़ राज्यने बहुत दिनोंतक इस गौरवको नहीं भोगा। कारण कि राणा संग्रामसिंहके साथही इस गौरवका अंत होगया था। यद्यपि संग्रामसिंहकी मृत्युके पीछे उस मेवाड़ी गौरवके दो चार चिह्न दिखाई दिये थे, परन्तु विशेष विचार करके देखनेसे ज्ञात हो जायगा कि वह चिह्न छिपते हुए सूर्य भगवानकी पिछली किरणमालाके समान थोड़ेही समयके लिये विराजमान हुएथे।

इन्द्रकी अमरावती नगरीकी समान जो इन्द्रप्रस्थ नगरी पाण्डवोंकी पवित्र लीलाभूमि थी, जहाँपर तुआर लोगोंने बहुत दिनोंतक अखण्ड प्रतापसे राज्य कियाथा। जो हिन्दूराज चक्रवर्ती चौहान पृथ्वीराजकी प्रथम और शेष साधन भूमि हुई थी;—वही नगरी विधाताकी कठोर लिखनसे, गजनी, गोरी, खिलजी और लोदी वंशके यवन भूपालोंके प्रचंड पदाघातको सहन करती आती है; वह इन्द्र-प्रस्थनगरी आज समयके हेर फेरसे छिन्न भिन्न हो गई है, आज उसके अगणित टुकड़े हो गएहैं और उन छोटे २ टुकड़ोंमें भी छोटे २ अनेक राज्य स्थापित हुए। उन समस्त राज्योंके शासन कर्त्ता प्रचण्ड निर्दयी और हिन्दुओंसे वैर-रखनेवाले थे। परन्तु उनमें कुछ बल विक्रम नहीं था, इस कारण मेवाडके राजालोग उनको कुछभी नहीं समझते थे। इस समय दिल्ली और काशीके बीचमें चार स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गएथे * परन्तु संग्रामसिंह इनको राजा नहीं मानते थे। जब मेवाडराज्यमें उपरोक्त घरेलू झगड़ा फैल रहाथा, तब गुजरात और मालवेके दोनों राजा विद्रोहियोंमें मिल गएथे. परन्तु मेवाड़की वह कोई हानि नहीं करसके और जिस समय वीरवर संग्रामसिंहने मेवाड़के वीर पुत्रोंको संग्रामभूमिमें भेजा था, तब वे दोनों बादशाह उन वीरोंके आगे नहीं खडे हो सके। राणा संग्रामसिंह उस समय भारतके चक्रवर्ती राजा समझे जाते थे। वरन मारवाड और अम्बरके × राजाओंने भेंट पूजा देकर उनके गौरव-को बढाया था। ग्वालियर. अजमेर. सीकरी. रायसिन, कालपी. चन्देरी, बून्दी. गागरोन. रामपुर और आबू आदि देशोंके "नव" उपाधिधारी राजालोग सामन्त राजा बनकर उनकी सेवा किया करते थे। वास्तवमें महाराणा

जीवनको हजार वार धिक्कार है ! प्रजावत्सल स्वदेशप्रेमी देवतुल्य राजाके प्राण नाश करनेके बदलेमें जो नराधम रानिको मोल लेनेकी इच्छा करे, वह जलती हुई अग्निशिखाका आलिंगन करके, मृगतृष्णासे मोहित होकर जलते हुए रेतपर शयन करे। उन दुष्ट पिशाचोंने—अनाहार और अनिद्रामें रहकर क्यों नहीं अगणित कष्टोंको सहन करलिया: ऐसा करना उनके लिये अच्छा था। नहीं तो इस अघपूर्ण पापको करके अपनी जन्मभूमिके माथेमें जो कलंक उन्होंने लगाया, उस कलंकको यदि सात समुद्रके जलसे भी धोया-जायगा तो भी वह नहीं छूटेगा।

बहुतसे विवाह करनाभी अत्यन्त बुरा है। इस कुप्रथासे संसारसे विशेष करके राजोंके यहां तो अत्यन्त अमंगल हो जाताहै। पुत्रवती होनेसे सब रानियोंकी इच्छा यही होतीहै कि हमारा पुत्र सिंहासनपर बैठे: इस इच्छाके पूर्ण करनेमें उनको हिताहितका ज्ञान नहीं रहता। राणा संग्रामसिंहके परलोकवासी होनेपर उनकी रानियें परस्पर कलह करने लगी। सबने अपने २ पुत्रको राजसिंहासनपर विठलानेकी चेष्टा की। एक रानी तो अपने पुत्रको सिंहासनपर बैठालनेके लिये यहांतक उत्कंठितहुई कि दूसरा कोई उपाय न देख कर बाबरसे मेल किया। उसका आशय यही था कि बाबर उचित उत्तराधिकारीको छोड़कर मेरे पुत्रको चितौरका सिंहासन दे दे। इस रानीने अपना मनोगत कार्य पूर्ण करनेके लिये बाबरको रनथम्भोरका किला और फतह कियेहुए माल्वराजका ताजभी नजरमें दे दिया।

उत्तरमें वीनाके* प्रान्तमें बहनेवाली पीलखाल, पूर्वमें सिन्धुनद दक्षिणमें मालवा और पश्चिममें मेवाडकी निबिड और दुर्गम शैलमाला थी। इस प्रकार मेवाड-देशका शासन दंड वीरवर राणा संग्रामसिंहके हाथमें था। इस प्रकारसे विशाल राजस्थानके बडेभाग मेवाडके सिंहासनपर विराजमान होकर स्वदेशीय और स्वजातीय राजाओंके पूजोपचार ग्रहण करतेहुए प्रतिष्ठाकी ऊंची सोपानपर पहुँच रहेथे, कि इतनेहीमें यवनवीर बाबरका भयंकर सिंहनाद भारतवर्षके पश्चिम द्वारपर सुनाई दिया। उस भयंकर शब्दको सुनतेही भारतवर्षकी पृथ्वी कंपायमान होगई। वीरवर बाबरके साथ जो अक्षु और जाक्षरतीस किनारेपर रहनेवाले भयंकर उजबक × और तातारीसेना लेकर हिन्दोस्थानमें न आता, यदि भारतके क्षीणजीवी नृपालगण उसके झंडेके तले इकट्ठे न होते तो न जाने आज भारतका शासन भार किसके हाथमें होता। हम कहसकतेहैं कि यदि देशद्रोही राजालोग उस यवनकी सहायता न करते तो भारतवर्षका राजमुकुट फिर हिन्दुओंकेही शिरपर रक्खा जाता। भारतकी विजय वैजयन्ती इन्द्रप्रस्थसे उतर कर चित्तौरके ऊंचे दुर्गपर फहराया करती। परन्तु अभागी भारतसन्तानके भाग्यमें यह सुख नहीं बदा था।

एशियाके मध्यप्रदेशमें रहनेवाले अनार्यलोग सदासे भारतवर्षके वैरीहैं। उन्होंने सदासेही इस देशकी अत्यन्त हानि की, जिसका प्रमाण भारतवर्षके इतिहासमें वर्त्तमानहै। इस वृत्तान्तसे एकबातका तो विश्वास होताहै कि भारतमें कभीभी भलीभांतिसे एकता नहीं हुई। परस्पर झगडा होनेके कारण इस देशमें बहुतसे छोटे २ राज्य होगये। अवसरपर इन लोगोंने परस्पर एक दूसरेकी सहायता कीहै; एकके राज्यको किसी विदेशीके आक्रमणसे रक्षा करनेके लिये कभी एक दूसरेने खड्ग धारण कियाहै, इस ऐक्यताके बलसेही विदेशीय राजालोगोंके सामने भारतवर्षके राजाओंने शिर नहीं झुकाया। सिकन्दरकी चढाईके समयभी उस एकप्राणताका प्रकाशमान उदाहरण देखा गयाहै। जब वह महावीर भारतमें

और बूंदीके हाडावंशीय राजा सूरजमलके साथ विवाहका संबन्ध ठहराया। शीघ्रही विवाह होगया। राजपूतवालाने लाजके मारे किसीसे अपने पहिले विवाहकी बात नहीं कही। इसही कारणसे किसीने इस विवाहको नहीं रोका। परन्तु थोडेही दिनमें यह विवाह एक महाअनर्थका कारण होगया। इस विवाहके वृत्तान्तको जानकर राणा मनमें अत्यन्त दुःखित हुए. सूरजमलके इस आचारणने उनके मनमें दारुण आघात पहुंचाया. उसका बदला लेनेके लिये राणा रत्नजी अधीर होगये. और अवसरकी बाट देखने लगे। सूरजमलने राणा रत्नजीका निकट सम्बन्ध था, राणाजीने उसकी बहिनके साथ विवाह कियाथाः तथापि इस अपमानका बदला लेनेके लिये उन्होंने संबन्ध बन्धनको काट डाला और दाव देखते रहे। परन्तु इस संकटमें अहेरिया (वासन्ती मृगया) उत्सवके आतेही राणाने वैर निकालनेका भला अवसर पाया। अपने सरदार और सामन्तोंको साथ लेकर शिकार खेलनेके लिये जंगलको चले। बूंदीके राजा सूरजमल्लभी इस समय उनके साथ थे। बूंदीके हाडालोग मेवाडकी पूर्वी पार्श्वकी पहाडियोंके भीतर रहते थे। यद्यपि प्रगटमें उनका राज्य मेवाडके अन्तर्भुक्त नहीं था परन्तु वे लोग राणाओंकी प्रजा करते थे। युद्धस्थलमें राजचिह्न धारण करते और मेवाडके लिये प्राणपणसे युद्ध करते थे। जिस दिन यवनवीर शहाबुद्दीनके प्रचंड आक्रमणको रोकनेके लिये आर्यवीर समरसिंहने पवित्र दृषद्वतीके किनारेपर अपने प्राणोंको दिया, उसीदिन हाडावंशीय युद्धविशारद हमीरने भी मारनभूमिके ऊपर अपने प्राणोंको न्योछावर करदिया था। यह हमीर सूरजमल्लकाही पितृपुरुष था। उसही समयसे हमीरके वंशवाले गिल्होटकुलके विशेष अनुगत हुए। परन्तु राणा रत्नजीकी कुबुद्धिसे बूंदीर और मेवाडका जो वैरभाव हुआ उससे दोनों राज्योंकी मित्रताका बन्धन कुछ दिनके लिये ढीला पडगया था।

शिकार खेलनेको जाकर राणा रत्नजी एक गंभीर वनमें पहुंचे, उनके साथी पीछे रहगये थे। केवल सूरजमल्ल साथ था। अवसर समझकर राणाने सूरजमल्लके तलवार मारी। किंतु वह चोट लगके गिरा, परन्तु मरा नहीं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। तब सूरजमल्लने [illegible] और क्रोधसे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] :—[illegible]—[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], परन्तु [illegible] [illegible] [illegible]

और प्राचीन पुरुषोंका नाम इतिहाससे एकबारही उठ गयाहै, परन्तु संसारके एक छोरमें-सभ्यताके आदिभवनमें-भागीरथीके पवित्र जलसे धुले हुए इस पवित्र भारतवर्षमें कुछ औरही बात देखी जातीहै। भारतवर्षने विजातीय और विधर्मियोंके जितने चरण प्रहार सहेहैं, उतने और किसी देशने नहीं सहे होंगे। तथापि भारतका सनातनधर्म और भारतकी राजनीति आजतक प्राचीन भावसे विराजमान होरहीहै। यही कारणहै जो भारतके सपूत राजपूत वीरगण अगणित कष्टोंको सहन करतेहुए-कठोर दासपनके द्वारा पीडित होकर आजतक अपने सनातनधर्मको पूर्वभावसेही धारण किये हुए हैं-उन्होंने अपने प्राचीन आचार विचारको अबतक जलांजलि नहीं दीहै। जिस समय महावीर सिकन्दर भारतवर्षपर चढकर आयाथा, उस समयको आज दो हजार वर्षसे अधिक बीतगये. भारतवर्षके मध्य उस समय जो धर्म विराजमान था, जो रीति नीतिथी, जो आचार विचारथे; आजतक वह धर्म, वह रीति, नीति, वह आचार विचार उसही भावसे चले जातेहैं, इस बातकी मीमांसा विज्ञान करलेगा कि उनकी यह नीति रक्षण शीलहै या नहीं: हमारा तो केवल इतनाही कहना है कि जिस उदार जातिके हाथमें इस शोचनीय भारतकी सन्तानका भाग्यचक्र है, उसको चाहिये कि हितकारी विधिके अनुसार भारतवासियोंको प्रतिपालित करे, कारण कि दूरपर बसे हुए सात समुद्रके पारवाले इस देशकी चिताभस्ममें एक इसप्रकारकी तेजवान छोटीसी चिनगारी है,* कि जो किसी समय प्रज्वलित होकर उनके मंगलामंगलका साधन करसकतीहै। अस्तु।

भविष्यपुराणमे भारतकी कठोर भाग्यलिपिका वर्णन इस प्रकारसे है कि "सूर्य और चंद्रवंशके प्राचीन वैरी तक्षक लोग. तथा यवन व और दूसरे अनार्य विदेशीय लोग भारतवर्षके राजा होंगे" शाकद्वीपके अक्षु और जक्सरतीस नदीके किनारोंपर वसनेवाले पौराणिक तक्षक लोगोंके वंशवाले बाबरने आज इस भविष्यद्वाणीको पूर्ण किया उन दिनोंमें यह फरगना राज्य [illegible] का शासन करता था। उनका राज्य जक्सरतीस नदीके दोनों किनारोंपर था। यह अति-पवित्र स्थानहै, वहांपर जिन लोगोंकी नैसर्गिकतासे [illegible] बडे २ महावीरोंने जन्म लिया था। भारतके इन पश्चिमोत्तर एक समय

---

* [illegible]

अपनी थकावट दूर किया करते हैं केवल उनही समय उनको पैदल सेनासे काम लेना पडताहै, इसके अतिरिक्त और किसी समय वह उनका आदर सत्कार नहीं करते। मुसलमानलोग पहिलेसेही पैदलोंकी सेना रखते थे, परन्तु संग्रामके बीचमें जबसे वह तोपें चलाने लगे उस समयसे पैदल सेनाका आदर विशेषतासे बढगया। उसही समयसे वह घोड़सवारोंकी सेनाको तुच्छ समझने लगे कारण कि पैदल सेनाही संग्रामभूमिमें तोपोंका व्यवहार सुभीतेसे करसकती है। परन्तु राजपूत लोगोंने अपनी पुरानी रीतिको नहीं छोडा। प्राचीन समयसेही वह घोड़ा, खड्ग और भालेको प्राणसे भी अधिक समझते थे. जिसको धर्मयुद्धकी प्रधान सामग्री समझते थे. आजतकभी घोडे, खड्ग और भालेका वह उतनाही आदर करते हैं। नई सभ्यता और नई रोशनीके जमानेमें जो तरह २ के अस्त्र शस्त्र और चालाकीसे युद्ध करनेकी सामग्री बरतीहै: बाहुबलपर भरोसा रखनेवाले राजपूतलोग इनसे घृणा करते हैं उनका विश्वास है कि तोप इत्यादिके व्यवहारसे बाहुबलका कुछभी परिचय नहीं पाया जाता। इस प्रकारके अस्त्र शस्त्रकी सहायतासे जो विजय प्राप्त हो: उसको वह विजयके नामसेही नहीं पुकारते।

अपमानित सरदारोंके हृदयमें धीरे २ डाहकी आग जल उठी। राणाकी सारी प्रीति और ममता उनके हृदयसे जाती रही। परन्तु इतनेपरभी विक्रमाजितके नेत्र नहीं खुले। उन्होंने अपनी विपत्तिका कुछभी विचार नहीं किया। राणाके आलस्य और दुष्टपनसे राज्यमें घोर अराजकता छा गई। पहाड़ोंके रहनेवाले असभ्यलोग पहरेदारोंसे किंचितभी न डरकर चित्तौरकी दुर्गप्राचीरके सामनेसेही बलपूर्वक गोमेषादिको छीनकर ले जाते थे। प्रजाको अपने धन और मानकी रक्षाका करना कठिन होगया। सबही प्रजा अत्यन्त पीडित होकर आर्त्त वाणीसे कहने लगी। कि "फिर पठानोंका राज्य आगया।" राणाने अपने सरदारोंको बुलाकर असभ्य पहाडियोंको दमन करनेके लिये कहा, तब समस्त सरदारगण एक साथ बोले कि "भगवन्! आपके नायक [illegible] [illegible]।"

विपत्ति कालमें वहुधा वावरकी जीतही हुआ करती थी। वावरने एकवार दुश्मनोंकी ओरके पांच पहलवानोंको एकसाथही मारडाला था। परन्तु इन कार्योंका कोई फल न हुआ। जैसे २ समय व्यतीत होता गया, वैसे उनके शत्रु भयंकर होते गये। तव वादशाहने रक्षाका कोई उपाय देखकर फरगनानामक स्थानको छोड दिया और हिन्दूकुशकी शैलमालाके पार होकर सन् १५१९ ई० में सिन्धुनदके पूर्व पार आनकर उतरा। पीछे कावुल और पंजावके वीचमें ज्यों त्यों करके उसने सातवर्ष काटे और अपनी उन्नतिका उपाय करने लगा। उद्योगी और साहसी पुरुष हाजरों कष्ट सहनकरके भी सौभाग्यलक्ष्मीको प्राप्त करही लेता है। वह वादशाह—जो कि एक वडे राज्यका अधिकारी था;—जिसकी आज्ञाको सुनकर हजारों आदमी जानदेनेको तइयार होजाते थे-आज निर्वासित पीडित तथा दुःखी होकर देशविदेशमें मारा फिरताहै—कोई वातभी नहीं पूछता—तथापि एक पलभरके लियेभी उसका साहस नहीं गया-न वह अपने मूलमंत्रको भूला और धीरे २ दिल्लीके वादशाह इब्राहीम लोधीके सामने गया; सौभाग्यलक्ष्मीने प्रसन्न होकर वावरके शिरपर विजयमुकुट पहिराया और उसकी गोदमें शयन किया। संग्राममें इब्राहीम मारागया; सेना भाग गई, तव दिल्ली और आगरेके नगरवासियोंने दुर्गका फाटक खोलकर विजयी वावरका आदर सत्कार किया। करुणानिधान भगवानके इस अनुग्रहसे वावर आश्चर्य करनेलगा. और कृतज्ञतापूर्णभक्तियुक्त हृदयसे कहने लगा कि "हे जगदीश्वर! यह मेरी जय नहीं—वरन आपहीकी जयहै—आपकी अपार करुणाकी जयहै।"

दिल्ली विजय करनेके एकवर्ष पीछेही वावरने अपनी विजयिनी सेनाको महाराणा संग्रामसिंहसे लडनेके लिये भेजा। अवकी वार [illegible] वावरका सामना है। आजतक जिन वीरोंके ऊपर उसने अपने खड्गको अजमायाथा. महाराणा संग्रामसिंहके आगे वह अतितुच्छ थे। वहलोग वीरनामके योग्य नहीं [illegible]। वावर स्वयं जैसा वीरथा. वैसेही उसकी सेनाभी थी। "[illegible]" ([illegible]), [illegible] विक्रमशाली तातारवाले वीरगण संग्राममें उसकी सहायता करनेको [illegible]; आर्यवीर संग्रामसिंहके भयंकर विक्रमके प्रभावसे उनके [illegible] थे। वावरका आशा भरोसा जाता रहाथा: उसकी सेना [illegible] वावर वारवार उसकाता और उत्साह दिलाता तवही [illegible] था। [illegible]

[illegible]

[illegible]

स्नगरकी रक्षा करनेके लिये प्रसन्न होकर अपने हृदयका रुधिर दान करने आया था। इसकी भांतिसे बूंदीका राजकुमार भी अतिनजस्वी ५०० सौ हाडा वीरोंको लेकर और शोनगडे, देवर व अन्यान्य राजपूत वीरगण मेवाड़की रक्षा करनेके लिये खड्ग धारण करके आये।

मध्यभारतके मुसलमान बादशाहोंने जितनी बार चित्तौरपुरीपर चढाई की यह चढ़ाई उन सब चढ़ाइयोंमें भयंकर थी। इस भयंकर चढाईमें एक चतुर यूरूपियन गोलन्दाज भी बहादुरकी सहायता करनेके लिये समरभूमिमें आया था– भट्टलोगोंने इस गोलन्दाजको "फिरंगानका लाबीखां" कहकर पुकारा है। इस × लाबीखांकी ही सहायतासे बहादुरने चित्तौरको विध्वंस करके अपने पुराने वैरका बदला लिया था।

ऊंचास्थानमें राणा विक्रमाजितको परास्त करके विजयी बहादुर उस सेनाको साथ लिये हुए चित्तौरपर जा पहुंचा। आज चित्तौरपर घोर संकट आपड़ाहै, इस संकटसे कौन चित्तौरपुरीकी रक्षा करेगा? आज कौन शिशोदिया कुलके गौरवको उद्धार करेगा? थोडेसे जिन राजपूतोंने स्वदेशप्रेमके मंत्रसे व्रती होकर अस्त्र धारण कियाहै, बहादुरकी अनीकिनीसे अगर उनकी बराबरी कीजाय तो वह लोग कुछभी न थेः—अनन्त समुद्रके लिये मानो पानीके कुछ बबूले थे। तथापि भग-

था, और समयपर सूझतीभी बहुत दूरकीथी। आज विपत्तिसे उद्धार पानेके लिये उसही सहनशीलताका सहारा लेकर उपाय सोच लिया। बावरने अपने डेरोंके चारोंओर बडे २ बांध बँधवादिये और उन बांधोंपर अपनी तोपोंको क्रमानुसार लगा दिया। परन्तु इस उपायकाभी कोई फल न मिला।उसने जिस ओरको आंख उठाई, उसही ओरसे विपतिकी भयंकर मूर्ति नजर आई। उसही ओरसे वीरकेशरी संग्रामसिंहकी विकट भ्रुकुटि उसको दिखाई देने लगी। उसही समय एक तातारी ज्योतिषीने ज्योतिषके अनुसार प्रश्न लगाकर कहा कि "जब कि मंगल ग्रह पश्चिममेंहै, तब तो जो लोग उसकी विपरीत दिशासे आनकर युद्ध करेंगे, वही पराजित होजायँगे।" कदाचित ज्योतिषीका प्रश्न ठीकहीहो,कदाचित तातारवालोंका जडमूलसे नाश होजाय। बावरको महाचिन्ता हुई। वह जितना२ज्योतिषीके होनहार वचनका विचार करता था, उतना२ही उसको दुःख होता जाता था। कहां तो फरगनाराज्य–कहां दिल्लीका सिंहासन कहां–उसकी मनमोहिनी आशाकी सरलमूर्ति? क्या वह आशा इससमय बावरका साथ न देगी? उसका इतना यत्न इतना उद्यम और परिश्रम यह सब निष्फलही होजायगा। बावर किसी प्रकारसेभी वीरवर संग्रामसिंहके प्रचंड बलको न रोक सका,सेनाको किसी प्रकार धीरज न बँधा सका।मनही मन अत्यन्त कष्ट हुआ।इसप्रकार चिन्ता करते १९ दिन बीत गये,कोई उपाय न सूझा।उसकाल बावरने मानवी शक्तिके तुच्छ आश्रयको छोडकर ईश्वरके ऊपर भरोसा किया और अपने पापोंका प्रायश्चित्त करनेके लिये भगवानसे प्रार्थना करने लगा, बावरने अपने प्रायश्चित्तका निम्नांकित वृत्तान्त अपने जीवन चरित्रमें भलीभांतिसे लिखाहै।

प्रायश्चित्त होजानेपर बावरने समझा कि मेरा मनोरथ पूर्ण होनेमें अब कोई सन्देह नहीं, परन्तु बात उलटी हुई। उसने जो यह प्रतिज्ञा करके कि "अब शराब न पीऊंगा।" शराबके प्याले और बोतलोंको जमीनपर पटक-दियाथा; इस कार्यके करनेसे उसकी सेनाका [illegible] उत्साह [illegible] जाता रहा:—वीरोंने संग्रामसे किसी भांतिसे नहीं [illegible]। तब [illegible] कोही धर्मभाव (जिहाद) ने उत्साहित करनेकी चेष्टा की, यद्यपि उसका हृदय निराशाके घोर अंधकारसे ढकाहुआ था, तथापि पुरुषोचित साहस और उत्साह

तक अद्भुत विक्रम दिखाकर राजपूत वीरगण उन छिद्रोंके निकटही गिरगए। रणमत्त-तवाले यवनलोग सिंहनाद करने लगे और बडी शीघ्रतासे उस छिद्र मार्गके निकट आए: अकस्मात् सबही ठटक गए, सब यवनसेना इस प्रकारसे खडी होगई कि जैसे सर्पगण मंत्रसे बँधकर चुपचाप रह जाते हैं। उन्होंने देखा कि केश बखेरे, भीम रूप धारण किये, वीर वेष बनाये एक स्त्री रणतुरंगपर चढी हुई हाथमें भयंकर भाला लिये, उस छिद्रके पीछे खडी है।—यह स्त्री और कोई नहीं है:—राठौर कुलमें उत्पन्न हुई शिशोदीय महारानी जवाहरबाई यहांपर खडीहैं! वीरनारी जवाहरबाई रणचंडीका वेष धारण करके उस छिद्रमार्गको रोककर खडी रही! मुसलमानोंको आगे बढताहुआ देखकर महारानी झपटकर उनके आगे आई। वीरांगनाके भालेसे बहुतसे यवनोंका संहार होगया। परन्तु यह सब वृथाही है, उफनते हुए समुद्रकी समान यवनगण एकसाथ महारानीके ऊपर आटूटे। तथापि वीरबालाका उत्साह न गया, और अपूर्व वीरता दिखाकर मुसलमानोंसे युद्ध करने लगी। आज वीर नारी अकेलीहै—कितने एक राजपूत वीरोंको साथ लियेहुए—अगणित यवनोंसे संग्राम कर रहीहै, बहादुर हाथीपर बैठा हुआ दूरसे इस कौतुकको विस्मित होकर देख रहा था। वीरबालाका अद्भुत रणरंग देखकर वीरताका अभिमान करनेवाले यवन वीर अकचका कर रह गये! क्या शक्तिरूपा महादेवीजी आज दैत्योंका संहार कर रही है! परन्तु समुद्रके बीचमें तिनकेका क्या सहारा हो सकताहै? अन्तमें चित्तौरकी रक्षाका कोई उपाय न देख कर वीरनारी जवाहरबाई ताडित वेगसे अपने घोडेको चलाकर यवन सेनाके बीचमें घुस गई और संसारमें वीरनारीका अपूर्व उदाहरण और प्राण निछावर करनेका असाधारण प्रमाण रखकर शत्रुओंके बीचमेंही अपने शरीरको त्यागदिया।

—ग्वालियर देखने गयाथा, तब मैंने देखा कि वह सतून बनकर तयार होगयाहै, कुछदिन पहले मैने यह प्रतिज्ञा की थी यदि राणा सग्रामसिंहकी लडाईमे विजय प्राप्त करूंगा, तो मुसल्मानो परसे स्टाम्पकर उठादूंगा. जब मैं प्रायश्चित्त करने लगा तब मुहम्मद सर्वन और शेख जिनने मुझे इस बातकी सुध दिवाई, मैने इसपर उन लोगोको धन्यवाद दिया. मेरे राज्यमे जितने मुसलमानहै उन से स्टैम्पकर न लूंगा. यह कहकर अपने कार्य्याध्यक्षको बुलाया और आज्ञादी कि यह फरमान सर्वत्र पहुचाया जाय।

इससे पहले मैं कहचुकाहूं कि ऊपर लिखी घटनाके हेतुसे उच्च नीच सभी भयसे उत्साहहीन होगयेथे, किसीके मुखसेभी पुरुषार्थभरी साहसकी बात नही निकलती थी, कोई थोडाभी उत्साह वा उत्तेजना नही दिखाता था, जिन मन्त्रियोंका प्रधानकर्तव्य उत्तम सम्मति देनाहै, वे मन्त्रीगण और जिन अमीरोंके लिये बडीबडी जागीरें नियतथी वे ऐसे हीन होगये कि, उनमे कुछभी साहस दृढता वा पुरुषार्थका लेशभी नही पाया जाताथा, परन्तु खलीफानामक एक पुरुषने आदिसे अन्ततक सब बातोका ठीक प्रबन्ध करनेके लिये अविश्रान्त परिश्रम और उद्योग किया, यद्यपि वह सर्वथा कृतकार्य न होसका, तोभी उसका उद्योग और परिश्रम प्रशंसनीय है, अन्तमे सबको निराश देख चित्त स्थिरकर मैं सोचने लगा, और उमराव तथा सेनाके लोगोंको बुलाकर कहा, माननीय सज्जन सेनिको ! जो भी इस संसारमे आयाहै, उसे मृत्युके आगे शिर झुकाना पडाहै जब हम इस असार ससारसे चले जांयगे, और जीवजन्तु कोई न रहेगे तब परमेश्वरके सिवाय उस प्रलयसे बचानेवाला कोई न होगा.

समय किसीके मुँह देखनेकी आवश्यकता नहीं है—अब किसीके लिये आँसू नहीं बहाने पड़ेंगे. जिनके लिये हृदय रोता: जो यत्नका धन थी—व्यथाकी सामग्री थी वह प्रीतिदायिनी आनन्दमयी कन्या, बहन, और स्त्रियें आज अनलमें प्रवेश कर चुकी हैं। शिशु राजकुमार उदयसिंह भी संकटके रक्षित होगया। फिर अब और किसका डर है—और किसका सोच विचार है! चित्तौरके वीरगण रण-मतवाले होकर वारंवार सिंहनाद करने लगे। श्रवण भैरव स्वरसे वसुधाको कम्पायमान करते हुए राजपूतोंके रणडमाम फिर बज उठे! हाथमें नंगी तलवार लिये रणोन्मत्त बाघजी किलेका द्वार खोलकर चित्तौरके बचे-हुए वीरोंके साथ झपटकर यवन वाहिनीके बीचमें प्रवेश करगया। इन लोगोंके भयंकर खड्गप्रहारसे अनेक यवनलोग कालकवलित हुए, परन्तु क्या होता है। वह थोड़ेसे राजपूत वीर इस प्रकारसे वहां लीन होगये कि जैसे समुद्रमें २।४ पानीके बबूले विला जाते हैं।

मुगल और मेवाडराज्यकी सीमा समझी जायगी। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्षमें कुछ करभी बाबर महाराणाको दिया करेगा। बाबरके जीवन चरित्रमें यह वृत्तान्त नहीं पाया जाता परन्तु भट्टग्रंथोंमें इसका विस्तारित विवरण है। दुःखकी बात है कि यह सन्धि अस्वीकृत हुई। एक स्वदेशद्रोही जालवैरी और विश्वास-घाती राजपूतने इस सन्धिको नहीं होने दिया। इस क्रूर राजपूतका नाम तुवर शिलादित्य था।

बाबरने संन्धि करना चाहा था परन्तु सन्धि न हुई। इसकारणसे दोनों दल संग्रामके लिये तइयार होगये। १६ मार्चको युद्धकी घोषणा प्रचार करके राजपूतोंकी सेनाने मोरचे लगाय अत्यन्त प्रचंडतासे तातारियोंकी सेनापर दाक्षिण ओरसे चढाई की। बहुत देरतक दोनों दलोंमें घोर संग्राम होता रहा। घोडोंके हिन हिनाने, हाथियोंके चिंघाडने और प्रचण्ड वीरोंकी भयंकर सिंहनादसे संग्राम भूमि बारंबार कम्पायमान होने लगी। बीच २ में तोपोंका भयंकर गर्जनभी बारंबार कानोंके परदोंको डांवाडोल करने लगा। तोपोंसे इतना धुंआ निकला कि संग्रामस्थलमें अंधकार होगया। उस अन्धकार राशिको फाडते हुए, अग्निमय गोले वज्रकी समान ताडित वेगसे राजपूत सेनाकी ओरको दौडने लगे। उन भयंकर गोलोंके प्रहारसे शतशः राजपूत वीर गण न जाने किधरको विलाय गये। तथापि राणा संग्रामसिंह अचल अटल रहे। यद्यपि यवन लोगोंके गोलोंकी मारसे बहुतसे सवार मारे गये, तथापि राणाजी अत्यन्त उत्साहके साथ शत्रुदलके व्यूहको फाडनेके लिये भीम विक्रमसे आगे बढ़ने लगे। क्रमानुसार महाभयंकर संग्राम होने लगा। महाराणाजीने, राजपूत कुल कलंक शिलादित्यका विश्वास करके उसको सब सेनाके सन्मुख भागकी रक्षाकरनेको नियत किया था। उनको अचल विश्वास था कि शिलादित्य प्राणपणसे युद्ध करके यवन लोगोंको पराजित करेगा। विशेष करके यह शिलादित्य उस समय इसप्रकारकी वीरता और प्रचंड विक्रमके साथ तातारियोंपर झपट रहा था कि राणाका विश्वास औरभी प्रबल हुआ। परन्तु फिर सब परिश्रम निष्फल हुआ। वह दुराचारी शिलादित्य धीरे २ आगे बढ़कर बाबरकी सेनामें जा मिला! तातारीलोग श्रवण भैरव शोर मचाकर सिंहनाद करने लगे! प्रलयकालीन जलदोंकी समान मुसलमानोंकी तोपें गगनभेदी शब्द करके फिर एकबार गर्ज उठीं समरभूमिमें फिर घोर अंधकार छा गया! राणा संग्रामसिंहका हृदय अचानक कम्पायमान होने लगा। क्रमानुसार धुएंके दूर होनेपर महाराणाजीने विस्मय और

औरंगजेब भी * इस पवित्र बन्धनमें बंधकर अपनेको कृतार्थ समझते थे । कभी २ राजपूतोंकी कुमारी लडकियांभी राखी भेजा करती हैं । परन्तु विशेष संकट अथवा अत्यन्त प्रयोजनके समयही वह ऐसा करतीहैं । नियत हुए मनुष्यके पास राखी भेजनेके समय राजपूत ललनागण उसको धर्मभ्राताके नामसे पुकारा करती हैं । इस उपाधीके साथ राखीको पानेही धर्मभ्राता अपनी धर्मबहनके मंगल साधन करनेके लिये अपने प्राणतक भी दे देता है, और अवसर आपडनेपर बराबर अपनी प्रतिज्ञाको पूरा करताहै । परन्तु इस वीर व्यवहारमें भी एक बात विचित्र है । चाहे धर्मभ्राता अपनी धर्मबहिनके लिये अपने प्राणतकको दाव लगादें, परन्तु कभी उस ललनाके लावण्यमय मुखकी प्रसन्न मुसकानको नहीं देखने पाते. कारण कि जिसके लिये वह अपने सुखको जलांजलि देकर प्राणतकको दे डालते हैं, उस राजपूत बालासे कभी उनका सम्बन्ध साक्षात् नहीं होता ; तथापि इस पवित्र भ्रातृ बन्धनमें एक ऐसी मायामयी शक्ति है कि उसके प्रभावसे वीरगण मोहित होकर अपने इतने नीचे इस सम्बन्धकी चाहना किया करते हैं । जो राखीबन्धन इतनी पवित्र सामर्थी है, जिसको पानेके लिये राजा महाराजा लोगभी लालायित रहते हैं; उसके बनानेका कोई विशेष नियम नहीं है; सबही अपने २ वित्तके अनुसार उसको बना लेते हैं । कोई रत्न, कोई २ सुवर्णका हार और कोई रत्नाभरण रेशमकी राखियें बनाकर अपने धर्मभ्राताको अर्पण किया करती हैं । राखीको प्राप्त करनेसे वीर-गण उसके बदलेमें पशमीना, साटन अथवा मुक्ताकी अंगिया एक २ , चादर भेजा करते हैं, और कभी २ इस चादरके साथ एक २ जनाद भी भेजते रहते हैं । बादशाह हुमायूंने महारानी कर्णवतीकी राखी पाकर अपनेको कृतार्थ समझा

मस्तक उस पीलूके किनारे धूरिमें लोटता या नहीं? परन्तु भविष्यपुराणके कठोरभावी लिखनको कौन खंडन कर सकताहै? नहीं तो राजपूत होकर–पवित्र तुवरकुलमें जन्म लेकर ऐसा कौन है जो दुराचारी शिलादित्यकी समान अपने देशका सत्यानाश करसकताहै? रणभूमिमें गिरेहुए राजपूतोंके कटेहुए मस्तक एकत्र करके विजयी बाबरने संग्रामस्थलमें बडे२ कई एक पजाये बनाये और उनकी खोपडियोंसे पर्वतके शिखरपर जो कि संग्रामभूमिके सामने ही विराजमान था–एक अटारी बनाई। कपटाचारी नारकी, राजपूत कुलकलंककी विश्वासघातकताका प्रदीप्त विजयस्तम्भ राजपूतोंके मस्तकोंसे बनाया गया। बाबरने विजय पाय प्रमुदित हो अपनी जयका प्रचार करनेवाली "गाजी" नामक उपाधि धारण की। इसके वंशवालोंने भी बराबर इस उपाधिको धारण किया था।

महाराणा संग्रामसिंह दारुण मानसिक पीड़ासे पीड़ित होकर मेवाड़की शैलमालाकी ओर बढ़े। उनके हृदयमें कष्टदायिनी चिन्ताका आविर्भाव होरहा था। वह कर्त्तव्याकर्त्तव्यको कुछभी न विचार सके। परन्तु चित्तौरमें न आये। उन्होंन प्रतिज्ञा की थी कि "जो युद्धमें मुसलमानोंका गर्व खर्व न करसकूं तो युद्धक्षेत्रही मेरा वासस्थान है, और आकाशमंडलही मेरा चंदोवा (शामियाना) होगा" एक पलभरके लिये भी वह इस प्रतिज्ञाको न भूले। आज इस प्रतिज्ञाके पालन करनेका समय आगयाहै, इसही कारणसे राणाने चित्तौरकी ओरको न बढ़कर वनवासका कठोर व्रत अवलम्बन किया। यदि शिशोदीयकुलके नष्ट गौरवका उद्धार न हुआ तो इस वनवासमेंही जीवन समाप्त होगा।

यदि महाराणा संग्रामसिंह कुछ दिनतक जीवित रहते तो उनकी यह प्रतिज्ञा निश्चयही पूर्ण होती। परन्तु होनहारके कठोर लेखके अनुसार उनका पवित्र जीवन, उस पराजयके वर्षमेंही इस संसारको छोड गया। मेवाडका गौरवरवि दसवानामक स्थानके बीच अकालमेंही अस्त होगया। बहुत लोगोंका अनुमान है कि मंत्रियोंनेही विष देकर राणाजीको मार डाला था। इस अनुमानके सत्य होनेमें सन्देह है। परन्तु इसका विचार करनेमें भी हृदयके टूक टूक हुए जातेहैं। कहतेहैं कि दुराचारी मंत्रियोंने शान्ति और स्वच्छन्दताके प्राप्त करने-की आशासेही यह पैशाचिक कार्य कियाथा। यदि दुराचारियोंके कुअभिप्राय साधन करनेका केवल एक यही कारण हो. अगर इस [illegible] करनेमें उन्होंने राजहत्यारूप घोर पापका अनुष्ठान किया हो; तो उन मंत्रियोंको उनकी स्वच्छन्दताको और उनकी [illegible]

जीने क्रोधसहित चिल्लाकर कहा "भ्रातृगण ! अबतक तो हमलोग फूलकी गंध सूंघते रहे, परन्तु इस समय उसके फलको चाखेंगे।" तब दलित और अपमानित करमसिंहने क्रोधमें भरकर कहा "कलही उस फलका स्वाद मालूम हो जायगा।" तत्काल समस्त सरदारलोग दरबारमेंसे उठकर चले गये।

राजपूतगण राजाको अपना आराध्य देवता समझतेहैं, राजाको पवित्र मानके पूजनेकी आज्ञा उनके धर्मग्रंथोंमें भी लिखी है; इस आज्ञाका उल्लंघन करनेसे उनका लोक परलोक बिगड़ता है ! परन्तु इस आज्ञाकी भी सीमाहै, प्रयोजन आपडनेसे इसका भी निरादर हो जाताहै। राजा दुराचारी हो, अथवा उसके द्वारा रजाका कोई महान् अनिष्ट होता तो फिर वह देवताकी समान नहीं समझा-जाता। तब प्रजागण उसको साधारण मनुष्य समझकर राज्यके मंगलार्थ सिंहा-सनपरसे भी उतार देते हैं, राजपूतोंके विधान ग्रंथमें ऐसे अनेक उदाहरण पाये-जातेहैं। परन्तु कभीही ऐसी घटना होतीहै ऐसा कभी दैवात् ही होजाताहै कि राजपूत नृपति प्रजापर अत्याचार करे। कारण कि राजाके साथ प्रजाका ऐसा दृढ़ प्रेम बन्धन होताहै, कि राजा उस बन्धनको तोडकर प्रजापर अत्याचार नहीं कर सकता। जिन अगणित नर नारियोंके भाग्यही और उसीके हाथमें होतेहैं, जो राजाको पिता और देवताकी समान समझकर भक्ति करतेहैं, फिर वह राजा छातीपर पत्थर रखकर कैसे उनको सतावेगा ?

बावरने भी उनकी प्रशंसा कीहै। बाबर राणाजीमें भक्ति करता और उनसे डरताभी था। इसही कारणसे उसको महाराणाके साथ दूसरीवार युद्ध करनेका साहस नहीं हुआ। यद्यपि बाबरने संग्रामसिंहको 'बुतपरस्तान' और लडाईको अपने जीवन चरित्रमें "जहाद" लिखा है, परन्तु मेवाडका वर्णन करनेके समय वह कहताहै कि "राणा सांगाने अपने असीम विक्रम और तलवारके जोरसेही सन्मान और प्रतिष्ठाको पाया।" इस लेखसे ज्ञात होगया कि बाबर भली भांतिसे महाराणा संग्रामसिंहके गुणोंको जानताथा। दुःखकी बातहै राणाने अधिक दिनका जीवन नहीं पाया। राणाके मरनेसे प्रजाको अत्यन्त शोक हुआ। प्रजाने अपने हृदयकी भक्ति और कृतज्ञताका चिह्न अटल रखनेके लिये उनकी चिता—वेदीके ऊपर एक मन्दिर बनवाया। महाराणा संग्रामसिंहजीके सात पुत्रथे। उनमेंसे सबसे बडा और छोटा तो बालक पनमें ही मृतक हुआ इस कारणसे तीसरे राजकुमार रत्नसिंहको पिताका सिंहासन मिला।

संवत् १५८६ (सन् १५३० ई०) में राणा रत्नसिंह चित्तौरके सिंहासनपर बैठे। धीरता, वीरता आदि गुणोंमें रत्नसिंहभी अपने पीताकीही समानथे। पिताकी समान उन्होंने भी प्रतिज्ञा की थी कि राजधानीको छोडकर बराबर युद्धक्षेत्रमेंही रहेंगे। चित्तौरके सिंहद्वारको दिन रात खुले रहनेकी आज्ञा देकर वह दर्पके साथ कहा करते थे कि एक ओर तो दिल्ली और दूसरी ओरसे माण्डू चित्तौरका द्वार हैं। यदि राणा रत्नभी वीर केसरी सांगाकी समान कार्य करते, यदि वह यौवनोचित प्रगल्भता और तेजस्विताके वश न हो जाते तो वह अपनी प्रतिज्ञाको निश्चय ही पूर्ण करते, फिर तो बाबरके वंशधरगण किसी प्रकारसे हिन्दोस्थानके चक्रवर्ती बादशाह न होते। परन्तु अभाग्यवश युवा अवस्थाके प्रारंभमेंही महाराणाने इस लोकसे पयान किया। राजपूतोंके युवा अवस्थाका समय अत्यन्तही भयानक होता है। इस समयमें यह लोग अनर्थक लड़ाई झगड़ेमें मनवाले होकर अपनी जिन्दगीको ववाले जान कर देते थे। ऐसे लड़ाई झगडोंमें अत्यन्त हानि होती थी. इन भयंकर झगडोंके कारणसे बहुतसे राजा अकालमेंही इस लोकसे विदा होगये। दुःखकी वात है कि महाराणा रत्नका प्राणभी इसही कारणसे गयाथा।

राणा रत्नजीने छिपे २ अम्बरके राजा पृथ्वीराजकी बेटीसे विवाह कियाथा। यहांतक कि महाराज पृथ्वीराजको भी यह समाचार विदित नहीं था। इसही कारणसे राजकुमारीके सयानी होनेपर वह उसके विवाहकी तयारीमें करने लगे;

सरदार लोगोंके अनुरोधको माननेमें अपनी सम्मति नहीं दीथी; विक्रमजितको उतारकर जिस सिंहासनको अपने अधिकारमें करलेना उसने घोर पापकर्म समझा था; आज केवल कइएक घंटेनकेही सिंहासनपर बैठकर उसके हृदयका संपूर्ण भाव एक साथ बदल गया। वह राज्यसामर्थ्यको ही सब सुखोंसे उत्तम समझने लगा। प्रथमबार राजवेष धारण करनेके समय उसने मनही मनमें बहुतेरी इधर उधर कीथी. विक्रमाजितके लिये कितनाही दुःख और खेद प्रकाशित किया था. परन्तु न जाने इस समय उसका वह सुकुमार भाव कहां गया? भगवान् एकलिंगकी पूजाको मानकर वह बारम्बार इस समय कहा करता "हे भगवन! आपहीकी करुणाके वशसे आज मैंने मेवाडका सिंहासन पाया है, हे महादेव! कहीं इससे वंचित मत करना।" राज्यकी मोहिनी मायाके फंदेमें फसकर वनवीर इतना भ्रान्त होगया कि उसने एकबार भी इस बातका विचार न किया कि यह मैं किसके राज्यको भोग करने चलाहूं? यद्यपि सरदारोंने विक्रमाजितको गद्दीसे उतारकर वनवीरको राज्यसिंहासनपर विराजमान कियाहै. तथापि क्या वनवीर सदाके लिये इस सिंहासनपर विराजमान रहेगा? क्या वनवीरको यह समाचार विदित नहीं है कि संग्रामसिंह का बालक पुत्र उदयसिंह शुक्लपक्षके चंद्रमाकी समान दिन २ बढ़ रहाहै क्या समर्थ होनेपर वह अपने अधिकारको न लेगा? यह कभी विचार नहीं किया जा सकता कि सरदारोंने वनवीरको कुछ ऐसी सम्मति दी हो। वरन ऐसा ज्ञात होता है कि उदयसिंहके समर्थ होनेतक वनवीरको राज्य दिया गया था. परन्तु भट्टग्रंथोंमें इसका कोई भी विवरण नहीं पाया जाता।

घिनौने आचरणसे मेवाडके श्वेत यशमें सदाके लिये यह कलंक लगा" रत्नजीने यह सुना, वह समझे थे कि सूरजमल्ल मरगया, इस समय उसको जीता हुआ देखकर फिर आक्रमण किया। परन्तु इस कुबुद्धिका फल शीघ्रही उनको मिलगया। राणाको शीघ्रतासे अपने ऊपर झपटता हुआ देखकर सूरजमल्लभी क्रोधित सिंहकी समान झपटा और उनको पृथ्वीमें गिराकर छातीपर चढकर तलवार मारी, तलवारके लगनेसे राणाजीका काम होगया और शीघ्रही अपने शत्रुके निकट अनन्त निद्रामें सोगए।

राणा रत्नजीने केवल पांच वर्षतक राज्य कियाथा। तथापि इस अल्प कालमें ही भलीभांतिसे राज्यकी उन्नति की। यवन लोग तो इनके समयमें चित्तौरकी सीमापर भी नहीं आसके। राणाकी अकालमृत्युसे कुछदिन पीछे ही उनका भाई विक्रमाजित चित्तौरके सिंहासनपर बैठा।

सम्वत् १५९१ (सन १५३५ ई०) में विक्रमाजितको चित्तौरका सिंहासन मिला। राणा रत्नजीमें जितने राज्योचित गुण थे, विक्रमाजित उनमेंसे एक गुणकाभी अधिकारी नहीं था, बडे भ्राताके गुण छोडे और अवगुण लिये। महाराणा रत्नकी ढिठाई, तेजस्विता और अपरिणामदर्शिता विक्रमाजितके चरित्रमें पूर्णमात्रासे विराजमान थी। इसके अतिरिक्त वह क्षमाहीन और प्रतिहिंसापरायणभी था। क्रमानुसार यह दोष यहांतक बढ गए कि मेवाडके सम्पूर्ण सर्दार राणा विक्रमाजितसे अप्रसन्न होगये। उनके अप्रसन्न होनेका एक औरभी कारण था। राणा उनके साथ जरा देरको नही बैठते थे और रातदिन पहलवानोंकी कुस्ती और तरह २ की कसरतें देखा करतेथे। विशेष करके राजपूत सवार लोगोंने जिस सन्मानको बहुत दिनसे पारक्खा था, विक्रमने उनके उस सन्मानको छीनकर नीचपदवाले 'पाइक' (पटातिक) और उक्त मल्लोंको अर्पण करना आरंभ किया। इस अपमानको देखकर सर्दारलोगोंके हृदयमें घोर दुःख हुआ और वे अत्यन्त दीनभावसे अपने समयको बिताने लगे।

इस प्रकारसे सर्दारलोगोंके अधिकारोंको छीन मल्लादि नीचपदवाले लोगोंको देकर राणा विक्रमाजितने एक नई रीति चलाई। कदाचित् मुसल्मानोंसे राणाने यह नीति सीखी हो। वह मुसलमान पदातिक सेनाका सर्वभांतिसे आदर करके राजपूतोंको अत्यन्त घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। किसी किलेको घेरनेके समय अथवा जब कि राजपूतगण घोडेसे उतरकर सर्वदा [illegible]

बेरिस नदी बहती थी, उसके जनशून्य किनारेपर वह बारी राजकुमारको लिये- हुए बैठा था। सौभाग्यसे चित्तौरके भीतर उदय सिंहकी आंख नहीं खुली। पन्नाभी वहां पहुंची और कुमारको साथ लेकर वीर बावजीके पुत्र सिंहरावके पास जाकर रहनेकी प्रार्थना की; वनवीरके भयसे उसने राजकुमारकी रक्षा करना स्वीकार न किया और अत्यन्त शोकयुक्त होकर बोला। "मैं तो बहुतेरा चाहताहूं कि राजकुमारकी रक्षा करूं, परन्तु वनवीर इस बातको जानकर वंशसहित मेरा संहार कर डालेगा। मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि उसका सामना करूं। इसके उपरान्त पन्ना देवलको छोडकर डूंगरपुरनामक स्थानमें गई और वहांके रावल ऐशकर्ण (यशकर्ण) के पास राजकुमारको रखना चाहा, परन्तु उसने भी भयके मारे राजकुमारको नहीं रक्खा। तदुपरान्त विश्वासी और हितकारी भीलोंके द्वारा रक्षित हो, आरावलीके दुर्गम पहाड और ईडरके कदमार्गोंको लांघकर कुमारको साथ लिये हुए पन्ना कमलमेर दुर्गमें पहुंची। यहांपर पन्नाकी बुद्धिमानीसे कार्य सिद्ध हो गया। दीप्राके वणिककुलमें उत्पन्न हुआ आशाशाह नामक एक जैन राजपूत उस समय कमलमेरमें राज करता था. पन्नाने उससे मिलना चाहा, आशाशाहने प्रार्थना स्वीकार करके विश्राम गृहमें पन्नाको बुलाया। वहां पहुंचतेही धात्रीने बालक राजकुमारको आशाकी गोदीमें रखकर नम्रतासे कहा, "अपने राजाके प्राण बचाइये।" परन्तु आशाने असमर्थ और भीत होकर कुमारको गोदसे उतारना चाहा। आशाकी माता भी वहींपर थी, पुत्रकी ऐसी कायरता देखकर उसको फटकार और उपदेशपूर्ण वाक्यसे कहा "स्वामीके हित रखनेवाले, स्वामीका हित साधन करनेके लिये किसी समय विपत्ति या विघ्नसे नहीं डरते। राणा संग्रामसिंहका पुत्र तुम्हारा स्वामी है; विपत्तिमें पडकर आज तुमसे आश्रय चाहता है, इसको आश्रय देनेसे भगवानके आशीर्वादसे तुम्हारे गौरव की वृद्धि होगी।" माताकी नीति पूर्ण शिक्षासे आशाशाहके समस्त संदेह दूर होगये। उसने राजकुमारको अपना भतीजा [illegible] प्रसिद्ध किया और [illegible] साथ लालन पालन करने लगा। पन्नाकी मनोकामना पूर्ण हुई। [illegible] [illegible] कोई नहीं जानता. [illegible] (जैनग्रंथ [illegible]) [illegible] कोई सन्देह नहीं, [illegible] [illegible] सिद्ध होगई।

[illegible]

[illegible] । [illegible] कुमारको अपना भतीजा [illegible] प्रसिद्ध किया [illegible]

थोडेही समयमें मेवाडका राज्य अराजकतासे पूर्ण होगया । गुजरातके सुलतान बहादुरने अपने वैरका बदला लेनेके लिये यह अच्छा मौका समझा । शिशोदिया कुलभूषण कमार पृथ्वीराज,गुजरातके बादशाह मुज़फ्फरको पराजित करके चित्तौरमें कैद करके लेआये थे । बादशाहका इससमय घोर अपमान हुआ था,आज बहादुरने उस अपमानका बदला लेनेकी प्रतिज्ञा की।गुजरात और मालवेमें जितनी रणविशारद सेना थी बादशाह उस समस्त सेनाको लेकर राणा पर चढ धाया । राणा विक्रमाजित उस समय बूंदी राज्यके अन्तर्गत लैचानामक स्थानमें थे। बहादुरने अपनी विशाल अनीकिनीको साथ लिये हुए वहीं राणाजीको जा घेरा। बहादुरकी उस प्रचंड सेनाको बादलकी समान उमडी आती देखकर राणा विक्रमाजितको कुछभी भय न हुआ, उन्होंने वीरवर संग्रामसिंहके औरससे जन्म लिया था, अबतक उनकी नाडियोंमें प्रचंड वेगसे संग्रामसिंहका रुधिर बहरहाहै, फिर राणा विक्रमाजित किस प्रकारसे कायर हो सकते हैं क्या वह देशवैरी यवनकी प्रचंड सेनाको रोकनेमें असमर्थ होंगे? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता, शिक्षाके दोषसे यद्यपि उनका शरीर दूषित था परन्तु इतने कापुरुष नहीं थे कि शत्रुको आताहुआ देखकर निश्चिन्त बैठे रहते । उन्होंने निडर होकर बहादुरका मुकाबिला किया, दोनों दलोंमें घोर संग्राम होने लगा । परन्तु महाराणाकी वेतनभोगी पदातिक सेना, मुसलमानलोगोंके प्रचंड आक्रमणको नहीं रोक सकी। इस कारण वे घोर संकटमें पडगये । उनके इष्ट मित्र कोई भी इस विपत्तिमें सहारा न देसके। राणाजीको उनकी निर्बुद्धिताका उपयुक्त फल भोग करनेके लिये रखकर इष्ट मित्रगण संग्रामसिंहके छोटे पुत्र उदयसिंहको तथा चित्तौरपुरीकी रक्षा करनेके लिये नगरमें चले गये ।

चित्तौरनगरकी ऐसी अपूर्व महिमा है ! गतयुद्धमें वीरवर संग्रामसिंहके साथ जो अगणित वीरगण अपने देशके गौरवकी रक्षा करनेके लिये समरभूमिमें गिर गए थे, उससे चित्तौरपुरी वीर शून्य होगई थी। परन्तु आज ज्योंही सुलतान बहादुरने चित्तौरपुरीको घेरा. कि वैसेही उन वीरोंकी चिताभस्मसे फिर अगणित वीर उत्पन्न हो गये । जो राजपूत राजालोग इससे पहिले मेवाडके घोर शत्रु थे. आज वह भी शत्रुभावको छोड़कर आत्मोत्सर्गका पवित्र मंत्र सीखकर चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये आये । बहुतसा दुःख पानेके पीछे जब सूरजमलको चित्तौर भूमिकी आशा न रही तब इन्होंने वनमें देवलनगर बसाया था. आज उनकाही वंशधर बाघजी सिसोदियोंके वासस्थान चित्तौ-

सबको पूर्ण विश्वास होगया, ईश्वर संग्रामसिंहके वंशधरको पाकर सबही आनंदमें मगन हो गए। वह आनंदध्वनि अनन्त गगनमार्गमें विस्तारित होकर शिखर २ पर टकराती हुई चित्तौरकी ओरको पहुँची। चित्तौरके सिंहासनपर बैठे हुए राष्ट्रापहारक बनवीरने उस ध्वनिको सुना। उसका हृदय कम्पायमान होनेलगा। अकस्मात उसका सिंहासन कांपा! तब शोनगड़ा सरदार अखैराजने अपनी कन्याके साथ उदयसिंहका विवाह करना चाहा, पहिले तो कुमारने अस्वीकार किया; कारण कि शोनगड़े मालदेवने जिस दिन राणा हमीरके साथ अपनी कन्याका विवाह किया था, उस दिनसे राणा हमीरसिंहने नियम कर दिया था कि आगेसे कोई गिह्लोट शोनगड़े गोत्रके साथ विवाह न करेगा। उनका यह नियम इतने दिनतक पालन होता चला आया था, परन्तु आज उदयसिंहने उस नियमको उल्लंघन करके उक्त सरदारकी बेटीके साथ विवाह करना स्वीकार किया। विवाहका दिन नियत होने व और बातचीतके समाप्त हो जाने पर, महाराणा कुंभाजीकी उस बड़ी सभामें उदयसिंहने मेवाड़के प्रधान प्रधान सरदार और सामन्तोंसे पूजित होकर चित्तौरके राजसिंहासनको ग्रहण किया।

वान एकलिंगके नामसे शपथ करके उन्होंने प्राणपणसे युद्ध करनेकी प्रतिज्ञा की और प्रचंड रणभेरी बजाकर शत्रुकी विक्रमाग्निको खलबला डाला। उनकी गंभीर रणभेरीका शब्द आकाशमें गुंजारहो रहाथा कि उसी समय बहादुरकी कालसमान तोपें, मानो संपूर्ण संसारको पातालमें भेजनेके लिये विश्व संहार कारी असंख्य वज्रोंकी समान शब्द करके गर्ज उठीं! प्रकृति स्तंभित होगई मानो पलक मारतेमें संसारका अस्तित्व लोप होगया! मानो संसार सौ टुकडे होकर पातालमें प्रवेश करने लगा। राजपूत वीरलोग दूने उत्साहसे उत्साहित हो फिर सिंहनाद कर उठे; तथा अग्निमय गोलोंको ताक २ कर उनके ऊपर वाण छोडने लगे। कदाचित उनके दो एक ही वीर निशानेसे चूके हों—अबकी वार और भी मुसलमानोंकी तोपें गरजीं! तोपोंके धुएंसे संग्राम भूमिमें अंधकार छागया।— सूर्यभगवानकी तीव्रकिरणेंभी रुक गई, पलभर तो कुछभी दिखाई न दिया!—केवल अन्धकार!—घोर अन्धकार! —इस प्रकार बहुत देरतक घोर युद्ध होता राह! दोनों ओरके अगणित सिपाही मारे गये। बहादुर किसी भांति चित्तौरपर अपना अधिकार न कर सका। फिर चतुर लाब्रीखॉने बीका पहाडीके नीचे एक वडी भारी सुरंग खोदी और उसमें बारूद भरकर आग लगादी। हजार वज्रकी समान शब्द करके वह बारूद जल उठी-उसके साथही किलेकी ४९ हाथ जमीन भी एक साथ उडगई। उस स्थानमें हार राजकुमार वीर अर्जुन राव अपने पांचसौ सिपाहियोंको साथ लियेहुए युद्ध कर रहा था, वहांकी जमीनके उडतेही वहभी सेनासहित भाग गया! चित्तौरके किलेकी भीत कई जगहसे टूटगई। उन्हीं छिद्रोंसे होकर किलेमें प्रवेश करनेके लिये यवनवाहिनी नदीके प्रवाहकी समान दौडी। परन्तु चित्तौरपुरी अवतक वीर शून्य नहीं हुई है, जमराजकी समान कई राजपूत लोग अवतक जीवित हैं। जबतक देहमें प्राण रहेंगे—नाडियोंमें जबतक रुधिर बहेगा तबतक क्या वह अपनी मातृभूमि चित्तौरपुरीको शत्रुओंके हाथमें जाने देगे? कभी नहीं। वातकी वातमें वीरवर दुर्गा राव, अन्य. दहूनामक दो चन्दावत वीर और कितनी एक सेना उन छिद्रोंके सामने आनकर डटगई। वह लोग अचल. अटल और पहाडकी समान डटे। प्राण रहते हुए यहांपरसे कभी नहीं हट सकते. मुसलमानोंके झुण्डके झुण्ड उस ओरको धाये। परन्तु वीरवर दुर्गा राव और उनके साथी वीरगण जबतक जीवित रहे तबतक मुसलमानोंकी एक न चली। परन्तु थोडेसे राजपूत मुसलमानोंकी अगणित प्रचंड सेनाको कबतक रोक सकते हैं, कबतक...

जाय? सर्दारलोग किलेमें वैठे हुए इस प्रकारसे अनेक विचार कर रहे थे, कि उसही समयमें देवलपति बाघजीने उनके सामने आकर कहा "क्या बाधारावलका पवित्र रुधिर इस हृदयमें नहीं वहता है? आपलोग राजवालिके लिये क्या चिन्ता करते हैं? आज मैंही प्राण देकर देवीकी आज्ञाका पालन करूंगा। सबकी चिन्ता दूर हुई। जिस सूरजमलने चित्तौरके लिये वीरवर पृथ्वीराजके साथ भयंकर संग्राम किया था; यह बाधजी उसके ही वंशमें उत्पन्न हुआ है, यह भी शिशोदियाकुलका भूषण है। बाधजीने क्षणभरके लिये राजसन्मानको भोग किया। छत्र, चामर और किरण क्षणभरके लिये उनके मस्तकपर विराजमान हुए। फिर पीछे पीले कपडे पहिरे गये। जिसको देखो वही पीले कपडे पहिर रहा है! अन्तकालका वीरवेष, पीले कपडोंका पहरना समाप्त हुआ। सर्दार सामन्त और प्रधान २ सेनापतियोंने सदाके लिये एक दूसरेसे विदा लेली। फिर महादर्पके साथ बाधजीके मस्तकपर बाधारावलकी विजय वैजयन्ती और उज्ज्वल छेंगी * उठाय श्रवण विदारी वीरनाद करते हुए शत्रुओंके सामने हुए। इस ओर राजकुमार उदयसिंह बूंदीके विश्वासी राजा शूरथानके हाथमें समर्पण किये गए। उसदिन—चित्तौरकी उस संकटापन्न अवस्थामें वीरवर वाप्पारावलकी हेमतपन मंडित विजयपताका देवलराज्यके मस्तकपर इस अधिकाईसे शोभित हुई कि जैसी कभी शोभित नहीं हुई थी। राजवालिके गरम रुधिरसे चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवीका खप्पर भरनेसे पहिले ही भयंकर 'जुहारव्रत' का कार्य पूरा किया गया। अव समय नहीं है; यवनलोग छिद्रके मार्गसे धीरे २ चित्तौरमें चले आते हैं; अतएव चिता वनानेका तो समय नहीं है। सर्दारलोगोंने इस भयंकर व्रतके शीघ्र समाप्त होजानेका एक उपाय सोचा। दुर्गके भीतर एक बडा भारी गढा खुदवाया, वारूदके ढेरके ढेरे उसमें डाले गये तथा और भी दाहक पदार्थ डालकर आग लगाई प्रचंड शब्द करके अग्नि जलने लगी! सबके देखते हुए महारानी कर्णावती तेरह हजार राजपूत वालाओंके साथ करुणा शोकके गीतोंसे सारी प्रजाको रुलाती हुई सरलता और प्रसन्नतासे उस अग्निमें कूद पडी। एक मुहूर्तमें तेरह हजार वीर वालाओंने इस असार संसारसे प्रयान किया. किसीका चिह्नतक भी शेष न रहा। रूप-यौवन-लावण्य गौरव पलभरके बीचमें इन सबका अंत होगया।—कुछभी शेष न रहा। अब सरदारलोग निश्चिन्त हुए, इस

---

* छेगी महाराज बाधारावलका एक राजचिह्न है। [illegible] लम्बा एक चमडा लगा रहता है उसके ऊपर [illegible]

कारणसे अमंगलही अमंगल दिखाई देने लगे । जो साहस और जो प्रचंड प्रताप गिह्लोट कुलका प्रधान धर्म है, उसका एक परमाणुभी उदयसिंहमें नहीं था। उदयसिंह दिनरात विलास और आलस्यके वशमें रहता था, जो वह सदाशय हुमायूंके समय अथवा पठानोंके राष्ट्रविप्लवके समय अपने जीवनको व्यतीत करता तो मेवाड़की कुछभी हानि नहीं होती, परन्तु सम्पूर्ण राजस्थानके दुर्भाग्यसे ऐसा नहीं हुआ। उदयसिंहके अभिषेक-जनित आनंद कुलाहलमें जो वर्ष कुंभलमेरके मेघमंडित महा दुमहलोंमें गुंजार उठा; उस वर्षमेंही भारतकी मरुभूमिमें वसेहुए ऊंचे शिखरसे भारतकी राजलक्ष्मीका घोर विलाप सुनाई दिया, उसही विलापने राजपूतनेमें अकबरके जन्मका वृत्तान्त सारे भारतवर्षमें प्रचार करदिया । उस वृत्तान्तके श्रवण करतेही समग्र भारतभूमिमें डांवाडोल मच गया । मेवाड़के घर २ में रोने और हाय २ करनेका शब्द सुनाई आने लगा ! फिर वह रोदनध्वनि निवारित नहीं हुई । कारण कि अकबरने प्रचंड धूमकेतुकी समान बढ़कर सम्पूर्ण भारतवर्षको, दासपनकी जिस कठोर जंजीरसे बांधा, वह जंजीर शीघ्रताससे नहीं खुली ।

संग्रामसे सब बत्तीस हजार (३२०००) राजपूत वीरोंने प्राण दिये थे ! यह चित्तौरका दूसरा विध्वंस हुआ ।

बहादुरशाहने पंद्रह दिनतक चित्तौरमें रहकर अनेक प्रकारके आनंद उत्सव किये। इतनेमेंही समाचार आया कि मुगल वीर हुमायूं चित्तौरका उद्धार करनेके लिये सेना सहित चला आताहै।भयके मारे बहादुरसाह थर्रागया;उसने विना विलम्ब किये देशको लौट जानेकी तइयारी की।इस बातका निर्णय करना जरा कठिनहै कि कौनसे सम्बन्धके कारण हुमायूं वंगदेशकी विजयको छोडकर चित्तौरमें आयाथा । परन्तु यहाँपर यह लोगोंकी युक्ति ही ठीक जान पडतीहै, वे कहते हैं कि एक पवित्र मित्रबन्धनके अनुरोधसे ही मुगल वीर हिमायूं बहादुरके कराल ग्राससे चित्तौरका उद्धार करनेके लिये आयाथा । उदयसिंहकी माता रानी कर्णवतीने हिमायूंको धर्मभ्राता बनाया था।राजपूत लोग इस पवित्र भ्रातृत्व बन्धनको "राखी बन्धन" के नामसे पुकारते हैं ।

भट्टग्रंथोंमें लिखाहै कि चित्तौरके भयंकर समरमें जब वीरनारी जवाहरबाईने अपने प्राण दिये, तब रानी कर्णवतीने अपने बालकपुत्रकी प्राण रक्षाका कोई निश्चित उपाय न देखकर विवश हुमायूंकी सहायता चाही और उसके पासको पवित्र राखीबन्धन भेज दिया । वीर प्रथाकी योग्य विधिके अनुसार हुमायूंने उस भ्रातृसम्बन्धको पवित्र हृदयसे ग्रहण किया, और धर्म- भागिनीको विपत्तिसे उद्धार करनेकी प्रतिज्ञा कर सेना सहित चित्तौरकी ओर चला । यदि हुमायूं कुछ पहिले चित्तौरसे आजाता तो बहादुर शाहके द्वारा चित्तौरका यह कठोर विध्वंस न होता. और धर्म बहिनके उद्धार करनेकी जो प्रतिज्ञा की थी वह भी सर्व प्रकारसे पूर्ण हो जाती। परन्तु रानी कर्णवतीका दुर्भाग्य था यदि ऐसा न होता तो वह विलम्ब करके राखी क्यों भेजतीं। *

राखीका उत्सव वसन्तकालमें ही हुआ करताहै। राजपूत बालागण उस समय अपने २ भाइयोंके पास राखी भेजती हैं और उनको अपना धर्मभ्राता बनाती हैं। भारतेश्वर भुवनविदित अकबरका [illegible]

* कहतेहैं कि हुमायूने बहादुरके [illegible]

भाग्यकी ओर देखताहुआ परमेश्वरकी याद करताहुआ आगे चला। साथी लोगभी अपनी २ इच्छाके अनुसार जिधर तिधरको चले गये। कोई २ तो भूख प्यास और मार्गके घामसे कातर होकर मार्गमेंही मर गया, तथा किसी २ ने हिन्दू राजाओंके यहां जाकर नौकरी कर ली परन्तु हुमायूंका क्या हुआ? एक समय जो सारे भारतवर्षका अधीश्वर था, एक समयमें अगणित नर नारियोंका भाग्यसूत्र जिसके हाथमें था, आज वही मनुष्य अपने जीवनकी रक्षा करनेके लिये अनाथकी समान द्वार २ पर फिरने लगा। धन्य है रेला कृतान्त कर्म-विधानको धन्य है! तुम्हारे कुटिल लेखके अनुसार आज हिन्दोस्थानका बादशाह दरदर मारा फिरता है।

जब कोई आशा न रही तो हुमायूंने जयसलमेर और जोधपुरके महाराजाओंसे आश्रयकी पार्थना की, परन्तु दुःखकी बात है कि इन दोनो महाराजाओंमेंसे एकनेभी बादशाहकी प्रार्थनापर ध्यान नहीं दिया। आश्रय देना तो एक ओर रहा वरन जोधपुरके क्रूरहृदय राजा मालदेवने इस दुःसमयमें ही हुमायूंको कैद करना चाहा। हम नहीं कह सकते कि यह बात कहांतक ठीक है? कारण कि मुसल्-ग्रंथोंमें इसका कुछभी वर्णन नहीं लिखाहै, केवल तवारीख फरिश्तामेंही इसका

और आनन्दसे कहने लगा । "हमशीरासाहवने जो कुछ कहा है, मैं जहांतक सुमकिन होगा, सब तरहसे उनका काम वजाऊंगा। यहांतक कि अगर रनथम्भौरका किला लेनेकी भी उन्हें ख्वाहिश हो तो मैं वह भी उन्हें दे दूंगा।" सम्राटने अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिये भलीभांतिसे यत्न किया। और अपनी धर्मवहिनको और भानजोंको विपत्तिसे बचानेके लिये बंगालकी चढाईको छोड़ आया था * हुमायूंको सब प्रकारसे योग्य जानकर ही रानीने राखी भेजी थी। हुमायूंमें वीरता, उदारता और सत्य प्रियता यह तीनों गुण समान भावसे विराजमान थे। पिता बाबरके साथ बियाना आदि स्थानोंके संग्रामोंमें रहकर उसने जैसी वीरता दिखाई थी, भारतके इतिहासमें भलीभाँतिसे उसका वर्णन पाया जाताहै और बाबरने भी अपने जीवन चरित्रमें इस वृत्तान्तको लिखा है। हुमायूंने भलीभांतिसे अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण किया। वहादुरको चित्तौरसे निकालकर भगाया और मालवेकी राजधानी माण्डुनगरको भी छीन लिया, इसके छीन लेनेका यह कारण था कि मालवेके बादशाहने वहादुरकी सहायता की थी। इस प्रकारसे चित्तौरका उद्धारकरके वहांके सिंहानपर राणा विक्रमजितको विराजमान किया।

दुःख कष्ट और अनेक पीडाओंको भोगकर फिर राणा विक्रमजितने चित्तौरके सिंहासनको पाया। परन्तु इतने परभी उनका चाल चलन न सुधरा। घोर संकटमें पडकर भी उनके हृदयमें ज्ञानका संचार न हुआ। थोडेही दिनोंमें फिर वही कठोर स्वभाव हो गया, फिर अपने सरदारोंपर अनेक प्रकारके अत्याचार करने लगे। धीरे २ यह दुष्टता यहांतक बढी कि राणा अपनी मर्यादाको भूलकर पशुकी समान व्यवहार करने लगे। जिस करमचंदने उनके पिताको विपत्तिके समय सहारा दिया था, और जो करमसिंह बुढ़ापेकी अनीपर पहुंचकर संसारसे विदा होनेकी तइयारी कर रहा था, उस माननीय वूढे करमसिंह परमार पर भरी सभामें विक्रमजितने प्रहार किया। यह अन्याय और यह दारुण अपमान देखकर समस्त सरदारगण अपने २ आसनसे उठ बैठे और सामन्त शिरोमणि चन्दावतसार [illegible]-

---

* टाडसाहव लिखते हैं कि "राखी बन्धनके विषयमें और भी अनेक [illegible] टाडसाहव जैसे प्रतिष्ठित थे उनका पद ऊंचा था और [illegible] अनेक राजपूत बालाओंने राखी भेजकर उनको 'धर्मभ्राता' [illegible] उदयपुर, बूंदी और कोटेकी रानियें तथा राजाओंकी [illegible] इन साधारण राखियोंको टाडसाहव [illegible] और [illegible] ।

इस अमरकोटकी छायाकुंजके भीतर मुगलकुलतिलक अकबरने जन्म ग्रहण किया। अकबरके जन्म लेनेके कुछदिन पीछे ही हुमायूं सोदा राजके आश्रयको छोडकर ईरानको चला गया। कहतेहैं कि हुमायूं ज्योतिष विद्याको भी भलीभांतिसे जानता था।उसकी समान कोई ज्योतिषी भी होनहारका फल नहीं कहसकता था, परन्तु दुःख इतनाही है कि उसने अपने कामोंमें इस विद्याका कहीं सहारा नहीं लिया। यदि अपने कामोंमें सहारा लेता,यदि इस विद्याकी सहायतासे अपने होनहारके परदेके भीतर प्रवेश करजाता—तो वह घटना,—जिसने उसके सौभाग्याकाशको—ढक रक्खा था, शीघ्रही उड जाती, और उसे कभी भी ईरानकी ओरको नहीं भागना पडता ।

अपने पिता बाबरके स्नेह गुणसे हुमायूंने जिस विपत्तिके विद्यालयमें संसार नीतिकी शिक्षा कीथी, इस समय अपने पुत्र अकबरको भी उसही शिक्षामें नियुक्त किया।भाग्यचक्रकी वेगके अदलबदलसे पदच्युत हुआ हुमायूं बहुत कालतक कहींभी स्थिर होकर न ठहरसका।भारतवर्षसे भागनेके पीछे बराबर बारह वर्षतक देश २की खाक छानता रहा; कभी तो ईरानकी राजसभामें, कभी अपने

नवम अध्याय ९.

वनवीरका राज्यशासन ।—संग्रामसिंहके बालक पुत्र उदयसिंहको मारडालनेके लिये वनवीरका उद्योग करना;—उदयसिंहकी प्राणरक्षा;—उनका बहुत समयतक गुप्त भावसे रहना:—सरदारोंका उदयसिंहको राणा समझना;—दूनाका वर्णन;—उदयसिंहका चित्तौरको पाना;—वनवीरका सिंहासनसे उतारा जाना;—नागपुरके भौंसलोंकी उत्पत्तिका वर्णन;—राणा उदयसिंहके राज्यकावर्णन;—उनकी अयोग्यता;—हुमायूंका राज्यभ्रष्ट होना;—अकबरका जन्म;—हुमायूँका दूसरी बार सिंहासनपर बैठना;—हुमायूँके परलोकवासी होने पर अकबरका तख्तपर बैठना;—उदयसिंह और अकबरके परस्पर विसम्वादी चरित्रकी समालोचना;—अकबरका चित्तौरपर चढना और राणाका चित्तौरको छोडकर भागजाना;—चित्तौरकी रक्षाके लिये राजपूतवीरोंका खड्ग धारण करना: जयमल और—पत्त; वीरनारी;—जुहारव्रत;हिन्दू मुसलमानोंका तुमुलयुद्ध:—अकबरकी विजय: नगरवासियोंकी हत्या:—उदयसिंहका उदयपुर बसाना:—उदयसिंहका परलोकवासी होना ।

राज्य और संपत्तिमें कौनसी नीतिकी गति है, [illegible] नके अतिरिक्त दूसरा कौन जान सकता है ? जिस [illegible] इसके [illegible]

धाईका हृदय कॉप गया वह समझ गई कि निष्ठुर वनवीर केवल विक्रमाजितको ही मार कर चुप न होगा, वरन उदयसिंहके मारनेकोभी आवैगा। मानो किसी अदृश्य देवताने धाईके कानमें यह बात कहदी, उसने राजकुमारके वचानेका उपाय अत्यन्त शीघ्रतासे कर लिया। गृहके फलादिक रखनेका एक वडा भारी टोकरा रक्खा हुआथा, निद्रित राजकुमारको उसमें वडी सावधानीसे शयन करा दिया, तथा किनने एक वनवृक्षोंके पत्तोंसे उसको ढक कर उस वारी+के हाथमें देकर कहा "अभी इस छवडीको लेकर दुर्गसे भाग जा।" विश्वासी नाईने तत्काल उसकी आज्ञाका पालन किया। धाई राजकुमारके स्थानमें अपने छोटे लडकेको बुलाकर वहांसे लौटती ही थी कि इतनेमें रुधिरसे अपने हाथ लाल किये वनवीर वहां आया और उदयसिंहको खोजने लगा। भयके मारे धाईका प्राण उड़गया, कंठ सूख गया; उसने विना कुछ वोले चाले कांपते २ राजकुमारकी शय्याको संकेतसे दिखा दिया और भय तथा व्याकुलतासे उस ओरको देखा— निठुर वनवीरने धाईके प्राणसम पुत्रके हृदयमें वह छूरी झोंक दी! केवल एक वार आर्त्त नाद,—फिर केवल छटपटाना!—अव उस वालकमें कुछभी शेप न रहा! अभागिनी धाईकी आंखोंके सामने, उसके हृदयका दीपक टिमटिमाकर वुझगया; तथापि वह एकवार भी अपने पुत्रके लिये जी भरके न रोई। आंसू वहाती हुई प्यारे पुत्रका संस्कार करके चुपचाप किलेसे वाहर निकल गई! रनवासकी रानियोंको धाईके इस महान् कार्यका कुछभी समाचार विदित न था। उन्होंने यही समझा कि दुराचारी वनवीरने महाराज संग्रामसिंहके छोटे पुत्र उदयसिंहको मार डाला इस कारण वे सवकी सव विलाप कलाप करके रोने लगीं, उनको यह समाचार विदित नहीं था कि उस हेतु धाईने अपने पुत्रके रुधिरके वदलेमें राणा संगाके वंशको अनन्त विनाशसे वचाया है। इतिहासमें अवश्यही इस पवित्र धाइका नाम लिखना योग्य है। खीची राजपूत कुलमें इस पन्ना धाईका जन्म हुआ था: जवतक पृथ्वीपर राजपूतोंका नाम रहेगा तवतक ही पन्नाके पवित्र नामको मनुष्यगण याद किया करेंगे।

प्राणसम पुत्रकी चितानिको अपने आंसुओंसे वुझाकर अभागिनी पन्ना उस विश्वासी वारीकी तलाशमें किलेसे वाहर निकली। चित्तौरकी पश्चिम ओर

+ वारी, नाईको कहते हैं [illegible]

[illegible] ही इन लोगोंका प्रधान काम होता है।

लोगोंके मनमें अनेक प्रकारके सन्देह होने लगे। आशाशाहके पिताका वार्षिक श्राद्धदिन निकट आया, उसके स्थानपर बडी भीड हुई बहुतसे राजपूतभी नेवता पाकर उसके स्थानपर आये। समस्त शामग्रीके प्रस्तुत होनेपर सब लोग भोजन करनेके लिये बैठे। अनेक प्रकारके भोजन परसे जाने लगे। फिर दहीके परसनेका समय आया। इसही समयमें उदयसिंहने एक परसनेवालेके हाथसे दहीका वर्त्तन छीन लिया। कुमारका यह अयौक्तिक व्यवहार देखकर सबही विस्मित हुए! सातवर्षके बालकका यह कैसा तेज है? बहुतेरा समझाया, डरतक दिखाया; परन्तु कुछ भीत न हुआ। सप्तम वर्षीय राजकुमारकी प्रतिज्ञाको कोईभी नहीं टाल सका—दहीका वर्त्तन कुमारने नहीं छोडा। इस प्रकार आशाशाहके यहां रहते २ सातवर्ष बीत गये। सातवर्षतक उदयसिंह बराबर छिपे रहे; परन्तु सत्य कितने दिनतक गुप्त रह सक्ता है? फिर आपसे आप राजकुमारका समाचार प्रकट हो गया। झालौरके शौनगडे सरदार किसी कामके लिये आशाशाहसे मिलनेको आये। शाहजीने उनका आदर मान करनेके लिये उदयसिंहको नियुक्त किया। राजकुमारने इतनी उत्तमतासे इस कार्यको पूर्ण किया कि उक्त सरदारोंको उसपर अत्यन्त सन्देह हुआ। उन्होंने निश्चय किया कि "उदयसिंह किसी प्रकारसे आशाशाहका पुत्र नहीं है।" धीरे २ यह समाचार चारों ओर फैल गया। मेवाडके सरदार और सामन्तगण वरन और दूसरे देशोंके राजा लोगभी आनन्दित होकर वीरवर सांगाके पुत्रको प्रणाम करनेके लिये वहां आने लगे। चंडके प्रतिनिधि शालुम्ब्रापति साहीदास, कैलवापति जागो, वा गोगुन्दाके सांगा आदि चन्दावत गोत्रके अन्यान्य सामन्त गण; कोठारिया और बेदलाके चौहानगण, विजौलीके परमारगण, संचोरपति पृथ्वीराज, और जनावन कृन मगण—यह सबही राजा लोग आनंदमें मगन होकर कमलमेरमें आये। पीछे धाय और बारीने राजकुमारकी रक्षाका समस्त विवरण कहकर सबके मनका सन्देह दूर किया।

उसही दिन कमलमेरके सभागृहमें बडाभारी दरबार हुआ। आशाशाहने सबके सामने राजकुमारका यथार्थ वृत्तान्त कह कर उनको मेवाडके वृद्ध चौहान सामन्तके हाथमें सौंप दिया यह सरदार. राजकुमारके समस्त गूढ विषयोंको भलीभांति-से जानता था. इस कारण इस विषयमें उनको कुछ सन्देह नहीं था। आशा-शाहके स्थानमें रहनेसे कदाचित् कोई किसी प्रकारका सन्देह करे इसी कारणसे उन सरदारने एक पात्रमें कुमारके साथ भोजन किया. [illegible]

जो राजप्रसाद और शान्ति मोल ली जाय, उस प्रसाद और उस शान्तिका प्रयोजन क्या है? वरन अनन्त कालतक यंत्रणामयी अशान्ति और विपत्तिके अंकुशोंका आघात सहना अच्छाहै, तथापि इस प्रकारके कलुषित राजप्रसादका कुछ भी प्रयोजन नहीं है। सौभाग्यकी बात है कि भागमल्ल और राठौर राज पराधीनता रूपी जंजीरके बन्धनको बहुत दिनतक सहन न करसकनेके कारण स्वाधीनताके प्राप्त करनेकी चेष्टा करने लगे। इतनेहीमें अकबरके उजबक सर्दारगण विद्रोही हो उठे। सबसे पहिले उस विद्रोहके दबानेकी चेष्टा अकबर-को करनी पड़ी। अतएव उसके हृदयमें राजस्थानके जीतलेनेकी आशा बलवती-होगई थी वह कुछकालके लिये रुक गई। इस विशृंखलाको दूर करनेके पीछे अकबरने अपनी विजयी सेनाको साथ लेकर चित्तौरपर चढ़ाई की थी।

जिस राजाका राज्य श्रेष्ठ नियमपद्धतिके द्वारा भलीभांतिसे रक्षित होताहै;—जो किसी प्रकारकी दुर्लिप्सा या दुराकांक्षाके वशमें नहीं है; विज्ञानी और श्रेष्ठ चरित्रवाले मन्त्रियोंके साथ जो शुद्ध राजनीतिके अनुसार अपने गौरव, सन्मान तथा अपनी मर्यादाकी रक्षा कर सकता है, वही यथार्थ " प्रजापाल " नामका अधिकारी है; उसका राज्यही स्वर्गीय सुखका स्थान और शान्तिका कुसुमोद्यान है। परन्तु जो राजा स्वेच्छाचारी है, जो एक लहमेभरको भी प्रजाके सुख दुःखका विचार नहीं करता, स्वार्थपरता जिसकी मूलमंत्र है, प्रजाके रुधिरका सुखाना ही जो यथार्थ राजधर्म समझता है; राजाओंमें उसको नीच समझना चाहिये—वह प्रजापालनामका कलंक है—वह स्वार्थपर पिशाचका पाप-मय अवतार है! उसका राज्य घड़ीके लटकनकी समान सदाही चंचल है; अभीहै,—अभी नहीं है; वह अस्थिर और पतनशील है! मूल बात यह है कि जिस राजाकी इच्छाके ऊपर राज्यकी राजनीति बनाई जाती है, उसके राज्यमें सुख किसी प्रकारसे नहीं रहसकता। यदि सौभाग्यसे वह प्रजाहितैषी हुआ, तब तो वह राज्य उन्नतिके ऊंचे आसनपर अवश्यही पहुंच जाता है; परन्तु उस उन्नतिके चिरस्थाई रहनेमें बराबर सन्देह ही रहता है। संभव है कि कालचक्रके अनिवार्य फेरसे उस प्रजाहितैषी राजाका उत्तराधिकारी प्रजापीड़क और स्वार्थी हो, तब वह सुखका राज्य—सुवर्णका मंदिर—निश्चयही श्मशान और अन्धकूपके समान हो जायगा। संसारका यह [illegible] नियम है। अकबर और प्रता-पसिंहके राज्यमें पृथक् २ यह दोनों चित्र दिखाई देंगे।

राणाजीके संग एक पंक्तिमें भोजन करनेका जिन सर्दारोंको अधिकारहै, उनमेंसे कभी ही किसीको दोनों दिया जाताहै। किसी उत्सवके अवसरमें या और किसी अवसर पर राणाजी अपने भोजनगृहमें ऊंचे पदवाले सरदारलोगोंके साथ भोजन करनेको बैठते हैं, सरदारगण भी अपनी २ योग्यताके अनुसार उनके चारों-ओर विराजमान होतेहैं। उस समय बाहिरी गंभीरताको छोडकर राणाजी सम्पूर्ण सरल और स्वाधीनभावसे सबके साथ मीठी २ बातें किया करतेहैं। उस दिन जिसका भाग्य प्रसन्न होताहै, उसहीको राजप्रसाद मिलताहै। रसोइयेके हाथ उसहीके यहां "दूना" भिजवाया जाताहै। जब वह प्रसाद मनोनीत मनुष्यके पास भेजा जाता है, तब सरदारलोग उत्कंठित भावसे उसकी ओर देखा करतेहैं और उस भाग्यवानके भाग्यको बारम्बार धन्यवाद दिया करते हैं। उस दूनेके प्राप्त करनेसे राजपूत राजालोग भी अपनेको कृतार्थ समझते हैं। एक समय महाराज मानसिंहको वीरश्रेष्ठ राणा प्रतापसिंहका दूना न मिलनेके कारण जो मेवाडमें महा अनर्थ हुआ था, वही मेवाडकी शोचनीय दशाका कारण माना जाता है।

शीतलसेनी नामक किसी दासीके गर्भसे बनवीर उत्पन्न हुआ था, इस कारण मेवाडकी पुरानी रीतिके अनुसार उनको "पंचमपुत्र" कहते थे। संकटमें पडकर ही सरदारोंने उसको चित्तौरकी गद्दी दी थी। परन्तु उसका दिया हुआ "दूना" थोडेही ग्रहण करसकते थे। क्या पृथ्वीराजका पारशवपुत्र, मेवाडके ऊंचे कुलवाले सर्दारोंकी बराबर राजसन्मान पावेगा? बनवीरकी इच्छा तो ऐसीही थी, परन्तु उसकी इस इच्छाको कौन पूर्ण करेगा? ऐसा कौन है जो अपनी कुलमर्यादाको जलांजलि देकर दासीपुत्रकी जूंठन खायगा? पूर्वोक्त चन्दावत सर्दारोंको जब उसने दूना दिया, तब सर्दारने दूनेको फेर कर कहा "यदि वाप्पारावलके यथार्थ वंशधरसे मिलता तो वास्तवमें यह प्रसाद गौरवका विषय था, परन्तु शीतलसेनी दासीके पुत्रके हाथसे उसका ग्रहण करना महाघोर अपमानके सिवाय और क्या होसकताहै?" मूल बात यह है कि सरदारगण धीरे २ यहांतक अप्रसन्न हुए कि उदयसिंहका अभिषेक करनेके लिये कमलमेर किलेकी ओर चले। यह लोग आरावलीके गिरीमार्गके भीतर होकर जा रहे थे. इतनेहीमें सामनेसे ५०० घोडे और दश सहस्र बैल जिनपर बडे मोलकी सामग्री लदी थी— आतेहुए दिखाई दिये. एक सहस्र घुडसवार राजपूत इनकी रक्षा करतेहुए चले आते हैं। सुन भावसे पूछताछ करने पर उनको मालूम होगया कि यह सब द्रव्य

होमकरतेहैं ? संसारका व्यवहार न जाननेके कारणसेही पीछे राणाजीको अत्यन्त कष्ट भोगना पडा । इन्होंने समझा था कि ऐसेही सुखसम्पत्तिमें हमारा जीवन व्यतीत होगा । इस अनर्थकारी धारणानेही राजकार्यसे इनके मनको उचाट करदिया । प्रजाकी भलाई, राजाका कर्त्तव्य और राजकार्यका कुछ भी विचार इनको न रहा । राज्य क्या विलास लालसाकी तृप्ति साधन करनेका श्रेष्ठ उपाय है ? जिस शासन दंडमें हजारों आदमियोंका सुख दुःख मिला हुआहै, वह क्या केवल गेंदका खिलौना है? राजगुण समन्वित कौनसा शास्त्रदर्शी राजा इस बातका विचार नहीं करसकताहै ? और कोई करे या न करे—पर—राजपूत—कलंक—शिशोदीयकुलको डुबानेवाले उदयसिंहको इन बातोंकी कुछभी परवाह नहीं थी, तथा इसही कारणसे वह अत्यन्त अनाचार करताथा । यद्यपि विगतयुद्धमें पाखण्ड बहादुरकी प्रज्वलित समरपिपासा शान्तकरनेके लिये जाकर चित्तौरके चतुर मंत्रियोंने अपने प्राण खोदिये थे, तथापि राणाकी इच्छा होती तो वह किसी चित्तौरके राजनीति विशारदसे राजनीति सीखलेते; चतुर राजनीति विशारदके उत्साह, उद्दीपन, और सुशिक्षाके गुणसे उनके हृदयका अन्धकार दूर होजाता; ऐसा होने पर फिर कोईभी उदयसिंहको कापुरुष न समझता । परन्तु दुर्भाग्यसे विधाताने उनको राजगुणोंसे भूषित नहीं किया; नहीं तो उनकी ऐसी कुबुद्धि क्यों होती? और चतुर मंत्रियोंकी परामर्श पर क्यों नहीं ध्यान देते ? उदयसिंह कायर थे, राजा होनेसे क्या होताहै; जो हृदयमें राजगुण नहीं तो वह राजाही क्या? वह हृदय दूसरी सामग्रीसे बनाहुआ था, वह किसी दूसरीही शक्तिसे चलायमान था कि जो प्रलय करदेनेवाली थी । वह शक्ति एक तुच्छ वेश्याके द्वारा चलाई जातीथी । यह वेश्याही उदयसिंहकी सलाहदेनेवाली,—जीवन सहचरी विद्या बुद्धि, शिक्षा धारणा सबहीकी स्वामिनी थी । राणाजी सब प्रकारसे इसके दासथे, इनके भाग्यसूत्रको वह पिशाचिनी अपने हाथमें धारणकिये रहीथी; राणा उदयसिंह वेश्याके दास शिशोदकुलकलंकी, वीरवर बाप्पारावलका वंशधर—मेवाडका महाराणा:—चतुर गर्व खर्वकारी राणा संग्रामसिंहका पुत्र अभागा उदयसिंह, पापिनी गणिकाकी आज्ञाके अनुसार चलताहै; आज वह गणिका अभागे उदयसिंहके भाग्य और अभागिनी मेवाडभूमिके शासनदंडके चलानेको तय्यार हुई है । मूर्ख उदयसिंह उसकेही ऊपर भरोसा रखके पापवासनाके पंकिलकुंडमें डूबगया । राणाको इस प्रकारका आलसी और विलासमत देखकर चतुर अकबरने अपने अभीष्ट साधन करनेका अच्छा अवसर देखा ।

लगे। परन्तु किसीने बनवीरपर कोई अत्याचार नहीं किया। अपनी धन सम्पत्ति और परिवारवालोंको साथ लेकर वह बेखटके दक्षिणदेशमें जा बसा समयके अनुसार जो वहांपर उसकी सन्तान सन्तति हुई, वही नागपुरके भोंसले नामसे पुकारी गई।

संवत् १५९७ (सन १५४१–४२ ई०) में सरदारोंने उदयसिंहको चित्तौरके सिंहासनपर बैठाला। अभिषेकके समय सारी प्रजाको ही परमानंद प्राप्त हुआ। घर२में नाच और गाना होने लगा। * कुमलमेरके जिस शान्तिमय शैलशिखरपर उदयसिंहका बालकपन गुप्तभावसे बीता था, आज वे वहांसे विदा होकर राजधानीमें आये। कुंभमेरुकी रहनेवाली कोकिलकंठी राजपूतबालागणोंने मधुर स्वरसे गातेहुए राजकुमारको विदा किया; और स्तुतिपाठ करनेवाले स्तावक, भट्ट तथा बन्दियोंने मनोहरतासे आगमन संगीत गायकर राजकुमारकी अगौनी की। इस महोत्सवके समय जो गीत गाये गएथे, वह आजतक सुने जाते हैं; आजभी भगवती ईशानीके वार्षिकोत्सवके समय राजपूतबालागण एक साथ मिलकर उन गीतोंको गाया करती हैं। परन्तु वीरवर संग्रामकी शोचनीय पराजयके साथ २ जो कालनिशा भारतमें आई वह अबतक समाप्त न हुई। राणा रत्नकी प्रचंड ढिठाई, विक्रमजित्की घोर अजानता, और बनवीरकी अयोग्यतासे बराबर यह रात्रि अधिक२ अंधकारमयी होती गई। अंतमें उदयसिंहने उसको अपनी कापुरुषतासे पूर्ण किया! यह बात मेवाडके लिये कलंक होगई. इसके द्वारा मेवाडका एक पुराना नियम टूट गया। मेवाडमें राजा पर राजा होतेगये, चित्तौरका सिंहासन कभी सूना नहीं हुआ। परन्तु ऐसा अवसर कभी नहीं आया कि एक जारजके पीछे एक कापुरुष राजाके हाथमें शिशोदियाकुलका भार सौंपा गया हो: आज वही कुघडी आगई है! उदयसिंह कापुरुष है—मेवाडके सिंहासनपर बैठनेकी उसमें योग्यता नहीं: यदि उसकी कापुरुषता और अयोग्यताके साथ मिलान किया जाय तो राणा रत्न और विक्रमाजितके दोषभी तो गुणोंकी समान जान पडेंगे। इस अयोग्यतासे मेवाडका जातीय जीवन सदाके लिये नष्ट होगया। अबतक जिस मेवाड़को अजीत समझा जाता था. आज वह गौरव उसका जाता रहा।

महाकवि चंदने कहाहै,—"स्त्री अथवा व्यवहारको न जाननेवाला बालक जिस देशमें राजा होताहै. उस देशकी भलाई किसी प्रकारसे नहीं होसकती। परन्तु अभागिनी मेवाड़भूमिके अभाग्यसे यह दोनों दुर्निमित्त एकसाथ [illegible]। [illegible]

---

* इसको कुम्भमेरभी कहते हैं।

कर महारसे एकवारही विध्वंस होगएथे. उसकी स्वेच्छाचारिताने कितनेही आर्य-सन्तानोंके बड़े २ मुखोंमें कलंककी कालिमा लगाई है। अपनी अपूर्व अभिज्ञता और चतुरताके प्रभावसे जबतक उसने विजित दासपनकी जंजीरसे जकड़ेहुए अभागे, भ्रमसे अन्धेहुए भारतसन्तानके हृदयकी प्रीतिका उपहार नहीं पायाथा: तबतक वह निठुर शहाबुद्दीन और अलाउद्दीन आदि हिन्दूविद्वेषी कठोर हृदय-वाले बादशाहोंका भी सरताज गिना जाताथा। विचारकरनेसे निश्चय ज्ञान-होगा कि ऐसा कलंकित नाम कभी भी अन्याय और अविचारसे उनको नहीं दियागया है, परन्तु इसकलंकने सदाके लिये उनमें घर नहीं कियाथा। जवा-नीके भयंकर मदसे मतवाले होकर अकबरने कठोर दुराकांक्षावृत्तिको तृप्त करनेके लिये हिन्दुओंके हृदयमें जो कठोर घाव करदियेथे. बुढ़ापेके समय उन सब घावोंको चंगा करके कोटिकोटि भारतवासियोंका आशीर्वाद प्राप्त कियाथा।

राजधर्महीन अकर्मण्य उदयसिंहके हाथमें मेवाड़का राज्यभार सौंपागया-बाप्पा, समरसिंह, हमीर आदि राजनीति विशारद और शास्त्रज्ञ राजाओंने जिस शासनभारको चलाया. आज वही गुरुभार उदयसिंहके हाथ आया. यद्यपि पहिले महाराजागण अत्यन्त चतुर और कार्यकुशल थे तथापि राजकार्यको अत्यन्त बड़ाकाम जानकर सदा सावधान रहतेथे, आज अकर्मण्य उदयसिंहने उसही कार्यको अत्यन्त सहज और सीधा समझा: इसही कारणसे मेवाड़की दुःखराशि पूर्णमात्रासे परिपूर्ण होगई। शिशोदीयकुलकी अधिष्ठात्री देवीने प्रतिज्ञाकी थी कि बाप्पारावलके वंशधरगण जबतक मेरी आज्ञा पालन करेंगे, तबतक किसीप्रकारसे चित्तौरपुरीको नहीं छोडूंगी। बाप्पारावलके वंशवालोंने इतने दिनतक उसको संतुष्ट करनेके लिये अपने हृदयका रुधिरतक भी देदियाथा: इसकारण महादेवी-जीकी प्रतिज्ञा भी अबतक भलीभांतिसे पूर्ण हुईथी। स्वदेशकी स्वाधीनता रक्षा करनेके लिये गिह्लोट वंशके राजाओंने जो अद्भुत आत्मोत्सर्ग [illegible] प्रकाशमान उदाहरण दिखाया. उसका ध्यान करनेसे हृदय [illegible] [illegible] परिपूर्ण होजाताहै:- ऐसा कौन है जो चित्तौरकी स्वाधीनता [illegible] उन भगवती चतुर्भुजा देवीके सामने प्राण विसर्जन करनेको तय्यार न हो.- पहिला उदाहरण- दूसरा प्रकाशित उदाहरण- उसदिन- जिसदिन [illegible] कठोर हृदय [illegible] अलाउद्दीनकी [illegible] [illegible] चित्तौरपुरी भस्म होकर श्मशान होगई थी. उसदिन- जिसदिन [illegible] राजकुमा-रोंने अपने हृदयके रुधिरसे देकर चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवीको [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

था। अकबरके जन्मकालमें हुमायूँ दुर्दशाकी सीमातक पहुंच गया था, राज्य भ्रष्ट होकर इधर उधर भागता था। राज्यके पुनः प्राप्त होनेकी कोई आशाभी नहीं थी। तख्तपर बैठतेही बराबर दशवर्षतक हुमायूँने अपने झगडालू भाइयोंसे घोर विवाद किया। इसके प्रत्येक भ्राता अलग २ एक २ राज्यके स्वामी थे, परन्तु इससेभी उन्हें संतोष नहीं हुआ, वे दुराकांक्षाके वशमें होकर उसके हाथसे दिल्लीका सिंहासन छीन लेनेकी फिक्रमें लगे हुए थे। परन्तु इस दुरभिलाषाका फल उनको हाथों हाथ मिल गया, पठानवीर शेरशाहने प्रचंड वेगसे आकर उन सबको दमन किया, तथा बाबरका सिंहासन छीनकर उसपर पठानोंका अधिकार जमाया।

जिस दिन कन्नौजके युद्धमें भारतका राजमुकुट हुमायूंके मस्तकसे गिर पडा, उसही दिनसे उसके लिये घोर विपत्तिका सूत्रपात हुआ, शत्रुगण पीछे पडकर वारंवार सताने लगे। हुमायूँको कहींभी विश्राम न मिला! वह जहांपर भागकर जाता, शत्रुगण वहीं जाकर उसका पीछा करते थे। यमुनाके किनारेपर बसेहुए सुन्दर आगरेको छोडकर हुमायूँ लाहौरमें चला गया; वहांपर भी विश्राम न मिला, दुर्जन शत्रुओंने वहाँभी पीछा किया। अंतमें निरुपाय हो अपने परिवारवर्ग और कितने एक विश्वासी नौकरोंको लेकर सिन्धके राज्यमें गया। मार्गमें अत्यन्त कष्टपाया। अनाहार रहने और कठोर परिश्रम करनेके कारणसे हुमायूँको अत्यन्त व्याकुलता हुई। दूर देशमें किसीने उसको सहारा नहीं दिया। दो एक दिनके लिये दो एक हिन्दू राजाओंने अपने यहां रक्खा फिर निकाल दिया। क्रमानुसार हुमायूंके कुभाग्यने उसको बहुतही व्याकुल किया, उसको किसी प्रकारका भरोसा न रहा। तथापि वह निरुत्साह नही हुआ। उत्साहपर भरोसा रखके यथासाध्य बलके साथ मुलतान और समुद्रके किनारेतकके सिन्धुतीरवर्त्ती सब किलोको अपने काबूमें करनेकी चेष्टा की: परन्तु सब परिश्रम वृथाही गया। शनिग्रहकी विश्वदाही विद्रुपाग्निमें उसका समस्त यत्न और समस्त उत्साह भस्म होगया। इसपर एक औरभी कठोर विपत्ति आपडी. उसके साथकी कुछ सेना और कईएक सरदार विद्रोही होगये। तब तो हुमायूँको चारों ओर अंधकार दिखाई दिया। जो लोग इतने दिनतक एक साथ रहते व कष्ट भोगते हुए बादशाहकी आज्ञामें रहे. आज उनको भी बागी होते देखकर हुमायूं अत्यन्त दुःखित हुआ। उन आदमियोंने— जो कि बागी होगये थे आगे जानेसे इनकार किया। विवश होकर उनको वहीं छोडा. और

कहां तो अकबरको जीतकर सरदार और सामन्तोंको आनन्द प्राप्तहोता, और कहाँ अब उसके बदलेमें शोक प्राप्त हुआ, आपसके झगडे झंझटसे राज्यमें भयंकर अशान्ति उत्पन्न हुई। चित्तौरकी ऐसी अशान्तिका वृत्तान्त जानकर अकबर अपने निरादरका पूरा बदला लेनेको तइयार हुआ और बडी भारी सेना साथ लेकर चित्तौरको चला। अकबरकी उमर उस समय पचीस वर्षकी थी; शरीरमें विपुलबल और हृदयमें प्रचंड उत्साह था। उसके अखण्ड प्रतापसे प्रायः समस्त भारतवर्ष उसके चरणोंमें लोटताथा, अनेक दुर्जय दुर्ग उसके भयंकर विक्रमसे विध्वंस होकर चूर २ होगयेथे; बहुतसे राजपूत राजालोग उसकी आज्ञाका पालन करनेके लिये हाथ जोडे हुए खडे रहतेथे। फिर मेवाडराजाका शिर किसप्रकारसे उठाहुआ रहसकता है? मेवाडका गर्व किसप्रकारसे बनाहुआ रहसकता है? मेवाडके राजालोग किस कारणसे उसके वशमें न होंगे! मुगल सम्राटकी प्रचंड अनीकिनी प्रचंड प्रभावसे मेवाडके भीतर बढती चलीगई। चित्तौरके निकट बसेहुए पण्डोली×नामक गांवसे बस्सी जानेके समय, पाँच कोशका जो श्रेष्ठ राजमार्ग पडता है, उसके ही ऊपर भागमें मुगल शाहन्शाहकी बडीभारी छावनी पडी। यहांपर संगमरमरका एक शुण्डाकार स्तम्भ भी बनाहुआहै। यह स्तम्भ "अकबरका दीवा" अर्थात् अकबरका दीपक इसनामसे प्रसिद्धहै। अबतक यात्रीगण उस दीपागार अथवा मेवाडके अधः पतनके प्रकाशमान स्मृति स्तम्भको दूरसे देखकर ही चित्तौरकी अतीत दुरवस्थाका विचार करते २ आंसू बहतेहुए चले जातेहैं।

पडेंगे। तवारीख फरिस्तामें उस शोचनीय दुर्दशाका प्रदीप्त * चित्र खेंचागया-है। इस तवारीखमें लिखाहै कि मुगलवीर हुमायूंकी यह दुर्दशा देखकर अमरकोटके सोदाराजको अत्यन्त दुःख हुआ और उसने आदर पूर्वक हुमायूंको अपने यहाँ आश्रय दिया था।

---

* दोपहर रातके समय अपने घोडेपर चढकर हुमायू अमरकोटको भागा। यह अमरकोट ठाटा (ठट्टा) नगरीसे एक सौ कोश दूर है। लम्बामार्ग चलनेसे अत्यन्त कातर हो बादशाहका घोड़ा तो मार्गमेही मर गया। तब हुमायूँने अपने पारिषद तुर्दी बेगसे उसका घोडा मांगा। परन्तु राजमर्यादा उस समय इतनी हीन होगई थी कि मुसाहबने बादशाहकी हुक्मे अदूली की। उसके कठोर हृदयमे लेशमात्र भी दया नही आई। इस ओर शत्रुगणभी हुमायूंका पीछा करते २ अत्यन्त निकट आ पहुँचे। उसकाल अपनी रक्षाका कोई उपाय न देखकर बादशाह ऊंटपर सवार हुआ। यह देखकर "नादिमकोका" नामक एक आदमीने अपनी बूढ़ी माताको घोडेसे उतारकर वह घोडा हुमायूंको दिया। और बादशाहके उस ऊटपर अपनी वालिदाको चढाकर आप पैदल चलने लगा। " रास्ता अत्यन्त भयंकर और रेतीला था, पानीका नाम नहीं, प्यासके मारे सिपाहियोको घोर कष्ट होनेलगा। कोई तो बेहोश होगया, कोई मरगया,—चारोओर हाहाकार हुआ, प्रत्येक दिशासे प्यासोका आर्त्त नाद और रोना सुनाई आता था। इतनेहीमे उन कष्टोको बढाताहुआ समाचार आया कि शत्रुलोग अत्यन्त निकट आगये। इस समाचारको पातेही हुमायू औरभी सख्त हुआ और उसने उत्साहके सहित अपनी सेनाको पुकारकर कहा " जिनको लड़नेकी ताकत है, वह यहापर रहैं, और बाकी लोग रसद व औरतोको साथ लेकर आगे बढैं।" परन्तु शत्रुओके आनेके कोई [illegible] न पाये-गये, तब बादशाहभी कुल आदमियोको साथ लेकर आगे बढ़ा।

"उस विपत्तिके समयमे अन्धकारमयी रात्रि कालरूप धारण करके [illegible] आन पहुँची। इतना अधकार हुआ कि हुमायूंकी सेनाके लोग जो पीछे रह गये थे रास्ता भूलकर भटकने लगे। उनको प्रभात होतेही शत्रुओने घेर लिया। उन भटकते हुओमे शेखअलीनामक एक साहसी व्यक्ति था। इस शेख-अलीने केवल बीस आदमियोकी सहायतासे शत्रुके रोकनेकी प्रतिज्ञा की और "[illegible]" करके शत्रुओके सामने डर गया। केवल एकही तीर चलाकर शेखअलीने दुश्मनोके [illegible] जमीनपर गिरा दिया। अपने सरदारको गिरता हुआ देखकर दुश्मनोकी फौज [illegible]। विजयी मुगलसेनाने दुश्मनोका पीछा करके उनके घोडे और ऊंट छीनलिये। और अपना मार्ग लिया। कुछ दूरपर जाकर हुमायूको एक कुएके ऊपर बैठाहुआ देखा। [illegible] हुमायूको यह कुआँ मिला था। शेखअली उसको देखकर परम प्रसन्न हुआ और अपना [illegible] वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया।

"दूसरे दिन उस कुएको छोडकर अपनी सेना सहित हुमायू [illegible]। [illegible] रास्तेमे दो दिनतक कोई जलाशय न पानेसे पहिलेसेभी दुगुना कष्ट हुआ। [illegible] कुआ देखा। परन्तु वह इतना गहरा था कि पानी [illegible]। [illegible] एकही ढोल था, इसकारण ढोल [illegible] तत्काल [illegible] जायगा। परन्तु उस सूचनाको कौन सुनता है! [illegible]

को आने लगी बन्दूकोंकी अग्निमय गोलियोंको चला २ कर मुगलसेना अनेक चन्दावत वीरोंको गिराती हुई आगे बढ़ने लगी। वीरवर सहीदासने एक पांवभी पिछाड़ीको नहीं हटाया। एक२करके उसके बहुतसे सिपाही गिरगए, तथापि उसका उत्साह ज्योंका त्यों बनारहा, जबतक उसके प्राणने शरीरको नहीं छोडा, जबतक उसकी नाड़ियोंमें रुधिरका प्रवाह रहा और जबतक उसकी वज्रमुष्टि शिथिल न हुई, तबतक किसीप्रकारसे शत्रुगण तोरण द्वारमें नहीं घुसने पाये।

चन्दावत वीर सहीदासकी इस अद्भुतवीरताको देखकर और राजपूतलोगभी प्रचंड उत्साहके साथ शत्रुओंका संहार करने लगे। परन्तु जिन दो महावीरोंने दुर्दान्त यवनोंका गर्व खर्व करनेके लिये मेवाडके उस शोकाच्छन्न भाग्याकाशको कुछ देरके लिये निकट उज्ज्वल प्रकाशसे चमका दियाथा, जिनकी लोक-विस्मयकारी अद्भुतवीरता और रणनिपुणताका वृत्तान्त लपटकी समान चमक कर मेवाड़के इतिहासके इस अँधेरे अध्यायको प्रकाशित कर रहाहै। स्वयं अकबरने उनकी वीरता तथा रणनिपुणताको अक्षय रखनेके अभिप्रायसे स्वयं उन दोनोंका वृत्तान्त प्रकट कियाहै। इन दोनों वीरोंका नाम जयमल और पत्ते* था। जयमल विदनोरका राजा था। मारवाडके साहसी सामन्तोंमें यह विख्यातथा इसका जन्म राठौरकुलकी शाखा मेरतिया गोत्रमें हुआथा। पत्ते केलवाडेका स्वामी था; यह चन्दावत् कुलकी शाखामें उत्पन्न हुआ था। इसका गोत्र जगवत था। इन दोनों महावीरोंका आजतक राजपूतलोग जप किया करतेहैं: आजतक प्रातःका-लके समय विस्तरसे उठकर प्रातःकालमें स्मरण करने योग्य महापुरुषोंकी पवित्र नाम मालाका जप करनेके समय वे लोग इन महावीरोंके पवित्र नामकोभी जप करते हैं। राजपूतोंकी स्त्रियें आजतक सन्ध्यावाती करनेके समय जयमल और पत्तेकी याद करके अपने लडका लड़कोंका मंगल मनाया-करतीहैं, तथा गृहस्थोंकी लड़कियोंभी अटा पीसनेके समय भट्टकविजनोंके बनाए-हुए उनकी वीरताके गीतोंको सुन्दर वाणीसे गाया करती हैं। जबतक इस संसारमें वीरताका आदर रहेगा, जितने दिनतक आर्यवीर राजपूतलोगोंके हृदयमें गतकालकी वीरताका एक तिनकामात्रभी शेष रहेगा, बीते हुए दिनकी एक रेखाभी उनके स्मृतिरूपी वक्षपर अंकित रहेगी, तबतक किसी प्रकारभी जय-मल और पत्तेका नाम इस संसारसे लोप नहीं होगा—ऐसा किसीमें सामर्थ्य न[illegible]

* [illegible]

बडे बूढोंके प्राचीन राज्यमें, कन्धारके पहाडी देशोंमें और कभी काश्मीरके देवकाननमय गिरिमार्गके ऊपर भाग्यकी कठोर आज्ञाको मानकर धीर और अचलभावसे विराजमान रहताथा । इस बारह वर्षके समयमें भारतवर्षके सिंहासनके ऊपर पठानोंके उत्तराधिकारियोंमें घोर झगडा झंझट पैदा हुआ । क्रमानुसार छः पठान बादशाह अल्पसमयके लिये दिल्लीका शासन दंड चलाय करके इस लोकसे विदा होगये । इनके समयमें उत्तराधिकारित्वकी प्राचीन विधि भली भांतिसे उलट पुलट होगई थी । उन बादशाहोंमें जिसका बल अधिक था उसने ही सिंहासनपर अधिकार किया । "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत चारितार्थ होगई । जिस समयमें वीरवर हुमायूं काश्मीरके निकट पहुँचगया-था, उस काल दिल्लीके तख्तपर बैठकर सिकन्दर अपने भाइयोंके साथ झगडा कर-रहा था । सिकन्दरको इन झगडोंमें लगाहुआ देखकर बुद्धिमान हुमायूंने अपने कामको निकालनेका यह अच्छा अवसर देखा । अल्पकालमें ही उसके लिये शुभ अवसर आगया।उसने देखा कि धीरे२इन झगडोंसे सिकन्दरका नाश हुआ जाताहै। तब तो तत्काल सिन्धुनदके पार हो सिकन्दरसे युद्ध करनेके लिये तइयार हुआ । उसकी रणतुरहीके प्रचण्ड निर्घोषसे अभागे पठान बादशाहके ज्ञाननेत्र खुल-गये ! वह समझगया कि अनर्थकारी घरेलू झगडाही इस विपत्तिके लानेका कारण हुआ । बादशाह, हुमायूँके आनेसे निराश नहीं हुआ, वरन अपने शत्रुकी गति रोकनेके लिये बडी भारी सेना इकट्ठी करके आगे बढा । सरहिन्दूनामक स्थानमें दोनों दल भिडगये । हुमायूँने अपने जवान पुत्र अकबरको इस संग्राममें सेनापति बनाकर युद्ध आरंभ करनेकी अनुमति दी । शीघ्रही दोनों दलोंमें घोर संग्राम होने लगा । एक ओर समुद्रसमान पठान अनीकिनीका प्रचण्ड सिंहनाद, दूसरी ओर समरविशारद कितने एक मुगलवीरोंका अद्भुत रणरंग ! तरुणवीर अकबरके तेजस्वी आचरणसे, धीरे २ समरभूमि अत्यन्त भयंकर होगई ! अकबर उस समय केवल बारह वर्षका बालक था । रण-पंडित प्राचीन वीरगणोंने प्रथम तो उसकी वीरता और तेजस्विताको पागलपनका प्रलाप समझा था, परन्तु जैसे २ युद्ध प्रचंड होता गया.वैसे २ही उस तरुण मुग-ल वीरकी अद्भुत वीरता महावेगसे बढने लगी।इस वीरताको देखकर सबके हृदय प्रमुदित होगएः सबवीरगण उसकी अपूर्व वीरतासे उत्साहित होकर उन्मत्तकी समान शत्रुकी विशाल सेनाकी ओरको प्रचण्ड तेजसे बढने लगे । उन लोगोंके उन अल्पमात्र मुगलोंकी प्रचण्ड वीरताके आगे—अगणित पठान सेना मथित, निमर्दित और खंड २ होकर भूतलशायी हुई ।

उसको साथ लिये हुए पर्वतसे नीचे उतरी। और २ वीरबालाओंनेभी फत्तेकी माताका उत्साह देखकर समरवेषधारणकर रणभूमिको पयान किया। इन समस्त वीरबालाओंने श्रवणभयंकर रणबाजोंके साथ वीररस पूर्ण गीत गाते २ भयंकर रणचंडी मूर्तिसे मुसलमानोंकी सेनापर आक्रमण किया।

चित्तौरके वीरगण चुपचाप और वज्राहतकी समान खड़े होकर विस्मय विस्फारित अचल नेत्रोंसे उन वीरनारियोंकी अलौकिक वीरताको देखने लगे। जिन्होंने किसी समयभी अन्तःपुरकी छायाको नहीं छोडा था, इतने दिनोंतक सुकुमार आचार व्यवहार करनाही जिनके जीवनका मुख्य उद्देश्य था, आज वे समस्त स्नेह, समस्त ममता और समस्त सुकुमार अनुष्ठानोंको पानी देकर घोडेपर सवार हो देशकी रक्षाके लिये प्रचंड मुगलसेनाके साथ संग्राम कररही हैं? राजपूत वीरगणोंने अपने नेत्रोंसे यह व्यवहार देखा; कि वीरवर पत्तेकी माताने अपनी पुत्रवधू तथा सहेलियोंके साथ समरमें जायकर बड़े २ मुगलवीरोंका संग्राम करडाला तथा जब देखा कि अब यवनोंके हाथसे बचनेका हमें कोई उपाय नहीं रहा तब अपनी २ तलवारसे अपना २ हृदय छेदकर सदाके लिये उस संग्रामभूमिमें सो गई।

अपनी कन्या, बहन और स्त्रियोंको यह अद्भुत रणरंग करके प्राण न्योछावर करते देखकर चित्तौरके वीरगण समस्त संसारीबन्धन और माया ममताको भूलकर उन्मत्तकी समान होगये। उन्मत्तकी समान झपटते हुए शत्रुकी सेनापर दौडे। मुगलोंकी विशाल अनीकिनी प्रचंड वेगसे उफनते हुए समुद्रकी समान भयंकर विक्रमके सहित चित्तौरके किलेकी ओर बढने लगी। प्रलयकालीन मेघोंकी समान उनकी विकट तोपें जलते हुए गोलोंकी न्योछावर करके श्रवण-भैरव सिंहनादसे गर्ज उठीं। उन गोलोंके प्रहारसे सैकडों राजपूत खंड २ होकर आकाशको उछलने लगे—सैकडों राजपूत वीरोंकी वज्रमुष्टिसे विशाल धनुषबाण छूट पडे! इस प्रकार धीरे २ राजपूतोंकी सेना घटती गई; परन्तु वे तौभी निरुत्साह न हुए। उन्होंने किसी भांतिसेभी शत्रुओंकी शरणमें न जाना चाहा। शरण!—क्षत्रियकुलमें जन्म लेकर देशवैरी मुसलमानोंकी शरण! धिक्कारके योग्य तथा नीच उपायका सहारा लेना राजपूतोंने उत्तम न समझा! ऐसे जीवनसे क्या प्रयोजनहै?—शरणमें जाना तो दूर रहा, वह पापी चिन्ताभी तो राजपूतोंके हृदयमें उदित नहीं हुई। स्वदेशरक्षा और आत्मोत्सर्गके वीरमंत्रसे उत्साहित होकर वे लोग उन्मत्तकी समान होगये, और हाथके तेजस्त्रको नचा २ कर [illegible]

पिताकी शोचनीय मृत्युके कुछ दिन पीछे अकबर सिंहासनपर बैठा। सिंहासनपर बैठनेके कुछही दिन पश्चात् शत्रुओंने दिल्ली और आगरेको छीनकर अकबरको वहांसे निकाल दिया। तब अकबरने विवश हो पंजाबके एक देशमें जाकर आश्रय लिया। परन्तु सौभाग्यसे उसकी यह कुदशा शीघ्रही दूर होगई; बैरमखांने शीघ्रही उसके छिने हुए राज्यको शत्रुओंके हाथसे उद्धार करदिया। इस बैरमखांको भारतीय सली * भी कहते हैं। उसके असीम विक्रम और चतुरताके प्रभावसे अकबरने अपने सिंहासनको पर्वतकी समान दृढ करलियाथा। कालपी, चन्देरी, कालिंजर, सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड और मालवा यह देश कुछकालमें ही उसके हाथ आगये। अठारह वर्षका तरुण युवक इस विशाल राज्यको भलीभांतिसे शासन करने लगा।

इस विशाल भारत साम्राज्यपर विराजमान होनेके थोडेही दिन पीछे शहन्शाह अकबरने राजपूतोंके विरुद्ध युद्ध घोषणा की तथा सबसे पहिले मारवाड राज्यकी ओर अपनी सेनाको साथ लेकर बढा। जिस समय हुमायूंका भाग्य विगडरहाथा और कष्टपर कष्ट बीत रहेथे, दुराचारी मालदेवने उस समय उसको बांधना चाहा था; जान पडताहै कि कदाचित् इस दुराचारका बदला लेनेके लिये ही अकबरने उसपर चढाई की हो! माडवारराज्यमें मैरतानामक एक समृद्धनगर है। उक्त राज्यके मध्य सम्पत्तिशालितामें इस नगरका दूसरा नम्बर है। मुगल सम्राट्ने इस नगरको अत्यन्तही विदलित किया। शहन्शाहका अखण्डप्रताप और तेज देखकर अम्बरका राजा भरमल्ल अत्यन्त भीत हुआ और होनहार चढाईसे रक्षा पानेकी आशासे अपने पुत्र भगवानदासके साथ अकबरके सामन्तोंमें मिलगया। कायर अम्बरराजने केवल अपनी स्वाधीनताको ही नहीं बेचा, वरन सम्राट्की प्रसन्नता प्राप्त करनेके लिये अपने पवित्रकुल गौरवको पानी देकर अपनी बेटीको शाकतीय यवनराजके हाथमें अर्पण करदिया! पवित्र कुलगौरव और अत्यन्त प्राणधारी स्वर्गीय स्वाधीनताके अदलेम

---

* मुगल सम्राट अकबर और फ्रान्सका चौथा हेनिरी, तथा बैरमखाँ, [illegible]; यह चारो प्रायः एक समयमें ही विद्यमान थे। आश्चर्यका विषय है कि इन दोनों [illegible] मन्त्रियोंका चरित्र प्रायः एकही प्रकारका था, परन्तु [illegible] बैरमखाँके [illegible] भिन्नता पाई जाती है। बैरमखाँ अत्यन्त तेजस्वी और [illegible] था। [illegible] जिस मुगलराज्यको दृढ़ किया, फिर अन्तमें इसकी [illegible] विद्रोही हुआ, [illegible] उसको देशनिकाला हुआ। देशनिकालेसे उसका [illegible] नहीं [illegible], परन्तु [illegible] गुप्त घातकने किसी दूरीने उसका [illegible] किया। बैरमखाँके [illegible]

उन पवित्र पीले कपडोंको कलंकित नहीं किया—किसीने राजपूत-गौरव और माहात्म्यको जलांजलि नहीं दी।वीरजननी चित्तौरपुरी आज वीररहित होकर शोचनीय श्मशानकी भांति वनगई है-कनकनगरीकी आज शोचनीय दशा होरही है। आज तीस हजार राजपूत वीरोंने हृदयके रक्तको देकर—"जगद्गुरु" "नरपाल" अकबरकी रुधिर प्यास बुझानेका यत्न किया और उसकी प्रचंड विद्वेषानलमें पतंगकीसमान दग्ध होगये।अगणित नरनारियोंके रुधिरकी कीचडसे चित्तौरके समस्त स्थान भयंकर होगये।उन स्थानोंके ऊपर शोणित लगे छिन्न भिन्न अगणित मृतक देह इधर उधर पडे हैं।रुधिरकी उस कीचडसे अपने पांवोंको भिगोता, उन छिन्न-भिन्न मृतक देहोंको प्रसन्न चित्तसे ठुकराता हुआ—उस भयंकर चित्तौर श्मशानको औरभी अत्यन्त भयंकर करता हुआः निठुर कठोर पाषाण हृदय अकबर चित्तौर के भीतर घुसा। देशविद्रोहके अनेक राजपूतोंके सरदार सामन्तने तथा १७०० (सत्रहसौ) राणाजीके अति निकटके सम्बन्धियोंने उस कुदिनमें चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये अपने प्राण देदिये केवल ग्वालियरके तुवर राजाने एक और होनहारकी कठोर लिपिका पालनकरनेके लिये उस भयंकर समरमेंसे अपने प्राण वचा लिये थे। नौ रानिये, पांच राजकुमारियें, दो बालक और समस्त सरदारकुलकी स्त्रियोंने उसदिन उस कठोर मुहूर्त्तमें जुहार व्रतको समाप्त करनेके समय अथवा कठोर रणरंगमें अपने प्राणोंको बलिहार करदिया था। उस भयंकर दिनमें जो सत्यानाश चित्तौरका हुआथा वह भूलनेके लायक नहीं है जबतक इस संसारमें "हिन्दू" नाम अचल रहेगा, तबतक कोई इस सत्यानाशकी कहानीको नहीं भूलेगा। जिस दिन चित्तौरके ऊपर यह सर्व संहारकारी विपत्ति पडी, उसही दिन राजपूत स्वाधीनताकी महाशक्ति रूपिणी भगवती महामायाजी चित्तौरपुरीको छोडकर चलीगई। उसहीदिन, उस कराल "आदित्यवार (रविवार)"* के दिन, पवित्र गिह्लोटकुलके अत्यन्त पूजनीय देवता भुवनप्रकाशक भगवान दिननाथने, एकबार अपनी गौरवमय किरणका चित्तौरके ऊपर विस्तार करके सदाके लिये नयबन्द कर लिये! उस दिनसे लेकर आजतक फिर वह सर्गौरव रश्मिसपात किसीने न देख पाया! जो चित्तौर इतने दिनतक स्वाधीनता और सनातन धर्मका अभेद्य किला समझा जाता था, आज उसकी दारुण दुर्दशा है। जिसकी शोभा और सुन्दरता एक समय इन्द्रपुरी अमरावतीको लजाती थी, आज

* [illegible]

पिताकी शोचनीय मृत्युके कुछ दिन पीछे अकबर सिंहासनपर बैठा। सिंहासनपर बैठनेके कुछही दिन पश्चात् शत्रुओंने दिल्ली और आगरेको छीनकर अकबरको वहांसे निकाल दिया। तब अकबरने विवश हो पंजाबके एक देशमें जाकर आश्रय लिया। परन्तु सौभाग्यसे उसकी यह कुदशा शीघ्रही दूर होगई; बैरमखांने शीघ्रही उसके छिने हुए राज्यको शत्रुओंके हाथसे उद्धार करदिया। इस बैरमखांको भारतीय सली * भी कहते हैं। उसके असीम विक्रम और चतुरताके प्रभावसे अकबरने अपने सिंहासनको पर्वतकी समान दृढ करलियाथा। कालपी, चन्देरी, कालिंजर, सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड और मालवा यह देश कुछकालमें ही उसके हाथ आगये। अठारह वर्षका तरुण युवक इस विशाल राज्यको भलीभांतिसे शासन करने लगा।

इस विशाल भारत साम्राज्यपर विराजमान होनेके थोडेही दिन पीछे शहन्शाह अकबरने राजपूतोंके विरुद्ध युद्ध घोषणा की तथा सबसे पहिले मारवाड राज्यकी ओर अपनी सेनाको साथ लेकर बढा। जिस समय हुमायूंका भाग्य बिगडरहाथा और कष्टपर कष्ट बीत रहेथे, दुराचारी मालदेवने उस समय उसको बांधना चाहा था, जान पडताहै कि कदाचित् इस दुराचारका बदला लेनेके लिये ही अकबरने उसपर चढाई की हो! माडवारराज्यमें मैरतानामक एक समृद्धनगर है। उक्त राज्यके मध्य सम्पत्तिशालितामें इस नगरका दूसरा नम्बर है। मुगल सम्राट्ने इस नगरको अत्यन्तही विदलित किया। शहन्शाहका अखण्डप्रताप और तेज देखकर अम्बरका राजा भरमल्ल अत्यन्त भीत हुआ और होनहार चढाईसे रक्षा पानेकी आशासे अपने पुत्र भगवानदासके साथ अकबरके सामन्तोंमें मिलगया। कायर अम्बरराजने केवल अपनी स्वाधीनताको ही नहीं बेचा, वरन सम्राट्की प्रसन्नता प्राप्त करनेके लिये अपने पवित्रकुल गौरवको पानी देकर अपनी बेटीको शाकतीय यवनराजके हाथमें अर्पण करदिया! पवित्र कुलगौरव और अत्यन्त प्राणधारी स्वर्गीय स्वाधीनताके बदलेमें

---

* मुगल सम्राट अकबर और फ्रांसका चौथा हेनिरी, तथा बैरमखाँ, [illegible] यह चारो प्रायः एक समयमें ही विद्यमान थे। आश्चर्यका विषय है कि इन [illegible] मन्त्रियोंका चरित्र प्रायः एकही प्रकारका था, परन्तु [illegible] भिन्नता पाई जाती है। बैरमखाँ अत्यन्त तेजस्वी [illegible] जिस मुगलराज्यको [illegible] किया, फिर अन्तमें [illegible] उसको देशनिकाला हुआ। देशनिकालेमें [illegible] गुप्त घातकी [illegible] [illegible]

वीरबालक फत्तेकी लोकविस्मयकर वीरताको अचल रखनेके लिये उसने दिल्लीमें अपने किलेके सिंहद्वारपर एक ऊंचे चबूतरेके ऊपर उन दोनोंकी दो पाषाणमूर्तियें प्रतिष्ठाकी थीं। ×

कार्थेज नगरके भुवनविदित महावीर हनिबलके प्रचण्ड प्रतापसे कनानामक समरभूमिमें लसवाले जिन सवारोंने प्राणत्याग कियेथे: विजयी हनिबलने उनकी अंगुठियोंको तोलकर अपनी जयका परिमाण निर्द्धारित किया था। वैसेही अकबरने मृतक राजपूतोंके यज्ञोपवीतोंको तराजूमें तोलकर अपनी जयका परिमाण प्रमाणित किया! तोलमें वे समस्त यज्ञोपवीत ७४॥ मन हुए - ! चित्तौरकी शोचनीय दुर्दशाका वह प्रकाशमान उदाहरण—वह ७४॥ मन 'तिलक' अथवा शपथकी भांति उस दिनसे व्यवहारित होने लगे। वणिक, सेठ, गृहस्थ, प्रेमिक, सबही उसदिनसे उस शोणितमय ७४॥ चिह्नको अपने २ गुप्तपत्रके पीछे या

अकबर और उदयसिंह एकही उमरमें गद्दीपर बैठे थे * पिताकी शोचनीय मृत्युके पीछे तेरह वर्षकी उमरमें जिसदिन अकबरको भारतवर्षकी गद्दी प्राप्त हुई, उसही दिन शाकतीयकुलका भविष्य भाग्याकाश उज्ज्वल प्रकाशसे प्रकाशमान होगया; परन्तु तब भी अकबरको शान्ति प्राप्त न हुई। वह जिस पदपर पहुँचा था, उसके मार्गमें बहुतसे विघ्न थे, उन सब विघ्नोंको दूर करके निष्कण्टक और निरातंकभावसे राज्य शासन करना उसको प्राप्त होगा या नहीं, इसही विचारमें अकबर गोते खाने लगा। करोड़ों आदमियोंके भाग्यकी डोर जिसके हाथमें लगी हुई है, आज वह पुरुष भी अपने भाग्यकी चिन्तासे उत्कंठित हो-रहा है। परन्तु विधाता एकान्तमें बैठकर जो उसकी भाग्य लिपिको लिख रहा-था और आशा पूर्ण भगवती सिद्धिदायी आनन्दमूर्ति धारण करके जो उसके शिरहाने निरन्तर विराजमान रहती थीं, इस बातका समाचार तो शहन्शाहको अबतकभी ज्ञात नहीं था। विधाताके अपूर्व विधानसे जिस नक्षत्रमें अकबरकी जन्मरात्रिमें अमरकोटके मयदानमें प्रसन्न प्रकाशका विकाश किया था, उसकी ही विमल विभासे खिंचकर महानुभाव बहराम तथा पंडित और धर्मात्मा अब्बुलफ़ज़लकी समान चतुर मंत्रीगण उसको प्राप्त हुए थे। अकबर और उदयसिंह यद्यपि एकही वयसमें सिंहासनपर बैठे, परन्तु दोनोंके चरित्रमें किंचित् भी मेल नहीं था। जन्मसे ही अकबर विपत्तिकी गोदमें रहा था; अस्थिर भाग्यचक्रके अनिवार हेर फेरसे उसने बालकपनसे संसारकी कितनी नई२ मूर्ति देखीं, संसारकी कितनी प्रचंड तरंगोंकी चोट अपने हृदयपर सहीं, उसका विचार कौन कर सकता है; इसही कारणसे उसने मनुष्यकी प्रकृतिके गूढ़ तत्त्वमें जिस प्रकारका ज्ञान प्राप्त किया था, वैसा ज्ञान उदयसिंहको कहां है? उदयसिंह भी बालकपनसे एकान्तमें प्रतिपालित हुआ था; कमलमेरकी काननावृत शैलमालाके सिवाय दूसरी शोभा उसके देखनेको नहीं मिलती थी। उस संकीर्ण पहाड़की चोटीपर बनेहुए महलमें रहकर वह बाहरका कोई भी समाचार नहीं जानते थे।

अतएव संसारनीतिका कोई सूत्रही उदयसिंहको ज्ञान नहीं था। जिसको अपने जन्मका विवरणभी ज्ञात नहीं, बालकपनसेही जो एकान्तके बीच पराये घरमें आदरके साथ पालित होरहाहै, जो एक पलभरके लिये भी विपत्तिकी अंकुशके आघातसे पीड़ित नहीं हुआ, जिसने एक मिनटके लिये भी संसारी दुर्दिनोंकी विकट भृकुटिको नहीं देखा; उसको संसारी व्यवहारमें किसप्रकार चतुरता प्राप्त-

* सिंहासनपर बैठनेके समय अकबर और उदयसिंहकी उमर तेरह २ वर्षकी थी।

वासी हुए उस समय इसके पच्चीस(२९) पुत्र जीवित थे । यह लोग "राणावत्" नामसे विख्यात हो समयानुसार विशाल शाखा प्रशाखाओंमें विभक्त होगये । आज राणावत, पुरावत, अथवा कनौतगण उनकेही विस्तारित वंशतरुकी शाखा–प्रशाखा हैं । अन्त समयमें रीत शासन दंडके लेकर उदयसिंह अपने पुत्रोंमें विषम झगडेका बीज बोगया । सनातन उत्तराधिकारी विधिका निरादर करके वह अपने अत्यन्त प्यारे छोटे पुत्र-जोगमलकोही अपना उत्तराधिकारी निश्चय करगया । इससेही झगडेका सूत्रपात हुआ । सिद्धान्त यह है कि राणाजीके अभिप्रायानुसार जोगमलही मेवाडके राजसिंहासनपर बैठा । मेवाडके एक राजाका अन्त्येष्टी संस्कार और दूसरे राजाका राज्याभिषेक थोडेसमयमें ही पूर्ण होजाता है परिवारके लोग कुलपुरोहितके स्थानपर जाकर शोक करते रहतेहैं, और इस ओर नवीन भूपतिका अभिषेकोत्सव समाप्त करनेके लिये परिजन, पुरजन और मंत्रीगण राजभवनको अनेक प्रकारसे सजाया करते हैं । फाल्गुणमासकी वासन्ती पूर्णिमाके दिन जगमलके भ्राता उधर तो पिताको अंत्येष्टी–संस्कार करनेके लिये श्मशानमें गएहुए थे, उससमय जगमल उदयपुरके नवीन सिंहासनपर बैठा । परन्तु विधाताने उसके भाग्यमें राज्यका भोग नहीं लिखाथा । कारण कि जिससमय स्तुतिवादक और दूतोंने उसके सिंहासनपर बैठनेकी घोषणा की, उससमय श्मशानके मध्य उसके पिताके शव देहके चारों ओर मेवाडके सरदारलोग एक गुप्त परामर्श कररहेथे । उस गुप्त परामर्शका फल शीघ्रही सबने जाना । पाठकगण इस बातको जानते-हैं कि राणा उदयसिंहने शोनगडे सरदारकी पुत्रीका पाणिग्रहण किया था । उस राजकुमारीके गर्भसे उदयसिंहके औरससे वीरश्रेष्ठ प्रतापने जन्म लिया । प्रतापके मामा झालोर राव अपने भानजेको मेवाडके राज्यपर अभिषेक करनेके लिये अत्यन्त व्यग्र हो उठे उन्होंने मेवाडके प्रधान सामन्त चन्दावत शिरोमणि कृष्णजीसे पूछा "प्रतापने उपयुक्त उत्तराधिकारी होकर भी सिंहासन नहीं पाया, आपने जीतेजी इस अविचारमें कैसे सम्मति दी?" यह सुन सामन्तश्रेष्ठ कृष्णने नम्र वचनोंसे कहा "यदि रोगी अंतसमयमें थोडासा दूध पीनेको मांगे, तो क्या वह उसको न देना चाहिये?" कृष्णका स्वर क्रमशः गम्भीर होता गया तथा उसने फिर यह कहा कि "रावजी! आपके भानजेकी मैं मनोरथ सिद्ध करूंगा, मैं प्रतापको पाटपरही बैठाऊंगा ।"

उसकी विद्वेषाग्निकी चिनगरीसे चित्तौरका गौरव स्तम्भ भस्म होगया। उदयसिंहके पापाचारका उचित प्रायश्चित्त होगया।

जक्षरतास नदीके किनारेपर बसे हुए दूरदेशके फरगना राज्यको छोडकर मुगलकुलतिलक बाबरने सुर नदी भागीरथीके प्रसन्न जलसे धुलेहुए पुण्यक्षेत्र भारतवर्षमें आकर जो बीज बोयाथा, किसने विचार कियाथा कि एक समय यह छोटासा बीज एक बडाभारी वृक्ष होजायगा? किसने सोचाथा कि एक समय उस वृक्षकी जडें दूरतक फैलकर बडकी जडोंके समान भारतकी हृदयरूपी अटारीको विदारित करेंगी? बाबरका बोयाहुआ वह बीज हुमायूंके यत्नसे अंकुरित होगया था; परन्तु यदि अकबर उसके पानीसे न सींचता, तो वह अंकुर अवश्यही सूखजाता. अतएव अकबरके द्वाराही इस पुण्यतीर्थ भारतवर्षमें मुगलबादशाहीकी जड जमी। अकबरही राजपूत—सौभाग्य— सूर्यके लिये प्रचंड राहु हुआ। राजपूत स्वाधीनतारूपी अटारीपर अकबरही वज्र होकर गिरा। अबतक जडसे उस अटारीको कोईभी नहीं गिरासकाथा—परन्तु आज अकबरने उसे खुदवाकर फिकवादिया।आज अकबरके भयंकर वज्रप्रहारसे वह अटारी चूर२ होगई। स्वाधीनताकी ऊँची अटारीसे उतारकर अकबरने अभागी हिन्दू जातिको दुःखके अन्धेकारागारमें कठोर दासपनकी जंजीरसे जकड़दिया। हम नहीं जानते कि कौनसे गुणके प्रभावसे और कौनसे महामंत्रके बलसे राजपूतोंने उस जंजीरके भारको हलका करदिया था;नहीं जानते कि अकबरके कौनसे गुणसे मोहित होकर राजपूतोंने उसकी पहिराई हुई कठोर जंजीरको वारम्वार चुम्बन किया था! इस गंभीर रहस्यका भेद करना कोई सहज बात नहींहै। विशेष परीक्षा करके देखनेसे अकबरका कोई गुण तो अवश्यही दिखाई देगा।—वह गुण यह था कि अकबरशाह मनुष्यके हृदयकी बातको जानताथा. यह ज्ञान उसको यहांतक था कि मनुष्यकी गुप्तसे गुप्त बातभी उसे ज्ञात होजाती थीःतथा आवश्यकता पड़नेपर चतुरताके साथ सबहीको संतुष्ट करदेता था। इन्हीं अनुपमगुणोंकी सहायतासे अकबरने हिन्दूजातिके हृदयको प्रीति और भक्तिसे बाँध रक्खाथा। इन्हीं कारणोंसे एकबार आनन्दमें भरकर विजित हिन्दुओंने उसको "जगद्गुरु" और "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" कहकर पुकारा था! परन्तु इस गौरव और महिमामयी उपाधिके पानेसे पहिले उसने अपने हाथसे कितनेही भारत सन्तानोंके हृदयको अस्त्रोंसे चीरडालाथा, सनातनधर्मके कितनेही पवित्र मन्दिरोंको चूर चूर कर उनके ऊपर नमाजगाह बनवाई। भारतके कितनेही वीरोंके उसके कठोर हाथसे मरे-

दशम अध्याय १०.



प्रतापका सिंहासनपर बैठना;—अकबरके साथ राजपूत राजाओंका मेल;—प्रतापकी दीनावस्था; युद्धकी तयारियें:—मालदेवका अकबरके अधीनमें होजाना;—प्रतापका राजपूत राजाओंसे सम्बन्ध छोड़देना:—अम्बरके राजा मानसिंह:—राजकुमार सलीमकी मेवाडपर चढाई;—हलदीघाटका युद्ध;—सलीमके सामने आकर प्रतापका घोरयुद्ध:—प्रतापका घायल होना:—झालासर्दारका प्रतापसिंहको बचाना:—प्रतापके भ्राता शक्तसिंहका भाईसे साक्षात, प्रतापपर शक्तसिंहकी अनुकूलता:—अकबरका कमलमेरको जीतना:—मुगल सेनाका उदयपुरपर अधिकार;—मुगलसेनापति फरीदका सेनासहित प्रतापसिंहके हाथसे मारा जाना;—भीलोंके द्वारा प्रतापसिंहके परिवारकी प्राणरक्षा:—खानखाना;—प्रतापपर महासंकट:—अकबरके साथ प्रतापसिंहकी संधि सूचना;—बीकानेरके राजकुमार पृथ्वी सिंह:—खुशरोजका वृत्तान्त, मेवाड़को छोडकर प्रतापसिंहका सिन्धु-नदकी ओर जाना;—उनके मंत्रीकी प्रभुपरायणता:—प्रतापका लौट आना:—एकायक मुगलोंपर चढाई कर देना:—प्रतापसिंहके द्वारा कमलमेर और उदयपुरका पुनरुद्धार:—उनका विजयगौरव:—उनकी पीड़ा और मृत्युका वृत्तान्त।



शिशोदीयकुलकी महान मान मर्यादा और [illegible] राणा-प्रताप मेवाड़के सिंहासनपर अभिषिक्त हुए। परन्तु [illegible]

ग्राससे बचाया! वह दिन चित्तौरका कैसा गौरवमय दुर्दिन था! राजपूत वीरोंका उद्योग कैसा अनुपम होगया था!-उसके पश्चात् दूसरी बार-जिसदिन मेवाड़की दक्षिणसीमामें स्थित शैलराजिको भेद करके दुष्ट राजबहादुरकी विजयिनी सेना अनन्त ज्वारभाटेकी समान प्रचंड वेगसे मेवाड़के हास्यमय क्षेत्रमें आन-पहुंची, उसदिनभी बाप्पारावलके वंशधर वीरवर बाघजीने आत्मोत्सर्गका प्रकाशित उदाहरण रखकर भगवती चतुर्भुजाकी कठोर आज्ञाको पालन किया।

परन्तु अब तीसरी बार-चित्तौरके इस तीसरे घोर संकटमें-कठोर उद्यममें-शिशोदीयकुलके इस अनिवार्य संकटकालमें बाप्पारावलका कौनसा वंशधर प्राणका दाव लगाकर चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवीको संतुष्ट करेगा? कौनसे वीरका हृदयरुधिर पीकर संतुष्ट हो भगवती चामुण्डा आज चित्तौरपुरीकी रक्षा करेंगी?-कोईभी नहीं आया? कोईभी उस भयंकर संग्रामभूमिमें नहीं आया; क्या होगा? कोई उपाय नहीं। चित्तौरका शोचनीय दारुण अधःपतन होनाही चाहताह; चित्तौरका स्वाधीनतारूपी सूर्य सदाके लिये इस समय अस्त होनेवालाहै! वह मोहकरी महामाया कहाँ अन्तर्द्धान होगई? जिस गूढ भाग्यसूत्रने गिह्लोट कुलको इतने लंबे समयतक बांध रक्खाथा, वह सूत्रभी सदाके लिये टूटगया। जिस महादेवीने गंभीर निशीथकालके समय समरसिंहकी दोनों आंखें खोलकर गंभीर स्वरसे कहाथा कि "हिन्दू-गौरव लोप होनाचाहता है"। जिन्होंने, चिन्ता करतेहुए लक्ष्मणसिंहके सन्मुख प्रगट होकर बारह राजकुमारोंकी बलि चाही थी। वह-चित्तौरकी मूर्तिमान स्वाधीनता लक्ष्मी भगवती चतुर्भुजाजी अभागे उदयसिंहका कायरपन देखकर सदाके लिये चित्तौरको छोडगई! उनके साथही राजपूत जातिका एक महान विश्वासका लोप होगया। जिस विश्वासके बलसे वे लोग चित्तौरपुरीको पवित्र सनातनधर्म और स्वाधीनताका दुर्जय दुर्ग समझतेथे. आज वही महान विश्वास उनके हृदयसे लोप होगया, आज वे उसको अलीक कल्पनामात्र समझने लगे।

इस प्रकारका पवित्र विश्वास और अपूर्व देवभक्ति राजपूतोंकी जीवनशक्ति और देशरक्षाकी महाशक्तिहै। इनके महामंत्रमें दीक्षित होकर अनेकदेशोंके अनेक राजाओंने देशकी रक्षाके लिये रणक्षेत्रमें प्रसन्नमुखसे अपने प्राणोंका बलिदान करदियाहै, इसके बहुतसे प्रमाण संसारके इतिहासमें जाज्वल्यमान अक्षरोंमें लिखे हुएहैं। जातीय जीवनके जो कईएक अत्यन्त उज्ज्वल चित्र इतिहासमें दिखाई देतेहैं उन सबकीही जड़में यह महानविश्वास और यह देवभक्ति बीजरूप समान वर्तमान है।

सिंहको यह समाचार विदित नहीं था। जिस समय यह अपने मनहीं मनमें इस संस्कारके वश होकर आशावेलको बढा रहेथे; उस समय प्रचंड वैरी अकबर प्रतापसिंहका समस्त उद्यम व्यर्थ करनेके लिये उनके जातिवालोंको वरन उनके परिवारवालोंको भी लोभमें फँसायकर उनसे युद्ध करनेके लिये उभाड रहाथा! मारवाड; अम्बेर और बीकानेरके राजकुमारगण—यहांतक कि मेवाडका दृढमित्र बूंदीराजभी, मुसलमानोंके लोभमें फँसकर स्वदेश और स्वजातिके विरुद्ध शस्त्र धारण करनेको तइयार हुए। सबसे अधिक दुःखकी बात यहहै कि प्रतापसिंहका भाई सागरजीभी * उन स्वदेशद्रोही कापुरुषोंकी भांति अपने भ्राताका सत्यानाश करनेको तइयार हुआ सागरजीने भ्रातासे विश्वासघात करके बादशाहसे इसके बदलेमें अपने पितृपुरुषोंकी प्राचीनराजधानी और राज्योपाधिको पाया था।

इन अशुभ समाचारोंको प्रतापसिंहनेभी सुना; जिस समय उन्होंने जाना कि स्वदेशीय और सजातीयगण और कुटुम्बपरिवारके लोगभी मुसलमानोंकी ओर होकर मुझसे संग्राम करनेको तइयार हुएहैं, तब वह अत्यन्तही दुःखित हुए बारम्बार उन लोगोंको धिक्कारदेने लगे, परन्तु अपने महामंत्रको और अपनी प्रतिज्ञाको एक पलभरके लियेभी न भूले। उनका उत्साह बराबर बढताही गया। बडी २ विपत्तियें जैसे२ बढने लगीं जैसेही उनका हृदय अधिक२ दृढ होने लगा। शत्रुका गर्व खर्व करनेके लिये वह तैसेही तैसे तइयार होने लगे। प्रतापसिंहकी प्रतिज्ञा थी कि "माताके पवित्र दुग्धको कभी कलंकित न करूंगा।" इस प्रतिज्ञाका पालन उन्होंने पूर्ण प्रकारसे किया था इसही प्रतिज्ञाके बलसे बलवानहो उन्होंने अकेलेही पच्चीसवर्षतक मुगलोंके गर्वको गिराया और उनकी सेनाका सत्यानाश किया इस लोक विस्मयकर कार्यके करनेमें उनको अनेक संकटोंका सामना करना पडा था। विना निद्रा और विना भोजनके अनेक दिन ऐसेही बिताने पडेहै। इस लम्बे समयमें कभी तो भयंकर विक्रमके साथ जनस्थानोंको घेरकर उजाड करदेते और कभी एक पर्वतसे दूसरे पर्वतपर कभी एक वनसे दूसरे वनमें भागकर

भट्टग्रंथोंमें लिखा हुआहै कि मेवाडके सत्यानाश करनेका विचारकर भयंकर मूर्तिसे जैसेही अकबर चित्तौरके सामने आया, वैसेही डरपोक उदयसिंह नगरको छोडकर भागगया। राणाजीके भागनेसेभी चित्तौर रक्षकशून्य नहीं हुआ। यद्यपि चित्तौरका छोटेजीका राणा चित्तौरको छोड गया; परन्तु चित्तौरके नामकी ऐसी पवित्र मोहिनी मायाहै, कि न जाने कहांसे साहसी और विक्रमशाली अगणित वीरगण नंगीतलवार हाथमें ले चित्तौरकी रक्षा करनेको यवनोंसे संग्राम करनेके लिये आन पहुँचे। मानो किसी अप्रगट देवताके मृतसंजीवनमंत्रके प्रभावसे चित्तौरकी समरभूमिमें गिरेहुए वीरगणोंकी भस्मसे अगणित वीरोंकी सृष्टि उत्पन्न हुई। राजस्थानके भिन्न २ जनपदोंसे सरदार और सामन्तगण अपनी २ सेनाको साथ ले चित्तौरके स्थानोंकी रक्षा करनेको खडेहोगये वीरवर सहीदास चंदावत वंशको वहुतसी तेजस्वी और साहसी सेनाको साथ लेकर चित्तौरके प्रधान तोरणद्वार-'सूर्यद्वार' पर डट गया। मदेरियापति रावत दूदा गंगावतों×की सेनाको लेकर रणरंगमें आन पहुँचा। वैदला और कटोरियानामक दो जनपदसे, दिल्लीश्वर हिन्दूराज चक्रवर्ती महाराज पृथ्वीराजके वंशसे उत्पन्न हुए दो वलवान सामन्त राजा और विजौलीके प्रमार तथा मादीके झालापति इत्यादि कठोर उत्साहके साथ संग्रामभूमिमें आयकर अपने वीरोचित रणाभिनय और उत्साहसे अपनी २ सेनाको बढावा देनेलगे। इनमेंसे बहुतसे मेवाडशासनके अन्तर्गत थे, इन सबके अतिरिक्त औरभी बहुतसे विदेशीय राजपूत वीर अकबरके साथ संग्राम करनेके लिये आयेथे। उनमें देवलपति बाघजीका वंशधर, झालौरपति शोनगडेका राव, ईश्वरदास राठौर, करमचंद कछवाहा, और ग्वालियरके तुवरराज यह समस्त वीर विशेष प्रसिद्ध हैं। इन लोगोंकी अद्भुत वीरता और रणरंगका वृत्तान्त सुवर्णके अक्षरोंसे इतिहासरूपी पटपर विराजमानहै।

क्रमानुसार हिन्दू मुसलमानोंमें घोर युद्ध आरम्भ हुआ। यवनसेना भयंकर सिंहनाद करती समरभूमिको कँपाती उत्कट वेगसे चित्तौरके सूर्यद्वारपर धाई, इस ओर रणोन्मत्त राजपूत वाहिनीभी विकट शब्द करती हुई, आकाशको विदारती दहाडतीहुई धनुषबाण लेकर तइयार होगई। चन्दावत वीर सहीदास भीम गम्भीर हुंकार करके यवनसेनापर वाणोंकी वर्षा करने लगा। सूर्यतोरणद्वारके भीतर होकर चित्तौरमें प्रवेश करनेके लिये मुगलोंकी सेना समुद्रकी समान उफनकर उसकी ओर-

× यह संगावत्लोग राणा सांगा (संगाजी) की सन्तान सन्तति नहींहैं। [illegible] जो सगनामक एकवीर हुआ था, यहलोग उन्हींके वंशमें उत्पन्न हुएहैं।

आधीनताकी वेडियोंसे नहीं जकड सकता। उस दशाका विचार करनेपर—कि जिसमें हिन्दूलोग उस समयके प्रतापसिंहके उस वीरोचित वाक्यका ठीक २ अर्थ भलीभांतिसे समझमें आजायगा उनके राज्याभिषेकसे पहिले, सौवर्षके मध्यमें हिन्दू-जातिका एक नया चित्र दिखलाई देताहै। गंगा व जमुनाकी रेतीसे लेकर आरावली शैलमालातकका देश जो मुसलमानोंके कठोर अत्याचारसे ऊजड होगया था, प्रतापके अभिषेकित होनेसे पहिले उपरोक्त १०० वर्षके बीचमें वह एक नवीनवलसे बलवान होकर धीरे २ अपने मस्तकको उठा रहाथा। अम्बेर और मारवाडभी इस विशाल देशके अन्तर्गत थे। इन दोनों राज्योंके राजालोग धीरे २ इतने बलवान होगये थे कि अकेले मारवाडके राजानेही दिल्लीश्वर शेरशाहके विरुद्ध खड्गधारण कियाथा। इन दो देशोंके अतिरिक्त चम्बलनदके उत्तर तीरपर बहुतसे छोटे २ राज्यभी बलसंग्रह करके उन्नति कर रहेथे। पहले ही कह आयेहैं कि इन राज्योंके स्वामी हिन्दूराजा थे। हिन्दुओंकी उन्नति और भारतवर्षकी लक्ष्मीका बढानाही इन लोगोंका अभिप्रायथा। उन सब लोगोंका बलविक्रम अधिकाईसे बढगयाथा, परन्तु एक अभावभी उनलोगोंमें विशेषतासे था। यदि वह अभावभी पूरा होजाता तो वे निश्चयही भारतके राज-मुकुटको यवनोंके शिरसे उतार लेते और अपने जातिगौरवको उन्नतिके शिखरपर पहुंचाते. साहस, बल, विक्रम, धन सबही कुछ उनके पास था, परन्तु इन शक्तियोंको मिलायकर एक महाशक्तिको उत्पन्न करके श्रेष्ठ राजनीतिके अनुसार उस शक्तिको शत्रुओंपर चलानेके लिये एक सेनापतिका अभाव था। यह कहना उचितही होगा कि वीरश्रेष्ठ राणा सांगाजीको पायकर उनका वह अभाव भलीभांतिसे दूर होगया था। संग्रामसिंहके महान कुलगौरव, राजमर्यादा और वीरोचित गुणग्रामोंका विचार करनेसे कहना पडताहै कि वे इस कठिनकार्यके करनेको सबप्रकारसे योग्य थे। जिन ऊंचे गुणोंका परिचय प्राप्त होनेसे मनुष्यके हृदयरूप स्रोतसे स्वयंही भक्ति और प्रीति उत्पन्न हुआ करतीहै, वीरवर संग्रामसिंहमें वह समस्तगुण वर्तमान थे। हिमालयसे लेकर सेतुबंध रामेश्वरतक सबनेही राणा संग्रामसिंहके गुणोंकी प्रशंसा की थी। समस्त भारत संतानोंनेही उनको भारतका उद्धार करनेवाला जानकर हृदयको अनन्त आशासे पूर्ण करलिया था। परन्तु सारी वृथा हुआ; अभागिनी भारतभूमिके भाग्यमें चिरकालतकके लिये यवनोंकी दासी होनेका लेख लिखगया था। महाराणा संग्रामसिंह अकालहीमें इस लोकसे विदा होकर स्वर्गको सिधारे इतना हुआ वह बल विक्रम और जातीयजीवन [illegible]

है जो इन वीरोंके नामको लोप करसके। जयमल और पत्तेने किसीके मोल लिये हुए उत्साह अपने उत्साहको नहीं बढायाथा–वा किसीके बढावा देनेसे उन्मत्त होकर वे चित्तौरमें प्राणदेनेको नहीं आतेथे; उनके उदार और महान हृदयनेही स्वदेशकी रक्षाके लिये उनको प्रेरण कियाथा। नहीं तो यशाकांक्षा या स्वार्थसाधनकी नीचप्रवृत्तिके वश होकर यवनोंसे संग्राम करनेके लिये तइयार नहीं हुए थे। यह भयानक संग्राम केवल पुरुषोंकाही संग्राम नहीं था, वरन अन्तःपुरमें रहनेवाली अनेक राजपूत ललनागणभी परदेको छोड़ छाड़कर अपने कोमल शरीरपर लोहबखतर पहर ढाल तलवार ले चित्तौरकी रक्षा करनेके लिये समरभूमिमें गईथी।

जिससमय शालुम्ब्रापति चंदावतवीर सहीदासने सूर्यद्वारपर गिरकर प्राण दिये, तव वीरवरपत्तेने वचेहुए चंदावत वीरोंकी सरदारीको ग्रहण किया। इस समय पत्तेकी आयु केवल सोलहवर्षकी थी, पिता गतयुद्धमें मारे गयेथे। पिताके मारेजानेके समय पत्तेकी आयु वहुतही छोटीथी, अतएव पुत्रका लालन पालन करनेके लिये माता पतिके साथ सती न होसकी। अकेला पुत्रहै, कैलवापतिका अकेला वंशधरहै, इसका लोपहोनेसे संसारसे जगवत गोत्रका नामभी लोप होजायगा। ऐसी अवस्थामें पुत्रका जीवन कितना मूल्यवानहै सो सरलतासे समझा जासकता है। परन्तु उसकी माता वीरपत्नी थी। पुत्रके प्राणोंकी अपेक्षा उसने चित्तौरके गौरवको अधिक मूल्यवान समझा। पीले कपडे पहिराकर पुत्रको चित्तौरकी रक्षाके लिये भेजदिया। वह वीरपत्नी, वीरजननी होनेके अतिरिक्त स्वयंभी वीरनारीहै। यह चिन्ता उसके हृदयको पलभरके लियेभी व्याकुल नहीं करसकी कि पुत्रके मृत्युके साथ विपुल जगवत कुलभी अनन्त कालके लिये लोप होजायगा। वीरमाता केवल इतनेहीसे संतुष्ट थी कि मातृभूमिके लिये पुत्रका प्राण जाय और वरावर उसका यही व्रत रहे। इसही कल्पनामें संतोष प्राप्त करके उसने अपने प्यारे कुमारको प्राण होमनेके लिये संग्राममें भेज दिया और स्वयंभी वीरजननीका कर्त्तव्यसाधन करनेको तइयार हुई। अपनी सुकुमार-देह पर लोहेका वखतर पहिरा हथियार लगाये; संग्रामकी तइयारी करनेके समय उसको एक चिन्ता औरभी हुई। घरमें सुकुमारी वालक पुत्रवधू है। ऐसा न हो कि कहीं पीछे वह कैलवा वंशके निर्मल माथेपर कलंकका टीका लगावै: इस कारण पत्तेकी माताने पुत्रवधूकोभी वीरवेष बनाया। समस्त गहने उतारकर शरीरमें लोहेका कवॅच पहिरा दिया और हाथमें तीक्ष्ण शूल देकर

गिरिनिवासको छोडकर पर्वतके नीचे आते और सब स्थानोंको भलीभांतिसे देखभालकर दुर्गम पर्वतवासमें चले जाते थे। पहिले जो बस्ती आदमियोंके कुलाहल और आनंद ध्वनिसे सदा गुंजारती रहतीथी और सजीव जान पड़ती थी, आज मौन, निर्जीव और मरुभूमिकी समान होगई। जिन स्थानोंमें अंगना-कुलके विमलहास्य ज्योतिसे सदा उजाला रहता था, आज वह स्थान विषादके अंधकारसे भरा हुआ है! जो खेत सांवरी नयनस्निग्धकारी हरी २ सुन्दरतासे लहरें लिया करते थे वे समस्त जंगली घास फूंससे परिपूर्ण होगये। जो चौड़े २ मार्ग मनुष्योंके समागमसे परिपूर्ण रहते थे आज उनपर कटेरी और बबूलके वृक्ष उत्पन्न होगए! आज मेवाडकी वह सुन्दरता सम्पूर्णतः जाती रही। जिस सुन्दरताके प्रभावसे मेवाडभूमि, मनमोहन नन्दनकाननकी समान सुखकर होगई थी आज उसकी वह सुन्दरता सब प्रकारसे नष्ट हो गई। सुखदायक नंद-नकानन आज शोकदायक श्मशान बनगया। मेवाडभूमिकी जिन अटा अटारियोंमें देवसुन्दरियोंकी समान स्त्रियें रहा करती थीं,आज वहांपर हिंसक जन्तु रहने लगे। राणा प्रतापसिंह इस प्रकारकी मेवाडभूमिकी रती २ करके परीक्षा करने लगे। एक समय वह अपने सेवकोंको साथ लिये हुए अन्तल्लानामक स्थानसे—जो कि बुनस नदीके तीरपर बसाहुआ था—भ्रमण कर रहे थे। उस समय उन्होंने देखा कि—एक अजपालक उन उपजाऊ खेतोंमें निर्भय होकर बकरियें चरा रहा है। अभागे चरवाहेने समझा था कि मुझे कोईभी नहीं देख पावेगा।इसही कारण अपने राजाकी आज्ञाका निरादर करके निर्भय होकर घूम रहाथा। राणाजीने, राजाज्ञाका अपमान करनेके कारण दो चार प्रश्न करके उसे प्राणदंड दिया तथा राज विद्रोहियोंको ऐसा दंड दिया जाता है, इसके दिखानेको उसकी मृतक देह एक वृक्षपर टांग दी। प्रतापसिंहकी इस कठोर आज्ञाके कारणसे मेवाडकी सुन्दरभूमि श्मशानकी समान होगई थी! अतएव फिर उस श्मशान भूमिपर यवनोंके वास करने-की कोई शंका न रही। अर्थागमके समस्त उपाय प्रतापसिंहने छोड़ दिये थे, परन्तु उस समय अकबरके साथ जो भयंकर समर आरंभ किया जाता उसमें बहुतसे धनकी आवश्यकता है: प्रतापसिंहके पास उतना धन नहीं है परन्तु उनके सरदारोंने धनके लिये एक दूसरा उपाय किया। उस समय सौ-दागरोंके साथ सूरतका वनज व्योपार भलीभांतिसे चल रहा था। उन-की सामग्री मालवेके भीतर होकर सूरत जाती और किसी बन्दरमें रहती थी। सरदारलोग अवसर पाकर उस समस्त सामग्रीको लूटने लगे।

हुए गोलोंमेंसे दो एक को काटकर वारंवार विकट सिंहनाद करने लगे। परन्तु उनका यह समस्त यत्न वृथा हुआ! इतनेहीमें एक गोली आकर प्रधान सेनापति जयमलके हृदयमें लगी। गोलीके लगनेमें जयमल घोडेसे नीचे गिरा; भयंकर क्रोध और शत्रु सेनाके मारनेकी इच्छासे उसका वीर हृदय उन्मत्तकी समान होगया। कापुरुष शत्रुओंने एक नीच उपायका सहारा लेकर दूरसे उस वीरको मारा। इसका विचार करके किस सहृदयके हृदयमें पीडा न होगी?

उस भयंकर संकटके समय—चित्तौरकी उस अनिवार दुर्दशाके समय घायल जयमल चित्तौरकी होनहार दशाका विचार करके चिन्ता करने लगा—उसने देखा कि, अरक्षणीय चित्तौरकी रक्षाका अब कोई उपाय शेष नहीं रहा! दारुण मर्मवेदनासे उसका हृदय विदीर्ण होगयाः—लाल २ नेत्रोंसे एक दो बूंद आंसुओंकी गिरी। विकटक्रोध और प्रतिशोध पिपासाके मारे वह वीर दांत पीस२कर अकबरको वारंवार धिक्कार देने लगा। क्रमानुसार कराल काल निकट आन पहुंचा। उस समय वीरवर जयमलके सामने; उसकी दुर्दशाकी ओर प्राणप्यारी चित्तौरपुरीकी कठोर भाग्यलिखनकी निविड छाया वारम्वार घूमने लगी! उस वीरने अपने अन्तिम जीवनको दर्प और गौरवके साथ त्याग करनेकी प्रतिज्ञा की। शीघ्रही जुहार व्रतका अनुष्ठान हुआ। इस ओर आठ हजार राजपूत एकसाथ "बीड़ा" * उठाय अन्तिम समयके पीले वस्त्र धारणकर एक दूसरेसे विदा हो, साहस और उत्साहके साथ मुगलसेनामें घुस पड़े। उसकाल दुर्गका द्वार खोल दिया गया; उस खुले हुए राजमार्गमें प्राणोंका मायामोह छोडे उन्मत्त राजपूतगण प्रचंड गिरिनदकी समान निकलकर शत्रुओंकी सेनाको दलित करने लगे। दोनों ओरकी अगणित सेना मारी गई! परन्तु मुगलसेना तो अनंत थी, यदि कुछ वीर मारे गये तो भी उसकी कौनसी बडी हानि [illegible]। एक २ रक्तबीजका रुधिर निकलेसे शतशत रक्तबीज उत्पन्न होने लगे। [illegible] किसमेंहै जो उन अगणित रक्तबीजोंकी गतिको रोक सकता? [illegible] है कि चित्तौरकी दारुण दुर्दशा हुई। उस दुर्दशाने फिर [illegible] सामर्थ्य नहीं रही। हम नहीं कह सकते कि फिरभी कभी [illegible]

उसदिन—उस दुर्दिनमें पीले वस्त्र पहिरनेवाले किसी राजपूतने [illegible] करनेके लिये पापी यवनके हाथमें आत्मसमर्पण नहीं किया —[illegible]

---

* विदा होनेके समय राजपूतगण यह [illegible]

बराबरी कर सकता है? इसके अतिरिक्त स्थूल उदयसिंहने सबसे पहिले एक घिनौना उदाहरण दिखाया था। कहते हैं कि राजपूत होकर उसनेही सबसे पहिले मुगलके हाथमें अपनी जोधबाईनामक कन्याको समर्पण किया था। जोधबाईके बदलेमें राजपूत कुलकलंक उदयसिंहको, चार जनपद ×जो कि अति सम्पत्तियुक्त थे—मिले। प्रतिवर्ष इन चारों परगनोंसे बीस लक्ष रुपये राजकरमें वसूल होते थे। इन परगनोंके प्राप्त होजानेसे मारवाड राजकी आमदनी पहिलेसे दूनी होगई। अम्बेर और मारवाडके दो कायर राजाओंने जो घिनौना उदाहरण दिखलाया, थोडेही समयमें बहुतसे राजपूत लोग उस उदाहरणके अनुसार कार्य करने लगे। इन दोनों राजाओंका यह अनर्थकारी रोग बहुतसे राजपूतोंको उडकर लगाथा। उनके पास नैतिक बल नहीं था, इस कारण शीघ्रही मुगलोंके आधीन होगए। उपाधि और साधारण सन्मान गौरवके बदलेमें उन्होंने अमूल्य स्वाधीनता रत्नको बेचकर अपने हाथसे यवनोंकी पराधीनतारूपी जंजीरको अपने गलोंमें पहिरा। इस प्रकारसे राजस्थानके अधिकांश राजा अकबरके पदानत हुए, उनके विशाल राज्यसमूह मुगलोंकी बादशाहतमें लीन होगए, इन समस्त हिन्दू राजाओंने थोडेही समयमें मुगल बादशाहतका इतना बडा उपकार किया था कि मुसलमान तवारीख लेखक उन लोगोंको "मुगल राज्यका स्तम्भ और अलंकार स्वरूप" लिख गयेहै।

बादशाह अकबरने उन समस्त राजपूत राजाओंको संग लेकर वीर श्रेष्ठ प्रतापके विरुद्ध खड्ग धारण किया। इससे पहिले जिन लोगोंके पितृपुरुषोंने मेवाडके लिये अपने प्राणतक दे डाले थे; आज वही लोग मेवाडभूमि ध्वंस करनेके कारण कुलाङ्गार बन मुसलमानोंकी ओर होगएहैं। प्रतापसिंहके साथ युद्ध करनेको जो सब लोग आएथे इसका एक कारण औरभी था। यवनोंके हाथ अपनी कुलमर्यादाको बेचकर वे लोग अपनी दारुण दुर्दशाका वृत्तान्त समझगए थे। उन सबके हृदयसे यह बात नहीं सही गई कि हम सबकी तो कुलमर्यादा जाय और प्रताप-

[illegible] जोधबाईके गर्भसे धर्मद्वेषी शाहजहा[illegible] हुआ था। [illegible] [illegible] सिकन्दराबादमें बनाहुआ है। अनेक लोगोंका कथन है कि [illegible] होते [illegible] गर्भसे उत्पन्न [illegible] नहीं थी किन्तु [illegible] थी।

× इन चार परगनोंकी [illegible] आमदनी इस प्रकारसे थी-([illegible]) [illegible] २,०९,२४) [illegible] १,८२,५००) [illegible] [illegible])थी।

निठुर अकबरने उसको भूतप्रेतोंके ताण्डव नृत्यका स्थान बना दिया। शोचायमान अटारियें और सुन्दर२ मंदिरोंको चूर्ण२करके धूरिमें मिला दिया ! जिन नगाडों-के भीम गंभीर शब्दसे गिह्लोट राजाओंका पुरीमें आना और बाहर जाना सूचित होता था। जो बडे २ मोलके शोभायमान दीपवृक्ष भगवती विश्वमाता चतुर्भुजा देवीके मंदिरमें विमल प्रकाश विस्तार करदेते थे, और जो दर्शनीय किवाड चित्तौर-के सिंहद्वारमें शोभायमान थे, निर्दयी अकबर अपनी छातीपर पत्थर रखके अपने भावी नगर अकबराबादको सजानेके लिये इन सबको अपने साथ लेगया×।

अकबरने अपने हाथसे, जयमलका प्राण संहार किया था। जिस बन्दूककी सहायतासे उसने—यह कायर पुरुषोंकी समान कार्य किया था, उसका नाम "संग्राम" रक्खा।*इस वृत्तान्तकी सत्यता अब्बुलफजल और बादशाह जहाँगीरके द्वारा प्रमाणित हुई है। यद्यपि अकबरने धर्महीन उपायसे जयमलका संहार किया था, परन्तु उसके गुणोंका भी ध्यान उसको विशेषतासे था। जयमलको मारकर अकबरनेअपनेको कृत्य २ समझाथा। यहांतक कि वीरवर जयमल और

×"तीजो शाखा चित्तौरा" अर्थात् "तीसरीवार चित्तौरका ध्वंस" होनेसे अकबरका हिन्दूविद्वेष और कठोर अत्याचार सूचित होताहै। कारण कि अलाउद्दीन अथवा राजबहादुरकी कोपाग्निसे जो महलदुमहले, मंदिर और स्तम्भादि टूटनेसे बचगएथे अकबरने उन सबकोभी धूरिमें मिलादिया था। ऐसा कहते हैं कि अकबर अत्यन्त शिल्पानुरागी और मनुष्यप्रेमीथा, परन्तु चित्तौरकी [illegible]-यह दोनो बाते मिथ्यासी जान पडतीहैं। अलाउद्दीनकी चढाईसे ऐसा कुछ बहुत [illegible] नहीं हुआ था; कारण कि दुर्गरक्षाका भार एक हिन्दूराजाकोही दिया गयाथा और [illegible] अपनी दुरभिलाषाको सिद्धकरनेके लिये बहुतही कम समय पाया था। [illegible] उस समयमें राजपूतलोग अपने टूटे फूटे मंदिरोका सत्कार करलेते थे। परन्तु अकबरके पश्चात् [illegible] अधिकाईसे हीन होगया था। अकबरके परवर्ती कालका इतिहास पढनेसे इस [illegible] होगी। अकबरके पश्चात् तो राजपूतोंकी अपनी रक्षाकीही चिन्ता रहतीथी। [illegible] मरम्मत करानेमें उनका अनुराग नहीं था। देशकी दीनताके समयमें [illegible] नहीं हुई। शिल्पशास्त्रमें पारदर्शिता प्राप्त होनेपरभी जबतक उचित उपाय और [illegible] जाता तबतक उस पारदर्शितासे कोई फल नहीं होता। अकबरके कठोर [illegible] जानेपर फिर चित्तौरसे नहीं उठा गया यही कारणहै जो फिर [illegible] उद्धार नहीं हुआ।

* "अकबरने जिस बन्दूकसे जयमलका संहार [illegible] संग्राम सत्पुरुष बन्दूक थी, इसकी [illegible] जहांगीर नामा।

के लिये राणा प्रतापसिंहजीसे अनेक प्रकारकी विनय करके कहा करते थे कि " हे महाराज! हम कलंकित हुए हैं, अधःपतित हुए हैं—राजपूतकुलकी मान मर्यादासे स्खलित होगए हैं, अतएव आप अनुग्रह करके हमलोगोंको पवित्र करें, हमारा संस्कार करें तथा हमको यथार्थ राजपूत समझ कर ग्रहण करें। "

शिशोदीय वीर चूडामणि विक्रमकेशरी प्रतापसिंहने शिशोदियाकुलके गौरवकी रक्षा करनेके लिये कैसे २ भारी कार्य किये थे, निम्न लिखित वृत्तान्त पाठ करनेसे उसकी यथार्थता भलीभांतिसे प्रमाणित हो जायगी। राजा मान अंबरके कछवाह राजाओंमें विशेष प्रसिद्ध थे इनकेही अभिषेककालसे अम्बर-राज्यकी उन्नतिका आरंभ हुआथा। वीरवर बाबरने नई जीतीहुई भारतकी विशाल बादशाहतको अचल रखनेके लिये जो श्रेष्ठ उपाय नियत कियेथे, सबसे पहिले अंबरके राजा मानसिंहने ही उन उपायोंका व्यवहार किया था। राजपूतकुलमें मानसिंहनेही अपनी बहनको अकबरके हाथमें समर्पण करके सबसे पहिले बाबरके भावीदर्शनको सफल किया। अर्थात् मुगलराज्यकी उन्नति और दृढ़ता साधन करनेमें राजपूतोंमें सबसे पहिले उन्होंने ही चेष्टा की थी। इससे पहिले कहा जा चुका है कि हुमायूंने भगवानदासकी कन्याके साथ अपने पुत्र अकबरका विवाह करादियाथा, अतएव अकबर मानसिंहका बहनोई था। इस संबन्धके पीछे साले बहनोईमें परस्पर विशेष प्रीति उत्पन्न होगईथी। मानसिंह साहसी, चतुर, और समर विशारद राजपूत थे; अतएव अकबरके आश्रयमें आजानेसे थोडे दिनोंके बीचमेंही वह मुगलोंके प्रसिद्ध सेना-पति होगये; इनकेही बाहुबलकी सहायतासे आधा राज्य जीता था। अनन्त तुषारमंडित काकेशश शैलमालाकी तराईसे लेकर सुदूर "कनकन्तरनीर" तक विशाल भूभाग एक समय मानसिंहके पराक्रमसे माथित होकर उनके चरणोंमें आपडा था। अपने बाहुबलसे उन्होंने बादशाहका राज्य अधिकतर बढा दिया था, उसका विचार करनेसे हृदय एकसाथ उनकी प्रशंसा करनेके लिये तइयार होता है। कच्छावह (कछवाहे) भट्टकविगणोंने उनके वीरोचित विक्रम तथा उनकी अनुपम वीरताका वृत्तान्त अति तेजस्विनी भाषामें वर्णन किया है। एक ओर काबुल और सिकन्दरकी पारोपमिशन शैलमाला;—दूसरी ओर काननकुन्तला अराकानभूमिः गिरिमेखला और सागराम्बरा वंग विहार और राज्यके मध्यमें प्रायः सबस्थलो, राजा मानसिंहके प्रचंड विक्रमसे विजित होकर

सरनामेके कोनेमें लिखने लगे। इस साधारण तिलकांकके भीतर जो कठोर शपथ गुप्तभावसे वर्त्तमानहै, उसको कोईभी निरादर नहीं करसकता। पत्रपाने-वालेके सिवाय और कोईभी ७४॥ अंकलिखे हुए पत्रको नहीं खोल सकता। जो ऐसा करेगा उसको चित्तौरके ध्वंस करनेका पाप होगा।यद्यपि ऐसा वृत्तान्त इतिहासके लिये विशेष आवश्यकीय नहीं होता, तथापि इसके भीतर जो नैतिक तत्त्वहै, इसही कारणसे इतिहास इसका वर्णन करताहै। यह नैतिक उद्देश साधारण नहींहै; कारण कि इस साधारण ७४॥ अंकके भीतर जो गंभीरभाव विराजमान है, उसका विचार करके किस भारतवासीका हृदय एकप्रकारकी तीक्ष्णचिन्तासे उत्तेजित नहीं होजाता ?—ऐसा कौनहै जो वर्त्तमानको भूलकर अतीतके अंधियारे कुएँमें प्रवेश करके उस दुर्दिनका, उमरुधिरसे रँगेहुए चित्रको देख आवे ?

उदयसिंह चित्तौरको छोडकर गोहिललोगोंके पास चला गया। यह गोहिल-लोग राजपिप्पलीनामक गंभीर वनमें रहते थे। अत्यन्त कष्टसे वहांपर कुछ दिन व्यतीतकर वह गिह्लोटनामक स्थानमें चला गया, यह स्थान आरावलीकी शैलमाला भीतरहै। चित्तौरको जीतनेके पहिले उदयसिंहके पूर्वपुरुष वीरकेशरी वाप्पारावलने इसही स्थानके निकट अज्ञात वास किया था। इस वार चित्तौरके ध्वंस होनेसे कईवर्ष पहिले उक्त गिरिकी उपत्यकाके मध्य-भागमें उदयसिंहने एक विशाल झील बनवाईथी, और अपने नामके अनुसार उसका नाम उदयसागर रक्खा। इस पहाड़ीतलैटीकी विशालछातीको धोती हुई बहुतसी छोटी २ नदियें कल २ नाद करती हुई वंकिमाकारसे वहांचली जाती हैं। उदयसिंहने इनमेंसे एक नदीकी धारको रोककर एक विशाल बांध स्थापन किया और उसके ऊपरवाले गिरिशृंगके शिखरदेशमें "नवचौकी" नामक एक छोटा महल बनवाया। शीघ्रही इस महलके चारों ओर बडी २ अटारियें और महल बनगए। फिर एक छोटासा नगर होकर धीरे २ एक बडा नगर बन गया:—उदयसिंहने अपने नामपरही उसका नाम रक्खा।—इस प्रकार उस-दिनसे उदयपुर मेवाडकी राजधानी माना गया।

चित्तौरध्वंसके चारवर्ष पश्चात् मनाहत उदयसिंहने गोगुन्दानामक स्थानमें मध्य ४२ वर्षकी उमरमें परलोकको गमन किया। उदयसिंह [illegible]

यदि वे ही हमारे साथ भोजन न करेंगे तो और कौन करेगा?" प्रतापसिंहने और भी अनेक भांतिसे टाल वाल की, परन्तु मान-सिंहका सन्देह दूर न हुआ और वे भोजन करनेको सम्मत न हुए। तब राणा प्रतापसिंहने कहला भेजा कि "जिस राजपूतने मुगलके हाथसे अपनी बहनको दिया है, उस मुगलके साथ उसने भोजन भी कियाही होगा, सूर्यवंशीय वाप्पारावलका वंशधर उसके साथ भोजन नहीं करसकता।" राजा मान-सिंह स्वयं ही इस अपमानके भागी हुए थे। कुछ राणाजीने उनको नेवता नहीं भेजा था। मान-सिंह राणाकी प्रतिज्ञाको जानते थे तथा यहभी उनको विदित था कि राणाजीने हम लोगोंसे सम्पूर्णतः सम्बन्ध त्याग कियाहै। फिर उन्होंने किस साहससे राणाजीसे अतिथिसत्कारकी प्रार्थना की थी? यदि स्वयं राणा प्रतापसिंह नेवता भेजते, तो उनका यह व्यवहार अनुचित होता, परन्तु राणाजीका यहां कोई दोष नहीं था, दोषी केवल मानसिंह ही थे।

राजा मान-सिंहने भोजनको छुआ भी नहीं केवल उन कई एक ग्रासोंको-जो कि इष्ट देवको अर्पण किये थे-पगडीमें रखकर वहांसे चले। मान-सिंहको आसनसे उठता हुआ देखकर प्रतापसिंह वहां आये उनको देखकर मान-सिंहने कहा "आपहीकी मान मर्यादा बचानेको हमने अपने मान गौरवको जलांजलि देकर अपनी कन्या और बहिन मुगलोंको दी। ऐसा करनेपर भी जब आपसे और हमसे विषमता रही, तो आपकी स्थितिमें भी न्यूनता आवेगी। यदि आपकी इच्छा सदाही विपत्तिमें रहनेकी है, तो यह अभिप्राय शीघ्रही पूर्ण होगा। अब आपको मेवाडभूमि हृदयमें धारण नहीं करेगी।" पीछे अपने घोडेपर सवार हो प्रतापसिंहको कठोर दृष्टिसे निहारकर कहा "यदि मैं तुम्हारा यह मान चूर्ण न करदूं तो मेरा नाम मान-सिंह नहीं।" प्रतापसिंहने घृणाके साथ उत्तर दिया "अच्छा अच्छा! मैं आपके वचनसे प्रसन्न हुआ, संग्रामभूमिमें आपका दर्शन पानेसे परम संतोष प्राप्त होगा।"

उसही समय महाराणा प्रतापसिंहका एक सहचर ठट्ठायुक्त वाणीसे कह उठा कि "देखना! अपने बहनोई अकबरकोभी साथ ले आना" जिस स्थानपर मान-सिंहके लिये भोजन सजाया गया था वह स्थान अपवित्र समझकर खोद डाला गया और उसपर गंगाजल छिड़कवाया। पात्र इत्यादि तोड़डाले और जो सरदार व सामन्तादि वहां थे वे सब मानसिंहको जातिभ्रष्ट समझकर [illegible] करते थे। इस समय उस मान-सिंहको अपने सम्पूर्ण [illegible]

जगमल भोजनागारमें प्रवेश करके राणाके बैठनेकी ऊंची गद्दीपर बैठा; इस-ओर प्रतापसिंह मेवाडराज्यको छोडनेके लिये अपने घोडेको तइयार करने लगे कि इतनेमें ग्वालियरके पदच्युत नरेशको साथ लेकर रावत कृष्ण उस घरमें आया कि जहां भोजनागारमें जगमल बैठा हुआथा। प्रवेश करतेही दोनोंने जगमलकी बाँहें पकडीं और उनको गद्दीके सन्मुखवाले निचले आसन-पर स्थित करादिया। राणाकी गद्दीसे उतारनेके समय सामन्त शिरोमणि रावत कृष्णने धीर और मर्मभेदी वाक्योंसे कहा " महाराज ! आपको भ्रम हुआ है; इस आसनपर बैठनेका अधिकार केवल प्रतापसिंहको ही है।" इसके उपरान्त शालुम्ब्रापतिने राजवेश और देवीजीके दिये हुए खड्गसे सजायकर प्रतापसिंहको राज्यासनपर स्थापित किया तथा तीनबार पृथ्वीको स्पर्श करके उनको मेवाडके राणा नामसे पुकारा। और भी जितने सरदार तथा सामन्तथे उन सबने भी रावतकृष्णके कार्यका अनुमोदन किया। इस मंगलमय कार्यके समाप्त होतेही नवीन राणा प्रतापसिंहने सब लोगोंको बुला-कर कहा। "आहेरिया उत्सव आपहुंचा; अतएव चलिये सबही घोड़ोंपर चढ-कर शिकार खेलें और भगवती गौरीके सामने वराहबलि देकर आगामी वर्षका फलाफल जानें।" परमानंदसे पुलकित होकर सबही शिकार खेलने लगे। उन सबने अगणित वराहोंको संहार किया। उसदिन उस लीलायुद्धमें कृत-कार्यता प्राप्त होनेसे सर्दार लोगोंने देखा कि मेवाडके भाग्यमें आगेकोभी मंगल सूचनाही लिखरही है।

ठीकही होगा। उदयपुरसे जो मार्ग वहांको जाता है, वह दुर्गम और तंग पंथ है। वे मार्ग इतने सकरे हैं कि उनमें कठिनाईसे बराबर दो गाडियें आवागमन करसकती हैं। उस निविडदुर्गम और कूट मार्गमें खडे होकर जिधरको देखा जाय उधरसेही पर्वतोंके ऊंचे २ शिखर और घने वृक्षोंके सिवाय दूसरी कोई वस्तु दिखाई नहीं देगी। उसही स्थानका नाम हलदीघाट है। उसही हलदीघाटके मनोहर ऊंचे शिखरोंपर तथा तलटियोंपर दृष्टि दौडाते हुए राजपूत वीरगण शस्त्र लगाकर खडे होगए। दूसरी ओर विश्वासी भीलगण भी हाथमें धनुष बाण धारण किये पुनः पर्वतोंके ऊंचे २ शिखरोंपर डट गये। उन भीलोंके पासही पर्वतोंके लाखों टुकडेपडे हैं, जैसेही शत्रु सामने आवेंगे, वैसेही बाण वर्षा कर उन्हें छिन्न भिन्न करेंगे या पत्थरोंके टुकडोंसे सिर तोडकर उनको यमलोकका मार्ग दिखावेंगे।

हलदीघाटके उस भयंकर मैदानमें मेवाडके प्रधान २ वीरोंको साथ लेकर राणा प्रताप खडे हुए और शत्रुसेनाके आनेकी बाट देखने लगे। संवत १६३२ (सन्१५७६ई०) के श्रावण मासकी शुक्लषष्ठी और सप्तमीको दोनों दल सामने भिडकर घोर संग्राम करनेलगे। इस प्रकारका भयानक प्रचंड समर, स्वाधीनताकी रक्षाका ऐसा कठोर उत्साह भारतवर्ष और ग्रीक-भूमिके अतिरिक्त संसारके और किसी स्थानमें नहीं देखा गया। यवनोंके करालग्राससे, मेवाडकी स्वाधीनता और गौरवका उद्धार करनेके लिये अपने राजपूत-वीरोंको साथ लिये उत्कट उत्साहसे उत्साहित हो प्रतापसिंह भयंकर विक्रमके साथ मुगलसेनाकी ओर बढे। निडर प्रतापसिंह सिंहविक्रम करतेहुए सबके पहिले आये और शत्रुसेनाका व्यूह तोडनेका यत्न करने लगे। राणाजीके अद्भुत साहस, विक्रम और रणनिपुणतासे उन्मादित हो उनके सरदार और सामन्तगण मुगलसेनाके ऊपर इस प्रकारसे झपटने लगे कि जैसे सिंह अपने शिकार-पर झपटता है। प्रतापसिंहका यत्न सफल हुआ; उनके प्रचंड विक्रमसे [illegible] मोरचे टूट गए; इस तितर बितर हुई मुगलसेनाको दलितमथित और [illegible] करके प्रतापसिंह अपनी सेनाके साथ कोनमें [illegible] राजपूत [illegible] मान-सिंहका अनुसन्धान करने लगे; परन्तु कहीं भी उसका खोज न पाया। [illegible] और उनकी [illegible] तलवारसे [illegible] होकर पृथ्वीमें गिरे, [illegible] अभागे उनके [illegible] तोपके सिवाय [illegible]

बल, उपाय अवलम्बनादि कुछभी नहीं । बराबर २ विपत्तियोंके पडनेसे उनके समस्त सरदारलोग निस्तेज होगए थे, परन्तु निडर प्रतापसिंह इससे किंचित्भी भयभीत न हुए । उनका हृदय पितृपुरुषोंके वीरमंत्रसे दीक्षित था, उनकी तेजस्विता उनमें भरीहुई थी । उन अपूर्व राजगुणोंसे शोभायमान रहनेके कारण दिनरात यह चिन्ता करते रहतेथे कि किस प्रकारसे चित्तौरके नष्टहुए गौरवका पुनरुद्धार होगा ? किस प्रकारसे अपने बडे बूढोंके बलको प्राप्त करके अपमानकारी यवनोंके अत्याचारोंका फल दिया जायगा ? यह चिन्ता जैसे २ बलवती होने लगी वैसे २ ही उनका हृदय नवीन स हस और उत्साहसे दृढ होगया । तथा वह महामंत्रके सिद्ध करनेका उपाय देखनेलगे । वह निश्चय जानतेथे कि इस साधनाके प्रतिकूलमें अगणित विघ्न विराजमान हैं । उनको ज्ञातथा कि मेरे पास सहायसेना या द्रव्य कुछभी नहींहै और मुगल बादशाह अकबर विपुलबल सम्पन्नहै । यह जानकरभी राणा प्रतापसिंहने अकबरके विरुद्ध द्विगुण उत्साहसे खड्ग धारण किया था ।

स्वदेशीय भट्टलोगोंके काव्यग्रंथोंमें अपने पितृपुरुषोंकी अलौकिक वीरता और महानताका वृत्तान्त पढ़कर प्रतापसिंहको ज्ञात हुआथा कि गिह्लोटवंशके राजालोगोंने किसीसमय शत्रुके आगे माथा नहीं नवाया । कठोर विपत्तियोंमें पडकरभी उन्होंने कभी देशवैरीको शरणमें जाना स्वीकार नहीं किया । यद्यपि शहाबुद्दीनादि निठुर मुसलमानोंके विद्वेषसे कईबार चित्तौर ऊजड होचुकाथा, तथापि चित्तौर उनके अधिकारमें नहीं हुआथा । अधिकार करना तो एक ओर रहा उलटा कईएक मुसलमान बादशाहोंको चित्तौरके जेलखानेकी हवा खानी पडीथी । अब क्या उस चित्तौरपुरीका उद्धार नहीं होगा ? क्या चित्तौरविजेता अकबरका प्रचण्ड गर्व कभी चूर्ण नहीं होगा ? प्रतापको भलीभांतिसे विश्वासथा कि यद्यपि आज चित्तौरको शत्रुओंने ग्रास कर लियाहै, यद्यपि आज अकबरको महानगौरव प्राप्त हुआहै, परन्तु परिश्रम और चेष्टाकरनेपर एकदिन अवश्यही चित्तौरका उद्धार हो जायगा; संभवहै कि अदृष्ट चक्रके अनिवार्य परिवर्तनसे मुगलबादशाह अकबर उस ऊंचे आसनसे पाताल तोड कुएमें गिरे । कौन कह सकताहै कि मैं ही अकबरके सिंहासनको डांवाडोल करदूं । वीरश्रेष्ठ प्रतापके ऐसे संस्कारको कभीभी न्यायविरुद्ध या भीरु मुलभ नहीं कहा जा सकता । परन्तु दुर्भाग्यसे इनके विरुद्ध जो अगणित विघ्न धीरे २ उत्पन्न होनेथे चतुर अकबरने कुलभागसे बैठेहुए उनका उद्यम व्यर्थ करनेके लिये जो यत्न कराया था. प्रताप-

संग्रामभूमिसे भाग रहे हैं। बडे भ्राताके प्राण और स्वाधीनतापर संकट देखकर शक्तसिंहसे निश्चिन्त न रहा गया; सहसा उनका कठोर हृदय पसीज गया; क्रोध जाता रहा। पिछले वृत्तान्तको याद करके अत्यन्त दुःखित हुए और इस विपत्तिसे भ्राताका उद्धार करनेके लिये तत्काल मुगलसेनाको छोड-कर उसके पीछे चले। मार्गमें प्रतापसिंहके पीछे पडेहुए दोनों मुगलोंका संहार करके वीरवर शक्तसिंह बडेभ्राताके निकट पहुँचे। दूरसे शक्तसिंहको आते हुए देखकर राणाजीको उत्कटशंका हुई। उनके हृदयमें क्रोध और अभिमानका उदय हो आया। इस कारण विचार किया "क्या शक्तसिंह बदला लेनेके लिये आताहै?" "मेरी सहायहीन अवस्थामें क्या अपनी प्रतिज्ञाके पालन करनेको आताहै।" बाण लगेहुए सिंहकी समान प्रतापसिंह गर्ज उठे और अपनी कराल करवालको उठाय शक्तसिंहकी प्रतीक्षामें खडे हुए। परन्तु शक्तसिंहका दीन, मलीन और क्षीण मुख देखकर उनके हृदयका सन्देह दूर हुआ। तथा फिर जब शिशोदिया वीरने बडे भ्राताके चरणोंमें गिर आंखोंमें आंसूभर दीनवाणीसे क्षमाप्रार्थना की, तब प्रतापसिंहके हृदयमें अद्भुत आनंदका संचार हुआ। आज परस्पर एक दूसरेको हृदयसे लगाकर दारुण दुःख और मानसिक पीडाको भूल गए।

आज प्रतापसिंहके आँसुओंसे शक्तसिंहकी और शक्तसिंहके आँसुओंसे प्रतापसिं-हकी छाती भीजी इस अपूर्व आनंदके समय प्रतापसिंहके प्यारे अश्व चैतकने प्राण त्याग करदिये। चैतक सब भांतिसे प्रतापसिंहके ही लायक था। उसके ही गुणसे राणाजी आज मुगलोंकी विशाल सेनाके मध्यमें निरापद चले आये थे। वह चैतकको अपना प्राणरक्षक समझतेथे। इस समय उसकी प्यारे घोडेको प्राण छोडकर पृथ्वीपर गिरताहुआ निहारकर राणाजीको अत्यन्त शोक हुआ। उनके अनन्त आनन्दजलमें किसने विष मिलादिया? शक्तसिंहने भ्राताके चढनेको अपना घोडा दिया। प्रतापसिंहको विवश हो उसपर चढना पडा। जहांपर तुरं-गराज चैतकने प्राण छोडे थे वहांपर एक वेदिका निर्मित हुई थी

बहुत दिनके पीछे प्रियजनके साथ प्रियजनका मिलना अत्यन्त सुखदाई होताहै। परन्तु प्रताप और शक्तसिंहके भाग्यमें वह सुख बहुत देरतक नहीं लिखा

[illegible]

अपने प्राण बचाते, कभी२ असावधान शत्रुसेनापर गिरकर उसका ध्वंस करडालते और कभी सघन वनोंमें जायकर छिप जातेथे। इस विपत्तिकालमें उनके परिवारको और बालकपुत्र अमरसिंहको अत्यन्तकष्ट होता था। राजाओंके योग्य भोजन न मिलनेसे केवल कडवे कषैले खट्टे मीठे कंदमूलफलपर ही उनको निर्वाह करना पडता था। जिन्होंने कभीभी राजभवनके बाहर पाँव नहीं रक्खा था आज वहभी वन २ में पैदल घूमते हैं; काँटोंके लगनेसे पांव लोहुलुहान होरहेहैं। हा! इससे अधिक और कौनसा दुःख हो सकताहै! ऐसी कठोरता, ऐसी विपत्ति और कौनसा मनुष्य सहन करसकताहै? ऐसा कौनसा मनुष्यहै जो बराबर पच्चीसवर्षतक कभी भोजन पायकर, कभी उपवासी रहकर—देशोद्धारके पवित्रमंत्रको साधन करसकताहै? प्रताप देवताहैः—मनुष्यकुलमें देवताहै;—इस पुण्यक्षेत्र भारतवर्षका म्लेच्छग्रामसे उद्धार करनेके लियेही भूमंडल पर प्रतापका अवतारहुआथा। यद्यपि उनका वह पवित्र उद्देश सिद्ध नहीं हुआथाः यद्यपि भारतके दुर्भाग्यसे वह जननी जन्मभूमिका समस्त दुःख उनसे दूर नहीं हो सकताथा; तथापि इस कार्यको सिद्धकरनेके लिये जो कठोर वीरता उन्होंने प्रगटकी थी, जो अद्भुत आत्मत्याग स्वीकार किया था, उसहीसे उनको स्वदेशप्रेमी सन्यासियोंके बीचमें सबसे ऊँचा आसन दियाहै। इस भयंकर संकटमें पडकर भी वह अपने मंत्रका ध्यान नहीं भूले थे एक पलभरकोभी अकबरके अनुग्रहकी प्रार्थना नहीं कीथी। वीरवन्दनीय बाप्पारावलका वंशधर क्या एक म्लेच्छके सामने शिर झुकावेगा? स्वाधीनताके हरनेवाले. हिन्दू-विद्वेषी म्लेच्छके अनुग्रहकी कामना करैगा? कायरोंके योग्य इस पापमयी चिंताका विचार आनेसेभी प्रतापसिंहका हृदय टुकडे२ होजाता था! उनके अनन्त विक्रमको न रोकसकनेके कारण अकबरने कईवार सन्धिके लिये कहला भेजाथा। परन्तु वीरवर प्रतापसिंहने घृणाके सहित उससन्धिप्रभावको अग्राह्य करके कहा था "क्या-? संधि? स्वाधीनताको चुरानेवाले मुगलतस्करोंके साथ सन्धि? इस सन्धिका क्या अर्थ है? क्या दासत्व और पराधीनता इस सन्धिका नामान्तर नहीं? " सिद्धान्त यह हुआ कि उन्होने किसीप्रकारकी सन्धिको स्वीकार न किया। उनके स्वदेशवाले राजपूत कुलकलंकोंने अपनी बहन और कन्यायें तातारवालोंको समर्पणकर उनके अनुग्रहको प्राप्त किया था यद्यपि अकबरके पास महती सेनाथी, धनभी बहुत था, तथापि वीरवर प्रतापसिंहने उसके किसी प्रस्तावको ग्राह्य नहीं किया। इन निर्लोगोंने मुगलोंके साथ

लोगोंके मुखसे सुना जाता है। आजतक भी भट्टगण उनके किसी वंशधरको देखते ही आनन्दसे उन्मत्त होकर कहा करते हैं कि "खुरसानी मुलतानीका अग्गल" ×

संवत १६३२ (जोलाई सन् १५७६ ई०) श्रावण शुक्ल ७ का दिन—आर्य-कुलकी वीरताका एक प्रसिद्ध दिवस है यह आर्य गौरवका एक पवित्र पर्व्व हुआ, जितने दिनतक मनुष्य वीरता और महानताकी पूजा करेंगे, जितने दिनतक जगतमें राजपूत जाति रहेगी, उतने दिनतक इस उपरोक्त दिनका वृत्तान्त मनुष्योंके इतिहासमें प्रकाशमान और रक्तमिश्रित अक्षरोंसे लिखा रहेगा। उतने दिनतक वह दिन अनन्तकाल एक भयंकर आवर्त्तको प्रकाश करेगा। उस दिन उस पुण्यभूमि हल्दीघाटके शैलगात्र और समस्त गिरिमार्ग मेवाडके साहसी पुत्रोंके पवित्र शोणितसे भीग गये थे। जिन चौदह हजार वीरोंने आत्मोत्सर्गके महामंत्रसे उत्साहित होकर उस भयानक संग्राममें अपने प्राण दिये, उन सबके नाम कहांतक गिनावें। परन्तु जो लोग प्रसिद्ध थे उनका संक्षेप वृत्तान्त यहांपर लिखा जाता है। राणा प्रतापसिंहके अतिथि तथा पांचसौ कुटुंबी ग्वालियरके पदच्युत राजा रामसा[illegible] उनका पुत्र खांडेराव विक्रमशाली साढ़ेतीनसौ तुवर वीरोंके साथ संग्रामभूमिमें प्राण देकर कृतज्ञताका प्रदीप्त परिचय दिखाया था। झालापति वीरवर मन्नाजीकी वीरता और सबसे अधिक और लोकविस्मयकर हुई थी। सबकी बात छोडकर यदि केवल उनकी ही अद्भुत वीरता और प्राणके दानका विचार किया जाय तो केवल उन्हींकेही द्वारा उस दिनका अतुलनीय गौरव अचल रह सकता है। जिस समय झालापति मन्नाजी १५०सामन्तोंके साथ सागरकी समान उस विशाल मुगलसेनामें प्रवेश करके महोत्साहके साथ युद्ध करने लगे, जिस समय वे मुट्ठीभर वीर उस अनन्त मुगलसेनाको दलित और छिन्नभिन्न करके अनन्तधामको चले गये, उस समय जिसने उन राजपूतोंके अनन्त विक्रम और विस्मयकर रणनिपुणताको देखा, उन्हींने उनका बखान किया। उस दिनकी बातको अबतक कोई नहीं भूला। उस दिन मेवाड प्रत्येक वीरवंश सूना होगया था, चन्दावतोंके [illegible] सौभाग्य—सिन्दूर अनन्त कालके लिये छुट गया था।

× [illegible]

गया। आर्यगण पैतृक राज्यसे संपूर्णतः अलग हुए। भविष्यपुराणकी कठोर लिख न सफल हुई; भारतसन्तानके पावोंमें सदाके लिये कठोर बेडियां पडगई। यदि संग्रामसिंहके पीछे उदयसिंहका जन्म न होता, यदि संग्रामसिंहके पीछे तत्कालही शिशोदीयकुलका शासनदंड प्रतापसिंहके हाथमें समर्पण किया जाता, अथवा यदि अकबरकी अपेक्षा कम समर्थवाले मुसलमानके हाथमें भारतका शासनदड दिया जाता, तो भारतकी ऐसी दुर्दशा कभी न होती।

अकबरके पास बडीभारी सेना थी, प्रतापकी सेना बहुत थोडी थी, थोडी सेनाको लेकर किसप्रकार अकबरसे युद्ध करना चाहिये, किस उपायके करनेसे कार्य ठीक २ होगा. इसका उपाय निश्चय करनेके लिये प्रतापसिंहने अपने बुद्धिमान सरदारोंको बुलाकर परामर्श की तथा परामर्श निश्चय होनेपर उसके अनुसार कार्यकरना आरंभ किया। समयोपयोगी कार्यकी आवश्यकताका वर्णन करके वह सामन्तोंको नई २ भूमिवृत्ति दान करने लगे। प्रयोजन समझकर कमलमेरमेंही प्रधान राजपाट स्थापन किया, तथा साथ २ में कमलमेर, गोगुन्डा व औरभी पहाड़ी किलोंकी मरम्मत करली। अल्पसेना होनेके कारणसे मेवाड़की समतलभूमिमें सेनाकी रक्षा करना प्रतापसिंहके विचारमें ठीक नही जचा। इस कारण उन्होंने अपने पितृपुरुषोंकी श्रेष्ठ रीतिका अनुसरण करके सघन और दुर्गम पहाड़ी स्थानोंमें अपनी सेनाके मोरचे जमाये। तथा शीघ्रही इस मर्मकी आज्ञाका प्रचार किया कि "जिस किसीको हमारी अधीनता स्वीकार करनी हो वह शीघ्रही घरोंको छोडकर परिवार सहित पर्वतोंमें आश्रय ग्रहणकरे; नहीं तो वह शत्रु समझा जायगा–और प्राणदंडसे दंडित होगा।" इस आज्ञाके प्रचारित होनेसे प्रजागण अपने २ स्थानोंको छोडकर दलकेदल मेवाडकी पर्वतमालामें जाकर बसने लगे। अगणित प्रजाके चलेजानेसे मेवाडके मार्ग और बाट सूने होगये। थोडे दिनोंके बीचमें ही मेवाडके अधिकांश स्थान सूने होगये। यहांतक कि बुनस और बेरिस नदीके विमल जलसे सींचजानेवाला उपजाऊ और शोभायमान विशाल भूभाग सम्पूर्ण "बेचिराग" अर्थात निष्प्रदीप होगया!!

जैसी कठोरताके साथ प्रतापसिंहने अपनी प्रजाको इस कठोर विधिका अनुसरण करनेके लिये बाध्य किया था. उसका बहुतसा वृत्तान्त मेवाड़ग्रंथोंमें पाया जाता है। इस बातकी परीक्षा करनेके लिये–कि हमारी आज्ञाका भलीभांति पालन होताहै या नही. प्रतापसिंह कितने एक सवारोंके साथ [illegible] [illegible]

वह भी संन्यासीश्रेष्ठ पुण्यश्लोक प्रतापसिंहके विषयमें कुछ न कुछ कविता कर गया। और फिर जिनके हृदयमें थोडा भी कवित्व था, वे भी प्रताप-सिंहका गुणकीर्त्तन करनेमें एक दूसरेको पराजित करनेका यत्न किया करते थे। वह कविता ऐसी तेज होती थीं कि उनके पाठ करनेसे निर्जीव और डरपोक आदमी भी नये बल और नये उत्साहसे जीवित होजाता था। इस बातको सबही जान सकते हैं कि वीरहृदय राजपूतलोगोंके लिये वह कविता कहांतक हृदयग्राहिणी थीं।

कमलमेरके गिरजाने पर राजा मान–सिंहने धरमेती और गोगुण्डानामक दो पहाडी किलोंपर अधिकार किया। इस ओर मुहब्बतखांने उदयपुर लेलिया। अमीशाहनामक एक यवनराजकुमारने चांड और अगुणापानोरके मध्यस्थलमें स्थित होकर भीलोंके साथ जो सम्बन्ध प्रतापसिंहका था उसको छिन्न कर दिया। दूसरी ओर फरीदखाँ नामक मुगल सेनापति चप्पनको घेरकर दक्षिणको वहांतक बढ गया कि जहां चांडमें राणा प्रतापसिंह स्थित थे। चारों ओरसे चांडको शत्रुओंने घेरलिया प्रतापसिंह भी सब ओरसे घिरकर आश्रय हीन होगए। जिस मेवाडभूमिपर एक समय उनका अटल राज था, जहांपर उनके पूर्वपुरुष प्राचीन कालसे राज करते चले आते हैं; आज उसी भूमिके प्रत्येक नगर, ग्राम, पट्टी, और पहाडी दुर्गपर शत्रुओंका अधिकार होगया है। आज उसही मेवाडभूमिके किसी भागमें भी प्रतापसिंहके रहनेको स्थान नहीं मिलता आज मुगलगण उस विशाल मेवाड राजकी कन्दरा २ वन वन और शिखर २ पर उस प्रचंड राजपूतका पीछा करने लगे। परन्तु आश्चर्यका विषय है कि कोई भी उस वीरको नहीं पकड सका। ऐसा विदित होने लगा कि किसी अपूर्व ऐन्द्रजालिक बलसे प्रतापसिंह उनकी आंखोंमें धूल झोंक कर भगजाते थे। वे कुछ प्राणभयसे पलायन करके नहीं घूमते थे वरन् सुअवसरकी [illegible] शत्रुओंकी गति विधिको देखते भालते थे तथा जब उनको [illegible] उसही समय आक्रमण करके शत्रु सेनाका संहार कर [illegible] शत्रुगण किसी वनमें छिपा हुआ जानकर उनका [illegible] वे अपने सामन्त सरदारोंको एकत्रित करके [illegible] किसी [illegible] किया करते थे। इस प्रकारसे [illegible] किसी प्रकारसे भी [illegible]

हिन्दू मुसलमानोंमें घोर समराग्नि प्रज्वलित हुई। एक ओर तो मुगल संम्राट् अकबरकी बड़ीभारी अनीकिनी बनीठनी हुई थी-दूसरी ओर अकेले प्रतापसिंह-केवल साथमें थोडेसे सरदार थे। प्रायः समस्त राजपूत जाति और समस्त भारतवर्षने अकबरके चरणोंमें शिर झुका दिया था। उन अभागे राजपूतलोगोंका उद्धार करनेकी वासनासे वीरकेशरी प्रतापसिंहने अकेलेही मुगलोंसे युद्ध करनेका विचार किया। यदि अकबरकी प्रचंड सेनाके साथ मिलान किया जाय-तो प्रतापसिंहकी सेना कुछभी नहीं थी। परन्तु उस थोडीसी राजपूतसेनाकी नाडियोंमें सनातनवीरोंका रुधिर बिजलीके प्रवाहकी समान प्रवाहित होरहा-था; उसके हृदयमें जो महामंत्र जपा जाता था, वह साधारण नहीं था। उस महामंत्रकी उत्तेजनासे वह समस्त राजपूतलोग स्वदेशके लिये अपने प्राणदेनेको तइयार होगए। उस ओर अकबरभी अपनी प्रधान सेनाको अजमेरमें स्थापित करके प्रतापसिंहसे युद्ध करनेके लिये आया। अकबरने लडाईकी ऐसी प्रचंड तइयारियां की थीं कि जिनको देखकर मारवाडका राजा मालदेव, अम्बरके राजा भगवानदासकी समान मुगलोंकी शरणमें चला आया। इससे पहिले जिसने शेरशाहसे बलीका प्रचंड विक्रम व्यर्थ करदिया था, जिसने मेरता और जोधपुरकी कठोर चढाईको निष्फल करनेकी चेष्टा की थी, जो अबतक एक यथार्थ राजपूत समझा जाता था, न जाने आज दुर्भाग्यसे उसका वह समस्त साहस और तेज किधरको बिलागया? उसने अपने बडे बेटे उदयसिंहको भांति२ की भेंटको साथ देकर अकबरके पास भेजा * उस समय अकबर अजमेरकी ओरको बढरहा था। मार्गके बीच नागोर नामक स्थानमें राजकुमार उदयसिंहने बादशाहसे मुलाकात की। अकबरने अत्यन्त आदर मानसे भेटकी सामग्रीको ग्रहण करके कुमारको राजाकी पदवी दी। उसकालसे मारवाडके रावगण "राजा" नामसे पुकारे जाने लगे। कहतेहैं कि राठौर उदयसिंहका शरीर अत्यन्त स्थूल था, इस कारणसे राजपूतलोग उसको "मोटा राजा" कहा करते थे। अतएव यहांपर यह कहना अत्यन्त उचित होगा कि राठौरोंकी राजनैतिक उन्नतिका यहींसे आरंभ हुआ। कारण कि इसीही समयसे यह लोग बादशाहके "दाहिने हाथ" पर स्थान पानेलगे। अपनी पवित्र कुलमर्यादाको पानी देकर मारवाडके राजाने जिस सम्मानको मोल लिया था. वह सन्मान क्या मारवाड राजके सन्मानको ऊंचे सम्मानकी

* हिजरी ९७७ (सन् १५६९ई०)।

लोहेके कडे दिखाई देते हैं। उन लोहेके कड़ोंमें तथा कीलोंमें बेंतोंके टोकरे टांगकर परमविश्वासी भीलगण राजपूतोंको उनमें रखते थे तथा हिंसक जन्तुओंसे भी दिनरात उनकी रक्षा करते थे। राणा प्रतापसिंहके बालक बच्चे उन बेंतके टोकरोंमें लालित हो कडवे कषैले कन्द मूल फल खाकर प्राण धारण करते थे। सुखसेव्य राजभोग करने और सुन्दर २ महलोंमें रहनेसे भी जिनकी तृप्ति नहीं होती थी, वे लोग अनाथ, और निर्वासितकी समान कन्द मूल फलोंसे क्षुधा निवारण करके वृक्षोंमें बँधेहुए टोकरोंके बीच पडे २ झूलते रहते थे। इस अवस्थाको देखकर भी महाराणा प्रतापसिंहका साहस नहीं जाता था।

इस प्रकारसे वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंहकी वीरता, धीरता, सहनशीलता तथा महानशक्तिका समाचार शीघ्र ही शहन्शाह अकबरने सुना। अकबरने वारंवार राणाजीकी प्रशंसा की। तथापि सुनीहुई बातोंका सत्यासत्य जाननेके लिये अकबरने प्रतापसिंहके गूढ वासस्थानमें एक गुप्तदूत भेजा। उस गुप्तचरने वहां जाय [illegible] होकर गुप्तभावसे देखा कि प्रतापसिंह अपने सामन्त सरदारोंसे वेष्टित हो एक बडे वृक्षके तले तृणासनपर बैठेहुए भोजन करने और योग्य सरदारोंको आदर सहित "दोना" (राजप्रसाद) दे रहे हैं। यद्यपि वह राजप्रसाद बनैले कंद मूल फल ही बनाहुआ था तथापि सरदारलोग उसको पाकर अपनेको कृतार्थ समझते थे। जिस समय प्रतापसिंह उदयपुरके महलोंमें रहकर उत्तम २ भोग सरदारोंको "दोना" में दिया करते थे और उस समय सरदारलोग जैसे आनंद व उत्साहके साथ उस राजप्रसादको ग्रहण करते थे आज भी वैसे ही आनंद और उत्साहके साथ वह राजपूत वीरगण उस प्रसादको ग्रहण करते हैं। उस गुप्तचरने लौटकर यह समाचार दरबारमें जाकर अकबरसे कहा; इस समाचारको सुनकर सबहीके हृदयमें सच्ची भक्तिका संचार हुआ, सब ही प्रतापकी [illegible] महिमासे मुग्ध होकर उनकी प्रशंसा करने लगे; यहांतक कि जिन राजपूतोंने अपने कुलमर्यादाको तिलाञ्जलि दे दिल्लीश्वरके चरणोंमें आत्मसमर्पण किया था वह भी वारंवार प्रतापसिंहके गुणोंका बखान करने लगे। भाटओंमें [illegible] जाता है कि दिल्लीश्वरके प्रधान सामन्त खानखाना [illegible] मोहित हो गए थे कि उसने उनके [illegible] प्रशंसा की "इस जगतमें समस्त वस्तुएं अनित्य और चंचल हैं, [illegible]

[illegible] है।

सिंह गौरवके ऊंचे आसनपर विराजमान रहै इस बातका विचार करके सबके हृदयमें डाहकी प्रबल आग जलने लगी। इसही कारणसे इन कुलांगारोने वीरश्रेष्ठ प्रतापसे युद्ध करनेका विचार करलिया था। इस प्रकारसे राजस्थानके प्रायः समस्त हिन्दू राजाही मुसलमानोंके लोभमें पडकर अकबरकी ओर होगए। केवल बून्दीके हाडाराज*ने इस दुर्दशासे निस्तार पाया था।इसके उपरान्त प्रतापसिंहने उन समस्त राजाओंसे अपना सम्बन्ध छोड दिया कि जो मुसलमानोंसे मिल गए थे और दिल्ली पाटन, मारवाड, तथा धारानगरीके प्राचीन राजपूतोंका अनुसन्धान करके उनके साथ सम्बन्ध स्थापन करने लगे। जो नियम प्रतापसिंहने उस दिन नियत किया था, उनके किसी वंशधरने कभी उसका निरादर नहीं किया। अधिक क्या कहैं कवल इतना कहनाही यथेष्ट होगा कि किसी शिशोदिया वंशवाले वीरने अपनी कन्या या बहन मुगलोंको नहीं दी। यहांतक कि मुगलोंकी पडतीके समय-तक भी इस वंशका कोई राजपूत मारवाड या अम्बेरके राजकुलके साथ वैवा-हिक संबन्धमें आबद्ध नहीं हुआ। इससे प्रतापसिंहकी मान मर्यादाका बढना सहजसेही प्रमाणित होताहै। राजा धनकी तुच्छ लालसासे अपनी कन्या तथा बहिनोंको मुगलोंके हाथमें अर्पण करके भी अम्बेर, मारवाड तथा और २ देशोंके राजपूतगण गौरव हीन तथा कुल हीन होगये थे. उनका प्राचीन कुल गौरव सब भांतिसे नष्ट होगया था। अपने जाति भाइयोंमें वे घृणाकी दृष्टिसे देखे जाते थे, इस बातको स्वयं ही वे लोग समझकर अत्यन्त मर्माहत होगए थे। जिस समयही उनके मनमें यह चिन्ता उदित होती, जिस समयही वह अपने कुलकलंकका ध्यान करते, उस समय उनको अत्यन्तही कष्ट होताथा। इस वृत्तान्तकी सत्यता मारवाड और अम्बेरके दो प्रधान राजाओंके पत्र पढनेसे भलीभांतिसे प्रमाणित हो जायगी। इन दोनों राजाओंका नाम मानसिंह और जय-सिंह था। इन दोनों राजाओंने मुगलबादशाहोंके प्रभावसे एक [illegible] शक्तिको प्राप्त किया था। राजस्थानमें एक समय यही दोनों राजा श्रेष्ठ माने जाते थे। परन्तु जिस समय यह चिन्ता उनके मनमें उदित होती थी तब उनका मानसिक कष्ट सीमासे बाहर होजाता था, अपनी हीनताका विचार करके महादुःखित होते और तुच्छ राज सम्मानको [illegible] धिक्कार देकर सिर पीटा करते थे और सिसोदियाकुलके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापन करने-

---

* बूंदीके [illegible]

[illegible]

वह जानते थे कि जीवनका कर्त्तव्य साधन करनेके लियेही हमारा जन्म हुआहै. यदि पुत्र और मित्रगण जीवनका कर्त्तव्य साधन करके समरभूमिमें गिरतेहैं तो फिर इसमें दुःखकी कौन बातहै? परन्तु आज भोजनके अभावसे प्राणप्यारी कन्याको रोते हुए देखकर वीरहृदय प्रतापका हृदय एक साथही अधीर होगया। वे चंचल होकर उन्मत्तकी समान कह उठे कि "यदि इस प्रकारकी पीडाको देखकर राजमर्यादाकी रक्षा करनी पडे तो उस मर्यादाको शतवार धिक्कार हो" इस प्रकार विचार कर उन्होंने कुछ विलम्ब पीछे ही इस पीडाके दूर करनेकी प्रार्थना अकबरके पास भेज दी।

प्रतापसिंहके इस प्रार्थना पत्रको प्राप्तकर अकबर परमानंदमें मग्न होगया। इस हर्षके समय राज्यमें नृत्य गीत और उत्सव होने लगे। घर २ आनंदके बाजे बजते थे। मुगलकुलके आबालवृद्ध वनिता आनंदमें मग्न होगये। बादशाह अकबरने अत्यन्त हर्षित होकर प्रतापसिंहका वह पत्र पृथ्वीराजनामक एक राजपूतको दिखाया। पृथ्वीराज बीकानेरके राजाके छोटे भाई थे, इस समय वह अकबरकी कैदमें जीवन व्यतीत करते थे। जिस वर्ष (संवत १५१५) राठौरवीर जोधरावने मन्दौरसे अपने प्रतिष्ठा किये हुए मारवाडके सिंहासनको अन्तरित किया. उस ही वर्ष उनके एक पुत्र बीकाने भारतके मरुप्रान्तमें अपने नामसे उक्त बीकानेर राज्यको बसाया था। बीकाके वंशधरलोगोंके विक्रम प्रभावसे बीकानेरका राज्य थोडे ही समयमें उन्नतिके अतिऊंचे शिखरपर पहुंच गया था। परन्तु विस्तारित और अवरोध हीन मरुभूमिमें बसनेके कारण बीकानेरके राजा रायसिंहने भी अपने बडे राजा मारवाडके [illegible] मालदेवकी समान घृणित उदाहरण दिखाया। पृथ्वीराज इन्हीं रायसिंहके भ्राता थे। यद्यपि दैवकी विडम्बनाके कारण मुगललोगोंके [illegible] होगये थे, परन्तु उनका हृदय असीमवीरता, स्वाधीनता और स्वदेशप्रेमसे पूर्ण-भिन्न था केवल वीरही नहीं वरन वह एक तेजस्वी कवि भी थे। इन सब गुणोंसे विभूषित रहनेके कारण वह [illegible] कविताकी मधुरतासे हृदयमें उत्साह [illegible] कर सकते थे तथा आवश्यकता पडने पर हाथमें तलवार लेकर [illegible] और उत्साहमें भी विलक्षण सहायता करते थे [illegible] कहना ही बहुत होगया कि उस समय वे राजस्थानमें एक उत्तम वीर और [illegible] गिने जाते थे। काव्यरसवादिनी भगवती वीणापाणीके [illegible] [illegible]

मुगल बादशाहतमें मिल गए थे। मान–सिंह हिन्दू होकर शास्त्रकारोंके विधानको लांघ किस कारणसे सिन्धुनदीके पार गए थे उसका विशेष कारण–अकबरकी–मान व हृदयज्ञता हुई। इस अपूर्व सामर्थ्यके प्रभावसेही बादशाह अकबरने बहुतसे कार्योंको साधन किया था। *

शोलापुरके युद्धमें विजय पाकर महाराज मान–सिंह राजधानीको लौटते थे उस समय उन्होंने प्रतापसिंहके निकट अतिथि सत्कारग्रहण करनेकी वासनासे समाचार भेजा। उस समय प्रताप कमलमेरमें थे। अम्बेरनाथका समाचार पातेही उन्होंन्हें ग्रहण करनेके लिये उदयसागरतक बढ़ आये। उस सरोवरके किनारे कि जहां चट्टानें बिछी हुई थीं, राजा मान–सिंहके लिये अनेक प्रकारकी खाद्यसामग्री प्रस्तुत हुई। भोजन तइयार होनेपर राजकुमार अमरसिंहने अम्बेरराजमान–सिंहको बुलाया। मान–सिंहने वहां आतेही राणा प्रतापसिंहको देखना चाहा परन्तु राणाजीको वहां न देख पानेसे मनमें अत्यन्त सन्देह हुआ और अमरसिंहसे इसका कारण पूछा, अमरसिंहने नम्रतासे उत्तर दिया कि "पिताजीके शिरमें दर्दहै इस कारण वह नहीं आसके।" मान–सिंहका संदेह औरभी बढ़गया, उन्होंने किंचित गर्वके साथ सन्मानित स्वरसे कहा कि "राणाजीसे कहो कि म उनके शिरदर्दका यथार्थ कारण समझगयाहूं। अब जो कुछ होना था सो तो होगया, जिस भ्रममें गिराहूं उसके शोधन करनेका कोई उपाय है ही नहीं, फिर

---

* काबुल राज्य उस समय मुगल राज्यके अन्तर्गत था। अकबरका छोटा भाई मिरजा [illegible] वहाका सूबा था। मिरजाने उस राज्यको स्वय पचाना चाहा और [illegible] कर दिया। तब अकबरशाहने विद्रोह दमन करनेके लिये सेनासहित मानसिंहको भेजा। राजा मानसिंह [illegible] (अटक) नदीके किनारे पहुँचे, कारण कि काबुलको जाते हुए सिन्धु (अटक) नदी [illegible] है, और हिन्दू धर्मशास्त्रमें इस नदीके पार जानेका निषेध किया है। इस कारणसे राजा मानसिंह वहाही रुक गये और इस विषयका पत्र अकबरके पास भेजा। [illegible] शाहने निम्न लिखित दोहा पत्रमें लिख भेजा—

दोहा–सबै भूमि गोपालकी, वामे अटक कहा। [illegible]

इस सरसभाव पूर्ण कविताको पढ़कर मानसिंहने [illegible] पार उतर काबुलमें जाना स्वीकार किया। [illegible] पही उपाय किया, जिससे मानसिंह प्रसन्न होगये। [illegible] मानसिंह मानने वाला नहीं था।

(परन्तु [illegible] अटक पर [illegible])

को बादशाहके एक दूतको देकर राणाजीके पास जानेको कहा । इस पत्रके पढनेसे सहसा बोध होताहै कि मानो पृथ्वीराज इस कारणको प्रतापसिंहसे जानना चाहते हैं कि आप किसकारण बादशाहको शिर झुकाना स्वीकार करते हैं किन्तु इस पत्रके भीतर और भी एक भाव गुप्त था । वास्तविक बात यह थी कि पृथ्वीराजने प्रतापसिंहको उस अपमानसे बचनेके लिये अनुरोध किया था । उस पत्रकी कविता यहांतक तेजस्विनी और हृदयग्राहिणी थी कि आजतक भी बहुतसे राजपूतगण उसको पढते २ आनंदमें मग्न होजातेहैं । पाठकोंके अवलोकनार्थ वह पत्र नीचे लिखा जाता है ।

“ हिन्दुओंका समस्त आशा भरोसा हिन्दूके ऊपरही निर्भर करता है; तथापि राणा उन सबके छोडनेको तइयार हुए हैं । किन्तु यदि प्रताप न होते तो अकबरके द्वारा सब ही समान भूमिमें लाये जाते, कारण कि हमारे राजालोग जातीय वीरताको खो बैठे हैं । हमारी स्त्रियें पवित्र सन्मान गौरवसे अलग होगई हैं । राजपूत कुलरूप इस विशाल विपणी (बाज़ार) में केवल एक अकबरही क्रेता (खरीददार) है । केवल उदयके पुत्रके अतिरिक्त बादशाहने और सबहीको मोल लेलिया; परन्तु प्रताप अमूल्य है । यथार्थ राजपूत होकर कौनहै जो नौरोजके लिये अपने कुलकी मान मर्यादाको त्याग सकता है ?—तथापि कितने ही लोगोंने ऐसा कियाहै । क्षत्रियोंके सबही बडे २ माल बिक गये, तो क्या अब चित्तौर भी इसी हाट (बाज़ार) में बिकनेको आवेगा ? राज्य, धन, सुख, सम्पत्तिको तो पत्तेने त्याग करदिया, तथापि इसने अमूल्यधनको अबतक नहीं छोडाहै । ऐसे बहुतसे हैं जो निरुपाय और निरवलम्ब होकर इस बाजारमें आय अपने नेत्रोंके सामने अपना अपमान देखते हैं । परन्तु केवल हमीरके वंशधर ही उस कलंकसे दूर रह सकेहैं । संसार जिज्ञासा करताहै कि प्रतापको कहांसे यह गुप्त सहायता प्राप्त हुई ? अपनी तलवार और महाप्रतिज्ञाकी अनुकूलताके सिवाय तो सहकूलता और कुछ भी नहीं है । उस तलवार और महाउत्साहसे ही इन्होंने क्षत्रियोंके गौरवकी भलीभांतिसे रक्षा की । मनुष्यरूपी पैदा नर व्यापारी कुछ निर्जीवी तो है ही नहीं; अतएव अतिक्रान्त होकर एक दिन इस व्यापारीको इस छोड़के जानाही पडेगा । उस काल हमारे वंशधरोंको रक्षाका और प्रताप... लोगोंसे स्मरण किया जायगा. उस समय प्रतापसे राजपूत [illegible]

नेको पतित समझा, तथा उस पापसे उद्धार पानेके लिये तत्काल स्नान किया और वस्त्रादि बदल डाले। उस दिन उस उदयसागरके किनारे जो जो कार्य हुए अकबरशाहने उन सबको सुना। मान–सिंहके अपमानसे उसने अपने मानका नाश समझा। बादशाहकी क्रोधाग्नि भडक उठी। अकबर समझाथा कि राजपूत लोग अपने प्राचीन संस्कारोंको छोड बैठे होंगे, परन्तु यह उसकी भूल थी। मान–सिंहके निरादरका बदला लेनेके लिये अकबरने युद्धकी तइयारी की। इन तइयारियोंसे जो भयंकर समर हुआ था, उसमेंही विक्रम प्रकाश करके वीरकेशरी प्रतापसिंहने अपना नाम अमर कियाथा, उसी युद्धमें प्रचंड वीरता दिखानेसे प्रतापसिंहका नाम–स्वदेशप्रेमिक सन्यासियोंकी नाममालामें सबसे ऊपर लिखा गयाहै। युद्धका वह स्थान कि जिसमें प्रतापके प्रतापका प्रकाश चारों ओर फैल गया था–हलदीघाटके नामसे प्रसिद्धहै। जबतक मेवाडका शासन दंड किसी शिशोदिया वीरके हाथमें रहैगा, अथवा प्रतापसिंहकी वीरताका बखान करनेके लिये जबतक एक भट्टकविभी जीवित रहैगा तबतक पुण्यक्षेत्र हलदी-घाटका नाम कोईभी नहीं भूलैगा।

प्रथम तो दिल्लीश्वर अकबरका बेटा तथा मुगल बादशाहतका भावी उत्तराधि-कारी युवराज सलीम प्रचंड अनीकिनीको साथले प्रतापसिंहसे युद्ध करनेके लिये आया। राजा मान–सिंह और सागरजीका जातिभ्रष्ट विख्यात पुत्र मुहब्बतखां भी युद्धका परामर्शादि देनेके लिये युवराजके साथ आया था परन्तु वीरकेशरी प्रतापसिंहके पास इस समय कैसी सहायता थी? केवल २२००० (बाईस हजार) राजपूत और कितनेएक भीलही उनके सहायक थे, तथा सबसे अधिक सहा-यक उनके हृदयका प्रचंड उत्साह था। इसही सहायताके ऊपर निर्भर करके प्रतापसिंहने मुगलोंकी महान सेनाका सामना किया था। सबसे पहिले तो राणाजीकी सेना प्रचंड प्रतापसे आरावलीके बाहिरी पर्वतप्रदेशमें प्रवेश कर गई तदुपरान्त उस निविड गिरिमार्गका पश्चिम भागस्थान जो कि सुगम था. उसमें होती हुई आरावली शैलमालाके प्रधान गिरिमार्गमें जा पहुंची।

आरावली शैलमालाके इन दुर्गम स्थानोंमें वीरवर प्रतापसिंह सावधानीसे रहते रहे। यह स्थान नवानगर और उदयपुरकी पश्चिम ओरको था। इसकी लंबाई दश योजन और चौडाईभी ४० कोस थी। यह स्थान चारोंतरफ विशाल ऊंचे ऊंचे पर्वत और वनोंसे घिराहुआ है. बीचमें छोटी २ नदियें टेढेमार्गसे बहती हैं। यदि उदयपुरको इस दुर्गम गिरि–दुर्गका मध्यबिन्दु कहा जाय तो भी

प्रवेश नहीं होसकता था । राजपूत और मुसलमान व्यापारियोंकी स्त्रियें अनेक देशोंके शिल्पजात पदार्थ लाकर उस मेलेमें कारवार किया करती थीं - और राजपरिवारकी स्त्रियें वहां जायकर मनमानी सामग्री मोल लिया करतीथी । “बादशाह भी वेषबदले हुए वहां जाकर भ्रमण किया करतेथे । इस अवसरमें वह व्यापारकी वस्तुओंका यथार्थमोल जानलेतेथे, तथा राजाकी अवस्था और राजकर्मचारियोंके ऊपर सर्वसाधारणका कैसा मत है इस विषयको भी वह जान जाते थे ।” प्रत्येक बुद्धिमान् पाठक इस बातको जान सकते हैं कि इस उत्सवकी जडमें एक प्रकारकी कुप्रवृत्तिका बीज गुप्तभावसे छिपा हुआ था । चालबाज अब्बुलफ़ज़लने इस दुरभिसन्धिको एक दूसरी प्रकारकी मूर्तिमें अवतारित करके संसारकी आँखोंमें धूल डालनेकी चेष्टा की है । सुखका विषय है कि उसकी वह चेष्टा फलवती नहीं हुई । समयके असीम माहात्म्यसे सत्यका उजाला आपसे आपही प्रकाशित होगया । क्या अकबर सब भाषाओंको जानताथा ? अच्छा, ऐसा न सही, अनपढी मुसलमानियां और राजपूत रमणीगण निरा- कठिन और मिश्र भाषामें परस्पर बातचीत करती थीं. क्या वह उस भाषाको समझ लेताथा ? कौन इस बातका प्रमाण देसकता है ऐसा कौनसा बुद्धिमान है जो चालबाज अब्बुलफ़ज़लकी चालाकीसे धोका खाकर सिर झुकाय सहस्र हृदयसे मुगलबादशाहकी उस भयंकर कुप्रवृत्तिको धन्यवाद देगा ? जिसको साधारण ज्ञान है, जो अच्छे बुरेका विचार करसकता है, वह अवश्य ही ऐसा

राजवंशोत्पन्न पुरुष और स्त्रियें [illegible] ... थे बदलेमें इनको बहुतसाधन मिला था । [illegible] ... बहुतसे राजा एक२ कारवार करते थे । [illegible] ... औरंगजेब दोनोंने [illegible] ... [illegible]

के तीक्ष्ण वेगको रोकनेकी किसीमें सामर्थ्य नहीं थी। अपने प्रचंड शत्रु मान–सिंहका अनुसन्धान करतेहुए राणाजी सलीमके सामने पहुँच गए। हिंदूवैरी बादशाहके बडे बेटेको सन्मुख देखकर प्रतापसिंहका साहस और उत्साह दूना होगया। उन्होंने भयंकर खड्ग उठाय अपने प्यारे तुरंग चैतकको सलीमकी ओर चलाया। उस भयंकर तरवारके प्रचंड आघातसे सलीमके शरीर रक्षकगण तो अल्पकालमेंही दो टुकडे होकर पृथ्वीपर गिरे। पीछे मेवाडनाथने सलीमके मदमत्त रणमातंगके सोंही अपने प्रचंड तुरंगको चलाया। उनका चैतक अश्व मानों अपने स्वामीके अद्भुत वीरतासे अत्यन्त बलवान होगया। अपने प्रभुके घोरशत्रु सलीमके प्रचंड रणमातंगकी शुंडको दबायकर चैतकने उसके मस्तकपर अपने दोनों पाँव रखदिये। तत्कालही राणाजीने सलीमके ऊपर अपना भयंकर शूल चलाया। भाग्यसे सलीमका हौदा लोहेके मोटे पत्तरसे मढ़ा हुआ था, उसही पर वह शूल टकराया और शाहजादा बचगया; नहीं तो उसके मारे जानेमें कोई सन्देह नहीं था। यद्यपि प्रतापसिंहका भयंकर शूल सलीमको संहार नहीं करसका, तथापि वह सम्पूर्णतः निरर्थक भी नहीं हुआ। हौदेमें लगे हुए लोहेके पत्तरपर टकराकर वह दूने तेजसे महावतके लगा। महावत तत्कालही पृथ्वीपर गिरकर मरगया। महावतके गिरते ही निरंकुश होकर हाथी सलीमको संग्रामसे लेकर भागा।

सलीम भागा, परन्तु प्रतापसिंहने तब भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। भागते हुए उस गजराजके पीछे अपने चैतकको भी दौडाया। उस काल दोनों दलोंमें कराल संग्राम होने लगा। एक ओर तो अगणित मुगलसेना शाहजादेको बचानेके लिये खड्ग चलाने लगी, दूसरी ओर निडर और कठोर राजपूतगण,–प्रतापके प्रतापकी रक्षा करनेके लिये तथा मुगलोंका दाप चूर्ण करनेको प्राणका दाव लगाकर युद्ध करने लगे। शतशः मुगलवीर इनके हाथसे मारे गये, परन्तु इससे क्या होताहै? जो मुगल मरते थे उनके स्थानपर दूसरी मुगलसेना आनकर डट जाती थी। उस समय बहुतसे राजपूत वीरोंने प्रतापसिंहकी रक्षा करनेके लिये रणरूपी यज्ञमें अपने प्राणोंकी आहुति दे दी। प्रतापसिंहका पक्ष हीन होने लगा। परन्तु राणाजीने इसकी कुछभी चिन्ता न की। राजपूतकुलकलंक मान–सिंहका अनुसन्धान करते हुए वह सबकी सेनामें विचरण करने लगे! परन्तु मस्तकपर मेवाडका राजछत्र लगाहुआ था. उसको ताककर मुगलसेनाने इनको घेरलिया। इन राजचिह्नोंके धारण करनेसे पहिले

बादशाहको शिर नवाया था ! सर्वगुणसम्पन्न भार्याके पवित्र प्रेमालापसे वह अधीनताके दुःखको कुछ नहीं समझते थे। इनकी भार्याके सर्वांगसुन्दर और सर्वगुण सम्पन्न होनेका प्रमाण निम्नलिखित वर्णनसे प्राप्त होगा। इस वृत्तान्तमें उस वीरबालाके अद्भुत सतीत्वकी परकाष्ठा दिखाई गई है। एक समय दिल्लीश्वर अकबर "खुशरोज़" के आनन्द बाज़ारमें गुप्तवेशसे घूमता फिरता था, कि इसही अवसरमें पृथ्वीराजकी स्त्रीकी स्वर्गीय सुन्दरताका प्रतिबिम्ब उसके नेत्रोंमें पड़ा, उस अपूर्व रूपलावण्यको निहारकर बादशाहका प्राण मोहित होगया। चित्र पुतलीकी समान इकटक लोचनसे वह उस रूपसुधाको पानकरने लगा। दिल्लीश्वरके हृदयमें पापवृत्ति बलवती हुई। विश्रामभवनमें आय अपने मनोरथके पूर्ण करनेका अवसर खोजने लगा। उसकी इस घृणित पाशवी वृत्तिके उकसानेके दो मुख्य कारण थे; प्रथम तो अपनी कामलालसाको तृप्त करना; दूसरे मेवाड़के पवित्र कुलमें कलंक लगाना ! रोमांचकारी इन दो कारणोंके वश होकर मुगलसम्राटने कौशलसे उस सुरसुन्दरी राजपूतबालाको हस्तगत करनेकी चेष्टा की। रक्षक ही भक्षकका कार्य करनेके लिये तइयार हुआ, जिसके ऊपर सुखदुःख, धर्माधर्म, जीवन मृत्यु समस्त ही निर्भर है, आज वही निठुर कठोर और पशुकी नाई आचरण करनेको तइयार हुआ है; जो साक्षात धर्मका अवतार कहकर पुकारा जाताहै, आज वही अधर्मकी सहायता करनेको तत्पर है। इस विषम संकट—इस दारुण दुर्विपाक और—इस कठोर अग्निपरीक्षाके समय आज कौन पतिव्रताके धर्मकी रक्षा करेगा ?

था। कदाचित् पीछे सलीमके हृदयमें किसी प्रकारका सन्देह हो, इस शंकासे फिर शक्तसिंहने मुगलोंकी सेनामें गमन किया। बडेभ्राताके चरण स्पर्श कर बिदा लेनेके समय उनको धीरज बँधाकर कहा कि "अवसर प्राप्त होतेही मैं शीघ्र आपसे मिलूँगा" वे दोनों मुगल जो राणाजीका पीछा करते हुए आए थे, उनको शक्तसिंहनेही मारा-था, इनमेंसे एक खुरासानका और दूसरा मुलतानका निवासी था। शक्तसिंह उस खुरासानी सैनिकके घोडेपर चढकर सलीमके दरबारमें पहुँचे; परन्तु जो कुछ शंका उन्होंने की थी, वही आगे आई। आनेमें विलम्ब और उनके आकार को देखकर सलीमके हृदयमें तत्काल संदेह हुआ। शहजादेने शक्तसिंहसे खुरासानी और मुलतानी सैनिकका हाल पूछा तब उन्होंने इधर उधर करके कहा कि "वह दोनों प्रतापके हाथसे मारे गये, प्रतापने केवल उनकोही नहीं मारा वरन मेरे घोडेको भी मार डाला। इस कारण मैं विवश हो खुरासानी मुगलके घोडेपर सवार होकर आयाहूं।" शक्तसिंहको इस प्रकार इधर उधर करते देख सलीमने अभय दान देकर कहा, कि "अगर आप सच २ कहदें तो मैं सब कसूर मुआफ करदूँगा।" सलीमका वाक्य शेष होते न होते शक्तसिंहका वदन गंभीर होगया, उन्होंने निःशंक होकर उत्तर दिया। "मेरे बडे भाईके कंधेपर एक विशाल राज्यका भार है, हजारों आदमियोंका सुख दुःख केवल उनहींके ऊपर निर्भर है, इस समय वह संकटमें हैं, फिर भला उनको संकटमेंसे उद्धार किये विना मैं कैसे निश्चिन्त रह-सकताहूँ।" सलीमने पहिलेही शक्तसिंहको अभय दिया था इस कारण कुछ न कहा परन्तु अपने यहांसे उनको विदा दे दी। शक्तसिंहके पक्षमें इससे मंगलही हुआ। वह शीघ्रही उदयपुरमें जाकर अपने भाई प्रतापसे मिले। उदयपुरमें आनेके समय शक्तसिंहने भिंसरोरनामक दुर्गपर आक्रमण करके उसको अधिकारमें किया। इसही किलेको "नजर" में देकर अपने भ्राताके चरणोंकी वन्दना की। उदार प्रतापसिंहने वह नया जीताहुआ दुर्ग अपने भ्राताको ही भूमिवृत्तिमें दे दिया। शक्तसिंहके वंशवालोंने वहुत दिवसतक उसको अपने अधिकारमें रक्खा। उस भयंकर विपत्तिके समयमें प्रतापसिंहका प्राण बचानेके कारण शक्तसिंहकी अत्यन्त प्रशंसा और मर्यादा हुई थी। उनके उस महान गौरवका विवरण आजतक भट्ट-

* शक्तसिंहकी माता "दाईजी राज" अर्थात् राजमाता थी। [illegible] प्रतापसिंहको छोड भिंसरोरनामक दुर्गमें अपने प्यारे पुत्र [illegible] । [illegible] अवश्य समझना चाहिये कि वह राजमाताके योग्य [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] इसके लिये उन्होंने इस सम्मानको त्याग दियाथा, इस कारण [illegible] राज" कहकर पुकारी जाती है।

बादशाहको शिर नवाया था! सर्वगुणसम्पन्न भार्याके पवित्र प्रेमालापसे वह अधीनताके दुःखको कुछ नहीं समझते थे। इनकी भार्याके सर्वांगसुन्दर और सर्वगुण सम्पन्न होनेका प्रमाण निम्नलिखित वर्णनसे प्राप्त होगा। इस वृत्तान्तमें उस वीरबालाके अद्भुत सतीत्वकी पराकाष्ठा दिखाई गई है। एक समय दिल्लीश्वर अकबर "खुशरोज़" के आनन्द बाज़ारमें गुप्तवेशसे घूमता फिरता था, कि इसी अवसरमें पृथ्वीराजकी स्त्रीकी स्वर्गीय सुन्दरताका प्रतिबिम्ब उसके नेत्रोंमें पड़ा, उस अपूर्व रूपलावण्यको निहारकर बादशाहका प्राण मोहित होगया। चित्र पुतलीकी समान इकटक लोचनसे वह उस रूपसुधाको पानकरने लगा। दिल्लीश्वरके हृदयमें पापवृत्ति बलवती हुई। विश्रामभवनमें आय अपने मनोरथके पूर्ण करनेका अवसर खोजने लगा। उसकी इस घृणित पापकी वृत्तिके उठानेके दो मुख्य कारण थे; प्रथम तो अपनी कामलालसाको तृप्त करना; दूसरे मेवाड़के पवित्र कुलमें कलंक लगाना! रोमांचकारी इन दो कारणोंके वश होकर मुगलसम्राटने कौशलसे उस सुरसुन्दरी राजपूतबालाको हस्तगत करनेकी चेष्टा की। रक्षक ही भक्षकका कार्य करनेके लिये तइयार हुआ, जिसके ऊपर सुखदुःख, धर्माधर्म, जीवन मृत्यु समस्त ही निर्भर है, आज वही निठुर कठोर और पशुकी सार आचरण करनेको तइयार हुआ है; जो साक्षात धर्मका अवतार कहकर पुकारा जाता है, आज वही अधर्मकी सहायता करनेको तत्पर है। इस विषम संकट—उस दारुण दुर्विपाक और—इस कठोर अग्निपरीक्षाके समय आज कौन पतिव्रताके धर्मकी रक्षा करेगा?

उसके उपरान्त वह सरला सुकुमारी मेलेसे घर लौटनेका विचार करने लगी। जिस आंगनके भीतर होकर वह सदा आया जाया करती थी, आज भी उसी मार्गसे चलने लगी। कुछ दूर आके देखा कि चारों ओरके द्वार बन्द हैं; बाहर जानेका और कोई मार्ग नहीं है, वह अत्यन्त विस्मित हुई, क्रमसे उसके हृदयमें अनेक प्रकारके सन्देह उत्पन्न होने लगे। उसी समय एक ओरका द्वार [illegible] गया। उस खुले हुए द्वारसे दिल्लीश्वर अकबर भीतर आया और कामोन्मत्त भावसे अपनी दोनों बाहें फैलाकर उसके सामने खड़ा होगया [illegible] प्रकारकी बातें कहकर उस वीरबालाको प्रलोभन दिखाने लगा। [illegible] भी सतीका हृदय कम्पित होने लगा, उसी [illegible] निराश्रय अबलाके [illegible] [illegible] राजपूतबालाके [illegible]

विजयके आनंदको मनाताहुआ युवराज सलीम हलदीघाटके पर्वतस्थानको छोडकर चला गया। वर्षाकाल आगया, नदियां भरगईं, पहाडी स्थान दुर्गम होगये, इस कारण शत्रुके कार्योंमें विघ्न हुआ। इस सुअवसरमें प्रतापसिंहको कुछ दिनके लिये विश्राम मिला। परन्तु जब वसन्तके आगमनसे जैसेही मार्गादि ठीक हुए कि वैसेही फिर विशाल मुगलवाहिनी चढ धाई। अभाग्यसे उस युद्धमें भी राणाजी पराजित हुए और उन्होंने उदयपुरको छोडकर कमलमेरमें अपनी छावनी डाली× परन्तु वहांपर भी निश्चिन्त न हो सके बादशाहके सेनापति कोका-शहबाजखांने शीघ्र ही उस पहाडी किलेको घेर लिया। मुगलोंके भयंकर पराक्रमको रोकते हुए प्रताप बहुत दिनोंतक कमलमेरमें अटल भावसे रहे, परन्तु स्वदेशद्रोही देवराजकी शत्रुतासे उनको यह आश्रय स्थल भी त्याग करना पडा। कमलमेरमें नागननामक एक बडा कुवां था सब लोग इसहीके जलको पीकर प्राण धारण करते थे। दुष्ट देवराजने यह गूढ वृत्तान्त मुगलोंको सूचित किया तथा विषधर भुजंगद्वारा उस कुएँके जलको दूषित करने का परामर्श दिया। तदनुसार उस कुएँका जल विषैला किया गया, प्रतापसिंहको जलके अभावसे अत्यन्त कष्ट होने लगा। इस कारण कमलमेरको छोडकर चौंड * नामक गिरिदुर्गमें चले गए। मुगल सेनाने उस स्थानको भी घेरलिया। शनिगुरु सरदार भानसिंहने मुगलसेनाके कराल ग्राससे चौंडका उद्धार करनेके लिये रणमें अपूर्व वीरता दिखाकर अंतमें अपने प्राणतक देदिये। इस कठोर कार्यमें मेवाडका प्रधान भट्टकवि मारागया। उसके हृदयोत्तेजक समर-संगीत और अद्भुत रणरंगको देखकर राजपूत वीरगण यहांतक उत्तेजित हो गए थे कि सबने स्नेह ममता सब भांतिकी सुकुमार प्रवृत्तियोंको जलांजलि देकर "निर्दई यवनराज" के कठोर आक्रमणको व्यर्थ करनेकी चेष्टा की। चौंडकी चढाईके समयमें उस भट्टकविने अपने राजाकी वीरताका बखान करके जो कईएक तीव्र कविताओंको बनाया था, आजतक भी प्रत्येक मेवाडवासी उत्साहके साथ उन कविताओंको गाया करते हैं परन्तु उस कविकी परलोक प्राप्तिके साथ वीरकेशरी प्रतापकी अमानुषिक वीरत्व सूचक कविता रचनाका अंत नहीं हुआ। यहांतक कि जिस हिन्दू या मुसलमान पर किंचित् भी कविता करनी आती थी,

× संवत् १६३३ भाद्रपद ७ (सन १५७७ ई०) को यह युद्ध हुआ था।

* मेवाडके दक्षिण पश्चिम भागके पर्वतदेशमें चप्पननामक एक [illegible] है। चौंड इसके अन्तरवर्ती एक साधारण नगर है। चप्पनके मध्यमें प्राय ३५० नगर और गांव हैं। इन सब स्थानोंमें भीललोग रहा करते हैं।

पीछा करने लगे; परन्तु कोई उनके एक केशकोभी स्पर्श नहीं करसका । वे अपने गुप्तस्थानमें छिपे रहकर सुयोग और सुभीतेके अनुसार साधारण २ मुगल सेनापर छापामारकर जडमूलसे उनका संहार करने लगे । इस प्रकारसे बहुत-दिन बीत गये; अर्द्धाशन या अनशन और अनिद्राके कठोर क्लेशको सहन करके वीरश्रेष्ठ प्रतापने बहुत दिनोंतक मुसलमानोंसे युद्ध किया; क्रमसे उनकी सहायता घटती गई । कन्दमूलफल, वृक्षोंके पत्ते और तृण बीजादि जिन हीन अपदार्थोंका भक्षण करके वह किसीप्रकार अपना निर्वाह करते थे, धीरे २ वह पदार्थभी निबडते गये । वृक्षोंपर फल नहीं रहे, कन्द मूलका पता नहीं, तृणराजिमें बीज नहीं ! क्या करें ? क्या बिना भोजनके अब पशुकी समान मरना होगा ? मरना हो तो कुछ हानि नहीं, कारण कि मृत्यु तो प्रत्येक प्राणीके लिये अवश्यम्भावी है ।

परन्तु उन्होंने जो स्वदेशके लिये—"स्वर्गादपि गरीयसी" मातृभूमिके लिये इतने दिनतक महाकष्ट सहकर घोरयुद्ध किया, जन्मभूमिको मनुष्योंके रुधिरसे स्नान करादिया; उस जन्मभूमिका क्या सत्त्व होगा ? जिस अभिप्रायसे उन्होंने अपने राज्यको श्मशान बनाकर दीर्घकालतक बनवासके कठोर क्लेशको सहन किया, क्या वह अभिप्राय सफल होगया ? उनकी अर्द्धाङ्गिनी दुःखकष्ट और विषमयी चिंताके विषदंशसे हीन, दीन, क्षीन, मनमलीन होरही है; पुत्र कन्याओंको भलीभांति आहार न मिलनेके कारण दुर्बलताने सतारक्खा है ! ऐसी अवस्थामें राणाजी कबतक यवनोंसे युद्ध करसकतेहैं । सहाय सहारा सब जाता रहा, अब स्वाधीनताके जानेकी बारी आई । जिस स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिये अब-तक उन्होंने इतने कष्ट [illegible] यदि वही स्वाधीनता चली जाय तो फिर कौनसी वस्तु निकट रह जायगी, बाप्पारावलके पवित्र कुलमें कलंक लग जायगा । अतएव दूसरा उपाय न देखकर वीरकेशरी प्रतापने स्वदेशको छोड, जन्मभूमिसे मुख मोड, प्रीतिका नाता तोड सिन्धुनदके किनारेपर बसे हुए सगदी राज्यमें अपनी [illegible] [illegible] करनेका पक्का विचार करलिया । [illegible] सरदारों होगई । जिन सरदारोंने दुःखसुख समान [illegible] [illegible] साथ दिया था वे अब भी सबके सब साथ चलनेको तय्यार हुए । उन [illegible] सरदारोंको और अपने स्त्री पुत्र कन्यागणको साथ ले [illegible] [illegible] पर्वतके शिखरपर गये । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । उस [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

क्रोधाग्निमें भस्म होगए । सेनापति फ़रीदखॉने चोंडनगरको घेरकर समझ लिया था कि प्रताप अवश्य ही मेरे हाथमें पकडा जायगा, परन्तु शीघ्रही उसकी वह आशा निराशाके रूपमें बदल गई। उसकी चालाकी और विपुलसेना प्रतापसिंहकी रणचातुरीके आगे व्यर्थ हो गई । एक समय राणाजीने इस समस्त सेनाको एक गिरिसंकटमें घेरकर सम्पूर्णतासे संहार कर डाला । इस प्रकारसे कितनेही युद्धविशाद प्रचंड मुगलवीर प्रतापके तीक्ष्ण खड्गसें धराशायी हुए । प्रतापसिंहको कोई भी नहीं पकड सका । इस प्रकारसे वेतनभोगी मुगलसेनाका साहस धीरे २ घटता गया । राजपूतवीरके साथ युद्ध करनेका उत्साह उनमें नहीं रहा । इस ओर वर्षाकी अविरल जलधारासे नदी नाले उमड़ आए, राह घाट दुर्गम हुए, समस्त पहाड़ी स्थानोंसे एक प्रकारकी विषैली वाफ निकलकर सम्पूर्ण देशमें विस्तारित होगई । विवश होकर शत्रुओंने युद्ध बंद किया । इस भांतिसे जब वर्षाऋतुका समागम होता उसही समय महाराणा प्रतापसिंहको कुछ दिनोंके लिये विश्राम मिल जाता था ।

क्रमानुसार अनेक वर्ष व्यतीत होगए । संसारमें बहुतेरे अदल बदल हुए परन्तु प्रतापसिंहकी टेक उस ही प्रकारसे बांकी रही, मुगलगण किसी प्रकारसे उनको नहीं पकडसके । परन्तु कालके प्रभावसे राणाजीके आश्रयस्थान एक २ करके मुगलोंके अधिकारमें जाने लगे, दुःख बढ़ता गया । उनका परिवार ही उनकी चिन्ताका मूल कारण हो उठा । शत्रुओंसे अपनी रक्षाका उपाय तो वह थोडेही समयतक विचारा करते थे, परन्तु यह शंका सदा उनको भस्म किया करती थी कि कहीं हमारे पुत्र कलत्रादि शत्रुओंके हाथमें न पडजांय अथवा पवित्र शिशोदिया वंशमें कोई कलंक न लग जाय । यह शंका अमूलक नहीं थी कारण कि परवारवाले कईवार शत्रुओंके हाथमें पड गये थे। एकवार तो शत्रुओंने उनको सम्पूर्णताहीसे अपने अधिकारमें कर लिया था. परन्तु उस समय भी गिह्लोटकुलके सनातनमित्र विश्वासी भीलोंने उनका उद्धार किया । उसवार कावानिवासी भील लोगोंने राणाजीके परिवारको टोकरोंके भीतर रखकर जावरा स्थानकी खानिमें, जहां टीन निकला करती थी छिपादिया था । परमहितकारी भीलगण आप तो भूंखे प्यासे रह जाते थे तथा उनको भोजन जुताते थे और दिन रात सावधानीसे उनकी रक्षा किया करते थे । उनके उस महोपकारका निदर्शन आजतक विद्यमान है । आजतक जावरा और चोंडके सून सान वनोंके विशाल २ वृक्षोंकी चोटियोंपर अगणित गड़ी हुई खीले और

दूसरी सेना पडाव डाले हुएथी। प्रतापसिंह उन भागेहुए मुगलोंका पीछा करते २ उस स्थनामें पहुंच गये। और उस समस्त यवनसेनाका संहार करडाला । यह समाचार सुनकर मुगलोंमें अत्यन्त घवडाहट हुई। प्रतापसिंहको उनकी सेनाके साथ कैद करनेका विचार यवनलोग करने लगे । उनकी तयारियें होही रहीं थीं कि इसी अवसरमें राणाजीने उस मुगलसेनाको घेरलिया कि जो कमलमेरमें पडी हुई थी। उस सेनाके स्वामी अबदुल्लाको दलसहित प्रतापसिंहने रणभूमिपर गिरा दिया। इस प्रकार थोडे ही समयमें इस वीरने ३२ किले अपने अधिकारमें कर लिये। इन बत्तीस किलोंमें जितने मुसलमान थे वह समस्त ही राणाजीके हाथसे मारे गये। इस भांति थोडे ही समयमें प्रतापसिंहने संवत् १५८६ (सन् १५३० ई.) से चित्तौर, अजमेर और मंडलगणके अतिरिक्त और समस्त मेवाडभूमिको यवनोंसे छीन लिया। जो मान-सिंह प्रतापसिंहका भयंकर शत्रुथा, जिसके कारण उनको इतना कष्ट उठाना पडा, बडी २ विपत्तियें भोगनी पडीं, अपने हाथसे जिसका प्राण संहार करनेके लिये जिन्होंने अपने जीवनका माया मोह पर्यन्त छोड दिया था, उस राजपूतकुलकलंक स्वदेशद्रोही मानसिंहका विजय गौरवसे मत होकर निश्चिन्त बैठ रहना प्रतापसिंहसे न सहा गया। वह उसको स्वदेशद्रोहिताका भलीभांतिसे प्रतिफल देनेके लिये अम्बेरराज्यपर चढ गये तथा उसके प्रसिद्ध वाणिज्य स्थान मालपुरको उजाडकर अपने राज्यमें लौट आये।

कुछकालमें उदयपुरको भी अधिकारमें कर लिया. इस नगरके लेनेमें राणाजीको अधिक परिश्रम नहीं करना पडा। शत्रुगण बिना ही संग्राम किये उदयपुरको छोडकर चलते बने। कहतेहैं कि जब उदयपुरके नागरों और प्रतापसिंहने अपना अधिकार करलिया तब बादशाहने विरक्त होकर इस नगरको छोडा था। परन्तु मद्ग्रंथोंमें देखा जाताहै कि प्रतापके अपूर्व प्रताप, साहस, धैर्य्य और असीम उत्साहको निरख बादशाहके हृदयमें दयाका संचार हुआ और उन्होंने भविष्यमें मत से राणाजीको दुःख देनेका विचार छोड दिया।

[illegible]

समस्त ही लोप हो जायगा। परन्तु एक महापुरुषकी असीम कीर्ति सदाही अमर रहेगी। प्रतापने अपने राज्य धन इत्यादि समस्त पदार्थोंको छोडा, परन्तु कभी किसीके सामने अपने शिरको नहीं झुकाया। भारतवर्षके समस्त राजकुमारोंके बीचमें केवल वही अपने पवित्र क्षत्रियकुलके गौरवकी रक्षा करसके हैं।''

बडी २ विपत्तियोंमें पडनेसे भी राणा प्रतापसिंहका उत्साह नहीं गया था। परन्तु जिनको वह प्राणोंसे भी अधिक प्यारा समझते थे, जिनके सन्मानकी रक्षा करनेके लिये वह बडे २ कष्ट भी सहन कर सकते थे; उन लोगोंकी अत्यन्त दुर्दशा देखकर कभी कभी वे उन्मत्त होजाते थे। प्रतापसिंहकी महाराणी सघनवनके बीच राणाजीसे छुटी पडी थीं, और प्राणप्यारे राजकुमारगण भी राजसुखको भोगनेके बदलेमें कंद मूल फल खा-कर प्राणधारण करते थे, अभाग्यसे समय २ पर वह कंद मूल फल भी नहीं पाये जाते थे, यदि पाये भी जाते थे तो कभी २ भोजन करनेका समयही उनको नहीं मिलता था। कारण कि कठोर मुगलगणोंने इस प्रकार उनका पीछा पकड़ा था कि एक दिनमें पांचवार भोजन तइयार किया गया, परन्तु पांचोंवार शत्रुओंने आ घेरा। एक समय शत्रुओंके आक्रमणसे कुछकालके लिये छुटकारा पायकर राणाजी अपने कुटुम्बके साथ एक सूने वनमें विश्राम कर रहे थे। महाराणीजीने तथा उनकी पुत्रवधूने उस समय तृणबीज* चूर्णोंकी कई एक रोटियें बनाई, और उनमेंसे आधाभाग लडके लडकियोंमें बांटकर आधे भागको आगेके लिये रक्खा। राणा प्रतापसिंह भी उनके पासही श्यामलतृण-शय्यापर लेटे हुए अपने दुर्भाग्य और भारतकी होनहार दशाका विचार कररहे थे; इतनेमें ही अपनी बेटीका मर्मभेदी चिल्लाना सुनकर वह चकित हुए,—उनका ध्यान बढगया। उन्होंने रोतीहुई लडकीकी जिस अवस्थाको देखा, उससे उनका हृदय फट गया! उन्होंने देखा कि एक वनबिलाव कन्याकी आधी रोटीको लेकर भागा इसीसे लडकी रोती है।

प्रतापसिंहका मस्तक चकरा गया। चारों ओर अन्धकार दिखाई देने लगा। इससे पहिले उनका साहस और निश्चय किंचित् भी कम नहीं हुआ था। भयंकर समरभूमिमें उनके प्यारे पुत्रोंने तथा कुटुम्बके लोगोंने [illegible] स्वदे-शके लिये अपने प्राणोंको न्यौछावर किया, उन्होंने अपने नेत्रोंसे यह भयंकर-कार्य देखा, परन्तु इससे वह जरा देरके लिये भी व्याकुल नहीं हुए। कारण कि

* [illegible]

संग्रामरूपी वनमें मत्तमातंगकी समान झूमता हुआ फिरता था, इस समय शान्तमूर्तिको प्राप्त होगया है। बलवती न होनेपरभी उस आशाको प्रतापसिंह न छोड सके। चित्तौरका उद्धार उनसे न हुआ तथापि वे चित्तौरकी आशाको हृदयसे अलग न करसके। उदयपुरके आगे स्थित हुए उस ऊंचे शैलशिखरपर बैठेहुए वह बहुधा चित्तौरके गगनभेदी स्तंभोंकी ओर एकटक दृष्टिसे देखते रहते थे। उनके जयशीलपुरुषोंने इस स्तंभराशिको अपनी २ विजय होनेपर स्थापन कियाहै। शत्रुओंके हाथसे उनको बचानेके लिये अनेक गिह्लोट वीरोंने अपने हाथसे अपने हृदयके रुधिरको निकालकर रण—पाचकोंको दान दियाहै! परन्तु प्रतापसिंहने क्या किया? कठोर उद्यम और परिश्रम सहन करके हजारों कष्ट उठाये, परन्तु शत्रुओंके ग्राससे चित्तौरपुरीका उद्धार न करसके। इस भयंकर पछतावेसे प्रतापसिंह दिनरात व्याकुल होते रहतेथे। वह एकाग्रचित्तसे चित्तौरके उस ऊंचे परकोटे और जयस्तंभोंको देखा करते थे; अनेक विचार उठकर हृदयको डांवाडोल करदेते थे। उन विचारोंके भयंकर प्रहारसे कभी वह उन्मादित कभी उत्तेजित और कभी २ स्वल्पकालके लिये अचेतनतासे मग्न होजाते थे। मरीचिकामयी कुहकिनी आशाके हाथकी कठपुतली होकर प्रतापसिंहका प्रक्षीणजीवन अनन्तकाल स्रोतमें लीन होनेके लिये शीघ्रतासे परलोककी ओरको बढने लगा।

भट्टग्रंथोंमें लिखाहै कि एकसमय ग्रीष्मऋतुकी संध्याके समय प्रतापसिंह उस ऊंचे शृंगपर बैठेहुए एकाग्र चित्तसे उन स्तंभोंकी ओर देख रहेथे; सूर्य भगवान दिनके लंबे भागको व्यतीत करनेके कारण थककर अस्ताचलपर आरोहण कररहे थे। उनकी रक्ताभकिरणामाला, उस आकाशमें कि जो शुभ्र २ बादलोंसे छाय रहाहै—तरंगायित होकर अनिर्वचनीय शोभा प्रकाशित कररही है। अनन्तगगनका वह मनोहरचित्र चित्तौरके ऊंचे कोटपर, स्तंभकी चोटियोंपर और नीचे पृथ्वीमें प्रतिविम्बित होकर और भी मनोहर जान पडताहै। राणाजी चित्तौरकी उस लालकिरणशोभित दुर्गप्राचीर और स्तंभराशिकी ओर देख रहे परन्तु वह प्रकृतिकी उस सुन्दरताको नहीं देखते थे। उनके दोनों नेत्र [illegible] परन्तु अपने कामको नहीं करते; ऊंचे शून्यदृष्टिमयहै वे नेत्र चारोंओर [illegible] कर अनन्तगगनके एक [illegible] चित्रको देख [illegible] चित्त [illegible] है। चारोंओर जगतकी सीमा है। चारोंतरफ, [illegible] पर्देको भेदकर आगे नहीं बढ सकते, परन्तु [illegible] [illegible]। [illegible] चारोंओर नेत्र [illegible] परन्तु [illegible]

देवभावसे पूजा करते थे। इस बातको सुनकर कि राणा प्रतापने सन्धिका प्रस्ताव किया है पृथ्वीराजको अत्यन्त कष्ट हुआ। कराल चिन्ताके विषैले डंकके लगनेसे उनको अत्यन्त पीडा होने लगी, उनको विश्वास नहीं हुआ कि प्रतापसिंहने सन्धिका प्रस्ताव करके यह पत्र पठाया है। पृथ्वीराजने अपनी स्वाभाविक सरलता और निडरताके साथ शहन्शाह अकबरसे कहा "यह पत्र प्रतापसिंहका नहीं है, मैं उनको भलीभांतिसे पहिचानता हूं, यदि आप अपना राजमुकुटभी उनके शिरपर धर देवें, तो भी वह दिल्लीके तख्तके आगे शिर झुकानेवाले नहीं।" पृथ्वीराजने बादशाहकी आज्ञासे एक पत्र* लिखा और उस-

---

* पृथ्वीराजके पत्रकी नकल पूरी नही मिलती पर ठाकुर पूर्णसिहजी लिखित मेवाडके इतिहास नामक पुस्तकमे १७३पृ०मे कुछ दोहे सोरठे लिखे हैं सो यहां लिखते हैं।

सोरठा–अकबर समद अथाह, सूरापण भरियो सजल।
मेवाडो तिणमाहिं, पोयण फूल प्रतापसी॥ १॥
अकबर एकण वार, दागल की सारी दुनी।
अणदागल असवार, रहियो राणप्रतापसी॥ २॥
अकबर घोरअँधार, ऊँघाणा हिन्दू अवर।
जागे जुगदातार, पोहरे राणप्रतापसी॥ ३॥
हिन्दूपति परताप, पतिराखो हिन्दुआणरी।
सहे विपतिसन्ताप, सत्य शपथ कर आपणी॥ ४॥
चौथो चीतोडाह, बाँटो बाजन्तीतणू।
दीसे मेवाडाह, तो सिर राणप्रतापसी॥ ५॥
चम्पो चीतोडाह, पौरसतणो प्रतापसी।
सोरभ अकबरशाह, अडियल आ भडिया नही॥ ६॥
पातलखाग प्रमाण, सांची सागाहरतणी।
रही सदा लगराण, अकबरसूं ऊभी अणी॥ ७॥
दोहा–माई जण अहडा जणा, जहडा राणप्रताप।
अकबर सूतो ओझकै, जाण सिराणे साप॥ ८॥
सोरठा–राखो अकबरियाह, तेज तिहारो तुरकडा।
नम नम नीसरियाह, राण बिना सह राजवी॥ ९॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संग्रामरूपी वनमें मत्तमातंगकी समान झूमता हुआ फिरता था. इस समय शान्तमूर्तिको प्राप्त होगया है। बलवती न होनेपरभी उस आशाको प्रतापसिंह न छोड सके। चित्तौरका उद्धार उनसे न हुआ तथापि वे चित्तौरकी आशाको हृदयसे अलग न करसके। उदयपुरके आगे स्थित हुए उस ऊंचे शैलशिखरपर बैठेहुए वह बहुधा चित्तौरके गगनभेदी स्तंभोंकी ओर एकटक दृष्टिसे देखते रहते थे। उनके जयशीलपुरुषोंने इस स्तंभराशिको अपनी २ विजय होनेपर स्थापन कियाहै। शत्रुओंके हाथसे उनको बचानेके लिये अनेक गिह्लोट वीरोंने अपने हाथसे अपने हृदयके रुधिरको निकालकर रण—याचकोंको दान दियाहै! परन्तु प्रतापसिंहने क्या किया? कठोर उद्यम और परिश्रम सहन करके हजारों कष्ट उठाये, परन्तु शत्रुओंके ग्राससे चित्तौरपुरीका उद्धार न करसके। इस भयंकर पछतावेसे प्रतापसिंह दिनरात व्याकुल होते रहतेथे। वह एकाग्रचित्तसे चित्तौरके उस ऊंचे परकोटे और जयस्तंभोंको देखा करते थे: अनेक विचार उठकर हृदयको डांवाडोल करदेते थे। उन विचारोंके भयंकर प्रहारसे कभी वह उन्मादित कभी उत्तेजित और कभी २ स्वल्पकालके लिये अचेतनतामें मग्न होजाते थे। मरीचिकामयी कुहकिनी आशाके हाथकी कठपुतली होकर प्रतापसिंहका मर्वाणजीवन अनन्तकाल कोलमें लीन होनेके लिये शीघ्रतासे परलोककी ओरको बढने लगा।

भट्टग्रंथोंमें लिखाहै कि एकसमय ग्रीष्मऋतुकी संध्याके समय प्रतापसिंह उस ऊंचे शृंगपर बैठेहुए एकाग्र चित्तसे उन स्तंभोंकी ओर देख रहेथे। सूर्य भगवान दिनके लंबे भागको व्यतीत करनेके कारण थककर अस्ताचलपर आरोहण कररहे थे। उनकी रक्ताभकिरणामाला, उस आकाशमें कि जो गुच्छम २ बादलोंसे ... ... —तरंगायित होकर अनिर्वचनीय शोभा प्रकाशित कररही है। अनन्त-

हुए खेतोंमें बोवैगा जिससे इस कुलमानकी रक्षा हो, जिसके द्वारा इसकी पवित्रता एक दिन चमकने लगे, उसके लिये सब ही उत्कंठा सहित प्रतापसिंहकी ओर टकटकी लगाये देख रहेहैं ।

राठौरवीर पृथ्वीराजकी इस तेजस्विनी कविताको पढकर प्रताप एक प्रचंड उत्साहसे उत्साहित होगए । उनको ज्ञात हुआ कि मानो दशहजार राजपूतवीरोंने आनकर सहायता दी । उस कविताके प्रकाशमान प्रभावसे क्षीण प्रतापका हृदय फिर नवीन बलसे बलवान होगया; कठोर कार्यका सामना करनेके लिये वह फिर तइयार हुए । जब कि प्रत्येक हिन्दू स्वदेशके गौरवका उद्धार करनेके लिये प्रतापके मुखकी ओरको देख रहा है; तब क्या प्रताप निश्चिन्त रह सकते हैं ?

"यथार्थ राजपूत होकर ऐसा कौन है जो " नौरोज़े "के लिये अपने कुलकी मान मर्यादाको त्याग सकता है।"पृथ्वीराजके इस वाक्यके अन्तर्लीन " नौरोज़ा " शब्दका गूढ अर्थ प्रकाश करना यहां पर अत्यन्त आवश्यकीय जान पडता है । जिस समय भगवान भास्कर मेषराशिमें प्रवेश करते हैं, पूर्वदेशीय मुसलमानलोगोंमें उस समय " नौरोज़ा " (वर्षका नया दिन) नामक एक उत्सवका आरंभ हुआ करताहै । परन्तु वीरवर पृथ्वीराजने अपने पत्रके बीच इस अर्थमें " नौरोज़ा " शब्दका व्यवहार नहीं कियाहै । पंडितवर अब्बुलफ़ज़लका इतिहास पढलेनेमें " नौरोज़ा" शब्दका गूढ अर्थ समझमें आजायगा ।

"यह नौरोज़ा नववर्षका दिन नहीं है, यह और एक महोत्सव है । अकबरने स्वयं इसकी प्रतिष्ठा करके इच्छानुसार इसका नाम "खुशरोज़" (आनन्दका-दिन) रक्खा था । प्रतिमासके अनुष्ठित महोत्सवके होजानेपर नये दिन (नौरोज़) इस आनंदमय उत्सवका आरंभ होता था । वह आनंदबाजार मुसलमानोंमें परम प्रसिद्ध उत्सव गिना जाता था । मुगल बादशाहतके बीच उस दिन सब ही परमानंदमें मग्न रहते थे । दुःख या विषादकी कालिमा किसीके वदनमंडलपर अंकित नहीं रहती थी; राजदरबारमें उस दिन सर्वसाधारणके आने जानेकी भी कोई रोक टोक नहीं थी । बेगम साहब भी वहां धूम धामके साथ दरबारमें विराजमान होती थी । नौरोज़के दिन मुसलमानों और सामन्त राजपूतोंकी स्त्रियां भी उसदिन दरबारमें आतीथीं । परन्तु यह खुशरोज़ और एक बातके लिये प्रसिद्ध था । इस ही समयमें राजमंदिरके अंदर एक गुप्तस्थानमें एक मेला हुआ करता था । इस मेलेमें स्त्रियोंके अतिरिक्त पुरुष

हुई हानीका विचार किया कि वैसेही नई नई बाधाओंने तत्काल उनके मनपर चोट दी। फिर वही रोष;—वही डाह, और अपने मनका विकार दूना उनको याद आगया। दांतसे दांत किस किसाकर उन्मत्तसे होकर विकट चीत्कार कर उठे। शत्रुगण दयाकरके संग्राम करना बंद करगये, क्या प्रताप सा वीर शत्रुओंके इस दयाभावको सहन करसकताहै ? यवनोंकी दयाका स्मरण करके राणाजीके हृदयमें जो कठोर पीडा होती थी, यदि उसका मिलान किया जाय तो शत्रुओंका उपहास और घृणा यह दोनों बातें अत्यन्त ही साधारण ज्ञात होती थीं—अत्यन्त कठोर अत्याचार कुसुमसे हारकी कोमलतासे हीनतेज हो जायगा। वीराग्रगण्य प्रतापसिंह पीडादायक बाणशय्यापर युग २ तक शयन करसकते, परन्तु शत्रुका अनुग्रह उनसे पलभर को भी नहीं सहा जाता।

उसीदिन वीरशेखर प्रतापसिंहके हृदयमें जो दारुण चोट लगी, उसकी पीडा किसी प्रकारसे न मिटी, दिन २ कष्ट बढताही गया। यहांतक कि हृदय छिन्नभिन्न हुआ। जो हृदय एक समय अत्यन्त कठोर पीडा सहकरभी यथावत था, आज वह बुरी तरहसे टूट गया। उस टूटे हृदयको साथ लेकर प्रतापसिंह को अधिक दिनतक संसारमें नहीं रहना पडा। वह अपने जीवनके मध्याह्नकालमें अतिशीघ्रही इस लोकसे चले गये। उनके अंतसमयके वृत्तान्तको पढकर पत्थरका हृदयभी पसीज जाताहै, फिर यदि मनुष्यके आंसू गिरें तो आश्चर्यही क्याहै ? वह जिस प्रकार अलौकिक वीरता और महानताके साथ जीवित थे वैसेही वीरत्व और महत्वके साथ संसारसे विदा हुए। क्षत्रियोंके गौरव और माहात्म्यके आदर्श बनकर उन्होंने जन्म लिया था। राजकुलमें जन्मलेकर किसी मनुष्यकी ऐसी दुर्दशा नहीं हुई होगी कि जैसी दुर्दशा प्रतापसिंहने उठाई;—उनकी समान किसीने भी भयंकर संकट और विपत्तिका सामना करके जीवनभरतक संग्राम नहीं किया था, किसीनेभी [illegible]

[illegible]

और अवश्यही स्वीकार करेगा कि अकवरने अपने बुरे अभिप्रायको सिद्ध करनेके लिये ही इस अनर्थकर " नौरोज़ा " उत्सवको स्थापित किया था। इस पापमय " नौरोज़ा " उत्सवमें कितनेही राजपूत कुलोंकी पवित्र वंशमर्यादा कलंकके लगनेसे कालीहुई है, अनेक अभागी राजपूतवालाओंको विवश हो अपने सतीत्वको यवनके हाथसे गवाना पडाहै। भट्टकाव्यग्रंथोंमें भलीभांतिसे इन गुप्त अत्याचारोंका वर्णन किया गयाहै। राठौरवीर पृथ्वीराजने इसही " नौरोज़ " की दुरभिसन्धिका संकेत अपने पत्रमें कियाहै।

जिस अकवरने " जगद्गुरु " " दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा " इत्यादि पवित्र और संमान सूचक उपाधियोंको प्राप्त किया था, इतिहासने जिसको निरपेक्ष प्रजापालकके नामसे पुकारा है, सजातीय इतिहासलेखकोंने सत्यसन्ध, धर्मात्मा और विशुद्धहृदय कहकर वंदन कियाहै, वह अकवर, वही भुवनविदित "धर्मप्रिय अकवर" अपनी प्रभुताका कुव्यवहार करके कठोर हो निन्दित मार्गमें भ्रमण करताथा; इस वातका विश्वास करनेमें हम हिचकिचाते हैं; इस वातका विचार आनेसेभी हृदय वारंवार डोल जाताहै। भाग्यतरंगकी प्रचंड आंधीमें फँसकर जिन राजपूतोंने वादशाहके हाथ अपनी स्वाधीनताको वेचादिया था, राजधर्मके मस्तकपर चरणप्रहार कर, मूर्खमनुष्यकी समान कामविमूढ हो उन राजपूतोंकी प्राणप्यारी स्त्रियोंका साररत्नका चुगना जव याद आताहै तव फिर उसको भारतका शहंशाह, मुगलकुलकेतु, " जगद्गुरु " अकवर कैसे पुकारसकते हैं; तव तो उसको कपटता, स्वार्थपरायणता, और विश्वासघातकताका मूर्तिमान पिशाच समझकर घृणा करनेकी इच्छा होती है। वादशाहके इस पापमय "नौरोज़ा" उत्सवके समय कितने पवित्र राजकुलोंमें कलंक लगाहै उसकी गिनती नहीं होसक्ती ! केवल वीकानेरके राजकुमार पृथ्वीराजने ही अपनी भार्याके असीम साहस और धर्मवलके प्रभावमें इस दारुण शोचनीय कलंकसे अपने कुलकी रक्षा की थी। इनकी भार्या पवित्र शिशोदीयकुलमें उत्पन्न हुई थी, वीरवर शक्तसिंहकी पुत्री थी। यह वीरवाला प्रतिष्ठित वंशमें जन्म लेनेके कारण अत्यन्त गुणवान थी। इस वीरललनाकी समान सर्वाङ्गसुन्दरी राजवाडेमें उस समय अलपही दिखाई देती थीं। यह कहना कुछ अनुचित न होगा कि, कुमार पृथ्वीराजने अपने वडेही पुण्यवलसे ऐसी भार्याको पायाथा।

अभाग्यसे पृथ्वीराज अकवरके वन्दी हुए; उनका सुख दुःख समस्त अकवरके अधीन था। परन्तु तथापि वह अकवरके प्रतापप्रयासी नहीं थे न उन्होंने

वदन और भी अधिक गंभीर होगया। उन्होंने फिर लंबी श्वास ली और कहा।
" इन कुटियोंके बदले यहांपर स्वर्गीक महल बनेंगे. मेवाडभूमिकी दुरवस्था
भूलकर अमर यहांपर अनेक प्रकारके भोगविलास करेगा: उससे इस भू-
स्वतंत्रताका पालन न होगा। हा! अमरसिंहके विलासी होनेपर वह गौरव और मातृ-
भूमिकी वह स्वाधीनता जाती रहेगी कि जिसके लिये मैंने बराबर पच्चीसवर्षतक
वन २ और पर्वत २ पर घूमकर वनवासका कठोर व्रत धारण किया. जिसको अचल
रखनेके लिये सब भाँतिकी सुखसम्पत्तिको छोडा। शोक है कि अमरसिंहसे इस
गौरवकी रक्षा न होगी। वह अपने सुखके लिये उस स्वाधीनताके गौरवको छोड
देगा। और तुमलोग—तुम सब उसके अनर्थकारी उदाहरणका अनुसरण करके मेवा-
डके पवित्र और क्षत्रियवंशमें कलंक लगा दोगे। प्रतापसिंहका वाक्य पूरा होने

शपथ कर,—नहीं तो यह तीक्ष्ण छूरी अभी तेरे हृदयके रुधिरसे स्नान करैगी।" राजपूत सतीका अद्भुत साहस देखकर बादशाह हकाचका सा रह गया;—मानो उसके ऊपर वज्र गिर पडा! उसकी पाप प्रवृत्ति न जाने कहांको चली गई? पापकलुषित मोहान्धहृदय ज्ञानालोकसे प्रकाशित होगया। बादशाहने तत्काल इस वीरबालाकी आज्ञाका पालन किया! भट्टग्रथोंमें लिखा हुआहै कि उस समय मेवाडकी अधिष्ठात्री भगवती विश्वमाता उस पाप—विलासभवनकी सुरंगमें सिंहासनपर सवार होकर पहुँच गई उन्होंने ही पातिव्रत धर्मकी रक्षाके लिये उस वीरबालाके हृदयमें साहस और करकमलमें छूरीको सजायाथा। इस राजपूत सतीके असीम साहस और स्वर्गीय विमलचरित्रके सम्बन्धमें भट्टग्रंथोंमें अनेक प्रकारके सुन्दर २ उपाख्यानोंका वर्णन किया गया है। पृथ्वीराजके बडे भ्राता रायसिंहको दुर्भाग्यसे ऐसी गुणवती भार्या नहीं मिली थी। पवित्र सती धर्मकी न्यूनतासे कहो अथवा कायरपनसे कहो रायसिंहकी भार्या अकबरके दिखाये हुए लालचमें फँस गई! साधारण रत्नभूषणके बदलेमें अमूल्य स्वर्गीय रत्नको बेचकर जब स्वामीके घर लौट आई तब तेज [illegible] थ्वीराजने मर्मभेदी वाणीके द्वारा बडे भ्रातासे कहा था "सुवर्ण अ[illegible] मा[illegible] रत्नके गहनोंसे पापमय शरीरको मंडित करके मनोरञ्जिनी ध्वनिके द्वारा चारों दिशाओंको प्रतिध्वनित करती यह तो आपकी धर्मप्रिया गृहलक्ष्मी आपके घरको लौट रही है; परन्तु भइया! यह क्या? आपकी अधर भूषण डाढी मूछोंको किसने चुरा लिया?"*

पुण्यश्लोक प्रतापसिंहके पवित्र जीवनचरित्रका विचार करने २ प्रयोजनके अनुसार हमको "नौरोज़ा" वर्णन करना पडा. इस समय पुनर्वार प्रतापकी अमरकीर्तिकी ओर पाठकगणोंको लिये चलते हैं। पृथ्वीराजकी तेजस्विनी कविता पढकर वीरकेशरी प्रतापसिंहको नयाजीवन प्राप्त होगया. वे [illegible] मुसलमानोको उनके अत्याचारका बदला देनेके लिये नयारिये करने लगे। उनको विनीत समझकर मुगलसेनापतिगण अपने २ डेरोंमे अनेक प्रकारके उत्सव करने लगे। जब वह इसप्रकार आनंदमें मग्न थे, तब प्रतापने अपनी सेना लेकर मुसलमानोंपर आक्रमण किया! बहुतने मारेगये. बहुतने प्राणोंको लेकर भागे. परन्तु इससे राणाजीको कुछ लाभ न हुआ। जो मुसलमानसेना मारी गई उसके बदलेमें दूनी तिगुनी सेना दिल्लीसे आगई। क्रमसे संख्या बढने लगी। पुनर्वार प्रतापको उत्तेजित देखकर यवनगण गिरिवनवन और कन्दरा २ मे उनको

* दाढी मूछोंको रजपूत [illegible] कहते हैं।

शपथ कर,-नहीं तो यह तीक्ष्ण छूरी अभी तेरे हृदयके रुधिरसे स्नान करैगी।" राजपूत सतीका अद्भुत साहस देखकर बादशाह हकाचका सा रह गया;-मानो उसके ऊपर वज्र गिर पडा! उसकी पाप प्रवृत्ति न जाने कहांको चली गई? पापकलुषित मोहान्धहृदय ज्ञानालोकसे प्रकाशित होगया। बादशाहने तत्काल इस वीरबालाकी आज्ञाका पालन किया! भट्टग्रथोंमें लिखा हुआहै कि उस समय मेवाडकी अधिष्ठात्री भगवती विश्वमाता उस पाप-विलासभवनकी सुरंगमें सिंहासनपर सवार होकर पहुँच गई उन्होंने ही पातिव्रत धर्मकी रक्षाके लिये उस वीरबालाके हृदयमें साहस और करकमलमें छूरीको सजायाथा। इस राजपूत सतीके असीम साहस और स्वर्गीय विमलचरित्रके सम्बन्धमें भट्टग्रंथोंमें अनेक प्रकारके सुन्दर २ उपाख्यानोंका वर्णन किया गया है। पृथ्वीराजके बडे भ्राता रायसिंहको दुर्भाग्यसे ऐसी गुणवती भार्या नहीं मिली थी। पवित्र सती धर्मकी न्यूनतासे कहो अथवा कायरपनसे कहो रायसिंहकी भार्या अकबरके दिखाये हुए लालचमें फँस गई! साधारण रत्नभूषणके बदलेमें अमूल्य स्वर्गीय रत्नको बेचकर जब स्वामीके घर लौट आई तब ते वी पृथ्वीराजने मर्मभेदी वाणीके द्वारा बडे भ्रातासे कहा था "सुवर्ण र मो रत्नके गहनोंसे पापमय शरीरको मंडित करके मनोरञ्जिनी ध्वनिके द्वारा चारों दिशाओंको प्रतिध्वनित करती यह तो आपकी धर्मप्रिया गृहलक्ष्मी आपके घरको लौट रही है; परन्तु भइया! यह क्या? आपकी अधर भूषण डाढी मूछोंको किसने चुरा लिया?"*

पुण्यश्लोक प्रतापसिंहके पवित्र जीवनचरित्रका विचार करने २ प्रयोजनके अनुसार हमको "नौरोज़ा" वर्णन करना पडा. इस समय पुनर्वार प्रतापकी अमरकीर्तिकी ओर पाठकगणोंको लिये चलते हैं। पृथ्वीराजकी तेजस्विनी कविता पढकर वीरकेशरी प्रतापसिंहको नवजीवन प्राप्त होगया. वे क्रूर मुसलमानोंको उनके अत्याचारका बदला देनेके लिये तयारियें करने लगे। उनको विनीत समझकर मुगलसेनापतिगण अपने २ डेरोंमें अनेक प्रकारके उत्सव करने लगे। जब वह इसप्रकार आनंदमें मग्न थे, तब प्रतापने अपनी सेना लेकर मुसलमानोंपर आक्रमण किया। बहुतसे मारेगये, बहुतसे प्राणोंको लेकर भागे. परन्तु इससे राणाजीको कुछ लाभ न हुआ। जो मुसलमानसेना मारी गई उनके बदलेमें दूनी तिगुनी सेना दिल्लीसे आगई। क्रमसे संख्या बढने लगी। पुनर्वार प्रतापको उत्तेजित देखकर यवनगण फिर वनवन और कन्दरा २ में उनको

* डाढी मूछोंको राजपूत गौरवका चिह्न समझते हैं।

होगा. यदि मेवाड़के इतिहासको कोई रची २ करके प्रगट करता तो पिलोपनी-सनके महासमरका वृत्तान्त अथवा "दसहजार" की दुर्दशाका शोचनीय वृत्तान्त अगर होनहारके परिमाणके आगे. इस वृत्तान्तकी बराबरी नहीं करसकता । राणा प्रतापसिंहकी, अलौकिक वीरता. अचल पराक्रम. उत्साह और उत्तम स्वदेशानुरागादिराजगुणोंसे शोभायमान थे: यही कारण हुआ जो उन्होंने पराक्रमी अकबरकी दुराकांक्षा और धर्मान्धताके विरुद्ध इतने लम्बे समयतक युद्ध किया था । इसी कारणसे शहन्शाह अत्यन्त बलकरनेपर भी प्रतापसिंहके हृदयको नहीं बदल सके! उस पवित्र देशहृदयकी अनुपम गुणराशिके विकाशित होनेका स्थान हल्दीघाटका समर हुआ । इस पुण्यतीर्थ हल्दीघाटके विराट पहाड़ि देशमें ऐसा कोई स्थान नहीं है. कि जो प्रतापसिंहकी वीरताके गौरवसे नहीं चमक रहा हो । इस संसारमें जितने दिनोंतक वीरताका आदर रहेगा. जितने दिनतक अतीतनाशी इतिहास. संसारमें एक और बड़ी सच्ची आर्यजातिके भले वृत्तान्तको, वर्णन करता रहेगा. उतने दिनतक प्रतापकी यह वीरता. साहस और गौरव संसारके नेत्रोंके सामने अचलभावसे विराजमान रहेगा । उतने दिन-तक वह हल्दीघाट मेवाड़की थर्मोपोली और उसके अन्तर्गत देवीरका मैदा-न मेराथन * नामसे पुकारा जाया करेगा !

कितनीही भावना उठकर विषादकी रेखा खैंचती हुई लोप होने लगीं ! उन्होंने विचार किया कि अब कदाचित् इस जीवनमें हमसे चित्तौरनगरका उद्धार न होगा । देवस्थानकी समान मेवाडभूमिमें दानव यवन लोगोंको हम दूर नहीं करसकेंगे । बालकपनके लीलास्थल–जीवन तोषिणी आशाके विलासक्षेत्र पवित्र मेवाड स्थानसे यही हमारी अंतिम बिदाहै । इस प्रकारकी अनेक चिन्ता राणाजीके हृदयको व्याकुल करने लगीं; इनके आघातसे वह अत्यन्त कातर हुए परन्तु विधाताकी अपूर्व करुणासे वह समस्त चिन्ता एक साथ दूर होगईं । सौभाग्य लक्ष्मीने शीघ्रही प्रसन्न मूर्त्ति धारणकर भारतके उस अनुपम महावीरको अपनी गोदमें लेलिया ।

राणाजीको अपनी जन्मभूमिसे विदा नहीं मांगनी पडी । आरावलीके शिखरसे उतर वह मरुभूमिकी सीमापर आयेथे कि उनके परमविश्वासी मंत्री भामशाने असीम धन राशि लेकर राणाजीको समर्पण करदी । अकेले भामशाने ही इस विपुलधनको उपार्ज्जित नहीं किया था । वरन उसके पूर्वपुरुषोंने–जो कि बहुत दिनसे मेवाडके मंत्री होते आते थे–इस धनको इकट्ठा किया था । सचिव भामशाने वही धन लाकर स्वामीके चरणोंमें निवेदन किया । वह इतना धन था कि जिसकी सहायतामें बारह वर्षतक पच्चीस हजार सेनाका भरण पोषण होसके।इस महान् उपकार करनेके कारण महात्मा भामशा " मेवाडके उद्धार कर्त्ता कहलाए गये "। इस विपुल अनुकूलताको पाय राणा प्रतापसिंह अपने सरदार सामन्तोंको इकट्ठा करके अल्पकालमें ही मुगल सेनापति शहवाजखांके ऊपर ऐसे टूटे कि जिसप्रकार क्रोधितकेशरी अपने शिकारपर टूटताहै।प्रतापसिंहको चुपचाप देखकर मुगललोग समझ चुके थे वह मारवाडकी ओर भाग गये परन्तु शीघ्रही उनका वह सुखस्वप्न टूट गया । उस समय देवीरनामक स्थानमें छावनी डालकर सेनापति शहवाजखाँ निश्चिन्त होकर समय बिताता था; अब प्रतापका श्रवणभैरव सिंहनाद उसने सुना । बाण लगनेपर सोता हुआ शेर जैसे प्रचंड विक्रमके साथ आक्रमणकारी पर झपटताहै, वीरेन्द्रसिंह प्रतापने भी वैसेही अमित विक्रमके साथ मुगलसेनाको घेर लिया । देवीरके मयदानमें बहुत देरतक दोनों सेनाओंका घोर घमसान हुआ । शहवाजखां ... उसी स्थानमें अपनी समस्त सेनाके साथ प्रतापसिंहके हाथसे मारा गया । इसके मुसलमानलोग आमेतनामक स्थानको भाग गये । इस स्थानमें मुसलमानोंको

हुई, शंकासे मान-सिंहको वध करनेकी लालसा हुई । अकबरने गुप्तभावसे मान-सिंहके संहार करनेका विचार किया । क्रूर मनुष्योंके लिये ऐसा कोई कार्य नहीं है कि जिसको वे न कर सकते हों। अकबर बादशाह था, महाराज मान-सिंह फिर भी उसके सेवक ही थे; कालकी गतिसे आज स्वामीने अनुरत सेवकके संहार करनेका विचार कर डाला । अकबरने एकप्रकारकी "माजून" बनवाई, जिसके आधेभागसे मान-सिंहको देनेके लिये विष मिलवाया ! परन्तु मारनेवालेसे जिलानेवाला बडा होताहै । दैवकी विचित्रगतिसे बादशाहने भ्रम पाकर विषली "माजून" ही स्वयं खाई; पापका प्रायश्चित्त आरंभ हुआ । निरपराधी, श्रद्धा-युक्त तथा उपकारी सेवकके प्राण लेनेके विचारसे स्वयं शहन्शाहके प्राण गये । हमने माना कि राजा मान-सिंहने यथार्थ उत्तराधिकारी सलीमके बदले अपने भानजे खुशरोको दिल्लीके सिंहासनपर स्थापन करनेकी चेष्टा की थी; परन्तु ऐसा होनेपरभी अकबरकी समान राजाको इस प्रकारके कामरूपका व्यवहार नहीं करना चाहिये था । क्योंकि वह जो सतापमें भी मानसिंहसे प्रति-कूलाचरण करसकते थे, यदि बादशाहकी इच्छा होती तो वह सम्मुख संग्राममें अपने मनोरथको पूरा करसकते थे, फिर किस कारणसे बादशाहने अपने विमल यशमें कलंक लगानेके लिये ऐसा कार्य किया! कौन कह सकताहै कि उसके हृदयमें क्या बात थी ?

वा रह गया कि शत्रुओंको उनके अन्यायका बदला भलीभां[illegible] ग्या गया। जिस अभिप्रायसे राज्य धनको छोड अपने पराएसे मुख मोड [illegible] में घूमकर इतना कष्ट सहा; क्या वह अभिप्राय और मनोरथ सिद्ध होगया? यदि [illegible] नहीं हुआ तो फिर शान्ति कैसी? स्वदेशका उद्धार करनेके लिये मुसलमानों[illegible] करने-के कारण यदि प्रतापको जन्मभरतक भी भयंकर समर—सागरमें सन्[illegible] करना होता तो वह एकपल भरके लिये भी न घबडाते; प्रतापसिंहने स्वप्नमें भी इ[illegible] तका विचार नहीं कियाथा कि—जिस शत्रुने इतने दिनतक सताया, बीस[illegible] जार राजपूतोंका रुधिर मेवाडभूमिपर बहाया—अंतमें फिर वही युद्ध बंद करके चला जायगा। मनोरथपूर्ण न होनेसे उनके कष्टकी सीमा न रही, मनकी आशा मनमेंही रह गई; चित्तौरका उद्धार भी न हुआ; दुर्द्धर्ष शत्रुको दंड न दे सके। जो चित्तौर उनके पितृपुरुषोंका प्राचीन निवासस्थान था, प्रायः सहस्रवर्ष-तक जहांपर उन्होंने अखण्ड प्रतापसे गिह्लौटकुलके राजदंडको चलाया था, आज वही चित्तौर प्रतापसे छूटा हुआ है! उनके लिये आज वही चित्तौर मानो अनदेखी और अनसुनी नगरीहै! यह विषैली चिन्ता दिन रात राणाजीको सताती और विलखाती थी, कभी २ तो वह अत्यन्तही व्याकुल होजाते थे। अकबरने समझा था कि मेरे दया करके युद्ध बंद कर देनेपर राणा प्रतापसिंहको प्रसन्नता होगी, परन्तु वह बादशाहकी भूल थी, अकबरके युद्ध बंदकरदेनेसे उनको महादुःख हुआ। शत्रुका अनुग्रह जितना कोमल होता है, वीरके हृदयमें वह उतनाही सालता है। अकबर यदि जन्मभरतक प्रतापसिंहको युद्धकी पीडा देता, तो वह क्षणभरके लियेभी दुःखी न होते;—परन्तु शत्रुके इस अनुग्रहसे—इस असह्य कठोर कुलिशके प्रहारसे वह अत्यन्तही व्याकुल हुए, अकबरको और अनर्थकारी राजसन्मानको हजारवार धिक्कार देने लगे।

प्रताप प्रवीण अवस्थाको पहुंच चुकेहैं। युवा अवस्थाके सम्पूर्ण उत्साह इस प्रवीण वयसमेंही लोप हुए. समयने इसही अवसरमें बुढापेकी सूचना दी। हम नहीं कह सकते कि जीवनकी यह सीमा औरोंके लिये कभी सुख या दुःखकी देनेवाली होती होगी, परन्तु वीर चूडामणि प्रतापने इससे किंचिनभी विश्राम नहीं पाया। चिन्ता क्लेश और संसारके कठोर कष्टोंके प्रहारसे प्रवीण अवस्थाके समय प्रतापको बुढापा प्राप्त होगया। उनके समस्त अंगोंमें शब्द लगनेके चिह्न थे. हृदयका प्रत्येक पर्त चिन्ताकी विषैली आगसे जलता था; शरीर दुर्बल होता गया और प्रकाशमान हृदय! जो एक समय तेजस्विनी आशाके मोहन मंत्रसे उन्मादित होकर

नेत्रोंके द्वारा वह अनन्त अन्तर्जगत्‌के अनेक चित्र और कार्य देखरहे हैं। उन्होंने भीतरी नेत्रोंसे देखा कि, मानो युवक बाप्पा रावलने मौर्यवंशीय मानराजाके मस्तकसे रत्नमंडित राजमुकुट उतारकर अपने शिरपर धारण किया। हैमतपनमंडित लोहिताभ "छेंगी" उनके मस्तकपर लगाई गई।तदुपरान्त वीरकेशरी समरसिंह यवनक बलसे भारतमाताका उद्धार करनेके लिये तइयार हुए और देशरक्षा करनेमें अपने प्राणोंको न्यवछावर करके वीरवर पृथ्वीराजके साथ दृषद्वतीके किनारे अनन्त निद्रामें शयन किया।इतनेहीमें कहींसे काली २ घटा आकर चित्तौरके ऊपर छाय गई। उस निविड मेघमालाको छिन्न भिन्न करके चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवीकी दीप्तिमान मूर्ति चित्तौरके ऊंचे परकोटेपर विराजमान हुई;- अकस्मात् श्रवणभैरव हुंकार नादसे सम्पूर्ण मेवाडभूमि कम्पायमान होगई; उस विकट हुंकार ध्वनिको प्रतिध्वनित करके राणा लक्ष्मणसिंहके बारहपुत्रोंने हृदयके रुधिरको दान करके चामुण्डादेवीका विकट खप्पड रँग दिया। क्रमशः वह भयंकर चित्र और भी अधिक भयंकर होगया। वैसेही देवल सरदार बाघजी, वीरवर जयमल तथा फत्ते,फत्तेकी वीरमाता और वीर वधूने प्रचंड रणतुरंगपर सवार होकर रणरूपी समुद्रमें गोता लगाया! फिर अकस्मात् चित्तौरका जीवन्तभाव लोप होगया और अनन्त काली कराल घटाओंने भलीभाँतिसे चित्तौरको ढक लिया! उस मेघमालाको शत सहस्र तीव्र विद्युच्चमककी समान छिन्नभिन्न करके चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवी चामुंडाजी करुणायुत शब्द करती हुई चित्तौरको छोड गई। अन्धकार औरभी अधिक घना हुआ; देखते २ निर्बलहृदय उदयसिंह स्वाधीनताकी लीलाभूमि चित्तौरके गिरिदुर्गको छोड दूर भाग गया: उस काल सम्पूर्ण प्रकृति राज्यको रुलाता हुआ, चारों ओर विकट हाहाकार होने लगा। मानो संसारका प्रलयकाल आ पहुंचा! दारुण विस्मय, शोक. और मानसिक कष्टसे पीडित होकर प्रतापसिंह प्रचंड वेगसे कम्पायमान होने लगे। उनके यह सम्पूर्ण विचार क्षणभंगमें लोप होगए! चैतन्यता प्राप्त हुई! विस्मय और शोकसे चलायमान होकर उन्होंने बाहिरी नेत्रोंसे अनन्ताकाशको देखा कि:—सूर्य भगवान छिपना चाहतेहैं. समस्त संसार काले २ बादलोंसे ढका हुआ भयंकर पवन अत्यन्त वेगसे चल रहीहै। उस भयंकर पवनके प्रचंड प्रतापसे मेघावली छिन्नभिन्न होकर. बारंबार बिजलीरूप अग्निको उगलती हुई नभके एक छोरसे दूसरे छोरको भाग रहीहैं! कुछ जागते और कुछ सोते इस प्रकार बीत जानेपर प्रतापसिंहको फिर अपना ध्यान आया. फिर उन्होंने एकबार दोनों

विकार दूर होगया । क्रमसे उनके ज्ञान–नेत्र खुलगये वह भलीभांतिसे समझगए कि इसमें तो जो कुछ अपराध है सो हमारा ही है । इस प्रकार हृदयमें विकार होनेपर राणाजी अपनी करनीपर स्वयं ही अन्ततः धिक्कार देने लगे। मेवाडकी वर्तमान अवस्थाका प्रतिबिम्ब राणाजीके मनरूपी दर्पणमें पडगया । सिरके ऊपर प्रचंड शत्रु कालरूपसे खडा हुआ है । सिसोदियाकुलके जिस गौरवकी रक्षा करनेके लिये राणाप्रतापने बहुत समयतक अनन्त कष्ट सहा है, आज वही गौरव जाना चाहता है, क्या ऐसे समयमें अमरसिंहको निश्चिन्त रहना उचित है ? राणाजी समझगये कि कर्तव्यसाधनसे विमुख होकर हमने अत्याचार कार्य किया । परन्तु जो होगया सो होगया, इसमें चिन्ताका क्या काम, अब [illegible] उत्साह और परिश्रम करनेके सिवाय इस उपस्थित विपत्तिसे [illegible] नहीं मिलसकता । राणाजी समझगये कि यद्यपि हमारी सेना थोडीहै, परन्तु उनके हृदयमें उत्साह अत्यन्त ही भरा हुआहै, उस हृदयको यदि उत्साह [illegible] मिले, तो यही सेना समुद्रकी समान उफन जायगी । यह विचारकर राणाजी निश्चिन्त न रहे । अपने अपराधको क्षमा करनेके लिये समस्त सरदारोंसे प्रार्थना की और अपनी आंसुओंसे हाथ फैलाकर शालुम्ब्रापतिसे कहा, " शालुम्ब्रा सरदार ! आप [illegible] भी सिसोदीयकुलके हितकारी हैं, मुझको मोहनिद्रासे जगाकर आपने [illegible] काम किया । मैं इस आपके उपकारसे सदा ही [illegible] रहूंगा । [illegible] तो स्वर्गवासी होचुके, परन्तु प्रतापसिंहका पुत्र अमरसिंह जीवित है, [illegible] के सामने [illegible] कि अमरसिंह [illegible] गौरवपुत्र है या नहीं," राणाजीका उत्साह देखकर समस्त सरदारोंके [illegible] उत्साह [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

नेत्रोंके द्वारा वह अनन्त अन्तर्जगत्के अनेक चित्र और कार्य देखरहे हैं। उन्होंने भीतरी नेत्रोंसे देखा कि, मानो युवक बाप्पा रावलने मौर्यवंशीय मानराजाके मस्तकसे रत्नमंडित राजमुकुट उतारकर अपने शिरपर धारण किया। हैमतपनमंडित लोहिताभ "छेंगी" उनके मस्तकपर लगाई गई। तदुपरान्त वीरकेशरी समरसिंह यवनके बलसे भारतमाताका उद्धार करनेके लिये तइयार हुए और देशरक्षा करनेमें अपने प्राणोंको न्यवछावर करके वीरवर पृथ्वीराजके साथ दृषद्वतीके किनारे अनन्त निद्रामें शयन किया। इतनेहीमें कहींसे काली २ घटा आकर चित्तौरके ऊपर छाय गई। उस निविड मेघमालाको छिन्न भिन्न करके चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवीकी दीप्तिमान मूर्ति चित्तौरके ऊंचे परकोटेपर विराजमान हुई;—अकस्मात् श्रवणभैरव हुंकार नादसे सम्पूर्ण मेवाडभूमि कम्पायमान होगई; उस विकट हुंकार ध्वनिको प्रतिध्वनित करके राणा लक्ष्मणसिंहके बारहपुत्रोंने हृदयके रुधिरको दान करके चामुण्डादेवीका विकट खप्पड रँग दिया। क्रमशः वह भयंकर चित्र और भी अधिक भयंकर होगया। वैसेही देवल सरदार बाघजी, वीरवर जयमल तथा फत्ते, फत्तेकी वीरमाता और वीर वधूने प्रचंड रणतुरंगपर सवार होकर रणरूपी समुद्रमें गोता लगाया! फिर अकस्मात् चित्तौरका जीवन्तभाव लोप होगया और अनन्त काली कराल घटाओंने भलीभाँतिसे चित्तौरको ढक लिया! उस मेघमालाको शत सहस्र तीव्र विद्युच्चमककी समान छिन्नभिन्न करके चित्तौरकी अधिष्ठात्री देवी चामुंडाजी करुणायुत शब्द करती हुई चित्तौरको छोड गई। अन्धकार औरभी अधिक घना हुआ; देखते २ निर्बलहृदय उदयसिंह स्वार्थीनताकी लीलाभूमि चित्तौरके गिरिदुर्गको छोड दूर भाग गया. उस काल सम्पूर्ण प्रकृति राज्यको रुलाता हुआ, चारों ओर विकट हाहाकार होने लगा। मानो संसारका प्रलयकाल आ पहुंचा! दारुण विस्मय, शोक, और मानसिक कष्टसे पीडित होकर प्रतापसिंह प्रचंड वेगसे कम्पायमान होने लगे। उनके यह सम्पूर्ण विचार क्षणभरमें लोप होगए! चैतन्यता प्राप्त हुई! विस्मय और शोकसे चलायमान होकर उन्होंने बाहिरी संसारके [illegible] तो देखा, कि:—सूर्य भगवान छिपना चाहतेहैं. समस्त संसार [illegible] बादलोंसे ढका हुआ, भयंकर पवन अत्यन्त वेगसे चल रहाहै। उस भयंकर पवनसे प्रचंड [illegible] मेघावली छिन्नभिन्न होकर, बारंबार विजलीरूप अग्निको उगलती हुई [illegible] एक छोरसे दूसरे छोरको भाग रहीहै! कुछ जागने और कुछ सोने [illegible] बीत जानेपर प्रतापसिंहको फिर अपना ध्यान आया, फिर उन्होंने [illegible]

पर जातिवालोंकी घृणा और विद्वेष रूप विष पीकरके मुझको जीना प
मुझमें स्वतंत्रताहै, न सामर्थ्यहै, न उत्साह है । मुगल बादशाहके
सिंहासन प्राप्त हुआहै,फिर धरोहरकी रीतिसे इसकी रक्षा करनी होती
सिंहासनके पानेसे लाभ कौन सा हुआ ? इस भांति अनेक प्रकारसे
निरन्तर पीडित होनेके कारण सागरजीको एक पलभरके लिये भी
प्राप्त होता था। वह स्थिर होकर एक क्षणके लिये भी कहीं नहीं
था। चित्तौरकी जिस वस्तुको वह देखता, उससेही उसके हृदयमें अनेक
शंका उदयहुआ करती थीं। इन चिन्ताओंके विषैले डंकोंसे उसको
होती थी। वह अपने कायरपन और राजसन्मानको बारंबार धिक्कार दि
था। गृहके भीतर शान्ति न पानेके कारण वह कभी रथपर चढ़
अभागेको कहीं भी शान्ति नहीं मिलती थी। छतके ऊपर जानेसे दूना
करता था। धवरहरके ऊंचे शिखरपर चढ़कर जब चित्तौरके गौरव
वह देखता, तब उसको चेतना नहीं रहती थी । चारों ओरसे गहरा
अंधकार दिखाई दिया-करता था। " मेरे पूर्वपुरुषोंने दिल्लीश्वरोंके
ऊपर जय प्राप्त करके इन गौरव स्तंभोंको बनवाया था, उन्होंने दिल्ली
इन स्तंभोंके बचानेमें अपने हृदयके रुधिरका दान किया है, परन्तु
ही इनको कलंकित करके अपने पितृपुरुषोंके पवित्र यशको कलंकित

सौभाग्यसंपत्तिका अधिकारी होकर किसने इच्छानुसार राज्यसुखको तिलांजलि दी है ? ऐसा कौन हुआ कि जिसने विशाल राज्यका अधीश्वर होकरभी स्वदेशोद्धार का महामंत्र साधन करनेके लिये दीन भिखारीकी समान वनवन कन्दर २, दुर्गम गिरि गहन और तत्ते रेतीले मयदानोंमें बराबर पचीसवर्षतक भ्रमण किया हो ?

उत्तमोत्तम महल दुमहलोंको छोडकर राणा प्रतापसिंहने पेशोला सरोवरके किनारे पर कईएक कुटीरें * बनाई थी। उनही कुटियोंमें अपने समस्त सरदारों के साथ रहकर राणाजी दिन व्यतीत किया करतेथे। आज अंतकालके समयभी प्रतापसिंह उन्हींमेंकी एक साधारण कुटीमें लेटे हुए कालकी कठोर आज्ञाकी बाट देख रहेहैं। विश्वासी सरदारगण उनके चारों ओर बैठे हुए प्रत्येक दशाको भली- भांतिसे देख रहेहैं; इतनेहीमें प्रचंड वेगसे शरीरको कम्पायमान करती हुई एक लंबी सांस राणाजीके देहसे निकली ! समस्त सरदार उस समय अत्यन्त दुःखित होकर आँसू बहाने लगे। उतकाल शालुम्ब्रापतिने कातर होकर महाराणा प्रतापसिंहसे पूछा "क्यों, महाराज ! ऐसे कौनसे दारुण दुःखने आपकी पवित्र आत्माको दुःखित किया, इस पिछले शयनमें किसने आपकी शान्तिको भंग किया ?" क्षणभरके पीछे धीरे धीरेसे राणाजीने उत्तर दिया। "सरदारजी ! अबतकभी प्राण नहीं निकलता: केवल एकही धीरजकी वाणी सुनकर यह अभी सुखपूर्वक देहको छोड जायगा। वह धीरजकर वाणी आपहीके पास है। आप सबलोग शपथ करके मेरे सन्मुख प्रतिज्ञा करके कहें कि, जीवित रहते अपनी मातृभूमि किसीभांति तुर्कोंके हाथमें अर्पण नहीं करेंगे !—कहा—यह सुनतेही मैं सुखसे नेत्र बंद करलूंगा। पुत्र अमरसिंह हमारे पितृपुरुषोंके गौरवकी रक्षा नहीं कर सकेगा। वह यवनोंके ग्राससे मातृभूमिको नहीं बचा सकेगा। वह विलासी है, वह कष्ट नहीं झेल सकेगा" यह कहते २ राणाजीका विशाल पीला बदन गंभीर हो गया, फिर उन्होंने अमरसिंहके बालकपनकी दो एक बातें सुनाई। 'एकसमय कुमार अमरसिंह इस नीची कुटीमें प्रवेश करनेके समय शिरकी पगडी उतारनी भूल गया था इस कारण शिरकी पगडी द्वारके निकले हुए बांसमें लगकर नीचे गिरी। अमरसिंहने इसको कुछ भी न समझा और दूसरेदिन मुझसे कहा कि यहापर बडे २ महल बनवा दीजिये।' यह बातें कहते २ प्रतापका

---

* इन [illegible]

झगड़ा हुआ कि सेनाके सन्मुखभागकी रक्षा कौन करेगा ? चन्दावतगण ज्येष्ठ ही बड़े होनेके कारणसे अबतक इस सन्मानको प्राप्तकरते आते थे, इस समय शक्तावतगण अत्यन्त विक्रमशाली होकर अपने विक्रमकी श्रेष्ठताके हेतु सिरपर "हिरोल" चलानेकी सामर्थ्यको अधिकार करनेके लिये तय्यार, राणाजी बड़ी कठिनाईमें पड़े। किस पक्षको वह सन्मान दियाजाय, किसको न दिया जाय इसका कुछ भी विचार उनसे न हुआ। यदि एक दलका सन्मान किया जायगा तो दूसरा दुःखित होकर यहांसे चलाजायगा।

और जबतक यह दोनों सम्प्रदाय सहायता नहीं करेंगी, तबतक विजयसे भी कुछकाम नहीं मिलसकता। राणाजीने बहुतेरे तर्क वितर्क किये परन्तु कुछ भी समझमें न आया। जब महाराणाजीको मौन देखा तब दोनों सम्प्रदायोंके सामन्तलोग अंतमें राड़की तलवारसे इस झगड़ेकी मीमांसा करनेपर उतारू हुए। इस ही समयमें राणा अमरसिंहने ऊंचे और गंभीर स्वरसे कहा, "अन्तलादुर्गमें जो दल पहिले प्रवेश करसकेगा, उसको ही हिरौलकी रक्षाका भार प्राप्तहोगा।" जैसे ही राणाजीने यह वाक्य कहा वैसे ही चन्दावत और शक्तावत गण तत्क्षणमें वादविवादको छोड़कर अन्तलादुर्गकी ओर चले।

गये। आदमी पुत्र शोकको तो भूल गये, परन्तु प्रतापसिंहके शोकको किसीने नहीं बिसराया। क्या कोई ऐसा भी समय आवेगा कि जब लोग प्रतापसिंहके कष्टको भूल जांयगे ? इस भूल जानेका ध्यान आतेहुए भी हमारी छाती फटने लगती है।

राजपूत कुलतिलक वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंहके जीवनचरित्रको भलीभांतिसे भारतवासी पढ़ें और अनुशीलन करें। जिन लोगोंमें जातीयभाव मिला हुआहै, जो लोग स्वदेश और स्वजातिकी हीनावस्थाका विचार करके कमसे कम दो बूँद भी आँसुओंको गिराया करतेहैं, जो लोग जन्मभूमिके माहात्म्यको जानते हैं; उन सबहीको वीरकेशरी प्रतापसिंहके पवित्र जीवनचरित्रका पठन पाठन करना उचितहै। हमको सन्देह है कि प्रतापकी समान महावीर जगत्के किसीदेशमें किसीसमय पर कभी उत्पन्न हुआ हो। उनकी वीरता, महानता और स्वार्थत्यागका विचार करनेपर आज भी दीन हीन भारत वासियोंका हृदय एक प्रचंड शक्तिसे बलवान होजाताहै। जो अकबर उस समयमें समस्त भारतवर्षका शहन्शाह माना जाता था, जिसकी प्रचंड सेनाके विशालताका विचार करनेपर ज़रक्सस (Xerexes) की बडी सेनाभी साधारणही जान पडती थी; राजपूत वीरप्रतापने थोडीसी सेना और कितने एक सरदारोंको साथ लेकर, बराबर पच्चीसवर्षतक उसही शहन्शाह अकबरके साथ युद्ध किया था। जो मेवाडमें एक थुसिडाइडस * अथवा जिनोफन × उत्पन्न हुआ

---

* थुसिडाइडस ग्रीसका प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता हुआहै। इनका जन्म [illegible] एथेन्सनगरके बीच ईसाके जन्मसे ४७१वर्ष पहिले हुआ था। एकसमय यह इतिहासलेखक ग्रीसकी सेनाका सेनापति था। परन्तु शत्रुओंके द्वारा अपनी सेनाके पराजित होनेसे राजदंडकी [illegible] छोड बीस वर्षतक अज्ञातवास किया था। ईसवी सन्से ४०३वर्ष पहिले यह इतिहास [illegible] अपने देशको लौटा, लौटनेके थोडेही दिन पीछे इसकी मृत्यु हुई। [illegible] इसने बनाया था।

× जिनोफनभी एक ग्रीक इतिहासवेत्ता और सेनानायक था। [illegible] पारसके विख्यात् राजा साईरसने अपने [illegible] किया था, उस समय [illegible] साईरसकी सहायता करनेके लिये युद्धमें गई [illegible] ईसवी सनसे ४०१ वर्ष पहिले [illegible] विजयी राजाने [illegible] [illegible]

चढनेके पश्चात महावतको उन्मत्तभावसे पुकारकर कहा "हाथीको मेरे ऊपर दौड़ा, नहीं तो अभी तेरा शिर काटडालूंगा।" महावतने स्वामीकी आज्ञाका पालन किया। अंकुशकी भयंकर पीडासे अत्यन्त दुःखित हो घोर शब्द करते हुए उस प्रचंड गजराजने कठोर बलसे दुर्गद्वारपर टक्कर मारी। उसके भयंकर वेगको न संभालनेके कारण दोनों किवाड खंड २ होगये; परन्तु साथमें शक्तावत सरदारने भी पृथ्वीमें गिरकर प्राण छोडदिये। सेनाने इस बातपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। सरदार मारागया, उसकी देह पृथ्वीपर गिरी, परन्तु राजपूत वीरोंने उस ओरको देखातक नहीं वे उस शरीरपर पांव धरतेहुए प्रचंड वेगसे खुले हुए द्वारके भीतर चले। परन्तु प्राणोंको इस प्रकार अपूर्व रीतिसे नेवछावर करके भी शक्तावत सरदारोंने उसदिन अपने पक्षके लिये हिरोलका सन्मान न पाया। शक्तावतोंके दुर्गमें पहुंचनेसे पहिले ही चन्दावत सरदारका मृतकदेह किलेके ऊपर पड़ा हुआ था। प्राण देनेके कुछ समय पहिले चंद्रावतलोगोंका जयशब्द जो उन्होंने सुना, वह उस ही समय हुआथा कि जब चंदावत ठाकुर दुर्गमें प्रवेश करचुके। शत्रुके सामने गोलिसे जब चंदावत सरदार मरकर जैसे ही नीचे गिरपडे वैसे ही एक दूसरे चन्दावत ठाकुर अपने पक्षका सेनापति बना, वह नया सेनापति प्रथम सरदारसे नीचेकी पदवीपर काम करता था। इसका नाम बान्दा ठाकुर था जो गम्भीर भीम [illegible] विपत्तिको झेलनेमें भी नहीं घबडाते, आश्चर्यता होनेपर जो लोग प्रचंड [illegible] [illegible] तलवार [illegible] जिनको माया मोह कुछ भी नहीं [illegible],

गये। आदमी पुत्र शोकको तो भूल गये, परन्तु प्रतापसिंहके शोकको किसीने नहीं बिसराया। क्या कोई ऐसा भी समय आवेगा कि जब लोग प्रतापसिंहके कष्टको भूल जांयगे ? इस भूल जानेका ध्यान आतेहुए भी हमारी छाती फटने लगती है।

राजपूत कुलतिलक वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंहके जीवनचरित्रको भलीभांतिसे भारतवासी पढ़ें और अनुशीलन करें। जिन लोगोंमें जातीयभाव मिला हुआहै, जो लोग स्वदेश और स्वजातिकी हीनावस्थाका विचार करके कमसे कम दो बूंद भी आँसुओंको गिराया करतेहैं, जो लोग जन्मभूमिके माहात्म्यको जानते हैं; उन सबहीको वीरकेशरी प्रतापसिंहके पवित्र जीवनचरित्रका पठन पाठन करना उचितहै। हमको सन्देह है कि प्रतापकी समान महावीर जगत्के किसीदेशमें किसीसमय पर कभी उत्पन्न हुआ हो। उनकी वीरता, महानता और स्वार्थत्यागका विचार करनेपर आज भी दीन हीन भारत वासियोंका हृदय एक प्रचंड शक्तिसे बलवान होजाताहै। जो अकबर उस समयमें समस्त भारतवर्षका शहन्शाह माना जाता था, जिसकी प्रचंड सेनाके विशालताका विचार करनेपर ज़रक्षस (Xerexes) की बडी सेनाभी साधारणही जान पडती थी; राजपूत वीरप्रतापने थोडीसी सेना और कितने एक सरदारोंको साथ लेकर, बराबर पच्चीसवर्षतक उसही शहन्शाह अकबरके साथ युद्ध किया था। जो मेवाडमें एक थुसिडाइडस ∸ अथवा जिनोफन × उत्पन्न हुआ

∸ थुसिडाइडस ग्रीसका प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता हुआहै। इसका जन्म ग्रीसदेशके एथेन्सनगरके बीच ईसाके जन्मसे ४७१वर्ष पहिले हुआ था। एकसमय यह इतिहासलेखक ग्रीसकी सेनाका सेनापति था। परन्तु शत्रुओंके द्वारा अपनी सेनाके पराजित होनेसे राजदण्डको पाकर स्वदेशको छोड बीस वर्षतक अज्ञातवास किया था। ईसवी सन्से ४०३ वर्ष पहिले यह इतिहास लेखक अपने देशको लौटा, लौटनेके थोडेही दिन पीछे इसकी मृत्यु हुई। पिलोपोनिसस समरका प्रथम कहानी इसने बनाया था।

× जिनोफनभी एक ग्रीक इतिहासवेत्ता और सेनानायक था। सोक्रेटिसका यह शिष्य था। जब पारसके विख्यात् राजा साईरसने अपने [illegible] किया था, उस समय जो दसहजार ग्रीकसेना साईरसकी सहायता करनेके लिये युद्धमें गई थी उसमें जिनोफन भी उस सेनाके साथ था। ईसवी सनसे ४०१ वर्ष पहिले [illegible] साईरस अपने भाईके हाथसे मारा गया, तब विजयी राजाने [illegible] करना आरम्भ किया। उस संकटके समय [illegible] दसहजार ग्रीकसेनाको [illegible]। इसका जन्म एथेन्सनगरमें हुआ था परन्तु एथेन्सके साथ [illegible] किया। इसने [illegible]

इतनेहीमें बालक रत्नसिंहने उस छुरीको अकस्मात् हाथसे छीनकर कहा, "पितः! क्या हड्डी और मांस काटनेको यह छुरी नहीं बनाई गई है," यह कहते २ कुमारने अपने कोमलहाथके ऊपर जोरसे उस छुरीको मारा। तीव्र-वेगसे रुधिर निकलनेलगा। महाराजका आसन भी रत्नसिंहके रुधिरसे भीजकर लाल होगया। परन्तु कुमारके सुकुमार मुखमंडलपर किंचित भी कष्टका चिन्ह दिखाई नहीं दिया। सभासद यह देखकर अत्यन्त विस्मित हुए, बालककी निडरता देखकर सब लोग अनेक प्रकारका तर्क वितर्क करने लगे। परन्तु राणा उदय-सिंहके हृदयमें जो भाव पैदा हुआ उसको तो वह स्वयं ही जानते होंगे। कायर-पनके कारणसे हो अथवा ज्योतिषीके फलकहनेसे हो। उन्होंने तत्काल ही कुमार रत्नसिंहका सिर काटनेकी आज्ञा दी। इस कठोर आज्ञाके पालन करनेकी तत्-यारियें होनेलगीं। कुमारको भयंकर वध्यभूमिमें पहुंचाया गया, इतनेहीमें आउआके सरदारने राणाके सामने आकर सविनय निवेदन किया। "महाराज! कृपाकरके कुछ देरके लिये एक प्रार्थना सुनिये। सुनकर सन्तुष्ट होकर आपने अंगीकार करनेका वचन देनाचाहता, परन्तु उचित अवसर न आनेसे अबतक महाराजसे कोई प्रार्थना न

एकादश अध्याय ११.



अमरसिंहका सिंहासनपर बैठना;—राजा मानसिंहको विष देकर मारनेकी इच्छा करनेमें स्वयं अकबरकी मृत्यु;—पिताके निकट की हुई प्रतिज्ञाके पालन करनेमें अमरसिंहकी आना कानी;—शालुम्ब्रा सरदारका आचारण;—अमरसिंहसे बादशाही सेनाका पराजित होना;—चित्तौरमें सुगाजी (सागरजी) का राज्याभिषेक;—सागरजीका अमरसिंहको चित्तौर समर्पण करदेना;—नवीन २ जय, चन्दावत और शक्तावतोंमें परस्पर झगडा;—शक्तावतलोगोंकी उत्पत्तिका वृत्तान्त;—राणाजीके विरुद्ध बादशाहके पुत्र परवेजका युद्धके लिये तइयार होना;—राणाजीका उसको पराजित करना;—महावतखाँकी पराजय;—सुलतान खुशरूकी मेवाडपर चढाई;—अमरसिंहका निराश;—इङ्गलैण्डसे दूत;—अमरसिंहका अपने पुत्रको राज्यभार देकर वनवास लेना;—अमरसिंहका परलोकवासी होना।



राजपूतकुल गौरव राणा प्रतापसिंहके सत्रह पुत्रोंमें अमरसिंह सबसे बडा होनेके कारण सिंहासनपर बैठा ! आठवर्षकी अवस्थासे लेकर पिताके परलोकवासी होनेतक अमरसिंहने इतना समय पिताके पास ही विताया था। पिताजीके दुःख. कष्ट, विपत्ति-संकट अथवा कठोर परिश्रमके समय पास ही रहकर कुमार अमरसिंहने उनके महान चरित्र पर चलनेकी चेष्टा की थी। उनका यह परिश्रम सफल भी हुआ था। वीरवर प्रतापकी वीरताके उदाहरणसे उत्साहित और उनके अभिसंचित महामंत्रसे दीक्षित होकर अमरसिंहने युवा अवस्थाके मध्याह्नकालमें * मेवाड़के राज्यका भार ग्रहण कियाथा। उससमय इनके भी कई पुत्र होगए थे, वे पुत्र

* संवत् १६५३ (सन् १५९६ई०) मे [illegible] थे।

प्रतापसिंहने विधि विधानसे उस उत्तम ब्राह्मणकी क्रिया की तथा श्राद्धादि समाप्त करके उनके पुत्रको एकबार ही सदाके लिये जागीर दी। उन पुरोहितजीकी सन्तान आजतक उस जागीरको भोगती हुई चली आतीहै। उस महाहितकारी श्रेष्ठ ब्राह्मणने अपने राजाका महोपकार करनेके लिये जिस स्थानमें अपने प्राण दिये थे वहां एक चबूतरा बांधकर स्मारक स्तंभ स्थापित कियागया। वह स्तंभ आजतक उस श्रेष्ठ ब्राह्मणके रुधिरसे भीगे स्थानपर खड़ा हुआ उसके अतुल प्राणत्यागका प्रकाशमान परिचय देरहाहै। उस दिन दोनों भाई अलग २ होगये। बहुत दिनतक दोनोंमें परस्पर अत्यन्त शत्रुता रही। तदुपरान्त जिस दिन शक्तसिंहने बड़े भ्राताके प्राणोंको बचायकर "खुरसान-मुलतानका अग्गल" यह पवित्र नाम पाया, उसदिन दोनों भाई जिस भ्रातृत्वके बन्धनसे बंधगए इस जन्ममें उनका वह बन्धन फिर नहीं टूटा।

जो हो, अब इस समय फिर मेवाडके इतिहासपर विचार किया जाता है। राज्यगद्दीपर बैठते ही अमरसिंहने उन नियमोंका संस्कार किया कि जिनपर उनके राज्यका मंगल निर्भर था। सब खेतोंको दुवारा नापकर उन पर फिर नया महसूल लगाया गया, अपने सामन्त और सरदारोंको नई २ जागीरें दीं। इसके अतिरिक्त और भी कई नियमोंका प्रचार किया। उनमें पगड़ी बांधनेकी प्रथा ही विशेष प्रसिद्ध है + अमरसिंहके चलाये हुए उन नवीन नियम और नवीन रीतिभांतिका वृत्तान्त आजतक मेवाड राज्यके स्तंभोंकी शिलपलिपिमें खुदा हुआ पाया जाताहै।

दूरदर्शी अमरात्मा महाराणा प्रतापसिंहने जो शंका की थी वह शीघ्रही फलवती हुई। विश्राम देनेवाली शान्ति वास्तवमें अमरसिंहके लिये अनर्थकारिणी होगई। पिताकी पवित्र आज्ञाका निरादर करके अमरसिंह अत्यन्तही आलस्यके वश हो गए। उन्होंने पेशोला सरोवरके किनारे बनी हुई कुटियोंको छोडकर वहांपर एक " अमर महल " बनवाया। इस महलके भीतर खुशामदी सखाओंके साथ रहकर निश्चिन्त हो दिन व्यतीत किया करते थे। परन्तु इस प्रकारका सुख बहुत दिनतक नहीं भोगसके। अल्पकालके बीचते ही बादशाह जहाँगीरकी रणभेरियोंने मेवाडकी सीमापर शब्द करके आलसी राणाको विलासकी तन्द्रासे जगाडाला। दिल्लीके तख्तपर बैठहुए चारवर्ष भी नहीं हुए थे कि इस बीचमेंही जहाँगीरने समस्त घरेलू झगडोंको दूरकरके मेवाडनाथके ऊपर चढाई की। उस विशाल भारत साम्राज्यके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्ततक जब कि समस्त राजाओंने ही दिल्लीश्वरकी अधीनताको मान लिया, फिर क्या एक मेवाड ही उस शहन्शाहके सामने गर्वसे अपना मस्तक उठाए रहेगा? जब कि सबने ही उनको भारतका सार्वभौम सम्राट् मान कर स्वीकार कियाहै, तब क्या एक शिशोदियावंश ही उसका प्रतिद्वंद्वी रहेगा? क्या राणाजीकी सेना बादशाहकी फौजसे सामना करसकतीहै? फिर उनको इतना दर्प इतना गर्व–और इतना अहंकार

तो अकबरने यथार्थ ही इस पितानोचित कार्यको कियाथा! हाय! मनुष्यकी [illegible] जरा कठिन कार्यहै। जिसके साथ अकबरका वैमनस्य होता उस अमीर या दरबारीको [illegible] प्रकारसे मारता था दो प्रकारकी गोली उसके पास रहती थीं विषैली और बिनाविष [illegible] जानता था दरबारीको विषैली गोली दे [illegible] पर अन्तमें उसने भी उस गतिको प्राप्त हुआ।

+ यह पगडी "अमरशाही पगडी" के नामसे प्रसिद्ध है। [illegible] उसको बांधते हैं।

के साथ इसमें विश्राम करते थे कि आधीरातके समय घोर आंधी आई और मंत्रीजीका तम्बू उड़ाने लगी; इसके मारे मंत्रीका प्राण उड़गया। उस भयंकर अवसरमें प्राण बचानेका उन्होंने कोई उपाय न देखा। रात्रिके उस घोर समयमें परम हितैषी चूड़ा और जोधने अपने कई एक भ्राताओंके साथ वहां पहुंचकर राजमंत्रीकी रक्षा की। उनका वह परमोपकार देखकर मंत्रीवर परमप्रसन्न हुए तथा हाथ जोड़कर उनका वृत्तान्त पूछा। उनसे उत्तर पाकर नम्रभावसे बोले, "आपकी यहां रहनेमें शोभा नहीं है; चलिये उदयपुरको चलिये; मैं निश्चयसे कहता हूं कि महाराज आपलोगोंको उचित पदपर स्थापन करेंगे। उन वीरोंने मंत्रीके अनुरोधको न मानकरके कहा, "बिना राजाके बुलाये वहां जाना कभी ठीक नहीं होगा, अतएव जब-तक वह स्वयं हमको वहां नहीं बुलावेंगे, तबतक हमारा रहना यहीं पर ठीक होगा।" मूल बात यह है कि अधिक दिनतक उनको [illegible] नहीं रहनापड़ा। दिल्लीश्वरके विरुद्ध रणयात्रा करनेके लिये राणा अमरसिंह उस समय [illegible] सेना इकट्ठी कर रहे थे। मंत्रीसे अपनी जातिवालोंके विक्रम और हितानुष्ठानका वृत्तान्त जानकर राणाजीने शीघ्रही उनके पास दूत भेजा। दूतके साथ वे समस्त वीरगण चले आये और राणा अमरसिंहने परम आदर मानके साथ उनको ग्रहण किया

को बिता रहे हैं। आपकी आंखोंके सामने मुसलमानलोग मेवाडका सत्यानाश करेंगे, प्रजाको सतावेंगे, राजपूतबालाओंको अपने कलंकित हाथसे असती करेंगे, आप किसभांतिसे इन अत्याचारोंको देखकर बैठे रहेंगे ? आपके राज्यको-आपके ऐश्वर्यको और आपके ऊंचे कुलगौरवको शतबार धिक्कार है ! यदि पितृपुरुषोंके पवित्र यशको अचल रखनेकी सामर्थ्य नहीं थी तो क्यों इस पवित्र शिशोदीयकुलमें जन्म लिया ?

शालुम्ब्रा सरदारकी इस तेजस्विनी व्याख्याको सुनकर समस्त सरदारोंके हृदय उत्साहसे भरगये, परन्तु दुःखकेसाथ कहनापडताहै कि अमरसिंहकी जडता इस आवेशमयी वाणीको सुनकर भी ज्योंकी त्यों रही। दारुण क्रोध और अभिमानसे चन्दावतवीरके अंगोंमें आग लगगई। सभाग्रहके सामने ही योरूपका बना हुआ एक अत्युत्तम बडा दर्पण रक्खा था। क्रोधित शालुम्ब्रा सरदारने अपने पास और कुछ न देखकर, गलीचेके कोनेपर रक्खीहुई एक पीतलकी छडको उस दर्पणकी ओर फेंका। तत्काल उस दर्पणके टुकडे टुकडे होगये। तदुपरान्त उस चंदावतवीरने दाहिना हाथ पकडकर अकस्मात् राणा अमरसिंहको सिंहासनसे नीचे उतारकर गंभीरवाणीसे कहा कि "सरदारगण ! शीघ्र घोडेपर सवार कराकर प्रतापसिंहके पुत्रको कलंकसे बचाओ।" शालुम्ब्रा पतिके ऐसे आचरणसे राणाजी मनमें अत्यन्त ही दुःखित हुए; और उसको "राजद्रोही" तथा "राजापमानकारी" कहकर बारम्बार तिरस्कार किया; परन्तु ज्ञानी चन्दावत सरदार अमरसिंहके इस अनुचित वर्तावसे तिलभर भी दुःखित न हुआ। उसको भलीभांतिसे विश्वास था कि कर्तव्यपालनेके लिये मुझको ऐसा कार्य करना पड़ाहै, फिर इसमें दोष क्या है। बात भी ठीक यही थी कि शालुम्ब्रापतिने अपना कर्तव्य ही प्रतिपालन किया था। यदि वह सरदार इस प्रकारका उपाय न करता तो अमरसिंहकी अत्यन्त ही दुर्दशा होती। दूसरे सरदारगण भी चन्दावतवीरकी यह कर्तव्यपरायणता देखकर अतीव प्रसन्न हुएथे। सबने एक मन ही राणाजीसे [illegible] राणाजीका हृदय उस समयमें भी क्रोधसे जलरहा था। क्रोधके मारे आंखोंसे आंसू निकल रहेथे। कुछदूर चलकर किंचित् [illegible] आई। निकटके तेजस्वी सरदार और सामन्तगण राणाजीके मानसिक विकारकी [illegible] न करके सेनासहित पर्वतसे उतरने लगे। इस समय मेवाडके बीच जहांपर श्रीजगन्नाथजीका मन्दिर बना हुआहै, उसी स्थानपर आकर [illegible] राणाजीके [illegible]-

जोध, दूदा और छत्रभान साथमें ही प्राणोंको देकर उस वीरका साथ देते हैं, हृदयको उत्तेजित करनेवाला यह प्रकाशमान चित्र उनके ध्यानमें फिरजाता है, उस समय वे लोग अपने डाढीमूछोंको चढा २ कर एक दूसरेकी ओर देखा करते हैं। शक्तसिंहका ज्येष्ठपुत्र भणजी इससे पहिले किसी कारणसे राणाजीका विराग-भाजन हुआ था। इस कारणसे वह सदा दुःखित रहता। परन्तु ऐसे दुःखमें उसको बहुत दिनतक नहीं रहनापडा। भाग्यकी प्रसन्नतासे राणाजी शीघ्रही उसपर प्रसन्न हुए। एकवार भिंडरके राठौरोंने राणाजीका अपमान किया, तब शक्तावत सर्दार तेजस्वी भणजीने अपनी सेनाको लेकर उनपर आक्रमण करके वह दुर्ग लेलिया, राठौरगण वहांसे भागगये। जब भणजीने अपमानकारियोंको ऐसा दंड दिया, तब राणाजीने उनको परम प्रसन्न होकर पुरस्कारमें वह भिंडर-किला ही भिंसरोरके साथ मिलाकर देदिया। वीरवर शक्तसिंहसे लेकर वर्तमान समयतक दश सर्दार शक्तावतकुलके आसनपर क्रमानुसार चलागये हैं। उनका वंश अल्पसमयमें ही इतना फैलगयाथा कि शक्तसिंहसे दो चार पीढी पीछे ही मेवाडके राणाजी अवश्यकता पडनेपर दश हजार शक्तावत वीरोंको

तदुपरान्त नवीन राणा मुगलसेनाके एक दलसे रक्षित होकर राशिमें राजकरनेके लिये आगे बढा। यवनलोगोंके कठोर सतानेसे थोडा सा भाग बाकी रहा, वह भी साधारण नहीं था। सान्ध्य-राशिमरेखाकी समान उस नष्ट गौरवके क्षीण अवशेषको वर्णन टामसरोनामक प्रसिद्ध अंगरेज दूतने अपनी यात्राके इतिहासमें जो लिखाहै, उसके पाठकरनेसे वरिमत होना पडताहै। *

राजपूत कुलांगार सागरजीने अपने पितृपुरुषोंके नष्टहुए गौरवकी भस्मपर क्षणभंगुर सिंहासनको स्थापन किया। श्मशानकी समान चित्तौर एक प्रकारकी देखी सुन्दरतासे सुशोभित हुआ। परन्तु बादशाहने जिस आशासे सागरजीको चित्तौरकी गद्दी दी थी, वह आशा उनकी सफल न हुई। उसका कारण यह था कि मेवाडके किसी निवासीने भी राणा अमरसिंहके पक्षको नहीं छोडा। कौतूहलके वश होकर भी तो सागरजीके दर्शनकरने न आया। अत्यन्त और मानसिक पीडाको उठाते २ सागरजीने सात वर्ष चित्तौरमें राज्यकिया। दुरवस्थाका विचारकरके वह स्वयं ही खिन्न हुआ करता था। जिस चित्तौरको मेरे पूर्वपुरुषोंने अपने बाहुबलसे लियाथा, आज एक यवनके अनुग्रहसे अभिषेकित हुआ हूं। और अभिषेकित होनेसे ही कौनसा फल मिला? पग २

---

* चित्तौर एक प्राचीन महानगरी है जो कि एक कठिन पर्वतके शिखरपर बनीहुई है। चारो-दीवारें हैं जिनकी लंबाई दश मील है। आजतक भी इसमें सैंकडों टूटेफूटे देवमन्दिर और [illegible] महल दुमहले दिखाई देते हैं। यद्यपि आज यह टूटेफूटे पडे हैं, परन्तु उनकी [illegible] भी [illegible]न गौरवका निदर्शन पाया जाताहै। पत्थरके अगणित खंभे इन खंडहरोंमें [illegible]। [illegible] अंगरेज लोग जहांतक देखसकतेहैं, उससे निश्चय ज्ञात होताहै कि चित्तौरमें पत्थरके [illegible] स्थान है। नगरके ऊपरभागमें आरोहण करनेके लिये केवल सीढियां हैं जो [illegible] है। यदि उन सीढियोंपर जाना हो तो चार दरवाजोंसे होकर पहुंचना होताहै। [illegible] रहनेवालोंमें "जूम" और 'बाहिम, तथा [illegible] [illegible]। [illegible] सुन्दरता चित्तौरकी थी और जो गौरव था, आज भी खंडहरोंमें उनकी [illegible]। एक भारतवर्षीय राणाके पाससे यह विजित हुआथा। [illegible] उसकालसे इस नगरको छोड पहाडके ऊंचे शिखर पर रहनेको [illegible]। [illegible] ([illegible] जिसकी सल्तनतके वशमें यहांपर आयाथा, [illegible]) [illegible] हिन्दू [illegible] लिया था। बहुत दिनोंतक घिरेरहने तथा [illegible] होगये, उस ही समय [illegible] इसको ले [illegible]। यदि ऐसा न होता तो वह [illegible] चित्तौरके जीतनेको समर्थ नहीं होता।"

था, उसमें दोनों दलोंकी मुठभेड़ हुई. इस गिरिमार्गका नाम रामसोर था: यहांपर अनेक राजपूतोंने. हिन्दूविद्वेषी यवनलोगोंके आक्रमणसे स्वदेशकी रक्षा करनेके लिये प्रसन्नतासे अपने प्राणोंको दिया था. अतएव यह स्थान पवित्र है। रामसोरके इस ही पवित्र क्षेत्रमें × विक्रमकेशरी राजपूतराजने अपने रणविशारद सामन्त और सरदारोंको साथ लेकर, मुगलसेनाके विरुद्ध प्रचंड सस्त्र धारण किया था। दोनो दलोंमें घोर संग्राम होनेलगा। वह विशाल अनीकिनी. रणवीर राजपूतोंकी मुट्ठीभर बनीठनी सेनाकी गति न रोकसकी। राजपूतोंके कठोर विक्रमसे यवन सेनाके मोरचे छिन्न भिन्न होगये. मुगललोग पीठ दिखाकर भागने लगे. बहुतसे राजपूतोंके हाथसे मारेगये। बचेहुए सिपाही अजमेरकी ओर भागे। वह दिन मेवाडके लिये एक शुभ दिन था, यहांतक कि मुगलइतिहासवेत्ताने स्पष्ट ही माना है कि वह दिन मेवाडके लिये एक प्रकाशमय गौरवका दिन हुआ. शिशोदियाकुलकी वीरताके प्रगट होनेको वह दिन एक महापर्व था। इस पर्व

रन्तु वहां भी शान्तिने उसका साथ न दिया। कुछ काल वीतनेपर वादशाहकी आज्ञासे राजसभामें आया वहांपर जहाँगीरने उसका अत्यन्त तिरस्कार किया। वह कठोर तिरस्कार उसके हृदयमें वाणोंकी सामन लगा। भयंकर कष्टसे धीरज जातारहा, इसकारण सव सभाके समाने अपने हृदयमें छूरी मारकर वादशाहके निकट ही प्राण छोडदिये। स्वदेशद्रोही विश्वासघातीका प्रायश्चित्त इस ही भांतिसे होना उचित था * माता वसुमतीने एक गुरुभारसे छुटकारा पाया।

अमरसिंहने अपने प्यारे नगर चित्तौरको पाया। परन्तु ऐसी सेना और ऐसा धन तो पास है ही नहीं कि जिससे चित्तौरकी रक्षा होसके। फिर किस प्रकारसे इसकी रक्षा होगी। राणाजीको चित्तौरके पानेसे जो आनंद हुआ था वह वहुत दिनतक नहीं रहा, और उस आनंदके साथ ही चित्तौरकी स्वाधीनता सदाके लिये लोप होगई। यदि राणाजी अधिकतासे चित्तौरका भरोसा न करते, यदि गिह्लोटवीरोंकी सनातन रीतिका अवलंवन करके संकटके समय चित्तौरको छोडकर पर्वतोंके दुर्गम स्थानोंमें चलेजाते और उन स्थानोंमें रहकर शत्रुओंको सताते, तो उनका यह स्वाधीनतारूपी रत्न न जाता रहता. और सव-कुछ जाता रहता तथापि राणा अमरसिंह अपने पूज्य पिताकी समान गौरवसे अपने जीवनको व्यतीत करसकते। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। दूरदर्शी असमात्मा प्रतापसिंहका भावीदर्शन शीघ्रही प्रत्यक्ष होगया। गिह्लोटकुलकी पवित्र स्वाधीनता सदाके लिये जाती रही! चित्तौरको प्राप्त करके राणा अमरसिंहजीने क्रमसेक्रम मेवाडके अस्सी किले और नगर अपने अधिकारमें करलियें। उन किलोंमें अन्तला अनटीला दुर्गको उन्होंने जिस प्रकारसे लियाथा, उसका वृत्तान्त आवश्यकीय समझकर नीचे लिखा-जाताहै। इस किलेको लेनेके समय मेवाडकी दो श्रेष्ठ सामन्त सम्प्रदायोंमें जो घोर विवाद हुआ. वैसा विवाद और कभी नहीं हुआ।

जहांगीरकी तीसरी चढाईका समाचार पाकर राणा अमरसिंह भी यथासंभव सेना इकट्ठी करने लगे। परन्तु मुगलोंके आनेमें देर विचारकर सोचने लगे कि इतनेमें कितने एक ग्राम और नगर ही मुगलोंसे छीन लें। युद्धकी सब तइयारी होचुकी थीं कि इतनेमें ही चन्दावत और शक्तावतोंमें इस बातका घोर

---

* [illegible]

वृत्तिके द्वारा उत्साहित होकर आज मेवाडके दो प्रधान सामन्त मेवाडनाथकी कठोर प्रतिज्ञाको पालनकरने चलेहैं। भट्टकविगण उदात्तस्वरसे वीणा बांधकर उनका मंगलगीत गाने लगे। राजपूतोंकी स्त्रियें भी उस स्वरमें अपने कोकिलकंठस्वरको मिलाकर वीरोंको दूना उत्साह देने लगीं।

सूर्यदेव उदय होचुकेहैं, उनकी किरणें वृक्षोंकी चोटियों और पर्वतोंके शृंगोंपर क्रीडा कररहीहैं, इसी समय शक्तावतगण अन्तलाके सन्मुख द्वारके निकट पहुंचे और उस समय वहांपर आक्रमण किया कि जिस समय शत्रुगणोंको असावधान पाया। परन्तु यवनगण उनके अभिप्रायको समझ अल्पकालमें ही अस्त्र शस्त्र लगाय परकोटेके ऊपर तइयार होगए। उस काल दोनों दलोंमें घोर संग्राम होनेलगा। इस ओर चन्दावतगण मार्ग भूलकर एक बडी भूमिमें जा पडे जो कि जलमय थी। उस दुर्गम भूमिसे वाहिर निकलनेका मार्ग न पाकर वे लोग इधर उधर भटक रहेथे कि इतनेहीमें एक गडरिया उनको मिला। गडरिया मार्गदिखाता-हुआ उनको ले चला जिससे वह वीरगण शीघ्रही अन्तलादुर्गके सामने पहुंचे। चन्दावतगण अपनी बुद्धिमानीसे साथमें लकडीकी कई एक सीढीसे ले आएथे, उनको किलेकी दीवारपर लगाकर चन्दावत सरदार परकोटेपर चढनेलगे। मुसलमानोंने गोला छोडा, वह गोला सरदारके लगा और वह सीढियोंसे खसककर प्राचीरके नीचे गिरा। विधाताने उसके भाग्यमें हिरोलके चलानेका भार नहीं लिखा। क्रमानुसार दोनों दलोंकी प्रचंड गति रुकगई। चन्दावत और शक्तावतगण पलभरतक चुपचाप रहकर फिर भयंकर बलके साथ शत्रुओंको परास्त करनेकी चेष्टा करने लगे। शक्तावत सरदार एक बडे हाथी पर चढा हुआ था। दूसरा उपाय न देखकर उसने दुर्गके बंदद्वारपर उस गजराजको चलाया। भयंकर चिंघाड करके वह प्रचंड मातंग भयंकर बलके साथ उस फाटकपर धाया। परन्तु किवाडोमें लोहेके अत्यन्त तीक्ष्ण कांटे लगरहे थे, इस कारण उस गजराजकी एक चाल न चली, वह किसी प्रकार उस द्वारको न तोडसका बहुतसे शक्तावत वीरगण उस द्वारको तोडनेकी चेष्टामें काम आये. परन्तु शक्तावत सरदारका उत्साह यथावत रहा। अकस्मात् गगनमंडलको फाडता हुआ चन्दावतलोगोंकी ओरसे घोर जयजयकार शब्द होनेलगा। शक्तावत सरदारका हृदय कंपायमान होगया। दूसरा उपाय न देखकर वह सरदार हाथीसे उतरा, और उन तीक्ष्ण कीलोंके ऊपर जो कि किवाडोंमें लगी हुईथी—चढगया।

उडने लगी * शक्तावत सरदार सेनासहित शिर झुकाये हुए लौट आये। "हिरोल" की रक्षाका भार चन्दावत ठाकुरोंपर ही रहा। इस प्रचंड अन्तर्विप्लवमें—इस भयानक जातिविद्वेषमें दोनों ओरके बहुतसे सिपाही, सेनानी, और सरदार अन्तलादुर्गके ऊपर मारेगएथे। प्रयोजन समझकर यहां पर शक्तावत ठाकुरोंकी उत्पत्तिका वर्णन लिखाजाताहै। राणा उदयसिंहके चौवीस पुत्र हुएथे, इनमें शक्तासिंह दूसरा था। बालकपनसे ही यह तेजस्वी और निडर था। उस सुकुमार अवस्थामें ही शक्तसिंहमें यौवनकी तेजस्विता और निडरताका पूर्ण विकाश हुआथा कहतेहैं कि शक्तसिंहकी जन्मपत्री बनानेके समय ज्योतिषीने कहाथा कि "यह शक्त मेवाडका कलंक होगा।" ज्योतिषीकी यह होनहार वाणी ठीक ही हुई थी। राणा उदयसिंह तबसे ही शक्तके ऊपर वीतस्नेह थे। परन्तु सन्तानका मोह अत्यन्त प्रबल होनेके कारण पुत्रपर किसी भांतिका बुरा व्यवहार नहीं किया। कालकी गति विचित्र है। निडर शक्तसिंह कालकी गतिसे ही पिताके नेत्रोंमें खटकने लगे। इसी कारणसे एक बार राणा उदयसिंह सन्तानकी माया ममता भूलकर अपने पुत्रका शिर काटनेको तइयार हुएथे।

शक्तसिंह बालकपनमें अत्यन्त निडर था, इसका प्रमाण नीचेके लेखसे भलीभांति मिलेगा। बालकपनमें एक दिन पिताके निकट बैठा हुआ खेलरहा था, इतनेहीमें एक अस्त्रकार एक नई छूरी बनाकर राणाजीको देनेके लिये आया था। रुईके महीन २ गाले बनाकर छूरी इत्यादि अस्त्रोंकी धारकी परीक्षा कीजातीहै। इस ही प्रकारसे इस छूरीकी धारकी परीक्षा करनेका सामान होरहा था।

---

* संगावत ठाकुरोका भट्टकवि अमरचंद टाडसाहबका मित्र था। साहबने एक कथा इस मित्रसे सुनी थी वह नीचे लिखीजातीहै। कहतेहैं कि जिस समय राजपूतोंने अन्तलादुर्गको जीता था उस समय मुगलोंके सेनापति मन लगाकर शतरंज खेलरहेथे। पहरेदारोंने उनसे विजयका समाचार बताया, परन्तु वे लोग खेलने ऐसे मतवाले होगये थे कि पहरेदारोंकी बातपर ध्यान ही नहीं दिया। धीरे २ विजयी राजपूतोंका आकाशको फाडनेवाला उन्नाद बारंबार होनेलगा; उस समय भी वे चैतन्य न हुए। दोनो सेनापति एकदूसरेको मातदेनेमें लगे हुएथे। [illegible] थी। इतनेहीमें भयंकर वेगसे राजपूत वहां आये और उन दोनोंको मारनेके लिये तय्यार हुए, तब सेनापति आतुर निवेदन करनेलगे कि "बाजी [illegible] राजपूतोंने इस बातको स्वीकार किया। परन्तु उनकी बाजीको पूर्ण न होने [illegible] उत्तर दिया।

आकर एक दूतने निवेदन किया कि "राणा प्रतापसिंहने अपने भ्राता शक्तसिंहको याद कियाहै।"

दोनों भ्राता मिलगये। अपने पालकपिता चन्दावत् सरदारकी अनुमति लेकर शक्तसिंह अपने वडे भ्राताके पास परमसुखसे समय वितानेलगे। परन्तु अभाग्यसे उनका वैसा सौहार्द अधिक दिनतक अचल न रहा। एकवार शिकार खेलनेके समय निशानेके ऊपर दोनों भाइयोंमें घोर झगडा हुआ। दोनों ही अनेक प्रकारके सोच विचार करनेलगे; परन्तु कुछ भी न हुआ। तव प्रतापने छोटे भ्राताकी ओर भ्रुकुटि चढाय हाथका शूलदंड उठायकर गंभीरवाणीसे कहा कि "आओ ? अव देखाजायगा कि किसका निशाना ठीकहै।" शक्तके मस्तकका एक केशतक भी नहीं कॉपा, उन्होंने निडर होकर उत्तरदिया "अच्छा, अवश्य ही देखाजाय, आइये।" तत्काल दोनों भाइयोंके भयंकर शूल उठे। वीरोंकी प्रथाके अनुसार शक्तसिंहने वडे भ्राताकी चरणवन्दना करके उन चरणोंकी धूरिको अपने मस्तक पर चढाया, प्रतापने उनको आशीर्वाद दिया, इसके उपरान्त दोनोंने अपने २ शूलको उठाय परस्पर आक्रमण किया। वहांपर और जितने आदमी थे वह सवही अपने सा-मने शिशोदीयकुलका नाश होता हुआ देखकर ऐसे खडे रहे कि जैसे सवके ऊपर वज्र गिरगयाहो। रोकने अथवा वीचमें पडनेका किसीको साहस न हुआ। गिह्लौटकुलके परम पवित्र पुरोहितजीने दूरसे इस वातको देखा। वैसेही वह "महाराज ! क्या करते हो ? क्या करते हो। ऐसा न कीजिये ऐसा न कीजिये" यह कहते हुए वहां दौड आये और दोनों भ्राताओंके वीचमें आनकर खडे होगये। दोनों भाइयोंको अनेकभांतिसे समझाया वुझाया, परन्तु उनका समस्त यत्न वृथा हुआ। पुरोहितजीने दूसरा उपाय न देखकर अपनी छूरीको लेकर अपने हृदयमें छेद लिया, और झगडा करनेवाले दोनों भाइयोंके वीचमें गिरकर प्राण छोडदिये। सामने ही ब्रह्महत्या होगई। पुरोहितजीके पवित्र रुधिरसे दोनों राजकुमारोंके विमलचरित्रमें कलंक लगा। ब्रह्महत्याका महापातक उनके शिरपर अर्पण कियागया: तव उन मोहान्धभाइयोंकी आंखें खुलीं? दोनों इस वातका विचार करके शान्त होगये कि हमारी अज्ञानतासे ही यह ब्राह्मण मारा गया। प्रतापसिंहने शक्तसिंहको मेवाडके छोडनेकी आज्ञा दी। तिसपर शक्त उनकी आज्ञाको मस्तकपर चढाय भ्राताके चरणोंमें शिर नवाय तत्काल ही मेवाडके राज्य-को छोडकर चलेगये। और वदला लेनेके लिये अकवरका पक्ष अवलम्वन किया।

हीमें अचलकी स्त्री प्रसवपीडासे अत्यन्त पीडित हुई । इस कारण वह सब आगे न बढसके और पालौडके शोनगडे सरदारसे आश्रय मांगा । परन्तु दुखःकी बात है कि ऐसे विपत्तिकालमें उस दुराचारी सरदारने उनको आश्रय न दिया । निकट ही श्रीगंगाजीका एक टूटा फूटा मंदिर था*, दूसरा उपाय न देखकर अचलसिंहने यहीं पर आश्रय लिया । उसके एक कोनेमें जाकर आसन्नप्रसवा स्त्री लेटरही । उसही समयमें प्रचंड वेगके साथ मूसलधारसे वर्षा होने लगी । साथ २ में आँधी और प्रचंड वर्षाके कारणसे वह मंदिर वारंवार कम्पित होने लगा । उसकी दीवारका एक वडाभारी पत्थर खिसककर उस गर्भवती स्त्रीके ऊपर गिरा ही चाहता था कि अचलके छोटे भाई वल्लने जाकर उसको अपने मस्तकपर धारण किया । इसी समय अचलसिंहके दूसरे भाई निकटके वनसे एक वबूलके पेडको काटकर लाये और उसकी टेक उस पत्थरमें लगाई । जवतक टेक नहीं लगी थी तवतक वल्लही उसको शिरपर उठाये रहाथा ।

विश्वमाता भगवती जाह्नवीके उस भग्नमंदिरमें भयंकर विपत्तिके समय शक्तावत वीर अचलकी स्त्रीने एक नवकुमार प्रसव किया । उस कुमारके लक्षणादि देखकर वे समस्त वीरगण अनेक प्रकारकी आशा करने लगे, और सबने एकमत होकर उसका नाम " आशा " रक्खा । महामाया भगवती भागीरथीजी उन सवके प्रति सन्तुष्टहो शीघ्रही आशा पूर्णकरनेवाली वरदायिनी रूपसे उन सवके सामने प्रगटहुई । उनके प्रसादसे नवप्रसूतिने शरीरमें उचित वल पाया, तथा वह अपने स्वामी और देवरोंके साथ ईडरकी ओर चली । ईडरमें पहुँचने पर वहांके शासन कर्त्ताने परम आदरके साथ उनको ग्रहण किया और उनके भरण पोषणको वृत्ति नियत कर दी ।

ईडरके शासनकर्त्ता राठौरराजके सरल और सादर व्यवहारसे परम प्रसन्न होकर अचलसिंह अपने भ्राताओंके साथ परम सुखसे वहां रहने लगे । उस समय एक वार राणाजीके प्रधान मंत्रीने. प्रसिद्ध जैनपीठ शत्रुंजय गिरि × से लौटकर एक रात विश्राम करनेके लिये ईडरमें अपना डेरा डाला । वह कुटुम्ब-

---

* इस मन्दिरमें ही टाडसाहबको अनहलवाड पट्टनके [illegible] विषयमें एक शिलालिपि मिलीथी । पालौंड मेवाड़के [illegible] अन्तर्गत है । [illegible] जाता है ।

× शत्रुंजय जैनलोगोंके पांच पवित्र पर्वतोंमें [illegible] है ।

आदाब बजा लाकर अपने वालिद और दादाकी अर्जी पेश की। उनके आलीखान्दानमें पैदाहोनेका सबूत साफ २ उसके चेहरेसे ज़ाहिर होरहाथा। उसके साथ कुल बर्ताव महरबानीसे कियागया. मैं तरहरकी बख्शिशें देकर उसको खुश करने लगा।"

"सावनके ७वें दिन जगतसिंह मेरी इजाज़त लेकर अपने मुल्कको गये। वक्तरुखसतके मैंने उसको २००००) रुपये, एक घोडा, हाथी और तरह २ के खिलत दिये। राजकुमार कर्णके उस्ताद हरिदास झालाको २०००) रुपये एक घोडा और खिलत और उसहीकी मारफत रानाजीके पास सोनेकी छः मूर्तियें भेजीं।

"तारीख २८ रवि-उल-अव्वल। आज मेरी सल्तनतका ग्यारहवां साल है। मेरे हुक्मसे रानासाहिब और उनके लडके कर्णकी दो मूर्तियां बनाईगई. यह मूर्तियें संगमरमरकी बनीथीं। जिस दिन यह दोनों मूर्तियें तय्यार करके मेरे पास लाईगई. उसही दिनकी तारीख उनपर खुदवाकर उन्हें आगरेके बागमें खडी करनेका हुक्मदिया।"

"मेरी सल्तनतके ग्यारहवें वर्षमें एतमादउद्दौलाने मुझको लिखभेजा कि सुल्तान खुर्रम रानाजीके मुल्कमें गये। इसपर राना और उनके लडकेने सात हाथी, सत्ताईस घोडे, जवाहरात और जिडाऊ गहने वगैरह नज़रानेमें दियेथे। इस नज़रानेमेंसे सुल्तान खुर्रमने सिर्फ तीन घोडे लेकर बाकी सब सामान फेरदिया। उसदिन यह बात भी करारपाई कि राजकुमार कर्ण मेरे पंद्रहसौ (१५००) राजपूतोंके सवार लेकर सदा खुर्रमके पास रहैं।"

फैला, उसहीका नाम वल्लू था। जिस समय महावीर वल्लूने अन्तलाके दुर्गद्वार पर प्राण दिये, जिस समय वह विशाल दुर्ग मुसलमानोंके हाथसे छूटगया, उस समय बाकरोलका सामन्त राजा वह शुभ समाचार राणाजीके पास लेगया। राणाजीने सामन्तराजपर प्रसन्न होकर उनको भलीभांतिसे पुरस्कार दिया और स्वयं भी शीघ्र अन्तला दुर्गपर आये, राणा अमरसिंह जब अन्तलादुर्गपर पहुंचेथे उस समय वीरवर वल्लूका अंतसमय निकट था। राणाजीको सन्मुख देखकर वीरवर वल्लू उत्साहके साथ बोल उठाः-

"दूना दात्तार, चौगुना जुझार।
खुरासानी मुलतानीका अग्गल।"*

मुमूर्षु शक्तावत्वीरका यह उत्साह पूर्ण तेजव्यंजक वचन सुनकर राणाजी अत्यानंदसे पुलकित हृदयसे उस वीरको आशीर्वाद देकर नगरको गये। वीरवर वल्लूका यह शेष वचन आजतक भट्टलोगोंके मुखसे सुनाजाताहै। यद्यपि शक्तावत् लोगोंकी वह वीरता और वह तेजस्विता आज अधिकाईसे हीन होगई है, यद्यपि आलस्य और अफीमसे आज उनके वंशधर गण अत्यन्त दीन और कर्महीन होगएहैं, तथापि वह लोग उस सन्मानसूचक अभिवादनसे सम्पूर्णतः अलग नहीं हुएहैं। आज भी कोई शक्तावत् सरदार जिस समय राणाजीकी राजसभामें जाताहै, अथवा अपने सामन्त भ्राताओंमें आसनपर बैठताहै, भट्टकविगण वैसेही ऊंची वाणीसे वीरवर वल्लूका वह शेष वाक्य कहकर उनको सम्बोधन करतेहैं। इस वीरत्व और महत्त्वसूचक वाक्यको सुनतेही वर्तमानकालके दीन हीन शक्तावत्गण भी नवीन बल और उत्साहसे बलवान होजातेहैं और वर्तमानकी बातको भूलकर अतीतके उस गौरवमय क्षेत्रमें विचरण किया करतेहैं। वह अन्तलाक्षेत्र, परस्परके झगडेका वह प्रचंड स्थान तत्काल उनके नेत्रोंमें दिखाई देजाताहै। वह विशाल अन्तलादुर्ग,-वीरवर वल्लू उसही प्रचंड गजमातंगपर चढेहुए दुर्गद्वारके सामने ही प्राणोत्सर्ग कररहेहैं. उनके चार भ्राता-अचलदास.

---

* दूना दान चौगुना प्राणदान "अर्थात् राजा उनपर जितना अनुग्रह करेंगे, उससे भी चौगुना आत्मोत्सर्ग अधिक होगा।"

चन्दावत लोगोंमें भी इसप्रकारका एक गौरवसूचक वचन है। [illegible] बिवाड" अर्थात् मेवाड़के दस हजार नगरोंके [illegible] [illegible] इस गौरवसूचक [illegible] [illegible] "तो फिर हमसे पार [illegible]" [illegible] [illegible] "अर्थात् [illegible] [illegible] है.

कठोर आक्रमणको व्यर्थ करदेतेथे;—इसही कारण भ्रमवश हो बादशाहने उनके आत्मसमर्पणका दूसरा कारण निर्देशकियाहै। ऐसाकरनेपर भी उन्होंने शिशो-दीय वीर अमरसिंहके वीरगर्वकी अवमानना या खर्वता साधन नहीं कीहै। वह अमरसिंहके वीरगर्वको समझगएथे—उसही वीरवर्गसे बलवान होकर कहाथा. "स्वदेश छूटेगा, अथवा बन्दित्व स्वीकार करना पडेगा" यह जानकर विवश हो राणाजीने अंतमें मस्तक झुकायाथा। मर्माहत निरुपाय आश्रयहीन राज-पूतकेशरीकी कठोर हृदयपीडासे जहांगीरके हृदयमें भी चोट लगी थी. इस ही कारण वह इसबातको समझगयेथे, और राणाजीकी विनयके अनुसार सब बातोंका प्रबन्ध कियाथा। जिससमय राणा अमरसिंह सबभांतिसे हताश होगएथे, उसही समय उन्होंने बादशाहको मस्तक नवाया था: उसही समय उन्होंने और हिन्दू राजाओंकी समान बादशाहके दरबारमें रहकर उसकी सेवा करना स्वीकार किया था; यद्यपि सेवाकरना स्वीकार किया. परन्तु यह समझकर कि स्वयं हमसे यह कठोर अपमान न सहाजायगा।—अपने पुत्र कर्णको भेजकर क्षमा प्रार्थना की थी। बादशाह समझगया कि बडे कष्टसे वीरवर अमरसिंहने इन बातोंको कहाहै, हृदयको छिन्नभिन्न करके यह सब एक शब्द उनके मुहसे निकले हैं। जो गिहलोट वीरगण सहस्र वर्षसे स्वाधीनताका सुख भोगते चलेआते है, पराधीनताका नाम भी जिन्होंने कभी नहीं सुना. क्या यह साधारण पश्चात्तापकी बात है कि उनके ही वंशमें जन्म लेकर आज भाग्यहीन अमरसिंहको ब्रह्माकी दारुण करतूतके कारण उस स्वर्गीय स्वाधीन-तासे अलग होना पडा! बादशाह जहांगीरने अपने हाथसे उनके गलेमें पराधीनताकी जंजीर पहिराई थी. अपने हाथसे गौरवमय आसनसे उतारकर उनको पातालो कुएमें डालदिया था। मंत्रसे बंधा हुआ अजगर जिस प्रकार विवश होजाता है, वैसेही अमरसिंहने भी इस अपमानको सहा, जिसको राजपूतवीरगण किसी प्रकारसे नहीं सहसकतेहैं। अमरसिंहको यही अपमान सहना पडाथा। नहीं तो उनके प्रत्येक अंगमें जो भयंकर आग जलती थी. उनकी प्रत्येक शिरामें जो तीव्र धार [illegible] था. उसकी पीडा किसी प्रकारसे कोई इतर नहीं सहसकता। यदि कोई इतर होता. तो निश्चय ही उसकी छाती फटजाती. इन वचनोंके उच्चारण कर-नेसे यदि [illegible] रसना जलजाती भान होजाती। [illegible] और [illegible] आज [illegible] ही [illegible] किया होगया! अमरसिंहके हृदयमें [illegible]

संग्राममें भेजसकेथे। परन्तु घोर गृहविवाद और कालके कठोर प्रभावसे शक्तावत गोत्रके अधिकांश वीरलोग इस संसारसे विदाहोगए। जो शक्तावतसभा एक समय मेवाडकी श्रेष्ठ और विशाल समिति समझी जाती थी आज वह अत्यन्त दीन और हीन होगईहै। जो लोग संग्रामभूमिको लीलाक्षेत्र और अस्त्रशस्त्रादिको खेलनेकी गेंद समझतेथे, आज उनके वर्त्तमान वंशधरगण उन अस्त्रशस्त्रोंको स्पर्शकरने और रणकी सीमापर जानेमें भी भयसे कांपा करतेहैं।

प्रयोजन समझकर दूर पहुँचगए थे, अब फिर अपने मुख्य विषयका विचार करते हैं। राणा अमरसिंहसे वरावर तीन चार बार पराजित होकर बादशाह जहांगीर अत्यन्त भीतहुआ, परन्तु वह उत्साह हीन न होकर वरावर यही सोचतारहा कि किस प्रकार राजपूतोंका गर्व तोडाजाय। शीघ्रही एक प्रचंड मुगलसेना तइयार हो मेवाडके भीतरसे होती हुई राणापर हमलाकरनेको चली। उस विशाल सेनादलका पर्यवेक्षणभार अपने आप ग्रहण करके बादशाहने अपने पुत्र परवेज़को सेनापति बनाया। सेना अजमेरमें इकट्ठी हुई। उसकाल जहांगीरने अपने प्यारे पुत्र परवेज़को पास बुलाकर कहा "बेटा! इसबार तुम्हारी बहादुरीका इम्तहान है, मालूम होगा कि तुम उस बडेगुरूर राजपूतका गरूर तोड सकते हो या नहीं। लेकिन मेरी इतनी बात याद रखना कि राणा अमर या उसका बड़ा लडका कर्ण अगर जंगको किनारे रखकर तुमसे मुलाकातके लिये आवे तब तुम खातिरदारीके साथ उनसे पेश आना। यादरक्खो, कि उस अदब कायदे और बर्त्तावमें—जो कि बादशाह, बादशाहोंसे करते आयेहैं, किसी तरहका फरक नमूदार न हो, और यह भी यादरखना कि तुम्हारी मतवाली फौज मारवाडकी सल्तनतका कोई नुकसान न करे।"*

सम्राटकी आशा आकाश कुसुमकी समान अलीक होकर फलवती न हुई। अपनी सेनाकी अधिकता और दृढता देखकर उन्होने समझा था कि अबके मेवाडका राजा अमरसिंह मजबूर होकर हमसे सुलह करलेगा। इस प्रकारकी बेजड चिन्ताको हृदयमें स्थान देकर बादशाह निश्चय ही भ्रान्त हुएथे। सत्यकहना तो एक ओर रहा, हमको तो इसमें भी सन्देहहै कि अमरसिंहके हृदयमें कभी ऐसी चिन्ता उदय हुई हो। देशवैरी यवनको विशाल सेनाके साथ मेवाडके ऊपर आता हुआ सुनकर अमरसिंह प्रचंड उत्साहसे उत्साहित हो उठे और अपने सामन्त सरदारोंको इकट्ठा करके मुगलवाहिनीके सन्मुख चले। आरावलीका ज्ञानन्दन एक प्रसिद्ध गिरिमार्ग

* सन् १६११ ई० में यह समर हुआथा।

सुलतान खुर्रमने अपने सदाचरण और सद्व्यवहारसे उस कार्यको सिद्ध कर दिखाया। वह जानता था कि भारतवर्ष पशुबल या खड्गकी सहायतासे झुकनेवाला नहीं है। इस गूढ तत्त्वको जाननेके कारणसे ही उस वीर पुत्रने सरलतासे राजपूत राजाओंको अपने वशमें कर लिया था। मुगलोंके सिवाय और किस विदेशी राजाने इस तत्त्वको जानाहै कि भारत पशुबल या असिबलसे शासित नहीं होसकता? और कौनसी जाति है कि जिसने हिन्दुओंपर जय पाकर अपनेको कृतार्थ समझा हो? अतीतकी साक्षी देनेवाला इतिहास आज मुगलोंकी उदारताको संसारके सामने अगणित मुखसे वर्णन कररहा है। सूक्ष्मदर्शी निरपेक्ष जहांगीरकी पवित्र लेखनी आज सभ्यजगमें एक नवीन सत्यकी जयजयकार पुकार कर ढंढोरा पीट रहीहैः इस घोषणापत्रको पढकर संसार जान ले, संसारके समस्त राजालोग इस बातका ध्यान रक्खें कि-"भारत खड्गकी सहायतासे अथवा पाशव बलसे शासित नहीं होगा।"

बादशाह जहांगीरने मेवाडके राणाको पराजित करके अपनेको गौरवान्वित समझा। इसही कारणसे उन राणाके बडे पुत्र कर्णको अपनी दाहिनी ओर अर्थात् भारतवर्षीय समस्त राजाओंके ऊपर-आसन दियाथा। इस प्रकारसे राजपूत राणाके साथ बादशाहके जिस किसी बर्तावका वृत्तान्त पाठ किया जाताहै, उससे ही उनका उदारपन, वीरोचित गौरव और शिष्टाचारका उत्तम परिचय पाया जाता है। शिशोदियाकुलकी मानमर्यादा और शिशोदियाकुलके राणाको सदा सुखमें रखनेके लिये मानो जहांगीरशाहको सदा ही चिन्ता लगीरहती थी। परन्तु एक स्थानमें बादशाहने भ्रमसा पाया है उन्होंने संयोगवशसे वशमें आये भुजंगशिशु कर्णके हृदयका भाव न जान करके भ्रान्त चित्तसे कहाहै कि "कर्ण शरमीला है।" परन्तु विचारकर देखनेसे कर्णको दा"स्याज" एक अधिक ऊंचे गौरवमय अभिधानसे नाम पानेके योग्य है। राजकुमार कर्णने प्रसिद्ध और पवित्र गिहलोट वंशमें जन्म लियाहै, उनके पिता महा बलवान राजराजाओंके शिरो-भूषण हैं। उनकी जन्मभूमि आर्य गौरव गरिमा और स्वाधीनताकी लीला-भूमि है। इस वीरोंसे [illegible] पवित्र मेवाडभूमिमें जन्म लेकर, इस योग्य पिता- [illegible] पवित्र गोदमें जन्म लेकर, उस जगत्पूज्य शिशोदीयवंशमें उत्पन्न होकर [illegible] हुए। उनके पूर्वपुरुषोंने प्राण जाने पर भी म्लेच्छोंके सिंहासनके [illegible] सामने भी शिर न नवने दिया। जिनके साथ सम्बन्ध करनेसे [illegible] [illegible] जानेके लिये [illegible] लोगोंको उनके [illegible] छोड दिया,

बढ़गया था। यही कारण था जो इसवार बादशाहने अपने पोते यवनवीर महावतखाँको भी भेजा। महावतखॉ एक प्रचंड वीर था, इसकी सहायतासे बादशाहने अनेकवार जय पाई थी। अबकी बार इसको राणाजीके ऊपर भेजकर बादशाहके हृदयमें "सब्जबाग" की हरियाली छाई हुई थी; परन्तु उसकी कोई आशा फलवती न हुई। राजपूतोंके प्रचंड बाहुबलके सामने बलदर्पित मुगलसेनापति पराजितहुआ। परवेजका बेटा भी अपनी सेनाके साथ रणभूमिमें मारागया। परन्तु तेजस्वी बादशाहका उत्साह रत्तीभर भी कम न हुआ। उसकी प्रचंड सेना किंचित भी नहीं घटी। एक दल माराजाता तो उसके बदले फिर दो तीन दल इकट्ठे होकर राणाजीपर दौडने लगते।राणाजीने उन समस्त चढाइयोंको व्यर्थ करदिया। किसीसे कुछ न हुआ। जिन रणदक्ष राजपूतवीरोंकी सहायतासे राणा अमरसिंहने बादशाहकी अगणित सेनाको वारंवार संहार कियाथा, इस समय एक २ करके वह वीरगण संग्राम भूमिमें शयन करनेलगे। राणाजीकी सेना क्रमानुसार थोडी होतीगई। अब न वीर रहे,न धीर रहे, न जुझार दिखाई देतेहैं। जो थोडेसे सैनिक बचे बचाये हैं, वह समरविद्यामें भलीभांतिसे चतुर नहीं। तथापि क्रमानुसार उनको ही शिक्षित करके राणा अमरसिंह जहांगीरकी विशाल सेनाका सामना करनेको चले। प्रचंड उत्साहसे उत्साहित और राणाजीके वीर उदाहरणसे अनुप्राणित होकर उन थोडेसे राजपूत वीरोंने यवनोंके अनन्त सेनासागरमें डुबकी लगाई। उनकी विश्वदाही तेजाग्निके [illegible] प्रभावसे वह सेनासागर सूखगया—परन्तु उन राजपूतवीरोंमें भी दो चार ही ऐसे थे जो अक्षत देहसे अपने देशको लौटेथे। वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंहके परलोकवासी होनेपर राणा अमरसिंहजीने इस प्रकार सत्रह वार संग्राममें यवनोंका संहार किया था। सत्रह वार ही विजयलक्ष्मी उनको प्राप्तहुईथी। परन्तु अबकी बार चित्तौर पर भयंकर संकट है। अठारहवीं वार बादशाहने क्रोधित होकर अपने चतुर पुत्र खुर्रमको राणाजीके विरुद्ध प्रेरण किया। यह खुर्रम ही फिर शाहजहाँ नाम धारण करके दिल्लीके तख्तपर बैठा था। थोडी उमरमें ही अस्त्रविद्याको इसने भलीभांतिसे सीखलिया। बादशाहने निर्भीक इस वीरको सेनापति बनाकर भेजा. सिसोदियाकुलके भाग्याकाशमें इन्हीं दिन घनघोर बादल छागये। समग्र मेवाडभूमिमें मानो एक भयंकर तूफान आगया। इस भयंकर संकटमें

पीड़नसे कभी २ वह उन्मत्तसे होकर खुर्रमकी महानता व उदारता और जहां-गीरके उस सन्मान और व्यवहारको हज़ारोंबार धिक्कार दिया करते थे। राजपूतबालाके गर्भसे उत्पन्न होनेके कारणसे सुलतान खुर्रम * राजपूत वीरोंका अत्यन्त आदर सत्कार करता था। उसकी अकपट भक्ति आदर और राजपूतानुरागसे ही मोहित हो तेजस्वी अमरसिंहने जहांगीरकी वश्यता स्वीकार की और उसके साथ मित्रता करनेके लिये अपनी सम्मति दी थी। नहीं तो सम्पूर्ण जीवनभर समर सागरमें तैरते रहनेपर भी और कठोर अत्याचारसे पिडित होनेपर भी वह इस प्रस्तावको कभी स्वीकार नहीं करते। खुर्रमका स्वभाव अत्यन्त सरल और उदार था तथा उसके वाक्य भी वैसेही मनोहर और सरल थे। खुर्रमकी वाक्यावली मानो अमरसिंहके कानोंमें अमृतकी वर्षा करती थी। इस शाहज़ादेने राणाजीके साथ सन्धिकरनेकी वासना करके उस सन्धिके सूत्रमें उनकी मित्रताकी प्रार्थना की थी, और राणाजीसे कहला भेजा था कि "अगर आप शहरसे एक बार बाहर आकर बादशाहके फरमानको, जिसपर उनका पंजा लगाहुआ है, लेवेंगे, तो मैं उसही वक्त कुल मुसलमानोंको मेवाड़से दूसरे मुकद्दमामपर भेजदूंगा-फिर आप मुसलमानोंके नामकी बू. तक भी मेवाड़में नहीं पावेंगे।" इस वाक्यके श्रवण करनेसे तेजस्वी राणाका उदार हृदय प्रचंड तेजसे उफन उठा। उन्होंने शाहज़ादेका कहना स्वीकार न किया। वीरकेशरी प्रतापसिंहके पुत्र होकर—क्या वह एकमनुष्यकी—विशेषकरके स्वाधीनताके हरण करनेवाले मुग-लकी अधीनताको स्वीकार करेंगे? देहमें प्राण रहतेहुए वह कभी इस अपमान सूचक वाक्यको उच्चारण नहीं करसकेंगे। यद्यपि उन्होंने सुलतान खुर्रमसे मित्रकी समान सम्मान किया तो, परन्तु उसके प्रस्तावको नहीं माना, वरन दर्पसहित उसके करनेको अस्वीकारकिया।

थोडेही समयमें आवश्यकीय अस्त्रशस्त्रोंको तइयार करालिया। तथा अपने पुत्र वर्ग और प्रस्तुत सेनाको साथ ले मुगलसेनाके आगे बढे। शीघ्रही दोनों दलोंमें घोर संग्राम होने लगा। रणविद्या हीन अशिक्षित राजपूत वीरगण प्राणपणसे मुगल बादशाहके अगणित रणपंडित वीरोंके साथ संग्राम करने लगे। जिन्होंने इस संग्रामसे पहिले किसी समय भी अस्त्रधारण नहीं किया था, किसी समय युद्धमें गमन नहीं किया था, आज वही राजपूतगण इस प्रकारसे संग्राम करनेलगे, कि जिस प्रकार कोई महारणपंडित वीर संग्राम करता हो। परन्तु इससे क्या होताहै? समुद्रकी समान उफनतीहुई मुगलसेनाकी गतिको मुट्ठीभर राजपूतगण कैसे रोकसकतेहैं? अतएव जो कुछ हुआ, उसको लिखतेहुए लेखनी भी थरथर कांपतीहै-हृदय शोकसे उमडा-आताहै। वीरपूज्य वाप्पारावलकी जो प्रचंड वैजयन्ती आठसौ वर्षसे भी अधिक विजयी गिह्लौटराजाओंके गर्वोन्नत मस्तकपर फहरायाकरतीथी, आज वही विजयपताका सुलतान खुर्रमके सन्मुख झुकगई। उस दुर्दैवका वृत्तान्त-शिशोदीयकुलकी वह शोचनीय कथा-हमसे नहीं लिखीजाती। जहाँगीरने स्वयं अपने दैनिकविवरणमें इसका जो कुछ वृत्तान्त लिखाहै, उसका ही अनुवाद नीचे लिखा-जाताहै।

"अपने राज्यके आठवें वर्ष सन हिजिरी १०२२* में मैंने सोचा कि अजमेरसें जातेही अपने खुशकिसमत पुत्र खुर्रमको अपनेसे पहिले भेजदूंगा। वाद इसके जब सफरका पूरा इन्तजाम होगया, तब उसको तरह २-के कीमती खिलत, एक हाथी, एक घोडा, एक तलवार, एक ढाल और एक छूरी ईनाममें दी। जो फौज उसकी मातहतीमें थी उसको और उसके सिवाय १२०००हजार सवार ज़यादा भेजदिये, और अजीमखाँको उसका सिपहसालार मुकर्रर करके उसके कुल मातहत कारिन्दोंको उनके लायक ईनाम दिया।"

"वाद इसके मेरी सलतनतके नवें वरसके पहिले दिन ही, यानी हिज० सन १०२३ (सन् १६१४ ई०) को मैं अपने तख्तपर वैठाहुआ था कि लडकेने आलमगुमान हाथीके साथ अठारह हाथी और मामूली आदमी व मस्तूरातें जिनको वरवक्त जंगके पकडलिया था, मेरी नज़रमें भेजे। दूसरे उस आलमगुमान हाथीपर वैठकर मैं शहरमें घूमनेको निकला, और अशरफियें लुटाईं।"

* सन् १६१३ ई०

द्वादशवां अध्याय ।



कर्णके द्वारा उदयपुरका दृढ़होना और उसकी शोभाका बढ़ायाजाना.–सम्राटकी सभामें जानेसे राणाओंका छुटकारा पाना. सम्राटकी सहायताके लिये राणाकी दी हुई सेनाके ऊपर भीमका सरदार होना,–परवेजके विरुद्ध सुलतान खुर्रमके साथ भीमका षड्यंत्र; राजद्रोहियोंके ऊपर जहांगीरका आक्रमण, भीमका माराजाना: उदयपुरमें खुर्रमका भागजाना: उसको मानसन्मानके साथ राणाका ग्रहण करना. राणा कर्णका परलोकजाना राणा जगतसिंहका राजसिंहासन पर बैठना. जहांगीरकी मृत्यु. और शाहजहां नामको धारणकर खुर्रमका सिंहासनपर बैठना. मेवाड़में गंभीरशान्तिका होजाना. पेशोलाके वक्षविहारी द्वीपोंमें राणाका महल बनवाना. चित्तौरका पुनर्वार संस्कार:–जगतसिंहका मृतक होजाना, राणा राजसिंहका राज्याभिषेक. शाहजहांको पदसे उतारकर औरङ्गजेबका सिंहासनपर बैठना. जहांगीर और शाहजहांका हिन्दुओंकी प्रेमिकताके विषयमें यथार्थ कारण निरूपण. औरंगजेबके चरित्रका विवरण, राजपूतोंके ऊपर उसका " जिजिया " वा मुंडकर स्थापन,रूपनगरकी राजकुमारीके साथ औरङ्गजेबके विवाहका सम्बन्ध. उसको हरण करके राणा राजसिंहका अपने नगरमें आना,–सम्राटके विरुद्ध युद्धका उद्योग. औरङ्गजेबका युद्धयात्रा करना. गिरवाकी उत्पत्ति, राजकुमार अकबरकी पराजय.–उसका गिरिसंकटमें फँसना: राणाके ज्येष्ठ पुत्रसे अकबरका संकटोद्धार:–दिलेरखांकी पराजय. राणा और उनकी सहायता करनेवाले राठौरगणोंसे औरङ्गजेबका अपमान. औरङ्गजेबका युद्धभूमिसे भागजाना.–राजकुमार भीमका भयंकर आक्रमण.–राणाके मंत्रियोंसे मालवेका लूटा जाना. एकत्रित होकर राजपूतोंके दलका चित्तौरसे अजीमको परास्त करके उसको भगाना; मुगलोंके हाथसे मेवाड़का उद्धार.–मारवाड़में भयंकर युद्ध. [illegible] शिशो-दिया और राठौर जातिके बलसे सुलतान अकबरकी पराजय.–राजपूतोंका षड्-यंत्र –औरङ्गजेबको राजपदसे उतारकर अकबरको सिंहासनपर बैठालनेकी कल्पना करना. कल्पनाका निष्फल होना.–राणाके साथमें [illegible] संधिका विचार –संधिका होजाना. भयंकर [illegible] राणाका मृतक होना [illegible] चरित्रकी और औरङ्गजेबके चरित्रकी समालोचना –[illegible] भयंकर दुर्भिक्ष और महामारी,–



मेवाड़ राज्यके प्राचीन नृपति महाराज अमरसिंहके ज्येष्ठपुत्र कर्ण-सिंहने [illegible] संवत् १६७७ (अर्थात सन १६२१ ई.) में [illegible] [illegible]

पर अपना पंजा* भी लगादिया। और लडकेको यह भी लिखभेजा कि हरेक तरहसे उस मुअज्जिज़ राणाकी मनशाअ और ख्वाहिशके मुआफिक काररवाई करनेमें कसर न कीजाय।"

"मेरे लडकेने वह फरमान और एक चिट्ठी सूपकर्ण व हरिदासके ज़रियेसे वहां भेजी, व इन दोनों सरदारोंके साथ शुक्रउल्ला व सुन्दरदासको भी रवाना किया। उसने रानासे कहलाभेजा कि वह हमारे सादेपन और नेकीपर यकीन करके बादशाहके इस दस्तखती परवानेको कबूलकरें। बाद इसके २६ तारीखको राना साहबका शाहज़ादेके पास आना क़रारपाया।"

"शिकार खेलनेके लिये जब मैं अजमेर गया, उस वक्त शाहज़ादे खुर्रमका महम्मदबेगनामी नौकर मेरे पास आया उसने खुर्रमकी दस्तख़ती एक चिट्ठी मुझको देकर कहा कि रानाने शाहजादे साहबसे मुलाकात की थी।"

"इस खबरको सुनते ही मैंने महम्मदबेगको एक हाथी, एक घोडा और एक छूरी ईनाम दी, व उसको "जुलफिकारखॉं" के नामसे पुकारा। (यानी उसको जुलफिकारखॉंकी पदवी दी)"

"सुलतान खुर्रमके साथ राना अमरसिंहकी और राजकुमार करनके साथ सुलतान खुर्रमकी मुलाकात और बेगम नूरजहांका करनको इज्जतके साथ आंहदादेनेका बयान।"

"राना अमरसिंहने ता० २६ इकशम्बाके रोज़ बादशाहतके दूसरे मातहत राजाओंकी तरह इज्ज़त और लियाकतके साथ शाहज़ादेसे मुलाकात की। मुलाकातके वक्त रानासाहबने शाहज़ादे खुर्रमको एक बेशकीमत पद्मराग, बहुतसे हथियार जो कि तिलाई म्यानोंमे मढे हुए थे, बडी कीमतके साथ हाथी और नौ घोडे खिराज़में दिये। शाहज़ादेने भी उनको ख्वीमिलत और

---

* हृदयमें विश्वास उत्पन्नकरनेके लिये सरल आदरसे हाथमें हाथ देना [illegible] पत्थर अपने हाथका पंजा लगाना अति प्राचीनकालसे [illegible] । [illegible] लगियोंने हाथमें हाथ देनेकी ही रीति है। [illegible] पत्थर, सीसा [illegible] । [illegible] रानाअमरसिंहके साथ [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

अदृष्ट चक्रके बराबर घूमनेसे उन वीरोंके वंशकी अवस्था जैसी होगईथी उसका वर्णन हम पहले ही भलीप्रकारसे कर आयेंहै, वह अवस्था प्रकाशित होकर चित्रकी समान आजतक भी हमारे नेत्रोंके सामने ज्योंकी त्यों दिखाई देरहीहै। सन ईस्वीकी दूसरी शताब्दीके बीचमें सूर्यवंशके महाराज कनकसेनने लोह कोटको छोडकर सौराष्ट्रके किनारेपर अपनी विजयकी पताकाको स्थापन किया, वहां उनके वंशवालोंका शताब्दियोंतक राज्य करना, धीरे २ शिलादित्यका आविर्भाव,—असभ्य पारदलोगोंका आक्रमण, उस आक्रमणके वेगको न रोकसकनेसे महाराज शिलादित्यका अपने कुटुम्बियोंके साथ रणभूमिमें माराजाना; उनके शोभायमान और नन्दनकाननकी समान सौराष्ट्र राज्यका बर्बरोंके द्वारा उजडहोना उस भयंकर समयमें सूर्यवंशके वृक्षकी प्राणप्रतिष्ठा करनेके लिये केवल रानी पुष्पवतीका जीवित रहना; धीरे २ ग्रहादित्यका उत्पन्न होना,—फिर "ग्रहिलोट" (गिह्लोट) नामकी उत्पत्ति ईडरमें राज्यकी प्राप्ति. भीलोंके अत्याचारसे ईडरका त्याग. वीरकेसरी बाप्पारावलका प्रादुर्भाव; चित्तौरका अधिकार; उदयपुरकी प्रतिष्ठा; शिशोदियाकुलका गौरवोच्छास. अंतमें हीन दीन मलीन और शोचनीय अवस्थासे उस गौरवका अंतहोना, बाप्पाकी विजय वैजयन्तीका मुसलमानोंके सामने नीचेको झुकना. घटनाकी विचित्रतासे यह सम्पूर्ण चरित्र हमारे नेत्रोंके सामने प्रकाशित होरहेहैं।हमने उन चरित्रके वर्णन करनेमें अपनी सामर्थ्यके अनुसार कुछ भी त्रुटि नहीं की, परन्तु आज मेवाडमें एक नवीन युगका प्रारंभ होचलाहै. श्वेतद्वीपको त्यागकर सात समुद्रोंके पार हो किसने ही अंग्रेज़ लोग आज उस दीन हीन मलीन अवस्थावाले शिशोदीय राजाओंका उद्धार करनेके लिये इस भारतभूमिमें आयेहैं, उनके आनेसे इस समस्त भारतने किस प्रकारकी एक नवीन मूर्ति धारण कीहै. भारतवासियोंके जीवनका चोत किसरीतिसे एक नवीन ओरको बह चलाहै, अब इस समय और इसीका विचार कियाजायगा।

महाराणा कर्णके चरित्र समालोचनासे वीरोंके शौर्यवीर्य, सहनशीलता, धीरता इत्यादि जो समस्त सुन्दर गुण राजपूतोंके चरित्रोंमें एक आदर्श [illegible] समझे जातेहैं; राणा कर्णमें वह सभी गुण विद्यमान थे. इनके अतिरिक्त उनका साहस और कर्तव्य ज्ञान असाधारण ही [illegible] था. यद्यपि वृद्ध समयमें इन [illegible] [illegible] मुसलमानोंसे इतना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पर अपना पंजा* भी लगादिया। और लडकेको यह भी लिखभेजा कि हरेक तरहसे उस मुअज्जिज़ राणाकी मनशाअ और ख्वाहिशके मुआफिक काररवाई करनेमें कसुर न कीजाय।"

"मेरे लडकेने वह फरमान और एक चिट्ठी सूपकर्ण व हरिदासके ज़रियेसे वहां भेजी, व इन दोनों सरदारोंके साथ शुक्रउल्ला व सुन्दरदासको भी रवाना किया। उसने रानासे कहलाभेजा कि वह हमारे सादेपन और नेकीपर यकीन करके बादशाहके इस दस्तखती परवानेको कबूलकरें। बाद इसके २६ तारीखको राना साहबका शाहज़ादेके पास आना क़रारपाया।"

"शिकार खेलनेके लिये जब मैं अजमेर गया, उस वक्त शाहज़ादे खुर्रमका महम्मदबेगनामी नौकर मेरे पास आया उसने खुर्रमकी दस्तख़ती एक चिट्ठी मुझको देकर कहा कि रानाने शाहजादे साहबसे मुलाकात की थी।"

"इस खबरको सुनते ही मैंने महम्मदबेगको एक हाथी, एक घोडा और एक छूरी ईनाम दी, व उसको "जुलफिकारखॉं" के नामसे पुकारा। (यानी उसको जुलफिकारखॉंकी पदवी दी)"

"सुलतान खुर्रमके साथ राना अमरसिंहकी और राजकुमार करनके साथ सुलतान खुर्रमकी मुलाकात और बेगम नूरजहांका करनको इज्जतके साथ आहदादेनेका बयान।"

"राना अमरसिंहने ता० २६ इकशम्बाके रोज़ बादशाहतके दूसरे मानदृत राजाओंकी तरह इज्ज़त और लियाकतके साथ शाहजादेसे मुलाकात की। मुलाकातके वक्त रानासाहबने शाहज़ादे खुर्रमको एक बेशकीमत पद्मराग, बहुतसे हथियार जो कि तिलाई म्यानोंमे मढे हुए थे, बडी कीमतके साथ हाथी और नौ घोडे खिराज़में दिये। शाहज़ादेने भी उनको ह्लीमियत और

---

* हृदयमें विश्वास उत्पन्नकरनेके लिये तरह आदरसे हाथमें हाथ देना [illegible] पत्रपर अपने हाथका पंजा लगाना अति प्राचीनकालसे [illegible]। [illegible] लिनियोंमे हाथमें हाथ देनेकी ही रीति है। [illegible] पत्थर, स्पीहृतिनामह, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

चित्तसे अपने मनको लगातेथे । अपने प्रयोजनको जानकर महाराणा कर्णने उदयपुरके चारों ओर दीवार बनाई. और परकोटके चारों ओर खाइयें खुदवादीं. फिर पेशोला सरोवरके जलको रोकनेके लिये जो बन्ध बंधाथा. उसको इस समय और भी अधिक लम्बा करदिया, आजतक शिशोदियाकुलकी रानियें जिस अन्तःपुरकी वाटिकामें स्वतन्त्रभावसे निवास करतीहैं: उसको भी राणा कर्णने ही बनवायाथा ।

गिहलोट वंशवाले राजालोग डेढहजारवर्षतक सम्पूर्ण भारतभूमिके राजाओंके महाराजाधिराज हो ऊंचे गौरवका अधिकार करते आयेहैं: यद्यपि आज महाराणा कर्ण उस ऊंचे गौरवसे नीचे गिरेहैं. तथापि इस ऊंचे आसनसे रहित नहीं हुएहैं. बादशाहने इस समय राणाको अपने सिंहासनके दाहिनी ओर विराजमानकर उनके सन्मानकी रक्षा की थी । यद्यपि बादशाहने उनकी स्वाधीनताको हरण करलियाथा. परन्तु उनके साथमें सामन्तराजाकी समान व्यवहार नहीं करना था पीछे मेवाडके अधिकारी लोग किसी प्रकारका अपमान समझें, यह विचार कर बादशाहने अमरसिंहके साथ संधिकरनेका विचार करलिया था: उसमें नियम था कि शिशोदिया वंशके राजकुमारगण जितने दिनोंतक मेवाड़राजके सिंहासनपर अभिषेकित न होंगे, उतने दिनोंतक उनको बादशाहकी सभामें उपस्थित होना पड़ेगा. परन्तु जिस दिन उनको " राणा " कहकर पुकारा जायगा उसी दिनसे वह इस हाजरीसे छुटकारा पावेंगे. हर्षका विषय है कि उनका यह नियम यथारीतिसे पालन होता गया: कारण कि महाराणा कर्ण जबतक अपने पिताके सिंहासनपर अभिषेकित न हुए थे. तभीतक उनको बादशाहकी सभामें उपस्थित होना पड़ता था परन्तु जिस दिन और जिस क्षणमें वह राणा कहे जाकर जगतमें विख्यात हुए, उसी दिन और उसी क्षणसे उनको बादशाहकी सभामें जानेसे छुटकारा मिला. फिर राणाओंके युवराज ही कर्णके स्थान पर अभिषिक्त हुए. इस रीतिसे शिशोदिया वंशवाले राजालोग अपने इन पुरुषोंके ऊंचे गौरवसे नीचेको उतरकर भी ऊंचे आसनसे [illegible] न हुए, बादशाहकी सभामें आजतकभी सबसे [illegible] शिशोदियाओंके [illegible] स्थानमें शिशोदियावंशके राजा इसी रीतिसे [illegible] सन्मानके साथ शिशोदिया [illegible] [illegible] सन्मान [illegible] [illegible] [illegible] सन्मान और [illegible]

"इसही दिन मैंने भी उसको मोतियोंका एक बेवहा हार और दूसरे दिन एक हाथी बतौर ईनामके दिया। मेरी ज़ियादा ख्वाहिश थी कि शाहज़ादेको नफीस और उमदा २ सामान दियाजावै। जिसवक्त मुझको कोई खूबसूरत और उमदा तोअफः मिलता, मैं फौरन राजकुमारको देदेता। एकबार मैंने उसको तीन बाज और तीन तुरा जानवर दिये। वह जानवर यहांतक पोस मानगयेथे कि हाथ बढ़ाते ही हाथपर आकर बैठजातेथे। एक सजोवा और दो कीमती अँगूठियां भी उसको दीगई और इसही "महीनेकी पिछली तारीखको मैंने गलीचे, खूबसूरत ज़रीके कामकी आराम कुरसियें, अतरकी शीशियें, तिलाई बरतन और दो गुजराती बैल दिये।"

"दशवाँ साल। इसवक्त करनको उसकी * जागीरमें जानेके लिये छुट्टी दी। रुखसतके वक्त एक हाथी, एक घोडा और एक मोतियोंका हार जिसकी कीमत ५००००) रुपया थी-दिया। उस वार कर्ण जितने दिनतक मेरे दरबारमें रहा, उतने अरसेमें उसको जितना सामान मेरे यहांसे मिला, उसकी कीमत दशलाखसे ज़ियादा होगी, इसमें उस ईनाम और सामानकी कीमत नहीं लगाई गई है जो शाहज़ादे खुर्रमने राजकुमारको दियाथा। मैंने मुबारकखाँको करणके साथ रवाना किया और उसकी मारफत रानासाहबको एक हाथी, व घोडे वगैरह और कुछ पोशीदा खबरें भी भेजीं।"

"हिजरीसन् १०२४ सफरमहीनेकी आठवीं तारीखको शाहज़ादे कर्णके लिये पांचहजारी मनसबदारी दीगई × इसवक्त मैंने उसको एक कंठा भी ईनाममें दियाथा कि जिसमें पन्ने लगे हुएथे।"

"बाद इसके मुहर्रमकी २४तारीखको (सन् १६१९ई०) कुमार कर्णका लड़का जगतसिंह-जिसकी उम्र बारहवर्षकी थी-दरबारमें आया। उसने अदबके साथ

---

* शोक है! कि स्वाधीनताकी खानि पवित्र चित्तौरपुरीके स्वामी [illegible] नीच और कलंकित नामसे पुकारेगये! हा प्रताप! हा [illegible] वन्! तुम तो आज इस यन्त्रणामय कष्टसे छुटकारा पाकर [illegible] हो, परन्तु तुम्हारी "स्वर्गादपि गरीयसी" पवित्र [illegible] पुकारा!

× [illegible]

[illegible] भी [illegible] मिला।

महाराणा कर्ण स्वभावसे ही तेजस्वी और निडर थे; तुच्छ राज्य तथा राजाकी उपाधिके लिये उन्होंने अपने गौरव और पुरुषत्वको नहीं बेचदिया था. बादशाह जहांगीरने राणाको अपने अधिकारमें करनेका जो यत्न कियाथा, वह सिद्ध न हुआ. सैकडों अनुग्रह दिखाकर भी वह तेजस्वी भीमसिंहको अपने वशमें न करसका, विशेष करके भीमके ऊपर सुलतान खुर्रमका अधिक स्नेह देखकर बादशाह अपने मनमें भांति २ के संदेह करनेलगा, पीछेसे राज्यमें किसी प्रकारका उपद्रव न होजाय इस कारण महा बलवान भीमको खुर्रमके पाससे अलग करनेका विचार कर उसको गुजरातका शासनकर्ता नियुक्तकिया, परन्तु भीमने इस पदवीकी कुछ परवाह न करके सुलतानके साथमें रहनेका दृढ संकल्प किया. बादशाहने जो संदेह कियाथा, वह वास्तवमें ठीकही था, कारण कि खुर्रम अपने बडे भाई परवेज़के विरुद्ध पिताके सिंहासनको अपने अधिकारमें करनेकी चेष्टा करनेलगा; परन्तु उसकी यह अभिलाषा फलीभूत होनेके पहिले ही राज्यके बीचमें एक महाभयंकर उपद्रव उत्पन्न हुआ, उस प्रज्वलितहुई अग्निकी शिखाके सामने यह अभागा परवेज़ पतंगकी समान भस्म होगया।

तेजस्वी भीमने जो बादशाहकी आज्ञाको बिना शंकाके न माना था, इसका एक गूढ कारण था। वह परवेज़से अंतःकरणसे घृणा करता था, परवेज़ शिशोदिया वंशका परम शत्रु था और राजपूतोंका सत्यानाश करनेमें सर्वदा ही तइयार रहता था, उसने बीतेहुए युद्धमें मेवाडपर चढाई करके उस देशका घोर अनिष्ट कियाथा. खुर्रमके जीतेजीरहते परवेज़का गद्दीपर बैठना भीमसे कभी नहीं देखा-जासकता. इस कारण जिस प्रकार परवेज़के हाथमें भारतवर्षका शासनभार न जाय. भीम उसी कार्यके करनेको तइयारहुए; तथा सुलतान खुर्रमके साथमें इसी विषयकी सलाह करनेलगे, परामर्शमें निश्चय हुआ कि जो खुर्रमको बादशाह होनेकी इच्छा है, तो बिना विलम्ब कियेहुए प्रकाशित शत्रुता करके परवेज़का संहारकरना योग्य है; सुलतान खुर्रमसे और विलम्ब न कियागया उसने अपने पिताके एक अनुचरको साथ ले परवेज़पर हमला किया; उसके आक्रमणसे अभागा परवेज़ मारागया. तब सुलतान खुर्रमने दूसरा उपाय न देखकर पिताके विरुद्ध प्रकट विद्रोह किया. इसकी [illegible] के लिये [illegible]. इस [illegible] [illegible] महाराणाके राजा [illegible] और [illegible]. [illegible]

"अपनी सलतनतके तेरहवें वर्षमें कि जिसवक्त मेरा दरबार सिंदलामें लगा-हुआ था, वहींपर राजकुमार कर्णने आकर मुझसे मुलाकात की। मुझको मुल्क दक्खनमें जो फतह और कामयाबी हासिलहुईथी, उसके लिये खुशी जाहिरकर करनसिंहने १०० मोहर, १०००) रुपये तरह २ के नज़राने और २१०००) रुपयेके सोनेचांदीके जेवरात व बहुतसे हाथी ! घोडे, मुझको दिये। हाथी,घोडोंको वापिसकरके बाकी सब नजराना मैंने लेलिया, दूसरे दिन मैंने उसको खिलत देकर फतेहपुरसे लौटजानेका हुक्म दिया। वक्त रुख्स-तके उसको एक हाथी, एक घोडा, तलवार व कटार और उसके बापके लिये एक उमदा घोडा यह सामान दिया"।

"चौदहवॉ साल। तारीख १७ रवीउल अव्वल हिज़री सन १०२९ को मैंने अमरसिंहके वहिश्तनशीन होनेकी ख़बर पाई। रानाका बेटा भीमसिंह और पोता जगतसिंह यह खबर लेकर मेरे पास आयेथे। उनको मैंने तरह २ के खिलत दिये और राजा किशोरीदासकी मारफत एक चिट्ठी जिसमें तसल्ली दीगईथी, कितने एक उमदा घोडे, तख़्तनशीन होनेका ज़रूरी सामान रवानाकरके कर्णसिंहको "राणा"का खिताव दिया। बादजा ७ वीं सव्वालको विहारीदास वर्मनकी मारफत एक फरमान जिसपर मेरा पंजा लगाहुआ था—रवाना करके कहलाभेजा कि उनका लडका मुकर्रर फौजको साथ लेकर मेरे पास हाज़िर हो।"

सम्राट् जहांगीरका हस्ताक्षरित वृत्तान्त यथार्थरीतिसे अनुवादित हुआ। इस समय प्रयोजन समझकर कुछ विलम्बतक इसकी समालोचना कीजायगी। जहांगीरका हृदय अति ऊंचा और महान था, उनके लिखेहुए वृत्तान्तको पढने-से ही यह बात भलीभांतिसे प्रमाणित होतीहै। उस वृत्तान्तकी प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्दसे उसकी महानता और उच्च हृदयताका पूर्ण परिचय दिखाई देताहै। वीरकेशरी प्रतापसिंहके वीरपुत्रपर जय प्राप्तकरके जो असीम आनंद उनको प्राप्त-हुआथा, उसके द्वारा उनके महत्त्वका और भी अधिक विकाश हुआ। उस आनंदकी गं-भीरतासे बादशाह जहांगीरका हृदय विचलित नहीं हुआथा उन्होंने अपने स्वाभा-विक महत्त्वको नहीं छोडदिया। यद्यपि आद्योपान्त सूक्ष्मदृष्टिसे देखनेसे निरपेक्षभा-वसे वर्णनकियाहै. तथापि दो एक स्थानोंमें भ्रम पायाहै। जहांगीरको यह समाचार विदित नहींथा कि कौनसी महानताके प्रभावसे [illegible]

उदयपुरके शान्तिरूपी वृक्षकी छायाके नीचे सुलतानने कुछदिनोंतक विश्राम किया, राणाने उसके लिये अपने महलका एक हिस्सा देदिया था. उसी स्वतन्त्र भवनके अंशमें सुलतान खुर्रम अपने इष्ट मित्रोंके साथ रहकर समयको विताने लगा परन्तु अपने अनुचरोंको राजपूतोंके संस्कारकी ओर उपेक्षा करता हुआ देख सुलतान अत्यन्त ही लज्जित हुआ, और उस राजमहलको छोड दूसरे स्थानमें रहनेकी अभिलाषा की, खुर्रमके इस उदारता युक्त भावको देखकर राणा परम प्रसन्न हुए, और शीघ्र हृदगर्भस्थ द्वीपके मध्यभागमें उसके रहनेको एक सुन्दर महल बनवा दिया, वह महल नानाप्रकारकी शोभायमान सामग्रीसे सजाया गया, उसके ऊपर इसलामधर्मकी सूचना देनेवाली अर्द्धचन्द्राकार झंडियें उडतीहुई सहस्र गुणी शोभाको बढाने लगीं. इससे वह स्थान और भी रमणीक हुआ, इस मनोहर महलके बनानेके समय उसके आंगनमें सदारशाह फकीरका स्मरण करनेके लिये एक चौतरा बनवायागया पेशोला नदीके उज्ज्वल जलसे धोयेहुए उस महलमें जाकर अपने अनुचर और सरदारोंको साथ ले सुलतान खुर्रमने बहुतदिनोंतक वहां निवास किया फिर नानाप्रकारकी चिन्ता और शंकाओंसे दुःखी हो भारतवर्षको त्याग ईरानको चलागया * । यद्यपि विधाताकी कठिन विधिके अनुसार मुगलोंके चरणोंमें मेवाडकी स्वाधीनता बिक तो गई; परन्तु उस विजित जातिके ऊपर जीतनेवाला जैसा व्यवहार

था, परन्तु केवल अद्भुत सहन शीलताके बलसे ही वे इस कष्टको झेल गये थे; कारण उन्हें ज्ञात था कि मनुष्य होकर जिसने सहनशीलता न सीखी, वह मनुष्यनामके योग्य नहीं है. उसका मनुष्य देह धारण करना केवल विडम्बनाही है। यह अपूर्व तत्त्वज्ञान केवल अमरसिंहका ही नहीं था, वरन उनके पवित्र गिह्लौट-कुलमें यह सनातनसे गुणमानकर व्यवहार कियाजाता है।

"आज अमरसिंहने उसही गुणकी कार्यकारिताको दिखाया। आज उस प्रचंड सहिष्णुताकी सीमाको उन्होंने दिखादिया। स्वाधीनताके लोप होजानेसे उनके हृदयमें कठोर पीडा हुई थी इस बातको बादशाह भी समझ गये थे। सम्राट्का हृदय भी इससे व्यथित हुआ था। इसही कारणसे बादशाहने राणाके अनुरोधकी रक्षा करके कहा था कि हरेक तरहसे उस मुअज्जिज़ राणाकी मनशाय और ख्वाहिशके मुआफिक काररवाई करनेमें कसर न कीजाय। * "

यद्यपि यह बात सत्यहै कि वीरश्रेष्ठ प्रतापसिंहके पुत्र अमरसिंहपर विजय पाकर बादशाह आनन्दित हुए थे; परन्तु उनके इस आनंदमें अत्यानंद नहीं था, उसमें हीनजनोंकी समान प्रगलभता नहीं थीः वरन वह आनंद शान्त और सरलतामय था। देशके गृह २ में साधारण आनन्दोत्सवकी तइयारी न कराकर बादशाहने केवल राणाजीके प्यारे हाथी आलमगुमानपर सवार हो दीन दरिद्रोंको धन दान कियाथा, इससे ही उनके उस गंभीर-तथा शान्त आनन्दका विकाश स्पष्टतासे दिखाई देता है। राणापर विजय पाकर उन्होंने अपनेको गौरवान्वित समझाथा; कारण कि उनको ज्ञात था कि शिशोदीय वंशके राजा ही राजपूतोंमें श्रेष्ठ होतेहैं। उस वीरपूज्य श्रेष्ठ राज्यवंशके ऊपर जय प्राप्त करनेके लिये उसके दादे परदादेने कितना परिश्रम कियाथा, परन्तु अनन्तधन और अगणित सेनाका प्राण देकर भी उनकी चेष्टा फलवती नहीं हुई थी। आज जहांगीरसे वह कार्य होगया, इसही कारणसे उनने अपनेको गौरवान्वित समझा था। जो खड्गबलसे नहीं हुआः—नृशंसता, स्वार्थपरता और सर्वग्रासिनी पापमंत्रसे दीक्षित हो पाशव अग्निबलके प्रयोगसे उनके पूर्वपुरुषगण जिस कार्यको सिद्ध नहीं करसकेः सत्रहवार अनेक कठोर संग्रामभूमिमें आय अगणित हिन्दू मुसलमानोंके रुधिरको गिराकर वह स्वयं जिस कार्यको इतने दिनोंतक सिद्ध नहीं करसके थे. आज उनके परम धार्मिक पुत्र

* [illegible] ।

उसी प्रकारसे बना है; जिस महलके चिकने और सुथरे आंगनमें बैठकर उन्होंने उस प्रसादरूपी उपहारको ग्रहण किया था; उसी महलके अब अनेक स्थान टूट फूट गये है,परन्तु तो भी वह मदारशाहकी समाधिका मंदिर आजतक साफ रहता है, उस मंदिरकी शोभाको बढाने वाला दीपक आजतक एक मुहूर्तके लिये तेलके न होनेसे भी नहीं बुझता है; आज इस मेवाडकी हीन मलीन अवस्थामें भी शिशोदियावंशके राजालोग उस दीपकमें तेल डालनेको नहीं भूलते हैं॰ महाराणा कर्ण संवत् १६४८ (सन् १६२८ ई०) में अपने प्यारे पुत्र जगत्सिंहके हाथमें राज्यका समस्त भार सौंपकर इस लोकसे बिदा ले सूर्यलोकमें जाकर अपने पूर्वपुरुषोंके साथ मिले; उन्होंने आठवर्षतक राज किया था, यह आठवर्ष गंभीर शान्तिसे व्यतीत हुएथे; उनके मरनेसे थोडे दिनके पीछे बादशाह जहाँगीर परलोकको चलागया, उससमय सुलतान खुर्रम सूरतमें था; महाराणा जगत् सिंहके पिता और चचाने जो अपने प्राणप्यारे सुहृद खुर्रमको जिस राजसिंहासनपर स्थापित करनेके लिये प्राणतक देनेकी प्रतिज्ञा की थी,आज वही सिंहासन सूना पडाहै, सिंहासनके साथ ही खुर्रमके भाग्यका आकाश साफ और निर्मल होगया था: इस मंगलमय शुभसमाचारको अपने पितृबंधुसे बिना कहे जगत्सिंह न रहसके, उन्होंने क्षणमात्र भी विलम्ब न करके कितनी एक सेनाके साथ अपने भाईको सूरतमें भेजदिया. सुलतान खुर्रम उससे सम्पूर्ण वृत्तान्त जानकर तत्काल उदयपुरमें आकर राणासे मिले: उसदिन उदयपुरके स्थान भांति २ के शोभायमान अलंकारोंसे शोभित थे, उसकी पवित्र शोभाको देखनेके लिये राजवाडेके अनेक राजालोग आये थे: उस शोभायमान उदयपुरमें "बादलमहल" के भीतर दिल्लीके सामन्त और आये हुए कुल राजाओंने सबसे पहले सुलतान खुर्रमको "शाहजहां" नामसे पुकारा, उसी दिन इस शिशोदिया वंशके राजाओंकी बहुत दिनोंकी आशा पूर्ण होगई, ऐसे मंगलमय अवसरपर उदयपुरके घर २ में नृत्य गीत और भांति २ के उत्सव होनेलगे: और किसी मुसल्मान राजाके अभिषेकके होनेके समयमें हिन्दुओंने कभी ऐसा आनन्द और उत्सव नहीं किया था. परमधर्मात्मा शाहजहां थोडेदिनोंतक भी नहीं रहकर फिर उदयपुरसे

जिन लोगोंको उन्होंने "दैत्य दानव" आदि घृणा सूचक नाम देरक्खे हैं, आज विधाताने उनको उसही म्लेच्छका—उसही घृणित म्लेच्छका दास बनाया; सहाय—आश्रय—उपाय—अवलंबन छीनकर सदाके शत्रु उन यवनोंकी अधीनतारूपी जंजीरमें बांधा;—कर्णकी समान तेजस्वी राजकुमारका हृदय किस प्रकारसे इस दुःखको सहन करसकता है? राजकुमार कर्णभी प्रसिद्ध शिशोदीय कुलका योग्य राजपुत्र है, उसका हृदय अवश्यही इस पराधीनतासे दुःखी हुआ होगा। परन्तु जिनका राजपाटसे कोई भी संबन्ध नहीं है;-जिनके पास तिलभर भी व्यक्तिगत स्वाधीनता नहीं है; जन्मभूमिकी दुरवस्था देखकर, जातीय स्वाधीनताका लोप होना देखकर उन लोगोंका हृदय भी क्षुभित, मथित और चुटैल होजाता है, और जिसके हृदयमें इस अवस्थाको देखर दुःख नहीं होता, उसमें आदमीपन कहां है? वह मनुष्यनामके योग्य नहींहै। कर्ण राजपूत होकर उस स्वाधीनताको खो बैठा। उनके वडे वूढोंकी वीरत्व गौरव और स्वाधीनताकी खानि मेवाडभूमि म्लेच्छोंके द्वारा "जागीर" नामसे पुकारी गई; जिस शत्रुने उन्हें इस शोचनीय दशाको पहुँचाया, वह किस प्रकार—हिल मिलकर उससे वातचीत करे? उसही शत्रुने उनको सन्तुष्ट करनेके लिये अधीनतारूपी जंज़ीरका भार कम करदिया है, उनको हिन्दूराजाओंमें ऊंचे आसनपर स्थापित कियाहै, सदासे अलग हुए गोढार राज्यको फिर दिलादिया "पांच हजारी सेनापति" के पदपर वरण किया; यह सब सत्य है—यह समस्त कौशल ही सुन्दर है: परन्तु इन सबके वदलेमें जो एक अमूल्य धन जाता रहाहै, यदि उसके साथ मिलान कियाजाय तो इन्द्रकी अमरावती और कुवेरका धनागार भी अतिहीन व तुच्छ जानपडता है। कर्ण उस अमूल्य रत्न—"स्वर्गादपि गरीयसी" उस अमूल्य स्वाधीनता रत्नसे वंचित हुए, उस रत्नके उद्धार करनेका अब कोई उपाय नहीं है. इन बातको विचारकर ही वह चुपचाप रहते थे। इसही कारणसे बादशाहने उनको "गम्भीर" और "कमगो" कहकर वर्णन कियाहै।

उदार हृदय जहांगीरने राना अमरसिंहको जैसा मान दियाथा, जैसा उनका गौरव किया था, जीतनेवालेसे किसी और पराजित राजाने भी ऐसा सन्मान या गौरव पाया है? हमको तो इस विषयमें सन्देह ही है। परन्तु तेजस्वी अमरसिंहके हृदयमें वह सन्मान और गौरव कांटेकी समान खटकता था। बादशाहके दियेहुए सन्मान और गौरवको वह जितना विचार करते थे, उतना ही उनका हृदय उन कांटेके लगनेसे खटकता था। इस कारण वह [illegible]

नेका स्थान, जलयंत्र इत्यादि सभी वस्तुएं नेत्रोंको मोहित करनेवाली बनीहुई हैं, उन दोनों ही स्थानोंके दरवाजे और खिडकियोंके किवाडोंमें भांति २ के शीशे लगे हुए शोभायमान हैं, जिससमय सूर्य भगवान्की उज्ज्वल किरणोंकी माला उन किवाडोंके ऊपर पडती है तब उन कमरोंकी दीवारों पर अगणित इन्द्रधनुषोंका बोध होता था, उस समय जो शोभा उन स्थानोंकी होती है उसका वर्णन करना बहुत कठिन है, उस अनुपम भवनकी सुन्दरताका वर्णन करते हुए हमारी लेखनी भी रुकती है, उस स्थानकी दीवारें ऐतिहासिक चित्रोंसे शोभायमान हैं, यद्यपि समयके हेरफेरसे अब वहांका कोई २ स्थान काला होगयाहै और कहीं २-का रंग फीका होगयाहै; परन्तु तो भी उन संपूर्ण चित्रोंके दर्शनसे ऐसा बोध होताहै कि मानों यह जीवित खड़े हुए अभी कुछ कहतेहैं. महाराणा कनकसेनके समयसे लेकर मेवाडके भूतपूर्व राजाके विवाहोत्सवतक जो संपूर्ण घटना हुई थीं उन सभीका चित्र इन दोनों स्थानोंमें तथा उदयपुरके प्रधान २ महलोंकी दीवारोंपर खिंचाहुआ देखाजाता है, इन दोनों स्थानोंके चारों ओर नानाभांतिके फूल तथा फलवाले वृक्ष लगे हुए हैं; उन संपूर्ण वृक्षोंके साथ मिल जानेसे एक प्रमोद काननके बीच २में बहुतसे कुंज बने हैं. कहीं दश बारह नारि-यलके पेड़ और ताडके पेड़ आकाशको छूनेकी इच्छासे परस्पर एक दूसरेकी ईर्षा करते हुए ऊपरको माथा उठाये खडे हैं. कहीं आम, इमली, जामुन इत्यादि-के बडे २ वृक्ष अपनी सघन छायाको फैलातेहुए एक दूसरेसे अपनी शाखाओंको मिलातेहुए गंभीरभावसे खडे हैं; कहीं स्थान २ पर बहुतसे केले और गुवाक (सुपारी) के वृक्षोंने इकट्ठे होकर मनोहर और छोटी २ कुंजोंको बनाया है. उन छोटी २ कुंजोंके भीतर दर्शकोंके बैठनेके लिये काठके आसन बिछेहुए हैं. पेशोला नदीके किनारे सरदार और सामन्तलोगोंके लिये बहुतसे शोभायमान घाट बनाये गये हैं. यह सभी घाट संगमर्मरके बने हैं. घाटके ऊपरभागमें चांदनी खिली रहती है, सामने ही साफ शोभायमान सीढियें बनीहुई हैं. इन सब सीढियोंके पार्श्वमें अलिन्द बनाहुआ है. मालूम नहीं कि उसके घाटोंका [illegible] कुंजवाटिका [illegible] जाता तो भी ठीक [illegible]. ग्रीष्मकालकी दुपहरियोंमें [illegible]

उनके सामने अपनी प्रतिज्ञाको प्रकटकिया तथा पुत्रके माथेपर राजटीका अर्पण करके राज्यसे विदा ली*। विदाके समय प्रणत पुत्रके शिरको चूमकर उन्होंने धीर गंभीरभावसे कहा "बेटा! देखियो, मेवाडका सन्मान गौरव इस समय तुम्हारे ऊपर ही निर्भर करता है।" यह कह राजधानीको छोड राजनचौकी × के गिरिगहनमें सुख दुःखसे एक प्रकार अपने जीवनके दिन बिताने लगे। उस दिनसे फिर कभी उन्होंने उस तापसाश्रमको नहीं छोडाथा और न राजधानीमें आयेथे। जब संवत १६७७ (सन् १६२१ ई०) में उनका पवित्रात्मा इस लोकको छोड स्वर्गमें चलागया, जिस दिन पॉच तत्त्व पांच तत्त्वोंमें मिलगए, उसही दिन उनके देवदेहकी पवित्र भस्म, उनके पितृपुरुषोंकी भस्मराशिके साथ एकत्र रक्षित होनेके लिये राजभवनमें लाई गई।

अमरसिंहके देवचरित्रकी और विशेष क्या समालोचना कीजाय। वह वीरकेशरी प्रतापसिंहके योग्यपुत्र और पवित्र गिह्लौटकुलके परम पवित्र राजाथे। शारीरिक और मानसिक गुणग्राम जो वीरोंके अंगभूषण समझे जाते हैं, अमरसिंहमें वह समस्त ही गुण थे। मेवाडके समस्त राजाओंसे वह अधिक ऊंचे और अत्यन्त बलवान थे, परन्तु उनकी समान महाराणा अमरसिंहका रंग गोरा नहीं था। उनके मुखमंडलपर शोक और गंभीरताकी कालिमा बहुधा दिखाई दिया करतीथी, परन्तु यह भाव उनका प्रकृतिगत नहींथा। ज्ञात होताहै कि जन्मभर विपत्तिके अंकुशसे पीडित होनेके कारण उनके वदन मंडलपर यह शोककी छाया पडगईथी। उदारता वीरता, दया तथा न्यायपरायणता इत्यादि गुण ही राजपूतराजाओंके प्रधान गुण समझे जातेहैं, इन समस्त गुणोंके होनेसे ही सेना, सामन्त, इष्ट मित्र और प्रजाके मनुष्य देवभावसे अमरसिंहकी पूजा करतेथे। राणाजीकी अपूर्व गुणगरिमाका अद्भुत वृत्तान्त भट्टग्रंथ, राजस्थानके अनेक स्तंभ और पहाडोंपर लिखाहुआ बहुतायतसे पाया जाताहै।

---

* संवत्१६७२ (सन१६१६ ई०मे) राना अमरसिंहने अपने पुत्रको राज्यभार दियाथा। परन्तु तवारीख फरिश्ताके अनुवादक महानुभाव डौ साहब कहतेहैं कि सन्[illegible] (सन [illegible] ई०) मे राज्यभार दियाथा।

× टाडसाहब कहतेहैं कि उक्त स्थानमें ही सुल्तान खुर्रमने राणाजीसे मुलाकात कीथी। [illegible]रके उत्तरकी ओर एक गिरिमालाके ऊपर अबतक उस राजनचौकीका खंडहर पडाहै। इसको राणा उदयसिंहने बनवायाथा।

रहनेवालोंके हृदयमें जिस कष्टका उदय हुआथा. आज राणा जगतसिंहने अपने उत्तम स्वभाव और सुन्दर प्रजापालनके गुणकी सहायतासे उस घावको दूर करदिया: तथा उस कष्टदायक स्मरणको भलीभांति राजपूतोंके हृदयसे दूर करदिया था। उनके सरलस्वभाव और माहात्म्य, उदारतायुक्त व्यवहार और मनोहर मधुर संभाषणसे शत्रुओंके हृदय भी पिघल जाते थे। बहुत कहनेसे क्या है जो कोई उनके साथ एकवार भी बातचीत करलेताथा वह उनको जीवनतक नहीं भूलसकता था, उनकी उस सरलता. उदारता, और महानताको मुसलमानोंके इतिहास लिखनेवालोंने भी अपने इतिहासोंमें वर्णन कियाहै, अधिक क्या कहें स्वयं बादशाहने अपने जीवनचरित्रमें, और दूतवर सर टम्स रो महोदयने भी उनके गुण और गौरवकी बहुत ही प्रशंसा की है। सिह्लोदवंशकी गौरव भूमि चित्तौरपुरी जो एकसमय शोचनीय अवस्थासे मलीन होकर श्मशानकी समान पडीहुई दिखाई देती थी, आज महाराणा जगतसिंहने अपने प्रजापालनके सुन्दर गुणसे उसका भलीप्रकार पुनरुद्धार किया। इन कार्योंके अतिरिक्त राणाजीने माल्बुर्ज * सिहदार अत्रकोट इत्यादि अनेक टूटफूटे स्थानोंका संस्कार कराकर उनको ठीक करदियाथा।

गौरवान्वित होकर मेवाडकी भूमि एक समय सभ्य जगतकी शिरोमणि हुईथी; एक समय सूर्यवंशीय वाप्पारालवके वंशवाले जो कि एक प्रचंड सूर्यकी किरणों-की समान अमित तेज धारण कियेहुए थे; आज वह गौरव इस मेवाडभूमिसे चलागया, यह मेवाडराज्यकी भूमि इस समय विषादके मारे श्मशानकी समान होगई है,—मेवाडके वह सूर्यकी प्रभाके समान राजपूतगण उस प्रखर ज्योतिको खोकर सामान्य नक्षत्रोंकी समान क्षीणतेज होकर गिरे हैं; आज इस भारतके हिन्दूराजाओंकी समाजमें यह हीन दशा उपस्थित होगई है; उनका तेज नहीं रहा; ज्योति नहीं है; कान्ति उनकी जातीरही; वह लोग अपनी शक्तिको खोकर दूसरोंकी शक्तिके आकर्षणसे खिंचकर अपनेको भूलगये, तथा प्रचंड मुगलरूपी सूर्यके चारों ओर घूमते फिरतेहैं। जो महती शक्ति एक समय हिन्दुओंके रोमरूपी सूर्यसे निकलकर समस्त भारतवर्षके राजाओंकी गतिको रोकती थी; आज वह इस मुगलसूर्यसे परास्त होगई है, इस मुगलसूर्यके प्रचंड तेजको रोकनेकी किसी हिन्दु राजामें सामर्थ्य नहीं है; कालके वशसे ही इसने उस तेज और उस शक्तिको पायाहै,और कालके वशसे ही यह उनसे रहित होजायगाः इस संसारमें अवश्य होन-हारका नियम चलाआयाहै, इस समस्त संसारमें कोई भी उस नियमको उल्लंघन नहीं करसकता; उस उल्लंघन न करने योग्य नियमके ही आधीन होकर "हिन्दूसूर्य" वाप्पारावलके वंशवाले अपने तेजसे हीन होगयेहैं. और मुगलसूर्यकी प्रचंड शक्तिसे खैंचे जाकर साधारण नक्षत्रोंकी समान उसके चारों ओर घूमते हुए फिरते हैं; यद्यपि वह लोग इस मुगलकी उस प्रचंडशक्तिको खैंचते तो हैं. परन्तु समय २ में उसकी गतिको नियमानुसार नहीं रोकसकतेहैं. विना अभ्यास किये-हुए चरणोंसे घूमकर उस आकर्षणसे खिंचकर, कि जिनका उनको अभ्यास नहीं था वह समय २ पर अपने स्थानसे भ्रष्ट हो अपने स्वभाव और तेजकी तीक्ष्णताका प्रकाश करतेहैं।

यद्यपि गौरववान वीरोंमें श्रेष्ठ वाप्पारावलके वंशवाले अपनी पहली शक्ति और तेजको अपने अधिकारसे खो चुकेथे. परन्तु तो भी वे अपनी पहली स्मृतिको नहीं भूलसकते, उस स्मृतिसे ही उनका जीवनहै. उसके खोनेसे इनका अस्तित्व भी जाता रहेगा, राजपूतोंका नामतक इस संसारसे सर्वदाके लिये उठ जायगा, जिस दिन वीरकेसरी महाराज कनकसेनने सौराष्ट्रके शिखरपर अपनी विजयवै-जयन्तीको गाडाथा, उसदिनसे लेकर आजके समयतक कि जिसका हम वर्णन करनेके लिये तइयारहैं. डेढहजार वर्ष व्यतीत होगये हैं. इस दीर्घकालके बीचमें

मारी, उस एकही पापीके बुरे आचरणोंसे समस्त मुगलोंका नाश होगया. उन लोगोंकी अंतिम अवस्था बिगडगई; मुगलकुलतिलक अकबरने अपने पितामहकी चलाई हुई रीतिके अनुसार ही काम कियाथा.इसी कारण वह असंख्य विघ्नोंके बीचमें भी अपने राज्यको अटल रखनेमें समर्थ हुआ. एक समय प्राच्य और प्रतीच्य मंडलके राजाओंमें वह अकबर ही ऊंचे आसनपर स्थापित हुआथा,उसने अपने पुत्र जहांगीरको इस नीतिका फल भलीभांतिसे समझा दियाथा, चतुर जहांगीरने भी भलीभांतिसे उसही नीतिके अनुसार कार्य किया; उसही नीतिके फलसे उसने शाहजहांकी समान पुत्ररत्नको पाया. शाहजहां भी योग्य पिताका पुत्र हुआ, पितासे उसने जिस नीतिको सीखा था उसको कार्य करनेके समय नहीं भूलता था, उसी कार्यके द्वारा उसने हिंदूराजाओंसे यथार्थ मित्रता करके बडे २ दुर्घट कार्योंको कियाथा। इस उत्तम पवित्र नीतिकी जडमें जो एक महान् नीतिका बल छिपाहुआ था. वह सरलतासे जाना जा सकता है, परन्तु दुःखका विषयहै कि भारतवर्षके इतिहास लिखनेवालोंने इस नीतिबलके विषयमें आजतक कुछ विचार नहीं किया अतएव जाना जाताहै कि वह लोग इस नीतिका भेदतक नहीं जानते थे, परन्तु इस हिन्दू राजाओंके साथ विवाह सम्बन्ध करके विजयी मुगल बादशाहोंने उस महान् नीतिके बलको दृढ किया था. फिर उसीकी सहायतासे असंख्य आपत्तियोंके प्रतिकूल मुगलकुलकी

याथा, उससे उनके ऊपर कहेहुए दोनों गुणोंका विशेष परिचय पाया जाताहै; बराबर युद्ध होनेसे मेवाड राज्यका खजाना एकबार ही खाली होगयाथा, राज्यके बीचमेंसे धनके इकट्ठा करनेका जब कोई उपाय न रहा, तब महाराणा कर्णके हृदयमें एक नवीन कल्पना उत्पन्न हुई। उसी कल्पनाकी सहायतासे वह धनके प्राप्त करनेका उत्तम उपाय सोचकर कृतकार्य हुए, किसीसे कुछ न कहकर कितने ही घुडसवार सेनाको अपने साथमें ले शत्रुओंकी सेनाको लांघ सूरतमें जा–पहुँचे, और अपनी वीरताकी सहायतासे शत्रुओंकी सेनाको भयभीत तथा त्रासित करके उनके धनको लूटकर फिर लौट आये, उस इकट्ठे किये हुए धनकी विपुल सहायतासे महाराणा कर्णने अपने देशकी हीन अवस्थाको दूर कर दियाथा।

यह तो हम पहले ही कहआयेहैं, कि महाराणा कर्ण एक साहसी और वीर्यवान् राजा थे, परन्तु दुःखका विषय है कि उचित अवसर न मिलनेके कारण वह इन अपने दोनों ऊंचे राजगुणोंका परिचय नहीं देसकेथे, बहुतसे लोग यहां यह प्रश्न कर सकतेहैं कि, जब इनका तीक्ष्ण गौरव और स्वाधीनताका वासस्थान पवित्र मेवाडराज जब यवनोंसे घृणित होकर अपवित्र "जागीर" नामसे पुकारागया, तब उससमय महाराणा कर्णने किस लिये मौन होकर इसबातको सहन कियाथा, और वह अपनी तलवारकी सहायतासे उन शत्रुओंसे लगाये हुए इस भयंकर कलंकका बदला लेनेके लिये आगेको क्यों न बढे? इस प्रश्नके उत्तरमें हम केवल इतना ही कहसकते हैं कि, यद्यपि बादशाहने मेवाडभूमिको "जागीर" नामसे पुकारा तो था, परन्तु महाराणाजीसे कभी भी वह जागीरदारकी समान व्यवहार नहीं करताथा, वरन उनको अपने प्रधानमित्रकी समान मानताथा। सरलतासे मित्रका व्यवहार करके उसने अपने राज्यमें शान्तिका बीज बोदियाथा, उस समय राणा कर्णकी कोई युक्ति भी फलवती न हुई. इस कारण उन्होंने शान्तिमें उपद्रव करनेकी कोई इच्छा न की होगी: यदि इच्छा करनेसे उनकी अभिलाषा पूर्ण होजाती: तो वह उनको करसकतेथे. यदि ऐसा करते तो शिशोदियाकुलका गौरव व अस्तित्व एकबार ही लोप होजाता, इसलिये देशकाल और पात्रका विचार करके व्यवहार करना सभीको कर्तव्यहै, और जो कोई इस नियमका उल्लंघन करताहै: वह इस संसारमें कुछ भी प्रतिष्ठाको नहीं पासकता. इन नीतिपूर्ण वाक्योंकी महिमा राणाजीको विदित थी. इस कारणसे वह उसीके अनुसार कार्य करके कर्तव्यको सिद्ध करनेके लिये उसमें ही एकाग्र

आधीनमें बूंदी कोटेके राजा हाडा बीकानेरके राठोर, उच्छी व दतियाके राजा लोग. यह सभी अत्यन्त बलवान थे; यदि अहंकारी औरंगजेब मोहसे अंधा होकर उनके प्राचीन संस्कारोंको अपने पैरसे न ठुकराता, और अपने हिताहितका विचार करके उसीके अनुसार कार्य करता तो मुगलोंकी सामर्थ्य निश्चय ही अटल रहती; तथा मुगलोंके वंशकी इतनी शीघ्र ऐसी दुर्दशा न होती, परन्तु उसका नाश तो केवल अहंकारने ही करदिया. बलका अहंकार कर मोहमें पडके उसने अपने हाथसे अपने पांवमें कुहाडी मारी, अपने सौभाग्यके मार्गमें अपने हाथसे ही कांटे बोए, जिन राजपूतोंके अनुरागको और सहायता पानेकी आशासे उनके पूर्व पुरुष सर्वदा तैयार रहतेथे; जिनको संतुष्ट करना वे अपना मुख्य कार्य समझतेथे, आज मोहसे अंधाहुआ औरंगजेब उन्हीं राजपूतोंके सुन्दर गुणोंको भूलकर पाखंडीकी समान दुःखित करनेलगा. अंतमें इस घिनोने व्यवहारसे ही उसका नाश हुआ, इसी कारण सम्पूर्ण हिन्दू उसको विफल नेत्रोंसे देखते थे, और उसका नाश करनेके लिये तयार होगये:हिन्दुओंके वैरी कठोर हृदय औरंगजेबके हाथसे अभागी भारतसन्तानोंके उद्धार करनेके लिये वीरोंमें श्रेष्ठ शिवाजी महाराज प्रचंड सूर्यकी समान उत्पन्न हुए. और अपनी मंत्रणाकी अपूर्व सहायतासे थोड़ेही दिनोंके बीचमें उस वीरवरने मुगल बादशाहके कठोर आचरणोंका यथार्थ प्रायश्चित्त कराया था।

जो मुसल्मान बादशाह एक समय भारतवर्षमें भाग्यका चक्र चलारहेथे उन-से कोई भी कपटता, यथार्थ परायणता, नीचता वा विद्या व अभिमानमें और-

दियावंशके सरदारलोग मुगलोंके आधीन होकर सामन्तोंके बीचमें विशेष प्रतिष्ठाको पानेलगे; इन समस्त शिशोदियासरदारोंके बीचमें -महाराणा कर्णके छोटे भाई भीम विशेष प्रसिद्धहुए; वादशाहकी सहायताके लिये महाराणाको जो सेना देनीपडती थी, भीम उसीके प्रधान नायक थे; वह स्वभावसे बडे साहसी और तेजस्वी थे,सुलतान खुर्रमने उनको बन्धुभावसे अत्यन्त ही अच्छा माना था,और उनकी विना सलाह लिये कोई कार्य नहीं करताथा; भीमकी निष्कपट बन्धुताको देखकर खुर्रम दिन २ प्रसन्न होने लगा,तथा पदवी बढानेके लिये अपने पितासे जाकर निवेदन किया,अपने प्यारे पुत्रकी अभीलाषाको वादशाहने पूर्णकिया। भीमको "राजा" की उपाधि देकर बूनासनदीके किनारेका एक छोटासा जनपद भी उनके अर्पण करदियाथा; तोडा उसीकी राजधानी है. उस जनपदको वृत्तिमें पाकर भी भीमकी अभिलाषा शांत नहीं हुई, वह अपने अमरत्वको प्राप्त करनेके लिये उपाय सोचने लगे, और उस बूनासनदीके किनारे एक नवीन नगरीकी प्रतिष्ठा की, वही नगरी अब राजमहल नामसे प्रसिद्ध हुई, वह राजमहल बहुत दिनोंतक भीमके वंशवालोंके हाथमें रहाथा, अब वह राजमहल विध्वंस होगया है; परन्तु इस समय भी उस विध्वंसहुए राजमहलके खंड्हरोंके भीतरसे उस नगरीका प्राचीन गौरव चिह्न बनकर दिखाई देताहै, इससे तो निश्चय ही जाना जाताहै कि यह नगरी एक समयमें विशेष समृद्धिवाली और शोभायमान थी; परन्तु इससमय दुर्जय कालके कठोर करप्रहारसे वह राजमहल आज चूर्ण २ होकर धूरिमें मिलगया है; प्रकृति देवी उन विध्वंस हुए ढेरोंके भीतरसे मृदु स्वरसे कह रही है कि "मनुष्य कितने दिनोंके लिये हैं,यह शोभा और सुन्दरता कितने दिनोंकी है? यह गौरव, दर्प. गरिमा, अहंकार कितने दिनके लिये हैं: दिनके पीछे दिन, महीनेके पीछे महीना, वर्षके ऊपर वर्ष अखंडित गतिसे बहतेहुए अनन्त कालके समुद्रमें लीन होते जातेहैं, भाग्यका चक्र सुख दुःखके नियमानुसार ही बराबर घूमता रहता है: एक दिन जिस राजपूतको अपना बंधु जानकर बादशाहका बडा बेटा अत्यन्तही प्रसन्न हुआथा, और जिस मित्रके अमृतकी समान संभाषणसे उसने एक परम सुखको माना था.आज उनहीके अभागे वंशवाले लोग अपने दुर्भाग्यके नीचसे नीचे दरजे पर जाकर दीनकी समान एक रुपया रोजकी साधारण तनख्वाह पर नौकर होकर शाहपुरराजकी परिचर्या करतेहैं।

खुर्रमके पितामह (नाना) थे, यदि कहाजाय तो वही इस कार्यके करनेवालोंमें प्रधान थे; परन्तु पीछे बादशाह किसी प्रकारका संदेह न करै, इस कारण वह अपनी चतुरतासे अगल ही रहकर काम चलातेथे।

उस विद्रोहकी अग्निको बुझानेके लिये स्वयं बादशाह शत्रुओंके दबानेको आगे बढा, राठौरोंके राजा गजसिंहके विद्रोहियोंके दलमें गुप्तभावसे मिलनेका संदेह बादशाहको पहिले ही हुआथा। उस संदेहके सत्य वा मिथ्या होनेका यद्यपि उसको किसी प्रकारका पक्का प्रमाण नहीं मिला तो भी उसने गजसिंहपर किसी प्रकारका भार न देकर जयपुरके राजाको ही सेनापति बनाया; इससे गजसिंहने अपनी झंडीको झुकाकर एकान्तभावसे रहनेकी प्रतिज्ञा की, परन्तु भीमसिंहसे इसबातको नहीं देखागया। गजसिंह खुर्रमके नाना हैं और वही इस विद्रोहकी अग्निको उत्तेजित करनेमें प्रधान कारण थे, इस समय वह अपनी चतुराईसे अलग रहतेहैं, यह बात भीमके हृदयमें सहन न हुई; भीमने पहिले तो उनसे कुछ न कहा और कुछ समयतक प्रतीक्षा की, जब दोनों दल आमने सामने आकर युद्धभूमिमें युद्ध करनेके लिये खडेहुए, गजसिंह तब भी नहीं आये; तब भीमसिंहने उनसे कहलाभेजा कि "आपका इस रीतिसे चुपचाप एक ओर खडेरहना ठीक नहीं है; या तो इस समय आपको प्रकाशित भावसे हमारे साथ मिलना होगा, अथवा हमसे शत्रुकी समान आचरण करनाहोगा" तेजस्वी भीमकी यह युक्ति सुनकर गजसिंहके हृदयमें वज्राघात लगा; और अपनी सेनाको लेकर प्रगटभावसे भीमके साथ शत्रुता करनेके लिये तलवारको ग्रहण किया, शिशोदीयवीर भीम इससे किंचितमात्र भी भयभीत न हुए, वरन पहिलेसे दुगुने उत्साहके साथ युद्ध करनेलगे; परन्तु उनकी सेना तित्तर वित्तर होगई, और वह इस युद्धमें ही मारेगये * उस समय सुलतान खुर्रम कुछ उपाय न देखकर अपने सेनापति महावतखाँके साथ उदयपुरको भाग गया।

---

* शक्तावत सरदार मानसिंह और उसका भ्राता गोकुलदास यह दोनों भीमको सहायदेनेवाले थे, उन्होंने महावतखाँके साथ मिलकर जहांगीरके विरुद्ध षड्यन्त्र किया था; [illegible] जनपदका सनवारनगर मान-सिंहके हाथमें था, महावीर मान-सिंहने उमरसिंहसे युद्धके समय [illegible] लिये जो असीम वीरता प्रकाशकी थी; इसी कारण उस समयसे शिशोदीयकुलमें महायोधा कहकर पुकाराजाने लगा उसके समस्त शरीरमें अस्सी घाव लगेथे; मुसलमानोंके साथ युद्धमें एक २ करके उसका एक एक अंग प्रत्यंग नष्ट होगयाथा परन्तु तो भी वह युद्धसे नहीं हटताथा; [illegible] भीमका [illegible] था। इन दोनोंहीके बीचमें परस्पर अकृत्रिम प्रेम होगयाथा, एक दूसरेके [illegible]

लगा, बहुत चिन्ता करनेपर अन्तमें स्थिर किया कि अपनी जातिको ही संतुष्ट रखकर निश्चिन्ततासे राज्य भोगसकूंगा तब यह सम्पूर्ण विघ्न और समस्त शंकायें दूर होजांयगी।

जिस समय जिस मुहूर्त्तमें औरङ्गजेबके मनमें इस पापदायिनी चिन्ताका उदय हुआथा. उसी समय और उसी मुहूर्त्तमें उसके भाग्यका आकाश काले २ बादलोंसे ढकगया: हीरोंसे जड़ाहुआ मुकुट उसके शिरपरसे पृथ्वीपर गिरपड़ा: परन्तु वह उस समय भी नहीं समझाथा कि मैं स्वयं ही अपना नाश करनेके लिये तयार हुआहूं: सारांश यह है कि वह उस समय मोहसे इतना मोहित होगयाथा. कि अपने हिताहितके विचारको एकबारही भूलगयाथा: उसकी उस कल्पनाका वर्णन करते हुए हृदय कांपताहै, लेखनी चलते २ रुक जातीहै, उस दुर्बुद्धि पापी औरङ्गजेबने अपने मनमें विचाराथा कि अपने कुटुम्बी और बन्धु बान्धवोंके संहार करनेसे जो हाथ कलंकित हुएहैं इन्हीं हाथोंको अब हिन्दुओंके रुधिरसे धोकर छुटकारा पाऊंगा. उस दुर्बुद्धिने अपने मनमें यह विचारा कि ऐसा कार्य करनेसे ही चिन्ताके हाथसे मेरा छुटकारा होगा. और मेरी सजातीय. स्वधर्मी प्रजा भी सन्तुष्ट होजायगी। जिस घड़ी उसके हृदयमें यह विचार उत्पन्न हुआथा उसने उसी मुहूर्त्तमें अपने इष्टमित्रोंको बुलाय इस भयंकर आज्ञाका प्रचार करनेके लिये कहा। कि "हमारे राज्यके सम्पूर्ण हिन्दुओंको मुसल्मान होना पड़ेगा: जो लोग इस आज्ञाको नहीं मानेंगे उनको बलात्कार इस धर्मपर चलाया जायगा।" इस महाभयंकर दुःखदाई आज्ञाका प्रचार होते ही सारे राज्यमें हाहाकारशब्दकी ध्वनि सुनाई आनेलगी: सहायता और आश्रय हीनहो अभागे हिन्दूगण भयके मारे इधर उधर भागनेलगे। आज सनातन धर्मकी रक्षाका कोई उपाय न रहा: बहुत हिन्दूलोग मुगलराज्यको छोड़ व्याकुल हो अतिशीघ्र दक्षिणकी ओरको चलेगये. अनेकों हिन्दुस्तान वासी मुसल्मानोंके अत्याचारोंसे पीड़ित हो यहांसे भागनेका कोई उपाय न देखकर इसप्रकार अपने हाथसे ही अपने हृदयको छेदन करनेलगे. जो भी पत्र और परिवार अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यारे थे उन्हें, [illegible] [illegible]

करताहै; जाहाँगीर वा उनके पुत्र खुर्रमने कभी भी मेवाडके राणासे उस प्रकार-का व्यवहार नहीं किया; सुलतान खुर्रम कर्णको अपने यथार्थ भाईके समान देखते थे, और कर्ण भी उनके साथमें अपने भाईकी ही समान व्यवहार करत थे, उनकी वह बन्धुता उनके जीवनके साथतक ही शेष न हुई, सुलतान खुर्रमके मेवाडभूमि छोडनेसे राणा कर्ण अत्यन्त ही दुःखित हुए, उन्होंने आशा कीथी कि उस द्वीपभवनमें खुर्रमको वादशाह कहकर सबसे पहिले पुकारेंगे; और सबसे पहिले उसको वादशाहके आसन पर सुशोभित करेंगे, परन्तु उनकी वह आशा पूर्ण न हुई ? आशाको फलवती न होता हुआ देखकर कण अत्यन्त ही दुःखित हुए, उन्होंने जो सुलतान खुर्रमको अपना यथार्थ वन्धु माना था; उसका प्रमाण आजतक भी पाया जाता है; खुर्रमने जो उनके अगणित उपकार किये थे, उनका वदला देनेके लिये राणा सब प्रकारसे समर्थ हुएथे; परन्तु उनका वह वदला पृथ्वीकी साधारण वस्तुसे पूर्ण नहीं था; उसको स्वर्गीय कहाजाय तो भी ठीक हो-सकता है, वह स्वर्गीय हृदयकी पवित्र वस्तुका कृतज्ञता रत्न था, उस कृतज्ञता और पवित्र मित्रताकी निशानी वादशाहकी पगडी * थी महाराणा कर्णने वादशाह शाहजहांके स्नेहसे प्रसन्न होकर कृतज्ञतासे भरे हुए हृदयसे जिस समय उस पगडीको ग्रहण कियाथा उस समय उनका जो भाव था, आजतक भी वह भाव

---

* "पगडीका वदलना राजपूतोमे धर्मभाईका सम्बन्ध जताता है यह पगडी इसीभावसे आजतक रक्खीहुई है और मदारशाहकी समाधिके भीतर आजतक दीपक वाला जाता है, टाडसाहवने स्वय अपने नेत्रोसे यह वधुताकी दिखानेवाली पगडी और मदारशाहकी समाधिको देखा था, उन्होंने कहाहै कि हितकारी परम मित्रोकी मित्रताके समय ही पवित्र कृतज्ञताका चिह्न रखनेके लिये राजपूतोंने अपने महलके भीतर उस मुसलमानकी समाधि वनवाई थी, जब वादशाहके खानदानवालोंने सिसोदियावशको पीडित किया, तव भी राजपूत उनकी उस पवित्रता और कृतज्ञताको नहीं भूले, ऐसी पवित्र मित्रता और कृतज्ञताका ऐसा परिचय और कहीं नही पाया जाता, इस जातिके बीचमें ऐसी मित्रताका व्यवहार कैसे हुआ, क्यो अव ऐसा नही होता, हमारा हृदय तो [illegible] ढकाहुआ है कि जिससे हमलोग ऐसे पवित्र भावको प्राप्त करनेमें [illegible] असमर्थ हैं [illegible] वधु टाडसाहवके हृदयमे ऐसे भावका उत्पन्न होना कुछ विचित्र नही था, वह [illegible] और गौरवको भलीभांतिसे समझ गये थे इसीकारणसे हीन अवस्थावाले [illegible] लिये [illegible]वार उनका हृदय रोता था, एकवार उन्होंने लिख [illegible] कहकर पुकारा था [illegible] जातिके लोग जो [illegible] अहंकार करते है तथा अभिमानसे फूले रहते हैं [illegible] राजपूतोको असभ्य और निकृष्ट कहकर उनसे नाक [illegible] करतेहैं ।

जिया) लगानेका विचार किया । इस भयंकर अत्याचारकी सूचना होते ही सम्पूर्ण भारत वर्षके ऊपर मानो वज्र टूटपडा, कौनसा उपाय करनेसे इस भयंकर विपत्तिसे छुटकारा मिलेगा, इसको कोई भी स्थिर न करसका, सब ही हताश, निरुत्साह और चेष्टा रहित होकर हाहाकार करने लगे; उस हृदयको विदीर्ण करनेवाले हाहाकार शब्दसे उस पापी बादशाहका हृदय किंचित भी भयभीत न हुआ: अभागे हिन्दुओंकी शोचनीय अवस्थाको वह अपने नेत्रोंसे देखतारहा । उसके कठोर हृदयमें किंचित् भी दयाका संचार न हुआ । विख्यात अर्मके लिखेहुए वृत्तान्तको पढनेसे जाना जाताहै कि जिस तीक्ष्ण चिन्ता और शंकाओंके हाथसे छुटकारा पानेकी इच्छासे उसने यह पैशाचिक कार्य कियेथे, उस संकटसे तो भी वह न छूटा, उन चिन्ता और शंकाओंसे छूटना तो दूर रहा वरन वह उनके काटनेसे और भी अधिक दुःखित हुआ; जितने दिन बीतने लगे, उतने दिनतक बराबर अधीर होतारहा, उस विषैली चिन्ताकी तीक्ष्णता जितनी बढ़ने लगी उतना ही उसका धीरज घटने लगा, धीरे २ वह चिन्ता इतनी प्रबल होगई कि वह कुछ भी स्थिर न रहसका, सोते, जागते, किसी अवस्थामें भी निश्चिन्त नहीं रहता था, घोर रात्रिके दूसरे पहरके समयमें, वह अपने आत्मीय और कुटुम्बियोंको देखताथा मानो उनके पिता भ्राता और पुत्रोंके मर्मभेदी वचन उसको सुनाई आतेथे, मानो उन सताए हुओंकी आत्मा तीक्ष्णस्वरसे कह रहीहै "हे पापी ! हमको मारकर क्या तू निश्चिन्त होकर राज्य भोग कररहाहै ? देख दुराचारी ! तेरे मस्तकपर गिरनेके लिये भयंकर यमराजका दंड तयार होरहा है ।" इसी समय औरंगजेब आश्चर्यमें होजाता, और अपनी शय्यासे उठकर गृहसे बाहर जानेकी चेष्टा करता; परन्तु जा नहीं सकता, उन्हीं पैरोंसे लौटकर फिर आकर रहजाता, कालकी विधिके नियमानुसार जिस समय धीरे २ उसकी परमायु अन्त होनेको हुई, जिस समय भयंकर यमराजका दंड धीरे २ उसके सामने आनेलगा; उस समय उसको महा कष्ट होनेलगा; उस समय दुःखित होकर फिर वह अपनी रक्षा न करसका, आत्मरक्षा न करनेके कारण दुःखित और निराश हो [illegible] निकालता! "यह क्या है," जिन लोगोंको मैंने सताया है उन्हीं और [illegible] देखना [illegible] ।

चलागया; अपने नगरको जानेके पहिले जगतसिंहको पाँच स्थान उद्धार करके देदिया, और एक बडेमोलकी पद्मरागकी मणि उपहारमें देकर उनको आज्ञा दी कि चित्तौरके महलोंको पुनर्वार वनवाओ।

राणा जगतसिंहने छब्बीस वर्षतक राज्य कियाथा, यह छब्बीसवर्ष विमल शान्तिसे वीतेथे, इस दीर्घकालके राज्यमें एक मुहूर्तको भी शान्तिभंग नहीं हुई अथवा किसी प्रकारका विघ्न भी नहीं हुआ था, परन्तु भट्टकविजनोंके किसी काव्यग्रन्थमें जगतसिंहके राज्यका विस्तारित वर्णन नहीं पाया जाता। इसका कारण और कुछ नहीं केवल यहीहै कि मेवाडके भट्टगणोंको वीररस ही प्यारा था; वह हृदयको स्तम्भन करनेवाले वीररसका ही वर्णन करना अच्छा समझते थे; जिससे हृदय उत्साहित, उन्मादित अथवा स्तंभित हो, वही उनके काव्यकी प्रधान सामग्री थी, वह लोग जिस प्रकारसे वीररससे पूर्ण थे, उसीप्रकारकी अद्भुत चतुराई और अपनी लेखनीकी चातुर्यतासे उसको वर्णन करसक्ते थे; जगतसिंहके शान्ति पूर्णराज्यके समयमें शान्तिमय ऊंचे शिलपशास्त्रकी भलीप्रकारसे आलोचना हुई थी; और२ ऊंचे अंगके शिलाकी अपेक्षा उनके राजमें थवईगीरीकी विशेष उन्नति हुई, उदयपुरमें जो ऊंचे २ महल और अटारियें उनके नामसे वनीहुई देखीजाती हैं; वह समस्त स्थान आजतक भी उसी भावसे वने हुएहैं उन सवकी शोभा सुन्दरता तथा मनको हरण करनेवाली वनानेकी चतुराईको देखकर हृदय आनन्दके मारे एकवार ही प्रफुल्लित हो उठता है, उस समय मनही मनमें स्वयं यह प्रश्न उत्पन्न होता था कि जिसका हम पहले वर्णन करआयेहैं; अर्थात् पहले वर्णन कियेहुए उन कठोर उत्पात और अनिष्ट तथा विपत्तिके पडनेपर भी मेवाडके राजाओंने किस प्रकारसे वहुतसे खर्चवाले उन कार्योंको किया था। इस प्रश्नकी मीमांसा हमलोग पहिले ही अनेकस्थानोंमें कर आये हैं, इस कारण अव इसके विषयमें अधिक कहनेका प्रयोजन नहीं है, केवल इतना ही कहना ठीक होगा कि प्रजाकी हितैषिनी राजणीतिके न्यायानुसार चलनेसे सैकडों विघ्न विपत्तियोंको दूर करके राज्य सुखके यथार्थ ऊंचे स्थानपर पहुँच सकता है।

महाराणा जगतसिंहने जिन कई एक स्थानोंकी प्रतिष्ठा की थी. उनमेंसे जगनिवास और जगमंदिर यह दोनों वडे प्रसिद्ध हुए. पीछोला सरोवरके द्वीप हृदयमें जगमंदिर और उसके ऊंचे किनारेपर जगनिवास प्रतिष्ठित हैं. यह दोनों ही स्थान सुन्दर और नेत्रोंको तृप्त करनेवाले अलंकारोंसे शोभायमान हैं. उनके समस्त अंग संगमर्मरके वनेहुए हैं, स्तम्भः व स्नान करनेका स्थानः उनके स्त-

शीतल जलके कण, पवनमें मिलकर शीतका अनुभव करातेहैं, वह मारुत उस सरोवरमें खिलेहुए कमलोंके परागको उड़ाकर सरदारोंके ऊपर मंद २ गतिसे पंखा करता है, उस शीतल मंद सुगंधवाली पवनके लगनेसे और उस मधुर वाणीसे भट्टलोगोंके गानको सुनते२ सब सरदारलोग सुखको देनेवाली निद्राके गोदीमें शयनकर सुख पातेहैं; फिर जवतक सूर्यभगवान् अस्ताचलको नहीं जाते तबतक सरदारोंकी नींद नहीं टूटती; जब फूलोंके आसव तथा अफीमका नशा धीरे२ दूर होजाताहै, तब उसी समय धीरे२ अपने नेत्रोंको खोल देतेहैं, नींद टूटते ही अपने नेत्रोंके सामने जिस मनोहर चित्रको देखते हैं, इससे वह यथार्थ ही स्वर्गकी समान सुखको अनुभव करते हैं, निद्राकी कोमल गोदीसे उठकर उस हृदयको मोहित करनेवाले चित्रको देखते ही उनको वह स्वप्नकी समान जान पड़ताहै, वह जिस ओरको नेत्र उठारकर देखते हैं, उसही ओर उनको संसारकी अनुपम सुन्दरता दिखाई देती है, अस्ताचलको जातेहुए सूर्यभगवानकी किरणोंकी माला पेशोला नदीके उज्ज्वल जलपर और उसके किनारेके वृक्षोंके ऊपर तथा सामनेके आरावली पर्वत मालाके शिखर पर अथवा उसके कोनेमें वसीहुई ब्रह्मपुरीकी चोटीपर गिरकर अनेकप्रकारके रंगोंसे विहार करती है, तब उस सम्पूर्ण चित्रका नकशा पेशोला नदीके निर्मल जलरूपी दर्पणमें खिंचकर उस नीले जलमें हीरोंसे जडेहुए सहस्रों रेशमीन वस्त्रोंकी शोभाको विस्तार करताहै: नींदसे जागे हुए सरदारलोग इस अनुपम सुन्दरताको एकटक नेत्रोंसे देखते रहते हैं; वह शोभा जवतक उनके नेत्रोंको दिखाई देतीहै तबतक वह उस पेशोलाके निर्मल किनारेको नहीं छोडते इससे उनका हृदय बढता है उनकी चिन्तारूपी सहेली गिह्लौटके वीरोंकी वीरताको सूचित करती हुई भांति२ के रंगोंके चित्र उनके बढेहुए हृदयके ऊपर खैंच देती है, फिर जब धीरे २ सूर्यभगवान् अस्त होतेहुए संसारकी उस सुन्दरताको हरण करके अन्तर्द्धान हो जाते हैं, तब वह संध्यावंदनादि कृत्योंको समाप्तकर अपने २ घरोंको चले जाते हैं, और अस्त्रोंकी झनकार, और मतवाले वीरोंके हृदयको उत्तेजित करनेवाले सिंहनादके बदले शान्तिके उस मनोहर शब्दको सुनते २ सिसोदिया वंशावतंस राणाजी तथा सरदार लोग यह दोनों ही निश्चिन्त होकर विश्राम करके सुखको भोगते हैं ।

महाराणा जगतसिंह एक अति सन्मानित राजाथे मुसल्मानोंके निर्दयाचरनसे मेवाडके हृदयमें एक बडा भयंकर घाव होगया था. और मुगलोंके कठोरतासे मेवाडके

सैकडों धिक्कार देतेथे। इस समय उसी औरंगजेबको भारी तलवार दिखाहुआ देख-कर उन्होंने तलवार हाथमें ले दृढ प्रतिज्ञा की। जिस दिन उन्होंने इस महान्संकल्प प्रतिज्ञाको हृदयमें स्थापन किया. उसी दिनसे मुगलोंके साथ बहुतसे युद्ध करनेलगे. इन सभी युद्धोंमें राणाजीकी असीम वीरता और प्रचंड वीर्यमत्ताके साथ समस्त प्रताप दृढतासे प्रकाशमान होगयाथा। विदेश सेनाकी सहायतासे अत्यन्त बल-वान हुआ औरंगजेब भी इन युद्धोंमें कईबार परास्त हुआ था. यहांतक कि कई बार उसका प्राणतक संकटमें पडगयाथा. नहीं कहसकते कि वह अपने केवल पुण्यकी सहायताके कारण भयंकर कारागारकी पीडासे बचागया। जिस तलवारको हाथमें लेकर तेजस्वी महाराणाने भयंकर औरङ्गजेबके विरुद्ध समरमें पहिले अपनी प्रचंड तीक्ष्ण तलवारको निकालाथा. उसका वृत्तान्त संक्षेपसे नीचे प्रकाशित कियाजाताहै ।

सनको अपने अधिकारमें करनेका यत्न करने लगे। आपसके इन झगडोंसे राज्यके वीचमें जो भयंकर अग्नि उत्पन्न हुईथी उससे समस्त भारतभूमि तप गई और वहुतसे अभागे पतंगकी समान उसमें भस्म होगये थे, अपना स्वार्थ सिद्ध करनेकी अभिलाषासे बादशाहके चारोंपुत्र राजस्थानके सम्पूर्ण राजाओंसे सहायता माँगने लगे; उस उपद्रवके समय बादशाहके चारेपुत्रोंने एकसाथ ही महाराणा राजसिंहसे सहायता मांगी परन्तु उन्होंने केवल दाराका पक्ष लिया, दारा सबसे बडा पुत्र था, परंपराकी रीतिके अनुसार वही पिताके राज्यसिंहासनपर बैठनेके योग्य था, उस योग्यताका समर्थन तथा मंडन करनेके लिये राजसिंहकी सम्मतिको मान राजस्थानके समस्त राजा दाराके झंडेके निकट आयकर खडे हुए, परन्तु इनलोगोंने कुअवसरमें औरंगजेबके विरुद्ध खड्ग ग्रहण किया था; उनकी यह अभिलाषा सफल न हुई, फतेहाबादकी रणभूमिमें केवल एक औरंगजेवकी ही भुजाओंके बलसे दाराके संपूर्ण उद्योग व्यर्थ होगये, उस समय दारा, शुजा और मुराद इन सभीके मस्तकपर कठोर वज्र गिराथा।

फतेहाबादके युद्धमें विजयलक्ष्मी औरंगजेबको ही प्राप्त हुई; उसके भाग्यका मार्ग उत्तम रीतिसे साफ होगया था, जो लोग उस मार्गके वीचमें कंटककी समानथे, औरंगजेवने तलवार हाथमें लेकर उन्हींको दूर करनेकी प्रतिज्ञा कीथी, उसकी वह प्रतिज्ञा शीघ्रही पूर्ण हुई कारण कि अपने पिता भ्राता वंधु बांधव और पुत्रतकके हृदयका रुधिर निकालनेमें औरंगजेवने भी कसर न कीथी भयंकर दुराकांक्षा और राज्यके लालचसे उसने जो घिनौने और पैशाचिक कार्य कियेथे, उनका ध्यान करते हुए भी हृदय कांपता है उस भयंकरी कुबुद्धिसे उत्तेजित होकर उसने यदि एक मुहूर्तके लिये भी अपने क्षण भंगुर जीवनका विचार किया होता अथवा तैमूरके वीरवंशकी होनहार अवस्थाका एकवार भी विचार वह करता तो अवश्य समझ सकता था कि मैंने अपने हाथसे ही अपने मंगलमय वंशवृक्षकी जडमें कुल्हाडी मारी है।

तैमूरवंशावतंस बाबरने राज्यकी रक्षा करनेवाली जो नीति चलाई थी, अहंकारी औरंगजेब यदि उसीके अनुसार चलता और अपने वंशवालोंको भी उसीके अनुसार चलाता, तो मुगलबादशाहतकी शीघ्रही ऐसी दुर्दशा क्यों होजाती ? यदि ऐसा होता तो सत्यसन्ध प्रजावत्सल शाहजहां बादशाहका शोभायमान "मयूरासन" (तख्तताऊस) आजतक दिल्लीके शीशमहलमें विराजमान होता; परन्तु दुराचारी औरंगजेबने पापके मोहमें पडकर अपने आपने ही अपने पांवमें कुल्हाडी

कर्तव्यकार्यको देखकर परम हितैषी पुरोहित अत्यन्त ही आनन्दित हुआ: और एक मुहूर्तको भी विलम्ब न करके मेवाडकी ओर चला, ठीक ही समयमें महाराणा राजसिंहकी सभामें पहुँचकर प्रभावतीकी लिखीहुई चिट्ठी दी. वह पत्र आदिसे अंततक सुन्दर हृदयभावसे पूर्ण था. इस कारण उसमेका एक छोटा भाग नीचे लिखते हैं: अपने मनके भावको आदिसे अन्ततक वर्णन कर पत्रमें सबसे पहले लिखा था कि "महाराज! क्या राजहंसीको बगलेकी सहेली होना होगा? अथवा पवित्र राजपूतकुलकामिनी म्लेच्छकी अंकशायिनी होगी? महाराज! मैं आपसे निश्चय कहती हूं कि जो आप इस विपत्तिसे उद्धार नहीं करेंगे तो मैं अवश्य ही आत्मघात करके प्राणोंको त्याग कर दूंगी," इस सुन्दर पत्रके गंभीर और तीक्ष्णभावको जानते ही महाराणा राजसिंह बाणलगे शेरकी समान एक साथही तयार होगये, उनके शरीरकी प्रत्येक नसोंमें मानो किसीने गरम लोहेकी शलाका लगादी, दारुण क्रोधके मारे उनका शरीर कांपने लगा. एक राजपूतकुलकी कन्याके ऊपर यवनोंके ऐसे अत्याचारको जानकर कौनसा

समझने लगे, इस बातका कठोर उदाहरण हिंदुओंका वैरी औरंगजेब था, यह तातारी स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआथा; उसका शरीर तातारके रुधिरसे पुष्ट था, वह राजपूतोंमेंसे किसीका भी पक्ष नहीं करता था; इसकारण राजपूतलोग भी उसकी कुछ सहायता नहीं करते थे, उसने तो अपने भाई और कुटुंबियोंके रुधिरको पान कियाथा, अपने धर्मात्मा पिताको राज्यसिंहासनसे उतारकर स्वयं राज्यपर बैठनेका उद्योग करता था, इसकारण किसी राजपूतने भी उसकी सहायता न की। सहायता करनी तो दूररही बरन उसके उद्योगको व्यर्थ करनेकी अभिलाषासे संपूर्ण रजवाड़े भी उसके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये रणक्षेत्रमें आये थे, इसका क्या कारण था? इसका कारण और कुछ भी नहीं था केवल उस यथार्थ नीतिका अभाव था, औरंगजेब स्वयं ही उस महानताके अभावको भली प्रकारसे समझ गया था, वह अभाव ही उसके राज्यमें अग्निस्वरूप होकर उठाथा, औरंगजेब भी इस बातको समझता था इसही कारणसे अंतमें उस नीतिका अनुसरण किया था, उसके उस अनुसरणका फल—शाहआलम, अज़ीम और कामवक्श हुए थे, परन्तु उसके कठोर अत्याचार और हिन्दू द्वेषने उसका नाश करदिया था, उसी पापवृत्तिके वश होकर उसने इस नीतिके ग्रहण करनेको भी निष्फल कर दिया।

पिताके राज्यको अपने अधिकारमें करनेकी इच्छासे चारों भाइयोंने जो सम्पूर्ण भारतभूमिमें महा अग्नि जलाई थी, उसका विचार करना मेवाडके इतिहासका काम नहीं है, इसही कारणसे यहांपर उसका वर्णन नहीं किया गया, उस वृत्तान्तको इतिहासके समस्त जाननेवाले जानते ही होंगे। औरंगजेबकी कुदृष्टिसे देखे जानेके कारण अभागे दाराकी महानता, मुरादकी तेजस्विता और शुजाकी कर्मचतुरता भस्म होगई थी: भारतके इतिहासको जाननेवाला प्रत्येक मनुष्य इसबातको जानताहै, इस कारण उस वृत्तान्तको यहांपर लिखना आवश्यक नहीं है। हम उस विषयको छोडकर यथार्थ विषयका निर्णय करनेके लिये आगे बढ़ते हैं।

बादशाह औरङ्गजेबके समयमें हिन्दुस्थानमें बहुतसे प्रसिद्ध राजा एकसाथही हुए थे, इस बातको भारतके इतिहासमें एक नवीन चित्र कहा जासकताहै, समस्त भारतवर्ष-के इतिहासमें किसी अध्यायके बीच ऐसा चित्र और कहीं नहीं देखाजाता. आठ भागोंमें विभक्त इस बडे राजस्थानके प्रत्येक राज्यमें एक २ साहसी और पराक्रमी राजपूत विराजमानथा। वह समस्त भूपालगण तेजस्वी, वीर्यवान और मंत्रणामें कुशल थे। अम्बेरके राजा जयसिंह, मारवाडके जसवंतसिंह और उनके

कहा कि अरी बिहन! क्या तू भी अपनी बाईके साथ दिल्ली जावेगी। यह सुन वह दासी कुछ भी उत्तर न देकर पानी भरकर अपने घर गई, और सुनीहुई सब बात रूपवतीसे कही। इसपर वह राजकुमारी बडी शोकातुर हुई और विचार करने लगी कि अब मुझे क्या उचित है? पन्द्रहदिनमें बादशाह यहाँ आ खड़ा होगा, जो उस समयमें निषेध भी करूंगी तो क्या हो-सकेगा बादशाह मुझे बलात् ले जावेगा। अब क्या करूं कहां जाऊं? अब अपनी विपत्ति किसे सुनाऊं। हाय! इन तुर्कोंसे तो मैं सदा घृणा किया करती हूं, जिन तुर्कोंको अस्पर्शनीय समझती हूं उन्हीं तुर्कोंके साथ उन्ही धर्मशत्रुओंके साथ, अब मुझे स्पर्श करना पडेगा.हाय २ विवाह करना पडेगा। अरे रे!! मेरे इस जीवनको कोटि २ धिक्कार है। हाय मेरा यह दुर्भाग्य!!! जो मैं अभागिनी न होती तो क्या यह हृदयविदारी समाचार मुझे सुन पडता? हे ईश्वर! आपकी क्या इच्छा है? हे अनाथके नाथ! इस संकटमें मेरी लाज रखनेवाले केवल आपही हो। क्या करूं और कहां जाऊं ऐसा मार्ग आपही बतलाइये। मैं इन विधर्मी तुर्कोंसे कदापि विवाह न करूंगी यह तो निश्चित ही है पर हे घट २ के स्वामी! यदि आप क्षमा करें तो मैं आत्मघात करके आपकी शरणमें आऊं। जबतक इस देहमें प्राण हैं तबतक तुर्कसे ब्याह कर अपवित्र होना नहीं चाहती। इससे कुछ उपाय शीघ्र सुझाइये १५ दिनमें बरात चढकर आजावेगी, इस अन्तरमें जो कुछ कर्तव्य हो करना चाहिये। इसी समय राजकुमारीने अपने काकाको बुलाकर कहा। जिस भयसे मैं संसार त्याग एकान्तवास कर ईश्वर भक्तिमें अपना समय बिताती हूं और परपुरुषका मुखतक नहीं देखती हूं और पूजा पाठमें ही दिन बिताती हूं वही भय मेरे लिये उपस्थित हुआ है।

—मुल्लाजी ! मेरे पाससे आप किस बातकी आशा करतेहैं; क्या आप न्यायके अनुसार इच्छा करसकते हैं, कि मैं आपको अपनी सभाके बीचमे एक श्रेष्ठ आसनपर स्थापितकरूं ? कर्तव्यके अनुसार मुझको कहना पडताहै कि यदि आप मुझे उचित शिक्षा देते, तब मैं आपके उस कार्यका अनुगृहीत रहता; कारण कि मेरे मनमे ऐसा विश्वास था कि जितना ऋणी मनुष्य पिताकाहै उतना ही ऋणी यदि उपयुक्त शिक्षा मिलै तो गुरुके निकट होसकताहै, परन्तु उस प्रकारकी शिक्षा तो आपने मुझको नही दी भूगोलकी शिक्षा देनेके समय आपने मुझसे कहाथा कि जिसको फरंगिस्तान कहतेहैं, वह अत्यन्त ही सामान्यहै, परन्तु मैं नही समझसका कि वह कैसा साधारण है । जिस महाद्वीपके एकांशमे तो पुर्टगालका राजा श्रेष्ठहै, तत्पश्चात् हालैण्ड और तिसके पीछे इंगलैंडके राजाको नीचेके आसनपर स्थित कहकर वर्णन कियाहै, फिर फ्रांस और अन्दुलूशिया आदि देशोको आपने साधारण राज्य बतायाहै, आपकी दी हुई शिक्षासे यही ज्ञातहुआ कि उक्त राजाओंसे हिन्दोस्थानके कुल बादशाह अच्छेहुए । तथा इनमें हुमायूं, अकबर, जहांगीर, और शाहजहां तो यथार्थ ही सौभाग्यवान, महानुभाव, विश्वविजयी, और पृथ्वीका पालन करनेवाले थे । तथा फारस, उजबक कासगर, तातार, कात, पेगू, चीन और महाचीनके बादशाह भी हिन्दुस्तानी बादशाहोका नाम सुनकर थरथर कापतेहैं। वाह !" क्या भूगोलहै ? इसकी अपेक्षा यदि मुझे इस प्रकारकी शिक्षा देते कि जिससे मैं सम्पूर्ण भिन्न २ देशोको भलीप्रकारसे जानसकता, जिससे सम्पूर्ण देशोके राजाओंकी युद्धनीति, आचार, व्यवहार, धर्मनीति, प्रजापालन और अर्थनीतिको सीखसकता, फिर सारगर्भ इतिहासोको पढकर उन सबका उत्थान, उन्नति, और पतन, किस प्रकार घटनाकी विचित्रतासे राज्योंमे अदलबदल तथा गडबड होजातीहै, यदि आप यह शिक्षा मुझे देते तो मैं उचित शिक्षा पाता, अच्छा ! इन सब बातोको तो दूर रहनेदो हमारे जो पूजनीय पिता और पितामह इस राज्यके अधीश्वर थे कि जिन्होने मुगलराज्य स्थापन किया था, उन्होने कौनसे उपायसे इतने बडे भारी राज्यमे जय प्राप्त कीथी, दुःखका विषय है कि आपने इस विषयमे मुझे कुछ भी शिक्षा नही दी और अधिक तो क्या कहूं, आपने तो उनके नामतक भी मुझे न बताये, आपकी इच्छा तो मुझे केवल अरबी भाषामे लिखना पढना सिखानेकी थी, जिस भाषाके सीखनेमे दश बारह वर्षका प्रयोजन था उसी भाषाके [illegible] आपने इतना अधिक समय लगाकर जो उपकार मेरे साथ किया था, निस्सन्देह मैं उसके लिये [illegible] अनुगृहीत हूं. जो लोग राजाके प्रतिवेशी हैं, जिनके साथ दिनरात [illegible] करना होताहै [illegible] भी काम नहीं चलसकता, उस भाषाकी शिक्षाकी आवश्यकता [illegible] आवश्यकता है कि जिसके साथ हमारा कुछ भी सम्बंध नहीं है. [illegible] व्याकरण और व्यवहार शास्त्रको जानकर ही [illegible] !

जिसका समय इतना मूल्यवान है. जिसके [illegible] ऐसे [illegible] प्रयोजन नहीं है ! —[illegible] विचार करके [illegible] होजाय । [illegible] ! क्या [illegible] बुद्धि [illegible] होती है. [illegible] और [illegible] [illegible]

ब्याह लाओ। क्या राजहंसिनी राजहंसको छोडकर गीध [गृद्ध] के साथ जा सकती है ? इस लिये उठो तइयार होओ. और बरात लेकर राजकन्या ब्याह लाओ, अब देर करनेमें भलाई नहीं है।

यह सुनकर राणाजी चूडावतकी ओर लक्ष कर बोले राजकविने जो कहा सो ठीक है। हमको अपनी प्रतिष्ठाकी रक्षाके लिये अवश्य जाना चाहिये, परन्तु एक विघ्न दीख रहा है सो उसका क्या उपाय किया जावे ? हम अपनी सेना लेकर राठोरनीको लेनेके लिये चलेंगे. परन्तु इतनेमें बादशाह स्वयं अपना लश्कर लेकर आन पहुँचेगा और घोर युद्ध होगा। यदि उस लडाईमें बादशाहकी अधिक सेनाके आगे हम सब खप गये तो हमारा मनोरथ पूर्ण न होने पावेगा, और उस समयमें भी राठोरनीको आत्मघात करना पडेगा. इसका क्या प्रबंध किया जावे ? चूडावत बोले कि महाराज! मेरा विचार आपसे निवेदन। आप थोडेसे मनुष्य लेकर राठोरनी ब्याहनेके लिये रूपनगर जावें और मैं समस्त शिशोदिया दलको साथ ले बादशाहको रोकनेके लिये रूपनगरसे आगे जाता हूं. और आगरा व रूपनगरके बीचमें राह रोककर बैठूंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आप ब्याह

लिये काम आतीहै, औरंगजेब अपना स्वार्थ सिद्ध करनेके लिये ही उसका व्यवहार करताथा; संसारमें उसको किसीका विश्वास नहीं था; वह अपने प्यारे मित्रोंसे भी अपने अभिप्रायको नहीं कहताथा; परन्तु उसकी दुराकांक्षा तो सबसे ही अधिक प्रबल होगईथी, अंतमें इसीने उसका नाश करदियाथा; औरंगज़ेबने सैकडों हज़ारों पाप कियेथे कि जिनका विचार करते ही हृदय कॉप उठताहै, यदि वह ज्ञानकी सहायतासे अपनी सामर्थ्यको चलाता तो निश्चय ही उस समयके राजाओंमें शिरमौर समझाजाता; परन्तु हाय! उसकी कुबुद्धिने ही उसको पापके पंकमें डालदिया और इसी कारणसे अंतमें उसकी बुद्धि नष्ट होगई, अंतमें उसकी असीम सामर्थ्य उसका ही नाश करनेके लिये प्रबल होकर उसे पीडा देनेलगी थी।

अपने बन्धु बान्धव और अपने मित्रोंके हृदयको अपने हाथसे ही चीरकर औरंगजेब समझाथा कि 'ज़िन्दगीभर बेखटके बादशाहत करूंगा; परन्तु उसकी यह आशा विफलथी, वह मनमें विचारताथा कि बेखटके रहूंगा परन्तु वह मन ही उसके आधीन नहीं था, यदि वह अपने चित्तकी वृत्तिको रोकता, तो क्यों इस भयंकर कुबुद्धिके सोतेकी कीचडमें अपना पैर देता, यदि ऐसा होता तो वह मनुष्य होकर भी क्यों पशुओंकी समान कार्य करता? उसने पिता भाई और पुत्र इत्यादिको मार इस कठोर पापके भारको अपने शिर पर रखकर निश्चिन्त रहनेकी इच्छा कीथी, वह केवल उसकी विडम्बनामात्र थी, जो हो? वह सहस्रोंवार इच्छा करके सहस्रोंवार प्रतिज्ञा करके भी निश्चिन्त नहीं रहसका, उसे परग २ पर भाँति २ की चिन्ताएं आय २ कर भयंकर पीडा देने लगीं, उसके साथ २ ही हृदयकी शांति जाने कहांको चलीगई, एक तो संसारमें किसीका विश्वास ही नहीं करताथा, और फिर तिसपर उसके चित्तकी वृत्ति बिगड गई; तथा पहले भावको वह वृत्ति सहस्र गुणा बढाने लगी, साथ ही साथ हृदयकी अशांति उसको भयंकर पीडा देकर दुःखित करने लगी, मुहूर्त २ में भांति २ की चिन्तायें और संदेह उत्पन्न होने लगे; मानो सभी संसार उसका शत्रुहै, मानो उसके इष्ट मित्र और मंत्री इत्यादि सभासद लोग सभी मिलकर उसके विरुद्ध कपटजाल बनारहेहैं. यह सम्पूर्ण चिन्ताऐं जितनी ही बढने लगी, उतना ही वह व्याकुल होने लगा; इस अवस्थामें जीवनका व्यतीत करना केवल विडम्बनामात्र था, बुद्धिमान औरंगजेब उसको भलीभांति समझगयाथा, इस कारण हृदयकी शान्तिका उपाय खोजने

मरता है तो कौन बचालेता है. इस लिये युद्धके लिये जातेहुए किसीका मोह करना या सांसारिक सुखोंकी वासना मनमें रखना उचित नहीं है. इसलिये किसी तरहका ध्यान न रखकर सुखपूर्वक युद्धके लिये पधारिये और अपने स्वामी (महाराणाजी) का कार्य निश्चिन्ततासे करिये। आप होनी और ईश्वरेच्छासे रणमें विजय मिलेगी तो जीते हुए संसारमें हमको सब सुख प्राप्त होगा और कदाचित जो युद्धमें आप काम आये तो पीछे जो स्त्रीका कर्तव्य है उसे मैं भलीभांति जानती हूं, हूं। रणक्षेत्रमें मृत्यु मिलनेपर अनन्त काल पर्यन्त हम स्वर्गमें आनन्द सुख भोगेंगे। सो हे प्राणनाथ! सहर्ष रणक्षेत्रमें पधारिये. और जय पाकर पीछे आइये या वीरता पूर्वक युद्धमें काम आइये। हम दोनोंकी भेट स्वर्गमें होगी ही। आप अपने कुलके योग्य सुयशको रणमें प्राप्त कीजिये और पीछे सती स्त्रीको अपना धर्म किस प्रकार पालना चाहिये यह मुझे ज्ञात ही है। मैं आपके पीछे अपने धर्म पालनमें किसी बातकी त्रुटि और विलम्ब न करूंगी।

इस भांति बातें होते २ हाडी रानीसे चूडावत विदा होनेको ही थे कि रानीने कहा "महाराज! विजय पाकर शीघ्र लौटना। आप अपने कुलका धर्म जानते हैं इस लिये विजय कामनासे युद्धमें प्रवृत्त हूजिये और हमारी किसी बातमें मन न रखकर रणक्षेत्रमें केवल शत्रुके संहार करनेमें ही ध्यान लगाइये।"

हिन्दुओंका मान और मर्यादा जाती है, कुल धर्म और जाति गौरव पातालको चला चाहताहै, आज भारतवर्षमें प्रलयका समय आ पहुँचाहै, कौन इस प्रलयके समयमें इन अभागे हिन्दुओंको यमराजके हाथसे बचावैगा ? कौन इस कुबुद्धिमान दानवके हाथसे सहाय हीन भारत सन्तानोंका उद्धार करैगा कोई भी नहीं ? जो रक्षा करनेवाला है यदि वही भक्षण करनेवाला होजाय, जिसके ऊपर प्रजाकी मान मर्यादा है, जातिधर्मका विचार स्थित है, यदि वही अपने परायेका विचार कर सजाति और विजातिके मनुष्योंको अलग २ नेत्रोंसे देखकर अपने हृदयमें पत्थरको बांधे और अपनी प्रजा तथा अपने आश्रितोंको पीडित करे तो वह निःसहाय प्रजा किसके सामने जाकर खडी होगी ? किसके निकट जाकर सहारा लेगी ? अपना और पराया, सजाति और विजातिको न विचारकर सबको बराबर नेत्रोंसे देखना राजाका अवश्यकीय कर्त्तव्य है, और जो इन कार्योंके पालनकरनेसे विमुख है वह राजानामके योग्य नहीं, राजसिंहासन, उसके छूनेसे भी कलंकित होताहै, राजसिंहासन पर बैठकर जो हिताहितका विचार नहीं करता, और गर्व, मोह, क्रोध, तथा अहंकार जिसके हृदयमें भराहुआहै, और जो अपनी विवेकशक्तिको खोकर क्रूरधर्मकी क्रूर बुद्धिसे परिचालित होताहै, "वह राजा नहीं है, वरन राजाके नामको लजानेवालाहै; वह प्रजाके सुखरूपी सूर्यका हरणकरनेवाला राहुहै, देशके भाग्याकाशको घेरनेवाला प्रचंड धूमकेतु है; उसके असंख्य पापोंसे उसका राज शीघ्रही पातालको चलाजाताहै; विधाताके सूक्ष्मदर्शनसे उन अत्याचारी पापीके मस्तकपर कठोर यमराजका दंड गिरताहै।"

मुगल कुलपांसन पाखंडी औरंगजेबके कठोर अत्याचारसे सम्पूर्ण राज्यमें अराजकता उत्पन्न होगई. पीडित हुए हिन्दुओंका भागना और आत्महत्या करनेसे नगर, ग्राम और सम्पूर्ण बाजार एक साथ ही सूने होगये। तथा सब स्थान श्मशानकी समान दिखाई देने लगे बनियोंके न होनेसे दूकानोंमें चोरोंने अपना निवास किया, और बेचनेवालोंके न होनेसे सब बाजार सूने दिखाई देने लगे. किसानोंके चलेजानेसे खेती वनकी समान होगई. इन भयंकर उपद्रवके समयमें बादशाहने देखा. कि राज्य अनेक स्थानसे हीन अवस्था युक्त होगयाहै, खजाना खाली होगया अब राजकर्मचारी लोग कर नहीं देसकते. जिसके पास जाकर कर मांगे: जिसके पास जांय उनसे ही अवसर पावें. [illegible] अत्याचारसे घर सूने होगये। जब इन पापीने धन उपार्जन करनेका कोई उपाय न देखा तो [illegible] सम्पूर्ण हिन्दुओंके ऊपर मुण्डकर (जि-

मार्गमें सब लोग छावनी डालकर ठहर गये। डेरे डालनेके पीछे चूड़ावतने बादशाही लश्करका खोज लेनेके लिये कुछ मनुष्य भेजे। उन मनुष्योंने आकर समाचार सुनाया कि बादशाह हाथीपर चढ़ा आरहाहै और साथमें बहुत दल लाया है। यह सुनकर चूड़ावतने अपने वीरोंको शस्त्र बांध घोड़ेपर सवार होनेकी आज्ञा दी। सबलोग बादशाही सेनासे भिड़नेके लिये तय्यार होकर खड़े होगये। इतनेमें बादशाही लश्कर आन पहुँचा। मार्गमें दूसरा दल खड़ा देख बादशाहने पता लगवाया कि यह किसका दल है और किस लिये मार्ग रोक रहा है? इसपर उसे विदित हुआ कि मेवाड़के चूड़ावत सरदार अपनी सेना लेकर मार्ग रोक रहे हैं। तब औरंगजेब बादशाहने चूड़ावतको कहलाया कि आप हमको मार्ग दें। हम लड़ने नहीं आये हैं। हमको उदयपुर नहीं जाना है। हम तो और जगह जा रहेहैं सो आपको मार्ग रोकनेमें कुछ लाभ नहीं है। चूड़ावतने कहला भेजा कि इसप्रकार मार्ग नहीं मिल सकता है। हम क्षत्रिय हैं, तुमसे डरनेवाले हम नहीं हैं, तुमको आगे जाना है तो हमसे भिड़कर खुससे चले जाओ; बादशाहने कहलाया कि व्यर्थ तुम हमारे कार्य्यमें किसलिये विघ्न डालते हो? हम तुम्हें बिना हानि पहुँचाये ही चले जानेको कहतेहैं। वृथा दीपकमें पतंगकी भांति तुम क्यों गिरना चाहते हो? क्यों अनेक हजारों शूरवीर राजपूतोंको निष्प्रयोजन कटवाना चाहते हो? परन्तु क्या इन धमकीसे कहीं चूड़ावत डरनेवाले थे। यह बादशाहके रोकनेके लिये आयेही थे सो क्या सुख-पूर्वक बादशाहको रूपनगर पहुँचजाने देते जब किसीभांति चूड़ावतने न माना

–पढ़नेसे आश्चर्य होताहै अपने अनुतापकी यन्त्रणासे पीडित हो अनित्य संसारके सम्पूर्ण मूल तत्त्वका वर्णन कियाथा उनके पढनेसे अत्यन्त पापियोका हृदय भी कांपजाताहै। हाय ! यदि अनर्थकी देनेवाली बुद्धि उसको उत्पन्न न होती तो नही कहसकते कि वह इस संसारमे कितनी प्रतिष्ठा पाता।

"शाह आजिमशाहके पास;–

"हे पुत्र ! आशीर्वाद देताहू कि कुशलसे रहो, मेरा मन वहुत दिनोसे तुममे लगरहाथा । अब मैं वृद्ध होगयाहू, ज्वर मुझे दिन २ दुर्वल करडालताहै, शान्ति और सामर्थ्य शरीरको धीरे २ छोडे जारहीहै,मैं अकेला ही अपरिचितकी समान इस संसारमे आया,और अकेलाही अपरिचित की समान यहासे विदा लेताहू मैं कौन हू ? और कहासे आया, कहा जाऊंगा, इसको कुछ भी नही जानता, सामर्थ्यकी धूमधामसे यह जो समय वीत गयाहै वह केवल दुःख और यन्त्रणाहीको पीछे रख गयाहै; यह बादशाही मेरे हाथमे नही सौंपीगई थी, न मैंने इसकी रक्षा ही की "हाय ! मेरा ऐसा अमूल्य समय वृथा ही व्यतीत हुआ, मेरे हृदयमंदिरमे एक विवेक नामका रक्षक था; परन्तु मैं अभागा हू? मैं इन अंधे नेत्रोसे उस प्रज्वलित गौरवकी प्रभाको न देखसका, जीवन कभी स्थाई नही है; प्राण वायुके चलेजानेपर फिर कुछ भी नही रहता, और भाग्यको सम्पूर्ण आशा भरोसा नष्ट होजाताहै, यद्यपि मुझे ज्वरने छोडदियाहै परन्तु इस शरीरमे मांस और हड्डियोंके सिवाय और कुछ भी न रहा,यद्यपि मेरा पुत्र कामबक्स विजयपुरकी ओरको गयाहे और वह इस समय है भी निकट ही, पर हे वत्स! तुम सबसे ही अधिक निकट हो,शाह आलम वहुत दूर है,और मेरा पोता आजिम-हुसेन विधाताकी विधिके अनुसार भारतवर्षके निकट आ पहुँचाहै, उसकी सेना और अनुचर सभी हमारी समान निःसहाय और शंकित हैं,यह सभी मेरी समान पीडित और कबूतरकी समान चञ्चल हैं, वह अपने स्वामीके पाससे विछडगये हैं, इस समय उनका कोई स्वामी है या नही यह किसीको विदित नही है ।

मैं इस ससारमे कुछ भी साथ लेकर नहीं आया,तथा मनुष्यकी दुर्बलताके अतिरिक्त और कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाऊंगा,मैं अपनी मुक्तिके विषयको विचारकर कैसी पीडा पारहाहू, उसकी चिंता करके कितना शंकित होरहाहूं, यद्यपि उस जगदीश्वरकी दया दाक्षिण्यता और करुणाके ऊपर मेरा भरोसा है,परन्तु क्या करूं,मैं अपने कार्योंको विचारकर उन शंकाओंको कुछ भी अपने हृदयसे दूर नहीं कर सकता, परन्तु क्या होसकताहै,मैं चला जाऊंगा तब पीछे मेरी स्मृति कुछ भी बाकी नहीं रहैगी, तब तो जो भाग्यमे है वही होगा, मेरी शरीररूपी नौका अनन्तकालके समुद्रमे डूबी जारहीहै,इसकी रक्षा परमेश्वर ही करेगा, तो भी इस उपस्थितहुई अवस्थाको विचारकर निश्चय ही बोध होताहै.कि इस समय मेरे पुत्रोंको कुछ उद्योग करना अत्यन्त ही आवश्यक है,मेरा यह अन्तिम आशीर्वाद मेरे पोते वेदारबख्तसे कहना. मैं इस समय उसको देख नहीं सका परन्तु उसके दर्शनोकी अभिलाषासे अत्यन्त ही क्लेश पारहाहू ऐसा जानपडताहै कि [illegible] मुझे [illegible] बहुत दुःख पारहीहै, परन्तु कुछ कह नहीं सकता ईश्वर ही मनुष्यके हृदयके भावको समझसकताहै. विषयोंकी बुद्धिसे उत्पन्न हुई चिन्ता केवल उनके निरादरको ही उत्पन्न करतीहै। रुखसत ! रुखसत !

"[illegible]"

समान अत्यन्त घृणित कार्योंको करके भारतवर्षके दो प्रधान हिन्दू राजाओंके हृदय रुधिरसे अपने हाथोंको कलंकित करके नररूपी पिशाचका हृदय किंचित भी शान्त न हुआ, उसने इस लोम हर्षणकारी कार्यको करके निरपराधी और सहाय हीन जसवंतसिंहके छोटे २ बालकोंको कैद करनेकी अभिलाषा की, और जिससे यह अभिलाषा शीघ्रही सिद्ध होजाय, ऐसा उद्योग भी करने लगा, परन्तु उसकी वह पैशाचिक प्रतिज्ञा सिद्ध न हुई-कारण कि राठौर राजाकी सेनाके सामन्तलोग इस विषयको भलीप्रकारसे जान गये थे, और उन्होंने ऐसा उपयुक्त उपाय किया कि जिससे उन कुमारोंकी भली प्रकारसे रक्षा हो, उनके हृदयमें यह विश्वास दृढ था कि कठोर उत्साह तथा अपने प्राणोंको बिना न्यवछावर किये हुए राठौर राजा महाराज जसवंतसिंहकी विधवा रानी और उनके अनाथ पुत्रोंकी रक्षा इस दुष्ट बादशाहके हाथसे न होगी। इसी कारणसे उन्होंने इसके उचित उपाय किये थे। मारवाडके राजा जसवंतसिंहके बहुतसे पुत्र थे, उनमेंसे सबसे बडेका नाम अजित था, जिस समय महाराज जसवंत सिंहजी पाखंडी औरंगजेबकी तीक्ष्ण विद्वेषानलमें पतंगकी समान भस्म होगये थे, उससमय अजितकी अवस्था बहुत थोडी थी तथापि उसकी माताने अपने मनमें निश्चयकर लिया था कि इसको ही मारवाडके राजसिंहासनपर अभिषेकित करके फिर मैं आपही राज्यके सम्पूर्ण कार्योंको देखूं भालूंगी, इसी आशाको हृदयमें रखकर रानीजी, महाराज जसवंतसिंहजीके साथ सती नहीं हुई

अभिषेक होनेके समय राजाओंमें जो रीति की जातीहैं उनमें टीकादारे विशेष प्रसिद्ध है । बहुत दिनोंसे यह पुरानी रीति बंदसी होगईथी, इससे विदित होता-है कि राणाकुलकी एक प्रधान रीति इतने दिनोंतक छिपी पडीथी, आज महाराज राजसिंहने राजसिंहासनपर बैठते ही उस छिपीहुई विधिका उद्धार करदिया, अजमेरमें बहुत घोर मालपुरनामका एक नगर है राणाजीने उस वीर-प्रथाका पालन करनेके लिये उस मालपुरपर ही आक्रमण किया; और भलीभांति वीरताका परिचय दे उस नगरको लूटकर अपने स्थानमें लौट आये, फिर थोडेही समयके बीचमें इस विषयका समाचार वृद्ध शाहजहाँतक पहुँचा मंत्रियोंने इस वृत्तान्तको भांति २ के रंगोंसे चित्रितकर बादशाहके क्रोधको उत्तेजित करनेकी चेष्टा की; परन्तु बादशाहने उदारबुद्धिसे मुसकुराकर कहा कि "मेरा भतीजा * बालक है इसी लिये उसने यह काम बिना जानेबूझे कियाहै।"

राजपूतकुल गौरव वीर श्रेष्ठ प्रतापसिंहके साथ ही मेवाडकी वीरता एक प्रकारसे लोप होगईथी परन्तु इस समय महाराणा राजसिंहके सिंहासनपर बैठते ही उस वीरताका फिर पूर्ण प्रकाश होगया, शिशोदियाकुलके सरदार शान्तिकी कोमल गोदीको छोडकर तलवारको हाथमें ले आगे बढे । अब तो तलवारकी रगड तथा उन्मत्तहुए वीरोंके सिंहनादसे मेवाडभूमि बारम्बार काँपने लगी, महाराणा राजसिंह बाप्पारावलके योग्य वंशधर थे, शिशोदियाकुलके योग्य वीर थे, वह जैसे वीर थे, वैसेही तेजस्वी भी थे । भट्टग्रन्थोंमें अपने पूर्वपुरुषोंकी अलौकिक वीरताका वृत्तान्त पढकर वह शत्रुके हाथसे अपने देश और शिशोदियाकुलके गौरवको पुनर्वार उद्धारकरनेके लिये दृढसंकल्प हुएथे । इस समय यौवन अवस्थाके तीक्ष्ण उत्साहसे उन्मत्त होकर उस संकल्पके सिद्धकरनेका उपाय खोजनेलगे. जब प्रतिज्ञा, संकल्प और साहससे हृदय बँध जाताहै तब फिर कार्यके सिद्ध होनेमें कुछ भी विलम्ब नहीं रहता: राजसिंहका हृदय भी वैसे ही साहस और प्रतिज्ञासे बँधाहुआ था; इसही कारण उनका चिरकालका संकल्प सिद्ध होगया, वह अत्याचारी औरंगजेबसे आंतरिक घृणा करतेथे और उसके नामपर-

---

—(क) [illegible] उत्पन्न नहीं हुईथी, हां यह असम्भव नहीं कि इस [illegible] लियाहो, जब कि उसने साथ मरनेकी इच्छा की तब तो अवश्य ही [illegible] हुई होगी ।

* [illegible] बादशाह कहतेहैं कि [illegible]

कारण कि यही दोनों वीर इसके दो कांटे थे इस समय दोनों ही दूर होगये, इस कारण वह अपनी अभिलाषाको सिद्ध करनेका यत्न करनेलगा. परन्तु फिर भी एक तेजस्वी बलवान राजाने औरंगजेबके मार्गमें कांटे बिछाये थे. वह तेजस्वी वीर कौन था? महाराणा राजसिंहजीः जब बादशाहने देखा कि मैं निष्कंटक होगया तब घृणित "मुंडकर" को स्थापन किया. जब इस भयंकर करके बोझसे सम्पूर्ण हिन्दूजाति हाहाकार करती हुई आर्त्तनादसे पुकारने लगी. तब वीर्यवान राजसिंहके हृदयमें एक गंभीर प्रश्न उत्पन्न हुआ, उन्होंने विचारा कि "क्या आज भीष्म, कर्ण, भीम इत्यादिकी जन्मभूमि क्षत्रियोंसे हीन होगई? क्या विधाताने ही इस दुराचारी औरंगजेबको अमर करके इस संसारमें भेजा है? कभी नहीं. ऐसा तो हो ही नहीं सकता, मुगलोंकी दासतामें पडकर यह अभागी हिन्दूसंतान बहुत दिनोंसे हीन होगई थी. और अत्याचारी मुसलमानलोग अपने भयंकर पराक्रमसे इस भारतवर्षके भाग्यचक्रको पीसकर चले गये थे. परन्तु उनमेंसे किसीने भी ऐसे अत्याचार नहीं किये! "फिर भला भारतसंतानगण ऐसे कठोर अत्याचारोंको प्रसन्नतासे सहन करलेंगे?" इस प्रकारकी चिन्ता करके उन्होंने मुंडकर स्थापनके विरुद्ध कार्य करनेकी प्रतिज्ञा की और अतिशीघ्र बादशाहको एक लम्बा चौडा पत्र लिखकर अपनी इस प्रतिज्ञाको पूर्ण किया। यदि इस पत्रको संसारकी प्रेमिकता और मनुष्योंकी हितकारिता और उदार नीतिका तोरण उदाहरण कहाजाय तो भी ठीक होसकता है. इस भारी संसारके बीचमें इस प्रकारका पत्र कभी भी किसीकी लेखनीसे निकला होगा या नहीं इसमें भी संदेह ही होता है. सारांश यह है कि इस पत्रके किसी स्थानको भी पढनेसे मोहित होना पडता है।

सुनते ही भयके मारे सामन्तराजके प्राण व्याकुल होगये, वह कुछ भी स्थिर न करसके कि अब क्या करें, फिर धीरे २प्रभावतीने भी यह सम्पूर्ण समाचार सुना- और पिताके निकट आकर बोली कि इस विपत्तिसे बचनेका उपाय कीजिये, परन्तु राठौर सामन्त उस समय इतने हताश होगयेथे कि उनसे कोई उपाय न सोचागया । पिताको मौन देखकर प्रभावतीने स्वयं ही उपाय खोजनेकी प्रतिज्ञा की पहले तो अपनी उपस्थित अवस्थाको विचारकर देखा, कि मेरा कोई सहा- यक नहीं है, और न कुछ बल ही है, कारण कि पिता एक साधारण सरदार हैं तब क्या मारवाडके राजाके पास जाकर सहायताकी प्रार्थना कीजाय ? सो यह भी कैसे होसकताहै क्योंकि मारवाडके राजाको यदि बादशाहका वेतनभोगी कहाजाय तो भी ठीकही है, अतएव ऐसी अवस्थामें कौन हमारी रक्षा करैगा; कौनसा वीर तलवार हाथमें लेकर बादशाहके विरुद्ध युद्धकरनेके लिये तैयार होगा ? तो अब कोई भी उपाय नहीं है, म्लेच्छके ग्राससे राजपूतसतीकी धर्मर- क्षाका उपाय नहीं है, विष, छूरी,अग्नि, फाँसी,इन उपायोंके करनेसे फिर किसीके भी मुखकी ओर नहीं देखना होगा; प्रभावतीने विचारा कि जब कोई उपाय न मिलैगा तब इन्हींका आसरा लूंगी परन्तु उसको इन कठोर उपायोंका आश्रय करना नहीं पडा; जिस समय वह यह विचार कररहीथी कि उसी समय उसके हृदयमें एक नवीन चिंता उत्पन्नहुई, मानो किसी आकाशके देवताने धीरे २ उसके कानमें यह कहा कि "निराश न होना ? तुम्हारे उद्धारके करनेवाले मेवाडके राणा राजसिंह हैं" प्रभावतीका व्याकुल हृदय सावधान होगया; उसने उसी समय महाराणा राजसिंहजीके हाथसे अपने उद्धार होनेका निश्चय विश्वास करलिया ।

प्रभावती पहले ही महाराणा राजसिंहके गुणोंका वृत्तान्त सुनचुकीथी, इसी लिये उसके हृदयमें दृढ विश्वास होगयाथा कि राणा राजसिंह जैसे वीरहैं वैसे ही रसिकहैं. और विशेष करके स्त्रियोंके ऊपर तो उनका अत्यन्त ही प्रेम है। राजसिंहके गुणोका विचार करते २ प्रभावतीका हृदय उनके ऊपर धीरे २ आसक्त होनेलगा, फिर कुछ विलम्ब न करके उसने महाराणाने कहला भेजा कि यदि मुझे इस उपस्थित हुए संकटसे उद्धार करके मेरी मनोकामनाओं पूर्णकरनेमें समर्थहोंगे. तो मैं आपको अवश्य ही अपना पति बनाऊंगी. प्रभावतीने और किसीको विश्वासी न देखकर अपने पुरोहितजीको बुलाया और अपना समस्त वृत्तान्त सुनाय महाराणा राजसिंहके पास जानेको कहनेलगी। बालिकाके इस-

इस तेजस्विनी पत्रिकाने औरंगजेबकी क्रोधाग्निके लिये घीका काम किया, जिस समय महाराणा राजसिंहजीने रूपनगरके सामंतकी कन्या प्रभावतीको हरण करके क्रूर औरंगजेबके हृदयमें छिपीहुई क्रोधकी अग्निको भड़का दिया था, वही क्रोधाग्नि राजकुमार अजितसिंहको आश्रय देनेसे अत्यन्त बलढ़ती थी, परन्तु आज इस तीक्ष्ण प्रतिवाद भरेहुए पत्रको पढ़कर बादशाह अपनी क्रोधानलको न रोक सका, कारण कि उसकी वह तीक्ष्ण क्रोधानल वृथाभिलाषासे एकबार ही असह्य होगई थी। इस समय उसने अत्यन्त क्रोधित होकर मेवाड़-भूमिपर चढ़ाई करनेकी प्रतिज्ञा की और शीघ्रही भयंकर संग्राम करनेके लिये अपनी सेनाको तइयार होनेका हुक्म दिया। उसही दिन उसकी आज्ञाका

झनकारके शब्दसे और प्रचंड रणवीरोंके सिंहनाद करनेसे मेवाडभूमि फिरसे जीवित होगई; प्रभावतीके उद्धारको मुख्य कार्य समझकर महाराणा राजसिंहजी आगे बढे, और सम्पूर्ण सर्दार व सेनाको साथ लेकर एकबार ही रूपनगरकी ओरको चले, वह नगर आरावली शैलमालाकी तलैटीमें स्थापित था, महाराणा राजसिंह उस बडे विस्तारवाले स्थानको लांघकर तत्काल भयंकर विक्रमके साथ मुगलोंकी सेनाके ऊपर टूट पडे; बहुत देरतक दोनों दलोंमें घोर युद्ध होता रहा, परन्तु मुगल लोग राणाके प्रचंड विक्रमको न सहकर भलीभांतिसे दलित और परास्त होगये, इनमेंसे कितनी एक सेना तो बडे कष्टसे अपने प्राणोंको बचाय भाग गई, इस प्रकार मुगलोंके दो सहस्र घुडसवार थोडेसे राजपूत वीरोंके हाथसे दलित और विध्वंस होगये; महाराणा राजसिंह इसके पुरस्कारमें प्रभावतीको पाकर अत्यन्त आनन्दित हुए और अपने नगरमें आये। इनकी इस विपुल वीरताका वृत्तान्त सुनकर संम्पूर्ण राजपूत, राणाजीसे प्रीति करने लगे; प्रतापसिंहका योग्य वंशधर कहकर सहस्रों मुखसे धन्यवाद देने लगे, इस रीतिसे महाबली औरंगजेबके विरुद्ध राणा राजसिंहने यह प्रथम वीरताका कार्य किया था; मेवाडके रहनेवाले इनके इस कार्यको सफल हुआ देखकर मनही मनमें अनेक प्रकारकी आशा करने लगे, प्रभावतीके उद्धारका विस्तृत वृत्तान्त मेवाडके इतिहासनामक ग्रंथमें जो कुमार हनुमन्तसिंह तथा पूर्णसिंहजी लिखित है लिखा है, उपयोगी समझकर यहां हम उसको उतारते हैं। राजकुमारी रूपवती राजमहलोंसे अलग एकान्त स्थानमें भगवद्भक्ति और पूजापाठमें प्रवृत्त रहकर तथा गीताजीका पाठ व हरिकथा करके अपने दिवस व्यतीत किया करती थी। ईश्वरभक्तिमें इस राजकुमारीकी इतनी दृढ आस्था होगई कि विवाहका स्वप्नमें भी उसे कभी ध्यान नहीं आता था। अपने निवासस्थानमें यह पुरुषकी छायातक नहीं आने देती थी। वैराग्य दशामें अपना समय बिताती थी। न किसीको वह अपने यहां बुलाती थी और न कहीं आप जाती थी। वैष्णव धर्मकी मर्यादाके अनुसार किसीके साथ स्पर्श भी अपना नहीं होने देती थी। यदि भूलसे जो कभी किसीका स्पर्श होजाय तो वह उसी समय स्नान करडालती थी। ऐसी पवित्र वृत्तिसे यह राजकुमारी रहा करती थी। परन्तु यह राजकुमारी अत्यन्त सुन्दरी थी इसलिये औरंगजेबने इसको विवाहना चाहा। जब इस बातकी चर्चा सर्वत्र फैली तो एक दिन राजमहलकी दासियोंने कुएपर जल भरते २ राजकुमारी रूपवतीकी दासीसे

करनेमें संदेह यही है कि तेरी प्रतिष्ठा पीछे कौन बचावेगा ? हमारे मरजानेपर भी आत्मघात तो तुझे करना ही होगा। दूसरा मार्ग यहहै और यह बुद्धिमत्तासे भराहुआ है कि तू अपना विवाह हिन्दुपति महाराणा उदयपुरके साथ कर। जो तू महाराणा उदयपुरसे विवाह करना स्वीकार करे और महाराणाजी बरात लेकर आवें तो हमारा मनोरथ सिद्ध हो जावे। आज समस्त भरतखंडमें ऐसा कोई वीर नहीं है जो बादशाहके साथ वैर करे। केवल उदयपुरके महाराणा राजसिंह ही शरणागतकी रक्षा करनेवाले तथा बादशाहसे निर्भयताके साथ वैर करनेवाले हैं, इसलिये जो तेरी इच्छा हो तो आज ही साडिनी सवार-द्वारा पत्री उदयपुर भिजवाऊं। यह सुन रूपवती बोली कि काकाजी उदयपुरके महाराणाजीके साथ विवाह करनेका निषेध मैं कैसे कर सकती हूं? ऐसी पवित्र और निष्कलंक गद्दीका स्वामी क्या मुझे दूसरा कोई मिल सकता है? जिन्होंने आजतक म्लेच्छोंसे सम्बन्ध नहीं किया यदि ऐसे राजकुलमें व्याहेजानेका मैं निषेध करूं तो संसारमें कौन मुझसे अधिक मूर्ख होगी। मैं अपनी प्रतिष्ठा बचानेके लिये, और आत्महत्या पापसे पृथक रहनेके लिये राणाजीके साथ व्याही जानेको प्रसन्न हूं। आप एक पत्र लिखो और एक मैं भी लिखती हूं। इस प्रकार बातचीत होनेपर दोनोंने एक २ पत्र लिखा और एक मनुष्यको वे दोनों पत्र देकर एक दिवसमें उदयपुर पहुँचनेवाली सांडिनीपर चढाकर उसे विदा किया। दूसरे दिन वह मनुष्य पत्र लेकर उदयपुर जा पहुंचा और सीधा राणाजीके दर्बारमें चला गया।

दर्बारमे राणाजी अपने जागीरदार चूडावत. शक्तावत, राणावत, ऊदावत, झाला, परमार, हाडा, राठौर इत्यादिके साथ बैठेहुए हैं, तरह २ की बातें छिड-रही हैं इतनेहीमें उस मनुष्यने दोनों पत्र निकालकर राणाजीके हाथमें दे दिये। राणाजी पत्रोंको पढकर विचार करने लगे कि क्या करना चाहिये। वह मनुष्य उत्तर पानेकी इच्छासे सामने खड़ा हुआ है. परन्तु राणाजी किसी गम्भीर विचारमें डूबेहुए हैं। इस प्रकार चिन्तामें ग्रस्त राणाजीको देखकर पास बैठे हुए चूड़ावत सरदार बोले कि महाराज क्या है? पत्र पढ़कर चुप क्यों होगये? राणाजीने विना कुछ कहेही वे दोनों पत्र चूडावतके हाथमें देदिये। चूडावत बोले कि क्या मुझे इनको बांचनेकी आज्ञा है। राणाजीने कहा इनमें कुछ गुप्त बात नहीं है सब सामन्त सर्दार सुनें ऐसे बांचिये। चूडावतने दोनों पत्रोंको पढ़कर सुनाया।

संकीर्णभाग प्रायः ११ ग्यारह मीलका होगा। विशाल आरावलीके विशाल शरीरसे बहुतसी शाखा पर्वतोंसे निकलकर इस अंडाकार गिरिप्रदेशकी प्रशस्त देहको पुष्ट किया है—भूमिके नीचेसे इन शाखा पहाडोंका कोई २ स्थान छः सौ और कोई २ स्थान आठ सौ हाथ ऊंचा है. इसकी एकओर पीछोला प्रवाहित होकर इस देशकी सुन्दरताईको सहस्रों गुणा बढा रही है, इस निविडभूमिसे बाहर आनेके लिये इसके पूर्वभागके जनस्थानमें आनेके समय केवल तीन गिरिमार्ग ही मिलते हैं, पहला तो अधिकतर उत्तरकी ओरको स्थित है. जो कि देलवाडाकी बगलमें होकर गया है. दूसरा पहले और तीसरेके बीचमें है, यह पूर्वोक्त देवारी स्थानकी बगलमें है. और तीसरा इसके दक्षिणकी ओरको फैलाहुआ है. इसीका नाम नाइन है। महाराणा राजसिंहने इसी गिरिमार्गमें अपनी सेनाको स्थापित किया था. इन तीन पर्वती मार्गोंमें जो सबसे सरल है. बादशाह उसी स्थानसे गया और उस सरोवरके किनारे ही पर अपनी छावनी-को डाल दिया।

चतुर रानीने पहचान लिया कि स्वामीका पहला तेज नहीं रहा वह वोली कि महाराज ! यह क्या हुआ? क्या कोई अशुभ समाचार सुन पड़ा जो मुखकी कान्ति फीकी पड़ गई। वडी उमंगसे आप डङ्का वजवाकर चौकमें आये थे और उस समय आपकी आकृति पर जो तेज विराजमान था वह तेज अव न जाने कहां उड गया? लडाईका धौंसा आपने जिस उत्साहसे वजवाया था अव वह उत्साह क्यों मन्द पड गया सो वताइये। क्या कोई शत्रु चढ आया है जो लडाईका डंका वजवाया गया है? यदि ऐसा है तो आपका मुखारविंद क्यों उतर गया? लडाईका डंका सुनकर क्षत्रियको तो शूरताका आवेश होता है सो प्राणनाथ! आपको भी शूरताका आवेश होना चाहिये था परन्तु, आप इसके विरुद्ध शिथिल क्यों हो गये? कोई कारण अवश्य है, आपको मेरी शपथ है जो आप सत्य २ न कहें।

चूडावतजीने उत्तर दिया कि रूपनगरकी राठौरवंशकी राजकुमारीको दिल्लीका वादशाह वलात् व्याहने आता है और वह राजकुमारी मन वचनसे हमारे राणाजीको वर चुकी है, इसलिये प्रातःकाल ही राणाजी उसे व्याहनेके लिये सिधारेंगे और वादशाहका मार्ग रोकनेके लिये समस्त मेवाडी सेना मेरे साथ जाती है वहां घोर संग्राम होगा, और हमें फिर वहांसे लौटनेकी आशा नहीं है, क्योंकि वादशाहकी सेनाके सामने हमारी सेना वहुत थोडी है। मुझे मरनेका तो कुछ शोक नहींहै। मनुष्यमात्रको मरना है, जो मरनेसे डरूं तो मेरी माताकी कोखको कलंक लग जावे, मेरे पूर्वज चूडाजीके नामपर धब्बा लग जावे। मरनेसे तो मैं डरता ही नहीं हूं. अमर कोई नहीं रहा, और न मैं रहूंगा, अवेर सवेर मरना सभीको है परन्तु मुझे केवल तुम्हारी चिन्ता है। तुम अभी व्याही आई हो अभी व्याहका कुछ सुख भी नही देखा. और आज मरनेके लिये जाना है। मुझे तुम्हारा ही विचार व्याकुल कर रहा है। चौकमें आकर ज्योंही मैंने तुम्हारा मुख देखा कि मेरा कठोर हृदय कोमल पड गया। यह सुन हाडी रानी बोली कि महाराज! यह आप क्या कहते हैं? यदि आप रणक्षेत्रमें विजय प्राप्त करेंगे तो उससे बढकर मेरे लिये इस जगतमें दूसरा कौनसा सुख है? मृत्यु समय [illegible] चलते २ खडे २ बैठे २ अथवा सोते [illegible] २ अचानक ही मनुष्य कालके वशमें हो जाता है तब भी संसारका सुख [illegible] है! जिसकी मृत्यु नहीं है वह रणक्षेत्रमें भी बचता है और जब मृत्यु समय आजाता है तो सुखशान्तिपूर्ण घरमें भी नहीं बचता। [illegible]

प्रसिद्ध यवन वीर दिलेरखांने मुगलोंकी सेनाको साथ ले देवारी गिरिमार्गके भीतरसे जाय उस दुर्गम प्रदेशके बीचमें प्रवेश किया था; बहुतसे ऐसा अनुमान करते हैं, कि वह राजकुमार अकबरका ही उद्धार करनेके अभिप्रायसे उस मार्गमें गया था. पहले तो कोई भी उस यवनसेनापतिकी गतिको न रोकसका, परन्तु जिस समय वह उस बडे भारी गिरिमार्गके बीचमें पहुंचा तब विक्रम शोलंकी * और गोपीनाथ × राठोरने उसके ऊपर प्रचंड विक्रमके द्वारा घोर रूपसे आक्रमण किया, उस स्थानमें बहुत देरतक हिन्दू मुसलमानोंमें घोर युद्ध होता रहा. परन्तु अभागा दिलेरखां राजपूतवीरोंके प्रचंड विक्रमको न रोक सका. अपनी सेनाके साथ उसी स्थानमें मारा गया, दोनोंवारके युद्धोंमें पराजित हुई मुगलोंकी सेनाके हथियार और डेरोंकी बहुतसी सामग्री विजयी राजपूतोंके हाथमें आगई।

वह चौकमें पहुँचे और युद्धका धौंसा बजवाकर प्रस्थान करने लगे तो अपने निजका एक सेवक हाडीजीकी सेवामें भेजा और उसके द्वारा फिर कहलाया कि रानी आप अपना धर्म न भूलना। तब हाडीजी समझीं और उन्हें विदित हुआ कि मेरे स्वामीका मन मुझमें लगा है, और जबतक इनका चित्त मेरी ओर रहैगा इनसे रणक्षेत्रमें कुछ पराक्रम न किया जा सके गा और जिस कामके लिये जाते हैं निष्फल होगा। हाडीजी उस सेवकसे बोलीं कि मैं तुमको अपना शिर देती हूं इसे ले जाकर अपने स्वामीको देना और कहना कि हाडीजी पहलेसे ही सती हुई हैं और यह भेंट भेजी है कि जिसे लेकर आप आनन्दके साथ रणक्षेत्रमें जाइये और विजय पाइये और अपना मनोरथ सफल कीजिये। किसी प्रकारकी दूसरी चिन्ता न रखिये। यह कहकर तलवारसे अपना शिर काट डाला। उसे लेकर वह सेवक चूड़ावतके पास पहुँचा, और उन्हें रानीका शिर सौंपकर उनका सारा कथन उनको सुना दिया। यह देखलर चूड़ावत आनन्दमें मग्न होगये। एक ग्रन्थकारने लिखाहै कि "उन्होंने रानीके चुटीलेके दो भाग करके शिरको गलेमें लटका लिया, उसके लटकते ही चूड़ावतजी ऐसे जान पड़े मानो शिवजी रुंडमाला धारण किये खडे हो।" अब उन्हें घरकी चिन्ता मिटी। अब यही चिन्ता वढने-लगी कि जिसप्रकार शीघ्रतासे होसके शत्रुको मार स्वर्गको चलें कि हाडीजीके मिलनेमें विलम्ब न हो क्योंकि वहांपर वे व्याकुल होरही होंगी। रुद्रकी भाँति क्रोधायमान हो रणक्षेत्रमें मुसलमानोंका विध्वंस करनेके लिये चल दिये। उनके पीछे समस्त चूड़ावत भी चल दिये। उनके निकलते ही अन्य सब सामन्त भी अपनी २ सेना लेकर साथ चल दिये।

उधर राणाजी प्रातःकाल होनेपर ज्योंही न्हा धो भोजन कर शस्त्र बांध घोडेपर सवार हुए कि उनके साथ जानेके लिये नियुक्त किये हुए १५ सौ मनुष्य घोडोंपर चढ राजमहलके बाहर आकर खड़े होगये। राणाजी भी चूड़ावतके जानेके समाचार सुनकर निकले और दोनों द्वारके बाहर एक दूसरेसे मिले. थोडी दूरतक मार्गमें इकट्ठे चले परन्तु जब मार्ग पृथक् हुए तो राणाजी और चूडावत दोनोंका वियोग हुआ। राणाजी तो सीधे रूपनगरको गये और चूडावतजी पूर्वके मार्गपर चले गये।

चूडावतके अधीन समस्त सेना पचास हजार राजपूतोंकी थी। उसे लेकर सबके आगे चूडावत आप चले। चलते २ वे एक निर्जन स्थानतक जा पहुँचे। यह स्थान आगरेसे रूपनगर जानेके मार्गमें रूपनगरसे कुछ दूर था। यहीं

वीर उत्साहके साथ मुगलोंकी सेनाकी ओरको बढनेलगे, तोपोंके धुएंसे सम्पूर्ण आकाश ढक गया, उन दिगदाही गोलोंके संहार करनेके स्वभावसे ही बहुतसे राजपूतोंका प्रचंड बाहुबल मथित होगया. बहुतसे राजपूत एक पलके बीचमें ही न जाने कहांको विलाय गये. परन्तु इससे राजपूतोंका उत्साह कुछ भी मंद न हुआ. वरन और भी दूगुना बढने लगा। तोपोंके निकलेहुए उन बडेभारी धुएंका भेद करके अन्तमें वहलोग अपने प्रचंड केशरी विक्रमके साथ मुगलोंकी सेनाके ऊपर जा-पडे उनके हाथकी तीक्ष्ण तलवारोंके भयंकर प्रहारसे फिरंगी गोलंदाजलोग मारेगये:

और न मार्ग छोडा। इस कारण फिर युद्ध आरम्भ हुआ। सूर्य्यास्त होनेतक तुमुल युद्ध होता रहा। दोनों पक्षके सहस्रों मनुष्य मारे गये। परन्तु किधरहीके वीर मन्द न पडे। उधर मुसलमान लोग यह समझकर कि वादशाहके लिये रूपनगर पहुँचनेकी शायत (मुहूर्त) टल जावैगी लडाई शीघ्र समाप्त करनेके विचारसे वडे वेगके साथ घोर युद्ध करने लगे। इधर राजपूत वादशाहको रोकनेके लिये और इतने समयतक मार्गमें डटे रहनेके लिये कि जितनेमें अपने राणाजी विवाह करके कुशलतासे पहुँच जावें वडे आवेशके साथ मुसलमानोंपर टूटकर उन्हें काटते रहे परन्तु रात्रि होनेतक कोई पक्ष शिथिल न पडा। रात्रिके कारण फिर युद्ध वंद किया गया। अव तीसरा दिन हुआ कि सूर्य निकलनेसे पहिले ही सव लडनेके लिये तइयार हुए। रात्रिके समयमें भी राजपूत लोग शस्त्रवद्ध सोते थे कि कहीं मुसलमानलोग धोखेसे छापा न आ मारें, अथवा अपना प्रयोजन सिद्ध करनेके लिये छिपकर रात्रिमें न चलेजावें इसलिये राजपूतोंको वडी सावधानी रात्रि समयमें भी करनी पडी थी। पहले एक दो वार क्षत्रियोंको मुसलमानोंने धोखा देदिया था उसे याद करके चूडावत् वहुत चैतन्य होकर रात दिन रहते थे। तीसरे दिनके युद्धमें मुसलमान लोग ऐसे पराक्रमसे लडे कि वहुतसे राजपूत मारे गये। राजपूतोंकी संख्या प्रतिदिन घटती जाती थी। यद्यपि मुसलमानीदलमें दुगुने तिगुने मनुष्य मारे गये थे परन्तु उनके अगणित दलमें वह न्यूनता कुछ जान नहीं पडती थी। मुसलमानोंकी अपेक्षा राजपूतोंका घटाव स्पष्ट जान पडता था। उनके थोडेही वीर शेष रह गये। अव चूडावतजीने विचार किया कि यदि मुसलमानोंने अवकी वार फिर ऐसा ही आक्रमण प्रवल वेगसे किया तो यह लोग थोडेसे वचेहुए राजपूतोंको भेदकर चले जा सकेंगे। इस अवसरपर इन्हें वह वचन याद आया कि जो राणाजीको इन्होंने दिया था। इस कारण इन्होंने वडे आवेशमें आकर घोर युद्ध किया और वडे पराक्रमसे लडते हुए वादशाहके हाथीके समीप पहुँच अपना भाला वादशाहकी ओर चलाया। वादशाह वोला कि नाहक क्यों मारते हो विवाहकी घडी तो यही पूरी हुई जाती है। चूडावत वोले कि जो मैं मांगू सो अपनी कुरानकी शपथ खाकर देनेकी प्रतिज्ञा करो नहीं तो मेरा भाला तुम्हारे शरीरसे अव निकला ही चाहता है। वादशाहने प्राणको जोखिममें समझकर चूडावतका कथन स्वीकार किया। चूडावत वोले कि आजसे दशवर्षतक तुम उदयपुरपर चढाई न करना। इसके पीछे तुम्हारी इच्छा रही। वादशाहने यह वचन स्वीकार किया। तव चूडावतने अपना घोडा लौटाया। इतने अन्तरमें इनके शरीरपर इतने घाव लगे कि वे अपने घोडेपर सावधान न

संकीर्ण मार्गसे मुगलोंकी दो समस्त सेनाने अतिवेगसे आकर इनकी संपूर्ण सेनाको रोक लिया और अजितसिंहको पकडनेका उद्योग करने लगी, दुराचारी मुगलोंकी सेनाका ऐसा भयंकर अत्याचार देखकर राठौर राजाकी सेनाके राजपूत क्रोधमें भरकर शत्रुको मारडालनेकी इच्छासे एकवारही उन्मत्त होगये और अपनी तलवारको निकाल शत्रुओंको मारने लगे; इस छोटेसे मार्गके बीचमें राजपूतोंका और मुगलोंकी सेनाका बहुत देरतक भयंकर संग्राम होता-रहा, इस ओर राजकुमार भी सरलतासे ही अपने शरीर रक्षकोंको साथमें ले वहांसे निकल मेवाडमें जा पहुँचे; भयंकर विक्रमशाली राठौर राजाकी सेनाने यवनोंकी सेनाको परास्त कर दिया, फिर मुगलसेना अजितका पीछा न कर सकी। जिस समय राजकुमार अजितसिंहजी मेवाडमें पहुँचे उससमय महाराणा राजसिंहने प्रसन्न होकर आदर सन्मानके साथ उनको ग्रहण किया और रहनेके लिये कैलवानामक जनपद दे दिया, दुर्गादासनामक एक साहसी वीर राजपूत उनकी रक्षा करनेके लिये नियुक्त हुआ, उस भयंकर राजपूतकी रक्षामें रहकर राजकुमार अजित कैलवादेशमें आनन्दके साथ रहने लगे, इस ओर अजितकी माता मारवा-डमें गई और विश्वासघाती मुगल बादशाहके अत्याचारोंका बदला लेनेके लिये योग्य अवसर ढूंढनेलगी। उनके हृदयमें दारुण क्रोधाग्नि भड़क रही थी, उन्होंने इस अग्निको शान्त करनेके लिये एक वडाभारी कार्य अपने हाथमें लिया. वह भयंकर गुरुतर कार्य और कुछ नहीं था. केवल राजवाडेके प्रधान २ राजपूतोंका परस्पर एकत्रित होना था, महारानीने इस वडेभारी कार्यको सिद्ध करनेके लिये तन मन धनसे चेष्टा की; और शीघ्रही मेवाड, मारवाड और अम्बेरके राजालोग सहानुभूतिके एक सूत्रमें बँधकर मुगल बादशाहके विरुद्ध युद्ध करनेको तय्यार हुए, राजपूतोंमें इसप्रकारका मेल पहिले कभी नही हुआ था. परन्तु दुःखका विषय है कि यह एकताका बंधन बहुत दिनोंतक नही रहा और सिसोदिया राठौर तथा कुशावह लोगोंके बीचमें पिछला वैरभाव बहुत शीघ्रही उत्पन्न होगया. यदि ऐसा मेल सौवर्षतक भी रहता. यदि वह एक रहकर अपनी प्रतिज्ञाका पालन करते तो भारतवर्षमें दुःखकी रात्रिका प्रभाव घट जाता. और भारतका राजमुकुट मुस-लमानोंके मस्तकपरसे गिरकर हिन्दुओंके शिरपर स्थापित होता।

राजधर्मसे रहित मार्गमें जाकर अत्याचार और प्रजापीडनकी पराकाष्ठा दिखाय निर्मोही कठोर बादशाह औरंगजेबने अपने परम विश्वासी दो राजपूतोंको मारा था. उनका यह पैशाचिक कार्य बहुत ही थोडे समयमें प्रसिद्ध होगया.

राठौरकुलमणि धार्मिक श्रेष्ठ जसवंतसिंह पापी औरंगजेबकी प्रचंड हिंसा-ग्निमें गिरकर पतंगकी समान भस्म होगये थे। जिस दिन पिताके शोकसे शोकित हुए कुमार अजितसिंहको कैद करनेके लिये औरंगजेबने अभिलाषा की थी, उसी दिनसे राठौरकी राजरानीने मारवाडराज्यका भार अपने हाथमें लेलिया। उसी दिनसे वह अपने पुत्रके स्वार्थके लिये बडी चतुरता और बुद्धि-मानीसे राजकाजको देखने भालने लगी। कई वारमें कितनी ही भयंकर विप-त्तियोंने उनको आक्रमण कियाथा. कितनी ही वार उनको महासंकटमें पडना पडा था परन्तु एक तेजस्विता और बुद्धिकी सहायतासे उन्होंने उन सम्पूर्ण विपदों और संकटोंसे छुटकारा पाया. वरन शत्रुओंसे अपना बहुतसा विभव छीन लियाथा। वह वीर स्त्री थीं, बाप्पारावलके पवित्र वंशमें उत्पन्न हुईथीं. इस कारण जितने गुण वीर स्त्रियोंमें होने आवश्यक थे वे सब गुण उनमें विद्यमान थे. इतने दिनोंतक वह अपने उन समस्त गुणोंकी सहायतासे ही अपने पुत्रके स्वार्थकी रक्षा करनेमें समर्थ हुईथीं। परन्तु अब कठोर हृदय औरंगजेबने उनके ऊपर ऐसे कठोर अत्याचार करने आरंभ किये कि उनका रोकना उनके वशमें

—ही लिखा था कि " महाराणा श्री श्री राजसिंहजीके पाससे औरंगजेबके समीप यह पत्र भेजा गया " इस समय वह पत्र नीचे लिखा जाता है।

" सर्व प्रकारकी स्तुति, सर्व शक्तिमान् जगदीश्वरको उचित है, और आपकी महिमा भी स्तुति करनेके योग्य है। आपकी उदारता और समदृष्टि चंद्र और सूर्यकी भांति चमकती है यद्यपि मैंने आजकल अपनेको आपके हाथसे अलग कर लिया है, किन्तु आपकी जो सेवा होसके उसको मै सदा चित्तसे करनेको उद्यत हू। मेरी सदा इच्छा रहती है कि हिन्दुस्तानके बादशाह, रईस, मिर्जा, राजे, और रायलोग तथा ईरान, तूरान, रूम और शामके सरदारलोग और साती बादशाहतके निवासी और वे सब यात्री, जो जल या थलके मार्गसे यात्रा करते हैं वे सब, मेरी अभेद बुद्धि सेवासे उपकार लाभ करैं।

" वह इच्छा मेरी ऐसी उत्तम है कि जिसमे आप कोई दोष नही देख सकते। मेरे पूर्वजोने पूर्वकालमे जो कुछ आपकी सेवा कीहै,उसपर ध्यान करके मुझको अति उचित जान पडता है कि, मैं नीचे लिखीहुई बातोपर आपका ध्यान दिलाऊं, जिसमे राजा और प्रजा दोनोकी भलाई है। मुझको यह समाचार मिला है कि आपने मुझ शुभचिन्तकके विरुद्ध एक सेना नियत कीहै, और मैंने यह भी सुना है कि, ऐसी सेनाओके नियत होनेसे आपका खजाना, जो खाली होगया है, उसके पूरा करनेको आपने नाना प्रकारके कर भी लगाए हैं।

" आपके परदादा महम्मद जलालुद्दीन अकबरने, जिनका सिंहासन अब स्वर्गमे है, उन्होने इस बडे राज्यको बावन वर्षतक ऐसी सावधानी और उत्तमतासे चलाया कि, सब जातिके लोगोने उससे सुख और आनन्द उठाया। क्या ईसाई, क्या मूसाई, क्या दाऊदी, क्या मुसल्मान, क्या ब्राह्मण, क्या नास्तिक, सबने उनके राज्यमे समान भागसे राज्यका न्याय और राज्यका सुख भोग किया और यही कारण है कि सब लोगोने एक मुंह होकर उनको जगद्गुरुकी पदवी दी थी।

" शहन्शाह महम्मद नूरुद्दीन जहांगीरने, जो अब नन्दन वनमे विहार करते हैं, उन्होने भी उसी प्रकार २२ वर्ष राज्य किया, और अपनी रक्षाकी छायासे सब प्रजाको शीतल रक्खा और अपने आश्रित या सीमास्थित राजन्यवर्गको भी प्रसन्न रक्खा और अपने बाहुबलसे शत्रुओंका दमन किया।

" वैसे ही उनके शाहजादे और आपके बडे परम प्रतापी शाहजहांने [illegible] अपना शुभ नाम अपने शुद्ध गुणोसे विख्यात किया।

" आपके पूर्व पुरुषोकी यह कीर्ति है। उनके विचार ऐसे उदार और [illegible] कि, जहां उन्होने चरण रक्खा वहां विजयलक्ष्मीको हाथ जोडे अपने सामने [illegible] और बहुतसे देश और द्रव्यको अपने अधिकारमे किया। किन्तु आपके राज्यमे वे देश [illegible] और जो लक्षण दिखलाई पडते हैं, उनसे निश्चय होता है कि [illegible] आपकी प्रजा अत्याचारसे अति दुःखी है और सब दुर्बल [illegible] पडजानेकी और अनेक प्रकारकी दुःखही [illegible] हुई है जब बादशाह और शाहजादोंके [illegible] तो केवल [illegible]

पालन होगया परन्तु उस भयंकर युद्धको करनेके लिये जो वडी सेना इकट्टी की गई थी उसको जानकर सहसा यह विश्वास होता है कि मानो वादशाहने किसी वडे भारी और प्रतापी राजाको जीतनेकी इच्छासे अपनी भयंकर विक्रमवाली सेनाको तैयार किया होगा, परन्तु जो राणा राजसिंह आज एक निर्वल राजा हैं, भाग्यके दोषसे अपने पूर्व पुरुषोंके असीम गौरवसे अलग हुए तथा आज मुगलोंके द्वारा एक साधारण जिमीदार माने-जाते हैं; इस वडीभारी मुगल वादशाहतके सामने जिनका राज्य एक किनकामात्र गिना जाता है आज क्रोधसे उन्मत्त हुए औरंगजेवने उनको ही पराजित करनेकी इच्छासे अपनी वडीभारी सेनाको तैयार किया है; अपने प्रधान सेनापतिको पास बुलाकर औरंगजेवने कहा कि " मेरे राज्यमें जितनी सेना है, सवको इकट्टा करके एक भयंकर प्रचंड और अजीत दल वनाओ, वादशाहकी आज्ञाका प्रचार होतेही विशाल मुगलोंके राज्यमें जितनी सेना थी जितने सामन्त सेनापति थे वह सव ही वादशाहके शोभायमान झंडेके नीचे आकर इकट्टे होनेलगे; इस भारी युद्धके पूर्ण करनेके और वढ़ानेके लिये राजकुमार अकवर अपने वंगराज्यसे और अजीम कावुल राज्यसे बुलाया गया था, वादशाहका उत्तराधिकारी सुलतान मोजम महाराष्ट्र सिंह शिवाजीके साथ युद्ध करना छोडकर अपनी वडीभारी सेनाको साथ लेकर आया, दुष्ट औरंगजेव अपनी प्रचंड सेनाको ले मेवाड राज्यकी ओर चला, उफने हुए समुद्रकी समान उस असीम मुगल सेनाका विकट गर्जन और कुलाहलका शब्द दूरसे ही महाराणा राजसिंहजीने सुना. वैसेही उनके वीर हृदयमें उत्साह भर गया, उन्होंने तत्काल विकट तेजस्विनी भाषासे उत्साह देकर अपने सरदार और सामन्तोंको उन्मादित कर दिया। मुगलोंकी युद्ध खुजलाहटको दूर करनेके लिये अपनी सम्पूर्ण सेनाको तैयार होनेकी आज्ञा दी, और अपनी सेनाको थोडा देखकर गिह्लोट् वीरगणोंकी पुरानी रीतिके अनुसार सेनाके साथ पर्वतों किलेके वीचवाले उचित स्थानोंमे शिशोदीय वीरोंकी रक्षा करनेका प्रबन्ध की—उनके साथही मेवाडकी प्रजा भी अपने नीचेके स्थानोंको त्यागन कर दुर्भेद्य आरावलीकी तलैटीके भीतर जाय २ कर आश्रय लेने लगी. इस रीतिसे मेवाडके नीचेकी सम्पूर्ण भूमि खाली होगई. दुष्ट औरंगजेवने उन सम्पूर्ण स्थानोंको खाली हुआ देखकर शीघ्रही अपने अधिकारमें कर लिया, इन स्थानोंमें चित्तौर मंडलगढ—मन्दसौर जीरन व और २ देश तथा किले भी थोडे से समयमें

उसने स्वयं संधिका प्रस्ताव न उठाया. मुगलोंके सेनापति दिलेरखां के आधीनमें एक विचक्षण राजपूतसैनिक अतिप्रतिष्ठाके साथ कार्य करता था; इस समय उसने ही इस उपस्थित संकटसे बादशाह का उद्धार किया. अपने देशको जानेका बहाना कर उसने अपनी सेनाको छोडा और मार्गमें जाते २ मानो बडे शिष्टाचारके वशसे ही महाराणासे साक्षात किया। दोनोंमें परस्पर वार्तालाप होतारहा; होते २ युद्धका वृत्तान्त भी आरहा राजपूतोंने उसके लिये अधिक दुःख प्रकाश किया. ऐसा जानाजाताहै यह दुःखप्रकाश काल्पनिक नहीं था. इसके उपरान्त उस सैनिकने राणाजीसे कहा कि "यद्यपि औरंगजेब स्वयं संधिके प्रस्तावको नहीं उठासकताहै परन्तु वह उसको स्वीकार करलेगा" यह सुनकर राणाने अनुरोधके साथ कहा कि "तो आपही हमारी तरफसे बादशाहसे संधिका प्रस्ताव उठाइये।" यह वृत्तान्त मेवाडके भट्टकवियोंने अपने ग्रंथोंमें लिखाहै उन्होंने उस मध्यस्थ राजपूतको शेखा-नेरका राजा श्यामसिंह निर्देश कियाहै ।

स्वरसे जय शब्दको उच्चारण करने लगी; वह जय शब्द आरावली पर्वतमालाकी तलैटीमें होता और कन्दरा पहाडोंमें टकराता हुआ बडी दूरतक पहुँचा, मुगलोंकी सेनाने भी " अल्लाहुअकबर " उच्चारण करके राजपूतोंकी सेनाका प्रत्युत्तर दिया, इस प्रकारसे हिन्दू और मुसलमानोंकी सेना वीर उत्साहित हो परस्पर एक दूसरेका सामना करनेके लिये आगेको वढने लगी !

अनन्तर राणा राजसिंहजीने अपनी सम्पूर्ण सेनाको इकट्ठा हुआ देखकर उसके तीन भाग किये और योग्य सेनापतिके आधीनमें उसको भिन्न २ स्थानोंपर स्थापित किया, ज्येष्ठ राजकुमार, जयसिंहने अपनी सेनाको आरावलीके शिखरपर ठहराकर उसके ऊपरके भागको बडी चतुराईके साथ सेनासे सजाया, जिससे शत्रुलोगोंका आक्रमण दोनों ओरसे ही बंद होसकै, गुर्जर तथा उसके चारों ओर रहनेवाले भीलोंसे संपर्क नियत रखनेके लिये राजकुमार भीमसिंह गुजरातमें पश्चिम ओरसे पर्वतकी रक्षा करनेलगे, इस ओर राणा भी स्वयं अपनी सेनाको लेकर नायननामक गिरिवर्त्मके वीचमें जाय विराजमान हुए, यदि उस स्थानको शत्रुओंसे अभेद्य कहाजाय तो भी ठीक होगा, उस संकटमय देशके वीचमें उन्होंने इसप्रकार चतुरता और निपुणतासे अपनी प्रचंड सेनाको स्थापन किया कि शत्रुलोगोंको भीतर आतेही वह उन्हें घेर लें, इस प्रकार सेनाके ३ भागों × को भिन्न २ स्थानोंमें टिकाय महाराणा राजसिंह विकट उत्साहके साथ शत्रुसेनाके आनेकी वाट देखने लगे; यदि उस नायनगिरिमार्गमें औरंगजेब प्रवेश करता तो अवश्यही राणा राजसिंहके हाथसे अपनी सेनासहित मारा जाता; परन्तु उसका बडा भाग्य कहना चाहिये कि वह उस मार्गसे न गया और वाहर ही वाहर चलकर देवारीनामक भीलजनपदमें ठहर रहा, तथा बुद्धिमान तहव्वरखाँकी सलाहसे पचास हजार सेना साथ कर अपने पुत्र अकबरको उदयपुरकी ओरको भेजा और बादशाह अपनी सेनाके साथ उसी स्थानपर ठहरा रहा. वह स्थान जहां बादशाह ठहर रहा राजधानीके चारोंओरसे अंडाकार था, उदयपुरको इसका मध्य विन्दु मानकर उसके ऊंचे स्थानोंसे चारों ओरको देखनेसे इसका अंडाकारभाव भलीभांतिसे दीखता है यह दक्षिण उत्तरको लम्बा और पूर्व पश्चिमको संकीर्ण है. इसकी लम्बाई चौदह और

× कहते हैं कि [illegible] दिखाई देता है [illegible]

प्रतापसिंहके योग्य वंशधर थे। इन्होंने इसही कारणसे भारतके उस भयंकर प्रलय-कालमें, दलित और पीडित अनाथी भारतसन्तानोंका उद्धार करनेके लिये अपने तीक्ष्ण विक्रमसे औरंगजेबके विरुद्ध कठोर युद्धकियाथा। भारतकी उस भयंकर दुर्दशाके समयमें यदि वह उत्पन्न न होते तो हिन्दुस्तान और हिन्दुओंका धर्म अस्त होकर शीघ्रही लोप होजाता. उनके देवचरित्रके साथ पापाचारी औरंगजेबके किसी चरित्रकी बराबरी नहीं होसकती, उन दोनोके चरित्रोंको बराबर करना सम्पूर्णतः न्यायके विरुद्ध है, कारण कि प्रत्येकका चरित्र एक दूसरेके विपरीत था। विशाल एशियामंडलमें जितने राजा हुएथे. उन सबमें कोई भी औरंगजेबकी समान दुस्तर पापपंकमें नहीं फंसा था, किसीने भी इसकी समान पशुरीतिसे जीवनको नहीं चलायाथा: पराये जीवनके ऊपर अन्यायका दिखाना इसकी जाति और कुटुम्बियोंका एक मुख्य धर्म था. औरंगजेबने उस धर्मको भलीभांतिसे पढाथा. इसका हृदय अत्यन्त कठोर था जयके उल्लाससे [illegible] इसने कभी किसीके ऊपर तिलमात्र अनुग्रह न किया: जिन समस्त गुणोंके होनेसे इस लोकमें मनुष्य, मनुष्य नामके योग्य होताहै. औरंगजेबके हृदयमें उनमेंसे किसीने भी स्थान नहीं पाया। अधिक तो क्या कहें, जब जिस समय [illegible]गत आता, वह पिशाच उसी समय अपने पैरसे कुचलकर तत्काल [illegible] [illegible]का पलटालेता. उसके उन पापोंका तीक्ष्ण और भयंकर उदाहरण यह है कि गोलकुंडाके राजाको इसने भलीभांतिसे पीडित कियाथा। परन्तु संसारमेंभी राजपूतोंके चरित्र इसकी अपेक्षा अत्यन्त विपरीत हैं. दुर्जय बादशाह स्वयंभ [illegible] पाय अतीव अनिष्टके करनेमें तिलमात्र भी कसर नहीं करताथा. करुणानिधान राणा राजसिंहने इसको अनेकोंवार क्षमाकियाथा. [illegible] दया, दाक्षिण्य, क्षमा इत्यादि गुणोंसे विभूषित थे. इसी कारण अत्याचारी शत्रुओंने इनसे क्षमा पाई थी. यदि वह इच्छा करते तो औरंगजेबको सेनाके साथ संसार [illegible] परन्तु उन अत्याचारों और इसकी [illegible]

[illegible]

क्रोधमें भरेहुए राजपूतोंके तीक्ष्ण हथियारोंसे मारी जाने लगी, इस ओर अकबर भयभीत हो बादशाहसे सहायता पानेकी अभिलाषासे देवारीके आगे जानेकी चेष्टा करने लगा, परन्तु राणा राजसिंहने अपनी सेनाको उस गिरिमार्गके भीतर खडा करके सम्राटके पुत्र अकबरकी सम्पूर्ण चेष्टा व्यर्थ करदीं, तब संकटमें पडाहुआ अकबर अपनी रक्षाका उपाय न देखकर गोगुण्डाके भीतर हो मारवाड राज्यके खेतोंमें होकर भागनेका उपाय करने लगा; परन्तु उसने विपत्तिसे मूढ हो चंदनके वृक्षके भ्रमसे भयंकर विषैले वृक्षका आश्रय लिया; फूलोंको तोड न पाकर कांटोंके वृक्षमें फँस गया; अपने छुटकारा पानेकी इच्छासे उसने जिस मार्गको लिया; वह अत्यन्त ही संकटसे भराहुआ था; पर्वतोंकी भूमिमें सामन्तलोग भीलोंकी सेनाको साथ लिये अकबरका मार्ग रोकेहुए खडे थे, कोई २ संकीर्ण उपत्यकाभूमिके ऊपर काठका परकोटा बनाय पर्वतोंके शिखरपर चढकर शत्रुओंके ऊपर पत्थरोंकी व तीखे तीरोंकी वर्षा करने लगे; इस ओर राजकुमार जयसिंहने अकबरके पीछे खडे हो उसके जानेके मार्गको रोक दिया इसप्रकार चारों ओरसे घिरकर सम्राटका पुत्र अकबर बडीभारी विपत्तिमें पडा, वह जिस ओरको देखता, उसी ओर उसको दिखाई देता कि मानो मृत्यु भांति २ की भयंकर मूर्ति धारण करके भय दिखा रही है, इस रीतिसे भयंकर संकटमें पडकर अकबरने कितने ही दिन विताये, धीरे २ जितने दिन बीतने लगे उतनी ही उसकी विपत्ति दूनी बढने लगी, अन्तमें भयंकर दुर्भिक्षकी विकट मूर्ति उसके ऊपर पडी; तब अपनी रक्षाका कोई उपाय न देखकर जयसिंहसे अनुग्रह प्रार्थना करनेके लिये कहला भेजा, और उनको संतुष्ट करनेके लिये इस युद्धके होनेके कारणको भी नष्ट करनेकी प्रतिज्ञा की. उदारहृदय जयसिंहने उसके वचनोंपर विश्वास किया; और उसकी बुरी अवस्था देख दयालु होकर छोडदिया. अधिक क्या कहें उसके साथ अपने कितने ही रक्षक मार्ग दिखानेके लिये जिलवाडाके गिरिमार्गतक भेज दिये, उन्हीं रक्षकोंकी सहायतासे इस अगम्य मार्गको पाकर बादशाहका पुत्र अकबर निर्विघ्नतासे चित्तौडके परकोटेके निकट पहुंच गया *

प्रसिद्ध [illegible] वृत्तान्त [illegible] लिखा है। [illegible]
[illegible] सेनाके साथ [illegible]
[illegible] पहुंचाया गया। [illegible]
[illegible] सेना [illegible]
[illegible]

है परन्तु जिसकारण इसकी प्रतिष्ठा हुईथी. उसका विचार करनेसे उसके भीतर जो एक गंभीर सुन्दरता दिखाई देती थी. उस सुन्दरताके साथ और सुन्दरताकी उपमा दीजाय तो वह अस्त होजायगी, वह कारण अत्यन्त गंभीर है. राणा राजसिंहके समयमें मेवाड़भूमि भयानक दुर्भिक्ष और महामारीसे पीड़ित हुए. असंख्य प्रजा भूंख प्याससे दुःखित होकर मृत्युका आश्रय लेने लगी. अपनी प्रजाकी ऐसी दुर्दशा देखकर राणा अत्यन्त ही दुःखित और शंकित हुए. और जिससे प्रजा इस भयंकर दुर्भिक्षके हाथसे छुटकारा पावे. जिससे सर्वसाधारणका महाउपकार हो, और देशमें अनन्त कीर्ति स्थापित रहै इसकार्यके करनेकी राणा राजसिंहको अभिलाषा हुई; उन्होंने इस बड़ेभारी राजसमुद्र सरोवरको बनवाकर अपनी अभिलाषाको पूर्ण किया. यही राजसमुद्र सरोवरका इतिहास है।

यह पहाडी संग्राम बडी ही चतुराईके साथ हुआ था, फिर अकबर और दिलेरखॉके परास्त होते ही राणा राजसिंहने तत्काल बादशाह औरंगजेब पर हमला किया, आशाके मोहसे अंधा हुआ औरंगजेब अकबर और दिलेरखॉके युद्धका फलाफल जाननेकी इच्छासे अपने पुत्र अजीमके साथ उस देवारी ग्राममें ठहरा हुआथा, उसके हृदयमें आशाकी कितनी ही तरंगें उठ रहीं थीं, उस जीवनतोषिणी आशालहरीकी लीलाको देखते२ वह कितने ही सुखदाई स्वप्नोंको देखने लगा परन्तु उसके वह सम्पूर्ण स्वप्न शीघ्रही भंग हो गये, शीघ्रही वीर केशरी राजसिंहके प्रचंड आक्रमणसे उसको अपनी रक्षाका उपाय खोजना पडा। उस देवारी गिरमार्गके भीतर हिन्दू मुसलमानोंका भयंकर युद्ध हुआ; राजपूत सेनाके लोग राणा राजसिंहजीकी तीक्ष्ण वीरतासे उत्कंठित और उत्साहित हो मुगलोंकी सेनाके बडे भारी व्यूहको भेद करनेके लिये भयंकर पराक्रमके साथ उसकी ओरको बढने लगे; राठौर वीर साहसी दुर्गादासने अपनी कठोर प्रतिशोध पिपासासे उन्मत्त हो भयंकर पराक्रमवाले राठौर वीरोंको औरंगजेबके विरुद्ध भेजा। जिस दुष्टात्माने राठौर कुलका सर्व नाश किया है, पिशाचकी समान घृणित मार्गमें पैर डालकर; शान्तमनवाले श्रेष्ठ धार्मिक राठौर राजाको विष देकर संहार करके राठौरोंके हृदयमें भयंकर शोकानलको जला दिया, आज राठौरोंके हृदयमें वह शोकाग्नि भडक उठीहै; उस प्रचंड अग्निको बुझानेके लिये उन्मत्त हुए राठौर वीरगण, रणवीर दुर्गादासके साथ मुगलोंके भयंकर व्यूहके सामने बढने लगे। आज औरंगजेब भारी संकटमें पडा है। जिसने पत्थरसे हृदयको बांध नृशंस, निठुर और पाखंडीकी समान हिन्दुओंको कठोर लोहदंड द्वारा ताडित किया था. जिसने उनका सत्यानाश करनेके लिये दृढ प्रतिज्ञ हो आज इस तीक्ष्ण समरानलको प्रज्वलित करदिया है, वह लोग क्या आज उसके दुराचरणोंके उपयुक्त फलको न देकर वैसे ही छोड देंगे ?—कभी नहीं. चाहे बादशाहकी सेना इनकी सेनासे सहस्र गुणी भी क्यों न हो परन्तु शरीरमें प्राण रहते हुए कोई राजपूत भी अपनी सामर्थ्यके अनुसार आज उसको क्षमा नहीं करेगा। धीरे २ हिन्दू मुसलमानोंका युद्ध भयंकर रूपसे बढने लगा; रणविशारद मुसलमानोंकी ओरसे फिरंगी गोलंदाजोंने तोपोंका चलाना प्रारम्भ किया. उनके श्रवण भेद निनादसे अनर्गल धुयेंका ढेर निकलने लगा; उन हृदयको स्तम्भन करनेवाले भयंकर शब्दोंको सुनकर रणसे उन्मत्त हुए सम्पूर्ण राजपूतवीर अपने प्रचंड सिंहनादको निकाल

तेरहवां अध्याय १३.



राणा जयसिंह और उनके यमज भ्राताके सम्बन्धमें एक कहा-
वतःराणा और राजकुमार अर्जीमकी वार्त्ता, संधिहोना. संधिका
टूटजाना. राणाजीका जयसमँद सरोवरको बनवाना. सांसारिक
लडाई झगडेः युवराज अमरसिंहका विद्रोहाचरण.राणाका मृतक
होजानाः—अमरका सिंहासनपर बैठनाः—औरंगजेबके उत्तरा-
धिकारीके साथ उनकी संधिका होजाना-युद्धके विषयमें विचार
करनाः मुंडकरका स्थापन होना. औरंगजेबके हाथसे राजपूतोंकी
स्वतंत्रताका होनाः इसका कारण औरंगजेबकी मृत्युः—राज्यमें
झगडाः बहादुरशाहका मुगलोंके राज्यपर अभिषेकः सिक्खोंके
द्वारा स्वाधीनताका प्रचार होनाः मेवाड और अंबेर [illegible]
बीचमें एकताका होनाः उनका परस्पर वैर. बहादुरशाह [illegible]
होजानाः फर्रुखसियरका अभिषेकहोनाः—मारवा [illegible]
सारीके साथ उसका विवाह होनाः—भारतमें [illegible]
ताका सूत्रपातः बादशाहके साथ [illegible]
होनाः जाटोंका स्वाधीन होजानाः [illegible]
हर्जीका स्वर्ग वासी होनाः [illegible]
चरित्रोंका विचारः—

छिन्न भिन्न कर दिया और मुगलोंकी सेनापर भयंकर आक्रमण करके उसको दलित और भयभीत करनेलगा, उसकी रणचतुरताको देखकर औरंगजेब अत्यन्त ही भयभीत हुआ; अन्तमें अपनी स्वाधीनता और जीवनका भी खटका देखकर उस संकटदायी युद्धभूमिको छोडनेका विचार करने लगा; परन्तु उसके प्रतिशोधकी प्यास शान्त न हुई, जिस कारण वह मेवाडराज्यपर चढाई करके आया था उसका वह मनोरथ भी पूर्ण न हुआ, मनोरथ पूर्ण होना तो दूर रहा वरन स्वयं ही अपमानित और पराजित होकर समरभूमिको त्याग भागना पड़ा; बादशाहके मर्ममें जो पीडा हुई उसकी सीमा न रही, परन्तु करै क्या? अपनी रक्षाका कोई उपाय न देखकर उसने अपने पुत्र अकबर और अजीमको इस युद्धका भार सौंपा, तथा जबतक इस सेनामें मुगलोंकी और सेना आकर न मिलजाय तबतकके कर्तव्य कार्यकी परामर्श देकर अजमेरकी ओरको चलागया अजमेरमें पहुँचते ही उसने अपने दोनों पुत्रोंकी सहायताके लिये बहुतसी सेना भेजी और राठौर वीर श्यामलदासके विरुद्ध खाँ रोहेला नामक सेनापतिको बारह सहस्र सेनाके साथ चित्तौरनगरको भेजा, युद्धविशारद बुद्धिमान् श्यामलदासने खाँ रोहेलाको सेनाके साथ आगे आता हुआ देखकर मारवाडकी सेनाके साथ पुरमंडल नामक स्थानमें शीघ्रतासे शत्रुसेनाके ऊपर हमला किया और उसको भयंकररूपसे परास्त करके अजमेरकी ओरको पुनर्वार भगाया, इस युद्धमें भी मुगलसेनाकी बहुतसी हानि हुईथी ।

वीर केशरी महाराणा राजसिंह और उनके उत्तराधिकारी तथा साथके वीरगण आरावलीके पूर्वोक्त युद्धमें जय प्राप्त करके, परमानंद भोगने लगे । इस ओर राजकुमार भीम अपनी सेनाको साथ ले उस पर्वतकी पश्चिम एक नये प्रकारका वीराभिनय करने लगे: युद्ध प्यासकी शान्तिका दूसरा उपाय न देखकर उसने गुर्जरराज्यपर चढाई की । ईडर नगर ध्वंस किया. वीरवर भीमने वहांके यवन शासक हुसेन और उसकी सेनाको वहांसे निकालदिया, तथा बडनगरके मध्यमें हो सहसा पट्टनमें जा पहुँचे—पट्टन उस समय उस देशकी राजधानी थी । निर्भय राजकुमार भीमने उस नगरीको लूटा, इस प्रकारसे सिद्धपुर—मोडासा—तथा और नगरोंकी भी इनके द्वारा ऐसी ही दशा हुई । उनके कठोर आक्रमणसे पीडित हो दुःखको न सहनकर उस नगरीके रहनेवाले सम्पूर्ण मनुष्य अपने प्राणोंके भयसे चारों ओरको भागने लगे. और अत्यन्त भयभीत हो राजाके पास क्षमा माँगनेके लिये आये: उनकी दीन दशाको देख कृपालु तथा उदार हृदय राजसिंहने अपने पुत्र

उसने अपनी सामर्थ्यके अनुसार किसी मुसलमानको भी क्षमा नहीं किया। तथा मुसमानोंके मालवाराज्यको तो एकबार ही मरुभूमिकी समान करदिया, इस प्रकार देशोंको लूटने और पीडित करनेसे जो विपुल धन इकट्ठा किया वह अपने स्वामीके धनागारमें देदिया और अपने देशकी अनेक प्रकारसे वृद्धि की थी।

विजयके उत्साहसे उत्साहित होकर तेजस्वी दयालदासने राजकुमार जयसिंहके साथ मिलकर चित्तौरके अत्यन्त ही निकट बादशाहके पुत्र अजीमके साथ भयंकर युद्ध करना आरंभ किया, इस भयंकर युद्धमें मेवाडके वीरोंके सहकारी*राठौर और खीचीवीरोंकी अनुकूलतासे तथा उत्साहके साथ उनके सम्मिलित होनेसे अजीमकी सेनाको भयंकररूपसे वीरवर दयालदासने दलित करके अन्तमें परास्त करदिया पराजित अजीम प्राण बचानेके लिये रण थम्भौरको भागा। परन्तु इस नगरमें आनेसे पहिले ही उसकी बहुत हानि हुईथी। कारण कि विजयी राजपूतोंने उसका पीछा करके बहुतसी सेनाको मारडाला जिस अजीमने पहले वर्षमें चित्ताड़नगरीका स्वामी बनकर अकस्मात् उसको अपने हाथमें करलियाथा आज उसको उसका उचित फल दियागया, परन्तु राजपूत केशरी राणा राजसिंहके बदलेकी प्यास शांत न हुई, जिस दुष्टमुगलने उनके असंख्य हिन्दुभाइयोंको पीडित करके दुःखित कियाथा, जिसने सोनेकी मेवाडभूमिको श्मशानकी समान करदियाथा, जिसने सनातनधर्मको पैरके नीचे दलित करदियाथा, क्या उसका बदला थोडासा होसकताहै? जबतक पवित्र मेवाडभूमि पापी म्लेच्छोंके अपवित्र चरणभारसे पीडित रहैगी, जबतक मुगलोंका एक सिपाही भी मेवाडराज्यके भीतर रहैगा तबतक राणाका क्रोध शान्त नही होगा और उनका हृदय ठंढा न होगा। उन्होने मुगलोंकी सेनाको जडसे नाश करनेकी प्रतिज्ञा की, और थोडे ही समयमें उस प्रतिज्ञाको सिद्ध करके कुछ कालके लिये शान्ति भोग करनेलगे, परन्तु वह शान्ति थोडेही समयके लिये थी. फिर शीघ्रही उनको अजितसिंहके स्वार्थकी रक्षाके लिये तलवार पकडकर यवनोंके विरुद्ध युद्ध करना पड़ा।

---

* सहकारी वीरोंके यह नाम हैं मेवाडके [illegible] (सलूम्बा) के रत्नसिंह, चूडावत, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उसके पुत्र अकबरको अभिषेकित करनेका विचार किया। शीघ्रही यह समाचार गुप्तभावसे अकबरको कहला भेजा, परम धार्मिक वृद्ध शाहजहांको तख्तपरसे उतारकर पितासे द्रोह करनेवाले दुष्ट औरंगजेबने संसारमें जो अत्यन्त घृणित उदाहरण स्थापित कियाथा, राजकुमार अकबर भी उस उदाहरणके अनुसार उस सुयोगको त्याग न करसका, इस कारण उसने आनन्दित हृदयसे राजपूतोंके प्रस्तावको ग्रहण किया, और शुभ कार्यको सिद्ध करनेके निमित्त राजपूतोंने अपने एक विश्वासी राजपूतको अकबरके पास भेजा, शीघ्रही राजपूतलोग अपनी२सेना लेकर इकट्ठेहुऐ। ज्योतिषीने आकर अकबरके अभिषेकका दिन निश्चय किया। गुप्तभावसे तैयारियें होनेलगीं; परन्तु उसकी असावधानीसे शीघ्रही वह समस्त तैयारियाँ निष्फल हुईं, और राजपूतोंके उद्देश भी व्यर्थ होगये, जिस चतुरता और तीक्ष्ण बुद्धिसे औरंगजेबके कार्य सिद्ध हुएथे, यदि अकबर उन्हें किंचित्मात्र भी जानता होता तो उसकी यह अभिलाषा शीघ्रही सिद्ध होजाती, तब वह जानलेता कि जिस ज्योतिषीने उसके अभिषेकका दिन निश्चय करदिया है वह कैसा कपटी और विश्वासघातक है, उस कपटाचारीने जब देखा कि राजकुमार अकबरके तख्तपर बैठनेकी सम्पूर्ण तैयारियां होरहीहैं और अब केवल सिंहासनपर बैठना बाकी है. तब वह बादशाहके पास गया और यह सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया. औरंगजेब एक मुहूर्तके लिये तो स्तम्भित हुआ, परन्तु उत्साहरहित न हुआ, उसने उस विपत्तिके समय एक वार अपनी अवस्थाको देखा, उसने देखा कि मैं अकेला हूं. औरंगजेबके शरीररक्षकोंके अतिरिक्त उस समय और कोई भी उसके पास नहीं था. मुअज्जम और अजीम बहुत दूरपर है, इस ओर अकबर भी थोडी ही दूर है अजमेर केवल एक दिनका ही मार्ग हैं, अब और उपाय क्या है? कौन पुत्रके हाथसे रक्षा करेगा? अकबरके साथ प्रगटमें युद्ध करना होगा, इस समय कोई सुगम और भी मार्ग नहीं है. अतएव ऐसी अवस्थामें क्या उपाय है? एक दिनसे अधिक और समय भी नहीं है। ऐसे संकटके समयमें वह एक दिनको एक मुहूर्त समझने लगा; परन्तु एक दिनके उस एक मुहूर्तको वृथा कार्यमें न लगाकर बुद्धिमान् औरंगजेब अपनी रक्षाका उपाय ढूंढने लगा। उपाय निकल आया। वह उपाय अत्यन्त सीधा था उस उपायसे मनुष्योंकी हत्या अथवा रुधिर भी न गिरा बादशाह अपनी रक्षा करनेको भलीभांतिसे समर्थ हुआ. उसने अकबरको एक पत्र लिखा और अपने गुप्त दूतके हाथ उस पत्रको राजपूतोंके सेनापति दुर्गा-

हुआ मनहीमनमें अतुल आनन्दको भोगने लगा । वह यह जानता था कि वीर हृदय राजपूतलोग कभी भी विश्वासघात करनेवाले नहीं हैं, अपने घरपर आये हुए शत्रुके ऊपर वह अन्याय नहीं करेंगे; विशेष करके जिस जयसिंहने अपना बदला लेनेमें सामर्थ्यवान होकर भी अनुग्रह करके एकबार छोड दियाथा,वही राजा जयसिंह क्या आज अपने घर आये हुए शत्रुके ऊपर कुछ कठोरता करेंगे ? हीनबुद्धि अजीम राजपूतोंके चरित्रोंपर यद्यपि अविश्वासी था परन्तु बुद्धिमान दिलरखॉने उनपर किंचित्मात्र भी संदेह न किया; वह राणाजीके द्वारा ग्रहण किया जाकर अत्यन्त ही आनन्दित हुआ । संधि बंधन समाप्त होगया, अकबरके विद्रोहाचरणमें राणाजीने जो सहायता की थी उसके दंडमें उन्होंने तीन जनपद बादशाहको दिये । बादशाहके अभिप्रायके अनुसार अजीमने यह भी कहा कि राणा अपने लालडेरे और छत्रको अबसे व्यवहार नहीं कर सकेंगे.परन्तु यह दंड नाममात्रके ही थे, केवल बादशाहके सन्मानकी रक्षाके लिये इस प्रकारका प्रस्ताव उठाया गया था,परन्तु राणाजीको इससे भी लाभ ही हुआ कारण कि अजीमके हृदयमें विश्वासको उत्पन्न करनेके लिये दिलरखॉने विदा होनेके समय राणाजीसे कितनी ही बातें कहीं थीं उनके पाठ करनेसे हमारी युक्तिकी सत्यता प्रगट होजायगी । जयसिंहसे विदा होनेके समय मुगलसेनापतिने नम्रतापूर्वक कहा कि "आपके सरदारलोग स्वभावसे ही कठोर हैं, और मेरा पुत्र आपके मंगलके लिये बंधक रक्खा गया है. परन्तु उनके जीवनके बदलेमें यदि आपके देशकी पूर्ण स्वाधीनताको पुर्णोद्धार करसकूं तो मैं इसमें भी न्यूनता नहीं करूंगा, आप अपने चित्तको स्थिर रखिये! आपके स्वर्गीय पिताके साथ मेरी मित्रता थी।"

राजपूतोंके मित्र दिलरखांका उद्योग सफल न हुआ. यद्यपि उसका वह उद्योग महान था परन्तु अनिवार्य कालकी गतिको रोकनेकी मनुष्यमें सामर्थ्य नहीं. दिलेरखां मनुष्य है. इस कारण उस प्रचंड घटनाकी परम्पराकी गतिको रोकनेकी उसमें सामर्थ्य नहीं हुई, उसका उद्देश्य विफल होनेपर राणाने अपने यत्नके ऊपर भरोसा किया, राजसिंहासन पर बैठनेके कोई चार पांच वर्षके पीछे उनको दुर्धर्ष आमीरी मुगलोंके कठोर आक्रमणोंसे अपनी रक्षाके लिये पुनर्वार पर्वतोंका आश्रय ग्रहण करना पडा था. कभी २ इन पर्वतोंसे बाहर आकरके भी युद्ध किया था। राज्यकी इस प्रकार दुर्दशाके समय और स्वाधीनताके कठिन अवसर पर राणाजीका अन्त सा भान स्वप्न होगया था, परन्तु इस ना-

यह आन्तरिक इच्छा थी कि अकबर तख्तपर बैठे आज वह अभिलाषा पूरी होतेहुए भी पूरी न हुई, इस कारण उसको जो दुःख हुआ था उसे वही जानता होगा उसके दुःखकी सीमा न रही, दुःखके पीछे निराशाने आकर घर दबाया उसी निराशासे उसका हृदय पत्थरकी समान होगया, अकबरके सौभाग्यके मार्गको साफ करनेके लिये उसने बादशाहको विष देकर मारडालनेकी अभिलाषा कीथी, परन्तु उसकी वह अभिलाषा भी निष्फल होगई, अन्तमें तहव्वरखांका जीवन भी नष्ट होगया, इस ओर औरंगजेबकी उस कूटनीतिके प्रकाश होनेसे पहलेही मुअज्जम और अज़ीम उसके पास आगयेथे, तब औरंगजेब भलीभांतिसे निष्कंटक होगया, अकबरने अत्यन्त भयभीत होकर राजपूतोंके पास आय उनका आश्रय लिया, राजपूतलोग बादशाहकी चतुराईको भलीभांतिसे जानगयेथे इसकारण अकबरको आदरसहित ग्रहणकरनेमें कुछ भी विचार न किया परन्तु अकबर तो भी निश्चिन्त न रहसका, वह जहां जहां जाता था वहां ही उसे यह दिखाई देताथा कि मानो पिताकी क्रोधाग्नि पीछे २ आरही है वह अपने पिताके कठोर चरित्रोंको भलीप्रकारसे जानता था उन्हीं चरित्रोंका विचार करते२उसको दुगुना भय होगया था. अन्तमें धीरे रहते हुए अपनी रक्षाका उपाय न देखकर उसने और स्थानपर जानेका विचार किया; राठौर वीर दुर्गादास उसकी इस उत्कंठाको देखकर पांच सौ राजपूतोंकी सेनाको साथ लेकर उसे पालवगढ़ स्थानमें महाराष्ट्र वीर संभाजीके पास लेजानेको मेवाड और डूँगरपुरके गिरिमार्गको उल्लंघन कर उन नगरमें जा पहुंचे, मार्गका कोई विघ्न तथा बाधा उनकी प्रचंड गतिको न रोकसकी: पालवगढ़में अकबर कुछ दिन रहा और इङ्गलैण्डके जहाज पर चढकर फारसको चलागया ।

पंडितवर अर्मने कहाहै कि "अपने भ्राता शुजाकी छायामयी प्रेममूर्तिको पठानोंके बीचमें देखकर औरंगजेब जैसी चिंतामें पीडित हुआ था आज संभाजीके पास अकबरके जानेका वृत्तान्त सुनकर भी उसे उसी प्रकारका दुःख हुआ, और फिर राजपूतोंमें अकबरकी मित्रताका होना उसके लिये और भी दुःखदायी होगया. यदि उनकी अपेक्षा राजपूतोंसे युद्ध होता तो वह उतनी चिन्ता नहीं करता यद्यपि राजपूत उसके प्राणोंका नाश करना नहीं चाहतेथे वह केवल उसको तख्तसे उतारनेकी इच्छा करतेथे। आज उन राजपूतोंको अकबरके साथ मिलाहुआ देखकर बादशाह अत्यन्त ही शंकित हुआ. उसकी इच्छा राजपूतोंके साथ संधिकरनेकी हुई परन्तु अपनी मर्यादाको विचारकर

न्तके पढनेसे भलीप्रकार जानी जायगी. प्रधानता और प्रतिष्ठाकी प्राप्तिके लिये भारतवर्षके अन्यान्य राजालोग जिस कुरीतिका अवलम्बन करके राज्यमें महा अनर्थ करते हैं. मेवाडके इतिहासको पाठ करनेसे जाना जायगा कि महाराज बाप्पारावलके वंशवाले कभी उस घृणित रीतिका अवलम्बन नहीं करते थे. इसका कारण और कुछ नहीं केवल गिह्लोटराजाओंकी श्रेष्ठ शासन नीति ही समझी जाती है, उन्होंने अपने पुत्रोंको वह नीति पढाई थी इस प्रकारके चरित्रोंसे राजपूतोंके चरित्र अत्यन्त उन्नत और ऊंचे भावको पहुंच गये थे।

अमरसिंहकी मातासे कमलादेवीका सवतियाडाह दिन २ बढने लगा अन्तमें वह इतना प्रबल होगया कि उन दोनोंका एक साथ रहना असम्भव बोध होने लगा, जिन जयसिंहने इससे पहले औरंगजेबके साथ युद्धमें अद्भुत वीरता और प्रचंड विक्रम प्रकाश किया था. आज उन्होंने ही इन झगडोंसे छुटकारा पानेके लिये अपनी बडी रानियोंको छोडकर प्राणप्यारी कमलादेवीको साथ ले जयपुरके स्थानमें रहकर अपने जीवनको व्यतीत करनेका विचार किया. राजधानीको और अमर सिंहको पांचोली मंत्रीके हाथमें समर्पण कर उस चित्तविनोदिनीके स्वर्गीय प्रेमालापसे उस एकान्त स्थानमें अत्यन्त आलसीकी समान समयको बिताने लगे। परन्तु वहांभी शान्तिको न पासके शीघ्रही उनको अपने पुत्रके अत्याचारोंसे उस स्थानको छोडकर अपने नगरमें आना पडा. अमरसिंहने अपनी युवावस्थाकी चंचलताके कारणसे एक मतवाले हाथीको नगरमें छोड दिया.उस मतवाले हाथीके द्वारा अनिष्टकी शंकासे अथवा और किसी कारणसे पांचोली मंत्रीने राजकुमारका तिरस्कार किया, इस कारणसे अमरसिंहने भी इसका घोर निरादर किया. मंत्रीके ऊपर अमरके इन अत्याचारोंका वृत्तान्त शीघ्रही राजातक पहुंचा,वह पुत्रके ऐसे दुष्ट व्यवहारोंको विचारकर अपने मनमें अत्यन्त शंकित हुए; और अमरको उचित शिक्षा देनेके विचारसे उस निर्जन स्थानको छोड मार्गमें चित्तौरपुरीको देखते हुए उदयपुर आ पहुंचे. परन्तु निर्बुद्धि अमरने अपने पिताके आनेकी भी बाट नहीं देखी. वरन उनकी [illegible] स्वता और अकर्मण्यताका विचार कर माताकी आज्ञाके अनुसार पिताके [illegible] करनेके लिये यह प्रतिज्ञा की, तथा बून्दीके राज्यमें अपने मामा राजराजाके यहां जाकर [illegible] इस तरह [illegible] सेनाको साथ ले पिताके राज्यमें आया. [illegible] समय अमरसिंहके सर्दारोंने भी अपने स्वामीकी सहायता की थी। और [illegible] [illegible] होगया. क्रमानुसार अपने सर्दार और सामन्त [illegible]

परन्तु यह समस्त वृत्तान्त राणा राजसिंहके उत्तराधिकारी जयसिंहके ही राज्यमें हुआ इस कारण इस स्थानमें इसका भलीभांतिसे विचार करना युक्तियुक्त नहीं होसकता; कारण कि संधिकी तैयारीके शेष न होते२ राजपूत वीर केशरी वीर श्रेष्ठ राणा राजसिंह इस असार संसारको छोडकर चलेगये थे, जबसे राणा राजसिंह गद्दीपर बैठेथे तभीसे उन्होंने मुगलबादशाह औरंगजेबके साथ कितनी ही बार युद्ध किये इससे उनके अंगप्रत्यङ्गोंमें बहुतसे घाव होगयेथे, उन्हीं घावोंकी पीडा होनेसे उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहा, एक तो उनको हृदयज्वरकी चिन्ता दिन रात भस्म करेडालती थी फिर घावोंकी भयंकर पीडा अधिक सताती थी वीर श्रेष्ठ राजसिंह उस भयंकर पीडासे छुटकारा पाय स्वर्गके सिंहासनपर अपने पूर्व पुरुषोंके साथ जाकर मिलगये। * जिस दिन हिन्दूकुलसूर्य वीर श्रेष्ठ प्रतापसिंहने अपने देशकी प्रेमिकता और संन्यासकी पराकाष्ठा दिखाकर इस लोकसे विदा लीथी उसदिनसे मेवाडकी भूमि जिस विषादरूपी भयंकर अंधकारसे ढकगई थी उस अंधकारको, अमर, कर्ण अथवा जगतसिंह इनमेंसे कोई भी दूर न करसका परन्तु वीर केशरी राजसिंहने अपने अद्भुत विक्रम और प्रकाशमान देशकी प्रेमिकताके बलसे उसको भलीभांतिसे दूरकर मेवाडके नष्टहुए गौरवका पुनरुद्धार किया। जैसे अविश्रान्त विक्रम और अध्यवसायके साथ उन्होंने दुष्ट औरंगजेबके विरुद्ध तलवार धारणकर उसके अखर्व गर्व और अहंकारको चूर्ण करदियाथा, इससे उनकी देशप्रेमिकताका स्पष्ट परिचय पायाजाताहै. राणा राजसिंह, वीर श्रेष्ठ

—१ चित्तौरके अन्तर्गत और सन्निकट जनपदोंको लौटा देनेकी आज्ञा हो।

२ हिन्दुओंके बहुतसे मंदिर तोड २ कर उन स्थानोंमें मस्जिदें बनवाईगईहैं [illegible] हमको अब कुछ नहीं कहनाहै परन्तु आगेको ऐसा घृणितकार्य नहीं [illegible]।

३ राणाजी जिस प्रकारसे बादशाहकी अनुकूलता करते आयेहैं [illegible]। [illegible] और अधिक दावा न कियाजाय।

४ "हम आशा करतेहैं कि स्वर्गीय राजा जसवंतसिंहके पुत्र और उनके [illegible] साधनकरनेमें सामर्थ्यवान होनेपर अपने राज्यको [illegible]।" (क)

(क) राणा राजसिंहने मारवाड कुमार अजितसिंहको राज्य [illegible] नेके लिये ही खड्ग धारण किया था। [illegible]।

अपनी मर्यादाका विचार करके [illegible] भगवान दिवाकरकी किरण [illegible] न होंवें। [illegible]।

* सम्वत् १७३९ (अर्थात् सन् १६८१ई०)

जो माहात्म्य है उनका बहुतसा भाग इनमें था, अपने पूर्वपुरुष अमरसिंहकी भी वीरता और महानता इनमें बहुतायतसे थी, परन्तु पिताके साथ जो इनका बडाभारी झगडा था उससे इनका और मेवाडभूमिका बहुतसा आन्तरिक बल नष्ट होगया था यदि ऐसा न होता, यदि अमरसिंह झगडा करके अपने राज्यका सर्व नाश न करते तो मुगलोंके राज्यकी अवनति होनेके समय मेवाडभूमि अपने नष्ट हुए गौरवको फिर प्राप्त कर लेती: परन्तु मेवाड भाग्य हीन है,नहीं तो वीर श्रेष्ठ देशप्रेमी राजसिंहके पुत्र होकर अभागे जयसिंह स्त्रीपरायण क्यों होते? राणा राजसिंह और उनके राज्यका वृत्तान्त पढनेसे स्पष्ट ही विदित होताहै कि राजाके चरित्रोंपर ही राज्यका दुःख सुख निर्भर रहताहै । राजपूत कुलगौरव,स्वदेशानुरागी वीर केशरी राजसिंहने अपनी स्वभाव सिद्ध वीरता महानता और तेजस्विताके बलसे अपने अनुगत मनुष्योंके हृदयमें प्रकाशमान स्वदेशानुराग तथा आत्मोत्सर्गको उद्दीपित करदिया था,फिर उसी असीम स्वदेशानुराग और आत्मोत्सर्गके प्रभावसे मुगलबादशाहकी विपुल सेनाके विरुद्ध तलवार पकडकर बादशाहको और उनके पुत्रोंको तथा उसकी रणविशारद सेनाको परास्त किया था परन्तु उनका उत्तराधिकारी. मेवाडवालोंकी अनुकूलता तथा सहानुभूति पाकर भी मेवाडभूमिको ऐसी दीन हीन दशामें छोड़ गया कि और कोई सहस्रों चेष्टा करके भी उस दुरवस्थासे इस भूमिका उद्धार न करसका।

राजसिंहासनपर बैठनेके थोडे दिन पीछे ही अमरसिंहने सम्राट्के उत्तराधिकारी शाह आलमके साथ संधि कर ली, ऐसी संधि करनेमें इनकी होनहार दूर दर्शिताका विलक्षण परिचय पाया जाता है जिस समय यह अपने पिताके राज्यपर बैठे थे उस समयसे मुगलोंके राज्यमें एक भयंकर बखेड़ झगड़ा हो रहा था. मुगलोंके राज्यकी ऐसी दुरवस्थाको देखकर दूरदर्शी राणा अमरने इसही कारणसे मुगलोंके होनहार बादशाह आलमके साथ संधि कर ली थी। यह सन्धि चुप चाप हुई थी. जिस समय शाह आलम सिन्धनदके पश्चिमपार होगया था. उस समय मेवाडकी सहचारी सेनाने [illegible] [illegible] दिये दूर गमन किया और एक [illegible] सर्दारकी सेनाको [illegible] उस स्थानपर अत्यन्त वीरता प्रकाश की थी। ऐसा [illegible]

हितैषी राजा थे, इसका प्रमाण उनकी लिखीहुई प्रथमोक्त पत्रिका है उस पत्रिकाकी रचनासे उन्होंने अनुपम लिपिचातुर्य्य और अपने उदार हृदयका परिचय दियाथा, इससे उनको नीतिके जाननेवाले परम विद्वान् और महात्माओंमें ऊंचा स्थान दिया जासकताहै, वह एक शिल्पप्रिय राजा भी थे, इसका यथार्थ प्रमाण उनका वनवायाहुआ वडाभारी राजसमंद सरोवर है, उस राजसमंद सरोवरकी प्रतिष्ठाका कारण और उसका समस्त वृत्तान्त यथारीतिसे वर्णन करके हम मेवाडके इतिहासका यह दीप्तिमान् परिच्छेद समाप्त करेंगे।

राजसमंद सरोवर। जातीय महती प्रतिष्ठा और राजपूतोंकी कीर्तिका विशाल प्रमाणक्षेत्र यह राजसमंद सरोवर राजधानीसे साढे वारह कोश उत्तर और आरावलीकी तलैटीसे एक कोशपर स्थितहै, गोमतीनामकी टेढी चलनेवाली पहाडी नदीकी धारको एक वडेभारी वंधेसे वांधकर इस सरोवरको वनायागया था। महाराणाने अपने नामके अनुसार ही उसका नाम "राजसमंद" (राजसमुन्द) रक्खाथा, ईशान और वायुकोणके अतिरिक्त और सभी ओर बन्धा वंधाहुआहै। यह सरोवर वडा गहरा है, इसका घेरा प्रायः छः कोश १२ मीलतक होगा, यह संगमर्मरका वनाहुआ है, इसके किनारेसे नीचेतक संगमर्मरकी रमणीय सीढियें बनीहुई हैं, जिन्होंने चारों ओरसे इस सरोवरको घेर रक्खाहै, इस सरोवरके किनारे भी इस ही पत्थरकेहैं इसका वंधा मिट्टीके परकोटेसे घिराहुआ, यदि राजसिंह और कुछ दिन जीते तो चारों ओर सुन्दर २ वृक्षोंको लगाकर इसकी शोभा बढाईजाती, सरोवरके दक्षिण ओर राणाने एक नगरी और किला वनावायाथा, उस नगरको अपने नामके अनुसार ही "राजनगर" नामसे विख्यात किया पूर्वोक्त वंधके ऊपरीभागमें श्रीकृष्णजीका एक अत्यन्त शोभायमान मंदिर वनवाया गया, जिसमें समस्त कार्य संगमर्मरसे हुआ, इसमंदिरके भीतर नानाप्रकारके मनोहर चित्र लगे हुए हैं, वीचमें एक स्थानपर वडेमोटे और साफ अक्षरोंमें लिखाहुआ उसकी प्रतिष्ठा करानेवालेका वृत्तान्त पायाजाताहै। इसके वनवानेमें और इसकी प्रतिष्ठा करनेमें महाराणाने९८ लाख रुपये खर्च कियेथे उनके सर्दार और प्रजाने भी बहुत सी सहायता कीथी, इसमें जो सफेद पत्थर लगाया गयाथा वह पहाडोंसे इकट्ठा किया गया. यदि राणा उसको भी मोललेते तो न जाने कितना रुपया लगता [illegible] जिसका अनुमान करना भी कठिन है. परन्तु मेवाडभूमि [illegible] मिला तो उसकी [illegible]. यह राजसमंद सरोवर शोभायमान और दर्शनीय है। सुन्दरतामें भी अनुपम [illegible]-

करदिया है कि नीतिबलकी सहायता न लेकर केवल खड्गके बलसे भारतवर्षको शाशन करनेसे विपत्तिमें पडना होगा।"

हिन्दुओंके वैरी औरंगजेबके शाशनकी रीतिका विचार करनेसे महात्मा दाहूसाहबकी युक्तिकी सत्यता भलीभांति जानी जाती है। बलगर्वित दुराचारी औरंगजेब अपने असीम बलकी सहायताको विचारकर शुद्धाचरण करनेवाले राजपूतोंसे घृणा करता था इसीसे उसने अपने और अपने बडेभारी राज्यकी जडमें स्वयं ही कुल्हाडी मारी थी। बलसे अंधा होनेके कारण यद्यपि वह अपनी यथार्थ अवस्थाको नहीं जान सकता था. तथापि यह स्पष्ट देखा जाता है कि राजनीतिके जाननेवाले अकबरने जिस बडे भारी राज्यकी जडको जमाया था, वह जड केवल औरंगजेबके ही दुराचरणोंसे जड कटे हुए वृक्षकी समान कंपायमान होती थी। औरंगजेब यदि एकपलभर भी अपने राज्यके सम्बन्धका विचार करके देखता तो, मुगलोंका अतिशीघ्र नाश न होता, इन बातोंको विचारनेपर दृढ विश्वास होता है कि राज्यशाशन करनेमें चाहे कोई कितना ही चतुर तथा रण करनेमें कितना ही कुशल हो अथवा कितना ही सहाय बल और विक्रमका अधिकार करनेवाला हो परन्तु जबतक प्रजाके हृदयका अनुराग नहीं प्राप्त करेगा. प्रजाको संतुष्ट नहीं करेगा तबतक वह कभी अपने राज्यपदको अखंड अथवा दृढ नहीं रख सकता है। महात्मा दाहूसाहबके समयमें ब्रिटिशसिंहका राज्य जितनी दूरतक फैलाहुआ था, औरंगजेबके समयमें मुगलोंका राज्य उसकी अपेक्षा अधिक था, फिर मुगलोंके पास रक्षाके सामान भी अत्यन्त दृढ थे, तथा विशेष करके राजपूतोंके साथ उनका शोणित सम्बन्ध स्थिर होचुका था। राजपूतलोग सताये जाकर भी उसके राज्यका मंगल करनेके अर्थ अपने प्राणोंतकके देनेमें भी न्यूनता नहीं करते थे. अधिक क्या कहें वह सिंधुनदके पार हो काबुलमें पहुँच कर उसके लिये देश जय करते थे. भारतवासी चिरकालसे राजभक्त होते आये हैं, इसी कारणसे उसके कठोर अन्याचारोंको सहन करके भी प्राण देनेको आगे बढते थे। भारतवासियोंकी राजभक्तिको अकबर भलीभांति समझ गया था. जहांगीर और शाहजहां भी इसकी रीतिके अनुसार चलते थे. वही समय समय पर भारतसंतानोंको उस राजभक्तिका बदला दिया करते थे. परन्तु दुराचारी औरंगजेबने उस राजभक्तिकी महिमाको न जाना, अथवा जानकर भी सह- नेकी इच्छा न की. कारण कि वह हिन्दूसन्तानोंकी राजभक्ति और उनकी [illegible] को गणित नामसे पुकारता था. वह कहता था कि भारतवासी मेरे सर्वदा [illegible]

अपने पतियोंको अनायास ही छोडकर इधर उधरको भागीं, माता पिता अपने छोटे २ बालकोंको वेचने लगे, क्रमसे उस कालमें बहुतसे अनर्थ होनेलगे । दारुण कुग्रह और महामारीकी छायाने बडी दूरतक विस्तार किया; अधिक क्या कहें, कीडे और पतंगतक भी प्यासके मारे मरनेलगे, सहस्रों बालक, वृद्ध, युवा, और स्त्रियोंने क्षुधासे व्याकुल होकर अपने प्राणोंको त्यागदिया । जो लोग एक दिनके खानेके लिये भोजनको पाते उसको वह दो दिन करके खातेथे, पछादिया पवन तीक्ष्ण वेगसे चलनेलगा वह पवन विषसे परिपूर्ण था, प्रायः रात्रिमें धूमकेतु इत्यादि नक्षत्र आकाशमें दिखाई देने लगे, दिनमें बादलोंका नाम निशानतक भी दिखाई नहीं देता था, बिजलीके प्रकाश, बादलोंके गर्जनेकी ध्वनिको तो मानो लोग सम्पूर्णतः भूल ही गयेथे इन कुलक्षणोंको देखकर मनुष्य भयके मारे अत्यन्त ही व्याकुल हो उठे, नद, नदी, सरोवर; झरने और सोते सभी सूखगये । धनवान मनुष्य भोजनकी सामग्रीको तोल २ कर बांटने लगे, धर्माचारी मनुष्य अपने कर्तव्य कर्मको भूलगये, अब जातिका भेद भी न रहा, ब्राह्मण शूद्रोंका विचार करना कठिन होगया! बल, विक्रम, ज्ञान, गौरव, जाति, वर्ण, सब ही जाता रहा, एकमात्र भोजन ही मनुष्योंको मोक्षका देनेवाला दिखाई देने लगा ! चारोंवर्णोंने अपने २ जातिभेदोंको दूर फेंकदिया, केवल एक क्षुधाकी पीडासे ही सबका नाश होनेलगा। फल, मूल, कन्द, वृक्षोंके पत्ते और वृक्षोंकी छालतकको मनुष्य खानेलगे; यहांतक कि मनुष्यको मनुष्य खाने लगा, नगर गांव शहर इत्यादि सभी सूने होगये ! बीजके न होनेसे वंश नष्ट होनेलगे । अब तालावोंमें मच्छी इत्यादि जन्तु नहीं रहे सबका आशा भरोसा एकबार ही लोप होगया ।

संवत् १७१७ के भयानक दुर्भिक्ष × और महामारीके लोमहर्षण वृत्तान्त प्रगट हुआ जिस समय यह दोनों कुग्रह मेवाडभूमिको पीडित करतेथे उसी समय दुष्टात्मा औरंगजेबने भी यह युद्ध किये थे, उसके कठोर अत्याचारोंसे दुर्भिक्षसे पीडित हुए मेवाडकी दुर्दशा और भी अधिक बढगई थी इसका अनुमान सहजसे ही किया जासकता है. किन्तु उन पैशाचिक अत्याचारोंका [illegible] फल बादशाहको भोगना पडाथा, उसके नामको [illegible] उसका इतिहासोंने लिखा है, उसके वंशवाले अपने पितृकुलकी [illegible] और [illegible] दूर अलग होगये हैं । संसारमें [illegible] भी [illegible] नहीं है ।

× [illegible] ।

× सन् १६६१ ई०

राजपूत सेनाने उसकी सहायता की राव गोपाल दक्षिणको जानेके समय अपने पुत्रके हाथमें रामपुरका शासन भार सौंप गया था, परन्तु उसके कुलकलंक पुत्रने बहाका कर पिताके पासको न भेजकर अपने पास ही रख लिया। तब राव गोपालने उसके नाम बादशाहके यहां अभियोग चलाया, वह मूर्ख अपने पिताके क्रोधित नेत्रोंसे और बादशाहके क्रोधाग्निसे छुटकारा पानेका उपाय ढूंढने लगा, बहुत समयके पीछे उपाय मिलगया; इस उपायसे ही उसका संकट छूटा और अभिलाषा पूर्ण हुई वह उपाय यह था कि उस दुराचारीने अपने धर्मको छोड इसलामधर्मको ग्रहण किया तब औरंगजेबने संतुष्ट होकर केवल उसको क्षमा ही नहीं किया वरन राव गोपालकी भूमिवृत्ति रामपुर जनपद भी उसको ही दे दिया, कुलकलंक पुत्रके ऐसे दुराचारोंसे राव गोपालको अत्यन्त घृणा हुई उसने अत्यन्त दुःखित हो पाखंडी पुत्रको इस कार्यका प्रतिफल देनेकी इच्छासे सेनाके साथ रामपुरपर चढाई की. परन्तु उसका उद्योग सफल न हुआ, तब गोपाल रावने अपनी रक्षाका उपाय न देखकर राणा अमरसिंहका आश्रय लिया, दुष्टस्वभाव औरंगजेब इस बातको सह न कर सका, गोपालको आश्रय देनेके कारण राणाको वह विद्रोही समझने लगा और उनकी चाल ढाल देखनेके लिये उसने अपने पुत्र अजीमको मालवराज्यमें रहनेकी आज्ञा दी, बादशाहका परम अनुगत एक राजदूत अपने जीवनचरित्रमें औरंगजेबके उक्त दुराचरणोंका साफ २ वर्णन कर गया है उस ग्रन्थमें एक स्थानपर लिखा है कि "बादशाह अपने अत्यन्त विश्वासी और सहकारी राजपूतोंपर किंचित् ही अनुग्रह करता था। इसी कारणसे उसकी सेवा करनेमें राजपूतोंका आग्रह मंद होगया था" बादशाहके दुष्ट अभिप्रायको जान-कर ही राणा अमरसिंहने उसके विरुद्ध तलवार पकडी थी. राणाकी सहायता करनेके लिये मालवराज भी युद्धभूमिमें आया था। अजीम उस समय नर्मदाके पल्लीपार था वहांपर महाराष्ट्रियोंने नीमासिन्धिया नामक एक रणविशारद मरा-ठाको सेनापति बनाकर उस देशमें भयंकर झगडा मचा रक्खा था. इसी

का परिचय पायाजाता है, उस वृत्तान्तका इस स्थानपर अत्यन्त प्रयोजन जानकर हम वर्णन करते हैं, जयसिंहके जन्म होनेसे कुछ ही देर पहले उनकी सौतेली माताके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम भीम था नवीन कुमारके उत्पन्न होनेपर सोवरमें ही राजपूतलोग उसके हाथमें अमरधव नामक एक प्रकारका स्वास्थ्यकर खँडुआ पहरादिया करतेथे, जो तिनकोंका बनता था, महाराणाने भी आज उसी खँडुएके पहरानेका आयोजन किया किन्तु छोटे पुत्रकी माताके ऊपर अत्यन्त अनुराग करनेके कारण राणाजीने उसीके पुत्रकी भुजामें वह "अमरधव" पहरादिया, राणाने इस कार्यको इस भावसे किया कि मानो भूलसे ही किया हो, परन्तु वास्तवमें भूल नहीं हुई, अस्तु अपनी सुकुमार अवस्थाको लांघकर दोनों भाई अब धीरे २ तरुणाईकी विचित्रमयी सीमा पर पहुँचे छोटेके ऊपर पिताका अधिक प्रेम देखकर बडा पुत्र ईर्षासे परस्पर झगडा न करै, इस शंकासे शंकित हो राणाने एक समय भीमसिंहको अपने पास बुलाया, और अपनी तलवारको म्यानमेंसे निकाल उसके हाथमें दे गंभीर स्वरसे बोले-"इस तलवारको लेकर शीघ्रही अपने छोटे भाईको मार डाल. नहीं तो आगेको इस राज्यमें घोर विपत्तिके होनेकी सम्भावना है।" उदार हृदय तेजस्वी भीम अपने पिताकी इस अकपट युक्तिको सुनकर किंचित् भी विस्मित न हुए. पिताने जिस संकटमें पडकर यह कष्टकर वचन कहे थे, उसको भीम भी समझ गये थे, उस संकटसे उद्धार करनेके लिये भीमने स्थिर और अचल भावसे उत्तर दिया "हे पितः! आप कुछ भी शंका न करें मैं आपके सिंहासनको स्पर्श करके कहता हूं, कि आजसे मैं अपने समस्त स्वत्त्वको त्यागकर जयसिंहको देदूंगा, आजसे मैंने इस राज्यको भी छोडा. आपके चरणोंको छूकरके कहता हूं कि आजसे देवारी गिरिमार्गके बीचमें यदि एक बूंद जलतक भी पान करूं तो मैं महाराणा राजसिंहका पुत्र नहीं।" यह कहकर भीमने पिताके निकटसे विदा ली. तथा अपनी सेना और सामन्तोंको बुलाया और अपनी सौभाग्य लक्ष्मीका प्रसाद पानेकी आशामें उनके साथ उदयपुरसे विदा होगये।

इस समय ग्रीष्मकालकी कठिन दुपहरी है. सूर्यदेव आकाशमें विराजमान होकर अग्निके समान अपनी किरणोंकी वर्षासे पृथ्वीको दग्ध कर रहे हैं. प्रकृति स्थिर गंभीर और निश्चल है। वृक्षका एक पत्ता तक भी नहीं हिलता, उदयपुरके सामने देवारी गिरिमार्ग. दुपहरीके सूर्यकी अग्निके समान तीक्ष्ण

मारवाड.राजवाडेके पश्चिम राज्यके समस्त राजा मोअज्जमके झंडेके नीचे आकर खडे हुए थे।इन सब राजपूतोंको साथ लेकर सुलतान मोअज्जमने जाजौ नामक स्थानमें अजीमकी सेनाका सामना किया, परन्तु अजीम अपने बडेभाईके भयंकर प्रतापको न सहनेके कारणसे कोटा और धाननगरके दोनों राजा तथा अपने बेटे बेदारबख्तके साथ उसही युद्धमें मारा गया। पीछे मोअज्जम भलीभांतिसे निष्कंटक हो शाह आलम बहादुरशाह नामकी पदवीको धारण कर पिताके तख्तपर विराजमान हुआ। मोअज्जममें बहुतसे सुन्दर गुण थे. उन गुणोंसे मोहित होनेके कारणसे ही राजपूतलोग उससे स्नेह करते थे, विशेष करके इसका जन्म भी राजपूत स्त्रीके गर्भसे हुआ था, इसी कारणसे सबही इसपर अनुग्रह करते थे. यदि सुलतान मोअज्जम हिन्दूहितैषी धर्मात्मा शाहजहांके बाद ही दिल्लीके सिंहासनपर बैठता, तो वीरवर तमूरका स्थापन कियाहुआ वंश-वृक्ष इतनी शीघ्रताके साथ भारतभूमिसे न उखड जाता.तब तो आजतक भी मुगल लोग तख्त ताऊसपर बैठकर एशियाके बीचमें एक प्रबल राजवंशके नामसे विख्यात हो सकते थे. परन्तु इस संसारमें किसीका भी गौरव सर्वदा स्थिर नहीं रहसकता, नहीं तो यह दुराचारी औरंगजेब बादशाहीपर बैठते ही अपनी प्रजाको लोहदंडके प्रहारसे पीडित क्यों करता,और क्यों उसका राज्य नरककी समान समझा जाता? वीरवर तमूरके वंशमें औरङ्गजेब अयोग्य हुआ उसके पूर्वपुरुषोंने इस विस्तारित भारतवर्षके बीच अपने राज्यको अखंड रखनेकी इच्छासे जिन नीतियोंका आश्रय लियाथा. मतवाले औरङ्गजेबने बलके घमंडसे उन्हीं श्रेष्ठ नीतियोंके मस्तकपर लात मारी। वह भारतका बादशाह था. समुद्ररूपी वस्त्रको धारण करनेवाली और पर्वतरूपी नगडीको पहरनेवाली विशाल भारतभूमि उसके चरणोंके नीचे गिरी थी. यदि वह इच्छा करता तो अपने पितृपुरुषोंकी श्रेष्ठ नीतिका अनुसरण करके विरागी राजपूतोंको [illegible] उत्साहित और अनुरक्त करसकता था. परन्तु उसकी कठोर निर्बुद्धिताने [illegible] किसी प्रकारका उत्तम कार्य उससे न करने दिया ईश्वर चाहनेसे किसी [illegible]

का परिचय पायाजाता है, उस वृत्तान्तका इस स्थानपर अत्यन्त प्रयोजन जानकर हम वर्णन करते हैं, जयसिंहके जन्म होनेसे कुछ ही देर पहले उनकी सौतेली माताके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम भीम था नवीन कुमारके उत्पन्न होनेपर सोवरमें ही राजपूतलोग उसके हाथमें अमरधव नामक एक प्रकारका स्वास्थ्यकर खँडुआ पहरादिया करतेथे,जो तिनकोंका बनता था, महाराणाने भी आज उसी खँडुएके पहरानेका आयोजन किया किन्तु छोटे पुत्रकी माताके ऊपर अत्यन्त अनुराग करनेके कारण राणाजीने उसीके पुत्रकी भुजामें वह "अमरधव" पहरादिया, राणाने इस कार्यको इस भावसे किया कि मानो भूलसे ही किया हो, परन्तु वास्तवमें भूल नहीं हुई, अस्तु अपनी सुकुमार अवस्थाको लांघकर दोनों भाई अब धीरे २ तरुणाईकी विचित्रमयी सीमा पर पहुँचे छोटेके ऊपर पिताका अधिक प्रेम देखकर बडा पुत्र ईर्षासे परस्पर झगडा न करै, इस शंकासे शंकित हो राणाने एक समय भीमसिंहको अपने पास बुलाया, और अपनी तलवारको म्यानमेंसे निकाल उसके हाथमें दे गंभीर स्वरसे बोले—"इस तलवारको लेकर शीघ्रही अपने छोटे भाईको मार डाल, नहीं तो आगेको इस राज्यमें घोर विपत्तिके होनेकी सम्भावना है।" उदार हृदय तेजस्वी भीम अपने पिताकी इस अकपट युक्तिको सुनकर किंचित् भी विस्मित न हुए, पिताने जिस संकटमें पडकर यह कष्टकर वचन कहे थे, उसको भीम भी समझ गये थे, उस संकटसे उद्धार करनेके लिये भीमने स्थिर और अचल भावसे उत्तर दिया "हे पितः! आप कुछ भी शंका न करें मैं आपके सिंहासनको स्पर्श करके कहता हूं, कि आजसे मैं अपने समस्त स्वत्वको त्यागकर जयसिंहको देदूंगा, आजसे मैंने इस राज्यको भी छोडा. आपके चरणोंको छूकरके कहता हूं कि आजसे देवारी गिरिमार्गके बीचमें यदि एक बूंद जलतक भी पान करूं तो मैं महाराणा राजसिंहका पुत्र नहीं।" यह कहकर भीमने पिताके निकटसे विदा ली. तथा अपनी सेना और सामन्तोंको बुलाया और अपनी सौभाग्य लक्ष्मीका प्रसाद पानेकी आशासे उनके साथ उदयपुरसे विदा होगये।

इस समय ग्रीष्मकालकी कठिन दुपहरी है सूर्यदेव आकाशमें विराजमान होकर अग्निके समान अपनी किरणोंको वर्षाके पृथ्वीको दग्ध कर रहे हैं. प्रकृति स्थिर गंभीर और निश्चल है। वृक्षका एक पत्तातक भी नहीं हिलता. उदयपुरके सामने देवारी गिरिमार्ग, दुपहरीके सूर्यकी अग्निके समान तीक्ष्ण

कारण पाय शीघ्रही सिक्खोंके दबानेको उत्तरमें जाना पडा, गुरु नानकने इस विकराल जातिकी प्रतिष्ठा की थी, यह जाति सिक्ख (शिष्य) लोगोंकी थी। कहते हैं कि अक्सस नदीके किनारे शाकद्वीपके प्राचीन जितकुलमें यह जाति उत्पन्न हुई थी पीछे चढाई करके ईसवीकी पांचवीं शताब्दीके मध्य भारतवर्षके पश्चिम देशमें आकर बसी, गुरु नानकके महामंत्रसे दीक्षित होनेके एक शताब्दी पीछे अपनी रक्षा करने योग्य नीति और बल विक्रमसे युक्त हो सिक्खोंने क्रमशः अपनेको स्वाधीन कहकर विख्यात किया। आज बहादुरशाहके शासनकालमें सम्पूर्ण मुगलोंकी सलतनतके बीच केवल एक सिक्खोंकी ही जाति स्वाधीन है। इस समय उनकी स्वाधीनताको देखकर बादशाह सेनाके साथ पंजाबकी ओरको चला, युद्ध करनेको जाते समय अम्बेर और मारवाड़के दो राजाओंने शीघ्रही जाकर बहादुर शाहसे साक्षात् किया, परन्तु उससे कुछ न कहकर और आज्ञाको बिना ही लिये वहांसे चले गये, उनके ऐसे चित्तके बदलनेका कोई भी कारण नहीं जाना गया, परन्तु इतिहासके किसी २ ग्रन्थमें देखा जाता है कि वह लोग सिक्खोंके तीक्ष्णभावका अनुसरण करके मुगलोंकी परतंत्रतासे अपनेको छुडानेका विचार कर रहे थे।

भारतकी ऐसी हीन अवस्थाके समय पराक्रमी सिक्खोंके उदाहरणका दृष्टान्त लेकर राजपूतोंने मुगलोंकी आधीनता रूपी जंजीरको तोडनेका विचार किया, बादशाह बहादुरने उनको सावधान और शान्त करनेके लिये अपने बडे पुत्रको भेजा, तब वह बादशाहकी आज्ञाको उल्लंघन न कर सके, परन्तु सावधान नहीं हुए। राजपूतोंको सावधान करनेके लिये बादशाहने कितने ही यत्न किये परन्तु कोई यत्न भी फलीभूत न हुआ. इसके उपरान्त बादशाहकी बिना आज्ञाके ही राजपूतलोग उन डेरोंको छोडकर उदयपुरमें राणा अमरसिंहके पास चलेगये, वहां जाकर परस्पर संधि कर ली, इस प्रकारसे राजस्थानमें तीन महाराज एकत्रित हुए, छोडेहुए राठौर और कुशावह बहुत समयके पीछे राजपूतकुल चूडामणि परम पवित्र शिशोदियोंके साथ एकत्र भोजन कर सके और विवाह इत्यादिक सम्बन्ध भी होने लगे. इस सन्मानको पानेके लिये ही उन्होंने इन्हीं उन्होंसे संधि की थी. इस संधिपत्रपर हस्ताक्षर करनेके समय मारवाड और अम्बेरके दोनों राजाओंने अपने २ इष्टदेवताका नाम लेकर शपथ की थी कि आजसे कोई कभी मुगल बादशाहके साथ पारिवारिक अथवा राजनैतिक किसी प्रकार कोई सम्बन्ध न करेगा. इसके साथ ही यह निश्चय भी किया कि

दिनोंमें ही सिन्धुनदीके पल्लीपार भेजे गये, दुःखका विषय है कि कावुल-देशसे फिर इस भारतवर्षमें आनेका सुअवसर उनके भाग्यमें नहीं था । अपनी निर्वुद्धिके वशसे कठोर व्यायाम करते हुए वह अकालमें कालके गालमें गये*

इस समय हम महाराणा जयसिंहजीके चरित्रोंकी समालोचना करेंगे, राजसिंहासनपर वैठनेके कुछ दिनों पीछे उन्होंने औरंगजेबके साथ संधि कर ली । वादशाहका पुत्र अजीम और मुगलसेनाका सरदार दिलेरखॉ उस संधिपत्रको लेकर राणाके निकट पहुँचा, राणाजी उनको आदरसहित ग्रहण करनेके लिये दश हजार अश्वारोही और चालीस हजार पैदलोंकी सेनाको मेवाड़के विस्तारित क्षेत्रमें लाकर उनकी वाट देखने लगे । यह कौतुक देखनेके लिये वड़ी भीड़ हुई, प्राणोंसे भी अधिक प्यारी मेवाडभूमिको वहुतकालके पीछे फिर देखनेके लिये परमानंदसे पुलकायमान होकर मेवाडके रहनेवाले लोग पर्वतोंको छोडकर उस वडे विस्तारित क्षेत्रमें आय २ कर खडे होगये, सभीके मुखारविंदोंपर आशा, उत्साह और आनंदकी हास्यमयी प्रभा प्रकाशमान थी, जय और आनंदके शब्दसे आकाशमंडलको कंपायमान करते हुए उस वडेभारी जनस्थानके भूभागमें सव लोग खडे थे कि इसी अवसरमें अजीम और दिलेरखॉ अपने कितने एक शरीररक्षकोंको साथ लियेहुए उस स्थानमें आपहुँचे, उनको अपने सामने खडा हुआ देखकर राजपूतोंने "जय महाराज जयसिंहजीकी जय!" कहकर भयंकर गंभीरस्वरका उच्चारण किया, लाख २ मनुष्योंके ऊंचे स्वरकी गंभीरता प्रतिध्वनित होकर अनंत आकाशमें जाकर गूंजने लगी दिलेरखॉके पहुँचनेपर राणाने उसको उचित आदर सन्मानके साथ ग्रहण किया. राणा जयसिहनेभी दिलेरखॉकी गिरिसंकटके समय रक्षा कीथी इसीसे मुगलसेनापतिने राणा जयसिहके निकट वारम्वार कृतज्ञताको स्वीकार करके उनके स्वर्गीय पिता आदिकोंको सहस्रों करोडों धन्यवाद दिये. राणाजीके भारी सेनादलकी सजावटको देख अजीम मनहीमनमें कुछ भयभीत हुआ. परन्तु विद्वान दिलेरखॉ राजपूतोंकी महानता और उदारताके विषयको विचारकर कृतज्ञताके चिन्हस्वरूपको प्रगटकरता

* भीमसिंहके वरावर इसीराजके निकटके [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

कुछ काल पीछे बादशाहने और एक वृत्तान्त सुना कि राणाके सुबलदासनामक कर्मचारीने पुरुपमंडलके शाशनकर्ता फीरोजखाँपर आक्रमण किया, उसके आक्रमणको निवारण न कर सकनेके कारण फीरोजखाँ अत्यन्त दुःखित और पीडित होकर अजमेरको भाग गया है । परन्तु वीरवर जयमलका वंशधर उस युद्धमें मारा गया-फीरोजखाँके वृत्तान्तको जानकर बादशाह अत्यन्त ही दुःखित हुआ, पहली दोनों बातें भी उसको सत्यसी दिखाई देने लगीं, जो साहसी और बलवान दुर्गादास पितासे वैर करनेवाले अकबरको सहस्रों बाधा और विपत्तियोंके बीचमेंसे लेकर जाकर निष्कन्टक स्थानमें पहुंचाआया था वही वीर आज फिर मुगल बादशाहके इस सर्वजनीन संघर्पणके समय रंगभूमिमें आ पहुँचाहै। उसके राजा इस समय उसको पालन पोपण न करसके इसहीसे दुर्गादास उदयपुरमें चला आया था। राणाने आदर सन्मानके साथ उसको अपने यहां रक्खा और प्रतिदिन पांचसौ रुपये नियत कर दिये परन्तु इन सब राजपूत वीरोंके इकट्ठा होनसे जिस महाबलकी उत्पत्ति हुई. उसके कार्यका आरम्भ शाह आलम बहादुर शाहके समयमें नहीं होनेपाया. कारण कि उस महाबलवान शक्तिका कार्य आरम्भ होनेसे पहले ही शाह आलम बहादुर आततायी पाखंडियोंके विप देनेसे अकालमें ही इस लोकसे विदा हुए× यह एक सरल स्वभाववाला बादशाह था, परन्तु अभाग्यसे उसके दुराचारी पिताके असीम पापोंका फल सहस्रों करोड़ों वज्रोंका रूप बनाय अंतमें पुत्रके मस्तकपर गिरा. पिताके किये हुए पापोंका फल पुण्यवान पुत्रको भोगना हुआ. शाह आलमकी आशा भरोसा सभी नष्ट होगया, हिन्दुकुशसे प्रारंभ करके समुद्रतक फैलेहुए भारत देश औरंगजेबके अत्याचारसे उत्तेजित होगये थे, बहादुर शाहने विचाराथा, कि इन सम्पूर्ण उपद्रवोंको दूर करके मुगल राज्यमें सुख और शान्तिकी रक्षा करेंगे परन्तु दुर्भाग्यतासे उनकी वह आशा सफल न हुई. यदि पाखंडी और पिशाचोंके हाथसे छुटकारा पाकर वह और कुछ दिनतक जीवित रहता तो मुगल राज्यका इतनी

यको निर्वाह करके भी राणाजीने जो अनन्त कीर्ति स्थापन की है, उसका विवरण पाठ करनेसे कहना पडेगा कि वास्तवमें मेवाडभूमि रत्नगर्भा है, प्रसन्न सलिला गिरितरंगिणीके बीचमें एक विशाल बंधेको बांधकर राणाजीने "जयसमुन्द" नामक एक विशाल सरोवर बनाया। भारतवर्षके बीचमें जितने सरोवर हैं, उन सबमें "जयसमुन्द" बडा सरोवर है; प्रकृतिकी अनुकूलतासे जयसमुन्द सरोवरके बनानेमें बहुत ही सहायता मिली थी, कारण कि जिस स्थानमें यह सरोवर बना है. वहां पहले भी ढेवरनामक एक छोटा तालाब था, महाराणा जयसिंहने बुद्धिबलसे उस तालाबकी असीम जल राशिको एकत्रित करके चारोंओर ऊंचा बंधा बँधवाया इस जयसमँदका घेरा पन्द्रह कोशसे कम नहीं है, जयसमँदसे हरे २ खेतोंका और विशेष करके धानोंके खेतोंका बडा उपकार हुआ। इस सरोवरके किनारेही बंधेके ऊपर राणाजीने अपनी प्यारी रानी कमलादेवीके * लिये एक शोभायमान महल बनवाया था।

परिवारिक झगडोंमें बंधनेसे राणाका शेष जीवन अत्यन्त कष्टदायी हो उठा उनकी आन्तरिक सुखशान्ति बहुतायतसे जाती रही, इस झगडेकी मूल जड उनकी अधिकतर स्त्रीपरायणता थी, इस अनर्थकारी प्रवृत्तिने उनका सन्मान और गौरव सभी जाता रहा, और फिर अपने उत्तराधिकारीसे भी अलग होना पडा, जयसिंहकी जितनी रानियें थीं उनके बीचमें उनके उत्तराधिकारी अमरसिंहकी माता ही सबसे बडी थीं; वह बूंदीके हाडाकुलमें उत्पन्न हुई थीं उस हाडाकुलसे गिह्लौटकुलके बहुतसे उपकार और अनिष्ट हुए थे. हाडाराजकुमारी सबसे बडी थीं. विशेष करके मेवाडके होनहार राजा अमरसिंहकी माता थीं धर्मकी रीतिके अनुसार उस बडी रानीके ऊपर ही राणाजीको अधिक अनुराग और सन्मान करना सब प्रकारसे उचित था परन्तु वह तो कामके वशवर्ती थे इस कारण अपनी धर्म स्त्रीके ऊपर विराग प्रकाश करके नवीन कमलादेवी रानीमें आसक्त हुए. कमलादेवी छोटी होनेपर भी स्वामीकी अधिक सन्मान पात्री होनेसे अपनी सौतसे वैरभाव करने लगी. इसी वैरभावके कारण राणाके कुटुम्बमें झगडा बढ गया. इन झगडोंहीके कारण शत्रु प्रबल हुए और मेवाडका राज्य अत्यन्त हीन दशाको पहुंच गया: अनर्थकारी लडाई झगडोंसे राज्यका जो अनिष्ट हुआ था वैसा अनिष्ट शत्रुओंके साथ युद्ध करनेसे भी नहीं होसकता था. [illegible] राजाओंको बहुतसे विवाह करनेसे जो कष्ट होता है. उसकी [illegible] इस कुल-

---

* [illegible]
[illegible] थी।

देवताओंके मंदिरोंको तोडकर वहां मस्जिदें बनवा लीं थी, आज राजपूतोंने उन मस्जिदोंको चूर्ण २ करके मुगलोंके धर्म याजक अर्थात् मुल्लाओंका अपमान करना आरंभ किया स्वाधीनताके स्वर्गीय मस्तकपर लात मारकर यवनोंने राजपूतोंकी प्रायः सभी सामर्थ्यको छीनकर मुल्ला और काजियोंको उसका अधिकार दियाथा, इस समय राजपूतोंने और विशेष करके राठोरोंने उस सम्पूर्ण सामर्थ्यको पुनः ग्रहण करके उस स्वर्गीय स्वाधीनताको मुगलोंके पाससे अलग कर दिया, यशवंतसिंहके मृत्युकालके पीछेसे प्रतापवान राठोरगण मुगलोंके ग्राससे अपने सम्पूर्ण अधिकार भलीप्रकारसे रक्षा करतेहुए आते हैं। इस समय अजितसिंहने मारवाड़में मुगलोंको भलीप्रकारसे परास्त कर दिया इस अवसरपर राजस्थानके यह तीनों प्रसिद्ध बल साम्बर सरोवरके किनारेपर इकट्ठे हुए थे, वह तालाब मेवाड़ मारवाड़ और अम्बेरका साधारण सीमारूपसे नियत हुआ और उससे जो कुछ आमदनी होती थी उसको यह तीनों बलवान परस्पर बांट लेते थे।

राजपूतोंका विक्रम और बाहुबल धीरे २ बढता ही गया, बादशाहने अंतमें उनके कठोर आचरणोंको रोकनेकी दृढ प्रतिज्ञा की अमीरुलउमरा, अजितसिंहके गर्वको चूर्ण करनेकी इच्छासे सेनाको साथ ले युद्ध करनेको चला, उस समय अजितसिंहके पास बादशाहके हाथका लिखाहुआ एक गुप्त पत्र पहुंचा। बादशाहने लिखाथा कि इस मगरूर सइयदकी खबर अच्छीतरह लेना, बादशाहने अपने सेनापतिकी गति रोकनेके लिये क्यों शत्रुके पास गुप्त पत्र भेजा था, उसका एक विशेष कारण था दोनों सइयद भ्राताओंके द्वारा बादशाहनको पाना तथा दिनरात उनके दबानेसे फर्रुखसियर समझ गया था कि मैं कुछ भी नहीं हूं। वह जानता था कि यह राज्यभोग केवल विडम्बनामात्र है। दोनों सइयदोंकी प्रतिष्ठा दिन २ बढने लगी इस कारण बादशाहके मनमें भय हुआ, उसने उनकी प्रतिज्ञा भंग करनेकी इच्छा और चेष्टा की थी परन्तु उनके द्वारा सइयदोंने और भी उन्नति पाई इस कारण बादशाहके मनमें भांति २ के संदेह उदय होने लगे, सइयदोंका दर्प चूर्ण करने और इन सम्पूर्ण संदेहोंसे छुटकारा पानेको दूसरा उपाय न देखकर अंतमें अजितसिंहके पास यह गुप्त पत्र भेजा था परन्तु उसर

छोडकर अमरसिंहके पक्षका आश्रय लेने लगे, राणा वडेभारी संकटमें पडे, उस न रोकने योग्य झगडेके निवारण करनेका उपाय न देखकर अन्तमें आरावलीके पार हो अपने राज्यसे गद्वाड राज्यमें भाग गये और पुत्रको सावधान करनेके लिये वहांके प्रधान सामन्त राजाको उसके पास भेजा, परन्तु राज्यके वहुतसे सर्दारोंकी सहायता पाकर अमर गर्वित हो गया था, इस कारण उसने पिताकी कोई वात न सुनी, और खजानेको अपने हाथमें करनेकी इच्छासे सेनाको साथ ले कमलमेरकी ओरको वढा।दिग्रा सरदारके हाथमें उस नगरका शासन भार था, यह सर्दार एक विद्वान् और चतुर योधा था, विद्रोही अमरसिंहके पास यद्यपि वहुत सी सेना थी तथापि उस सर्दारने राजकुमारका समस्त परिश्रम नष्ट कर दिया, विफल मनोरथ होनेपर भी अमर अपने पिताके वचनोंपर सम्मत न हुआ; तदुपरान्त जव उसने सुना कि राठौर लोग इस विद्रोहानलको क्षुभित करनेकी चेष्टा कर रहेहैं; और राज्यके वहुतसे सर्दार भीतर ही भीतर इस राज्यको अपने हाथमें करनेका उपाय करते हैं, तथा राणाके सामन्तोंने जिलवाडा गिरिमार्गकी रक्षा करनेमें प्राणतकका दाव लगादिया है* तव वह भयभीत हुआ, और अपने पिताके साथ संधि करनेका विचार करने लगा, भगवान् एक लिंगजीके मंदिरमें जाकर पिता पुत्र दोनोंने संधिपत्रपर हस्ताक्षर किये, उस संधिके अनुसार यह निश्चय हुआ कि राणा तो जयसमंद सरोवरको छोडकर अपने नगरमें आजाय और अमरसिंह उस निर्जन महलमें जाकर पिताके जीवनकालतक निवास करें।

राणा जयसिंहने वीसवर्षतक राज्य किया था, सुकुमार अवस्थामें उन्होंने अपने जिन ऊंचे गुणोंका परिचय दियाथा यदि राजसिंहासनपर वैठकर उसी प्रकार सद्व्यवहार करते तो वह मुगलोंके ग्राससे अपने देशकी स्वाधीनताका भलीभांतिसे उद्धार कर सकते थे. परन्तु स्त्रीपरायणताने ही उनका सत्यानाश कर दिया था. स्त्रीपरायणतारूपी पापोंसे मूट होकर अत्यन्त आलसी और कर्महीन होगये. वाल्यावस्थामें इकट्ठे कियेहुए यश और गौरवको चिरकालके लिये खो वैठे. यदि जयसिंह इस वडेभारी सरोवरको न वनाते तो उनका नाम भी मेवाडके इतिहाससे शून्य होजाता।

राणा जयसिंहके स्वर्गवासी होनेपर उनका वडा पुत्र अमरसिंह (दूसरा) संवत् १७५६ (सन् १७००ई०) में राजसिंहासन पर वैठा [illegible]

---

* जो वितने एव सर्दार [illegible] गनोराके गोपीनाथ और देवोरिया होंगे।

मैं धन नहीं चाहता,—मानका अभिलाषी नहीं और ऊंचे पदगौरवकी भी इच्छा नहीं है, मैं दूरदेशसे वाणिज्य करता हुआ आया हूं, आपके इस राज्यमें हमको पैर रखनेतकका भी स्थान नहीं है, इस समय केवल मेरी यही प्रार्थना है कि यदि आप कृपाही करते हैं तो दया करके कुछ स्थान दान कीजिये, और जिससे व्यापारमें हम लोगोंका सुभीता हो ऐसा कोई अपने हाथका परवाना दीजियेगा, बादशाहने संतुष्ट होकर उसकी प्रार्थनाको पूर्ण किया। उसदिन इस विशाल भारतक्षेत्रमें बृटिश प्रभुताका जो बीज बोया गया था वह थोडे ही समयमें अंकुरित होकर विशाल वृक्षका रूप धन सम्पूर्ण भारत-भूमिमें फैल गया, आज उसी विशाल वृक्षकी छायाके नीचे अगणित भारत-संतान विश्राम कर रही है। विधाता ! कहीं इस वृक्षके नीचे कालसर्पका निवास न होजाय।

बादशाह फर्रुखसियर हेमिल्टनका यथार्थ स्वदेशानुराग और आत्मत्याग देखकर अत्यन्त विस्मित हुआ था, यदि हेमिल्टन इच्छा करता तो निश्चय ही असीम धनका अधिकारी होजाता; परन्तु उसने अपने तुच्छ स्वार्थको त्याग करके स्वदेशका जो महोपकार किया था उस महोपकारका बदला कहां है ? जिस हेमिल्टनके असीम माहात्म्य और आत्मत्यागके गुणोंसे आज इस भारतवर्षमें ब्रिटिशसिंहका अखंड प्रभुत्व है उसने अपने देशवालोंसे इसका क्या बदला पाया था? कुछ भी नहीं। दुःखका विषय है कि जिसदिन उस महात्माका जीवनरूपी पक्षी इस पवित्र देहरूपी पींजरेसे विदा होगया, उस दिन उसका पवित्र शरीर कलकत्तेके एक साधारण समाधि मंदिरमें आडम्बर शून्य विधानके साथ पृथ्वीके नीचे दबा दिया गया, उसदिन किस ब्रिटिनने कृतज्ञताके पवित्र रससे अभिषिक्त होकर उसकी पवित्र समाधिपर किसी स्मरण चिह्नको स्थापित किया था?—किसीने नहीं, उस निर्जन श्मशान क्षेत्रमें उस ब्रिटिश गौरवकी पवित्र देहके समस्त उपादान पंचभूतोंमें लीन होगये, दुर्जयकाल उसी एक २ परमाणुको अनन्त सागरमें फैंक रहा है, परन्तु उसको कोई भी नहीं देखता है, न कोई जानता है कि इङ्गलैण्डका महाप्राण उस स्थानपर शयन कर रहा है! शोक है कि इस संसारमें यथार्थ कृतज्ञता नहीं।

उस सुअवसरमें उस दूरदेशके बीच शाह आलमके साथ यह संधि स्थापित की गई थी । *

जिस चक्करमें पडकर मुगलोंके कुलका नाश हुआ, और जिसने इस दूरदेशमें आनेके लिये श्वेतद्वीपके निवासी ब्रिटिशसिंहकी प्रभुताका मार्ग साफ करदिया उसका विचार करना इस स्थानमें अत्यन्त प्रयोजनीय बोध होता है, इस बातका विचार करनेसे एक अमूल्य राजनैतिक तत्त्व स्वयं ही प्राप्त होजायगा, उस तत्त्वकी महिमासे मोहित होकर भारतबन्धु महात्मा टाडसाहबने साफ ही कह-दिया है कि "इस तत्त्वने संकेतकी समान हमारे सामने आकर सावधान

---

* राणा और शाह आलम बहादुरशाहके मध्यमे गुप्त सन्धि. सधिपत्रपर शाह आलमके हस्ताक्षर हैं "प्रजागणके मंगलकारी जो छः प्रस्ताव श्रीमान्के द्वारा उठाये गये हैं और मुझकरके स्वीकार किये गयेहैं, ईश्वरकी कृपासे वह सम्पूर्ण पूरेहोगे । "

"पहला, शाह आलमकी समान चित्तौरका पुनर्वार संस्कार हो ।"

" दूसरा, गोहत्या बंद हो " (क)

" तीसरा –शाहजहाके समयमे जो सम्पूर्ण जनपद मेवाडके अन्तर्गत थे वह सब फिर हमको मिलजॉय । "

" चौथा,–जो (अकबर) स्वर्गधाममे निवास करते हैं, उनके शासनकालकी समान हिन्दूलोग स्वाधीनता भावसे इष्टदेवकी पूजा तथा धर्माचरण कर सकें । "

" पाचवा,–आप जिसको पदवीसे उतार देगे राजाके समीप वह किसी अनुग्रहको न पा सकेगा ।"

" छठा,–दक्षिणावर्तके युद्धमें अब आपको अपनी सेनाकी सहायता नहीं देनी होगी । " (ख)

(क) गोहत्यासे हिन्दूलोग अत्यन्त घृणा करते हैं, टाडसाहबने कहा है कि गोजातिके ऊपर हिन्दुओंकी आन्तरिक भक्तिके विषयको विचारनेसे हम एक महान् राजनैतिक शिक्षाको पावेंगे। सन्१८१७–१८मे राजपूतोंके साथ ब्रिटिश गवर्नमेन्टकी जो संधि हुईथी उसमे [illegible] बीचमे गोहत्याका निवारण ही मुख्य था ।

(ख) मेवाडकी सहकारी सेना अजीमकी सहायताके लिये दक्षिणावर्तमें युद्ध [illegible] इस बातकी सत्यता राणाके पास भेजे हुए अजीमके पत्रको पढनेसे [illegible] ।

" राणा अमरसिंहजीके समीप यह विनाबित हो कि [illegible] । [illegible] माताके वृत्तान्तको जानकर मैं अत्यन्त ही दुःखित हुआ, [illegible] कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता । हमारे मंगलके लिये सर्वदा [illegible] आपके लिये एक [illegible] अनुरोध किया था, [illegible] दिखाते रहकर आप निश्चिन्त रहैं, आपके [illegible] होगी; परन्तु इस समय आपको [illegible] मैंअरसे [illegible] । [illegible] नहीं है ।"

राजस्थानके दूसरे छोर मरुमय मारवाड़ राज्यमें जब इस प्रकारका व्यापार होरहाथा, तब अमरसिंह इसको भलीभांतिसे जान गए थे। यद्यपि अनर्थ करनेवाले गौरव प्यासने त्रिवलके सन्धिपत्रको खंडर करके अजितसिंहको राणाजीके निकटसे अलग करदिया, तथापि अमरसिंहका उत्साह इस बातसे कुछ भी कम न हुआ। पराई तुच्छ अनुकूलताको कुछ भी न समझ कर वह अपने विक्रम और अध्यवसायका भरोसा करने लगे। अनन्तर अपनी तथा समस्त राजपूत जातिकी स्वाधीनताको पुनः प्राप्त करनेके लिये कठोर कार्यको करनेके लिये दृढ़प्रतिज्ञ हुए। किस प्रकारकी चतुरता और कैसे उत्साहके साथ राणाजी अपना संकल्प सिद्ध करनेको तइयार हुए थे; उसका एक विशेष प्रमाण भी पाया जाताहै। एक सन्धि-पत्र ही उसका प्रमाण है:* बादशाह फर्रुखसियरने राणाजीके साथ यह सन्धि स्थापित की थी। इसके दूसरे नियममें ही जिजिया करके रहित करनेका निर्देश।

भयभीत होकर शरण लेते हैं, भारतवासियोंकी पवित्र राजभक्तिका यही शोचनीय पुरस्कार दिया गया। औरंगजेब यदि इच्छा करता तो सरलतासे ही अपने पितृपुरुषोंकी श्रेष्ठ रीतिको ग्रहण करके भारतसंतानोंको ऊंची राजभक्ति और उदारताका उचित वदला देसकता था, परन्तु ऐसा न करके उसने परम विश्वासी राजभक्त राजपूतोंके ऊपर पशुओंके समान आचरण किया और निकृष्ट घिनोना मुंडकर स्थापन करके उनकी उस अतुल राजभक्तिका यथोचित निरादर किया था, उस घृणित "जिजिया" करसे ही मुगल वादशाहका नाश हुआ, यदि औरंगजेब अपने वंशवालोंकी रीतिके अनुसार ही चलकर इस घृणित मुंडकरको स्थापन न करके भारतवासियोंपर कठोर अत्याचार न करता, तो मुगलवादशाहतका इतनी शीघ्र अधःपतन न होता दुराचारी औरंगजेबने सम्पूर्ण हिन्दुओंको वलपूर्वक इसलाम धर्मपर चलाना चाहा था, परन्तु राजपूत केशरी राजसिंहके प्रचंड विक्रमके भयसे इस दुष्ट अभिप्रायको सिद्ध न करसका; आज उनके ऊपर उसी कठोर मुंडकरको स्थापन करके उसने अपने दुष्ट आशयको सिद्ध किया, उस दुष्टके इस करभारसे कोई हिन्दू भी छुटकारा न पासका।

औरंगजेव हिन्दुओंका भयंकर वैरी था, उसके जीवनकी एक २ पंक्ति इसकी सत्यताका प्रमाण देती है, यदि कोई हिन्दू अपने धर्मको छोडकर इसलामधर्मको ग्रहण करता उसहीको यह पापाचारी वादशाह आदरसहित अपने स्थानमें आश्रय देता था, वहुतसे कुलकलंक हिन्दूगण अपने धर्मको छोडकर उसके आश्रयको पाय अपने जातिवालोंकी क्रोधाग्निसे छुटकारा पाते थे. ऐसे धर्मसे वैर करनेवाले पाखंडियोंके वीचमें केवल एकका वृत्तान्त लिखते हैं, इस चरित्रके पढनेसे साफ जाना जायगा कि उसको आश्रय देकर ही औरंगजेवने अपने हाथसे अपने पांवमें कुल्हाडी मारी थी, अविचारिताके इस दोषसे जो विषैला फल उत्पन्न हुआ था उसे उसकी सन्तान और संततिको चिरकालतक भोगना पडा मुगलवादशाहतका नाश होनेका मार्ग साफ होगया, शिशोदियाकुलकी नीची शाखाके कुलमें राव गोपाल नामक एक राजपूत उत्पन्न हुआ. वह चंबल नदीके किनारे पर स्थित रामपुर* देशको सामन्त वृत्तिरूपसे भोग करता था. [illegible]

* रामपुर टोंक नामका एक नगर और भी है [illegible] पुर भानपुर नामसे विख्यात है। राव गोपालके [illegible] [illegible] अपने [illegible] [illegible] और [illegible]

की ओर समस्त जातियें उस सन्मानसे अपनेको सन्मानित समझती हैं, परन्तु बाप्पारावलके वंशवालोंने कभी भूलतेहुए भी बायें चरणसे उस सन्मानको नहीं ठुकराया । इसही कारण दुर्दशाप्राप्त होनेपर भी वह अधिक सन्मानके पात्र थे। बादशाह फर्रुखसियरके साथ सन्धि करके राणा अमरसिंह-को जैसा सन्मान प्राप्त हुआथा, उसका वृत्तान्त सन्धिके अन्यान्य नियमोंको पढते ही विदित होजाता है । उन अवशिष्ट नियमोंमें धर्माचरणकी स्वाधीनताका पाना, शिशोदीयकुलके प्राचीन सामन्तोंपर राणाजीका अधिकार पाना: गईहुई सम्पत्तिका प्राप्त होना, यह तीन अधिकार सर्वप्रधान थे। इन तीन अधिकारोंका अनुशीलन करनेसे स्पष्ट प्रतीत होगा कि मुगलकुलकी सौभाग्यलक्ष्मी मुगलों-को धीरे २ छोड रही थी। क्या वास्तवमें ऐसाही था । भारतकी उससमयकी राजनैतिक अवस्थाका विचार करनेसे हमारे कथनकी सत्यता प्रमाणित हो-जायगी । विशाल दक्षिणदेशमें वीर महाराष्ट्रीयगण राजा साहूजीको अपना सर्दार बनाएहुए अपनी कठोर लूट खसोटकी वृत्तिको सिद्ध कररहे थे। उनके प्रचंड भुजबलसे बहुतसे राज्य लौटपोट होगये। परन्तु वे महाराष्ट्रीयगण उन विजित राज्योंपर अपना अधिकार नहीं जमाते थे, वरन निठुराईके द्वारा सबसे " चौथ " और "दशमुकी " वसूल किया करते थे।

मुगल बादशाहनकी इस शोचनीय दुर्दशाके समय दिल्लीके निकट रहनेवाली एक और वीरजातिने स्वाधीनता प्राप्त कर ली। यह जाति 'जाट' के नामसे प्रसिद्ध थी । इससे पहिले हम कईवार लिख आए हैं कि जाटलोग प्राचीन जितकुलके साम्बाकुलमें उत्पन्न हुए थे। यह लोग चम्बलनदके पश्चिम किनारेपर बसेहुए थे। मुगलोंके कठोर अत्याचारोंको सहतेहुए भी विकराल जाटगण धीरे २ समयानुसार अपने दलको बढाते थे। उस समय मुगलबादशाहनकी शिथिलता निहार अवसर समझ, उन समस्त अत्याचारोंका बदला लेनेके लिये जाटलोगोंने अपने विशाल मस्तकको उठाया और भारतमें अपनी स्वाधीनताका [illegible] किया। उस समय प्राचीन जितवंशकी ऊंची पताका सहसा ही दिल्लीके निकटपर फहराने लगी। सिनसिनीके अवतीर्णकालसे [illegible] [illegible] पताका फहराती रही थी। अनन्तर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। उनकी स्वाधीनताकी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मिली।

भयंकर अग्निको बुझानेके लिये बादशाह औरंगजेबने राजा जयसिंहको अजीमके पास भेजा, परन्तु किसी ओर कोई फल न निकला उसके कठोर अत्याचारोंसे उस समय भारतके समस्त देशोंमें झगडेकी आग जल गईथी। सबलोग बादशाहकी अंतिम अवस्थाका विचार और परिवारके झगडोंसे छुटकारा पानेके लिये मुगलकी दासत्व जंजीरको तोडनेका उद्योग करने लगे, अब बादशाह किस ओरकी रक्षा करैं ? या किसको दमन करैं ? इस ओर तो भयंकर पराक्रमी महाराष्ट्री लोग वीरकेशरी शिवाजीके मंत्रसे दीक्षित हो स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये उदय होते हुए सूर्यकी समान धीरे २ गंभीर मूर्ति धारण कर रहे थे, और दूसरी ओर पीडित तथा दुःखित राजपूतलोग मुगलोंके राज्यसे अलग होते जाते थे, इन सम्पूर्ण झगडोंसे भयभीत होकर बादशाह छुटकारा न पासका। उसकी अंतिम अवस्था देखकर बेटे पोते राज्यको पानेके लिये हृदयके रुधिरको निकालनेमें तइयार हुए, इन भयंकर झगडोंसे पीडित हो पचास वर्षतक भयंकर नीतिसे राज्य करके मुगल बादशाह औरंगजेब अपने नामसे बसायेहुए औरंगाबादनगरमें सन १७०७ ई० में (जिकादकी ९ तारीखको) इस असार संसारमें शांति करके यमराजके भवनको चला गया, उसही दिन औरंगजेबके बेटे पोतोंमें महाकुलाहल मच गया, पिताके मरनेका शोक करना तो दूर रहा, सभी तख्तको पानेकी इच्छासे राजधानीकी ओर दौडे, पहले तो बादशाहके दूसरे पुत्र अजीमने बादशाहतको अपने अधिकारमें किया, परन्तु अपने बडेभाई सुलतान मोअज्जमको सेनाके साथ आता हुआ देख उसका मनोरथ नष्ट करनेकी इच्छासे वह धार और कोटेके राजपूतोंको साथ ले * भाईकी गतिको रोकनेके कारण आगरेमें पहुँचा, मथार.

---

* ऐसे कितने एक अंग्रेज हैं जो दीन हीन अवस्था [illegible] करते हैं और कितने महात्माओंने उनकी चिन्ता की है [illegible] भेद है हमलोग पदगौरवकी बराबरीसे इस [illegible] नहीं करते, [illegible] हृदयसे ही उत्पन्न हुई थी, वह भारतीके लिये [illegible] करके ही यहांसे विदा होगये [illegible] तो भी [illegible] जो कुछ कर गये हैं वही बहुत है, [illegible] देवताकी भांति उनकी पूजा करैं, [illegible] [illegible]

चतुर्दश अध्याय १४.



राणा संग्रामसिंह;—मुगलबादशाहतकी अवनति:—निज़ामुल्मुल्कके द्वारा हैदराबादराज्यकी प्रतिष्ठा;—सम्राट फर्रुखसियरकी हत्या;जिजिया करका रहितकरना;-महम्मदशाहका दिल्लीके सिंहासनपर बैठना;—सैदखाँके द्वारा अयोध्याकी प्राप्ति:—मेवाड़की शासननीति;—राणा संग्रामसिंहका परलोकगमन:—उनके विषयकी कई एक कहावतें;—राणा जगतसिंह(दूसरे)का सिंहासनपर बैठना;—मारवाड़ और अंबेरराजके साथ उनकी सन्धि;—महाराष्ट्रियोंका मालवा और गुजरातपर आक्रमण करके वहांपर अधिकार करना; हिन्दोस्थानपर नादिर शाहकी चढ़ाई;-दिल्लीका सत्यानाश:—राजपूतानेकी उस समयकी अवस्था:—मेवाड़की सीमा;—राजपूतोंके मेलका वर्णन;—बाजीरावका मेवाड़पर चढ़आना;—राणाजीपर वार्षिक कर लगाना:—अंबेरके सिंहासनपर माधोसिंहका अभिषेक होनेसें झगड़ा:—राजमहलकी लड़ाई;—राणाकी पराजय. मल्हार राव हुलकरके साथ उनकी सन्धि:—विष पानकरनेसे अम्बेरके ईश्वरीसिंहका प्राणत्याग:-राणाजीका परलोकवासी होना:

उनके चरित्रका वर्णन ।



जिसदिन वीरवर राणा अमरसिंह (दूसरे) अनन्तधामको चलेगये, उसी दिन संग्रामसिंह मेवाड़के सिंहासनपर बैठे। इस पवित्र नामके स्मरण करनेही से राजपूतोंको उन प्रचण्ड वीर महाराणा संग्रामसिंहकी याद आती। इस नामके साथही मेवाड़का प्राचीन और वर्तमान चित्र मानसिक [illegible]

ओंको सर्वदा संतुष्ट रखनेकी इच्छा कीथी, जिनकी मान मर्यादाको अटल रखनेके लिये उसके वंशवाले सर्वदा उद्योग किया करतेथे, आज औरङ्गजेबके कठोर अत्याचारोंसे उनके हृदयमें जो भयंकर घाव उत्पन्न होगया था उसे कोई भी आरोग्य न करसका, उन समस्त घावोंकी भयंकर पीडासे दुःखित हो राजपूतोंने विष जानकर मुगल बादशाहके साथ सब सम्बन्ध छोडादिया; राजपूतप्रिय गुणवान बहादुरशाह अपने स्वल्पकाल व्यापी राज्यके बीचमें उसको आरोग्य न करसका यद्यपि वह गुणवान था परन्तु राजपूतोंने उसका विश्वास नहीं किया, बहुत कालसे उत्पन्न हुई दूरदर्शितासे उनके हृदयमें ऐसा संस्कार उत्पन्न होगया था कि सभी मुगललोग अविश्वासी और निठुर हैं, उन्होंने भयंकर ज्वालाकी समान राजस्थानके सम्पूर्ण रुधिरको शुष्क कर लियाहै, बहादुरशाहका जन्म भी उसी मुगल वंशमें है, इस कारण वह भी तो राजवाडेके सम्पूर्ण रुधिरको शुष्क करनेकी इच्छा करैगा इसमें आश्चर्य ही क्याहै ? ऐसा विचार करके राजपूतोंने एक दूसरेकी रक्षा करनेके लिये आपसमें संधि कर ली, बहादुरशाहने उनको संतुष्ट करनेके लिये अनेक चेष्टायें कीं उनके पूर्वपुरुषोंके दृढ उदाहरणोंको दिखाकर उनको मुगलोंके साथ सम्बन्ध करनेके लिये बहुत ही कहा, परन्तु उसकी वह चेष्टा और यत्न सभी व्यर्थ होगये × उनके मनमें जो दृढ़ विश्वास होगया था वह किसी प्रकारसे भी न टला, वह निश्चय यह जानगये थे, कि अगणित कार्य साधन करके वृथा प्राणदान करके मुगलोंकी कृतघ्नता और निठुरताके हाथसे छुटकारा न होगा, इसी कारणसे उन्होने बहादुर शाहकी कोई बात न मानी. मुगल बादशाहकी आज्ञाको लेकर दूत उनके पास पहुंचा तब उन्होंने केवल यही कहा कि "देवताके विमुख होनेसे लोगोंको मतिभ्रम हुआ करता है।" राजपूतोंके ऐसे आचरणोंको देखकर बहादुरशाह शीघ्रही यह समझ गया कि आगेको इनसे बहुत कम सहायता मिलेगी। इसही समयमें उनके छोटे भाई कामबख्शके साथ बादशाहका भयंकर झगडा हुआ। कामबख्शने दक्षिणमें अपनेको बादशाह कहकर विख्यात किया था. बहादुर शाहको इन सब कार्योंसे विना ही युद्ध-

—क्या करें जिन [illegible]

× सन् १७०९–१७१० [illegible]

गुण गौरव और स्वामिभक्तिके ऊपर निर्भर करके अभागा मुगलबादशाह जिस किसी सेनापति या प्रतिनिधिपर किसी देशका शासनभार अर्पण करता था; वही सेनापति या वही प्रतिनिधि कृतज्ञताके पवित्र मस्तकपर पदाघातकर विद्रोहितारूप कलंकित उपायके द्वारा उस स्थानको निगलजानेमें कसर नहीं करता था। इसभांतिके घृणित उपायके सहारे राज्यको हस्तगत करके भी यदि वे उत्तमतासे वहांकी प्रजाका पालन करसकते यदि राज्यकी दृढ़ भीतस्वरूप प्रजाके प्रति पुत्रकी समान आचरण करके उनकी सुखसम्पत्तिको बढ़ाते, तो शीघ्रतासे ही पापका कठोर दंड उनके मस्तकपर न गिरता: और बंगाल, अयोध्या, हैदराबाद व अन्यान्य राज्योंके अधर्मसे लियेहुए सिंहासनपर अबतक वह विश्वासघाती लोग बैठे रहते। परन्तु इस विषयमें महाराष्ट्रियोंका राष्ट्रतंत्र सम्पूर्णतः भिन्नभावसे दिखाई देता है। उनके अकस्मात् उन्नत होजानेका विचार करके आश्चर्य होताहै। न जाने किस दैवीशक्तिके प्रभावसे हिन्दूकुलचूडामणि महाराजाधिराज शिवाजीने, दीन शान्तजीवन धर्मयाजक और किसानोंको चतुर राजकर्मचारी और रणविशारद सिपाही बनाडाला था। यह बात सत्य है कि हिन्दुओंसे डाह करनेवाले मुगलबादशाह औरङ्गजेबके कठोर सतानेसे दुःखित होकर वीरवर शिवाजीने स्वदेशियोंको वीरमंत्रसे दीक्षित और रणाभिनयमें उत्साहित किया था; परन्तु उस अल्पसमयका विचार करके कि जिसमें यह कार्य पूर्ण होगया था, प्रत्येक हिन्दूका हृदय अत्यन्त उत्साहित होजाता है! ऐसा कौन है जो महात्मा शिवाजीको देशका उद्धार करनेवाला जानकर पूजनेके लिये आगे न बढ़ेगा? परन्तु भारतका अत्यन्त दुर्भाग्य समझना चाहिये, कि वीरवर शिवाजीके महामंत्रपर उनके वंशवालोंने भलीभांतिसे अत्याचार किया था। यदि वे लोग अनन्त दुराकांक्षाके वशसे उन्मत्त होकर उस महामंत्रका व्यभिचार न करते तो आज भी उन राज्योंको वह अपने अधिकारमें देखते कि जिनको महात्मा शिवाजीने औरंगजेबके हाथसे छीनलिया था। परन्तु भारतकी कठोर [illegible] कौन भेद सकता है? नहीं तो वह जयशील होकर भी किस कारणसे ऐसी नीतिका अवलंबन करते? नहीं तो उनका [illegible] किस कारणसे बनजाता? [illegible] प्रजाओंसे जो [illegible] लेते थे, [illegible] इनको [illegible] मनोहर [illegible]

शिशोदियोंके कुलके साथ विवाह होनेके पीछे शिशोदीय राजकुमारियोंके गर्भसे जो सन्तान और सन्तति उत्पन्न होगी उसको ऊंचा सन्मान मिलेगा यदि पुत्र हुआ तो वह राजसिंहासनपर बैठेगा और कन्या हुई तो ऊंचे राजकुलमें अर्पण की जाय गी, प्राण रहते हुए उसको मुगलोंके हाथमें अर्पण करके अपने कुलको कलंकित नहीं करेंगे ।

शिशोदीयकुलके निकट फिर अपने पहले सन्मानको पाकर मुगलोंकी जंजीरसे छूटनेकी इच्छासे राठौर और कुशावह दोनों राजाओंने इस प्रकारके व्यवस्थापत्रपर हस्ताक्षर कर दिये थे, परन्तु इससे उनकी एक और महा-प्राचीन कालसे चली आई हुई अखंड रीतिका व्यभिचार हुआ । उसके एक साथ उलट पलट होनेसे जो विषैला फल उत्पन्न हुआ वह सरलतासे ही अनुमान किया जा सकता है, मारवाड़ और अम्बेरके राजाओने इस चिरकालकी रीतिका उलट पलट करनेके समय राज्यमें जो भयंकर झगड़ा उत्पन्न किया था वह सरलतासे दूर नहीं हुआ, उसको निवारण करनेमें जो मध्यस्थ उपस्थित हुए, उनके कठोर स्पर्शसे सम्पूर्ण राजस्थान ही सूना होगया । वह स्पर्श मुगलोंकी जंजीरकी अपेक्षा भी कठोर था। वह स्पर्श महाराष्ट्रियोंका था । उस त्रिचलात्मिका संधिसे राजपूतोंने बाबरके बडे भारी सिंहासनको पृथ्वीपर गिरादिया, परन्तु उस अवसरपर जिन शत्रुओंने उनके घरमें प्रवेश किया उनसे ही राजपूतोंका नाश हुआ था ।

जिसदिन हिन्दूवैरी औरंगजेबने कुलकलंक रतनसिंहको * उसके पिताकी क्रोधाग्निसे रक्षा करनेके लिये अपने यहां आश्रय दिया, उसी दिन हताश होकर राव गोपालने उदयपुरवालोंकी शरण ली; राणा अमरसिंह उसकी रामपुर भूमिका उद्धार करनेके लिये तइयार हुए थे, परन्तु संसारके अनेक कार्योंमें फंसनेके कारण अबतक इस कार्यको सिद्ध नहीं करसके. इस समय राठौर और कुशावह दोनों राजाओंके साथ मिलकर उन्होंने अपने पहले संकल्पको सिद्ध करनेका विचार किया, परन्तु उनका संकल्प सिद्ध न हुआ, राज मुसल्लिमखां × ने उनके सम्पूर्ण उद्योग व्यर्थ कर दिये, बादशाहने इस विजयका समाचार पाकर मुसलिमखांको उचित पुरस्कार दिया, इसने मुसल्लिमके जय समाचारको सुनानेके समय और एक वृत्तान्त कहा. उसका मर्म यह है कि 'राणाने अपने राज्यको उजाड़ कर पर्वतोंपर जा बसनेकी हट प्रतिज्ञा की है ।' इन दोनों समाचार पानेके

* [illegible] ।

† [illegible]

× [illegible]

शोक है कि इस इनायतउल्लाने ही बादशाहका सत्यानाश किया। बादशाहने जिस आशासे औरंगजेबके वृद्धमंत्रीको अपना दीवान बनायाथा—वह सफल नहीं हुई। दुष्ट इनायतउल्लाने औरंगजेबके पैंतरेपर पाँव धरके हिन्दुओंको सताना आरंभकिया। इस कारणसे समस्त हिन्दूलोग उससे घृणा करने लगे। तदुपरान्त दुर्द्धर्ष सइयदोंकी क्रोधाग्निने उसके ऊपर गिरकर एक साथ इनायतउल्लाको भस्म करडाला।

जिस निज़ाम-उल-मुल्कने हैदराबाद राज्यकी प्राणप्रतिष्ठा कीथी, दोनो सइयदोंकी अयथाप्रभुता और अन्याययुक्त सामर्थ्यको हरण करनेके लिये बादशाहने उसको बुलाया। इससे पहिले यह निज़ाम-उल-मुल्क, मुरादाबादनामक देशका सूबेदार था;परन्तु उसके उत्तम ज्ञान और कार्यदक्षताका परिचय पाकर मालवराज्य देनेकी प्रतिज्ञा करके बादशाहने उसको दिल्लीमें बुलाया। दोनों सइयदभ्राता इस वृत्तान्तको सुनते ही महाराष्ट्रियोंकी दश हजार सेना लेकर राजसभामें आये और अत्यन्त क्रोधके साथ फर्रुखसियरको तख्तपरसे उतारदिया। बादशाहकी समस्त आशा धूरिमें मिलगई उस विपत्तिके समय अम्बेर और बूँदीके दो राजाओंके सिवाय और कोई भी उसके पास न रहा। यदि इससमय भी बादशाह इन महाराजाओंके उत्तम परामर्शको ग्रहण करता तो उसके प्राण अकालमें ही न निकलते;परन्तु उसके दुर्भाग्यने किसीकी बात न चलने दी। नहीं तो अपने परमहितैषी मित्रोंकी परामर्शपर बादशाहका ध्यान क्यों न होता? इन दोनों राजाओंने सम्राट्को यथार्थ वीरकी समान मगट युद्धक्षेत्रमें जानेका परामर्श दिया था।

शीघ्र अधःपतन न होता, शाह आलम कार्यचतुर दूरदर्शी और सहनशील बादशाह था; यदि उसके जीवनरूपी वृक्षकी जडमें अकालमें कुठाराघात न होता तो वह अपने उत्तम गुणोंसे सलतनतकी रक्षा कर लेता, परन्तु विधाताकी विधिके अनुसार मुगलकुलका विध्वंस कौन रोक सकता है, नहीं तो अकालमें ही बहादुरकी मृत्यु क्यों होती? या उसके सभी वंशधर अयोग्य क्यों होते? इन लोगोंने अपनी अयोग्यतासे ही मुगल गौरवको रसातलमें फेंक दियाथा, उसके उद्धार करनेकी सामर्थ्य किसीमें नहीं है।

जिसदिन साधुचरित्र शाह आलम बहादुर शाह विष देनेसे अकालमें ही इस लोकसे बिदा हुआ, उस ही दिनसे वीरवर बाबरके सिंहासनकी जड सूल कटेहुए वृक्षकी समान थरथर कांपने लगी, उस दिनसे ही मुगल राज्यके उत्तराधिकारियोंने शोणितसरमें तैर करके उस कम्पायमान सिंहासनपर बैठना आरम्भ किया, परन्तु कोई भी उसको स्थिर न रख सका, अन्तमें गंगा यमुनाके संगममें स्थित हुए बेरानगरसे दो सइयद भ्राताओंने * आकर मुगल सिंहासनको व्यापारकी वस्तु बना दिया, बाबर अकबर जहांगीर और शाहजहांके पवित्र रत्नसिंहासनको क्रूरचरित्र सइयदोंने जिसको चाहा उसको दिया, सनातनका उत्तराधिकार जातारहा, धर्म और न्यायके पवित्र मस्तकपर पदाघात हुआ. धन देकर जो उन दोनों भाइयोंके मनको आनन्दित कर सके थे. वही भारतकी बादशाहतके सिंहासनको कुछ कालके लिये पालते थेः परन्तु कुछ दिनके पीछे पहलेको तख्तसे उतारकर किसी दूसरेको इन दोनोंने तख्तपर बिठलाया। इस प्रकारसे मुगलोंका सिंहासन और मुगलोंके वंशधरगण हुसेनअली और अबदुल्लाके हाथकी कठपुतली बनकर मुगलकुलकी शोचनीय अवस्थाका वर्णन प्रकाशित करते हुए अनन्तकालके समुद्रमें लीन होगये। जिस समयमें राजस्थानका त्रिबल मुगल राज्यके विरुद्ध कार्य करनेको तय्यार हुआ, उसी समयमें उपरोक्त भाइयोंने फर्रुखसियरको तख्तपर बैठाया था, हिन्दूजातियोंके [illegible] कठोर अत्याचारोंको सहन करके भी केवल एक [illegible] तेजस्वी राजपूतलोग सब बातोंको सहते आये. इस समय दोनों सय्यद भ्राताओंका अत्याचार और भारतमाताकी शोचनीय अवस्थाको देखकर वह लोग अधिक स्थिर न रहसके. इस कारण उनकी सहनशीलता [illegible] और उसके साथ ही अंतरमें छिपीहुई विद्रोहाग्नि [illegible]

---

* हुसेनअली और अब्दुल्ला।

तख्तपर बैठने ही नये बादशाहने अजितसिंहको तथा और दूसरे राजाओंको संतुष्ट रखनेका विचार किया और इसही कारण उसने जिजिया करको उठा-दिया । राजपूतोंको प्रसन्न करनेके लिये चतुर सइयदोंने बादशाहके दीवान इनायत उल्लाको पदच्युत करके उस पदपर उनके एक स्वजातीयको नियत किया । इस नये दीवानका नाम राजा रत्नचंद था । रफेउलदिर्जात केवल तीनमास-तक बादशाहत करके परलोकवासी हुआ । इसको खाँसीका रोग अत्यन्त प्रबल हुआथा । इसकी मृत्युके पीछे और भी दो बादशाह राज्यके क्षणस्थाई सुखको भोगकर थोड़े ही दिनोंमें संसार रंगभूमिसे विदाहुए । तदुपरान्त बहादुर शाहका बड़ा बेटा रोशनअख्तर महम्मद शाह नाम धारण करके सन् १७२०ई०में दिल्लीके तख्तपर बैठा । महम्मद शाहने कुल तीन वर्षतक बादशाहत कीथी । इसके ही समयमें मुगलबादशाहीकी सम्पूर्णतः अवनति हुई । राज्यमें अनेकप्रकार वाद-विवाद उत्पन्न होगये, जिससे वह विशालदेश छिन्नभिन्न होगया । उन झगड़ेके अवसरको अमूल्य समझकर मरहटे और पहाड़ी अफगानोंने भारतवर्षपर आक्रमण किया और नगर व गावोंमें लूट खसोट मचाने लगे ।

एक तो राज्यमें अनेक प्रकारके उपद्रव हो रहे थे, उसके ऊपर तेजस्वी सइयदोंके कठोर अत्याचारसे घोर विनाश होने लगा । जो लोग उनसे मिलेहुए थे, उनमें अधिकांश विशेप करके निज़ाम*—उनपर अत्यन्त अप्रसन्न हुआ । पहिले ही कहआए हैं कि निज़ाम एक चतुर सेनापति था । मालवेका उद्धार और श्रीवृद्धिसाधन कर-नेमें उसने अत्यन्त चतुराईसे काम लियाथा, इसकारण दोनों सइयदोंको उसपर अ-त्यन्त खटका हुआ । इस समय निज़ामको अप्रसन्न देखकर वह भय दूना बढ़ा । परन्तु उन्होंने आपही अपना काम बिगाड़ा, उनके ही दुराचारने भारतवर्षसे "मुगल बादशाहत" के नामको लोप करदिया । गर्वसे मत्त हो अपनी सामर्थ्य अनन्त रखनेके लिये वह जिस २ को बादशाह बनाते थे वही अयोग्य निकलताथा । अत-एव यह कहना ठीक ही होगा कि प्रजाका उन दोनों भाइयोंसे किंचित भी मंगल

वह गूढ आशय सिद्ध न हुआ, राठौर राज अजितसिंहने दोनों सइयदोंके साथ संधि करली, और बादशाहको नियमित कर और अपनी कन्या देनेमें सम्मत होगये, ऐसा कार्य करके अजितसिंह मुगलोंकी सभामें विशेष सामर्थ्यवान होगये थे।

जिसदिन बादशाह फर्रुखसियरके साथ मारवाड़राजकी राजकुमारीका विवाह स्थिर हुआ था, इसही दिन सातसमुद्रके मध्यसे श्वेतद्वीपमें होकर बृटिशसिंहकी प्रभुताका मार्ग निष्कंटक होगया; विवाहका सम्बन्ध होनेके कुछदिन पहले बादशाहकी पीठमें एक भयंकर फोडा निकल आया जो कि बहुत ही बढ गया था, हकीम और जर्राहोंने उसके आरोग्य करनेकी बहुतसी चेष्टा की परन्तु किसीकी भी चेष्टा फलवती न हुई; क्रमसे बादशाहकी पीडा अधिक बढने लगी; विवाहका दिन निकट आपहुंचा तथापि उसको आराम न हुआ, विवाहका दिन बीत गया, बादशाह अत्यन्त ही दुर्बल होगया, यह देखकर सबका मन अत्यन्त भयभीत हुआ जो तइयारियाँ विवाहके निमित्त की गईं थीं क्या वह शाहकी अंतिम क्रियामें लगाई जायगीं, यह विचारकर सबका ही मन अत्यन्त भयभीत हुआ और चारों ओर ही इसके शान्त होनेका उपाय खोजा जाने लगा, इसी अवसरमें सूरतका रहनेवाला बृटिशकंपनीका एक दूत बादशाहकी सभामें आ पहुंचा, वह एक अच्छा डाक्टर था विशेष करके शस्त्र चिकित्सामें अत्यन्त ही चतुर था, सबकी चेष्टा व्यर्थ होनेपर अन्तमें बादशाहने उनकी चिकित्सा करानेका विचार किया। उस चिकित्सकका नाम हेमिल्टेन था। महात्मा हेमिल्टनने शाहके अंतःपुरमें जाकर थोडे ही दिनोंमें इस भयंकर फोडेको आराम किया, उनकी उत्तम चिकित्साके गुणसे आरोग्य होकर बादशाहने मारवाडकी मनमोहिनीके साथ विवाह किया. महा धूम धामके साथ विवाहका समारोह समाप्त होगया । बादशाहने एकदिन महात्मा हेमिल्टनको अपने पास बुलाया कि "आप हमसे क्या इनाम चाहते हैं?" महानुभाव हेमिल्टनने उत्तर दिया कि बादशाह !

यह विवाह महा धूम धामके साथ हुआ था। [illegible]
किया है, कि "अमीरउलउमराने कन्याकी ओरसे [illegible]
धूम धामके साथ समाप्त हुआ, कि इससे पहिले हिन्दुओंने [illegible]
देखी थी, [illegible]
दिखाईने [illegible]
उसतके मंदिरमें यह [illegible]
[illegible]
[illegible] था।"

मने स्वाधीनताका झंडा उडाया । सइयदखां उससमय बियानादुर्गकी सरदारी करताथा। सइयदोंका गर्व तोडनेके लिये महम्मद शाहने उनको दिल्लीमें बुलाया। बादशाहकी आज्ञा पातेही सआदतखां अमीरउलउमराके संहार करनेकी चेष्टा करने लगा । हैदरखां × नामक एक विश्वासघातीने, धोखेसे अमीरकी छातीमें छूरी मारकर उसको संहार किया । मुहम्मद शाह उसवक्त डेरोंमें था । अमीर-उल-उमराकी मृत्युका समाचार पाते ही वह उनके भ्राता अबदुल्लाको कैदकरनेके लिये तइयार हुआ । दुष्ट वजीरने यह समाचार पाते ही दिल्लीके तख्तपर इब्राहिम नामक एक और मनुष्यको बिठलाया और महम्मद शाहको रोकनेके लिये युद्ध करनेको चला । इस संग्राममें राजपूतलोगोंने किसी पक्षसे भी शस्त्र नहीं पकडाथा। अनन्तर दोनों दल मैदानमें आनकर सामने खडेहुए; परन्तु युद्ध शीघ्रतासे आरम्भ हुआ, कुछकाल बीता । दोनों ओरकी सेना ही युद्धके लिये अत्यन्त उत्कंठित हुई तदुपरान्त दीवान राजा रतनचंदको पकडकर उनका शिर कटवानेसे संग्रामके लिये दोनों ओरसे घोर उत्तेजना हुई । बहुतदेरतक संग्राम होनेके पीछे, दिल्लीके सेनापति सआदतखांने वजीरको पकडकर महम्मद शाहके सामने पेश किया, बादशाहने उसको तत्काल फांसीपर लटकाकर इस लोकसे बिदा किया । सआदतखांकी इस चेष्टासे बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ । इसके लिये उसको बहादुरजंगकी उपाधि दी और अयोध्याका राज्य समर्पण करदिया । राजपूत नृपतिगण विजयी बादशाहको बधाई देनेके लिये गये । राजाओंने इस युद्धमें किसीओरका पक्ष ग्रहण नहीं कियाथा इस लिये बादशाह उनसे बहुत सन्तुष्ट हुए और इनके पुरस्कारमें अम्बेर और जोधपुरके राजाओंको

रने फिर वही घृणित जिजिया कर स्थापन किया था। औरंगजेबने जिस कठोरताके साथ इसका प्रचार किया था, यद्यपि इस समय वैसी कठोरताके साथ यह नहीं था * तथापि हिन्दूलोग तो इसका नाम सुनते ही उत्तेजित हो गये। इसके पहिले मुगलोंके ऊपर जो उनका थोडा बहुत अनुराग शेष रहा था, इस जिजिया करके पुनर्वार स्थापित होनेसे वह रहासहा अनुराग भी जाता रहा। वह समझ गये कि विश्वासघाती मुगलोंके सम्बन्धमें हमारी जैसी धारणा है वह किसी प्रकारसे मिथ्या न होगी।–मुगललोग किसी समय भी हिन्दुओंपर सदय व्यवहार नहीं करेंगे, तथा जिस आशयसे मुंडकरकी यह घिनौनी रीति स्थापित हुई थी, उस आशयमें भी किसी भांतिका कोई हेर फेर न होगा। दोनों सइयद भ्राताओंकी असीम सामर्थ्यको हरण करनेके अभिप्रायसे क्षीण हृदयवाले बादशाह फर्रुखसियरने औरंगजेबके प्राचीन मंत्री इनायत उल्लाखाँको अपना दीवान बनाया। कहते हैं कि वह दीवान देशकाल और पात्रापात्रका बिना ही विचार किये हुए हिन्दू प्रजापर कठोर अत्याचार करने लगा और इसके साथ ही साथ जिजिया कर भी पुनर्वार लगाया गया। यद्यपि यह जिजिया कर औरंगजेबके उस घृणित मुंडकरसे बहुत ही अलग था; यद्यपि सालियाना आमदनी पर यह महसूल बहुत ही कम दरके साथ लगाया था: यद्यपि लूले लँगड़े अन्धे और दीन दरिद्रगण इस करसे छुटकारा पा गए थे, तथापि "यह महसूल काफिरोंसे लिया जाता है" इस विधिसे हिन्दुओंमें घोर विद्वेष उत्पन्न हुआ। ऐसा कौन है जो सामर्थ्यानुसार अपने ऊपर किसी प्रकारका कर लगने दे? या मनुष्य होकर जो बिना ही कारणके किसी दूसरेको अपने हृदयका रुधिर दान करनेकी इच्छा करे। जो धर्मनिष्ठ भारत-सन्तानगण, देवभावसे अपने राजाकी पूजा करते हैं, जिन राजाओंको मनुष्य समझना भी हिन्दूगण पाप मानते हैं। वह भारतसन्तान भी आज करभारसे पीडित होनेके कारण उस देवोपम राजाके कल्पित देवभावको भूल गए। इस प्रकारसे कर स्थापनकी बातोंका विचार करने से मनुष्यके स्वार्थपरताको निहार कर हम स्तंभित होजाते हैं ×!

---

* बादशाह फर्रुखसियर २०००) पर जिजिया [illegible]

× जिजिया करके बहुत पहिले [illegible] ([illegible]) प्रचलित [illegible]

[illegible] जिजिया करकी [illegible] हिन्दुओंके [illegible] द्वारा [illegible]।

जैतसिंहने राठौरोंके हाथसे ईडरदेश छीनकर कोलीवाडाके पर्वत प्रदेशतक समस्त भूमिको अपने अधिकारमें करलिया; फिर वह दूसरे देशोंको जीतनेके लिये आगे बढ़ता था कि राणाजीने उसको युद्ध छोडकर उदयपुरमें लौट आनेकी आज्ञा दी। अतएव जैतसिंहकी जय असम्पूर्ण रहगई। इसका कारण यह था कि प्रतिद्वन्द्वी चन्दावत सर्दारने विद्वेषभावको ग्रहणकर राणाजीसे जैतसिंहकी कुछ बुराई कीथी, इसही लिये राणाजीने शक्तावत सर्दारको लौट आनेकी आज्ञा दीथी। इसप्रकार परस्परके डाह और वैरभावसे ही मेवाडका भीतरी बल अधिकतासे हीन होगयाथा। इससमयमें मेवाडका कोई सामन्त भी अपने अधिकारमें दुर्ग नहीं बनाने पाताथा, इसका कारण यह था कि उनको तीन वर्षसे अधिकके लिये पट्टा नहीं मिलताथा। भरण पोषणके लिये उनको भूसम्पत्ति दीजाती थी, देशकी पर्वतमाला उनको किलेका काम देतीथी; और सीमापर जो किले बनेहुए होते थे, वही शत्रुओंसे उनकी रक्षा करते थे। जैसे २ मुगलोंका राज्य घटता गया—वैसे ही वैसे उनकी यह रक्षणनीति छूटती गई; परन्तु इसके थोडेदिन पीछे ही कठोर महाराष्ट्रीय और पठानगण जब प्रचंड वेगसे मेवाडभूमिमें घुसने लगे, तब विवश होकर मेवाडके सर्दारोंने अपने देशको किलोंसे घेरदिया।

राणा संग्रामसिंहने अठारहवर्षतक राज्य कियाथा। मेवाडका सन्मान इनके समयमें अचल रहाथा, तथा शत्रुओंने जो राज्य लेलियेथे वह फिर लौटा लिये गयेथे। राणाजीने जो विहारीदास पांचोलीको अपना दीवान बनाया था इससे ही उनकी दूरदर्शिता और तीक्ष्ण बुद्धिका परिचय भली-भांतिसे प्राप्त होताहै। विहारीदासके समान चतुर और विश्वासी मनुष्य इससे पहिले कभी मेवाडका मंत्री नहीं बनाथा। इस बातकी सत्यता उनके समकालीन राजाओंके लिखेहुए पत्र पढनेसे भलीभांति जानीजायगी। विहारीदासने तीन राणाओंके राज्यतक अपने मंत्रीपदका भलीभांतिसे निर्वाह कियाथा। परन्तु राणा संग्रामसिंहके परलोकगामी होनेपर मेवाडमें जो प्रचंड महाराष्ट्रीय विप्लव प्रचलित हुआ; उनको तीक्ष्णधारको पंचोलीमंत्रीकी सारी यु-क्तियें किसीप्रकारसे न रोकसकीं।

महाराणा संग्रामसिंहके चरित्र सम्बन्धमें बहुतसी बातें प्रसिद्ध हैं। उनपर विचार करनेसे निश्चय होता है कि प्रजापालन, गुणग्रहण इत्यादि [illegible] [illegible] राणाजी विशेष पारदर्शी थे। राणाजी शिष्ट, [illegible] [illegible]

इस सन्धिपत्रको आद्योपान्त देखनेसे भलीभांति ज्ञात होजायगा कि अठारहवीं शताब्दीके आरंभमें राजपूत और मुगललोगोंकी अवस्था किस दशामें थी। यद्यापि सन्धिपत्रका नाम सुनते ही राजपूतनाथ अमरसिंहके सम्बन्धसें अपमान सूचक चिन्ता हृदयके वीच उदय होतीहै; परन्तु यदि विशेष विचारके साथ देखाजाय तो वह चिन्ता तत्काल ही दूर होजाती है। आठवाँ सूत्र पढनेसे यह भलीभांतिसे जाना जाता है कि राणाजीकी इससे कोई हानि नहीं हुई थी। क्योंकि इस सूत्रमें राणाजी वादशाहके रक्षक रूपसे सूचित हुए हैं। "सातहजारी मनसवदारी" का विचार करते ही तेजस्वी अमरसिंहकी याद आती है। उन्होंने राज्यधनको छोडकर वनवासव्रत अवलम्बन किया, तथा किसीकी अधीनता नहीं मानी थी। परन्तु राजपूत जातिकी भीतरी अवस्था वहुतायतसे वदल गई, संग२में उसका मत भी वदलता चला। क्षण स्थाई लौकिकसन्मानके सम्बन्धमें राजस्थानके दूसरेदेश मेवाडकी वरावर होगए थे। पदके तुच्छ लालचसे सवहीने मुगलोंको सन्मानका खजाना समझा था। उसकाल वे इस वातको नहीं समझे कि हमारा यह ध्यान सम्पूर्णतः भ्रमसंकुल है। स्वाधीनता और जातीय गौरवके वदलेमें जो सन्मान प्राप्त हो, उस सन्मानका क्या प्रयोजन है? इसके उपरान्त जेताके निकट दास जातिका सन्मानही क्या? सहस्र सन्मानसे भूषित होकर जिसको जेताकी जूतियें उठानी पडें, उसका वह सन्मान किस अर्थका है? वह सन्मान तो केवल विडम्बनामात्रहै. वह तो असारता, कायरता, और पराधीनताका प्रकाशमान चिह्न [illegible] है। राजस्थान-

---

"९-फूलिया, मंगलगण, वेदनोर, वसार, गयासपुर, पुरधर, [illegible] उनके पाच हजार सवारोंकी मन्सवदारी मुझे मिल्नी चाहिये। [illegible] गदीपर वैठनेके समय स्वीकार कियेहुए, व सिन्सिनीमें जय मिलनेके [illegible] सवार, इस प्रकार७०००हजार सवारोंका मनसव पहिले [illegible] इसही भातिसे सिन्सिनीमे जय मिल्नेके समय१०००सवारोंके [illegible] नके अनुसार मिल्नी उचित है।

"१०-तीनकरोड दाम (क)दुरवारसे मिल्ने चाहिये। [illegible] करनेके अनुसार व एक करोड दाम दक्षिणकी सेनके [illegible] रोक्त दो करोड दामोंकी तो मुझे इसही समय [illegible] प्रान्तका देना वादशाहने स्वीकार भी करलिया है, [illegible]

"११-इस समय जो [illegible]

[illegible]

(क) [illegible]

(ख) [illegible]

समय राणाजी अपने सर्दारोंके साथ "रसोडा" भवन (भोजनागार) में भोजन करनेको बैठे। परोसनेवाला नियमानुसार सब पदार्थोंको परोसने लगा। क्रमानुसार दही परसागया; परन्तु बूरा कोई न लाया। इसके लिये राणाजीने कार्याध्यक्षका तिरस्कार किया; तब उसने हाथजोडकर विनीतभावसे उत्तर दिया कि "अन्नदाताजी! मंत्रीसाहब कहतेथे कि बूराके लिये जो गांव नियत था उसको महाराजने अलग करलिया।" "ठीकहै।" राणाजीने प्रत्युत्तर दिया और विना कुछकहे बूराविहीन दहीको ही भोजन करलिया।

तीसरी कहावत। कष्टदेनेवाले असामव्यवहार कालके बीतजानेपर राणा संग्रामसिंहने राजकार्यके भारको ग्रहण कियाथा। पिताकी मृत्यु होने उपरान्त महाराजके बालिग होनेतक माताने ही राजकार्यको संभालाथा। सिंहासनपर बैठनेके उपरान्त महाराणा संग्रामसिंहने किसीकारणसे दरिनावबुरदारकी भूमिसम्पत्तिपर राज्याधिकार करलियाथा। दोषीके अतिरिक्त राणाजी किसीको दंड न दिया करतेथे, यह बात प्रसिद्ध थी। एकबार दंडदेनेपर फिर वह किसीको क्षमा भी नहीं करतेथे। अतएव कोई भी साहस करके उनके पास दरियावबुरदारको क्षमा करानेके लिये नहीं गया। सम्पत्तिहीन सर्दारने बडेकष्टसे दोवर्ष बितायकर तीसरेवर्षके आरंभसे ही करुणाकी प्रार्थना करके [illegible] के द्वारा राजमाताके निकट एक आवेदनपत्र भेजा। उसने उस प्रार्थनापत्रमें दो [illegible] रुपयेका एक नमस्कार भेजा था, और पुरस्कारमें उन दासियोंको भी बहुतसा धन दियाथा। [illegible] भोजन करनेसे पहिले राणाजी प्रतिदिन माताजीके चरणोंका दर्शन करनेके लिये जाया करतेथे। एकदिन जब कि महाराज माताजीके भवनमें गये [illegible] उन्होंने उस सर्दारका प्रार्थनापत्र उनके हाथमें दिया और [illegible] अनुरोध किया कि उस सर्दारकी सम्पत्ति राज्यसे लौटाकर देदीजाय। किसीको कोई भूमिसम्पत्ति दीजातीथी तो पहिले राणाजी मंत्रीको आज्ञा दिया करतेथे। जिसदिन वह आज्ञा देतेथे उसदिनसे पानेवालेके नामसे दानपत्र [illegible] नियमानुसार आठदिन लगतेथे। कारण कि [illegible] आठदिनके भीतरमें उस [illegible] पर [illegible] छापीजातीथी। [illegible] नहीं समानता [illegible] परन्तु राणा संग्रामसिंहने उसदिन उस [illegible] दर्शनको [illegible]

प्रतिफलित होकर चित्तको आनंद और शोकके रसमें सरावोर करदेता है। यह उन्मत्त हृदय इस पवित्र नामामृतपानसे और अधिक उन्मत्त होकर जिज्ञासा करता है कि—क्या यह वही संग्रामसिंह हैं? जिन्होंने तैमूरके वीरवंशधर वीर केशरी बाबरके असीम विक्रमको रोकदिया था—यह क्या वही संग्रामसिंह हैं? आततायी विश्वासघातकने अधर्मयुद्ध करके जिनको परास्त किया था,—यह क्या वही संग्रामसिंह हैं? सन्ध्यावाती हाथमें ले रात्रिकी अगौनी करनेके समय राजपूतललनागण जिनका स्मरण कियाकरती हैं; गेहूं पीसनेके समय चक्की चलाती हुई कुमारीगण एकसाथ मिलकर जिनके वीरत्वकी गाथाका गीत गाया करती हैं; प्रभातकाल विस्तरेपरसे उठनेके समय राजपूतगण जिनके पवित्र नामका जप किया करते हैं; चित्तौरके विजयखंभपर, आरावली पर्वतमालाके गगनस्पर्शी शृङ्गोपर जिनका नाम खुदाहुआ दिखाई देता है, यह क्या वही संग्रामसिंह हैं, अन्तरमें बैठकर मानो किसी देवताने तत्काल वज्रगंभीर कंठसे उत्तरदिया,—"अपूर्ण मनुष्यका तेज, वीर्य, गौरवादि सबही अनित्य है! आज उसही अनित्यका संसारमें प्रचार करनेके लिये यह दूसरे संग्रामसिंह राणा, प्रथम संग्रामसिंहके आसनपर विराजमान हैं!"

जिस महम्मदशाहके साथ तैमूरके वीरवंशका मकाशमान गौरव निर्वाण होगया, जो पिछला "मुगल बादशाह" था. महाराणा संग्रामसिंह इसहीके राज्यमें सिंहासनपर बैठे थे। इसही बादशाहके समय (सन १७१६–३८) में मुगलबादशाहतकी अवनति आरंभ हुई। बाबरका सिंहासन टूटकर खंडर होनेलगा। जलके बबूलोंकी समान उस खंडहरसे छोटे २ स्वतन्त्र राज्य प्रतिष्ठित होनेलगे। मुगल, पठान, शिया और सुन्नी, महाराष्ट्रीय और राजपूत यह सबही स्वतन्त्रताकी ध्वजा उड़ाकर कुछसमयके लिये राज्यसुख भोगने लगे। अनन्तर जिससमय होनहारके [illegible] निदानके पूर्ण होनेका दिन आया, जिसदिन हिमाद्रिसे लेकर सिंहलतक जल, थल, पर्वत, वन,—[illegible] अचानक ताड़ित प्रभावसे कंपायमान होकर एक [illegible] लगे, उसही दिन सातसमुद्रके पार [illegible] सुलतान, महाराष्ट्री और राजपूतोंके सिंहासनको [illegible] विनाशसिंहासनको स्थापित किया! [illegible] राजपूतगण आज उसही [illegible] सिंहासनके [illegible] हुए हैं!

जयसिंहने उनको समझा बुझा ढाढस बँधा कर कहा "मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करताहूँ, कि जब आप तीर्थयात्रासे लौटेंगी, तब साथ ही उदयपुरमें जाकर राणाको मनादूंगा।" तदुपरान्त तीर्थयात्राको समाप्त करके राजमाता अम्बेरको लौटीं और जामाताको साथ ले उदयपुरमें आईं। राजपूतलोगोंमें अतिथि सत्कारका नियम अति कठोर है। अतिथि सत्कारमें साधारण त्रुटि होनेपर भी राजपूतगण उससे अपना घोर अपमान समझते हैं। राणा संग्रामसिंहने जयसिंहके उदयपुरमें आनेका अर्थ समझलिया। वह जानते थे कि बहनोईका कहना किसीभांतिसे टालनेके योग्य नहीं है। इस कारण राणाजी पहलेसे ही तैयार होगये। उन्होंने जयसिंहको कहनेका अवसर भी न दिया और स्वयं ही माताके श्रीचरणोंका दर्शन किया। उनका हृदय माताके आचरणसे किंचित् दुःखित हुआ, यह बात राणाजीने किसीपर विदित न होने दी और आज भी उनका आशीर्वाद ग्रहण करनेको जानेके समय किसीसे कुछ नहीं कहा। प्रथमतः मानो जयसिंहका ही सन्मान करनेके लिये कितने एक अनुचरोंको साथ लिये हुए राजमन्दिरसे चले: परन्तु वहां जाकर सीधे माताके डेरोंकी ओरको गमनकिया। समयानुसार माताके शिविरमें पहुंच कर उनके चरणोंकी वन्दना की और आशीर्वाद ग्रहणकरनेके पीछे राजमन्दिर तक पहुंचाआये, फिर बहनोईका आदर सन्मान किया। इस सम्बन्धमें उन्होंने केवल इतना ही कहाथा कि "परिवारका क्लेश और झगडा परिवारमें ही छिपा रहना ठीक है।"

नातेफलित होकर चित्तको आनंद और शोकके रसमें सरावोर करदेता है। यह उन्मत्त हृदय इस पवित्र नामामृतपानसे और अधिक उन्मत्त होकर जिज्ञासा करता है कि–क्या यह वही संग्रामसिंह हैं? जिन्होंने तैमूरके वीरवंशधर वीर केशरी बाबरके असीम विक्रमको रोकदिया था–यह क्या वही संग्रामसिंह हैं? आततायी विश्वासघातकने अधर्मयुद्ध करके जिनको परास्त किया था,–यह क्या वही संग्रामसिंह हैं? सन्ध्यावाती हाथमें ले रात्रिकी अगौनी करनेके समय राजपूतललनागण जिनका स्मरण कियाकरती हैं; गेहूं पीसनेके समय चक्की चलाती हुई कुमारीगण एकसाथ मिलकर जिनके वीरत्वकी गाथाका गीत गाया करती हैं; प्रभातकाल बिस्तरेपरसे उठनेके समय राजपूतगण जिनके पवित्र नामका जप किया करते हैं; चित्तौरके विजयखंभपर, आरावली पर्वतमालाके गगनस्पर्शी शृङ्गोपर जिनका नाम खुदाहुआ दिखलाई देता है, यह क्या वही संग्रामसिंह हैं, अन्तरमें बैठकर मानो किसी देवताने तत्काल वज्रगंभीर कंठसे उत्तरदिया,–"अपूर्ण मनुष्यका तेज, वीर्य, गौरवादि सबही अनित्य है! आज उसही अनित्यका संसारमें प्रचार करनेके लिये यह दूसरे संग्रामसिंह राणा, प्रथम संग्रामसिंहके आसनपर विराजमान हैं!"

जिस महम्मदशाहके साथ तैमूरके वीरवंशका प्रकाशमान गौरव निर्वाण होगया, जो पिछला "मुगल बादशाह" था, महाराणा संग्रामसिंह उसहीके राज्यमें सिंहासनपर बैठे थे। इसही बादशाहके समय (सन १७१६–३४) में मुगलबादशाहतकी अवनति आरंभ हुई। बाबरका सिंहासन टूटकर खंड२ होनेलगा। जलके बबूलोंकी समान उन खंडोंपर छोटे २ स्वतन्त्र राज्य प्रतिष्ठित होनेलगे। मुगल, पठान, शिया और सुन्नी, महाराष्ट्रीय और राजपूत यह सबही स्वतन्त्रताकी ध्वजा उड़ाकर कुछसमयके लिये राज्यसुख भोगने लगे। अनन्तर जिससमय होनहारके अवश्यम्भावी नियमके पूर्ण होनेका दिन आया, जिसदिन हिमाद्रिसे लेकर सिंहलतक जल, थल, पर्वत, वन,–चराचरजगत् [illegible] अचानक ताड़ित प्रभावसे कंपायमान होकर एक प्रचंड शब्दसे [illegible] उठा, उसी दिन सातसमुद्रके पार आये हुए [illegible] इन [illegible] मुसलमान, महाराष्ट्री और राजपूतोंके [illegible] सिंहासनको [illegible] स्थापित किया! [illegible] प्तगण [illegible] उसही सिंहासनके [illegible] हुए हैं!

कि पहरेदारने आकर नम्रतासे कहा, "रावतजी! राणाजीने आपको अभिवादन करके यह पत्र दियाहै।" दीपकके उजालेमें पत्रको पढ़कर सरदारने अश्वपालकको घोड़ा तइयारकरनेकी अनुमति दी। द्वारके सामने ही प्रेममयी स्त्री अपने प्यारे बच्चोंको लिये हुए सरदारका अभिनन्दन करनेको खड़ी थी। रावतजीने विचारा था कि सुकुमार बच्चोंको गोदमें लेकर थकावट दूर करेंगे, परन्तु सो न हुआ। तृष्णायुक्त नेत्रोंसे एकवार प्राणप्यारी वनिताके लमायमान मुखकी ओर निहार, राजभक्त शालुम्ब्रा सरदार केवल छः अनुचरोंको संग ले नगरकी ओर चले, और जबतक नगरमें नहीं पहुंचे, तबतक घोड़ेकी लगामको नहीं खींचा। रात्रि दो पहर बीतचुकीहै; समस्त जगत सुप्तहै, प्रकृति स्थिर और गंभीर है, कहीं पत्ता तक नहीं हिलता। बीच २ में केवल झिल्लीकी झनकार और वायुका सन २ कार शब्द घोड़ोंकी टापध्वनिके साथ अनन्त आकाशमें प्रतिध्वनित होकर टकराताथा। रावतजीका बागभवन शून्यथा,—दास दासी या खाद्यपदार्थोंकी कुछ भी तयारी न थी;परन्तु राणाजीने पहिलेसे ही समस्त तयारियें कररक्खीथीं। कारण कि उस निशीथकालमें उनका आगमन पुकारे जातेही सरदार और अनुचरगणके लिये भोजनपानकी सामग्री उस बागभवनमें पहुंचाईगई। वाहनोंके लिये घास इत्यादिका प्रबन्ध हुआ। दूसरे दिन प्रभातहोते ही शालुम्ब्रा सर्दार समयपर राजसभामें पहुंचा। राणाजी उसपर अत्यन्त प्रसन्नहुएथे। नियमित सन्मानके अतिरिक्त उन्होंने सर्दारको उस दिन एक जमींदारी दान की। राणाजीका यह असीम प्रसाद पायकर शालुम्ब्रा सर्दारको अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उसका यथार्थ कारण जाननेके लिये गंभीरभावसे कहा "महाराज! मैंने ऐसा कौनसा असाध्य साधन कियाहै जिससे आपने आज ऐसा पुरस्कार दिया! और यदि कुछ किया भी है तो वह तो मेरा कर्त्तव्य ही था। कर्त्तव्यसाधनके लिये श्रीमानसे पुरस्कार कैसे लियाजासकताहै? मेवाड़का मंगलसाधन करना वीरवर चंडके वंशधरोंका मुख्य कर्त्तव्य है। उस कर्त्तव्यके पालन करनेमें यदि मेरा प्राण भी चलाजाय तो भी पुरस्कार लेना उचित नहीं। हे महाराज! इस पुरस्कारको लौटालीजिये। चंडके वंशधरगण कर्त्तव्यपालनके लिये श्रीमानसे किसी पुरस्कारकी आशा नहीं करतेहैं।" तदनन्तर शालुम्ब्रासरदारोंने किसीसमय इस पुरस्कारको ग्रहण नहीं करना चाहा। परन्तु राणाजीका अत्यन्त आग्रह देखकर पुनः कहा, "हे महाराज! आपका प्रसाद न लेनेसे राजाका अपमान होगा", परन्तु इसमें यदि श्रीमान मेरा एक अनुरोध रक्खें तो मैं [illegible]

जो उन्होंने साहस, उत्साह, धीरता व शान्तिप्रियता आदि सुन्दर गुणोंका परिचय दियाथा, आज अभाग्यसे उन सबको छोड़दिया और उनके वदले शीघ्रही दुराकांक्षा, चतुरता और लूट खसोट आदि घृणित दोषोंके समुद्र होगये। जिस दक्षिणावर्तमें उनका अखंड प्रताप विराजमान होगयाथा, जहांके रहनेवालोंकी भाषा और आचार व्यवहारके साथ उनकी भाषा और आचार व्यवहारका सम्पूर्णतः मेल था; राजनीतिके श्रेष्ठ अनुशासनका अनुसरण करके; अपनी पूर्व गुणावलीका अवलम्बन करके यदि वह वीरगण उस विशाल दक्षिणावर्त्तके अक्षय राज्यपर ही संतुष्ट रहते, तो उस विशाल देशसे महाराज शिवाजीका लगायाहुआ वंशवृक्ष शीघ्रही न उखड़जाता। परन्तु उनकी प्रचंड अभिलाषा ही उनके लिये काल होगई। उसके पापमंत्रसे उत्साहित होकर उन्होंने जैसेही उत्तरीय देशोंपर धावा मारना आरंभकिया, वैसे ही वह समस्त भारतवर्षकी हिन्दूसन्तानके नेत्रोंमें कॉंटेसे खटकनेलगे। उनका मार्ग कंटकमय होगया। राजपूत और महाराष्ट्र दोनों ही हिन्दू हैं, धर्म और जातिके विषयमें दोनोंके आशय सम्पूर्णतः एकही हैं, परन्तु दोनोंके स्वभावमें परस्पर इतना अन्तर देखा जाता है कि जितना राजपूत और मुसलमानोंमें भी नहीं देखाजाता। यह ठीक है कि मुसलमानोंके शासनके भीतर अत्याचार जमाहुआ रहता है, परन्तु महाराष्ट्रियोंकी समान वह अत्याचार घोर अनभल नहीं करता। इसही कारणसे मुसलमानोंके दीर्घकालव्यापी राज्यसे भी राजस्थानकी उतनी हानि नहीं हुईथी कि जितनी हानि मरहटोंने थोड़े ही समयमें की। मुगलबादशाहतकी अवनतिके समय दीर्घ काल व्यापी उपद्रवोंको सहकरके यदि भारतवर्षके रहनेवाले शान्तिसुखको प्राप्तकरके धीरे २ जातीयवलको संग्रह करसकते तो फिर भी भारतमें सौभाग्य सूर्यका उदय होजाता। परन्तु मुसलमानोंके कठोर अत्याचारसे छूटने न छूटने ही, महाराष्ट्रियोंके सतानेसे भारतवर्षका कलेजा टूटगया। उस पीड़नके प्रभावमें भारतमेंसे सार निकलगया, और भारतसन्तान फिर न उठसकी। भीम, भीष्म, कर्ण, अर्ज्जुन और प्रतापसिंहकी मातृभूमिने कितनी पर भ्रष्टसन्तानोंके चरणोंमें एकसाथ ही सिर झुकादिया! हाय! दुर्जयकालका माहात्म्य कैसा विचित्र है!

बादशाह फर्रुखसियरकी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. बादशाहने किस बुरी साइतमें सैयदोंके [illegible] [illegible] [illegible], और किस बुरे वक्तमें उसने दुष्ट [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

अपने अपने सामन्तोंके साथ आकर इस सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर करदिये। एक चित्तताको अटल रखनेके लिये एक नायकका प्रयोजन था; इस कारणसे सबने ही यह ऊंचा पद राणा जगतसिंहको दिया. और उनको ही समस्त राजपूत सेनाका अधिपति बनाया। क्रमानुसार सेना इकट्ठी होने लगी। सबने सन्मुख ही वर्षाऋतुका आगमन जानकर निश्चय करलिया कि वर्षाऋतुके व्यतीत होनेपर श्रीमान् राणा जगत्‌सिंहजी अपनी विशाल राजपूत अनीकिनीको साथ ले मुगलोंसे संग्रामकरने जांयगे। युद्धकी सम्पूर्ण तैयारियें होगई। परन्तु

सन्धिपत्र।

राणाजीकी मोहर।

श्रीएकलिङ्ग. (म)

मान्यता।	मान्यता।	मान्यता।
सीतारामो जयति. (म)	[illegible] (म)	[illegible] (म)

परन्तु वादशाहने अत्यन्त भीरु और कायरमनुष्यकी समान उनके किसी परामर्शपर ध्यान न दिया। इस कारण वह दोनों राजा भी उसको छोड़गये। फर्रुखसियर अत्यन्त ही कायर था वह राजपूत राजाओंके परामर्शका निरादर करके "ज़नानखाने" में ही रहनेलगा। उसको अपनी रक्षाका कोई उपाय न सूझा और शत्रुकी दयाका मार्ग देखनापड़ा क्रोधित सय्यदने वादशाहसे कहलाभेजा कि "अपने विश्वासी राजपूतोंको दूर करदीजिये, और हमारे एक सेनापतिको दुर्गमें प्रवेश कर दीजिये, ऐसा होनेसे हम आपपर किसी प्रकारका अत्याचार न करेंगे।"

अभागे फर्रुखसियरकी समस्त आशाएँ नष्ट होगई, उसने निराश होकर समझा कि शत्रुगण महलमें किसी तरहका ज़ोर ज़ुल्म नहीं करेंगे। इसीसे वह ज़नानेमें बेगमोंका दामन पकड़कर बैठारहा, परन्तु उसकी वह उम्मेद भी दूर होगई। "असित वस्त्र पहिरनेवाली विभावरी (रात्रि) कराल वेश धारणकरके संसारमें आई, और दिवासती वादशाहके पतित भाग्य-नक्षत्रकी नाईं गंभीर अन्धकारमें लोपहोगई। दुर्गका द्वार बन्द हुआ; वादशाहका कोई भी मित्र किलेमें नहीं रहने पाया; केवल वज़ीर और अजितसिंह वहाँपर थे। विकल दशनवाली रात्रि नगरवासियोंको अनेक प्रकारके भय दिखाने लगी। सवहीको अत्यन्त चिन्ता थी। इस वातकी किसीको खबर नहीं थी कि महलमें क्या होरहाथा। दूसरी ओर अमीर-उल-उमरा महाराष्ट्रियोंकी दश हज़ार सेनाकी [illegible] वाट देखरहाथा। ऊषाके ललाई लिये रंगने नौवतके साथ साथही नये दिवसका आगमन और अभागे फर्रुखसियरकी दुर्दशायुक्त कहानीको संसारमें गंभीरनादसे प्रचार किया। सवकी आशा लोपहुई। फर्रुखसियरकी पदच्युतिपर रफ़ी-उल-दिर्जात दिल्लीके तख्तपर वैठा।" पूर्वदेशीय राजाओंकी पदच्युति और निधनके बीचमें थोड़ा ही समय लगा करताहै। अभागे फर्रुखसियरके लिये भी ऐसा ही हुआ। यहांतक कि वन्दीलोगोंने जव नवीन वादशाहको "उम्रदराज़हो" यह कहकर आशीर्वाद दिया, अभागे फर्रुखसियरके गलेपर उस समय भी धनुषकी डोरी लगी हुई थी।

—एक युद्ध हुआ। इस युद्धमें जयसिंह हाड़ा [illegible] सरायने भागगये। उनकी सहायताके लिये [illegible] सेना भेजी। [illegible] सय्यदोंको देदिया। सय्यदोंने इच्छानुसार [illegible] सय्यदोंको तो आज [illegible] पहिचानतेहैं। [illegible]) उनकी बहुतसी बातें निवेदन करतेहैं। [illegible] इति फाल्गुन [illegible] ([illegible])

[illegible]

निज़ामउलमुल्क-अधीनताकी जंजीरको तोड़कर पूरा स्वाधीन बनगया था।बादशाह देहलीका सेनापति - निज़ामको दमन करनेके लिये जाकर स्वयं ही उसकी क्रोधाग्निमें भस्म होगया था। चतुर निज़ामने उस अभागे मुगलसेनापतिका शिर काटकर बादशाहके पास भेजदिया और कहलभेजा कि "यह नालायक बागी होगया था इसही लिये इसका शिर काटकर हुजूरकी कदमबोसीमें रवाना किया है।" हीनबल महम्मदशाह निज़ामुलमुल्कके आशयको भलीभांतिसे समझगया, परन्तु चारा क्या था. अपने राज्यकी स्वाधीनताको दृढ़ करके निज़ामने राजपूतोंके साथ मेल किया और मालवे तथा गुजरातमें मरहटोंकी विजयिनी सेनाको चालित करनेका उत्साह दिलाया। इसके अनुसार महाराष्ट्रीय वीर बाजीरावने अपनी सेनाको साथ ले सबसे पहिले मालवेको घेरा और वहांके हाकिम दयाराम बहादुर -को युद्धमें संहार करके निज़ामकी अभिलाषा पूर्ण की। इसके उपरान्त अंबरके राजा जयसिंहको मालवेका राज्य दियागया, परन्तु उन्होंने ग्रहण न करके बाजीरावको ही फेरदिया इस प्रकारसे मालवेका राज्य मरहटोंके हाथ लगा। गुजरातका राज्य भी शीघ्र इसही दशाको पहुंचगया। पहिले यह राज्य बादशाहने राठौरोंको देदिया था, परन्तु राठौरोंने अपनी प्रतिज्ञाका पालन नहीं किया. इस कारण अजितसिंहके पुत्र अभयसिंहने इस राज्यको घेरा और वहांके हाकिम सर बुलंदखांको निकालदिया। इस मौकेको अच्छा समझकर मरहटोंने राठौरोंके जीतेहुए गुर्जरराज्यको अपने अधिकारमें करलिया। राठौरराज्य अभयसिंहने इसको देखकर भी अनदेखा किया × उन्होंने केवल उसदेशके उत्तरी परगनोंको ही अपने अधिकारमें करलिया।

नहीं हुआ । उनके बनाएहुए बादशाह कठपुतलीकी समान तख्तपर बैठे रहतेथे । उनको कोई भी बादशाह नहीं समझताथा; प्रजाकी जो कुछ भक्ति उनपर थी वह उनके कठोर अत्याचारसे निर्मूल होगई, अमीरउल उमराके द्वारा बादशाहका अर्थ शून्यनामसे प्रकाशित होनेपर सब ही स्वाधीन जीवनका आनंद लूटने लगे । चतुर निज़ामने भी इस अवसरमें अपना स्वाधीन होना प्रचार करदिया और असीरगढ व बुरहानपुर इन दोनों शहरोंके किलोंपर अधिकार करके अपना बल बढ़ाया । इन सैयदोंके हृदयमें अनेकभांतिकी शंका उठने लगीं । स्वार्थरक्षाका कोई उपाय न देखकर उन्होंने राजपूतसामन्तों * से सहायता माँगी । वैसेही कोटा और नरवरके दोनों राजकुमार निज़ामकी सेनापर अधिकार करनेके लिये अपने सरदार और सामन्तोंको साथ लेकर नर्मदा नदीके किनारेपर आये । परन्तु यह दोनों राजपूत, संग्रामविशारद निज़ामकी प्रचंड सेनाको नहीं रोकसके, और उस नर्मदाके किनारे ही निज़ामकी क्रोधाग्निसे कोटेका राजा भस्म होगया ।

मुगलोंके हाथसे हैदराबादका राज्य निकलते ही अयोध्याका राज्य भी स्वाधीन हुआ चतुर सइयदखाँने × इस स्वाधीनताको प्राप्त कियाथा । जिससमय निज़ा-

---

* इस समय नागोरके राजा भक्तसिंहने राणाजीके प्रधानमंत्री बिहारीदासको जो पत्र लिखा था उसके पढनेसे उस समयके बहुतसे समाचार ज्ञात होंगे ।

" आपका पत्र पाया. उसको पटकर प्रसन्न हुआ । श्रीदीवानजीसाहबका [illegible] मुझको मिला, उनके मनोभावको मैं समझगया । आप कहतेहैं कि दोनों नव्वाब ही (सैयद) [illegible]-भमें आये हैं । वे दोनो महाराजा (कोटे और नरवर) भी उनमें जा मिले, और [illegible] सेना भी उनकी सहायताके लिये जानेको तइयार हुईहै । कारण कि [illegible] कतीहै ? यह सब जाना । परन्तु नव्वाबोंमेंसे कोई भी [illegible] दक्षिणकी यात्रा न करेगा, वह सबही निश्चिन्त हो घर बैठकर [illegible] । [illegible] नव्वाबोंको संग्राममें जाना पडे, तो उनका ही पक्ष [illegible] पक्षकी सहायता की जायगी तो आनको [illegible] । अच्छा, [illegible] सूचित करता रहूंगा. इस समय सावधान रहियेगा । [illegible] हैं तो फिर उसमें दूसरेको [illegible] जाने देना ठीक नहीं [illegible] मनोभाव समझ रखतेहैं । [illegible] सम्मति नहीं । "

× [illegible]

उसके कठोर विक्रमसे वह नगरी अत्यन्त ही उलट पुलट होगई। फिर निर्बलबादशाहने चौथ देकर कठोर पीडासे छुटकारा पाया। बादशाहकी यह कायरता देखकर निज़ामके मनमें अनेक प्रकारके सन्देह होनेलगे। बादशाहको जीतकर कदाचित महाराष्ट्रीयलोग निज़ामराज्यपर आक्रमण करें इस भांति विचारकर निज़ामने महाराष्ट्रियोंको मालवेसे निकालनेका निश्चय करलिया। उसके मनमें दृढ़ धारणा होगई कि अगर महाराष्ट्रीलोग मालवेमें भलीभांतिसे जमजांयगे, तो फिर वहांसे इन लोगोंका निकालना कठिन होगा और फिर यह हमारे उत्तरदेशके सम्बन्धको एकदम तोडदेंगे। यह विचारकर निज़ामने मालवे पर आक्रमण किया और बाजीरावको पराजित करके अपने खटकेको दूर हटाया। विजयी निज़ाम, पराजित महाराष्ट्रियोंको वहांसे निकालनेकी तयारीमें था ही कि उसने प्रचंड वीर महा अत्याचारी नादिर शाहके भारतवर्षमें आनेका समाचार पाया। यह सुनकर निज़ाम-उल-मुल्क अत्यन्त भयभीत हुआ और मरहटोंको छोड़कर अपने राज्यमें चलाआया। जिस समय * नादिर शाहकी प्रचंड तुरहीका शब्द भारतवर्षके पश्चिम प्रान्तमें सुनाई दियाः उसकाल मुगलबादशाहके विक्रमकी आग संपूर्णतः निर्वाण होचुकी थी। नादिर शाहके बिगुलको सुनकर संपूर्ण भारतवर्ष बारंबार इस प्रकारसे कांपने लगा कि जैसे भूचालसे पृथ्वी कांपाकरती है। अभागे महम्मदशाहका रत्नमुकुट सहसा गिरके उतरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा। न

कितने एक परगने दिये* गिरधरदासने × महाराष्ट्रियोंको आगे बढ़नेसे रोकाथा, इस लिये उनको मालवा दियागया। और निज़ामको हैदराबादसे वज़ीर बनानेके लिये बुलाया।

भारतके घोर राजनैतिक विप्लवके समय मेवाडकी नीति सम्पूर्णतः भिन्न प्रकारसे ज्ञात हुआ करतीहै। जिससमयमें उनके सजातीय और आसपासके रहनेवाले राजा-लोग समयानुसार अवसर पाय, मुगलबादशाहतकी गडबडीमें पडकर सावधानीके साथ अपने २ राज्यको बढारहेथे, उससमय मेवाडके राणागण आलस-भावसे पड़ेहुए समय काट रहेथे। पराई उन्नति देखकर भी उनको डाह नहीं होताथा। अंबेरका प्रचंड प्रताप यमुना नदीके किनारे तक फैल गयाथा। इस ओर मारवाडके राजा अजयसिंहने अजमेरदुर्गके सौधपर अपनी विजयपताका-को उडादिया और गुजरातके राज्यको छिन्नभिन्न करके अपनी विजयी सेनाको मरुभूमिसे द्वारकातक चलाया। ऐसे समयमें मेवाडके मध्य कुछ भी उत्कण्ठा दिखाई नहीं देती थी। मेवाडके राणा अपने‡ प्राचीन सामन्तराजाओंके साथही निश्चिन्तहो प्रसन्न रहते थे। इस प्रकारकी नीतिके व्यवहार करनेका मूल कारण खोजनेके लिये हमको अधिक दूर नहीं जाना पडेगा। केवल एकबार मेवाडकी प्राचीन नीतिका अनुशीलन करनेसे इसकी गत्यना हाथमें आजायगी। जिसनीति और जिन संस्कारोंको अचल रखनेके लिये गिह्लोट वीरगणोंने प्रसन्नतासे अपने हृदयका रुधिर दान किया, कदा-चित पश्चात् उस नीति और उस संस्कारमें कुछ विघ्न पडजाय, या मुसल-मानोंसे मेल करना पडे. इसही भयके मारे वह अपना राज्य बढ़ानेके लिये आगे नहीं बढ़तेथे. तथा राजनीति विषयमें अपकर्ष सिद्ध होने पर भी उस नीति और संस्कारको नहीं छोड सकतेथे। इन्हीं कारणसे उनके राज्यकी सीमा नहीं बढ़तीथी। राज्यकी श्रीवृद्धि साधन करनेमें जो विरुद्ध सामन्त सम्प्रदाय भी प्रतिकूलाचरण कियाकरता था। इन दोनोंमें इतना विरोध था कि यदि एक दल किसी दूसरे राज्यको जीत लेता तो दूसरादल उसमें विघ्न डाला किया-करताथा, इसकारण पहिला दल पहिले जीतेहुए राज्यको छोडकर अपने देशमें लौट-आताथा। यहांपर एक ऐसा उदाहरण भी दिया जाताहै। इन्द्रासिंह सर्दार [illegible]

---

* जलिरवो आगरा, व [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible]।

× गिरधरदास, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

‡ उदयपुर और [illegible] भी इनके [illegible] थे।

लोभ उस विपुल धनको पाकर घटनेकी जगह बढ़तागया ! तब उसने चारो ओर डौंडी फेरदी कि विना (२॥) ढाई करोड रुपयेके और पायेहुए मैं हिन्दोस्थानको नहीं छोडूंगा; अतएव जिसप्रकारसे हो शीघ्र इस रुपयेको अदा करना चाहिये। इस घोषणापत्रके पाते ही यमदूतकी समान ईरानी लोग हाथमें तलवार लिये चारों ओरको धाये और कठोर अत्याचारके साथ २ पशुओंकी समान आचरण करके नगरवासियोंका धन लूटने खसोटने लगे। उनके अत्याचारसे नगरमें हाहाकार मचगया। नगरनिवासी व्याकुलहोकर इधर उधर भागनेलगे। परन्तु भागकर जाय कहां ? कौन उनकी रक्षाकरे ? कोई भी नहीं ! ईरानियोंके सामने आज समस्त वीर लोगोंका बाहुबल निकम्मा होगया ! अतएव बचानेवाला अब कोई भी नहीं है ! सब ही अपनी २ रक्षाकरनेके लिये इधर उधर भागरहेहैं। ऐसा साहस किसीमें नहीं जो इन राक्षसोंके अत्याचारको रोके। भागनेपर भी अभागोंका निस्तार नहीं होता। पिशाचगण पीछे दौडकर उनका साधारण सहारा—केवल भागेश्वर भी छीनलेतेहैं:—उनकी प्राणप्यारी स्त्रियोंपर कठोर अत्याचार करतेहैं ! हाय ! आज दिल्लीनगरमें प्रलयकाल उपस्थितहै ! आज नगरवासियोंका प्राण और नगरवासियोंकी मानमर्यादा कठोररूपसे पीसी जा रहीहै। उनका सर्वस्व लुटगयाहै ! ऊंचे पदके मनुष्य अपमानकी अपेक्षा मरनेको अच्छा समझतेहैं। ऐसे लोगोंने पारवंडियोंसे रक्षाका कोई उपाय न देखकर पहिले तो अपनी स्त्रियोंको मारडाला और तदुपरान्त उस शोकानलमें अपने प्राणोंको होमदिया। सिद्धान्त यह है कि आत्महत्याके सिवाय उस भयंकर अपमानसे बचनेका दूसरा कोई उपाय भी न था इसही भयंकर प्रलयकालमें वह 'अरबार, (दिल्ली-दर्पण) डरी कि राक्षस नादिर शाह भागगया। पलभरमें यह बात चारोंओर फैलगई। तत्काल अनेक नगरवासी लोग तलवारें हाथमें लियेहुए इधर उधर [illegible] की समान घूमतेहुए ईरानियोंपर टूटपडे। [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जिस कार्यको आरंभ करते, उसको विना पूरा किये हुए नहीं छोडते थे; वह राजकीय और व्यवहारिक सब प्रकारका कार्य निर्वाह करते थे। यहांतक कि जिन बातोंमें वृथा ही बहुतसा व्यय हुआकरताथा, उनकी भलीभांतिसे परीक्षा करके खर्चको कम करदिया करते थे। महाराणाजीकी कहावतोंमें जो बातें विशेष मनोहर ज्ञात हुई उनको ही आगे लिखाजाताहै। मेवाडकी प्रथम श्रेणीके चौहानोंमें कोटारियेंके चौहान भी मानेजातेहैं। राजसभामें इन लोगोंकी अत्यन्त प्रतिष्ठा थी। एक समय इन लोगोंने राणाजीके राजसाजको भारी करनेकी प्रार्थना की। प्रचलित शिष्टाचारके अनुरोधसे राणाजीने उनकी प्रार्थनाको स्वीकार किया। कोटारिया चौहानोंके आनंदकी सीमा न रही। वह लोग इसबातका विचार करते २ कि राणाजीने हमारी प्रार्थनाको स्वीकार कर-लिया—आनन्दके साथ अपनेको धन्यवाद देते हुए घरको गये। परन्तु राणा-जीने अपने मंत्रीको बुलाकर आज्ञा दी कि "कोटारियोंकी जागीर-मेंसे शीघ्रही दो गांव अलग करलो।" यह आज्ञा थोडेही समयमें कोटारिया सर-दारने सुना। उसने तत्काल राणाजीके गृहपर आय भयसहित पूछा "महाराज! इस दीनसे कौनसा दुष्कर्म बनपड़ा जो श्रीमान्‌ने असन्तुष्ट होकर मुझे ऐसी दंडाज्ञा दी है।" राणाजीने मुस्कुराकर धीरे २ उत्तर दिया कि "कुछ भी नहीं रावजी! तो भी जो आपने मेरे पहिरावेके बढानेका अनुरोध कियाहै, मैंने भलीभांति विचार कर देखा कि इन दोनों गाँवोंकी आमदनीसे ही इसका खर्च चलसकेगा। जब कि मेरी आदमनीका कुल रुपया अलग२मद्दमें व्यय हुआ करताहै, तब अपने बडेबूढोंके साज सरंजामके आडम्बरको बढाकर आपलोगोंका मनोभिलाष पूर्ण करना होगा, फिर यह खर्च आवे कहांसे, इसकारण आपके दोनो गांवकी आमदनीके सिवाय यह खर्च और कहीसे नहीं किया जा सकता।" यह उत्तर सुनकर चौहान-सर्दारके ज्ञाननेत्र खुलगए और उसने अपनी प्रार्थनाका प्रतिसंहार किया।

दूसरी कहावत—स्मरणशक्तिकी हीनतासे अथवा भ्रान्तिसे एकवार राणाजीने स्वयं ही अपनी प्रतिष्ठित विधिका लंघन कियाथा। तोशाखाना, तोपखाना और गुप्तकोषागार, रनिवास इन सबके खर्चके अलग २ भूमि नियत थी। इस भूमिको धुआ नामसे पुकारतेथे। प्रत्येक धुआ एक २ कर्मचारीके सौंपा-हुआ रहताथा। इन कर्मचारियोंको धुआदार कहाजाताथा। धुआदारोंको अपना २ हिसाब मंत्रीके पास दाखिल कियाकरते थे। [illegible] धुआदारका एक धुआ अलग करदियाथा। परन्तु [illegible]

नयमें यदि कुछ सन्तोषकर दृश्य पाया जाताहै तो वह केवल दुराचारी दतखांका शोचनीय परिणाम है।

स लोमहर्षणकारी घोर वधके समय नादिरशाहने पारसंडी सआदतखांके को आज्ञा दी कि " तुम्हारी और सआदतखांकी जो कुछ दौलत हो, उसकी ठीक फहरिस्त मैं इस ही वक्त देखना चाहताहूं, अगर इस फहरिस्तको नहीं ओगे, तो मैं तुम्हारा शिर कटवाडालूंगा।" तदुपरान्त निजामने जो करोड रुपये पणमें देने स्वीकार किये थे, नादिरशाहने इन रुपयोंको केवल से ही लेना चाहा। इस कठोर आज्ञाको सुनते ही सआदतखांको चारो ओर कार दिखाई दिया। उसको निराशाने आघेरा। इस दुराचारीने सल्तनत के अपने पांवमें आपही कुल्हाडी मारीथी, आज उसका पाव दुःख देने । आज उसके ज्ञाननेत्र खुल गये: आज समझा कि नादिर शाहको बुलाकर स्वयं ही अपना नाश किया। जिस ओरको देखता उस ही ओरसे भयंकर दृश्य ाई देते थे: उस ही ओरसे यमदूतगण उसका संहार करना चाहते थे। इस द दुःखसे छुटकारा पानेके लिये ही अथवा नादिर शाहकी कोपाग्निसे बच- लिये अभागे सआदतखांने जहर खाकर परलोकका मार्ग लिया उसके न राजा मजलिसरायने भी विष पान करके स्वामीका अनुगमन किया। इस र नाटकका पिछला अंक इसप्रकारसे अभिनीत होनेपर राजस नादिरशाहने ां महम्मद शाहका दियाहुआ सन्धिपत्र ग्रहण किया और ... ठकर वसन्तकालमें श्मशानकी समान दिल्लीको छोडकर अपने देशको

लही दानपत्र देनेके लिये मंत्रीको आज्ञा दी। शीघ्रही वह राणाजीके समीप आया। तब उन्होंने माताके हाथमें वह दानपत्र रखकर विनयसे कहा कि "यह दानपत्र उसको देकर तनरसुक लौटा दीजो।" तदुपरान्त राणाजी माताके चरणोंमें शिर नवायकर आशीर्वाद ले भोजनकरनेको चलेगये। दूसरे दिन एक घंटा पहिले भोजन सजानेकी आज्ञादेदी। परन्तु मातासे आशीर्वाद लेने न गये। इस बातसे सबको आश्चर्य हुआ;-परन्तु और सबका विस्मित होना राजमाताके विस्मित होनेसे कहीं घटकर था। वह दिन बीता, दूसरा दिन आया; तथापि माताको पुत्रका दर्शन प्राप्त न हुआ; अब तो उनका आश्चर्य शतगुण बढ़गया। महारानीजीने पुत्रके पास आदमी भेजा; प्रत्युत्तरमें राणाजीने शिष्टाचारके साथ कहलाभेजा कि "मुझको समय नहीं मिलता, इस कारण जानेमें असमर्थहूँ" पुत्रका विरागयुक्त भावदेखकर राजमाता अत्यन्त भयभीत हुई ऐसे चित्तविकारका कारण खोजनेलगीं। अनन्तर उस "दानपत्र" के अतिरिक्त और कोई कारण नहीं देखपाया। यह जानकर मंत्रीसे अनुरोध करनेको कहा; परन्तु मंत्रीको महाराणासे कुछ कहनेका साहस न हुआ तब राजमाताने दूसरा उपाय अवलम्बन किया। परन्तु उनका वह उपाय भी न चला-कोई चेष्टा फलवती न हुई। तब राजमाताजीके हृदयका शोक सीमासे बाहर होगया, हृदयमें क्रोधका संचार हुआ, विना ही अपराधके दासियोंको दंड देने लगी-पश्चात् आहार करना छोडदिया। तथापि महाराणा संग्रामसिंहकी प्रतिज्ञा अचल और अटल रही। अनन्तर राजमाताजीने गंगास्नानको जानेका विचार किया, तीर्थयात्राकी सब तैयारियें हुई; उनके शरीररक्षकगण सज्जितहोकर चलनेकी बाट देखनेलगे। विदाके समय पुत्रका मुखकमल देखनेकी इच्छासे कुछ विलम्ब किया, परन्तु संग्रामसिंह न आये। दुःखित होकर यात्रा की सबसे प्रथम तो व्रजकिशोर श्रीकृष्णजीके [illegible]करनेके अभिप्रायसे उन्होंने मथुराकी ओर जानेका विचार किया। जयपुरकी ओरको उनकी पालकी जानेलगी, इस नगरमें राजमाताजीका जामातृभवन था। अतएव जानेके समय कन्या और जामाताके देखनेको महिषीने जयपुरनगरमें प्रवेश करनेके लिये कहा। महाराज जयसिंहने उचित आदर सन्मानके साथ (श्वश्रू) सासजी की अगवानीकी और उनको अपने नये जयपुरनगरमें लाये और प्रतिष्ठा बढ़ानेके लिये सासकी पालकीके डंडेके नीचे [illegible] अपना कंधा लगाया। ४ [illegible] मनोविकारका वृत्तान्त [illegible]

४ [illegible]

इसके कष्टोंके आक्रमणसे छुटकारा पानेको वह फिर उस बातका विचार नहीं करते थे और जो आदमी केवल स्वार्थपरताहीकी सेवा करता वह अपने मानवभ्राताओंके साथ किंचित भी सहानुभूति प्रगट नहीं करता था। स्वार्थपरता अपने और पराये धर्ममें सम्पूर्ण विघ्नकारक है। जिस समय नादिरशाहने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की थी, उसकाल सबने ही इस स्वार्थपरताकी शरण ली थी। इस नैतिक बलके अपकर्षसे भारतवासी अपने धर्मसे जो हटे तो फिर उसको प्राप्त न करसके अतएव सुख और स्वाधीनताके अमृतमय स्वादसे उस ही दिनसे पृथक होगये।"

भारतके इस सार्वजनीन विप्लवकालमें—भारतीय राजनैतिक इतिहासके इस घटनापूर्ण समयमें आर्यवीर राजपूतगण अपने प्राचीन राज्यसे भ्रष्ट नहीं हुएथे। उनका राज्यसे भ्रष्ट होना तो दूर रहा वरन इसलामके उस छः सौ वर्षके शासनकालमें राजस्थानके तीन प्रधानकुलोंमेंसे दो वंशोंने—मारवाड़ और अम्बेरवालोंने कौशल्य और विक्रमकी सहायतासे साधारण २ स्थानोंके द्वारा जिन बड़े२ स्थाई राज्योंको उत्पन्न किया था, उनके राजालोग आजतक भी मुसल्मानोंके साथ मित्रता स्थापन करके स्वाधीनताको संभोग करतेहैं। राजपूतकुल चूड़ामणि राणाकुलकी लीलाभूमि पवित्र मेवाड़भूमिके विषयमें भी प्रायः ऐसा ही कहाजासकताहै। सन ईसवीकी दशवी शताब्दीके आरंभमें जब मरहठोंने दुर्धर्ष स-

समरक्षेत्रमें जाना ठीक नहीं, और हम कदापि नहीं जानेदेंगे, इससे आपके गौरवमें न्यूनता आवैगी।" सरदारोंका वाक्य राणाजीको ग्रहण करनापड़ा। सब ही युद्धकरनेको चले। सेनाके जानेपर कई घण्टे पश्चात् कानोड़का सरदार अस्त्र-शस्त्र बाँधकर आया, इसका शरीर अत्यन्त रुग्ण था, वदन पीला और नेत्र ज्योतिहीन होरहेथे, राणाजीकी आज्ञा पालन करनेके लिये ही वह सरदार अस्त्र-शस्त्र बांधकर रणभूमिमें जानेके लिये आया था। सरदारकी ऐसी शोचनीय अवस्था देखकर राणाजीने वारम्बार उसे रणभूमिमें जानेके लिये निषेध किया, उसकाल साहसी सरदारने गम्भीर स्वरसे कहा "महाराज! मुझको निषेध न कीजिये, हाथमें खड्ग धारणकी शक्ति रहनेपर युद्धके समय किसी प्रकार निश्चिन्त न रहसकूंगा।" राणाजीने विवश होकर आज्ञा दी। जिस समय राजपूतोंने मुसलमानोंके साथ युद्ध आरंभ करदिया उस ही समय तेजस्वी कानोड़सर्दार उनके साथ जाकर मिलगया। राजपूतोंका प्रचंड विक्रम न सहसकनेके कारण यवनसेना पराजित होकर इधर उधर भागनेलगी। परन्तु कानोड़ सर्दार इस युद्धमें मारागया और उसका पुत्र घोररूपसे घायल हुआ। विजयी राजपूतगण विजयके आनंदसे पुलकित होतेहुए नगरमें लौटआये। तब राणाजीने रणपतित कानोड़सर्दारके आहत पुत्रको अपने हाथसे "बीड़ा"* दिया। इसप्रकारके ऊंचे सन्मानको पाय कानोड़ सर्दारके घायल पुत्रने अपनेको कृतार्थ और धन्य मान आग्रहकर कहा "महाराज! आज मैंने पिताके जीवनके बदलेमें एक अमूल्य धन पाया।"

पांचवीं कहावत। एक समय एक खुशामदीने राणाजीके सामने बैठकर शालु-म्ब्रा सर्दारके विरुद्ध उनके मनमें किसी प्रकारका सन्देह उपजानेकी चेष्टा की। परन्तु राणाने उसके कहनेका कुछ भी विश्वास न करके कहा "यह सन्देह निर्मूल है, यदि विश्वास करेंगे तो इससे रावतजीके ऊंचे हृदयका अपमान होगा।" रावतजीके प्रति उनका कैसा दृढ विश्वास था, उस पाखण्डीको यह दिखलानेके लिये ही राणाजीने शालुम्ब्रा सर्दारको बुलाभेजा। मालवराज्यमें यवनसेनाको जीतकर रावत शालुम्ब्राजी देशमें लौटआये, तथा इस राणाजीसे विदा लेकर घरको गयेहैं। रात्रिका पहला पहर बीतगयाहै। रावतजीने अपने दुर्गद्वारपर पहुंचकर सिपाहियोंको अपने २ घर जानेकी आज्ञा देदी और घोडेसे उतरकर महलकी ओर चले। अन्तःपुरके द्वारपर पहुंचे ही थे

* [illegible]

दुःसह कष्टोंके आक्रमणसे छुटकारा पासकते वह फिर उस बातका विचार नहीं करतेथे और जो आदमी केवल स्वार्थपरताहीकी सेवा करता वह अपने मानवभ्राताओंके साथ किंचित भी सहानुभूति प्रगट नहीं करता था। स्वार्थपरता अपने और पराये धर्ममें सम्पूर्ण विघ्नकारक है। जिस समय नादिरशाहने हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की थी, उसकाल सबने ही इस स्वार्थपरताकी शरण ली थी। इस नैतिक बलके अपकर्षसे भारतवासी अपने धर्मसे जो हटे तो फिर उसको प्राप्त न करसके अतएव सुख और स्वाधीनताके अमृतमय स्वादसे उस ही दिनसे पृथक होगये।"

भारतके इस सार्वजनीन विप्लवकालमें–भारतीय राजनैतिक इतिहासके इस घटनापूर्ण समयमें आर्यवीर राजपूतगण अपने प्राचीन राज्यसे भ्रष्ट नहीं हुएथे। उनका राज्यसे भ्रष्ट होना तो दूर रहा वरन इसलामके इस छः सौ वर्षके शासनकालमें राजस्थानके तीन प्रधानकुलोंमेंसे दो वंशोंने–मारवाड और अम्बेरवालोंने कौशल और विक्रमकी सहायतासे साधारण २ स्थानोंके द्वारा जिन कई एक स्थाई राज्योंको उत्पन्न किया था, उनके राजालोग आजतक भी बृटिशोंके साथ मित्रता स्थापन करके स्वाधीनताको संभोग करतेहैं। राजपूतकुलचूडामणि राणाकुलकी लीलाभूमि पवित्र मेवाड़भूमिके विषयमें भी प्रायः ऐसा ही कहाजासकताहै। सन् ईसवीकी दशवीं शताब्दीके आरंभमें जब प्रचंडवीर गजनी मह-

अनुग्रह सदाके लिये हम लोगोंके स्मृतिपटपर अंकित रहैगा। आज राजभवनसे जो अनेक प्रकारके भोजन मेरे लिये आये, आगेको श्रीमान् अथवा श्रीमान्का कोई वंशधर मुझको या मेरे किसी वंशवालेको पुनर्वार राजधानीमें बुलावें तो राजरन्धनशालासे इसही प्रकारके खाद्यपदार्थ प्राप्त हुआकरें।" राणा संग्रामसिंहने हर्षके साथ सर्दारके अनुरोधको स्वीकाराकिया। उसही दिनसे वीरवर चंडके वंशवाले इस सन्मानको भोगते आतेहैं।

इन बातोंसे संग्रामसिंहका महान चरित्र भलीभांतिसे प्रमाणित होताहै। अतएव इसके ऊपर कुछ मीन मेष लगाना ढिठाई करना है। उन्होंने अठारह वर्षतक राज्यकरके भलीभांतिसे मेवाडका मंगलसाधन कियाथा। शत्रुओंसे देशकी रक्षाकरनेको उन्होंने अठारहवार रणभूमिमें गमन कियाथा। यद्यपि संग्रामसिंहकी शासन नीति अत्यन्त सीमाबद्ध थी, यद्यपि वह अपने बडे बूढोंके पुराने संस्कारोंको अल्प त्याग करके भी स्वदेशका अत्यन्त मंगल करसकते थे; तथापि जो कुछ उपकार, मेवाडदेशका उनके द्वारा हुआथा, उससे ही प्रजाका उनमें अत्यन्त अनुराग था। प्रजाका हितसाधन करने और कोरकसरको दूर करनेमें वह सदा ही दत्तचित्त और सावधान रहते थे। इसकारण स्वदेश और विदेशके सब ही स्थानोंमें उनका सन्मान था। महाराज बाप्पारावलके पवित्र वंशका ऊंचा सन्मान गिह्लोट वंशके जो भूपालगण अचल और अटल रखसकेथे उनमें राणा संग्रामसिंहजी पिछले हुए उनके परलोकगामी होनेके साथ ही मेवाडभूमिमें महाराष्ट्रोंकी प्रभुताका प्रारंभ हुआ। अब हम इस बातका वर्णन करेंगे कि उस प्रभुताके स्थापन होनेपर मेवाडका राजनैतिक स्रोत किस ओरको चलाथा।

राणा संग्रामसिंहके चार पुत्र थे, उनमें बडा पुत्र जगत्सिंह (दूसरा) संवत १७९० (सन् १७३४ ई.) मे पिताके सिंहासनपर बैठा। इनके राज्यका पहिला कार्य राजपूतोंके तीन दलोंको एकत्र करना था। पहिले ही कहआये हैं कि दूसरे अमरसिंह राणाने इस दलका समीकरण कियाथा. फिर अजितसिंहकी विनाविचारे कार्यकरने (अविमृश्यकारिता) ने इस त्रिदलमें [illegible] आज जगत्सिंहने अमृतकुंडका जल छिडककर फिर इसको [illegible]। तीनों राजपूतोंने जो वहांपर मौजूद थे, अपने २ देवताके नामसे शपथ [illegible] कि कोई भी मुसल्मानोंके साथ विवाहादि सम्बन्ध न करेगा, और कभी कोई इस त्रिदल सन्धिको न तोडेगा। मेवाडके अन्तर्गत हुर्डा नामक स्थानमें यह तीनों राजपूतोंके

अभाग्यसे यह कार्य फलीभूत न हुआ। तैयारियें होते २ ही फिर यह सन्धि-पत्र शिथिल होगया सब राजा अलग २ हुए। सामर्थ्यप्रियता राजपूतोंका एक सुन्दर गुणहै, परन्तु समय २ पर इसका फल बुरा भी होताहै। आज राजस्थानके अभाग्यसे इसने ही विषमय फल उत्पन्नकिया। राजपूतोंकी ऐक्यता छिन्नभिन्न होगई। मुगलवादशाहीकी अवनतिके समय अम्बेर और मारवाड़के राजालोग बहुत ही बढ़गयेथे यहांतक कि मेवाड़वालोंकी बराबरी करनेलगेथे। सूर्यवंशीय महाराज कनकसेनके वंशधरगण राजस्थानके अन्यान्य राजपूतोंपर अचल प्रधानता भोगते आएहैं, परन्तु उन्होंने किसी समय भी सबकी इकट्ठी सहानुभूतिको नहीं पाया। यह महान अभाव ही उनकी ऐक्यतामें मुख्य विघ्न था। इस अभावके कारण ही वह स्वाधीनतासे अलग हो बैठे। यह महान अभाव ही उनकी सामर्थ्य प्रियताका विषमय फल हुआ। इस ही प्रवृत्तिसे उक्साकर वह अपने २ स्वार्थकी रक्षा करनेको एक दूसरेके विरुद्ध अगणित समर किया करतेथे। कि जिनका वर्णन पहिले कर आएहैं। मेवाडके राजालोग जिस प्रकार सबभांतिसे उनके शिरमौर थे, वैसे ही यदि वह भी उनको अपना अपना अगुआ मानकर एकसाथ मिलबैठते तो भारतकी ऐसी दुर्दशा क्यों होती? फिर तो किसी प्रकारसे भी विदेशी मुसलमान लोग भारतरत्नको नहीं लूटसकते। परस्परकी फूट और परस्परके वैरने ही भारतका सत्यानाश करदिया। यह ठीक है कि राजपूतलोग स्वाधीनताको प्यारा समझतेहैं, परन्तु जिस महान सामग्रीसे जातीय स्वाधीनता प्राप्तहोती और जिसके द्वारा उसकी रक्षा होतीहै, राजपूतोंमें वह सामग्री नहीं है। यही कारण है जो उनकी स्वाधीनताकी लालसा कभी फलवती नहीं हुई। आज राणा जगतसिंहके समयमें-मुगल बादशाहोंकी बुरी हालतके वक्तमें-सरलता और सुधीता होनेपर भी स्वाधीन होनेकी चेष्टा और ऐक्यताका परिश्रम सबही विफल होगया।

-(५) प्रत्येक महान कार्यमें सबही एकसाथ मिलकर [illegible]।

(क) एकलिङ्ग या महादेवजी [illegible] हैं।

(ख) [illegible] है। यह [illegible]।

(ग) [illegible]। यह [illegible]
[illegible] है।

(घ) [illegible]

बहुधा देखाजाताहै, वैसेही इस मेलमिलापसे सर्व साधारणका कोई उपकार नहीं हुआ। कारण कि फिर उन्हीं साम्प्रदायिक झगडोंने, जो कि सदासे इन जातियोंके बीचमें चले आतेथे उस मेलरूपी डोरको तोडडाला। यहांतक कि जिस समय उस सन्धिके सम्बन्धमें राजपूतोंके बीच चर्चा होरही थी उस समय उनकी पहिली एकयताका विषमय फल उत्पन्न होकर राजपूतोंमें शत्रुताकी नीव डाल रहाथा। अल्पकालमेंही इसकी यथार्थता प्रगट होगई।

मालवेपर अधिकार करके महाराष्ट्रीगणोंने वहांसे चौथ ले ली। अनन्तर बाजीराव सेनासहित मेवाडमें आया। उसके आनेका समाचार सुनकर समग्र मेवाडभूमि भयके मारे व्याकुल होगई। राणाजीने उनके साथ मिलनेकी इच्छा प्रकाश न की और शालुम्ब्रासरदार व अपने प्रधान मंत्री बिहारीदासको दूतस्वरूप भेजा *। इस ओर बाजीरावको किसप्रकारसे ग्रहण करना चाहिये उसको कौन आसन दियाजायगा, इस विषयकी चर्चा होनेपर राजसभामें महा वादानुवाद होनेलगा। अनेक तर्क वितर्कोंके पश्चात यह निश्चय हुआ कि बा

जिस समय दक्षिणदेश और राजस्थानकी यह दशा होरही थी, उस समय बंगाल विहार, और उड़ीसाके राज्यमें शुजाअ-उद्दौला अपने मशीर अलीवर्दीखाँके साथ अचल प्रभुताको भोगरहाथा। इस ओर अयोध्याराज्यमें सआदतखाँका पुत्र सफदरजंग दृढभावसे विराजमान था। यद्यपि बादशाहकी प्रसन्नतासे ही सआदतखाँने अयोध्याका सिंहासन पाया था, परन्तु इस कृतघ्नीने शीघ्रही इस पवित्र प्रसादका बदला एक घृणित और निन्दितकार्यके द्वारा चुकाया। सआदतखाँ कृतघ्न और विश्वासघातक था। इस दुराचारीने ही परमअत्याचारी नादिर शाहको भारतवर्षमें बुलाकर देहलीकी बादशाहतका सत्यानाश कियाथा।

मालवे और गुजरातमें जब महाराष्ट्रियोंकी प्रभुता दृढ होगई, तब विजयी मरहटोंने और और स्थानोंमें अपना पाँव गड़ानेकी इच्छा की और टीड़ीके समान नर्मदा नदीके पार हो उत्तरीदेशोंपर टूटनेलगे। उनकी विक्रमाग्निके प्रचंड प्रभावसे अनेक साधारणजातियें भी-जिनका अबतक कोई नामतक भी न जानता था-जोशमें आकर अपनी सेनाको बढ़ाती हुई प्रतिष्ठा प्राप्त करनेलगीं। उस काल शान्तजीवन भलेमानस किसान * लोग भी हल और गोधनको छोड़कर तलवार हाथमें लेनेलगे घोड़ोंपर चढनेलगे और अजपालक अपने पैनें (पशु हांकनेकी लकडी) को छोडकर तेज भाला हाथमें लेने लगे। हुलकर, × सेन्धिया, पँवारगण † उन सम्प्रदाओंमें विशेष प्रसिद्ध हैं। इस प्रकारसे विपुल सेनाको प्राप्त कियेहुए वीर महाराष्ट्रीयलोग हीनबल राजपूतोंके राज्यको घेरने लगे, उन देशोंको लूटतेहुए उजाड़नेलगे फिर वहां ही रहनेलगे। प्रयोजन अथवा सुयोग पाकर जबतक वह एकहो और एक झंडेके नीचे खडे होकर लड़ाई करतेथे, तबतक कोई भी उनके प्रचंड प्रभावका सामना नहीं करसकाथा। वीरवर बाजीराव (पहिला) ने महाशक्तिको सिद्ध करके उस महान महाराष्ट्रीय बलको अपने हाथसे शृंखलित कियाथा सन १७३६ ई० में वह सबसे पहिले चम्बलनदीके पार हो दिल्लीके सिंहद्वार पर आ डटा।

—चढाई की। उस चढ़ाईको न रोकसकनेके कारणसे गढ़ेरक्षके लिये [illegible] छोड़दिया।

Elphinstone's History of India, P. P. [illegible]

* सेंधियाके दादे बूढे किसानथे।

× हुल्कर गडरिया था।

† [illegible]

[illegible]

[illegible]

सन्धिमें यह निश्चय हुआ कि राणाजी बाजीरावको एक नियमित वार्षिक कर देंगे महाराष्ट्रीय लोगोंने दशवर्षतक इस सन्धिपत्रके नियमानुसार नियमित कर लिया था परन्तु फिर न ले सके । अवधिके समस्त राजस्वको पचानेकी इच्छा करके उन्होंने उस सन्धिपत्रको तोड डाला ।

चतुर महाराष्ट्रीयलोग सुईके नकुएकी समान छिद्रमें प्रवेश करके क्रमानुसार जो विराटमूर्ति धारण करतेहैं वह क्रमशः ही प्रगट हुई । वह छिद्र क्या था ? राजपूतोंका परस्पर विरोध ! विरोधका यह बीज राजपूतानेमें किस प्रकारसे अंकुरित हुआ था, इसका वृत्तान्त एक प्रकार पहिले ही वर्णन किया जाचुका है; इस समय विस्तारसे वर्णन करेंगे । पहिले ही कहाजाचुका है कि राणाने अम्बेरराजपुत्रके हाथमें अपनी बेटीको अर्पण करनेके समय अम्बेरराजसे प्रतिज्ञा कराली थी कि इस शुभ सम्मिलनका जो फल होगा उसको अग्रजन्मस्व प्राप्त होगा । इस समय उस विवाहके फलस्वरूप माधोसिंह उत्पन्न हुए । [illegible] था कि सवाईजय- कारी चटाईके दो वर्ष पीछे महाराज सवाई जयसिंह इस लोकसे सिधारगये ।

करनालयुद्धके शोचनीय परिणामसे निज़ाम और सआदतखॉंको अत्यन्त भय हुआ। यह दोनों उस विजयी प्रचंड वीरकी सेनाको रोकनेके लिये मुगलोंसे मिलगए। परन्तु यहां भी अभिप्राय सिद्ध न हुआ। अमीर–उल–उमरा तो संग्राममें मारागया और महम्मद शाह अपने वज़ीरके साथ नादिरशाहकी कैदमें हुआ। पाखण्डी वज़ीरकी कृतघ्नता और विश्वास–घातकतासे आज दिल्लीके बादशाहकी ऐसी अवस्था होगई। हत-भाग्य महम्मदने सन्धिके लिये निज़ामको दूत बनाकर नादिर शाहके पास भेजा। एक प्रकारसे सन्धि भी होगई, परन्तु दुराचारी सआदतखॉंने चाल चलकर सब बातोंको रद करदिया। और अपने पांवमें स्वयं ही कुल्हाड़ी मारी। सआदतखॉंने नादिर शाहसे उसका लोभ बढ़ानेके अभिप्रायसे कहा। "निज़ामने हजूरको धोका दिया। खज़ानेमें इसकी बनिस्वत कहीं ज़ियादा दौलत है।" इस पापीने यह भी कहा कि "निज़ामने बदलेमें जितने रुपयेके देनेका वायदा कियाहै, इतना तो वह सिर्फ अपने ही खज़ानेसे देसकताहै।" इस दुष्टके कहनेपर नादिर शाहको भलीभांतिसे विश्वास होगया। उसका लोभ हज़ारगुणा बढ़ा। निज़ामके साथ जो सन्धि हुई थी उसको तोड़कर दिल्लीके खज़ानेकी समस्त कुंजियें मॉंगीं। अभागे महम्मद शाहका सुखस्वप्न टूटा अर्थपिशाच नादिरके स्वीकार पत्रपर विश्वासकरके उसने समझाथा कि अब अधिक कष्ट न होगा, परन्तु यह उसकी भूल थी। सन्धिपत्र छिन्न करते ही दुष्ट नादिर शाह विजित दिल्लीश्वरको महा-दंभके साथ अपने डेरोंमेंको निकालकर लेगया, और दीग्वर तैमूरके सिंहासनपर बैठकर सन् १७४० ई० में मार्चकी ८ तारीखको अपना सिक्का चलाया। उसपर लिखाहुआ था;–

दो० "शहन्शाह सब जगतको, नादिर है महराज।
राजनको अधिराज है, समय नियामक आज॥

यद्यपि मुगललोगोंके यहां बहुत सा रुपया परस्परके विवादमें खर्च होगया था. यद्यपि प्रतिद्वन्दी राजकुमारोंने अत्याचारोंमें बहुतसे धनको स्वाहा करदिया था. तथापि जो धन उस समय खज़ानेमें था * उसके [illegible] लोभकी भी तृप्ति होजाती. परन्तु आश्चर्यका विषय है कि दानव नादिर शाहका

* नादिरशाह भारतवर्षसे कितना धन लेगया, [illegible] हम कहतेहैं कि नगद रुपया और सोना चांदी व जवाहरात का [illegible] नगीना लेकर १५करोड, [illegible] है।

ढकगई * खूनके बहनेसे मार्ग और गलीकूचोंमें कीचड होगई। जैसे ही यह समाचार नादिरशाहने सुना वैसे ही वह राक्षस एक मसजिदके ऊंचे मीनारपर-चढकर अपनी निरुत्साहित सेनाको घोर उत्साह देनेलगा और नगरके बूढे, जवान, बाल, बच्चे, स्त्री, पुरुष, सबहीको संहार करनेकी आज्ञा देदी। इस भयंकर आज्ञाका प्रचार होते ही पिशाच नादिर शाहकी पिशाच समानसेना नगरके द्वार २ पर जायकर सबको इस प्रकारसे बध करनेलगी कि जैसे कसाई पशुओंका बधकरताहै। रोनेके शब्द और आर्त्तनादसे नगर गुंजार-नेलगा " नगरकी गलियोंमें रुधिरकी धार बहने लगी।" इन पिशाचोंने नगर-वासियोंका सर्वस्व लूटकर प्रत्येक गृहमें आग लगादी। यह राक्षसगण उस लपट उठती हुई अग्निमें मरे, अधमरे और जीवित मनुष्योंके शरीरोंको डालने लगे! आज दिल्लीनगरी भयंकर श्मशान बनगई है—श्मशानसे भी भयंकर—नरककुंडकी समान उसका दृश्य होगयाहै × इस वीभत्स और शोकोद्दीपक तथा जघन्यकार्यके

---

* हाजिन नामक एक मुसल्मानने अपने नेत्रोंसे यह संहार देखा था वह कहताहै कि क्रोधित हिन्दुओंने७००ईरानियोंको मारा था। इसके बताएहुए ग्रंथका बेलफोर साहबने अंग्रेजीमें अनुवाद कियाहै, इसमें७०००का अंक पायाजाताहै। एलफिन्ष्टोन साहब कहतेहैं कि यह छापेकी भूलहै। इस ओर स्काट् साहबने अपने इतिहासमें१०००लिखाहै।

× इस हत्याके रोकनेके मौलिक वृत्तान्तमें भिन्न२भाव पायेजातेहैं। कहतेहैं कि जब ईरानी सेना दिल्लीवालोंपर ऐसा कठोर अत्याचार कररही थी उस समय नादिर शाह बड़े बाजारकी "रोशन-उद्दौला" नामक छोटी मसजिदमें चुपचाप गंभीरभावसे बैठाथा। अनन्तर महम्मदशाह [illegible] रोंके साथ वहांपर पहुँचा। जब बादशाह सिर झुकाये बहुत देर रहे, [illegible] आज्ञा दी कि जो कुछ कहनाहै सो कहो, तब महम्मदशाहने [illegible] सहित प्रार्थना की कि " मेरी रइयतको जाँ बख्शी फरमाईजाँ"। [illegible] वर्णनमें जितने लेख पायेजातेहैं, उनमें हाजिनका प्रमाण [illegible]। हाजिन [illegible] देखकर जो कुछ वर्णन करगयाहै "शेरुल्मुताक्सरीन" नामक ग्रंथके [illegible] नकल कीहै और सरबुलन्दखाँके पास जो हिन्दू [illegible] करके एक पुस्तक बनाईथी। "नादिरशाहका इतिहास" नामक [illegible] इसके अवलम्बनसे लिखाहै। हाजिन कहताहै कि [illegible] बहुत ही आदमी मारेगयेथे। फेजरका अनुमान है कि [illegible] और नादिर [illegible] कहतेहैं कि [illegible] और [illegible] १०००० [illegible] ८००० [illegible]

सिधारा* । इस पत्रके अनुसार काबुल ठट्टा सिन्ध और मुलतान आदि समस्त पश्चिमका राज्य ही नादिर शाहको दियागया जिसको उसने ईरानमें मिलाया । इस विप्लव और संकटके समय भारतवासियोंकी कैसी दुर्दशा हुईथी;—वह भारतवर्षीय एक इतिहास लेखकके कई एक निम्नलिखित वाक्योंके पढ़नेसे भलीभांति विदित होजायगी । वह कहताहै कि " इस समय हिन्दोस्थानके रहनेवाले केवल आत्मरक्षा और आत्मतुष्टिके विषयका ही विचार किया करते थे । जो लोग

× विदाका समय जितनाही निकट आताथा इन राक्षसोकी निठुरता उतनीही बढ़ती थी । इसके सम्बन्धमे एक प्रत्यक्ष देखनेवालेने जो कुछ कहाहै, वह प्रमाणके लिये यहांपर लिखतेहैं । "गतदिवसकी यंत्रणामयी स्मृतिने नगरवासियोको भयकर विपत्तिमे डालदिया । अवतक तो केवल "कतलेआम" था, परन्तु इसवक्तसे "कतलेखास" होना आरम हुआ । नगरके प्रत्येक गृहसे हृदयभेदी आर्तनाद और रोनेका शब्द सुनाई आनेलगा। वृत्तिविभागके कर्मचारी वसतरायने कठोर अपमानसे छुटकारा पानेका कोई उपाय न देखकर पहिले तो सारे कुटुम्बको मारडाला और फिर इस शोकाग्निमे अपनी आहुति दी रुखा लिकयारखाँने अपने हृदयमे खजर मारकर जीवनका अन्त किया। इसही प्रकारसे बहुतोने विप पान करके आत्महत्या की। महामान्य प्रधान नगरपालको मार्गमे खडाकराकर कोड़िलगवाये गए । निद्रा और शान्तिने नगरसे विदा लेली थी । सभासदोंपर निठुरतासे प्रहार कियेजातेथे । अनन्तर पिशाचोने बादशाहके "फर्राशखाने" मे आग लगादिये [illegible] एक करोड रुपयेका सामान जलगया। नाज बहुत ही कम मिलताथा। रुपयेके दो सेर तो [illegible] बिकतेथे । इस ओर नगरमे महामारी फैलगई, और अगणित नर नारी मरने लगे । नगरनिवासी गुप्त २ स्थानोमे जाकर छिपने लगे । उससे भी किसीका निस्तार न हुआ । [illegible] करोड आदमी इसलोकसे विदा होगए। पाचवी अप्रेलको बादशाहके [illegible] नादिर शाहकी [illegible] मोहर बाहर लाई गई और उसके "प्रियभ्राताके ऊपर" [illegible] और राज्यमे शान्तिकी विज्ञापनाहो इसका [illegible] । [illegible] राणा, मारवाड, अम्बेर, नागौर, [illegible] इन देशोंके [illegible] इत्यादिके पास यह फरमान भेजे गये । उन फरमानोंमे [illegible] प्यारेभाई महम्मद शाहके साथ [illegible] और [illegible] एकजान दोकालिब होगये । [illegible] कायम होकर तख्तपर बैठगए। [illegible] है. इसवक्त इनलोगोंको सुनाहिदेहैं कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । "Memoirs o[illegible] [illegible] Vol. [illegible] page 216.

दूसरा प्रतापसिंह सन् १७५२ ई० में मेवाड़के सिंहासनपर बैठा। जिस गौरव-मय पवित्र नामको धारण करके वह संसाररूपी रंगभूमिमें अवतीर्ण हुआ, उसके श्रवण करते ही उस प्रातःस्मरणीय सन्यासी श्रेष्ठ महात्मा प्रतापसिंहकी याद आती है; परन्तु इतिहास तत्काल ही वज्रगंभीर स्वरसे कह उठता है कि "यह प्रतापसिंह वह वीर श्रेष्ठ स्वजातिप्रेमिक प्रतापसिंह नहीं है, यह तो अकर्मण्य अपदार्थ हीनजीवन दूसरा प्रतापसिंह है; "प्रताप" नामका स्वर्गीय भाव नष्ट करनेके लिये ही पृथ्वीपर उसका जन्म हुआ है। इसके समयमें कोई वर्णन करने योग्य विशेष बात नहीं हुई। तीन वर्ष तक इसने राज्य किया, इस कालमें बराबर महाराष्ट्रीय लोग ही मेवाड़भूमिको सताते रहे। इन तीन वर्षके समयमें दुर्जय महाराष्ट्रियोंने तीनबार मेवाड़भूमिपर आक्रमण करके असीम शिशोदीयराजासे कर और पण लियाथा। अम्बेरके राजा जयसिंहकी कन्यासे प्रतापसिंहका विवाह हुआथा। इस कन्याके गर्भसे राजसिंह नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ; यह राजसिंह ही पश्चात् मेवाड़के सिंहासनपर बैठे।

१३० मीलथी। इसदेशमें दश हजार नगर व ग्राम बसते थे। रत्नगर्भा मेवाड-भूमिके खेत अत्यन्त उपजाऊ हैं, किसानलोग खेतीके कार्यमें कुशल और विशेष पारदर्शींथे, वणिकगण सदा ही व्यौपारमें मन लगातेथे। इस समस्त कार्यकुशल प्रजाकी सहायतासे मेवाडमें प्रतिवर्ष दश करोड रुपये राजकरमें आतेथे। * इस ओर परमभक्त और अनुरागी सामन्तगण अपने हृदयका रुधिर दानकरके मेवाडभूमिको शत्रुओंसे बचातेथे। पहिले वर्णन कियेहुए दीर्घकालव्यापी कठोर उपद्रवके बीतजानेपर स्वाधीनताकी लीलाभूमि प्राचीन मेवाडराज्यकी ऐसी अवस्था थी। इस समय हम इसवातका वर्णन करनेके लिये तइयार होतेहैं कि अब दुर्द्धर्ष महाराष्ट्रियोंके कठोर आक्रमणसे आधी शताब्दीके बीचमें इस राज्यकी कैसी दशा होगई।

जिसदिन बादशाह महम्मद शाहने अपने दुष्टमंत्रियोंके परामर्शको मानकर मरहटोंको अपने राज्यका चतुर्थांश चौथकी भांति दिया, उसही दिन विशाल राजस्थानके मध्यमें मरहटोंकी प्रभुताका मार्ग साफ होगया × राजस्थान मुगलोंकी बादशाहतके अधीनथा; जब कि महाराष्ट्रियोंने मुगलोंसे ही चौथ ले ली तब तो वह उन सब राजा और नव्वावोंसे चौथ लेनेके अधिकारी होगये कि जो मुगलबादशाहोंको खिराज देतेथे। वह जहां जाते थे वहीं जयलक्ष्मी उनका साथ देतीथी, वहींका राजा या नव्वाव हाथ जोडकर कर-चौथ देता और जैसे बनता वैसे उनको प्रसन्न करता। ऐसी अवस्थामें विजितराजाओंसे कर अदा करनेके लिये विजयी महाराष्ट्रियोंने केवल पाशव बलको ही अपना साधन समझ-लियाथा या नहीं, इस बातका अनुमान करना कठिन है। परन्तु यह बात तो स्पष्टही पाई जातीहै कि उन्होंने महम्मद शाहके इस प्रकारसे कर देनेको अपनी सिद्धिका एक प्रधान द्वार समझा था।

विजयोन्मत्त महराष्ट्रीगण जिस प्रकार प्रचंड विक्रमसे धीरे धीरे जय प्राप्त करने लगे, उससे राजपूतोंको अत्यन्त भय हुआ। वे उस भयसे छुटकारा प्राप्त करनेके लिये परस्पर मिलगए। उनकी सनातनरीतिके अनुसार उक्त एकता-बन्धन वैवाहिक सम्बन्ध सूत्रद्वारा बांधा गया। राणा जगतसिंहने मारवाडके उत्तराधिकारी कुमार विजयसिंहके हाथमें अपनी बेटीको देकर उक्त एकताकी प्राणप्रतिष्ठा की थी और मारवाड और अम्बेरके राजाओंमें जो घोर वाद विवाद

* कोई२ एक करोड बताते हैं।

× सन् १७३५ ई०

१३० मीलथी। इसदेशमें दश हजार नगर व ग्राम बसते थे। रत्नगर्भा मेवाडभूमिके खेत अत्यन्त उपजाऊ हैं, किसानलोग खेतीके कार्यमें कुशल और विशेष पारदर्शीथे, वणिकगण सदा ही व्यौपारमें मन लगातेथे। इस समस्त कार्यकुशल प्रजाकी सहायतासे मेवाडमें प्रतिवर्ष दश करोड रुपये राजकरमें आतेथे। * इस ओर परमभक्त और अनुरागी सामन्तगण अपने हृदयका रुधिर दानकरके मेवाडभूमिको शत्रुओंसे बचातेथे। पहिले वर्णन कियेहुए दीर्घकालव्यापी कठोर उपद्रवके बीतजानेपर स्वाधीनताकी लीलाभूमि प्राचीन मेवाडराज्यकी ऐसी अवस्था थी। इस समय हम इसबातका वर्णन करनेके लिये तइयार होतेहैं कि अब दुर्द्धर्ष महाराष्ट्रियोंके कठोर आक्रमणसे आधी शताब्दीके बीचमें इस राज्यकी कैसी दशा होगई।

जिसदिन बादशाह महम्मद शाहने अपने दुष्टमंत्रियोंके परामर्शको मानकर मरहटोंको अपने राज्यका चतुर्थांश चौथकी भांति दिया, उसही दिन विशाल राजस्थानके मध्यमें मरहटोंकी प्रभुताका मार्ग साफ होगया × राजस्थान मुगलोंकी बादशाहतके अधीनथा; जब कि महाराष्ट्रियोंने मुगलोंसे ही चौथ ले ली तब तो वह उन सब राजा और नव्वाबोंसे चौथ लेनेके अधिकारी होगये कि जो मुगलबादशाहोंको खिराज देतेथे। वह जहां जाते थे वहीं जयलक्ष्मी उनका साथ देतीथी, वहींका राजा या नव्वाब हाथ जोडकर कर-चौथ देता और जैसे बनता वैसे उनको प्रसन्न करता। ऐसी अवस्थामें विजितराजाओंसे कर अदा करनेके लिये विजयी महाराष्ट्रियोंने केवल पाशव बलको ही अपना साधन समझ-लियाथा या नहीं, इस बातका अनुमान करना कठिन है। परन्तु यह बात तो स्पष्टही पाई जातीहै कि उन्होंने महम्मद शाहके इस प्रकारसे कर देनेको अपनी सिद्धिका एक प्रधान द्वार समझा था।

विजयोन्मत्त महाराष्ट्रीगण जिस प्रकार प्रचंड विक्रमसे धीरे धीरे जय प्राप्त करने लगे, उससे राजपूतोंको अत्यन्त भय हुआ। वे इस भयसे छुटकारा प्राप्त करनेके लिये परस्पर मिलगए। उनकी सनातनरीतिके अनुसार उक्त सम्मिलना-बन्धन वैवाहिक सम्बन्ध सूत्रद्वारा बांधा गया। राणा जगतसिंहने मारवाडके उत्तराधिकारी कुमार विजयसिंहके हाथमें अपनी बेटीको देकर उक्त सम्बन्धकी प्राणप्रतिष्ठा की थी और मारवाड और अम्बेरके राजाओंमें भी और बात [illegible] [illegible]

* कोई२ एक करोड कहतेहैं।

× सन् १७३५ ई०

योग्यता रखतेथे, आज राजाधम इन्हींके कठोर. आचरणने इनको भी शिशोदीयकुलसे अलग करदिया। इस और देवगढके राजा यशवन्तसिंहने. भी निर्बोध राणासे कुछ व्यंग्य वचन कहे. कि जिससे वह भी विदा रहने लगे। यशवन्तसिंहने तेजस्वी चंडके वंशमें जन्म लियाथा। इसकारण वह भी इन व्यंग्य वचनोंके प्रतिफल देनेको अवसर खोजने लगे।

अपमानित विरुद्ध भावापन्न सर्दारोंने अवसर देखकर राणा अरसीको सिंहासनसे उतारनेका चक्रान्त किया। उन्होंने प्रचार करदिया कि इस सिंहासनका यथार्थ उत्तराधिकारी रत्नसिंह नामक एक व्यक्ति है। सर्दारगण इसप्रकारसे कहने लगे कि रत्नसिंहने राजसिंहके औरससे तथा गोगुण्डासर्दारकी बेटीके गर्भसे जन्म लियाहै। इस बातके सत्य या मिथ्या होनेका अबतक कोई निराकरण नहीं हुआ, और अब आगेको भी इसके निराकरण होनेकी कोई आशा नहीं। अनन्तर असन्तुष्ट और क्रोधित सर्दारगण उस रत्नसिंहको ही अपने विवादका मध्यस्थल-स्वरूप समझकर द्वेषाग्निको भडकाने लगे। मेवाडके प्रधान सोलह सर्दारोंमेंसे अधिकांश सर्दार रत्नसिंहसे मिलगये। केवल पांच सर्दार राणा अरसीकी ओर रहे। इनमेंसे शालूम्बासर्दार तो सबसे पहिले ही रत्नसिंहकी ओर मिलगयाथा परन्तु थोडे ही दिनोंमें उस पक्षको छोड राणाजीकी ओर चलाआया। जिस महान राजभक्तिके द्वारा उत्साहित होकर चंडके वंशधरगण शिशोदीयकुलके लिये अपने प्राणतक देनेमें भी सोच विचार नहीं करतेथे, इस शालूम्बासर्दारने आज उस राज भक्तिके अनुरोधसे ही राणाजीका पक्ष ग्रहण नहीं किया। इसमें एक विशेष कारण था। सर्दार अत्यन्त लोभवर्ती था, इसने समझाथा कि विद्रोहियोंसे मिलजानेसे विशेष अनुग्रह प्राप्त होगी। परन्तु जिस समय इसने यह जाना कि विद्रोही [illegible] सामने इसकी एक न चलेगी तब यह विद्रोहियोंको छोडकर राणाके पक्षमें चलाआयाथा।

–योग्यताके अनुसार सबको पुरस्कार दिया करतेहैं; श्रीमान् प्रतिवेशियोके रक्षक और पालनकर्त्ताहैं; शत्रुओका नाश करनेवाले; विद्वानोको माननेवाले और ब्रह्माकी समान बुद्धिवान हैं । त्रिलोकीनाथ सदाही श्रीमान्‌को सुखसे रखकर रक्षा करे । आषाढवदी१३ ।"

तीसरा पत्र ।

राजा बखतसिंहके निकटसे राणाजीके समीप ।

" महाराणा श्रीश्रीश्रीजगतसिंहजीको भक्तसिंहका प्रणाम । आपने मुझको यथार्थ राजपूत कर-डाला । इसप्रकारके आचरणसे आपका अनुग्रह जगत्‌विदित हुआ । आप देखलेंगे कि सामर्थ्य रहते मैं किसीकर्मके साधन करनेमे कभी विमुख न हूगा । जिसदिन आपके दर्शन प्राप्तहोंगे, उस दिन मेरे सुखकी सीमा न रहैगी । आपके साथ सम्मिलित होनेके लिये हृदय अत्यन्त उत्कंठित हो-उठाहै आषाढवदी ११ ।"

चौथा पत्र ।

जयसिंहसवाईके निकटसे राणाजीके समीप ।

" महाराणाजीके निकट सवाई जयसिंहका नमस्कार पहुँचे । श्रीदीवानजीकी आज्ञानुसार मे उस करारनामेपर हस्ताक्षर करताहू कि जो आपने मारवाडके अभयसिंहके साथ स्नेहबन्धन जोडाहै । हिन्दू अथवा मुसलमान किसीके कारण भी मैं इससे अलग न हूगा । इस सम्बन्धपत्रमे [illegible] हम दोनोके बीचमे है, और दीवानजी इसके साक्षी हैं । आषाढ सुदी ७ ।"

पाँचवाँ पत्र ।

बखतसिंहके पाससे राणाजीके समीप ।

"आपका खास रुका पाकर और पढकर सुखी हुआ । जयसिंहका [illegible] पास पहुचा ही होगा । आपकी आज्ञाके अनुसार मैने उनके साथ मित्रता [illegible] कोई सन्देह नही कि इस मित्रताकी मैं भलीभातिसे रक्षा करूंगा । कारण कि [illegible] निर्देश कियाहै तब इस विषयमे किसी प्रकारका व्यत्यय न होगा । [illegible] ले । पिता, माता, या बन्धु जिसकी भाति आप मुझे देखें, [illegible] । विना आपके मैं इष्ट, मित्र, स्वजन और जाति, गोत्र, किसीको भी नही [illegible]

छठवा पत्र ।

अभयसिंहकी ओरसे राणाजीको ।

"महाराज अभयसिंह, महाराणा जगत्‌सिंहजीके [illegible] ग्रहण कियाजाय । आपने जो परस्पर स्नेहबन्धन [illegible] जो कोई तोडेगा, उसका दैव [illegible] । [illegible] हुए; एकमन होकर [illegible] रहेंगे । [illegible] सर्दार [illegible] साक्षी है । [illegible]

आषाढ वदी ३ [illegible] ।–

सिंहानके सामने बनेडाराजकी समान आसनपर बैठेंगे+इसके अनुसार बाजीराव गृहीत और सन्मानित हुआ। शीघ्रही दोनों दलोंमें सन्धि स्थापित होगई। उस-

—(ख) नीचे पदवालेसे ऊंचे पदवाला मनुष्य जो सभाषण किया करताहै, उसको राजपूत लोग "जुहार" कहतेहैं।

(ग) यहांपर पेशवाके साथ युद्धहोनेका संकेत है।

(घ) राणाजी, राजकार्यकी अपेक्षा गजलीलाको विशेष आनंददायक समझतेथे, इसबातका प्रमाण आगे चलकर दियाजायगा।

दूसरा पत्र।

"मुझको इस बातका विश्वास नहीं होता इस कारण उनके प्राप्य रुपयोंकी फहरिस्त और थोडे-मे साक्षी भेजिये। बाजीराव आपहुँचाहै। जमीनके दावेको छोडकर वह यहाँसे कर ग्रहण करके अपनी कीर्तिको विस्तारित कर जायगा।-उसने मेरे राज्यमें पांव अडाना आरंभ करादिया। अन्यान्य राजोंकी अपेक्षा वह यहासे बीस गुण अधिक लेगा। यदि नियमित होगा तो दियाजायगा। गतवर्ष नरहारराव आयाथा; वह तो कुछ भी नहीं था। बाजीराव उससे अधिक पराक्रमशाली है। यदि भगवानने प्रार्थना सुनी तो वह हमारी भूमि नहीं लेसकेगा, और समस्त वृत्तान्त देवीसिंह कहेगा। बृहस्पतिवार, संवत् १७९२।"

"होलीके समय जगमन्दिरमे अत्यन्त आनंद हुआथा परन्तु लवणके बिना भजनमें क्या है इस ही प्रकार बिना विहारीदासके उदयपुर क्या है?"

तीसरा पत्र।

"आपकी समान मनुष्यके राज्यमे रहतेहुए मैं इसकी दृढताके विषयमें एक पलभरको भी सन्देह नहीं करता। परन्तु दरिद्रताकी यह तामसी छाया किसलियेहै? कदाचित् आप कहें कि इसमें मेरा क्या दोष है, जैसी आप आज्ञा देतेहैं, वैसा ही मैं करताहूं।" इसका अभिप्राय और कुछ भी नहीं है, पैसा ही सब कुछ है: उपस्थित विपत्तिको आपके सिवाय और कोई भी दूर नहीं कर-सकेगा और दूसरी सब प्रतिज्ञा भी वृथाहै। आप यह कह सकतेहैं कि "मेरे पास कुछ भी नहीं फिर किस प्रकारसे झगडे झझटका निवटारा करूं? यद्यपि आप कुछ [illegible] दूर [illegible] गएहैं, तथापि मानो सर्वदा ही आप मेरे निकट रहतेहैं, [illegible] आप और भी निकट आजेंय। कारण कि [illegible] करताहूं। गुप्त करनेसे आप [illegible] (च)। [illegible] आपका मन इकट्ठा करना [illegible] है, क्यों कि [illegible] [illegible] एक दिवस [illegible] [illegible] देगा। [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] मैं [illegible] संवत् [illegible]

[illegible]

[illegible]

दूर होगए और आश्रय प्राप्त करनेके लिये राणाके पास आये ज़ालिमसिंहकी ज्ञानबुद्धि और कार्यकुशलताका परिचय पाकर राणाजीने आदरसहित उनको अपनी सरदारश्रेणीमें ग्रहण किया। तथा "राजरण" उपाधिके साथ छत्रखेरीकी भूमि सम्पत्ति दान कर दी। ज़ालिमसिंहके ही परामर्शसे महाराष्ट्रीसेनापति रघुपागेवाला और दौलामियानामक एक मुसलमान यह दोनों अपनी २ सेनाको साथ लेकर मेवाडमें आये। इस ओर राणाने प्राचीन पंचोलियोंको मंत्रीपदसे अलग करके उग्रजी महताके हाथमें राज्यका समस्त कारबार सौंपदिया। इस समय सं० १८२४ (सन् १७६८ ई०) में माधोजी सेंधिया उज्जैननगरीमें बिराजमान था, उस सेंधियाकी सहायता पानेके लिये प्रतिद्वन्दी सर्दारगण उज्जयिनीमें पहुँचे। सबसे पहिले रत्नसिंह गया। प्रथमसे ही सेंधियाके साथ बातचीत करके उसने क्षिप्रा नदीके किनारे अपना डेरा डाला, इस कारण राणा उरसीका समस्त आडम्बर वृथा होगया।

अनन्तर माधोजी सेंधियाकी सहायता न पाकर उरसी राणा स्वयं ही अपनृपति सेनाको रोकनेके लिये आगे बढा। शालुम्ब्राका सर्दार, शाहपुर और बुनेराके दोनों राजे और ज़ालिमसिंह तथा महाराष्ट्रीसेनानेभी राणाकी सेनाकी सर्दारी ली और सबही सहायताके लिये आगे बढ़े। इन सबहीने एक साथ मिलकर प्रचंड वेगसे माधोजी सेंधियाकी सेनापर आक्रमण किया। दोनों ओरसे घोर युद्ध होनेलगा। राणाकी सेना अदमनीय वीरताके साथ शत्रुओंकी सेनाको मथित और वित्रासित करतीहुई क्रमशः प्रचंड गिरितरंगिणीकी समान आगे बढ़ने लगी। सेंधिया और अपनृपतिपर उस सेनाका वेग न सहागया, तथा वह दोनों ही पराजित अपमानित और अत्यन्त हानिग्रस्त होकर उज्जयिनीके दुर्गभागमें पलायन करगये। वहांपर फिर नई सेना इकट्ठी की और अपने पहिले अपमानका बदला लेनेके लिये दुबारा राजपूतोंकी सेनापर आक्रमण किया। विजयी राजपूतोंने विजयके आनंदसे मतवाले होकर एकबार भी इस बातका विचार नहीं किया कि माधवजी सेंधिया सहजसे हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा। इस कारण वह निश्चिन्त होकर शत्रुओंकी छावनीको लूटने [illegible] आपसी लूटमें मतवाला, इसीसमयमें माधवजीने रणसिंगा बजवादिया। [illegible] निश्चिन्त राजपूतगण विस्मित होगये और फिर तत्काल अपनी [illegible] किया, वह समझ गये कि शत्रुगण सहजमें पीछा नहीं [illegible]। [illegible] सेना [illegible] नहीं भी नहीं [illegible]

दुर्रानियोंकी गतिको रोकनेके लिये अपनी सेनाके साथ शतद्रुके किनारे पर गये। परन्तु यह वृत्तान्त अम्बेरके इतिहासका है यहांपर इसका विचार करनेकी आवश्यकता नहीं अतएव अम्बेरके इतिहासमें ही इसका समावेश किया जायगा।

भागिनेय माधवसिंहके स्वार्थकी रक्षा करनेके लिये उनको साथ ले राणाजी सेनासहित ईश्वरीसिंहके सामने हुए। शीघ्रही दोनों दलोंमें घोर संग्राम आरम्भ हुआ। शिशोदीय वीरगण ईश्वरीसिंहको पराजित करनेके लिये गयेथे, परन्तु वह स्वयं ही हारगये। ज्ञात होताहै कि अन्यायपक्ष समर्थन करना उनके विचारमें नीति विरुद्ध था इस ही लिये वह इसके लिये उत्तेजित नहीं हुए। राणाजीकी सेना तित्तर वित्तर होकर युद्धसे भागी। इस प्रकार पराजितहोनेसे राणाजी अत्यन्त ही व्यथित हुए। परन्तु जिस समय उन्होंने देखा कि सेनाके अनुत्साहसे ही यह हार हुई है, तब तो क्रोधसे अत्यन्त भरगये अत्यन्त क्रोधके न सहनेके कारण राणाजीने गिह्लौटकुलकी प्रचंड तलवार एक साधारण वाराङ्गनाके हाथमें दे दी और व्यङ्गवाणीसे कहा कि "इस अवनतिकी अवस्थामें यह अस्त्र स्त्रीहीके व्यवहार करनेयोग्य है।" यह व्यंग वचन मेवाडभूमिके अवनतिकालके अनुसार ही था। मेवाडवासियोंके हृदयमें यह दृढतासे अंकित होगया; यहांतक कि अबलों वहांके निवासी उसको नहीं भूलेहैं।

कोटा और बूंदीके हाडागणोंने गतयुद्धमें राणाजीकी सहायता कीथी; इसही कारणसे ईश्वरीसिंहने उनके आचरणका योग्य फल देनेके लिये आपाजी सेंधियाकी सहायता लेकर उनपर आक्रमण किया। हाडागणोंने उस आक्रमणको अत्यन्त वीरतासे रोकदिया। इस युद्धमें आपाजी सेंधियाका एक हाथ कटगया। इस युद्धके फलमें दोनों दलोंको कुछ कुछ हानि पहुंची और दोनों राजाओंको सन्धिनामे [illegible] निर्भय कर

[illegible] हम राणो अत्यन्त पवित्र मानतेहैं। [illegible] दोनों [illegible]

वोंने घेरलिया। सर्दारोंके साथ विवाद, महाराष्ट्रियोंका सताना, इसके ऊपर राणा उरसीका तीव्र और रूढ आचरण; यह समस्त अनर्थ क्रमशः इकटे होगये। इस समयमें अमरचंदने मंत्रीपदको पुनः पानेकी आशा सम्पूर्णतः त्याग दी थी। अमरचंदका स्वभाव प्रचंड और अरिसिंहकी समान अदमनीय था। वर्त्तमान समालोच्य समयतक दशवर्ष व्यतीत होगए कि अमरचंद अपने कार्यसे अलग होचुकेथे। इन दशवर्षके मध्यमें मेवाडराज्यमें बहुतसा फेर बदल होगया। जिन सर्दारोंने उरसी राणाके पक्षको छोडकर रत्नसिंहका पक्ष अवलम्बन किया, उनके स्थानमें वेतनभोगी सिंधीलोग नौकर रक्खे गये। इन सिंधीलोगोंने पूर्वोक्त सर्दारोंकी छूटी हुई भूमिपर अपना अधिकार करके राज्यमें मानो अप्रसन्नताका बीज बोदिया। इस बीजने मेवाडके समस्त विक्रम, तेज और बलका नाश करडाला। इस अप्रसन्नताकी सघन छाया इतनी दूरतक फैलगई थी, कि जिन सर्दारोंने रत्नसिंहका पक्ष अवलम्बन कियाथा, वह भी सबसे अलग हो अपने किलेका द्वार बन्दकरके गंभीरभावसे रहतेथे। इस भांति राणाकी आशा सबओरसे टूटगईथी उनका पक्ष अत्यन्त दुर्बल होगयाथा। जिस समय मेवाडपर यह विपत्ति पडरहीथी, उस समय परमेश्वरके द्वारा प्रेरित हो अमरचंद फिर भी कार्यक्षेत्रमें दिखाई दिये। उदयपुरके चारों ओर रक्षाके लिये खाई या परिखा कुछ भी न थी। कुछदूर दक्षिणमें एक लिंगगढ नामक एक ऊंचा शैलकूट था। यदि समझाजाय तो उदयपुरका यही प्रधान द्वार था। अतएव इसके चारों ओर परकोटा बनाने और तोपें लगानेसे उदयपुरकी रक्षाका होना विचारकर राणाजीने उक्त कार्यमें मन लगाया। एकलिंगगढ अत्यन्त दुरारोह था, यहांकी जमीन बराबर नहीं थी, इसकारण राणाजीकी समस्त कौशल वृथा होगई एक समय राणाजी उसकी देखभाल करनेको स्वयं वहां गये कि वहांपर अचानक अमरचंदबरवासे उनका साक्षात् हुआ। अमरचंदकी अप्रसन्नता दूर करनेके लिये राणाजीने अपने अपराधको स्वीकार किया और मधुर वचन कहकर वार्त्तालाप करनेलगे। कुछ देरतक वार्त्तालाप होनेपर अरिसिंहने अमरचंदसे पूछा, "आप कहसक्तेहैं कि इस कार्यको समाप्त करनेमें कितना रुपया और कितना समय लगेगा?" अमरचंदने गंभीरभावसे उत्तरदिया "कुछ धान्य और कई दिन का समय।" तदुपरान्त राणाने अमरचंदसे इस कार्यके करनेको कहा; तब मंत्रीने संकोच छोडकर उत्तर दिया कि 'जितने दिनतक इस कार्यका भार मेरे हाथमें है, तबतक इसमें मेरी आज्ञा ही चले, और किसीकि हस्तक्षेप,

पंचदश अध्याय १५.

दूसरे राणा प्रतापसिंह;–दूसरे राजसिंह राणा;–राणा अमरसिंह;–हुलकरकी मेवाडपर चढ़ाई और करप्राप्ति;–राणाजीको पदच्युतकरनेके लिये विद्रोहाचरण;–विद्रोही सर्दारोंके द्वारा एक नकली राणाका निर्वाचित होना;–कोटेके जालिमसिंह;–सेंधियाके साथ नकली राणाका मेल;–इन दोनोंकी मिलीहुई सेनापर राणाजीकी चढ़ाई;–राणाजीकी हार;–सेंधियाकी मेवाड़पर चढाई और उदयपुरको घेरना;–राणाजीका अमरचंदको मंत्री बनाना;–अमर चंदकी तेजस्विता;–सेंधियाके साथ सन्धि;–सेंधियाका वहांसे जाना;–मेवाड़राज्यका क्षय;–विद्रोहीसर्दारोंका राणाजीकी शरणआना; गढ़वाड़प्रान्तका अधिकार जाना;–राणाजीका गुप्तवध;–राणा हमीरका सिंहासनपर विराजमान होना;–राजमाता और अमरचंदमें परस्पर विवाद;–अमरचंदका महान चरित्र, मृत्यु, स्वभाव गुण इत्यादि;–मेवाड़राज्यकी क्षयप्राप्ति ।

दिनपर दिन जातेहैं: परन्तु जो दिन एकबार चलागया वह फिर लौटकर नहीं आता । जिस शारदीय पूर्णचन्द्रकी माधुरीमय मुसकानने एक समय असीम आनंद प्राप्त किया था. उस चंद्रमाको तो तत्पश्चात् अनेक बार देखा. चंद्रमाकी उस विमल कौमुदीमालिने अनेक बार प्रकृतिको [illegible] रजतधारासे सिंचित कियाहै. परन्तु कहाँ ? वह आनन्द तो फिर कभी भी न पाया । वह आनंद जो कि उस चन्द्रकी अमृतमयी मुसकानके साथ उस अनन्तमें लीन होगया: हमें आजतक फिर उसका पता ठिकाना न लगा. इस पता

अमरचंद बुलाया गया। तथा संकटके रोकनेका समस्त भार उनको दिया गया। कार्य लेनेके समय अमरचंदने कहा "इस भारीकार्यके ग्रहण करनेकी मुझको कुछ भी सामर्थ्य नहीं है। न इसकी मुझे इच्छा है। महाराज भलीभांतिसे जानतेहैं कि इससे पहिले मेवाडपर कितने कष्ट पड़चुके हैं तथा दासने कैसे २ उपायोंसे उन अनर्थोंको दूर कियाथा। इस समय उनसे भी अधिक अनर्थ आपडेहैं; इस समय भी उन्हीं उपायोंके द्वारा मुझको यह अनर्थ दूर करने पडेंगे।" क्षणभरतक ठहरकर फिर अमरचंदने कहाः "मेरे स्वभावमें बडा भारी दोष है कि जिसको आप जानते हैं, वह यह है कि मैं किसीकी आज्ञामें नहीं रहना चाहता। मैं जहां रहताहूं सर्व सर्वा होकर रहताहूं, जो कुछ करता हूं, उसपर किसीकी बुद्धि नहीं चलने देता;—किसी गुप्तमंत्री या परामर्शदाताकी सहायताको मैं ग्रहण नहीं करता आपका धनागार रीताहै, सेना विद्रोही होरहीहैः भोजनकी समस्त सामग्री भी खर्च हो चुकीहै;—यदि ऐसी अवस्थामें आप मेरे ऊपर निर्भर रहनेकी इच्छा करेः तो शपथ करके कहिये कि जिस बातकी मैं आज्ञा करूं वह न्यायहो, अन्यायहो, अच्छीहो, बुरीहो, परन्तु कोई भी उसके विरुद्ध कार्य न करेगा; यदि ऐसा होजाय तो जहांतक मनुष्यकी सामर्थ्य है वहांतक मैं समस्त कार्योंको सिद्ध करूंगा। परन्तु स्मरण रखियेगा कि "न्यायपरायण" अमर इस समय अन्याय परायण होगा और अपने पूर्व चरित्रके विपरीत कार्य करेगा।" राणाने भगवान् एकलिंगके नामकी सौगन्ध लेकर कहा कि "आपकी समस्त वासना पूर्ण होगी. आप जो आज्ञा देंगे, उसका पालन किया जायगा। आप जो कुछ चाहेंगे वह दिया जायगा। यहांतक कि यदि आप रानीका रत्नहार और नथ भी मांगे तो उसके देनेमें भी मुझे आपत्ति न होगी।" राणाके धाईभाई रुद्रदेवकी कायरतासूचक परामर्शको सुनकर अमरचंदको अत्यन्त क्रोध हुआथा। इस समय उसको सामने ही बैठा हुआ देखकर वह क्रोध दूना बढा। इसही कारण रुद्रदेवका तिरस्कार करके कहा कि तुम्हारी जैसी अवस्था और विद्या बुद्धि है वैसाही परामर्श तुमने राणाको दिया। यदि मानलियाजाय कि राणा उदयपुरसे मेरुलगढको भागजावे, तो वहां पर कौन रक्षा करेगा? तथा तुमने ऐसा कौनसा उपाय सोच रक्खाहै, कि जिससे आप तुम अपनी रक्षा करलोगे? इस प्रकारका कार्य तुम्हारेही योग्य है; राजपूतोंका नहीं। इससे अच्छा यदि इससमय अपनी प्रकृतिका अवलम्बन करके और राणाको और कष्ट देने दिये तो बहुत अच्छा है, कारण कि इस दुनियामें

आधे जगतको खलबलादिया था। परंन्तु यह स्वाधीनता केवल इटलीके ही परकोटेमें समाप्त होगई। इटलीके भाग्यगगनमें पुनर्वार स्वाधीनतारूपी सूर्य उदित हुआहै; परन्तु यह सूर्य वह सूर्य नहीं है। इसही कारणसे कहागया कि जो दिन एक बार गया वह फिर लौटकर नहीं आता। जो रक्त एकवार गया, वह फिर दुबारा नहीं पायाजाता। संसारका नियम ही ऐसा है। इस ही विश्वजनीन नियमके अधीन होनेसे आज विश्वविख्यात भारतवर्ष दीन हीन अवस्थाको प्राप्त हुआहै। श्रीभगवान् रामचंद्रजी गए,-लक्ष्मणजी गए,-वेदव्यासजीका आज पता नहीं लगता। इनकी चिताभस्मसे समयानुसार लक्षों वर्ष पीछे पुनर्वार भीष्म, द्रोण, भीम, अर्जुन, कर्ण, कृष्ण व जरासन्धादि महारथियोंने जन्म लिया। इसके उपरान्त फिर जिस दिन कुरुक्षेत्रकी भयंकर समरभूमिमें-आर्यगौरवके विशाल समाधिक्षेत्रमें यह समस्त महावीरगण महानिद्रामें शयन करगये; जिस दिन भगवान ब्रह्माजीने एकान्तमें बैठकर लौहलेखनीसे भारतके होनहार कठोर विधानको धीरे२लिखा; उस ही दिन भारतमें जिस कालरात्रिका आगमन हुआ, उसका प्रभात बहुत समयके पीछे हुआ.-प्रभात हुआ;-परन्तु भारतके उस प्रकाशमान गौरवका दिन फिर न आया। तदुपरान्त उस विशाल समाधि क्षेत्रसे पुरु, चन्द्रगुप्त, अशोक, पृथ्वीराज, समरसिंह, संग्रामसिंह, और प्रतापसिंह क्रमानुसार उत्पन्न हुए; इन महावीरोंने भारतकी जयका गीत गाकर,-एकता महाप्रणता, आत्मोत्सर्ग और देशप्रेमकी विजयवैजयन्ती हाथमें लेकर पुनर्वार भारतको आनंदमय करदिया। परन्तु यह आनन्द और यह उत्साह क्षणभरके लिये था; कालचक्रके धीरे २ बदलनेसे वह दिन शीघ्रही व्यतीत होगया। उस दिनके साथही भारतकी होनहारगति कठोरतासे पूर्ण हुई. पुनर्वार भारतका पतन हुआ।-पुनर्वार भारत सन्तानकी अधोगति हुईः-दारुण-शोचनीय-अत्यन्त कठोर दुर्दशा हुई! शिशोदीय वीर प्रतापसिंहने आर्यगौरवकी परा काष्ठा दिखाकर महाप्राणता और प्राण निछावरका आदर्श रखकर [illegible] आश्रयलिया। उनके परलोक जानेसे ही-भारतका यह [illegible] और अत्यन्त कठोर अधःपतन हुआ! आज स्वर्गकी समान [illegible] बनगयाहै.-निर्जीव, निष्पन्द और [illegible] सम्पादन करनेके लिये, [illegible] हीनजीवन, दूसरा प्रतापसिंह [illegible] हुआ! [illegible] स्थिरता नहीं!

क्रोध हुआ और अनेक प्रकारके आस्फालन करके सन्धिपत्रके टुकडे २ करदिये और वह टुकडे विश्वासघातक महाराष्ट्रीयके पास भेजदिये विपत्तिके बढ़नेके साथ २ ही अमरचंदका साहस और तेज बढ़नेलगा। इससे पहिले जो अत्यन्त ही निराश होगये थे अमरचंदने उनके हृदयमें भी अपने उत्साहके द्वारा अत्यन्त उत्साह भरादिया। सिन्धी सेना और विश्वासी राजपूत सर्दार तथा और समस्त सेनाको संग्रह करके उन्होंने सब बातें समझाईं। अमरचंद एक सद्वक्ता थे। जो वाणी मनुष्यके मर्मको भी स्पर्श करदेती है: अमरचंदमें उस वाणीका भलीभांतिसे विकाश था। अतएव असीम उत्साह और उद्बोधनके समय उनकी उस व्याख्यानशक्तिने प्रचंड वेगसे उनके सिपाही और सामन्तोंके हृदयमें प्रवेश करके सबको मतवाला बनादिया। यह वाणी इस प्रकारकी तीव्रतासे निकलतीथी कि जैसी ज्वालामुखी पर्वतोंसे धातु उपधातु निकलतीहो। सर्दारोंकी उत्साहाग्निमें योग्य इंधन डालनेके लिये चतुर मंत्रीने उनको अनेक प्रकारके रत्नजटित गहने और बडे मोलके पदार्थ उपहारमें दिये।

राजकोषमें यह समस्त पदार्थ वृथा ही पडे हुए थे। राजनीति विशारद अमरचंदने उन सबको सुकार्यमें लगाकर स्पष्ट ही अपनी कार्यपरायणताका परिचय दिया। नगरके या निकटके गांवगोठोंमें गृहस्थ और व्योपारियोंके यहां जितना धान्य था, उस सबको मोल लेकर हाट बाजारमें बेचनेके लिये भिजवायागया। चारों ओर डोंडी पिटवादीगई कि जो कोई वीर प्रार्थना करेगा उसको छः मासके भोजनयोग्य धान्य मिलजायगा। इससे पहिले रुपयेका आध सेर नाज बिकरहा था, इस समय अमरचंद एकसाथ इतने धान्यको कहांसे ले आया। इस बातका विचार करके शत्रुगण भी विस्मितहुए। सिन्धी सेनाके असन्तोषका समस्त कारण दूरहोगया। इस समय वह समस्त वीर अमरचंदकी तेजस्विनासे उत्साहित होकर प्रगट सभास्थानमें राणाजीको अपना विश्वास दिखानेके लिये एकसाथ दरबारमें गये। राजसभामें जाते ही उनके सर्दार आदिल्बेगने: नम्रतायुक्त गंभीरभावसे कहा। "महाराज! हमलोगोंने बहुत दिनसे आपका नमक खायाहै व आपके पाक खानदानसे अब तक बहुतसे सलूक हमलोगोंपर कियेगयेहैं; इस वक्त हम सब कसम [illegible] करते हैं कि आपका साथ नहीं छोडेंगे। आज उदयपुर ही हमारी दर्गाह जाना है, उदयपुरके साथ ही अपनी जान देदेंगे। अब हमको [illegible]

[illegible]

और दूसरे प्रताप तथा राजसिंहकी अकर्मण्यतासे मेवाडराज्यकी दशा अत्यन्त हीन होगई थी; इसके ऊपर वर्तमान राणाके कुटिल स्वभाव और अदम्यप्रकृतिने एक महा अनर्थ उत्पन्न किया। राज्यमें जो उपद्रव इस अनर्थसे हुए उन्होंने मेवाडका नाश करदिया। इससे पहिले भी महाराष्ट्रियोंके अत्याचारोंसे मेवाडपर बहुतसी विपत्तियें पडचुकी थीं, परन्तु इनसे मेवाडकी तिलभर भूमि भी अलग नहीं हुई थी। पंचोली मंत्रियोंकी दूरदर्शिता और सितारेके महाराजकी भक्तिसे अबतक मेवाडभूमि अपनी रक्षा करनेमें समर्थ थी। परन्तु जिस समय भयंकर उपद्रवने राज्यमें उत्पन्न होकर प्रजाके मेलमिलापका नाश करडाला, जिस समय महाराष्ट्रीयलोग भिन्न २ दलोंमें विभक्त होकर उस प्रजाकी सहायता करने लगे कि जो परस्पर विवाद कररही थी—जिस समय महाराष्ट्रीयगण अवसर समझकर अपनी भेट भरने लगे, उस काल धीरे २ राज्यकी दुर्दशा होनेलगी। प्रतापको राजगद्दीसे उतारकर सिंहासनपर उसके चचा नाथजीका अभिषेक करनेके लिये मेवाडके सर्दारोंने कई बार विद्रोहाचरण किया था, उस उपद्रवको दबानेके लिये मल्हारराव हुलकरको बुलायागया। महाराष्ट्री नीतिके अनुसार चतुर हुलकरने इस समय तक मेवाडके बहुतसे अंश अपने अधिकारमें करालिये थे; परन्तु इस समय अवसर पाकर और भी बहुतसे देश गडपजानेकी अभिलाषा की।

यद्यपि शोणितसम्बन्ध और कृतज्ञताबन्धन कठिन है, परन्तु राजनीतिमें आवश्यकता पडनेपर यह बन्धन भी मकडीके तारकी समान तोडदिया जाताहै; परन्तु ऐसा होनेपर भी मानव धर्मशास्त्रके किसी परिच्छेदमें ऐसा नहीं लिखाहै कि महोपकारीका अनभल करके ही उसके उपकारका बदला दियाजाय! अम्बेरके सिंहासनपर जिस माधोसिंहका अभिषेक करनेके लिये राणाजीने बहुतसा धन व्यय करदिया, यहांतक कि यदि राणाजी यह त्याग स्वीकार न करते तो माधवसिंहको कोई राजा भी नही कहता उन्हीं माधवसिंहने अपने मामाके समस्त उपकारोंपर चरणप्रहार करके मेवाडका श्रेष्ठ अंग रामपुर नामक परगना मल्हारराव हुलकरको देदिया * मेवाडपर जो कर बार्णागवने लगाया था, उसके उगाहनेका भार हुलकरको सौंपा गया था। परन्तु जिन नियमोंके अनुसार

* सवत् १८०८में यह घटना हुई। इसके पहले रामपुरा [illegible] अन्तर्गत था। रामपुरके [illegible] इसके [illegible] हुई है।

कुछ ही दिनके लिये था। पुनर्वार वह सब परगने हाथसे निकलगए। संवत १८३१ में महाराष्ट्र समितिके प्रचंड सर्दारोंने पेशवाकी अधीनतारूपी जंज़ीरको छिन्न भिन्न करना चाहा फिर स्वतंत्र होनेकी इच्छा करने लगे। सेंधियाने अपने प्रतिष्ठित राज्यके लिये पूर्वोक्त समस्त जनपदोंको रखकर केवल मोरवण गांव हुलकरको देदिया। मेवाडवालोंका ऐसा दुर्भाग्य था कि राज्यक्षयके अल्पकाल पीछेही नीमबहेडानामक जनपद भी राणाके हाथसे जातारहा। दुष्ट हुलकरने सेंधियासे मोरवण पाय एकवर्षके पश्चात् ही राणासे इस नीमबहेडा नामक परगनेको मांगा और भय दिखायकर कहलभेजा कि यदि यह परगना न दोगे तो मैं भी वैसाही व्यवहार तुम्हारे साथ करूंगा जैसा सेंधियाने कियाथा। राणाके दुर्भाग्यका वृत्तान्त कहांतक वर्णन कियाजाय; यदि दुर्भाग्यकी करतूत न होती तो उनको वीरश्रेष्ठ महाराज बाप्पारावलके वंशमें जन्म लेकर आज चोर महाराष्ट्रियोंके विकट भ्रुकुटि विलाससे भयकेमारे किस कारणसे कम्पायमान होना पडता? यदि ऐसा न होता तो आज प्रतापसिंहके वंशधरको हुलकरकी अयोग्य और न्यायविरुद्ध आज्ञा क्यों पालन करनी पडती?

इस प्रकार संवत् १८२६ में दुर्द्धर्ष सेंधियाके आक्रमणसे उदयपुरको छुटकारा मिला। पहिले ही कहआयेहैं कि मेवाडराज्यकी अन्तर्गत बहुतसी उपजाऊ भूमि राणाजीके हाथसे निकलगई थी परन्तु यह अवश्य याद रखना चाहिये कि यह समस्त जनपद न तो बिकेहीथे.न सदाके लिये राणाजीने इनका स्वत्व ही छोडाथा; केवल इनको गिरवी रक्खाथा। किन्तु इससे भी मेवाडकी अत्यन्त हानि हुई थी, इस हानिसे ही मेवाडका पतन शीघ्रतासे आरंभ होगया। यद्यपि मेवाडकी शोचनीय दशा होजानेसे राणाजी उन परगनोंको अपने अधिकारमें फिर नहीं करसके; तथापि मेवाडवालोंने इन स्थानोंका स्वत्व कभी नहीं छोडाथा। १० जनवरी सन १८१७ ई० में राणा भीमसिंहके साथ जो सन्धि गवर्नमेंटकी हुई थी, उसमें भी राणाके दूतोंने इस प्रस्तावको उठाया परन्तु दुःखकी बात है कि बृटिशसिंहने इसविषयमें कोई भी फैसला नहीं किया। इसका वृत्तान्त भी उचितस्थानमें लिखागयाहै।

राजपूतोने अपने राणाको महाराष्ट्रियोंके दुराचार रोकनेमें सम्पूर्ण असमर्थ देखकर उनको पदच्युत करनेका उपाय किया था। किसी २ का अनुमान है कि मेवाडकी प्रतिद्वन्द्वी सामन्त सम्प्रदायने ईर्षा और स्वार्थपरतासे ऐसा अनर्थ कियाथा। कहतेहैं कि राणा अरिसिंह (राणा उरसी) ने अपने भतीजे राजसिंहको अन्याय उपायके द्वारा वध करके राजसिंहासनको अधिकारमें कियाथा बहुत कालसे चलीआती हुई किम्वदन्तियोंके पाठकरनेसे यद्यपि राणाके चरित्रोंपर घोर सन्देह उत्पन्न होताहै, तथापि ऐसा कोई प्रमाण कहीं भी नहीं पायाजाता कि जिससे वह सन्देह दृढ हो। मेवाडकी सनातन उत्तराधिकारकी रीतिमें विघ्न होनेपर वहां अनेक प्रकारके अमंगल और अनर्थ उत्पन्न हुआ करतेहैं इस ओर मेवाडके सिंहासनपर अधिकार करनेकी सामर्थ्य भी राणा उरसीमें न थी। बहुत दिनसे इसका आसन शिशोदीयकुलके सोलह सर्दारोंके नीचे था। एक भूमिवृत्ति इसको प्राप्तहुई थी जिसकी आमदनीसे ३०००० हजार रुपये वसूल होतेथे यह राणा उरसी पहिले दूसरे दरजेके सर्दारोंमें गिनाजाताथा। जो सर्दार लोग बराबर इतने दिन ऊंचे आसनका सन्मान भोग करतेआयेहैं, वह क्या इस समय उसके आगे शिर नवाते? आज क्या वह उरसीको राजा समझकर सन्मान देते?— कभी नहीं! अवैध राज्याधिकार प्राप्तकरनेसे सबही सर्दार उससे घृणा करतेथे। दीर्घ कालतक साथ रहनेसे सर्दारलोग उसके समस्त गुप्त चरित्र जानगएथे; वह समझगयेथे कि राणा उरसीका स्वभाव अत्यन्त रूखा है और इसमें राज्यकरने लायक कोई गुण भी नहीं है चरित्रके गुप्त भेद तक जाननेके कारणसे सर्दार उरसीसे अत्यन्त ही घृणाकरतेथे तथा उसे किंचित भी सन्मान नहीं देतेथे। राणाके कठोर स्वभावने शीघ्रही मेवाडके प्रधान सरदार सार्दूलसिंहको अलग करदिया * जिस महानुभाव झाला सरदारने हल्दीघाटके भयंकर समरक्षेत्रमें निस्सहाय प्रतापकी जीवनरक्षा करके शिशोदीय कुलकी अनन्त कृतज्ञता पाईथी

---

* सादडीके ठाकुरने बिहारीदास पचोलीके [illegible] था, एक पत्र भेजा, उसका अविकल अनुवाद नीचे लिखतेहैं।

"दीवान बहादुर [illegible]

[illegible]

(…) [illegible]

बीचमें हुआ वह आजतक वर्त्तमानहै। उस इकरारनामेके अनुसार मारवाड़के राजकुमार राणाकी सहायता करनेके लिये उसदेशकी आमदनीसे तीन हज़ार सिपाहियोंका भरणपोषण करनेके लिये नियत किये गएथे। यदि दुष्टके दुराचारसे राणा उरसी अकालमें इसलोकसे विदा न होजाते तो निश्चयही इसगदवाड़ राज्यका उद्धार होजाता परन्तु ऐसा होनेसे ही समझा गया कि उनका भाग्य अत्यन्त मन्द था!

वासन्तिक अहेरिया उत्सव राजपूतोंका एक सनातन उत्सवहै। परन्तु इस उत्सवके समयपर बहुधा मेवाड़में बहुतसे अनर्थ हुए हैं। मेवाड़के तीन राणा इससे पहिले अहेरियाउत्सवके समय अपने प्राण देचुके थे। इसही कारणसे किसी राजपूतवालाने सती होनेके समय जलतीहुई चितापर चढ़कर कहाथा कि "यदि अहेरिया मृगयाके समय राणा और राव मिलकर चलेंगे तो दोनोंमेंसे एकको अवश्य ही अपना प्राण देनाहोगा।" राणा अरिसिंह इस पतिव्रताकी पवित्र भविष्यद्वाणीका निरादर करके शिकार खेलने चलेथे।जब शिकार खेलकर राणाजी अपने घरको लौटने लगे कि इतनेहीमें हाड़राजकुमार अजितने अचानक अपने घोड़ेको राणाकी ओर फेर कर उनके भाला मारा। राणाने बाण बिद्ध केशरीकी समान अजितकी ओर फिरकर देखा और कठोर शब्दसे चिल्लाकर कहा कि "रे हाड़! तूने यह क्या किया?" राणाजी अचेतन होकर घोड़ेसे गिराही चाहतेथे, कि तत्काल इन्दुगढ़के पाखंडी सर्दारने अपनी तलवारसे उनका शिर काटडाला! इस कार्यसे अजितके पिता अपने पुत्रपर इतने अप्रसन्न हुए, कि उसदिनसे उन्होंने अपने पापीपुत्रका मुख नहीं देखा। कहतेहैं कि समस्त हाड़वीरगण अजितपर अप्रसन्न हुएथे। इस भयंकर वधके समय एक रक्षकके अतिरिक्त और कोई भी राणाके साथ नहींथा। राणाजीके सर्दार और सामन्तलोग इस समाचारको सुनतेही अपने२ डेरे और अपनी समस्त सामग्रीको छोड़कर भयभीतकी समान चारों ओरको भागे।

कहतेहैं कि बूंदीराजकुमारने मेवाड़के सर्दारोंके द्वारा उकसाए जानेपर ही यह विश्वासघात कियाथा। इसबातका प्रमाण हम पहिले कईबार देचुकेहैं कि सर्दारगण राणा अरिसिंहसे किंचित भी स्नेह नहीं करतेथे। राणाजी इसबातको भलीभांतिसे जानते और इसका उपाय करनेके लिये उचित अवसरकी प्रतीक्षा किया करतेथे। यहांपर एक उदाहरण लिखदेनेसे ही इसबातका पक्का प्रमाण मिल जायगा। जिस सालूम्ब्रा सर्दारके पिताने राणाजीके लिये उज्जैनके संग्राममें प्राण

दिग्भागोत्रमें उत्पन्न हुआ वसंतपाल नामक सर्दार रत्नसिंहका मंत्री नियत कियागया । सन् ईसवीकी वारहवीं शताब्दीमें वसंतपालके पूर्वपुरुष दिल्ली नगरीसे-समरकेशरी समरसिंहके साथ मेवाडमें आयेथे, तथा इससे पहिले वह भारतके शेष सम्राट् महाराज पृथ्वीराजकी सभामें एक ऊंचे पदपर विराजमानथे । इन समस्त सर्दारोंके साथ " फितूरी " * ने कुम्हलमेर (कमलमेर) पर अधिकार किया और वहांपर सर्दारोंके द्वारा यथाविधिसे अभिषेकित हो मेवाडका राणा वनजानेके कारण 'राजनियमावलीपर स्वाक्षर करने लगा । राजनीतिके मूल-तत्त्वका निरादर करके रत्नसिंहके सर्दारोंने अन्तमें इष्टसिद्धिके लिये जिस घृणित उपायका अवलम्बन किया उससे मेवाड़का दुर्दिन और भी निकट आगया । तदनन्तर उन सर्दारोंने संधियासे सहायता चाही और राणा उरसीको सिंहासन-से उतारनेके वदलेमें उसको १२५००००० रुपये देने स्वीकार किये ।

मेवाड़के इस भयंकर अन्तर्विप्लवके समय ज़ालिमसिंह नामक एक प्रचंड राज-पूतवीर राजस्थानकी रंगभूमिमें अवतीर्ण हुआ । जालिमसिंहने राजस्थानक्षेत्रमें विशेषकरके मेवाडकी भूमिमें जिसप्रकारका अभिनय कियाथा उसको सुनकर सवही गुणग्राही लोग उस वीरकी वीरता, महानता, तेजस्विता और राजनीति-ज्ञताकी विशेष प्रशंसा करेंगे । मेवाडके क्षेत्रमेंही इसवीरकी तीक्ष्ण राजनीतिका विस्फुरण हुआ । यद्यपि यहांपर उसका वृत्तान्त लिखना प्रसंगानुसार नहींहै तथा-पि मेवाड़की रंगभूमिमें जो महानकार्य ज़ालिमसिंहने कियेथे इनकार्योंमें उनका जीवनचरित्र इतना जड़ाहुआ है कि उनका वर्णन करनेसे पहिले उनके जीवन-चरित्रका कुछ अंश यहांपर लिखना भी आवश्यकीयहै । माधोसिंहको अम्बेरके सिंहासनपर स्थापित करनेके विषयमें ईश्वरीसिंहके साथ राणा जगतसिंहका जो संघर्ष उपस्थित हुआ, उसने ही ज़ालिमसिंहके होनेवाले महानचरित्रका-द्वार खोलदिया ज़ालिमसिंहके पिता उससमय कोटेका शासन करतेथे। बदला लेनेके लिये जब कि ईश्वरीसिंहने संधियाके साथ मिलकर कोटाराज्यपर आक्रमण किया उस समय जालिमसिंह वहींपरथे. उस समय महाराष्ट्री सेनाके साथ पहली बार उनकी मुठभेड़ हुई। [illegible] महाराष्ट्रियोंकी नीति-कौशलको वह उत्तमतासे सीखगएथे। तथा उनकी नीतिके अनुसार [illegible] उन्होंने कार्य कियाथा । अपने राजाके अनुग्रहको [illegible] ज़ालिमसिंह कोटेमें

* [illegible]

को हृदयमें स्थान न दियाहो. तो मेरा यह वचन अवश्य ही फलीभूत होगा। सतीका वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि उस वटवृक्षकी एक बडी शाखा सहसा टूटकर गिरगई: वैसेही चिता भी प्रचंड होकर धुधकारने लगी। उस वीरबालाने अरिसिंहके मृतक देहको गोदमें लेकर चिताकी अग्निमें अपने शरीरको प्रसन्नतासे होम दिया।

राजा अरिसिंह (उरसी) दो पुत्र छोडकर परलोकवासी हुए। उनमें पहिलेका नाम हमीर और दूसरेका भीमसिंह था। संवत १८२८ (सन १७७२ई०) में वीर हमीर मेवाडके गौरवहीन सिंहासनपर बैठा। यद्यपि यह वीर सिसोदिकुलके एक पवित्र नामको धारण करके संसाररूपी रंगभूमिमें अवतीर्ण हुआ, परन्तु मेवाडके अभाग्यसे इस वीरके द्वारा उस पवित्रनामकी किंचित् भी सार्थकता न हुई। सिंहासनपर बैठनेके समय हमीर बारहवर्षका था. इस कारण राजकार्यको माता ही सम्हालतीथीं, आज मेवाडके समस्त अनर्थ एक मूर्ति बनाकर प्रगट होगये। एक तो मेवाडकी दशा वैसेही दीन थी. फिर महाराष्ट्रियोंका सताना, बालकका राज्य और स्त्रीका राज्यशासन—उसपर तुर्रा यह कि उस स्त्रीकी अभिलाषा भी अत्यन्त बढीथी अतएव आज कविवर चंदके कहे अनुसार मेवाडका सर्वनाश होना अनिवार्य है। इसही समयमें आपसका झगडा उत्पन्न होगया कि जिसने अनर्थके ऊपर अनर्थ किया। चन्डावत और शक्तावतोंमें सदाका विरोध था, आज इस विपत्तिके समयमें अपनीर प्रधानता प्राप्त करनेके कारण दोनोंने प्रतिपक्षीगणोंके रुधिर बहानेका विचार करलिया। शक्तावत सरदारने राजमाताकी नीतिका अवलम्बन किया। इस ओर अपमानित शालुम्बासरदार अरिसिंहके विरुद्ध अपमानका बदला लेनेके लिये स्वर्गीय राणाकी विधवा रानीके विरुद्ध कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुआ। उस भयंकर जातिवैरसे जो भयंकर अग्नि उत्पन्न हुई उससे सारी मेवाडभूमि श्मशान बनगई. अल्पदिनमें ही समस्त राज अनाथ होगया। अवसर पाकर चोरचकार तक भी मेवाडके धनको बिना रोक टोकके लूटने खसोटने लगे। मेवाडके दीन किसानोंपर घोर अत्याचार होने लगा। आज मेवाड अत्यन्त शोचनीय दशाको पहुंचगया। मार. काट. रक्तपात. समस्त ही मनुष्योंके दृष्टिगोचर होगए। राजस्थानका नन्दनकाननकी समान मेवाड आज शोकोद्दीपक चिताभस्मयुक्त श्मशानकी भाँति बनगया।

[illegible]

बलके साथ उनपर धावा करादिया । सेंधियाके भयंकर बलको न सहसकनेके कारण, शालुम्ब्रा, शाहपुर और बुनेराके सर्दार रणभूमिमें मारेगये और सहकारी दौलामिया, नरवरका पदच्युत राजाभान, और साद्रीका उत्तराधिकारी कल्याणराज यह तीनों घोररूपसे घायल हुए । जालिमसिंह भी घायल हुए, इनका घोडा भी यहीं मरगयाथा, इस कारण रणभूमिसे भाग नहीं सके और शत्रुओंने उनको कैद करलिया । कैद करलेने पर भी उनसे कैदियोंकी समान व्यवहार नहीं किया । त्र्यम्बकजी नामक एक सदाशय महाराष्ट्रीने उनको अतियत्न और सन्मानके साथ ग्रहण किया । त्र्यम्बकजीका ही पुत्र प्रसिद्ध अम्बजी हुआ । पराजित और अपमानित राजपूतगण उदयपुरको भागआये ! इस ओर अपनृपातिके पक्षवाले उदयपुरपर चढ़ाई करने और रत्नसिंहको वहांके सिंहासनपर स्थापित करनेके लिये सेंधियाको उत्तेजित करनेलगे । विजयी महाराष्ट्रपतिने कुछ कालके पीछे विशाल सेनाको साथ ले गिरिमार्गके भीतर प्रवेश करके उदयपुरको घेर लिया । सहायता व द्रव्यादिके अभाव होनेसे राणाजी हताश हुए । जो कितने एक साहसी वीर अबतक उनकी ओर थे उनमेंसे अधिकांश क्षिप्रानदीके किनारे रणभूमिमें गिरगयेथे । अब इससमय राणाको कोई सहारा नहीं । महाराष्ट्रियोंके ग्राससे किसप्रकार उदयपुरकी रक्षाकरें केवल शालुम्ब्राके भीमसिंह उनकी ओर उपयुक्त सर्दार थे । नगररक्षाका भार इसही सर्दारको समर्पण कियागया । उज्जयिनीके युद्धमें जो शालुम्ब्रा सर्दार मारागया यह भीमसिंह उसका चचा और उत्तराधिकारी था । इससमय यही सरदार राणाजीके द्वारा सेनापति पदपर अभिषिक्त होकर धीरवर जयमलके वंशधर राठौर वीर विदनोरपतिके साथ इस संकट कालमें नगर और राजाकी रक्षा करनेके लिये भयंकर कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुआ । परन्तु केवल एक ही महापुरुषके कठोर उद्योग और उत्साहसे सबओरकी रक्षा हुई । उस महापुरुषका नाम अमरचंदबरवा था ।

अमरचंद बरवाका जन्म वैश्यकुलमें हुआथा । पहिले यह मेवाड़का मंत्री था । इसकी समान चतुर और दक्षमंत्री संसारमें विरला ही था । [illegible] समय मेवाड़में जो महा अनर्थ हुआथा, अमरचन्दबरवाके सिवाय उस अनर्थको रोकनेकी और किसीमें सामर्थ्य नहीं थी । [illegible] यह मंत्री [illegible] स्तम्भस्वरूप था । इस समय राणा [illegible] समयसे अमरचंदका मंत्रीपद छीन- लिया गया । जिनदिन इसका [illegible]

हमीरकी माताके समस्त कार्य हुआ करतेथे। परन्तु वह कर्मचारी बहुतदिनतक जीवित नहीं रहसका। इस प्रकार उस पाखंडीके द्वारा चलायमान होकर राजमाता प्रत्येक कार्यमें अमरचंदकी विरुद्धता करने लगी। वह क्षणभरके लिये भी इस बातका विचार नहीं करती थी कि अमरचंद मेरे पुत्रकी रक्षा करनेको ही यह सब कार्य करताहै। वास्तवमें उसकी दुर्बुद्धि यहांतक बढी कि वह चन्दावतोंकी अनुकूलता ग्रहण करके अमरचंदके समस्त कार्योंका ही प्रतिवाद किया करती थी। कर्त्तव्य परायण अमर इससे किंचित भी विचलित नहीं होताथा। वह अपनी सिंधी सेनाकी सहायतासे अपने पदपर अचल और अटल रहे। उन्होंने महाराष्ट्रियोंको नगरमें प्रवेशकरनेसे रोकदिया और राजकीय भूमिकी भलीभांतिसे रक्षाकी। परन्तु उनका शरीर भी तो रक्त मांसहीका बनाहुआ था; क्रूर लोगोंके विद्वेषको इकला आदमी कब तक सँभाल सकता है? जिनके लिये उन्होंने सर्वस्वका त्याग करदिया वही लोग अंतमें कृतज्ञताको भूलकर पग २ पर अमरचंदका अपमान करनेलगे। इस बातसे ऐसा कौन मनुष्य है जो स्थिर रहसकता है? अमर स्वभावसे ही तेजस्वी थे; उनसे थोडा सा अपमान भी नहीं सहाजाता था। परन्तु मंत्रीपद पर आरूढ होनेके समयसे उन्होंने बहुतसे दुराचारियोंके वाग्बाण और अपमान सहे। केवल राजकुमार हमीरका स्वार्थ रक्षित रखनेके लिये उन्होंने यह वाग्बाण सहे थे। परन्तु आज उस हमीरकी माताको ही अपना शत्रु बनाहुआ देखकर रोष, अभिमान और घृणाने अमरचंदको उत्तेजित करदिया। तथापि कर्त्तव्यपरायण अमरने कर्त्तव्यको हाथसे नहीं जाने दिया। एक समय मंत्री अपने कार्यालयमें बैठेहुए थे कि दुष्ट रामप्यारी वहां आई और राजमाताका नाम लेकर किसी कार्यके सम्बन्धमें अमरचंदका तिरस्कार किया। तेजस्वी अमरचंदको क्रोध चढआया उन्होंने इच्छानुसार उस पापिनी रामप्यारीको दुर्वचन कहकर वहांसे निकलवादिया। अपमानित रामप्यारी रोतीहुई राजमाताके निकट गई और अपना समस्त वृत्तान्त रो रोकर सुनाया। राजमाताने रामप्यारीकी कहानी सुनकर उससे अपना अपमान समझा और तत्काल एक पालकी मंगवाकर आलम्बरदारोंके पास चली। अमरचंदने समझलियाथा कि आज कुछ अवश्य ही होनेवाला है, इस कारण वे तत्काल सभासे उठ चले, और मार्गमें ही राजमाताकी पालकीको रोककर उन्होंने वाहक और अनुचरोंको राजभवनमें लौटजानेकी आज्ञादी। किसी मनुष्यकी हिम्मत भी जो अमरचंदकी आज्ञाको न मानता? तब पालकी लेजानेवाले

बलके साथ उनपर धावा करदिया । सेंधियाके भयंकर बलको न सहसकनेके कारण, शालुम्ब्रा, शाहपुर और बुनेराके सर्दार रणभूमिमें मारेगये और सहकारी दौलामिया, नरवरका पदच्युत राजाभान, और सादीका उत्तराधिकारी कल्याणराज यह तीनों घोररूपसे घायल हुए । जालिमसिंह भी घायल हुए, इनका घोडा भी यहीं मरगयाथा, इस कारण रणभूमिसे भाग नहीं सके और शत्रुओंने उनको कैद करलिया । कैद करलेने पर भी उनसे कैदियोंकी समान व्यवहार नहीं किया । त्र्यम्बकजी नामक एक सदाशय महाराष्ट्रीने उनको अतियत्न और सन्मानके साथ ग्रहण किया । त्र्यम्बकजीका ही पुत्र प्रसिद्ध अम्बजी हुआ । पराजित और अपमानित राजपूतगण उदयपुरको भागआये ! इस ओर अपनृपतिके पक्षवाले उदयपुरपर चढ़ाई करने और रत्नसिंहको वहांके सिंहासनपर स्थापित करनेके लिये सेंधियाको उत्तेजित करनेलगे । विजयी महाराष्ट्रपतिने कुछ कालके पीछे विशाल सेनाको साथ ले गिरिमार्गके भीतर प्रवेश करके उदयपुरको घेर लिया । सहायता व द्रव्यादिके अभाव होनेसे राणाजी हताश हुए । जो कितने एक साहसी वीर अबतक उनकी ओर थे उनमेंसे अधिकांश क्षिप्रानदीके किनारे रणभूमिमें गिरगयेथे । अब इससमय राणाको कोई सहारा नहीं । महाराष्ट्रियोंके ग्राससे किसप्रकार उदयपुरकी रक्षाकरें केवल शालुम्ब्राके भीमसिंह उनकी ओर उपयुक्त सर्दार थे । नगररक्षाका भार इसही सर्दारको समर्पण कियागया । उज्जयिनीके युद्धमें जो शालुम्ब्रा सर्दार मारागया यह भीमसिंह उसका चचा और उत्तराधिकारी था । इससमय यही सरदार राणाजीके द्वारा सेनापति पदपर अभिषिक्त होकर वीरवर जयमलके वंशधर राठौर वीर विदनौरपतिके साथ इस संकट कालमें नगर और राजाकी रक्षा करनेके लिये भयंकर कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुआ । परन्तु केवल एक ही महापुरुषके कठोर उद्योग और उत्साहसे नगरओरकी रक्षा हुई । उस महापुरुषका नाम अमरचंदबरवा था ।

अमरचंद बरवाका जन्म वैश्यकुलमें हुआथा । पहिले यह मेवाडका मंत्री था । इसकी समान चतुर और दक्षमंत्री संसारमें विरला ही था । स्वर्गीय राणाजीके समय मेवाडमें जो महा अनर्थ हुआथा, अमरचन्दबरवाके सिवाय उस अनर्थको रोकनेकी और किसीमें सामर्थ्य नहीं थी । वास्तवमें यह मंत्री मेवाडका स्तम्भस्वरूप था । इस समय राणा अरसीके समयमें अमरचंदका मंत्रीपद छीन-लिया गया । जिसदिन इसका मंत्रीपद गया उसीदिनसे मेवाडकी दुर्द-

हृदय धर्मात्मा अमरचंदने अपनी मातृभूमिका उपकार करनेके लिये सर्वस्वका त्याग करदिया, संसारमें जिस धनके लिये असंख्य उपद्रव हुआ करतेहैं; विना याचित हुए ही वह अपार धन परोपकारमें लगादिया; परन्तु इस परोपकारका उन्हें कौनसा बदला मिला? पग २ पर जातिवालों तथा इष्टमित्रोंका विद्वेष सहन करके जीवन धारण करनापडा। तथापि दृढप्रतिज्ञ अमरचंदने कर्त्तव्य-कार्यसे किसी समय भी मुँह नहीं मोडा था। जिसके लिये उन्होंने इतना कष्ट सहा और इतना त्याग स्वीकारकिया; जिसके लिये मंत्रिश्रेष्ठको अपने विरानोंका विद्वेषभाजन होनापडा; उस ही पिशाचीने घृणित मार्गमें पांव रखके जहर देकर अपने हाथसे उस महात्माका प्राण संहार किया! हाय! मनुष्योंका चरित्र क्या इतना घृणित और इतना नरकमय है?

जिस महापुरुषने स्वदेशके लिये जीवन धारण करके अंतमें स्वदेशवालोंकी विश्वास घातकतासे इस लोकसे विदा ली, वह किसी भी देशका गौरवस्वरूप होसकता था। परन्तु मेवाडका अत्यन्त दुर्भाग्य है कि, मेवाडकी अयोग्य रानीने मंत्री अमरचंदके गुणोंका माहात्म्य तक भी न समझा। संसारमें और भी दो चार मंत्री इस प्रकारके महान गुणोंसे विभूषित थे, परन्तु अमरचंदकी समान किसीकी भी शोचनीयदशा नहीं हुई। यद्यपि अमरचंद एक प्रधान राज्यके मंत्री थे, परन्तु वह यहांतक बेसहारे होगयेथे कि अन्तमें उनका अन्त्येष्टिसंस्कार नगरवासियोंने चन्दाडालकर कियाथा! भारतके इतिहासका यह एक नया उदाहरण है! परन्तु ऐसा होनसे कोई यह न समझे कि भारतमें साधारण ज्ञान ध्वनि नही है, या भारतीयगण गौरवका सन्मान करना नहीं जानते। जो ऐसा समझतेहैं उनको भारतवर्षका पूरा २ ज्ञान नहीं है। कारण कि अमरचंदके महानगुणोंका वर्णन अवतक भी कोई नहीं भूलाहै। यदि अवतक भी कोई ऐसे गुणग्रामोंसे विभूषित होताहै तो राजपूतगण उसको "अमरचंदके नामसे पुकारा करतेहैं।

अभागिनी राजमाताने अनवमर्जाके स्वयं ही अपने पांवमें कुल्हाड़ी मारी। अमरसिंहका संहार करके उसने समझाथा कि अब कोई भी आज्ञाके विरुद्ध न चलेगा, परन्तु थोडे ही समयमें उसका वह सुखस्वप्न भंग होगया। संवत् १८३१ (सन १७७५ ई०) में बेगू सर्दारने विद्रोही होकर उसके राज्यको नष्ट करना चाहा। बेगू एक भयानक सामन्त था। [illegible] नहीं मानता था। [illegible] राजमाताने उस भयानक सर्दारके, [illegible]

आवश्यकता नहीं, यदि यह अधिकार मिले तो मैं इस कार्यको कर सकताहूँ" राणाजी इसबातपर सम्मत हुए । अमरचंदने तत्काल मजदूरोंको बुलाकर एक मार्ग बनवाया और कुछदिनके बीचमें ही एकलिंगगढके शिखरसे तोप छोडकर राणाजीको अभिवादन किया ।

माधोजी सेंधियाने उत्तर, पूर्व और दक्षिणकी ओरसे उदयपुरको घेरलिया । केवल पश्चिमदिशा उसकी सेनासे छूटगई । उदयसागरके फैलेहुए जलने पश्चिमदिशाको बचालिया तथा ऊंचेरशिखर और वनके वृक्षोंने भी सेंधियाके इस कार्यमें बाधा दीथी ।आवश्यकतानुसार नगरवासी इस पश्चिमदिशासे ही नगरके बाहर आते और उदयसागरके जलको नावपर बैठ पारकरके अपने प्राचीनमित्र भीलोंको भोजन पहुंचातेथे । मेवाड़के बडेबड़े सर्दार शत्रुओंसे मिलगऐ, इस समय सिंधीसेनाके सिवाय राणाजीकी सहायता करनेवाला दूसरा नहींथा । इस समय केवल इसही सेनाके ऊपर विश्वास और भरोसा था । परन्तु राणाजीकी अभाग्यतासे इस समय यह सेना भी बिगड़ खडी हुई और अपनी चढ़ीहुई वेतन पानेके लिये झगडा करनेपर उतारू हुई । इस मूर्ख सेनाको राज्यका यह महाअनर्थ देखकर भी किंचित् दया न आई । बातचीतके दावेको छोडकर सिन्धीलोगोंने राणाके शरीरपर हाथ लगाकर राज्यका घोर अपमान किया। एकदिन राणाजी महलको जारहेथे कि सिंधीलोगोंने उनके दुपट्टेको पकडकर खेंचा उनसे छुटकारा पानेके लिये राणाने बलसहित अपने दुपट्टेको खेंचा । दुपट्टा फटगया । उस फटेहुए दुपट्टेको लेकर राणाजी रणवासमें चलेगये।अपने तीक्ष्ण स्वभावके परिवर्त्तनमें अपमान सहनापडा । उनका संकट और २ भारी होतागया । आशा भरोसा दूर हुआ । जिन सिंधीलोगोंको उन्होंने अपना सहारा समझाथा आज वह भी विद्रोही होगये । फिर अब इसका उपाय क्याहै ? चारों ओर विपत्तिकी भयंकर भ्रुकुटी देखाई देनेलगी । रूपदेव नामक एक व्यक्ति राणाका धाईभाई (दूधभाई) था । वह झाला सर्दारका उत्तराधिकारी होकर मंत्रभवनके कार्यको समाप्त करताथा । इस महा संकटके समयमें उसने राणाको परामर्श दी कि "आप उदयसागरके पार होकर मंडलगढको चलेजांय।" कायरपनकी यह परामर्श देकर रूपदेवने अपनी अकर्मण्यताका पूरा प्रमाण दियाथा । परन्तु राणाने इस परामर्शको न मानकर सलुम्बरा सर्दारसे पूछा. उसने शोकित होकर कहा कि "मैं इसका निश्चय नहीं करसकता कि इस संकटके समय कौनसा उपाय करनेसे मंगल होगा आप अमरचन्दको बुलावें ।"

वर्णन कियाजाय तो एक बडी सूची बनानीपडे। अतएव अनावश्यक समझकर ऐसा नहीं कियाजाता। इस ४० वर्षके समयमें महाराष्ट्रियोंने मेवाडकी अत्यन्त ही दुर्दशा की कि जिसको वह देश फिर किसी समय दूर नहीं करसका। यह सत्य है कि मुगलबादशाह भी स्वार्थपर और प्रजापीडक थे, यह भी सत्य है कि वह हिन्दूलोगोंके सुखदुःखका किंचित् भी विचार नहीं करतेथेः परन्तु उनका राज्य था, वे भारतके रहनेवालोंको अपनी प्रजा समझतेथे; ऐसा समझनेके कारणसे ही हिन्दुओंके ऊपर कठोर अत्याचार नहीं करतेथे, इसहीसे उनका अत्याचार कभी २ मन्द होजाताथा। परन्तु महाराष्टीय वैसे नहीं थे! वह भारतके रहनेवाले थे तो क्या हुआ! वह पलभरके लिये भी भारतका विचार नहीं करते थे। महावीर शिवाजीने उनको जिस महामंत्रसे दीक्षित करदिया था, यदि वह उस मंत्रका पालन करते तो निश्चय ही अपनी जन्मभूमिके अनन्तकष्टको दूर करसकते थे। परन्तु भारतकी कठोर ललाटलिखनको कौन मेट सकताहै? इसही कारणसे उन्होंने महात्मा शिवाजीके महामंत्रका निरादर करके भारतको अपनी पैशाचिक लीलाके अभिनय करनेसे भयंकर श्मशान बनाकर उसकी भयंकरताको सहस्रगुण बढादिया। महाराष्ट्रीय लोग रुधिरके प्यासे, पिशाचकुलकी समान झुंडके झुण्ड चारों ओर भ्रमण करते थे। जहां कहीं किंचित् भी धनकी गंधपाते, वहींपर फैलकर समस्त रुधिरको चूसजाते थे। हमने केवल तीनखंडनियोंको विचार करके देखा। इनमें मेवाडका एक करोड इक्यासी लाख रुपया खर्चहुआ। इसके अतिरिक्त राणाके कुटुम्बियों और सर्दारोंसे जो धनगया वह अलहदा। महाराष्ट्रियोंके पैशाचिक उत्पीडनसे मेवाडकी आज जो शोचनीय दशा होगई है उसको

लेना तुम्हारे कुलका धर्म है और तुम्हारी बुद्धि भी इसके योग्य है। तुम तो हो ही क्या वस्तु, राजकार्य तो अबतक तुम्हारे राजाको भी सीखने पडेंगे। अमरकी इस तेजस्विता और इस निडर आचरणसे राणा तथा समस्त सर्दारोंने शिर झुकालिया। पीछे प्राङ्गणमें आयकर तेजस्वी अमरचंदने सिंधी सेनाको गंभीर वाणीसे अपने पास लाकर कहा, "आओ! हमारे पीछे आओ, मैं तुम्हारी चढीहुई समस्त वेतन दियेदेताहूं परन्तु निश्चय जानलेना कि यदि तुम सफलकार्य न होगे तो समस्त दोष मेरे ही कंधेपर पड़ेगा।" सेनाके जिन सिपाहियोंने पहिले राणाका अपमान कियाथा इस समय वे चुपचाप होकर मंत्रीके पीछे २ चलेगये। अमर-चंदने उनके चढे हुए समस्त वेतनका हिसाब करके दूसरे दिन भुगतान करना चाहा और प्रतिहारीसे धनागारकी ताली मांगी। चावी न देकर प्रतिहारी दूर भागगया, तदुपरान्त अमरसिंहने कोषागारके किवाड़ तुडवाकर वहां पर जो कुछ धन रत्न या सोना चांदी था उन सबके रुपये करलिये और मणिरत्नादिको गिरवी रख दिया इससे जो धन इकट्ठा हुआ उससे सेनाका वेतन चुकादिया। बारूद, गोला, गोली आदिकी खरीद हुई अस्त्र शस्त्र भी मोल लियेगये, रसदका प्रबन्ध कियागया। इस प्रकारसे जो नया बल संग्रहीत हुआ उसकी सहायतासे अमरसिंहने शत्रुओंको दबाया और छः मास तक और भी उनके आक्रमणको रोकदिया।

नकली राणा रत्नसिंहने राणा उरसीकी अधिकांश "खास ज़मीन" हस्तगत करके उदयपुरकी तलैटीतक अपनी प्रभुताका विस्तार किया। परन्तु सेंधियाको उतना न दे सकनेके कारण कि—जितनेके देनेकी प्रतिज्ञा कीथी—उस पर महाविपत्ति आ-पडी चतुर महाराष्ट्रीय लोग समयको अमूल्य रत्न समझतेहैं; उन्होंने समयको वृथा ही जाताहुआ देखकर अमरसिंहके साथ सन्धि स्थापनकरनेकी वासना प्रगटकी और कहलाभेजा कि यदि सत्तर लाख (७००००००)रुपये दो तो हम रत्न-सिंहको छोडकर चले जांयगे। इस बातको स्वीकार करके अमरचंदने सन्धिकी तयारी की। सन्धिपत्र लिखागया जब दोनों ओरके हस्ताक्षर उसपर होगये तो सेंधियाने सुना कि यदि शीघ्रही कोई आक्रमण कियाजायगा तो विशेष फल प्राप्तहोनेकी संभावना है। यह समाचार सुनते ही सेंधियाकी दुराकांक्षा दूनी बढ़गई। उसने तत्काल अमरचंदसे कहला भेजा कि "तीस लाख ३००००००) रुपये और दो तो संधि होगी, नहीं तो नहीं।" यह बात सुनते ही अमरचंदको अत्यन्त

षोडश अध्याय १६.

राणाभीम;—शिवगढका झगडा:—राणाजीका निकलगई हुई भूमिपर पुनर्वार अधिकार करना:—राणाकी सेनापर अहल्याबाईकी चढाई;—राणाकी पराजय:—चन्दावतसर्दारका विद्रोह;—मंत्रीसोमजीका वध;—विद्रोहियोंका चित्तौरपर अधिकार;—राणाका माधोजी सेंधियासे सहाय मांगना:—चित्तौरपर चढाई:—विद्रोहियोंका शरणमें आना;—मेवाडमें अपना अधिकार स्थापित करनेके लिये जालिमसिंहका मनोरथ:-अम्बाजीके द्वारा उसका विद्रोहिता चरण:—अम्बाजीका सूबेदार होना:—लखवाके साथ उसका झगडा:—झगडेका फल:—जालिमसिंहको जहाजपुरकी प्राप्ति;—हुलकरकी मेवाडपर चढाई:—नाथद्वारेके पुरोहितोंको वन्दीकरना;—कोतारियोंके ठाकुरकी शूरता;—लाखूवाकी मृत्यु:—महाराष्ट्रीसेनानियोंपर राणाकी चढाई;—जालिमसिंहके द्वारा उन सेनानियोंका उद्धार:—हुलकरका पुनर्वार उदयपुरमें आकर कठोर कर स्थापन करना:—सेंधियाकी चढाई:—कृष्णकुमारी का पाणिग्रहण करनेके लिये राजपूतोंमें झगडा:—परस्पर युद्ध:—कृष्णकुमारीका आत्मत्याग:—मीरखाँ और अजितसिंह:—उनका दुराचरण:—उदयपुरस्थ सेंधियाकी राजसभामें बृटिशदूतका आगमन:—अपमानित होकर अम्बाजीका आत्महत्याका विचार करना:—मीरखाँ और बापूसेंधियाके द्वारा मेवाडका उजड होना:—अंग्रेजोंसे राणाजीकी सन्धि।

राणा हमीरकी अकालमृत्युके कुछेक दिन पीछे उसका छोटाभाई भीम-सिंह संवत् १८३४ (सन् १७७८ ई०) में मेवाडके सिंहासनपर बैठा। [illegible]

हकी ज़रूरत नहीं है; जब खानेपीनेका सामान खत्म होजायगा, उस वक्त चोर मरहटोंकी फ़ौज पर टूटकर शमशेर हाथमें ले मयदाने जंगमें जानको कुरबान करेंगे। " तेजस्वी अमरचंदने जो तेजस्विता सिन्धीसेनाके हृदयमें ढाल दीथी, आज उसका प्रमाण स्पष्ट दिखाई दिया। सिन्धीलोगोंकी यह कसम सुनकर राणाके नेत्रोंसे आंसू निकल आये।–आज पत्थर पसीजगया–वज्रमें शीतलताका संचार हुआ। राजाको विह्वल निहारकर सिन्धीलोग राजपूतोंके साथ मिलकर जयनाद करनेलगे। राजपूतोंकी वीरताका यह प्रचंड विस्फुरण शीघ्र ही दूरतक प्रवाहित होगया,–उनका प्रचंड सिंहनाद भयंकर शब्दसे प्रतिध्वनित होकर दुराचारी सेंधियाके कानमें पडा। इस ओरसे उत्साहित राजपूतगण सेंधियाकी उस सेनापर–जो आगे वढआई थी तोपोंकी मार करने लगे। राजपूतोंकी विक्रमाग्निको अचानक प्रचंडहुआ देखकर सेंधियाके मनमें अनेक प्रकारके सन्देह होनेलगे। इस ही कारणसे उसने फिर सन्धिकी प्रार्थना की। इस वार अमरसिंहको जयका अवसर प्राप्त हुआ है उन्होंने चतुर महाराष्ट्रीयसे कहलाभेजा कि "छः मास अवरोध सहनेसे जो खर्च हुआहै, वह पहिली निश्चित रकमसे काटलिया जायगा यदि इसमें आपकी सम्मति हो तो सन्धि स्वीकार है, नहीं तो युद्धके लिये तइयार होजाइये।" आज राजपूतके जालमें चतुर सेंधियाको फसना ही पडा। अनन्तर साढे तिरसठ लाख (६३५००००) रुपये लेकर उसको अमरचंदके साथ सन्धि करनीपडी।

मणि, रत्न, सोना, चांदी और सरदारोंको नई २ जागीरें दे गणाने ३३००००० रुपये इकट्ठाकरके सेंधियाको दिया, शेप रुपया चुकानेके लिये स्थावर सम्पत्तिको गिरवी रखने लगे। इसके लिये जावद, जीरण, नीमच और मोरवण इत्यादि गांवोंका स्वतंत्र वन्दोवस्त हुआ। वहां पर यह नियम कियागया कि इन गांवोंका कर दोनों राज्योंके कर्मचारी मिलकर वसूल करेंगे, और वर्षमें एक वार हिसाव साफ होजाया करेगा। सन्धिवन्धन समाप्त होगया। संवत् १८२५ से लेकर संवत् १८३१ तक इस सन्धिपत्रके नियमानुसार कार्य हुआ. परन्तु पिछले वर्षमें सेंधियाने राणाजीके कर्मचारियोंको वहांसे दूर कर दिया और किसी प्रकारका प्रबन्ध करनेको राजी न हुआ। अनन्तर यह कई परगने मेवाडके अधिकारसे निकलगये संवत् १८३१ में विधाताकी लिपी कर्मरेखके अनुसार सेंधियाको भाग्यगगन काले २ बादलोंने ढकलिया। इस अवसरमें राणाने उन छूटेहुए परगनोंपर अपना अधिकार करलिया. परन्तु यह अधिकार

षोडश अध्याय १६.

राणाभीम:–शिवगढका झगडा:–राणाजीका निकलगई हुई भूमिपर पुनर्वार अधिकार करना;–राणाकी सेनापर अहल्याबाईकी चढाई;–राणाकी पराजय;–चन्दावतसर्दारका विद्रोह;–मंत्रीसोमाजीका वध;–विद्रोहियोंका चित्तौरपर अधिकार;–राणाका माधोजी सेंधियासे सहाय मांगना;–चित्तौरपर चढाई;–विद्रोहियोंका शरणमें आना;–मेवाडमें अपना अधिकार स्थापित करनेके लिये जालिमसिंहका मनोरथ;–अम्बाजीके द्वारा उसका विद्रोहिता चरण;–अम्बाजीका सूबेदार होना:–लखवाके साथ उसका झगडा:–झगडेका फल;–जालिमसिंहको जहाजपुरकी प्राप्ति;–हुलकरकी मेवाडपर चढाई:–नाथद्वारेके पुरोहितोंको वन्दीकरना;–कोतारियोंके ठाकुरकी शूरता;–लाखूवाकी मृत्यु;–महाराष्ट्रीसेनानियोंपर राणाकी चढाई;–जालिमसिंहके द्वारा उन सेनानियोंका उद्धार:–हुलकरका पुनर्वार उदयपुरमें आकर कठोर कर स्थापन करना:–सेंधियाकी चढाई:–कृष्णकुमारी का पाणिग्रहण करनेके लिये राजपूतोंमें झगडा:–परस्पर युद्ध:–कृष्णकुमारीका आत्मत्याग:–मीरखाँ और अजितसिंह:–उनका दुराचरण:–उदयपुरमें सेंधियाकी राजसभामें वृटिशदूतका आगमन:–अपमानित होकर अम्बाजीका आत्महत्याका विचार करना:–मीरखाँ और बापूसेंधियाके द्वारा मेवाडका उजड होना:–अंग्रेजोंसे राणाजीकी सन्धि।

राणा रसीसिंह अकालमृत्युके कुछ दिन पीछे उनका छोटाभाई भीमसिंह संवत् १८३४ सन् १७७८ ई० में मेवाड़के सिंहासन पर बैठा। [illegible]

अमरचंदके प्रचंड बलको न सहसकनेके कारण जिसदिन चतुर महाराष्ट्री सेनासहित उदयपुरको छोडकर चलागया, रत्नसिंह अभागेकी आशालता उस ही दिन निर्मूल होगई। रत्नसिंहने बहुतसे दुर्ग अपने अधिकारमें करलियेथे कि जिससे वह उदयपुरकी तलैटीमें दृढतासे जमगयाथा।परन्तु उसके भाग्यने साथ न दिया। पराई सहायता और अनुकूलताके प्रभावसे जो उसने कई एक नगर,ग्राम और पल्लियोंको अपने अधिकारमें कियाथा,धीरे२ वह सबही स्थान उसके हाथसे निकल गये। राजनगर, रायपुर और अन्तला इनपर फिर उदयपुरवालोंका अधिकार होगया। रत्नसिंहको छोडकर अनेक सर्दार उदयपुरको चलेआये, राणाजीने अनुग्रह करके उनको उनकी भूमिवृत्ति भी देदी। रत्नसिंहको फिर कोई भी आशा न रही। केवल देप्रामंत्री और मेवाडके सोलह उत्तम सर्दारोंमें जो कईएक उसकी ओर रहे उनमें देवगढ, भिण्डी और अमैताके तीन सर्दारोंके सिवाय और सबही उसको छोडगये।यह झगडे शीघ्र नहीं दबेथे। फिर संवत्१८३१ में उक्त तीन सर्दार भी मेवाडके मुकुट स्वरूप उर्वर गदवाड राज्यको जलांजलि देकर उदयपुरके राणाकी ओर आगये।गदवाडदेश मेवाडके और सब देशोंसे अधिक उपजाऊहै। इसके सीमाबन्धनपर जो सामन्तलोग रहतेहैं। और २ सामन्तोंकी अपेक्षा वह लोग मेवाडपर अत्यन्त अनुराग करतेहैं। राणावत, राठौर,तथा सोल-ङ्कीने बहुत दिनतक उत्तम राजभक्तिका परिचय देकर अपने विश्वासपात्र होने-का प्रमाण दिया गदवाडदेशकी अधिकांश ज़मीन सामन्तप्रथाके अनुसार इन सर्दारोंके ही पास रहतीथी। यह सर्दारलोग (३०००) तीनहज़ार घोडे और बहुतसी पदातिसेनाको लेकर निश्चिन्ततासे अपने २ भूमिभागको भोगतेथे। जोधपुरके बसनेसे पहिले सन्मानसूचक राणा उपाधिके साथ उक्त गदवाड(गोद्वार) जनपद सुन्दरके पुरीहार राजासे पाया गयाथा। राठौर वीर जोधके समयमें शिशोदीयवीर चंडके प्राणप्यारे कुमारके हृदयरुधिरसे इसदेशकी सीमा बांधीगईथी, यह पहिले अनेकवार वर्णन किया जाचुका है। जब नकली राणा रत्नसिंह कमलमेरमें विराजमान हुआ तब राणा अरिसिंह (दूसरा)ने जोधपुरके राजा विजयसिंहको गदवाडका शासन भार देदिया। राणा-जीके ऐसा करनेका एक विशेष कारण था। कमलमेर गदवाडके निकट ही बसाहुआ है. इसकारण राणाको संदेह हुआ था कि रत्नसिंह सुअवसर पाकर इसको छीनलेगा. इसही शंकाके कारण यह जनपद विजय-सिंहको दिया गया। इसके सम्बन्धमें जो [illegible] और [illegible]

सम्बन्धी थे। चंदावत सर्दारने इस समय उन दोनों राजपूतोंके साथ मंत्रभवनपर अधिकार किया और समस्त सिन्धी सेना और उसके दोनों सेनापति चंदन तथा सिदीकको वशमें करके अपनी दुरभिलाषाको सिद्ध करनेके लिये तइयार हुए। इतने दिनतक तो यह लोग सुअवसरकी बाट देखरहेथे। इस समय उस वांछित सुअवसरको पायकर शालुम्ब्रासर्दारने अपने प्रतिद्वन्दी शक्तावतसर्दार मोहकमसिंहके भिंडरकिलेको घेरलिया और तोपादि लगाकर सबभांतिसे युद्धके लिये तइयार रहा।

शक्तावत गोत्रकी एक नीची शाखामें संग्रामसिंह नामक एक वीरपुरुष उत्पन्न हुआथा। इसके द्वारा मेवाडके होनहार इतिहासमें बहुतसे प्रसिद्धकार्य हुएथे। परन्तु उसकी प्रतिष्ठा उस समय एकसाथ न बढकर धीरे २ बढरहीथी। भिंडरको घेरनेसे कुछ पहिले संग्रामसिंहने अपने प्रतिद्वन्दी पुरावतसरदारके साथ एक घोर झगडा उठाया। पुरावतसरदारका लव्हानामक एक किला था। जब संग्रामसिंहने उस किलेको लेलिया- तब दोनोंका झगडा मिटगया। तदनन्तर विजयी संग्रामसिंह अपने माननीय कुलपति शक्तावतसरदारका हितसाधन करनेके लिये कार्य करने-लगा। भिंडरकिलेको चन्दावतलोगोंसे घिराहुआ देखकर संग्रामसिंहने कोरावडके शासक अर्जुनकी भूमिवृत्तिपर चढाई करके वहांपर जितने गवादि पशु थे सबको अपने अधिकारमें करलिया। जब कि वह उन पशुओंको लियेहुए आरहाथा उस समय अर्जुनसिंहके पुत्र सालिमसिंहने मार्ग रोककर उसपर आक्रमण किया।

प्राण देदियेथे; राणाने सन्देह करके एकसमय उसको अपने पास बुलाया और बिदासूचक पान हाथमें देकर कहा कि "तुम मेरे राज्यसे बाहर चलेजाओ।" शालुम्ब्रासर्दारके ऊपर मानो वज्र टूटपडा। राणाकी यह अचानक अप्रसन्नता और इस कठोर आज्ञाके कारणको अवगत होनेके लिये सर्दारने विनयपूर्वक उनसे क्षमा मांगी। राणाजीको कुछ भी दया न आई। वरन उन्होंने अधिक कठोर स्वरसे चन्दावतसर्दारसे कहा कि "यदि तुम मेरी आज्ञाका पालन न करोगे तो अभी तुम्हारा शिर काटडालूंगा।" चन्दावतसर्दारने निरुपाय होकर क्रोधित हुए राणाकी आज्ञाका पालन किया, जानेके समय वज्रगंभीर कंठसे कहता गया कि "आपकी आज्ञाका पालन करताहूं, परन्तु इससे आपको और आपके परिवारको विशेष हानि पहुंचैगी।" अवमानित चन्दावत वीरका दियाहुआ शाप शीघ्रही फलवान् हुआ। परन्तु राणाके वधमें एक और कारण भी सुनाजाताहै। कहते हैं कि मेवाडके सीमाप्रान्तमें बिलैतानामक एक साधारण गांवहै। मेवाडके अन्तर्गत हुए इस ग्रामपर बूंदीके राजाने बलपूर्वक अधिकार करलिया। इसहीसे झगडेकी जड़ जमी। अतएव ऊपर कहेहुए इन दो कारणोंमेंसे एक अवश्य ही इस वधलीलासे मिला होगा। परन्तु बून्दीके दुष्ट राजकुमारने राणाको विश्वासघातसे मारकर कायरपन और धूर्त्तपनका उत्तम नमूना दिखादिया।

इस वधके समय समस्त सर्दार कायरपनके कारण राणाके शरीरको छोडकर चलेगये; केवल राणाकी एक उपपत्नी वहाँपर रही. इस उपपत्नीने ही क्रिया कर्म किये; श्रेष्ठ चन्दन मँगाकर उसने एक बडी चिताको बनानेकी आज्ञादी। शीघ्रही चिता बनी। बहुतसा चन्दन, घी, तिलसट, राल और फूलोंके हार इत्यादि सब सामग्री इकट्ठी हुई। राणाका मृतक देह गोदमें लेकर वह उपपत्नी चितापर बैठी सामने ही वटका एक बडा वृक्ष था; उसको साक्षी मानकर उस मरनेको तइयार हुई स्त्रीने पतिके मारनेवालेको यह कठोर शाप दिया कि—"हे वनस्पति! तुम साक्षीहो; यदि स्वार्थके लिये विश्वासघात करके मेरे प्राणपतिको किसीने वध कियाहै, तो निश्चय जानो कि दो महीनेमें उस पापीके सब अंग गलजांयगे;—संसारमें वह विश्वासघातक और राजघातक लोगोंका प्रकाशित उदाहरण स्थापन करेगा। किन्तु यदि प्राचीन वादविवाद अथवा पतिके किसी अपराधका बदला लेनेके लिये यह कार्य कियाहो, तो कुछ भी न होगा। देखो तुम साक्षी रहियो! यदि मैं सतीहूं, यदि महाराज अनिरुद्धके [illegible] और किसी-

अधिकारमें थी। राणाके साथ इसकी किंचित् भी सहानुभूति नहीं थी। कारण यह कि जिस समय राणाधनके अभावसे अत्यन्त कष्ट पारहेथे उस समय यह मंत्री अपने इष्टमित्रोंके साथ अच्छी रीतिसे गुलछर्रे उडारहाथा, धनके लुटानेकी भरमार थी। यहांतक कि राणा भीमको ईडरमें अपना विवाह करनेके लिये रुपया कर्ज लेना पडा। परन्तु इस विश्वासघाती सामन्तने अपनी बेटीके विवाहमें प्रायः १०००००० रुपये प्रसन्नतासे व्यय करदिये। चन्दावत सर्दारका यह आचरण देखकर राजमाता अत्यन्त अप्रसन्न हुई और चन्दावतोंसे राज्यभारको छीनकर शक्तावतोंको निकट बुलाया तथा भेंडर और लव्हाके सामन्तोंको भलीभांतिसे सन्मानित करके प्रतिष्ठित किया। शक्तावतों-को राजमाताकी दी हुई प्रतिष्ठा मिली; परन्तु इन लोगोंके पास इतनी सेना नहीं थी कि यहलोग वैरियोंको पराजित करके उनके विक्रमको रोक सकते। इसकारण चारों ओर सहायताकी खोज करते २ कोटेकेसर्दार जालिमसिंहसे सहायताकी प्रार्थना की। जालिमसिंह चन्दावतोंसे बहुत ही अप्रसन्न था। इस ओर शक्तावतगण तो उसके अतिनिकटके सम्बन्धी थे; कारण कि उनलोगोंके साथ जालिमसिंहका वैवाहिक सम्बन्ध था। अतएव शक्तावतोंका अभिप्राय जानते ही उनके पक्षमें होगया और अपने महाराष्ट्रियमित्र नानाजी बल्लालके साथ १०००० सेना लेकर अपने कुटुम्बियोंसे जामिला। इस समय शक्तावतोंके दो कर्तव्य कार्य हुए; प्रथम तो विद्रोही चन्दावतोंका दमन करना; दूसरे अपनृपति रतन-सिंहको कमलमेरसे भगाना;—चन्दावतलोग सिन्धियोंके साथ मिलकर चित्तौरके प्राचीन दुर्गमें स्थित हो राणाके विरुद्ध अनेक प्रकारके कपटजाल फैलारहेथे। इस समय सबसे इनका दमन करना ही शक्तावतोंने उचितकार्य समझा और वह इसके लिये तय्यारहुए।

जिस समय मेवाडमें यह बातें होरहीथीं, उस समय माधोजी सिंधियाकी प्रचंड प्रभुता सहसा मारवाड और जयपुरवालोंके मिलकर विक्रमसे एकसाथ ही छिन्न होगई। तथा लालसोट क्षेत्रमें विजयी राजपूतोंकी जयश्रीसे विजयी महाराष्ट्रीय सैनिक माथेपर हाथधरके निराश होनेलगी। तब कराल माधोजीका सिन्धी सेनाके साथ [illegible] हटगया तब राजपूतोंने अवसर पाकर अपनी समस्त भूमिसम्पत्तिको उनके हाथसे उद्धार करलिया।

[illegible] सर्दार और कछवाहोंके कार्यका अनुसरण करके [illegible] राणाने भी [illegible] किया [illegible] इस समयमें,—जो कि महाराष्ट्रियोंने और [illegible] उद्धार [illegible]

मृत्युके होते ही उन्होंने अपनी मूर्ति धारण की और बलपूर्वक राजधानीपर अधिकार करके अपनी चढीहुई वेतनको लेनेके लिये शालुम्ब्रासरदारको अनेक प्रकारके कष्ट देनेलगे। राजधानीकी रक्षाका भार शालुम्ब्रासरदारहीके ऊपर था। इस सरदारको अपनी वेतन देनेमें अपारग जाकनर सिन्धीसेना उसको तप्तलौह* पर बिठलानेकी तइयारियें कररहीथी; इसही समय अमरचन्द बूंदीसे आया। पापिष्ठ सिन्धीलोगोंने अमरचन्दको देखते ही शालुम्ब्रासरदारको छोडदिया मंत्री अमरचन्दने शत्रुओंके आक्रमणसे राजकुमारके सत्यको रक्षा करनेकी दृढप्रतिज्ञा करली। संसारके चरित्रको अमरचंद भलीभांतिसे जानतेथे, उनको ज्ञातथा कि मंत्री-पदपर बहुतसे आदमियोंका दांतहै तथा मुझसे बहुतसे आदमी डाह करतेहैं, राजकुमारकी रक्षाका भार लेनेसे बहुतसे आदमी इसमें भी मीनमेख लगावेंगे; अतएव ऐसा करना उचित है कि जिसमें किसी मनुष्यको भी कुछ कहने सुननेका अवसर न मिले। इसही कारणसे मंत्री अमरचंदने अपनी सम्पत्तिका एक सूचीपत्र बनाया और वह समस्त सम्पत्ति राजमाताके निकट भेजदी। सुवर्ण, मोती, मणि, रत्न चांदीके पात्रादि यहांतक कि तोपेखानेके समस्त वस्त्र भी भिन्न २ पात्रमें राजमाताके निकट भेजेगये। अमरचंदका यह उदार अनुष्ठान देखकर सबहीको आश्चर्य हुआ, तथा माताका मन मंत्रीकी ओरसे साफ होगया। राजमाताने वह सब सम्पत्ति लौटानेके लिये अमर-चंदसे बारम्बार अनुरोध किया, परन्तु दृढप्रतिज्ञ अमरचंदने उनका लौटालेना अस्वीकार किया। परन्तु राजमाताके कहनेसे केवल उन वस्त्रोंको लौटालिया कि जिनका वह व्यवहार करचुकेथे।

राजमाताकी दुराकांक्षा और अहंता दिन २ बढनेलगी। रानी बुद्धिमानथी परन्तु शोकसे लिखनापडताहै कि एक बुरी चालचलनकी स्त्रीने उसके ऊपर सबभांतिसे अपना प्रभाव जमालियाथा। जो कुछ वह कहती, राजमाताको वही करना पडताथा, विना उस सहेलीकी परामर्श लियेहुए एक पग भी नहीं धरती थी! इस सहेलीकी बुद्धिवृत्तिको एक साधारण [illegible] कर्मचारी चलाया करताथा। अतएव यह कहना कुछ अनुचित न होगा कि [illegible] ही राजमाता-का नियन्ता था। वह अपने घरमें बैठकर जो चक्र चलाता उसके अनुसार [illegible]

---

* [illegible]

समझकर राजपूतोंने उनसे वह जनपद(परगने)भी लेने चाहे कि जो महाराष्ट्रियों-हीके थे। परन्तु वीरनारी अहल्याबाईके प्रचंड बाहुबलने उनके समस्त कार्योंको विफल करदिया। हुलकरराज्यकी महारानी अहल्याबाईने राजपूतोंको नीमबहेडा नामक जनपद हस्तगत करते देखकर अत्यन्त क्रोध किया। राजपूतोंको दलित करनेके लिये वह संधियाकी सेनाके साथ मिलगई। अहल्याबाईकी आज्ञाके अनुसार तुलाजीराव संधिया और श्रीभाई यह पांच हजार घुडसवारोंको साथ लेकर, पराजित हुए शिवाजी नानाकी सहायता करनेके लिये मन्दसोरकी ओर चले। शिवाजी नाना उस समय मन्दसोरमें स्थित होकर अपने प्रचंड बाहुबलसे अवरोधकारी राजपूतोंको दलित कररहा था। इसही समयमें सहयोगी महाराष्ट्रीगण सेना-सहित उस नगरके निकट पहुंचे और चुपचाप राणाकी सेनापर आक्रमण करदिया। माघ शुक्ल ४, मंगलवार संवत् १८४४ (सन् १७८८ ई०) को दोनों-सेनाका घोर युद्ध आरंभ हुआ। राजपूतलोग असतर्क थे इस कारण महाराष्ट्रियोंकी गतिको न रोकसके और घोररूपसे पराजित हुए। राणाका मंत्री बहुतसे सैनिक और सामन्तोंके साथ संग्राममें मारागया। कानोर और सादडीके सरदार अपनी२ सेनाके साथ अत्यन्त ही घायल हुए। सादडीपतिका घाव अधिक था इस कारण वह संग्रामभूमिसे भाग नहीं सका और शत्रुओंके हाथमें बंद होगया। माधोजी संधियाके पराजित होनेसे राजपूतोंने जिन परगनोंको अपने अधिकारमें कर-लियाथा, केवल जावदके सिवाय और सबको पुनर्वार महाराष्ट्रियोंने लेलिया। वीर दीपचंदके अद्भुत विक्रमसे केवल जावद ही रक्षित रहा। दीपचंदने बराबर एकमासतक अत्यन्त वीरताके साथ जावदकी रक्षा करी फिर अपनी तोप, बन्दूक और सेनाके साथ शत्रुओंकी सेनाके सामने भेदकर मंगलगढ किलेको गया। इस प्रकार अभागे राजपूत लोगोंकी दुःख निशा प्रभात होते २ फिर भी घोर अन्धकारसे छागई। राजपूतोंके समस्त उपाय व्यर्थ होगये।

आगई तो मंत्रीने राजमाताको प्रणाम करके धीर गंभीर भावसे कहा कि "देवि! रनिवाससे राजमार्गमें बाहर आकर क्या आपने अच्छा कार्य कियाहै? क्या इस कार्यसे आपके महामान्य स्वर्गीय स्वामीका अपमान नहीं हुआ? स्वामीकी मृत्युपर छः मासलों तो साधारण कुंभकारकी स्त्रीभी घरसे नहीं निकलती। परन्तु आप शिशोदीयकुलकी राजरानी महारानी होकर अपने स्वर्गीय पतिकी मृत्युका अशौचकाल व्यतीत होनेसे पहिले ही रनवास छोडकर बाहर जातीहैं। आप स्वयं बुद्धिमती हैं, आपको अधिक क्या समझाऊं? अमरचंदको शुभचिन्तकके अतिरिक्त अपना शत्रु न समझियेगा। अमर विश्वासघातक नहीं है कि महाराज अरिसिंहके कुमार बच्चेपर किसी प्रकारका अत्याचार करेगा मेरा एक निवेदन है कि इस समय मैंने एक गुरुतर कर्त्तव्य साधन करनेका विचार करलियाहै। इस कार्यपर आपका और आपके पुत्रोंका मंगल भलीभांतिसे निर्भर करताहै। अतएव विरुद्धता करनेकी अपेक्षा इस समय मेरी सहायता करना आपको भलीभांतिसे उचितहै। इस समय मेरे निवेदनको आप स्वीकार करें वा न करें, मैं निश्चय कहताहूं कि उस कर्त्तव्य कार्यको अवश्य ही साधन करूंगा।" अमरके इन सारगर्भ वाक्योंने उस क्रूर हृदय राजमाताके हृदयमें स्थान न पाया। अमरचंद जब तक जीवित रहे उतने दिन राजमाताकी आँखोंमें खटकते ही रहे। अनन्तर जिस दिन उस न्यायवान धार्मिकप्रवर मंत्रिशिरोमणिने इसलोकसे विदा ली, जिस दिन उसका पवित्र देह जलकर राखकी ढेरी होगया; उस ही दिन वह इस मनुष्य संसारकी स्वार्थपरता, विश्वासघातकता और कृतघ्नतासे छुटकारा पाकर अनन्त सुखके धाम अमरलोकको चलेगये। बहुतसे लोगोंका ऐसा अनुमानहै कि उस पापिनी राजमाताने जहर दिलवाकर अमरसिंहका संहार कराया था! राजमाताकी दुराकांक्षा, क्रूरता, निठुरपन देखकर यह अनुमान सत्य ही जानपडताहै। हा! मनुष्य कैसा निठुर है! कृतघ्नता कहां तक अपना बल करती है! स्वार्थपरता भी हो तो इतनी ही हो! यह संसार नरककी पीडाका भयंकर अन्धकूप है! यह कौन कहताहै कि–पशुओंसे मनुष्य श्रेष्ठ है.–यदि श्रेष्ठ है तो कौनसे गुणसे श्रेष्ठहै? हिंसा, द्वेष, कृतघ्नता, स्वार्थपरता, विश्वासघातकता यदि यह उस श्रेष्ठपनके चिह्न गिनेजातेहों, यदि एक भ्राताका सत्यानाश करके स्वार्थकी रक्षा करलेनेसे ही श्रेष्ठता प्रमाणित होतीहै, दुर्बलके ऊपर सबलका सताना ही यदि अच्छेपनको प्रगट करताहै, तो वह श्रेष्ठता पशुओंसे इनकी श्रेष्ठता नहीं है;–इसको तो पशुपन, कठोरपन और पिशाचपन कहना ही उचित होगा, उदा-

मेवाडके द्वार २ पर भ्रमण करने लगी। जिसपक्षकी जय हुई, उसके ही उन्मत्त आचरणसे अभागीप्रजाका धन और प्राण नष्ट हुआ। किसानने अत्यन्त परिश्रम करके नाजको उत्पन्न किया परन्तु वह उसको भोग न सका। सुनार, लोहार और चमारादि कारीगरलोग सामग्री बनाकर तइयार करतेथे परन्तु फल उनको कुछ भी नहीं मिलता था। बनियें लोग सर्वस्व खर्च करके धान्यको मोल लेतेथे, परन्तु उसको बेच नहीं पाते थे;—समस्त सामग्रीको चोर और ठग लूट लेते थे। पहिले समयमें चोरीका नाम ही नाम मेवाडमें बाकी था, वास्तवमें जिसका अभिनय कहीं भी नहीं देखा जाता था, आज चन्दावतोंके अत्याचारसे मेवाडके घर २ में वह अविनय होने लगा। धन संपत्तिके सिवाय प्रजाका प्राण और मर्यादा भी छिन्नभिन्न होने लगी। सबही अपने २ स्थानको छोडकर इधर उधर भागने लगे। इस चोरी डकैतीके कारण थोडे ही समयमें मेवाडका आधाराज्य ऊजड होगया। ज़मींदारोंके नाजके खेत, किसानोंके हल बैल, जुलाहोंका ताना बाना, और बनियोंकी दूकानें यह सबही स्थान शून्य होगये। जिन शोभायुक्त महल दुमहलोंके भीतर स्त्रियोंका नाच गाना सुना जाता था, वहां पर इस समय श्मशानकी भयंकरता दिखाई देती थी। अब तो भयंकर बनैले हिंसक जन्तुओंने उन स्थानोंमें अपना अड्डा जमाया था।

मेवाडके इस सर्वव्यापी विप्लवके समय राजा, प्रजा, धनी, निर्धन किसीमें कुछ भेद न रहा। उस समय वही अपनी रक्षा करनेको समर्थ हुआ कि जिसमें कुछ बल था। शेष सबहीको पाखण्डी लोग सतातेथे, मूल बात यह है कि राज्य अत्यन्त ही दीनदशाको पहुंच गया था। राणाकी अवस्था भी अत्यन्त शोचनीय हुई कहां तो वह! दीन प्रजाकी रक्षा करते और कहां अब स्वयम् ही आश्रयके लिये व्याकुल थे। अतएव प्रजाके साथ जो सम्बन्ध उनका था वह छिन्न होगया। सब ही अपनी २ रक्षाके लिये बलसे काम लेने लगे। राणाकी इस अकर्मण्यताने राज्यमें और भी कितने एक महाअनर्थ उत्पन्न होगये। जिन किसानोंकी यह इच्छा नहीं थी कि अपनी मातृभूमिको छोडें उन्होंने अपनी आशाको पूर्ण करनेके लिये किसी एक वीरकी शरणागति ले ली और उसकी स्वाधीनताके बदलेमें उसे कुछ धन देना स्वीकार करलिया। स्वार्थके [illegible] नहीं गई, [illegible] [illegible]

रोकनेमें असमर्थ होकर सेंधियासे सहायता चाही। चतुर महाराष्ट्रीय वीरने सुअवसर समझकर सेनासहित वेगू सर्दारपर चढाई की। वेगू सर्दारने राणाजीकी जिन "खास ज़मीनोंपर" दखल करलियाथा, उन सबको सेंधियाने छुडालिया और विद्रोहके अपराधमें उस सर्दारपर १२०००००(बारह लाख) रुपया जुरमाना किया *। परन्तु अभागिनी राजमाताने सेंधियाको जिस आशयसे बुलाया था, स्वार्थी महाराष्ट्रीय वीरने उस आशाको पूर्ण न करके समस्त धन सम्पत्तिको अपने आप पचालिया। उसको उचित था कि उसको बालक हमीरके हाथमें समर्पण करता, परन्तु कुमारको न देकर अपने जामाता वीरजी तापको रतनगढखेडी और सिंगोली जनपदमें स्थापन करके अवशिष्ट ईरानिया जाठ विचूर व नदोयी आदि कई एक जनपद हुलकर सरकारको देदिये। इन परगनोंकी वार्षिक आमदनी सालियाना ६००००० रुपये थी। मरहटे लोग मेवाडके केवल इनही परगनोंको हज़म करके शान्त न हुए; वरन उन्होंने पुनर्वार संवत् १८३०-३१ में चार × और संवत् १८३६में और भी तीन ‡ खंडनियोंका दावा किया। इस विपुल-धनके प्राप्त न होनेसे उन्होंने मेवाडकी और भी बहुतेरी भूमि सम्पत्ति दबाली। इस प्रकार दुरन्त महाराष्ट्रियोंके प्रचंड कष्टसे पीडित होकर और दारुण घरेलू झगडोंसे दिक्कहोकर हमीर राजपूतने पूर्ण वयसमें † चरण न धरकर ही संवत् १८३४ (सन्१७७८ई०) में परलोककी यात्रा की।

जिस दिन महाराष्ट्रीयलोग सबसे पहिले मेवाडभूमिमें आये थे उस दिनसे लेकर इस दूसरे हमीरके शासनकालतक मेवाडके अनेक स्थान राणाके पाससे निकलगये जिनका विचार आगे किया जाता है। यह समय लगभग ४० वर्षका हुआहोगा। इस लंबे समयमें जिन निठुर महाराष्ट्रियोंने पाशवीय स्वार्थपरतासे उत्साहित होकर मेवाडकी जो भूमि ली और जितना धन लिया यदि उस सबका

---

* जिस सन्धिपत्रके अनुसार सेंधियाने इन परगनोंपर अधिकार किया, [illegible]।

× यह चार खंडनियें निम्न लिखित मनुष्योंने लीथीं। सवत् १८३० में [illegible] माधोजी सेंधियाने, सवत् १८३१में वीरजी तापने गोविन्दराव [illegible] १८३१में ही तीसरी खडनी [illegible] पडितने ली।

‡ इन तीन खडनियोंमेंसे पहिली हुलकरकी [illegible] सोमाजीकी [illegible] हुलकरने ली [illegible]।

† हमीरकी उमर [illegible] केवल १८ वर्षकी थी।

संधियासे कहा। जालिमसिंहसे राणाजीके अभिप्रायको सुनकर संधिया सम्मत हुआ। इस घटनासूत्रसे बँधकर राजस्थानकी राजनैतिक रंगभूमिमें जो महामहोपाध्याय अवतीर्ण हुए उनके अद्भुत वीरानुष्ठानसे राजपूतानेके इतिहासमें एक नये युगका अवतार हुआ। इस समय प्रयोजन समझकर हम संक्षेपसे उसका विचार करतेहैं। ×

इस बातसे पहिले ही जालिमसिंहको कोटेकी सूबेदारी मिलचुकी थी। इस प्रकारके ऊंचे पदपर दृढभावसे स्थित रहके चारों ओरके वैरियोंको दबाकर रखना, यद्यपि साधारण कार्य नहीं है, तथापि जालिमसिंह इसको तुच्छ ही समझता था। उसके हृदयमें जो एक ऊंची अभिलाषा धीरे २ गुप्तभावसे फैलती जाती थी उसके संतोषको कोटेकी सूबेदारी अत्यन्त ही साधारण थी। इस सीमाबद्ध अल्प राजनैतिक क्षेत्रमें विचरण करनेसे वह ऊंची अभिलाषा किसीप्रकारसे भी पूर्ण नहीं होगी। वह ऊंची अभिलाषा यह थी कि मेवाडराज्यकी गद्दी मिलजाय। राजनैतिक होनेके अतिरिक्त जालिमसिंह मनुष्यके हृदयस्थ विचारोंको भी भलीभांतिसे जान लेता था। इस अपूर्व पारदर्शिताके बलसे वह भलीभांति समझ गया था कि नाचीज राणा मेरी अभीष्टसिद्धिके विषयमें कुछ भी रोक टोक नहीं करसकताहै अतएव मेवाडके साथ हाडावतीका राजस्व इकट्ठा करके समस्त राजस्थान पर शासन करलेना फिर क्या कोई बडी बात है ? जालिमसिंहको निश्चय था कि जयपुर और मारवाडके राजा यदि मिल भी जांय तो भी वह मुझको पराजित नहीं करसकते। जयपुरके राजाको जालिमसिंह डरपोक तथा स्त्रीके नामसे पुकारता और घृणा करता था। इसमें कारण यह था कि उसने केवल कोटेकी सेनाकी सहायतासे ही मारवाड़के राजाकी विशाल सेनाको युद्धमें पराजित कियाथा। इस ओर मारवाडके श्रेष्ठ सामन्तगण उसके अनुरागी होगये। इससे जालिमसिंहने समझ लिया कि मेरे विरुद्ध वह लोग कदापि अस्त्र धारण नहीं करेंगे। राजनीति विशारद, मनस्विता जालिमसिंहकी आशा और अभिलाषा महान थी. आशापूर्णा भगवती की [illegible] भांति उनके सामने खड़ी होकर [illegible] सौभाग्यलक्ष्मीका [illegible] प्रसाद न पानेसे ही उसको सफल्य वर न मिल सका; इसके साथ ही भारतका भाग- [illegible] भी नहीं। औरको पहले [illegible] भारतके आकाशमें फिर [illegible] स्वाधीनता-

विचार करनेसे छाती फटतीहै। आज उस चित्तौरकी भग्न प्राकारावलिके शिखरसे प्रकृति सती करुणापूर्वक रोतीहुई गौरवगरिमाकी अनित्यता, मनुष्यकी स्वार्थपरता, विश्वासघातकता और कृतघ्नताका बखान कररही हैं।

महाराष्ट्रियोंने मेवाडके राणाओंसे पृथक् २ नीचे लिखे संवतोंमें १८१००००० रुपयेकी खंडनियें लीं।

६६ लाख रुपये वि०सं० १८०८ (सन् १७५२ ई०) में राणा जगतसिंहसे हुलकरको मिले।

५१ लाख रुपये वि० सं० १८२० (सन् १७६४ ई०) में राणा अरिसिंह (दूसरे) से माधोजी सेंधियाको मिले।

६४ लाख रुपये वि० सं० १८२६ (सन् १७७० ई०) में राणा अरिसिंह (") से माधोजी सेंधियाको प्राप्त हुए।

१८१००००० सब जोड।

इन रुपयोंके अतिरिक्त २८५०००० रु० के महाल भी महाराष्ट्रियोंने मेवाडसे लिये। ९००००० रु० की आमदनीका रामपुरा व भानपुरा महाल वि० सं० १८०८ (सन् १७५२ ई०) में लिया।

४५०००० रु० की आमदनीके जावद, जीरण नीमच और नीमखेडा, यह महाल वि०सं०१८२६ (सन् १७७०ई०) में लिये।

६००००० रु० की आमदनीके रतनगढखेडी, सिंगोली, झरिया, जाट, बिचूर और नदोई इत्यादि महाल वि० सं० १८३१ (सन् १७७५ ई०) में लिये और इसही वर्षमें

९००००० रु० की आमदनीका गढवाड महाल लेलिया।

सबजोड २८५०००० रु० हुए।

इस प्रकारसे महाराष्ट्रियोंने खंडनियें और महाल मिलाकर ४५०००००० चारकरोड पचासलाख रुपया लिया। वर्छीना अपटोंने तीन करोड और भी वसूल किया। इसभांति सातकरोड रुपया उनके हाथ लगा। इन रुपयोंके जानेसे उदयपुरखजानेमें पहिलेकी समान श्री नहीं रही व जिस दरिद्रताने मेवाडभूमिमें अपना पांव जमाया, वह अबतक भी मेवाडके रहनेवालोंका पीछा नहीं छोडती।

सेनाकी सर्दारीपर नियत था। इस ओर सेंधिया भी मारवाडके राजासे खंडनी लेनेके लिये उस ओरको गया था। जालिमसिंह और अम्बाजी इंगले यह दोनों ही सेनासहित चित्तौरकी ओरको बढने लगे; उनकी दुर्द्धर्ष सेनाने बहुतसे हरेभरे खेतोंको कुचलकर नाश करादिया। अनेक रमणीक ग्राम और मौज़े अत्यन्त ही सताये गये। विशेष करके जो ग्राम या नगर जालिमसिंहकी क्रोधाग्निमें पतित हुए उनकी तो अत्यन्त ही दुर्दशा हुई। जालिमसिंह इच्छानुसार वहांके हाकिम और ग्रामीणोंसे कर लेने लगा। धीरजसिंह नामक एक मनुष्य चन्दावत सर्दार भीमसिंहका प्रधान परामर्शदाता था। जिस समय यह झगडा होरहा था उस समय बुद्धिमान् धीरजसिंह हमीरगढका हाकिम था। विद्रोहियोंमें मिलाहुआ जानकर जालिमसिंहने उसके हमीरगढको घेरा। छःसप्ताहतक दोनों दलोंमें संग्राम हुआ। किसी ओरकी जय पराजयका कोई लक्षण दिखाई न दिया। इसके पीछे विधाताकी कठोर लिपिके अनुसार धीरजसिंहका भाग्य बिगडा। हमीरगढके समस्त कुएँ जालिमसिंहकी तोपोंकी रगडसे टूट फूट गये, जलके सोते बंद हुए, तब विवश होकर नगरवासियोंने किलेका द्वार खोलदिया। जालिमसिंहने, हमीरगढको धीरजसिंहसे लेलिया। इस प्रकार और भी दो एक किलोंपर अधिकार करके राजकीय सेना क्रमानुसार चित्तौरकी ओरको बढी। मार्गमें बस्सी नामक और एक स्थानमें उनकी प्रचंड गति कुछ विलम्बके लिये रुकगई। वहां चन्दावतोंकी भूमिवृत्ति थी। परन्तु इसपर भी जालिमसिंहने अपना अधिकार स्थापित किया था. विजयके आनन्दसे मतवाला होकर चित्तौर पहुंचा चित्तौरके ऊंचे परकोटेके नीचे स्थित होनेके कुछ ही समय पीछे उसको सेंधिया और उसकी सेनाकी सहायता प्राप्त हुई।

वर्षके बीचमें चार बालक राजकुमारोंने मेवाडके शासनदंडको परिचालन किया। भीमसिंह इनमें चौथे हुए, जब यह सिंहासनपर बैठे तब इनकी अवस्था आठ वर्षकी थी। भीमसिंहने सब मिलाकर पचासवर्षतक राज्य किया था। इस आधी शताब्दीके मध्य मेवाडमें जो असीम अनर्थ उत्पन्न हुए थे, उनका वृत्तान्त पाठ करनेसे सहसा विश्वास होताहै कि विधाताने वीरवर बाप्पारावलके वंशको दीन हीन करनेके लिये ही मानो अन्तरमें बैठकर शिशोदीयकुलकी कठोर कर्मलेखको अंकित कियाथा। अप्राप्त व्यवहारकाल व्यतीत होजाने पर भी भीमसिंह बहुतदिनतक अपनी माताके अधीन रहे। इस दीर्घकालकी पराधीनतासे ही उनका भावीचरित्र गठित हुआ। वह स्वभावसे ही निस्तेज और उत्साहहीन होगए; विशेष करके दुर्भाग्यके अंकुश ताडनसे राणाकी बुद्धि इतनी छोटी होगईथी कि उनमें सामर्थ्य और विचारशीलताका नाम भी शेष न रहा। इस कारणसे कुछ एक कुचक्री आदमी उनको अपनी चालपर चलाने लगे। यद्यपि अप नृपति रत्नसिंहका दलबल बहुतही हीन होगयाथा, परन्तु यह बात नहीं थी, कि उसका नामतक शेष न रहाहो। परन्तु यह दल अपनी अकर्मण्यतासे इतना निःसहाय होगया था कि भट्टग्रंथोंमें आगे उसका कोई विवरण ही नहीं पाया जाता। यहाँतक कि उसकी मृत्युका वृत्तान्त भी कहीं नहीं जानागया।

न जाने किस कुघडीमें भारतवर्षके बीच परस्परकी फूटने पाँव धरा था। इसकी अन्तरदाही भयंकर अनलके प्रतापसे भारतकी समस्त भूमि दग्ध होगई। सुवर्णका भारत मानो जलताहुआ श्मशान बनगयाहै! यह सत्यहै कि प्रभुताको सबही मनुष्य चाहतेहैं; परन्तु यह नही कहाजासक्ता कि प्रभुताके लिये न्याय और ज्ञानके मूलमंत्रपर चरण प्रहार कियाजाय परन्तु दुःखकी बातहै कि राजपूतोंमें इस प्रकारकी अनर्थकारी सामर्थ्य प्रियताका विशेप प्रादुर्भाव देखाजाताहै। पहिले ही कहाजाचुकाहै कि चन्द्रावतलोगोंको राणाजीने ऊंचापद देरक्खाथा। इस समय संवत १८४० (सन् १७८४ई०) में यह चन्द्रावत [illegible] अपने पुरानेशत्रु शक्तावतोंका रुधिर गिरानेके लिये तथा वैरका बदला लेनेके लिये राणाकी दीहुई उस सामर्थ्यका दुरव्यवहार करनेके लिये तइयार हुए। [illegible] अर्जुनसिंह * और असेनका प्रतापसिंह × यह दोनों [illegible] प्रधान

* इसके माता [illegible] ही [illegible] !

× [illegible]
[illegible] !

से अपने दिन विताया करते हैं, इन लोकहितकारी भले मनुष्य किसानोंकी अवस्थाका संक्षेपसे विचार करना हमको वहुत ही उचित जान पडताहै । इस विचारके साथ हम उनका अतीत और वर्तमान चित्र पाठकोंके सामने रखकर अपनी बुद्धिके अनुसार उनके अधिकार अनधिकारका विचार करेंगे।

मेवाडराज्यमें किसान ही भूमिका अधिकारी होताहै। मेवाडकी भूमिमें उनका जो अधिकार है उसको वह लोग अपने देशमें उत्पन्न हुए अमरधव * के साथ उपमा दिया करतेहैं। उस अमर तृणकी समान वह अधिकार भी दृढ और अमर होताहै; भाग्यकी अदल वदलसे भी उस अधिकारमें कुछ अंतर नहीं आता। वे किसान लोग अपनी भूमिको (वापोता) नामसे पुकारा करतेहैं। उनकी मातृभाषामें पैतृक अधिकार समझानेके लिये इस वापोताके अतिरिक्त और कोई शब्द अति प्राचीन, अति शुद्ध अति भावपूर्ण और अत्यंत तेजयुक्त नहीं समझा जाता। यदि कोई स्वार्थी और अभिमानी राजा उनके इस पुराने अधिकारको छीनना चाहताहै; तव वह भगवान मनुजीके अमृतमय वाक्योंका उच्चारण करके गंभीर कंठसे कह उठतेहैं कि " जिन्होंने वनको काट छांट कर खेतोंको साफ किया और जोता, वह भूमि उनकी ही है " × जवतक संसारमें प्रेम करनेवाले व्यवस्थाकारोंके ऊपर भगवान मनुजीका नाम विराजमान रहेगा, जितने दिन तक उनकी वनाई हुई विधिका एक सूत्र भी इस जगतमें व्यवहार किया जायगा, उतने दिनतक कभी कोई इस अमृतमय वाक्यको नहीं भूल सकेगा। उतने दिनतक हजारों लडाई झगडे होनेपर भी हिंदू जातिकी यह पुरानी रीति कभी भी नहीं उठेगी। इस विधिके अनुसार ही मेवाड—केवल मेवाडके ही क्यों समस्त राजस्थानके रहनेवाले अत्यंत प्राचीन कालसे कहते हुए आयेहैं कि ' भोगराधनीराजहोः भोमराधनी माञ्जो. । अर्थात राजभागका (राजकरका) अधिकारी है; परंतु भूमिके अधिकारी हम हैं। भगवान मनुजीके समयसे हि-

वर्षके बीचमें चार बालक राजकुमारोंने मेवाडके शासनदंडको परिचालन किया। भीमसिंह इनमें चौथे हुए, जब यह सिंहासनपर बैठे तब इनकी अवस्था आठ वर्षकी थी। भीमसिंहने सब मिलाकर पचासवर्षतक राज्य किया था। इस आधी शताब्दीके मध्य मेवाडमें जो असीम अनर्थ उत्पन्न हुए थे, उनका वृत्तान्त पाठ करनेसे सहसा विश्वास होताहै कि विधाताने वीरवर बाप्पारावलके वंशको दीन हीन करनेके लिये ही मानो अन्तरमें बैठकर शिशोदीयकुलकी कठोर कर्मलेखको अंकित कियाथा। अप्राप्त व्यवहारकाल व्यतीत होजाने पर भी भीमसिंह बहुतदिनतक अपनी माताके अधीन रहे। इस दीर्घकालकी पराधीनतासे ही उनका भावीचरित्र गठित हुआ। वह स्वभावसे ही निस्तेज और उत्साहहीन होगए; विशेष करके दुर्भाग्यके अंकुश ताडनसे राणाकी बुद्धि इतनी छोटी होगईथी कि उनमें सामर्थ्य और विचारशीलताका नाम भी शेष न रहा। इस कारणसे कुछ एक कुचक्री आदमी उनको अपनी चालपर चलाने लगे। यद्यपि अप नृपति रत्नसिंहका दलबल बहुतही हीन होगयाथा, परन्तु यह बात नहीं थी, कि उसका नामतक शेष न रहाहो। परन्तु यह दल अपनी अकर्मण्यतासे इतना निःसहाय होगया था कि भट्टग्रंथोंमें आगे उसका कोई विवरण ही नहीं पाया जाता। यहाँतक कि उसकी मृत्युका वृत्तान्त भी कहीं नहीं जानागया।

न जाने किस कुघडीमें भारतवर्षके बीच परस्परकी फूटने पाँव धरा था। इसकी अन्तरदाही भयंकर अनलके प्रतापसे भारतकी समस्त भूमि दग्ध होगई। सुवर्णका भारत मानो जलताहुआ श्मशान बनगयाहै! यह सत्यहै कि प्रभुताको सबही मनुष्य चाहतेहैं; परन्तु यह नहीं कहाजासकता कि प्रभुताके लिये न्याय और ज्ञानके मूलमंत्रपर चरण प्रहार कियाजाय परन्तु दुःखकी बातहै कि राजपूतोंमे इस प्रकारकी अनर्थकारी सामर्थ्य प्रियताका विशेष प्रादुर्भाव देखाजाताहै। पहिले ही कहाजाचुकाहै कि चन्दावतलोगोंको राणाजीने ऊंचापद देरक्खाथा। इस समय संवत् १८४० (सन् १७८४ई०) में यह चन्दावतसरदारलोग अपने पुरानेशत्रु शक्तावतोंका रुधिर गिरानेके लिये तथा वैरका बदला लेनेके लिये राणाकी दीहुई उस सामर्थ्यका दुरव्यवहार करनेके लिये तय्यार हुए। [illegible] अर्जुनसिह * और असेतका प्रतापसिंह × यह दोनों [illegible] प्रधान

---

* इसके भ्राता अजितसिंहने ही [illegible]।

× प्रसिद्ध भगवतकुलमें इसका जन्म हुआ [illegible] उनके हाथसे मारागया।

तब अपनी जमीनको जोत सकताहै, उसकी भूमिके ऊपर कभी कोई पैमायशकी लकडी न डालसकेगा या उसमेंसे किसीको किसी प्रकारका कर न मिलसकेगा। न कोई कर लगाने पावेगा। तथापि वह अपने दिये हुए करसे इस बातको प्रमाणित करतेहैं कि हम सार्वभौम राजाके अधीन हैं। राणाजी परोक्षमें इन भूमियां किसानोंसे अनुकूलता पाया करतेहैं; परन्तु बृटिश प्रभुताके स्थापन करनेके समय जब मेवाडभूमिने बहुत दिनोंके पीछे शांतिका सुख प्राप्त किया तब उस समय वहांके मौजोंमें उसकी रक्षा अरक्षाका कोई विचार न हुआ, उस समयसे राणाजी ने पूर्व करसे उनको छुटकारा देकर उन भूमियां लोगोंको साधारण वेतनभोगीकी समान देशकी शांति, रक्षा अथवा सैनिक पदपर नियत करना आरंभ किया।

बापोताके ऊपर राजपूत किसानोंका अधिकार कहांतक दृढ है और वह लोग कैसी दृढताके साथ उस पर अधिकार किया करतेहैं; इस बातको हम कई एक पुराने प्रमाणोंसे प्रमाणित करेंगे। जिस समयमें मन्दोर नगर मारवाडकी राजधानी गिनाजाताथा। उस समय कोई गिह्लोट राजकुमार एकदिन मारवाडकी राजकुमारीको विवाहनेके लिये चला। राजपूतोंमें ऐसी रीति चली चली आई है कि यदि कोई नया जामाता विवाहकी रात्रिमें कन्याके पितासे दहेजमें कोई सम्पत्ति मांगे, तो वह उसको अवश्य ही देनी पडतीहै। इसी रीतिने राजस्थानमें बहुत ही अनर्थ कियेहैं। तदनुसार उस नए गिह्लोट राजकुमारने मेवाडमें बसानेके लिये अपने मंत्रीके परामर्शसे दश हजार जाट जो कि किसानीका काम करते थे अपने श्वशुरसे मांगे। इस अद्भुत दहेजका मांगना सुनकर मारवाडके राजाको आश्चर्य हुआ, परन्तु जामाताकी प्रार्थनाको पूर्ण तो करना ही होगा। इसकारण उन्होंने आज्ञा दी कि दश हजार जाटोंको इस देशसे जाना पडेगा। इस आज्ञाको सुनते ही जाट–किसान लोग अत्यन्त घबराये और महाराजकी आज्ञा पालन करनेको किसी प्रकार सम्मत न हुए। अनन्तर जब राजाने बहुत ही कडाई की तब सबने मिलकर एक साथ कहा.-"क्या हमलोग अपना बपौता और अपने पुत्रोंको स-म्पत्ति छोडकर एक अपरिचित भूमिके लिये परिश्रम करनेको उसके साथ परदेशमें जाय? महाराज! आप अपनी इच्छानुसार हमारा वध करा सकतेहैं; परन्तु आपको हम-लोग हमलोग स्थानको नहीं छोड सकते।" मन्दोरके राजाने पहिले ही समझ लियाथा कि जाटलोग इसमें कुछ आपत्ति उठावेंगे। जाटोंके असम्मत होनेसे सबों

कारमें न करसकेंगे।इसही कारणसे उसने यहांपर अपने स्त्री पुत्र और परिवारवर्गको रक्षित कियाथा। आज अर्जुनकी क्रोधाग्नि उस जनहीन वनके मध्यमें वसेहुए शिवगढ दुर्गके ऊपर प्रचंड दावानलरूपसे विस्तारित होगई। अर्जुन सेनासहित इस किलेकी तलैटीमें आपहुँचा और देखा कि दुर्ग रक्षक शून्यहै। तदुपरान्त क्रोधित अर्जुनने प्रचंड नाद करके अपने रणसिंगेंको वजाय मेघ गंभीर रवसे सिंहनाद की। उस हृदय-स्तंभनकारी सिंहनादसे दुर्गवासियोंकी निद्रा भंगहुई। वह इस प्रकारसे चारों ओर को भागे कि जैसे दावानलसे डरकर हाथियोंके झुंड इधर उधरसे भागतेहैं। लालजीके अतिरिक्त वहांपर और कोई युद्धविशारद वीर वर्तमान नहीं था। लालजीकी अवस्था लगभग सत्तर (७०) वर्षकी होगी। ग्रीष्मकालकी धूपोंने उसकी केशराशिको धूसरवर्ण करदियाहै, उसकी खाल लटककर शिथिल होगई है। तथापि वह वृद्धवीर प्रचंड उत्साहसे उत्साहित हो तरुण वीरकी समान हाथमें खड्ग लेकर शत्रुओंके सामने आया। दोनों दलोंमें घोर संग्राम होनेलगा। शत्रुओंकी संख्या वहुत थी, इस कारण वृद्धने रणभूमिमें प्राण देदिये। किलेको शत्रुओंने लेलिया। विजयी अर्जुनने पुत्रहन्ता संग्रामसिंहके बच्चोंको पशुकी समान वध करके अपनी पुत्रशोकानलको निर्वापण किया। उस भयंकर हत्याके समयमें संग्राम सिंहकी वृद्धामाताने अपने पतिका देह गोदमें लेकर चिताकी अग्निमें अपने प्राणोंको होमदिया।

कोरावडके शासक अर्जुनसिंहके इन कठोर अत्याचारसे प्रतिद्वन्दी सम्प्रदायोंमें जो भयंकर अनल प्रज्वलित हुई उसको कोई भी निर्वापण नहीं करसका। इस अग्निने समस्त मेवाडभूमिको भस्म करडाला। इसके ऊपर फिर बालक भीमकी अकर्मण्यता और राक्षस महाराष्ट्रियोंके बढतेहुए अत्याचारसे जो शोचनीय दशा हुई उससे कोई भी मेवाडका उद्धार नहीं करसका। समर संग्राम, प्रताप, और राजसिंहकी साधनभूमि, राजस्थानका नन्दनकानन चित्तौर आज भस्ममय श्मशान वन होगया। इन अनर्थोंके साथ २ चन्दावत और शक्तावतोंका पुराना वैर भी दिन २ बढने लगा। पहिले ही कहाजाचुकाहै कि चन्दावतगण राणाके प्रियपात्रथे. इनका सरदार ही मेवाडका मंत्री कियागया था। परन्तु दुराकांक्षी भीमसिंहने अत्यन्त अभिमानके होनेसे इस ऊंचे पदका अपमान किया था। चित्तौर और उदयपुरके बीचमें जितनी राजकीय भूमि थी, वह सबही उसने सिन्धीसेनाको देदी। [illegible]

भलीभांति ज्ञात होजायगा कि पटैल शब्द संस्कृत पति शब्दसे उत्पन्न हुआहै। मेवाडवाले ठीक ऐसेही अर्थमें इसका व्यवहार किया करतेहैं। पूर्वकालमें निर्वाचनके सिवाय पटेलका और कोई कर्त्तव्य नहीं था। गांवमें वह सबसे अच्छा गिना जाताथा। राजाके यहां गांवका प्रतिनिधि तथा किसान और राजाका मध्यस्थ भी पटैलको ही समझते थे। इस कारण राजा, प्रजा, दोनोंमें पटैलजीका सन्मान था। पटैलके पास बापोता भी होताहै, तथा किसान जो धान्य उत्पन्न करताहै, उसका चालीसवॉ भाग भी उसको मिला करताहै। राजाकी ओरसे एक कृपा उसपर और भी की जातीहै। अपने बापोताके अतिरिक्त वह जिस जमीनको जोतताहै, राजाज्ञाके द्वारा, वह उसपर नियत हुए करके तीसरे अंशसे भी छुटकारा पाजाता था। इस प्रकार मेवाडभूमिके पटैलोंका कर्त्तव्य निश्चय कियागया। पटैल ही राजा और किसानको एक बन्धनमें जोड सकताहै। किसानोंका प्रतिनिधि, ग्रामीण समाजका अगुआ पटैल ही है। राजा पटैलके द्वारा ही असामी किसानोंकी अवस्थाको जान लिया करताहै। महाराष्ट्रियोंके कठोर अत्याचारसे मेवाडकी भाग्यतरंग जब दूसरी ओरको फिरी थी, उससे पहिले, स्वाधीनकी लीलाभूमि मध्यपाटक्षेत्रमें पटैलोंकी ऐसी ही सामर्थ्य थी। परन्तु जैसे २ महाराष्ट्रियोंकी लूट खसोट बढने लगी उसहीके साथ पटैल लोग भी अपनी सामर्थ्यको बढाते गये और यहांतक बढे कि फिर तो गांवमें जो कुछ थे सो पटैलही थे। महाराष्ट्रीलोग जो कर किसानोंपर लगातेथे उसको यही वसूल करतेथे और कभी २ यही लोग जामिनकी भांति उन दुष्टोंके डेरेमें पडेरहतेथे। शत्रुओंने जितनी बार चढाई करके मेवाडवालोंसे कर मांगा, उतनी ही बार पटैलोंने आनन्दसे उस करको भुगताना किया। प्रगटमें तो पटैल लोग अपनेको किसानोंका प्रतिनिधि बनाते थे, परन्तु अवसर पाते ही बिचारे किसानका नाश करदेते थे। अगणित किसान लोग पटैल लोगोंका ही भरोसा करके निश्चिन्त रहते थे, परन्तु स्वार्थी पटैल मौका पाकर उन्हींकी सम्पत्तिसे अपना पेट भरते थे। पठान या महाराष्ट्रीलोग जिस समय चढाई करतेथे उस समय पटैलोंकी पौबारह रहती थी। सबसे पहिले तो वह अपनी रक्षाका उपाय सोचतेथे तथा किसानोंका सत्यानाश करके अपनी कोठी—भरालेते थे। पहिले तो वह किसानोंसे रुपया ले लेतेथे,—रुपया न मिला तो उनकी जमीन तथा जमीन भी काम न लगती थी तो उनको पकड और फिर [illegible] जाना [illegible] करतेथे। इस प्रकारसे [illegible]

इस समयमें गिह्लौट वीरगणोंकी प्राचीन शूरता फिर भी एक मुहूर्तके लिये दमकने लगी। राणाजीके दीवान मालदास महता और उनके सहकारी मौजीराम दोनों ही विशेष साहसी और बुद्धिमान् थे। इन्होंने प्रयोजन समझकर पहिले तो नीमबहेडा और उसके निकटवाले महाराष्ट्री किलोंको अपने अधिकारमें करलिया। पराजित महाराष्ट्रियोंने अत्यन्त भयभीत होकर जावद नामक स्थानमें अपनी बिखरीहुई सेनाको इकट्ठा किया;परन्तु उनके समस्त उपाय विफल होगये। कारण कि राजपूतोंने इस किलेको भी घेरकर वहांसे भी समस्त महाराष्ट्रियोंको भगादिया। जावदका शासनकर्ता शिवाजीनाना विजित होनेपर भी विजयी राजपूतोंकी अनुमति लेकर निर्विघ्न अपने भाई बन्धु और द्रव्य सामग्रीके साथ किलेसे चलागया। इस ओर वेगू सर्दार मेघसिंह * के पुत्रोंने एकत्र होकर महाराष्ट्रियोंको वेगू, सिंगौली और प्रान्तरमें बसेहुए अन्यान्य परगनोंसे निकालदिया सुअवसर समझकर चन्दावतोंने भी अपनी भूमिवृत्ति रामपुर जनपदको उद्धार करलिया। इसप्रकारसे थोडे ही समयमें मेवाडवालोंके हाथसे निकलेहुए समस्त राज्य ही कुछ दिनके लिये आनंदमय होगये। मेवाडका निविड विषादरूपी अंधकार कुछदिनके लिये लोप होगया। वीरजननी मेवाडभूमि एक वार और भी हँसी—मेवाडके निवासी, महाराष्ट्रियोंकी कठोर वेडीसे छुटकारा पाकर आनन्दसे शिशोदीयकुलका जय जय कार करनेलगे।

जयोत्फुल्ल राजपूतोंने मेवाड और मारवाडकी सीमापर वहनेवाली गिरकिया नामक नदीके किनारेपर बसेहुए चहूंनामक स्थानमें अपनी विजयिनी सेनाको मेवाडके और २ स्थानोंमें भेजनेका उद्योग किया। परन्तु उनकी निर्बुद्धिने सबही काम विगाड दिये। जयमदसे मत्त होकर उन्होंने एकवार भी अपनी अवस्थाको विचारकर नहीं देखा कि हमको क्या करनाहै ? और बिना सोचे विचारे जिधर तिधर तलवार चलानेको तइयार होगये। महाराष्ट्रियोंने सन्धिपत्रका अपमान करके अन्यायसे जिन देशोंको अपने अधिकारमें करलिया था यदि राजपूतगण उनका ही उद्धार करनेको तइयार होते तो उनका समस्त उद्योग सफल होजाता. परन्तु उन्होंने भ्रान्त और मूढ होकर समझा कि जब एकवार महाराष्ट्रिलोग पराजित होगये तब तो वह फिर कभी भी सिर नहीं उठावेंगे। अब

* मेघसिंह वेगू जनपदका महीपति, इनका [illegible] चन्दावतोंमें [illegible]। इनके [illegible] सन्तति मेघावत नामसे प्रसिद्ध हुई। मेघसिंहके [illegible] "[illegible]" नामसे भी पुकारा जाता था।

लोग फिर अपने देशमें आते और उन खेतोंसे सुवर्णमय फल उत्पन्न किया करते थे; पटेलोंके घरमें फिर घीकी कडाही चढ जाती थी, किसानोंके साथ फिर उनका वही वर्ताव होजाताथा । विचारे किसानोंको देशमें लौटनेपर भी शांति नहीं मिलती थी। पिशाचरूपी पटेलोंके घोर अत्याचारसे किसानोंका जीवन दुःखमय होजाताथा। इस प्रकार दुःखके ऊपर दुःख पाकर मेवाडका कृषक कुल निर्मूल होने लगा; मेवाडकी सुख शांति नष्ट हुई। धीरे २ सभीलोग इस बातको जानगये कि पटेललोग मेवाडके सुखरूपी सूर्यके लिये छद्मवेशी राहु हैं। सभी समझगये कि विना शत्रुको पराजित कियेहुए देशका मंगल न होगा। परन्तु शत्रु जभी पराजित होंगे कि जब इन पटेलजीका मेवाडसे नामतक लोप होजाय। परन्तु यह कार्य कुछ सरल न था। क्योंकि बहुतसे बडे राजकर्मचारी उन लोगोंकी तरफदारी करतेथे। उनको पदच्युत करनेसे बडा २ के स्वार्थमें आघात लगेगा। और वह लोग पटेलोंकी तरफदारी करनेके लिये राज्यमें अशांतिका बीज बोवेंगे।

जिस समय दीन जन हितकारी टाडसाहबने किसानोंकी दुर्दशाका यह वृत्तांत सुना, वह तत्काल उस विपत्तिको दूर करनेके लिये तइयार होगये। प्रथम तो उन्होंने सब प्रकारसे पटेलोंकी अवस्थाका विचार करदिया। मेवाडके पुराने इतिहासको विचारमेंसे उनको ज्ञात होगया, कि गांववाले लोभी पटेलोंको चुना करते थे। वह लोग एकमत होकर जिसको चाहतेथे उसको पटेल बनवा दिया-करते थे राजा भी उसीको स्वीकार करके पटेलकी सनद देदेता था। तदनुसार मेवा-डमें इस समय वही रीति चलाई गई। मेवाडवालोंने एकसाथ परामर्श करके उसको ही निर्वाचित किया। राणाजी भी उसीको मंजूर करते और सबके सामने उसके शिरपर पगिया बंधवाकर पटेलका पद देते थे। निर्वाचित हुआ नया आदमी राजाको "नजर" देकर नये पदपर विराजमान होजाताथा। पटेलका उहदा पहले बिका करता था। राजा कुछ बंधाहुआ धन लेकर चाहे जिसको पटेल बना दिया करतेथे, ऐसा करनेसे राज्यका अत्यंत अमंगल होताथा कहीं यही रीति इस समयमें फिर न चलजाय उसको रोकनेके लिये टाडसाहबने उत्तम प्रबंध करदिया। उन्होंने राणासे प्रतिज्ञा करा ली, जिसमें राणाजीने यह [illegible] था " कि पटेलके चुनावमें हम कभी दखल न देंगे और न उनके साथ [illegible] [illegible] [illegible] जायगी।"

रमें आया। उदयपुरमें आते ही उसने वहाना किया कि "मेरा विचार मंत्री सोमजीके साथ मिलकर कार्य करनेकाहै।" परन्तु उसका अभिप्राय यह था कि सामाजिक कौशलजालमें फसाकर अपना कार्य सिद्ध करूं। बुद्धिमान् सोमजीके द्वारा ही शालुम्ब्रासर्दारके अभिलषित आशारूपी मार्गमें कांटा पडाथा। इस समय नवीन मंत्रीका संहार करके उस कांटेका निकालना ही शालुम्ब्रा सर्दारका अभिप्राय था। एक समय मंत्री सोमजी अपने कार्यालयमें बैठ हुए राजकार्य कररहेथे, उस ही समयमें कोरावडके अर्जुनसिंह और भदेश्वरका सामन्त सर्दारसिंह यह दोनों वहां आये मंत्री सोमजीके सामने आते ही सर्दारसिंहने तीव्र स्वरसे उनको कहा "आपने किस साहससे हमारी जागीरको जप्त किया। और इस वाक्यको विना ही समाप्त किये अपनी छूरी मंत्रीके हृदयमें मारी"। इस लोमहर्षणकारी वधके होनेसे सारे राज्यमें अत्यन्त गोलमाल होनेलगा। राजकर्मचारीगण चन्दावतोंके भयसे अत्यन्त ही शंकित होगये। उस समय राणाजी "सहेलियावाडी" (वनदेवताका बाग) नामक बगीचेमें विदनोरके राजा जैतसिंह तथा अन्यान्य सर्दारोंके साथ आनंद विहारके साथ समयको वितारहेथे। अभागे सोमजीके दो भ्राता "रक्षाकरो २" कहते और चिल्लातेहुए वहांपर आये। अर्जुनसिंह भी उनका पीछा करताहुआ वहांपर आया। उसका दाहिना हाथ उस समय भी सोमजीके रुधिरसे लाल होरहा था। अर्जुनसिंहका यह साहस देखकर सबही चकित हुए और किसीपर कुछ भी न होसका। केवल राणाने विश्वासघात कहकर उसको दूरसे ही जानेकी आज्ञा दी। इसके उपरान्त इस वीभत्स और हत्याकाण्डके परिचालकगण अपने सेनापति शालुम्ब्रासर्दारके साथ चित्तौरनगरको गये। मंत्रीका पद उनके भ्राता शिवदास और सतीदासको मिला। इन्होंने शक्तावतोंकी सहायता पाकर विद्रोही चंदावतोंसे अनेक वार युद्ध किया। इनलोगोंने जो युद्ध किये उनमेंसे केवल अकोला स्थानमें विद्रोहियोंपर जय पाईथी। इस युद्धमें कोरावडका सर्दार अर्जुनसिंह चन्दावतलोगोंका सर्दार बना था। परन्तु इस युद्धके थोडे ही दिन पीछे ही खैरोद स्थानमें शक्तावतगण फिर पराजित हुए। इस भयंकर संघर्षकालके समय राज्यमें ऐसी विशृंखला और ऐसा विद्रोह मचगया कि समस्त प्रजा[illegible] मरातोंका होने लगी। मानो भयंकर [illegible] विद्रोहका [illegible]

[illegible]

होगा कि यह सब संस्कार अमूलक और भ्रमयुक्त हैं। कारण कि अधिकांश किसान लोग वर्णज्ञान हीन होनेके कारण राज्यविधिको किञ्चित भी नहीं जानतेहैं। राजकर्मचारी ही अपना मतलब सिद्ध करनेके लिये उनको भय दिखाते और अनेक प्रकारके अत्याचार करतेहैं; उनका प्रतिनिधि पटैल भी अपना पेट भरनेके लिये तइयार होकर किसानोंके सुखदुःखको नहीं विचारता। यही कारण है जो किसानगण कष्टके मारे उन नरपिशाच कर्मचारियोंकी पूजा करतेहैं। मूल बात तो यह है कि किसानोंको कहीं पर भी सुख नहीं है। जबतक वह स्वयं विद्याको न सीखकर स्वयं अपनी रक्षा न कर सकेंगे तबतक किसी प्रकारसे उनका मंगल नहीं होगा। हाय! वह दिन कब आवेगा? वह समय कब आवेगा कि भारतके किसान लोग अज्ञानरूपी अँधेरेसे छुटकारा पाकर स्वयं अपनी अवस्थाको समझजायँगे?—वह कौन सी घडी होगी कि जब जमीदार और प्रजाकी विषमता जडसे उखडजायगी? वह कौन सा युग होगा कि जिस दिन भारतके भ्रातागण ऐक्यताके पवित्र मंत्रसे दीक्षित होकर परस्पर एक दूसरेको हृदयसे लगाय जातीयबलको इकट्ठा करेंगे? क्या वह दिन आवेगा? रुधिरकी प्यासी क्रूर सामाजिक और राजनैतिक विषमता जब उठ जायगी?—कह नहीं सकते।—परंतु आशा होती है कि—गिराहुआ भारत फिर उठेगा। भारतवासीगण इस जमीदार और प्रजाकी घोर विषमतासे छुटकारा पाय एक साथ ऐक्यताके सुखको अनुभव करेंगे। हमको आशा है कि फिर कोटि शाक्यसिंह और गुरु गोविंदसिंह उत्पन्न होकर ऐक्यताकी विजयदुंदुभीको बजाय:—जन्मभूमिका दुःख दूर बहाय:—इस असार संसारमें प्राणोत्सर्ग और देशानुरागका प्रचंड प्रमाण दिखावेंगे।

जिस दिन परम हितकारी ब्रिटिश गवर्नमेंटने मेवाडके दग्ध हृदयपर शान्तिका जल छिडका उसही दिनसे मेवाडकी अवस्था उन्नत वा अवनत होनेलगी, इस बातका विचार करना इस समय हमारा मुख्य कर्तव्य है। अतएव आगे उसहीका विचार कियाजाताहै। फरवरी सन् १८१८ ई० से मई सन् १८२? ई० तक मेवाडमें जिस शासन विधानका प्रचार हुआ था, उसका पाठ करनेसे स्पष्ट ही समझमें आजाताहै कि मेवाडकी दशा बहुतायतसे उन्नतिपर पहुँचीहै। मेवाडकी [illegible] उन्नति किस प्रकारसे हुई उसका निश्चय करनेके लिये सन १८२१ ई० में [illegible] आलमें मेवाडके मांड, [illegible] और [illegible] इन तीन जनपदोंकी [illegible] होगई थी। इनके [illegible] जोडदेनेपर [illegible]

बैठे, और बहुतसे मनुष्य उनकी सहायता चाहने लगे। यह अश्वारोहीगण अनेक प्रकारसे धन पैदा करनेलगे। वह लोग किसानोंके धनको अपनी की हुई सहायताके बदलेमें लेने लगे। बनियोंको भी इन लोगोंने भलीभांतिसे लूटा, या उनके ऊपर कर लगाया। उन लोगोंका यह पिछला आचरण इतना प्रबल होगया था कि बिना महसूल दिये कोई वणिक अपनी सामग्रीको बिना विघ्नके कहीं पर नहीं लेजाता था। इस प्रकारसे कर ग्रहण करना राजपूतोंकी वृत्तिमें गिनाजाने लगा। जब यह अत्याचार दूर होगया उस समय भी तो उक्त राजपूतगण इस करका दावा करते थे। इस दावेकी मीमांसा करना फिर बहुत ही कठिन होगया था। राज्यका सार इस विद्रोहसे शून्य होगया। परन्तु इसके ऊपर जब महाराष्ट्रियोंके झुंडके झुंड मेवाडभूमिके ऊपर टूटने लगे, तब जो दशा इस राज्यकी हुई उसका वर्णन करना हमारी सामर्थ्यसे बाहरहै।

चन्दावतोंके विद्रोही होनेसे राज्यमें इसप्रकारका अनर्थ उत्पन्न होता हुआ देखकर राणा और उनके मंत्रियोंने चित्तौरसे विद्रोहियोंको निकालनेके लिये सेंधियाकी सहायता लेनेका विचार किया। जिस सेंधियाने रतनसिंहकी सहायता करनेको तइयार होकर मेवाडका आधा रुधिर चूसलियाथा, आज विधाताकी बिडम्बनासे राणाने उसहीकी अनुकूलता चाही। वह अत्यन्त ही अकर्मण्य थे, नहीं तो मेवाडका सत्यानाश करनेवालेको किस कारणसे अपना बन्धु बतलाते? कहतेहैं कि जालिमसिंहने राणाजीको इस विषयमें परामर्श दी थी। सेंधिया उस समय पुण्यक्षेत्र पुष्करजीके किनारेपर आनन्दपूर्वक छावनी डालेहुए पड़ाथा * लालसोटमें पराजित होकर उसने फ्रांसके विख्यात वीर डि–बोइन नामक सरदारको अपनी सेनाके कवायद सिखानेमें नियुक्त किया था। डि–बोइन अत्यन्त शस्त्रनिपुण वीर था! इसकी शिक्षाके गुणसे महाराष्ट्री सेनाने पुनर्वार अपने पूर्वविक्रमको प्राप्त करलियाथा। क्रमानुसार मैरता और पट्टन क्षेत्रमें उस महाराष्ट्री सेनाकी विक्रमाग्नि प्रचंड तेजसे जलने लगी। राठौरगण प्रचंडवीरता और प्राणोंका उत्सर्ग करके भी उस विक्रमानलको निर्वापण न करसके—स्वयं पराजित हुए। उनके पराजित होनेसे सेंधियाको वह प्रतिष्ठा पुनर्वार प्राप्त होगई कि जिसको उसने लालसोट और जोधपुरकी लड़ाईमें खोदिया था। राणाजीकी आज्ञाके अनुसार जालिमसिंहने मेवाडके प्रधान मंत्रियोंके साथ उस पुष्करस्थानमें पहुँचकर अपना अभिप्राय

---

* सन् १८४[illegible] सन् १७[illegible] ई०

वासान्तिक धान्य	सन् १८१८ ई० का	४००००) रु०
" "	" १८१९ ई० का	४५१२८१) रु०
" "	" १८२० ई० का	६५११००) रु०
" "	" १८२१ ई० का	१०१८४७८) रु०
" "	" १८२२ ई० का	९३६६४०) रु०

पिछले दो वर्षोंकी एजंट साहबने कुछ विशेष देखभाल नहीं की थी, तथापि यह बडी आमदनी हुई थी।

पूर्वोक्त पांचवर्षोंमें जो आमदनी वाणिज्य करसे हुई थी, उसकी सूची भी नीचे लिखी जातीहै।

" सन् १८१८ ई०	नाममात्र आमदनी। (कुछ थोडी)
" १८१९ ई०	९६६८३) रु०
" १८२० ई०	१६५१०८) रु०
" १८२१ ई०	२२००००) रु०
" १८२२ ई०	२१७०००) रु०

ऊपरकी जो दो सूची लिखीगई यदि उनका मिलान मेवाडकी पूर्वावस्थाके साथ किया जाय तो साफ मालूम होजायगा कि अंगरेज़ एजेन्टकी सहायतासे राणाजीने भलीभांतिसे अपने देशकी दशाका सुधार कियाथा। खेती, शिल्प और वाणिज्यको एक ओर रखकर मेवाडभूमिकी इन धातु खानोंका विचार किया जाय कि जो पृथ्वीके नीचे छिपीहुई हैं; यदि उनका उचित व्यवहार हो तो थोडे ही समयके बीचमें मेवाडभूमि नन्दन काननकी समान शोभायमान होसकतीहै। ५० वर्षसे कुछ पहिले जावरा और दुंवाड॰ की टीन खानियोंसे प्रतिवर्ष ३०००००) रु० की आमदनी होतीथी। इनके अतिरिक्त मेवाडमें तांबेकी खानें भीहैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन खानोंसे मेवाडको बहुत सी आमदनी होती थी। परन्तु मेवाडके दुर्भाग्यसे खानोंके खोदनेवाले कालके गालमें चले गये।

रूपी सूर्यका उदय होजाता,-विषादमयी कालरात्रि दूर होकर प्रभात होजाता। परन्तु ब्रह्माजीने तो लोहेकी लेखिनीसे अभागिनी भारतभूमिके कपालमें पराधीनता लिख दी है; वह गंभीर लिखन शीघ्र मिटनेवाली नहीं है; इसही कारणसे जालिमसिंहको वह अमूल्य वर प्राप्त न होसका। अपने महामंत्रको सिद्ध करनेके लिये उसने जिस कठोर कार्यक्षेत्रमें पांव बढायाथा, उसमें विचरण करते हुए पांव रपट गया। उस बार गिरजानेसे फिर उस वीर पर नहीं सॅभलागया। उस ही कारणसे भारतके सर्वमय कर्त्ता हर्त्ता न होकर जालिमसिंह केवल राजपूतानेका ही नेष्टर * रहा।

चतुर जालिमसिंहके हृदयमें जो आशा धीरे २ बढरहीथी, उसके पूर्ण होनेका अवसर प्राप्त हुआ। राणाने अपनी सेनाके दृढ करनेका भार जालिमसिंहहीको सौंप रक्खाथा। इस भारी कार्यके साधन समयमें जालिमसिंह अपना कार्य सिद्ध करनेके लिये कौशलसे काम लेनेलगा। यदि उसकी चालाकी सफल होजाती, यदि उसका अभिप्राय सिद्ध होजाता तो भारतवर्षके लिये एक बडा ही मंगलमय कार्य होजाता। जिस गुरुभारको राणाजीने जालिम पर सौंपा उसके भलीभांतिसे साधन करनेमें बहुतसे धनका प्रयोजन था। इसके अतिरिक्त विद्रोहियोंके हाथसे चित्तौरके छुटानेमें भी बहुतसा धन लगजानेकी संभावना थी। विना धनके तो कोई भी कार्य नहीं होसकता, इस कारण उस समय भी धनका प्रयोजन आपडा। किन्तु यह धन आवे कहांसे? जालिमसिंहको उस समय यही चिन्ता प्रवल हुई। चिन्ता करते २ निश्चय किया कि विद्रोहीगण ही जब कि इस धनके खर्च होनेमें प्रधान कारण है, तब तो उनलोगोंसे ही उसको संग्रह करना चाहिये। राजपरिवारकी जिन जागीरोंको चन्दावतलोगोंने दबा लियाहै उन सबको लेकर (६४) चौंसठ लाख रुपया भी उनसे वसूल करना चाहिये। वह चौंसठ लाख रुपया पांच भागोंमें बॉटकर इसके तीन अंश सैंधियाको दियेजांयगे, बाकी रुपया राणाके आवश्यकीय कार्योंमें व्यय होगा। इस भांतिसे कार्यका निश्चय होजानेपर जालिमसिंह एक बलवान सेनाको साथ लेकर चित्तौरकी ओरको चला। अम्बाजी इंगले इस

* ग्रीसके इतिहासमें नेष्टर बलीमान्तिके प्रसिद्ध है। इनके [illegible] को वरुणदेवताका पुत्र कहाहै। प्रसिद्ध [illegible] नेष्टरके [illegible] बड बुद्धिमान, राजनीति विशारद और रणकुशल [illegible] जिया था और अपने नेत्रोंसे इनने अपनी तीन [illegible] देखा था।

अठारहवां अध्याय १८.

महाराणा जवानसिंह;–उनका चरित्र;–मेवाडकी शासन शृंखला, माहिरवाडाके सम्बन्धमें बृटिश गवर्नमेन्टके साथ राणाका नव सन्धि बन्धन;–राणाकीअपरिमित व्ययिता:–ऋण वृद्धि;–राजधनकी कमी;–बृटिश गवर्नमेन्टको कर देनेसें राणाकी असामर्थ्यता;–राणाके ऊपर कोर्ट आफ डाइरेक्टरकी अनुज्ञता:–राणा जवानसिंहका प्राणत्याग, राणा सर्दारसिंह:–सामन्तोंके साथ उनका विवाद;–नवसंधि बंधन;–उदयपुरकी बृटिशसेनाके लिये राणाकी प्रार्थना:–उसमें अंग्रेज गवर्नमेन्टकी असम्मति.–राणा सरदारसिंहका प्राणत्याग।

पुरमें चलेआये। राजाज्ञा * के ऐसे अपमानसे एजंट साहव बहुत ही दुःखित हुए; उन्होंने अपमानकर्त्ताको भारी दंड देना निश्चय किया। जिस समय वह समाचार आया उस समय राणाजी अपने समस्त इष्टमित्रोंके साथ सूर्यद्वारकी सभामें वैठे थे। अन्यान्य सर्दारोंके साथ हमीर भी वहाँ वैठाथा। एजंट साहवने वहां पहुँचकर प्रतिहारीके द्वारा अपने आनेका समाचार राणाजीको दिया, तदुपरान्त सभामें जाकर शिष्टाचार सहित मंत्रीसे कहा; "आपके राणाजीका जो दुर्ग हमीरके पास था, उसका अधिकार लेलिया गया?" सवहीको शोकित देखकर एजेंट साहव समझगये कि पूर्वोक्त वृत्तान्तको समस्त उदयपुरवाले जानगयेहैं। परन्तु उन्होंने राणाजीसे इस प्रकार वाक्यारंभ किया कि मानो उस अपमानकी उन्हें खवर ही नहीं है। कुछ वातचीत होनेके उपरान्त राणासे कहा। "श्रीमान्की आज्ञाका ऐसा अपमान होजाताहै, यदि मैं इस समय उदयपुरमें रहूंगा तो वृटिशगवर्नमेन्ट मुझको दोषी समझेगी। अतएव श्रीमान्के अपमानकर्ताको यथायोग्य दंड देनेके लिये विशेष चेष्टा कीजायगी।" एजेंटसाहवके ऐसे उत्साहित वचन सुनकर राणाजीको भी ढाढस हुआ, और उन्होंने अपने सन्मानको अचल रखनेके लिये यह कहना आरंभ किया–"सर्दार और सेनापतिगण! मेरी इच्छा नहीं है कि आप लोगोंके ऊपर किसी प्रकारका कठोर अथवा अन्याय व्यवहार किया जाय; परन्तु इसके द्वारा आप लोग ऐसा न समझें कि अपनी मर्यादा और सन्मानके अचल रखनेको मैं उचित कार्य न करूंगा।" फिर उसी समय "बीडा" लानेकी आज्ञा दी। शीघ्रही उनकी आज्ञाका पालन कियागया। पीछे हमीरको कठोर वाणीसे आज्ञा दी। "तुम अभी मेरे सामनेसे दूर होकर एक घंटेके बीच इस नगरको छोडकर चलेजाओ।" राणाजी इतने क्रोधित होगयेथे कि यदि एजेंट साहव उनको न रोकते तो वह निश्चय ही हमीरको [illegible]। साथ २ में इस आज्ञाका भी प्रचार हुआ कि जबतक हमीर छीनीहुई सम्पत्ति वापिस न करे, तबतक उसकी समस्त सम्पत्ति सरकारमें जप्त रहेगी। हमीर निराश हुआ। इस समय उसकी चाल चूकगई. कार्य उलटा हुआ। वह अत्यन्त दुःखित हो उसही रात्रिमें उदयपुरको छोडकर चलागया। अपने नगरमें पहुंचकर केवल छीनीहुई सम्पत्ति ही राणाको नहीं दी. [illegible] कि जिसका विचार राणाजी या एजेंटसाहवको भी नहीं हुआ था। [illegible]

---

* हमीर और [illegible] उन्होंने उनके दुर्गपर अधिकार करनेकी [illegible]

महाराणा जवानसिंहने एक लिखेहुए संधिपत्रमें * आठ वर्षके लिये उनको फिर लौटादिये सन् १८३३ ईसवीमें सात मार्चको बियावार नामक स्थानमें संधिपत्र लिखागया, अंग्रेज गवर्नमेन्टकी ओरसे लेफटिनन्ट कर्नल कटन और महाराणाकी ओरसे प्रधानमन्त्री महता शेरसिंह, प्रधान श्यामनाथ पुरोहित और राय चिरंजीवलालने उसपर हस्ताक्षर किये। आलस्य विलासिता और इन्द्रियोंकी आसक्ति जिस राजाके ऊपर अपना अधिकार करलेतीहै, उस राजाका खजाना अतुल धनसे पूर्ण होनेपर भी बहुत जल्दी खाली होजाताहै। महाराणा जवानसिंहने विलासभोगमें मोहमंत्रसे मोहित हो बहुत थोडे ही समयमें अपना सम्पूर्ण धन उठादिया, इसी कारणसे उनका सम्पूर्ण खजाना खाली होगया, जैसे २ उनकी आयु बढती जातीथी वैसे २ ही उनकी इन्द्रियोंमें आसक्ति और पापकरनेमें अधिक मन बढता जाताथा, इसी कारण राज्यके पालनमें उनको पहलेकी भाँति राज्यके देखने भालनेका अवकाश न मिला और इसीसे राज्यकी अवस्था धीरे २ अत्यन्त ही शोचनीय होगयी। और अन्तमें राणा जवानसिंहने धनहीन होकर सामन्त और धनवान प्रजासे ऋण करनेमें भी कसर न की। भोग विलासताके कारण वह ऋण दिनपर दिन बढता ही गया।

राणाने शासन भागकी ओरको आँख उठाकर भी न देखा, इसीसे प्रत्येक वर्षमें दो लाख रुपयेका खर्च होने लगा। इधर गवर्नमेन्टको जो सन्धिपत्रके

---

* सन्धिपत्र।

वोंका यह विश्वास चला आता है और सदा यही विश्वास चला जायगा । त्रिकालके विधान करता मनुजी इस लोकसे चलेगये, भारतभूमिके उस दिनसे कितने ही लौटफेर हुए । कितने ही विदेशी विधर्मी और अत्याचारी लोगोंने यमराजकी समान भारतका राज्य किया, भाव, वर्ण, और आचार व्यवहारका कितना ही अंतर होगया । तथापि यह विश्वास पूर्ववत् ही बनाहुआ है;—इसका एक परमाणु भी नहीं बदला । क्या करनाटक देशमें, क्या कण्वदेशमें, क्या राजस्थानमें यहांतक कि भारतके चाहे जिस प्रदेशवाली हिन्दूजातिके विधान ग्रंथको देखिये, तो उसमें सुवर्णाक्षरसे यही लिखाहुआ है कि " स्थाणुच्छेदस्य केदारम् "

एरियन, कर्टियस, और डियोडोरस इत्यादिक विलायतके प्राचीन पंडितोंने जिस समयका इतिहास संकलन किया है, यदि हम उस समयका वृत्तांत लेकर विचार करें कि प्रत्येक नागरिक तन्त्र, प्रत्येक राज्यमें एक २ राज्यके समान विराजमान है । उसकी शासनाविधि राज्य चक्रवर्त्तीसे भी अलग होतीहै; केवल वह लोग शत्रुकी चढाईसे देशकी रक्षा करतेथे, इस लिये उनसे नियामित भाग अर्थात् करमें एक अंश प्राप्त होताथा वैसे ही राजस्थानके प्रत्येक राज्यमें लाखों वस्तियोंका चित्र देखा जाताहै । उनकी उन पृथक २ वस्तियोंका एक दूसरेके साथ कोई संबंध नहीं दिखाई देता । उन समस्त वस्तियोंके अध्यक्ष लोग अपनी २ शासनाधीन समाजमें हर्ता, कर्त्ता और विधाता होतेहैं । वह लोग सार्वभौमिक स्वामीको अपने धन धान्यसे किसी एक प्रकारका नियामित भाग देतेहैं परन्तु राजा उनके लिये विधि-व्यवस्था नहीं बनाता, न उनकी शांति बनाये रखनेका कोई उपाय करताहै, न रक्षक ही नियत होतेहैं । टाडसाहिब कहतेहैं कि "इन पृथ्वीव्यापी शासन विधि के अभावसे गॉवके रहनेवाले शांतिकी रक्षा, विचार तथा दंडादिकका जो अपने आप ही प्रयोग किया करतेहैं उससे ही यह पंचायतकी रीति निकलीहै, दादा परदादाकी अधिकार की हुई भूमिको राजपूत किसान "बापोता" नामसे पुकारतेहैं परन्तु बापोताका वह अधिकारी यदि युद्धजीवी हो तो "भोमिया" नामसे पुकारा जायगा । दिल्लीके मुसलमान बादशाह अपने गौरवके मध्याह्न समयमें उन विजित राजाओंके ऊपर "जमीदार" आख्या दिया करतेथे । भूमिके यथार्थ अधिकारी ही उस समय जमीदारके नामसे पुकारे जातेथे ।

भलीभांतिसे विचार करनेपर यह प्रमाणित हो जाता है कि [illegible] ही पूरा अधिकार होताहै, उस अधिकारके [illegible] करके भूमिका [illegible]

परन्तु कुछ ही कालके बीचमें फिर पहलेकी समान मनमें भेद पडजानेसे अनेक भाँतिकी विशृंखलता उपस्थित कर दी। परस्परका लडाई, झगडा ही मेवाडकी अवनतिका कारण हुआ, इस कारण बृटिश गवर्नमेन्टके कल्याणमें महाराष्ट्र चोरोंके भयंकर अत्याचारोंसे मेवाड छुटकारा पाकर भी इस परस्परकी अग्निसे धीरे २ जर्जर होनेलगा; राणा प्रतापसिंह व राणा राजसिंहके प्रबल प्रतापके समयमें किसी सामन्तका उनके विरुद्धमें शिर उठाना तो दूर रहा वरन उनके विरुद्ध बोलनेकी सामर्थ्य भी नहीं थी, यदि राणा प्रतापसिंह वा राजसिंह अपने किसी सामन्तके ऊपर अत्याचार भी कर लेते तो भी वह सामन्त उनका सामना करनेको अत्यन्त ही घृणित कार्य विचारता, उस समय राणागण तथा सामन्तमंडली जातिके सन्मानकी रक्षाके लिये एकमत हो कार्यक्षेत्रका विचार करतेथे, परन्तु इस समय दोनोंके हृदयकी अवस्थाके बदलजानेसे देशके अधःपतनके सूत्रमें शीघ्रही दोनोंके बीचमें विवादकी आग भयंकर रूपसे प्रज्वलित होगयी। इस सूत्रमें बहुतसी प्रजा मेवाडको छोडकर जहांतहां भागगयी। अपना बल अत्यन्त ही घटा हुआ जानकर राणा सरदारसिंहने १८४१ ईसवीमें बृटिश गवर्नमेन्टके सन्मुख यह प्रस्ताव किया, कि एक दल तो अंग्रेजी पैदल सेनाका उनकी सामर्थ्यको चलाने और उत्तेजित करनेके लिये सामन्तोंको शासन करनेके निमित्त उदयपुरकी रक्षा करनेमें नियुक्त रहे, परन्तु इसका विचार विशेष होनेके कारण अंग्रेज गवर्नमेन्टने उसमें अपनी सम्मति नहीं दी।

राणा सरदारसिंहने १८४२ ईस्वीमें इस मायामय शरीरको छोडदिया। राणा भीमसिंह और राणा जवानसिंह भोग विलासिताके वशीभूत होकर जिस भांति राज्यके शासनमें कर्महीनता प्रकाश कर गयेहैं, सरदारसिंह उस चरित्रके मनुष्य न होनेपर भी केवल अपने उग्र स्वभावके कारण सम्पूर्ण सामन्तोंसे अप्रिय होगये।

महाराजकी प्रतिज्ञा भंग हुई, परन्तु वह इसके लिये कुछ दुःखित या चिन्ताग्रस्त न हुए; कारण कि उन्होंने इतने किसानोंके चलेजानेसे राज्यकी हानि ही समझी थी। परन्तु विधाताकी इच्छा कुछ औरही थी। मेवाडके राणाने उन किसानोंको अपनी बहुतसी ज़मीनें सदाके लिये लिख दीं। इस कारणसे जाटलोगोंने वहांका जाना स्वीकार करलिया। कारण कि मारवाडके बदले उनको मेवाडकी हरी भरी ज़मीनका अधिकार सदाके लिये मिला, फिर वह किस कारणसे वहां न जाते?

जिन नगरोंके राजा भूमिके विषयमें नये २ नियमोंका प्रचार नहीं करसकते थे, उन समस्त नगरोंमें प्रजाका दखली अधिकार प्रबल पाया जाताहै। उदाहरणमें जिहाजपुर जनपदका नाम लेना ही अलम् होगा। इस नगरमें १०६ गांव लगतेहैं। बडेभारी इस नगरके इलाकेमें खास ज़मीनके केवल दो टुकडे पाये जातेहैं। कहतेहैं कि उसही समयमें जमीनके यह दो टुकडे भी खजाना बाकी रहजानेसे कुडक होनेको थे, उसही समयमें राणाके राजस्व मंत्रीने उनको मोल लेकर राजसम्पत्तिमें मिलादिया। इसही भांतिसे लोहारियो और इतोंडा नामक दो तालाब तथा उनके किनारेकी भूमि भी खजानेमें मिला लीगई। एक समय जो भूमि, भोमियां मीनलोगोंका विशाल बापोता कहकर जिहाजपुरके अन्तरगत समझी जातीथी, वही भूमि आज राणाकी होगई। हा! इस संसारमें सबहीके लिये उलट फेर लगा रहताहै। आगे इसका भी एक उदाहरण दिया जाताहै कि किसानोंके हाथसे छूटकर भूमि किस प्रकारसे खजानेमें मिलजातीहै। कोटेके इतिहासमें ऐसे बहुतसे उदाहरण दियेजांयगे।

भगवान मनुजीने ग्राम्य समाजका जैसा विधान कियाहै, मेवाडमें ठीक वैसाही वर्त्ताव पाया जाताहै। पूर्वकालमें जिस प्रकार पांच सात गांवको लेकर एक २ ग्रामीण रहता था, मेवाडमें भी वैसेही पंचग्रामपति या सप्तग्रामपतिका वृत्तान्त पाया जाताहै। मेवाडमें इन लोगोंको पटेल कहतेहैं। संन्यासी अथवा भिखारी सबही पटेलको जानते और मानतेहैं। गांवकी रक्षा भी वही करताहै। पटेली अधिकारके लिये वह पटेल सरकारको कुछ नहीं देते केवल प्रति तीन वर्षमें नियत कियाहुआ कुछ महसूल और दो कुडका देने पडतेहैं।

वृत्तांतका ऐसा अनुमान है कि मानव धर्मशास्त्रमें जिन ग्रामपतियोंका वर्णन है, उनके कर्त्तव्यसे मेवाडके पटेलका कर्त्तव्य [illegible]। इनकी [illegible] पटेल [illegible]

करनेमें भी त्रुटि नहीं की। दोनोंही पक्षोंका विवाद क्रमशः बढनेलगा। महाराणा स्वरूपसिंहने एक पक्षमें जिस भाँति अपने भयंकर प्रतापसे सामन्तोंकी मंडली के ऊपर अत्याचार करनेकी दृढ प्रतिज्ञा की, दूसरे पक्षके सर्दारोंने भी उसी मतसे उनके ऊपर घृणा दिखाना प्रारंभ किया तथा उनकी आज्ञाको न मान कर किसी २ ने तो उनके विरुद्धमें खडे होनेके लिये किंचित् भी विलम्ब नहीं किया। यही नहीं कि राणा और सामन्तोंमें इस विवादका फल केवल दोनोंके ही भोगनेके लिये हुआ हो। वरन सम्पूर्ण प्रजाने भी इसी चक्रमें पडकर अनेक भांतिके कष्ट सहन किये।

सबमें प्रधान मेवाडके सलम्बूरके अधिपति और देवगणके सरदारोंके साथ महाराणाका विवाद अत्यन्त ही बढगया। राणा स्वरूपसिंह इनके नीच आचरणोंसे ऐसे क्रोधित हुए कि १८५० ईसवीमें उनके आधीनके सम्पूर्ण ग्रामोंको अपने कब्जेमें करनेका विचार किया। राणा स्वरूपसिंहने उसी सालमें बहुत सी सेना भेजकर सलम्बूर और देवगणोंके नायकोंके अधिकारी सम्पूर्ण ग्रामोंको वश करके अपने अधिकारमें करलिया, जैसे ही सेनापर इन्होंने अपना अधिकार किया कि वैसे ही दोनों सरदारोंने अपनी बचीबचायी सेनाको साथ ले राणाकी सेनाको परास्त करके छिन्नभिन्न करदिया. और शीघ्रतासे अपनी सम्पूर्ण सेना पर अपना अधिकार करलिया. जब इस प्रकारसे दोनों सामन्तोंने राणाकी सेनाको छिन्न भिन्न करदिया. तब स्वरूपसिंहके हृदयमें भयंकर क्रोधानलके प्रज्वलित होनेमें क्षणभरका भी विलम्ब न हुआ. परन्तु वह उन ग्रामोंपर अपना अधिकार करनेके लिये असमर्थ हैं, इसवार अपमानकी आगसे स्वयं भस्मीभूत होनेसे।

तक अभिप्राय पूरा न होता था; तबतक दीन हीन मूर्ख किसानके रुधिरको जोककी समान चिपटकर पीते थे। अभागे किसान लोग भी समझते थे कि पटैल हमारा गुप्त शत्रुहै तथा महाराष्ट्री और पठानोंने इसको ही अपना भेदुआ बनाया है । इसही डरसे वह राजद्वारमें उसपर (फरियाद) नहीं करतेथे; वह जान बूझकर ही उसके आगे अपना हृदय खोल देतेथे। पटैल इच्छानुसार किसानोंका रुधिर पीकर पीछा छोडता था । हा मन्दभाग्य कृषकगण ! तुमको इस भारतभूमिमें सुख शान्ति कहां है ? जिनको तुमलोग परम हितकारी मित्र समझकर निश्चिन्त रहना चाहते हो, विना ही अपनी अवस्थाका विचार किये एकसाथ जिसके विषैले डंकपर अपना हृदय रखदेते हो; जब वही तुम्हारा नाश करनेको तइयार है, तो तुम्हारे लिये सुख शान्ति कहां है ? और कबतक तुमलोग अंधकारमें रहोगे ? कितने दिनतक अपने अधिकारको न समझोगे ? तुमलोग अत्यन्त परिश्रम करके जिन लोगोंकी मृत्युसे रक्षा करतेहो, धूप और जाडेका कुछ ध्यान न करके जिनकी विलास सामग्रीको इकट्ठा करतेहो, वह लोग एकबार भी तुम्हारी दशाका विचार नहीं करते ।

क्रमानुसार पटैल लोग भी किसानोंके हर्ता, कर्त्ता और विधाता होगये । प्रतिष्ठा और सनमानके पानेसे लोग जैसे अभिमानी और अत्याचारी होजातेहैं, मेवाडके पटैल भी अंतमें वैसे ही होगये । इतने दिनोंतक वह किसानोंके प्रतिनिधि थे उनके दुःखमें दुखी और सुखमें सुखी होतेथे, परंतु इस समय दुष्ट बनकर उनसे शत्रुता करने लगे और भांति २ के अत्याचार करने गये। जिस जातिमें किसी प्रकारका प्रबंध नहीं होता जिसके मनुष्य परस्परके सुख, दुःखका विचार नहीं करते और अपने सुखकी चिंतामें ही जो लोग दिन रात लगे रहते हैं, उस जातिको शीघ्रही अनेक प्रकारके अनर्थ दबा लेतेहैं । पटैल लोगोंने अपना उदर भरनेके लिये पहिले ही भलीभांतिसे किसान लोगोंका रक्त चूसा ! परंतु किसान लोग कल्पवृक्ष तो थे ही नही कि बराबर उनकी अभिलाषाको पूरा करते जाते । अतएव कुछ ही दिनमें वह निराधार होगये, उनके साथ ही पटैलजीके विश्राममें भी विघ्न पडा और किनके रुधिरसे अपने उदरको भरें ? जिनके रुधिरको सोखते थे उनका तो सर्वस्व नाश होगया [illegible] होगये । पिंडारोंकी कठोर चढाई होनेसे किसान लोग देश छोडकर [illegible] थे, मेवाडके बहुतसे खेत सूने पडे रहतेथे । इसी समय पटैलोंके स्वार्थमें कुछ बाधा पडती थी परन्तु बहुत दिनोंके लिये नहीं । [illegible] होनेसे किसान

उन्होंने आवश्यक विचारा तो वह तो विदित ही नहीं है कि सामन्त राणाके विरुद्ध [illegible] पहले चार वा छः सामन्तोंके साथ मिलकर उसतत्त्वका पता लगावें।

जो भूमिके अधिकारी महाराणाने राजधनमें भूमि लेलीहै वह पहलेकी समान उसने २ [illegible] रक्षाके निमित्त तथा चोर और डकैतोंमें जो हानि हुईहै उसको पूरा करनेके लिये जिम्मेदार रहेंगे।

ग्यारहवीं धारा। दान, वाणिज्य, शुल्क, लगान (कर) खड, तून, काठ, कठवा लगान [illegible] नुमारी (घरका कर) सभी राणाको मिलसकता है, परन्तु जिन्हें टाड और कविके समयमें सम्पूर्ण करदेनेकी सामर्थ्य है और जिन्हें नियमकी सनद मिलगईहै वही उसे अदा करते रहेंगे।

बारहवीं धारा। कप्तान टाड और कप्तान कविके समयमें जो कर नियत होगयाहै—[illegible] भावसे प्रचलित रहेगा, इसके पीछे जो सम्पूर्ण कर अर्थात् वाणिज्य शुल्क कर [illegible] इत्यादि नियत हुआहै, वह दूर होजायगा, भूत कालमें पहले महाराणाओंने और वर्तमान महाराणाओंने जो क्षमापत्रमें लिखीहै, उसके ऊपर सन्मान दिखाकर उसको समभावसे प्रचलित रक्खा जाय।

मेवाडमें राजकर किसप्रकारसे वसूल होताथा, यहांपर उसकी दो चार बातें कहेंगे और अंगरेजोंसे संधि होनेके चार वर्ष पीछे मेवाडको कैसा फलाफल हुआ उसकी संक्षेप समालोचना करके मेवाड इतिहासके इस वडे परिच्छेदको समाप्त करनेका विचारहै ।

धान्यके ऊपर मेवाडमें दो प्रकारका महसूल लिया जाताथा । यह दोनों कर कंकूट और भुट्टाई कहे जातेहैं । गन्ना, पोस्ता, सरसों, सन, तमाखू, रुई, नील, और वागोंमें उत्पन्न हुए फल फूलोंके ऊपर प्रति वीघा २) से लेकर ६) रुपये तक महसूल लिया जाताहै । जब धान्य खेतमें ही रहताहै उस समय खेतका मालिक पटैल, पटवारी और राजकर्मचारीगण जो उसके ऊपर आनुमानिक अर्थात् तखमीनन महसूल लगादेतेहैं मेवाडके लोग उसको कंकट कहतेहैं । बहुधा यह कंकट ठीक ही अनुमान कियाजाताहै । परन्तु तो भी खेतका स्वामी यदि उसको अधिक समझे तो वह भुट्टाई करनेकी प्रार्थना करसकताहै । जब वह नाज काटकर और खलिहानमें डाल अनाज माडकर उसे इकट्ठा करके बटाई करतेहैं उसको भुट्टाई कहतेहैं भुट्टाई (बटाई) अति प्राचीन रीति है इससे दोनों तरफवालोंको संतोष रहताहै । भुट्टाई रीतिके अनुसार राजाको जौ, गेहूं और अन्यान्य वस्तुओंमें रब्बीकी फसलका एक तृतीयांश अथवा दो पंचमांश प्राप्त हुआ करताहै और कभी २ हेमंतिक धान्यका आधाभाग भी मिलजाताहै । कंकूट और भुट्टाई रीतिके अनुसार बाजार दरसे मिलाकर धान्यका मूल्य नियत किया जाताहै । बहुधा कंकूट प्रथासे कभी२ अन्याय भी होजाताहै । कारण कि किसानलोग अपना अभिप्राय सिद्ध करनेके लिये राजकर्मचारीको रिश्वत देदेतेहैं । राजकर्मचारी अर्थात् संग्राहक लालचके वश होकर समस्त धान्यको थोडा बतलाया करताहै । इस प्रकारसे जिस समय वह अपने उदरको भरकर चला जाताहै तब पहरेदार आताहै । अभागा किसान उसकी भी पूजा करताहै । यदि वह पूजा न करे तब पहरेदार पटवारीके पास जाकर उसकी झूठी शिकायत करताहै । किसानलोग इसी कारण पहरेदारको भी संतुष्ट रखतेहैं । किसानोंको किसी प्रकारसे आराम नहीं मिलता । इस प्रकार प्रगट तथा अप्रगटमें राजकर्मचारियोंकी तृप्ति करनेमें उन अभागोंके प्राणोंपर आ बनतीहै । इस बातके श्रवणकरनेसे अचानक यह विचार पैदा होताहै. कि ये किसान लोग ही अनर्थकी जड हैं: क्योंकि ये अपने स्वार्थकी रक्षा करनेके लिये राजकर्मचारियोंको रिश्वत दियाकरतेहैं । परन्तु यदि विशेष विचार कर देखाजाय तो राज-

नवीन कबूलनामेके ऊपर केवल महाराणा और चार प्रधान सामन्त उनपर हस्ताक्षर करें, परन्तु अधिक दिनोंके उपरान्त वह कबूलनामा खारिज होजायगा । फिर उस धाराके पालनेमें सामन्त अथवा महाराणा कोई भी अगुआ नहीं होगा; इसी कारण पहले ही की समान विशृंखलता चारों ओर फैलती जातीहै। हमें ऐसा जानपडताहै कि बृटिशगवर्नको अधिक सामर्थ्य देनी होगी, अधिक क्या महाराणाकी अपेक्षा उसकी सामर्थ्य बढानेके लिये दोनों पक्षके हस्ताक्षर कबूलनामेके अनुसार कार्य करनेमें सम्मत होंगे। कबूलनामेके पढनेसे सरलतासे जाना जायगा कि राणाकी सामर्थ्य एक बार ही घटाकर बृटिशगवर्नको यथार्थ पक्षमें मेवाडके सर्वमय कर्त्ताके पदपर वरण करना ही गवर्न-

—कर किसी प्रकारका व्यापार करके अपनी रक्षा करें, तो उनको किसी प्रकारसे ऐसा कार्य न करने दिया जाय।

पूरा प्रमाण मिलेगा। सन् १८१८ई० के मध्य इस नगरविभागके अन्तर्गत २६ गांवोंमेंसे केवल (६) में मनुष्योंका निवास पायागया था। उन छः गांवोंमें सब मिलाकर केवल ३५९ मनुष्य बास करतेथे। इनमेंसे भी तीन चतुर्थांश आमली-दुर्गके थे कि जिसपर महाराणाने पुनः अपना अधिकार कियाथा। सन् १८२१ ई० के बीचमें उन समस्त गांवोंमें मनुष्योंका रहवास होगया और उनमें ९२६ गृहस्थोंका निवास पायागया। इस लेखसे साफ मालूम होताहै कि केवल तीन वर्षके बीचमें ही मनुष्यसंख्या तिगुनी होगई थी। मनुष्योंके बढनेके साथ२ ही खेती और शिल्पविद्याकी भी उन्नति हुई थी। पहिले जितने हल चला करते और जितने खेत जोतेजाते थे, इस समय उससे चौगुने खेत जोतेजाते थे और चौगुने ही हल चलते थे। यदि शहर विभागकी बात छोडकर खास विभागकी उन्नतिका ही विचार कियाजाय तो भलीभांतिसे ज्ञात होगा कि इस विभागकी उन्नति भी इस ही भांतिसे इतनी ही हुई थी। महाराष्ट्रियोंके ग्राससे कुमलमेर, रायपुर, राजनगर, साद्री और कुनेडा, कोटेसे जिहाजपुर, और सर्दारोंके हाथसे छीनी हुई भूमिसम्पत्तियोंका पुनरुद्धार तथा पर्वती लोगोंके हाथसे मेरवाडा देश-की जीतके कारण कुछ ही समयमें एक हज़ार नगर और ग्राम मेवाडमें मिलगये यह नगर और गांव चौवीस जनपदोंके मध्यमें प्राचीन रीतिके अनुसार विभक्त होकर दश ग्रामीण या सौ (१००) ग्रामीणोंके हाथमें समर्पण किये गये। इस भाँतिके उत्तम प्रवन्धसे मेवाडकी उन्नति हुई। इस प्रकारसे जो राजकर आता था उसकी सहायतासे मेवाडके राणा भलीभांतिसे अपनी प्रतिष्ठा और मान मर्यादाकी रक्षा करनेमें समर्थ हुए।

सन् १८१८ ई०से सन् १८२२ ई०तक मेवाडमें जो राजकर वसूल हुआथा, उसकी फहरिस्त नीचे लिखी जातीहै। इसके पढनेसे भलीभांति मेवाडकी उन्न-तिका वृत्तांत जाना जायगा।×

---

* भगवान् मनुजीने गाँवोंका विधान इस प्रकारसे किया है— [illegible]

× टाडसाहब कहतेहैं कि सन्धि होनेसे पहिले [illegible]

वीसवाँ अध्याय २०.

महाराणा स्वरूपसिंह;—शासनसमिति स्थापन:—शासनकर्त्ता-ओंके अत्याचार;—शासनसमिति भंग;—पोलिटिकेल एजन्ट-को मेवाडके शासनके भारकी प्राप्ति;—मेवाडमें शान्ति स्थापन; महाराणाशंभुसिंहके राज्यशासनकी अशिक्षा:-वृटिश गवर्नमेन्टके द्वारा महाराणाको पोष्यपुत्रके ग्र-हण करनेकी सामर्थ्य देनी;—महाराणाको उपाधिकी प्राप्ति;—वृटिश गवर्नमेन्टका अविचार;—महाराणा शंभुसिंहको शासनकी सामर्थ्य प्राप्त होना:—उनका अकालमें प्राणत्याग:—।

अव तो कोई इन रत्न भाण्डारोंका नामतक भी नहीं लेता। न राणाजीमें ही खान खुदवानेका कुछ उत्साह है। इस समय वह खानें छूटीहुई जंगलोंके वीचमें पडी हुईहैं। जिन खानियोंको मेवाडवाले लक्ष्मीका भंडार समझते थे, जहांपर, अगणित आदमी रत्नोंको निकालनेमें लगे रहतेथे, आज वही खानें अपार जलसे भरी पडी हैं। जलको निकालकर कोई भी उनका उद्धार नहीं करना चाहता। वहुतसे आदमी उन खानोंका ऊद्धार करना असंभव समझतेहैं। परन्तु हमारे विचारमें उनका मत ठीक नहीं है। आज उन्नीसवीं शताब्दीके वैज्ञानिक जगतमें यदि कितनी एक खानोंका जल निकालना और उद्धार करना मनुष्यके द्वारा असाध्य समझा जाय तो फिर विज्ञानवल क्या शहदसे चाटनेमें काम आवैगा, जिस विज्ञानके वलसे आज संसारमें अद्भुत २ कार्य होरहेहैं, उस विज्ञानकी अनन्त सामर्थ्य आज खानोंका पानी निकालने और उद्धार करनेमें रुकजायगी, इसबातका विश्वास कोई किस प्रकारसे कर सकता है, यदि राणाजी विज्ञान वलसे काम लेते तो आज अवश्य इस खानसे भी मेवाडको भारी आमदनी होती।

राजकीय वृत्तान्त वहुत लिखा जा चुका अव पूर्ण करना उचित है, अंग्रेजोंसे सन्धिकरनेके पीछे राणाजीके सम्वन्धमें कोई वर्णन करने योग्य वात न हुई, पीछे सन् १८२९ में राणा भीमसिंह परलोकवासी हुए।

इस समय पोलिटिकल एजन्टको आज्ञा दी, पोलिटिकल एजन्टने उसी आज्ञाके मतसे शीघ्रही शासन विभागकी सम्पूर्ण रीति महाराणाको सिखा दी, ऐसा होनेसे महाराणा शीघ्रही राजधर्ममें विलक्षण रूपसे शिक्षा पागये इस समय मेवाडका राजस्वभी प्रीतिप्रद रूपसे बढ रहाहै। सिपाही विद्रोहके अन्तमें भारत वर्षके गवर्नर जनरल और प्रथम राजप्रतिनिधि लार्ड क्यानिंगने भारतके समस्त देशीय राजाओंको उत्तराधिकारी बनानेमें सामर्थ्य दी। महाराजा शंभुसिंह देशीय राजाओंके शिरमौर हुए, इस कारण उन्हें भी इस समय क्रमानुसार उत्तराधिकारीके लिये पुत्रको गोद लेनेकी सामर्थ्य प्राप्त हुई। सिपाही विद्रोहके उपरान्त भारत साम्राज्यको ईष्ट इन्डिया कंपनीके हाथसे इंगलैन्डेश्वरीने स्वयं ग्रहण किया, देशी राजाओंके सन्मान बढानेके निमित्त एक प्रकारके नवीन मान्यसूचक उपाधिकी सृष्टि हुई। उसका नाम भारतनक्षत्र हुआ। वृटिश गवर्नमेन्टने पहली श्रेणीके पदक सहित "ग्रान्ड कमान्डार ष्टार आफ इन्डिया" की उपाधिरूपी भूषणसे महाराणा शंभुसिंहको भूषित करदिया। १८५७ सत्तावन ईसवीमें सिपाहियोंके विद्रोहके समय उदयपुरकी महाराणाकी सेनाने वृटिश गवर्नमेन्टकी विशेष सहायता की थी, यद्यपि यह उसीकी पुरस्कारस्वरूप उपाधि मिली। और मेवाडेश्वर भी भलीभांतिसे पुरस्कारको प्राप्तहुए, परन्तु इस स्थानपर हम एक अत्यन्त अप्रीतिकारक विषयका उल्लेख करना आवश्यक समझतेहैं। यह हमारे पाठकोंको विलक्षणभावसे विदितहै कि महाराष्ट्रोंमें सिन्धिया और हुल्करने अन्याय करके मेवाडके बहुतसे देशोंपर अपना अधिकार करलिया था, और जिस समयमें वृटिश गवर्नमेन्टके साथ महाराणा भीमसिंहका प्रथम संधिबन्धन हुआ उस समय वृटिश गवर्नमेन्टने प्रतिज्ञा की थी कि किसी अन्य

एक वार ही कर्महीन होगये। इन्द्रियोंकी आसक्ति वा मद्यपान दोषसे ही वह इस अवस्थाको पहुँच गये कि अपनेको भूलकर दिनरात केवल उसीमें मग्न रहतेथे। भीमसिंहके परलोक जानेके पहले ही मेवाडकी अवस्था पहलेकी समान शोचनीय होगई थी; इस समय नवीन राणाको पितासे भी अयोग्य देखकर सामन्तोंकी मंडलीने निर्भय होकर अपना पहला स्वरूप धारण कर चारों ओर जहाँतहाँ घूमना आरम्भ करादिया; राज्यके प्रत्येक प्रान्तमें पहलेसे भी अधिक अत्याचार होने लगे; यहाँतक कि प्रजाके प्राणधनकी रक्षा भी दुर्लभ होगयी। अपनी सम्पूर्ण प्रजाके कल्याणकी अभिलाषा, राज्यमें सुशासन स्थापन, राजस्वकी अवस्थाका परिवर्तन, राणा जवानसिंहका यह मुख्य कर्तव्य था, परन्तु वह इसको एक वार ही भूलगये। वह तो केवल अपने दुष्ट मनोरथोंको सफल करनेमें अपनी सम्पूर्ण शक्ति और मनको लगाने लगे।

दुष्ट चरित्रवाले अधार्मिक रिश्वत लेनेवाले राजकर्मचारियोंने सुअवसर जानकर अपने २ स्वार्थको पूर्ण करनेके लिये राज्यके प्रत्येक भागमें विशृंखला उपस्थित करदी। अवतक भी राणा जवानसिंहने राज्यकी ओरको आँख उठाकर नहीं देखा, इसीसे राजकर्मचारी निर्भय होकर प्रजाके ऊपर घोर अत्याचार कर उनका धन छीन यथाशक्ति उनको मारने लगे। यद्यपि उस समय बृटिशका दूत उदयपुरमें आयाथा, परन्तु अंग्रेज़ गवर्नमेन्टकी आज्ञासे उसने शासन भागमें हाथ न डाला, उस समय उससे विशृंखलाके दूर करनेका कुछ भी उपाय न होसका; इस कारण धीरे २ विशृंखलता बढगई. और कुछ ही समयमें मेवाडकी अवस्था अत्यन्त ही शोचनीय होगई।

राणा भीमसिंहने माहिरवाडा देशके सम्बन्धमें १८२१ ईसवीमें अंग्रेज़ गवर्नमेन्टके साथ जो व्यवस्था करके तीन देशके शासनका भार और सम्पूर्ण सेनाका व्ययस्वरूप वार्षिक पन्द्रह हज़ार मुद्रा देनेको राजी होकर दशवर्षके लिये अर्पण किया था. सन् १८३३ ईसवीमें वह दशवर्ष पूर्ण होगये. बृटिश गवर्नमेन्टने उक्त देशके सम्बन्धमें नवीन व्यवस्थाका प्रस्ताव किया. राणा जवानसिंहने शीघ्रही इस बातको स्वीकार करलिया, गत दशवर्षकी व्यवस्थामें [illegible] प्राप्त हुआ. बृटिशदूत (पोलिटिकल एजन्ट) [illegible] प्रस्तावके अनुसार [illegible] बीस हज़ार रुपये देनेको राजी हुए। [illegible] स्थासे ही माहिरवाडेके [illegible]

इक्कीसवां अध्याय २१.

महाराणा सज्जनसिंह;—मेवाड़की शासन व्यवस्था:-शिक्षाका प्रयोजन;—भारतके भावी सम्राट्के साथ महाराणाका साक्षात;—विक्टोरियाके राजसूययज्ञमें महाराणाका जाना;—मेवाडका वर्तमान संक्षिप्त विवरण:—महाराणा फतहसिंहका राज्यशासन और उपसंहार;—।

महाराणा शंभुसिंहके अकालमें ही मरजानेके पीछे उनके भतीजे शक्तसिंह और सोहनसिंह इन दोनोंमें किसीको भी मेवाडके राज्य पानेकी संभावना नहीं थी, परन्तु शंभुसिंहने अपने वचनेकी आशा एक बार ही छोड दीथी. अंत समयमें अंग्रेज गवर्नमेन्टके दियेहुए पोष्यपुत्रको गोदलेनेकी सामर्थ्यके अनुसार अपने बडे भतीजे सोलह वर्षकी अवस्थावाले सज्जनसिंहको अपने उत्तराधिकारीके पदपर नियुक्त किया, इस कारण शंभुसिंहके परलोक जानेपर वही आजकलके महामान्य महाराणा सज्जनसिंह मेवाडके सिंहासनपर अभिषिक्त हुए।

अनुसार कर देतेथे, इस समय वह कर भी अत्यन्त बढगया, राज्यके चारों ओर असन्तोषदायक चिह्न और अत्याचारोंसे पीडित तथा हृदयको भेदन करने-वाले दृश्य क्रमशः दिखाई देने लगे। राणाको नियुक्त कर देनेमें असमर्थ देखकर माननीय ईष्टइन्डिया कम्पनीने लंदनमें स्थित कोर्ट आफ डाइरेक्टरको सूचना दी वहांसे यह आज्ञा हुई कि यदि राणा हमारा नियमित कर न देंगे और हमारे पिछले शेष करको अदा न करसकेंगे तो उस करको लेनेके लिये राणाके अनेक देशोंको गवर्नमेन्ट स्वयं अपने हाथमें लेगी, अथवा वह किसी न किसी प्रकारसे अपने करके, पलटेमें कुछ न कुछ लेही लेगी।

कोर्ट अब डिरेक्टोर्सने जिस वर्षमें राणाको यह सूचना दी, उसी वर्षमें अर्थात् १८३८ ईसवीके अगस्त महीनेमें विलासी राणा जवानसिंह पुत्रहीन होनेसे स्वर्गको चलेगये, इनके सम्पूर्ण चरित्रोंका वर्णन पहले ही होचुकाहै, इस कारण इस स्थानपर उसका पुनः उल्लेख करना निष्प्रयोजन है।

राणा जवानसिंहने अपने गोद लियेहुए पुत्र सरदारसिंहको राज्यसिंहासनपर बैठाला, राणा जवानसिंहजी जीवित अवस्थामें ही १९६७०००) रुपया कर्ज कर-गयेथे, जिसमें गवर्नमेंटको आठलाख रुपया देना था। गद्दीपर बैठते ही सरदार-सिंहने उस ऋणके भारको अपने शिरपर धारण किया, इस ऋणकी संख्याको देखकर पाठकगण इस बातको तो भलीभांतिसे जान जायंगे कि राणा भीमसिंह कैसे अधिक खर्चालू थे।

यद्यपि राणा सरदारसिंह आलसी और विलासी नहीं थे परन्तु इनकी प्रकृति अत्यन्त ही कडी थी; और यह अपनी कडी अभिलाषा सबको दिखाने लगे, भीमसिंह और जवानसिंहके राज्यके समयमें ही मेवाडके सम्पूर्ण सामन्त भली-भाँतिसे अप्रसन्न होगयेथे: परन्तु इस समय राणा सरदारसिंहकी कठोर दृष्टि पडनेसे तथा अनेक स्थानोंमें अनेक कठोर व्यवहार करनेके कारण वह लोग अत्यन्त ही असंतुष्ट होकर विद्रोही होगये। इधर राणा सरदारसिंहने ब्रिटिश गवर्न-मेन्टको यह कहलाभेजा कि सम्पूर्ण सामन्त [illegible] अनुसार कोई कार्य भी नहीं करते और इनमें सभी विद्रोही [illegible]। राणा सरदारसिंह और सम्पूर्ण सामन्तोंके बीच [illegible] जानकर ब्रिटिश [illegible] सन् १८[illegible]

साथ संभाषण और कार्यमूलक तत्वके अनुसंधानसे ज्ञान और बुद्धिके बढनेकी अधिक संभावना है, इसीसे यथार्थ शिक्षा प्राप्त होतीहै और वही शिक्षा मनुष्यको संसारमें देवताकी समान पूजनीय करदेतीहै। इस मानसिक शिक्षाके साथ फिर नैतिक शिक्षाका संयोग साधन सबसे पहले प्रार्थनीयहै. नैतिक बलही इस संसारमें सबसे श्रेष्ठ बलहै। जिनमें नैतिक बल नहीं है, या जिन्होंने नीतिकी शिक्षाके समयमें उदासीनता प्रकाश की है, पंडितोंके विचारसे उनकी मानसिक शिक्षा एक बार ही कर्महीन होजायगी। मनुष्य संसारमें एक श्रेष्ठ जीवहै। मनुष्य अपने आपही अपने आचार व्यवहारसे ऋषिकी समान, देवताकी समान, सर्वत्र पूजने योग्य और सभी मनुष्योंके हृदयमें अधिकार करताहै, फिर नरकके कीडोंको देखकर घृणा होतीहै। जो मनुष्य नैतिक बलसे बलवानहै उस मनुष्यके भाग्यकी लक्ष्मी प्रधान सहायक होकर उसको दूसरोंके निकट यशकी अधिकारिणी बना देतीहै, और जो मनुष्य नैतिक बलसे हीनहै, वह मनुष्य सहस्रों ग्रंथोंके पढजानेसे भी सर्व साधारणमें घृणास्पद है। इस कारण राजाओंके पक्षमें निस्सन्देह नैतिक शिक्षाका विशेष प्रयोजन है। राजा जितना सच्चरित्र, सुशील और नीतिसंपन्न होगा, उतने ही उसके चरित्रोंके आदर्शमें प्रजाके चरित्र निर्गठित होंगे; सब प्रकारसे शारीरिक शिक्षाका भी विशेष प्रयोजन है। अमूल्य जीवनकी रक्षाके लिये शारीरिक शिक्षाका प्रचार बहुत कालसे सभ्य जगतमें है। मानसिक, नैतिक और शारीरिक, इन तीन श्रेणियोंकी शिक्षा जिस राजाको मिलतीहै, उस राजासे प्रजा अधिक सुखपानेकी अधिकारिणी है. मेवाडकी वर्तमान शासन समितिने उदार नीतिके वश होकर महाराणा सज्जनसिंहको यथार्थ शिक्षा देनेमें सबसे प्रथम हाथ डाला।

उन्नीसवां अध्याय १९.

महाराणा स्वरूपसिंह—राज्यकी विशृङ्खलता;—सामन्तोंके साथ विवाद;—नया कबूलनामा;—बृटिशगवर्नमेन्टको कर देनेमें ह्रास;—सामन्तमंडलीके सहित पुनर्वार विवाद;—राणाके द्वारा सलम्बूर तथा देवगणोंके दोनों सरदारोंका भूसत्त्वमें बहुत अंशका अधिकार;—दोनों सामन्तोंका उसपर फिर अधिकार;—बृटिश गवर्नमेन्टकी मध्यस्थता;—दोनोंमें नवीन सन्धि;—फिर विवाद;— बृटिश गवर्नमेन्टकी फिर मध्यस्थता;—विवादभंजन—स्वरूपसिंहका परलोक जाना।



राणा सरदारसिंहने पुत्रहीन अवस्थामें इस संसारको छोडनेके पहले अपने छोटे भाई स्वरूपसिंहको पुत्रभावसे गोद लेलिया था. इस कारण वही उस समय १८४३ ई० में मेवाडके राज्यसिंहासनपर विराजमान हुए। राणा स्वरूपसिंहने गद्दीपर बैठते ही देखा कि राज्यके चारों ओर विशृङ्खलता फैलगईहै, उससे राज्यकी अवस्था अत्यन्तही शोचनीय होगईहै. सम्पूर्ण सामन्त स्वतन्त्र हैं, वाणिज्यकी गति अत्यन्त ही अप्रीतिदायक होगयीहै, नवीन राणा बडी सरल-तासे शासनके पलटेमें सब सामन्तमंडलीके साथ झगडा करनेमें प्रवृत्त हुए. परन्तु इससे उनका मनोरथ सिद्ध न हुआ वरन इससे विशृङ्खलता अत्यन्त ही बढगयी। सभी सामन्त राणाको अपना परम शत्रु मानने लगे।

राणा स्वरूपसिंहने ऊधमी सामन्तमंडलीको दमन करनेके निमित्त भयंकर मूर्ति धारणकर कठोरतासे शासन करना आरम्भ किया। राणा सरदारसिंहके सामनेसे जितने सरदार नमगये थे इस समय राणा स्वरूपसिंहके कठोर शासन और दुष्ट अत्याचारोंसे वह पहले भी अधिक क्रोधी होगये राणा और सामन्तोंमें जो विवादकी आग भडकगयी थी उसको बुझानेके लिये अनेक [illegible]

लिये राजधानी दिल्लीमें जानेसे अपने गौरवकी हानि समझतेथे, उन्हीं महाराणाओंके वंशधर इंगलेन्डेश्वरीके ज्येष्ठपुत्रके साथ साक्षात् करनेके लिये कितनी दूर बम्बईमें जाकर उनके आनेकी बाट जोह रहेथे!

१८७७ ईसवी जनवरीमें जिस समय बृटिशरानी महामान्या श्रीमती विक्टोरियाके प्रतिनिधि लार्ड लिटनने भारतकी प्राचीन राजधानी दिल्लीमें राजसूय यज्ञका अनुष्ठान किया और जनवरी महीनेकी पहली तारीखको बृटिश राज्ञीकी "भारतेश्वरी" उपाधि बडे आडम्बरसे विघोषित हुई महाराणा सज्जनसिंह भी उस विक्टोरिया राजसूय यज्ञमें निमंत्रित होकर गये, उस समय महाराणाके साथमें बहुतसे सामन्त और सेवक भी गयेथे। जब १८७६ ईसवीकी २६ वीं दिसम्बरमें महाराणा सज्जनसिंह बहादुरने दिल्लीमें स्थित बृटिशराज प्रतिनिधियोंके वस्त्रावासमें गमन किया तब उनके सन्मानके लिये सत्रह तोपोंका फेर कर उनके यानसे उतरते ही अंग्रेजी सेनाने समरकी रीतिसे अस्त्र दिखाकर मान किया। इसके उपरान्त भारतवर्षकी गवर्नमेन्टके वैदेशिक सेक्रेटरीने उनको सन्मानके साथ ग्रहणकर राज वस्त्रावासके भीतर लेजाकर राज प्रतिनिधियोंके निकट परिचित कर दिया। महाराणाके जाते ही माननीय राजप्रतिनिधि लार्ड लिटन (इस समय अर्ल)ने उनको आदरसहित लेकर अपने दक्षिण पार्श्वमें ऊंचे आसनपर बैठाला और फिर आप सिंहासनपर बैठे; मेवाडके पिछले महाराणाओंने गवर्नमेन्टके साथ जिस प्रकार मित्रताकी रक्षा की थी इस बातका कथन कियागया, पश्चात् हाइलार्डके सैनिकने एक स्मरणीय पताका लाकर सिंहासनके सामने उपस्थित की महाराणा प्रतिनिधिके सहित पताकाकी ओरको आगे बढे और निम्नलिखित युक्तियोंके साथ महाराणाके हाथमें वह पताका देकर कहा:- अपने वंशके गौरव-चिह्नोंसे अंकित यह पताका महामाननीया महारानीकी स्वयं उपहारस्वरूप है, यह भारतेश्वरीके उपाधि धारणके स्मरणमें आपको उपहारस्वरूप दीजाती है।

लारेन्सने एक नया कबूलनामा अर्थात् स्वीकारपत्र नियत करदिया ।× पाठक मंडली उस कबूलनामेको पढकर भलीभाँतिसे समझजायगी कि महात्मा टाड साहव पोलिटिकल एजन्टके पदपर स्थित हो राजपूत जातियोंका आचार व्यवहार और धर्मरीतिसे सन्मानकी रक्षा कर मेवाडका अपार हित करगयेहैं, उस पदपर स्थित हुए मनुष्यको इस समय कैसा सामर्थ्य करना होगा ।

×" तीस वर्षसे महाराणा और उनके सामन्तोमे मतभेद चला आरहाहै, पहले पक्षमे तो परिश्रमसे शान्तहुए सामन्तोको राजद्रोही, और दूसरे पक्षमे राणाको अत्याचारी कहाहै ।

केवल राज्यकी शान्ति और समस्त श्रेणीकी प्रजाके सुखके निमित्त अनेक प्रतिनिधि दोनो पक्षोकी मध्यस्थता करनेके लिये बुलानेसे आयेहैं ।

उसीके अनुसार कितने ही कबूलनामे बने, और उनपर हस्ताक्षर होकर उनमे अपनी सम्मति भी प्रगट कीगयी, परन्तु क्रमानुसार दोनो पक्षवालोने उन सम्पूर्ण धाराओंको भंग करदियाहै ।

यह बात सामन्तोने पेशकी कि राणा उनके अधिकारकी भूमिके ऊपर अन्यायसे अपना अधिकार कररहेहैं । राणाने इसका जो उत्तर दियाहै उससे यह भलीभांतिसे जानाजाताहै कि राणा केवल भूमिकी सम्पत्तिको अपने अधिकारमे करके शात न हुएहै, इससे उन्होने बहुतसे ग्राम अपने अधिकारमे करलिये हैं महामाननीय राणाने लाउवाके सामन्तके ऊपर जैसा व्यवहार किया, इससे जानाजाताहै कि उन्होने अपराधके अन्यायसे ऐसा कठोर दंड दियाहै । दूसरे पक्षके सरदारोने प्रतिवादता प्रकाशकी, अधिक कहा तक कहैं उसमे उन्होने अनेक विद्रोहके उत्पन्न करनेवाले आचरण करे, उन्होने इनको भी अस्वीकार नही किया ।

दोनो पक्षवालोको इस प्रकारके आचरणोसे रहित होना अवश्य ही कर्तव्य है । अथवा जबतक महाराणाने न्यायके अनुसार प्रजाओको सतोषका देनेवाला और पोलिटिकेल एजन्टके उपदेशके अनुसार कार्य किया, गवर्नमेन्टने भी उतने दिनो तक महाराणाके न्यायपालनकी सामर्थ्यमे प्रशंसा की, इस बातको मेवाडकी सभी प्रजा जानतीहै कि भारतवर्षमे गवर्नमेन्टका ऐसा [illegible] था । पहली पहल कबूलनामेके बननेके समयमे निम्न लिखित कबूलनामा बनाने और प्रचलित करनेकी आज्ञा गवर्नमेन्टने दी कि जो कोई कबूलनामेकी लिखीहुई धाराओंके अनुसार कार्य नही करेगा [illegible] वृटिश गवर्नमेन्टके विरुद्धमे अपराधी होकर दण्डभागी होगा । [illegible] पोलिटिकेल एजन्ट और गवर्नर जनरलके राजस्थानमें स्थित एजन्टके [illegible] और वह वर्तमान कबूलनामे और प्राचीन रीति नीतिके [illegible] न्तर स्वरूपसे मान्यहोगा ।

पहली धारा । सामन्तगण. [illegible] सम्पूर्ण उत्पन्नहुए धान्यका रुपयेके प्रति [illegible] मेवाडके अधिनायकको है ।

यदि कोई सामन्त इस करके देनेमे असमर्थ [illegible] ([illegible]) [illegible] उपरान्त [illegible]

निवास नामक बाग लगवाया इसमें तरह तरहके मेवेके फूल फलके वृक्ष लगवाये। सन् १८८४ में महाराणा सज्जनसिंहजी २५ वर्षकी अवस्थामें कुछ दिन अस्वस्थ रहकर परलोकको सिधारे तो समस्त मेवाड ही नहीं किन्तु समस्त राजस्थान सोचमें डूबगया। राजस्थान बाहर भी भारतवर्षके निवासियोंको इनकी अकाल मृत्युसे बडा खेद हुआ क्योंकि यह महाराणा साहब बडे तीव्रबुद्धि, परोपकारी, गुणग्राही, उच्च मनस्क, और देशहितैषी थे, और इनकी सत्कीर्ति भारतवर्ष-भरमें फैल गईथी। यद्यपि ये मेवाडके राज्याधीश थे परन्तु इन्होंने उच्च विचार और शुभ गुणोंसे समस्त भारतकी आर्य्यसन्तानके हृदयमें ऐसा प्रभाव जमायाथा कि वह इनको वास्तविक हिन्दूपति समझती थी।

मेवाडके राज्यका परिमाण पहिलेहीकी समान अर्थात् ११६१४ वर्गमील था। यह कलकत्तेकी राजधानीसे ११३६ मील दूरहै। सुशासनके गुणसे राज-धनकी संख्या इस समय अधिक बढगईहै। राजधनका परिमाण ६४०००००) रुपयाहै: इसमें महाराणा अंग्रेज गवर्नमेंटको कर स्वरूपसे दो लाख रुपया और भीलसेना दलका व्ययस्वरूप वार्षिक ५००००) रुपया देतेहैं सुख शांतियुक्त मेवाडके निवासियोंकी संख्या जो इस समय क्रमशः बढती जारहीहै उसका अनुमान सरलतासे हो सकताहै। महाराणाके आधीनमें इस समय २५३ कमान १३३८ गोलन्दाज ६२४० अश्वारोही और १३२९०० पैदलोंकी सेनाहै। लफ्टिनेन्ट कर्नल सी. के. स्मिथ. सी. एस. आई. इस समय रेजिडेन्टरूपसे उदयपुरमें निवास करतेहै।

राणाकी इच्छानुसार विशेष स्थानमे पोलिटिकेल एजन्ट और चार पाँच जने राजभक्त तथा अच्छे चरित्रवाले सरदारकी सलाह और उपदेशके मतसे परिणाममे कार्य करैं।

अठारहवी धारा। सामन्तोके देवमंदिर और धर्मशाला इत्यादिमे प्राचीन आचार व्यवहार और सामर्थ्य अचल भावसे रहै, प्राचीन रीतिके अनुसार राजभक्तिको दिखानेवाली शपथ ग्रहणकरनेकी रीति मान्य करनी होगी।

उन्नीसवी धारा। जादूमंत्रके चलानेवाले, डाइन वा इन्द्रजाली कहकर किसीको नही पकडना होगा, विष देनेसे जो विचार धर्मानुसार राणाको करना योग्य है उसमे किसी प्रकार भी उदासीनता न करैं।

बीसवी धारा। महाराणा केवल मन्त्रियोके ही लिखेहुए आज्ञापत्रसे अर्थदंड करसकतेहैं, उस आज्ञापत्रके दंडका कारण, और जितना भी दंड हुआहो उसकी समान विधिके अनुसार निश्चय कर लिखना होगा। जो सामन्त पहलेसे ही सामान्य दंड देनेमे सामर्थ्य रखतेहैं, उनके ऊपर भी यह नियम चलैगा, और जो हार अथवा नियममे अर्थ दंड करैं उसे पोलिटिकेल एजन्टके कार्यालयमे लिखदेना होगा। धौंस दसतक (सम्मन) केवल मन्त्रियोसे ही लिखाजायगा, अथवा टाड और कविके समयमे जिन्होने उसे लिखाहै वही लिखैंगे।

इक्कीसवी धारा। एक गवर्नमेन्टकी सेनाका कर्मचारी वर्तमान और भविष्यत्मे भूमिकी सीमाके सम्बन्धकी समस्त विवादकी मीमांसा कर देगा, जिसने एक पक्षके सीमाके चिह्नको नष्ट करदियाहै उसके विना जानेहुए, दोनो ओरके खर्चका भार उसे उठाना होगा; और जिसने एक पक्षकी सीमाके चिह्न नष्ट करदियेहैं यह विदित होगया तो अपराधीके पक्षवालेको सम्पूर्ण व्यय देना होगा; और विचारके अनुसार उसको दंड भी होगा।

बाईसवी धारा। महाराणाकी सम्मतिसे प्रचलित आचार व्यवहारके अनुसार और हिन्दू विधानके अनुयायीको सामन्तगण पोष्यपुत्र वा उत्तराधिकारी करसकतेहैं। किसी सामन्तके परलोकगामी होनेपर उसकी विधवा स्त्री अपने कुटुम्बियोंकी सलाहमे पोष्यपुत्रको गोद लेवे। यदि इस विषयमे कुछ हडचल होजाय तो पोलिटिकल एजन्टके सन्मुख कहाजाय।

तेईसवी धारा। एकलिंगजी, नाथद्वारा, पाञ्चोली बिहारीदास. और [illegible] जो भूमि [illegible] दीगईहै उसके अधिकारी उसको भोग करतेरहैं, जो [illegible] मिलताहै और जो [illegible] सग्रहमे अधिकारी हैं उनको वह सब मिलताहै, और [illegible] कोई भी नहीं कर सकैगा।

चौबीसवी धारा। सरदारोके जो घर उदयपुरकी राजधानीमे है [illegible] तबतक उत्तम अवस्थामे रहैं. वह तबतक [illegible] अतिरिक्त और किसीको भी नही देसकेंगे। [illegible] को सौंप सकेंगे।

पच्चीसवी धारा। यदि कोई [illegible] नहीं करैंगे। परन्तु [illegible] दिखावें। ऐसा करना होगा [illegible] नहीं लिया जायगा और [illegible]

निमित्त ही हम अनन्त धन रत्नकी खान, महावीरोंकी प्रगट करनेवाली, अनन्त सार्थी रानियोंकी जननी मेवाडभूमिके भाग्यका परिवर्तन होता हुआ देखेंगे, हृदय कहताहै कि मेवाड एकदिन फिर उन्नतिके शिखरपर पहुंचेगा. पहली दशाका मिलान कर इस समयकी मेवाडकी दशा देखकर किसका हृदय व्यथित नहीं होता कौन ऐसी आर्य्यसन्तान है जो राजपूत जातिको आलस्यमें शयन करताहुआ देखकर दुःखित न हो जिसके हृदयमें एक बूंद भी आर्योंका रक्तहै वह मेवाडकी शोचनीय अवस्थापर अवश्य दुःखी होगा।

हाय! एकदिन वह थे और एकदिन आज है वह मेवाड वह वीरक्षेत्र चित्तौर वह वीरलीलाभूमि उदयपुर वह राजपूत जातियोंका 'शिव' 'शिव' उच्चारण, वह पवित्र हिन्दू रक्तका प्रवाह, वह अभ्रभेदी आरावलीकी प्रस्तरमालाकी शोभा अब कहांहै। वह राजपूतोंकी शक्ति अब कहां चलीगई? वह वीरव्रत, वीराचार, शूरता, बाहुबल, विक्रम, साहस, प्रतिभा, एकता, उद्दीपना आरावलीके किस गढमें जा छिपी, आज मेवाड अन्तसार शून्य हो रहाहै मणि मुक्ताओंसे खचित सूर्यकी समान प्रकाशमान् महलोंमें वीरोंके अस्त्रागारोंमें मेवाडके प्रत्येक प्रान्तमें कवियोंकी अमृतमय लेखनीसे निकली गाथा अब नहीं गाई जाती, अब मृतसंजीवनी मंत्रका प्रचार नहीं होता, धनुष बाणका सन् सन् शब्द, तलवारोंकी झनकनाहट, गगनभेदी जयशब्द, दृढ प्रतिज्ञाका जीवन परिचय आज कहां चलागया. भारतका गौरव स्वरूप मेवाड इस समय भी निद्रित है प्रत्येक प्रान्तमें यह शब्द गूंज रहाहै कि अमित तेजस्वी प्रबल पराक्रमी दृढ प्रतिज्ञ महावीर दुर्गा सारथी राजपूतोंकी राणा जातीय जीवनी शक्ति लोप सी होगई है. बाप्पारावल राणा प्रताप, राजसिंहकी चिताभस्मसे मेवाड ढकगयाहै ऐसा क्यों हुआ इस प्रश्नका उत्तर कौन देसकताहै?।

मेन्टका मुख्य उद्देश था। परन्तु यह उद्देश ब्रटिश गवर्नमेन्टके पक्षमें शुभदायक जानकर भी मेवाडके निवासी राजपूतोंने इसमें अपनी स्वाधीनता और राणाके अधिक सामर्थ्यका व्याघात करनेवाला विचार किया। जिस कारणसे भी हो नवीन कबूलनामेके व्यर्थ होनेपर गवर्नमेन्टने सामन्तमंडलीको जो आश्रय देनेकी पतिज्ञा की, उस प्रतिज्ञाके पालनेमें शान्त न हुए। महाराणा स्वरूपसिंहने जो मेहता शेरसिंहकी सम्पत्ति अपने अधिकारमें करली थी, गवर्नमेन्टने उस कबूलनामेके अनुसार राणासे वह देश लौटानेके लिये अत्यन्त आग्रह किया; राणाने १८६१ के सालमें उस अनुरोधका पालन किया उस समय राणाका झगडा जो सामन्तोंसे था वह भी शान्त सा होगया, १८६१ ईसवीमें यह नवेश्वरके महाराणा स्वरूपसिंह इस जगत्को छोडकर दूसरे जगतको चलेगये। इन्होंने अपने नामका सिक्का चलाया जो अबतक उदयपुरमें चलताहै।

इस समय समस्त मेवाडके राज्यकी संख्या ११६१४ वर्गमील थी और जनसंख्या ११६१४०० थी। राज्यकी मोटी आमदनी ४००००००) रुपया थी; इसमें सामन्त १२०००००) रुपया राजधन भोगतेथे, परन्तु वह इसके छः अंशोंमें एक अंश नियम सहित राणाको देतेथे। जो कर ब्रटिश गवर्नमेन्टको दियाजाता था वह धर्मसम्बन्धी खर्चमें लगता था, और सामन्तोंकी उपरोक्त आमदनीके अतिरिक्त राणाको मोटा १४०००००) रुपया मिलता था।

सन् १८५७के सिपाही विद्रोहमें राणाजीने अंग्रेज सरकारसे अत्युत्तम वर्त्ताव किया अंग्रेज लोग महाराणाके आश्रयमें चलेगये उनके खानपीनेका प्रबन्ध उत्तम था जिनको अपने प्राणोंका भय था उनकी रक्षा भलीभांतिसे की गयी इस व्यवहारके लिये अंग्रेजोंने राणाजीको कोई भी देश भेंट आदिमें नहीं दिया. वरन राणाजीके नीमच जावद गदवाड यह तीन प्रदेश जो सरकारमें चलेगयेथे वह भी न लौटाये।

और उदीतनका त्याग तथा संहारकर्ता एक लिंग महादेवके मंदिरके सन्मुख जातीय स्वभाव सुलभ वीरप्रतिज्ञाके बलिदानसे अन्तःसार शून्य अवस्थामें निक्षिप्त है तथापि हमें विश्वास है कि प्रतापवान राजसिंहकी समान मृतसंजीवनी मंत्रके प्रचार करनेवाले नेताका इस सुशासनमें प्रचार होते ही राजपूत-जाति अपने गौरवको फिर भारतमें प्रकाश कर दिखावेगी. साधारण लोगोंतक शिक्षाका फैलाना नेताका प्रधान कार्य होगा, शिक्षापाते ही निर्मल बुद्धिवाले राजपूत फिर अपने गौरवको प्राप्त होसकतेहैं। इस मेवाडमें फिर तब प्रतापसिंह राजसिंह नेतारूपसे दर्शन देंगे ? राजपूतजाति फिर कब उन्नतिके शिखरपर चढकर भारतके अनन्त गौरवका प्रकाश करेगी ? क्या वह प्रार्थनीय शुभदिन फिर नहीं आवेगा. अवश्य आवेगा ? संसारकी उक्तिहै कि सर्वदा किसीके एकसे दिन नहीं रहते।

कर्तव्य विचारा अन्तमें विशेष चिन्ता और तर्कवादके उपरान्त उक्त प्रतिष्ठित शासनकी समितिको भंग करके गवर्नमेन्ट नवीन व्यवस्थामें प्रवृत्त हुई । सबसे प्रथम एक नवीन शासनकी समिति स्थापन कर दूसरे सुयोग्य सामन्तोंको उसके सभापद पर वरण कर अथवा केवल एक सुयोग्य सामन्तको राणाके प्रतिनिधि स्वरूपमें नियुक्त करके उनके हाथमें मेवाडके शासनका भार अर्पणकरना कर्तव्य विचारनेका आन्दोलन होनेलगा । परन्तु पोलिटिकल एजन्टकी उक्तिके अनुसार इस समय प्रतिनिधि पदके उपयुक्त मनुष्य प्राप्त न हुए, इसलिये प्रतिनिधि नियोगका प्रस्ताव शीघ्र ही तोडदिया गया । " परन्तु हम कहते हैं कि सम्पूर्ण मेवाडोंके सामन्तोंमें प्रतिनिधियोंके योग्य एकमात्र सामन्त भी दृष्टि नहीं आया । यह वात सरलतासे अविश्वासके योग्य है । इसमें अवश्य ही कोई गुप्त कारण था । " प्रतिनिधि प्राप्तिके अभावमें अन्तमें तीन सामन्तोंको शासनकी समितिके सभ्यपदपर नियुक्त कर और उनमें एक जनेको सभापतिके पदपर वरण करनेका प्रस्ताव उपस्थित कियागया । पोलिटिकल एजन्टने उस सभापतिके पदपर एक सामन्तको चुना । उस स्वभावसे सरल राजपूतने साहसमें भरकर कहा कि जबतक शासनके सम्बन्धमें उनको पूर्ण सामर्थ्य न होगी तो वह शासनके भारको ग्रहण नहीं करेंगे । वृटिश गवर्नमेन्टकी यह इच्छा नहीं थी कि किसी सामन्तको भी पूर्ण सामर्थ्य न दीजाय, इस कारण पोलिटिकेल एजन्ट स्वयं उन दोनों सदस्योंके साथ नवीन शासन समितिके सभापतिके पदपर स्थित हुए । बहुतोंको इस बातका विश्वास था कि पोलिटिकल एजन्टने अपनी पूर्ण सामर्थ्यसे अथवा शासन विभागमें कर्तृत्व करनेकी इच्छासे ही एक राजपूत सभापतिके नियोगके विरुद्धमें भयंकर बाधा देनेके लिये स्वयं करतत्त्वका भार लियाहै ।

जिस समय पोलिटिकल एजन्टने शासनका भार ग्रहण करलिया उस समय स्वजातिके राजनीति मतसे राज्यके प्रत्येक भागमें संस्कार साधन और आमदनीके बढनेका विशेष यत्न होनेमें कुछ भी विलम्ब न हुआ । अधिक कहना व्यर्थ है. कि एक नवीन व्यवस्थाका फल शीघ्रही मेवाडकी सम्पूर्ण विशृङ्खलताको दूर करके प्रजामें फिर शान्ति करनेके लिये समर्थ हुआ । उस समय वृटिश गवर्नमेन्टकी यह व्यवस्था अत्यन्त ही प्रशंसनीय है । यद्यपि राणा शंभुसिंह अभी अपनी ठीक अवस्थाको नहीं पहुँचे, परन्तु [illegible] भी नहीं है. वृटिश गवर्नमेन्टने [illegible] करनेकी [illegible]

इस प्रकारसे मेवाड़की कथा पूर्ण हुआ चाहती है महात्मा टाडसाहबने केवल महाराणा भीमसिंहके समयतकका ही वर्णन किया है महाराणा भीमसिंहको स्वर्गवासी हुए इस समय ७१ इकहत्तर वर्षके लगभग हुए हैं, इस इकहत्तर वर्षके इतिहासका हमने संक्षेपसे वर्णन किया है यद्यपि यह बात उचित नहीं, कारण कि संक्षेपसे वर्णनकरनेमें इतिहासका अंग विकृत होजाताहै, इससे इसका वर्णन विस्तारसे करना चाहिये भला विचार तो कीजिये कि अंग्रेजोंके केवल एक दो ग्रंथोंके पढनेसे मेवाड़की परिस्थिति किस प्रकारसे बनसकतीहै. इतिहासके प्रेम रखनेवाले चतुर पाठक अवश्य ही समझगये होंगे कि भारतहितैषी महात्मा टाड साहबने अत्यंत कठिन और कठोर परिश्रमके साथ विशेष यत्न करके मेवाड़के जिस इतिहासको बनाया है, उस इतिहासकी परिस्थितिको घरके कोनेमें बैठकर केवल अंग्रेजी पुस्तकोंकी सहायतासे दो चार दिनके बीचमें बना लेना प्रथम श्रेणीकी [illegible]

अवसरके आनेपर वह सब देश जिससे राणाको फिर मिलजाय, उस विषयमें विशेष यत्न किया जायगा। राणा उसी आशयसे सावधान होकर समय व्यतीत करतेथे १८५७ ईसवीमें विद्रोहके समयमें मेवाडके राजपूत सैन्यदल और स्वयं राणा स्वरूपसिंहने बृटिश गवर्नमेन्टका विशेष पक्ष समर्थन किया; उस समय मेवाडके पोलिटिकेल एजन्ट कप्तान साडयार्सने राणाके बहुत समयसे प्रार्थना करनेपर पूर्वाधिकृत निस्तारियादेशमें अपना फिर अधिकार करनेके लिये राणाकी सेनाको आज्ञा दी। उस आज्ञाके पाते ही अत्यन्त प्रसन्नताके साथ मेवाडवाहिनीने निस्तारियापर अपना अधिकार करलिया, परन्तु अत्यन्तही दुःखका विषयहै कि विग्रह शान्तिके उपरान्त बृटिश गवर्नमेन्टने राणाके हाथसे फिर उस निस्तारिया देशको लेलिया। केवल इतना करके भी गवर्नमेन्ट शान्त न हुई। कई महीने तक निस्तारिया राणाके द्वारा शासितहुई थी और उन्हीं कई महीनोंमें उपरोक्त देशोंसे संग्रह किया हुआ समस्त राजधन भी राणाके पाससे लेलिया। इसका कहना वृथा है कि गवर्नमेन्टका यह कार्य अत्यन्त ही अनुचित और अन्याय कारक हुआ। प्रगटमें पोलिटिकेल एजन्ट कप्तान साडयार्सने गवर्नमेन्टकी विना अनुमति लेकर राणाको निस्तारिया देश देदिया, परन्तु यह बात कहांतक सत्य है, इसको गवर्नमेन्ट ही बतासकती है, यद्यपि निस्तारिया देश गवर्नमेन्टने टोंकके नव्वाब अमीरखाँको देदिया था, परन्तु न्यायसे यह देश महाराणाको ही मिलनाथा, इसको कौन नहीं मानैगा?

महाराणा शंभुसिंह १८६९ ईसवीकी १७ वीं नवम्बरको मेवाडके सिंहासनपर विराजमान हुए, और मेवाडके शासनकी पूर्ण सामर्थ्यको भी सर्वांग ग्रहण किया। परन्तु दुःखका विषय है—महाराणा शंभुसिंहका अधिकार प्रजाके ऊपर अधिक दिनतक नहीं रहा। वहुत थोडे दिनोंमें ही अर्थात १८७४ ईसवी-की ७ अक्टूबरको सत्ताईस वर्षकी अवस्थामें पुत्रहीन अवस्थामें उन्होंने शरीर छोडदिया। अकालमें ही शंभुसिंहके स्वर्गजानेपर मेवाडकी सम्पूर्ण प्रजा मारे शोकके अधीर होगई। प्रजाको यह विलक्षण आशा थी कि राणा शंभुसिंह-के राज्यमें बडे आनंदके साथ समय व्यतीत होगा, परन्तु निर्दयी विधाताने उस आशाकी जडको एक बार ही काटडाला।

इस समय मेवाडके राज्यकी सीमा ११६२८ मील थी, प्रजाकी संख्या ११६१४०० थी पदल सेनाकी संख्या १५१०० थी, घुडसवारोंकी संख्या ६२४० थी और कमान ५३८ थी। राजधन ४०००००० रुपया था।

अपने वंशवालोंका सन्मान और गौरव वढायाहै, परन्तु यह अवश्य ही मानना होगा कि उनमेंसे दो एक जनोंको छोडकर और शेष सभी ऐसे हुए कि जिन्होंने विद्या शिक्षाके अमृतमय फलको न पाया; जितने राजा शिक्षित और मार्जित-बुद्धि थे वह राजधर्ममें अभिज्ञ और सुनीतिके जाननेवाले हुए, राज्यका जो मंगल है इस बातको कौन नहीं मानेगा कि इसीसे प्रजामें सुख और शान्तिकी संभावनाहै ? देशी राजाओंको जो सर्वसाधारण शिक्षा मिली, उसे कभी भी सर्वाङ्ग सुन्दर नहीं कहा जा सकता, वह शिक्षा केवल नाममात्रकी शिक्षा है। नीति जाननेवालोंका यह कथन है कि पूर्णरूपसे विद्या शिक्षा करना कर्त्तव्यहै, और जो ऐसा न हो तो मूर्ख ही रहना ठीकहै। आधी शिक्षा सब विषयोंमें भयंकर अनिष्ट करनेकी जड है। देशीय राजाओंको जो शिक्षा मिलती थी वह सर्वसाधारण आधी शिक्षासे भी कहीं थोडी होतीथी। विद्याकी एक विधि नहीं है, अठारह विधि हैं; उन अठारहों विधियोंपर एक मनुष्यका अधिकार होना अवश्य ही असंभव है, परन्तु जिस मनुष्यके हाथमें हजारों लाखों मनुष्योंके जीवनका भार है और जो मनुष्य अपने भाग्यवलसे ही राजसिंहासनपर विराजमान हुआहै जिसका ज्ञान, वुद्धि और विचारकी शक्तिके ऊपर राज्य, स्वजाति और समाजके श्रेष्ठ साधन निर्भय होकर रहतेहैं, जिसकी एकमात्र उदारताहीके वलसे जातिका साधारण सब प्रकार उन्नतिका द्वार खुल सकता है. केवल जिसके एकमात्र उत्साह और उद्योगके प्रकाशसे जीवनकी शक्ति संघटित होतीहै-जातिमें भ्रातृभाव वढताहै-जातिमें वल विक्रमका विस्तार होताहै, शान्तिके वढनेकी पूर्ण संभावना होतीहै. वही मनुष्यहै, उस राज्यसिंहासनपर बैठेहुए मनुष्यके पक्षमें अपने पदकी उचित शिक्षाके भूषणसे भूषित होना उसको अवश्य कर्तव्य है। सब देशोंमें सभी जातियोंने इस वातको मान लियाहै कि जबतक राजा भलीभांतिसे शिक्षापूर्ण न होगा तब तक वह कदापि अपने भारी दायित्वके अनुभव करनेमें किसी प्रकार समर्थ न होगा। सब विषयोंकी उन्नतिकी जड एकमात्र शिक्षा है, शिक्षाके अतिरिक्त किसी विषयकी भी विना प्रयोजनके भली-भांतिसे सिद्ध होनेकी कुछ भी संभावना नहींहै। मानसिक, शारीरिक और नैतिक जिस स्थानपर इन तीनों श्रेणीकी शिक्षाका अभाव है वह स्थान कभी भी उन्नत स्थान नही होसकता। ज्ञान, बुद्धि और विचारशक्ति यह केवल ग्रंथोंके पढनेसे ही नहीं आतीहैं; अंग्रेजी विद्या तो केवल अनुष्ठान मूलक [illegible] है, वह शिक्षा तो केवल नाम मात्र करती है, [illegible]

मेवाड़में धर्मप्रतिष्ठा, पर्वोत्सव व आचार-व्यवहार ।

बाईसवाँ अध्याय २२.

पौराणिक इतिहासकी उपकारिता:-भारतके पुराणोंका फल:-मेवाड़की शिवपूजा:-भगवान एकलिंगजीका मंदिर:-शैव:-गोस्वामी:-जैनसमिति:-नाथद्वारे-में श्रीकृष्णजीका मंदिर और पूजाकी रीति:-राजपूतोंसे वैष्णवधर्मसे उपकार ।

राजधानीमें एक स्कूल प्रतिष्ठित किया और उसमें एक अंग्रेज तत्त्वावधान एवं शिक्षा देता है उस विद्यालयमें अंग्रेजी, उर्दू और मातृभाषाकी शिक्षा दीजाती है। अनेक सामन्तोंके लड़के इसी विद्यालयमें पढ़ते हैं; जितना २ शिक्षाका विस्तार होता जायगा उतनी उतनी ही राजपूत जातिकी उन्नति बढ़ती जायगी, इसमें कुछ भी संदेह नहीं।

जिस समयसे नवीन शासन समितिने शासनका भार लिया उसी समयसे राज्यके प्रत्येक भागमें विशृंखलता दूर होकर सुरीतिका प्रचार हुआ और क्रमानुसार उसी दिनसे राज्यकी आमदनी भी बढती जारही है। विचार विभाग और शांतिकी रक्षाके विभागमें योग्य मनुष्य नियुक्त हुए, इसीसे उन दोनों कामोंके सरलतासे सिद्ध होनेमें कोई विघ्न भी उत्पन्न न हुआ। मेवाडमें जिसभाँति पहले प्रजाका धन और प्राण सर्वदा ही अत्याचारियोंके द्वारा नष्ट होता था, जिसभाँति चोर निर्भय होकर इच्छानुसार प्रजाका धन लूटते थे, इस समय भलीभांतिसे शासनके होनेसे वह उपद्रव एकसाथ ही दूर होगये हैं, इस समय सामन्तोंमें भी लडाई झगडा होता हुआ दिखाई नहीं पडता। मेवाडके प्रत्येक प्रान्तमें शान्तिसती निर्भय होकर नृत्य कररही है; यद्यपि दुर्बुद्धि भीलगण बीच २ में विद्रोहानल और उपद्रव करना आरंभ करतेहैं, परन्तु उससे राणाकी शासनशक्तिकी अयोग्यता किसी प्रकार भी नहीं पाई जाती। भीलगण तो अपने स्वभावसे ही सैकडों वर्षोंसे उपद्रव करते चलेआये हैं, इस कारण जबतक अरावली पहाडियोंकी भीलजातिमें शिक्षाकी पूर्ण ज्योतिका प्रकाश न होगा, तबतक वह इस प्रकारके उपद्रव करनेसे न चूकेंगे।

महामाननीय भारतेश्वरीके ज्येष्ठपुत्र भारतके भावी सम्राट प्रिन्स ऑफ वेलस बहादुर १८७५ सालके नवम्बर महीनेमें भारतवर्षको देखनेकी इच्छासे बम्बईमें आये. महाराणा सज्जनसिंह बहादुर गवर्नमेन्ट और बृटिशइंडियाकी सम्मतिसे बम्बईमें गये और ९ वीं नवम्बरको प्रिन्स ऑफ वेल्सने बम्बई बन्दरमें आकर महाराणा तथा अन्यान्य राजाओंसे [illegible] किया। और छठी नवम्बरके (१८७५ ईस्वीमें) प्रिन्स ऑफ वेल्स बम्बईमें [illegible] न्टके सवारोंसे बडे आदरभावके साथ महाराणा सज्जनसिंहको भी [illegible] और कई दिनतक वहां रहकर महाराणाके सम्मानके निमित्त इनके निवासस्थानमें जाकर साक्षात् करके लौट आये। [illegible] कि जिस मेवाडके राणा [illegible]

विज्ञानकी सहायतासे कि जो इसके भीतर छिपा हुआहै, दीन हीन मनमलीन जन्म-भूमिको फिर भी सुख और स्वाधीनताके ऊंचे शिखरपर पहुंचा देंगे । जिस दिन भारतवर्षके समस्त हिन्दूगण इस सनातनधर्मको ही ग्रहण करनेयोग्य मुख्य धर्म समझलेंगे, उसही दिन भारतके नगर २ और ग्राम २ में आनन्दका भंडार खुल जायगा;—पुनर्वार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, वर्णभेदकी कुछ चिन्ता न करके विपक्ष पक्ष नाशिनी जगज्जननी,भगवती महामायाको आनन्दसे आवाहन करेंगे ।

वीर्यवान राजपूतगण पुराणोंको भी वेदकी समान अति पवित्र मानतेहैं । उनके पूजनीय पितृपुरुषोंकी महान कीर्ति और लीलाकी साक्षी इन पुराणोंमेंही है । राजपूतगण, वीरता, महानता और संन्यासधर्मका प्रकाशमान आदर्श समझकर देवदेव महादेवजीकी पूजा किया करतेहैं. भगवान भूतभावन राजपूतोंके और विशेष करके मेवाड़ी राजपूतोंके प्रधान उपास्यदेवता हैं । गंगा यमुनाके किनारे बसेहुए देशोंमें अनेक प्रकारके देवताओंकी पूजाका प्रचार होनेसे यद्यपि राजस्थानके और २ देशोंमें भगवान भूतभावनकी पूजा किंचित कम होगईहै, तथापि वीरता और स्वाधीनताकी जन्मभूमि मेवाड़भूमिमें, आजतक भी पहिलेकी समान उनकी पूजा होतीहै । गिह्लोटवंशके राजालोग सूर्यदेवजीकी प्रतिमूर्ति और एकलिंग इन दोनों मूर्तियोंकी पूजा करतेहैं । महादेवजी तथा चतुर्मुख एकलिंगजीके नामसे पुकारे जातेहैं । एकलिंगजीके जितने मंदिर मेवाड़में हैं, उन सबमें देवमूर्तिके आगे उनके प्यारे वृषभकी धातुमय मूर्ति स्थापित हुई देखीजातीहै ।

महाराणा सज्जनसिंह बहादुरके सन्मानसहित उस पताकाको ग्रहण करनेके उपरान्त माननीय राजप्रतिनिधि बहादुरने लालसूत्रमें पोया हुआ एक सुवर्ण पदक * महाराणाके गलेमें डालकर कहा भारतेश्वरीकी आज्ञाके अनुसार मैंने आपको इससे विभूषित कियाहै आप इसको दीर्घकालतक धारण करें इसमें जो तारीख लिखी गई है उसे स्मरण करनेके लिये आपके वंशधर इसकी दीर्घकालतक उत्तराधिकारी पदकरूपसे रक्षा करनेमें समर्थ होंगे। पदक पानेके उपरान्त महाराणाको एक और सन्मानसूचक संवाद मिला पहले भारतवर्षीय महाराणाओंको गवर्नमेंटसे उनके सन्मानके लिये उन्नीस तोपोंकी सलामी होतीथी परन्तु इस समय उनकी संख्या बढाकर २१ तोपें नियत की गईं, महाराणाकी समान उनके राजस्व विभागके प्रधान मंत्री महता पन्नालाल और कोषागारके अध्यक्ष छग्गनलालको राजप्रतिनिधिसे सन्मानसूचक रायकी उपाधि मिली।

पहली जनवरीको राजसूय यज्ञमें अंग्रेज राज प्रतिनिधि लार्डलिटन बहादुरसे बृटिश रानीके भारतेश्वरी उपाधि धारण करनेका समाचार सुनते ही महाराणा सज्जनसिंह बहादुरने उठकर कहा कि महामान्या श्रीमती बृटिशराज्ञीके भारतेश्वरीकी उपाधि धारण करनेसे सम्पूर्ण राजपूतानेके अधिकारी इकट्ठे होकर उनकी राजभक्तिका प्रकाशक अभिनंदन करते हैं और शीघ्रही तारद्वारा यह समाचार उनके पास भेजाजाय, महाराणा सज्जनसिंह बहादुर इस विक्टोरिया राजसूय यज्ञमें अधिक सन्मानित होकर अपने देशको लौट आये; राजसूय यज्ञमें जो उनको सन्मान मिलाथा वह शेष सन्मान नहीं था उनको फिर भी भारत गवर्नमेन्टने १८८१ ई० में G.C.S.I. जी.सी.एस. आई. "ग्रेट कमाण्डर स्टार आफ इण्डिया" अर्थात् भारतवर्षके प्रथम नक्षत्रकी उपाधिसे भूषित किया, इन्होंने महद्राजसभाके नामसे एक कौंसिल बंदोबस्त मुकदमों और राजकार्योंके लिये नियत की. योग्य व ईमानदार अहल्कारोंकी तरक्की और वेतनवृद्धि की, सडक पाठशालायें अस्पताल बनाये और एक यंत्रालय स्थापन किया जिसमें एक उत्तम समाचारपत्र सज्जनकीर्ति सुधाकर नामक निकलने लगा: यह प्रतिसप्ताह उदयपुरसे निकलता है इनके समय [illegible] नगर सज्जनगढ नामक किला बनवाया और इनके [illegible] और [illegible]

* [illegible]

सरचन्धमें केवल यही कहना पूरा होगा कि केवल खरतगच्छ शाखाके प्रधान पुरोहितके [illegible] ग्यारह हजार दीक्षित चेले भारतके भिन्न २ स्थानोंमें निवास करते हैं । केवल यही नहीं वरन इन जैनलोगोंकी एक ओसवाल नामक शाखाग-णित है । इनके एक लाख परिवार राजस्थानमें वास करतेहैं और भारतके वाणिज्यसे जो धन उत्पन्न हुआ करताहै उसका आधेसे अधिक भाग जैन मता-वलम्बियोंके हाथसे परिचालित हुआ करताहै । प्रथम राजस्थान और गुजरातमें जैन तथा बौद्धलोगोंका आगमन हुआ । यह लोग जिन पांच पर्वतोंको पवित्र समझते हैं, उनमें आबू, पालिथान × और गिरनार यह तीन पर्वत ही उनके धर्मकुलके प्रधान रंगस्थल हैं । मेवाडकी मंत्रीसभा और राजस्वविभागके बहुतसे कर्मचारी जैन ही हैं और पंजाबसे लेकर समुद्रके किनारे तकके प्राय: सब ही नगर जैन सेठोंसे शोभायमान हैं । उदयपुर तथा अन्यान्य नगरके शान्तिरक्षक और कर संग्रहकारक भी इनही सम्प्रदायके लोग होतेहैं । 'अहिंसा परमो धर्मः' जैनलोगोंका मूलमंत्र है; जहांतक संभव होताहै, यह लोग जीवहत्या नहीं करते. इस ही कार-णसे जो लोग दीवानी विभागके कर्मचारी हैं, वह फौजदारी विभागके [illegible]धर्मा-नुरागी कर्मचारियोंकी अपेक्षा अधिक चतुरतासे अपना काम किया करते हैं । अहिंसाको परम धर्म समझनेके कारण ही राजनीतिविद्यामें जैन लोग पीछे पड़े रहतेहैं । अनहलवाड़ा पट्टनका पिछला राजा कुमारपाल जैन [illegible] वीर जैनी था । वर्षामें उत्पन्न हुए कीड़े मकोड़े मार्गमें पड़कर मरजाते हैं, इसी कारणसे अनेक जैन लोग वर्षाकालमें चलना फिरना बंद करदेतेहैं । जैनी लोगोंको

आप कभी नहीं करते। राज्यके मुख्य २ काम आपकी निरीक्षणतामें ही होतेहैं और प्रतिदिन प्रायः सात घंटे स्वयं राजकाज करतेहैं। छोटे २ आदमी तककी प्रार्थना स्वयं सुनतेहैं। यह आपके राजशासनकी उत्तमताका ही कारण है कि मेवाडकी प्रजा सर्वथा शान्त और सन्तुष्ट है। गत मासमें राजपूतानेके एजेन्ट गवर्नर जनरल मिस्टर मारटिन्डेलने अपनी स्पीचमें श्रीमान् महाराणा साहबके सद्गुणोंकी प्रशंसामें कहाथा कि महाराणा साहब आदर्श नरेशहैं। वर्तमान महाराजोंको इनका अनुकरण करना चाहिये। श्रीमान्को अपने महत्त्व और कुलमर्य्यादाका पूर्ण ध्यानहै। प्राचीन रीति नीति और राजसी ठाट जैसा उदयपुर दर्बारमें दृष्टिगत होताहै वैसा अन्यत्र देखनेमें नहीं आता।

सबसे अधिक प्रशंसा आपकी इस बातकी है कि आप पूर्ण सदाचारी हैं और आपकी एक ही महारानी हैं। श्रीमानका चरित्र नवयुवा नरेशोंके अनुकरण योग्यहै।

श्रीमानके राज्यशासन समयमें विद्याकी उन्नति हुई है। उदयपुरके स्कूल (जो पहले सामान्य अवस्थामें था) में एन्ट्रेंस तक की पढाईका उत्तम प्रबन्ध होगयाहै। सर्व साधारणके उपकारके लिये पुस्तकालय और म्यूजियम (अजायबखाना) स्थापित हुआहै। चिकित्सालयकी भी उन्नति हुईहै। राजधानीके सिवाय गावों और कसबोंमें भी मदर्से और अस्पताल स्थापित हुएहैं। सर्वसाधारण सम्बन्धी कितने ही काम हुए और पूर्व प्रचारित कार्य्योंमें उन्नति हुई। श्रीमान्के नामपर फतहसागर तालाब बडा प्रजोपयोगी बनाहै।

श्रीमान्को सन् १८८७ मे महाराणी विक्टोरियाके जुबिली उत्सवमें जी. सी. एस. आई. की पदवी मिलीहै।

श्रीमान्के अब एक महाराजकुमार और दो महाराजकुमारी हैं। महाराजकुमारका नाम श्रीभूपालसिंहजीहै। कई वर्षसे महाराजकुमार रोगग्रसित थे परन्तु अब ईश्वरकी कृपासे आरोग्य हैं।

मेवाडके घटनापूर्ण इतिहासकी यहीपर पूर्ति हुई. जगत्पूज्य निष्कलंककुलके रंगस्थलमें यहीपर यह जवनिका गिरगई बहुत अभिलाषा थी कि वर्तमान महाराजा साहब बहादुरका वृत्तान्त विस्तारके साथ लिखा जाय पर वह इस समय उपलब्ध न होसका. उपसंहारमें जो दो एक प्रश्न हमारे हृदयमें उठतेहैं उन्हें यहां लिखना उचितहै. जगतका इतिहास इस विषयकी साक्षी देताहै कि यह जगत् परिवर्तन शीलहै. इसकी उन्नति अवनति कालचक्रके आधीनहै इस

मेर, नार्चीन अनहल्वाडा, कम्बेर और अन्यान्य जैन पीठोंके पुस्तकालय आज-तक भी रत्नोंसे पूर्ण हो रहे हैं। कठोर शासन और भयंकर अत्याचारोंको सहन करके भी परम धार्मिक जैनलोगोंने उन समस्त रत्नोंकी रक्षा कर रखी है।

मेवाड सब भांतिसे ही हिन्दूधर्मका आदर्शस्वरूप है। समय २ पर इसके पवित्रयुक्त उद्यानोंमें समस्त धर्मोंकी ही उत्कर्षता साधित हुई है। इस देशके धर्मपरायण राजा केवल शैव या जैन धर्मके पृष्ठपोषक नहीं थे, वरन वैष्णव धर्ममें भी उनका विशेष अनुराग पाया जाता था। मेवाडके अन्तर्गत नाथद्वारेमें भगवान श्रीकृष्णजीका पवित्र मंदिर ही इस बातका साक्षी देरहा है। हिन्दू विद्वेषी औरंग-जेबके कठोर अत्याचारोंसे सताये जाकर जब परम पवित्र वैष्णवलोग श्रीव्रज धामसे दूर कियेगये, वह किसी स्थानमें भी अपने उपास्य देवताकी रक्षा करनेका स्थान नहीं पासके; तब उदयपुरके राणाने अपना हृदय लगाय मुगलोंके अत्याचारोंको सहन करके भी श्रीकृष्णजीकी पवित्र मूर्तिको अपने राज्यमें आश्रय दियाथा।

उद्धार करनेमें अपनी महिमाका परिचय दिया, अवश्य ही मानना होगा कि, आलस्य विलासिताके वशीभूत होनेसे ही राजपूत जातिकी ऐसी शोचनीय अवस्था हुई अधिक क्या कहें हुआ तो ऐसा था कि संसारकी गोदीसे मेवाडके चिह्नतक मिटजाते परन्तु जिसदिन महाराणा भीमसिंहके प्रतिनिधि ईस्टइन्डिया कम्पनीके साथ संधिबन्धनमें नियुक्त हुए तभी मेवाडका बचाव हुआ, उस समय मेवाडका कैसा दृश्य था वह हमारी आंखोंके सामने घूम रहाहै।

राजपूत जाति इस बातके माननेको तैयार है कि कर्नल टाडसाहबके सुशासन सुव्यवस्थाके समय मेवाडमें अमृतमय फल उत्पन्न हुआ था, परंतु परवर्ती इतिहास क्या कहरहेहैं कि बृटिश जातिने फिर वह शक्ति संग्रह करानेमें उदासीनता प्रकाश की जिसका फल संतोष दायक न हुआ, जिस नीतिसे भारतका शासन होता है उस नीतिसे मेवाडकी राजपूत जातियोंकी उन्नति असंभव है नीति जाननेवाले अपनी दिव्य दृष्टिसे देखते हैं कि राजपूत जातिका उदय राजपूत जातिके ही हाथमें है।

जगत्की वयो वृद्धिके साथ प्रत्येक विषयका परिवर्तन देखा जाता है केवल साहस, शूरवीरता, एकता, उद्दीपना और बाहुबलसे जातिकी उन्नति करनेका समय अतीत उपाधिके धारण करनेसे अदृश्य होरहा है. इस समय साधारण लोकशिक्षा और विज्ञानशिक्षा ही जातिकी उन्नतिका प्रधान उपाय है, मेवाडवासी इस विज्ञान शिक्षाके संग्रह करनेमें तत्पर हों बराबर शांतिभोगके लिये राजपूत जातिने वीरव्रत वीराचरण वीरधर्म और महाशक्तिकी आराधनाका बीजमंत्र एक वार ही विस्मृतिके जलमें फेंक दिया था, उनका जाति स्वभाव लुप्त होकर हृदयभेदी दृश्य दिखा रहा है राजपूत जातिका नमः शिवाय शब्द नवीन रुधिरका स्रोत प्रवाहित करके हृदयके भीतर लुप्त हुए जातीय गौरवको फिर उद्दीप्त करके विज्ञान शक्तिका संचार करेगा, ऐसा करनेको कौन तयार हुआ? मेवाडके अधिपति राणा और राजपूत जाति भी दूसरी वार सावधान होकर अपने दुर्भाग्यरूपी जलके जालसे ढकेहुए गौरवरूपी सूर्यको उदय कर स्वजातिका मेवाडका राजवाडेका और भारतका मुख उज्ज्वल करनेको समर्थ न हुए।

यद्यपि लगभग आधी शताब्दीसे अधिक समयसे मेवाडकी राजपूतजाति बृटिश गवर्नमेन्टके साथ संधिका नियम पालन कर अपना समय सुखसे बिताती-है यद्यपि इस समय चिर अवलम्बनीय तलवारोंकी धार आत्मरक्षाकी गुफामें निक्षिप्त है उदयसागरके गंभीर जलमें गगनभेदी जयशब्द विसर्जित प्राचीन राजधानी चित्तौरके विध्वंस होजानेपर उन दिनोंके उस अतीत साहस, शौर्य विक्रम

ब्राह्मण क्रोध हुआ था। भगवान्‌को अपमानसे बचानेके लिये उन्होंने औरंगजेबके विरुद्ध अपने प्रचंड खड्गको उठाया। राणाजीके प्रचंड उत्साहको निहारकर एकसौ राजपूत वीरोंने यवनोंके हाथसे देवमूर्तिकी रक्षा करनेके लिये अपने प्राणोंको न्यौछावर करदिया। उन स्वर्गीय वीरोंके अनुपम प्राणोत्सर्गके प्रभावसे पापी अव-रंग हिन्दू देवताके पवित्र अंगको स्पर्श नहीं करसका। उसकाल श्रीविष्णु भगवान कोटेके बीचमें हो रामपुरकी ओरसे मेवाडमें आन पहुँचे। राणाजीकी इच्छा थी कि उदयपुरमें ही मूर्तिको ले आवें, परन्तु मार्गमें एक अनहोनी बातने होकर उनकी इस इच्छाको विफल करदिया, मेवाडके ही सियार नामक गाँवके भीतर होकर श्रीभगवान्‌जीका रथ चल रहाथा उसही समय रथका पहिया इस प्रकारसे पृथ्वीमें प्रवेश करगया कि अनेक यत्न करनेसे भी न निकला। तब एक ज्योतिषी आया उसने विचारकर कहा कि "भगवान् यहींपर रहना चाहतेहैं। नहीं तो उनके रथ-का पहिया किस कारणसे अचल होजाता" ज्योतिषीका यह वचन सुनकर राणाको पूरा विश्वास होगया, उन्होंने वहींपर श्रीकृष्णजीका मंदिर बनानेकी आज्ञा दी। शीआर ग्राम मेवाडके देलवाडा सर्दारकी जागीरमें था। भगवानके अनुग्रहका वृत्तान्त सुनकर देलवाडाका सर्दार वहांपर आया और शीघ्रही एक मंदिर बनवादिया, भगवत सेवाके लिये वह गाँव तथा और भी बहुत सी जमीन लगा दी। राणाजीने उसका पट्टा मानलिया। तदनन्तर भगवान नाथजी विधिपूर्वक रथसे उतार जाकर मंदिरमें विराजमान किये गये। उसी दिनसे शीआ-स्थान नाथद्वारा हुआ और थोडे ही समयके बीचमें एक नगर सा बनगया। मेवाड-के प्रसिद्ध पुण्यतीर्थ नाथद्वारकी उत्पत्ति इस प्रकारसे हुई।

नाथद्वारेके पूर्वकी ओर पर्वतोंकी दीवार सी बनीहुई है: और पश्चिम उसके किनारेको धोता हुआ बनास नद गढ़खाईके समान प्रवाहित हुआहै। नद और पर्वतके बीचमें भगवान श्रीकृष्णजीका अत्यन्त पवित्र मंदिर स्थापितहै: राज-पूतोंका विश्वासहै कि घोर पापी भी यहां आकर पवित्र होजाता और अन्त समय स्वर्गको गमन करताहै, इस देवके सिंहासनके भीतर राजदण्डका भी प्रवेश नहीं होसकता। घोर अपराधी भी यदि नाथद्वारेमें चलाआता तो राजा उसको दंड नहीं देसकता। क्योंकि यह स्थान शांतिमय और वात्सल्यमय है। लड़ाई, झगड़ा, खून, मार इत्यादि किसी प्रकारका भी [illegible] व्यवहार नहीं रहसकता। सभी आन-न्दसे [illegible] जातिका विचार किया [illegible]। यद्यपि नाथद्वारा एक साधारण ग्राम है, परन्तु इसकी सीमाके भीतर [illegible] मनुष्य निवास करसकतेहैं। स्थानमें [illegible]

प्रार्थना करके ही हम राजपूत भ्राताओंके पुनर्वार उदय होनेकी अभिलाषा करते हैं, क्या समाज क्या स्वजाति तथा स्वधर्मके निकट प्रत्येक पुरुष ही समभावसे दायी है ईश्वरके दिये हुए दायित्वके पालनकरनेमें जो मनुष्य कातर हैं वा इस दायित्वके पालन करनेमें जो मनुष्य प्रतापसिंह और राजसिंहकी समान जीवन उत्सर्ग करनेमें तइयार नहीं हैं वे मनुष्य अवश्य ही स्वजातिके कलंकस्वरूप हैं ।

भारतहितैषी नीतिके जाननेवाले इस समय दिव्यनेत्रोंसे देखरहेहैं अंग्रेजी शासनके फलसे अंग्रेजी शिक्षाके गुणसे हमारे परम सौभाग्यके बलसे इस समय नवीन युगकी सृष्टि हुईहै, आर्यसंतानकी अवस्था नवीन भावमें बदलगईहै, आर्यजातिकी जीवनी शक्ति अलक्ष्यभावसे नवीन रीतिके उपकरणमें प्रस्फुरित हुई है, इस परिवर्तनशील जगतके नियमके अनुसार तथा प्राकृतिक नियमके आधीन होकर अलक्ष्यका नवीन प्रकाश, नवीन दृश्य, नवीन भाव नवीन आशा मधुर मूर्तिसे भारतहिताभिलाषीके चित्तको तृप्त कररहीहै, इस समय सबसे पहले हमारी यही प्रार्थना है कि जातिमें सहानुभूति हो मेवाडका इतिहास क्या इस सहानुभूतिकी शिक्षा नहीं करसक्ताहै, राजपूत बंगाली महाराष्ट्र सिक्ख सहानुभूतिके प्रकाशमें उदारतासे प्रफुल्लितमुख होकर मातृभूमिकी संतान कहाकर परस्पर एकताका हार पहरकर अमृतमय स्वर्गीय फलकी उत्पत्तिकी संभावना करसकते हैं मेवाडका इतिहास क्या हमारे हृदयपर इसबातकी शिक्षा नहीं देसक्ताहै ।

क्रिया प्रतिक्रियाकी विधिका विधान है आर्यजाति वीरसाजसे सजकर वीर मदसे मतवाली हो वीरव्रतको धारणकर जगतकी वीरताका अभिनय दिखाकर इस समय प्रतिक्रियाके वशीभूत हो शान्तिकी गोदीमें सोरहीहै, किस बलसे भारतका सुखसूर्य भारतके गौरवका मार्तण्ड चिरकालके लिये अस्ताचलको चलागया, किस कारणसे भारतमें कुछ भी नही रहा भारतमें सब कुछ है, ऐसे दिन सुशासनकी कृपासे फिर आवेंगे कि जिस दिन यह भारत फिर अनन्त चिताभस्मको दूरकर नवीन मूर्तिको धारण करेगा. ऐसे दिन फिर आवेंगे कि जिस दिन हिन्दूवंशधर पैतृकगुणोंसे भूषित होकर नवीन जीवनी शक्तिके बलसे जगतमें नवीन लीलाका आरंभ करेंगे. ऐसे दिन अवश्य आवेंगे कि जिस दिन संसारके प्रत्येक प्रान्तमें भारतवर्षीय जयजयकारकी ध्वनि उठेगी. फिर सदनुष्ठानके प्रतापसे देश सुधर जायगा यह जन श्रुति चरितार्थ होगी कि सदा किसीके एकसे दिन नहीं रहते ।

मधुकैटभ संहारक वेश दूसरी ओर गोपाल नारायण मूर्ति। जहांपर दो आदमियोंके स्वार्थमें संघर्ष होगा वहांपर विना एक आदमीका संहार किये दूसरेकी रक्षा नहीं की जासकती। जहॉ शान्ति स्थापन करनी होगी वहांपर विना अशांतिका नाश किये हुए काम नहीं चलेगा। वस यही यथार्थ वैष्णवधर्म है। राजपूतलोग यदि इसी वैष्णवधर्मका अवलम्वन करें तो उनका विशेष उपकार होसकताहै: नहीं तो मिथ्या वैरागी और हठीले वैष्णवधर्मको ग्रहण करनेसे उनकी शोचनीय दशा और भी बुरी होजायगी। वैष्णवधर्मका एक गुण यह भी है कि अकारण रुधिर गिराना या इधर उधर खड्ग चलाबैठना उसको अच्छा नहीं लगता। जहॉपर एकके स्वार्थसे वहुतोंको हानि पहुँचतीहै, जहॉपर एकके मंगलसे वहुतोंका अनिष्ट हुआहै,विष्णुजीने वहॉपर अपने अमोघ चक्रको चलायाहै। नहीं तो हजारों मधुकैटभ जन्म लेलेते तो भी उनको क्या चिंता थी। विष्णुजी न्याय और धर्मके पक्षपाती हैं। यदि कोई अन्यायी और अधर्मी आदमी उनका प्रसाद प्राप्त करनेके लिये सामने ही प्राणतक देदे तो भी वह उसकी ओरको नहीं देखते; परन्तु जहॉपर न्यायका अपमान होताहै; जहॉपर धर्मके मस्तकपर लात मारीजातीहै, विष्णुजीका मन वहींपर पडा रहताहै: उस दुःखपाये सतायेहुए मनुष्यका उद्धार करनेके लिये श्रीविष्णुभगवान्‌जी प्राणपणसे चेष्टा करतेहैं। भगवान् श्रीकृष्णजीने अवतार होनेके कारण इसी श्रेष्ठ और सूक्ष्म नीतिका अवलम्वन कियाथा। हम भी इसी वैष्णवधर्मके पक्षपातीहैं। यदि राजपूतगण इसी वैष्णव धर्मको स्वीकार करलें, यदि वह इसकी यथार्थ नीतिका व्योहार करने लगें तो हमको कुछ भी आपत्ति नहींहै। समस्त भारत इस वैष्णवधर्मसे दीक्षित होजाय, पुनर्वार भगवान श्रीकृष्णजी अवतार लेकर इस श्रेष्ठधर्मका विस्तार करें; नगर नगर, गॉव गॉव और स्थान २ में भ्रमण करके "हे मुरारे मधुकैटभारे" इत्यादि नारायणजीके यथार्थ मंत्रोंका प्रचार करें:—तो निश्चय ही सताये दुःख पाये राज्यहीन पाण्डवकुलकी जय होगी।

चारण सामलदास ।

महाराज पृथ्वीराजसे चारण लोगोंकी उत्पत्ति हुई है राजपूत लोग गुरुवत् जानकर इनको दान दियाकरतेहैं, दानमें जमीन धन और गॉव इनको दियेजातेहैं, इस ही चारण वंशनें कविराज सामलदासका जन्म १८३७ में हुआ, महाराणा स्वरूपसिंहके दरबारमें इनका आगमन हुआ, सामलदासके बडे बूढे जब स्वर्गवासी हुए तब स्वरूपसिंहके चिरंजीव शंभुसिंह उनके घरपर सहानुभूति दिखाने गये थे सामलदासके रहनेको एक घर भी राणाजीने बनवादिया, और दरबारमें इनको तीसरे नम्बर पर बैठनेकी आज्ञा दी पीछे १८७७ में महाराणा सज्जनसिंहने कविराजके स्थानपर जाकर उनको प्रतिष्ठा तथा चांदीकी छडी दी. पीछे पांवमें डालनेको सोनेका लंगर दिया पश्चात् कविराजकी उपाधिसे भूषित किया, सन् १८८४ में उदयपुरके राणा सज्जनसिंह, जोधपुरके महाराज यशवन्तसिंह, कृष्णगढके महाराज शार्दूलसिंह यह तीनों उदयपुरके सामलबागमें न्योतेहुए आये थे । सन् १८८८ में अंग्रेज सरकारने कविराज सामलदासको महामहोपाध्यायकी उपाधि दी कलकत्तेकी एशियाटिक सोसाइटीने इनको अपना मेम्बर बनाया, यह उदयपुरमें नेकसलाहकार मुसाहिब अदालत व इजलास खासके मेम्बर हुए, कविराज महोदयने बहुत पुस्तकें बनाई हैं इन्होने अपने भतीजे गोपालदासके पुत्र यशकर्णको गोद लिया है ।

॥ भजन ॥

कर मन भानुवंश को ध्यान ॥ टेक ॥
नेक हिये विच धार चित्र वह, गुणयुत महा महान ॥ १ ॥
दशरथ सुवन भक्तहितकारी, जब शोभाकी खान ॥
अंशन सहित मनुजतन धरिकै, प्रगटे नहि कुछ आन ॥ २ ॥
बाप्पा समर साँग लछमनसिंह, राजसिंह बलवान ॥
भयो प्रताप प्रताप भानुसम, कीरति छई जहान ॥ ३ ॥
वर्तमान रविवंश दिवाकर, हैं सबहि कल्यान ॥
फतहसिंह प्रभु गुणयुत जीवें, यह मांगू वरदान ॥ ४ ॥
धन चित्तौर उदयपुर [illegible] ॥
लिख धन्य है दास [illegible] गुणगान ॥ ५ ॥

मेवाडका इतिहास समाप्त ।

लोगोंके साथ उपरोक्त प्रकारका आनन्द लूटते हैं। जिस समय राजस्थानकी चारों सीमाओंपर इस प्रकारका आनन्द उफना करता है, उसही समय असभ्य भील लोग भी अपने २ वनोंसे आनकर राजपूतोंमें मिल जातेहैं। राजपूतोंको भी भीलोंके मिलनेसे परमानन्द होताहै।

भानुसप्तमी।—वसंत पंचमीके दो दिन पीछे भानु सप्तमीका आगमन होता- है। कहते हैं कि सूर्य भगवान्का जन्म इसही तिथिको हुआ था। सूर्यवंशीय राणागण अपने कुलदेवताकी जन्मतिथिको अनेक प्रकारके उत्सव किया करते हैं। इस दिन राणाजी अपने सर्दार और सामन्तोंको साथ लेकर चोंगा नामक पवित्र स्थानमें जाया करते हैं; वहीं पर सूर्य भगवान्की पूजा की जातीहै। इस दिन जयपुरमें सूर्य भगवान्की पूजा कुछ विशेष धूमधामके साथ होती है। कुशावह (कछवाहे) राजा उस दिन सूर्यनारायणके मंदिरमें प्रवेश करके उनके रथको जिसमें आठ घोड़े जुते हुए होते हैं, बाहर लाते हैं। नगरवासी और जनपद- वासी उस रथको खैंचकर महा आनन्दके साथ नगरके चारों ओर फिराते हैं।

शिवरात्रि।—फाल्गुन मासकी कृष्ण चतुर्दशीको यह उत्सव होताहै। प्रत्येक हिन्दू और विशेष करके राणाजी इस शिवरात्रिको परम पवित्र मानतेहैं। घोर पापी निषद सुन्दरसेन जिस दिन अपने समस्त पापोंसे छूटकर शिवलोकको चलागया; उस दिनको सबही हीन्दूगण पवित्र मानेंगे। भारतवर्षमें चित्तौरके राणाजी "शिवके प्रतिनिधि" समझे जातेहैं:इसही कारणसे वह धूम धामके साथ शिवजीकी पूजा किया करतेहैं। राजपूतलोग शिवरात्रिके दिन निर्जल व्रत रखतेहैं। प्रत्येक शैव इस पवित्र दिनमें किसी प्रकारका कोई संसारी कार्य नहीं करते और सारी रात्रि जागरण करके केवल महादेवजीका ही भजन करतेहैं।

अहेरिया।—अहेरिया अर्थात् वासन्तिक शिकारके साथ २ संसारमें मधुरतामय फाल्गुन मासका प्रवेश होताहै। इसके पहिले दिन राणाजी अपने सर्दार और नौकर चाकरोंको एक हरेरंगका अंगरखा दिया करतेहैं। राणाजीके दिये हुए उन अंगरखेको पहिने हुए समस्त सर्दार और सेवकलोग ज्योतिषीकी बनाटके शुभ लग्नमें राणाजीके साथ वसंतका शिकार करनेके लिये नगरके बाहर जातेहैं। तदनन्तर वह वसन्तका सूअर भगवती पार्वतीजीके सामने उत्सर्ग कियाजाताहै। ज्योतिषीके बतानेपर मृगयाकी लग्न नियत होतीहै. इस वसन्तमें शिकारका दूसरा नाम "मन्सनका शिकार" है। इस महान शिकारके समयमें राजपूतलोग अपने २ भाग्यकी परीक्षा किया करतेहैं। जो इस

प्रत्येकका अधिकृत ग्राम इन सबकी सूची नीचे लिखी है.

स.१७६० मे प्रत्येक भूमिसपत्तिका जो मूल्य निश्चित हुआ	मन्तव्य.
१०००००)	इन सरदारोकी भूमिसम्पत्ति केवल नाममात्रको आधी घटाईगई इन सबका राजकर बहुतायतसे आता है।
१०००००)	
८००००)	
८४०००)	इनकी यह समस्त भूमि जोतीजाय तो इतनी उत्पत्ति होगी।
१०००००)	जिस समय गदवाडा राज्य राणाजीसे निकलगया उसी समय यह सरदार १६ सरदारोसे अलग किया गया।
४५०००)	इसकी सब भूमि जोतीजाय तो यह रुपया पैदाहो।
८००००)	सब भूमि जोतीजाय तो इससे अधिक रकम उठै।
२०००००)	इसकी बहुतसी भूमि इस समय सेंधियाके पास चलीगईहै सब भूमि जोती जाय तो इस समय ७००००)की आमदनी होसकतीहै।
१०००००)	जोतनेसे इसकी $\frac{2}{3}$ दोतृतीयांश आमदनी होसकतीहै।
६००००)	,, ,, ,, ,,
५००००)	जोतनेसे आमदनी होगी।
९५०००)	जोतनेसे आधी आमदनी होगी।
६४०००)	जोतनेसे यह आमदनी होगी।
८००००)	,, ,, ,, ,,
४००००)	इस सरदारने अपनी समस्त प्रभुता और आधी आमदनी खोदी।
४००००)	,, ,, ,, ,,
६००००)	उपरोक्त दोनो सरदारोके पडनेके समय यह दोनो सरदार मेवाडके १६ सरदारोमे गिनेगये एकसाथ यह दोनो कभी राजस्थानमे नहीं रहे।
३५०००)	
जोड	
१३१००००)	

लोगोंके साथ उपरोक्त प्रकारका आनन्द लूटते हैं । जिस समय राजस्थानकी चारों सीमाओंपर इस प्रकारका आनन्द उफना करता है, उसही समय असभ्य भील लोग भी अपने २ वनोंसे आनकर राजपूतोंसे मिल जातेहैं । राजपूतोंको भी भीलोंके मिलनेसे परमानन्द होताहै ।

भानुसप्तमी ।—वसंत पंचमीके दो दिन पीछे भानु सप्तमीका आगमन होताहै । कहते हैं कि सूर्य भगवान्का जन्म इसही तिथिको हुआ था । सूर्यवंशीय राणागण अपने कुलदेवताकी जन्मतिथिको अनेक प्रकारके उत्सव किया करते हैं । इस दिन राणाजी अपने सर्दार और सामन्तोंको साथ लेकर चोगा नामक पवित्र स्थानमें जाया करते हैं; वहीं पर सूर्य भगवान्की पूजा की जातीहै । इस दिन जयपुरमें सूर्य भगवान्की पूजा कुछ विशेष धूमधामके साथ होती है । कुशावह (कछवाहे) राजा उस दिन सूर्यनारायणके मंदिरमें प्रवेश करके उनके रथको जिसमें आठ घोड़े जुते हुए होते हैं, बाहर लाते हैं । नगरवासी और जनपदवासी उस रथको खैंचकर महा आनन्दके साथ नगरके चारों ओर फिराते हैं ।

शिवरात्रि ।—फाल्गुन मासकी कृष्ण चतुर्दशीको यह उत्सव होताहै । प्रत्येक हिन्दू और विशेष करके राणाजी इस शिवरात्रिको परम पवित्र मानतेहैं । घोर पापी निषद सुन्दरसेन जिस दिन अपने समस्त पापोंसे छूटकर शिवलोकको चलागया; उस दिनको सबही हीन्दूगण पवित्र मानेंगे । भारतवर्षमें चित्तौरके राणाजी "शिवके प्रतिनिधि" समझे जातेहैं;इसही कारणसे वह धूम धामके साथ शिवजीकी पूजा किया करतेहैं । राजपूतलोग शिवरात्रिके दिन निर्जल व्रत रखतेहैं । प्रत्येक शैव इस पवित्र दिनमें किसी प्रकारका कोई संसारी कार्य नहीं करते और सारी रात्रि जागरण करके केवल महादेवजीका ही भजन करतेहैं ।

अहेरिया ।—अहेरिया अर्थात् वासन्तिक शिकारके साथ २ संसारमें मधुरतामय फाल्गुन मासका प्रवेश होताहै । इसके पहिले दिन राणाजी अपने सर्दार और नौकर चाकरोंको एक हरेरंगका अंगरखा दिया करतेहैं । राणाजीके दिये हुए इस अंगरखेको पहिने हुए समस्त सर्दार और सेवकलोग ज्योतिषीके बताये हुए शुभ लग्नमें राणाजीके साथ वराहका शिकार करनेके लिये नगरके बाहर जातेहैं । तदनन्तर वह बनैला सूकर भगवती पार्वतीजीके सामने उत्सर्ग कियाजाताहै । ज्योतिषीके बतानेपर मृगयाकी लग्न नियत होतीहै, इस कारणसे अहेरियाका दूसरा नाम "मुहूर्त्तका शिकार" है । इस महान शिकारके समयमें राजपूतलोग अपने २ साहसकी परीक्षा किया करतेहैं । जो इस

पर हम उनके वडे बूढोंकी रीति नीति और आचार व्यवहारोंका जिस प्रकार निश्चयसे उद्धार करसकतेहैं, उनकी भाषाकी समालोचना करैं तो वैसा ज्ञान नहीं प्राप्त होसकता। कारण कि कुसंस्कार राशि उन पुराणोंके रोम२में घुसी हुइ रहती है; परन्तु जल वायुके वदलनेसे भाषा भी वदला करतीहै।" क्लार्कसाहवकी इस ध्वनिसे विस्मित होकर टाडसाहवने मेवाडके पर्वोत्सव और कुसंस्कारोंकी समालोचना करनेके लिये इसको अपना मानदंड मानाहै। इसी कारणसे टाडमहोदय अपने परिश्रममें कृतकार्य हुएथे। टाडसाहवने कहाहै कि धनुर्वेद, आयुर्वेद, स्मृतिशास्त्र, राजनीति, या विज्ञान, चाहे जो कोई शास्त्र हो जिसके मूलमें पौराणिक इतिहास नहीं है वह निश्चय ही अपूर्ण है। पौराणिक कथामालाके भीतर जो लोग केवल तेजस्विनी कल्पनाकी अधिकाई देखपाते हैं उन्होंने विज्ञानके मूल सूत्रोंको थोडा ही पढाहै। पुराण ही जगतकी पहिली अवस्थाके विषयमें साक्षी देतेहैं और सकल देशोंके इतिहासकी जड केवल पुराणोंपर ही लगीहुईहै। संसारके और दूसरे देशोंको पौराणिक इतिहासका फल चाहै जैसा मिलताहो परन्तु सभ्यताके आदिस्थान इस भारतवर्षके लिये वह अत्यन्त उपकारी है। सनातन हिन्दूधर्म विज्ञान मूलक है; विज्ञान स्वभावसे ही नीरस और कठोर होताहै। परन्तु पुराणोंमें इस रसहीन और कठोर शास्त्रको ऐसे सुन्दर ढकनेसे ढक रक्खाहै कि करोडों वर्षोंके हेरफेरसे भी वह पर्दा दूर नहीं हुआ हिन्दूलोग इन पुराणोंको वेदकी समान पवित्र माना करतेहैं। इन पुराणोंमें जिन महा पुरुषोंको देवभावसे पूजा गयाहै वह लोग आजतक भी देवभावसे पूजित हुआ करते हैं। भगवान् शिव और श्रीविष्णुजी आजतक भी इस विशाल भारतभूमिके करोडों मनुष्योंसे पूजेजातेहैं। भारतके और देशोंकी अपेक्षा राजस्थानमें पुराणोक्त धर्मका आदर भलीभांतिसे देखा जाताहै। शताब्दी पर शताब्दी बीत गई राजस्थानके बहुतसे स्थान श्मशानभूमिकी समान होगये कितने ही प्राचीन राजवंश इस संसारसे लोप होगये. कितने ही स्थानोंमें कितना ही घोर परिवर्तन होगयाहै; तो भी इस राजपूत जातिके बडे बूडे दो हजार वर्ष पहले जिस पौराणिक धर्मको अपना मूलमंत्र समझते थे, आजतक भी वह जाति उसी प्रकारसे अनुसरण किया करती है। नहीं मालूमहोता कि इस सनातन धर्मके भीतर कौन सी मोहिनी माया छिपीहुई है। परन्तु जिस समय देखतेहैं कि इसके भीतर सुन्दर वैज्ञानिक तत्त्व लगा हुआहै। जब देखते हैं कि [illegible] भी हिंदुओंके हिंदूपनको सम्हाले हुए रक्खा है, तब एक साथ [illegible] करना कुछ अनुचित न होगा ऐसा भी दिन आवेगा कि जिस दिन भारतवर्ष [illegible]

तक अबीर गुलाल और रंग पडा होताहै—वस यही कहावत चरितार्थ होतीहै कि "लाले लालके लाले लोचन लाले मुखमें लाले बीरा।" स्त्री पुरुष बालक बूढे सभी अबीरसे शरीरको चित्रित करते फिरते हैं। सभी कुंकुम और पिचकारीको हाथमें लिये स्त्रियोंकी सारी रंगनेके कारण मार्गघाटमें घूमतेहुए फिरतेहैं। जिन्होंने कभी भी घरके भीतरसे बाहर पांव नहीं दिया होता, भुवनप्रकाशक सर्वत्रगामी, भगवान मरीचिमाली भी और समय जिनके मुखकमलको नहीं देखसकते वह भी आज घरसे बाहर आकर होरी २ कहा करतीहैं।

मेवाडी लोग इस उत्सवको फागके नामसे पुकारा करते हैं। इन दिनों राणाजी भी रनवासमें जाकर रानी और उनकी सहेलियोंसे अबीरका खेल खेलते हैं। उस समय किसीको जरा भी शरम नहीं रहती:—किसीके मुखमंडलपर तिलमात्र भी निरानन्दकी छाया नहीं दिखाई देती। उन सुन्दरी नारियोंके साथ होरी खेलनेमें राणाजीको अपार आनंद प्राप्त होताहै। परंतु सबसे अधिक वह होली अत्यंत अद्भुत होतीहै जो कि घोडेपर चढकर खेली जातीहै। सरदार और सामंतगण कुंकुम और अबीर लेकर अपने घोडोंपर चढे हुए सब लोगोंके मैदानमें फाग खेला करते हैं। कोई अत्यन्त चतुरताके साथ अपने घोडेको दबाकर कुंकुमरूपी शस्त्रसे शत्रुको आक्रमण करताहै, दूसरा आदमी भी अपने अंगको बचाकर उसके आक्रमणको व्यर्थ करदेताहै। कहीं पर एक आदमीको पांच आदमी घेर रहेहैं, कहीं पर एकही बलवान और चतुर सवार सभी सवारोंपर अबीर कुंकुमकी बौछार करता हुआ शीघ्रतासे अपने घोडेको भगाये हुए आताहै। कहींपर एकसाथ दश आदमी मिलकर परस्पर एक दूसरेको रंगसे सराबोर करतेहैं। पिचकारियोंसे रंग और अबीर फेंकनेका ढंग सबहीलोगोंको दंग करदेताहै।

जिस दिन इस होलीलीलाकी समाप्ति होतीहै उस दिन किलेके तीन तोपोंपर बजाकर एक नगाडा बजा करताहै। उस गंभीर शब्दके [illegible] सुनते ही सरदार लोग अपनी २ सेना और सामंतोंके साथ राणाजीके निकट पहुंचते हैं। राणाजी उन सबको साथ लिये हुए चौगान महलको चले जातेहैं। [illegible] राजपूतोंका प्रधान रंगस्थल है। [illegible] अथवा कोई बडे [illegible] दिखानेके लिये राजपूत लोग इसी स्थानपर इकट्ठे हुआ करतेहैं। इस स्थानके [illegible]

सम्पूर्ण भार देजाते हैं । शैवपुरोहितगणोंके माथेपर अर्द्धचन्द्र चिह्न लगा रहता है, उनके मस्तकपर जटा कछुएकी समान लगी रहतीहैं । उन जटाओंमें एक २ वेलपत्र और कमलमाला गुथी रहतीहै । सब अंगोंमें भस्म और गेरुआवस्त्र यह लोग धारण किया करतेहैं । यह लोग अपने कुटुम्बीलोगोंके शरीरको जलाते नहीं तथा उसको समाधिमें विराजमान करदेतेहैं और उस समाधिके ऊपर एक २ छत्री सी वनादिया करतेहैं । वह समस्त मृत्तिका शिखरकी नाईं ऊपरको उठा करतीहैं । कभी २ शुद्धाचारिणी योगिनियोंको भी पुरोहितोंके कहीं चलेजानेपर यह कार्य करना पडताहै । मेवाडमें ऐसे बहुतसे गुसाईं हैं कि कौमारव्रतका अवलम्बन करनेपर भी शिल्प, वाणिज्य और युद्धकार्यके द्वारा अपनी जीविकाको निर्वाह किया करतेहैं । गोस्वामीलोग भारतवर्षमें विशेषतासे धनवान होतेहैं । मेवाडमें ऐसी वहुत जातियां हैं ।

राणाजी उनपर अत्यन्त ही अनुग्रह करतेहैं । अस्त्रधारीलोग मेवाडके भिन्न २ विभागवाले मठ या आश्रमोंमें वास किया करतेहैं । थोडी २ भूसम्पत्ति भी यह लोग भोगतेहैं, कभी २ भिक्षासे भी इन लोगोंकी जीविकाका निर्वाह हुआ करताहै । यह गोस्वामीलोग अपने कानोंको वेधकर उनमें शंखनिर्मित कुंडल धारण किया करतेहैं । इन कुंडलोंको वह रणभेरीकी समान समझा करतेहैं । ब्राह्मण और राजपूत दोनों ही वरन गुर्जरलोग भी इस सम्प्रदायमें मिल सकतेहैं । महाकवि चंदवरदाईने कन्नौजके महाराजा जयचंदकी ऐसी ही एक शरीर रक्षक सेनाका वर्णन अत्यन्त मनोहरतासे कियाहै ।

मेवाडके राणागण "एकलिंगका दीवान" इस उपाधिको पाया करतेहैं । राणाजी जब कभी मंदिरमें जातेहैं उस समय पूजाका बडा समारोह होताहै ।

शैवलोगोंका वृत्तान्त कहाजाचुका । अब जैनलोगोंका* विचार किया जाताहै । इनकी सामर्थ्य और संख्याके विषयमें विलायतवाले बहुत ही कम जानतेहैं । वह कहतेहैं कि संसारमें जैनियोंकी संख्या बहुत थोडी है, तथा यह लोग अलग २ छितरायेहुए पडेहैं । जैन लोगोंके धर्म और राजनैतिक विचारोंके

---

* शैवगण जैनलोगोंको परिहासके द्वारा "विद्यावन" नामसे पुकारा करतेहैं । [illegible] भीतर बाजीगर अर्थ मिलाहुआ है । कहतेहैं [illegible] है कि [illegible] । कहते हैं कि [illegible] दिखलादियाथा ।

मेवाडकी इस शुक्ला छटको टाडसाहबने और एक उत्सव देखा था वह उत्सव राणा भीमसिंहकी जन्मतिथिको हुआकरताथा। राजपूतलोगोंमें पुरानी रीति है कि वे अपने अपने जन्मदिनको एक २ उत्सव कियाकरतेहैं। वर्ष-गाँठका उत्सव तो अंगरेजोंमें भी हुआकरताहै। जिस दिन अनंत कालसागरमें एक नवीन तरंग उठतीहै, जिस दिन दशमहीनेकी कठोर पीडासे छुटकारा पाकर संसारमें पहुंच होतीहै, जिस दिन अनंत भूत और होनहारके मध्यमें नये उत्पन्नहुए जीवका वर्तमान रूप,एक संधि करदेताहै. जीवनके उस श्रेष्ठ दिनको संसारके समस्त सभ्य लोग मानते आयेहैं। देवताके निकट राणाजीका मंगल और दीर्घजीवनकी प्रार्थना करके मेवाडके रहनेवाले अनेक प्रकारकी भेंट लेकरके उदयपुरके राजभवनमें आयाकरतेहैं। यह उत्सव रनवासमें हुआकरताहै। दूसरा कोई मनुष्य नहीं देखने पाता। इसी कारणसे उसदिन राणाजी नये वस्त्र और नये गहनोंसे भूषित होकर भाँति २ के भोजन सेवन कियाकरतेहैं। राजभवनके चारों ओर नाचना गाना हुआ करताहै। रनवासकी स्त्रियां मंगल और संगीतको गाकर भगवानसे राणाजीका मंगल मनातीहैं।

फूलडोल।—महाराज राज्यचक्रवर्ती श्रीमान् विक्रमादित्यके चान्द्र सौर वर्षारंभके साथ ही मेवाडमें इस उत्सवका आरम्भ होताहै। फाग मासकी नवरात्रिमें जो अनुष्ठान हुआकरताहै, अधिकांशमें फूलडोलमें भी वही विधि हुआ करती है। इस पर्वका पहिला अनुष्ठान खड्गपूजा है। राणाजीके महलमें यह पूजाविधि समाप्त होतीहै। परन्तु भगवती सरस्वतीकी पूजाके लिये जो समस्त उत्सव हुआ करतेहैं उनके सामने खड्गपूजा तो साधारण ही ज्ञात होतीहै। वसंतकालके आगमनसे सारा संसार आनंदमय ज्ञात हुआ करताहै। आका-शमें निशानाथ अमृतकी वर्षा किया करतेहैं अंतरिक्षमें पवनदेव मधुरताका विकाश किया करतेहैं।

मानवलोकमें कुसुम[illegible] वनदेविया आनन्दारम्भको प्रकट किया करती है। सिद्धान्त यह है कि वसंतकालमें जो कुछ है सबही आनन्दमय है। जो [illegible] राजपूतोंके वनमें आनन्द हुआ करता है। उनकी समान सुकुमार राज-[illegible] और कामदेवसरीखे पुत्रगण, क्योंकि [illegible] आगे अबीर [illegible] पुष्पवाटिका या प्रमोदवनमें जाते हैं। [illegible] [illegible] [illegible] समान [illegible] । [illegible]

वर्षाकालके समयमें ही जीवनाशकी विशेष शंका रहतीहै। यह लोग हत्यासे यहांतक भयकरतेहैं कि वर्षाकालमें लालटैन जलाकर भी कहीं नहीं आते जाते; कारण कि लालटैनपर गिरकर पतंग कुलका नाश होजाताहै। "एक महाशयने एक जैनी लडकेसे वैद्यकका एक निघण्टु लिखवाया तब उस लडकेने जीवहत्या न करना, इस वाक्यके अनुसार निघंटुके मांसप्रकरणको ही संपूर्णतः छोडदियाथा कि जिसके कारण उक्त ग्रंथ लिखानेवालेकी ग्रन्थ छपजानेपर वडी हानि हुई। इस प्रकारसे जैनियोंकी धर्मभीरुताके और भी वहुतसे प्रमाण पायेजातेहैं।"

हिन्दोस्थानमें वौद्ध, वैष्णव, शैव और शाक्तोंमें जो घोर मतभेद उत्पन्न हुआथा, भगवान भाष्यकार शंकराचार्यजीके अनुग्रहसे वह सब झगडा दूर होगया। उन्होंने अपनी दैवी सामर्थ्यके प्रभावसे उस विषमताको दूर कर समस्त धर्मोंको समीकरणके द्वारा एक करके अपने देशानुरागका उत्तम प्रमाण दिखाया था। अव वह वात नहीं है कि शैव या शाक्त तथा वैष्णव जैन इत्यादि सामने आते ही एक दूसरेसे लाठी या तलवार चला वैठते हों। सव ही उस कठोर विद्वेषको भूलकर आज शांतिरसमें मग्न हो रहेहैं। जिस जैन और ब्राह्मण धर्ममे भयंकर शत्रुता थी, जिस समयमें प्रतिदिन अगणित जैन और ब्राह्मणलोग उस विद्वेषाग्निमें पतंगकी समान गिरकर मृत्युका आश्रय ले रहेथे उस ही समयमें वहुतसे जैनी भागकर मेवाडमें आन वसेथे मेवाडमें अत्यन्त प्राचीन कालसे जैनधर्मकी आलोचना होरहीहै। यद्यपि मेवाडके दो एक राजा शैव धर्मको छोडकर जैनधर्मावलम्वी होगये, परन्तु शैवधर्मकी सवहीने विशेष सहायता की और उत्साह देतेरहे। गिह्लौटकुलके आदि पुरुष वल्लभीलोग भी जैनधर्म्ममें दीक्षित थे। ज्ञात होताहै कि गिह्लौटकुलके राजालोग इसही कारणसे पितृपुरुषोंके अवलम्बित धर्मपर अनुराग दिखातेथे। इसमें अकाट्य प्रमाण चित्तौरमें वनाहुआ पार्श्वनाथका स्तंभ हीहै। मध्य, पाश्चात्य और दक्षिण भारतमें हिन्दू शिल्पविद्याके जो अनुपम निदर्शन विद्यमानहैं, उनको देखनेसे ज्ञात मालूम होताहै कि एक समय हिन्दू लोग थवई विद्याकी सीमापर पहुंच गये थे। [illegible] अपने हृदयसे लगाकर रक्षा की है। [illegible] समय भारतके रत्नभाण्डारोंकी [illegible] समय हृदयसे लगाकर उनकी रक्षा की थी। [illegible] अंगरेजोंकी आज्ञा [illegible] पता नहीं [illegible]। [illegible]

भगवतीकी पूजा आरम्भ करनेसे पहिले राजपूतोंकी स्त्रियें देवीजीको वरण कर लेतीहैं । तदनुसार जैसे ही उनकी सरोवर यात्राकी तइयारियें होतीहैं, वैसे ही कुलकामिनियें उनको वरणकरनेका सामान करतीहैं। राजपूतोंकी स्त्रियें वरण डला हाथमें लिये, सुन्दर२ गीत गातीहुईं प्रतिमाकी प्रदक्षिणा करतीहैं । बस यहीं पर वरण शेष हुआ । उसही समयमें आकाश मंडलको विदारण करताहुआ नगाडेका शब्द होनेलगताहै नगाडेका यह शब्द देवीकी यात्राका प्रचार करताहै। उस घोर नगाडेके बजते ही एकलिंगगढके शिखरसे तोप भी गंभीर कड-कडाहटसे गर्जउठी । तोपके शब्दको सुनतेही नगरवासी अनेक प्रकारके वस्त्रोंको धारण कियेहुए पेशोला सरोवरके किनारे इकट्ठे होने लगे ।

पेशोला सरोवरका किनारा इस उत्सवके दिन अत्यन्त शोभायमान दिखाई देताहै चारों ओर किनारेकी भूमिके बीचमें जो ऊंचा चबूतरा बना हुआहै, उसके ऊपर समस्त सर्दारोंके साथ खडे हुए राणाजी देवीके आनेकी बाट देखतेहैं । ढक्के ढोल नगाडे इत्यादि अनेक प्रकारके बाजे गाजेके साथ जब वह प्रतिमा वहांपर आजाती है, तब नगरवासी देवीजीका नौकारोहण देखनेके लिये सरोवरके किनारे पर उत्कंठतासे खडे होजातेहैं । बहुतसे आदमी ऊंचे २ महलों पर चढकर इस अपूर्व शोभाको निहारतेहैं । उपरोक्त चबूतरेके सामने ही बडा घाट है; घाटकी उत्तम सीढियें संगमरमरकी बनी हुईहैं। सरोवरमें अगणित नावें सीढियोंके निकट ही लगी रहती हैं. उस समय सरोवरके जिस किनारेको देखिये वहीपर लावण्यवती स्त्रियोंकी अगणित मूर्तें दिखाई देतीहैं। यह स्त्रियें अनेक प्रकारके रंगबिरंगे कपडे और रत्नजटित जेवर पहरे रहतीहैं। जूडेमें फूलोंका हार भी अपनी न्यारी ही बहार दिखाताहै । उनके चंद्रवदन फूलेहुए कमलकी समान मुस्कानयुक्त दिखाई देतेहैं। आश्चर्यकी बात यहहै कि उन स्त्रियोंमें कुरूप एक भी दिखाई नहीं देता उस शुभलग्नमें पेशोलाके किनारेकी भूमि जो मनमोहन वेश धारण करतीहै, उसका वर्णन करना असंभवहै । हम नहीं कहसक्ते कि इससे अधिक सुंदर और भी कोई चित्र कल्पनामें आसक्ताहै ? नगरके युवा वृद्ध बालक सब ही उत्तम वस्त्रा-भूषण पहिरकर इस स्थानमें आतेहैं । नरनारिके सुन्दर वदनमंडल, नेत्रोंमें आनन्द ज्योति और मुखमें संगीतध्वनि विराजमान रहतीहै । [illegible] आकाश [illegible] निर्मल रहताहै, कहीपर मेघका लेशमात्र भी दिखाई नहीं देता । पेशोलाका सरोवर भी निर्मल और स्वच्छ दिखाईदेताहै । पानीमें हंस,बतक बगले और [illegible] अत्यन्त सुन्दर शोभायमान दिखाईदेतेहैं । किनारेका [illegible] [illegible]

कमलासन कम्पायमान होगया था, यद्यपि उनके भक्तगण भगवान्की मान मर्यादाको रक्षित करनेके लिये व्याकुल होकर एक स्थानसे दूसरे स्थानमें भागते फिरते थे, तो भी श्रीभगवान् राधारमणजी अपनी प्यारी व्रजभूमिसे सम्पूर्णतः अलग नहीं हुए थे। हिन्दूहितैषी उदारचरित अकबर तथा जहाँगीर और शाह-जहाँने फिर श्रीमहाराज वृन्दावनविहारीजीको उनके प्राचीन मंदिरमें ही स्थापन करदिया था। परन्तु बहुतलोग इसमें सन्देह करतेहैं कि अकबरने उस सर्वमंग-लमय वैष्णव धर्मके सुन्दर गुण गौरवसे मोहित होकर अपने लौकिक धर्मके साथ उसकी बराबरी दिखलाकर एक नवीन धर्मके चलानेकी चेष्टा की थी। यदि अकबरका अभिप्राय पूरा होजाता, यदि अकबर जहाँगीर और शाहजहाँके धर्मान्ध स्वजातीयगण, इस बडी शिक्षाके माहात्म्यको समझ गए होते तो वीरवर बाबरका विशाल वंशवृक्ष इतनी शीघ्रतापूर्वक भारतभूमिसे न उखड जाता। यदि वह वृक्ष नहीं उखडता तो हिन्दू मुसलमानोंकी एक नई जाति उत्पन्न होकर भारतके वक्षस्थल पर विचरण करती। परन्तु भगवान्को यह कार्य अभिप्रेत नहीं था, इसहीसे पापी अवरंगको इस भारत वर्षमें जन्म दिया।

राजपूत बालाके गर्भसे उत्पन्न होनेके कारण जहांगीर हिन्दू धर्मपर विशेष अनुराग करता था। वह अपने उदार नीतिवाले पिता अकबरकी समान ही भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीकी पूजा करता था। परन्तु जहाँगीरका पुत्र धार्मिक-प्रवर शाहेजहाँ शैव धर्ममें दीक्षित हुआ था। सिद्धरूप नामक एक संन्यासीने शाहजहाँको इस धर्ममें दीक्षित किया था। बादशाहके शैव होजानेसे उस समय शैव धर्मकी विशेष उन्नति हुई थी। शैवलोग राजाका अनुग्रह प्राप्त करके वैष्ण-वोंके ऊपर अनेक प्रकारका अत्याचार करने लगे। उनके अत्याचारसे घब-डाय वैष्णव लोग भगवान्की मूर्तिको साथ ले श्रीव्रजभूमिको छोडकर इधर उधर भटकने लगे। अनन्तर उदयपुरकी किसी राजकुमारीने विशेष चेष्टा करके विष्णु भगवान्की मूर्तिको फिर उसके पूर्व आसनपर विराजमान करदिया था। परन्तु वह वहांपर अधिक दिनतक नहीं रह सके। अल्पकालके बीचमें ही नर राक्षस निठुर कठोर औरंगजेबने अवतार लेकर एक बार ही सदाके लिये उस यमुना पुलिनसे बाँकेविहारीको हटादिया। इसही कारणसे हिन्दू-लोग औरंगजेबको कालयवनका अवतार कहा करते थे।

कालयवनरूपी औरंगजेबने गोहत्या और ब्रह्महत्याद्वारा समस्त व्रज-भूमिको अपवित्र करके कृष्णचन्द्र आनन्दकंदके मंदिरको भी अपवित्र किया। उसका यह कठोर अत्याचार देखकर सिसोदीय और राठौर राजपूतोंके हृदयमें

अशोकाष्टमी ।—इस त्यौहारको सम्पूर्ण राजपूत लोग विश्वमाता भगवतीकी पूजा किया करते हैं। राणाजी अपने सम्पूर्ण सर्दार और सामन्तोंको साथ ले चौगान महलमें जाते तथा सारे दिन वहीं रहकर आनन्द किया करते हैं। आजके दिन समस्त राजपूत भगवती भवानीकी उपासना करते हैं।

रामनवमी ।—अशोकाष्टमीका दूसरा दिन रामनवमीके नामसे प्रसिद्ध है। इसही शुभतिथिको पुनर्वसु नक्षत्रमें रघुकुल कमल दिवाकर भगवान श्रीरामचन्द्रने जन्म लियाथा। यही कारण है जो उनके वंशवाले इस दिनको अत्यन्त ही पवित्र समझते हैं। आजके दिन हाथी घोड़े और अस्त्र शस्त्रोंकी पूजा हुआ करती है। राणाजी आजके दिन भी महा धूम धामसे चौगान महलमें जाते हैं। वहां पर अनेक प्रकारके आनन्द होते हैं। हिन्दू शास्त्रमें लिखा है कि इस दिन जो कोई श्रीरामचंद्रजीकी पूजाके लिये जो कुछ करता है उसको बहुत ही पुण्य होता है। विशेष करके जो उपवास और जागरण करके पितृलोगोंका तर्पण करते हैं, उनको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है। यथाः—

"तस्मिन् दिने महापुण्ये राममुद्दिश्य भक्तितः ॥
यत्किंचित् क्रियते कर्म तत्तदक्षयकारकम ॥ १ ॥
उपोषणं जागरणं पितॄनुद्दिश्य तर्प्पणम ॥
तस्मिन् दिने तु कर्तव्यं ब्रह्मप्राप्तिमभीप्सुभिः ॥ २ ॥" अगस्त्यसंहिता।

मदनत्रयोदशी ।—चैत्रशुक्ल त्रयोदशीके दिन सनातन धर्मावलम्बी लोग पंचबाणकी पूजा किया करते हैं। यद्यपि इससे पहिलेकी और पीछेकी द्वादशी तथा चतुर्दशीमें भी पूजा करनेकी व्यवस्था है, तथापि राजपूत इसही दिवसको बहुत अच्छा समझते हैं। मधुमास व्यतीत होगया है, और ग्रीष्मकालकी तप्त पवनके झकोरे आने लगे हैं। सुमनोलंकारयुक्त वनदेवीके फूलदार जंगल सुगन्धित पुष्प धीरे २ गिरते चले जाते हैं। परन्तु फलवती चमेली अबतक भी प्रकृतिके अंगसे अलग नहीं हुई है। राजपूतोंकी स्त्रियां इसही चमेलीके हारोंको अपने जूड़ोंमें लेकर पंचबाणकी पूजा करती हैं। टाडसाहब कहते हैं कि जैसी भक्तिके साथ उदयपुरमें मीनकेतनकी पूजा होती है, भारतवर्षमें और कोई स्थान वैसी भक्तिसे कामदेवकी पूजा नहीं करता। राजपूतसुन्दरी इस प्रकारसे भगवान मन्मथकी स्तुति किया करती हैं; यथा—

"पुष्पधन्वन्! नमस्तेऽस्तु नमस्ते मीनकेतन! ॥
सर्वेषां लोकपालानां धैर्यच्युतिकृते नमः ॥ १ ॥

वैष्णव लोग इन छायाकार वृक्षोंके नीचे बैठकर ग्रीष्मकालकी धूपसे बचते
परमानन्दसे विश्राम करतेहैं कोई गाताहै कोई बजाताहै कोई नाचताहै;कोई गी
विंदको पढताहुआ बहुतसे मनुष्योंको उसका अर्थ समझा रहाहै । संसार
गियोंके लिये नाथद्वारा अनुरागका स्थानहै, उदासीनके लिये शान्तिकुटी
निराशके लिये आशाकुंज है । सम्पूर्ण संसारमें जिसको पापी समझकर
दियाहै, जिसके सुखका आशारूपी दीपक सदाके लिये बुझगयाहै; एक
जो महाधनवान था परन्तु भाग्यदोषसे इस समय वह अन्न भी नहीं पाता,सं
सुखका देनेवाला प्रेम भी जिसका पीछा छोडगयाहै, जो शोकार्त और
हीनहै;–यह नाथद्वारा उसको भी रहनेके लिये स्थान देताहै–त्रिविध
सताये हुए मनुष्योंको भी यहींके वृक्षोंकी छायामें विश्राम मिलताहै । ब
धनी अपनी भार्य्या, कन्या और प्राणप्यारे पुत्रोंको छोड इसी शांतिदायक
नमें आकर रहतेहैं । उन सबके मनमें दृढ विश्वास और हृदयमें प्रबल अ
कि हमलोग संसारको छोडकर जिसकी शरणमें आयेहैं अंतकालमें वह अवश्
अपने चरणोंके बीचमें स्थान देगा। उनके चरणोंमें स्थान प्राप्त करनेसे बार
पृथ्वीमें नहीं आना पडेगा, उदयपुरकी ज्वाला नहीं सतावेगी और संसार
छूटकर सदाके लिये स्वर्गसुखकी प्राप्ति होगी ।

टाडसाहब कहतेहैं कि "राजपूतलोग यदि महादेवजीके विकट धर्मको
कर केवल शांतिमें वैष्णवधर्मका आचरण करें तो राजपूत जातिका
उपकार होसकताहै" राजपूत जातिकी राजनैतिक उन्नतिका विचार करनेप
शांतिमय वैष्णव धर्मको तेजयुक्त शैवधर्मपर प्रधानता नहीं देसके । जगतमें
कोई शांतिको चाहतेहैं; परन्तु जिस शान्तिमें मनुष्यके तेजका नाश होजा
जो शांति मनुष्यको आलसी और अचल बनादेतीहै हम उस शांतिके अभि
नहीहैं । आज राजपूतलोग जिस जड और निर्जीव अवस्थाको पहुँच गयेहैं
इस समय उनमें शांतिका संचार होजाय तो राजपूतोंका नाम [illegible]
रसे लोप होजायगा । आज भी उनके हृदयके भीतर [illegible] जो अग्नि [illegible]
हुए पडेहैं शांतिरूपी जलको पाकर वही बुझ जायगी । यथार्थ [illegible]
सृष्टिके आरम्भकालसे संसारमें विस्तारित होरहाहै. [illegible] शांतिमय
विष्णुजी जगतका पालन करनेवाले हैं । जहां पालन है वहीं संहार है;
और जिस प्रकार पालन होताहै वैसे ही दुर्गा और संहार होता है; [illegible]

छातीपर भ्रमण कियाकरतेहैं। उस दिन राणाके सर्दार ही नावको चलायाकरतेहैं वह नाव प्रचंड वेगसे चलाई जानेके कारण सरोवरके घने जलको खलबलाती हुई चारों ओरको दौड़तीहै। इस प्रकार संध्यातक आनन्द विहार करके राणाजी सर्दारोंके साथ घरको लौटतेहैं। इस नये उत्सवके समयमें भगवती गौरीकी पूजा भगवती अन्नपूर्णाकी समान होतीहै।

सावित्रीव्रत।—ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशीको सावित्रीव्रत होताहै इसमें जो स्त्रियें उपवास करके पतिव्रता सावित्रीकी पुण्य कथा सुनती हैं और उनकी पूजा करतीहैं, विधवापनका कष्ट उन्हें कभी नहीं भोगनापड़ता। मेवाड़की राजपूत स्त्रियां उस दिन एक नियत कियेहुए वटके निकट जाकर विधि विधानसे सावित्रीकी पूजा करके उसकी पुण्यमय कथाको सुनतीहैं।

रम्भातृतीया।—ज्येष्ठशुक्ल तृतीयाको स्त्रियें यह व्रत करतीहैं। रम्भाभगवती गौरीकी दूसरी मूर्ति है। बारहों महीनेमें बारह मूर्तिसे हिन्दू लोग जो पूजतेहैं यह मूर्ति भी उन्हींमेंसे एक है, राजपूत बालागण धनकी कामना करके खिलीहुई शतपुष्पीके फूलसे देवीकी आराधना कियाकरतीहैं।

अरण्यषष्ठी।—ज्येष्ठ महीनेके शुक्लपक्षमें देवसेना भगवती षष्ठी देवीकी जो पूजा हुआ करतीहै उसको ही अरण्यषष्ठी कहतेहैं। बारह महीनेमें भगवती महामायाकी जो बारह मूर्तियें ∸ प्रकृतियोंके द्वारा पूजी जातीहैं। यह भी उनमेंसे एक है इस पर्वके दिन पुत्रके चाहनेवाली अथवा पुत्रका मंगल चाहनेवाली हिन्दूललनागण वनमें प्रवेश करके वट या पीपलकी जड़में देवीकी पूजा कियाकरतीहैं।

रथयात्रा।—आषाढ़ शुक्ल तृतीयाको भगवान विष्णुजीकी रथयात्रा हुआ करतीहै। हिन्दूशास्त्रमें नारायणजीकी एक २ महीनेमें एक २ यात्रा करी है।

तेईसवाँ अध्याय २३.

वसंतपंचमी;—भानुसप्तमी;—शिवरात्रि;—अहेरिया;—फागोत्सव;—शीतला षष्ठी;—राणाका जन्मदिन;—फूलडोल;—अन्नपूर्णा;—अशोकाष्टमी;—राम—नवमी;—मदनत्रयोदशी;—नवगौरी-पूजा;—सावित्री—व्रत;—रंभातीज;—अरण्य षष्ठी;—रथ यात्रा;—पार्वती तीज;—नागपंचमी;— राखीपूर्णिमा;—जन्माष्टमी;—पितृदेवता;—खड्गपूजा;—दशहरा;—गणेशपूजा;—लक्ष्मीपूजा;— दिवाली;—अन्नकूट;—झूलन—यात्रा;—मकर-संक्रान्ति;—मित्रसप्तमी;—

इस समय मेवाडके पर्वोत्सव और आचार व्यवहारका वर्णन क्रमशः किया जाताहै। जिस समय शीतकी कठोरता चलीजातीहै और वसंतकी दूती कोयल संसारमें बोलने लगतीहै, तथा समस्त संसारके नये जीवनको पूर्ण करडालतीहै; जिस समय प्रकृतिकी सजीवताके साथ २ मनुष्यका मन एक अतुल आनन्दमें मग्न होजाताहै, उस ही मधुर वसन्त कालसे मेवाडके घर २ में पर्वोत्सवका आरंभ होताहै।

वसन्तपञ्चमी।—मेवाडमें माघशुक्ला ५ को इस उत्सवका आरंभ होताहै। सम्पूर्ण भारतवर्षमें यह उत्सव विख्यातहै। जिस शुभदिनमें समस्त हिन्दूगण विद्याकी प्राप्तिके अर्थ सरस्वतीजीकी पूजा करतेहैं, उस ही दिन राजपूतलोग जहांतक सम्भव होताहै अश्लील और घृणित व्यवहारका अवलंबन करके उन्मत्त भावसे नाचा गाया करतेहैं। वसंत पंचमीके दिन ऊंच नीचमें कोई अन्तर नहीं रहता। साधारण लोग भांग, धतूरा, गांजा, मद, अफीम इत्यादि अनेक प्रकारके मादक द्रव्य खा पीकर अश्राव्य और अश्लील भाषामें गीत गाते हुए नगरके चारों ओर घूमा करते हैं। जो भले आदमी किसी समय एक अश्लील वचन कहते हुए भी शरमातेहैं आज वह लोग भी लोकलाजको पानी देकर नाचगान

विघ्न और विपत्तिसे दूर रहनेके लिये अपने प्रकोष्ठमें एक वलय धारण कियाथा उसीको राजपूत लोग राखी कहाकरतेहैं। राजपूतोंके मतानुसार केवल धर्मयाजक और स्त्रियां ही इस वलयको वितरण करसक्तीहैं और किसीको इनके बांटनेका अधिकार नहीं है। राजपूतोंकी स्त्रियां जिसको अपना भ्राता बनानेकी इच्छा करतीहैं अपनी सखियोंके हाथ अथवा कुलपुरोहितोंके हाथ उसके पास राखी भेजतीहैं। राखी पानेवाले भी विधिविधानसे अपनी बहनोंको यथाविधिसे दक्षिणा दिया करतेहैं। मेवाडके इतिहासमें पहिले ही कहा जा चुकाहै कि राखीबंधन एक पवित्र और दृढसम्बन्ध है।

जन्माष्टमी।– भादों कृष्ण अष्टमीकी तिथि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रका दिन है। समस्त हिन्दू ही इस दिनको अत्यन्त पवित्र समझतेहैं। भादों वदी तीजको राणाजी अपने सर्दार सामन्तोंके साथ चौगान महलको चले जातेहैं। उस तीजसे लेकर अष्टमी तक वहांपर बराबर श्रीकृष्णजीकी पूजा होतीहै, अष्टमीको प्रातःकालसे ही उदयपुरके घर २ में उत्सव आरम्भ होताहै। सबके कपडे हल्दीसे रंगे होतेहैं, सभी कन्हैयालालकी जय बोला करतेहैं। मेवाडके घर २ में बाजेगाजे और आनन्दका शब्द होता रहताहै।

इसके उपरान्त राणाजी एक पक्ष तक बराबर अपने पितरोंका तर्पण किया करतेहैं। निमबागनामक नगरमें राणाके पितृपुरुषोंका एक समाधिमंदिर है, वहां पर जाकर राणाजी धूप, दीप, फूलोंके हार और कई प्रकारकी नैवेद्यसे उनकी पूजा किया करतेहैं। मेवाडके प्रत्येक सर्दारको ही इसी प्रकारसे तर्पण करना पडताहै।

खड्गपूजा।– जिस उत्सवमें राजपूत लोग खड्गकी पूजा करतेहैं उसका नाम नवरात्रिउत्सव है। यह उत्सव राजपूतोंके समरदेवताकी पूजाका होताहै, आश्विन शुक्ल पडिवासे जिस समय यह पूजा आरम्भ होती है उस समय राणाजी उपवास करतेहैं। प्रातःकाल होते ही प्रातः कृत्यादि समाप्त करके खड्गपूजामें निमग्न होतेहैं। गिल्होटकुलका प्रसिद्ध दुधारा खड्ग इस समय शस्त्रागारसे बाहर लायाजाताहै फिर विधानसे उसकी पूजा होतीहै। तदनन्तर राणाजी अपने सर्दार लोगोंके साथ उस पवित्र खड्गको कृष्ण पौरनामक एक प्रसिद्ध तोरणद्वारसे लेजाते हैं। वहांपर भगवती अष्टभुजाका मंदिर विराजमान है। मंदिरमें जाकर राणालोग अपने अनुगत लोग और दर्शक योगियोंके साथ

[illegible]

दिन किसीका निशान चूकजाय तो जानलो कि उसका मंगल नहीं है; इस वर्षमें उसपर वहुत सी विपत्तियें पडतीहैं । इसही कारणसे कोई भी अपनी शक्तिके अनुसार अपने निशानेको भागने नहीं देता; कोई २ अपने सेवकोंसे वराहोंके वासस्थानको जान लेतेहैं। परन्तु मृगको देखते ही सवही प्राणोंका दाव लगाकर उसका संहार करना चाहतेहैं । मेवाडके सर्दारगण अपने घोडोंपर सवार होकर राजा और राजकुमारोंके साथ उस कठोर मृगयाके लिये जंगलको जातेहैं। प्रत्येकके हृदयमें मृग वध करनेकी इच्छा होतीहै । उदयपुरकी विशाल उपत्यकामें अथवा वगलके वनोंमें या पर्वतकी कन्दराओंमें, तथा जनहीन वनोंमें वहुधा मृग विश्राम किया करतेहैं । प्रथम तो यह शिकारीलोग वन अथवा पर्वतकी कन्दराको घेरकर विकट शब्दसे चिल्लाना आरम्भ करतेहैं । उनके गगनभेदी स्वरसे अस्त्रोंकी झनझनाहटसे और घोडोंके हिनहिनानेसे भीत होकर वराहगण अपने स्थानको छोडकर भागनेकी चेष्टा करतेहैं। उनकी इस प्रकारकी चेष्टा वहुधा उनके प्राण जानेका कारण होतीहै । यदि दो एक जीव वहांसे अपना प्राण लेकर भागतेहैं तो शिकारीलोग तत्काल उनके पीछे घोडा डालतेहैं । उस समय वह मतवालेसे होजातेहैं । अपने २ प्राणोंकी कुछ भी परवाह नहीं करतेहैं, इष्ट मित्रोंका स्नेह भी नहीं रहता । मियानसे खड्ग निकाले अथवा भालेको हाथमें लिये हुए प्रचंड वेगसे भागतेहुए उस वराहका पीछा करतेहैं । उस समय वन, उपवन, वृक्ष, शिलाखण्ड, अथवा पहाडी नदी इनमें कोई वस्तु भी उनकी तेजचालको नहीं रोक सकती । वह लोग प्राणपणसे उस मृगका पीछा करतेहैं और शीघ्रही उसके खूनसे अपनी तलवारको रंग देतेहै।उस रुधिरमें वहुधा अश्व और मनुष्यका रुधिर मिला होताहै ।उस शिकारके समयमें राजकीय रसोइया भी शिकारियोंके संग रहता है । भगवती गौरीके शत्रु वराहका शिकार राजपूतोंके तीखे खड्गसे दो टुकडे होते ही वह रसोइया उसमें अनेक तरहके मसाले मिलाकर रांधना आरम्भ करताहै । जब वह मांस पक चुकताहै । तो राणाजी सब शिकारियोंके साथ उसका भोजन करतेहैं । उस आनंद भोजके समय राजपूतोंका प्रिय पानपात्र "मनोआनन्द प्याला" प्रस्तुत नहीं होता ।

फागोत्सव ।–फागुनका रंगीला महीना जैसे २ वीतता जाताहै मेवाडियोंका विकट आनंद वढता जाताहै । नगरवासी और जनपद वासी आनंदसे उन्मत्त होकर चारो ओर फाग खेलते फिरते हैं । स्त्रियोंकी जूती और पिचकारियोंकी धारोंसे वह झाग लालही लाल दिखाई पडतेहैं । समस्त मेवाडमें एक मनुष्य भी श्वेतवस्त्र धारण किये हुए दिखाई नहीं देता । चांदीसे ...

सातवाँ दिन ।—चौगान महलकी नियमित क्रियाओंको समाप्त करके राणा साहब अश्वपालको आज्ञा देतेहैं कि समस्त घोडोंको लेआवो, वह तत्काल समस्त घोडोंको स्नान कराय और सजायकर लेआताहै। महलमें रात्रिके समय उसदिन होमकी धूम पडजातीहै। एक मेंढे और एक भैंसेको भी उस दिन बलि दियाजाताहै। उस दिन राणाजी कनफटे योगियोंको निमंत्रण करके अनेक प्रकार के अन्न व्यंजन भोजन करातेहैं।

आठवाँ दिन ।—महलमें होम होताहै, संध्याके समय राणाजी कई एक मुख्य सर्दारोंके साथ नगरके बाहर शमीनानामक गाँवमें जाकर वहांके गोस्वामीसे साक्षात् करतेहैं।

नौवाँ दिन ।—आज चौगान अर्थात् और किसी स्थानमें नहीं जाना पडता। राणाजीकी आज्ञासे अश्वपाल गण अस्तबलसे घोडोंको नहलानेके लिये सरो-वरमें लेजातेहैं, स्नान समाप्त होनेपर फिर इनको सजधजके साथ महलमें लातेहैं। सर्दार और सामंतगण उस समय घोडोंकी पूजा कियाकरतेहैं, अश्वपाललोगों-को राणाजीसे बहुत इनाम मिलताहै। उसी दिन दुपहरकी तीन घडी पर भक्त साथ तीन बार नगाडा बजताहै. उस समय राज्यके समस्त सर्दार सामंत और सिपाही लोग मातानचलनामक पहाडमें जाकर उस प्रसिद्ध दुधारे खड्गको ले आतेहैं। सब लोगोंके लौट आते ही राणाजी आसनसे उठकर विधिपूर्वक वंदना करनेके पीछे राजयोगीके हाथसे उसको ग्रहण करतेहैं। अनन्तर उन योगिराजको राणाजीकी ओरसे कुछ पुरस्कार मिलताहै। जो महंत ९ दिन तक व्रत करके उस खड्गकी पूजा करताहै. राणाजी काक (लोटा) पूर्ण करके, उसको अश-र्फी और रुपये देतेहैं। फिर समस्त योगियोंको भलीभांतिसे भोजन कराया जाताहै ”

दिन किसीका निशान चूकजाय तो जानलो कि उसका मंगल नहीं है; इस वर्षमें उसपर वहुत सी विपत्तियें पडतीहैं। इसही कारणसे कोई भी अपनी शक्तिके अनुसार अपने निशानेको भागने नहीं देता; कोई २ अपने सेवकोंसे वराहोंके वासस्थानको जान लेतेहैं। परन्तु मृगको देखते ही सबही प्राणोंका दाव लगाकर उसका संहार करना चाहतेहैं। मेवाडके सर्दारगण अपने घोडोंपर सवार होकर राजा और राजकुमारोंके साथ उस कठोर मृगयाके लिये जंगलको जातेहैं। प्रत्येकके हृदयमें मृग वध करनेकी इच्छा होतीहै। उदयपुरकी विशाल उपत्यकामें अथवा वगलके वनोंमें या पर्वतकी कन्दराओंमें, तथा जनहीन वनोंमें बहुधा मृग विश्राम किया करतेहैं। प्रथम तो यह शिकारीलोग वन अथवा पर्वतकी कन्दराको घेरकर विकट शब्दसे चिल्लाना आरम्भ करतेहैं। उनके गगनभेदी स्वरसे अस्त्रोंकी झनझनाहटसे और घोडोंके हिनहिनानेसे भीत होकर वराहगण अपने स्थानको छोडकर भागनेकी चेष्टा करतेहैं। उनकी इस प्रकारकी चेष्टा बहुधा उनके प्राण जानेका कारण होतीहै। यदि दो एक जीव वहांसे अपना प्राण लेकर भागतेहैं तो शिकारीलोग तत्काल उनके पीछे घोडा डालतेहैं। उस समय वह मतवालेसे होजातेहैं। अपने २ प्राणोंकी कुछ भी परवाह नहीं करतेहैं, इष्ट मित्रोंका स्नेह भी नहीं रहता। मियानसे खड्ग निकाले अथवा भालेको हाथमें लिये हुए प्रचंड वेगसे भागतेहुए उस वराहका पीछा करतेहैं। उस समय वन, उपवन, वृक्ष, शिलाखण्ड, अथवा पहाडी नदी इनमें कोई वस्तु भी उनकी तेजचालको नहीं रोक सकती। वह लोग प्राणपणसे उस मृगका पीछा करतेहैं और शीघ्रही उसके खूनसे अपनी तलवारको रँग देतेहैं। उस रुधिरमें बहुधा अश्व और मनुष्यका रुधिर मिला होताहै। उस शिकारके समयमें राजकीय रसोइया भी शिकारियोंके संग रहता है। भगवती गौरीके शत्रु वराहका शिकार राजपूतोंके तीखे खड्गसे दो टुकडे होते ही वह रसोइया उसमें अनेक तरहके मसाले मिलाकर रांधना आरम्भ करताहै। जब वह मांस पक चुकताहै। तो राणाजी सब शिकारियोंके साथ उसका भोजन करतेहैं। उस आनंद भोजके समय राजपूतोंका प्रिय पानपात्र 'मदिराका प्याला' प्रस्तुत नहीं होता।

फागोत्सव।—फागुनका महीना जैसे २ बीतता जाताहै मेवाडियोंका विकट आनंद बढता जाताहै। नगरवासी और जनपद वासी आनंदसे उन्मत्त होकर चारों ओर फाग खेलते फिरते है। अबीरकी झडी और पिचकारियोंकी धारोंसे घर द्वार लालही लाल दिखाई पडतेहैं। समस्त मेवाडमें एक मनुष्य भी स्वेतवस्त्र धारण किये हुए दिखाई नहीं देता। [illegible]

जितने राजपूत उपस्थित होतेहैं, वह सबही राणाजीको भाँति २ की भेट और नजरें देतेहैं। उस समय तोपें बराबर छूटती रहतीहैं, और बन्दी तथा भाटगण मेवाडके व्यतीत वीरोंकी गुणावलीका गान करतेहुए राणाजीकी स्तुति किया करतेहैं उस दिन बहुतसे नये खरीदे हुए घोडे रंगभूमिमें लाये जाते-है। सेनासहित राणाजी जैसे गिरिकूटसे उतरना आरम्भ करतेहैं, वैसेही अश्व-पालगण उन नवीन घोडोंके नामोंका बखान किया करतेहैं। उन घोडोंमें किसी-का नाम मानक किसीका नाम बाजीबाज होताहै। इस प्रकार नये २ नाम सुनतेहुए राणाजी राजभवनमें आकर सर्दारोंको उचित पुरस्कार देतेहैं। उस दिन जो पोशाक राणाजी पहरतेहैं, उत्सवके अन्तमें कोटारिओंका चौहान सर्दार उसको प्राप्त करलेताहै। जिस दिन दुराचारी यवनवीरके अत्याचारसे उदयसिंहकी जानके लाले पडेथे, जिस दिन परम विश्वासिनी धात्री पन्नाने अपने प्राणप्यारे पुत्रके हृदय रुधिरसे उस पिशाचकी प्यास बुझाकर अनाथ राजकुमारके जीवनकी रक्षा की थी, उसही दिन जिस चौहान सर्दारने राणा उदयसिंह और पन्नाको अपने घरमें रक्खा था, वर्तमान कोटारियां सर्दार उसी चौहान सर्दारका वंशधरहै। राणाजी उनही राजभक्तिके बदलेमें उसके वंशवालो-को अपनी पोशाक दिया करतेहैं।

गणेशपूजा।—प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी सिद्धदाता गणेशजीकी पूजा करतेहैं। कोई भी राजपूत गणेशजीका नाम लिये विना किसी कार्यका आरंभ नहीं करता है। वीरलोग भी उन्हींको मनातेहैं, बनिये भी अपने बहीखातेमें पृष्ठके ऊपर श्रीगणेशाय नमः लिखतेहैं। स्थान या मंदिरादि बनानेके समय भी उनकी प्रति-माको भीतमें बनवालेते हैं। राजस्थानमें राजपूतोंका ऐसा कोई घर नहीं दिखाई देता जिसके द्वारकी चौखटपर अथवा किवाडमें गणेशजीकी मूर्ति नहीं बनीहोती। बहुतसे हिंदू नगरोंमें गणेशपोर नामक एक द्वार भी गणेशजीके नामपर बनाया जाताहै उदयपुरमें भी गणेशद्वारनामक एक तोरणद्वार है। राजस्थानके प्रायः प्रत्येक शैलकूटपर चढनेके समय मार्गके आरम्भमें ही गणेशजीका एक २ मंदिर दिखलाई देताहै। गणेशजीकी पूजाके साथ उनका प्रिय वाहन चूहा भी पूजा जाताहै।

गणेशजीकी पूजाका वर्णन करतेहुए, हम उन देवीके विषयमें [illegible] लिखना भूलगये कि जो राजपूतोंकी प्रधान आराध्या और [illegible] [illegible] परिचायक है। इस तरह [illegible] राजपूतोंमें [illegible] [illegible]

ओरसे खुला हुआहै। राणाजी सर्दार और मुसाहिबोंके साथ भीतर प्रवेश करके आसनपर विराजमान होतेहैं। सर्दार चारों ओरसे घेरकर उनको बैठ जातेहैं, तदुपरान्त संकीर्तन प्रारम्भ होताहै। अनेक प्रकारके बाजोंको बजाकर एकस्वरसे हरिनामके गीत गाये जातेहैं; अभिप्राय यह है कि उस समय चारों ओर आनन्द दिखाई दिया करता है। कोई गाताहै, कोई बजाताहै, कोई नाचताहै। कोई २ विकट स्वरसे शृंगार रसका अश्लील श्लोक पढकर बावली गतिसे नाचना आरम्भ करताहै। आनन्दके उस प्रचंड प्रवाहमें राजा, प्रजा, सर्दार, सिपाही सभी एकसे होजातेहैं। मेवाडके प्रायः सभी रहनेवाले उस उत्सवमें मिल जातेहैं। चौगानके भीतर जिस प्रकारसे गीत और बाजे बजाकरतेहैं, वैसे ही उसके साथ २ होलीलीलाका प्रचंड आचरण हुआ करता है। फिर सबही एक २ अद्भुत जीवकी मूर्ति धारण करके उस रंगभूमिसे बाहर हुआ करतेहैं। उस समय वह जिसको सामने पातेहैं उसीको अबीर गुलालसे बेहाल करदेतेहैं। वह मनुष्य चाहैं किसी धर्म्मके हो परन्तु होलीके मतवालोंसे किसी प्रकार नहीं बचने पाते।

फाल्गुन मासके अन्ततक फागोत्सव हुआ करताहै। पिछले दिन राणाजी अपने प्यारे सर्दारको "खाँडा नारियल" अर्थात् खड्ग और नारियलको बाँटा करतेहैं, बहुधा यह खड्ग कागज अथवा काठके बनाये जाकर भांति२ से चित्रित किये जातेहैं। इसके बाद चांचरका तेवहार होताहै। चांचर नगरके चारों ओर अग्निक्रीडा हुआ करतीहै। देशके सभी लोग अबीर और गुलालसे उस अग्निक्रीडाके चारों ओर पिशाचोंकी समान नृत्य करते फिरतेहैं। सारी रात इस प्रकारसे खेल कूदमें बिताई जातीहै। फिर जबतक चैत्रमासका पहिला दिन अरुणोदयके साथ प्रकाशित नहीं होता तबतक वह लोग भी अपने उत्सवको नहीं छोडतेहैं। जिस समय सूर्य भगवान् मीनराशिमें प्रवेश करतेहैं, राजपूतलोग उसी लग्नमें संध्यावंदन करके अपने कपडोंको बदलकर घरोंको लौट आतेहैं। उस दिन सेवक लोग भी अपने २ प्रभुको अनेक प्रकारके द्रव्य उपहारमें दिया करतेहैं।

शीतला षष्ठी।–चैत्रमासके शुक्लपक्षमें छठके दिन यह उत्सव होताहै। राजपूतोंका कथन है कि शीतलादेवी बच्चोंकी रक्षा करतीहैं, राजपूतोंकी स्त्रियें अपने २ पुत्रोंकी मंगलकामनासे इस छठकी तिथिको शीतलादेवीके मंदिरमें आयाकरतीहैं। उदयपुरमें [illegible] एक पहाडी शिखिरपर शीतलाजीका मंदिर बनाहुआ है राजपूतोंकी स्त्रियां [illegible] शीतलादेवीकी पूजा करके अपने २ घरोंको लौटजातीहैं।

उसने इस बातका विचार नहीं किया कि यह विकट प्रकाश किसी भूत प्रेत पिशाच अथवा सर्पद्वारा तो उत्पन्न नहीं हुआहै; वरन दूने साहसके साथ निडर हृदयसे उस प्रकाशकी ओर बढता गया। इस प्रकार आगे चलनेपर कुछ ही दूरपर एकसाथ हकाबका सा होकर खडा होगया। सम्पूर्ण अंग शिहरित हुआ; हृदय बारम्बार धडकने लगा, रोम २ खडा होगया उसने देखा कि एक बडे-भारी चूल्हेके भीतर नीली और लाल आग जलतीहै, उसही अग्निके प्रकाशसे सुरंगमें कुछ दूरतक उजाला था। वीभत्स वेष धारिणी कई एक नागिनी उस बडे कडाहको चारों ओरसे घेरेहुए विकट गंभीर शब्दसे मंत्र पढतीहुई ताण्डव नृत्य करतीं और एक २ बार अपनी उस मायामयी लकडीसे जो उनके हाथोंमें थीं, उस कडाहको स्पर्श कर रहीहैं। मालदेव इस अद्भुत दृश्यको देखकर कुछदेर भौचक सा खडारहा। क्या करूं, किस प्रकारसे मंगल होगा, इन बातोंका वह कुछ भी निश्चय न करसका। उसका पिछला पद-शब्द उस गंभीर मन्त्रोच्चारण और नृत्यके शब्दमें जब लीन होगया तब नागिनियोंने स्थिर भावसे खडे होकर उसकी ओर देखा। अंगारकी समान उनके लाल २ नेत्र और विकट मुखको देखकर मालदेवका हृदय भयभीत हुआ। परन्तु मुखपर भयके कुछ भी चिह्न न थे। वह स्थिरभावसे खडा होगया। तब उन भयंकर भुजंगिनियोंने उसके आनेका कारण पूछा। शोनगंड सरदारने धीरे २ उत्तर दिया कि "यक्ष, रक्ष, गन्धर्व, किन्नर अथवा नाग आपलोग जो कोई भी हो मैं आपके चरणोंमें प्रणाम करताहूं। आपकी गंभीर शान्तिको भंग करने अथवा आपके गूढ स्थानका भेद खोलनेके लिये मैं यहांपर नहीं आयाहूं। गिह्लोटकुलके अधीश्वर वीरवर बाप्पारावलको जो देवी खड्ग चतुर्भुजा देवीने दिया था, अबतक वह चित्तौरमें ही था, परन्तु गत यवनविप्लवके समयसे न जाने कहां चलागया सो ज्ञात नहीं। अतएव निवेदन यह है कि यदि आपलोगोंने उसको रख लियाहो तो मुझको दे दीजिये।" भुजंगिनियोंने मालदेवका निरापन करनेके लिये उस कडाहका ढकना खोल दिया। ढकना खुलते ही मालदेवको वीभत्स दृश्य दिखाई दिया। मालदेवने देखा कि उस कडाहमें अनेक प्रकारके मनुष्योंके अंग खण्ड २ होकर पडे हुए हैं। उन अंगोंके बीचमें [illegible] [illegible] उसको दिखाई दी। मालदेवने चकित होकर [illegible] [illegible] [illegible] कुछ देर पीछे उन नागिनियोंने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मालदेवको [illegible]

अंगोंमें फूलोंका शृंगार होताहै। स्त्रियां भी फूलोंसे सजीहुई वनदेवी सी जान पडतीहैं। वस यही वहार होतीहै कि;–" फूलनको हार हिय, फूलनके कर्नफूल, फूलनको वेंदा सोहै राजसुकुमारीके। फूलनके वाजूवंद,फूलनके झूलै झूलै फूलैं फलें भाग सदा लाडली हमारीके। " कोई २ तो ऊंचे २ वृक्षकी डालियोंमें झूला डालकर आनन्दके साथ झूलती हैं;–कोई मल्हार गातीहै, कोई राजपूतवाला अपनी सहेलीको राधा बनाकर आप वंशी धारण करके कन्हैयाजी बनतीहै, और दूसरी सखियोंके हाथ पकडेहुए रासमंडलकी लीला करके अपना जन्म सुफल करतीहै। निकट ही सुन्दर २ युवा पुरुष भी इसही भांतिकी लीला किया करतेहैं, उनमेंसे कोई कृष्ण,कोई राधा, कोई चन्द्रावली बनकर नाचते गातेहुए व्रजभूमिकी समान रंग और उमंग दिखलातेहैं, कोई झूलताहै, कोई झुलाताहै, कोई आन वान तानके साथ गीतगोविन्दको गाताहै;– कोई २ रास करताहै। कोई राधा बनकर मान करताहै, कोई कृष्ण बनकर " देहि पदपल्लवमुदारम् " कहकर मनाताहै, जो पुरुष हिंडोला नहीं ले सकते वह वृक्षोंमें रस्सी डालकर अपनी अभिलाषाको पूर्ण किया करतेहैं। इस प्रकारसे सबही कोई अपने २ आनन्दमें मतवाले होकर झूमत रहतेहैं।

अन्नपूर्णा।–जिस दिन भगवान् दिननाथजी मेषराशिमें शुभागमन किया करतेहैं, उसही समय राजपूत भगवती अन्नपूर्णाजीकी पूजा करतेहैं। सिंहासन-पर आदिशक्ति अन्नपूर्णाजीकी मूर्ति विराजमान होतीहै। उनके वॉये हाथमें सुवर्णका थाल, और दहिनेमें दर्वी होतीहै। सन्मुख ही सर्वमंगलमय पुरुषप्रधान महादेवजी खडेहुए अन्नकी भिक्षा मांगते होतेहैं। आद्याशक्ति प्रकृतिके सामने संसारका मंगल करनेके कारण पुरुष प्रधान स्वयं विश्वनाथजी खडे हैं। सर्व मंगलकारी इस युगलमूर्तिके देखनेसे किसके हृदयमें आनन्दके साथ २ भक्तिका उदय नहीं होताहै?

हरगौरीकी इस मूर्तिके सामने राजपूत थोडी सी जमीन खोदकर उसमें जौ बोया करते हैं। बनावटी तापकी सहयतासे बोयेहुए बीज दो ही दिनमें अंकुरित होजातेहैं। उस समय राजपूत बालागण एक दूसरेका हाथ पकडेहुए कलकंठसे गीत गातीहुई भगवती भवानीके आशीर्वादको मांगती हैं। तथा मूर्ति और उपजेहुए जौके खेतोंकी परिक्रमा करतीहैं। तदुपरान्त उन उपजे हुए जवोंको उखाडकर अपने सम्बन्धी लोगोंमें बांट देतीहैं। तब मनुष्य उनको अपनी २ पगडियोंमें रखलेतेहैं। मेवाडका प्रत्येक पुरुष अपनी सामर्थ्यके अनुसार भगवतीकी पूजा करताहै।

उत्सवमें उनही जुएको खेला करते हैं। आजके दिन जिनकी जीत होतीहै, उसका सम्पूर्ण वर्ष आनन्दसे व्यतीत होताहै: ऐसा उन सबका विश्वासहै।

इसके आगे दायजको भइयादोयज (भ्रातृद्वितीया) का उत्सव होताहै। कहतेहैं कि सूर्यकी पुत्री यमुनाने इस तिथिको अपने भ्राता यमको नेवता देकर अपने घरपर भोजन कराया था। इसही कारणसे हिन्दूशास्त्रमें भ्रातृप्रेमका पवित्र प्रकाश करनेके लिये यह दिन श्रेष्ठ मानागयाहै।शास्त्रग्रन्थोंमें लिखाहै कि जो कोई स्त्री कार्तिक शुक्ल २ को चन्दन व ताम्बूलआदि द्वारा अर्चनाकरके अपने घरपर भोजन करातीहै विधवापनके कष्टको वह कभी नही भोगती और उसका भ्राता भी दीर्घायुको प्राप्त करके अंतसमय यमराजके दंडसे छुटकारा पाजाताहै।

इस ही तिथिको राजपूतगण गोपार्वणको आरंभ करतेहैं। संध्याके समय जब गायें गोधूलिको उडातीहुई अपने २ घरको आतीहैं, उस ही समय उनकी पूजा होती है।

अन्नकूट।—भगवान् श्रीकृष्णजीकी पूजाके लिये राजस्थानमें जितने उत्सव होतेहैं, उन सबमें अन्नकूट प्रधान है। नाथद्वारेमें यह उत्सव बडी धूमधामके साथ होताहै।भारतवर्षके अनेक स्थानोंसे वैष्णव, साधु संत और कृष्णभक्तगण आकर इस उत्सवकी शोभाको बढातेहैं। राजस्थानके भिन्न २ नगरोंमें भगवान् विष्णुकी जो सात मूर्तियें विराजमान हैं, इस उत्सवके आरम्भमें ही वह समस्त नाथद्वारेमें जाकर विधिपूर्वक पूजी जातीहैं। उन सात मूर्तियोंको संतुष्ट करनेके लिये नाथजीके मंदिरके आँगनमें अन्नव्यंजनकी राशियोंके कूट लगायेजातेहैं। राजपूतजातिके गौरवकालमें यह अन्नकूट महोत्सव अत्यन्त ही धूमधामके साथ होताथा। जिस समय अनर्थकारी युद्धोंकी दिग्दाहसे आगने राजस्थान भस्म नहीं हुआथा: जिस समय विष्णुपरायण राजपूतगण अपने महाराणाओंके ऊंचे गौरवसे गौरवान्वित होकर परमानंदसे परमेश्वरके चरणोंमें भक्तिपूर्वक कुसुमांजलिको देखकते थे, राजस्थानके उस सौभाग्य दिनमें अन्नकूट उत्सवके समय राजपूतोंके चार प्रधान राजा नाथद्वारेमें आकर अमूल्य मणिरत्न दान करनेपर राजपूतोंके गौरवका प्रकाशमान परिचय देतेथे। मेवाडके राणा अरिसिंह (दूसरे) मारवाड़के राजा विजयसिंह, बीकानेरके महाराजा गजसिंह और किशनगढ़के महाराजा बहादुरसिंह यह चारों महाराज अपनी २ शक्तिके अनुसार [illegible] एक स्थानमें [illegible] दान करके अन्नदानकी प्रशंसाको मान करतेथे। [illegible] [illegible] [illegible] राजपूतजातिके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

साथ मिलजाताहै। सरोवरके गर्भमें भी अगणित मनुष्य वनके साथ मिले हुए दिखाई देतेहैं। मानो उस स्वच्छ जलराशिके भीतर एक नया राज्य उत्पन्न होताहुआ दिखाई देताहै। मानो उस दूसरे राज्यके मनुष्य इस राज्यको न देख पाकर पृथ्वीको चरण दिखातेहुए चलेजातेहैं। इस प्रकार क्रमशः मनुष्योंकी भीड बढनेलगी। धीरे २ वह विराट् लोकसमाज मानो अधिक तर सजीव सा दिखाई देनेलगा। इतना भीड होनपर भी कहीं वादविवादका नाम तक नहीं था। सब ही भगवती गौरीके आगमनकी बाट देखरहेहैं। स्त्रियां परस्पर एक दूसरेका हाथ पकडे हुए ताल लय स्वरस ऐसे गीत गातीहैं कि श्रवणकरनेवाले मोहित होकर वारम्बार उनको धन्य २ कहतेहैं। धीरे २ बाजोंका शब्द हुआ। शब्दको सुनते ही चबूतरक नीचे अपार भीड होगई। उसके बीचमें ही देवीजीकी प्रतिमा दिखाई दी। देवीजीके वस्त्र पीले होतेहैं वह सुवर्ण और चांदीके गहने पहनेहुए होतीहैं। इधर उधर दो सहेली जो कि अत्यन्त सुन्दर हैं, देवीजीपर व्यजन कररहीहैं। प्रतिमाके सामने आते ही राणाजी सेनासहित खडे होजातेहैं। तदनन्तर वाहक लोग उस प्रतिमाको सरोवरके किनारे ही रत्नासनपर विराजमान करतेहैं। देवीजीके विराजमान होते ही सबने प्रणाम किया और राणाजी अपने सब इष्टमित्रोंको साथमें लेकर नावपर जा विराजे। स्त्रियां जो देवीजीके साथ २ बाजे बजातीहुई आतीहैं, उनमें किसी पुरुषके प्रवेश करनेका अधिकार नहीं है। यदि कोई राजपूतकलाङ्गार इस शिष्टाचारके विरुद्ध कार्य करताह, उसको तत्काल ही प्राण दंड दियाजाता है।

इस ओर देवीके नहानेकी तैयारियें हुई। शुभलग्नमें प्रतिमा काष्टमंचसे उतारी जाकर जलमें न्हवाईगयी। जब तक वह सरोवरके किनारे रहती है तब तक उसको स्नान कराया जाता है। स्नान समाप्त होनेपर धूम धामके साथ ही प्रतिमा चली जाती है। उस समय राणाजी भी आप नावसे उतरकर अपने सर्दार सामन्तोंके साथ घाटपर देवीका स्नान देखते हुए फिरते हैं। पेशोलाके किनारे उस दिन देवीकी बहुत सी प्रतिमा इस प्रकारसे स्नान करनेके लिये आतीहैं। इस प्रकार दिनके बीतनेपर राणाजी नाव पर चढेहुए इधर उधर घूमने लगे। क्रमानुसार सन्ध्याकी निविड छाया पेशोलाके घने और नीले जलमें गिरकर और भी घनी होगई। तदुपरान्त शुक्ल सप्तमीकी शशिकला धीरे २ आकाशमें दिखाई दी। उस समय महाराणाजी राज भवनको चले। तीन दिन तक देवीकी पूजा होने पर चौथे दिन अग्नि क्रीडाके साथ २ ही समस्त उत्सवका अंत होता है।

आजतक उस ही भाँतिसे पूजा लेरहे हैं। आज भी उन प्रधान वैष्णवाचार्यकी सन्तान परम भक्तिके साथ बालमुकुन्दजीकी पूजा करती है। भगवान श्रीकृष्ण-जीकी दूसरी मूर्ति मेवाड़के अन्तर्गत कामनरनगरमें विराजमान थी परन्तु किसी कारण वश वहांसे चलकर इस समय कोटेमें स्थित है।

वल्लभाचार्यके तीसरे परपोते बालकृष्णको भगवान श्रीकृष्णजीकी द्वारका-नाथनामक मूर्ति मिली थी। कहते हैं कि सत्ययुगमें अमरिक नामक एक राजाने सूर्यवंशमें जन्म लेकर एक विष्णुमूर्तिकी पूजा की थी; वर्तमान द्वारका-नाथकी यह मूर्ति उसकी प्राचीन मूर्तिके अनुसार बनाई गई है। चौथी मूर्ति गोकुल चन्द्रमाका भी ऐसा ही वर्णन पाया जाता है: सुनते हैं कि वल्लभा-चार्यजीको यह मूर्ति यमुनातीरके किसी बिलमें मिलीथी; उन्होंने अपने सालेको देदी। तदनन्तर गोकुलचन्द्रमाजी गोपजीवन गोकुलपुरीमें प्रतिष्ठित हुए। यद्यपि वर्तमान समयमें वह जयपुरके मध्यमें विराजमान हैं, तथापि गोकुलवासी भक्तजन प्रतिदिन उनके पुराने मन्दिरमें जाकर विधिविधानसे उनकी पूजा करतेहैं।

भगवानजीकी पंचम मूर्ति यदुनाथजी पहिले मथुराके निकट महावन स्थानमें विराजमान थी। महाबली महम्मद गजनवीने जिस समय मथुरानगरीको उजाड़किया उस समय यदुनाथजी सूरतनगरमें लाए गए। छटी मूर्ति;—बेतालनाथ या पाण्डुरंगजी संवत् १५७२ वि० मे गंगाजीमें पाये गये थे। सातवीं मदनमोहनजीकी मूर्तिकी पूजा आजतक एक स्त्री ही करती है।

जिस अन्नकूट उत्सवका वर्णन करते २ हम भगवान श्रीकृष्णजीकी सात मूर्तियोंका वर्णन करने लगे थे, उसकी दो चार बातें अभी और लिखनेसे रह गई है। अन्नकूटके दिन राजा जी दिनभर आनन्द मनाते हैं। उदयपुरके प्राचीन रंगस्थल चौगान नामक स्थानमें जाकर मैदानमें घुड़दौड़ और गजयुद्ध इत्यादि खेल देखाकरते हैं,—संध्याके समय आतिशबाजी छुटती है और अन्नकूटका उत्सव समाप्त होताहै।

माधवात्मज! कन्दर्प! शम्बरारे ! रतिप्रिय! ॥
नमस्तुभ्यं जिताशेषभुवनाय मनोभवे ॥ २ ॥
आधयो मम नश्यन्तु व्याधयश्च शरीरजाः ॥
सम्पद्यतामभीष्टं मे सम्पदः सन्तु मे स्थिराः ॥ ३ ॥
नमोऽमायाय कामाय देवदेवस्य मूर्त्तये ॥
ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राणां मनःक्षोभकराय च ॥ ४ ॥ "

सनातन धर्मावलम्बियोंको दृढ विश्वास है कि जो अनंगदेवकी स्तुति इस प्रकारसे करताहै, उसको किसी प्रकारकी आधि व्याधि वा विपत्ति उपस्थित नहीं होती।

नवगौरीपूजा।—मदनोत्सवके साथ २ ही चैत्रमास समाप्तहोगया। इसके संग ही अतीतवर्ष भी कालरूपी अनंत समुद्रमें डूबगया। वैशाखमासकी कठोर तपनको माथेपर धारण करके संसारमें नये वर्षने दर्शन दिये। हिन्दूशास्त्रके मतानुसार वैशाख परम पवित्र मास है; परम श्रेष्ठ होनेके कारण भगवान माधव उसे अत्यन्त ही स्नेह करतेहैं। इस महीनेमें नियम करके जो माधवकी पूजा करतेहैं; अन्तमें वह लोग विष्णुपदको प्राप्त होकर भगवान विष्णुजीके साथ विहार करतेहैं। परन्तु राजपूतोंके यहाँ इस पवित्र मासमें केवल एक ही उत्सव हुआ करताहै;—और वह भी अतिसाधारण उस उत्सवका नाम नवगौरीपूजा है। इस पूजाका आरम्भ होनेके पहिले मेवाडके सोलह सर्दार अपने २ घोडोंपर सवार होकर राणाजीके साथ पेशोलाके निकट बनेहुए चबूतरेको जातेहैं उस समय उनका जाना बडी धूमधामके साथ होताहै। इस पात्रका नाम " नगाडेका असवार " है वहांपर विधिविधानसे भगवती गौरीको स्थापन करके अनेक प्रकारके आनन्द उत्सव कियाकरतेहैं। पहिले यह मेला नहीं होता था। राणा भीमसिंहने सन् १८१७ ई० में आरम्भ किया था।

मेवाडके रहनेवाले इस उत्सवको सम्पूर्ण हिन्दूधर्मके विपरीत समझतेहैं। जिस वर्षमें इस उत्सवका आरम्भ हुआथा उसी वर्ष पेशोलाका जल प्रचंड वेगसे उमड आयाथा जलके चढ आनेसे मेवाडकी बहुत ही हानि हुईथी। नगरके निराई रहनेवाले मरगयेथे धन और रत्नके नाश होनेका कुछ टिकाना ही नहीं था। कहतेहैं कि उसी विप्लवके दिन राणाजीका एक पुत्र भी अचानक मरगयाथा। कुसंस्कार से ढके हुए नगरवासी जो चाहें सो कहें परन्तु राणाजी इन बातोंपर ध्यान नहीं देते। वह अपने सर्दारोंके साथ नावपर चढकर आनन्दपूर्वक पेशोला सरोवरमें

आजतक उस ही भाँतिसे पूजा लेरहे हैं। आज भी उन प्रधान वैष्णवाचार्यकी सन्तान परम भक्तिके साथ बालमुकुन्दजीकी पूजा करती हैं । भगवान श्रीकृष्णजीकी दूसरी मूर्ति मेवाडके अन्तर्गत कामनरनगरमें विराजमान थी परन्तु किसी कारण वश वहांसे चलकर इस समय कोटेमें स्थित है ।

वल्लभाचार्यके तीसरे परपौत्र बालकृष्णको भगवान श्रीकृष्णजीकी द्वारकानाथनामक मूर्ति मिली थी । कहते हैं कि सत्ययुगमें अमरिक नामक एक राजाने सूर्यवंशमें जन्म लेकर एक विष्णुमूर्तिकी पूजा की थी; वर्तमान द्वारकानाथकी यह मूर्ति उसकी प्राचीन मूर्तिके अनुसार बनाई गई है । चौथी मूर्ति गोकुल चन्द्रमाका भी ऐसा ही वर्णन पाया जाता है; सुनते हैं कि वल्लभाचार्यजीको यह मूर्ति यमुनातीरके किसी बिलमें मिलीथी; उन्होंने अपने सालेको देदी । तदनन्तर गोकुलचन्द्रमाजी, गोपजीवन गोकुलपुरीमें प्रतिष्ठित हुए । यद्यपि वर्तमान समयमें वह जयपुरके मध्यमें विराजमान हैं, तथापि गोकुलवासी भक्तजन प्रतिदिन उनके पुराने मन्दिरमें जाकर विधिविधानसे उनकी पूजा करतेहैं ।

भगवानजीकी पंचम मूर्ति यदुनाथजी पहिले मथुराके निकट महावन स्थानमें विराजमान थी । महाबली महम्मद गजनवीने जिस समय मथुरानगरीको उजाडकिया उस समय यदुनाथजी सूरतनगरमें लाए गए। छठी मूर्ति;—बेनालनाथ या पाण्डुरंगजी संवत् १९७२ वि० में गंगाजीमें पाये गये थे। सातवीं मदनमोहनजीकी मूर्तिकी पूजा आजतक एक स्त्री ही करती है ।

जिस अन्नकूट उत्सवका वर्णन करते २ हम भगवान श्रीकृष्णजीकी सात मूर्तियोंका वर्णन करने लगे थे, उसकी दो चार बातें अभी और लिखनेसे रह गई हैं । अन्नकूटके दिन राजा जी दिनभर आनन्द मनाते हैं । उदयपुरके प्राचीन रंगस्थल चौगान नामक स्थानमें जाकर मैदानमें घुडदौड और गजयुद्ध इत्यादि खेल देखाकरते हैं,—संध्याके समय आतिशबाजी छूटती है और अन्नकूटका उत्सव समाप्त होताहै ।

मकरसंक्रान्ति ।—टाडसाहबने भ्रमसे कार्तिकी विष्णुपदी संक्रान्ति मकरकी संक्रान्ति लिखीहै. अस्तु ! इस बातको सम्पूर्ण सनातन धर्मावलम्बी जानते हैं कि कार्तिकमासकी संक्रान्तिका दिन परम पवित्र है । इस दिन श्री राणाजी अपने सरदार और सामन्तोंको साथ लेकर चौगाननामक स्थानमें जाते हैं । सदासे [illegible] इस दिन राणाजी [illegible] करते हैं ।

[illegible]

इस प्रकारसे एक वर्षकी यह बारह यात्रा भिन्न २ नामोंसे प्रसिद्धहैं * उनमेंसे रथयात्रा भी एक है इस उत्सवमें कुछ विशेष धूमधाम नहीं होती ।

पार्वतीतृतीया ।—श्रावणमासकी शुक्ल तृतीयाको राजपूत लोग पार्वती-तृतीयाका व्रत पालन करतेहैं । कहतेहैं कि इसी दिन भगवती गौरीजी पुनर्वार भगवान भूतभावन महादेवजीसे मिलीं थीं । राजपूतगण इस पर्वको अत्यन्त पवित्र और अवश्य पालनीय समझतेहैं उनका विश्वास है कि इस दिन जो कोई स्त्री भगवती पार्वतीजीकी भक्तिसहित पूजा करतीहै वह उसके सर्व काम पूर्ण करके अन्त समयमें उसको वह अपनी सहेली बना लेतीहैं । इसीलिये राजपूतबालागण भक्तिके साथ देवीकी पूजा करतीहैं यद्यपि राजपूत लोग इस व्रतका पालन नहीं करते परन्तु उनके मतसे यह व्रत अत्यन्त पवित्र और पुण्य मय है । भूमि अधिकार करने अथवा छोडेहुए घरमें फिर आनेके विषयमें इस दिनको वह अत्यन्त ही अच्छा समझतेहैं।अंगरेज लोगोंसे जब मेवाडवालोंकी संधि हुईथी तब दूरदेशोंको भागेहुए आदमी इसी पुण्य तिथिको अपने२घर आयेथे ।

इसदिन प्रत्येक राजपूत लाल रंगके वस्त्र पहिरतेहैं । जयपुरके महाराज इस उत्सवके समय अपने सर्दारोंको लालरंगका एक २ वस्त्र दिया करतेहैं । उदयपुरकी अपेक्षा जयपुरमें यह व्रत कुछ विशेष धूमधामसे होताहै । जय-पुरकी स्त्रियें भगवती पार्वतीजीकी एक २ प्रतिमा बनाकर भलीभाँतिसे सजाय बाजे गाजेके साथ गीत गातीहुई उनको अपने कन्धोंपर लेजातीहैं । स्वयं महाराज और सर्दारलोग उन स्त्रियोंके पीछे २ चला करतेहैं । इस उत्सवके दिन समस्त राजपूत ही अपनी बेटियोंको एक २ लाल पोशाक देतेहैं ।

नागपंचमी ।—श्रावणशुक्ल पंचमीको नागमाता भगवती मनसाकी पूजा हुआ-करतीहै । जिस समय अत्यन्त वर्षाके होनेसे सर्पगण गाँवमें चले आतेहैं । उस समय वह अधिकतासे दिखाई देतेहैं । भगवती मनसा नागेश्वरी और विषहरी हैं । उक्त पंचमी तिथिमें उनकी पूजा करनेसे नागभय दूर होताहै । इसी कारणसे समस्त हिन्दूलोग विधिविधानसे जगतगौरी मनसाकी पूजा किया करतेहैं ।

राखी पूर्णिमा ।—श्रावणी पूर्णिमाको मेवाड़ी राजपूत लोग इस उत्सवको कियाकरतेहैं । कहतेहैं कि मुनिश्रेष्ठ दुर्वासाके उपदेशानुसार श्रवणने सब प्रकारके

* वैशाखमें चन्दन, ज्येष्ठमें स्नान आषाढमें रथपर बैठना, श्रावणमें शयन, भाद्रमासमें करवट, आश्विनमें कोई करवट, कार्तिकमें उठना मार्गशीर्षमें [illegible], पौषमें [illegible], माघमें [illegible] फाल्गुनमें होलारोहण और चैत्रमें मदनमहोत्सव होताहै । [illegible] पर [illegible] माना [illegible] ।

अब वह तेज नहीं है !—वह दमक नहींहै ! वह विश्वदाही उत्ताप नहींहै ! सबका ही अन्त होगया ! सबहीको शीतने जकडलिया !—आज कल तो जडता, निस्तब्धता और मौनतानें मेवाडके सम्पूर्ण अंगोंमें निवास करलियाहै ! उन्नत, प्रतिष्ठित, गौरवान्वित मेवाडका दारुण शोचनीय और हृदयविदारक विध्वंस हुआहै। उसके आकाशस्पर्शी गौरवरूपी शिखर खंडखंड होकर आज पृथ्वीसे लिपटरहेहैं, आज मेवाडमें उठनेतककी सामर्थ्य नहीं है ! जो मेवाड शक्तिका आगार समझा जाता था; आज वही मेवाड शक्तिहीन है ! परन्तु अब मेवाड क्या उठेगा ही नहीं ? क्या इस दारुण दुर्दशाके होनेसे अब मेवाड अपना शिर नहीं उठासकेगा ? हम कहतेहैं कि अवश्य उठावेगा ! आशा होतीहै कि—मेवाड फिर भी उठेगा। चित्तौरकी प्रकार और ध्वंसराशिसे फिर भी मेवाडका अवतार होगा । हम कहसकतेहैं कि पुनर्वार बाप्पारावल, समरसिंह, प्रतापसिंह, राजसिंह, तथा संग्रामसिंहकी चिताभस्मसे नये २ महावीर उत्पन्न होकर जननी जन्मभूमिके गौरवको आकाशतक पहुँचा देंगे । पुनर्वार चित्तौर प्रफुल्लित होगा, उसके प्रफुल्लित होनेसे सम्पूर्ण भारतभूमि उज्ज्वल होजायगी । आशा तो होतीहै;—परन्तु इस आशाके पूर्ण होने न होनेका कौन ठिकाना है ? आशा ! हा कपटिनि ! हा मायाविनि ! तेरा रूप हमारे ध्यानमें नहीं आसकता ।—

गीतिका ।

गंभीरतम छायो चराचर, आज नहिं गुञ्जन मही ।
चंडाल भूत पिशाच डोलत, दुर्दशा न परै कही ॥
जहँ सघन उपवन हैं प्रफुल्लित, सुमन नित बरसावते ।
तहँ काक कीट उलूक बैठे, विकट शोर मचावते ॥
चित्तौर उन्नति व्योमकेशी, दुर्दशा अब अतिभई ।
[illegible] ज्वालानल भेट [illegible], [illegible] जो भट [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] अगणित [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ।

पहुँचकर राणाजीके हाथसे उस खड्गको लेलेता है और देवीजीके सामने स्थापन करके अतिसावधानीसे उसकी रक्षा करताहै । उसी दिन तीसरे प्रहर (दिन) को नगरके तीनों द्वारोंसे नगाडोंकी गंभीर ध्वनि होतीहै । नगाडोंकी इस संकेतध्वनिको सुनते ही राणा अपने सर्दार और सामंतोंको साथ लेकर महिष-शालाकी ओर जातेहैं और उनमेंसे एक भैंसेको निकालकर रणघोडेके आगे वलि देतेहैं । तदनन्तर दलसहित भगवती चतुर्भुजाके मंदिरमें आय राजयोगीके पास ही आसनपर बैठकर उसको दो रुपये और एक नारियल देतेहैं । तदनन्तर विधिविधानसे खड्गकी पूजाकर अपने २ घरको चलेजाते हैं ।

दूसरादिन ।-पहिले दिनकी समान आज भी राणाजी चौगान महलको जाकर एक भैंसेको वलिदेतेहैं, उदयपुरके तोरणपालनामक द्वारपर भी उस दिन एक भैंसाको वलि दिया जाताहै, सन्ध्याके समय राणाजी जगन्मातोके मंदिरमें जाते हैं । वहांपर भी वहुतसे वकरे और भैंसे उच्छिन्न होतेहैं ।

तीसरा दिन ।–दिनके पहिले भागमें राणाजीकी चौगान यात्रा;–वहांपर भैंसेका वलिदान । तदुपरान्त संध्याके समय भगवती हर्षिता माताके पवित्र मंदिरमें आकर राणाजी पाँच भैंसोंको वलि देतेहैं ।

चौथा दिन ।–आज भी चौगान महलमें जाकर राणाजी एक भैंसेकी वलिदेतेहैं तदनन्तर चतुर्भुजा देवीके मंदिरमें जाय देवीकी पूजा करनेके पीछे राजयोगीको मिष्टान्न और फूलोंका हार उपहार देतेहैं । उसी मंदिरके सामने एक वडे खम्भेमें एक भैंसा बँधा रहताहै, राणाजी उस यज्ञके पशुको अपने हाथसे संहार करते हैं । परन्तु इस कार्यमें राणाजीकी विशेष चतुराई देखीजातीहै । मंदिरके निकट ही वह भैंसा खम्भेसे बँधा रहताहै । राणाजी एक सिंहासनपर जिसको वाहक लोग अपने कन्धेपर उठायेहुए होतेहैं–बैठकर हाथमें धनुष वाण ले अव्यर्थ तीरसे उस पशुका वध करते हैं ।

पाँचवाँ दिन ।–चौगान महलमें नियमित वलिदान करनेके पीछे राणाजीकी आज्ञासे वहां पर गजयुद्ध होताहै । तदुपरान्त सबही भगवती आशापूर्णाके मंदिरमें चलेजातेहैं । वहांपर एक भैंसा और एक मेंढा उत्सर्ग करके चौहानकुलकी अधिष्ठात्री देवीका प्रसाद पातेहैं ।

छटा दिन ।–इस दिन भी राणाजी नियमानुसार चौगानमहलको जातेहैं, परन्तु आज वहां पर किसी प्रकारके वलिकी तैयारी नहीं होती । देवी-की पूजा समाप्त करके वह कनफटे योगियोंके सहित निर्वाणनाथसे मिलतेहैं ।

चौवीसवां अध्याय २४.



समाजनीतिमें ज्ञानकी आवश्यकता; धर्मविधिकी अपेक्षा समाजके आचार व्यवहारकी प्रबलता; तथा उनकी परवर्तन शैली: राजस्थानकी अनेक जातियोंमें आचार व्यवहारकी भिन्नता: राजस्थानकी स्त्रियोंपर राजपूतोंकी भक्ति और सन्मान; रनवासकी रीतिका उपयोगी होना; राजपूतोंका राजकुमारियोंके गौरवको रखना; राजपूतनियोंकी असीम पतिभक्ति; इतिहास तथा काव्योंके लेख इस समय उसके सम्बन्धके उदाहरण: राजपूत स्त्रियोंकी उदारता साहस प्रत्युत्पन्नमतित्व: पुगालके साधु सालिनी देवीका विवरण; रनवासकी प्रथा: राजपूतस्त्रियोंकी प्रधानताका विस्तार; ऐतिहासिक प्रमाण: संसारकी अन्यजातिकी स्त्रियोंके साथ हिन्दू स्त्रियोंकी तुलना.



समस्त गोलंदाजसेना सजी हुई खड़ी रहती है संध्याके समय समस्त सर्दार और सामन्तोंको साथ लिये हुए वहां पहुँचकर सबसे पहिले कैजरीनामक किसी एक वृक्षकी पूजा करते हैं और तदुपरान्त पींजरेमें फँसेहुए नीलकंठ पक्षीको उडाकर छूटती हुई तोपोंके बीचमें होकर अपने स्थानोंमें चले जाते हैं।

ग्यारहवाँ दिन।–आज सामरिक व्यापार कुछ अधिकतासे होताहै । प्रातः-काल ही राणाजी अपनी राजकीय सेनाको साथ लेकर माताचल गिरिकूटकी ओर जाते हैं। सेनाके पीछे पीछे धौंसा बजता जाता है । समयानुसार उस मेरुशृंगपर पहुँचते ही राजपूत वीरगण अपने राणाजीको अनेक प्रकार कर-तब दिखाया करते हैं। कोई तोप छोडता है, कोई घोडेको चलाता हैं, और कोई शूल या भालेको चला कर राणाजीको प्रसन्न करता है। यह शोभा देखते ही बनती है। यद्यपि शिशोदियाकुलकी पडतीके साथ २ इन उत्सवोंकी शोभा भी बहुत घटगयी है तथापि इनकी मनोहरता और सुन्दरता आजतक भी घटीहुई दिखाई नहीं देती । इन घोडोंका शृंगार और नाच तथा सर्दारोंका प्रफुल्लित वदन, मनोहर वेष, अश्व व हथियारोंका चलानाः–और आस्फालन देखकर प्रत्येक दर्शकका हृदय आनन्दमें मग्न होजाताहै। इसके ऊपर जब शरदकी तीक्ष्ण किरणोंसे उनकी दमकती हुई संगीन, नंगी तलवार और भूमिमें सैकडों सूर्य प्रकाशमान होकर आज सूर्यवंशीय महाराणाजीका लीलाभिनय देखते हैं। इस रंगस्थलके उस अपूर्व सौन्दर्य व गौरवको देखकर मेवाडका वह पहिला गौरव याद आता है ! तत्काल ही वीरकेशरी संग्रामसिंह व प्रतापसिंहकी अद्भुत वीरता देवताओंकी समान कार्य जीवित भावसे स्मृतिके मार्गपर विस्तारित होकर हृदयको वर्त्तमान मेवाडकी निर्जीव अवस्थासे उस अतीव गौरवमय राज्यमें लेजाते हैं। परन्तु केवल क्षणभरके लियेः दूसरे ही क्षणमें स्मृति उदित होकर मेवाड के वर्त्तमान शोचनीय चित्रको मानसिक नेत्रोंके सामने प्रगट करदेती हैः– हृदय व्याकुल होजाताहैः वह मनमोहन चित्र अन्तःकरणसे न जाने कहांको विलाजाते हैं।

आजके शुभदिनमें प्रत्येक व्यौपारी अपनी २ दूकानको बंदनवार और फूलोंके हारसे सजाताहै । उन बाजारोंकी गलियोंके सामने मूल्यवान वस्त्रका एक २ परदा पडा होताहै । उनके सामने एक तोरणद्वार बनाया जाताहै जो कि फूलोंके गजरों और हारोंसे सजाहुआ होताहै । राणाजी इन गिरिकूटसे उतर-कर उन तोरणोंको स्पर्श करके उनकी प्रदक्षिणा करतेहैं. उत्सवके समयमें [illegible]

कि रोमकोंके 'मोरस (Mores) तथा मध्य इटालियोंके कष्टूमि (Costumi) बराबर अर्थके जाननेवालेकी धर्मनीतिके सन्मुख यह राजपूतजातिकी चाल प्राचीन साधु और ऋषियोंके द्वारा चलाई हुई अनुसरणके योग्य और समाजनीतिके संमुख अपरिहार्य (छोडनेके अयोग्य) है। धर्मनीतिके उपदेशक राजपूत इस बातको कहतेहैं. कि "कैसी बुरी चाल चलतेहो"। अर्थात् कैसे दुराचारियोंके मार्गपर पैर धराहै, तथा समाजनीतिके ऊपर अधिक निष्ठा रखनेवाले राजपूतोंकी कहावत है कि "बाप दादेकी चाल छोडदी" अर्थात इन्होंने बाप दादेके आचार व्यवहारोंको एकसाथ ही छोडदिया है। धर्मनैतिक और सामाजनैतिक आचारोंके पालन करनेका राजपूतजातिको भलीभांतिसे अभ्यास था।"

महात्मा टाडसाहबका कथन है कि अत्यन्तही वन्यजातिके अतिरिक्त और सब जातियोंका धर्म समानहै। मनु, मुहम्मद, मोजस अथवा क्राइष्ट इन सभीका धर्म एक मूल अर्थका बोधकथा। प्रत्येकका उद्देश्य एकही प्रकारका था। प्रत्येकका लक्ष्य एकही पदार्थपर था। यद्यपि हम कर्नेल टाडसाहबकी इस कहावतको समर्थन करनेके लिये सम्मत नहीं है. दुःखका विषयहै कि उनकी समान मनुकी विधान करी हुई स्मृतिको यहूदियोंके धर्मके अनुरूप बनाकर हम उसको स्वीकार नहीं करसकते। राजपूतोंके बांधव टाडसाहबने कहाहै कि एक धर्मके भिन्नजातिमें प्रचलित होनेही उस भिन्नजातिकी मानसिक अवस्थाएं कई प्रकारकी होंगी. यदि उनमें धर्मनीतिके सम्बन्धका पृथकभाव कुछ है तो वह बडी सरलतासे पाया जासकता है, परन्तु भिन्न स्थानकी जातियोंका आचार व्यवहार इतनी दूर पृथक् था ऐसा असमान है कि चिन्ताशील मनुष्य इसको सरलतासे जान सकता है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि शिशोदियोंकी निवासभूमि मेवाडके बालुकामय मारवाडपर पैर धरते ही इस उन्नतिकी सत्यता सरलतासे जानी जासकतीहै। अधर्माचरण करनेवालोंके द्वारा पराजय होकर नवीन नवीन मतवाले सम्प्रदायोंके आचार व्यवहारोंका बदल होना रहताहै. यह सब बातें सत्य हैं, इसीसे प्रकाशमानहैं. इतिहासकी गोदमें जो उज्ज्वल और सशोभित थे. उस समय हम उनमेंसे एक २ का वर्णन करनेकी अभिलाषा करतेहैं। हमारे पाठकगण इसको पढकर बडी सरलतासे राजपूतजातिके गुणागुण, पापपुण्योंकी कल्पना, सामाजिक विधान, उनका प्रकाश्य और [illegible] का आनंद, एवं उत्साह और राजपूतजातिमें प्रसिद्ध जातियोंका [illegible] सरलतासे जान सकतेहैं। इसमें कुछ भी संदेह नहीं।

अद्भुत वृत्तान्त पायेजातेहैं। राजपूतोंका विश्वासहै कि भगवती चतुर्भुजाने विश्वकर्मासे निर्माण कराकर यह खड्ग बाप्पारावलको दियाथा। उसही दिनसे गिह्लौटकुलके राजकुमारोंने दीर्घकालतक उस खड्गको अस्थावर सम्पत्तिकी समान भोगकिया। अनन्तर जिस दिन दुर्वर्ष तातारीवीर अलाउद्दीनने यमदूतकी समान चित्तौरपर चढाई की; जिस दिन चित्तौरके बारह राजकुमारोंने यवनग्राससे मातृभूमिकी रक्षा करनेके लिये संग्रामभूमिमें अपने प्राण देदिये। जिस दिन सतीशिरोमणि रानी पद्मिनीजी अगणित राजपूत ललनाओंको संग लेकर चितामें जलगई, उसही दिनसे लेकर कुछ कालतक उस खड्गका अधिकार गिह्लौटकुलके हाथसे निकल गया। इतिहासमें पहिले ही वर्णन किया जाचुकाहै कि अलाउद्दीनने चित्तौरको विजय करते ही मालदेव नामक एक शोनगडे सर्दारको वहांका राज्य देदिया। चित्तौरको पाते ही मालदेवने चित्तौरके रत्नभांडारको अपने अधिकारमें करना चाहा। उसको विश्वास था कि यहाँ पर जमीनके नीचे सुरंगें बनीहुई हैं, उनमें ही चित्तौरकी पतिव्रता नारियोंने अपने प्राण दियेहैं; इस कारण निश्चय ही वहां बहुतसे रत्नपडेहोंगे। अतएव उसने भयंकर गुफामें प्रवेश करनेका निश्चय करलिया। यद्यपि उसके मनमें गुफाओंके सम्बन्धमें बहुतसे कुसंस्कार थे तथापि लोभने उसके भयको मिटादिया। बहुतसे आदमी गुफाओंकी डरावनी बातें कहकर उसको डराने लगे। किसीने कहा कि एक भयंकर अजगर सुरंगकी रक्षा करताहै; किसीने कहा कि एक विकट प्रेतिनी सुरंगके चारों ओर घूमती रहतीहै। किसीने भय दिखाया कि जो कोई इस भयंकर सुरंगमें प्रवेश करता है वह फिर जीताहुआ नहीं निकलता। मालदेव इन बातोंको सुनकर किंचित् भी भीत नहीं हुआ उसकी प्रतिज्ञा अटल और अचल रही। उसने गुफामें प्रवेश करनेका दृढ विचार करलिया। भट्टग्रन्थोंमें इसका कोई वृत्तान्त नहीं लिखा कि मालदेवने कौनसे मार्गसे सुरंगमें प्रवेश किया था।

उस गंभीर अन्धकार युक्त सुरंगमें प्रवेश करते हुए साहसी मालदेवकी प्राणवायु क्रमशः रुकने लगी। प्रत्येक मुहूर्तमें प्राणनाशकी शंका होनेसे ऐसी विपत्तिमें भी वह वीर नहीं घबडाया। अपनी पक्की आदतसे वह स्वयं ही विचलित और चकित होने लगा। परन्तु इसका नामतक नहीं था। केवल साहसपर ही भरोसा रखकर और अनुमानका ही आश्रय लियेहुए वह टटोलता हुआ एक ओरको चलने लगा। कुछदूर चलनेपर सुरंगके बीचमें एक नक्षत्रका निश्चित नीला प्रकाश उसको दिखाई दिया। मालदेवका साहस [illegible]।

समाजतत्त्वके जाननेवाले सदा तैयार रहतेहैं। किस जातिने जगतमें जीवित स्वरूपिणी स्त्रीके ऊपर किस प्रकारका आचरण किया, समाजमें उस स्त्रीके स्वामित्वकी सामर्थ्य, सन्मान, आदर, यत्न और प्रबलताका विस्तार किस प्रकारसे हुआ, समाजनीतिने स्त्रियोंको किस प्रकारकी विधिसे जड़कर कितनी स्वाधीनता दी और उन रमणियोंके कुलका कर्त्तव्य कर्म किस प्रकारसे नियुक्त करदिया था, सबसे प्रथम उनकी ओर दृष्टि करनेसे नीतिके जाननेवाले मनुष्य सरलतासे इसका पीछा करसकतेहैं, उस जातिकी सभ्यता उन्नतिकी कितनी ऊंची सीढ़ियोंपर चढीहै। महात्मा टाडसाहबका अनुसरण करनेके पहले ही हम इस स्थानपर आर्य धर्मशास्त्र और पुराण आदिमें जिनका वर्णन हुआहै उसको हिन्दूलोग अवश्य जानतेहैं, दूसरे लोग भी जानें इसीलिये आर्यस्त्रियोंके सम्बन्ध की कितनी ही कथाओंका वर्णन करनेकी अभिलाषा करतेहैं। हिन्दूसमाजमें, राजपूतसमाजमें स्त्रीजातिका ऊंचा सन्मान चिर-कालसे विराजमानहै। आर्यजातिने स्त्रियोंको जगतकी जीवितस्वरूपिणी लक्ष्मी स्वरूपणी जानाहै। मनुष्योंका सुख, सम्पत्ति एकमात्र पतिव्रता सतीके कल्याणसे होतीहै, जिस स्थानमें भार्या है, वही स्थान संसारका गृह है, भार्यासे रहित जो गृह है वह गृह नहीं कहाता, भार्याहीन मनुष्य गृहस्थी नहीं कहा जासकता। पराशर स्मृतिकी यही प्रधान उक्ति है, भार्याहीन मनुष्यको तो वनमें ही निवास करना कल्याणकारी है, अथवा उसका रमणीय घर भी गहन वनकी समान है; संसारमें जितने भी रत्न हैं, उनमें स्त्रीरत्न सबसे श्रेष्ठ है, एकमात्र स्त्री ही संसारका जीवन है, शक्ति है, बल है, तथा सम्पूर्ण पुराणोंका भी यही मत है ×इस कारण आर्य मुनि ऋषिगण आर्यस्त्रियोंका सन्मान कितना ऊंचा नियुक्त करगयेहैं, उसी उक्तिसे वह भलीभांतिसे प्रकाश पातीहै। स्त्रियोंकी एकमात्र पुरुषजातिकी प्रवृ-त्तिको चरितार्थ करनेहीके लिये सृष्टि नहीं हुई है, सुख, शांति, मंगल, पवित्रता, पुण्य, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी प्राप्तिका मूलकारण जिसस्त्रीको आर्यजातिने

धरे और उसको भोजन करनेके लिये संकेत किया। पिशाचोंके खानेयोग्य उन दुर्गन्धमय पदार्थोंके खानेमें मालदेवने कुछ भी सोच विचार न किया; उसने तत्काल खा पीकर रीता पात्र नागिनियोंको लौटा दिया। इस कठोर और निडर कार्यसे यह भलीभाँति प्रमाणित होगया कि उस देवीके दियेहुए खड्गको भली-भाँतिसे मालदेव व्यवहार करनेके योग्य है। नागिनियोंने प्रसन्न होकर वह खड्ग देदिया। मालदेव भी उस खड्गको लियेहुए अपनी विजयका होना समझ-कर विकट सुरंगके बाहर आया। *

शोनगडे सर्दारकी बेटीसे विवाह करके जिसदिन हमीरको चित्तौरका सिंहा-सन मिलाथा, उसही दिन यह खड्ग भी मिलाथा, किसी भट्टग्रन्थमें ऐसा लेख है कि राणा हमीरने ही भगवती चारणीदेवीकी पूजा करके फिर इस खड्गको पायाथा।

लक्ष्मीपूजा।—कार्तिकी शुक्ला पूर्णिमाको परम श्रद्धा भक्तिके साथ राजपूत लोग सौभाग्यदायिनी लक्ष्मीजीकी पूजा करतेहैं। इस उत्सवके समय भी बडी धूम धाम होतीहै।

कार्तिक वदी ३० अमावस्याको मेवाडमें दीवाळी (दीवाली, दीपावली दीप-दान) का उत्सव हुआ करताहै। इस दिनकी रात्रिको समस्त राजस्थानमें रोशनी होतीहै। नगर, गाँव और प्रत्येक छावनीमें ऐसी रोशनी होतीहै कि रातका भी दिनही मालूम होताहै। राजासे लेकर निर्धन भिखारी तक भी सामर्थ्यके अनुसार अपने २ स्थानपर दीपक जलातेहैं। मेवाडके सबही लोग इस उत्सवके दिन नैवेद्य लेकर लक्ष्मीजीके मंदिरमें जातेहैं। राणाजी भी आज अपने प्रधान मन्त्रीके सन्मुख बैठकर भोजन करतेहैं; और वह मन्त्री उस दीप वृक्षके अग्रभागमें कि जिसको राणाजी स्थापित करतेहैं—तेल डालता रहताहै। राणाजीके इष्ट मित्र और सम्बन्धी ऐसा ही करतेहैं। जिस अक्षक्रीडा (जुआ) को त्रिकालदर्शी भगवान मनुजीने अत्यन्त अनिष्टकर समझके वर्जदियाहै, राजपूत लोग दिवालीके

---

* मालदेवने जिस प्रकार इस खड्गको उद्धार किया, उसी भाँतिसे जिन लोगोंका [illegible] एक भी उद्धार हुआथा। [illegible] प्रदान [illegible] करते हैं। इतिहासके [illegible] इसका [illegible] है। [illegible] किसी [illegible] किया। [illegible] इतिहासमें [illegible]।

कारोंका यही मूल लक्ष था, इसी लिये अंतःपुरकी रीतिकी सृष्टि हुई और इसी लिये वह यह आज्ञा करगयेहैं कि स्त्रियोंकी रक्षा भलीभाँतिसे करें । ×

जो लोग आर्यशास्त्रको नहीं जानतेहैं, अथवा जो हिन्दुओंके अंतःपुरके निवासको नहीं जानतेहैं, उनका तथा पाश्चात्यजातिका यह विश्वास है कि हम लोग घरके भीतर निवास करनेवाली स्त्रियोंके ऊपर मोल ली हुई दासीकी समान व्यवहार करते हैं; उनका यह अनुमान और ऐसा विश्वास कदापि ठीक नहीं होसकता। परन्तु स्त्रियोंके ऊपर किस प्रकारसे दृष्टि रखनी उचित है, आर्य शास्त्रकारोंने उसके सम्बन्धमें क्या कहाहै ? जो पुरुष स्त्रीके मानकी रक्षा करता है, उसको पग २ पर कल्याणकी प्राप्ति होतीहै और जो मनुष्य स्त्रीका अपमान करताहै वह मनुष्य अधम और उसके भाग्यमें अशुभ होते रहतेहैं। हमारे प्रधान धर्मशास्त्रके नेता महात्मा मनुजी स्वयं कहगये हैं × " कि जो मनुष्य स्त्रियोंके सन्मानकी रक्षा करता है, देवता उसके ऊपर प्रसन्न होते हैं, और जो मनुष्य स्त्रियोंका अपमान करता है, उसके सम्पूर्ण धर्म कर्म और पुण्योंका नाश होजाताहै, और जिस संसारमें स्त्रियोंके सन्मानकी रक्षा भलीभांतिसे नहीं होती वहां स्त्री शाप देती है, इसीसे वह संसार एक बार ही विध्वंस होजाताहै ।" आर्य संसारमें स्त्रियोंका कैसा उत्तम सन्मान होताथा, कहांतक उनको दयादृष्टिसे देखाजाता था, मनुकी उक्ति उसकी दृष्टान्तक का परिचय देतीहै अबलाके ऊपर किसी भांतिका भी प्रहार करना उचित नहीं, इस बातको मनुजी स्पष्टतासे कहगये हैं। उनका विधान यह है कि चाहें स्त्रियें सहस्रों अपराध भी करलें परन्तु मनुष्य उनको फूलसे भी न मारें। आर्यजातिमें स्त्रियोंका मारना किसीभांति भी उचित नहीं, हम सबसे पहले यही पूछते हैं कि संसारमें

राजाओंके आनेके समयमें सूरतकी एक विधवास्त्रीने ७००००) रुपये ठाकुरजीको चढायेथे। यद्यपि आज राजस्थानकी शोचनीय दुरावस्थाके समयमें ऐसा विवरण असम्भव समझाजायगा। परन्तु उस समय कि जब राजस्थानका गौरव उन्नतिके शिखरपर पहुँच चुकाथा, राजपूतलोग देवसेवामें इस प्रकार और कभी इससे भी अधिक धन उत्सर्ग करदेतेथे, इस वातका स्पष्ट प्रमाण मेवाडके बहुतसे स्थानोंमें पायाजाताहै।

यहांपर प्रयोजन समझकर भगवान श्रीकृष्णजीकी पूर्वोक्त सात मूर्तियोंका वृत्तान्त लिखाजाताहै। प्रसिद्ध वैष्णव वल्लभाचार्यजी महाराजने इन सातमूर्तियोंको एकत्र करके इस महान अन्नकूट उत्सवकी प्रतिष्ठा की थी। बहुत दिनतक यह सातों मूर्तियें एक ही मन्दिरमें रक्खी हुई थीं, पीछे श्रीमान् वल्लभाचार्यके पोते महाराज गिरिधारीजीने अपने सातपुत्रोंको श्रीभगवानजीके यह सात रूप बाँटदिये। उन सात पुत्रोंके वंशधरगण आजतक प्रधान पुरोहित बनेहुए सात देवमूर्तिके मन्दिरोंमें विराजमान हैं। भगवानजीके सात रूपोंका नाम, आधुनिक वासस्थानका नाम तथा अपरापर प्रयोजनीय विषय नीचे लिखेजातेहैं।

श्रीनाथजी	... ...	नाथद्वारा।
१ नवनीत	....	नाथद्वारा।
२ मथुरानाथ	... ...	कोटा ।
३ द्वारकानाथ	... ...	कंकारावली [काकरौली]
४ गोकुलनाथ वा गोकुलचन्द्रमा	...	जयपुर ।
५ यदुनाथ	... ...	सूरत ।
६ वेतालनाथ	... ...	कोटा ।
७ मदनमोहन	... ...	जयपुर ।

भगवान श्रीनाथजीको सर्वप्रधान होनेके कारण इन सातमूर्तियोंमें नहीं मिलायाहै। नवनीतजीका मन्दिर नाथजीके निकट ही बनाहुआहै। इनका दूसरा बालमुकुन्द है इन बालकमूर्तिके दहिने हाथमें लड्डू रक्खा हुआ है। प्राचीन कालसे श्रीबालमुकुन्दजी महाराज गृह-देवताओंमें गिनेजातेहैं। मुसलमानोंके द्वारा मंदिर तोडेजानेपर भगवान मुकुन्दजी बहुत दिनोंतक जमुनाजलमें स्थितरहे। एक समय श्रीवल्लभाचार्यजीने स्नान करनेके समय उनको पाया। उन्होंने इन मूर्तिको अपने स्थानपर लायकर गृहदेवताके मन्दिरमें स्थापनकिया और भक्तिके साथ उनकी पूजा करने लगे। उनदिनसे श्रीभगवानजी नवनीतवल्लभके कुलदेवता होकर

करनेके लिये सर्वदा तयार रहती होतीहै. हमारा कहना केवल इतनाहि है कि अनेक बड़े २ घरानोंमें नौकर चाकरोंके न मिलनेसे उनको अपने घरके काम स्वयं अपने हाथसे करने पड़तेहै. इसलिये हमें यही पूछना है कि उस समय उनके स्वामी और उनकी स्त्रियोंका चिह्नस्वरूप आलस्य विलासिता न जाने कहां अदृश्य होजाताहै ? उस समय क्या उनकी सभ्यता नहीं रहती. जो जातिके कर्त्तव्य कर्म सांसारिक कार्योंसे उनको छुटकारा देनेसे ही यदि उनको सभ्य बनाते हों तो वह सभ्यता संसारसे जितनी जल्दी विदा होजाय उतना ही कल्याणका विषय है।

आर्यजाति स्त्रियोंको मोल ली हुई दासीकी समान नही जानती. इस विषयमें हम दो एक प्रमाण और भी उद्धृत करते हैं। आर्यशास्त्रकारोंका कथन है. कि बाल्यावस्थामें स्त्री पतिकी मंत्रीकी समान है, सलाह देनेमें सखीकी तुल्य है, और स्नेहमें माताकी समान आचरण करतीहै। × भला यह तो विचारो कि यह कहीं मोल ली हुई दासीके लक्षण हो सकतेहै? संसारका मंगल—समाजमें शान्ति, संसारकी उन्नति और जातिकी पवित्रताके संग्रहमें क्या यह उल्लेख नहीं है ? शास्त्रको क्या भलीभांतिसे नहीं विचार सके हो ? भारतवर्षमें आर्यजातिके बीचमें विषमय बहुतसे विवाहकी रीति प्रचलित देखकर विलायतके निवासियोंने यह सिद्धान्त स्थिर करलियाहै कि आर्यजातिमें केवल भोगविलासकी इच्छाको चरितार्थ करनेहीके लिये स्त्रीजातिकी सृष्टि हुई है, अथवा स्त्रीजातिको मोल ली हुई दासीकी समान न जानकर क्यों बहुविवाहकी रीति प्रचलित हुई. परन्तु इस प्रश्नका उत्तर देनेके पहले हम अहंकार, गौरव और साहसके साथ कह सकतेहैं कि आर्यशास्त्रकार अनेक विवाहोंके पक्षपाती नहीं है। जिस मनुष्यके पुत्र विद्यमान है उसको दूसरा विवाह करना किसी प्रकार भी उचित नहीं। यदि स्त्री सर्वदा रोगी रहतीहो, या वंध्या हो तो उसके स्थानपर दूसरे विवाह करनेकी प्रथा है। जो पुरुष बहुत सी स्त्रियोंका पति है वह अधम है, महापापी है, पुराणोंमें ऐसा भी कहाहै।

हैं; । तथापि राजपूतलोग उनको विशेष त्यौहार नहीं मानते । केवल मार्गशिर शुक्लसप्तमीको उनका एक उत्सव होताहै । इस तिथिको वह मित्रसप्तमी कहतेहैं । भगवान् दिवाकरजी इसही तिथिको अपनी माता अदितिके गर्भसे उत्पन्न हुएथे । इसही कारणसे सूर्यवंशीय राणाजी इस दिनको पवित्र मानतेहैं । *

राजपूत स्वाधीनताकी लीलाभूमि, वीरता और महानताकी साधन पीठ, हिन्दुगौरवकी खानि, वीरमाता मेवाडभूमिमें जितने त्यौहार और पर्व होतेहैं, उनका वर्णन भलीभांतिसे होगया । जिस लेखनीकी सहायतासे वाप्पारावलकी वीरता, समरसिंहकी समरकौशल, प्रतापसिंहका स्वदेशप्रेम और प्रतापराजसिंहका निडरपन और तेजवर्णन किया गया; उसही लेखनीकी सहायतासे उनकी संतानकी विलासप्रियता भीरुता और अन्तमें वीरवंदनीय गिह्लौटकुलकी शोचनीय दुर्दशा भी लिखी गई है जो गिह्लौट वंश एक समय वीरता, सभ्यता, तेजस्विता, और महानुभावतामें संसार शिरमौर समझा जाता था; जिसकी वीरताके डंकेका शब्द हिन्दुकुशपर्वतको तोडकर पौराणिक शाकद्वीपकी छाती तक पहुँच गयाथा, जिसके अकेले वंशधरकी अलौकिक वीरतासे एक समय, शहन्शाह अकबरका सिंहासन कंपायमान हुआ था आज उसही कुलका एक साधारण वंशधर अत्यन्त दीन तन छीन और मन मलीन होकर समयको व्यतीत कररहेहैं । जिसके पूर्व पुरुषोंके रोम२ से अग्निकी चिनगारियाँ निकलकर भारतवर्षको ही नहीं वरन ईरान तूरान तकको डावाँडोल कर देतीथीं; आज दुर्भाग्यरूपी कठोर शीतके लगनेसे वही चिनगारियें निर्वाण होगईहैं ।

---

* मान्यवर टाडसाहबने अंग्रेज होकर राजपूतोंके धर्म और उत्सवादिका कैसा उत्तम वर्णन कियाहै, यद्यपि कहीं २ पर उन्होंने धोखा भी खायाहै, परन्तु विचारकर देखनेसे वह भ्रम भी मार्जन करनेके योग्यहै। जो उन्नतोदय संस्कृत विद्या जानते होते तो उनसे कभी भी यह दो चार भ्रम न होते । इस अध्यायके प्रथमांशमें जिस भानुसप्तमीका विवरण किया गयाहै, वह इस मित्रसप्तमीका दूसरा नाम होनेके अतिरिक्त और कुछ भी नहींहै। टाडसाहबने इस भानुसप्तमीको श्री [illegible] [illegible]

सिंहासनके ऊपर ऊंचे आसनपर विराजमान हैं. इस सभ्य अमेरिकामें हम लोगोंने उन्नीसवीं शताब्दीमें बहुविवाहकी रीति प्रचलित होतीहुई क्यों देखी ? क्रिश्चियन कौन्सिलकी सम्प्रदायमें आजतक इस बहुविवाहकी प्रथाको समभावसे रक्षा करतेहैं ? एक नहीं, दो नहीं, वरन सैकड़ों हजारों स्त्रियें एक एक मनुष्यको पतिभावसे वरण करतीहैं ? उन्हें क्या अमेरिकाकी उन्नत सभ्यताका उज्ज्वल प्रकाश प्राप्त नहीं हुआ ? उनको क्या विलायतकी उच्च शिक्षा नहीं मिली ? अच्छा हमने बहुतसे तर्क कुतर्क न करके इस बातको भी मानलिया कि कौंसिलके ऊपर वहांके सर्व साधारणने सहानुभूति न दिखाई. परन्तु यहां पर हमारा यह प्रश्न है कि कई वर्षके बीतजानेपर अमेरिकामें स्त्रियोंकी संख्या अधिक बढ़गई. क्या समाजके नेताओंने इसका प्रस्ताव तक भी नहीं किया कि समाजमें शान्तिकी रक्षाके लिये बहुविवाहकी रीतिका प्रचार करना आवश्यक है ? प्रधान २ समाचारपत्रोंमें क्या इस बातका विचार नहीं हुआ ? आजतक भी क्या अमेरिकाके समाजनेता गण स्त्रियोंकी संख्याको बढ़ताहुआ देखकर इस बहुविवाहकी रीतिको चलाकर समाजनीतिके मानकी रक्षाके अभिलाषी नहीं हुए ? पात्रके न मिलनेसे अमेरिकामें बहुत सी युवतियें दीर्घकालतक विवाह न करके समाजको बराबर कलंकित करती हैं. इसे क्या वह अपनी दिव्यदृष्टिसे नहीं देखतेहैं ? इसीलिये हम कहते हैं कि केवल समाजनीतिके सन्मानकी रक्षाके लिये बहुपत्नी विवाह अप्रार्थनीय है. निम्न लिखित वंशोंमें कन्यादान निन्दनीय है— और सवर्णोंमें तथा बराबरके वंशमें पात्रके न मिलनेसे बहुविवाहकी रीतिका प्रचार करना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु इस समय स्थान २ पर इस रीतिके परिवर्त्तनका पूर्ण लक्षण प्रकाश पारहाहै।

हैं; । तथापि राजपूतलोग उनको विशेष त्यौहार नहीं मानते । केवल मार्गशिर शुक्लसप्तमीको उनका एक उत्सव होताहै । इस तिथिको वह मित्रसप्तमी कहतेहैं । भगवान् दिवाकरजी इसही तिथिको अपनी माता अदितिके गर्भसे उत्पन्न हुएथे । इसही कारणसे सूर्यवंशीय राणाजी इस दिनको पवित्र मानतेहैं । *

राजपूत स्वाधीनताकी लीलाभूमि, वीरता और महानताकी साधन पीठ, हिन्दुगौरवकी खानि, वीरमाता मेवाडभूमिमें जितने त्यौहार और पर्व होतेहैं, उनका वर्णन भलीभांतिसे होगया । जिस लेखनीकी सहायतासे वाप्पारावलकी वीरता, समरसिंहकी समरकौशल, प्रतापसिंहका स्वदेशप्रेम और प्रतापराजसिंहका निडरपन और तेजवर्णन किया गया; उसही लेखनीकी सहायतासे उनकी संतानकी विलासप्रियता भीरुता और अन्तमें वीरवंदनीय गिह्लौटकुलकी शोचनीय दुर्दशा भी लिखी गई है जो गिह्लौट वंश एक समय वीरता, सभ्यता, तेजस्विता, और महानुभावतामें संसार शिरमौर समझा जाता था; जिसकी वीरताके डंकेका शब्द हिन्दुकुशपर्वतको तोडकर पौराणिक शाकद्वीपकी छाती तक पहुँच गयाथा, जिसके अकेले वंशधरकी अलौकिक वीरतासे एक समय, शहन्शाह अकबरका सिंहासन कंपायमान हुआ था आज उसही कुलका एक साधारण वंशधर अत्यन्त दीन तन छीन और मन मलीन होकर समयको व्यतीत कररहेहैं । जिसके पूर्व पुरुषोंके रोम२ मे अग्निकी चिनगारियाँ निकलकर भारतवर्षको ही नहीं वरन ईरान तूरान तकको डावाँडोल कर देतीथीं; आज दुर्भाग्यरूपी कठोर शीतके लगनेसे वही चिनगारियें निर्वाण होगईहैं ।

---

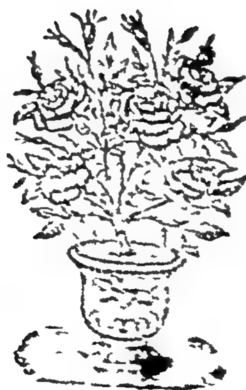
* मान्यवर टाडसाहबने अंग्रेज होकर राजपूतोंके धर्म और उत्सवादिका कैसा उत्तम वर्णन कियाहै, यद्यपि कहीं २ पर उन्होंने धोखा भी खायाहै, परन्तु विचारकर देखनेसे वह भ्रम भी मार्जन करनेके योग्यहै। जो उक्तमहोदय संस्कृत विद्या जानते होते तो उनसे कभी भी यह दो चार भ्रम न होते । इस अध्यायके प्रथमभागमें जिस भानुसप्तमीका विवरण किया गयाहै, वह इस मित्रसप्तमीका दूसरा नाम होनेके अतिरिक्त और कुछ भी नहींहै। टाडसाहबने इस भानुसप्तमीको भी सूर्यभगवानका जन्मदिन बतायाहै. परन्तु हम देखतेहैं कि आदित्य भगवानने मार्गशिर मासकी शुक्ला सप्तमीको जन्म लियाहै । पाठकगणोंको समझानेके लिये भविष्यपुराणका एक प्रमाण नीचे दिया जाताहै । यथा "अदित्यां कश्यपाज्जज्ञे मित्रो नाम दिवाकरः । मार्गशीर्षे सिते पक्षे [illegible] । [illegible] ॥" भविष्यपुराण ।

कुछ सार भी है, परन्तु हम भारतके अंतःपुरकी रीतिकी प्रतिष्ठा करनेमें कोई भी उचित कारण ठीक नहीं मानते । हम इस बातको भलीभाँतिसे मानतेहैं कि महात्मा टाड साहबने सभ्यताकी मृदुल उन्नतिकी अवस्थाके ही लिये स्त्रियोंको एकान्तमें निवासके करनेके लिये कहाहै। उनके इस मतको हम लोग भी माननेके लिये समर्थ हैं । इस बातको हम कहसकतेहैं कि जिस समय विलायती जगत्में वर्तमान आसुरिक सभ्यताकी चूडान्त उन्नतिके पीछे हिन्दू समाज स्त्रियोंकी स्वाधीनताका विपरीत फल भोग करेगी । उस समय जगत्में शान्ति, समाजका मंगल और संसारमें पवित्रताकी रक्षा करनेके लिये स्त्रीजातिको अंतःपुरमें रखकर उनके पदोचित अवस्थाके उपयोगी और विधिकी विधिके मतसे सीमाबद्ध स्वाधीनताका देना ठीक विचारा जायगा । सभ्यताके बीचमें उन्नतिकी अवस्था और अंतःपुरकी रीतिकी प्रतिष्ठा किस प्रकारसे सम्भव होसकतीहै ? अंग्रेजजातिकी आदि मध्य और वर्तमान अवस्थाकी ओर आंख उठाकर देखनेसे हमलोग देखसकतेहैं कि अंग्रेज जाति इस समय सभ्यताके ऊंचे शिखरपर पहुंच गई है और इसीसे वह अहंकारसे युक्त है, परन्तु जिस समय यही अंग्रेज जाति सभ्यताकी मध्य अवस्थामें थी उस समय क्या ग्रेटब्रिटनमें अंतःपुरकी रीतिका प्रयोजन नहीं था? इंग्लैण्डकी स्त्रियोंको सभ्यताकी वृद्धिके साथही साथ अधिक स्वाधीनता मिलीहै । और किसी समयमें पुरुषोंकी समान स्वाधीनता पानेके लिये महायुद्ध करेंगी । उसके पूर्व लक्षण भी दीखरहेहैं, परन्तु जब उन पूर्ण स्वाधीनता प्राप्तहुई अंग्रेज घरवालियोंमें स्वेच्छाचारिताका भयंकर अभिनय होगा, उनके उस आचरणसे जब अंग्रेजसमाज भयंकरतासे दुःखी होगा, अंग्रेजजाति जब उनके विषमय फलको भोग करेगी तब तो अवश्यही उनको भारतवर्षमें प्रचलित हुई रीतिका अनुसरण करना होगा । भारतके महात्मा ऋषि मुनियोंने स्त्रियोंके चरित्रोंको किस प्रकार कहाहै, और स्त्रियोंकी स्वाधीनतासे कैसा विपरीत फल उत्पन्न हुआ है, उनको भलीभांतिसे जानकर स्त्रियोंके कर्तव्य कर्मोंको विचार तथा स्वाधीनताकी सीमा बनाकर धर्मनीति, समाजनीति और स्त्रियोंके सम्मान सतीत्वकी रक्षाकी उचित व्यवस्था कीहै ।

[illegible] साहबने कहाहै कि, प्राचीन [illegible]जाति स्त्रियोंको अंत-[illegible] थी, [illegible]जातिकी स्त्रियें जिस प्रकार घरके काम-[illegible] करती थीं और [illegible] पुरुषोंके साथ [illegible] करती भी [illegible]

वह धवल सुभट हमीर कहँ, संग्राम राणा अति बली ? ।
वे आज भुजकोदंड कहँ जिन, चलत नित वसुधा हली ? ॥
धन धन्य नगर चित्तौर जग, शिर-मौर वीर शिरोमनी ।
अब हाय ! क्या अवनत भयो, नित २ विपति बाढत घनी ॥
अनुपम अनूपम रूप खोयो, केतु अरु आयुध बिना ।
कब बहुरि देखहिं नयनभर, तेरी मनोहर सुरचना ? ॥
कब उदय होंगे सुदिन तेरे, उच्च पदवी सो लहै ? ।
पुनि वीरभूमि शिरोरतन, निजछत्र तेरे शिर रहै ! ॥
अब लही छाया वृटिनगणकी, कामना सब पूरहीं ।
सम्पति सुजस आनन्द आदि, विभूति सकल बहोरहीं ॥
श्रीकृष्णचन्द्र कृपाल आनँद–कन्द, यह वर दीजिये ।
चित्तौरके सँग बाँह द्विज, बलदेवकी गह लीजिये ॥

पर्वोत्सव समाप्त ।



"हे राणात्मज पतिके निमित्त एक पात्र जलका लाओ" राणाकी कन्याने अपने पतिके वचनोंका तिरस्कार करके उत्तर दिया कि "सैकड़ों वरन हजारों राजेश्वर राणाकी कन्या सादड़ीकी समान सामान्य देशके सामान्य सरदारको जलके पात्रकी देनेवाली नहीं होसकती।" यह वचन सुनकर वीरश्रेष्ठ सरदारने क्रोधित हो शीघ्र ही उत्तर दिया कि, "अच्छा यदि तुमसे मेरा कुछ भी उपकार नहीं होता तो तुम इसी समय अपने पिताके यहां चली जाओ।" इसके पीछे साम-न्तने शीघ्र ही अपने एक दूतको बुलाकर समस्त समाचार राणासे कहनेके लिये कहा: और इसी दूतके साथ राणाकी कन्याको भी भेजदिया. उस दूतने जाकर समस्त वृत्तान्त राणाको सुनाया। यह समाचार सुनकर राणाने कुछ ही समयके उपरान्त सादड़ी सामन्तको अपनी सभामें बुलानेके लिये भेजा। राणा सभासदोंसे युक्त हो राजकार्य कररहे थे कि इसी समयमें राणाके जामाता सादड़ीके सरदार वहां आ पहुंचे, उनको देखते ही राणाने बड़े आदरभाव से उनको अपनी दहिनी ओर सिंहासनपर बैठाला: सभाके सम्पूर्ण होजानेपर पूर्व इशारेके अनुसार नीचेके आसनके ऊपर खड़ेहुए युवराजको, अत्यन्त नीचे सेवक अर्थात् सादड़ीके सामन्तको उसकी रक्षामें तथा सत्कारमें नियुक्त देखकर अपनेको ऊंचे सन्मानका पात्र जान सामन्तने आश्चर्यमें भर विस्मित और विचारित चित्तसे राणाके सन्मुख वहीं नम्रतासे शिष्टता प्रकाश की. राणाने उत्तर दिया. "कि अब तुम अपनी स्त्रीको अपने घर लेजाओ. अब यह कभी भी तुम्हें जलका पात्र देनेको मना न करेगी"। ऐसा ही हुआ जीवनपर्यन्त परस्परमें जो शिष्टाचार

मनुष्यगत चरित्रोंका अंश चित्रित करना अत्यन्त प्रयोजनीय है, बिना इसके हमारा संचित किया हुआ उपकरण मानों सभी असम्पूर्ण रहेगा. इससे हम उस कार्यके साधनेके लिये आगे बढे। नैतिक कारण और इसके फलके ऊपर दृष्टि न रखकर इतिवृत्तके हृदयमें वर्णन किये हुए अविश्रान्त समरके वृत्तान्तको पढनेसे मनुष्य समाज कैसे उपकार प्राप्त कर सकताहै ?, धर्मनीतिके साथ समाजनीतिका विलक्षण संयोग है, इस बातको कोई अस्वीकार न करेगा। हमारे प्राचीन इतिहासवेत्तागण वर्णनीय इतिहासोंमें धर्मनीति और समाजनीति-की विलक्षण अवतारणा करगयेहैं। परन्तु प्राचीन जगत्के वर्तमान उदारचेता मनुष्योंका मतहै कि इतिवृत्त, समाजनीति और धर्मनीति इन तीनोंको इकट्ठा नं जडकर एक एकका स्वतंत्र स्वतंत्र रूपसे वर्णन करना उचित है, हमलोग इस बातके बहुतसे अंश सत्य माननेमें तइयार हैं। आर्य इतिहासवेत्तागण कल्पना और कविताकी सहायतासे इतिवृत्त दामको संग्रथित करगयेहैं, इतिहासकी गोदीमें धर्मनीति, समाजनीति और राजनीति इन तीनोंको छिन्नभिन्न भावसे स्थान मिलाहै. ऐसा बहुतोंका विश्वास है कि इसका फल एक पक्षमें ऐसा प्रीति-कारक नहीं है, एक वीरपुरुष अपने प्रबल प्रताप और असीम विक्रमके साथ सेनाको चला रहाहै, पृथ्वीमें वीरोंके मदसे मतवाले होकर—वीररसके सोते चारों-ओर बह रहे हैं। आकाशभेदी, रणभेदी शब्द, प्रतिज्ञा उद्दीपना जीवन्तमूर्तिका आविर्भाव होरहा है, कवि इतिहासवेत्ताओंने सहसा उसही समय समाप्तिके पहिले मुहूर्तमें ही धर्मनीतिका प्रसङ्ग लाकर फिर एक रसका आविर्भाव करदिया। इस रसको भंगहुआ देखकर हमारे रसिक पाठक अवश्यही जल उठेंगे। इतिहासवेत्ताके पक्षमें प्रत्येक कार्य प्रत्येक घटनाका फलाफल स्वतंत्ररूपसे प्रकाश पाजाताहै, यद्यपि हम उपरोक्त रूपसे इतिहासवृत्तद्वारा जातिके नैतिक जीवनकी गतिका पीछा नहीं करसकते. परन्तु पारिवारिक जीवनके चित्रकी प्रत्येक रेखा और प्रत्येक अंगकी पूर्ण मूर्ति देखनेमें हमारी सामर्थ न हुई। जातीय आचार व्यवहार ही एकमात्र उसके पक्षमें प्रधान सहायकारी है। सामाजिक नीति वा जातीय आचार व्यवहार ही जातीय भीतरी अवस्था का पूर्ण परिचायक है। किसी देशकी किसी जातिका आचार व्यवहार किसी समय भी एकभावसे स्थिर हुआ दृष्टि नहीं आता। आचार व्यवहारका सर्वदा परिवर्तन होता रहताहै। जातीय धर्मनीति सीमाबद्ध और परिवर्तन रहित है। परन्तु जगत्की प्रत्येक जातिका आचार निरन्तर परिवर्तनके चक्रमें घूमता रहताहै। [illegible]

लिये आत्मीय स्वजनोंका क्या प्रयोजन है? आज मैं अवश्य ही आपके साथ चलूंगी; मेरा जब ऐसा विचार है तब आप मुझे साथ चलनेमें [illegible] बाधा देतेहो? वनके फल मूलोंको खाकर मैं जीवन धारण करूंगी; मेरे साथ [illegible]नेसे आपको कुछ भी कष्ट नहीं होगा, मैं आपके साथ चलनेमें किसी भांतिका क्लेश नहीं मानूंगी; और वनके कंद मूल फल खानेमें कभी अनिच्छा प्रकाश नहीं करूंगी।

इस प्रकारसे मैं सहस्र वर्ष तक व्यतीत करसकतीहूं; परन्तु प्रीतम! आपके विरहमें स्वर्ग भी मुझे सुखका देनेवाला नहीं है।

दोहा–प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान।
तुम विन रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नरक समान॥

स्वामी! मैं आपके चरण छूतीहूं मेरे ऊपर दया करो, मैं इस गहन वनको हिमालय स्वरूप जानकर वहां निवास करूंगी। मेरी अब कोई इच्छा नहीं है, केवल आपके चरणकमलोंका सर्वदा दर्शन होतारहै यही मेरी अभिलाषा है, मेरे इस अनुरोधकी आप रक्षा कीजिये। वनके बीचमें मैं किसी समय भी शोक प्रगट नहीं करूंगी, आपको कंटकही स्वरूप नहीं होंगी। राघव! यदि आप इस दासीकी इस प्रार्थनाको स्वीकार न करेंगे तो अवश्य ही मैं प्राण त्याग दूंगी॥"

हिन्दुओंके चरित्रोंको जाननेवाले महात्मा टाड साहबने इस बातको लिखाहै कि विल्सन साहबने जो हिन्दूजातिके नाटकोंका अनुवाद कियाहै उससे उन्होंने प्राचीन हिन्दुओंके आचार विचार विशेषकर स्त्रीपुरुषोंका परस्पर प्रेम परस्पर स्वामी और नारीका विश्वास तथा उनका अकृत्रिम प्रेम इस बातको सर्वसाधारण अंग्रेज जातिपर भलीभांतिसे प्रगट करदियाहै, उत्तररामचरित्र, विक्रमोर्वशी और मुद्राराक्षसमें इस विषयके अनेकों उदाहरण पायेजातेहैं, इनके ग्रन्थोंमें भी [illegible] हिन्दुओंके कुटुम्बोंमें पतिके ऊपर स्त्रियोंका प्रगाढ प्रेमभक्ति दिखाई [illegible] होतीहै [illegible] मर्चेन्ट आफ वेनिस नामक नाटकमें [illegible] न [illegible] जब अपने प्यारे [illegible] लिये प्राण [illegible] [illegible] और उनकी स्त्री [illegible] पुत्रोंसाथ [illegible] [illegible] [illegible] है।

[illegible]

विख्यात गोगेट्का कथन है, कि "जो जाति शिल्प और विज्ञानकी जितनी उन्नति करै, उस जातिके सामाजिक आचार भी उतने ही उन्नति पाकर प्रकाशमान होतेहैं।" हिन्दुओंके वान्धव टाडसाहवने कहाहै कि, "यदि इसी कथनके अनुसार हम लोग राजपूतजातिके प्रधान और आधुनिक आचार व्यवहारोंकी वरावरी करैं तो निश्चय करके इस वातको शीघ्र ही कह सकतेहैं कि राजपूत-जातिकी अवश्य ही अवनति हुई है।" भारतहितैषी टाडसाहवने उसी समय भारतवर्षकी प्राचीन अवस्थाको स्मरण करके कहाथा कि "यह सम्पूर्ण हिन्दू साधुओंकी मंडलीमें न्यायशास्त्रकी समान ग्रीकोंका आदर्श स्थल हैं, प्लेटो-थ्रेलस और पिथागोरस आदि जिनके शिष्य थे वह इस समय कहाँ पायेजाँय? जिन ज्योतिषियोंको सौरजातिक ज्ञानसे आजतक यूरोपके निवासी आश्चर्यमें होरहेहैं।" जो सूर्य और शिल्पियोंकी कार्यावली हमारे सन्मुख प्रशंसा पानेकी अधिकारिणीहै, और जो संगीत विद्याके जाननेवाले "सुर और स्वरके ही अदल वदलसे आनंदित चित्तको शोकित और शोकित चित्तको आनंदित करदेतेथे वह इस समय कहाँ हैं?" महातमा टाडसाहवने इस सपरितापोक्तिको क्यों समर्थन किया? उन्नतिकी उन्नत अवस्था आर्यजातिके आचार व्यवहारोंको जहाँतक अच्छा कहनेकी संभावनाहै, वह जैसे हुएथे, उन सवका वर्णन इतिहासके सन्मुख भलीभाँतिसे हुआ है। यह कहना तो ठीक न होगा कि आर्यजातिके पतनके साथ ही साथ आचार व्यवहारोंका भी अदल वदल होगया, इसका कहना तो वाहुल्यमात्र है। कि तव तो आर्यवंशधर गण पैत्रिक आचार व्यवहारोंके ऊपर विशेष निष्ठा करतेथे, उस जातिके आचार व्यवहार यत्न सहित रक्षित होनेके कारण चिरकाल तक इसका अभ्यास करनेसे आजतक प्राचीन उन्नति पवित्र सभ्यताके उपयोगी अनेक आचार्य आर्यक्षेत्रमें अचल भावसे विराजमान हैं। प्रचलित हुए प्राचीन आचारोंमें जो आचार भिन्नभावसे दिखाई देतेहैं उनमें वहुतसे जीवनी शक्तिसे हीन हैं, और वहुतसे विपरीत फल देनेवाले होकर खडेहैं. उनका अनुमान वडी सरल-तासे होसकताहै. राजपूतजातिकी अवस्था वदलनेके साथही साथ कितने ही प्राचीन आचारोंका स्वरूप इस समय उपहासस्थल हुआहै. इसका कहना वाहुल्यमात्र है।

"इस वातको सभी मानलेंगे कि किसी जातिकी स्त्रियोंकी अवस्था ही उस जातिकी उन्नतिका कारण है।" पंडितवर महात्मा टाडसाहवके वचन माननेमें

स्त्रियोंकी समान अपने सत्व और अधिकारको लेकर महा आन्दोलन मचा- रहीहैं, उसी दिन जानोगे कि आर्य्यावर्त्तकी स्त्रियोंके गौरवका [illegible] चिरकालके लिये अस्त होगया, उसी दिन जानोगे कि "सती" शब्दका [illegible] भारतसे लुप्त होगया, यह बात तो सत्य है कि हम कुछ भविष्यद्वक्ता नहीं हैं, परन्तु जो स्त्रियोंके चरित्रको जानतेहैं, जिन्होंने विलायती जगतकी सामाजिक अव- स्थाके [illegible] तत्वको ज्ञान रक्खाहै, जो विलायती स्त्रीपुरुषोंके हृदयके भावको जानतेहैं, वह अवश्य ही हमारी उक्तिको समर्थन करेंगे।

[illegible] टाड साहब पीछे इस बातको लिखतेहैं कि केवल देवीमें जैसी पतिभक्तिकी पराकाष्ठा थी—वह स्वामीके ऊपर स्त्रीका अनुराग उसे हृदयमें [illegible] तक दिखलायेहैं; अन्य समस्त जातियोंमेंसे किसी जातिके [illegible] इस भांति दिखाई नहीं देता; उनके पढ़नेसे राजपूत-[illegible] चरित्र [illegible] थे, और समाजके ऊपर उनका प्रभुत्व तथा सामर्थ्य किस प्रकार था वह यथार्थतासे जाना जाता है।

[illegible] और दिल्लीसम्राट् चौहानजातीय पृथ्वीराज संयोगताको राजकन्याको [illegible] भारतके समय जो सेना उनके पीछे [illegible] लिये गई थी, [illegible] नामक स्थानमें चन्देलजातीय राजा परिमालने उसको [illegible] शत्रु। इसी अपमानका बदला लेनेके लिये चौहान बादशाहने उस [illegible] [illegible] शीघ्रताके सेनाको आगे कर उसके राज्यकी ओर सीमाके निकट [illegible] सेनाको नष्ट करदिया; [illegible] पृथ्वीराज इस भांतिसे प्रतिहिंसा [illegible] [illegible] चन्देलके [illegible] [illegible] नहीं [illegible] [illegible] आल्हा और ऊदल [illegible] [illegible] [illegible] पृथ्वीराजके पास [illegible] [illegible] किया। [illegible] राजपूतोंके [illegible]

[illegible]

जलद् गंभीर स्वरसे वर्णन किया है। जगत्के प्रत्येक जातिके धर्मशास्त्रको बारम्बार पढो, आपको कहीं भी ऐसा ऊँचा विधान नहीं मिलैगा। पुराण यही कहरहे हैं, कि साध्वी सती पतिव्रता स्त्रीको त्याग करके यदि कोई मनुष्य संन्यासी, ब्रह्मचारी, या यती होकर पारलौकिक पुण्यसंचय करनेके लिये चेष्टा करै। वा यदि कोई वाणिज्य करनेके लिये बहुत दूर चलाजाय, अथवा मोक्षप्राप्तिके लिये तीर्थमें निवास करै, या तपस्यामें मनको लगावै तो उसको मोक्ष कदापि नहीं मिल सकती, वह धर्मसे पतित है; इसी जन्ममें उसका यश लोप होगयाहै, और उसको सती स्त्रीके शापसे मरणकाल तक नियम सहित वनमें निवास करना होता है। अनन्त महिमामय जगदीश्वरने स्त्रियोंकी स्वभावसे ही कोमलांगी अवलारूपसे सृष्टि की है, इस कारण आर्य शास्त्रकारक गण उस ईश्वरसृष्टिके नियमके ऊपर तीक्ष्णदृष्टिसे स्त्रीजातिकी रक्षाविधान उक्त रूपसे स्थिर करगये हैं। पिता, पति और पुत्र यह तीनों ही स्त्रीजातिके तीन समयोंके उपयुक्त रक्षक हैं। धर्मनीति, समाजनीति-पवित्र सभ्यता और जगदीश्वरके अभिप्रायकी ओर दृष्टि करके पुरुषकी समान स्त्रियोंकी पूर्ण स्वाधीनता अवश्य ही अप्रार्थनीय है-और उस पूर्ण स्वाधीनताके सूत्रमें स्त्रियोंको एक मात्र सार धन सतीत्वकी रक्षामें विषम व्याघात होनेकी पूर्ण संभावना है. प्राचीन आर्यजाति उसको भलीभाँतिसे जानकर उन स्त्रियोंके कुलकी स्वाभाविक शक्ति मती स्वाधीनताके देनेमें पक्षपातिनी थीं। अन्यायके अतिरिक्त स्त्रियोंकी स्वाधीनता यद्यपि आसुरिक सभ्यताके उपयोगी होसकती थी. परन्तु आर्यधर्मका विधान और आर्यसम्मतिके मतसे तथा आर्यसमाज नीतिके मतसे वह अनुपयोगी है. इसीसे पिता. पति, पुत्र और वंधुओंके ऊपर उनकी रक्षाके विधानका भार सौंपगये हैं. आर्यस्त्रियोंमें अंतःपुरके निवासकी प्रथा पाश्चिमी जगतमें आसुरिक सभ्यताके सन्मुख अत्यन्त ही दूषित है. और उन्हें यही असभ्यताका चिह्नस्वरूप दृष्टि आयाहै. परन्तु आर्यमुनि. ऋषिगण अपनी बहुत कालकी परीक्षाके फलसे इस वातको भलीभाँतिसे जानगये थे कि पर्देकी रीतिका प्रचार हुए विना समाजकी सुनीतिः संसारकी पवित्रता. धर्मनीतिका आदर्श, जगतकी शान्ति. पतिका चित्त स्थिर. तथा स्त्रियोंके सान्वत सतीत्वकी रक्षाका होना असंभव है। आर्यजातिकी स्त्रियोंकी सीमावद्ध स्वाधीनता है. जिस स्वाधीनतासे उनकी मानसिक धर्मसंगतिकी कोई इच्छा भी अपूर्ण नहीं रहती-इसी स्वाधीनताको स्वीकारकर संसारको पवित्र पुण्यक्षेत्रमें परिणत करतेहैं. आर्यनारी-

इसके बाद कन्नौजमें अपने एक दूतको भेजदिया उस श्रेष्ठ दूतने उन स्वतन्त्र नामक उन दोनों वीरोंसे कथा कहाथा. महामान्यनीय टाड साहबने चन्दकविके ग्रन्थसे लिये लिखितरूपसे उसे उद्धृत कियाहै.—" चौहान सम्राटने महोबेके भीतर अपने डेरे डालदियेहैं: नरसिंह और वीरसिंहने समरकी अग्निमें अपना जीवन विसर्जन कियाहै. सिरसा देश भस्म होगयाहै और परिमालका राज्य भी चौहानोंके द्वारा विध्वंस होता चलाहै । एक महीनेके लिये समर रोकागयाहै, इस समय इस महाविपत्तिसे आपही हमारा उद्धार करेंगे: आपकी सहायताकी इच्छासे ही मैं यहां पर आयाहूं । हे वत्सराजके दोनों पुत्रो ! सुनो-जबसे आप-ने महोबेको छोडदियाहै. उसी दिनसे मालिनी देवी शोकाकुल मन होकर समय व्यतीत करतीहैं: उनकी दृष्टि सदा कान्यकुब्जकी ओर ही रहतीहैं: और जब आपका स्मरण होताहै तब उनके नेत्रोंसे बराबर आंसुओंकी झडी लगजातीहै: और वह दीनस्वरसे रोकर यह कहा करतीहैं कि चन्देलोंका सबका गौरव अस्त होता चलाहै ! हे वत्सराजनंदन ! जब आप यहां जायेंगे तब आपका हृदय भी अत्यन्त दुःखी होगा. अब भी समय है. आप महोबेको न भूलिये ।

किस जातिके धर्मशास्त्रमें ऐसा विधान है ? ऐसी कौन सी जाति है कि जिनमें स्त्रियोंको ऐसा ऊंचा सन्मान दियागयाहै ।

आर्यशास्त्रकारोंने स्त्रियोंको किसप्रकारके कर्तव्य कर्म बताये हैं ? पुराणोंका कथन है—कि स्त्री सूर्योदयसे प्रथम उठकर देवता और पतिको प्रणाम करके घरको झाड बुहार कर गोवरमें स्वच्छ जल डालकर आँगन और घरको लीपे, इसके उपरान्त घरके अन्यान्य कार्योंको समाप्त कर स्नान करै. फिर देवता, ब्राह्मण और पतिको प्रणाम करके घरके देवताकी पूजामें लगे, इसके उपरान्त रसोई तैयारकर पतिको भोजन कराय अतिथि सेवाके उपरान्त फिर स्वयं भोजन करै आजकल आधुनिक सभ्यताके ऊँचे शिखरपर पहुँचे हुए पश्चिमी संसारके निवासियोंने आर्यशास्त्रकारोंकी इस विधिको पढकर हिन्दू स्त्रियोंको मोल ली हुई दासीकी समान जाना है, और कहते हैं कि जो कुछ भी इस समय इस देशमें है वह विलायतकी ही शिक्षा है, जो विलायती सभ्यताके तरंगमालाके प्रबल आघातने चोट खाये हुए हैं, यद्यपि उनमेंसे किसी २ ने तो समयके अनुसार इस विधिको भारतके महासमुद्रमें डालकर यूरोपीय सभ्यताका अनुकरण करनेका साहस किया है, परन्तु यह विधान उनको अथवा उनके वंशधरोंको अवश्य ही स्मरण कराना होगा, कि आर्यशास्त्रकारोंने स्त्रियोंके चरित्रोंको भलीभाँतिसे जानकर, उनके चरित्रोंके दोष, गुण, तथा उनके चरित्रोंकी दुर्बलता-उन चरित्रोंकी प्रत्येक अवस्था-उन चरित्रोंकी शक्ति-तथा उनके चरित्रोंकी पूर्ण स्वाधीनताका विषमय फल—समाजका विध्वंस करनेवाला फल—और शांतिका नाश करनेवाला फल भलीभाँतिसे जानकर बहुत सी परीक्षाओंके उपरान्त इस विधिकी सृष्टि कीहैं । स्त्रियें जिस भाँति कोमल स्वभावसे युक्त हैं, स्त्रियोंका हृदय जिस प्रकारकी धातुसे बनाहुआ है, स्त्रियोंका शरीर जैसा कोमल है, उनमें विधाताकी सृष्टिके अतिरिक्त संसारमें सुख शान्ति और मंगलप्राप्तिकी कुछ भी आशा नहीं है, आजकल विलायती सभ्यताके रंगमें रंगेहुए बहुतसे मनुष्य इस देशकी स्त्रियोंको घरके कार्य करते हुए देखकर तथा उनके कामोंको सुनकर अत्यन्त क्रोधित होजातेहैं, परन्तु सत्यके सन्मानकी रक्षा अवश्य करनी होगी, इस बातको हम अवश्यही कहेंगे कि इस देशमें जो कि विलायती संसारमें है और उस नवीन जगतके निवासियोंको स्वतन्त्र विलास भोगनेके लिये कि जिनके पास प्राणप्यारी स्त्रियोंके लिये अनेक [illegible] विद्यमान हैं और जिन्हें ऊंचे ऊंचे महल दुमहलोंके द्वारा [illegible] विलासिताकी गोदीमें बढ़ता हुआ देखकर सभ्यताके [illegible] लिये उनके अनुकरणमें अपनी २ गृहिणियोंको इस भांति रख,

नरेन्द्र आल्हा और ऊदल महोबेके समीप ही आगये हैं यह सुनकर चन्देल राजा परमालने अत्यन्त प्रसन्न हो उनको आलिंगन किया और रानी मल्हना-देवीने वीरांगना देवलदेवीको आदर सहित लानेके लिये अगवानी [illegible] किया। साथही दोनोंके उपरान्त सभी राजधानीमें चले आये। रानी [illegible] इन्होंने मूल्यवान द्रव्योंको देकर समाधान किया। रानी मल्हनादेवीने आल्हाको बुलाकर उसके शिरपर हाथ धरकर आशीर्वाद दिया; आल्हाने हाथ जोड़कर प्रतिज्ञा की कि महोबेकी जय पराजयके ही ऊपर हम जीवन धारण करेंगे। रानीने एक मुट्ठी मोतियोंकी वर्षा कर उनके सेवकोंको बाँट दिये। जो कवियत दूत कान्यकुब्जमें जाकर निकाले हुए दोनों वीरोंको महोबेमें लाना था उसने भी शीघ्र ही कार्य सिद्धीके पुरस्कारमें चार ग्रामोंको पाया।

इसके काव्यमें इसके उपरान्त सार्वभौम सम्राट् पृथ्वीराजके देशकी घटना देखी। सेनासहित दोनों वीरोंके आनेका समाचार सुनकर कविश्रेष्ठ चन्दने पृथ्वीराजसे कहा कि "समरस्थितिका समय बीतगया; इस कारण क्या तो आप शीघ्र ही चन्देलोंके परमालके पास दूत भेजिये जिससे कि वह समरभूमिमें आजाय और नहीं तो महोबेसे चले जानेकी आज्ञा दीजिये।" कविचन्दने उसी समय आपने और सम्राट् परमालके पास एक एक दूतको पत्र देकर भेजदिया। परमाल आल्हा ऊदल सेनाको भी निर्दोषपनेसे नियत करना था, इस समयके उपस्थित रह पत्रमें भी सबसे आगे नहीं लिखा था। पृथ्वीराज इसको लिखकर भी जानते न था कि जिस समय तक समरको नियत करनेकी बात निश्चय हो भी उन्होंने [illegible] [illegible] रीतिके अनुसार और भी सात दिनतकका समय दियाहै और [illegible] दिन तक कि जब चन्देलोंने सेना सजानेके लिये कोई भी उस समय [illegible] भी नहीं किया था। यदि [illegible] सूचना [illegible] होते तो [illegible] [illegible] सिद्धीके [illegible] [illegible] होते।

इस समय यह प्रश्न होसकताहै कि आर्यशास्त्रकारोंने विधिके विरुद्ध आर्यगणोंकी किस प्रकारसे बहुतसे विवाहकी रीति प्रचलित की ? हम कहसकतेहैं कि दो कारणोंसे बहुविवाह भारतवर्षकी एक श्रेणीमें प्रचलित हुए। एक तो जो राजा आलस्य विलासिताके मोललिये हुए दास थे, केवल वही अधिक स्त्रियोंको ग्रहण करते थे; और इस समय उनके वंशधर उस पैत्रिक आचारकी रक्षा करते आयेहैं। भारतवर्षमें सर्वसाधारणमें बहुत विवाहकी रीति प्रचलित नहीं थी। रघुकुलतिलक रामचंद्रजीने कितने विवाह किये थे ? महात्मा सत्यवान्के केवल एक सती साध्वी सावित्री ही स्त्री थी ? बहुतसे विवाहके प्रचारका दूसरा कारण सामाजिक प्रयोजन था। समाजमें शांति, मंगल, नीति और आज्ञाकी रक्षा करनेके लियेही बहुतसे विवाहोंकी रीति प्रचलित होगई; और पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंकी संख्या अधिक बढनेसे बहुतसे विवाहोंका होना आवश्यक विचारा गया।—इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बंगालमें विराजमान है। देवीश्रेष्ठ घटकरने कुलीन श्रेणियोंमें मेल बढानेके साथ विवाहकी विधिको उनके मेलमें बाँधदिया, अब वह सामाजिक विधिमें गिनागयाहै, उस विधिको पालन करनेके ही लिये उस मेलबंधनकी रक्षाके निमित्त ही देवीश्रेष्ठ घटकरके बहुत वर्षोंके उपरान्त धीरे२ बहुत विवाहकी प्रथा प्रबल होगई। कुलीन कुलोंमें लडकोंकी अपेक्षा कन्या अधिक हैं, बहुत विवाहके अतिरिक्त उस मेलबंधनकी रक्षा असंभव विचारकर बंगालमें केवल कुलीनोंमें ही बहुविवाह प्रचलित है; यदि चारों मेलोंमें पुरुष और स्त्रियोंकी संख्या समान होती, तो पात्रके अभावमें बहुविवाहकी कुछ भी आवश्यकता नहीं होती। अच्छा—माना, हमलोग अशिक्षित हैं, अनार्य हैं, बर्बर हैं, मूर्खजाति हैं, हमने उस समाजके मानकी रक्षा करके बहुविवाह स्वरूप विषम अग्निसे बंगालको प्रज्वलित करदिया था. इस समय वह अग्नि प्रायः निर्वाणसी होगई है: परन्तु कहना यह है कि नवीन जगत् अमेरिका जो बडा देश है-उस समय स-यता

[illegible]

उसी प्रकार अंतःपुरमें रहनेवाली कुलवतियोंका प्रभुत्व था । वीरश्रेष्ठ राजपूत इस बातको भलीभाँतिसे जानते थे कि उनका वीरत्व, विक्रम, असाध्यसाधन और मनुष्यत्व प्रदर्शनका संवाद चाहैं किसी गुप्त स्थानमें भी क्यों न हो परन्तु वहाँ पहुँचना ही होगा. स्त्रियोंके अंतःपुरनिवासिनी होते ही राजपूतोंकी वीरता जानकर वह उन वीरोंके ऊपर आकृष्ट हुईहैं यही उनका दृढविश्वास था । राजवाराके भट्ट कविकुल तिलक महलसे सामान्य कुटी तक गये थे, और उनकी कविता शीघ्रगामी धूमकेतुकी समान जिस किसी राजपूत वीरके बल विक्रमकी प्रशंसामें हुई कि उस वाणीरूपी पुत्रकी सहायतासे भारतके मरुप्रान्तसे यमुनाजीके किनारे तक प्रत्येक अंतःपुरके भीतर चलीगई. अंतःपुरमें निवास करनेवाली स्त्रियें उस भट्टकविके मुखसे निकलीहुई राजपूतवीरोंकी जयगाथा सुनकर सरलतासे उन वीरोंकी प्रशंसनीय प्रतिकृतिको हृदयपट पर अंकित करनेको समर्थ हुई । महामाननीय टाड साहबने कहाहै कि यद्यपि राजपूतोंकी स्त्रियोंको अतःपुरमें रहकर भी उनकी यथार्थ अवस्थाको जाननेका अवसर नहीं मिला था परन्तु वास्तवमें उनकी अवस्था शोचनीय नहीं थी ।

महात्मा टाड साहब इस बातको कहगयेहैं कि प्राचीन जर्मन और स्कन्दनेवियोंकी समान राजपूत जाति प्रत्येक कार्यमें स्त्रियोंके साथ परामर्श करतीं थीं;और स्त्रियोंके आचरणके ऊपर अपने शुभाशुभको निश्चय करती थी, यह भी उनका विश्वास था और वह स्त्रियोंका कितना सन्मान करते थे, कि उनसे स्त्रियोंको गौरवकी देनेवाली "देवि"नामकी उपाधि मिली । जो मनुष्य इस बातको नहीं जानतेहैं वह हिन्दू स्त्रियोंको पराधीन बताकर शोक प्रकाशकर उनके अंतःपुर निवासको कारागारका वास बतातेहैं । उदारचित्त टाड साहब इस बातको स्वयं कहगयेहै कि, राजपूतोंकी स्त्रियें कैसी स्वाधीन. सन्मान और सुखभोगनेकी अधिकारिणी थीं, इस विषयमें हमने जहांतक जानाहै, इससे उनको बंदिनी स्वरूप विचारकर हम शोक प्रकाश करनेमें सम्मत नहीं होते. कर्नेल टाड साहबने यहां उल्लेख कियाहै कि नैयायिकोंके मतके अनुसारसे "स्पिरिट अवल" नामके ग्रंथकारके मनसे उष्णप्रधान देशोंमें ऋतु और जलवायुकी प्रबल शक्तिके कारण मनुष्योंका कामशत्रु प्रबल होताहै. इस कारण उन देशोंकी स्त्रियोंको अंतःपुरमें निवासकरना अत्यन्त आवश्यक है । निरुक्तनामके फरासीसी विज्ञानके ज्ञाता इसने सम्पूर्ण विपरीत मत प्रकाश करगयेहै। उनका कथन है कि सुनीतिकी रक्षाके पक्षमें स्त्रीजातिका एकान्त निवास अत्यन्त ही अनिष्टकारक है । यद्यपि उपरोक्त नैयायिकके मतमें यहां

देखकर मौन होकर बैठ रहतेहैं, वह कभी राजपूत नहीं है—जिस राजाका राज्य शत्रुओंसे छिनजाताहै यदि वीर पुरुष यह बात देखकर डरजाय तो उनके शरीर बड़े भारी नरकमें पड़तेहैं । और उनकी आत्मा छः हजार वर्षतक भूतयोनिमें पड़कर संसारमें भ्रमती रहतीहै; परन्तु जो वीर अपने कर्तव्यको पालन करते रहतेहैं, अंतमें उनको सूर्यलोकमें स्थान मिलताहै, और उनकी कीर्ति अक्षय रहतीहै । "

नीचता और निष्ठुरताके अनुगामी सहचर । दोनों वीर भ्राताओंके वीरोचित वचनोंसे परमालका हृदय किसी भांति भी साहस करनेमें समर्थ न हुआ । परमाल अपनी रानीके सन्मुख जाकर शोच करने लगा । रानी मालिनी देवीने अपने पतिको कायरकी भांति भयमान देख उनको प्रोत्साहित कर सेना लेकर रणक्षेत्रमें जानेको राजी किया । और सेनामें सूचना दे दी कि राजा युद्धक्षेत्रमें जायँगे । काव्योंमें ऐसा लिखाहै कि इसके पीछे वीर पुरुषोंने अपनी प्राणप्यारी स्त्रियोंके साथ अन्तिम प्रेमालिङ्गन किया, और प्रातःकालके सूर्योदयके साथ ही साथ सबोंने रणभूमिमें जानेसे पहले संध्यावंदन पाठपूजा आदि नित्यकर्म करलिये । उन्होंने नवग्रहोंकी पूजा करके अपने पूर्वजोंकी स्थापित हनुमानजीकी मूर्तिका पूजन किया और उनको फूलोंकी माला पहराकर अपने पुत्र इन्दल और छोटे भाई ऊदलको बुलाकर आत्मगौरवका स्मरण कर प्रतिज्ञा की " जो क्षत्रियकुलका नाम अक्षय रखनेकी अभिलाषा है और जो देवलदेवीका पवित्र रक्त अपने नसोंमें धारण करके गर्वित होना चाहतेहो तो आज रणभूमिमें जहा

प्राचीन यहूदी कुमारियें भी साधारण कुए आदिसे जल लानेके समयमें विवाहका सम्बन्ध निश्चय कर आतींथीं, पीछे नीलनदीके भयंकर वनमें नदीके किनारे निवास करनेवालोंका समूह पृथक् होगया, उसी सूत्रसे इजिप्ट (मिसर) में अंतःपुरकी रीति प्रचलित हुई । महात्मा टाड साहबको यह अनुमान था कि सिन्धु और गंगाके निकट निवास करनेवालोंकी जनसंख्या बढ़नेके साथ ही साथ यह प्रथा भी प्रचलित हुईहोगी, परन्तु उनका कथन है कि जब आर्यजाति मध्य एशियासे भारतवर्षमें आई उस समय उसने वहाँके आचार व्यवहारोंको यहां प्रकाश तक भी नहीं किया. कारण कि उस काल सिथियन स्त्रियोंकी अतिरिक्त स्वाधीनता थी अर्थात् एक २ स्त्री एक समयमें ही बहुतसे पतियोंका सेवन करतीं थीं । परन्तु भारतकी स्त्रियोंमें तो केवल एकमात्र विवाहकी रीति ही प्रचलित है । भारतवर्षके किसी २ पहाडी देशोंकी स्त्रियें आजतक एक समयमें अधिक स्वामीके साथ भोग करतीहैं, ऐसा होनेपर भी राजपूतजातिमें वह रीति दिखाई नहीं देती । कर्नेल टाड साहब इस बातको कहगयेहैं, कि प्राचीन ग्रीक, रोमक, मिसर और चैनेय इत्यादि प्राचीन जातियोंमें अंतःपुरकी रीतिके चलानेसे समाजके ऊपर स्त्रियोंकी प्रधानताका लोप करना है, राजपूतजाति उनकी समान निन्दनीय नहीं है; स्त्रियोंके ऊपर सन्मान और यत्न यदि सभ्यताका लक्षण है, तो राजपूतजाति सबसे श्रेष्ठ है, वर्तमान समयमें राजपूतजाति स्त्रैण कहकर विख्यात है । परन्तु हमारे मतसे वे लक्ष्मीस्वरूपिणी स्त्रियोंके उपयुक्त सन्मानकी रक्षामें उनको नियुक्त कहकर स्त्रियोंको ही सर्वस्व जानतेथे ।

राजपूतजातिने स्त्रियोंके ऊपर क्यों इतना ऊँचा सन्मान दिखाकर यत्न प्रकाश नहीं किया । स्त्रीजाति स्वामीकी आज्ञाकारिणी होकर स्वामीकी प्रत्येक न्याययुक्त आज्ञाका पालन करै, राजपूतनी दृढतापूर्वक यह दिखानेकी अभिलाषिणी है । कर्नेल टाड साहबने इसका उदाहरण लिखाहै कि जिस २ समयमें राजवारामें आपसमें क्लेश तथा जातीयसंग्राममें भयंकर रूपसे गड़बड़ मचगया था । जिस समय मेवाडेश्वर राणाने अन्यान्य अधीश्वरोंके साथ सम्पूर्ण संश्रवको छोडकर अपनी कुटम्बकी मंडलीके साथ वैवाहिक सम्बन्ध बंधनमें पडकर विदेशीय सम्भ्रान्त सामन्तोंको कन्या दीथी उस समयका वृत्तान्त इतिवृत्तमें बारम्बार लिखरहाहै कि सादरीके सामन्तको राणाने कन्या दान कीथी । कुमैलके सांसारिक सुखमें बाधा पडा करतीहै यह बात निश्चितहै । सादरीके सन्दारके आगे शीघ्र ही यह बात आई. एक समय उसने राणाकी कन्याको बुलाकर कहा—कि

वीरता दिखाते रहे किन्तु दुर्भाग्यवश सायंकालके समय जब चारों ओरसे शत्रुओंकी सेनाने घेरलिया तब राजपूतगण घायल दश हजार सेनाको छोड़ भाग गयेहुए। महाराज जसवन्तसिंह अपने राज्यमें लौट आये. किन्तु फरिस्ता अपने ग्रंथमें लिखताहै कि वह उदयपुरके महाराणाकी पुत्रीसे व्याहा था. इस कारण इस प्रधान रानीने अपने पराजित स्वामीको नहीं अपनाया और किलेका दर्वाजा बंद करलिया।

इतिहासवेत्ता वर्णियर जो उस समय वहां उपस्थित था वह अपने ग्रंथमें लिखगयाहै कि " यशवंतसिंहके परास्त होने और भागनेके पीछे उनकी रानी राणाकी पुत्रीने जो उनसे तिरस्कारसूचक वचन कहे मैं उनको विना लिखे नहीं रहसकता। जब रानीने सुना कि महाराज अपने स्वाभाविक वीरतासे संग्राममें लौटे हैं,जब उन्होंने अपने अधिकारी सेनाके दलमें चार वा पांच सौ सेना जीवित रही देखी तब शत्रुदलमें रहना असम्भव जान समरक्षेत्रको छोड़ाहै. इस बातको सुनकर भी राजाको इस बार विपत्तिसे टारन देनेके लिये प्रतिनिधि भेजनेके बदले रानीने दुःखित होकर महलका द्वार बंद कराकर उस कलंकित वीरको न आनेकी आज्ञा

संक्षेपयुक्तिसे स्त्रीपुरुषोंके पक्षमें इसीको प्रधान रीति जाने। मनुकी आज्ञाका पालनेके लिये राजपूतजाति तनमनसे यत्न करतीहै, इस कारण उनमें स्वर्गीय दाम्पत्यभावकी प्रबलता कैसी विलक्षणतासे प्रकाश पारहीहै; महामाननीय टाड साहबका भी यही मत है। वह इस बातको लिखगये हैं। इसमें कुछ भी संदेह नहीं है कि "अन्यान्य देशके अन्यान्य समाजमें यह विधि जिसप्रकारसे प्रबल है राजपूतसमाज भी उसी प्रकारकी रीतिसे शाशित होता है"। राजपूतोंकी स्त्रियोंमें जैसी पतिभक्ति है. इससे उनके पातिव्रतका यथार्थ परिचय पायाजाताहै; और किसी जातिमें ऐसा दिखाई नहीं देता; यह पतिव्रत धर्मके ऊपर अधिक सन्मान दिखाती थीं। यदि हम लोग असीम पतिभक्तिमती स्वार्थ त्यागकारिणी और पतिमें प्रेमार्थिनीके चित्र देखनेकी इच्छा करें तो सीताजीके आलेख्यकी ओर ध्यान देना चाहिये त्रेतायुगमें वाल्मीकिजी सीताजीके चरित्रोंको जिस भावसे चित्रित करगयेहैं, उसकी अपेक्षा सुन्दर और हृदयग्राही स्त्रियोंके चरित्र मिलटन प्यारे डाइज केलष्ट अर्थात् स्वर्गभ्रष्ट काव्योंमें भी दृष्टि नहीं आता। महात्मा रामचंद्रजी अपनी प्यारी स्त्री सीताजीको घरपर छोडकर वन जानेके अभिलाषी हुएथे. उस समय सीताजीने उनकी सहगामिनी सुख दुःखकी भागिनी होनेके लिये अपने स्वच्छ हृदयसे कहाथा,—

"पिता, माता, आत्मीय और मित्रोंका आदर सहित संभाषण, प्रीति यह स्त्रियोंके लिये सुखका देनेवाला नहीं, एकमात्र पति ही स्त्रियोंको संसारमें सुखका निदान और मोक्षका देनेवाला है। यदि आप आज अवश्य ही वनको जायंगे तो मैं भी आपके आगे २ चलकर पैरोंसे कुशाओंके अंकुरोंको निर्मूलकर मार्गको सरल करदूंगी।

निर्जन वनमें आनन्द सहित आपकी सेवा करूंगी, मधुर मलयपवनसे चलायमान हुए फूलोंके सौरभसे आमोदित प्रत्येक कुंजोंमें भ्रमण करके मैं अत्यन्त ही सुखी हूँगी। जब आप यहां न रहकर मेरी रक्षा नहीं करसकते तब मेरे

"स्वामिनाथ्या च या नारी कुलधर्मव्यवस्थिता । [illegible] वैकुण्ठ गति निश्चयात् ॥"

ब्रह्मवैवर्तपुराण १८ अध्याय.

"सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रियंवदा । सा भार्या या पतिप्राणा सा भार्या या पतिव्रता ॥
नित्य स्नाता सुगन्धा च नित्यञ्च प्रियवादिनी । अल्पभुक् [illegible] च सततं [illegible]
सततं धर्मबहुला सततञ्च पतिप्रिया । सततं प्रियवक्त्री च सततं [illegible]
पितृदेवार्चनरता सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी । [illegible] न न [illegible]

गरुड पुराण, १०८ अध्याय

रहे। हृदयवल्लभको रणके भेजने सजाकर जातीय स्वाधीनता और अपने अतुल गौरवकी रक्षाके लिये प्राणत्यागनेका उपदेश देकर बोली, "हे नाथ! अन्तमें मेरा और आपका सूर्यलोकमें अवश्य ही मिलाप होगा।"

नरिंद चंदकविके ग्रंथमें यह घटना भारतका अधःपतन और संयुक्ताके धर्माचारियोंकी समान आचरण प्रशंसाके साथ पाये जातेहैं। पृथ्वीराजने भारतमें यवनोंके आनेसे पहले नीचे लिखे अनुसार स्वप्न देखकर रानीसे कहा, "आजकी रातमें जिस समय मैं निद्रादेवीकी गोदमें अचेत था. उस समय रम्भाकी समान एक अनुपम सुन्दरी रमणीने आकर दृढताके साथ मेरी दोनों भुजाओंको पकडकर हिलादिया फिर उसने तुम पर आक्रमण किया और जिस समय तुमने अपने छूटनेकी चेष्टा की थी उसी समयमें एक विराट् मूर्ति पिशाचकी समान विकटाकार क्रोधसे उन्मत्त हाथीने आकर मुझे दबालिया। फिर निद्रा टूट गई तब रम्भा वा उस विराटमूर्तिको नहीं देखा किन्तु मेरा हृदय धडकताने लगा कांपतेहुए अधरोंसे शिव! शिव! इस नामका उच्चारण किया। भाग्यमें क्या होगा उसको विधाता जाने।"

संयुक्ताने इस स्वप्नको सुनकर उत्तर दिया "प्राणनाथ! गौरवकी वृद्धि और जय होगी। हे चौहानकुलसूर्य! आपकी समान इस जगतमें कितने [illegible] आनन्द और असीम गौरवको भोगतेहैं। केवल मनुष्योंका ही मरण निश्चित [illegible] ना नहीं वरन देवताओंको भी मरण प्राप्त होताहै। सभी प्राचीन शरीरके छो[illegible] [illegible] नवधारण करतेहैं, चिरकाल तक जीवित रहनेसे मृत्युका होना ही [illegible] [illegible]। केवल अपने स्वार्थपर ही दृष्टि नहीं रखना चाहिये, अतएव कीर्तिके [illegible] स्वप्नमें ध्यान देना योग्य "आपको शीघ्र यवनोंसे शत्रुओंका नाश होगा [illegible] परलोकमें आपकी अर्द्धाङ्गिनी रहूँगी।"

सकतीहूं ? इस समय साधारण बातोंसे मेरी बिदाका कार्य शेष नहीं होसकता, और आपके सुख दुःखकी भागिनी कभी आपको इकला नहीं जानेदेगी ।

चन्दनदास ।— वह क्या बात है ?—तुम क्या कहरहीहो ?

स्त्री ।—आपके साथ ही साथ मैं भी अपने प्राणत्याग करूंगी ?

चंदनदास ।— मनमें भी ऐसी बातको स्थान नहीं देना,—हमारी सन्तान अत्यन्त बालक है उसको कौन स्नेहसहित लालन पालन करैगा ?

स्त्री ।— मैंने घरके देवताओंके चरणकमलोंमें इसको समर्पण किया वह इसको आश्रय देनेमें विमुख न होंगे, आप ऐसा विचार न करें—हे वत्स ! आओ अपने पिताको सदाके लिये बिदा दो ।"

पंडितवर टाड साहब इन दोनों अंशोंको उद्धृत करगयेहैं, हम लोग इसी-भाँति आर्यजातिमें शास्त्र, पुराण, इतिहास और काव्योंसे सैकड़ों हजारों हिन्दूस्त्रियोंके पतिव्रतधर्म पालनेका वृत्तान्त पाचुकेहैं. जिनको सुनकर अत्यन्त आश्चर्य होताहै, संसारमें प्रत्येक जातिमें ही स्त्रियोंके पक्षमें शिक्षा देनेवाले उदाहरण प्रकाश करसकतेहैं; परन्तु यहां तो उनका कुछ प्रयोजन नहीं है । विलसन, जोन्स, कोलब्रुक, ग्रिफिथ्, सेरिंश, टार्न, काडयेल, मनियार विलयमस और भट्ट मोक्षमूलर आदिने टाडकी समान एक वचनसे हिन्दूस्त्रियोंकी पति-सेवा, पतिभक्ति, पतिप्रेम, और दाम्पत्यसुखका निदर्शन पूर्ण संस्कृतकाव्योंका अंग्रेजीमें अनुवाद करके विलायतके निवासियोंको भलीभाँतिसे विदित करादिया है, कि आर्यस्त्रियोंकी समान साध्वी सती स्त्रियें दूसरी जातिमें आजतक देखनेमें नहीं आईं । भट्ट मोक्षमूलर कहतेहैं, कि यदि संसारमें सती स्त्रियें हैं तो एकमात्र भारतमें हैं, हिन्दुओंके अंतःपुरमें हैं. विलायती शिक्षा पायेहुए आजकलके नवीन भारतीय गण चाहैं जो कुछ क्यों न कहैं, हम निर्भय होकर कहतेहैं कि एकमात्र अंतःपुरकी रीति ही—केवल स्त्रियोंकी न्यायमतसे स्वाधीनताकी सीमा दिखाकर आजतक हमारी इस अवनतिकी दशामें भी हमारी भगिनी, स्त्री और कन्याका संसारमें उन विश्वपूजनीया आर्यस्त्रियोंके गौरवकी रक्षा कररहीहै । जिस दिन देखोगे कि पींजरेमें रहनेवाले पक्षियोंने द्वार तोड़ दियाहै, जिस दिन देखोगे कि कृतविद्या कहकर अभिमानी आधुनिक सभ्यतामें दीक्षित हुए विद्यार्थी विजातिके अनुकरणसे आर्यजातिकी अमृतमय फलकी रीति तोड़कर अबलाओंके कुलकी पूर्ण स्वाधीनता केवल एकमात्र सबल पुरुषजातिने विचारशून्य होकर दे दी, उसी दिन देखोगे कि, आर्यावर्तकी स्त्रियें विलायती

करुणायुक्त वचन कहकर अपनी सहायताके लिये उसे बुलाया। स्त्रीके क युक्त वचनोंको सुनकर वह सैनिक उसी समय वहां गया और शूकरको उ दोनों हाथोंसे पकड़ लिया, स्त्री छूटकर दो चार पैर आगे बढ़ीथी कि उ समयमें वह सैनिक पुरुष उसको ऊंचे स्वरसे पुकारकर बोला कि मैं इस बल शूकरको किसी प्रकार नहीं पकड़सकता। कृषककुमारी सैनिकके यह वच सुनकर हँसतीहुई शीघ्रतासे चली। और वही शीघ्रतासे स्वामीके पास आ उसकी तलवार लेआकर शूकरको मारकर उस सैनिक पुरुषका उद्धार किया। इस बातको टाड साहब लिखगयेहैं कि राजपूतोंकी स्त्रियोंका साहस, शौ और उनके सतीत्वके उदाहरण अनेक पायेजातेहैं।

बड़े प्रसिद्ध इतिहासोंमें राजपूतनारियोंकी वीरता और उनके चरित्रोंकी प्र गई है तथा राजपूतनियोंकी सामर्थ्यके सम्बन्धमें और एक उदाहरण दिखाकर महामाननीय टाड साहबने अध्यायका उपसंहार कियाहै। यह घटना राजस्थानके सब प्रान्तोंमें थी मरुभूमिमें स्थापित जयसालके इतिवृत्तसे गृहीत हुई थी। जब रा जल सिंहके आधीनमें पुगलनामक देशका रणदेव नामवाला एक सामन्त था उसका उत्तराधिकारी पुत्र साधू उस मरुभूमिके सब मनुष्योंमें सबका कारण होगया। साधु ऐसा साहसी वीर और अत्याचारी था कि उसकी दक्षिणमें तो सिन्धनद तक पूर्वमें नागोर तक उपद्रव करता हुआ घूमता था। एक समय दल कुछेक साथियों साधु एक स्थानपर लूटनेको उनको चरितार्थ करनेको

किया। भारतसम्राट् इस बातपर राजी-होगये और उन्होंने कुछ दिनके लिये संग्राम नहीं करूंगा यह प्रतिज्ञा कर उस श्रेष्ठकविको बिदा दी. पीछे अपने प्रधान कवि चंदसे इस बातका प्रश्न किया कि ये दोनों वीर कौन हैं और इन आल्हा और ऊदलने किस कारण महोवेको छोडकर अन्य स्थानमें गमन कियाहै. विख्यात चंदकविने कुछ देरके पीछे उत्तर दिया कि वत्सराजनामक एक महाबली पुरुष महोवेके सेनापति थे, एक समय बनैली गोंदजातिने महोवेके राज्यको परास्त किया, और चंदेले परिमाल प्राणरक्षाके लिये वहांसे चले गये, तब प्रधान सेनापति वीरश्रेष्ठ वत्सराजने अपने बाहुविक्रमसे गोंदजातिको परास्तकर तथा उनकी राजधानीमें अपना पूरा अधिकार जमाकर महोवेका राज परिमालको प्रत्यर्पण कर उन्हींके चरणतलमें अपना मर्माहत जीवन विसर्जन किया. राजा परिमाल इस जयसे बडे प्रसन्न हुए, और महोवेमें आकर वत्सराजकी भक्ति और वीरत्वके पुरस्कारमें वत्सराजके दोनों पुत्र आल्हा और ऊदलको आलिंगन कर उनके निमित्त महान पद और भूवृत्ति दी, रानी मालिनीदेवी भी इन दोनोंको अपने प्राण प्रिय पुत्रकी समान जानकर उनपर बडा स्नेह और ममता करनेलगी।

यह दोनो वीर सामन्त विख्यात कालिंजर दुर्ग और वहांकी भूवृत्तिके अधिकारी हुए, देवात् एक समय वहां परिमाल गये और आल्हाके पास एक श्रेष्ठ तुरंगिनी देखकर उसके लेनेकी इच्छा की, आल्हाने उसको देना न चाहा, इसपर रुष्ट हो परमालने कहा तुम दोनों मेरे देशसे निकलजाओ. यह वचन सुन दोनों वीरोंने तत्काल वहांसे अपनी गर्भधारिणी माताके सहित गमन किया, और यह बात सोचकर कि परिमालने दुर्गीर माहिलके कहनेसे हमको यह दंड दियाहै इस कारण उसकी नगरीमें आग लगा दी, और माता तथा अपनी स्त्रियोंसहित दोनो वीर कन्नौजराजकी समामें गये कान्यकुब्जपतिने बडे आदर सत्कारसे अपने राज्यमें रख वृत्तिका अधिकारी किया।

जिस समय भारतके शेष हिन्दू राजेश्वर पृथ्वीराजने महोवेपर आक्रमण किया उस समय अपने नगरकी रक्षाके लिये मालिनी देवीने दोनों वीर आल्हा और

अचानक आकर उनके विश्रामके कुञ्जमें आया हो। संकल्प पहलेसे ही साधुको पहचानता था. इस समय उसको सावधान करनेके लिये शीघ्र ही इसको भेजदिया।

सोतेहुए साधुके एक ओर खड़ीहुई सर्वाण रंगकी घोड़ीने पंचकल्याणके शत्रुदलके आनेका समाचार पातेही शीघ्रतासे अपने श्वेतपैरोंके आघातसे स्वामीको जगादिया। शत्रुपक्षके दूतने आकर देखा. कि पंचकल्याणीने अपने पैरोंको तरल आघातसे साधुकी निद्राको भंग करदिया, इससे वीरश्रेष्ठ साधु उसका तिरस्कार करतेहैं। दूतने सन्मान दिखाते हुए कहा कि आरण्य कमल तुम्हारे साथ अपने बाहुबलकी परीक्षा करनेकी अभिलाषा करतेहैं। साधुने यथार्थ राजपूतवीरकी समान बिना उत्तर दिये समरके प्रस्तावको स्वीकार करलिया। परन्तु उन्होने दूतसे कहा. कि हम अपने साथमें जो अफीम लायेथे न जाने वह कहां खोगई. इसलिये तुम थोड़ी सी अफीम अपने स्वामीसे लेकर दिलादेना. शत्रुओंके अनुचरोंके द्वारा शीघ्र ही साधुके सेवनकरनेके लिये

राज्य × बीचके देशों * में भयंकर अग्निने उनको भस्म कर मेवात † कोभी समभूमि करदिया था । वत्सराजने अपने ही बाहुबलसे दश राजाओंको परास्त कर उनके धनको लेकर महोबेके अधिपतिको देदिये थे । अब हमने भी यही कार्य कियाथा, परन्तु उसका पुरस्कारस्वरूप हमलोग अपनी जन्मभूमिसे निकलकर महोबेके अधिपतिके कार्यमें सातवीं बार रणभूमिमें शत्रुओंके अस्त्राघातसे घायल हुएहैं और पिताके स्वर्गजानेके पीछे चौवीस बार समरभूमिमें उतरे हैं; सात संग्रामोंमें जय प्राप्त करके ऊदलने जयपत्र परिमालके हाथमें समर्पण करदिया है । तीन बार मेरी मृत्यु सन्मुख आपहुँची थी । उनके राज्यके सन्मानसे मैंने इस प्रकारकी रक्षा कीहै—परन्तु यह निकालना इस समय उसका पुरस्कार है ।'

कविने उत्तर दिया कि "परिमाल जिस समय अत्यन्त बालक थे उनके पिताका उसी समय देहान्त होगया, उन्होंने प्राणत्याग करनेके समय अपने पिता वत्सराजके हाथमें उनको समर्पण कर दिया । इस कारण आपके पिता-परिमाल भी पिताके ही समान हैं; जब वह अत्यन्त विपत्ति पड़नेसे आपको बुलारहेहैं तब आप उन पिताके पुत्र होकर उनको किसी प्रकार भी न छोडैं ? जो राजपूत विपत्तिके समयमें अपने अधीश्वरोंको छोड देतेहैं वह जन समाजमें निंदित होतेहैं. अपने पिताकी उस राजभक्तिको आप स्वयं धारण कीजिये, आपने इस संसारमें जिन महा उत्सवोंमें आनंदितहो सैकडों हजारों रुपये खर्च कियेथे, न जाने इस समय उनपर घोर विपत्ति पडनेसे आप कान्यकुब्जमें किस प्रकारसे रहतेहैं ? रानी मालिनीदेवी आपको अपने प्राणप्रिय पुत्रकी समान जानतीहैं. इस समय उन्होंने आपके बुलानेके लिये विशेष आग्रह कियाहै । आपकी माता मल्हिनीदेवी सर्वदा उनके सन्मुख प्रतिज्ञा करती

× चौहानराजके आधीनमें स्थित प्रधान वीर अम्बेरके राउ पजाउन यह जयपुर राज्यके पूर्व पुरुष थे ।

* चंदकविने अपनी पुस्तकमें इस स्थानका नाम "चन्दाइल" रूपसे वर्णन कियाहै । अनलवाराके सोलंकी राजवंशकी एक शाखा बघेला राजपूतोंके द्वारा यह राज्य प्रतिष्ठित था, इस समय इस देशका नाम बघेलखंड है और इसकी राजधानी रेवानामसे विख्यात है ।

† दो-आब गंगा और यमुनाके मध्यमें है ;

दिल्लीसे दक्षिण पश्चिमको स्थापित है इस स्थानके निवासी अत्यन्त ही [illegible] हैं । और बहुत दिनोंतक [illegible] कियाहै । पृथ्वीराजके [illegible] समयमें मेवातका अधिकार उनके [illegible] था ।

तिसे रणभूमि गुंजार उठी । कर्मदेवीकी आज्ञानुसार उनकी दोनों भुजा यथास्थानपर भेजदी गई । पुगाल्के वृद्ध राइने अपनी पुत्रवधूकी उस कटीहुई भुजाको दाह करके उस स्थानपर एक बड़ा भारी सरोवर खुदवादिया । आज तक वह " कर्मदेवीके सरोवर " नामसे विख्यात है ।

पूर्वोक्त घटना १४९२ संवतमें (१४०७ ईसवीमें) हुई थी । इस युद्धमें सेकल्के पक्षकी बहुत सी सेना मारी गई । साढे तीन हजार सेनामेंसे केवल पांच सौ मनुष्य जीवित रहेथेः और उनके प्रधान नेता मेघराज बहुत घायल हुए थे । आरण्यकमलके चार भाइयोंके भी बड़ी भारी चोट आईथी. और आरण्यकमलके जो बड़े २ घाव होगये थे उनको छः महीनेतक चिकित्सा होनेपर भी आराम न हुआ. और वह सुरलोकको सिधारगये । इतिवृत्तके आख्यायकने लिखाहै. कि जिस दिन साधुका दशमासिक श्राद्ध होताहै. उसी दिन आरण्यकमलका चातुर्मासिक श्राद्ध होताथा ।

वीरश्रेष्ठ परमालने निराश हृदय हो उस शत्रुके भेजे हुए समाचारको ग्रहण किया। परन्तु कुछही कालके उपरान्त उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सेनाके वीरोंको बुलाकर कहा कि चौहानराजके दूतको बुलाकर कहो कि "मैं महीनेके पहले दिन रविवासरमें उनके साथ समरभूमिमें साक्षात् करूंगा।"

शुक्रवारके दिन ही पृथ्वीराजके शंखध्वनि करते ही जयके डंकेके बजनेके साथ ही समरास्थित समयकी समाप्ति सुनाई आई * राजपताकाके उठते ही सारी सेनाके मनुष्य उसके चारों ओर आकर इकट्ठे होगये। सभीने एक एक ठंढे जलके पात्रको ग्रहण किया, रणके आनंदसे उनके हृदय उन्मत्त होगये। सभीने अपने२शिरमें सुगंधित तेल लगाया। "इस ओर विजयके धाममें अप्सरागण समर क्षेत्रमें निहत हुए। वीरोंके साथ संभाषण करनेके निमित्त स्वर्गीय सुगंधित तेल और सुगंधित द्रव्योंको अपने २ कोमल शरीरमें मलकर नेत्रोंमें अंजन लगाय सजी धजी बैठीहुई बाट देखरहीहैं। युद्धकी भेरीका भयंकर शब्द कैलासके शिखर तक पहुँचगया. इस शब्दने शिवजीके भी योगको भंग करदिया, अपने गलेमें बहुतसे मुंडोंकी मालाओंकी संख्या विचारकर अत्यन्त ही आनंदित हुए। योगिनियोंके आनंदकी सीमा न रही, रणभूमिमें निहतहुए मनुष्योंके रुधिरपानकी इच्छासे योगिनियोंने महाआनंदित हो नृत्यकरना आरंभ किया, चौहान और चंदेलोमें युद्ध होता हुआ देखकर मनुष्योंके मांसको भक्षण करनेवाले पिशाचोंने आनंदसे उत्साहित हृदय हो विजय संगीतसे प्रकृतिको भी कंपित करदिया।"

राजपूतजातिका यह विचार है कि समरभूमिमें जो मनुष्य प्राणत्याग करतेहैं, उन्हें स्वर्गकी अप्सरा बडे आदरसे आकर लेजातीहैं। चन्दकविने इस स्थानपर समरके पहले ही वीर और अप्सराओंके सजनेका वर्णन कियाहै। वीरोंके अस्त्रोंके शरीरपर सजातेही स्वर्गकी विद्याधरियोंने अपने २ शरीरोंको अलंकारोंसे सुशोभित करलिया। छोटे २ वीर घंटाओंसे युक्त सरपेच वीरोंके शिरपर लगाये गये अप्सराओंने किरीट धारण किये: सैनिकमंडलीने समरकी तुरंगिनियोंके ऊपर वेशबन्धन करदिया: लोहेके जालसे वीरोंके उष्णीष दृढबन्धनसे बंधगये;

---

* राजपूत जातिमें समरके समयमें यह रीति है कि [illegible] और [illegible] जिसका [illegible] समरभूमिकी [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

एवं भोजनकी सामग्रीको ऊंटोंपर लादकर आगे २ चले। और सामान्य सेना अस्त्र धारण करके सेनाके पीछे भागकी रक्षा करतीहुई चली। चंड अपनी होनहार प्राणप्यारीको आदर सहित लानेके लिये नगरसे आगे बढ़े। परन्तु रथके पास जाते ही इनको महा संदेह होगया। जब चंडने इनके और ही ठाट देखे तब वह भागनेका उपाय करनेलगा जैसे ही चंड भागा कि वैसेही रथपर बैठेहुए भट्टियोंने शीघ्रतासे उसका पीछा कर नागरदेशके तोरणद्वारपर चंडको पकड़कर मारडाला। शत्रु लोग उठतीहुई तरंगमालाकी समान नगरमें जाकर चारों ओरसे लूट करनेलगे।

इस प्रकारसे दोनों ओरके वीरोंने अपना २ बदला लेलिया। फिर दोनों पक्षमें सन्मान और गौरवकी रक्षाके निमित्त संधि होगई. दोनो ही पक्षके जातीय शत्रु सम्राट् सेनाको उचित दंड देनेमें राजी हुए। दोनों पक्षने एक ही मनुष्यकी समान खड़े होकर बादशाह खिजीर खां लारवकी भेजीहुई सेनाको छिन्न भिन्न करदिया: उसकी सेनाका एक मनुष्य भी जीवित न रहा। रणकदेवके दोनो पुत्र मुसलमान होकर पुगालराज्यके अधिकारसे सदा ही आभोरिकल्याके भट्टियोंके साथ जा मिले। अबतक उनके वंशधर समान मुसलमान भट्टी नामसे विख्यात हैं। राजकुमार कल्याण सबकी सम्मतिसे पुगालके राजा हुए।

अपने अधिराजके निमित्त प्राण तक देदेतेहैं, वही मनुष्य वीर हैं; उन्हीं मनुष्योंका जन्म धन्य है । मैं केवल परमालके कल्याणकी अभिलाषा करताहूं। मेरे वियोगमें यदि वह * जीवित रहे तो अवश्य ही वह साध्वी स्त्रीकी समान आचरण कर पर्वतियोंका अनुकरण करेगी । सम्मलकी सेनाका दल अवश्य ही खंड २ होजायगा मैंने पूर्वपुरुषोंके रुधिरको इस प्रकारके भावसे चित्रित करदियाहै इससे मेरा नाम इस संसारमें निश्चय ही अमर रहैगा । महाराज ! मैंने अपने पुत्र इन्दलको आपके हाथमें समर्पण किया । और जननी देवलदेवीके यशकी रक्षाका भार आपके हाथमें रहा ।"

रानी मलिनदे देवीने कहा, "कि चौहानोंकी सेनाकी संख्या जितनी अधिक है, वह लोग उसी प्रकार असीम साहसी हैं; इस कारण उनको कर देकर महोबेकी रक्षा करो ।" रानीके इस विचारसे ऊदलका हृदय कंपायमान होगया, और महाक्रोधित हो वीरतामें भरकर रानीको बुलाकर कहनेलगा, "जिस समय आपने अपनी रक्षामें असमर्थ होकर घायलहुओंकी हत्या की थी उस समय वह चिन्ता क्यों नहीं करी ? तब तो मेरी बातको किसीने भी न सुना । यह विचारशक्ति इस समय कहांसे आई । मैंने उन घायल हुए मनुष्योंको क्षमा करनेके लिये तीन बार प्रार्थना की थी । अच्छा, मेरे शरीरमें जबतक प्राण रहैंगे तबतक महोबेके ऊपर कोई विपत्ति नही आवेगी । परमाल भी आपके ही निमित्त रणभूमिमें प्राण त्यागकर अप्सराओंके साथ आलिंगन करनेके अभिलाषी हुएहैं ।"

वीरमाता देवलदेवीने अपने दोनो पुत्रोंकी यह वीरोचित वीर प्रतिज्ञाको सुनकर वीरांगनाओंकी समान कहा, "पुत्र ! राजपूतवीरोंके करने योग्य यही वचन है । इस समय केवल वीरता दिखाकर ही अपने पूर्वपुरुषोंके मुखको उज्ज्वल करना बाकी रहाहै.—रणभूमिमें घरसे किसानोंके आनेका शब्द कानोंमें सुनाई आरहा है. इस कारण हम इस समय वृथा समयको खोना नहीं चाहते अवश्य ही शत्रुओंके दलसे ग्रामोंमें भयंकर अग्नि प्रज्वलित हो जायगी ।"

चन्देल राज परमालने कहा, कि "आज शनिश्चरहै यह बड़ा शुभ दिन है, कल हम लोग समररूपी समुद्रमें झम्प देकर शत्रुओंके सन्मुख होंगे ।

वीरोन्मत्त आल्हाने राजाके यह वचन सुनकर क्रोधित होकर कहा, "जो विध्वंसोन्मुख ग्रामोंसे प्रज्वलित हुई अग्निकी शिखा और धूमराशिको उड़ता हुआ

* आल्हाके प्राणत्याग करनेपर उसकी [illegible]
[illegible]

भय पाये हुए पिता कठिन यवनदन्तके हाथमें समर्पण करनेके लिये तैयार हुए, रूपनगरकी अनुरूपवती राजकुमारीने किस प्रकारसे महाराणा राजसिंहकी सहायताके लिये प्रार्थना कीथी, उससे हमारे पाठकोंका हृदय अवश्य ही अंकित हुआ होगा। राजपूतजातिके हिन्दूजातिके इतिहासमें इस भांतिके सैकड़ों उदाहरण विद्यमान हैं; महामाननीय टाड साहब उनकी यथार्थता कह गयेहैं। उनका अंतिम कहना यह है—कि राजपूत स्त्रियोंकी सुन्दरता और राजपूत स्त्रियोंके गुण कविकुलके काव्योंमें आज तक गायेजातेहैं। राजपूत जननी अपने पुत्रके यश और गौरव, तथा वीरता और जयप्राप्तिके निमित्त अनन्त आनंदसे उनके अंशकी भागिनी हुई थीं। राजपूत वीरमाता बालकपनसे ही अपने पुत्रोंको उपदेश देतीथीं—"वत्स ! तुम अपनी माताके दूधको उज्ज्वल करदो" अर्थात् वीरतामसे विख्यात होकर माताके जीवनको सार्थक करनेमें त्रुटि न करना। पुत्र तुम सर्वत्र ही विजयी हो वीरत्वपसे सन्मान पाओ, यह इच्छा राजपूतोंकी माताओंके हृदयमें कितनी प्रबल थी, अपने प्राणप्यारे पुत्रकी वीरता प्रकाशकरनेके साथ समरभूमिमें प्राण त्यागनेका समाचार पाकर बूंदीकी राजरानीने शोकके बदलेमें आनंद प्रकाश कियाथा, वह भी यहां पर साक्षी देरहाहै। कविका वचन है कि "राजकुमार जिस माताके दूधको पीकर पाले गयेथे; उनकी मृत्युका समाचार पाकर उसी माताके उन वर्द्धमान दोनों स्तनोंमें दूध भर आया, जिससे कि वह दोनों स्तन दूधके वेगको न सहन करके तरेने लगे; शीघ्रताने उनमेंसे दूधकी बूंदें गिरने लगीं।

उसको किसी समय मुक्ति नहीं मिलसक्ती वरन् पिशाचलोकमें पिशाचिनी होकर वह अनन्त काल तक भ्रमण करतीहै।"

माननीय टाड साहेब चन्दकविके काव्यसे यहाँ तक उद्धृत करगये हैं कि समाजके ऊपर राजपूतरमणियोंकी कैसी प्रभुता थी उनका उद्धृत किया अंश ही उसका उदाहरणस्वरूप है। जिस समय माता देवलदेवीने वीरनारियोंकी समान अपने प्राणरत्न दोनों पुत्रोंको संग्रामके आँगनमें भेजकर कहा कि जय प्राप्ति करो नहीं तो वहीं कट मरो, उस समय राजपूतजातिका आचार व्यवहार सभी भाँतिसे शुद्ध था, और उस समयमें चौहानसम्राट्का सम्पूर्ण भारतके ऊपर राज्य था। टाड साहबने इस घटनाके साथ भारतमें यवनोंके अधिकारकी छठी सदीके पीछे हुई घटनाकी समानता दिखाई है। यद्यपि गजनी, गौरी, खिलजी, सैय्यद, लोदी और मुगल इन छः वंशके महान पुरुष छः सदीके बीचमें भारतके सम्राट् आसनपर विराजमान हो अपने प्रबल प्रतापसे भारतका शासन करगये हैं इनके समयमें राजपूतजातिकी अवस्था कुछ कालको अत्यन्त शोचनीय होगई थी, तथापि राजपूत नारियोंके स्वभाव पूर्वकी समान वीराङ्गनाओंकी भाँति अटल रहेथे। क्या हिन्दू क्या मुसलमान इतिहासके जाननेवाले सभीने मुक्तकंठसे उन घटनाओंकी प्रशंसा करीहै। टाड साहब उन हिन्दू वा मुसलमान इतिहासलेखकोंके ग्रंथोंसे उन प्रशंसनीय घटनाओंके समाचार संग्रह करनेके बदले उस समय भारतमें विद्यमान सामने देखनेवाले मिस्टर वर्णियरके ग्रंथसे उसको नीचे लेखानुसार उद्धृत करते हैं।

पापी दुरात्मा औरंगजेब अपने जन्म देनेवाले पिताको तख्तसे उतार और अपने सगे भाईको मारकर जिस समय भारतमें अपनी लालसाओंको फैला रहा था उस समयमें राजपूतजाति अपने स्वाभाविक राजभक्तिके वश हो वृद्धसम्राट्के पक्षको लेकर औरंगजेबकी पापमयी आज्ञाको एक साथ ही व्यर्थ करदेनेके लिये अपनी भरपूर शक्तिसे यत्न करने लगी। असीम साहसी महावीर राठौर जसवंतसिंहके अधिकारमें तीस हजार राठौर राजपूत बडे पराक्रमसे नर्मदाकी ओर आगे बढे। और मुरादके साथ जो औरंगजेबकी सेना थी उस पर टूटपडे. मुराद साहसी सेनापतियोंके द्वारा गोलन्दाजोंके तडाग गोले वर्षाताहुआ नर्मदाको पार कर अपने भाईके साथ जा मिला। दूसरे दिन सूर्योदयसे पहले ही लडाई होने लगी. नर्मदाके किनारे पिताद्रोही. भाईको मारनेवाले औरंगजेबके साथ राजपूत सेना बिना विश्राम लिये सारे दिन संग्रामके आँगनमें अपनी स्वाभाविक महा-

सर्वोदनमें विरके द्वारा अपने प्राणोंको छोड़ जगतमें अपूर्व वीरिक ख्याति स्थापित करगई हैं? सतीत्व, पातिव्रत्य, हृदयकी सरलता, साहस, बुद्धिमत्व और धर्मके पालन करनेमें सदासे हिन्दू रमणी जगतमें अतुलनीय होती आई हैं यह बातें हिन्दू रमणीके चरित्रमें सत्यप्रिय और न्यायी पुरुषको अवश्य माननी होगी। हमी आर्य सन्तान इस समय मोल लियेहुए दासकी जातिमें बदलगई हैं किन्तु इस मोल लीहुई दासजातिकी स्त्रियां आजलों आदर्शस्वरूप हैं।

यद्यपि इस राजवाड़ेमें इस आर्यक्षेत्र भारतमें आज देवलदेवी, कर्मदेवी, पद्मिनी, कृष्णकुमारी, संयुक्ताकी लीला प्रकाशित नहीं होतीहै, तथापि हमारी हिन्दूजातिकी माता, भगिनी, वधू और कन्यागण इस समय वीरनारियोंके अभिनयको नहीं करतीहैं किन्तु जगत स्वतः ही घोषणा करताहै कि इस पतित दशामें भी हिन्दू रमणी अखंड भावसे अपने सतीत्वकी रक्षा करके ही अपने अन्तःपुर और अपने घरको शान्ति, सन्तोष, सुख और मंगलकी गोदसे सुशोभित बनाये हुई हैं। सती द्रौपदीके अपमानसे कुरु और पाण्डवोंके

का दर्शन नहीं करा और एकान्तमें इकली कोठरीमें पडीरही, इसको सुन जब रानीकी माता उदयपुरसे आई और उन्होंने अनेक भाँतिसे रानीको समझा बुझा कर कहा कि महाराज ! रणकी थकावटको दूरकर शीघ्र ही फिर नवीन सेनाको इकट्ठी कर रणभूमिमें जाय औरंगजेबको परास्तकर अपने यशके सूर्यको प्रकाशित करेंगे । वर्णियरने अन्तमें कहा है कि यह उपाख्यान राजपूत नारियोंके साहस और वीरताका उदाहरणस्वरूप है ।

दिल्लीके अन्तिम चौहान सम्राट् पृथ्वीराजके राज्य समयमें राजपूतनारियोंके चरित्रोंमें ऐसे असंख्य उदाहरण पायेजातेहैं । पृथ्वीराजने जब कन्नौजके राजा जयचंदकी पुत्री संयुक्ताका हरण किया था उसके विवरणमें हम केवल वीराङ्गना संयुक्ताका चरित्र ही नहीं वरन् राजपूत रमणीमात्रका शुद्ध चित्र अंकित देखते हैं अनुपम रूप लावण्यमयी संयुक्ताने जिस दिन स्वयम्बरकी सभामें खड़े होकर सैकडों राजोंका मान मारकर दिल्लीके महावीर सम्राट् पृथ्वीराजकी मूर्तिके गलेमें वरमाला पहराई थी, उसी समयसे उनका चरित्र किस प्रकारसे चित्रित देखतेहैं ? उस वरमालासूत्रमें उनके निमित्त ही चौहान और राठौरसेनाके दलमें (एक ओर पृथ्वीराज और दूसरी ओर सैकडों राजाओंकी सहायतासे ...य- ...के बीचमें) क्रमानुसार पाँच दिन तक अतुलनीय घोर संग्राम हुआ था । ...तमें कन्नौजके महाराजकी हार हुई तब कन्नौजकी राजवालाने अपने विश्व ...हनीय रूप लावण्यके बलसे वीर तेजस्वी पृथ्वीराजको एक वार ही मोहित ... राजकार्यमें सब प्रकारसे उनकी अनिच्छा कर दी संयुक्ता अवश्य ही एक- ...त्र प्रेमपात्री बनी, और भारतकी अनिष्ट कारिणी कहाकर हमको दिखा दी किन्तु उस राठौरकी राजकुमारी चौहानवंशकी रानी संयुक्ताके वास्तविक चरित्रका प्रकाश होनेसे जगत्की कोई भी ऐसी जाति नहीं जो संयुक्ताको रमणीमंडलीके ऊंचे सिंहासनपर न विठलावे ? जब दुर्दान्त महम्मद गोरी सिन्धनदको पारकर पृथ्वीराजकी गौरवताको धूलिमें मिलाने और भारतके पवित्र हृदयमंदिरमें यवनपताकाको फहरानेके लिये तथा आर्यावर्त्तको लाप करनेके निमित्त आगेको बढाहै. तब यह समाचार दिल्लीके राजमहलोंमें प्रेम. आनन्द और विलाससे उन्मत्त पृथ्वीराजके कानोंतक पहुँचा. राठौरकी राज- वालाने जब यह संवाद सुना उसी समय उनकी प्रेमविलासकी निद्रा भंग हो गई. सचेत होकर उसी घडीसे ही वह विलासवृत्तिको छोड राजपूत वीराङ्गनाके स्वाभाविक साहस और वीरत्वको प्राप्त हो नवीन मूर्त्तिको धारण कर अपने प्राणप्यारे पतिको समरके आंगनमें भेजनेके लिये सूचना देनेमें विलम्ब न करती

टाड साहब कहगये हैं कि राजपूतोंकी स्त्रियें भी आदर्शके अन्तमें फिर प्राणपतिके साथ मिलनेकी आशासे प्रज्वलित हुई चितामें निर्भय होकर भक्तिसहित अपने शरीरको त्याग देतीथीं। उन्होंने कहाहै कि इस रीतिका प्रचार सबसे पहले-सीथियनोंके द्वारा हुआहै और प्राचीन जातिमें भी इस रीतिका प्रचार भली भांतिसे था। वह उसके प्रमाण स्वरूप उदाहरण दिखागये हैं। जाआस्त्री नर्सो वासी प्राचीन सिन्धोवासीजन और जर्मनजातिमें किसी वीरने भी इस प्रकारसे शरीर त्याग नहीं किया। मृतक हुए वीरोंकी प्रज्वलित चिताके ऊपर उनकी स्त्रियें अपने स्वामीके सम्पूर्ण अस्त्रोंको भस्म करदेतीं थीं। बाल्टिक सागरके तीरवासी स्कन्डनेवियाके जितगणोंमें भी इस रीतिका प्रचार था और हिरोसियन प्रान्तसे निकली सरमत जाति भी चिरकाल तक इस रीतिको उत्तम प्रकारसे रक्षा करके बहुत वर्षोंके पीछे केवल मात्र स्त्रीको मृतक पतिके साथ जलानेकी रीतिको रोकरक्खीथी।

। करना होताहै, वह बलिदान करने और दूध चढानेसे यदि ऐसा करनेसे मनुष्य विधाताको लिखेहुएके खंडित और पाँचो पांडवोंकी ऐसी दुर्दशा क्यो होती ?"

र हमने अनेक काव्योंमें भी देखाहै,कि यहां यह सम्मति लतानके विरुद्धमें किस प्रकारसे भयंकर समरानलको नव्य है; समस्त आयेहुए वीर इसीकी सलाह करनेलगे स विषयकी सलाह करनेके लिये अपनी प्राणप्यारी स्त्रीके लनाकुलललाम संयुक्ताका वचन है "कि कहीं कोई स्त्रियोंसे संसारका विश्वास है कि स्त्रीजातिको बहुत थोड़ा ज्ञान होताहै, स्त्रियोंके मुखसे सत्य वचन निकलनेपर भी कोई उसको सुनना म आद्य प्रतिमा हैं- शिवजीकी समान तेजको धारण करतीहैं पुण्य और ज्ञा ... का आधार हैं । गंभीर ज्ञानी तो ग्रंथोंको देख ... ह और नक्षत्रोंकी गति बनातेहैं. चरित्रोंकी पुस ... में वह अज्ञानी है. यह बात कुछ ह चिरकालसे ... है; हमारे चरित्रोंकी पुस्तकके पठ- नुष्य भी आजत ... हुआ इसी कारण पुरुषजाति अग- ज्ञानी है, स्त्रियों... ज्ञान कुछ भी नहीं है. ऐसा कहतेहैं की जाति अपने सुख दुःखमें समभावके अंशकी अधिकारिणी ाप सूर्यलोकमें चलेजायेंगे तब भी हम आपका साथ नहीं छोडेंगी हित आपके साथमें रहकर भोजन प्यासका कष्ट सहन करूंगी. तम- वरकी समान हैं; आप उस सरोवरमें रहनेवाले राजहंस हैं, जब आप यसे दूर चले जायेंगे, उस समय क्या आपको फिर वह सुख गा ? ।"

कि राजनैतिक आकाशको मेघोंके जाल ने ढकलिया दुर्भाग्यवश विपक्ष लानेके लक्ष्यमें भयंकरी विभीषिकाको देखकर तब उन्मत्त ... यवनोंकी सेनाके दलने पलभरमें भागनेका ... या. स्वाधीनताके निमित्त जन्मभूमिके निमित्त हिन्दूजातिके ... भारतके प्रत्येक प्रान्तके प्रायः सभी अधिपति अपनी ... दमनकरनेके लिये इकट्ठे हुए. सेनादल रणभूमिमें ... लिये अनेक उपाय किये. ... ... के चुडने ... ...

ओंसे स्त्रियोंको जन्मभर तक बंदी रखतेहैं। इसी उद्देशसे और इसीका रणसे राजपूत लोग शिशुकन्याको मारडालतेथे, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। यह रीति कितनी ही हृदयको विदीर्ण करनेवाली क्यों न हो कन्याको जन्मभर क्वारी रखनेकी अपेक्षा इस रीतिको अच्छा कहना होगा. फ्रान्सके फिरिन्सियान गण इटालीके लाङ्गो-वार्डिगण, और स्पेनके भिसिगोथ गण जिन कन्याओंको जन्मभरतक कुमारी अवस्थामें धर्मशालामें कारावासिनीकी समान बंद करके रखते थे वही रीति जिन गोथियोंके×जन्मक्षेत्रमें आकर मानीगई है इसमें और कुछ भी संदेह नहीं है। राजपूत और प्राचीन जर्मनके वीरोंमें भी ऊपर उक्त कारणसे ही अर्थात स्त्रियोंके कलंकके भयसे ही इस रीतिका प्रचार था. प्राचीन जर्मनके वीर अपनी २ स्त्रियोंको दूसरेके हाथमें नहीं देखसकतेथे, इसीसे वह अपनी स्त्रीके हृदयमें छूरी मारदेतेथे, और इसीकारणसे राजपूत भी अपनी २ कन्याओंको बराबरवाले पात्रके हाथमें समर्पित करनेमें असमर्थ हो वंशमें कलंक लगनेकी अपेक्षा उस सुकुमारी कन्याको अफीम देकर मारडालतेथे।"

यह तो हम पहिले ही कहआये हैं कि इस समय सुकुमार कन्याके प्राण-नाशकी रीति दूर होगईहै, परन्तु इसका मूल कारण अभीतक दूर नहीं हुआ है। वह मूलकारण क्या है, और किसकारणसे यह रीति प्रबल होगई है टाड साहबकी उक्तियोंके पढनेसे इसका निश्चय हमारे पाठकोंको भली-भांतिसे हो जायगा। टाड महोदय कहतेहैं " यद्यपि धर्मकी विधिसे इस नृशंसाचारको किसी प्रकारसे भी समर्थन नहीं किया है, परन्तु राजपूत जातिमें प्रचलित विवाहकी रीतिने इस शिशुकन्याकी हत्याको भयंकर

उस वीरसे विवाहका प्रस्ताव किया और साधुने इस बातको बडे आनंदसे स्वीकार करलिया. पीछे साधुने वहाँसे बिदा ली। फिर ठीक समयमें पुगालमें उनके पास नारियल * भेजदिया। उन्होंने साधुके द्वारा ग्रहण होनेमें कुछ भी विलम्ब न किया। शुभ दिन शुभ मुहूर्त्तमें अरिन्त नगरके साधुके साथ कर्म देवीका शुभ विवाहका कार्य समाप्त होगया। महिलपतिने विवाहके कौतुकमें साधुको बडे मूल्यके वस्त्र और आभूषण तथा सोने चाँदीके पात्र, और एक सुवर्णका बैल, तथा तेरह मंगलप्रदीपको धारणकरनेवाली सहेलियाँ दीं।

मंदौरके युवराजने आरण्यकमल साधुके साथ अपनी निर्वाचित पत्नीके संग विवाहका समाचार सुनकर क्रोधके मारे प्रज्वलित हृदय हो उसका मार्ग रोकनेके लिये चार हजार राठोरसेनाको भेजदिया साधुने इससे प्रहले संकल मेहराज नामके सामन्तके प्राणप्यारे पुत्रको मारडालाथा; उस सामन्तने भी इस समय अपना बदला लेनेके लिये शुभ अवसर जानकर शीघ्र ही मंदौरके क्रोधित और अपमानित हुए युवराजके साथ सेनाकी तैयारी करनेमें सहायता की. इस बातको माणिक राव पहलेसे जानगये थे कि इस समय युवराज अरण्यकमल भयंकर उपद्रव मचावेंगे इस समय यह युद्धका समाचार सुनकर उसने अ... नवीन जामाता साधु और प्राणप्यारी पुत्री कर्मदेवीके निर्विघ्नतासे जानेके लिये उनके साथ चार हजार महीलोंकी सेना कर दी, वीर तेजस्वी साधुने कहा कि हमारे साथमें जो सात सहस्र भट्ट वीरोंकी सेना है, वही हमारी नवीन विवाहिता स्त्रीको निर्विघ्नतासे हमारे निवासस्थान मरुभूमिमें पहुँचादेगी। बहुतसे अनुरोध करनेपर भी कर्मदेवीके बडे भाईने मेघराजके अधीनकी पचास जन महीलोंकी सेनाको साथमें लेजानेकी सम्मति दी।

प्रबल पराक्रमशाली साधु अपनी नवीन विवाहित भार्या और सेनाको शुभ मुहूर्त्तमें अपने साथ लेकर अपने देशकी ओर चले साधु इस समय चन्दननामक स्थानमें पहुँचकर विश्राम कररहे हैं, इसी समयमें बदला लेनेवाले आरण्यकमलकी सेनाके शत्रुओंने आकर दर्शन दिया। वीरश्रेष्ठ साधु अपनी पंचकल्याणनामक समरकी घोड़ीकी पीठपरके शोभायमान वस्त्रको पृथ्वीपर बिछाये हुए उसके ऊपर शयन कर विश्रामका सुख अनुभव कररहे थे। अश्वकी डोरी उनकी भुजापर बंधरही थी कि इसी समयमें शत्रुओंकी सेनाने

* राजपूत जातिमें यह रीति प्रचलितहै कि विवाहके सम्बन्धके प्रस्तावके पीछे कन्याके पक्षवाले नारियल भेजाकरतेहैं. वरके उस पक्षको लेनेसे यह जाना जाताहै कि वह विवाह करेगा।

सत्कार निश्चय होजायगा, तब सलम्बूरके सरदार यश और गौरवकी आशाके वश होकर सबसे पहले ही इस विधिको भंग करदेंगे। वह अपनी कन्याओंके विवाहके समयमें इतना अधिक धन खर्च करते थे कि उनके स्वामी राजाको इतना धन उठानेकी सामर्थ्य नहीं थी। कवि और वंशकारिकाओंने उनकी इस दानशूरताकी ऊंची प्रशंसासे राजवाड़ेको प्रतिध्वनित करदिया था, उन्होंने अपने नाम जातीयके काव्यमें उज्ज्वलरूपसे चित्रित करके राजपूत जाति श्रेष्ठ महाराज जयसिंहके इस शुभ उद्देश्यपर कुठाराघात किया, जितने दिनोंतक वृथा गौरवकी इच्छाका दमन तथा आडम्बर प्रिय राजपूत सरल सामान्य भावका अवलम्बन न करें, जो उतने दिनतक विवाहके समयमें अधिक धनके खर्चका विषमय फल दूर नहीं होगा। दुर्भाग्यकी बात है कि जो लोग इस रीतिको दूर करनेमें भलीभांतिसे समर्थ हैं इस अधिक धनके व्ययसे उनके स्वार्थको और भी सिद्ध कर दिया है। उन्होंने इसकी और भी पुष्टता कर दी थी, अर्थात् कवि, ब्राह्मण, गाथाके बांचनेवाले और सहस्र भीटकगण विवाहकी सभामें दलके दल बांधकर आते थे, और कन्याके पिताकी उच्च प्रशंसा करके दान-शूरताको अधिक बढा देते थे। राजपूत कवियोंका तुच्छ स्थान सबका योग था, वह लोग पहले २ सामन्तोंकी कन्याओंके विवाहमें अधिक धन व्यय करके कन्याके

प्यारी कर्मदेवी रथपर बैठीहुई साधुकी महावीरताको देखने लगीं, और वीरपति जितनी बार शत्रुओंको मारकर लौटते थे कर्मदेवी उतनी ही बार आनंदितहृदय हो ऊँचे स्वरसे उनकी प्रशंसा करतीहुई साधुको उत्तेजित करती थीं। इस प्रकारसे शत्रुओंके ओरके छः सौ मनुष्य मारेगये और अपनी आधी सेना मारीगई अमित पराक्रमी साधुने कर्मदेवीके समीप जाकर अंतिम विदा ली। राजपूत वीरबाला कर्मदेवीने स्वयं अपने पतिको युद्धमें जानेके लिये उत्साहित करके कहा, "आपकी वीरता और आपका बाहुबल आज मैंने अपने नेत्रोंसे स्वयं देखलिया; यदि आप समरभूमिमें शयन करेंगे तो याद रक्खो कि यह दासी भी अवश्य अपने प्राण त्यागकर आपकी संगिनी होगी।" वीरश्रेष्ठ साधु अपनी स्त्रीसे विदा होकर आरण्यकमलसे युद्ध करनेके लिये समरभूमिकी ओरको चले। इस समय आरण्यकमल भी साधुके साथ युद्ध करके उसके रुधिर पीनेसे युद्धकी समाप्ति और अपने कलंकको दूर करनेके लिये इनकी बाट देखरहाथा। शीघ्र ही दोनों वीर पुरुष अस्त्रसहित एक दूसरेके सन्मुख हुए दोनों वीर वीरोचित वचनोंसे एक दूसरेका तिरस्कार करते हुए अस्त्रचलानेकी चेष्टा करनेलगे; युद्धविद्यामें विशारद साधुके चलाये हुए वरछेने सबसे पहले आरण्यकमलके गलेको जा भेदा। और उसी समय बिजलीके वेगकी समान आरण्यकमलने उसका बदला दिया, महीलकुमारी कर्मदेवीने देखा कि शत्रुके चलाये हुए वरछेने मेरे प्राणपतिका मस्तक भेदन करदिया। दोनों वीर दोनोंके ही अस्त्राघातसे पृथ्वीपर गिरपडे. परन्तु साधुके जीवनका दीपक उसी समय निर्वाण होगया; और राठौरके आरण्यकमल तो केवल मूर्छित ही हुए थे। जब दोनों ओरके नेताओंका पतन होगया तब शीघ्र ही युद्धकी भी समाप्ति होगई। इस युद्धमें हजारों मनुष्योंके नाशका कारण कर्मदेवी थीं। कर्मदेवी अपने प्राणपतिके साथ चलनेके लिये तयारी करनेलगीं। एक तीक्ष्ण तलवार लेकर उस वीरबालाने सबसे पहले अपनी बाँई भुजाको काट कर कहा "कि यह भुजा मानो मेरे प्राणेश्वरके पिताके चरणकमलोंमें उपहारस्वरूप भेजीजातीहै। उनसे जाकर कहना कि उनकी पुत्रीने स्वयं अपने हाथसे काटडालीहै,।" इसके उपरान्त अपनी दूसरी भुजाको काटकर आज्ञा देकर कहा. कि यह मेरी भुजा विवाहका कंकण पहरे हुए महीलियोंके कविश्रेष्ठको उपहारमें देना।" इसके पीछे मनुष्योंके रुधिरसे भीजी हुई रणभूमिमें शीघ्र ही चिता बनाईगई, राजपूत वीरबाला अपने मृतक हुए स्वामीके शरीरको आलिंगन कर प्रसन्न मुखसे भयंकर चिताकी अग्निमें जा बैठी! राजपूत वीरबालाकी अपूर्व-

अत्यन्त भयंकर मानी जाती थी। इस रीतिका नाम जुहार है। यह जुहारकी रीति एक २ समयमें एकही २ हजारों राजपूत बालाओंको प्रज्वलित हुई चिताकी अग्निमें भस्म करदेती थी। मेवाड़के इतिहासमें कई स्थानोंमें हमारे पाठकोंने इस जुहारकी रीतिका वृत्तान्त पढा होगा। कर्नल टाड साहबके समयमें इस रीतिका प्रचार वहीं प्रबलतासे था; अंगरेजी राज्यके आगमनसे इस समय भारतके प्रत्येक प्रान्तमें शान्तिमति सती विराजमान होरही है। देशीय राजाओंमें परस्परके लडाई झगडोंका नाश जडसे होगया है, जिस कारणसे पहले जहर दियाजाता था इस समय वह कारण स्वयं ही दूर होगया है, इस रीतिका एक साथ लोप होते ही हम यहांपर इतिहासवेत्ता टाड साहबका अनुसरण करते हैं। महामाननीय टाड साहब लिखगये हैं कि "अन्यदेशोंकी स्त्रियोंके सन्मुख राजपूतोंकी स्त्रियोंका भाग्य अत्यन्त ही शोचनीय विदित होता है। जीवनके एक २ पगपर मानों उनके लिये मृत्यु मुंह फैलाये खडी रहती थी; सुकुमार अवस्थामें अफीमका सेवन और बड़े होनेपर प्रज्वलित हुई चिताकी अग्नि इन राजपूत वीरबालाओंके प्राण लेनेको तयार रहती थी; और यदि इन दोनोंके बीचमें जो कुछ उपद्रव होगया तो जहर देकर प्राण लेलिये जाते थे। सारांश यह है कि पग २ पर इनकी मृत्यु सामने खडी रहती थी; जिस समय राजपूतोंकी युद्धमें पराजय होगई अथवा अपना नगर शत्रुओंके अधिकारमें होगया तो राजपूत वीरबाला अपने सतीत्वकी रक्षाके लिये मृत्युका होना कल्याणकारक मानती थी। युरोपकी स्त्रियें युद्धमें विजित होनेपर जिसभांति निर्विघ्नतासे रहती हैं, एकमात्र ईसाई धर्मही इसका मूल कारण है। और मध्यकालकी कुलीन वीरबाला भी निस्संदेह अबलाओंकी निर्विघ्नतासे रहनेमें सहायता करती थी। परन्तु बडे आश्चर्यका विषय है कि जो सत्य राजपूत स्त्रियोंके सन्मानकी रक्षाके लिये इतना यत्न करते थे उन्होंने [illegible] इस रीतिको नियुक्त नहीं किया। जिससे युद्धके समयमें स्त्रियोंके ऊपर होते अत्याचार दूर होसके।"

समरभूमिमें मारेगये। मन्दौरपतिने देखा कि अब शत्रु मारागया तब महा आनंदित हो अपने नगरकी ओरको चले।

जब रणङ्गदेवके तनू और महीरनामके दोनों पुत्रोंने देखा कि मन्दोरके नृपतिने हमारे पिताको मारडालाहै इसलिये इसको इसका उचित दंड दियाजाय, ऐसा विचार कर दोनों भाई मन्दौरके अधीश्वरके नाश करनेका उपाय सोचनेलगे। जिस प्रकारसे भी हो चाहैं हमारा जातिधर्म भी चलाजाय परन्तु शत्रुसे बदला तो लेलिया जाय, सोचते २ शीघ्र ही एक उपाय दृष्टि आगया इसी समयमें दिल्लीके बादशाह खिजीरखाँ मुलतानको जारहेथे, उन दोनों वीर भाइयोंने उनके साथ मिलकर इसलामधर्मको स्वीकार किया, और उनसे अपने इस कार्यको पूर्ण करनेके लिये कहा, यवनके बादशाहने उन दोनों भाइयोंको भलीभाँतिसे विश्वास दिलादिया। यथासमयमें उन दोनों भाइयोंने अपने पिताके शत्रुसे बदला लेनेके लिये प्रगटरूपसे मुसलमानी धर्मका आश्रय ग्रहण किया, खिजीरखाँने मंदोरके अधीश्वरको दंड देनेके निमित्त अपनी बहुत सेना उन दोनों भाइयोंको देदी। मंदोरपति चंडने इसी समयमें महावीरता दिखाकर अपनी सेनाके बढ़ानेकी इच्छासे नगरके देशोंको अपने आधीनमें करलिया तनू और माहीर सम्राट् यही उपाय सोचरहेथे कि मन्दोरराजके ऊपर किस प्रकारसे चढ़ाई करैं, कि इसी समयमें जयशाल भी पतिके तीसरे कुमार कल्याणने आकर उनको धीरज दिया. राजकुमार कल्याणके परामर्शसे यह [illegible]श्चय हुआ कि गुप्त भावसे चक्रान्त जालका विस्तार कर भिन्न उपायोंसे [illegible]रपतिको उचित दंड देकर बदला लियाजाय। राजकुमार कल्याणने जयशालमीकी सीमामें स्थित निवासियोंके साथ सामन्तोंमें विवाद [illegible] अत्याचार उपद्रव, समरको एक वार ही गुप्त रखनेकी इच्छासे मंदोरराज चंडके पास यह प्रस्ताव भेजदिया कि, वह अपनी कन्याको चंडके साथ विवाह करनेमें राजी हैं। यदि इसमें चंड कुछ संदेह करें तो सामाजिक रीतिके विरुद्धमें और अपना अपमान मूलक होनेपर भी वह अपनी कन्याको नागर देशमें विवाहके निमित्त चंडके पास भेजनेको राजीहैं। मंदोरपति चंडने यही ठीक जानकर समाचार भेजदिया।

पांच सौ रथ शीघ्र ही सजाये गये, और चतुर कल्याणके प्रस्तावसे उनमें पात्री और उसकी सहेलियोंके बदलेमें पुगालके असीम साहसवाले वीर [illegible] किये गये रथके आगे बहुतसे घोडोंको लेकर राजपूत चले और सैकडों राज-

गये हैं. ' कि मनुकी आज्ञा है कि यदि कोई पुरुष पराई स्त्रीको भगिनी कहकर बुलावे, तब उसको, वृद्धको, पुरोहितको, राजाको और नवविवाहिता वधूको मार्ग छोड़देना होगा। और अतिथिसेवाकी प्रशंसनीय विधिसे उन्हें नियुक्त करदियाहै कि गर्भवती स्त्री, नवविवाहिता वधू और सुन्दरी युवती स्त्रीको अन्य अतिथियोंके पहले भोजन करावे।'' इस प्रकारकी अन्य विधियें भी भलीभांतिसे प्रकाशित होरहीहैं। एक समयमें स्त्रीजातिको इतना बंद करके नहीं रक्खाजाताथा: मुसलमानोंके प्रबल प्रतापके समयसे इस रीतिका प्रचार हुआहै, और हिन्दुओंने उनका अनुकरण कठोरतासे कियाहै। परंतु मनुके ग्रन्थोंमें ऐसी परस्परमें विवाद करनेवाली रीतियें अनेक दृष्टि आतीहैं कि जिनसे हम कहसकतेहैं कि वह समस्त रीतियें मानों एक शास्त्रकारकी बनाई हुई नहीं हैं, कारण कि इन रीतियोंमें स्त्रियोंके प्रति सन्मान और अवज्ञासूचक दोनों विधियोंकी व्यवस्था देखी जातीहै। मनुके निम्न लिखेहुए निम्नलिखित विधान अवश्य ही प्रशंसाके साथ ग्रहण किये जाते हैं. " पर्व और आनन्द उत्सवके समयमें स्त्रियोंको रत्नोंके आभूषण देने उचितहैं. कारण उसका यह है कि यदि भार्या सुन्दर वस्त्राभरणोंसे न सजाई जाय तो वह भर्त्ता स्वामीको प्रफुल्लित नहीं करती है. यदि स्त्रीको सुन्दर २ वस्त्राभरणोंसे सुसज्जित कियाजाय तो वह स्त्री पतिको अत्यंत प्रसन्न करती है।'' निम्नलिखित विधिसे मनुजीने स्त्रियोंकी सामर्थ्यमें निःसन्दिग्ध शक्ति स्वीकार की है. "स्त्रियें केवल इस जीवनमें अज्ञानी अथवा मूर्ख नहीं हैं, वह ऋषियोंको भी पुण्य मार्गसे हटाकर पापमें और डिगा सकती हैं।'' इसकारण सर्वश्रेष्ठ शास्त्रकारोंकी

के अनुष्ठान आदिमें उनका विक्रम, प्रताप उन स्त्रियोंके नेत्रोंके सन्मुख सुअवसर उपस्थित करदेता था राजपूत वीरबाला किसप्रकारकी वीरताकी पक्षपातिनी थी-उन्होंने वीरस्वामीके प्राप्तहोनेके निमित्त कहांतक गंभीर संकट और विपत्तियोंको निर्भय होकर सहन किया था, कर्मदेवीकी अतुलनीय लीलाने उसे भलीभाँतिसे चित्रित करदियाहै। मन्दोरके युवराजने आरण्य कमलके साथ कन्याके विवाहका सम्बन्ध जो स्थिर होगयाथा उसको दूर करके दूसरे पात्रको आत्मसमर्पणका विचार किया, इससे पिताके वंशका कुछ अनिष्ट नहीं होताथा, वरन् पतिके वंशकी अनिष्ट होनेकी पूर्ण संभावना थी, इसपर कर्मदेवीने किंचित् भी ध्यान न दिया।

महामाननीय टाड साहेब और भी कहगयेहैं, कि चिरकालसे हिन्दूजातिके इतिहासोंके प्रत्येक पत्रेमें राजपूतोंकी समाजके ऊपर स्त्रियोंके प्रभुत्व प्रबलता किसप्रकारसे उज्ज्वल अक्षरोंमें लिखीहै। महाराज रामचन्द्रने किस कारणसे युद्ध कियाथा?-एक मात्र सीताजीके सतीत्वकी रक्षा और उनके उद्धारहीके लिये तो कौरव और पांडवोंमें किसकारणसे भयंकर शत्रुता की अग्नि प्रज्वलित हुईथी?-एक मात्र द्रौपदीका अपमान ही उसका मूलकारण था। किस निमित्त राजा भर्तृहरिने अपना राजसिंहासन त्यागदिया था? केवल एक पिंगलाके ही वियोगसे, हिन्दू जाति किस निमित्त मुसलमानोंके विरोधमें एक मनुष्यकी समान खडीहुई थी। यवनोंके द्वारा कन्नौजकी सुन्दरी राजकुमारीके सतीत्वनाशके निमित्त ही उन्होंने भयंकर समरमें जीवनकी आहुति दे दी। विद्वान टाड साहब इस बातको फिर कहगयेहैं, कि हिंदूजातिके राज्य नाशका कारण एकमात्र स्त्रियोंके सन्मानका लोप होना था। उनमें प्रत्येक प्रधान २ काव्योंकी सृष्टिका मूल कारण भी स्त्रियें थीं, अत्यन्त प्राचीन कालसे अधिक क्या मध्यकालमें भी हिन्दूस्त्रियें अपनी इच्छासे ही मनमाने पतिको स्थिर करलेतीं थीं; और वीर तथा साहसी पात्रही उनके मनको हरण करनेमें समर्थ होते थे। सुन्दरी कृष्णाने अद्वितीय धनुष धारण करनेवाले अर्जुनको प्राप्त किया था-और वीरश्रेष्ठ धनंजयने सैकडों राजाओंके सन्मुख उनकी रक्षा अपने बाहुबलसे कीथी। कन्नौजके राजा जयचंदकी कन्या संयुक्ताने क्या कियाथा। भारतके प्रत्येक प्रान्तोंसे जो हजारों राजा आकर इकट्ठे हुए थे उनको न देखकर उसने यथार्थ वीरके सन्मानकी रक्षाके निमित्त द्वारपालक स्वरूपको धारण करनेवाले पिताके परम शत्रु भारतके सम्राट् पृथ्वीराजजीके गलेमें जयमाल डाली थी।

उदारचित्त टाड साहब हिन्दू स्त्रियोंकी शिक्षा और ज्ञान बुद्धिके सम्बन्धमें जो कुछ वर्णन करगये हैं "जो मनुष्य किसी समयमें भी गंगाजीके पार नहीं जासकते थे उनके द्वारा जो हिन्दू स्त्रियोंके चित्र अंकित हुए हैं, ऐसा देखा जाता है कि उनसे बहुतसे मनुष्योंके हृदयमें संदेह उत्पन्न हुआ है। इन हिन्दू जातिकी स्त्रियोंका वर्णन मोल ली हुई दासी कहकर कियाहै और सैकडों हजारों स्त्रियोंमेंसे एक भी ग्रन्थ नहीं पढ सकती थी। उनको ऐसा विश्वास था कि मैं उन सब भ्रमण करनेवालोंसे प्रश्न करूंगा कि उन्होंने "राजपूत" इस नामको सुना है या नहीं ? कारण कि राजपूत जातिकी नीच जातियोंके सामन्तोंकी कन्याओंमें भी ऐसी अल्प संख्यक है, कि जो लिखना पढ़ना नहीं जानती हैं अपने २ अप्राप्त व्यवहारी पुत्रोंको धन सम्पत्तिके अविभाविका पदपर नियुक्त हुई राजपूतजननीके साथ जो वार्तालाप किया है वह अवश्यही उन राजपूतोंकी स्त्रियोंकी बुद्धि और समाज तत्त्वके ज्ञानके सम्बन्धमें अपना मन्तव्य प्रकाश करेंगे ॥ यद्यपि भारतवर्षमें स्त्रियें राज्यशासनकी अधिकारिणी नहीं होतीथीं, परन्तु अपने २ पुत्रोंके अप्राप्त व्यवहारके समय प्रतिनिधिरूपसे राज्यशासनमें पूर्ण सामर्थ्य रखती थीं, अब भारतके इतिहासको पढ़नेसे इसी भांति असीम साहस और योग्यतायुक्त बहुतसी स्त्रियोंका शासन विवरण, उज्ज्वलतासे वर्णित हुआ है ।

महात्मा टाड साहबने इसी अभिप्रायसे कि राजपूतजातिके चरित्रोंके प्रधान २ लक्षण और उनके गुणोंकी विलक्षणता हमारे पाठकगणोंको भलीभांतिसे दृष्टि आजाय, इसी कारणसे उनका वर्णन करना आवश्यक विचारा.इस वर्णन लिखेहुए

विस्तार नहीं करतीथीं ? कौन कहसकताहै कि वीरसमाज राजपूतोंकी स्त्रियोंके निकट कृतज्ञताके ऋणसे नहीं बँधीथीं ?

राजपूतोंकी स्त्री-हिन्दूस्त्रियोंके सम्बन्धमें एक विजातीय मनुष्यके कथनका हमने वर्णन किया । जो अन्तःपुरकी रीतिसे भयंकर विरोध करनेवाले हैं जो हिन्दूस्त्रियोंको कारागारमें रहनेवाली जानतेहैं–जो इनको मोल लीहुई दासीकी समान जानते हैं । कर्नेल टाड साहबका कथन उनको सावधान करदेगा हम गर्व्व गौरव और साहसके साथ सभ्यजगत्के सन्मुख कहतेहैं कि हिन्दूरमणी राजपूतरमणियोंकी भाँति साध्वी सती पतिव्रता वीरमाता संसारकी किसी जातिमें आज लों नहीं जन्मीहैं । पश्चिमी जगत् आज नयी सभ्यताके प्रभावसे उन्नतिके शिखरपर विराजमान रमणीमंडलीको पूर्णरूपसे स्वाधीनता देरहाहै, किन्तु हम पतित अशिक्षित-खरीदेहुए दास हिन्दूजाति आज इस अपनी जातिको ऐसी शोचनीय अवस्थामें कहसक्तेहैं कि पश्चिमी विदुषी और सभ्यता युक्त रमणीके साथ अन्तःपुरमें रहनेवाली हिन्दूरमणीकी तुलना करो, प्रत्येक कार्यमें प्रत्येक विषयमें न्यायी और सच्चे विचार करनेवालेको यही कहना पडेगा कि यदि सती रमणी हुईहै तो वहीं हिन्दुओंके अन्तःपुरमें. यदि वीरजननी हुईहैं तो वहीं राजपूतोंके अन्तःपुरमें, वर्तमान समयके अंगरेज विद्वान् मनियर विलियम देखो क्या कहतेहैं ? संस्कृतशास्त्रके ज्ञाता प्रसिद्ध विद्वान् मोक्षमूलर बिजलीकी समान कड़ककर विलायतमें क्या कहतेहैं ? हिन्दू समाजके तत्त्वको देखनेवाले टाड साहबकी समान वह एक स्वर होकर कहतेहैं, हिन्दू रमणी जगतमें अतुलनीय हैं, प्राचीन मिश्र, ग्रीक, रोम और आधुनिक ग्रेट ब्रिटेनिया, फ्रान्स. जर्म्मन, आस्ट्रेलिया, स्पेन और नयी दुनियाँ अमेरीकाके इतिहासके पत्र २ और पंक्ति २ में दृष्टि डालकर देखो, देवलदेवीकी समान कितनी वीरमाता दीख पड़ेंगी ? सतीत्वकी रक्षाके लिये किस रानीने गन्नौरकी राजभामिनीकी समान चित्तौरकी राजसती पद्मिनीकी समान किशोर अवस्थामें अपने जीवनको विसर्जन कियाहै ? यूरोपमें सैकडों वीर भार्या दृष्टि आतीहैं, किन्तु कर्म्मदेवीकी समान किस वीरपत्नीने पतिके गौरव और मानकी रक्षाके लिये प्राणदानको समरभूमिमें जानेको उत्साहित कियाहै ? किस यूरोपकी वीरनारीने संयुक्ताकी समान अपने पतिको रणके भेषमें सजाकर साहसके साथ युद्धक्षेत्रमें जानेको शीघ्रता कीहै ? कौन यूरोपकी कुमारी अपने पतिको रणके सन्मान, अपनी जातिके गौरव अपने और अपने देशकी भलाईके लिये कृष्णकुमारीकी समान

इतिहासवेत्ता टाड साहबने राजपूतोंके और भी दो एक चरित्रोंका वर्णन करके इस प्रसंगको समाप्त कियाहै। इनकी उक्तिसे प्रकाशित होताहै, कि मुसलमानोंके आदि पुरुष बाबरके द्वारा भारतवर्षमें सबसे पहले अंगूर आयेथे। और उनके पोते जहांगीरने तमाखूकी रीति चलाईथी, भारतवर्षमें सबसे पहले किसी समय अफीमका सेवन भी आरंभ हुआ था, टाड साहब इस बातको कहगयेहैं कि इसको मैं नहीं जानसका। विशेष करके चंदकविने अपने काव्यमें कहीं भी इसका उल्लेख नहीं किया। उनका यह मत है कि अफीमने राजपूत जातिके बहुतसे उपकारी गुणोंको एक बारही विनष्ट करदिया था। स्वाभाविक वीरताके स्थानपर उन्मत्तता करता और मुखमंडलमें ज्ञानके प्रकाशकी सभाके स्थानपर दुर्बलताने सशंकित करदियाहै समस्त मादक द्रव्योंकी समान इस अफीमका फल क्षणिक इंद्रजालकी समान है; परन्तु इसकी प्रतिक्रिया भी कुछ अल्प नहीं है। शरीर और मनके प्रति इस मादक द्रव्यकी अनिष्ट करनेवाली शक्ति भलीभांतिसे सर्वदा प्रकाश पातीहै। यद्यपि राजपूत जाति " माधवा या पाला " अर्थात मत्तताको देनेवाले द्रव्यके पूर्ण पात्रका व्यवहार बहुत दिनोंसे था, परन्तु इस समय जिस प्रकार जलमें मिलाकर अफीमको सेवन करतेथे, अत्यन्त प्राचीन कालके किसी काव्यके ग्रन्थमें भी इस प्रकारसे अफीमके सेवनका वृत्तांत दृष्टि नहीं आया। पुष्प, मूल और सम्भवतः युक्त पानी यद्यपि इस समय आर्यस्त्रियोंमें दियाजाताहै। परन्तु अफीमके सारका पानी सुरारूपसे व्यवहार करते देखाजाताहै। सबजने एक साथ अफीमको सेवन करतेथे, राजपूतजातिमें यह साधारणसे स्वर्गीय मित्रताका प्रमाणस्वरूप था। राजपूत इस प्रकारसे परस्परमें एक साथ बैठकर अफीमका सेवन करने

पचीसवां अध्याय २५.

सतीदाह;—शिशुकन्याकी हत्या;—जुहारकी रीति;—राजपूतोंके चरित्रोंका संक्षिप्त विवरण;—शिकार खेलना—व्यायाम क्रीडा;—युद्धशाला;—गानाबजाना;—महाराज शिवधनसिंह;—राजपूतोंकी शिक्षा;—घरका सजाना और वेष।

माननीय टाड साहेब इस अध्यायमें राजपूतोंके चरित्रका एक दृश्य अङ्कित करतेहैं। एक समयमें हिमालयसे कन्या कुमारी तक और अरबके उपसागरसे ब्रह्मपुत्र तक हिन्दूजातिमात्रके बीचमें सतीदाहकी रीति प्रचलित थी, इसमें कहना केवल बाहुल्यमात्र है। राजपूतजातिमें जो सतीदाहकी रीति प्रचलित थी उसके सम्बन्धमें महामाननीय टाड साहबने उस रीतिके जातीय धर्मविधानकी अथवा दाम्पत्यप्रणयसूत्रकी सृष्टि हुईहै या नहीं पहिले उसीकी समालोचना कीहै। सतीदाहके सम्बन्धमें उनका पहला कहना यह है कि जिन धर्मग्रन्थोंमें इस रीतिकी प्रथम घटना दिखाई पड़ीहै। सतीका आदर्श सबसे पहले उन्ही धर्मग्रन्थोंमें विद्यमान है। इनमें राजा दक्षप्रजापतिकी कन्या सती ही प्रधान आदर्शके स्थानपर थीं। राजा दक्षने अपने महायज्ञमें चारों लोकके निवासियोंको निमंत्रण देकर बुलाया। परन्तु अपने जामाता शिवजी महाराजको किसी प्रकार भी निमंत्रण देनेसे उनकी सम्मति नहीं हुई। सतीने सुना कि मेरे पिताने बड़ा भारी यज्ञ कियाहै और मुझे निमंत्रण भी नहीं दिया. यह विचारकर बिना ही बुलाये यज्ञके देखनेके लिये इकली ही अपने पिताके घरको चलीगई। राजा दक्षने उस बड़ी सभामें क्रोधित होकर महादेवजीकी अत्यन्त निन्दाकी: सतीने उन प्राणपतिकी निन्दाको सहन करनेमें असमर्थ हो अपना प्राण उसी समय त्याग दिया। फिर उन्हीं सतीने राजा हिमालयके यहां जाकर जन्मलिया: फिर शिवजीके साथ उनका सम्मिलन हुआ। साधु

लोग आगेको अनिष्ट करनेवाली इस अफीमका सेवन नहीं करें। इसी कारणसे ऐसे बहुतसे राजपूत हैं कि जिनको आजतक अफीमका स्वाद विदित नहीं हुआ। कर्नेल टाड साहबका अंतिम कहना यह है कि " जो मनुष्य इस कुरीतिको दूर करनेकरेंगे वही राजपूत जातिमें सबसे श्रेष्ठ बंधु गिनेजावेंगे: इन्द्रप्रस्थका पर्वत अनेक प्रकारके रंगबिरंगे सुगंधित फूलोंसे बगीचास्वरूप था। नीलनदीके किनारेवाले देशोंमें इनके शिखरपर जिस प्रकारका राजमुकुट शोभायमान था, हिन्दुस्थानकी राजलक्ष्मी इसकी अपेक्षा अनेक प्रकार रंगोंसे मुकुटको इस स्थानपर पासकती थी।"

बहुत दूरके निवासी चैनय लोग भी भारतकी अफीमको सेवन करके निकम्मे होजातेथे। बहुत वर्षोंसे भारतवर्षमें गवर्नमेन्ट भी इसका वाणिज्य करनेके लिये महाआन्दोलन मचारहीहै और शोध किरीटानी इंगलैण्डके अनेक उदारनीति अंग्रेज समाजमें बैठकर भारतवर्षीय गवर्नमेन्टको इस अपकार करनेवाली अफीमके प्रबल वाणिज्यको रोकनेके लिये बड़ी २ सभाएं होरहीहैं और पार्लिमेन्ट भी घोर आन्दोलन मचारहीहै, परन्तु भारतवर्षमें राजपूत वीरोंके वंशधर इस हालाहलस्वरूप अफीमका सेवन करके कर्महीन होगयेहैं, इस विषयमें आज तक भी किसीने दृष्टि नहीं डाली! इस बातको कौन नहीं कहेगा कि

केवल कंदमूल ही खाकर बितादे और अपने स्वामीके परलोक जानेपर भ्रमसे भी वह दूसरे पुरुषका नाम न ले।' * उनका दूसरा विधान यह है— "पतिके परलोक जानेपर जो साध्वी रमणी पवित्र होकर रहती और धर्म्मका आचरण करतीहै अन्तमें उसको स्वर्ग प्राप्त होताहै, किन्तु जो विधवा स्त्री फिर विवाह करके अपने मृतक पतिकी अवज्ञा करतीहै, इस लोकमें वह अपनेको कलुषित कर अन्तमें अपने पतिके निकट स्थानसे वंचित रहतीहै।" ×

टाड साहबका कथन है कि हिन्दू समाजके प्रधान शास्त्रकार विधवाओंके पवित्र आचरण, शुद्धतासे रहना, संसारके सुखकी इच्छाओंको त्यागना— इत्यादि नियमोंके संबंधमें ऐसे अनेक विधान करके इस जगत्में यश और परलोकमें पतिके साथ स्थान पानेकी आशा दिलागये हैं किन्तु किसी विधिमें वैसी कठोर सहमरणकी रीतिकी व्यवस्था नहीं दीहै। इस सहमरणकी रीतिके संबंधमें कर्नल टाडने अंतमें कहाहै कि इस संबंधमें पंडित मंडलीने इतना लिखाहै कि उसमें हमें अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं है।

सहमरणके संबंधमें हमने ऊपर जो टाड साहबका मत प्रकाश कियाहै उसका अधिकांश ही समर्थन करनेयोग्य है। हमारे प्रधान शास्त्रकार मनुने सतीको जीतेहुए ही चिताकी प्रज्वलित अग्निमें जलनेकी व्यवस्था नहीं दी है किन्तु परिवर्तन समयके केवल व्यासहीने नहीं अन्यान्य शास्त्रकारोंने भी इस प्रथाका बडा समर्थन कियाहै। हमारा कथन है कि विना कारणके कोई कार्य नहीं हुआ करताहै। हमारा विश्वास है कि मनुके समयमें सहमरणकी आवश्यकता नहीं थी, इसीसे उन्होंने व्यवस्था नहीं दीहै। परिवर्तनशील समयके अनुसार अवश्य ही कोई बडा कारण उपस्थित होजानेपर और और शास्त्रकारोंने सती दाहकी रीति चलाई है। शास्त्रकार कभी ऐसे नरपिशाच नहीं थे, जो बलपूर्वक विना कारणसे विधवाओंको जलती चिताकी अग्निमें भस्मीभूत करदेते।

---

* मनु०—कामं तु क्षपयेद्देहं कन्दमूलफलैः शुभैः। न तु नामापि गृह्णीयात्पत्यौ प्रेते परस्य तु॥ मनु. अ. ५ श्लो. १६० । १६१ देखो।

× टाड साहबके समयसे केवल राजवाडेहीमें नहीं वरन् [illegible] रीतिका प्रचार था. वह ठीकही लिखते हैं कि इस रीतिके [illegible]। उन्होंने लिखाहै कि जहांगीरने अपने राज्यकालमें यह आज्ञा दीथी कि जिस हिन्दुनारीके [illegible] वह कभी अपनी इच्छानुसार [illegible] पतिके साथ नहीं [illegible]. कुछ [illegible] ने [illegible] एक साथ इस [illegible] । [illegible] रीति भारतमें एक साथ ही उठगई है।

उदय न हो जिससे बालकपनमें ही वीरतामें साहस उत्पन्न हो [illegible]
राजपूतोंके छोटे २ बालक खेलकूदके समयमें छोटी २ [illegible]
ले बकरे और सपशावकोंके शिरको काटाकरतेथे उनके माता [illegible]
ही ऐसी शिक्षा देतेथे। जिस दिन राजपूतोंके बालक सबसे पहले अ[illegible]
लकी परीक्षाके निमित्त अस्त्र चलाकर हरिणआदिका शिकार करतेथे
तिस उनके कुटम्बके मनुष्य उनको अभिनंदन करके महाआनंदसे उ[illegible]
होजातेथे। * महामाननीय टाड साहब कहगये हैं कि इस प्रकारसे राजपूतों
बालक वीरधर्ममें दीक्षित हो साहस, शूरता और वीरताके अभ्यासमें निपुण
होजातेथे। राजपूतोंका आनंद उत्सव ही मनरंजक था, जातीय नृत्य और
वीरत्वताका प्रकाशक संगीत उनको अधिक साहसी और प्रबल विक्रमशाली
करदेता था. कसरत करनेवालोंकी कुस्तीको देखकर राजपूत अत्यन्त आनंदित
होकर समय व्यतीत करतेथे। राजवाडेके प्रत्येक राजा कितने ही बलवान
कसरतमें चतुर कुस्तीकरनेवालोंका पालन करतेथे। प्रसिद्ध २ कुस्ती करनेवाले
मनुष्य भिन्नराज्यमें विख्यात कुस्तीकरनेवालोंको अपनी योग्यता दिखानेके
निमित्त बुलानेमें भी त्रुटी नहीं करतेथे। इसी भांति प्रतियोगिताके दिखानेमें
असंख्यों राजपूत उनके घर जाकर जेताको उत्साहित करतेथे।

प्रत्येक सामन्तकाही एक २ अस्त्रागार स्थापित है और हर एक सामंत
प्रतिदिन वहां जाकर अपने अस्त्रोंकी परीक्षा करते हुए नियमके अनुसार कुछ
समय उस स्थानपर रहतेहैं। तलवार, बंदूक, बरछा, छूरी और धनुष–आदि अनेक
प्रकार अपने प्रिय अस्त्रोंका राजपूतोंने एक २ नाम धरा है। अस्त्रागारका स्वामी
राजपूतोंका बडा विश्वासी होताहै। अस्त्र जैसे सुन्दर मनको हरनेवाले होते हैं
वैसे ही वह बडे मूल्यके भी होतेहैं। सब प्रकारकी तलवारोंमें "सिरोही" नामकी
तलवार सब राजपूतानेमें सबसे अच्छी समझीजातीहै, दोनों ओर धारवाली ([illegible])
और बडी तलवार भी उनको विशेष प्रिय है। लाहौर और राजवाडेमें अनेक
प्रकारकी बंदूक बर्छी इत्यादि बनती और मुक्ता तथा सुवर्णसे खचित होकर
सुशोभित होजातीहै। पूर्वोक्त बन्दूक सब स्थानोंकी बन्दूकोंसे श्रेष्ठ होतीहै।

तासे बढादियाहै। राजपूतोंमें अपनी शाखा और अपने गोत्रमें विवाह किसी प्रकारसे नहीं कियाजाता—यद्यपि बहुतसी शताब्दी बीत गई हैं वह लोग परस्परमें छिन्नभिन्न होगये हैं। यद्यपि वह छिन्नभिन्न शाखा भिन्न स्थानपर स्थापितहै और इसीसे उनके आदि पुरुषोंका नाम तक भी लोप होगयाहै तथापि वह लोग किसी प्रकारसे भी आदिके वंशके साथ विवाहका संबन्ध नहीं करसकते। इसका प्रमाण यह है कि यद्यपि आठसौ वर्ष बीत गयेहैं गिल्लोटियोंकी दोनों प्रधान उपशाखा छिन्नभिन्न हो गईहैं। कनिष्ठ शाखासे उत्पन्नहुए शिशोदीयगणने, ज्येष्ठशाखासे उत्पन्नहुए आहारियादियोंके ऊपर मस्तक उठायाहै, दोनों शाखाओंसे दो भिन्न देश शासित होरहेहैं, तथापि दोनों शाखाओंमें कोई विवाहका कार्य नहीं हुआ; वह इसको व्यभिचारस्वरूप मानतेहैं। शिशोदीयगणोंका आजतक आहारियादियोंके साथ भ्रातृसम्बन्ध है और दोनोंजने दोनोंकी शाखाओंकी स्त्रियोंकी भगिनीके समान जानतेहैं, इसी कारणसे ही प्रत्येक राजपूत अपनी२ कन्याओंके लिये भिन्न गोत्रमें सुयोग्य पात्रकी खोज करतेथे। विदेशिक समर,आतमविग्रह इत्यादि शोचनीय घटनाओंसे भिन्न गोत्रको और भी अधिक दूर स्थित करदेते थे. यदि मारवाडमें किसी कारणसे दुर्भिक्ष हो जाता तो उस कारणसे जिस भाँति वहांके पुरुषोंकी संख्या घटती जाती थी उनके साथही साथ अम्बेर राज्यकी स्त्रियोंकी भी संख्या घटती जाती थी; इस भाँति दोनों राज्योंमें बराबर दुगनी हानि पहुँचती थी।"

यद्यपि अंग्रेजी राज्यमें यह हृदयको विदीर्ण करनेवाली रीति लोप होगईहै, तथापि इससे प्रथम इस शोचनीय रीतिको दूर करनेके निमित्त राजपूतगण स्वतःही सावधान होगयेथे या नहीं। महात्मा टाड साहबके निम्नलिखित मन्तव्योंको पढनेसे इस बातको भलीभाँतिसे जान सकोगे कि "जिस कुरीतिको दूर करनेमें पितातककी सहानुभूति स्वतः ही उद्वेजित होगई थी। अनेक राजाओंने इस शोचनीय रीतिको दूर करनेके लिये विशेष यत्न कियाथा। अम्बेरके विख्यात् राजा जयसिंहने जो प्रस्ताव कियाथा, उसके द्वारा जितना भी कुछ होसका था, सावधानताके साथ यदि उसका अनुसरण कियाजाता तो उसके सफल होनेकी पूरी संभावना थी उन्होंने प्रत्येक राजपूतोंके अधिनायकके सन्मुख जो प्रस्ताव उपस्थित किया था. उसको प्रत्येक राजा अपने २ सामन्तोंके सन्मुख उपस्थित करें। इससे वह ऐसा नियम करेंगे कि जितने विवाहके सम्बन्ध और उस सम्बन्धके अन्य विषयोंमें कोई सामन्त भी अपनी२एक वर्षकी आमदनीसे अधिक खर्च नहीं करसके। जब यह

खिल होती थीं तभी चन्द्रदेवकी निर्मल चांदनीमें सुन्दर बिछेहुए बड़े गलीचोंपर बैठनेसे स्वच्छ जलवाले सरोवरके जलसे शीतल हुआ पवन दिनके प्रचंड सूर्यके तापसे तप्त शरीरोंको शीतल करदेताथा। इसी अवसरपर उनका प्रेम, व्यंग और वीररससे युक्त संगीत हम सबको उन्मत्त करदेताथा। ऐसे गानेकी सभाओंमें सर्दार लोग मुझे भी बुलातेथे। पुत्रोत्सव और विवाहोत्सवमें विशेष करके प्रधान २ कवि और गानेबजानेवाले और २ देशोंसे आते जातेथे।

महाराज शिवधनसिंहके संबंधमें कर्नल टाडने पीछेसे कहा है कि यूरोपके टेलकी समान वह अपनी सन्तानके शिरपर एक द्रव्य रखकर बंदूककी गोलीसे उड़ादेतेथे लेकिन संतानके शिरमें कोई कष्टका अनुभव नहीं होताथा। परवाले उड़तेहुए पक्षीको वह गोलीसे मार गिरातेथे और सामनेसे आतीहुई बंदूककी गोलीके छूरीसे दो टुकड़े करदेतेथे। जब इन बातोंमें कोई अविश्वास करता तो वह सत्य दिखानेके लिये किसी दिनको नियत करदेते और उस दिन उससे पहले यही कहते कि सामनेसे तुम बंदूकमें गोली भरकर मेरे ऊपर छोड़दो और आतीहुई गोलीको छूरीसे दो टुकड़े करडालते ऐसे ही वे अनेक विचित्र चरित्र दिखाया करतेथे। एक दिन उन्होंने एक मिट्टीकी हांडीमें जल भरकर छूरी रक्खी और बंदूककी गोली दूसरेसे भराकर अपने हाथमें ले बीस कदम हांडीसे दूर खड़े होकर कहा कि मैं इस गोलीसे हांडीमें स्थित छूरीके दो टुकड़े करताहूं यह कहकर गोली छोड़ी मैंने स्वयं जाकर

है. परन्तु वंशका गौरव और अपने सन्मानकी आजतक अचलभावसे रक्षा की जा रहीहै। अंग्रेजी ऊँची शिक्षा और कुलीनताकी रीति जिस भाँति बंगाल देशमें विवाहके समयमें अधिक धनव्ययकी रीति भयंकरतासे बढ गई है, उसी भाँति अनेक माता पिता कन्याके विवाहमें अपना सब धन खर्च कर निर्धन होगये हैं राजपूतोंकी समाजमें भी आजतक इसी प्रकारके दृश्य दृष्टि आतेहैं। भारतवर्षमें हमने राजपूत जातिकी समान वंशकी मर्यादा और अपने गौरवकी रक्षा करनेवाली दूसरी जातिको नहीं देखा। राजपूत-जाति अपने वंशकी मर्यादा और गौरवकी रक्षा करनेमें अपने प्राणतक भी देनेमें भयभीत नहीं होती; वह जाति केवल इसीकारणसे धनके न होनेपर कन्याको उत्पन्न होतेही मारडालती थी, यह क्या आश्चर्यका विषय नहींहै।प्रत्येक राजपूत ही पिशाचकी समान आचरण करके कन्याको जन्मते ही मारडालते थे, हमारे पाठकगण इस बातका विश्वास न करें कि राजपूत समाजमें ही यह कुरीति प्रचलित थी. जो लोग उनको वनैला वर्वर मानते हैं हमें केवल उन्हींसे कहना है कि उन्होंने क्या सभ्य यूरोप और अमेरिकाखंडमें 'रोमन-क्याथलीक' सम्प्रदा-यकी गुप्त धर्मशालाओंके इतिहासको नहीं पढाहै ? कर्नेल टाड साहब इस बातको स्वयं कहगयेहैं क्या वह इस बातको नहीं जानतेथे ? साधु सम्प्रिय टाड साहबकी आत्मा इस समय स्वर्गमें विराजमान हैः परन्तु उनकी इच्छासे राजवाडेसे–और उस वन्य वर्वर राजपूत समाजसे उस तुरन्तकी जन्मी कन्या-की हत्याकी रीति तो दूर होगई परन्तु यूरोप और अमेरिकामें आजतक इस उन्नीसवीं शताब्दीके प्रबल शासनसे उस सभ्यताके पूर्ण पदपर पहुंचे हुए रोमनक्याथलिककी गुप्त धर्मशालामें सैकडों हजारों स्त्रियें मानो महा अप-राधिनीकी समान जन्मभरके लिये नरककी पीडाको भोग रहीहैं ! राजपूतोंकी कन्याके हत्याकी रीतिके साथ इस सभ्यसमाजमें यदि उन निरपराधिनी कुमारि-योंके कारावासकी बराबरी कीजाय तो सत्यता और न्यायके साथ किस जातिको "वन्य और वर्वर" की उपाधिसे भूषित करनेके लिये आगे बढना होगा ? पश्चिमकी सम्पूर्ण धर्मशालाओंमें आजतक क्या यह भयंकर लोमहर्षण करनेवाला कार्य नहीं होताहैः "मेरियामंक" नामक ग्रंथको पढकर पाठक-गण इसके अभिप्रायको भलीभाँतिसे समझ जायगे।

इस समय हम और एक दूर कोहुई रीतिका वर्णन करनेमें प्रवृत्त हुए हैं ! सतीका दाह और कन्याहत्याकी रीतिके समान वह रीति अन्य जातियोंमें

नाम "मेरक" था। दोमुखवाली वंशी भी राजस्थानमें बजाई जातीथी। अनेक भांतिके बाजोंको पढ़कर इनको निरस विचार महात्मा टाड साहबने इन्होंने इनका विशेष वर्णन नहीं कियाहै।

राजपूतोंके बंधु इस स्थानपर राजपूत राजाओंकी विद्याशिक्षाके विषयमें उल्लेख करके कहगयेहैं, दानपत्र वा "रिकड्याली" का कारण स्वीकारपत्रके पढ़नेमें किसी प्रकार भी चतुर नहीं है, राजाओंमें ऐसा कोई भी नहीं है और इंग्लैण्डके महान कुलीन वंशधरगण जिस प्रकारसे पत्रिक जानके अधिकारी कहा कर गर्वित थे और फिर वह अपनी प्रधानता स्वाधीनताके सानन्दमें पत्रपर अपने नामके हस्ताक्षर तक भी नहीं करसकतेथे राजपूत राजा वा सामन्तोंमें इस प्रकारके मूर्ख और गर्वित आजतक कहीं दिखाई नहीं पड़े। इसलिये चन्दा-नेमें उदयपुरके महाराणामें असीम शक्ति थी, उनके लिखेहुए पत्रोंकी अत्यन्त प्रशंसा होतीथी। परन्तु दूसरे इंग्लैण्डेश्वरके प्रति जैसी उक्तिका प्रयोग कियाथा राणाके सम्बन्धमें भी हम उसी प्रकार करसकते हैं,- 'उन्होंने कभी मनोहर' सूचक पत्र नहीं लिखा, वरन् वह विद्वत्ताका प्रकाश करनेवाला पत्र लिखतेथे।' राजस्थानके राजा और सामन्तोंने आत्मीयताकी सूचनाकरनेवाले जो पत्र लिखे थे। उनसे उनके मनकी वृत्ति अत्यन्त ऊंची पाईजातीहै। इन समस्त पत्रोंमें प्राचीनग्रन्थोंसे उपमा उद्धृत कीगई, और अनेक प्रकारके नाटिकोंका ज्ञान भी

वहुतसे प्रमाण उद्धृत कियेहैं "श्रीशिरकी माताने झरोखेमेंसे ऊँचे स्वरसे पूछा कि, तुम्हारा पुत्र रथचक्र इस समय क्यों मौन होरहाहै ?– क्या उससे चला नहीं जाताहै, क्या वह प्रत्येक करके एक दो स्त्रीको नहीं भोग सकता ?" इससे प्रकाशित होताहै कि श्रीशिर अपने दलके साथ भिन्न देशोंको लूटकर धन और रत्नोंके साथमें वहुत सी स्त्रियोंको भी लाये थे। उनके सेवकोंने उन स्त्रियोंका वॉट करलिया है या नहीं, राजपूतमाताने यह प्रश्न किया।

युद्धमें बंदिनी होनेवाली स्त्रियोंके सम्वन्धमें जिस प्रकारकी विधिका वर्णन मनुजी करगयेहैं, यहूदियोंके सम्वन्धमें इस विधिका प्रचार उसी प्रकार था। दोनोंहीका यह विचार था कि ऐसी बंदनी स्त्रियें, "विधिसंगत पुरस्कार" स्वरूप थीं, और मनु और मोजिसने उन बंदिनी स्त्रियोंकी बंदीकारकोंके साथ भी विवाहकी व्यवस्था भी नियत करदी थी। मनुकी उक्ति है कि "किसी युवतीका प्रणयपात्र यदि युवतीके कुटुम्बके मनुष्यको युद्धमें पराजित करके अपनी प्रणयिनीका उद्धार करले तो दोनोंका विवाह विधिसंगत है।" हिन्दूशास्त्रके मतसे अधम विवाह राक्षसविवाहहै। "यदि कोई मनुष्य वल करके किसी युवतीको हरण करनेके लिये उद्यत हो, और उस स्त्रीके चिल्लानेसे उसके कुटुम्वी लोग आकर उसके उद्धारके लिये उस मनुष्यके द्वारा एक २ करके मारेजॉय, और वह मनुष्य उस स्त्रीको वल करके लेजाय तो उस विवाहको राक्षसविवाह कहतेहैं।" स्ववंश और स्वजातिके गौरवका नाश करनेवाले, अपने परिवारकी स्त्रियोंके कुलका सतीत्व लोप करनेवालोंने इस घटनाको दूर करनेके लिये असीम साहसी राजपूतजातिकी यह रीति अर्थात् शत्रुओंसे स्वपरिवारके स्त्रियोंके सतीत्वके नाशकी अपेक्षा उनके सतीत्व और सन्मानकी रक्षाके लिये एक साथ जीवनके नाशकी रीति नियत कररक्खीथी।

महामाननीय टाड साहव कहगयेहैं, कि "राजवाडेकी स्त्रियें जैसी शिक्षित थीं उससे वह कलंकिनी होनेकी अपेक्षा आनंदके साथ उस प्रकारके उपायोंसे सतीत्वके सन्मानकी रक्षा करती थीं। ऐसा कौनसा राजपूत था कि जिसको ऐसी घटनाके उत्पन्न होनेकी अभिलाषा न हुई हो ? विधवा शब्द ही तिरस्कारका कारण समझा जाताथा।" × अंतमें इतिहासवेत्ता इस बातको लिख-

---

× महात्मा टाड साहब इस स्थानपर लिखगयेहैं कि जिस समयमें सुलतान [illegible] जाकर राजवाडेके अपरिचित स्थानोंमें [illegible] उस समय उसके [illegible] भिन्न [illegible] सैनिकने [illegible] होनेके लिये [illegible] होकर [illegible] एक [illegible] '[illegible]' [illegible]-

राजस्थानके राजपूत राजा, राजपूत सामन्त, राजपूत राजकर्मचारी और राजपूत सामर्थ्यशाली मनुष्योंमें विलायती शिक्षाकी ज्योति धीरे २ प्रवेश करहीहै। इस समय अंगरेजी भाषामें बहुतोंको अधिकार होगयाहै। प्रत्येक व्यवहारको न जाननेवाले अनेक राजा भारतके अन्य प्रान्तोंके राजाओंकी समान अंगरेजी पढनेके लिये देशी वा अंगरेजी शिक्षकोंके आधीनमें रहतेहैं। और बडे सामन्तोंके पुत्रोंकी विद्या शिक्षाके लिये स्थान २ पर अनेक कालेज बनगये हैं। राजपूतोंके महान परिवारके पुत्र जिससे भलीभांतिसे अंगरेजी भाषा पढसकें इस विषयमें अंगरेजोंकी अधिक दृष्टि है, इस बातको माननेके लिये हम सदा तयार रहतेहैं, परन्तु हम इतना तो कहे देतेहैं कि राजवाडेमें मध्यश्रेणी अथवा नीची श्रेणीके मनुष्योंकी शिक्षाके लिये आज तक उपयुक्त प्रयोजनोंकी खोज नहीं की जातीहै यद्यपि शिक्षित देशके राजा अपने २ राज्यमें लोकशिक्षाको प्रचलित करनेके लिये तयार रहतेहैं, तथापि हमें ऐसा विश्वास है कि गवर्नमेन्ट वा असीम सामर्थ्य-वाले अंगरेजोंके रेसिडेन्ट गणके इस विषयमें राजपूतोंकी सहायताके बिना किसे आशाके पूर्ण होनेकी संभावना अत्यन्त कठिन है। समयके गुणसे देशके भूपाल इस समय अंगरेजोंके रेसिडेन्टके हाथकी पुतलीस्वरूप हैं। इस कारण महात्मा टाडकी समान कितने ही उदार हृदय रेसिडेन्ट वा पोलिटिकेल एजन्टोंका भारतवर्षमें बिना प्रादुर्भाव हुए राजवाडेमें सर्वसाधारणमें यथार्थ लोकशिक्षाकी आशा नहीं की जा सकती।

उक्तिके मतसे जाना जाताहै कि यद्यपि हिन्दू स्त्रियें इस भावसे अंतःपुरमें रक्खी जातीहैं परंतु उसको प्रगटमें समाजके सन्मुख प्रकाश किया जाय तो उस समाजके ऊपर जिस भाँतिसे अपनी प्रबल सामर्थ्यका विस्तार करतीं, उसकी अपेक्षा किंचित् सामर्थ्य भी विस्तार नहीं कर सकतीं। "

विषप्रयोगकी रीतिके विषयमें महात्मा टाड साहब एक कथा लिखगये हैं; उनको बहुतसे अंशोंको हम प्रसन्न हृदयसे समर्थन करनेको तैयार हैं। तब हमको केवल इतना ही कहना है कि हिन्दूजाति अपने प्राण, स्वाधीनता और जन्मभूमिकी अपेक्षा स्त्री, भगिनी और कन्याओंके सतीत्वकी रक्षाके सब अंशोंमें भलीभाँतिसे शिक्षित थी। शत्रु स्वजातिके आर्यरुधिरके धारणसे और बर्बर म्लेच्छ यवनोंसे उनके संमुख परास्त होनेपर भी अपनी स्त्री, बहन और कन्याओंको वह कुलकलंकिनी तथा सतीत्वसे भ्रष्ट नहीं होने देते थे—हिंदुओंका अंतःकरणसे यही अभिप्राय था। प्राचीन हिंदूजातिने परास्त होकर शत्रुओंकी कन्या और उनकी स्त्रियोंके हरण करनेकी रीतिको दूर नहीं किया; इसी कारणसे पंडितश्रेष्ठ टाड साहब अत्यंत दुःखप्रकाश करगये हैं. इस बातको हम कहसकते हैं कि किसी विषेशकारणसे ही इस रीतिकी सृष्टि नहीं हुई। एक समय हिंदू जातिमें भारतके बीच पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंकी संख्या अधिक थी उसकारणसेही उनके विवाह की असंभवता जानकर हरण कीहुई स्त्रियोंके साथ विवाहका सम्बन्ध नियत हुआहै। दुराचारी यवनोंकी समान हिन्दूजातिने जयकी इच्छासे स्त्रियोंके सतीत्वको नाश करके अपने आर्यनामको कलंकित नहीं किया विजयी हिन्दुओंका दल कभी भी शत्रुपक्षकी विवाहता स्त्रीको हरण नहीं करता था। इसी कारण कर्नेल टाड साहबके प्रस्तावके मतसे इस प्रकारकी सृष्टि अन्तर जातियोंमें नहीं हुई। विषकी रीति पाखंडी यवनोंके अत्याचारके ही समयसे प्रबल होगई थी। जहांपर कठोर हृदय दुराचारी यवनोंने विजय पाईहै साधु टाड साहब उसी स्थान पर विषकी रीतिकी दृढतासे सहानुभूति प्रकाशित करगयेहैं। जिन धर्मोंमें मनुका नाम प्रचलित है, महात्मा टाड साहब विशेष स्थलोंके होनेसे उनको परस्परमें विसम्वादी जानकर मनुको सब विधानोंका प्रणेता स्वीकार करनेमें राजी नहीं हुए। परन्तु इस बातको हम कहसकतेहैं कि यदि मनुके समस्त विधानोंको भलीभाँतिसे हृदयंगम करजाय तो जो संदेह हृदयमें हुआ उत्पन्न हुआहै वह शीघ्रही दूर होजायगे। "

आख्यानोंको पढकर पाठकमंडलीको स्वतः ही राजपूतोंके चरित्रोंके सम्बन्धमें अपना मन्तव्य प्रकाश करनेका अनुरोध करगयेहैं। परन्तु महातमा टाड साहबका वचन हैकि "प्रबल साहस और देशके हितकी इच्छा, राजभक्ति, सन्मान, आचरण, आतिथ्य और सरल व्यवहार इन कितने ही गुणोंसे उनको विभूषित करनेमें विना कुछ कहे मानना होगा। संसारके प्रत्येक प्रान्तमें मनुष्य स्वभावके दोषोंकी समान अपराधी होताहै, यदि हम उनको नहीं छुडासकते तो क्रमानुसार भिन्न २ जातियोंके द्वारा आक्रान्त और दुर्दान्त विजातियोंके साथ संघर्षणके कारणसे वह नैतिक अवनतिके अगाध समुद्रमें निमग्न होजातेहैं. यद्यपि इस वातको स्वीकार करना होगा तथापि वह कठोर विजातीयकी पीडासे यह भयंकर आदर्श आज उनके जातीय गुणोंको लोप करनेमें समर्थ नहीं हुआ, यह देखकर अवश्य ही प्रशंसा करनेमें सामर्थ्य होगी। जातिके चरित्रोंकी अवनतिके प्रकाश करनेवाले जो छल कपट हैं और जो मिथ्याप्रियताके अभेद आसियिकजातिमें भली भाँतिसे देखेजातेहैं। यद्यपि राजपूतजातिमें कई एक सम्प्रदाय विजातियोंके द्वारा पीडित होकर अपनी रक्षाके लिये दुर्बलके वलस्वरूप उस प्रवंचना और मिथ्या वचन रूप अस्त्रोंकी सहायता करतेहैं, परन्तु यह प्रवंचना और मिथ्याप्रियता राजपूतजातिमें सर्वसाधारणमें प्रवलरूपसे प्रचलित थी। हम इसको स्वीकार नहीं करते,

---

आसफखाँ सेनापतिके साथ घोर युद्ध कियाथा, और उसी समयमें वह घायल होकर पराजित हुए थे। उन्होंने विचारा कि यदि भागतेहैं तो कायर कहलावेंगे, और जब कि हमारी स्वाधीनताहीका नाश होगया तो जीवन किस भाँति बचसकेगा ? तब उन्होंने उसी समय प्राचीन रोमक वीरोंकी समान रणभूमिमें अपने हाथसे अपने जीवनकी बलि दे दी।

यह गाड़ाराज्य जबलपुरके अत्यन्त निकट है, एक महाशय १८७९ ईसवीमें उत्तर पश्चिमाञ्चल और मध्यदेशोंमें जानेके समय कौतूहलके वश हो इस गाड़ेके राज्यमें गयेथे। रानी दुर्गावतीकी राजधानी एक वारही विध्वस्त होगई थी राजवाटी और बडे सरोवरके सामान्य चिह्न पाये जाते थे। केवल ऊंचे शिखरके ऊपर एक गोल पत्थरका बनाहुआ मदनमहल नामका निमजला आजतक भी हिन्दू भास्करकार्यकी पराकाष्ठा दिखारहाहै. इस शिखरके ऊपर उस [illegible] भीतरी भागमें घर बनेहुए दिखाई पडतेहैं. वह सभी खंडहररूपमें हैं, वहां [illegible] है कि रानी दुर्गावती उस ऊंचे शिखरसे सुरंगके मार्गसे नर्मदानदीमें स्नान करनेके लिये जाती थीं. वह सुरंग मार्ग इस समय जाहिर नहीं होता. मध्यदेशमें यह [illegible] है कि मदनमहलकी रानी [illegible] इसी स्थानमें [illegible] धन और रत्नोंको [illegible] हैं। इसके [illegible] एक [illegible] वहांके लोगोंने [illegible] मदनमहलके [illegible] जानेके [illegible] है।

कर्नल टाड के मारवाड़ जानेका वृत्तान्त।

छब्बीसवां अध्याय २६.



उदयपुरकी उपत्यका;-मारवाड़की ओर गमनः—तुपशिखरपर विश्रामः—यात्रारंभः—दूरसे उदयपुरका दृश्यः—देवपुरः-जालिमसिंहः—पुलानीः—रामसिंह मेहताः—माणिकचंदः—नरसिंहगढ़के भूतपूर्व राजाः—पुलानोंसे गमनः—इस स्थानका भूतत्त्वमूलक विवरण, नाथद्वारेका ऊंचा मार्गः—नाथद्वारेमें आगमनः—मन्दिराध्यक्षके संग साक्षातः—अनुरवासग्रामकी ओर जानाः—जलमें हाथीका गिरनाः-असुरवासः—एक संन्यासीः—सुमाइचाकी ओर जानाः—शिरोनालाः— पद्मपालः-ठंढीवायुः—सुमाइचाः—राजधानी कलवारामें जानाः—करीसरोवर महाराज दौलतसिंहः—कमलमीर दुर्गका विवरण और ध्वंसावशेष इतिहासः—मारवाड़में जानाः—गन्तव्यमार्गका संकटः-अश्वारोही सम्प्रदाय उपत्यकामें विश्राम।



अभिलाषी नहीं होसकता। वमनको दूरकरनेके लिये पीनेके उपरान्त मीठे लड्डू प्रत्येक राजपूतको दियेजाते थे। अफीम जैसी शक्तिका प्रकाश आत्मामें करतीहै वह देखनेमें अत्यन्त ही विचित्र है, अफीमके विना सेवन कियेहुए राजपूत अत्यन्त ही निकम्मे रहतेथे और मैं वहुधा राजपूत कर्मचारियोंको अफीमके सेवनसे कार्यकारिताकी शक्तिको संग्रह करनेके लिये विदा देता। कारण कि जिस समय अफीमका गुण कम होजाता है उस समय मनुष्य सूखे हुए काठकी लकडीके समान होजाता है * आजकलके राजपूतोंके पक्षमें आहार्य द्रव्यकी अपेक्षा अफीम अधिक प्रयोजनीय कहीगईहै और यदि कोई मनुष्य इसके प्रति उच्च शुल्कव्यवस्था करनेका अनुरोध करता तो वह उसे अत्यन्त आपत्तिके साथ त्यागदेतेथे।

महात्मा टाड साहव यहांतक अफीमके गुण और उसके द्वारा राजपूत समाजके शुभाशुभ फलको भलीभाँतिसे वर्णन करगयेहैं, कि सामन्तमंडलीके वंशधर नवीन राजपूतोंको इस प्रकारसे प्रतिज्ञाके सूत्रमें बाँधलेतेथे, जिससे वह

* महात्मा टाड साहव अपनी टीकामे प्रकाशित करगयेहैं "अधिक क्या कहें बहुतसी वार्तालाप करनेके समयमे वह अपने दोनो नेत्रोको मीच लेतेथे, मत्तता दूर होनेके साथही साथ मस्तक नाडीमे रहताहै और दृष्टि सम्पूर्णतः शून्य दृष्टआतीहै। मेरे साथ साक्षात् करते समयमे अनेक सामन्त आसनपर बैठकर निद्राको भोगतेथे। हलदियाघाटके समरमे राणा प्रतापसिंहके दाहिने हाथस्वरूप साहसी श्यामके वंशधर सादरीके सामन्त उनके प्रियमित्र राजा कल्याण वह अफीमके सेवन करनेसे ही एक साथ कर्महीन होगयेहैं वह अपनी स्वजातिकी चिह्न [illegible] पगडीको धारण करतेथे। अनेक समय जब उनको तंद्रा आती थी तब उनकी वह पगडी [illegible] उनकी गोदमे आपड़ती थी। यदि सामन्तोको अफीमके सार पानको पीनेकी सुविधा न मिलती तो वह उसको अपने अगरखेके दामनमे बाँधकर लेजातेथे। हमने जिस प्रकारसे यूरोपके निवासी अपने मित्रोको नसा दियाहै, वह भी उसी प्रकारसे अपने बंधुवर्गोंको अफीम देतेहैं। जिस समय हम सामान्य सैनिक पदपर स्थित थे उस समय जयपुरके अन्तर्गतके [illegible] अनेक सामन्त आकर मेरे साथ साक्षात् करके कुछ एक अफीम मांगतेथे। मैंने उसको लेकर मेजके ऊपर रखदिया। मुझे जब किसीने अफीमको सेवन करते हुए न देखा, तब उन्होंने "फिरंगीका अमल" अर्थात् अंगरेज लोग किस प्रकारके नशीले द्रव्यका सेवन करते हैं इसको जानना चाहा मैंने उनके समीप एक बोतल मद्यकी भेजदी; और उन्होंने पूछा [illegible] नशा सेवन करें; उस प्रश्नके करनेपर आनद भोगनेके निमित्त मैंने [illegible] सेवन करनेके लिये कहा। दूसरे दिन हम दोनो जनोकी एक साथ शिकारको जानेकी इच्छा थी और उस समय हम [illegible] बात चीत होगई थी। परन्तु जब हमने देखा कि हमारे बंधुके [illegible] न [illegible], तब फिरंगीके देशकी मद्य किस प्रकार [illegible] करती है [illegible] बिना ही [illegible] हम यह समझगयेथे कि वह मद्यसेवनसे [illegible] होगयेहैं।

दहिने हाथमें हाथ मिलाना, इन तीनोंमें जिसके भी द्वारा राजपूत एक बार प्रतिज्ञा करतेहैं, सहस्रों विघ्न और सहस्रों विपत्तियोंके पडनेपर भी राजपूत जाति अचल भावसे उसकी रक्षा करती है, आत्मजीवन देकर भी वह प्रतिज्ञा पालन करनेमें शान्त नहीं होते, हम लोग गर्वके साथ यह प्रश्न करतेहैं कि संसारमें कोई जाति है जो सभ्यजाति राजपूतोंकी समान प्रतिज्ञाकी रक्षाके निमित्त अपने प्राण तक देनेमें भी कातर नहीं होतीथी ?।

राजपूतजातिकी प्रधान मृगयाका वृत्तान्त यथा स्थानपर विस्तारसे वर्णन कियागयाहै। चिरकालसे राजपूतजातिके कुत्ते बंदूकभक्त कहाकर प्रसिद्ध हैं। शूकर और शशकके शिकारके समयमें कुत्ते राजपूतोंकी विशेष सहायता करते थे और राजपूत गण उग्र तेजस्वी घोडोंपर चढकर विना विश्राम लिये अधिक समय तक मृगयामें लिप्त रहकर कुछ भी कष्ट नहीं पातेथे । प्रत्येक प्रधान २ सामन्तोंके अधिकारी देशोंमें "रुमना" अर्थात् मृगयाके निमित्त वनकी रक्षा की जाती थी। यदि कोई मनुष्य उस वनमेंसे किसी जन्तुको भी पकडलेता, तो उसी समय वह पकडा जाकर दंडपानेका अधिकारी होताथा। और उस रक्षित वनमें राजपूत लोग आनंदित होकर मृग, शूकर, हिरन, व्याघ्र, वनेले कुत्ते. नेकडे व्याघ्र, इत्यादि जन्तुओंके शिकारमें मग्न रहते थे, वीराभिनयके स्थानपर परस्परमें अस्त्रकी शिक्षा और वाहुवलको दिखानेके लिये घोडेपर सवार हो केवल तलवारकी सहायतासे चलाये हुए वरछेके विरुद्धमें जिस प्रकार नाना प्रकारकी चतुरताके साथ अश्वको चलाकर अपनी रक्षा करतेहैं, इनसे यदि कोई यूरोपका चतुर अश्वारोही भी वरछेके चलानेमें प्रवृत्त हो तो इसमें कुछ भी संदेह नहीं कि राजपूत उसका नाश करदेंगे । राजपूत लोग किसी निर्दिष्ट वस्तुकी ओर गोली चलानेमें वडे चतुर मानेजाते थे उनका निशाना सब प्रकारसे प्रशंसनीय था । राजवाडेके किसी २ स्थानपर घोडेकी पीठपरसे ही वडे वेगसे वरछेका चलाना राजपूतोंमें आनंददायक क्रीडास्वरूप गिना जाताथा । धनुषपरसे वाणका चलाना भी उसी प्रकारसे एक प्रधान क्रीडा है और वह जिस भावसे चलायाजाता है उसमें विशेष चतुरता और बाहुवलकी अत्यन्त आवश्यकता है । जबतक छोडे-हुए वाणोंसे सम्पूर्ण अंश मृत्तिका निर्मित लक्ष्य स्थान वा महिषको दूर छिद्रजाती है तव तक कोई राजपूत भी संतुष्ट नहीं होता। धनुर्वाणका चलाना राजपूतजातिमें चिरकालसे प्रचलितहै । इस सम्पूर्ण वीरतासूचक शिक्षामें राजपूतोंके बालक छोटेपनसे ही नियुक्त होतेथे । रुधिरको देखकर जिससे मनमें [illegible]

से राणा और उनके सामन्त लोगोंका मृगोंसे भराहुआ शिकारस्थान—व्याघ्र शिखर है; दक्षिणमें—आध कोस उत्तरको और बहुत मछलियोंसे भरीहुई बारीस नदी और पश्चिममें डेडकोसकी दूरीपर बहुत बडा उदयसागर है। कई विशेष कारणोंसे राजधानीके बाहर रेसिडेन्सी स्थापनकरना परमावश्यक समझागया। यद्यपि स्वास्थ्यरक्षा तो सबका उद्देश है ही किन्तु राजमहलसे इतनी दूर रेसिडेन्सीके स्थापन करनेका केवल यही कारण नहीं था। प्रथम तो राजधानीको हमने जिस शोचनीय दशासे गिराहुआ देखा, इससे वहां कुछ कालतक अपना कर्तव्य चलानेकी आवश्यकता जानपडी, किन्तु राजपूत लोगोंकी स्वाधीनता रक्षा करनेके निमित्त उस कर्तव्यको छोड देना पडा। हम जब पहले उनके पास गये तो राजाको भारी शोचनीय दशामें पाया, राजाने हमसे सहायताके लिये अनुरोध किया, हमने भी सोचा कि सहायताके बहानेसे प्रत्येक विषयमें हस्तक्षेप कर सकेंगे तथा उन लोगोंको कोई शंका भी नहीं होगी; इसलिये यह बात निश्चय होगई। राजमहलसे रेसिडेन्सीके प्रतिनिधिका डेरा दूर होनेसे उनकी वह शंका स्थान होगई और शासनयन्त्र भलीभांति चलने लगा, उनको आत्मतत्त्व बुद्धिबलके ऊपर निर्भर करना पडा। तुम शिखरके ऊपर हमारा बंगला, स्थापित हुआ, मन्दहल पर्वतावलि और सैंट जार्जकी जयपताका मस्तकापुसे उतारीगई। वहां थैलेमें ऊंटोंकी पीठपर लाद २ कर हमारी सामग्री लाईजाने लगी। उनके विकट चीत्कारसे ऐसा मालूम होताथा कि वह शोकित होकर अपने भारको [illegible] कहते; केवल यह सौभाग्यका विषय था जो उनको यह अनुभवशक्ति नहीं थी कि हमारे गुरुतर उपकारोंके ही [illegible] [illegible] लादे गये।

चमडेकी ढाल अपनी रक्षा करनेके लिये प्रसिद्ध है। राजपूत गण गेंडेकी में अनेक भाँतिके सुंदर चित्र चाँदी और सोनेके चित्रित कराते हैं। राजानेमें अर्द्धचंद्राकार त्रिशूलके आकार और सर्पकी जिह्वाके समान आकारवाले दर बाण बनतेहैं।

महात्मा टाड साहब राजपूतजातिमें प्रचलित गाने बजानेके विषयका भी निवर्णन करतेहैं। वह लिखतेहैं. महाराज शिवधनसिंह प्रतिदिन ही हमसे मिलनेको आते, और वह मेरे साथ भाईचारा मानतेथे कभी २ वह विना ही कारण बहुत समयतक मेरे पास बैठे रहतेथे, महाराज शिवधनसिंह अनेक गुणोंसे भूषित थे, और बन्दूकके चलानेमें वह मेवाडमें एक ही गिनेजाते, अपनी जातिकी प्राचीन साहित्य विद्यामें बडे प्रवीण और केवल मेवाडके ही नहीं वरन् समस्त राजवाडेमें ऐतिहासिक गुप्त तत्त्वोंके जानकार प्रसिद्ध थे. बातचीत करनेमें कवियोंकी समान कल्पना करते और मीठी बोलीसे कविता करते हुए कभी २ सदुपदेशोंसे श्रोतासमाजको तृप्त करदेते थे यह उनमें पूर्ण शक्ति थी। संगीतविद्यामें पारदर्शी होनेके कारण संगीत विद्याके प्रत्येक विषयमें ही वह उत्तमतासे मतभेद दिखातेथे। महादेवके पंचमुखसे निकले प्रत्येक रागोंके प्रकरण, रागोंकी असंख्य मूर्तिं; और प्रत्येक रागोंकी छः रागिनी वह बडी व्याख्याके साथ दर्शातेथे। मेवाडके बीचमें सबसे श्रेष्ठ गानेवाले पुरुष और स्त्रियें उनके निकट ही रहतेथे इस कारण वह कभी२उन सबको हमारे यहाँ लाकर हमें गाना बजाना सुनवाते थे। उनकी प्रधान गानेवालीका स्वर जैसा ऊँचा था वैसा ही मधुर था। उनके उस सुन्दर कंठसे निकले वसंत और मेघरागके संगीत बडी मीठी सुरीली तानसे युक्त गानेमें प्रतीत होतेथे। जो उज्जायिनीमें उनकी एक गानेवाली आईथी, वास्तवमें वह बहुतसे गानेवालोंमें अद्वितीय थी, मैंने उन दोनोंको एक स्थानपर बैठके एक साथ गानेके लिये कहा। शक्तावतोंके अधिनायक सलूम्बरके सामन्त और अन्यान्य सरदार प्रायः महाराज शिवधनके समान इस गानेको सुनने आये: कारण कि सभी गाने बजानेके परमभक्त थे और सभी उस समय अपने हृदयमंदिरके किवाडोंको खोलेहुए गाना सुनकर मुक्तकंठसे कहने लगे कि जैसे नादुल्लानामक प्रसिद्ध बजानेवालेके बाजेको सुन विन्द्रावनकी बाना बजानेवाली समान भी ऊँचे स्वरसे प्रशंसा करनेमें नहीं हिचकी थी, वैसे ही हम सब उस समय उज्जायिनीकी साधारण दर्पकी कलीने मुग्ध होकर वृक्षकी समान मौन होगयेहैं। ग्रीष्मऋतुमें इसी भाँति छोटी २ [illegible] बगीचोंमें वा छतोंके ऊपर प्रक-

महाराज सेंधिया (जो इस समय परलोकवासी हैं) उदयपुरके सबमें श्रेष्ठ और प्रसिद्ध गानेबजानेवालोंको अपने यहाँ ले आयेहैं।" प्रत्येक राजपूत ही संगीत प्रिय हैं और वह सबसे बढ़कर टप्पेको ही मानतेहैं।

शिल्प—संगीत—विज्ञानके प्रधान उत्साह देनेवाले राणा भीमसिंहके यहाँ कुछ एक गाने और बजानेवाले नियुक्त थे। इतिहास लिखनेवालोंका कथन है कि वह गानेवाले बडे चमत्कारसे जातीय टप्पेको गान करतेथे। निर्जन रात्रिमें महलोंकी छत्तोंपर गानेवाले ऊँची तानसे गाना प्रारंभकर अपार आनन्दमें सबको मग्न करदेतेथे। राणाके यहाँ एक संप्रदाय वंशीबजानेवालोंकी थी, वह भी अपनी वंशीकी सुरीली तानसे श्रोता समाजके कर्णके छिद्रोंको आनन्दसे तृप्त करदेती थी। कर्नल टाड कहगयेहैं कि गाना बजाना राजपूतोंके जातीय आनन्द सम्भोगका प्रधान अङ्ग स्वरूप और संगीतविज्ञान राजपूत जातिके शिक्षाका एक प्रधान अंग विशेष है।*

जिन्होंने भारतवर्षमें पर्वती मार्गपर गंभीर रात्रिमें जानेके समय शिखरपर स्थित हुए पहरेवालोंके द्वारा भेरीसे निकले हुए शब्दको सुनाहै वह लोग कभी उस भेरीके क्रमक्रमसे बढ़नेवाले प्रबल ऊँचे और विरामकालके पूर्व क्षणस्थ घनघनशब्दको कभी नहीं भूलसकेंगे।

महात्मा टाड साहब कहगयेहैं यूरोपखंडकी कल्टजातिमें ब्यागपाइप नामका जो बाजा प्रचलित था, वह राजपूतजातिसे छिपा नहीं था। राजबाडेमें इसका

---

* चंदकविने लिखाहै कि सम्राट् पृथ्वीराज यन्त्रद्वारा और कंठसे गानेको भलीभाँतिसे जानते थे। कर्नल टाडका मत है कि भारतमें किसी समय अश्लील वा अपवित्र संगीत साधारणमें प्रचलित था वा नहीं इसमें संदेह है, किन्तु पवित्र धर्म्मसंगीत राजपूतोंकी शिक्षाके अंगस्वरूपमें गिनेजातेथे। प्रमाणस्वरूपमें वह भ्रमसे कुश और लवकी रामायण कीर्तन करनेके बदले रामचन्द्रिका रामायण कीर्तन करना लिखगयेहैं। जयदेवके पवित्र संगीत आजतक सर्वत्र गायेजातेहैं। उन्होंने और भी कहाहै कि "अनेक स्थानके देव मंदिरोंके पुजारी और भक्तगण अपने इष्टदेवके सन्मुख धर्मसंगीत कीर्तन करतेहैं; और आबू पहाडकी चोटीपर स्थित होकर यति और संन्यासी जब अपने आराध्य देवता पार्वती-पतिकी महिमासूचक संगीत एक स्वरसे गातेहैं तब उसको सुननेसे बडा आनन्द प्राप्त होताहै।" राजस्थानके प्रसिद्ध २ कवियोंके बनाये जो गीतोंको गानेवाले गायाकरतेहैं कर्नल टाड साहबने उसकी बडी प्रशंसा की है। भारतके अतीतकालके पूर्वमें संगीतशास्त्र जिस शिक्षाके अंग विशेषमें गिनाजाता था पुराणोंमें उसका यथेष्ट प्रमाण विद्यमान है। मन्त्र, शान्ति और स्तो- [illegible] समयमें ही राज्यमें संगीतविद्याकी अधिकता रहतीहै। भारतके [illegible] (गिरने) के साथ साथ ही [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है नहींहै।

निमित्त नियुक्त हैं । हम लोगोंका स्कन्धावार नाथद्वार नगरके नीचे बहनेवाली गुनास नदीके दूसरी पार स्थापित हुआ. इस कारण जब हम नगरके बीचमें होते हुए चले तो सब नगरनिवासियोंने राजमार्गमें एकत्र होकर महाआनन्द प्रकट किया. जिस अंग्रेजी शासनद्वारा उन्होंने विजातीय अत्याचारियोंके हाथ-से उद्धार पाया है. तथा जिस शासनने कन्हैयाजीके पवित्र मंदिरकी रक्षामें पूर्ण सहायता की है वह सब ही एक स्वरसे उस अंग्रेजी शासनकी प्रशंसा करने लगे. और आग्रह सहित अन्नकूट पर्वके पुनः प्रतिष्ठा दिनकी बाट जोहने लगे ।

१३ वी अक्टूबर अब आगे मार्ग जलमय.अत्यन्त दुर्गम है. और भारवाही पशु उचाव्य नकृति होनेके कारण नेन्तानामक मरुस्थानमें ठहरना तथा डेरा ढोने-वालोंका विछोह होगया. अतः फिर मिलनेके लिये इस स्थानपर ठहरगये । श्रीमन्दिरके प्रधान धर्म्मयाजकने गुसाईवारी एक धनी महाजनके संग आकर हमारा अभिनन्दन किया । एक सुनहरी अंगरखा और एक सुवर्णमंडित दौरे में रखा दूसरा धर्म्मयाजकने श्रीजीका उपहारस्वरूप लाकर मुझको दिया । इसके अतिरिक्त एक बड़े पात्रमें पूर्वदेशके अनेक प्रकारके पके और स्वादिष्ट फल

रीतिकी अपेक्षा कहीं कठिन होतीथी; कारण कि मनुष्य समाजकी ज्ञातव्य किसी शिक्षाके प्रति भी उपेक्षा दिखाना उचित नहीं,जातिगत सुखकी शान्तिके समयमें मनोवृत्तिकी उत्कर्षताकी प्राप्तिमें सभ्यता बढतीहै। जिस दिनसे शान्तिका अभाव हुआहै उसी दिनसे राजपूतजातिके अनेक विषयोंका भी पतन आरंभ होगयाहै, इसको हम निःसंदेह कहसकतेहैं, कि ज्योतिषशास्त्रके जाननेवालेको इस समय उत्साह और पुरस्कार देकर उसकी प्रतिपोषकता करनेवाला मनुष्य राजवाडेमें कोई भी नहीं है। अम्बेरके महाराज जयसिंह दिल्ली, काशी, उज्जयिनी और अपनी राजधानी जयपुरमें बहुत व्ययसे जिस भाँति बडे २ मंदिर बनवागयेहैं इस समय उस प्रकारके ज्योतिर्विद्याके उत्साह दाता देखनेमें नहीं आते, उन्हीं महाराज जयसिंहने इडिलाहेयार और उलूकबेगके द्वारा बनाये हुए गणनाके यंत्रोंकी एकताके साधनमें दिल्लीके शेष यवनसम्राट्के नामसे ",जिज आहम्मदसाही" अभिधान करके बनादिया। उन्हीं महामाननीय जयसिंहने राजपूतजातिमें विवाहके समयमें अधिक धनका उठाना कम कियाथा। और उसी कारणसे शिशुकन्याकी हत्या रीतिको दूर करनेके निमित्त समस्त राजवाडेमें एक प्रस्ताव उपस्थित करदियाथा; और उन्होंने अपने राज्यमें राजपूतनामकी जो राजधानी स्थापित की थी उसे इस समय सभी भलीभाँतिसे जानते हैं।

टाड साहबका अंतिमकहना यह है, कि राजवाडेमें पचीसकोश तक जाते हुए स्थानोंमें अतीत समयकी प्रतिभा, बुद्धि और धनके अनेक प्रकारके चिह्न पाये जाते थे. राजपूत जातिमें शत्रुओंके लूटनेसे जो निर्मूल होगई थी, इस समय उसमें जैसी शान्ति है, इस कारणसे ही राजपूतजातिकी वह लोप हुई शिल्पविद्याका ज्ञान पुनर्वार पूर्व गौरवके प्रकाश करनेमें समर्थ होगा या नहीं; और राजपूतजाति फिर भी उन्नतिके शिखरपर पहुँचेगी या नहीं? इन कठोर समस्याको एकमात्र भविष्य समयमें पूर्ण करनेमें समर्थ होंगे। ऐसी आशा कीजातीहै।

आधी शताब्दीके समयमें पहले महात्मा टाड साहब और राजपूतजातिकी शिक्षाके सम्बन्धमें जो कुछ वर्णन करगये हैं. हमने ऊपर उसका वर्णन अविकल कियाहै। परन्तु आजकलके समयके साथ उस समयकी यदि तुलना कीजाय तो हमको अवश्य ही मानना होगा कि महात्मा टाड साहबकी उपरोक्त उक्ति वर्तमान राजपूतजातिके प्रति प्रयोग नहीं की जासकती। राजवाडेके राजपूतोंमें इस समय शिक्षादानके सम्पूर्ण रूप बदलगये हैं। महामाननीय गवर्नमेन्टके द्वारा

[illegible] एक [illegible] [illegible] बहुत [illegible]
[illegible] दिखाईदेते हैं।" ठीक यही बात को हम [illegible]
[illegible] [illegible] और [illegible] लोगोंके
[illegible] हमें यहीं विश्राम करना पड़ा। [illegible]
किन्तु [illegible] निवासियोंकी संख्या बहुत [illegible]
[illegible] होकर [illegible] सीमासहित [illegible]
एक [illegible] था [illegible] । हमारे [illegible]
उनके आश्रममें जाकर प्रतिसाक्षात् किया। साधारण [illegible] संन्यासी मुझसे साक्षात्
सो एक बुद्धिमान और देशविदेशकी बहुत सी बातें जान
पहरतेहैं और [illegible] ऊपर एक कमलगट्टेकी माला लगाए
माला हाथमें लिये तथा इष्टदेवका नाम जपतेरहतेहैं। उन्
साधारण प्रजा निर्विघ्न शान्तिके संग २ परमसुखसे वास [illegible]
उल्लेख करके यह भी प्रगट किया कि अंग्रेजशक्ति महा
प्रबल है और वास्तवमें एक समय राजा और [illegible]
समान अंग्रेजोंको दैवशक्तिसम्पन्न कहनेका सिद्धान्त [illegible]

१८ वीं अक्टूबर–नवीन सूर्योदयके संग २ ही छः कोश
नामक स्थानकी ओर यात्रा कर दी। जिस मार्गमें हम [illegible]
समान बहुत सङ्कीर्ण, तथा नाथद्वारेसे टेढ़ा, ऊंचा नीचा और
[illegible] पात्र है; चारों ओर खैर, कीकड़ और बबूलके वृक्ष [illegible]
मार्गमें स्थित गङ्गगुड़ानामक ग्राम होकर डिग्नालानामक ग्राम
नामक [illegible] उपत्यकामें पहुँचे। विस्तृत विराट्काय शिखरके जिन [illegible]
कल [illegible] करतीहुई बही है, गोडाग्राम उस स्थानपर ही [illegible]
कुण्डला[illegible] टेढ़ी गति देखकर हमने मनमें ही अनुमान [illegible]
विशाल उ[illegible]का केवल एक यही मार्ग है। उपत्यका [illegible]
फैलीहुई [illegible] किन्तु किसी स्थानका परिमाण [illegible] कोससे कम नहीं [illegible]
काके नि[illegible] ही शिखरश्रेणी ऊपरको उठीहैं, [illegible]
वृक्ष लगे [illegible] हैं और कोई २ शिखर अभ्रभेदी [illegible]
[illegible]पूर्ण स्थानके ऊपर प्रकृतिकी भी [illegible] । इस
[illegible] तथा [illegible] वृक्ष [illegible] [illegible]ओंमें
[illegible] [illegible] नदीके तट
[illegible] प्रभोंमें

समयमें प्रयोग नहीं किया जासकता, उस समयसे लेकर दो सौ वर्ष पीछे तक इस प्रकारसे प्रयोग करनेकी संभावना होसकतीहै। उक्त पादरी लिखगयेहैं; कि "महान् मनुष्योंके सन्मुख अत्यन्त सामान्य घर सजाये हुए दृष्टि आते थे; समस्त घर झाड और फानूसोंसे सजाये जाते थे। अनेक प्रकारके रंगबिरंगे चित्र दीवारपर लगाये जाते थे। काष्ठासन, कौंच, मेज़, कुरसी, चंद्रातप या वृत्तशय्या, अथवा परदे इत्यादिसे कोई घर नहीं सजा था। सत्य बातके कहनेमें क्या आपत्ति है, यदि यह सजाव इनके यहां होता तो भयंकर गरमीके कारण उन सबके बहुतसे अंशोंको व्यवहार करनेमें वह लोग असमर्थ होजाते। घरके भीतर सुन्दर रमणीक गलीचेको बिछाकर उसके ऊपर सब लोग बैठ जातेथे।"* इतिहासवेत्ता राजपूत जातिके पहरावेके समयमें भी कहगयेहैं, इसका विस्तार करना अत्यन्त निष्प्रयोजन है—एक प्रकारके उपकरणमें, एक प्रकारकी रीतिके प्रचलित होनेपर देशभेद, जातिभेद और वर्णभेदोंका वेष भी भिन्न २ होताहै।

---

* सभ्यताप्रिय टाड साहब इस बातको लिखगयेहैं कि आधुनिक ईसाई और पादरियोंके मतमें हिन्दूजातिमें माता पिताके प्रति भक्ति आज तक भी नहीं है, उस मिथ्या उक्तिके खंडन करनेके लिये महात्मा टाड साहबने उक्त मिशनरीके ही मन्तव्योंसे उद्धृत करदियाहै, कि हिन्दूजातिमें सबसे श्रेष्ठ नैतिक गुण दृष्टि आतेहैं। पिता माताके प्रति भक्तिके सम्बन्धमें मिशनरीका मत है "यहां पर हम और भी दो एक आवश्यकीय घटनाओंके वर्णन करनेकी अभिलाषा करतेहैं; उन विषयोंके निमित्त यहांके निवासी इतने दरिद्री और नीच क्यों हुए जो अत्यन्त ऊँची प्रशंसाके पात्र थे; अर्थात् वे माता पिताके प्रति सहानुभूति प्रकाशकर यथेष्ट भक्ति सेवा और शुश्रूषा करतेहैं. उनकी आमदनी अत्यन्त सामान्य होनेपर भी—कुछ एक धनको उपार्जन करके उस उपार्जन कियेहुए धनका आधा भाग माता पिताको देदेतेहैं। वह लोग मातापिताके कष्टको नहीं देखसकते वरन अपने कष्ट उठानेमें कुछ भी कातर नहीं होते।" टाड साहबका कथन है कि यही हिन्दूधर्मकी प्रधान और पहली आज्ञाहै। उक्त पादरी साहब हिन्दुओंकी नैतिक व्यवहारकी प्रशंसा भली-भाँतिसे करगयेहैं।

ईसाई पादरियोंके द्वारा हिन्दुओंको ईसाई-धर्ममें दीक्षित होनेके सम्बन्धमें [illegible] मिशनरीने भारतवर्षके बहुतसे हिन्दुओंको ईसाईधर्ममें दीक्षित किया था. यद्यपि विलायतमें इसका विवरण भी भेजदिया था परन्तु वह ईसाईधर्मकी दीक्षा केवल दिखानेके ही लिये हुईहै। असल बात यह है कि दीन दरिद्री हिन्दुओंको उनके अकालके समय होनेके कारण मिशनरियोंने कुछ सहायता दीहै और इसीसे वह ईसाईधर्ममें होगयेहैं। वह हिन्दू ईसाई धर्ममें दीक्षित होकर ईसाई धर्मको कुछ भी नहीं जानते वह केवल नामहीके ईसाई हैं। [illegible] जोकुछ भी कहाहै, आज हम भी उसी [illegible] करतेहैं। [illegible] ईसाईधर्मके प्रचारका स्थान नहीं था।

दियाहै। यही लोग असली आर्यान कर देनेवाली प्रजा है, एक ओर राणाको स्थानीय असमसाध्य कार्य्य करते हैं और दूसरी ओर नियमित शांतिकर देते हैं। पूर्वकालमें इनके पूर्वपुरुष जैसी वीरता दिखलागये हैं, मैं इन सब बातोंका उल्लेख और प्रशंसा करनेपर वह मुझसे बहुत प्रसन्न हुए, कोई राजपूत भी अपने पूर्व पुरुषोंकी वीरताको कभी नहीं भूल सकता। इस्सुर वृक्षके नीचेकी इस सामिति वास्तवमें ही अधिक शोभा पाईथी। हमारे बोझा उठानेवाले ऊंट इस समा-डेरामें आकर हमसे मिलगये।

शिक्षा—धर्मनीतिकी शिक्षाके न होनेसे, और समाजकी शासनशक्तिकी हीनतासे बंगालीजातिने जैसी शोचनीय मूर्ति इस समय धारणकी है। वीर राजपूतजातिमें आज तक ऐसा दृश्य न देखाहोगा। राजवाडेमें अब भी समाजहै, समाजका शासन है, धर्मनीतिके उपदेश दियेजातेहैं, धर्मकी शिक्षाका भी अभाव नहीं है? इसी कारणसे प्राचीन कालके पैत्रिक आचार व्यवहार और धर्मके विधान आज तक अटलभावसे विराजमान होरहेहैं।

परन्तु संसारसें इतिहास वज्रगंभीर शब्दसे क्या कहरहाहै? चारों ओर प्रत्येक प्रान्तोंमें दृष्टि उठाकर देखनेसे हम लोग क्या देखतेहैं? कि संसारके सन्मुख इस समय क्रमशः उन्नतिकी सुवर्णमयी मूर्तिकी रेखा अंकित होरहीहै। परिवर्तन शील चक्रकी भाँति प्रत्येक देशकी—प्रत्येक जातिकी—प्रत्येक समाजकी अवस्था बदलकर नये दृश्य—नये भाव—नये विधान नवीन रुचिके अनुसार अपना परिचय देरहेहैं। कई सौ वर्षोंके बीचमें यूरोप आज दूसरी मूर्तिको धारेहुए दृष्टि आताहै और साक्षी देताहै कि जातिगत-समाजगत-रुचिगत परिवर्तन निवारणकरनेके अयोग्य है। प्रत्येक समयकी रीतिनीति आचार व्यवहार रुचि अवश्य ही समय २ में बदलती रहती है। नीतिशास्त्रके जाननेवाले अपने दिव्य चक्षुसे देखते हैं कि दूसरी जातिके सहवाससे—विदेशी शिक्षासे समयके गुणसे आर्य क्षेत्र भारतवर्षके एक २ प्रान्तमें प्रबलरूपसे परिवर्तन होरहा है। वीरभूमि राजवाडेमें यद्यपि वह परिवर्तन चक्र नहीं दृष्टि आता. यद्यपि प्राचीन जातिका आचार व्यवहार, रीति नीति, विधि रुचि अभी नहीं बदली है किन्तु कुछ समयमें अवश्य ही बदलजायगी। सामयिक शिक्षा और सामयिक आदर्श ही बदलनेका मूल कारण है। राजवाडेमें जिस दिन साम-यिक शिक्षाकी प्रबलतरङ्गे प्रवेश करेंगी मुझे दृढ विश्वास है कि उसी दिनसे ही वहाँ नये युगका आरंभ होजायगा। किसी एक परिवर्तनके आदिमें ही उसका शुभाशुभ निर्द्धारण न्याययुक्त नहीं है। उस परिवर्तनके समाप्त होनेसे उन क्रिया-ओंके देखनेसे नीतिशास्त्रके जाननेवाले मन्तव्य संगठन करदेतेहैं। उत्तर पश्चिम तथा बंगालके वर्तमान परिवर्तनके अनेक प्रकारसे विचित्र दृश्य दृष्टि आतेहैं किन्तु जब परिवर्तन समाप्त होगा, तब दीख पडेगा कि इन परिवर्तनसे हमारी कितनी उन्नति हुईहै। राजवाडेमें उस परिवर्तनके आरंभमें अब भी बडा विलम्बहै। इस परिवर्तनमें कैसा फल प्राप्तहोगा इसको एकमात्र भविष्यकाल ही कहसक्ता है।

मेवाडका धर्म्मानुष्ठान, पर्वोत्सव और सामाजिक आचार समूह।

तथापि सूक्ष्मदृष्टिसे देखाजाय तो यही ज्ञातहोगा कि, दयामय जगदीश्वरने राजपूतजातिकी उस हृदयभेदी शोचनीय दशा परिवर्तन करनेके लिये उदारचेता टाडको ही ईस्ट इण्डिया कम्पनीद्वारा भिजवाया था। देवस्वभाव टाडने इस दायित्यभारको स्वीकार करके किस योग्यता—चतुरता, विज्ञता, न्यायपरता और और सुविचारोंके संग गहरे अवनतिसागरमें मग्नहुए शिशोदीय लोगोंका अल्पकालमें ही उद्धार करलियाथा तथा अत्याचार, उत्पीडन, लूटमार, आत्म निग्रह, विद्रोहिता अशान्ति और जातिके द्वेषानल प्रज्वलित मेवाड़में कैसे शान्ति सन्तोष और सुखरूपी जल वर्षाकर मेवाडकी अनन्त चितानलको बुझादिया था, पाठकमंडली उचित स्थानमें उसको पढकर अवश्य ही हमारी समान राजपूत गतप्राण टाडकी पवित्र आत्माको सत्यचित्तसे अनेक धन्यवाद देगी। राजनीति विशारद टाडने प्रायः दो वर्ष तक सुखमय उदयपुरकी उपत्यकामें विश्राम करके अपना कर्तव्य पालन किया, अनन्तर मारवाडकी यात्रा की थी। [illegible]त्रा कालमें वह अनेक स्थानोंकी आवश्यकीय बातोंको अपनी नोटबुकमें [illegible]ते गये। वह नोट कियाहुआ भ्रमणवृत्तान्त इस प्रथमकाण्डके शेषांशमें [illegible]या है; इसकारण हम भी उस ही प्रणालीका अनुकरण करनेके लिये [illegible] हैं। साथी यात्रीरूपसे पाठकमंडली हमारा अनुगमन करनेसे, आगे कहनेयोग्य अंशके सत्य घटनापूर्ण बहुतसे चित्तविनोदक उपाख्यान, अनेक स्थानोंका अप्रकाशित विवरण, और कौतूहल तृप्तिकरनेवाला इतिहास आपके हृदयको अनुपम सुगन्धिसे अवश्य भरदेगा। यद्यपि इतिहासलेखक टाडके इस भ्रमण वृत्तान्तके दो एक स्थान किसी पाठकको कुछ नीरस मालूम होंगे, किन्तु पीछे वर्णन किये हुए वा आगे लिखेजानेवाले इतिहासके किसी विषयके संग उस नीरस अंशका सम्बन्ध रहनेसे उसका लिखना आवश्यक है। हमको दृढ विश्वास है कि पाठकगण इसको पढ़कर अवश्य तृप्त होंगे।

महाशय टाडने सन् १८१९ ईसवीकी ११वीं अक्टूबरको लिखाहै कि "जिस समय हमने भारतवर्षमें अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य्य विभूषण विभूषित बहुतसे मनोहर दृश्योंसे पूर्ण उदयपुरकी उपत्यकामें चरण रक्खा था, उस समयसे प्रायः दो वर्ष बीतीहुई उपाधिधारणमें अनन्त काल सागरके गर्भ में लीन होगयेहैं। हमारी निर्भ्रान्ति सीमा चारों ओर तीन कोसके भीतर है; किन्तु अबतक हममेंसे कोई भी इस सीमाके बाहरी दृश्यको नहीं देखसका था। प्रत्येक शिखर और पहाडी सारे ऊंचे २ महल और वृक्षोंको हमने भलेभांति

था। पाठकोंके सामने जो जैनमन्दिर उपस्थित है वह ग्रीक शिल्पकारोंके द्वारा बनाया गयाहै। अथवा राजपूत शिल्पकारोंने ग्रीकशिल्पकारोंके आदर्शपर इसको बनाया है, इसको सत्य वा संभव करकर अनुमान करनेसे कौतूहल उपस्थित होताहै। यही हमारे चित्रका × मेवाड़वाला मंदिरहै। जैनियोंके इस मंदिरमें हिन्दुओं द्वारा "जीवपितृ" का कृष्ण पाषाण निर्मित स्वरूप अन्यायसे ही स्थापित कर दिया गयाहै। यह मंदिर पर्वतके ऊपर बना हुआ है और वह पर्वतपुञ्ज ही इसका भित्तिस्वरूप होनेसे यह कालके कराल दांतोंसे चूर २ न होकर अबतक खड़ा है। इसके पास ही जैनियोंका एक और पवित्र देवालय दिखाई देता है, किन्तु बिल्कुल दूसरी रीतिसे बनाया गया है। यह तिमंजला बना हुआ है, प्रत्येक मंजिल छोटे २ असंख्य स्थूल स्तंभोंसे शोभायमान है, वह स्तंभ [illegible] आकारके ऊपर स्थापित हैं, और स्तंभोंके ऊपर इस प्रकारकी छत है कि सूर्यकी किरणें उसके भीतर जाकर अंधकार दूर करनेमें समर्थ हैं।

[illegible] यदि यात्रीगण कूटके ऊपर वा नीचे जिधर देखेंगे [illegible] मंदिर [illegible] [illegible]

खाइयोंको भरदेताहै । गलेहुए उद्भिज्ज और विषाक्त खनिज्ज पदार्थोंको दूषित करडालता है, और एक प्रकारका काला तेल सा पदार्थ उसके ऊपर तैरने लगता है । राजपूतजाति इस शिक्षाको विलकुल नहीं जानती कि किस उपायसे यह दूषित जल शुद्ध होताहै, और मुझे लज्जितभावसे यह बात कहनी पडतीहै कि इस विषयमें मैं भी उनको कुछ शिक्षा नहीं देसका । किन्तु राजपूत लोग समग्र मारवाडमें प्रचलित एक वहुत सरल उपायसे क्षार और आलमद्वारा यह कार्य सिद्ध करलेतेहैं । क्षारद्वारा जलका लवणाक्त दोष दूर होने पर. वह रन्धनकार्यके विशेष उपयोगी होताहै, और ऊपर कहे द्रव्यके मिलानेसे ऊपर तैरताहुआ दूषित पदार्थ जलके नीचे बैठजाता है। कपडा धोनेवाले राजपूत लोग एक प्रकारका साबुन भी व्यवहार करतेहैं ।

बारह अक्टूबरको सवेरे पाँच वजे घोडोंपर चढ़नेके लिये सांकेतिक बिगुल वजा हमने भी संकेतके अनुसार कार्य्य करनेमें देर न की; आगे बढकर देखा कि पीले कपडे पहरेहुए सेनादेशी बूढे सेनापतिके सामने एकत्र खडीहै । इस्किनरकी घुडसवार सेना पीला अँगरखा लाल पगडी और पेटी पहरतीहै। इस बातको कौन नहीं जानता! कि कम्पनीके सेनादलमेंसे इस्किनरके घुडसवार खूब शिक्षित और जितनी बातें चतुरसैनिकोंमें होनी चाहिये वह सबही उनमें पाईजाती थीं । महलके नगाडेकी ध्वनिने निकलकर सूचितकिया कि सूर्य्यवंशके राजा शय्यासे उठेहैं; हम लोग उस नीरव निस्तब्ध निद्रितराजधानीके बीचमें होते हुए सूर्य्य तोरण-द्वार पर पहुँचे, वहां जाकर भिन्दीर, देलवाग, अमाइत और वंशीके चार सामन्त अपनी सजीहुई सेना लिये राणाकी आज्ञासे हमको सीमान्ततक लेजानेके लिये खडे हैं । किन्तु उस सुन्दर शिक्षा और नीतिहीन सेनाके संग जानेसे अपने लिये भार और देशके लिये असुविधाजनक विचार कर उनके नेतालोगोंके संग हम पहाडी मार्ग तक गये, वहां जाकर हमने राणा और सामन्त लोगोंको अभिनन्दन सूचित करनेके लिये अनुरोधपूर्वक लौटादिया । आठ वजने पर हम सांढे छः कोशकी दूरी पर डेरेमें पहुंचगये । जो स्थान डेरा गाडनेके लिये नियत कियागया था. (जहां पीछे मैंने रेजिडेन्सीका मकान बनवाया था) वह सेरना और तुषग्रामोंके बीचकी ऊंची भूमि है। इधर उधर वृक्ष लगेहुए हैं, और जो वन उपत्यकाकी भूमिके झालररूपसे शोभायमान है: उन काननमालाके बीच कोश परिमित स्थान वनशून्यरूपसे स्थित है, वहांसे चित्तौडकी ओरकी सीमा भूमि और नगर २ कर्पूरक्षेत्र आज तक दिखाई देतेहैं । इसके उद कोश उत्तर-

मंदिर जहां बना हुआ है, वह स्थान बड़ा रमणीक है, और वहांसे मारवाड़ जानेका मार्ग दृष्टिगोचर होता है। मन्दिरकी चोटी मध्यमें है चारों ओर केवल स्तम्भ हैं, इस कारण मंदिरके भीतरकी ऊंची छोटी स्मारकवेदी सहजमें ही देखी जासकतीहै। यह हिंदुओंके मंदिरका नमूना है। मैं इस मंदिरके द्वार, शिखर और ऊंचाईवाले स्थानोंपर चढ़गया। मेवाड़के सुप्रसिद्ध महा-वीर पृथ्वीराज और उनकी वीर सहधर्मिणी ताराबाईकी भस्म इसके भीतर स्मरणार्थ स्थापित है। उनकी जीवनी और वीरताका प्रशंसनीय विवरण मेवाड़के इतिहासमें आजतक जीवितभावसे अंकित है।

सुन्दरी ताराविहारके अधिनायक राओ सुरतानकी प्यारी लड़की थी। राओ सुरतान सोलंकी जातीय और अनहलवाड़ाके सुप्रसिद्ध बल्हरराजवंशमें उत्पन्न हुये। सुरतानके पूर्व पुरुषलोग सन् १३ शताब्दीमें अनहलवाड़ासे निर्वासित होकर मध्यभारतमें आये और टंकथोडा तथा बनास नदीके समस्त प्रदेशको अधिकारमें करलिया। तक्षजातिने स्मरणातीत कालसे पहिले इस टंकथोडा राज्यमें वास था उसको स्थापित किया। इस वंशके नामानुसार इस

लेता कभी शीघ्रतासे एक बस्ता मैदा लेकर दूर भागजाता, उसकी इस क्रीडासे सब हँसने लगे; उस हँसीसे डेरा गूँज गया। यह हाथीका बच्चा आठ वर्षका है और देखनेमें भी वैसा ऊंचा नहींहै। यद्यपि यह चञ्चल बच्चा भोजन बनाते हुए लोगोंको बहुत दिक्क करता था, तौ भी यह सबका प्रियपात्र और क्रीडा स्थल बनगया है। वर्षाऋतुको अधिक विलम्बसे पृथ्वीशासन करनेको आईहुई देखकर हमने विचारा कि हमको तो जलमयी भूमिसे जाना होगा, और भारवाही पशुओंका उसमेंसे चलना कठिन होजायगा। हमने अनेक भाँतिके वृक्ष और जलाशयपूर्ण स्थानोंमें होकर चलना आरम्भ किया। इस मार्गके किनारे बहुतसे बडे २ गाँव बसेहुए हैं, किन्तु सबमें ही लूटमार और समराग्निके चिह्न दिखाई देतेहैं। बहुत कालतक एक स्थानमें स्थित रहनेसे इस प्राकृतिक दृश्यने भलीभाँति संतोष देदिया। हमारे वामभागमें उदयपुर नगरकी घेरास्वरूप ऊंची पर्वतोंकी शृंगमाला हमारे दृष्टिगोचर हुई; उस शिखरावलीके सबसे ऊंचे शिखरपर राताकोटका ध्वंशावशेष आजतक देदीप्यमान है, और वहाँसे चारों-ओरका सब दृश्य देखा जासकताहै। हमारे पूर्वमें आसीमप्रान्तर था, जिसकी सीमा दिखाई नहीं देती। हमलोग देवपुरमें होते हुए आगे बढ़गये, यह ग्राम एक समय बड़ा समृद्धिशाली, तथा मारवाड़के उत्तराधिकारी भानाइज* जालिम-सिंहके अधिकारमें था। उक्त जालिमसिंहका वृत्तान्त यहाँ लिखनेसे (राजपूता-नेके संभ्रान्तलोग विद्या सीखनेमें यत्न नहीं करतेथे) यह कलंक दूर होजायगा। हमारे परमपूज्य पाद गुरु × ने शस्त्रकी समान शास्त्रमें भी विलक्षण पांडित्य उक्त सामन्तसे शिक्षा और ज्ञान प्राप्त कियाथा। जालिमसिंहने राजा विजयसिंहके औरससे मेवाड राजनन्दिनीके गर्भमें जन्म लियाथा, किन्तु कुटुम्बमें विरोध कलह होनेसे वह पिताका घर छोड़कर मामाके घर रहने लगे, इस कारण राणाने उनको अलग सम्पत्ति देकर अपने पुत्रके समान सन्मानसे रहनेकी सुविधा करदिया। राजपूत स्वभावसिद्ध व्यायाम और समरकौशल शिक्षाके ऊपर कुछ

* कर्नल टाडने लिखाहै कि "राणाके जामाता वा उनकी किसी आत्मीय [illegible] जिस श्रीमन्तने विवाह किया, वह आत्मीयता सूचक भानाइज नामसे विख्यात हुआ।" किन्तु हमारी समझमे जामाताको भानाइज नहीं कहा जासकता. भानिज (बहनके) ही "भानइज" नामसे कहा जासकताहै। टाड साहबने भ्रमसे यह बात लिखदीहै। [illegible]

× टाड साहबने अपनी टीकामें लिखाहै कि 'मेरे शिक्षागुरु यति ज्ञानचन्द्र जैनसम्प्रदायी थे और यह [illegible] मेरे साथ रहे। मैं उनके निकट [illegible] ऋणी हूं मेरे प्रत्येक [illegible] और तत्वानुसन्धान करनेमें उन्होंने विशेष उत्साहसे मेरा सहायता दीथी।'

इस अफ़गान सरदारको धराशायी करदिया. जबतक वह समारोह अपने आनं-दसे-रंजित हो तबतक वह तीनों नगरके फाटकपर पहुंचगये. जहां एक हाथीके द्वारा इनका मार्ग मारागया ताराबाईने अपने खांडेसे इसकी सूंड काटडाली. और हाथीके भागने ही वे लोग अपनी सेनामें जो पास ही थी जा मिले. अफ़गा-नोंपर चढ़ाई कर दी गई, और वह इस वेगके सामने न ठहर सके. जो नहीं भागे उनको वहीं चकनाचूर करदिया गया और इस भांति पृथ्वीराजने अपनी प्राणप्यारीके पिताके उत्तराधिकारको ग्रहण किया. अफ़गानके एक भाईने उसके फिरलेनेके लिये युद्धमें अपने प्राण देदिये, अजमेरके नवाब मल्लूखान शिशोदीय राजकुमारके सन्मुख स्वयं युद्ध करनेका विचार किया. पृथ्वीराजने इस अभि-प्रायको जानकर स्वयं अजमेरपर चढ़ाई की. अरुणोदयके समय वह शत्रुके शिविरमें पहुंचगये और भीषण मारकाटके उपरान्त विटलीगढ़के नगरको उसने सेनाओं सहित जय करलिया. चारण कहताहै इस कार्यसे राजवाड़ेमें पृथ्वीराजका यश छागया. एक सहस्र राजपूत श्रद्धा और भक्तिसे पृथ्वीराजके नगारेके चारों ओर एकत्रित होगये. इनकी तल्वार आकाशमें चमचमा रही थी और पृथ्वीको भयभीत करतीथी वह सब निर्बलके सहायक थे। मुसल्मान [illegible] द्वारा लिखित और प्रमाणित बात उनके यशमें एक और [illegible] आकस्मिक घटनासे अनभिज्ञ हैं। एक समय पृथ्वीराजने राणाको [illegible] [illegible] साथ [illegible] संभाषण करते देखा. पृथ्वीराज [illegible] सहना असह्य हुआ और—उत्तर दिया. राणाने [illegible] [illegible] पृथ्वीराज [illegible] [illegible]

अधीनस्थ प्रत्येक ग्राममें अधिकार करलिया तथा अन्तमें इनकी राजधानीमें हुलकरकी जयपताका फहरानेलगी, यह अपमानित होकर उनके आधीन रहनेको वाध्य हुए । उस समय महाराष्ट्रियोंके हुलकर और सेंधिया इन दो नेतालोगोंकी अधीनता शृंखलामें सब राज्य ही करदायीरूपमें बँधगयेथे, और उमतवारा राज्य सबसे पहिले अस्सी हजार रुपये करदेना स्वीकार करके हुलकरके अधीन हो गयेथे, तथापि अन्यान्य अत्याचारी जाति और हुलकरकी सेना सदा ही उनके राज्यको लूटमारसे विध्वंस करती थी । अनेक शताब्दीके पीछे सन् १८२१ ईसवीमें जब यह प्रदेश शान्ति प्राप्त करनेमें समर्थ हुआ तो मेवाडकी समान उमतवाडा भी टूटे फूटे स्तंभोंसे आच्छादित होगया, और इसके उर्वर क्षेत्रोंमें कणकमय मिमोसा और उपकारी किओना तृण जमगये । शोक दुःख और दीनता भूलनेके निमित्त राजा उस समयमें अफीम और मत्ततासूचक पानीके सेवनसे विलकुल निकम्मे होगये थे, इस कारण वह ग्रहदशा सुधरनेपर भी शासनका कार्य्य अच्छी रीतिसे करनेमें असमर्थ गिनेजाने लगे । उनका पुत्र चैनीसिंह पिताकी समान उक्त कुरोगाक्रान्त नहीं था, वरन् शासनभारमें सहायता करनेमें सब प्रकारसे योग्य था, इस कारण वृटिश एजेंटकी व्यवस्थानुसार राजाके वृत्तिग्रहणमें राज्यभार छोडनेपर उक्त चैनीसिंह ही अपने नामसे राज्य शासन करने लगा ।

उपरोक्त दोनों सम्भ्रान्त अधिनायकोंके संग कुछ काल तक कथोपकथन करनेके पीछे नियमानुसार पान और अतरदान किया. अनन्तर दोनों विदा लेकर अपने स्थानको चलेगये ।

नाथद्वारा,–१४ वीं अक्टूबर–अरुणोदयके संग २ ही यात्राका आरंभ होगया और कुछ दूर ही आगे जाकर देखा कि, आगेका मार्ग दलदलमय है. इस कारण भारवाही ऊंटोंके लेजानेमें बडी कठिनता हुई । इस प्रदेशके चारों ओरकी भूमि ऊंची नीची और पथरीली है । बडी कठिनतासे प्रायः चार सौ फिट ऊंचे नाथद्वारेके शिखरको अतिक्रम किया । यह स्थान चतुःपार्श्ववर्ती शिखरमालाकी समान लाल पत्थरोंका है । यह नाथद्वारेसे टट-कोण पूर्वकी ओर स्थापित और समतल क्षेत्रकी समान है; इस स्थानके दो क्षुद्र सरोवरोंसे मार्गके दोनों ओर दो नहरें बनकर और कल्लोलकर पुजारियोंका जल कष्ट दूर करतीहै । नहरोंके दोनों ओर वृक्षोंकी श्रेणियें चलीगई हैं, यह अपूर्व शोभासम्पादनके संग २ पथिकोंकी थकावट दूर करनेमें यथेष्ट सहायता देनेके

किसी एक स्थानमें देखनेमें तागाग बड़े चमत्कृत जानपड़तेथे. हम [illegible] [illegible] बड़े आनंदसे और इसी विचारमें मग्नथे कि हमारे [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] क्या [illegible] होगा. कि अकस्मात् एक झाड़में [illegible] [illegible] पड़ा और वहां वृक्षके नीचे अग्निके चारों ओर [illegible] [illegible], एक दल जानपड़ा ।

हम [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] करने लगे हमारे [illegible] हमको [illegible] स्थान बना दिया. और मकानमें पहुंचनेसे पहले हमसे [illegible] [illegible] समय लिया. वहां लकड़ी भी बहुतायत थी. उस समय [illegible] [illegible] [illegible] था. परन्तु हम [illegible] कारण कि [illegible] कारण [illegible] [illegible] [illegible] किंचित् भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जा सकते. अब हमने [illegible] [illegible] [illegible] और देखा. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थी. परन्तु यह [illegible] [illegible] थी कि [illegible] [illegible] [illegible] अपने [illegible] [illegible] विचार करने । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपने [illegible] [illegible] चारों और [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] किसी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्थान था. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [[illegible]] [illegible]. और [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

इस विषयका आदेश पत्र दिया कि, भविष्यत्में बृटिशगवर्नमेंटके कर्मचारियोंमें किसीको भी इस स्थानके मयूर और पीपलके वृक्ष नष्ट नहीं करनेहोंगे और इस पवित्र धर्म्मस्थानके वीचमें किसी प्रकारकी जीवहत्या नहीं होगी । उनकी अप्रसन्नताके भयसे मैंने नदीपार अपने वस्त्रागारमें जाकर मुर्गोंको भोजनके निमित्त वध किया, और उनके सब पंखोंको मट्टीके भीतर छिपादिया ।

असुरवास-१६ वी अक्टूबर-जब चित्त किसी एक कार्यके करनेमें व्यग्र हो, उस समय उसका कार्य्यसाधनके बदले निश्चेष्ट भावसे वेकार वैठना जैसा कष्टदायक है वैसा और कभी नहीं । हमारे सेवकोंका अवतक हमसे मेल नहीं हुआ था, इस कारण मैंने असुरवासको अपना वस्त्रागार भेजकर अपराह्णमें वहांकी यात्रा की । यद्यपि असुरवास यहाँसे चार कोशकी दूरीपर था, किन्तु मार्ग-में सन्ध्या होगई । मार्गमें हमने फते (जयी) नामक हाथीको पानीमें गिरकर महा क्रोधसे उद्धारकी चेष्टा करतेहुए देखा । केवल हाथीवानके दोषसे ही ऐसी दुर्घटना घटतीहै, क्योंकि हाथी यहां तक बुद्धिमान होताहै कि चलते समय पैरसे मार्गकी परीक्षा करता जाताहै, यदि एक पग रखनेके लिये भी स्थान मिलै तो विपत्तिमें नहीं गिरता, वरन् संकेतशब्दसे हाँकनेवालेको निरापद सम्वाद सूचित करदेताहै । फतेने भी वैसा ही संकेत किया था, किन्तु हाथीवान-ने उसके संकेतपर कान नहीं दिया उसका संध्याका भोजन १९ सेरकी रोटी न देनेसे हाथीने अपनेको महा अपमानित समझा । फतेकी उस अन्यायसे उद्धार करनेके निमित्त बडे २ लक्कड उस स्थानमें फेंकेगये; अनन्तर वह धीरे २ महा बलसे पैर उठाकर आगे बढा । फतेको ऐसी सहायता करनेकी कुछ आवश्य-कता नहीं थी, केवल हाथीवानके अपने दोषसे यह घटना घटनेके कारण उसने इच्छानुसार अपने उद्धारकी चेष्टा नही कीथी । फतेने उद्धार पातेही पीठ हिलाई, इससे इसके ऊपरकी सब चीजें चारों ओर गिरगई ।

हम लोग बुनाश नदीको उतरकर आगे बढे । नदीका जल जैसा गंभीर है, वैसा ही कांचकी समान स्वच्छ है । किनारेकी भूमि नीची और अनेक प्रकारकी घाससे भरी हुई है । यह जैसा प्रिय दृश्य युक्त और निर्जन प्रदेश है, इस स्थान-के विषयमें एक सवाद भी वैसा ही विचित्र है । यह कहते हैं कि, "पूर्वकालमें जिस समय म्लेच्छ (यवन) लोग इस देशमें नहीं आयेथे उस समय बुनाश नदीकी अधिष्ठात्री देवी जलमेंसे हाथ बाहर निकालती थी, तब यहांके निवासी उनके हाथ पर नारियल रखदेतेथे, किन्तु एक दिन देवीके जलसे हाथ निकाल

सत्ताईसवां अध्याय २७.



साहोर वा सोगराजाति:—उनका इतिहास और आचार व्यवहार:—गोकुलगढ़के डांकू:—गाडोरके सामन्त अर्जुनसिंह:—मारवाडका समतल क्षेत्र:—रूपनगरके सामन्त:— कुरुशीनस्वर्थीय इतिहास:—मेवाडके शीशोदियोंके साथ मारवाडके राठोरोंकी तुलना:—राजपूतोंके प्रमादमूलक इतिहासगाडोर:—राणाके दूत कृष्णदास:—मेवाड और मारवाडमें स्थानीय विभिन्नता:—प्राचीन विवादका कारण:— आओनला और बाबुल:—नादोल:—चौहानजातिकी श्रेष्ठता:—बानिन्दाके राणा:—आजमीरके लाखा:—उनका नादोलस्थ प्राचीन दुर्ग:—जैनियोंके वहांके स्मरणचिह्न:—हिन्दुओंके प्राचीन तोरण:—खोदितलिपि:—नादोलका प्राचीन इतिहास इन्दुरि:—वाणिज्य प्रधान नगर पाली:—वाणिज्यद्रव्यावली:—कवि और कारिकाकारगण:—"पुण्यागिरि" कुकुर्ना।—वाणिज्यद्रव्य लेजानेवाले दो सम्प्रदायोंमें विवाद:—भाटोंका निठुरतामूलक आत्मनाश:—आलमचन्द जोधपुरमें यात्रा।—पोकर्ण और निमाज इन दो सामन्तोंद्वारा रक्षणा:—दोनों सामन्तोंका जीवननाश:—निमाजके सुरतानका स्वार्थत्याग:—राजधानीमें वन्दीत्व स्थापन।—जोधपुरराजसभामें सम्मिलनाकी व्यवस्था।

———

…द्धि और कारीगरी भी यहांकी प्राकृतिक शोभाके अधिवासियोंने नदीके दोनों ओरके पर्वतके ऊपर २ …पायसे वहां जल पहुँचायाहै, तथा उस जलसे पर्वतके …है वहीं ईख, धान्य और रुई आदिकी खेतीका कार्य …त्र प्रदेशकी उत्पन्नहुई ईख अति उत्तम होतीहै, और …धिक आमदनी की है। किन्तु अब तीन वर्षसे एक …त्यकामें घुसआयाहै, इससे ईखको बहुत हानि पहुँचतीहै …। आकाशतक प्रकृति घोर अन्धकारमें घिरकर उपस्थित …डी श्रेणियोमें विभक्त है। एक श्रेणीका नाम कारका और …ामसे विख्यात है। पहली श्रेणी ही सबसे अधिक शस्य …पश्वपाल यहांके कृषिकार्यमें विशेष हानि पहुँचाताहै।

…। तीन पल्लियोमें विभक्त है, तथा प्रत्येक पल्लीमें एक सौ …है। यह ग्राम प्रसिद्ध "गणाराज" नामक पर्वतकी …है। जिस समय दुर्दान्त मुगल राणाको पराजित करके …समय राणा अपनी रक्षा करनेके लिये इस पहाडी मार्गसे …वत …ने घिरे हुए स्थानमें भागगये थे. इसही कारणसे यह स्थान …सकेतप …ात है, इस ग्राममें विख्यात राणा कुम्भके उत्तराधिकारी …हायीने …तहैं। कुम्भावत लोग अपने अधिनायकोंसहित मुझसे साक्षात …निमित्त …ये तथा यहांकी बनीहुई प्रसिद्ध कुकडी (एक प्रकारका पहाडी …पैर उठा …फिट लम्बी होतीहै,) घी और बकरीका बच्चा मुझे भेंटमें दिया। …ा नहीं थी, …और भूमियां लोगोंको लेनेके लिये उठा तथा उनकी गज थज …इच्छानुसार …सी होनेपर भी उनकी उत्पत्ति ऊंचे कुलमें जानकर सम्बर्द्धना की। …की शारीरिक शोभा बढानेके लिये अच्छी पोशाककी कुछ भी …हम लो… नहीं थी, क्योंकि उनकी आकृति ऐसी चित्ताकर्षक थी कि, मैं अनु… …सा ही …उनको देखकर बारम्बार "यह कैसे सुन्दरहैं?" ऐसी बात करने लगा. …ासे …वा और स्थूल शरीर, वीरमूर्ति. और लम्बी मूछोंकी सबने प्रशंसा की. …विप… । सिर पर केवल लम्बी पगडी और दुपट्टा धारण करतेहैं. अन्यान्य …ा श्रमजीवियोंकी समान [illegible] और [illegible] पहरतेहैं। …दी …से यह लोग [illegible] [illegible] निपुण होनेके निमित्त [illegible] …धारी सिपाही होतेहैं. किन्तु अब [illegible] इनका [illegible] [illegible]

सत्ताईसवां अध्याय २७.



साहीर वा सोनजातिः—उनका इतिहास और आचार व्यवहारः—गोकुलगढके डांकूः—गाडोरके सामन्त अर्जुनसिंहः—मारवाडका नन्दनवन क्षेत्रः—रूपनगरके सामन्तः— केन्दुरीसम्बन्धीय इतिहासः—मेवाडके शीशोदियोंके साथ मारवाडके राठोरोंकी तुलनाः— राजपूतोंके प्रसादमूलक इतिहासगाडोरः—राणाके दूत कृष्णदासः—मेवाड और मारवाडमें स्थानीय विभिन्नताः—प्राचीन विवादका कारणः— आओवला और बाघुलः—नाडोलः—चौहानजातिकी श्रेष्ठताः—चालिन्दाके राणाः—आजमीरके लाखाः—उनका नाडोलस्थ प्राचीन दुर्गः—जैनियोंके कर्मके स्मरणचिह्नः—हिन्दुओंके प्राचीन तोरणः—खोदितलिपिः—नाडोलका प्राचीन इतिहास इन्दुरीः—वाणिज्य प्रधान नगर पालीः—वाणिज्यद्रव्यावलीः—कवि और कार्यकारणः—"पुण्यगिरि" कहुर्लीः—वाणिज्यद्रव्य लेजानेवाले दो सम्प्रदायोंमें विवादः—भाटोंका निश्चलतामूलक आत्मनाशः—[illegible] सुनं सामा—पोकर्ण और निमाज इन दो सामन्तोंका सम्बर्धनाः—दोनों सामन्तोंका जीवनत्यागः—निमाजके सुल्तानका आत्मत्यागः—राजाओंके [illegible] [illegible] [illegible] सामन्तोंकी [illegible] ।

मंदिरमें उस वीरपुरुषकी अश्वारोही स्वरूपसे निर्मित प्रतिमा स्थापित है, इस कारण सहजमें ही जाना जासकताहै कि किसी साधारण ग्रामीण मनुष्यके स्मरणार्थ यह मंदिर नहीं बनाहै ।

" करवीर सरोवर" और खिरली ग्रामके निकट, दो मार्ग दो ओरको गयेहैं । वीर गुलामार्गमें होकर नाथद्वारे तक बराबर जाया जासकता है; दूसरा मार्ग चिराई और विख्यात चतुर्भुज देवके तीर्थस्थानकी ओर गयाहै; यात्रासमय हमारे चलनेके मार्गमें सहसा शिखरश्रेणी एकत्र होगई, इस कारण हम ओलद्वारसे होतेहुए कैलवाराकी ओर चलने लगे, और कैलवारा नगरसे डेढकोश उत्तरकी ओर एक समतलक्षेत्र आमके वनमें वस्त्रागार स्थापन किया । यहांकी उपत्यका क्रमानुसार विस्तृत हुईहै, तथा इस स्थानकी स्वाभाविक शोभा जैसी बनैली और असरल है, वैसी ही सुंदर दृढतापूर्ण है । वायु नापनेवाले यंत्रकी सहायतासे हमको ज्ञात हुआ कि यह स्थान उदयपुरसे हजार फिट और समुद्रसे तीन हजार फिट ऊंचा है; इसके ऊपर चारों ओर मोटी २ बहुतसी शिखरश्रेणियें खडीहैं । इस स्थानसे अनगिन्त झरने झर २ करते हुए पश्चिममें मारवाडको सींचते हैं और पूर्वमें मेवाडके सरोवर भरनेके लिये नाचते २ चलेगयेहैं । बाँध २ कर यहाँके "कङ्करोली" नामक छोटे सरोवरके निर्माणसे पहिले यह समस्त झरने मेवाडकी ओरकोही बहते थे, मरुक्षेत्रगामी झरनोंकी संख्या बहुत न्यून देखी जातीहै ।

राजाके निकटआत्मीय और कमलमीरके शासनकर्त्ता महाराज दौलतसिंहने बहुतसी लालपताका, तुरही और ध्वजदंडधारी अनुचरगण. और कविके संग मुझसे मुलाकात करने तथा किलेके भीतर जानेके निमित्त कईकोस आगे बढकर अगौनीकी शिष्टाचारकी रीतिके अनुसार हम दोनोंने ही घोडेसे उतरकर एक दूसरेका आलिङ्गन किया, फिर घोडोपर चढकर संग २ चलते हुए वहांकी सर्व साधारणकी परिवर्तित दशाके विषयकी बातोंमें तत्पर होगये । दौलतसिंह महाराणा भीमसिंहके बहुत निकटके रिश्तेदार और महाराजकी उपाधिसे भूषित होनेके कारण समान श्रेणीमें गिने जाते थे । राणाके कोई पुत्र नहीं था. इसी कारण महाराज शिवदानसिंहके पीछे इन्होंने मेवाडका सिंहासन ग्रहण किया । भ्रष्टाचार और निन्दनीय आचरण मेवाडके संभ्रान्त लोगोंके बीचमें जिन अल्प संख्यक कई लोगोंके ऊपर प्रबल प्रभुत्व विस्तारमें स्वभाव परिवर्तित और नैतिक बल विलुप्त करनेमें समर्थ नहीं हुआ. उनमेंसे एक यह भी थे । यह उनके

एक मीनानामसन्तकी कन्याके साथ अनलका विवाह हुआ और उस स्त्रीके गर्भसे चिताका जन्म हुआ चिताके वंशवाले माईरवाड़ाका सर्वोपरि एकाधिपत्य करते आयेहैं। चिताके जो उत्तराधिकारी लोग अजमेरकी उत्तर सीमामें रहतेहैं, पन्द्रह पुरुष हुए - जिस समय इस जातिके सोल्हवें पुरुषने अजमेरके हाकिमद्वारा मुसल्मानधर्म्ममें दीक्षित होकर दाऊदखाँ नाम धारण किया, उस समय यह लोग मुसल्मानजातिमें मिलगये। दाऊदखाँ आथुननामक गांवमें रहताथा उस कारण इस सम्प्रदायके सरदारोंका अधिपति "आथुनकाखाँ" इस नामसे विख्यातहै। आथुनके ग्रामोंमेंसे चाङ्ग, झक और राजसिनगर सबमें प्रधानहैं। अनलने भी एक मीनाकुमारीके साथ विवाह किया. इस सम्बन्धसे उसके बुड़ारनामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। बुड़ारके वंशवाले अपनी प्राचीन रीति नीति और धर्म्मकी बराबर रक्षा करते चले आतेहैं। बुडार, शाहिरवाडा, मन्डिला आदि नगर उनके प्रधान निवासस्थान हैं। यद्यपि इन मीनालोगोंके संगमें राजपूतोंका रक्त मिलनेसे उत्कर्षता आगई है, तथापि वे दुश्चरित्रता, अत्याचार, उपद्रव आदिके लिये बहुत दिनसे प्रसिद्ध हैं। विख्यात चंदबरदाईने लिखाहै कि, अजमेरके सुप्रसिद्ध राजा विशालदेवने इस मीनाजातिको ऐसा दमन किया कि वे लोग अजमेरकी सड़कोंपर जल ढोनेका कार्य्य करनेको वाध्य हुए। इससे प्रगट है कि इस जातिका बहुत कालसे दुर्दान्त स्वभाव था। अन्यान्य पहाड़ी जातियोंके समान इन लोगोंने जब अधीनताको त्याग दिया, तबसे ही अत्याचार करना आरंभ करदिया। अजमेरके चौहानोंके साथ मन्दरके पूर्वपुरुषोंके जबसे इन पूर्वोक्त प्रथम रणक्षेत्रमें गयेथे, तब उनके निकट गिरिनिवासी [illegible] भारी [illegible] निवास था है। [illegible] सबसे [illegible] सर्वोपरि निम्नलिखित [illegible] लिखेहैं,— "[illegible] दिल्लीश्वरी [illegible] लिखेहैं, [illegible] हुए। [illegible] आज्ञा दी कि [illegible] [illegible]

बनेहुए हैं। यह तीन तोरण ही दुर्गके ऊपरतक "जयतोरण" "निधनतोरण" तथा "रामतोरण" नामक शत्रुओंको दुर्गम तोरण बनी हुई है। भीतरकी सबसे अन्तिम तोरणका नाम "चौगानपोल" है। कमलमीरका शेष शिखर समुद्रतलसे ३३५३ फिट ऊंचा है। यहाँसे मैंने मरुक्षेत्रके बहुदूरवर्ती स्थानोंका प्रान्त निश्चय कर लिया। यहाँ ऐसे कितने ही दृश्य विद्यमान हैं; जिनका चित्र अंकित करनेमें लगभग एकमासका समय लगनेकी सम्भावना है किन्तु हमने केवल उक्त दुर्ग और एक बहुत पुराने जैनमन्दिरका चित्राङ्क न समाप्त करनेका समय पायाथा। इस मंदिरकी गढन प्रणाली सब प्रकारसे बहुत प्राचीन कालकी समान है। मंदिरके बीचमें केवल खिलानयुक्त ऊंची चोटीका विग्रह कक्ष (कमरा) है और उसके चारों ओर स्तंभावली शोभित गोल बरामदाहै। यह निश्चय ही जैनमन्दिर है, कारण कि जैनधर्म्मके संग हिन्दूधर्मका जैसा प्रभेदहै, हिन्दूमंदिरके संग इस मंदिरकी विभिन्नता भी वैसेही विद्यमान है। भारतवर्षके बहुतसे देवार्चक और शैवलोगोंकी अधिकाईसे कारीगरी कीहुई मंदिरावलीके संग इस जैनमंदिरकी तुलना करनेसे, अधिक विभिन्नता और इस मंदिरका सरल गठन और अनाडम्बरता दृष्टिगोचर होतीहै। मंदिरके बहुत प्राचीन होनेका प्रमाण उसकी कारीगरीकी न्यूनतासे ही प्रगट होताहै. और इस ही सूत्रसे हम स्थिर करसकते हैं कि जिस समय चन्द्रगुप्तके वंशधर राजा सम्प्रीति इस प्रदेशके सर्वश्रेष्ठ राजा थे (खिस्टजन्मके दो सौ वर्ष पहिले) उस समय यह बनाया गयाहै। किम्बदन्तीसे ज्ञात होताहै कि रजवाड़े और सौराष्ट्रमें जितने प्राचीन मंदिर आजतक विद्यमान हैं, वही उन सबके निर्माता हैं। मन्दिरके स्तंभोंका आकार और परिमाण दूसरे मन्दिरोंकी स्तंभश्रेणीके समान नही है. वरन् बिल्कुल अलग है, हिन्दु देव मंदिरोंके स्तंभ जिस प्रकारसे गठित और स्थूल होतेहैं यह वैसे न होकर पतले तथा नीचेसे ऊपरका भाग सूक्ष्म होगयाहै।

राजा सम्प्रीति चन्द्रगुप्तके वंशमें चार पुरुषोंके पीछे उत्पन्न हुए यह जैनधर्मावलम्बी और बक्तिथानके ग्रीक अधीश्वर सिल्यूकसके प्रियमित्र थे। सिल्यूकसके मेगास्थिनिसके लिखेहुए विवरणसे प्रगट होताहै कि. दोनोंमें अकृत्रिम मित्रता थी और जैनधर्मावलम्बी राजपूत राजाकी एक कन्याके संग सिल्यूकसका परिणय कार्य पूर्ण हुआ था। हस्तीयूथ और अन्यान्य उपहार द्रव्य पाकर सिल्यूकसने चन्द्रगुप्तके आधीन रहनेके लिये एक दल और सेनाको भेजा

जैनमंदिरसे नीचे पहाडी मार्गकी ओर दृष्टि करनेसे; केवल ध्वंसावशेष ही दिखाई देताहै। मैं केवल दो प्रधान देवालयोंका विवरण लिखताहूं। पहिला "मामा (माता) देवी" का अर्थात् देवगढकी जननीका मंदिर है। यह पहाडी मार्गकी ओर जानेवाले शिखरकी चोटीपर बनाहुआ है। चारों ओर स्थापित प्रधान और अप्रधान असंख्य देवमूर्तियोंके बीचमें मातादेवीकी प्रतिमा विराजमान है। सब प्रतिमा सफेद मर्म्मर पत्थरकी बनीहुई हैं, और प्रत्येककी ऊंचाई प्रायः तीन फिट है। यद्यपि शिल्पविद्याकी अवनतिके समय गत सात शताब्दीके बीचमें श्रेष्ठ भास्कर कार्य दो एक ही देखनेमें आयेहैं, किन्तु यह देवमूर्तियें बडे चमत्कार रूपसे बनाई गई हैं। मंदिरकी गढनप्रणाली सादी और बहुत प्राचीन है केवल एक बडे कमरेके भीतर देवमूर्तियें वेदी वा आसनके बदले भूमिमें ही चारों ओर सजी हुई हैं।

इन देवालयोंके सामनेवाले बडे आँगनके चारों ओर जो दृढ प्राकार खडा है, वहीं इस मंदिरका विशेष दर्शनीय अंश है। यह प्राकार काले मर्म्मर पत्थरका बना हुआहै, और इसके पाषाणखण्डोंमें देव देवीका विवरण खुदा हुआहै। यह इस कारण और भी दर्शनीय है कि, जितने राजालोगोंने आत्मगौरव-के निमित्त यह पाषाण लगवायेहैं; उन सबका विशेष विवरण भी इनमें खुदा हुआहै। किंतु प्राचीन तत्त्वसंग्रह करनेवालोंके लिये ऐसा शोचनीय दृश्य है। उन सैकडों पाषाण खण्डोंमेंसे एकभी पूरा नहीं है समस्त खंड विखण्ट अंश चारों ओर विच्छिन्न और ऐसे भावसे स्थापित हैं कि धनके लालची रुहेले अफगान इस भाईलके वंशवालोंने * उनके ऊपर मांस पात्र रखकर मांस भोजन किया।

मातादेवीका मंदिर छोडनेके पीछे उपत्यकाके दूसरी ओर पहाडी मार्गके कंठस्थित एक सामान्य स्मारकमंदिरने मेरी दृष्टिको आकर्षण किया। यह

---

* "इन्होंने प्रगट किया कि इजिप्ट (मिसर) के [illegible] इन्होंने पूर्वकी ओर भ्रमण करते २ अतने [illegible] जाकर विश्राम किया। इनमेंसे फिर किसीने प्रगट किया कि यह [illegible]। यह जाति नष्ट होगई है यह [illegible] हैनियोंका कार्य करते हैं। यह देखनेसे [illegible] आधीनमें लायकबो [illegible]। [illegible] दृष्टिसे देखतेहैं।

उसके अनुचर कल्पित आश्रयस्थानमें पकड़े गये तथा मध्यरजनीके आक्रमणसे उनका दलबल छिन्नभिन्न होगया. उस समय उन्होंने जिधर दृष्टि डाली उधर ही प्रत्येक पहाड़ी मार्गपर लालवस्त्र धारिणी सेनाको देखा; तब उनका साहस जाता रहा और क्षमा मांगनेको बाध्य हुए।

इस समय एक अंग्रेज सेनापतिके अधीनमें इस पहाड़ी मार्हार जातिका एक सेनादल तयार हुआ है और समयपर यही एक उपकारी सेना गिनी जावेगी इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। यद्यपि यह लोग उपद्रवकारी और अत्याचारी हैं, किन्तु गिरिमालाओंमें जो बांधका वर्णन किया है, यह लोग इसी प्रकारका बांध बंधन या खेतीका काम करेंगे। मार्हारवाड़में एक ऐसा जिला स्थापित हुआ है कि किसी समय इसके द्वारा राणाको लक्ष मुद्रा वार्षिक आय होसकेगी।

इन लोगोंके कितने ही आचार व्यवहार इनसे नीचेकी भूमिमें रहनेवाले भीलादिकोंकी अपेक्षा ऐसे विचित्र और विभिन्न हैं कि उनमेंसे कई एक वर्णन हम नहीं कर सकते हैं। भीलालोगोंका चरित्र और इतिहास आगे विस्तारके साथ लिखा जायगा. इस लिये इसी जगह उनके चरित्रके प्रधान अंग—मृत्यु—हरण संबंधमें कुसंस्कारादि वर्णन करनेकी इच्छा है; इस समय केवल विवाहके साथ उनके आचरणकी दो एक बातें लिखते हैं। मार्हारलोगोंके पूर्वजोंने जो नियम बांधा था, यह लोग आजतक उसी विधिका पालन करते हैं। यह

दुर्भाग्यताके कारण उक्त सेना उस समय जयलक्ष्मीका आलिंगन प्राप्त करनेमें असमर्थ होगई ।

राणा रायमलके तीसरे पुत्र जयमलने ताराके साथ विवाहका प्रस्ताव किया तब बिदनौरेके सूर्य (तारा) ने उत्तर दिया कि पहले थोडाका उद्धार करो पीछे मैं तुम्हारी हूंगी। जयमलने इस बातको स्वीकार करलिया, परन्तु इसके पहले कि वह अपना अभीष्ट सिद्ध करै ढिठाईके साथ ताराके पास जानेकी अभिलाषाके उद्योगमें होनेके कारण ताराके क्रोधी पिता राव सुरतानके हाथसे मारा गया. मृत जयमलका भाई पृथ्वीराज जो उस समय मारवाडमें देशनिकालेमें था, और जिसने गोद्वारको छुडाकर उसी समय अपने पौरुषको विख्यात किया था, और इसीसे अपने पिताकी दयाका पात्र होचुका था, बिदनौरकी दुःखमई अवस्थाने उसको इस बातपर आरूढ करदिया कि वह उस जयमलसे न होनेवाले प्रणको पूरा करै पृथ्वीराजका यश और भाटोंद्वारा उसकी की हुई प्रशंसा दूर दूर तक फैली हुई थी, ताराको उसका विख्यात नाम ही मोहित कर रहा था, और जब पृथिवीराजकी बडाई करनेवाले पुरुषने उससे यह कहा कि जिसभांति वह अपनी घुडसवार सेनाकी तयारी करताहै तथा उसकी रणकौशलता अनुकरणीय है, तब चौहानवंशी ताराबाईने अपने पिताकी आज्ञासे पृथिवीराजके संग उसी निश्चय पर विवाह करना स्वीकार करलिया कि वह उसका थोडा छुडा देगा नहीं तो वह सच्चा राजपूत नहीं है, अलीके पुत्रोंके धर्महेतु मरणके पारितोषकका समय उस कठिन कार्यके निमित्त निश्चय किया गया, पृथिवीराजने ५०० मनोनीत घुडसवारोंका एक दल एकत्रित करलिया, उसकी प्रियतमा सुन्दरी ताराने भी उनके यश और दुःखमें भागप्राप्त करनेके निमित्त उससे अनुरोध किया तब पृथ्वीराजने उसको साथ लिया, पृथ्वीराज उस समय थोडामें पहुंचा. जब कि ताजिया अर्थात् दोनों धर्मके हेतु मरनेवाले (हसनहुसैन) भ्राताओंका जनाजा आंगनमें रक्खा था. राजकुमारी ताराबाई और पृथ्वीराजका [illegible] [illegible] दलपति पर तीनो घुडसवार उनको छोडकर उन [illegible] [illegible], जब वह महलकी गोखके नीचे होकर [illegible] [illegible] [illegible] नीचे आनेके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

“[illegible]” के नामसे अथवा और भी प्राचीन पूर्वपुरुष “[illegible]” के नामसे [illegible] शपथ ग्रहण करतेहैं। दक्षिण प्रान्त निवासी माहीरगण भी अनेक [illegible] शपथ ग्रहण करतेहैं। वह लोग सूर्यके नामसे “सूर्यकान्तिगान” का [illegible] हैं। अथवा अपने योगी याजकनायकके नामसे “[illegible]” [illegible] लेतेहैं। मुसल्मान माहीरलोग उस समय शपथ नहीं खातेः किन्तु दक्षिण प्रान्त निवासी माहीरलोग सबकुछ खातेहैं, केवल अपने प्रतिवासी लोगोंके आदर्श और अपने प्राचीन योगी याजकनायकों प्रीतिके निमित्त गोमांस नहीं खाते। [illegible] पक्षियोंको वह लोग मुसल्मानोंके समझतेहैं। माहीरलोग जिस समय कहींके अभिप्रायसे बाहर निकलें उस समय यदि [illegible] और [illegible] बोलें तो उस दिन अपनी कार्य्य सिद्धि निश्चय ही समझते हैं। माहीरजातिका विवाह [illegible] लेकर उनको [illegible] तक [illegible]। [illegible]

प्राण जातेरहैंगे, और नहीं तो बादशाहको कोई दुःख देनेकी इच्छा नहीं है. केवल अपने पिताके चरणोंमें डालकर उसको स्वतंत्र करदिया जायगा, वहांसे बादशाहको सीधा चित्तौड लायागया. और राणाके सन्मुख खडा करके पृथ्वीराजने कहा कि अपने दीन अहदीको बुलाओ और उससे पूंछो कि यह कौन है, मालवेका बादशाह एक मास तक चित्तौडमें बन्दी रहा, और अपनी स्वतंत्रताके निमित्त अनेक घोडे देकर सम्मानसहित स्वतंत्र करदिया गया. पृथ्वीराज अपने निवासस्थान कमलमेरको चलागया, और इसी प्रकारके ऐश्वर्यशाली कर्म १३ वर्षकी अवस्थासे तेईस वर्षकी अवस्था तक करतारहा, यह कर्म इस देशके लिये आश्चर्यजनक घटनायें थीं, और भाटोंके वह परमप्रिय विषय थे।

जिसने इस भांतिसे ऐश्वर्य प्राप्त किया उससे कब आशा की जासकती है कि उसके भागमें अधिक दिन जीवित रहना हो इसका जीवन किसी तीर या खड्गसे शेष नहीं हुआ परन्तु विष द्वारा तब हुआ जब वह अपने भाई सांगाके भृत्यको बंधन कररहाथा, इस भृत्यके छिपे रहनेका स्थान उसके विवाहके कारण ज्ञात होगयाथा कि श्रीनगरके नायककी कन्यासे उसका विवाह होनाहै उस नायकने भयसे उसकी रक्षा की थी।

उसी समय उसको उसकी बहनका पत्र मिला जो बडे शोकके साथ लिखागया था, कि उसका पति सिरोहीकुमार उसके साथ अत्याचार करताहै इस आपत्तिसे बचनेके लिये वह पिताके यहां आना चाहतीहै जबसे वह अफीमका सेवन करनेलगाहै तबसे अपनी खाटके नीचे उसे पृथ्वीमें सुलाताहै पृथ्वीराज तुरंत चलपडा और आधी रातको सिरोहीमें पहुंचा और महलमें घुसकर बंदूककी नली अपने बहनोईके कंठमें रखकर उसकी निद्रा भंग करदी. उसकी स्त्रीने उसके अत्याचारपर ध्यान न देकर मनुष्यतासे दयार्द्र हो भाई पृथ्वीराजसे उसके प्राणदानकी भिक्षा मांगी पृथ्वीराजने उसको क्षमा किया. और यह कहा यदि वह दासभावसे अपनी स्त्रीके जूते शिरपर रखकर स्त्रीके समीप खडा हो और उसके चरणोंको स्पर्श करे तो क्षमा करूंगा, यह अपमानकी पराकाष्ठा थी उसने पृथ्वीराजकी आज्ञाका पालन किया और उसका अपराध क्षमा करदिया गया. पृथ्वीराजने उसे अंकभर लिया. और पांच दिन उसके यहां अतिथिरूपसे निवास किया. इस पाहुनको एक प्रकारके बहुत उत्तम लड्डू बनाने आतेथे, अपने सालेको विदाके समय उसने उसमेंसे थोडेसे दे दिये. कमलमेरके पास आकर पृथ्वीराजने उन लड्डुओंमेंसे एक दो खाये परन्तु जब मामादेवीके मंदिरके समीप आया तब

अथवा मैरजातिसे पशुओंको छुडाता मारागयाहै प्रत्येक समाधिपर एक वर्गाकार पत्थरमें मितीआदि लिखी हुई थी, कि वह वीर कब सूर्यलोकको गया अर्धरात्रिसे अधिक होचुकीथी और अब कोई आशा नहीं थी कि हमको अपनी क्षुधा शांत करनेको कुछ मिल सकैगा, डाक्टर डंकन और केप्टिन बौने हाथीपरसे झूल उतार ली, और उसमें लिपट गये. और सरदारकी समान उसके पासही वीर मनुष्योंके किसी स्मारक पर बैठ गये, मैं तुरन्त ही उनको चीते मैर भूंख और थकावट आदिके ध्यानकी सुखमई विस्मृतिमें छांड उस दलमें मिलकर उस कहानीको सुनने लगा जिसे वे कहकर अपनी आधी रातके समयको व्यतीत कर रहे थे, उसको मैं दूसरी बार कह भी सक्ता हूं, परन्तु उस दृश्यका चित्र खींचना चतुर चितेरेकी लेखनीका काम है यह सल्वेटर रोजाके करनेका काम था, केप्टिन बोका चित्र भी यदि उसको चित्रकारीका अवसर मिलता तो मुझको भलीभाँति प्रसन्न करदेता मेरे अनेक मित्रोंने इसी स्थानपर पहाडियोंसे युद्ध किया था. और इन छत्रियोंमें उनके कुटुम्बियोंकी भस्म दब रही थी, उन घटनाओंका लौटना इस शांतिके समयमें असंभव था, कारण कि भील और मैर शब्द अब लुटेरे वाचक नहीं रहे थे, इससे अच्छा अवसर पर्वतियोंके प्रसंगका और नहीं होगा, मैं पाठक महोदयोंको लौटाकर फिर कमलमीरके खण्डोंमें ले चलता हूं कि वहां जाकर राजस्थानकी अन्य जातियोंका इतिहास सुनें।

बन्धालयको घोडा फेर दिया। उसने आग्रह पूर्वक राणासे कुशल पूछी सामंत अजितसिंह एक श्रेष्ठ मनुष्य हैं: आयु ३० वर्ष, लम्बाशरीर, सुन्दर और साहसी राठौर घुड़सवारकी तरह वह घोडेपर बैठतेहैं । गढ़वार प्रदेशमें वाणिज्य प्रधान पाली और सेना निवास दुर्गको छोडकर गाडोरा सर्व प्रधान नगर है। इस धनधान्य सम्पन्न प्रदेशसे राणा पहिले चार सहस्र राठोरसेना युद्धके समय प्राप्त करते थे । यह सेना वेतनके बदलेमें विना करदिये भूमिको भोगते थे। मेवाड़के सोलह प्रधान सामन्तोंमें यह गाडोरा पति भी एक थे। यद्यपि कालक्रमसे यह प्रदेश मारवाडमें मिलायागया और उदयपुरके राणाके बदले मारवाडेश्वर स्वामी हुएहैं, किन्तु मेवाडपतिके ऊपर गाडोराके अधिनायककी प्राचीन राजभक्ति और प्रेम इतना प्रबल है कि वर्त्तमान ठाकुर अभिषेक समयमें अपने वर्त्तमान असली स्वामी मारवाडराज्यके बदले प्राचीन स्वामी राणासे अभिषेक असिबन्धन करालेते हैं । इस प्रगट राजभक्तिको देखकर मारवाडेश्वर बहुत क्रुद्ध हुआ और बदला लेनेके अभिप्रायसे गाडोराका प्राकार गिरा दिया। इसका यह कार्य्य निःसंदेह कलङ्कचिह्न है। अब भी जब कभी राणाका दूत आकर गाडोरापतिको कमलमीरमें जानेका स्मरण दिलाताहै वह तत्काल सम्मानसहित राणाकी आज्ञाका पालन करता है । शत्रुओंके कराल गालसे इस प्रदेशकी रक्षा करना गाडोरा वंशका बडा भारी कार्य्य है और प्रायः वर्त्तमान सर्दारके पूर्व पुरुषोंने गाडोरा रक्षाके लिये दुर्दान्त मुगलसेनाके विरुद्ध भयंकर संग्राम किया था, यहांतक कि किसी २ ने बड़ी भारी वीरता दिखाकर अपने प्राणतक देदिये. गाडोरा प्रदेश यद्यपि इस समय मेवाडसे अलगहै, तथापि राजपूत जातिके चिरप्रचलित सम्मान दिखानेका इतना अभ्यास है कि, अब भी गाडोराका सामन्त अथवा उनका कोई निकटका कुटुम्बी सभामें आवे तो पुरानी रीतिके अनुसार एक अनुचर चांदीका आसा हाथमें लेकर युद्धमें आगे आता है, पुराना नाम लेकर आह्वान—"कमलमीरका स्मरण करोगे" कहकर सम्मान दिखाता है। प्रवेश, प्रस्थान और दर्बारमें राणा अबतक पुरानी रीतिके अनुसार गाडोरापतिको आगे लेते । गाडोराका स्वामी राणाको समान सम्बन्धवालोंके नामसे "सोदर भाई" और सर्व साधारणमें "मेवाडका भतीजा" इस नामसे सम्मानके साथ पुकारा जाताहै। [illegible] करनेके लिये शासकने यहां [illegible] साथ [illegible] निश्चय किया, [illegible]

न्तरका परिचय देताहै; पुराने माहीर लोग भारतवर्षके प्रसिद्ध आरंभके अधिवासी मीना वा माहीना जातिसे उत्पन्न हैं; यह माहीरोत वा माहीरावत नामसे पुकारेजातेहैं । कमलमीरसे आजमीरतकके स्थानोंमें आरावलीकी जो शिखर श्रेणी विराजमान है, उसको ही माहिरवाडा कहते हैं, इसका परिमाण लम्बाईमें पैंतालीस कोश और चौडाईमें जगह २ तीनसौ दश कोश तक है । इस मनोरम्य दुर्गप्राकारस्वरूप शिखरश्रेणीका विवरण राजपूतानेके प्राकृतिक भूवृत्तमें विस्तारसे लिखदियाहै । यह समुद्रतटसे तीन सहस्रसे लेकर चार सहस्र फीट तक ऊंची उठी हुई है और अनेक प्रकारके प्राकृतिक पदार्थोंसे परिपूर्ण है । आरावलीके इस अंशमें वैज्ञानिक पर्य्यटक और तत्त्वानुसंधानकारी लोगोंके लिये अवश्य जाननेके योग्य इतने पदार्थ विद्यमान हैं कि सम्पूर्ण संसारके दूसरे किसी प्रान्तमें उतने नहीं हैं । इतिहास जाननेवालोंके लिये प्राचीन रहनेके मन्दिर दुर्गादिका लुप्त विवरणसंग्रह, आविष्कार, गवेषणा और उसके साथ प्राकृतिक विज्ञानके प्रत्येक विभागका विशेषतः उद्भिज्जतत्त्व और प्राणितत्त्व सम्बन्धी जाननेयोग्य बहुतसे विषय इस प्रान्तमें विराजमान हैं ।

माहीरजातिका सविस्तार विवरण, उनका आचार व्यवहार अप्रयोजनीय नहीं है किन्तु यहांपर उसको अनावश्यक समझकर ही हम केवल कई मोटी २ बातोंको लिखकर उस अभावको दूर करेंगे ।

माहीर लोग मीनाजातिके अत्यन्त प्रधान विभाग चिता नामक शाखासे उत्पन्न हैं । हम स्थानांतरमें इस जातिके वृत्तांतको विस्तारसे लिखेंगे । मीनालोगोंकी जेता जाति राजपूतोंकी समान अनेक शाखाओंमें विभक्त है । यह अनेक शाखाओंमें विभक्त पहाडी जाति अपनेको जेता राजपुरुषोंके साथ समश्रेणीसे उत्पन्न हुआ कहकर बडे गौरवके साथ परिचय देतीहै; किंतु इन बातोंसे उनके वंशका कलंक ही प्रगट होताहै । चितामीना लोग दिल्लीके अन्तिम चौहान सम्राट्‌के पौत्रको अपना आदि पुरुष कहते हैं । चौहानराजके भतीजे लाखाके अनल और अनूप नामक दो पुत्र थे । जयशाल मीरकी कई राजकुमारियोंके साथ उक्त वंशवालों का विवाहप्रस्ताव करके जयशालमीरराजने नारियल भेजा, किंतु कन्याओंके मातामह वंशके तत्त्वानुसंधानसे ज्ञान होताहै कि वह मीनाजातिकी एक कन्याके गर्भसे उत्पन्न हुई थीं; अतः वह शीघ्र ही अजमेरसे निकाली जाकर अपने मातामह वंशके लोगोंमें आश्रय लेनेको बाध्य हुई थी ।

समयमें आजायगा कि पैतृक भूस्वत्व अधिकार करनेके लिये राजपूत जाति कोई काम असाध्य नहीं है ।

राणा रायमलके पुत्रोंमें परस्पर कलह और दिल्ली मालवाधीश्वरको इ दोनोंके संग राणाके सदा संग्रामद्वारा बलपरीक्षा देखनेसे गदवार प्रदेशमें उनक स्वामित्व बडी अनिश्चित दशामें होगया । मीना और माहीरलोग इस प्रदेशके समतल भूमिमें रहते थे। इस प्रान्तकी पुरानी राजधानी नादोलके भूतपूर्व स्वाधीन चौहान राजगणके वंशधर पण्डद्वारा विशेष सहायता प्राप्त होती थी उक्त पण्डसेनाने द्वेसुरी अधिकार करलिया । उनको दूर करनेके लिये वीर पृथ्वीराजने शुल्वगढ़के सोलङ्की जातीय सामन्तकी सहायता ली । उक्त सा न्तके पुत्रके संग पण्डकी एक कन्याका विवाह हुआथा । गुप्त षडयंत्रजाल वि रसे निश्चय हुआ कि पण्डके भगानेमें सहायता करनेपर उक्त सामन्तको स्त्री सहित द्वेसुरी और उससे मिलीहुई सब भूमिका अधिकार दिया किन्तु निर्द्धार कर देना होगा । सामन्त पुत्रने इस बातको सहजमें लिया, और कार्य्योद्धारकी सहायताके लिये स्त्री सहित द्वेसुरीमें रहनेके वहा चला गया । किन्तु बहुत कालतक कोई अवसर नहीं मिला; अन्तमें एक पुत्रके साथ बालेचोंके सामन्त सागरकी एक कन्याका विवाह निश्चय

न्तरका परिचय देताहै; पुराने माहीर लोग भारतवर्षके प्रसिद्ध आरंभके अधिवासी मीना वा माहीना जातिसे उत्पन्न हैं; यह माहीरोत वा माहीरावत नामसे पुकारेजातेहैं । कमलमीरसे आजमीरतकके स्थानोंमें आरावलीकी जो शिखर श्रेणी विराजमान है, उसको ही माहिरवाडा कहते हैं, इसका परिमाण लम्बाईमें पैंतालीस कोश और चौडाईमें जगह २ तीनसौ दश कोश तक है। इस मनोरम दुर्गप्राकारस्वरूप शिखरश्रेणीका विवरण राजपूतानेके प्राकृतिक भूवृत्तमें विस्तारसे लिखदियाहै। यह समुद्रतटसे तीन सहस्रसे लेकर चार सहस्र फीट तक ऊंची उठी हुई है और अनेक प्रकारके प्राकृतिक पदार्थोंसे परिपूर्ण है । आरावलीके इस अंशमें वैज्ञानिक पर्य्यटक और तत्त्वानुसंधानकारी लोगोंके लिये अवश्य जाननेके योग्य इतने पदार्थ विद्यमान हैं कि सम्पूर्ण संसारके दूसरे किसी प्रान्तमें उतने नहीं हैं। इतिहास जाननेवालोंके लिये प्राचीन रहनेके मन्दिर दुर्गादिका लुप्त विवरणसंग्रह, आविष्कार, गवेषणा और उसके साथ प्राकृतिक विज्ञानके प्रत्येक विभागका विशेषतः उद्भिज्जतत्त्व और प्राणितत्त्व सम्बन्धी जाननेयोग्य वहुतसे विषय इस प्रान्तमें विराजमान हैं।

माहीरजातिका सविस्तार विवरण, उनका आचार व्यवहार अप्रयोजनीय नहीं है किन्तु यहांपर उसको अनावश्यक समझकर ही हम केवल कई मोटी २ बातोंको लिखकर उस अभावको दूर करेंगे।

माहीर लोग मीनाजातिके अत्यन्त प्रधान विभाग चिता नामक शाखासे उत्पन्न हैं। हम स्थानांतरमें इस जातिके वृत्तांतको विस्तारसे लिखेंगे। मीनालोगोंकी जेता जाति राजपूतोंकी समान अनेक शाखाओंमें विभक्त है। यह अनेक शाखाओंमें विभक्त पहाडी जाति अपनेको जेता राजपूतोंके साथ समभावसे उत्पन्न हुआ कहकर वडे गौरवके साथ परिचय देतीहै; किंतु इस बातसे उनके वंशका कलंक ही प्रगट होताहै। चितामीना लोग दिल्लीके अन्तिम चौहान सम्राट्के पौत्रको अपना आदि पुरुष कहते हैं। चौहानराजके भतीजे आशाके अनल और अनूप नामक दो पुत्र थे। जयशाल मीरकी कई राजकुमारियोंके साथ उक्त वंशवालोंका विवाहप्रस्ताव करके जयशालमीरराजने नारियल भेजा; किंतु कन्याओंके मातामह वंशके तत्त्वानुसंधानसे ज्ञान होताहै कि वह मीनाजातिकी एक कन्याके गर्भसे उत्पन्न हुई थीं; अतः वह शीघ्र ही जयसलमेरसे निकली जाकर अपने मातामह वंशके लोगोंमें आश्रय लेनेको बाध्य हुई थी।

भी प्रत्येक संभ्रान्त राजपूतकी समान चतुर पाया। इस प्रकारकी मीठी बात चीतके पीछे जो लोग उनके मनको जाननेमें समर्थ हैं, वह अवश्य इन सामंत लोगोंके शिक्षा और ऊंचे ज्ञानकी प्रशंसा करेंगे। मैं केवल इन गाडोरके अधिनायककी ही नहीं किंतु सामंतमात्रकी ही बात कहताहूं। क्रमसे संघटित घटनाओंके प्रधान प्रधान विवरणको यदि इतिहास कहा जाय तो सम्पूर्ण राजपूत उस इतिहासको जानते हैं। क्योंकि वह लोग अपने पूर्व पुरुषोंका वीरत्व विलासादि भलीभांति वर्णन करतेहैं, और अपने बहुत पुराने अधीश्वरोंके शासनकालकी घटनायें (जिनका कि उनके समाजके साथ संबंध है) अच्छी तरह जानते हैं। उन्होंने इतिहास-की पुस्तक वा इतिहास जाननेवालोंसे यह ज्ञान पाया है, इसका अनुसन्धान करना अनावश्यक है। यह इतिहासज्ञान केवल उनकी मूर्खता और अज्ञानताको ही दूर नहीं करताहै किन्तु जो लोग जातीयचरित्र समालोचक हैं, उनको सगवर्गका परिचय भी देताहै।

२८ वीं अक्टूबर—बहुत सवेरे ही यात्राका आरंभ करदिया। ठाकुरके राज्यमें होकर जाते समय उन्होंने सहायताके लिये अपने एक विश्वासी मनुष्यको मेरे पास भेजा। आरावली शिखरमालाके पार होजानेके कारण हम लोगोंको चारोंका दृश्य दिखाई दिया। गढ़वारेके उर्वर समतल क्षेत्रजोंत्यों ओरसे भी हमारी दृष्टिके मार्गको नहीं रोका। हम गाडोरके पार्श्ववर्ति चलने लगे। दुर्ग और महलोंसे ही ऊंची चोटियां और द्वारशृंग, और गाडोरकी अत्यन्त अपमान जनक हीन अवस्थाको जनारहेथे। [illegible] सामन्तलोगोंने पीछे पुराने स्वामी मेवाड़के राणाकी अधीनता स्वीकार—[illegible] प्रदेशको मेवाड़में मिलादियाथा. इस कारण बीस वर्ष पहिले मारवाड़के [illegible] राणा भीमसिंहने उस प्रकारसे गाडोरके नगर प्राकार और दुर्गादि तुड़वा[illegible] वारण यह प्रदेश इस समय जिस प्रकार मारवाड़राजमुकुटकी एक उज्ज्वल म[illegible]

उसका पालन किया। शुभलक्षणोंके बिना मीनाजाति कभी आगे चरण नहीं धरती,-उनका बाण छोडना अव्यर्थ है,-शरीर इन्द्रवज्रके समान है और वह लोग प्राणपणसे प्रतिज्ञाका पालन करते हैं-वह मन्दौरके सम्मान और भूरक्षक स्वरूप हैं, आजकल उनके दुर्गकी चोटीपर स्वाधीनताकी जयपताका उड रहीहै-समतल स्थानोंसे बहुतसा द्रव्य लूटकर वह अपने स्थानोंमें लाते हैं। गिरिपथके अन्धेरे स्थानमें उस जातिके चार सहस्र वीर अर्द्धचन्द्राकार धनुर्बाण सहित अति-छिपे स्थानमें विषधर सर्पके समान चुपचाप शत्रुओंके आनेकी प्रतीक्षामें बैठ गये।"

"चौहानके पास समाचार आया कि अत्यन्त साहसी मीनालोग धनुष बाण हाथमें लिये पहाडी मार्गपर खडे हैं। बलात्कारसे उस स्थानको भेदकर जानेका किसे साहस होगा? भूखासिंह अपने लक्ष्य पशुको देखनेके समय जैसे महा क्रोधके साथ तर्जन गर्जन करताहै, उसको भी वैसा ही भयानक क्रोध आगया। उसने साहसी काणाको बुलाकर उन हतभाग्य मीनालोगोंको उचित दण्ड देनेके लिये और पहाडी मार्ग साफ करनेकी आज्ञा दी। पर्वतके समान अटल काणा मस्तक नवाकर विदा हुआ और अभीष्टकार्य्य साधनेके लिये अग्रसर हुआ। यद्यपि ससैन्य काणाने आगे वढनेमें देर नहीं की थी, तथापि इस अवसरमें मीना-लोग सुमेरुकी समान अचलभावसे स्थित होगये। देवराज इन्द्रके वज्रकी समान उनके बाणोंने साक्षात् मृत्युके समान निकलकर सूर्य्यके प्रकाशको ढक लिया। प्रबल वायुके लगनेसे वृक्षसमूह भयानक शब्दसे जैसे उखडते हैं, उसी प्रकार उनके बाणोंसे विधकर घुडसवार लोग एक२करके गिरने लगे और उनके साथ ही कवच और अस्त्रादिकोंकी विचित्र ध्वनि रणक्षेत्रमें सुनाई देने लगी। काणेने घोडेसे उतरकर शत्रुओंके साथ खड्गयुद्ध आरम्भ करदिया। जलते हुए अग्निकुण्डसे बचनेकी इच्छासे पक्षीगण जिस प्रकार पंख फैलाकर आकाशमें उडनेकी चेष्टा करतेहैं; वैसे ही उस प्रधूमित रणक्षेत्रमें पक्षपुच्छ बाण आकाशमें उठने लगे। जैसे मीनालोग जालके छिद्रोंमें होकर भागजातेहैं, वैसेही सैनिकोंके हृदय विदीर्ण करके बाण वर्षा पीठद्वारा निकलने लगी। पिशाचगण रक्तकी नदीमें बडे आनन्दसे नाचने लगे।"

पहाडी वीर नेताने काणाके साथ युद्धमें प्रवृत्त होकर एक अस्त्राघातसे ही उसको विचलित कर दिया, किन्तु कुछ क्षणमें ही काणाने खड्गकी एक चोटसे ही उस वीरनेताको भूतलशायी करदिया. [illegible]

कहा ? यहां इस बातका लिखना आवश्यक है । प्रधान मूलघटना इतिहासमें कई जगह लिखी हुई है, इस कारण कविकी लेखनीसे निकलीहुई उक्त उद्धृत कविता किस कारणसे सीमानिर्द्धारण सबसे बडा प्रमाण मानागयाहै? पाठकोंके द्वारा लिखित उस विवरणको मैं बहुत संक्षेपसे लिखनेका अभिलाषी हूं। यह कविता बहुत काल पहिलेसे एक वंशधरसे दूसरे वंशधर तक क्रमसे अतीत इतिहासका प्रमाणस्वरूप प्रचलित होतीआईहै । चौदहवीं शताब्दीके शेष भागमें चन्दावत सम्प्रदायके आदि पुरुषने चण्डमन्दरके अधीश्वर रणमलकी कीहुई विश्वासघातकताके दण्डमें उसका जीवन नाशकरके उक्त राजधानी और राठोर लोगोंका सम्पूर्ण प्रदेश (उस समयमें राज्य बहुत छोटा था) कई वर्ष तक अपने अधिकारमें रक्खा । मन्दोरेश्वरके उत्तराधिकारी आरावलीकी दुर्गम गुफाओंमें छद्मवेषमें छिपेहुए रहतेहैं: उस समय उसने भूलसे भी अपने मनमें नहीं विचाराथा कि मेरा नाम एक वंशका आदिपुरुष मानकर लिखा-जायगा, वह अपने वंशका दूसरा राज्यस्थापक माना जाकर सब जगह सम्मा-नित होगा और मन्दोर उस नवीन राज्य जोधपुरमें मिलाया जायगा । मन्दोर प्रदेश मेवाडके अन्तर्गत होनेके समयको जब बहुत वर्ष बीतगये, तो दोनों पक्षने विवादके मूल कारणको विस्मृतिके जलमें छोडदिया। मेवाडका अभाव व्यवहार राणा राजपूतजातिकी निर्द्धारण की हुई आयुमें आया; इधर निकाला हुआ जोध कई घुड़सवारोंके संग मारवाडके कई स्वाधीन मनुष्योंके अनुग्रहसे जीवन धारण करनेलगा। एक दिन जोधके एक चारण वा कविका साक्षात हुआ; कवि-वरने भविष्यत् वक्ता रूपसे परिचित होनेकी आशा न करके उससे कहा कि निर्णयकी राजमाताके अनुरोधसे राणाने तुमको मन्दोर लौटादेनेकी इच्छा

"चंदकविने अपनी कविताको अत्युक्तियोंसे रँगाहै" यह बात मानलेनेपर भी यह अवश्य मानना होगा कि वर्त्तमान उन्नीसवीं शताब्दीमें माहीरलोग जैसे असीम साहसी और दुर्द्दान्त लुटेरे कहे जातेहैं, बारहवीं शताब्दीमें वह ठीक वैसे ही थे। मुगलोंके शासनमें वह एक २ वेर शिरनवाकर फिर शिर उठाते चलेगये यहांतक कि जब महाराष्ट्र जाति इस प्रदेशमें आई तबसे माहीर लोगोंने फिर सम्पूर्ण शक्तिका सञ्चय करके अपने शासक राजपूतोंके संग अत्याचार उपद्रव करना आरंभ किया। किन्तु सन् १८२१ ईस्वीसें जब उनका भीषण आत्याचार उपद्रव निवारण करना अत्यन्त प्रयोजनीय होगया, तब उनके दमन करनेके निमित्त सेनाके तीन दल भेजे गये, उनसे परास्त होकर सबने अधीनता स्वीकार की, किन्तु उससे बुडार और चित्ताके वंशवाले अनेक लोग व्यक्तिगत-सम्पत्तिगत क्षतिग्रस्त हुए थे। कई शताब्दीतक इनमेंसे बहुतसे पहाडी माहीरलोग देशवासियोंको महाभयके कारण होरहेथे। हमने सहजसें ही उनको दमन और वशमें कर लिया, यह देखकर हमारे मित्रोंने बडा आश्चर्य माना। माहीरलोग अपनी रक्षाके लिये जिस भावसे खडे होतेहैं, वह बिलकुल साधारण है: राजपूतलोग जो इतने समयतक उन क्षीणबल पहाडियोंके अत्याचार उपद्रवको सहते रहे यह उनके लिये लज्जाकी बात है। माहीर, महाराष्ट्र, पिण्डारी और पठानलोग किस कारणसे बलवान और प्रताप और प्रभुत्वके प्रकाश करनेमें समर्थ हो उठे थे, यह बात गूढतत्त्वानुसंधानसे सहजमें ही जान लीगई अर्थात् राजवाडाके राजपूतोंमें आत्मविग्रह और राजनैतिक विप्लव ही इसका मूल कारण है। उक्त चारों जातियोंने सामान्य लूट मार करनेवालोंके रूपसे राजपूतोंके आत्मविग्रहकी सहायतासे मस्तक उठाया। जब मेवाडके सामन्तगण पहाडी माहीरोंके दमन करनेके लिये एकत्रित होते, तब मारवाडके सामन्तलोग उनको आश्रय और सहायता देते: मारवाडियोंके लिये सब समय शरणागतोंके आश्रय देनेमें प्रस्तुत रहते थे. इस लिये वह मारवाडके शासन या अधिनायक लोग उन सम्प्रदायोंसे धन लेने और उनको आश्रय देनेमें [illegible] नहीं होते थे। किन्तु जिस समय अंग्रेजी सेना इन माहीरोंके [illegible] करनेके लिये आगे बढी थी, तब इनको [illegible] नहीं मिली। [illegible]

[illegible]

गढवार प्रदेश मेवाडके राज्यान्तर्गत होजानेसे उसका बदला अन्य प्रकारसे पूरा होगया। चण्डपुत्र मञ्ज सीमान्तके आँवलापूर्ण प्रदेशमें मारागया था, इस कारण पुत्रके प्राणनाशके पीछे वह प्रदेश राणाके अधिकारमें आजानेसे वह उसे प्रसन्न हुआ, मेवाडवासी लोग भी वैसेही इस आँवलेको अपने गौरवका बढानेवाला समझनेलगे। मन्दिरोंसे जितने खुदेहुए पत्थर मिलेहैं,वह सब ही इस प्रचलित जनश्रुति वाक्यके समर्थक हैं।

यद्यपि इस समय खेतोंसे सब अन्न संचित करलियाथा, और अधिवासियोंकी सामान्य बचीहुई धनसम्पत्तिमें लूटने और अत्याचार करनेके चिह्न भी हमने देखे, और अमीरखांके नरपिशाचस्वरूप अनुचरोंने अधिवासियोंके जो अकथनीय अत्याचार कियेथे उनमेंसे बहुत सी बातें सुनीथीं, तथापि मेवाडके साथ तुलना करनेपर मैं इस प्रदेशको ही उत्तम समझताहूं। आरावली शिखरसे जो अगणित नदियें निकलकर लूनी अर्थात् लवणाक्त नदीमें मिलीहैं, यात्राके समय उनमेंसे कई नदियोंको हमने पार कियाथा। ग्राम बडे और अधिक प्रजासे भरेहुए हैं; किन्तु मेवाडके किसान लोग दरिद्रदशामें होनेपर भी जैसे प्रसन्न दिखाई देतेहैं, इस स्थानके किसान वैसे नहीं हैं; मानो निर्जीव और अन्तःसार शून्य हैं। मेवाडमें जैसी शोचनीय दशा—प्रतिक्रियाके समय अतिक्रम करतीहै, मारवाडमें अब उस प्रतिक्रियाका समय उपस्थित है। मारवाडेश्वरके हृदयमें इस समय अतिआग जलरही है, इधर चतुर प्रधान मंत्री राजाको अपने हस्तगत करके अपनी स्वार्थसिद्धिके साथ २ मारवाडको अवनतिके समुद्रमें डुबाना चाहताहै, अतः साधारण प्रजा जनसाधारणमें सो इस शोकदायक अवस्थाके कारणसे ही दुःखी और निरानन्द है।

मुझको ज्ञात हुआ कि केवल यह लोग ही विधवा विवाह करतेहैं ऐसा नहीं किन्तु अति प्राचीन कालसे ब्राह्मण और राजपूत जाति भी विधवा विवाहमें कोई दोष नहीं मानती * गिह्लौटगणके मेवाडमें राज्यविस्तार करनेके वहुतकाल पहिले जो याजक नागद ब्राह्मणलोग इस नगरमें आकर वसेथे उनमें इस प्रथाका प्रचलन रहाहै । जिन राजपूतोंमें इस विधवा विवाहकी प्रथा प्रचलित है वह सब इस स्थानके अतिप्राचीन निवासियोंके वंशधर हैं और इस समय राजपूतानेमें भूमिया नामसे कहे जातेहैं । पुराने काव्य-ग्रन्थोंमें जो चिनानो, खारवार, उत्ताइन, दया आदि जातिका नामोल्लेख और इतिहास लिखाहै, यह लोग उनके ही वंशमें उत्पन्न हैं, आरावली शिखरके स्थान २ में इस जातिके किसी २ मनुष्यको अब भी निवास करते देखा जाताहै । किन्तु यह विधवा विवाह इस प्रदेशमें इतना अप्रकाशित बोध होताहै कि नारीजाति सम्बन्धनीय वर्त्तमान विधिव्यवस्था और भी आधुनिक ब्राह्मण मण्डलीके द्वारा राजपूत समाजमें प्रचलित हुई है । माहीर लोगोंमें विवाहबन्धन जैसे सहज उपायोंसे सम्पादित होताहै, वैसेही सहज उपायोंसे उस बंधनका विच्छेद भी होजाताहै । यदि स्त्रीपुरुषोंमें परस्पर एक दूसरेका मन फटजाय, अथवा और किसी विशेष कारणसे परस्परका चिर विच्छेद आवश्यक हो तो स्वामी अपने दुपटेका कुछ हिस्सा फाडकर स्त्रीके हाथमें देकर अपना स्वामी स्त्री सम्बन्ध छुडालेगा । त्यागीहुई स्त्री वह वस्त्रका टुकडा हाथमें ले शिरपर जलसे भरे दो कलश तलेऊपर रखकर जिस मार्गमें इच्छा होगी उसीमें चली जायगी, और जो पुरुष पहिले उस त्यागीहुई स्त्रीके शिरसे जलकलश उतारना स्वीकार करेगा स्त्री उसकोही अपना भावीपति समझेगी । यह स्त्री त्याग प्रथा केवल मीनालोगोंमें ही प्रचलित नहींहै किन्तु जाट गूजर, अहीर, माली और अन्यान्य वनैली शूद्र जातियोंमें भी भलीभांति प्रचलित है । "जहर लेआउर निकला" अर्थात् "कलश लेकर चलीजाओ" यह बात मालीरवागके पहाडियोंमें साधारण रीतिसे व्यवहार की जातीहै ।

इन लोगोंका देवाराधन, शपथग्रहण और अभिनन्मान वडान वडा विचित्र है । मुसलमान धर्म्मावलम्बनमें "अल्ला" के नामने वा प्रथम विधर्मी [illegible]

---

* [illegible]

गढवार प्रदेश मेवाडके राज्यान्तर्गत होजानेसे उसका बदला अन्य प्रकारसे पूरा होगया । चण्डपुत्र मञ्ज सीमान्तके आँवलापूर्ण प्रदेशमें मारागया था, इस कारण पुत्रके प्राणनाशके पीछे वह प्रदेश राणाके अधिकारमें आजानेसे वह जरा प्रसन्न हुआ, मेवाडवासी लोग भी वैसेही इस आँवलेको अपने गौरवका बढानेवाला समझनेलगे । मन्दिरसे जितने खुदेहुए पत्थर मिलेहैं.वह सब ही इस प्रचलित जनश्रुति वाक्यके समर्थक हैं ।

यद्यपि इस समय खेतोंसे सब अन्न संचित करलियाथा, और अधिवासियोंकी सामान्य बचीहुई धनसम्पत्तिमें लूटने और अत्याचार करनेके चिह्न भी हमने देखे, और अमीरखांके नरपिशाचस्वरूप अनुचरोंने अधिवासियोंके जो अकथनीय अत्याचार कियेथे उनमेंसे बहुत सी बातें सुनीथीं, तथापि मेवाडके साथ तुलना करनेपर मैं इस प्रदेशको ही उत्तम समझताहूं । आरावली शिखरसे जो अगणित नदियें निकलकर लूनी अर्थात् लवणाक्त नदीमें मिलीहैं, यात्राके समय उनमेंसे कई नदियोंको हमने पार कियाथा । ग्राम बडे और अधिक प्रजासे भरेहुए हैं; किन्तु मेवाडके किसान लोग दरिद्रदशामें होनेपर भी जैसे प्रसन्न दिखाई देतेहैं, इस स्थानके किसान वैसे नहीं हैं मानो निर्जीव और अन्तःसार शून्य हैं । मेवाडमें जैसी शोचनीय दशा—प्रतिक्रियाके समय अतिक्रम करतीहै, मारवाडमें अब उस प्रतिक्रियाका समय उपस्थित है । मारवाडेश्वरके हृदयमें इस समय अतिआग जलरही है, इधर चतुर प्रधान मंत्री राजाको अपने हस्तगत करके अपनी स्वार्थसिद्धिके साथ २ मारवाडको अवनतिके समुद्रमें डुबाना चाहताहै, अतः साधारण प्रजा जन्मभूमिकी इस शोकदायक अवस्थाके कारणसे ही दुःखी और निरानन्द है ।

शीतल और आच्छादित स्थानमें डेरा स्थापित होनेपर हृदयमें स्वयं ही संतोष उदय होताहै; नाडोलनामक स्थानमें हमने उस आनन्दको भोगा । यहां भी हमने लिखनेयोग्य इतनी सामग्री देखी कि मौन होकर बैठना असंभव होगया । पाठकोंको यह हमारे थोडे लेखसे ही प्रसन्न होना चाहिये । नाडोल [illegible] प्रदेश मरुस्थलीके कारण यद्यपि अब भी प्रधान गिनाजाताहै, किन्तु यहां इस प्रदेशकी राजधानी था ऐसा चिह्न कुछ नहीं दिखाई देता । [illegible] [illegible] नाडोल नगरके [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

तक झालोरमें राज्य किया । उक्त सामन्त पहिले मारवाडके अधीन था, किन्तु अत्यंत औद्धत्यके कारण मारवाडेश्वरने उनको निकाल दिया, तब उन्होंने आरावली शिखरके दुर्गम स्थान अतिप्राचीन गोकुलगढके ध्वंसावशिष्ट दुर्गमें आश्रय लिया, और चारों ओरके निवासियोंको भय देने लगे । दुर्गम भयानक मार्गोंको वह लोग भलीभाँति जानते थे इस कारण कोई भी उनको नहीं पकड सका । वह अत्याचार उपद्रव करके जितनी धन सम्पत्ति लूटकर लाते, देवगढ़का सामन्त भी उसमें अंशभागी था; क्योंकि वह लोग देवगढ़के अधीनस्थ प्रदेशोंमें ही लूटमार करते थे; इस कारण उनको किसी दूसरेके द्वारा बंदी होनेका कुछ भय न था । पकडने वा इनके आश्रय स्थानसे इनको दूर भगानेके सब उपाय व्यर्थ हो जाते थे । इन शनिगुरु जातीय डॉकुओंका शेष अत्याचार बहुत कठोर है । एक समय कोई मनुष्य विवाहके पीछे नई विवाहिता स्त्रीको लेकर गदवाराके मार्गसे जा रहाथा, उस समय यह लोग उन दोनोंको पकडकर गोकुलगढ़में लेआये । वर और कन्या दंडस्वरूप धन देनेमें असमर्थ होनेके कारण बहुत दिनोंतक कैदमें रहे । इनको पकडनेके लिये मनुष्योंका एक दल छिपाहुआ रहता था, परन्तु यह लोग समाचार पातेही वहांसे भाग जाते थे, पीछे शून्यस्थान देखकर वह लोग लौट आते थे । इस स्थानमें ऐसी दस्युता बहुत स्थानोंमें देखी गई है । पकडनेके पीछे निकाल देना ही शेष दण्ड निश्चय हुआ निर्वासन दण्डाज्ञा प्राप्त अपराधी पकडा जाकर अधिपतिके सामने लाया जाता है. फिर काले वस्त्र पहराकर कालीजीनसे कसे हुए घोडेपर चढाते हैं और ढाल तलवारको अपमान जनक काले रंगसे रंगकर राज्यसे बाहर निकाल देते हैं । यह प्रथा बहुत पुरानी है ।

हम लोग अपने मेवाडी बंधुओंसे इसी प्रकारकी बातें करते हुए अपने गंतव्य बनैले मार्गके ढाईकोश समाप्त कर गये. इस समय गाडोंगके अधिनायकने अनुचरों सहित अपने भूतपूर्व प्राचीन स्वामी राणाको सम्मान दिखाकर परम सम्मान किया। परिणाममें आत्मविपद और अपने स्वामीके कुछ देनेकी शंका होनेपर भी उसने राजपूत जातिकी स्वभाव सुलभ सरलताके वशीभूत होकर जिस भावसे मेरा अभिनंदन किया उससे मैं बहुत प्रसन्न हुआ और उसको मैं बहुत बडा सन्मान समझता हूं । घांडेने उतरकर सादर आलिंगन किया, फिर इस प्रदेशके अतीत इतिहास मारवाडेश्वर और राणाके

किया, इस कारण वह लूटनेकी आशा छोड शिरपर कलङ्क लेकर भागा। फिर महमूद नादोल होकर नाहरवाला और सोमनाथको गया। नादोलेश्वरने बडी वीरतासे महमूदके साथ युद्ध किया। मैंने सौभाग्यसे इस नादोलेश्वर सुविख्यात लाखाके नामकी एक खुदीहुई लिपि पाई। उसमें लिखाहै कि लाखाही अजमेरसे आईहुई इस चौहान शाखाका आदि पुरुष है। सम्वत् १०३९(सन९८३ ई०) में वह नादोल अजमेरको कर देता था। लाखाने जो दुर्ग बनायाहै वह नगर पश्चिमी शिखरके ढालू स्थानपर बना है। उसमें बहुत प्राचीन कालकी रुचिका परिचायक ऊंची चोटीवाला चौकोण दुर्ग बना है। पर्वत जिन विचित्र पत्थरोंसे आच्छादित है, दुर्ग भी उन्हीं पत्थरोंसे बना हुआ है। एक दूसरी खोदित लिपि मेरे हाथ लगी है, वह सम्वत् १०२६ (सन् ९६८ ई०) की है. उसमें लिखाहै कि लाखा मेवाडेश्वर राणा भीमसिंहके पूर्वपुरुष आइतपुरके शक्तिकुमारके समयमें थे। वह नगर भी महमूदके पिताने नष्ट किया ऐसा अनुमान है। चौहान कविने अपनी लेखनी द्वारा राओ लाखाके वीरत्व विक्रमकी बहुत प्रशंसा करते हुए इस स्थानपर लिखा है कि " वह अनहलवाडाके शेष प्रवेश द्वारसे शुल्कसंग्रह कर लेते थे. और चित्तौरके अधीश्वर उनको कर देते थे। बहुत मन्दिर और दुर्गादिके जितने ध्वंसावशिष्ट दिखाई देते हैं तुलिकाके सिवाय उन सबका वर्णन करना असम्भव है। इस स्थानके प्रत्येक पदार्थसे मालूम होता है कि एक समय जैनधर्मका इस स्थानपर बडा प्रभुत्व रहाथा। जैनियोंके धर्मकी समान शिल्पकार्य्य भी शैवोंसे बिलकुल अन्य प्रकारके थे।" जिनके चिह्न अब तक पाये जाते हैं। जैनियोंके चौबीस देवताओंमेंसे अन्तिम देव महावीरका मन्दिर अतिरमणीय शिल्पकार्य्यका आदर्श स्वरूप है। इस मन्दिरके गुम्बजकी आकृति प्रत्यजगतके अतिप्राचीनकालके गठनकी समान [illegible] स्थापित स्तम्भोंके मन्दिर निर्माणके बहुत पहिले ऐसी गठन प्रणालीका आरंभ हुआ होगा। महावीरके मन्दिरके सामनेका तोरण बडी विचित्र कारीगरीसे खोदा गया है, और वहां कई पाषाण प्रतिमाओंका भास्कर कार्य्य भी परम रमणीय है। यह सब प्रतिमायें [illegible] नदीसे निकालकर यहां स्थापित कीगई हैं। जिस समय महमूद आक्रमणके [illegible] उस समय उनके भयसे [illegible] प्रतिमा [illegible]

[illegible]

तक झालोरमें राज्य किया । उक्त सामन्त पहिले मारवाडके अधीन था, किन्तु अत्यंत औद्धत्यके कारण मारवाडेश्वरने उनको निकाल दिया, तब उन्होंने आरावली शिखरके दुर्गम स्थान अतिप्राचीन गोकुलगढके ध्वंसावशिष्ट दुर्गमें आश्रय लिया, और चारों ओरके निवासियोंको भय देने लगे । दुर्गम भयानक मार्गोंको वह लोग भलीभाँति जानते थे इस कारण कोई भी उनको नहीं पकड सका । वह अत्याचार उपद्रव करके जितनी धन सम्पत्ति लूटकर लाते, देवगढ़का सामन्त भी उसमें अंशभागी था; क्योंकि वह लोग देवगढ़के अधीनस्थ प्रदेशोंमें ही लूटमार करते थे; इस कारण उनको किसी दूसरेके द्वारा बंदी होनेका कुछ भय न था । पकडने वा इनके आश्रय स्थानसे इनको दूर भगानेके सब उपाय व्यर्थ हो जाते थे । इन शनिगुरु जातीय डॉकुओंका शेष अत्याचार बहुत कठोर है । एक समय कोई मनुष्य विवाहके पीछे नई विवाहिता स्त्रीको लेकर गदवाराके मार्गसे जा रहाथा, उस समय यह लोग उन दोनोंको पकडकर गोकुलगढ़में लेआये । वर और कन्या दंडस्वरूप धन देनेमें असमर्थ होनेके कारण बहुत दिनोंतक कैदमें रहे । इनको पकडनेके लिये मनुष्योंका एक दल छिपाहुआ रहता था, परन्तु यह लोग समाचार पातेही वहांसे भाग जाते थे, पीछे शून्यस्थान देखकर वह लोग लौट आते थे। इस स्थानमें ऐसी दस्युता बहुत स्थानोंमें देखी गई है । पकडनेके पीछे निकाल देना ही शेष दण्ड निश्चय हुआ निर्वासन दण्डाज्ञा प्राप्त अपराधी पकडा जाकर अधिपतिके सामने लाया जाता है, फिर काले वस्त्र पहराकर कालीजीनसे कसे हुए घोडेपर चढ़ते हैं और ढाल तलवारको अपमान जनक काले रंगमें रंगकर राज्यसे बाहर निकाल देते हैं । यह प्रथा बहुत पुरानी है ।

हम लोग अपने मेवाडी बंधुओंसे इसी प्रकारकी बातें करते हुए अपने गंतव्य बनैले मार्गके ढाईकोश समाप्त कर गये, उस समय गाडांगके अधिनायकने अनुचरों सहित अपने भूतपूर्व प्राचीन स्वामी राणाको सम्मान दिखाकर मेरा सम्मान किया। परिणाममें आत्मविपद और अपने स्वामीके क्रुद्ध होनेकी शंका होनेपर भी उसने राजपूत जातिकी स्वभाव सुलभ राजभक्तिके वशीभूत होकर जिस भावसे मेरा अभिनंदन किया उससे मैं बहुत प्रसन्न हुआ और उसको मैं बहुत बडा सन्मान समझता हूं । घोडेने उनको परस्पर आलिंगन किया, फिर इस प्रदेशके अतीत इतिहास मारवाडेश्वर और राणाके विषयमें विचार करते हुए

किया, इस कारण वह लूटनेकी आशा छोड शिरपर कलङ्क लेकर भागा। फिर महमूद नादोलमें होकर नाहरवाला और सोमनाथको गया। नादोलेश्वरने बडी वीरतासे महमूदके साथ युद्ध किया। मैंने सौभाग्यसे इस नादोलेश्वर सुविख्यात लाखाके नामकी एक खुदीहुई लिपि पाई। उसमें लिखाहै कि लाखाही अजमेरसे आईहुई इस चौहान शाखाका आदि पुरुष है। सम्वत् १०३९(सन९८३ ई०) में यह नादोल अजमेरको कर देता था। लाखाने जो दुर्ग बनायाहै वह नगर पश्चिमी शिखरके ढालू स्थानपर बना है। उसमें बहुत प्राचीन कालकी रचनाका परिचायक ऊंची चोटीवाला चौकोण दुर्ग बना है। पर्वत जिन विचित्र पत्थरोंसे आच्छादित है, दुर्ग भी इन्हीं पत्थरोंसे बना हुआ है। एक दूसरी खोदित लिपि मेरे हाथ लगी है, वह सम्वत् १०२६ (सन् ९६८ ई०) की है, उसमें लिखाहै कि लाखा मेवाडेश्वर राणा भीमसिंहके पूर्वपुरुष आइतपुरके शक्तिकुमारके समयमें थे। वह नगर भी महमूदके पिताने नष्ट किया ऐसा अनुमान है। चौहान कविने अपनी लेखनी द्वारा राओ लाखाके वीरत्व विक्रमकी बहुत प्रशंसा करते हुए इस स्थानपर लिखा है कि " वह अनहलवाडाके द्वार प्रदेश द्वारसे शुल्कसंग्रह कर लेते थे, और चित्तोरके अधीश्वर उनको कर देते थे। सकल मन्दिर और दुर्गादिके जितने ध्वंसावशिष्ट दिखाई देते हैं तुलिकाके सिवाय उन सबका वर्णन करना असम्भव है। इस स्थानके प्रत्येक पदार्थसे मालूम होता है कि एक समय जैनधर्मका इस स्थानपर बडा प्रभुत्व रहाथा। जैनियोंके धर्मकी समान शिल्पकार्य्य भी शैवोंसे बिल्कुल अन्य प्रकारके थे। जिनके चिह्न अब तक पाये जाते हैं। जैनियोंके चौबीस देवताओंमेंसे अन्तिम देव महावीरका मन्दिर अतिरमणीय शिल्पकार्य्यका आदर्श स्वरूप है। उस मन्दिरके गुम्बजकी आकृति प्राच्यजगतके अतिप्राचीनकालके गठनकी समान है कदाचित् जैनियोंके मन्दिर निर्माणके बहुत पहिले ऐसी गठन प्रणालीका आरम्भ हुआ होगा। महावीरके मन्दिरके सामनेका तोरण बडी विचित्र कारीगरीसे खोदा गया है, और वहां कई पाषाण प्रतिमाओंका भास्कर कार्य्य भी परम रमणीय है। यह सब प्रतिमायें डेढ सौ वर्ष पहिले भूमिसे निकालकर यहां स्थापित कीगई हैं। जिस समय मरहठे [illegible] [illegible] करनेके लिये आताथा, उस समय उनके भयसे [illegible]

यात्रा करनी होगी " कहकर मैंने क्षमा करनेको कहा। निमंत्रण अस्वीकार करनेके असली कारणको वह भी भलीभाँति समझ गयाथा।

आज मारवाडके समानभूमिमें होतेहुए केवल एक कोशही चले। बीचमें केवल एक साधारण पर्वत देखा। यहांपर केरी आकर हमारे साथ मिलगये।

२७ अक्टूबर–अनुचरमण्डलीको विश्राम करनेके लिये समयदान और सब सामग्री इकट्ठी करनेके लिये इस स्थानमें डेरा डाला। सन्ध्या होनेसे पहिले २ सब आकर मिलगये; किन्तु सबही पर्वतसे उतरते समयके शोचनीय कष्टका वर्णन करते थे। रूपनगरके सामन्त मुझसे मिलने आये। गाडोराके ठाकुरकी समान यह भी पर्वतके दो ओरके दो प्रदेशोंके दो स्वामीकी अर्थात् राणाकी और मारवाडराजकी आज्ञा पालन करते हैं। यह पहिले राणाके अधीनस्थ दूसरी श्रेणीके सामन्तगणमें सबसे प्रधान गिने जातेथे। उनके महल और दुर्ग हमारे डेरेसे दिखाई देतेथे। वह दुर्ग पर्वतमालाके पश्चिम प्रान्तमें है और उसके सामने एक दुर्गम मार्ग बना है। वह उस ऊंचे दुर्गसे देसुरी और अपने पैतृक भूखण्ड जो अब गदवाराके साथ राठौर राज्यके अधिकारमें है उनको देखते हैं। रूपनगरके स्वामी अपने उक्त पैतृक खण्डको फिर अधिकारमें लानेके लिये वर्त्तमान अधिकारीके साथ प्रायः युद्ध किया करते हैं। कृषिकार्य्य सम्बन्धसे उक्त भूखण्डके ऊपर उनका स्वत्वाधिकार है। रूपनगराधीश्वर शोलङ्की जातीय. नाहरवालाके राजगणोंके वंशधर हैं और सुप्रसिद्ध राजा सदराजका विख्यात जामरिक शंख इस समय इनकेही पास है।* सदराजकी समान महाबली कोई राजा भी अबतक पाश्चात्य सिंहासनपर नहीं बैठा। उसने १०९४ इस्वीसे आधी शताब्दीतक अनहलवारा अपने अधिकारमें रक्खा, वह शिक्षा और शिल्पका परमबन्धु और उत्साहदाता रूपसे प्रशंसित था। हम ऊपर लिखचुकेहैं कि इसही वंशकी शाखाने मेवाडमें आकर आश्रय लिया। रूपनगरके वर्त्तमान सामन्तके पूर्वपुरुष विदनोरकी प्रसिद्ध तारावाईके चचा थे। वीरकी समान तेजस्विनी तारावाईके स्वामी महाधनुर्धर पृथ्वीराजने जिस प्रकारसे अपने बाहुबलसे शत्रुओंके करालगालसे स्वसुरका राज्य उद्धार करदियाथा उसही प्रकार उस महावीरने भी देसुरी और सम्पूर्ण प्रदेशका उद्धार करके रूपनगरके स्वामीके हाथमें सौंप दिया। इस घटनाका वर्णन करना परम आवश्यक है, क्योंकि इनके वर्णन करनेसे यह बात सर्वसाधार

---

* सदराजने १०९४ ईस्वीसे लेकर सन् ११४४ ईस्वीतक राज्य किया।

योंके नामोंकी सूची और विक्रम तथा महावीरका प्रादुर्भाव समयके जैनधर्म्मावलम्बी नरपतियोंमें सबसे श्रेष्ठ श्रीनीक और सम्प्रीतिके वंशधर लोगोंका इतिहासमूलक भी एक ग्रन्थ पायाहै । महमूद, बुलबन, हत्याकारी नामसे परिचित अल्ला और भारतविजेता नादिरशाहकी नामाङ्कित मुद्रा मैंने इस स्थानमें संग्रह की । किन्तु मेरे दूत लोग नादोलासे चौहानोंकी नामाङ्कित जो एक विचित्र सांकेतिक छोटी मुद्रा लायेथे, उन सबके साथ तुलना करनेसे वह सामान्य मूल्यकी जंचतीहै । * एक मुद्रामें एक तरफ एक घुड़सवारकी मूर्ति और कई सांकेतिक चिह्न अङ्कित हैं । कईमें बैलकी मूर्ति खुदीहै; जैसे फ्रांसके एक समयकी मुद्राके एक तरफ चौदह लुईसकी मूर्ति और दूसरी ओर साधारण तंत्र सभाका निदर्शन रहता था. इस प्रकार कई मुद्राके एक तरफ आदि

* उन्होंने अपने अनुचरोंद्वारा सामन्तलोगोंके पास यह आज्ञा भेजी कि "आप लोग परस्पर एक दूसरेसे सुख वितरण करतेहुए धर्म्मके मार्गपर चलैं ।"

याढपतिने वेगसे शत्रुके सन्मुख खडे होकर अभिमानके साथ कहा कि " षण्ड कहां है ? मेरा नाम सिंहहै; मैं आज षण्डको खाकर फेंकूंगा ।" क्रमसे युद्धाग्निने चण्डमूर्ति धारण करी । अन्तमें षण्ड मारागया । दूसरे दिन पृथ्वीराजने द्वै-कोरी दुर्गपर अपनी जयपताका फहरा दी । विजयी पृथ्वीराजने वहीं भूवृत्ति दान पत्रमें लिखदिया कि राठौर लोगोंके हाथमें यह गदवारप्रदेश सौंपागया. कोई शीशोदीयवंशवाला किसी समय भी इसको फिर अपने अधिकारमें न लावे । यद्यपि सत्रह पुरुष पहिले यह घटना घटी थी, किन्तु आजतक युद्धगढपतिके वंशवालोंके संग षण्डके वंशवालोंकी वैसी ही शत्रुता वनी हुईहै ।

गाडोराके सामन्त फिर दुवारा मुझसे मिलनेको आये । उनके अनुचरोंके आने- मार उर्वर मेवाडके राठौर लोगोंकी शारीरिक तुलना करनेका अच्छा अवसर श्रेणवि । उदयपुर उपत्यका और उसका दक्षिण सीमाप्रान्तस्थ पहाडी प्रदेश जहां-केरूपसे ल वायु वहुत ही अस्वास्थ्यकर है यदि केवल उसी जगहके शीशोदियोंके सामने तुलना करें तो चौहान लोगोंको हम श्रेष्ठ कहेंगे । इस स्थानके राजपूत पैतृक शारीरिक गठन और वलहीन ही नहीं हैं, किन्तु जिस गौर वर्णसे उनको श्रेणीके हिन्दुओंसे उनको अलग जाना जाता उस गोरे रंगका भी अधिक है । किन्तु उक्त अस्वास्थ्यकर प्रदेशके रहनेवालोंका जल वायुके दोषमें हैं । । वलसम्वन्धी हीनताका निवृत्त करनेवाला एक वड़ा कारण है; अर्थात है । वाडाके प्रत्येक प्रान्तवासियोंके साथ वैवाहिक सम्बन्धके कारण शुद्ध रक्तके सुप्रयोगसे वलवान, दीर्घकाय और गोरे रंगकी सन्तान उत्पन्न होतीहै । यदि सद वल पहाडी शालम्बूके चन्दावत और गोगुन्दाके झाला लोगोंमें यह वैवाहिक सम्बन्ध वन्धन सीमावद्ध होता तो निश्चय ही उस विषयमें अवनति वढ जाती, किन्तु उसके वदले गदवारके राठौर, नागवर्नीके चौहान और मारवाडकी भट्टजातिके साथ परस्पर कन्या लेनेदेनेकी कथा प्रचलित है । यद्यपि गोगुन्दाके सामन्तका गठन मूर्ति और रंग मेवाडके मह प्रधान सोलह सामंतोंकी वरावर नहीं है. तथापि उनका राठौरोंके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न हुआ है, वह ठीक झाला जातिके समान है । साक्षातके समय सामन्त और उनके अनुचर लोग सुन्दर वस्त्राभूषण धारण करके मुलाकात करतेहै । पगडी वांधनेसे उनके मुखकी शोभा वहुत ही सुंदर दिखाई देतीहै ।

पिछले समयकी वहुतसी वात चीत होनेके पीछे गाडोराके सामंत नम्र वचनोंसे विदा लेकर चले गये । इतिहास संग्रहमें मैंने उनके

खंड २ पवित्र वटआदि वृक्षोंके बदले छोटे २ वृक्ष लगेहुए हैं । इस दृश्यको देख कर मुझे एक कविकी उक्ति याद आगई; राणाके दूत कृष्णदासको वह कविता कई बार पढकर सुनाई । उसने उस कविताके लक्ष्यकरतेहुए कहा कि, प्रकृतिने स्वयं ही हम लोगोंकी राज्यसीमा निर्द्धारित कर दी है । कविता यह है:–

" आखाँरा झोंपडा,
फोगाँरी बाड,
बाजरारी रोटी,
मोठाँरी दाल "
देखीहो राजा तेरी मारवाड़ । "

सब ग्राम विचित्रप्रणालीसे बनेहुए हैं; प्रत्येक मोहल्लेके चारोंओर काँटोंकी बाडहै. और बीच २ में वह काँटोंकी बाड भूसीसे ढकीहुई होनेके कारण देखनेमें दुर्गके परकोटेके समान है. जिस समय खेत अन्नसे भरजातेहैं अथवा वर्षाकालमें गौ आदिके लिये आहार नहीं मिलता उस समय यह भूसी ही उनके खानेके काममें आतीहै । इस भूसीको तरह वा बीस हाथ ऊंची रखकर मट्टी और गोबरसे ल्हेसदेतेहैं. बीच २ में पक्षियोंसे बचानेके लिये काटे लगा देतेहैं । इस तरह बीच २ में गोबर लीपदेनेसे दश वर्ष तक रहतीहै. और देशमें जब गौआदिका आहार बिलकुल दुष्प्राप्य होजाताहै. तब इसीसे ही सब पशु प्राणधारण करतेहैं । मरुक्षेत्रमें क्रमसे एक ही प्रकारका दृश्य देखनेके कारण चित्त अप्रसन्न होजाताहै, किन्तु लूनीनदीके पार होते ही विचित्र परकोटेके देखनेसे चित्त अवश्य ही प्रसन्न होजाताहै ।

खान हैं, और उनकी वृद्ध वयस, उनका पद, उनका चरित्र, उनकी स्वाधीन मनोवृत्ति परिचायक उक्तियोंको वलवान करदेते हैं। उन मित्रके संग मेरा प्रायः ही वाक्ययुद्ध हुआ करता, किन्तु उनका मैं कितना वडा आदर करताहूं इस बातको वह भलीभाँति जानते हैं। मार्गमें मेरा उनका साक्षात् हुआ; प्रणाम करनेके पीछे उन्होंने मुझसे कहा कि "गदवारप्रदेश मुझको लौटादीजिये।" हमारी गवर्नमेंट इस प्रश्नका आन्दोलन नहीं करसकती; यह कहकर मैंने कुछ विरक्तताके साथ पूछा कि "आपलोगोंने उसको इस स्थानका अधिकार क्यों करनेदिया था? इस आधी शताब्दी तक शीशोदिया लोगोंकी तलवार कहां सोरहीथी? सर्वशक्तिमान् परमेश्वरका कभी ऐसा अभिप्राय नहीं है कि पर्वतमालाका यह निकटवर्ती प्रदेश मेवाडमें मिलारहेगा, प्रकृतिने अपने हाथसे आपलोगोंके मध्यमें सीमा निर्द्धारित करदीहै।" वृद्ध दूतका रक्त गरम हो उठा, उन्होंने कहा, "उस प्रकारसे सीमानिर्द्धारण होनेपर भी गदवारा हमलोगोंका है, क्योंकि प्रकृतिने पर्वतकी अपेक्षा सुदृढ सामग्रियोंसे हमारी सीमा निर्द्धाण करदीहै। आप जब इस स्थानसे आगे बढेंगे, तब मेवाडकी साधारण भूमिमें जो फल मूल उत्पन्न होतेहैं, वही देखेंगे, आप सीमा अतिक्रमकरनेके पीछे कुछ ही दूर जाकर उनको नहीं देखेंगे।"

"ऑवला ऑवला मेवाड।
बबूल बबूल मारवाड"॥

संयोगसे विलेका फूलाहुआ पीला फूल जहांतक दिखाई देगा वहांतक भूमिका केवल उपर हमारा है; हम इससे अधिककी कुछ भी आशा नहीं करते। वह अपने बबूल खैर और ईखके वृक्षोंको भोगें: हम लोगोंकी पवित्र पीपल और आँवले हमको लौटादीजिये।" वास्तवमें यह प्रमाण बहुत ही सत्य है। [illegible]गों प्रदेशके सीमान्तमें एक छोटीसी नदी है, उसके पार होते ही सम्पूर्ण रमणीय तृणवृक्षादि दृष्टिसे छिपगये, और पीपल, बड तथा गदवारमें जितने वृक्ष बहुतायतसे होतेहैं, उनके बदले बबूर और बनैले तृण दिखाई देने लगे। यद्यपि यह सम्पूर्ण वृक्ष देखनेमें रमणीय नहीं हैं, तथापि उपकारी हैं, और ऊंटोंके दलके दल इन सब वृक्षोंको भोजन करतेहैं। वृद्धदूतका उक्त प्रमाण और उक्ति तथा न्यायपूर्वक अनेक विचारमूलक हैं, क्योंकि उसने अपना कार्य सिद्धकरनेके लिये ऐसा दृढ प्रमाण दियाथा। किन्तु पूर्वोक्त पर्वतमालाको सीमान्तका चिह्न न मानकर तृणवृक्षोंको क्यों सीमान्तका निर्धारक

गन्धक, पारा, मसाले, चन्दनकी लकड़ी, कपूर, चाय, औषधी बनाने योग्य मेवा और हरे रंगका काच आता है। भावलपुरसे मुलतानीमिट्टी, आल और मजीठ नामक रंग, बन्दूक, पेड़ फल, हींग, मुलतानी छींट, और गेहूं तथा पलंगआदिके लिये लकड़ी आती है। कोटा और मालवेसे अफीम और छींट आती है। सोजतसे तलवार और घोड़े भेजेजाते हैं।

इस स्थानसे लवण और पशम भेजा जाताहै। पालीनगरका जो सब प्रकारका कागज़ और सूतका मोटा कपड़ा प्रसिद्ध है, सौदागर लोग इन वस्तुओंको भी बहुतायतसे दूसरे नगरोंको लेजातेहैं। मारवाड़के सब स्थानोंके निवासी ऊनकी लोई ओढ़तेहैं और उनका मूल्य ८) आठसे ६०) साठ रुपये तक है। ओढ़नी और पगड़ी भी इसी सामग्रीसे तैयार होतीहैं, किन्तु यह दूसरे देशोंमें विक्रयार्थ नहीं भेजीजाती। यहांपर होनेवाली वस्तुओंमें लवण ही सबसे प्रधान है, इस लवणवाणिज्यसे जो शुल्क एकत्रित होताहै वह देशके राजस्वके आधे अंशकी बराबर है। लवणके सोतोंमें पचभद्रा, फिलोदी और डिडवाना प्रधान हैं। पचभद्राका परिमाण बड़ा और सब है।

राणाने मंदौरके शासनकर्ता चण्डको वहांसे चले आनेकी आज्ञा दी, किन्तु असली उद्देश छिपाहुआ रक्खा। दूसरे पक्षमें राजा योधने राणाके पाससे मंदौर लौटादेनेका पत्र पानेपर अवकाशपाते ही अपना पूर्व कलंक छुडा लिया। निर्वासित योध मारवाडके हरवा संकल, प्रभुजी आदि डॉकुओंके नेतालोगोंको कविवरका दियाहुआ समाचार सुनानेके लिये गया, वहां उसने सुनाके राणाकी आज्ञा पालनेके लिये चण्ड मंदौरको छोडकर चित्तौडकी ओर जा रहा है। मंदोरके पूर्व वर्णित कविने उस राजनीतिसे ही योध और उसके सहचरोंसे कहा कि "भगवान् आप लोगोंसे प्रसन्न हुए हैं। नक्षत्रोंके पूर्व सागरमें डूबनेसे पहिले ही आपकी विजय पताका मंदौरके दुर्गके शिखरपर फहरावेगी"। कविका यह नक्षत्रोदय कल्पनामात्र है। क्योंकि संकलनी नदी जिस स्थानमें बहतीहै वहां होकर जानेसे उन नक्षत्रोंका उदयास्त दिखाई देताहै।

चण्ड जब राणाकी आज्ञानुसार अपने ज्येष्ठ पुत्र सहित मन्दौरसे दो कोशकी दूरीपर पहुँचा तो सहसा उसने मन्दौरके ऊपर उजाला देखा; चण्ड चित्तौडकी ओर फिर चलनेलगा, उसका वडा पुत्र मञ्ज मन्दोरमें लौटआया। किन्तु उसके लौटनेसे पहिले ही चण्डके दूसरे दो पुत्र मन्दोरकी रक्षाकरनेके कारण योधके हाथसे मारेगये। विजयी योधने अपनी जयघोपणा करके मन्दोरदुर्गकी चोटीपर विजयपताका गाड दी। मञ्ज अपने दो भ्राताओंकी मृत्यु और सेनाके पराजयका समाचार सुनकर वहांसे भागा. किन्तु योधके सैनिकोंने उसको सीमान्तमें पकडकर मारडाला। चण्ड जिस समय आरावलीके दुर्गममार्गमें चलरहाथा तब उसके कानमे यह शोकसमाचार पहुंचा. वह तत्काल ही मन्दोरको लौटगया। विजयी योधने उसके साथ साक्षात् होतेही राणाका दिया हुआ मन्दोर प्रत्यर्पणा दिखादिया और कहा कि आप मन्दोरकी सीमा निर्द्धारण कीजिये। चण्डने विचारा कि प्रकृतिने अपने हाथसे जो सीमा निर्द्धारण करदीहै. उसको छोडकर अन्य सीमा चिह्न स्थापन करना असंभव है. उसीके अनुसार उसने निर्द्धारण करके कहा कि जहांतक पीले फूलवाले आँवले दिखाई देतेहैं. उस स्थानतक राणाकी राज्यसीमा निर्दिष्ट रही। उस सीमांसाके अनुसार कविने तत्काल कविता बनाई कि—

"आँवला आँवला मेवाड।
बबूल बबूल मारवाड" ॥

परमोत्साही और राजभक्त चण्डने अपने प्रभु राणाकी आज्ञासे दूसरे पुत्र शोकको विस्मृत करके बदला लेनेकी इच्छा छोडदी, मन्दोरके अर्थात [illegible]

बंधे हुए बछडेमें छकडे अपने अधिकारमें करलिये और शत्रुके सिरपर लकडी मारकर घाव कर दिया। उन दोनोंका झगडा निबटाना असम्भव होगया। यहांपर यह रीति है कि जो सबसे अधिक कर देता है मुकदमेमें उसी की जीत होती है, इस कारण पाडमा सरसरी विचारमें विजयी हुआ और प्रतिवादी श्यामाको दूर कर दिया गया।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि राजपूतजातिमें भाट लोग अपने पवित्र चरित्रके कारण ही सौदागरी मालके संरक्षक होकर जाते हैं, किन्तु अत्याचारकरने और कर दान न करनेसे वह संरक्षक पदके अनधिकारी समझे जाते हैं। उक्त पाडमाके पूर्व पुरुषोंके साथ राणा अमरसिंहका एक विशेष स्मरणीय झगडा हुआ था। भाटलोगोंने बडे अन्यायके साथ अपने वाणिज्य शुल्कके कम करनेकी राणाके निकट प्रार्थना की, राणा अमरसिंहने इस प्रार्थनाको अस्वीकार कर दिया। संपूर्ण भाटलोग अपना काम सिद्ध करनेके लिये आत्महत्याका भय दिखाया करते हैं, राणा अमरसिंहको भी इसी आत्मघातका भय दिखाने लगे। परन्तु अमरसिंहने उनकी किसी बातपर भी ध्यान नहीं दिया। तब भाटलोगोंने अपने प्रचलित उपायका अवलम्बन किया अर्थात प्रायः (८०)

उत्पत्ति है । राठौर जातिके विशेष विघ्नबाधा और उत्पीडन अत्याचार करने पर भी ऊपरोक्त शाखा आजतक अपने अधिकृत स्थानोंकी रक्षा करती चली आरहीहै; किन्तु जिन शनिगुरुजातीय राजपूतोंने दूसरे अलाउद्दीनके विरुद्ध बडा भारी युद्ध करके अपना नाम अक्षय कियाथा, स्वाधीन राज्योंके नामोंकी सूचीमें उनके राज्यका नाम बिलकुल लुप्तहै और यह तीन सौ साठ नगर पूर्ण प्रदेश इस समय जोधपुरराज्यके अन्तर्गत है ।

सम्पूर्ण राजवाडेमें ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां प्रतिष्ठित वंशवाले चौहानोंकी वीरताका गौरवचिह्न नेत्रोंके सामने न आवे । यद्यपि प्रत्येक जातिके इतिहासमें गौरवगरिमा वीरत्व विलास वर्णन कियागया है तथापि शीशोदियालोगोंका वीरत्व विक्रम, प्रताप प्रभुत्व कैसा महान और उज्ज्वल है, इतिहासपाठक लोग उसको भलीभाँति जानतेहैं, और जिस जातिके साथ मैंने बहुत कालतक वास कियाहै, जिनके इतिहासको मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं. विवेक बुद्धिकी आज्ञानुसार मैं यह अवश्य ही कहनेको बाध्य हूं कि चौहान लोग भारतवर्षके सब राजकुलोंमें श्रेष्ठ हैं । यहांतक कि सब जातिके कवियोंने चौहान नामको विचित्र मंत्रविजडित, अनुपमेय वीरत्वप्रकाशक मानाहै । वह लोग हृदयका द्वार खोलकर अपनी लेखनीसे इस चौहानजातिकी अनन्त प्रशंसा लिखकर भी शांत नहीं हुएहैं ।

यद्यपि वीरश्रेणीमें चौहान लोग सबसे श्रेष्ठ आसन लेनेमें सब प्रकारसे समर्थ हुएथे, किन्तु प्रत्येक राजपूतके आदर्शस्वरूप अनन्त गौरवगरिमान्वित पृथ्वीराजके पतनसमयसे चौहान नामधारी प्रत्येक राजपूतका भाग्य बदलगया है वीरत्व विक्रम, गौरव, गरिमा, प्रताप प्रभुत्व इस समय उनको स्वप्नकी समान मालूम होताहै । राजवाडेके बडे २ वीर चौहानोंके जितने नाम कवि लोग जानतेहैं, उनमें भटण्डानामक स्थानके पुरुषसिंह गोगा एक शीर्षस्थानीय मनुष्य है । जिस समय गजनीका बादशाह महमूद आर्य्यक्षेत्र भारतवर्षको लूटनेके लिये आया उस समय यह महावीर चौवालीस पुत्रोंके साथ मातृभूमिकी स्वाधीनता और पितृधर्म रक्षाके लिये सतलजके किनारे पर युद्ध करने गया, और उस महमूदके विरुद्ध भयानक युद्धाग्नि जलाकर बडा भारी युद्ध किया, यहां तक कि अन्तमें उस ही समराग्निमें अपने सब पुत्रोंसहित जीवनाहुति देदी । जिसकी मरुभूमिमें होकर चौहानजातिकी प्रधान राजधानी अजमेर व अधिकार करनेके लिये गया. वहां चौहानलोगोंने उचित रीति [illegible] दुर्गरक्षा और [illegible]

उत्पत्ति है। राठौर जातिके विशेष विघ्नवाधा और उत्पीडन अत्याचार करने पर भी ऊपरोक्त शाखा आजतक अपने अधिकृत स्थानोंकी रक्षा करती चली आरहीहै; किन्तु जिन शनिगुरुजातीय राजपूतोंने दूसरे अलाउद्दीनके विरुद्ध बडा भारी युद्ध करके अपना नाम अक्षय कियाथा, स्वाधीन राज्योंके नामोंकी सूचीमें उनके राज्यका नाम विलकुल लुप्तहै और यह तीन सौ साठ नगर पूर्ण प्रदेश इस समय जोधपुरराज्यके अन्तर्गत है।

सम्पूर्ण राजवाडेमें ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां प्रतिष्ठित वंशवाले चौहानों-की वीरताका गौरवचिह्न नेत्रोंके सामने न आवे। यद्यपि प्रत्येक जातिके इतिहासमें गौरवगरिमा वीरत्व विलास वर्णन कियागया है तथापि शीशोदियालोगोंका वीरत्व विक्रम, प्रताप प्रभुत्व कैसा महान और उज्ज्वल है, इतिहासपाठक लोग उसको भलीभाँति जानतेहैं, और जिस जातिके साथ मैंने वहुत कालतक वास कियाहै, जिनके इतिहासको मैं वहुत अच्छी तरह जानता हूं. विवेक वुद्धिकी आज्ञानुसार मैं यह अवश्य ही कहनेको वाध्य हूं कि चौहान लोग भारतवर्षके सव राजकुलोंमें श्रेष्ठ हैं। यहांतक कि सव जातिके कवियोंने चौहान नामको विचित्र मंत्राविजाडित, अनुपमेय वीरत्वप्रकाशक मानाहै। वह लोग हृदयका द्वार खोलकर अपनी लेखनीसे इस चौहानजातिकी अनन्त प्रशंसा लिखकर भी शांत नहीं हुएहैं।

यद्यपि वीरश्रेणीमें चौहान लोग सवसे श्रेष्ठ आसन लेनेमें सव प्रकारसे समर्थ हुएथे, किन्तु प्रत्येक राजपूतके आदर्शस्वरूप अनन्त गौरवगरिमान्वित पृथ्वी-राजके पतनसमयसे चौहान नामधारी प्रत्येक राजपूतका भाग्य वदलगया है वीरत्व विक्रम, गौरव, गारिमा, प्रताप प्रभुत्व इस समय उनको स्वप्नकी समान मालूम होताहै। राजवाडेके वडे २ वीर चौहानोंके जिनके नाम कवि लोग जान-तेहैं. उनमें भटण्डानामक स्थानके पुरुषसिंह गोगा एक शीर्षस्थानीय मनुष्य है। जिस समय गजनीका वादशाह महमूद आर्य्यक्षेत्र भारतवर्षको लूटनेके लिये आया उस समय यह महावीर चौवालीस पुत्रोंके साथ मातृभूमिकी स्वाधीनता और पितृधर्म्म रक्षाके लिये सतलजके किनारे पर युद्धकरने गया, और उस महमूदके विरुद्ध भयानक युद्धाग्नि जलाकर वडा भारी युद्ध किया. यहां तक कि अन्तमें इस ही रणस्थानमें अपने सव पुत्रोंसहित जीवनाहुति देदी। फिरभी महमूद मरुभूमिमें होकर चौहानजातिकी प्रधान सम्पत्ति अजमेर पर अधिकार करनेके लिये गया. वहां चौहानलोगोंने अधिक विघ्न देकर दुर्गमस्थान और नगर

डालदीं थीं यह असम्भव नहीं है। नादोलका सबसे विचित्र दृश्य "चनेकी वा ओली" नामक बडा जलाशय है। अधिवासी एक २ मुट्ठी चनेके दानोंकी विक्रीके धनसे यह जलाशय (चौबच्चा) बनाया गयाथा। यह बहुत गहरा है और नीचे उतरनेके लिये इसमें लाल पत्थरकी सीढियां बनीहुई हैं, इसके चारों ओर लाल पत्थर लगेहै। यह किसी वस्तुसे चिपकाये न जाकर वैसे ही तले ऊपर रखदिये हैं।

यहां पर मैंने बहुत पुराने इतिवृत्तका तत्त्वानुसंधान पाया। मेरे नियुक्त किये हुए संस्कृतज्ञ लेखकोंने खोदित पत्रावलीकी नकल उतारी। इसके सिवाय मैंने दो टुकडे पुराने ताम्रानुशासन पत्र पाये। इनमेंसे एक अनल देवके स्मरणार्थ सम्वत् १२१८ में लिखागयाथा। * मैंने इस प्रकारके पुराने कई अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ भी संग्रह किये उन सबमें छत्तीस राजवंशका विवरण है, भारतवर्षकी अतिप्राचीन पृथ्वीका वृत्तान्त, और पुराने नगरोंका वर्णन है। उद्भिज्ज और प्राणि-

---

* नादोलमे प्राप्त चौहान नरपतिसम्बन्धी ताम्रानुशासनपत्रकी नकल.।

"सर्वशक्तिमान् जनके ज्ञानकोपने मनुष्यजातिकी विषयवासना और ग्रन्थिमोचन कर दी। अहङ्कार, आत्मश्लाघा, भोगेच्छा, क्रोध और लोभ, स्वर्ग, मर्त्य और पातालको विभिन्न करदेतेहैं। महावीर (क) आपको सुखसे रक्खे।

अति प्राचीन कालमे महान् चौहानजाति समुद्रके तटतक राज करती और नादोलद्वारा शासित होती थी। उनका लोहियानामक एक कुमार था और उसका पुत्र बलराज हुआ; उसका पुत्र विग्रहपाल, विग्रहपालका महीन्द्रदेव, महीन्द्रपालके श्रीअनल पुत्र हुए, वह उस [illegible] प्रधान [illegible], और उनका सौभाग्य सर्वत्र विदित है। उनके पुत्र श्रीबालप्रसाद हुए किन्तु [illegible] के पुत्र न होनेके कारण उनके छोटे भाई जैत्रराजने सिंहासन पाया। उनके [illegible] पुत्र उत्पन्न हुआ; किन्तु उनके भी पुत्र न होनेके कारण उनके छोटे भाई [illegible] पाया। [illegible] के पीछे उनके छोटे भाई सौभाग्यशाली [illegible] बैठे थे। उनके [illegible] नन्दन आल्हनदेव हैं। (ख) कुछ काल राज्य करनेके पीछे [illegible] रक्त पूति आदि अपवित्र पदार्थोंसे बने [illegible]। अनेक धर्मशास्त्रोंका पाठ करके उन्होंने [illegible] क्षणिक है, क्षणकाल [illegible] बुदबुदकी समान है थोडी देर [illegible]। [illegible]—

(क) [illegible]

[illegible]

(ख) [illegible] ८१८ [illegible]।

डालदीं थीं यह असम्भव नहीं है। नादोलका सबसे विचित्र दृश्य "चनेकी वा ओली" नामक वडा जलाशय है। अधिवासी एक २ मुट्ठी चनेके दानोंकी विक्रीके धनसे यह जलाशय (चौबच्चा) बनाया गयाथा। यह बहुत गहरा है और नीचे उतरनेके लिये इसमें लाल पत्थरकी सीढियां वनीहुई हैं, इसके चारों ओर लाल पत्थर लगेहै। यह किसी वस्तुसे चिपकाये न जाकर वैसे ही तले ऊपर रखदिये हैं।

यहां पर मैंने वहुत पुराने इतिवृत्तका तत्त्वानुसंधान पाया। मेरे नियुक्त किये हुए संस्कृतज्ञ लेखकोंने खोदित पत्रावलीकी नकल उतारी। इसके सिवाय मैंने दो टुकडे पुराने ताम्रानुशासन पत्र पाये। इनमेंसे एक अनल देवके स्मरणार्थ सम्वत् १२१८ में लिखागयाथा। * मैंने इस प्रकारके पुराने कई अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ भी संग्रह किये उन सबमें छत्तीस राजवंशका विवरण है, भारतवर्षकी अति-प्राचीन पृथ्वीका वृत्तान्त, और पुराने नगरोंका वर्णन है। उद्भिज्ज और प्राणि-

---

* नादोलमे प्राप्त चौहान नरपतिसम्बन्धी ताम्रानुशासनपत्रकी नकल:।

"सर्वशक्तिमान् जिनके ज्ञानकोपने मनुष्यजातिकी विषयवासना और ग्रन्थिमोचन कर दी। अहङ्कार, आत्मश्लाघा, भोगेच्छा, क्रोध और लोभ, स्वर्ग, मर्त्य और पातालको विभिन्न करदेतेहैं। महावीर (क) आपको सुखसे रक्खे।

अति प्राचीन कालमे महान् चौहानजाति समुद्रके तटतक राज्य करती और नादोलद्वारा शासित होती थी। उनका लोहियानामक एक कुमार था और उसका पुत्र बलराज हुआ, उसका पुत्र विग्रहपाल; विग्रहपालका महीन्द्रदेव, महेन्द्रपालके श्रीअनल पुत्र हुए, यह उस वंशमें प्रधान अधिपति थे, और उनका सौभाग्य सर्वत्र विदित है। उनके पुत्र श्रीबालप्रसाद हुए, किन्तु [illegible] बालप्रसादके पुत्र न होनेके कारण उनके छोटे भाई जैत्रराजने सिंहासन पाया। उनके [illegible] पुत्र उत्पन्न हुआ; किन्तु उनके भी पुत्र न होनेके कारण उनके छोटे भाई [illegible] पाया। [illegible] के पीछे उनके छोटे भाई सौभाग्यशाली [illegible] सिंहासन पर बैठे थे। उनके [illegible] नन्दन आल्नदेव हैं। (ख) कुछ काल राज्य करनेके [illegible] [illegible] रक्त, धूलि आदि अपवित्र पदार्थोंसे बने [illegible]। अनेक धर्मशास्त्रोंका पाठ करके उन्होंने [illegible] क्षणिक है; क्षणकाल [illegible] [illegible] के समान है थोडी देर [illegible]

(क) [illegible]

[illegible]

(ख) [illegible] ८९८ [illegible]

निदर्शन सहित पहिले मुसलमान विजेताका नाम देखाजाताहै । जो कोई इस नादोलमें आताहै, निश्चय ही परिश्रमका उचित पुरस्कार प्राप्त करलेता है । यह स्थल प्राचीन निदर्शन प्राप्तिका उपयुक्त क्षेत्र है; मैंने कई एकका संग्रह करालियाहै । जैनियोंकी प्राचीन वासभूमि नादोल, वालि, ढैसुरी और सादरीमें पुरानी मुद्रा हस्तलिखित पुरानी पुस्तकें और विचित्र भास्कर कार्य्य शोभित ध्वंसावशिष्ट महल मन्दिरादिका निदर्शन बहुतायतसे मिलताहै । प्राचीन तत्त्वानुसंधानकारी लोग आबूशिखरसे लेकर मन्दर-तक घूमनेपर इस प्रदेशके निवासियोंके पुराने इतिहासकी अपरिमित सामग्री सहजमें ही संग्रह कर सकते हैं, क्योंकि यह प्रदेश ही जैन धर्म्मकी प्रधान लीलाभूमि है । इस प्रदेशमें शीघ्रतासे यात्रा करनेके समय मैंने जो अल्पकालमें ही इतने निदर्शन एकत्रित करलिये, उसका कारण यह है कि इस सम्बधमें पहिलेसे ही मेरा कुछ २ जानाहुआ था और विशेष करके जाते समय मैं दायें वायें जिन अनुचरोंको भेजताहूं. उनके साथ प्रत्येक नगरके शिक्षित देशीलोग रहतेहैं और खोदित स्मारकपत्रावलीकी नकल तथा तत्त्वानुसन्धान विषयमें विशेष प्रयोजनीय सामग्रीके संग्रह करनेके लिये योग्य पंडितोंको उनके साथ भेजदेताहूं । वे सब लोग सन्ध्याको दिनके अनुसंधानका फल मुझसे कहदेतेहैं । जहां कहीं कोई विशेष प्रयोजनीय आविष्कार होताहै, वहां मैं स्वयं जाताहूं वा विश्वासी मनुष्योंको भेजदेताहूं । मैं अपना गौरव दिखानेके लिये यह बात नहीं कहता; मेरे इस कथनसे दूसरे सब लोग इसी प्रकार तत्त्वानुसंधान करनेके लिये विशेष छानबीन करेंगे, इस कारणसे ही मैंने यह बात लिखीहै ।

२९ वींअक्टूबर—साढे पाँच कोसकी दूरीपर इन्दुरनामक स्थानमें हमारा केम्प पडा । लूनी अर्थात् लवणनदीके साथ जैसे अगणित नाम शून्य नदियें मिलीहैं, यह छोटा सा नगर वैसी ही एक नदीके तटपर बनाहुआ है और यही गदवारराज्यकी अन्तिम सीमाका चिह्नस्वरूप है । यहांसे पीछे आँवलेका वृक्ष अदृश्य और मरुमय मारवाडराज्य आरंभ होताहै । इन्दुरसे ही प्रत्येक विषयमें—प्रत्येक पदार्थमें—प्रत्येक दृश्यमें नवीन भाव, नवीन मूर्ति दिखाई देने लगतीहै । मेवाडमें कहीं भी हमने बालुकाका साधारण स्थान भी नहीं देखा, किन्तु इस स्थानमें बहुतायतसे रेत है । असंख्य नदियोंके तटकी भूमि सफेद रंगके लव-णाक्त पदार्थसे भरीहुई है, और वृक्षोंकी श्रेणी क्रमसे अदृश्य होती चलीगई है ।

मौजूद है;इस कारण वह नगरके उपद्रव अत्याचारका चिह्न ही समझाजाताहै। इस नगरमें दश सहस्र मनुष्य बसतेहैं । वहुत पुराने समयसे यह वाणिज्यके लिये प्रसिद्धहै और वर्तमान मारवाड़ राजवंशके इस मरुक्षेत्रमें शासनके अधिकारकी प्राप्तिके साथ भी इसका राजनैतिक सम्बंधहै । पुराने समयमें मंदौरराजने एक ब्राह्मण संप्रदायको वृत्तिस्वरूप यह पालीप्रदेश भोगनेके लिये दे दिया था । इस संबंधसे पालिवान नामक अनेक श्रेणीकी उत्पत्ति है । केवल वाणिज्यकार्य्यमें ही वे लोग लगे रहते थे । सम्वत् १२१२ (सन् ११५६ ईसवी) में मरुक्षेत्रके राठौर राजवंशके आदि पुरुष कान्यकुब्ज राजवंशीय शियोजी जिस समय द्वारकासे गंगातट तक तीर्थयात्रा करके लौटे उस समय वह इस पालीनगरमें विश्राम करनेके लिये वाध्य हुए थे । अधिवासी ब्राह्मणोंने जब शियोजीके आनेकी वात सुनी तो उनके द्वारा आरावलीके पहाडी मीना और वनैले व्याघ्रोंके उपद्रवसे उद्धार पानेकी आशासे उनके पास कई प्रतिनिधि भेजे । वीरवर शिवजीने उनका उन शान्तिनाशक दोनों शत्रुओंके गालसे उद्धार करदिया । किन्तु राज्याधिकारका शुभ अवसर पाकर उन्होंने फागोत्सवके पालीके प्रधान २ ब्राह्मण नेताओंको मारडाला और नगर अपने अधिकारमें करलिया ।

इस प्रदेशमें वाणिज्य ही स्वाधीनताकी मूल भित्तिस्वरूप है; यहां तक कि भयानक स्वेच्छाचार शासन भी उस स्वाधीनताके ऊपर हस्तक्षेप करनेमें असमर्थ है । भीलवाडा, झालरापाटन, रानाई और दूसरे वाणिज्यप्रधान स्थानोंकी समान पालीके निवासी भी स्वास्थ्यरक्षा विधिका निर्धारण, वाणिज्यसम्बंधी गोलमाल, विवादमीमांसा और अपराधके विचारके लिये अपनेको ही विचारक चुननेमें समर्थ हैं । भीलवाडेकी समान पालीनगरकी भी स्वतंत्र हुंडी चलती है; राज्यके गडवड होजानेपर भी हुण्डीका वैसा ही आदर होता आयाहै । बहुत पुराने समयसे ही यह पालीनगर समुद्रोपकूलके साथ उत्तरभागका संयोग शृंखला स्वरूप समझाजाताहै । कच्छ, मालदीप, सूरत और नाउनगरके वाणिज्यागारोंसे, पारस, अरब, आफ्रिका और योरुपके बने हुए वाणिज्यद्रव्य यहां भेजेजातेहैं, और इस पालीसे ही मारवाड और निकटवर्ती [illegible] माल उक्त स्थानोंमें भेजाजाताहै । समुद्रके किनारेके देशोंसे हाथीदांत, गैंडेका चमडा, तांबा, टीन, जस्ता, सूखी खजूर और [illegible] इनका इस देशमें अधिकतासे व्यवहार होता है । [illegible] सूपारी, नारियल, बनात, रेशमी कपडा, तरह २ के रंग (विदेश [illegible] बहुतायतसे, औषध.

और कवियोंके साथ मिलकर, झालर, दीनमहल, सॉचोर और राधानपुर होकर सुराट और मरकतमान द्वीपमें निःशंकचित्तसे पहुँच जातेहैं।

पालीनगरके पाँच कोश पूर्वमें "पुण्यगिरि" नामक एक पर्वत है। शिखरके ऊपर एक मन्दिर बनाहुआ है। सुनते हैं कि, सौराष्ट्रके अन्तर्गत पालितानाके एक बौद्ध ऐन्द्रजालिकने इस मन्दिरको बनायाहै। जिस प्रदेशमें इन अति प्राचीन अगणित शाखाओंमें विभक्त बौद्धलोगोंका वास है उस प्रदेशमें ही उनको इन्द्र-विद्याजाननेवाले कहतेहैं। यहां पर हमारे पुराने मित्र गफके साथ हमारी मुलाकात हुई। उनको इस दक्षिण पश्चिम प्रदेशकी सरई, कोशा आदि पहाडी जंगली और असभ्य जातियोंमें घोडे इकट्टे करनेके अभिप्रायसे घूमते हुए देखा।

२९ वीं अक्टूबर पाली।

३० वीं अक्टूबर खैरेरा।

३१ वीं अक्टूबर गोहित।

१ ली नवम्बर।–लूनीके उत्तर तटपर सङ्कली स्थापित है। पालीसे लूनीतक १९ कोश स्थानमें टूटी फूटी वस्ती हैं: विशेष दर्शनीय द्रव्य कोई भी नहीं देखा। खैरेरानामक स्थानमें हमने कम्प डाला। यहां पर लवणके दो तालाब हैं। इनमें बहुतायतसे लवण उत्पन्न होताहै इस सम्बन्धसे ही इस नदी और नगरका नाम खैरेरा (खारीर) हुआ है। खैरेरा और गोहित यह दो प्रदेश दो सामन्तों-के अधीन हैं। दोनों सामन्त इस समय आपसकी लडाईमें मतवाले हैं। गोहि-तके सामन्तकी अवस्था बहुत ही शोचनीय होगई है।

यहांपर मैं दो वणिकोंके विवादका विषय लिखना चाहताहूँ। पाटमा नायक इस प्रदेशका एक प्रसिद्ध व्योपारी है अर्थात् अधिक लवण इसीके द्वारा आना जाता है। अन्य एक वाणिज्य द्रव्यवाही वणिकके साथ उसका झगडा है इस झगडेमें उसके शिरमें चोट लगी. वह इस बातके दिखानेके लिये अपने कुटुम्ब-वालोंके पास गया। वादी प्रतिवादी दोनों ही भाट जातिके हैं: पाटमा इसलिये भाट लोगोंका नेता है। ४ उनके पास चार सहस्र पशु बोझा ढोनेके लिये रहते हैं। जब वाणिज्य बन्द रहता है, उस समय नायक कृषि कार्यमें [illegible] लेता है। इस श्रेणीके लोगोंको "[illegible]" कहते हैं। [illegible] पाकर [illegible]

४ [illegible]

वह अपनी निष्ठुर चाल छोडनेके बदले सदा स्वार्थ साधनमें तत्पर रहता है; और अन्यायभरी प्रार्थनायें पूरी करानेके लिये अपने प्राण बलिदानार्थ कमरमें एक बडी छूरी लटकाये रहताहै। पाइमाने अपना वाणिज्य बिलकुल उठादेनेके लिये राणाको भी अनेक स्थानोंमें घेरा, परन्तु प्रार्थना पूरी न हुई। अन्तमें छूरी हाथमें लेकर राणाभीमसिंहके सामने आतमघात करनेको उद्यत हुआ। राणा भीमसिंह अमरसिंहकी समान कठोर न थे, राणाने डरकर इस विषयमें मुझको मध्यस्थ बनाया। राणाके सम्वाद दाताके साथ मैंने अपने एक सम्वाद दाताको भी पाइमाके बुलानेके लिये भेज दिया। उसकी स्थूलकाय, सुन्दर और साहसी मूर्ति शीघ्रही मेरे दृष्टिगोचर हुई। हमलोग तत्काल इस प्रश्नकी मीमांसा करने लगे। मैंने कहा कि, "जो कोई मेवाडके राजपथसे सौदागरी माल लेजायगा उसको अवश्य ही कर देना होगा। और यदि आपलोग इस जघन्य उपाय (आतमहत्याका भय दिखाने) को उद्यत होंगे, तो निश्चय ही कुछ फल प्राप्त न होगा। सर्वसाधारणसे जो कुछ कर लिया जाताहै, यदि आपलोग उसीके अनुसार स्वीकार पत्र लिखकर हस्ताक्षर करदेंगे तो तुम्हारे चालीस सहस्र बोझा उठाने-वाले बैलोंमें पॉच सौ का कर क्षमा करके भामुनियामें रहनेकी आज्ञा दी जायगी, यदि यह बात अस्वीकार हो तो यह छूरियें रक्खी हैं (टेबिलके ऊपर बहुतसी छूरियां रक्खी थीं) जितनी शीघ्र इच्छाहो आत्म घात करडालो।" मैंने और भी कहा कि "राणा अमरसिंह जो देश निकालेका दण्ड नियत करगयेहैं, उसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे सौदागरी मालसे भरेहुए नव छकडोंके छीन लेनेका भी राणासे अनुरोध करूंगा।" पाइमा बुद्धिमान था उसने शीघ्रही मेरे प्रस्तावको मान लिया। राणाने उसको भामुनियाप्रदेश और ५०० बैलोंका कर दान क्षमा करदिया। राणा भीमसिंहने उस दिन पाइमाको भामुनिया प्रदेशका अधिकारी मानकर उसको सुवर्णके बाजूबन्द और वस्त्र दिये।

२ री नवम्बर।—पांच कोसकी दूरीपर झाल्यानंदमें पहुंचे। यद्यपि [illegible] राजधानी यहांसे बहुत निकट है, तथापि किस ढंगसे हम उसमें प्रवेश किये जायंगे. इसकी मीमांसाके लिये यहां विश्रामकरना उचित समझा। पश्चिमी जगत्में इस प्रकारकी दूत परिग्रहणादि प्रणाली निर्धारित एक नियम समझते हैं, राजालोग पूर्व पुरुषोंकी अवलम्बित प्रणालीके अनुसार ही दूतोंको ग्रहण करते है। मरहठेकी गवर्नमेण्टने अंग्रेजदूतके लिये उनके [illegible] स्वीकार [illegible], यह प्रश्न इनलोगोंको विप्लवकर रूप मालूम होनेलगा। [illegible] हम राजद-

मेरी शक्ति नहीं है। वर्त्तमान मीमांसा ही भविष्यत्के निर्द्धारित होकर रहेगी, यही विचारकर मैं राजाके निकट इसको सूचित करनेके लिये बाध्य हुआ कि "मैं जिनका प्रतिनिधि हूं तुम उनके और अपने दोनोंके सन्मानपर समान दृष्टि रखना।" और यह भी स्पष्ट प्रगट करदिया कि "जिस प्रकार अमीरखाँकी अभ्यर्थनाके लिये आपने दुर्गके नीचे आकर अपेक्षा की थी, उसी प्रकार अंग्रेज प्रतिनिधिकी ग्रहण करनेकी व्यवस्था करना।" इस प्रश्नकी मीमांसा होकर यही निश्चय हुआ कि राजा दुर्गके मध्यद्वारसे नवीन गाडीद्वारा उपस्थित होकर अभ्यर्थना करेंगे।* अभ्यर्थना सम्बन्धी मीमांसा समाप्त होनेपर हमलोगोंने झालामन्दसे राजधानीकी ओर अपराह्णमें यात्रा किया। मार्गमें जोधपुरके उस समयके सर्व प्रधान शक्तिशाली राजाके उपदेष्टा पोकर्ण और निमाजके दो सामन्त आगे बढ़कर मेरी मुलाकातको आये। हमने घोडेसे उतरकर परस्पर आलिङ्गन किया। प्रचलित नियमानुसार कुशल प्रश्नादि पूंछनेके पीछे फिर घोडेपर सवार होकर साथ २ चलने लगे। नगरमें प्रवेश करते ही हमने राजासाहबको उनका अभिनन्दन करनेके लिये कहलाभेजा कि "प्रणामादिके पीछे वे राजभवनमें चलेजावें।"

पोकर्णके सामन्तका नाम सालिमसिंह है, यह मारवाडकी सामन्तश्रेणीमें सबसे अधिक धनी हैं। इनका दुर्ग और अधिकृत प्रदेश मरुक्षेत्रके बीचमें है। यह प्रदेश जयसलमेरके राज्यसे अलग करलियाहै। दुर्ग बहुत मजबूत है। इन पोकर्णसामन्तके द्वारा मारवाडके राजसिंहासनकी जड बारम्बार प्रकम्पित हुई थी। इस सामन्तवंशके चार पुरुषोंके प्रबल प्रतापने क्रमसे मारवाडके बडे २ साहसी राजालोगोंको भी महा भयजालमें जकडदियाथा। वर्त्तमान सामन्तके प्रपितामह देवसिंह करूपावत नामक अपने संप्रदायके पाँचसौ योद्धाओंके साथ राजमहलके बडे भारी कमरेमें रातको शयन किया करते थे। वह उद्धत सामन्त अभिमानके साथ अपने स्वामीसे कहते कि "मारवाडका सिंहासन मेरी इस तलवारमें है।" देवसिंहके पुत्र सुबलसिंहने भी पिताके मार्गमें चरण रक्खा और अन्तमें मारवाडराज विजयसिंहको सिंहासनच्युत करदिया। एक कमानके [illegible] विजयसिंहका इस महाभयके कारणरूप शत्रुके हाथसे उद्धार किया। सबलसिंहके

* सन् १८१८ ईस्वीमें [illegible]
[illegible] जोधपुर [illegible]
[illegible]।

की थी उसके फलीभूत होनेके लिये विषप्रयोग आवश्यक समझा. इस कारण उस उपासना और हलाहलने राजा मानसिंहके मृत्युका निवारण करके मारवाड़के राज्यसिंहासन पर बैठादिया। देवनाथने मानसिंहका जो उपकार कियाथा. उसके लिये बड़ा भारी सम्मान और अगणित वृत्ति निर्धारण करके भी राजा मानसिंह अपनेको उस धर्मयाजकका ऋणी समझतेहैं उक्त याजकने जब मंत्रसे पवित्र करके राजवंश उतारा और स्वयं अपने सनु राजा मानसिंहके साथ राजकार्य करनेकी सम्मति दी तो राजसिंहासन भी पवित्र माना गया। देवनाथने जिस समय आशीर्वाद देकर मानसिंहके गलेमें जयमाला डाली उस समय राजा हाथ जोड़कर उनके सामने खड़े थे। धर्मयाजकके लिये राज्यके प्रत्येक प्रदेशमें इतनी अधिक भूवृत्ति निर्धारित करदी गई है कि वह जिस देवालयके प्रधान याजक हैं उस देवताकी सम्पत्ति मारवाड़के श्रेष्ठतम सामन्तोंकी अपेक्षा बहुत अधिक है, और सम्पूर्णमारवाड़का जितना कर एकत्रित होता है उसकी आय उसका दशांश है। कई वर्षतक देवनाथने अपने अर्थीश्वर मानसिंहको अपनी

मेरी शक्ति नहीं है। वर्त्तमान मीमांसा ही भविष्यत्के निर्द्धारित होकर रहेगी, यही विचारकर मैं राजाके निकट इसको सूचित करनेके लिये वाध्य हुआ कि "मैं जिनका प्रतिनिधि हूं तुम उनके और अपने दोनोंके सन्मानपर समान दृष्टि रखना।" और यह भी स्पष्ट प्रगट करदिया कि "जिस प्रकार अमीरखॉंकी अभ्यर्थनाके लिये आपने दुर्गके नीचे आकर अपेक्षा की थी, उसी प्रकार अंग्रेज प्रतिनिधिकी ग्रहण करनेकी व्यवस्था करना।" इस प्रश्नकी मीमांसा होकर यही निश्चय हुआ कि राजा दुर्गके मध्यद्वारसे नवीन गाडीद्वारा उपस्थित होकर अभ्यर्थना करेंगे।* अभ्यर्थना सम्बन्धी मीमांसा समाप्त होनेपर हमलोगोंने झालामन्दसे राजधानीकी ओर अपराह्नमें यात्रा किया। मार्गमें जोधपुरके उस समयके सर्व प्रधान शक्तिशाली राजाके उपदेष्टा पोकर्ण और निमाजके दो सामन्त आगे बढ़कर मेरी मुलाकातको आये। हमने घोडेसे उतरकर परस्पर आलिङ्गन किया। प्रचलित नियमानुसार कुशल प्रश्नादि पूंछनेके पीछे फिर घोडेपर सवार होकर साथ २ चलने लगे। नगरमें प्रवेश करते ही हमने राजासाहबको उनका अभिनन्दन करनेके लिये कहलाभेजा कि "प्रणामादिके पीछे वे राजभवनमें चलेजावें।"

पोकर्णके सामन्तका नाम सालिमसिंह है, यह मारवाडकी सामन्तश्रेणीमें सबसे अधिक धनी हैं। इनका दुर्ग और अधिकृत प्रदेश मरुक्षेत्रके बीचमें है। यह प्रदेश जयसलमेरके राज्यसे अलग करलियाहै। दुर्ग बहुत मजबूत है। इन पोकर्णसामन्तके द्वारा मारवाडके राजसिंहासनकी जड बारम्बार प्रकम्पित हुई थी। इस सामन्तवंशके चार पुरुषोंके प्रबल प्रतापने क्रमसे मारवाडके बडे २ साहसी राजालोगोंको भी महा भयजालमें जकडदियाथा। वर्त्तमान सामन्तके प्रपितामह देवसिंह कम्पावत नामक अपने सम्प्रदायके पांचसौ योद्धाओंके साथ राजमहलके बडे भारी कमरेमें रातको शयन किया करते थे। वह उद्धत सामन्त अभिमानके साथ अपने स्वामीसे कहते कि "मारवाडका सिंहासन मेरी इस तलवारमें है।" देवसिंहके पुत्र सबलसिंहने भी पिताके मार्गमें चरण रक्खा और अन्तमें मारवाडराज विजयसिंहको सिंहासनच्युत करदिया। एक कमानके गोला [illegible] विजयसिंहका उस महाभयके कारणरूप शत्रुके हाथसे उद्धार किया। [illegible]

---

* सन् १८१८ ईस्वीके [illegible] जोधपुर [illegible] [illegible]।

तर्यात जीवनकी वेल अकालमें सूख गई, यह सब बातें पीछे लिखआये हैं। सूजको आल्लामन्दसे राजधानीमें लानेवाले वीरवर सुरतानपर जो आक्रमण किया गयाथा. इससे वर्ष पहिले बोया हुआ यह बीज ही उसका मूल कारण है। केवल सुरतानका ही जीवन नष्ट किया हो ऐसा नहीं; किन्तु सलअंत्रके अर्थात् मानसिंह क्रमसे प्रथम श्रेणीके शक्तिशाली सामन्तोंमेंसे किसीको निर्वासित और किसीको निधन कर रहेहैं। यद्यपि इन सब षड्यंत्र जालभेदका वर्णन अत्यन्त नीरस मालूम होना संभव है तथापि उनमेंसे कई बातोंका लिखना आवश्यक है. कारण कि उसको पढकर पाठक लोग राजा मानसिंहके (जो इस समय वृटिश गवर्नमेंटके मित्र हैं) हित्स्वभावका पूर्ण परिचय पासकेंगे।

एकत्रित होकर मारवाडको घेरा था, उस समय भी राजपक्षके चार सामन्तोंमेंसे यह सुरतान भी एक थे। सन् १८०६ ईसवीमें जब उक्त दुर्द्दान्त सम्मिलित सेना मारवाडको विध्वंस करके असंख्य धन लूटकर लेगई, तब उपरोक्त जिन चार-सामन्तोंने उनके पीछे दौडकर लूटेहुए धनको छीना और असंख्य शत्रुओंको मारकर रजवाडेमें रुदनकी आग जलादी थी, यह वीरवर सुरतान भी उन चार सामन्तोंमेंसे एक वीर थे। * सुरतानके मरनेपर सम्पूर्ण राजस्थानने शोक मनाया और मुझे स्वयं शोक हुआथा। अपने वीरोचित चरित्रोंके कारण ही वे सर्वसाधारणके प्रशंसापात्र हुए थे। मेरी जोधपुरयात्राके आठ मास पीछे उस महावीर राजपूतके मृत्युसमाचारका सूचक जो पत्र मेरे पास आयाथा, उसका अनुवाद नीचे दियाजाताहै, उसको पढकर पाठकगण इस बातको भलीभाँति समझजायँगे कि सुरतान कैसा असमसाहसी वीर पुरुष था।

जोधपुर २ आषाढ।

(२८ वीं जून सन् १८२० ई.)

"ज्येष्ठमासके अन्तिम दिन (२६ वीं जून) सूर्य्योदयके एक घडी पहिले राजा आलिगोल×और सम्पूर्ण सामन्तसेना अर्थात् अस्सी हजार सेनाको सुरतान सिंहके ऊपर आक्रमण करनेकी आज्ञा दीगई। वह सेना नगरके मध्यस्थ और उनके निवासस्थानको घेरकर तीन घडी तक बन्दूकोंकी गोली चलातीरही। इसके पीछे सुरतान निजभ्राता सूरसिंह, आत्मीयवर्ग और सम्प्रदायसहित महावीरताके साथ तलवार लेकर निकले और शत्रुओंपर आक्रमण करके दूर भगादिया। किन्तु अपने अधीश्वरके विरुद्ध कौन जीत सकताहै? राजाके पक्षमें बहुत सी सेना थी. इस कारण दोनों भ्राता ही बडी भारी वीरता दिखानेके पीछे युद्धमें मारेगये। नागोजी और बटे नाहरी चालीस वीर दोनों भ्राताओंके साथ-मे मारेगये और चालीस वीर घायल हुए। जो अस्सी वीर जीवित बचे थे, वह अस्त्र शस्त्र लेकर निमाजके नामलेने भागगये। - राजाकी सेनामें चालीस मनुष्य मरे और सौ १०० घायल हुए. तथा बीस नगरनिवासियोंको इस युद्धमें हानि पहुंची।

* [illegible]

[illegible]

× [illegible]

* [illegible]

सन् १८०९ ईसवीसे १८१७ ईसवीतक मारवाडकी दशा बहुत बुरी रही। इस ही समय घटनाचक्रसे राजस्थानका भाग्य अंग्रेजोंके हाथमें आया। छत्रसिंहने ब्रटिश गवर्नमेंटके साथ संधि स्थापन करनेके लिये एक दूतको भेजा. किन्तु संधिस्थापनसे पूर्व ही छत्रसिंह स्वर्गको सिधार गये। इनकी इस अकालमृत्युके विषयमें अनेक लोग अनेक बातें कहते हैं। कोई २ कहतेहैं कि अतिशय लम्पटताके कारण शरीरकी दुर्बलताने उनके जीवनदीपको अकालमें निर्वाण करदिया. दूसरे लोग कहतेहैं कि उन्होने एक राजपूत-युवतीका सतीत्व नष्टकरनेकी चेष्टा की थी इस कारण युवतीके पिताने अपनी तलवारसे उनके प्राण लेलिये। छत्रसिंहकी मृत्यु और राजनैतिक दशा परिवर्तित देखकर मारवाडकी सामान्तमंडली एकान्तवासी मानसिंहके ऊपर दृष्टि डालनेके लिये बाध्य होगई। मैंने जो कुछ बातें लोगोंसे सुनी उनमें यदि आधी बातें भी सत्य हों तो मैं यह कहसकताहूं कि देवनाथके हत्याकाण्डसे छत्रसिंहकी मृत्युतक जितने समय तक महाराज इस दशामें रहे वह समय उनके पापोंका प्रायश्चित्तस्वरूप था। जिस समय सम्वाददाताने छत्रसिंहकी मृत्युका समाचार सुनकर उनको राज्यशान्ति रक्षाके लिये प्रयत्न करनेको कहा.

अट्ठाईसवाँ अध्याय २८.

जोधपुर राजधानी;–राजा मानसिंहद्वारा अभ्यर्थना;–राजा मानसिंहका स्वभावचरित्र;–उनके इतिहासकी घटनावली;–राजा भीमसिंहकी मृत्यु;–मारवाड़के प्रधान पुरोहित देवनाथ;–उनका हत्याकाण्ड;–उससे आगेकी घटना;–राजाके विरुद्ध षड्यंत्र;–धनकुलसिंहका किया हुआ सिंहासनाधिकारका आयोजन;–राजाकी असली वा कल्पित उन्मत्तता;–उनके कुमारकी राज्यप्राप्ति;–राजा मानसिंहद्वारा फिर राज्यभार ग्रहण;–प्राचीन-राजधानी मन्दौरमें गमन;–राठौरलोगोंका स्मारक मन्दिर–मन्दिरकी विराटकाय हर्म्यावली–नगरप्राकार;–प्रासादका ध्वंसावशेष;–जयतोरण;–पानका थानापीर;–पुष्पकुण्डकी उपत्यका;–पर्वतके ऊपर खोदीहुई प्रतिमावली;–मन्दौरका वन;–एक संन्यासी;–राजमहलमें उत्सव;–अंगरेजदूतके साथ राजाकी मुलाकात;–जोधपुर परित्याग।

लूनी नदीके पार होते ही हम लोग रेतीले मैदानमें पहुँचे क्रमसे बालूकी संख्या बढतीगई. जितना २ हम मरुक्षेत्रकी राजधानीके निकट होतेगये उतना ही उतना बालूका ढेर कष्टदायक मालूम होनेलगा: किन्तु हमारे अनुचर लोग गङ्गातटके समतलक्षेत्रमें जितनी शीघ्रतासे चल सकतेहैं. उसी प्रकार मारवाड़ी लोग इस बालुकापूर्ण क्षेत्रमें विना कुछ कष्टके शीघ्रतासे आजातेहैं। राजा जोधका नगर कैसा है. इस [illegible] पढके सकेंगे. साधारण दृष्टिपथ दृष्टि डालनेसे पाठकगण मनमें ही इस राजधानीकी असली मूर्तिकी कल्पना करनेमें सम्पूर्ण रीतिसे समर्थ होंगे। दूर [illegible]

द्वारा सामन्त मण्डलीका जीवन हनन कार्य्य पूरा करलिया । उसके उस हत्याकाण्डनाटकका प्रथम अभिनयस्वरूप सुरतानका स्वर्गवास सबसे पहिले समाप्त हुआ; इसके पीछे बहुतसे सामन्त इसी प्रकारसे मारेगये, यहां तक कि राजा मानसिंहका प्रथम उद्देश सिद्ध होनेमें कुछ भी शेष नहीं रहा । अन्तमें प्रतिहिंसाके फल देनेका समय उपस्थित हुआ; मंत्रीवर अक्षयचंद और उसके साथी लोग राज्यके पदोंसे अलग करके बन्दीभावसे कारागारमें भेजेगये । राजा मानसिंहने अक्षयचंदको जीवनदानकी आशा देकर ठगलिया; उसने अपनी चालीस लाख रुपयेकी सम्पत्तिकी एक सूची राजाके हाथमें सौंप दी । राजाने उस सब सम्पत्तिको अपने हस्तगत करके अन्तमें अक्षयचंदको मारडाला । दुर्गाध्यक्ष नागजी और मल्लजी धोन्वलनामक दो मनुष्य राजाके मृतपुत्रके परम प्रेमपात्र और उपदेशक थे; जब राजाने निकाले हुए अपराधियोंको क्षमा करदेनेका ढंढोरा पिटवाया तो उपरोक्त दोनों व्यक्ति राज्यमें फिर लौट आये और अपनेको अविद्रोही समझकर निवास करनेलगे । छत्रसिंहके शासनसमयमें इन्होंने जितना धन राजकोषसे संग्रह कर लिया था, उस सब धनको राजाने अपने हस्तगत करके उन दोनोंको विष देदिया और उन दोनोंके शवको गिरिखाकी धारमें डालदिया । उपरोक्त हत्याओंके करडालनेपर भी राजा मानसिंहकी पैशाचिक कामना निवृत्त न होकर क्रमसे प्रबल होने लगी । इनके नवीन मंत्री फतेहराज, अक्षयचन्द और सम्पूर्ण चम्पावत सम्प्रदायके प्रबल शत्रु थे; कारण कि उसकी धारणा यह थी कि. "यही सब मेरे भ्राता इन्द्रराजके घातक देवनाथके जीवन हनन कालमें मारनेके कारणस्वरूप थे ।" इस कारण इसने उस लोमहर्षण अभिनयकालमें पूर्ण उद्योगके साथ राजा मानसिंहकी सहायता की थी । राजा मानसिंहको इसी प्रकार प्रतिदिन अगणित मनुष्योंमेंसे किसीके प्राणनाश, किसीको बन्दी और किसीकी समस्त सम्पत्ति छीननेकी आज्ञा देनेथे । सुनते हैं कि राजा मानसिंहने इस प्रकार एक करोड़ रुपया राजकोषमें बढ़ाया ।

रोक्त संख्या बहुत अधिक मालूम होती है। नगरनिवासियोंके लिये गुलावसागर प्रधान विश्रामस्थान है; सब लोग उसके तट और निकटके वनोंमें वायुसेवन करके आनन्द भोगतेहैं। बडे आश्चर्यका विषय है कि, उस वनमें एक ऐसा चमत्कारिक फल उत्पन्न होताहै जो काबुलके अनारसे भी बहुत बातोंमें श्रेष्ठ है। काबुलके अनारको अन्यायसे बेदाना कहतेहैं, क्योंकि उसमें दाने होते हैं, किन्तु यहांके इन फलोंका बीज इतना छोटा होताहै जो कि न होनेकी ही समान है। "कागलिका बाग" अर्थात् "दाडिमीके बन" में उत्पन्न हुए यह मनोहर और स्वादिष्ट फल उपहारस्वरूप भारतके अनेक स्थानोंमें भेजेजाते हैं। इन फलोंका पद्मराग मणिके समान रमणीय रत्न देखकर कविलोग अमृतके साथ इसकी तुलना करते हैं।

चौथी तारीखको महाराजा साहबने दूसरे सिंहद्वारतक आगे बढकर मुझको यथारीतिसे सन्मानके साथ ग्रहण किया. और प्रणामपूर्वक कुशल प्रश्नके पीछे प्रचलित रीतिके अनुसार राजमहलकी ओर चलेगये। महलमें जाकर जितने समयमें महाराज मेरी अभ्यर्थनाका सामान ठीक करसके उतने समय तक मैं ठहरगया, और फिर धीरे २ श्रेणीबद्धभावसे खडेहुए राजवंशीय और राजाके आत्मीयलोगोंके बीचमें होकर आगे बढा; जाते समय मेरे नेत्रोंके सामने जितने चमक दमक और ऐश्वर्य्याडम्बरयुक्त दृश्य आये. मुझको पहिले उनके दृश्योंके देखनेकी आशा नहीं थी। यह सब मेवाडपति राणाके सरल और अनडम्बर्य प्रकाशक अभ्यर्थनानुष्ठानके बिलकुल विपरीत थे। राठौरलोगोंने बहुत काल तक "जगत्‌के अधिराजके दक्षिण हस्त स्वरूप" रहकर राज्य किया था, इस कारण यहांका प्रत्येक अनुष्ठान दिल्लीके शहंशाहका अनुकरण मालूम हुआ। सुवर्ण और चांदीके आसे आदि राजचिह्नधारी लोगोंने "[illegible]!" शब्दके उच्चारणसे मेरे कानोंको बहरेकी समान करदिया। [illegible] लोग मौन और निस्तब्धभावसे खडेहुए वीरोंके [illegible] अनेक कमरोंको [illegible] करके राजसभामें पहुंचे।

मारवाडके अधीश्वर सिंहासनसे उठ [illegible] और [illegible] आगे [illegible] सन्मानके साथ मुझे ग्रहण किया। [illegible] [illegible] होनेके [illegible] [illegible] दरीकी [illegible] [illegible] श्रेणीबद्धभावसे खडे हैं, [illegible] [illegible] हैं। [illegible]

किन्तु हम लोग बहुत धीरे २ चलेथे । राजधानीसे नगरकी ओर जो मार्ग गया
है, उस मार्गसे जानेके लिये मैंने सुजान तोरणमें होकर राजधानीको छोडा ।
कुछ ही दूर चलनेपर "महामन्दिर" को देखा । राजा मानसिंहने ध्वंसमान
जालौरसे उद्धार पाकर अपने व्ययसे इस विशाल मंदिरको बनवाया था । यह
कोश मार्ग आगे २ को पूर्वको नीचा होता चलागया है । मैं उस मार्गसे
होता हुआ पश्चिमकी ओर जानेवाले मार्गमें चलकर चारों ओर शिखर
मालासे घिरे हुए मारवाडके राजवंशके प्राचीन कीर्ति पूर्ण स्थानमें पहुंचा ।
यह मार्ग बहुत छोटा है; शिखर बहुत ऊंचे तक सीधे चले गये हैं
और पर्वतमें सैकडों गुफा संन्यासियोंका निवास स्थान बनी हुई हैं; पूर्वोक्त
लोगोंकी प्राचीन राजधानी इस मन्दिरमें शत्रुओंका प्रवेश रोकनेके लिये चारों
ओर दुर्ग प्राकार बना था. उसका ध्वंसावशेष अब भी दिखाई देता है । इस
स्थानमें निर्मल और स्वादिष्ट जलवाली नदी नाचती हुई चली है और एक सुन्दर
खिलानमें होकर जलधार चलीगई है । कुछ दूर चलनेके पीछे मार्ग क्रमसे चौडा
आने लगा; और दो सौ घरोंसे युक्त ग्रामके अतिक्रम करनेपर एक ऊंचे स्थान
पर बने हुए मंदिरने हमारे दृष्टिको आकर्षित किया । यह सब राठौर राजाओं
की समाधि मंदिर हैं; मन्डोरके चिरस्मरणीय अधीश्वरोंके शव जिस स्थानपर
रानियोंके साथ भस्मी भूत किये थे उस २ स्थानपर उनके स्मरणार्थ यह मंदिर
रावली बनाई गई है । दक्षिणसे उत्तरकी ओर तक जितने प्रधान मंदिर
हैं [illegible] एक नदी उनके दक्षिणसे होकर मन्द चालसे चलती है । पूर्वोक्त मंदिर
श्रेणीके आरम्भमें सुविख्यात राव मालदेवका स्मारक मंदिर है, उसमें उन्होंने
विक्रम प्रताप गौरवोचित मूर्ति स्थापित है । नामी शेरशाह जिसने बडी सेना
के साथ [illegible] आक्रमण किया था, उन मालदेवने बडे विक्रम
साथ उन शत्रुओंके विरुद्ध तलवार चलाई थी । सबसे अन्तमें महाराज
[illegible] उदयसिंह, गजसिंह और यशोवन्त
सिंहका स्मारक मंदिर है, और बीचमें [illegible]
[illegible] स्मारकमंदिर दिखाई देते हैं ।

मनुष्योंको (जो इनके अनुग्रहसे सन्मानसुख भोग रहेहैं उनको) यह एकदम विध्वंस करडालनेके लिये भीतर २ जाल फैला रहेथे । इस कारण समयपर इनकी यथार्थ प्रकृति प्रगट होजातीहै । उन नष्ट किये हुओंमेंसे सुरताननामक एक मनुष्यका वर्णन ऊपर करचुकेहैं ।

केवल प्राच्य जगत् ही नहीं–अन्यान्य देशोंकी समान राठौर लोग भी अपनेको देववंशसंभूत कहते हैं । हमको निश्चितरूपसे ज्ञात हुआ है कि पाँचवीं शताब्दीमें कन्नौजमें एक जाति अधीश्वर थी और वह ईसवी सन्के आरंभसे पहिले राज्य करती थी । राठौर लोगोंके ऊंची जातिमें होनेके विषयमें भाट वा कवियोंकी कविताकी आवश्यकता नहीं है: कारण कि वीरत्व विक्रम, प्रताप प्रभुत्व प्रकाशक कार्य्यावलीने इतिहासके पत्रोंमें राठौरलोगोंका नाम जिस भावसे अङ्कित करदियाहै वह कभी लुप्त नहीं होगा । रजवाडेकी इन राठौर, चौहान आदि समस्त राजपूतजातियोंने यशरूपी मन्दिरके किस स्थानमें किसने कैसा आसन पाया था, उसका निर्वाचन असंभव है. किन्तु सत्यके अनुरोधसे मैं अवश्य ही राठौर लोगोंको चौहानोंके साथ समान यशवाले शिखरपर आसन देनेको वाध्य होताहूं । मारवाडके आदि राठौरराज शिवजीके वंशसंभूत चण्ड और योध तथा उनके उत्तराधिकारी राजा मानसिंहका वीरत्व विलास अवश्य ही चिर स्मरणीय है ।

अन्तमें महाराजके पवित्र हाथसे इत्र और पान लेकर सन्मानके साथ प्रणाम किया, और फिर प्रचलित रीतिके अनुसार राजाके सामने ही शिरपर टोपी रक्खी । सम्पूर्ण देशी राजसभाओंमें शिरपर पगडी धारण और नंगेपैर बैठनेकी रीति प्रचलित है । साधारण लोगोंके बैठनेके लिये सफेद चादरसे ढका एक बहुत बडा गलीचा बिछा था, किन्तु उसके ऊपर जूता पहनकर बैठना अवश्य ही अशिष्टाचार सूचक है । राजदरबार [illegible] होताहै. किन्तु मोजा पहरे हुए [illegible] नहीं हो सकता । महाराजने [illegible] सुनहरी और [illegible] किये । [illegible] ध महाराजने उनको भी [illegible] किये ।

[illegible]

वंशवाले राणांगण और तैमूरवंशके सुप्रसिद्ध उत्तराधिकारियोंकी नामावली संयुक्त करके बडे अभिमानके साथ यूरूपके राजालोगोंसे पूंछतेहैं कि यूरूपमें किसी समय एक कालमें क्या ऐसे महावीर सुशासन कर्त्ता और विद्वानोंने जन्म लियाथा :

मेवाड	मारवाड	दिल्ली
राणासांगा	रावमालदेव	बाबर और शेरशाह
०	राव सूरसिंह	हुमायूं -
राणा प्रतापसिंह	राजा उदयसिंह	अकबर
राणा अमरसिंह (१ म) राणाकर्णसिंह	राजा गजसिंह	जहांगीर और शाहजहां
राणा राजसिंह	राजा जसवंतसिंह	औरंगजेब।
राणा जयसिंह राणा अमरसिंह(२य)	राजा अजितसिंह	फरुखसियारके परवर्ती दिल्लीके सिंहासनप्रार्थी गण

मालदेव और अकबरके मित्र और मारवाडके प्रथमराजोपाधि धारी (इससे पहिले रावोंकी उपाधि थी) उदयसिंहसे आरंभ करके औरंगजेबके प्रबल शत्रु जसवन्तसिंह और अजितसिंह (जिन्होंने निज बाहुबलसे मुगलोंके भयसे अपना चारेसे अपने राज्यका उद्धार किया) आदि यह सब ही राजा बडे वीर और स्वदेशहितैषी थे।

एक पक्षमें अत्यन्त प्रशंसनीय—चिर स्मरणीय कार्य्य सिद्ध हुआ, दूसरे पक्षमें वैसा ही बड़ा भारी पाप भी हुआ।

पूर्वोक्त प्रकार राजनैतिक विप्लवके समय जितनी विपत्तियोंकी संभावना थी, राजा मानसिंहको इस समय सिंहासनपर बैठकर वह सब विपत्तियें भोगना पडीं। जिस समय वह झालामन्दमें अपने अधिनायक और ज्ञातिभ्राताके आक्रमणके विरुद्ध आत्मरक्षामें नियुक्त थे, उस समय यह एक अभावनीय घटनाके द्वारा उस विपत्तिसे उद्धार पाकर राजसिंहासनपर बैठे। राजा भीमसिंहने साक्षात् नरपिशाचकी समान मारवाड़के राजवंशकी प्रत्येक शाखाके मनुष्योंको मारा,और प्राणनाशसे बचे हुए मानसिंहको मारकर अपनी बुरी अभिलाषा पूरी करनेकी विशेष चेष्टा करनेलगे। भीमसिंहके इस शोचनीय पैशाचिक आचारणसे मारवाडमें राज्यविध्वंसकारी भयङ्कर युद्धाग्नि जल उठी। जहांतक शोचनीय और निराश दशा होनेकी संभावना होसकतीहै, राजा मानसिहको उस समय वह सब प्राप्तहुई थीं और जिस दिन वह विवश होकर अत्याचारीके हाथमें आत्मजीवनके साथ २ झालोर प्रदेश सौंपनेको उद्यत हुए, उस ही दिन उन्होंने इस घोर विपत्तिसे उद्धार पायाथा। उन्होंने मुझसे कहा कि, "राठौर जातिके प्रधान गुरु—मारवाडके सर्वप्रधान धर्म्मयाजकके करुणाबलसे ही मैंने उद्धार पाया था।" उक्त गुरुवर सर्वसाधारणमें नाथजीनामसे विख्यात हैं. उनका असली नाम देवनाथ है। इन पूजनीय गुरुदेवने निःस्वार्थभावसे न्यायके वशीभूत होकर राजा मानकी जीवनरक्षाकी थी, यह बात ठीक है अथवा केवल सामान्य देवाराधनके बदले अन्य किसी विचित्र उपायसे इस नश्वर संसारस्वर्गमें भेजा, इस विषयमें अनेक लोग अनेक प्रकारकी बातें कहतेहैं. किन्तु यह बात सब लोग स्वीकार करतेहैं कि यदि यह गुरुदेव राजा मानसिंहकी रक्षा न करते तो भीमसिंहका मनोरथ पूरा होजाता। अतः भीमसिंहके प्राणनाशमें मानसिंहका ही विशेष उपकार दिखाई देताहै। मारवाड़के पाषाणहृदय भीमसिंहके हाथमें आत्मसमर्पण करके घोर कष्ट भोगनेके बदले जब राजा मानसिंह आत्महत्या करनेको उद्यत हुए, तब उक्त प्रधान धर्म्मयाजकने भविष्यद्वक्ताकी समान कहा कि "आपकी जन्मपत्रीमे आत्मसमर्पणका कोई योग नहीं है. अन्तमें आपकी ही विजय होगी।" इस प्रकारके भविष्यद्वक्ता लोग राजा लोगोंके लिये भयानक और घातक हैं, क्योंकि वह अपनी बात सत्य करनेके लिये अनुचित उपायोंके करनेसे भी नहीं डरते। सुनतेहैं कि उक्त धर्म्मयाजकने राजा भीमसिंहके मारनेके लिये ही उपासना

स्त्री भी पतिभक्ति और प्रेमका परिचय देनेके लिये चितामें न जलें। व मुजको अपने बालक पुत्रके अभिभावक पद पर वरण करगये.—कु दिन पीछे में बून्दीमें चलागया और उनकी इस आज्ञाका भलीभांति पाल करदिया।

दुर्गके नीचेवाले स्मारक चिह्नोंके विषयमें भी लिखतेहैं। पर्वतके ऊपर औ मन्दिर दुर्गप्राकारके बाहरी स्थानमें राव रणमल्ल, राव गङ्गा और पुरीहर लोगों हाथमेंसे जिन्होंने मंडोर छीनलिया था उन चंडका मंदिर विराजमानहै। इन राजप शोय तीनों महावीरोंका उक्त मन्दिरके दो सौ हाथकी दूरीपर एक स्वतंत्र स्थान स्वाभाविक रंगसे जिन रानियोंने प्राणत्याग कियेथे उनके लिये निर्मितहै प्रिय पाठक ! अब राठौर लोगोंके इस समाधिक्षेत्रके वीभत्सदृश्यमें परिण पुरीहर लोगोंकी राजधानीके देखनेके लिये आगे बढ़िये।

जिन्होंने प्राचीन टास्कोनका कार्टोना, वलटेरा अथवा अन्यान्य नग देखेहैं, वह लोग मन्दोरके प्राकारकी असली आकृति सहजमें ही कल्पना कर सकेंगे. क्योंकि यह नगरप्राकार ठीक वैसा ही विराटकाय है। यह भी विचित्र बात है कि, यूरोपकी समान भारतवर्षकी प्राचीन जातियों (कुमारि- गालाटी और केल्टी जातिकी समान पालिनाम कृत्यार्थबोधक है) में रेख- विज्ञानशिक्षाके अभावसे एक ही प्रकारकी दृश्यमालामें यह सब विराटकाय प्राकार एक दुर्गके ऊपर स्तूपाकारसे निर्माण कियेगये हैं; उनके उत्तराधिकारी लोग इन ऊंचे प्राकारोंको देखकर विचार करतेहैं कि पूर्वकालमें इस मंदरमें बड़े २ शरीरवाले राक्षस रहते थे। सम्पूर्ण राजपूताना और सौराष्ट्रसहित भा-

एक पक्षमें अत्यन्त प्रशंसनीय-चिर स्मरणीय कार्य्य सिद्ध हुआ, दूसरे पक्षमें वैसा ही बड़ा भारी पाप भी हुआ ।

पूर्वोक्त प्रकार राजनैतिक विप्लवके समय जितनी विपत्तियोंकी संभावना थी, राजा मानसिंहको इस समय सिंहासनपर बैठकर वह सब विपत्तियें भोगना पडीं । जिस समय वह झालामन्दमें अपने अधिनायक और ज्ञातिभ्राताके आक्रमणके विरुद्ध आत्मरक्षामें नियुक्त थे, उस समय यह एक अभावनीय घटनाके द्वारा उस विपत्तिसे उद्धार पाकर राजसिंहासनपर बैठे । राजा भीमसिंहने साक्षात् नरपिशाचकी समान मारवाड़के राजवंशकी प्रत्येक शाखाके मनुष्योंको मारा,और प्राणनाशसे बचे हुए मानसिंहको मारकर अपनी बुरी अभिलाषा पूरी करनेकी विशेष चेष्टा करनेलगे । भीमसिंहके इस शोचनीय पैशाचिक आचारणसे मारवाडमें राज्यविध्वंसकारी भयङ्कर युद्धाग्नि जल उठी । जहांतक शोचनीय और निराश दशा होनेकी संभावना होसकतीहै, राजा मानसिंहको उस समय वह सब प्राप्तहुई थीं और जिस दिन वह विवश होकर अत्याचारीके हाथमें आत्मजीवनके साथ २ झालोर प्रदेश सौंपनेको उद्यत हुए, उस ही दिन उन्होंने इस घोर विपत्तिसे उद्धार पायाथा । उन्होंने मुझसे कहा कि, "राठौर जातिके प्रधान गुरु-मारवाडके सर्वप्रधान धर्म्मयाजकके करुणाबलसे ही मैंने उद्धार पाया था ।" उक्त गुरुवर सर्वसाधारणमें नाथजीनामसे विख्यात हैं, उनका असली नाम देवनाथ है । इन पूजनीय गुरुदेवने निःस्वार्थभावसे न्यायके वशीभूत होकर राजा मानकी जीवनरक्षाकी थी, यह बात ठीक है अथवा केवल सामान्य देवाराधनके बदले अन्य किसी विचित्र उपायसे इस नश्वर संसारसे स्वर्गमें भेजा, इस विषयमें अनेक लोग अनेक प्रकारकी बातें कहतेहैं. किन्तु यह बात सब लोग स्वीकार करतेहैं कि यदि यह गुरुदेव राजा मानसिंहकी रक्षा न करते तो भीमसिंहका मनोरथ पूरा होजाता । अतः भीमसिंहके प्राणनाशमें मानसिंहका ही विशेष उपकार दिखाई देताहै । मारवाड़के पाषाणहृदय भीमसिंहके हाथमें आत्मसमर्पण करके घोर कष्ट भोगनेके बदले जब राजा मानसिंह आत्महत्या करनेको उद्यत हुए तब उक्त प्रधान धर्म्मयाजकने भविष्यद्वक्ताकी समान कहा कि "आपकी जन्मपत्रीमें आत्मसमर्पणका कोई योग नहीं है. अन्तमें आपकी ही विजय होगी ।" इस प्रकारके भविष्यद्वक्ता लोग राजा लोगोंके लिये भयान[illegible] अनिष्टसाधक हैं. क्योंकि वह अपनी बात सत्य करनेके लिये अनुचित उपाय[illegible] करनेमें भी नहीं डरते । सुनतेहैं कि उक्त धर्म्मयाजकने राजा भीमसिंहके मरण[illegible] लिये ही उपासना

चौकोन है। जब मैं इस स्थानपर पहुंचा तो मुझको थकावट और ज्वर आगया था इस कारण इस प्राकारकी भूमिका परिमाण नहीं जानसका, किन्तु ऊपरके भागमें पुरिहरलोगोंके प्राचीन महलके ऊपर चढकर चारोंओर ध्वंस स्तूपोंपर दृष्टि डालनेसे मेरा यह क्षोभ जातारहा। यद्यपि ध्वंस चिह्न बहुत साधारण हैं, तथापि अबतक दिखाई देतेहैं। जिन उपकरणोंसे यह सब बनेथे उन्हीं उपकरणों-से नवीन जोधपुर राजधानी और उपरोक्त सम्पूर्ण स्मारक मन्दिर बनाये गयेहैं। राजमहलसे मिले हुए कितने देवमन्दिर और महलके कितने ही कमरे अब भी स्पष्टरूपसे दिखाई देतेहैं। इन सब कमरोंके बाहरकी खुदाईका काम देखकर अनुमान होताहै कि यह तक्षक अथवा बौद्धोंके हाथके बने हैं। महलकी दीवारों-पर धर्मसम्बन्धी बहुतसे सांकेतिक चिह्न अंकित हैं। यह सब बौद्ध और जैनियोंके निदर्शन चिह्नकी समान हैं, किन्तु शैवोंके त्रिकोण चिह्न भी कई स्थानोंमें खुदे हैं। पुरिहरलोगोंके सर्व प्रधान चिह्नोंमें दुर्गके दक्षिण पूर्वमें बना हुआ सिंह-द्वार (सदरदरवाजा) और जयतोरण परम रमणीय है। यह देखनेसे जाना जाता है: मन्दोरके प्राचीन राजालोगोंमेंसे किसी एक राजाने अपनी विजय घटना चिर स्मरणीय करनेके लिये ही इसको बनवाया है। अवकाशाभावके कारण मैं इस जयतोरणका नकशा नहीं लेसका।

व्यय करते हैं। उनका जिस प्रकारका मंत्रणा सभागार और सुवर्ण सिंहासन था वह जिस महा आडम्बर महैश्वर्य्य प्रकाशके साथ सर्वसाधारणके सन्मुख उपस्थित होते, विनयावनत साधारणलोग जिस भावसे उनसे दयाकी प्रार्थना करते और अनेक कार्य्योंमें उनकी जैसी व्यग्रता दिखाई देती, उससे वे सब सामान्य विनयी याजकोंके बदले एक विचारक मालूम होते थे।" किन्तु देवनाथका पूर्ण विकासित गर्वप्रसून अन्तमें छिन्न भिन्न होगया। देवनाथने अपने अधीनस्थ देवालय समूह और शिष्योंके व्ययका धन तथा मारवाडके प्रधान २ सामन्तोंके अधीनस्थ प्रदेशोंके अनेकांश धीरे २ अपने कर लिये थे; सम्पूर्ण सामन्तोंके अनुचरोंकी जितनी संख्या थी, उतनी संख्या अकेले देवनाथके अनुचरोंकी थी। मारवाडेश्वर जिन राजचिह्नित ध्वजा पताका दण्डधारी शरीररक्षकोंके साथ बाहर निकलते थे, देवनाथकी सन्मान वृद्धिके लिये भी बीच २ में वे सब अनुचर उनके पीछे चलते थे। जिस समय गर्वित राजपूत सामन्तगण हाथ जोडकर देवनाथके सन्मुख खडे होतेथे, उस समय अपने मन २ में समझते थे कि "मारवाड पतिके अधिराजके निकट–प्रतिहिंसा प्रदानार्थी वृथा दर्पी याजक तथा धर्म्मविधानके बहानेसे आत्मगौरव सुखेच्छा पूर्ण करनेवालेके सन्मुख नम्र होते हैं।" इधर उन याजकने ही इनके गर्वका चूर्ण और राजकर न्यून करदिया था, यह बात भी उनके हृदयमें भलीभाँति अंकित थी। यह सम्पूर्ण अपमानित सामन्त शीघ्रही बदला लेनेको उद्यत होगये, यद्यपि वह लोग उन धर्म्मयाजकके रक्तमें अपनी २ तलवार रंगनेको प्रस्तुत न थे, किन्तु शीघ्रही उनके मनोरथ पूरा होनेका अवसर आगया। क्या किस चिडियाका नाम है जो जाति इस बातको बिलकुल नहीं जानती उस जातिके दुर्दांत डॉकू अमीरखाँकी सेनाने अपनी तलवारसे उनके प्राण ले लिये। सुनते हैं कि राजा मानसिंहजी उस हत्याकाण्डमें गुप्त रूपसे मिले हुए थे; यद्यपि उन्होंने उस हत्याकी आज्ञा वा अनुमति नहीं दी थी, किन्तु हत्या निवारण करनेकी भी कुछ चेष्टा नहीं की। इस समय उस रहस्यको प्रगट करनेवाले केवल दो मनुष्य जीवित हैं–एक राजा मानसिंह और दूसरे राजस्थानके डॉकू अमीरखाँ।

सर्वश्रेष्ठ धर्म्मयाजककी मृत्युके पीछे शोचनीय दशाके आनेका आरंभ हुआ। उस दशामें अत्यन्त विश्वासघातकताके साथ किस प्रकार निमाजके सामन्त और उनके कुटुम्बीलोग मारे गये और राजस्थानकी प्रसिद्ध कर्मदेवी कृष्णाकुमारीके

देखनेमें परम सुन्दर है। प्रत्येक सामन्तके हाथमें बरछा, तलवार, ढाल, पीठपर धनुष बाण और कमरमें लम्बी छुरी बँधीहै। सबका रंग देखनेमें सुन्दर है; किन्तु मैं यह नहीं कहसकता कि इन वीरोंका शरीर असली ऐसा ही था अथवा कारीगरोंने अपनी इच्छानुसार बना दियाहै। इस कमरेमें प्रविष्ट होनेसे पहिले एक बड़ी गणेशजीकी मूर्तिके दर्शन होतेहैं। गणेशजीकी मूर्तिके निकट रणछोड़-बंक भीलनामक दो पुत्रोंकी मूर्तियें विराजमान हैं। इनके अनन्तर चण्डमुण्डा और कङ्काली देवीकी मूर्तियें स्थापित हैं। कालीकी मूर्ति कृष्णकाय भयङ्कर महिषासुरकी छातीके ऊपर एक चरण और सिंहकी पीठपर दूसरा चरण रखकर खड़ीहै; सिंह उक्त राक्षसकी छातीको भयानक रूपसे काट रहाहै। देवी-के हाथोंमें अस्त्र शस्त्र शोभायमान हैं। कालीकी मूर्ति और रणथम्भमें दीक्षित संग्रामभूमिमें मरे हुए वीरोंकी मूर्तियोंमें राठौर लोगोंके सर्वप्रधान धर्म्मपालक मल्लि-नाथजीकी प्रतिमूर्ति स्थापित है। नाथजीके एक हाथमें माला और दूसरे हाथमें धर्म्मदण्ड है। मल्लीनाथ सफेद घोड़ेके ऊपर चढ़ेहुए हैं, इनके हाथमें स्थित बरछेके शिरपर एक झंडी है और तरकस घोड़ेके नितम्बोंपर लटकता है; इनकी भार्या पद्मावती भोजनपूर्णपात्र हाथमें लिये मल्लीनाथके सम्मुख खड़ीहुई अभ्यर्थना कर रहीहै। मल्लीनाथके युद्धमें मारे जानेपर पद्मावती अपने शरीरको इनके शवके साथ भस्मी भूतकरके सूर्य्यलोकको चलीगई।

इसके अनन्तर कृष्णकाली नामक भयङ्कर घोड़ेपर सवार प्रभुजीकी प्रतिमा है। चारण और भट्टक लोग प्रतिवर्ष मारवाड़के अनेक स्थानोंमें घूमकर इन प्रभुओंकी कीर्ति गान और महावीरत्व सूचक कवितावली ग्रामीण लोगोंको सुना-कर बहुत सा धन संग्रह करते हैं।

शासन प्रणालीके ऊपरसे वहुत दिनोंके लिये राजालोगोंका विश्वास उठगया। पोकर्णके सामन्त सवाईसिंह धौंकुलसिंहको मारवाड़के सिंहासनपर न विठासके। अन्तमें उन्होंने धौंकुलसिंहको जयपुर वंशके खेतडी नामक प्रदेशके शिखावत सम्प्रदायके स्वाधीन सामन्तके निकट वेखटक रहनेके लिये भेजदिया। कुछ काल पीछे मारवाडके राणाकी पुत्री कृष्णाकुमारीके निमित्त मारवाड़ और जयपुरराजमें भयानक युद्ध उपस्थित हुआ; यह उपयुक्त अवसर समझकर सवाईसिंहको उस समय वहांसे कार्य्य रंग भूमिमें लेआये। कृष्णाकुमारीके निमित्त मानसिंहके साथ जयपुरपतिका जो भयंकर युद्ध हुआ था उसका फल ऊपर लिखचुके हैं। यह सहजमें ही अनुमान किया जासकता है कि सवाईसिंहके षड्यंत्रसे ही उत्तरभारतके संपूर्ण राजा लोग इस युद्धमें संमिलित हुए थे। राजा मानसिंह जिस समय परम रूपवती कृष्णाकुमारीके पाणिग्रहणकी आशासे समराग्नि प्रज्वलित करनेको उद्यत हुए थे उस समय मारवाडकी प्रजा उनसे विरक्त होगई, यह देखकर चतुर सवाईसिंहने राजा भीमसिंहके औरस पुत्र धौंकुलसिंहको मारवाडका असली राजा वताकर घोषणा कर दी, तव सव राजालोग सवाईसिंहके पक्षमें होगये। इसके पीछे कैसे २ उपाय किये, क्या २ लोमहर्षण काण्ड घटा, किस प्रकार कृष्णाका जीवनदीप अकालमें बुझाया गया, उसको पीछे लिखआयेहैं, इस घटना सूत्रमें ही पोकर्णके सामन्त सवाईसिंह मारे गये, और उनके कुछ ही दिन पीछे धर्म्मयाजक देवनाथ अमीरखांके अनुचरों द्वारा शोचनीय रूपसे नष्ट हुए।

अपनी प्रवल मानसिकशक्तिके वल और कई मित्रोंकी सहायतासे अपने सव शत्रुओंका नाश करके राजा मानसिंह विक्षिप्तसे होगये। प्रत्येक मनुष्यपर उनको संदेह होनेलगा. केवल रानीके हाथके बने हुए भोजनके सिवाय और सब भोजन करना वन्द करदिया: उनका विराग क्रमसे वढतागया, अन्तमें राजकार्य और सवका संग छोडकर एकांतमें रहने लगे। उनकी असली वा नकली उन्मत्तताके दूर करनेके लिये जितने उपाय किये गये वह सव निष्फल हुए. वह दिन रात केवल देवनाथकी मृत्युपर शोक प्रकाशकरने और देवनाथोंकी स्तुति करनेमें लगे रहतेथे। जिस समय राजा मानसिंहके चित्तकी ऐसी दशा हुई उस समय उनसे पुत्रके ऊपर राज्य शासनका भार समर्पण करनेका अनुरोध किया गया, तब उन्होंने अपने हाथ अपने पुत्रके मस्तकपर राजतिलक लगाया। यद्यपि राजा छत्रसिंह उस समय व्यवहारशून्य थे. पर [illegible] लम्पट थे। राज्यप्राप्तिके पीछे अत्यन्त इन्द्रियोंके [illegible] [illegible]।

वृक्ष है। "पुरोहित लोगोंके अन्तिम अधीश्वर नाहररावके सन्मुख अपनी इन्द्रजाल विद्याशक्ति दिखानेके लिये एक ऐन्द्रजालिकने इस वृक्षको आरोपण किया था।" जनश्रुति यह है कि उक्त वृक्षकी शाखाके गिरनेके कारणसे ही उस ऐन्द्रजालिका जीवनरूपी दीपक बुझगयाथा। इस वृक्षकी बडी २ डालियोंपर बन्दर निर्भय होकर कूदते और विचरण करते हैं। वृक्षकी जडमें दो राठौर राजपूत शयन किये हुए हैं और बडे २ दो घोडे भी तद्रूप हैं। यह उस शान्त निर्जन प्रदेशका कमनीय दृश्य है।

पर्वतकी चोटीपर नीचे जानेवाली उपत्यकाके सामने बहुत सी गुफाऐं हैं, जिनमें संन्यासीलोग निवास करते हैं। हमको इस बातका बडा ही आश्चर्य है। कि प्रबल गर्म्मीके दिनोंमें यह लोग ऐसे संकीर्ण और पवनरहित स्थानमें किस प्रकारसे रहते होंगे? संध्या होजानेके कारण मेरे कम्पमें लौटनेका समय आगया, इस कारण फिर एक बेर मारवाडके वीरोंकी प्रतिमाओंके दर्शन कर और "कृष्णकाली" घोडेके चरणतलपर अपना नाम लिखकर मन्दोर मन्दिरसे लौट आया।

राजा मानसिंहने गुप्त उद्देश सिद्ध करनेके लिये अपने बाहुबलके अतिरिक्त एक अन्य अस्त्रका आश्रय लिया। उन्होंने अपनी स्वाभाविक चतुरतासे प्रगटमें ऐसी दया दिखाई कि सम्पूर्ण सामन्त उनका विश्वास करने लगे, और मन २ में सोचने लगे कि "महाराज हमारे पिछले अपराधोंको भूलकर हमारा विश्वास करते हैं।" इस कारण वे सब ही असावधान रहनेलगे। इधर सामन्त लोग राजदरबारमें अपनी २ प्रभुता बढाने लगे, महाराज प्रगटमें इधर कुछ भी ध्यान नहीं देते थे। उसी समय सामरिक नेता पोकर्णके सालिमसिंह और प्रधान मंत्री अक्षयचंदको शक्तिहीन करनेके लिये योधराजने अपने दलबलके साथ विवाद बढाना आरंभ किया। राजा मानसिंह उनके इस विवादसे मनमें बडे प्रसन्न हुए। परंतु प्रगटमें उदासीनता दिखाने लगे। उन दोनोंने भूलसे भी यह इस बातका अनुमान नहीं किया कि राजाने अपना मनोरथ सिद्ध करनेके लिये ही यह जाल रचा है। जितने दिन तक मारवाडका राज छत्रसिंहके शिरपर रहा, उतने समयतक ही अक्षयचंदने प्रधानमंत्रीत्व किया था। मारवाडके आर्थिक और राजनैतिक सब विषय उसहीको मालूम थे; इस कारण सहसा राजा मानसिंहने उसको नहीं मारा. किन्तु जो बातें उनकी विक्षिप्त दशामें हुईथीं उन सब बातोंको जानकर उसके मारने और उसकी सम्पत्ति अपने हस्तगत करनेकी चेष्टा करनेलगे। मानसिंह अपने मनही मन सोचनेलगे कि केवल प्राणनाशद्वारा यह दो उद्देश सिद्ध नहीं होसकते। चतुर अक्षयचन्दने भी अपनी इस शोचनीय दशाको जान लिया। अंग्रेजोंके साथ राजाकी मित्रता होजानेके कारण वह [illegible] लगा, और अंग्रेजोंकी ओरसे राजाको विरुद्ध करदेनेकी चेष्टा करनेलगा। राजा मानसिंह भी दिखानेके लिये उसकी हांमें हां मिलाने लगे। प्रधान मंत्री और उसके साथी गुप्तरूपसे राजाके वशमें आगये।

जिस समय यह गुप्त षड्यंत्र जाल फैल रहाथा, उस समय ही मैं राजसभामें पहुंचा था। मैंने राजा मानसिंहको मननलीन, गहरी चिन्तामें मग्न, प्रत्येक कार्य सावधानीके साथ करते हुए, और कुचक्री अक्षयचंदको दल समर्थन करनेवालों-से घिराहुआ देखा। अक्षयचन्द यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियोंके बन्दी करनेमें समर्थ नहीं था, तथापि [illegible] ओरसे राजाको विरुद्ध करनेके [illegible] कोई त्रुटि शेष नहीं रक्खी। किन्तु उनके जीवन नष्ट करनेके लिये जो जाल फैलाया जारहाथा, उसकी उन समस्त चातुरी छल, धूर्तता और षड्यंत्रने उसको इस जालमें और भी जकडदिया। राजा मानसिंहने [illegible]

२७ वीं नवम्बर—को मैं महाराजके पास विदा मांगनेके लिये गया। इस अन्तिम मुलाकातमें विशेष प्रयोजनीय विषयोंपर बहुत देर तक बातचीत हुई। महाराज अपने उद्यम और प्रतिमाकी शक्तिसे सम्पूर्ण विपत्तियोंका निवारण, अत्याचारियोंको—उनके मृत पुत्रके कुपरामर्शदातागणोंको—मंत्रीवर और प्रधान धर्मयाजक देवनाथके हत्याकारी लोगोंको और महाराजके बहुत काल बन्दी दशाके कारणस्वरूप लोगोंको उपयुक्त दण्ड देकर शीघ्र ही निश्चिन्त होगयेंगे मैं उनको इस प्रकारका धीरज देआया।

"नियमित विदायी उपहारकी सामग्रीके साथ महाराजके व्यक्तिगत अनुग्रहका चिह्नस्वरूप उनके एक सुप्रसिद्ध पूर्वपुरुषकी एक तलवार, एक छुरी और एक ढाल मुझको मिली। तलवार इतनी भारी है कि इसको देखकर सर्वसाधारण भी यह समझसकतेहैं कि जिस हाथमें यह तलवार शोभा पाती थी वह बड़ा बलिष्ठ था। सादर संभाषणके पीछे परस्परमें पत्रआदि भेजनेके लिये अनुरोध हुआ (यह पत्रादि भेजना आरंभ तो हुआ था किन्तु शीघ्र ही बंद होगया) इसके अनन्तर महाराज मानसिंहसे विदा ली।"

(कर्नेल टाड साहबके मारवाड़में जानेका विवरण समाप्त हुआ)

लोगोंको अपनी इच्छानुसार देशसे वाहर निकालदेंगे, तथा "उनके आभ्यन्तरिक शासनमें मैं हस्तक्षेप नहीं करूंगा" इस प्रतिज्ञाने ही मेरे हाथ पैर बांधरक्खेथे। राजा मानसिंहने जितने आत्मीय और सामन्तोंके प्राणसंहार कियेथे मारवाडके इतिहासमें किसी राजाके शासनमें भी इतने लोमहर्षण काण्ड नहीं घटेथे।

जो इतिहास भविष्यत्में जाननेके योग्य है, पाठक मण्डली उसको वर्त्तमान स्थानपर पढनेसे अवश्य ही राजा मानसिंहके दोषोंको भूलकर उनको गंभीर, नम्र और पूर्णशिक्षित राजा समझेगी। मैं समझताहूँ कि मानसिंहने विचार पूर्वक ही यह संहारमूर्ति धारण की थी। जो कुछ भी हो इन सब बातोंके लिखनेके लिये अधिक समयकी आवश्यकता है। राजा मानसिंह पूर्ण शिक्षित थे, वह फारसी भाषा और अपनी जातीय भाषामें भलीभांति वातचीत करते थे। उन्होंने अपनी कवितामें लिखे हुए अपने वंशके छः इतिहास मुझको उपहारमें दिये उनमेंसे जिन दोमें सात हजार कविता थी उनका मैंने अनुवाद लिख लिया। प्रत्युपहारस्वरूपमें मैंने भारतवर्षमें मुसलमानोंके शासनका बडा इतिहास और "खोलासात् उल तवारीख" अर्थात् भारतवर्षका संक्षिप्त इतिहास भेजदिया मुलाकातके समय महाराजको मैंने जैसा पंडित और सज्जन समझाथा, परिणाममें ठीक उसके विपरीत हुआ। महाराजके साथ वातचीतके समय राज्यकी शासनप्रणाली और राजपूतोंके कर्त्तव्यता संबंधी उपदेश उनसे सुनकर मुझे परमानन्द हुआ। महाराज मुझको केवल एक अनुचरके साथ महलके अनेक कमरोंमें लेगये और वहांसे वडे लंबे चौडे मरुक्षेत्रकी ओर मेरी दृष्टिको फेरा पासके छोटे २ शिखर दृष्टिको दूरतक जानेमें रोकते थे। उतने वडे मैदानमें केवल दो एक नीमके वृक्षोंके सिवाय और कोई वृक्ष दिखाई नहीं दिया। कई घंटे तक वातचीत होनेके पीछे मैं डेरेपर लौट आया. यहां आकर देखा कि मेरे दोनों मित्र कप्तान वाघ और मेजर [illegible] कई गोलिन्दा कुत्तोंकी सहायतासे एक मृगका शिकार करलाये हैं।

८ वीं नवंबर—मरुक्षेत्रकी "पंचरंगी" [illegible] निकट [illegible] पहिले इस प्रदेशकी प्राचीन राजधानी मन्डोर थी इसके [illegible] इतिवृत्त जाननेकी इच्छासे [illegible] भेजे हुए [illegible] कुछ अधिक समय [illegible]

"राजस्थानीसे एक कोस तक रेतीला मार्ग है: और उससे आगेके मार्गमें कड़ा पत्थरका रेत है. इस लिये एक कोससे आगे चलकर पथिकोंको चलनेमें कुछ सुभीता होजाता है। आधा मार्ग समाप्त करनेपर हमने एक छोटा सा सरोवर देखा। इसको मारवाडाधिराजसिंहासनके लोभी धौंकुलसिंहकी माता शिखावतीने बनवाया था, इस कारण इसका नाम "शिखावत तालाब" विख्यात है। शिखावतीने इस सरोवरके तटपर एक धर्म्मशाला और एक हनुमानजीकी मूर्ति प्रतिष्ठित करा दी है, तथा अपनी पवित्र कीर्तिका चिरस्मरण एक स्तंभ बनवादिया है। इस प्रदेशमें कहीं भी वृक्ष बूंटा दिखाई नहीं देता। [illegible] सम्भर मन्दरसे जोधपुर जाते समय हमने योगिनी नामकी जिस नदीको पार किया था जो मन्दोरके निकट नागदाके साथ मिलकर लूनी नदीमें गिरी है. हमने इस ग्रामनाल्हसे फिर उस ही नदीको पार किया। नदीके पास जो कूवे बने हुए हैं ग्रामवासी लोग उनहींका जल व्यवहार करते हैं। इन दोनों कूओंमें यथेष्ट जल है परन्तु जल साफ नहीं है। नडोल्हा ग्राम एक सौ पचास घरोंकी बस्ती है। यह प्रदेश आहोरके सामन्तके अधीन है। यहां शुष्क भाव एक पुष्करिणी है। इसके तटपर समाधिके मन्दिर बने हुए हैं। मैंने यहां जाकर एक एक करके सबको देखा. परन्तु इनके ऊपर जिन लोगोंके नाम खुदे हुए हैं वह सब अप्रसिद्ध हैं।

उस मंदिरके साथ राजा अजितके स्मरणार्थ बने हुए परम रमणीय महलकी तुलना करनेपर हम स्वयं ही समझ सकते हैं कि, इस मरुक्षेत्रमें बाहरी सौन्दर्य्य और विलासिता क्रमशः बढती गई है। जो मालदेव अमित तेजके साथ अफगान सम्राट्के विरुद्ध युद्ध करनेको खडे हुए थे, (अफगानसम्राट्की चिरस्मरणीय उक्ति "मैंने एक मुट्टी गेहूँके लिये भारतसिंहासन खोदिया था।" यह प्रगट कर रही है कि उस समय सम्राट्ने जिन राठौर लोगोंको आक्रमण किया था वह महा दीनदशायुक्त और महावीर थे।) उनके समयसे लेकर अजितसिंहके शासन समय तक इन स्मारक मंदिरोंकी अकृति परिवर्द्धित और बाहरी सुंदरतायुक्त की गई, राजागजके स्मारक मंदिरके साथ उनके उत्तराधिकारीके मंदिरकी तुलना करने पर गजका मन्दिर सरल और साधारण मालूम होताहै। यह सम्पूर्ण मन्दिर लाल रंगके छोटे २ पत्थरोंसे बने हैं; यह पत्थर इतने कोमल हैं कि इनपर बेल बूँटा खोदनेमें कारीगरोंको कुछ भी श्रम नहीं होता। इन मन्दिरोंकी गठन प्रणाली शिव और बुद्ध दोनोंके मन्दिरकी समान है; किन्तु अधिक भाग और विशेष करके स्तम्भश्रेणी जैनियोंके अनुकरणमें कमलमीरके स्तम्भोंकी समान बनी है। विशेष करके मैं राजा यशवन्तसिंह और अजितसिंहके स्मारक मंदिरों-के विषयमें कहताहूँ; राजाके प्रधान द्वारा इन दोनों मन्दिरोंका नकशा तैयार कराके मैं यूरूपमें लाया हूँ; किन्तु खुदाईके काममें बहुत धन खर्च होताहै। गाक और ऊंचे पाषाण स्तूपोंके ऊपर यह मन्दिर स्थापित है। यशवन्तसिंहका मन्दिर कुछ अधिक दृढ है, किन्तु आकृति और परिमाणमें ठीक अजितसिंहके स्मारक मन्दिरकी समान है।

मन्दिरके सन्मुख आंगनमें होकर रमणीय स्तंभोंसे शोभित संपूर्ण चांदनीके प्रवेशद्वारोंसे होते हुए भीतरके प्रधान मन्दिरमें पहुंचना होताहै; शिवालयकी समान यह चारतल ऊंचा और शिखर तथा कलशयुक्त है। गठन और खो-दित भास्करकार्य्य प्रशंसाके योग्य है, मन्दिरके मूलमें और ऊर्द्धभागके अनेक स्थानोंमें जिस प्रकार अगणित स्तंभ शोभायमान हैं [illegible] भी उसी प्रकार अत्यन्त मनोहर हैं। यह स्मारक मन्दिर इजिप्टके प्राचीन मन्दिरकी समान हैं। इन स्मारकमन्दिरोंके साथ २ स्वर्गीय राजकुलके ऊपर दृष्टि डालनेसे सहजमें ही यह ज्ञान होसकताहै कि इस मारवाडराज्यमें किस प्रकार उत्तम महा २ वीरोंने जन्म लिया था. इस प्रकार किसी देशके किसी इतिहासमें भी नहीं दिखाई देता। इन राजालोगोंकी [illegible] साथ हम महान् [illegible]-

नहीं थी। जिस श्रेणीमें उक्त पितृहन्ता और उनके साहसी भ्राताका मन्दिर स्थापित है, उस ही श्रेणीमें अपने जीवनके शेष अंश तक अविश्रान्त वीरता दिखानेवाले महावीर विजयसिंहका था। मैंने आश्चर्य्यमें भरकर प्रदर्शकसे कहा कि "महावीर और परम श्रेष्ठ स्वामीकी शवभस्मको जो देश मनोहर मन्दिरमें रखना नहीं जानता उस देशको धिक्कार है।" विजयसिंहके तीन पुत्रोंके (उनमेंसे बडे जालिमसिंहकी बात ऊपर लिखचुकेहैं) स्मारक मन्दिर उनके पिताके मन्दिरके पास बने थे, उनसे कुछ ही दूरीपर राजा भीमसिंह और उनके अग्रज (वर्त्तमान अधीश्वर राजा मानसिंहके पिता) गुमानका (यह अप्राप्त व्यवहारावस्थामें परलोक सिधार गये थे) मन्दिर था। इस श्रेणीके सबसे अन्तमें छत्रसिंहका स्मारकमन्दिर विराजमान है। मैंने अनादरके साथ उसको देखकर साथी प्रदर्शकसे पूंछा कि "छत्रसिंहसे श्रेष्ठ बहुतसे राजालोगोंके स्मारक मन्दिर न बनवाकर किस मूर्खने इनका ऐसा स्मारक मंदिर बनवायाहै?" उसने कहा कि "माताका प्रेम ही इस मंदिरके बननेका मूल कारण है।

प्रत्येक मासकी अमावास्या और संक्रांति तिथि पितरोंका पवित्र दिन है: मारवाडमें ऐसी रीति है कि इन दोनों दिन राजा स्मारक मन्दिरोंके निकट जाकर जलदान करतेहैं। मैं जिन बातोंके जाननेकी इच्छासे इस स्थानपर आया था साथमें मूर्ख प्रदर्शक होनेके कारण उनमेंसे बहुत सी बातोंको नहीं जानसका। यदि मैंने राठौरजातिका इतिहास पहिले अच्छी तरह न पढा होता तो इस समाधि क्षेत्रमे आकर कुछ जाननेमें समर्थ न होता। किन्तु उस प्रदर्शकने एक असली घटना प्रकाशित कर दी। राजा अजितसिंहके शवके साथ चौंसठ रानियें जलती हुई चितामें शरीर जलाकर सूर्यलोकको चलीगई: किन्तु बूंदीके राजा बुधसिंह जिस समय जल मग्न हुएथे उस समय उनकी ८४ रानियें अपने अपने जीवित शरीरको भस्मीभूत करके सतीनामको चरितार्थ किया था। हाडाजातिके उक्त गौरवान्वित वंशके सम्पूर्ण स्मारक मंदिर राठौर लोगोंकी अपेक्षा अधिकतर अगर्वी उद्वेग ज्ञापक हैं, क्योंकि उनमेसे प्रत्येक सतीकी पाषाणकी बनीहुई मूर्ति समाधि मंदिरमें छोटी २ वेदीके ऊपर स्थापित है। दुर्गादास अजितसिंहके समसामयिक, और औरंगजेबके अत्यन्त साहसी सेना नायक थे। उनके समस्त प्रायः एक सौ तीन वर्षकालके गर्भमें विलीन होगयेहैं. इस समय पाठकगण [illegible] वृत्तांत निदर्शन कीजिये.—जिस समय हम दुर्गादासके [illegible] सन् १८२१ ईस्वीमें प्राण छोडे. उस समय उन्होंने कहा था कि "हमारी [illegible]

"बारोना" विध्वंस करना चाहा। जब इस बातको बदनसिंहने सुना तो अपने पूर्वस्वामी विजयसिंहके विरुद्ध उनके हृदयमें जो शत्रुता थी, स्वदेशहितैषिताके निकट उस शत्रुताको बलिदान करदिया और एक सौ पचास घुड़सवार सेनाके साथ अपने स्वामी और जन्मभूमिकी रक्षाके लिये तत्काल चलेगये। दुर्भाग्यके कारण स्वजातियोंके साथ मिलनेसे पहिले ही महाराष्ट्रियोंने उनको मार्गमें ही रोकलिया। बदनसिंह और उनके सहायकी साथी लोग बड़े साहसके साथ शत्रुओंका चक्रव्यूह भेदकर आगे बढ़े-यद्यपि नंगी तलवार लिये कई राजपूत वीर शत्रुकी सेनामें घुसगये किन्तु उनके सिवाय शेषसैनिक पशुओंकी समान मारेगये। बदनसिंह अपने प्राचीन पितृभूमिमें जीवित दशामें ही पहुंचगये। बदनसिंहकी इस राजभक्ति और असीम वीरताके पुरस्कारमें विजयसिंहने यह भूखण्ड रहेल उनके वंशधरोंके भोगनेके लिये देदिया। इस प्रदेशकी वार्षिक आय सात सहस्र मुद्रा है। शत्रुओंके कराल गालसे इस प्रदेशकी रक्षाका भार भी सामंतोंको सौंप दिया है।

प्राचीन समयके स्वर्ण रौप्य और ताम्रमुद्रा वा पदक न पायेहों । पुरीहर जाति अग्निकुलकी चार शाखाओंमेंकी एक शाखासे उत्पन्न है, तथा यह लोग चन्द्र और सूर्य्यवंशके राज्यविस्तारसे पहिले ही भारतवर्षमें प्रविष्ट हुए थे । * पुरीहर लोगोंके इतिहास वर्णन करनेके समय मैं यह बात लिखना भूलगया हूं कि, पुरीहरलोग कहते हैं कि "हम लोग कश्मीरसे भारतवर्षमें आये थे । जिस समय बौद्धोंके साथ शैवोंका धर्म्मयुद्ध होरहा था, उस समय यह लोग भारतवर्षमें आये थे और अनेक बौद्ध धर्म्मावलम्वी उस धर्म्मके उत्साहदाता हुए थे, यह बातें भी उन्हींके इतिहाससे प्रगट हैं । इस धर्म्म संप्रदायकी अधिक संख्या देखकर मालूम होताहै कि इन पाश्चात्य प्रान्तका वणिक जातिके चार अंशके एक अंश परिमित लोग भारतविजयी लोगोंके उत्तराधिकारी हैं और उन बौद्धोंकी अनगिन्त उपशाखाओंके साथ साढे दश शाखाओंमें सात शाखा अब भी जैन धर्म्मावलंबी हैं, इस कारण यह अनुमान होताहै कि उक्त धर्म्म बहुतवर्षोंतक भारतमें प्रबल रहा होगा ।

पाठकगण ! आइये अब हम लोग पत्थरकी सीढियोंपर चढ़कर इस विराटकाय ध्वंसराशिके ऊपर गमन करें । पुसकुण्डके पास नागदानामकी जो छोटी नदी है, पहिले उसका वर्णन करते हैं । जानेके मार्गकी आधी दूरीपर एक बडी बावड़ी अर्थात् चौबच्चा दिखाई देताहै । यह बडा जलाशय पर्वतको खोदकर बनाया गयाहै । इसके भीतरी भागमें एक बडी सीढी बनी है । खेदकी बातहै कि निकटके दो बडे प्राचीन गूलर और उदुम्बर वृक्षकी जडें इसका भीतरी भाग आक्रमण करके अकालमें गिरनेका डर दिखा रही हैं । पुरीहरलोगोंके अन्तिम महाराज नाहरराव इसके निर्म्माणकर्त्ता प्रसिद्ध हैं । ऊंचे विराट प्राकारके ऊपर दृष्टि पडते ही मेरे मनमें विचित्र भावका उदय हुआ । जिस समय यह प्राकार बनाया गया, तबसे कई सौ वर्ष बीतगये । और भी कई सौ वर्ष बीत जायंगे, किन्तु यह दुर्ग उस समय भी ठीक इसी प्रकारसे खडा रहेगा । उक्त प्राकार शिखरको ओरको क्रमसे सीधा चलागया है. और तोप चलनेके बहुत वर्ष पहिले इसके निर्माण होनेके कारण पुरीहर और पालोंके स्वामीने यह महल बहुत ठीक स्थान पर अर्थात् दुर्गके बीचोबीचमें निर्माण कराया है । इसके सब बुर्ज हट और

---

* [illegible]

"बापीना" विध्वंस करना चाहा। जब इस बातको बदनसिंहने सुना तो अपने पूर्वस्वामी विजयसिंहके विरुद्ध उनके हृदयमें जो शत्रुता थी, स्वदेशहितैषिताके निकट इस शत्रुताको बलिदान करदिया और एक सौ पचास घुड़सवार सेनाके साथ अपने स्वामी और जन्मभूमिकी सहायताके लिये तत्काल चलेगये। दुर्भाग्यके कारण स्वजातियोंके साथ मिलनेसे पहिले ही महाराष्ट्रियोंने उनको मार्गमें ही रोकलिया। बदनसिंह और उनके महाबली साथी लोग बड़े साहसके साथ शत्रुओंका चक्रव्यूह भेदकर आगे बढ़े। यद्यपि नंगी तलवार लिये कई राजपूत वीर शत्रुकी सेनामें घुसगये किन्तु उनके सिवाय शेषसैनिक पशुओंकी समान मारेगये। बदनसिंह अपने प्राचीन पितृभूमिमें जीवित दशामें ही पहुंचगये। बदनसिंहकी इस राजभक्ति और असीम वीरताके पुरस्कारमें विजयसिंहने यह भूखण्ड प्रदेश उनके वंशवालोंको भोगनेके लिये देदिया। इस प्रदेशकी वार्षिक आय सात सहस्र मुद्रा है। शत्रुओंके कारण —— इस प्रदेशकी रक्षाका भार भी सामंतोंको सौंप दिया है।

जलाशय और दो सिंहद्वार हैं; एक द्वारमें होकर मनोहर वन और राठौर लोगोंके द्वारा बने हुए उसके बीचवाले प्रासाद पुञ्जमें पहुँचते हैं। और दूसरे मार्गसे होकर वहां पहुँचते हैं जहां मारवाडके प्रसिद्ध वीरवृन्द—राठौर लोगोंकी प्रतिमायें स्थापित हैं। इन समस्त रमणीय प्राचीन स्मरणचिन्होंको देखकर मनमें जिस एक प्रकारके अनिर्वचनीय विचित्र भावका आविर्भाव होता है,मैं यहांपर उस भावसे युक्त होकर कुछ देरके लिये उसही ध्यानमें मग्न होगया था। एक गुफाके भीतर मंदोरके सुप्रसिद्ध अधीश्वर (नाहरराव जिन्होंने आरावलीके दुर्गम पथपर चौहानोंके साथ घोर युद्ध करके बडी वीरतासे अपने प्राण छोडे थे) के स्मरणार्थ एक वेदी बनी है, चन्द्रकविने अपनी कवितामें राजपूत वीरश्रेष्ठ नाहररावकी बडीभारी प्रशंसालिखी है। एक क्षौरकार इस समाधि मन्दिरके सेवाकार्य्यमें नियुक्त है। यह काम नाईको क्यों सौंपा गया? इसका कारण मैं नहीं जान सका किन्तु यह नाई लोग जब राजपूत लोगोंके गृहस्थीके अनेक कामोंमें नियुक्त हैं, तब अवश्य ही किसी विशेष कारणसे इस पदपर क्षौरकारको नियुक्त किया होगा। इस बातके असली कारणको यहां कोई भी नहीं जानता। इस स्थान पर एक मंदिरमें नौ मूर्तियें हैं। सुनते हैं कि रावणने अपने द्वीपसे आकर इन मंदरेश्वरकी पुत्रीका पाणिग्रहण किया था, उस सम्बंधमें ही यह मूर्तियें खोदी गई हैं। नागदा नामकी जो एक नदी यहां बहती है उसके विषयमें भी एक जनश्रुति सुनी; किंतु वह बात बहुत लम्बी चौडी होनेके कारण नहीं लिखी उसके निकट ही महावीर पृथ्वीराज और उनकी सुप्रसिद्धा सहधर्म्मिणी [illegible] समाधिमन्दिर है। उक्त मार्गकी तलेटीसे कुछ दूर एक तोरणमें होते हुए चारोंओरसे प्राकारवेष्टित एक बडे भारी मैदानमें पहुंचते हैं। इस भूखंडके शेषप्रान्तमें पर्वतके ऊपर एक बडा कमरा दिखाई दिया। जैनियोंके मन्दिरमें जिस प्रकार छोटे २ स्तंभ दिखाई देते हैं, उसी प्रकार त्रिश्रेणिबद्ध स्तम्भावलीके अवलम्बनसे उक्त कमरेकी छत स्थित है। इस कमरेके भीतर [illegible] बडे २ तेजस्वी वीरोंकी प्रतिमायें विराजमान हैं। सब मूर्तियें वस्त्रालंकार और अस्त्र-शस्त्रोंसे युक्त हुई अश्वारूढ हैं। पर्वतकी चट्टानोंको काटकर यह मूर्तियें बनाई गईहैं। किन्तु यह सब मूर्तियें स्वतंत्र रूपसे स्थापित हैं. मनुष्यके [illegible] शरीरकी अपेक्षा बडी हैं और [illegible] इनका कुछ [illegible] नहीं [illegible]। इनके अङ्ग प्रत्यङ्ग ठीक परिमाणसे [illegible] इनकी [illegible] और शोभा टपकती है; प्रत्येक वीरके साथ उनके [illegible]

बड़ा और समृद्धिशाली बिदनौर प्रदेश उनको दे दिया। जयमल जिस प्रदेशसे सत्त्वच्युत हुए थे, बिदनौर उसकी अपेक्षा अधिक उपजाऊ और मूल्यवान प्रदेश था जयमल्लने मेवाड़ेश्वरकी इस कृपाका ऋण किस प्रकार उतारा था उस उत्तम वृत्तान्तको हम लिख ही चुके हैं। मुगलकुलतिलक अकबरने अपने हाथसे उन महावीर जयमल्लके प्राणनाश करनेके समय अपनेको महा सन्मानित समझा था, और जिस बन्दूकसे उक्त वीरके प्राण लिये थे उसको बड़ी प्रतिष्ठाके साथ स्थापन किया। सम्राट् जहांगीरने वीरश्रेष्ठ जयमल्लकी बड़ी भारी प्रशंसा करके बालक राणाको स्वाधीन करदिया, और चित्तौड़की रक्षाके लिये बड़ी वीरताके साथ मरे हुए उन जयमल्लके स्मरणार्थ एक कीर्तिस्तंभ बना दिया। विख्यात इतिहासवेत्ता अबुलफज़ल अंग्रेज इनके पुरोहित हरबर्ट और बर्नियर आदि सब ही महाशयोंकी लेखनीसे जयमल्लकी जय घोषणा और बड़ी भारी प्रशंसा लिखी गई है। इधर परम तेजस्वी लार्ड हेस्टिंग्स जो राजपूत जातिके वीरत्व विक्रम प्रताप मनुष्यत्वके एक विलक्षण पक्षपाती थे उन्होंने भी जयमल्लके अनुपमेय विक्रम स्मरणमें उनके सम्मानार्थ उन जयमल्लके वंशधर बिदनौरके [illegible] सामन्तको प्रसन्न किया था।

जगत्प्रसिद्ध अधिनायककी प्रतिमाको देखा । इन संपूर्ण वीरोंकी वीरत्व कहानी यहांपर लिखनेसे पाठकोंको नीरस लगेगी, इस कारण उधरसे मौन होते हैं।

ऊपर वर्णन किए हुए कमरेके निकट ही उसी प्रकारके बनावटका उससे भी बडा एक दूसरा कमरा विराजमानहै । यह "तैतीस कोटि देवताओंका स्थान" इस नामसे प्रसिद्ध है । इसकी सब मूर्त्तियें आकारमें बडी और पत्थरकी बनी है । सबसे प्रथम सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माकी मूर्त्ति है; दूसरी सातघोडोंपर सवार सूर्य्यकी प्रतिमा है; इसके अनन्तर हनुमानजीकी मूर्त्ति है. उन्हींके निकट प्रियतमा सीताजीके साथ रामचन्द्रजीकी मूर्त्ति विराजमान है । इसके अनन्तर गोपाङ्गनाओंसे परिवेष्टित श्रीकृष्णजीकी मूर्ति है।फिर विराटकाय महादेव और उनके वाहन सांडकी मूर्ति स्थापित है । इनके अतिरिक्त लक्ष्मी और सरस्वतीजीकी मूर्त्तिये भी स्थापितहै ।

इसके अनन्तर मैं राजा अजितसिंहके बनाये हुए बाग और महलमें गया। महल इतना मनोहर बनाहै कि लेखनी द्वारा उसके रूपका वर्णन करना असंभव है। महलके कमरोंके स्तंभ जिस प्रकार अगणित अद्भुत स्तंभोंसे शोभायमान है दीवारोंमें बेलबूंटेका काम भी उसी प्रकार चित्ताकर्षक और प्रशंसनीय है। अन्तःपुरमें रहनेवाली स्त्रियोंको कोईभी न देखसके इस कारण बारीक बुनावटके परदे लटक रहेहैं। बाग बहुत बडा नहीं है और प्राकृतिक तट पर्वतोंसे घिरा हुआहै, इस कारण ग्रीष्मकालमें भी शीतल रहताहै । कृत्रिम झरने जलाशय और जलके नाले प्रत्येक स्थानमें विद्यमान हैं । वृक्ष और फल वृक्षोंकी ओर भी दृष्टि डाली। बडे वृक्षोंके अतिरिक्त फलवाले वृक्ष अधिक हैं । स्वर्ण चम्पक (जिसकी तीव्र सुगंधि असह्यहै और नेत्रपर लगनेसे जिसमें पीडा होने लगतीहै) रमणीक फल फूल शोभित दाडिमी सीताफल (जिसको हम लोग शरीफाके समान समझते हैं) रमणीय कदली (जिसके बडे २ पत्तोंके हिलनेसे शरीर शीतल होजाता है वह कदली वृक्ष), नोरंगी, चमेली और फूल वृक्षोंमें 'बारह मासा' (जो बारहो महीने खिला रहता है जिसके होनेसे वह सम्पूर्ण बाग शोभायमान है)। यह स्थान अत्यन्त चित्ताकर्षक है तथा इसमें घूमनेसे बडा आनन्द हुआ। पाठकगण! एक बेर [illegible] मन्दिरके ध्वंसस्तूपोंमें बैठाहुआ [illegible] और अतुलनीय [illegible] सन्मुख आमके बडे २ वृक्ष [illegible] हैं [illegible]

[illegible] मैं बहोत खेदके साथ इस विषयके प्रकाशित करनेको बाध्य हूं। अजितसिंहके बारह पुत्रोंमें अभयसिंह और बख्तसिंह बडे थे, यह दोनों देवड़ी राजकुमारीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे।

राठौर कुल कलंक अभयसिंह जिस समय साक्षात् कालकी समान दोनों सहोदर भ्राताओंके प्रस्तावानुसार महापातकमें लिप्त होनेको प्रस्तुत हुआ, उस समय मारवाडेश्वर अजितसिंह मध्यमकुमार उक्त बख्तसिंहके सहित नागरमें स्थित थे। अभयसिंहने चुपचाप बख्तसिंहको पत्रद्वारा लिख भेजा कि, "यदि तुम पिताके प्राणनाश करसको तो उनके पुरस्कारमें मैं तुम्हें पांच सौ सतसठ नगर पूर्ण नागर प्रदेश देदूंगा और तुम उसको स्वाधीन भावसे राजाकी उपाधि धारण करके शासन करसकोगे।" दुरात्मा बख्तसिंह भाईके इस प्रस्तावसे कुछ भी विचलित न हुआ, वरन बडे साहसके साथ अपने हाथसे जन्मदाता पिताके प्राण संहार करनेको उद्यत होगया। उसकी माता उसको दुर्दान्तप्रकृति, उग्रस्वभाव, असमसाहसी, क्रोधी और [illegible] जानकर सदा भयभीत रहनेलगी और अपने स्वामीसे एक दिन अवसर पाकर कहा कि "सन्ध्याके पीछे कभी आप अकेले न रहें और एकान्तमें कभी बख्तसिंहके पास न जावें।" किन्तु राजा अजितसिंह जैसे साहसी थे वैसे ही बलिष्ठ थे, इस कारण उन्होंने रानीकी बातपर कुछ ध्यान न दिया और कहा कि "वह क्या मेरा औरस पुत्र नहीं है? मैं उसको एक थप्पड मारकर सीधा करसकता हूं।" हा! साधु अजितसिंहने स्वप्नमें भी इस बातको नहीं विचारा। पुत्रोंमें उन्होंने कालसर्पको उत्पन्न किया था।

भोजनगृहमें प्रविष्ट होकर मैंने देखा कि, पुलाव, मांस और मिष्टान्न आदि विविध प्रकारके भोजन यथोचित स्थानपर रक्खे हैं । हिंदू और मुसलमान दोनोंके खाने योग्य भोजन तैयार कराके चांदीके पात्रोंमें रक्खे गये थे । सब भोजन स्वादिष्ट और उत्तम बने थे। भोजनगृह शिखरके उत्तर प्रान्तमे नवीन बनाया है और नाम उसका मानमहल है। सभागृहकी समान यह भी अगणित स्तंभोंसे शोभित है । सुनते हैं कि शरत्कालमें प्रकृति परिच्छिन्न होनेपर चालीस कोशकी दूरीपर कमलमीरके दुर्गकीके चोटी इस स्थानसे दिखाई देती है ।

१६ वीं नवम्बर-आजका दिन महाराजका मेरे साथ मुलाकात करनेके लिये निश्चित था । अपना बडा भारी ऐश्वर्य दिखानेके लिये महाराजा मानसिंहने अपना कॅंप मेरे कॅंपके पास स्थापित कराया । डेरा बहुत बडा और लाल रंगका था । यह देखनेमें एक महलके बराबर है और कपडेके परकोटेसे घिरा हुआ है। बीचकी वेदीके ऊपर राजसिंहासन रक्खा गया और उसके ऊपर छत्र लगाया गया। तीसरे पहरके समय महल और दुर्गमें बडा भारी कोलाहल मचगया। चारों ओर नगाडे और तुरत ही ढंढोरा पिटवादिया कि "मारवाडके महाराज आज फिरंगीके वकीलके साथ मुलाकात करने जायेंगे"। झंडों और राज चिह्नों-को दूरसे देखते ही मैं अनुचरों सहित घोडेपर सवार होकर नगरके मार्गमें आगे बढा और मार्गमें महाराजके साथ मुलाकात और कुशल प्रश्नादि करके डेरेपर लौट आया। महाराजके आनेपर मैंने बडे आदरसे उनको लिया मेरी सेनाके लो-गोंने अपने अस्त्र नीचे करके महाराजको आदर दिखाया। महाराज इससे बहुत ही प्रसन्न हुए। महाराज मानसिंहके एक घंटे तक बैठनेके पीछे हीरे और रत्नोंके अलं-कार सुनहरी कामके वस्त्र, शाल और अनेक प्रकारकी स्वर्गीक वस्तुओंसे सजाकर उन्नीस थालें (उदयपुरके राणाको इक्कीस दीगईथी) उपहारस्वरूपसे महाराजको दी । मैंने इंग्लैण्डके बने हुए कितने ही अस्त्र, एक अणुवीक्षणयंत्र (खुर्दबीन) और राजपूतोंकी विशेष इच्छित पिस्तौलें दी [illegible] चांदी भी उपहारसे दी। इसके अनन्तर अतर और पान देकर मुलाकात समाप्त की। मैंने जो सजाहुआ हाथी और घोडा महाराजके लिये दियाथा, वह उनके सामने लायागया। इसके ऊपर आज मैंने महाराजको सलाम किया, उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया। यह हाथ मिलाना राजपूतोंकी प्राचीन प्रथा है।

"बक्त, बक्त, बाइरा,
क्यों मारा अजमाल, ?
हिन्दुवानीको सेहरा,
तुरकानीको साल ?"

कविताका आशय यह है कि, "रे बक्त ! कुसमयमें क्यों तैने आजमलकी हत्या करी ? वह हिन्दुओंके प्रबल रक्षक स्वरूप और मुसलमानोंका शाल स्वरूप थे ?"।

पिताकी हत्या करनेके अपराधमें बख्तसिंहने बडे भाईसे नागर प्रदेश और पापी अभयसिंहने नरपिशाच सय्यदोंकी मनकामना पूरी कर देनेसे पुरस्कारमें मारवाडका सिंहासन तथा गुजरातका राज प्रतिनिधिपद पाया। जब मुगल-सम्राटके घोर दुर्दिन उपस्थित हुए तब अभयसिंहने गुजरातराज्य महाराष्ट्रोंमें विभक्त करनेका सुभीता साधन और गुजरातके अधीन बीणमहल, सांचोर और दूसरे समृद्धिशाली प्रदेश मारवाडमें मिलालिये, तथा उस अवसरमें मारवाडके कवियोंने जिसको "बदवन्त" की उपाधि दी थी, उस छोटे भाई बख्तसिंहको जालोरप्रदेश दिया। उस पितृहत्याके फलसे शीघ्र ही समस्त मारवाडमें भयानक आत्मविग्रहानल प्रज्वलित होगया।

कर्नेल टाडके मारवाडसे लौटनेका वृत्तान्त ।

उनतीसवां अध्याय २९.

नादोला;-विशालपुर;-एक प्राचीननगरका ध्वंसावशेष;-पाँच कुल्ला वा विचकुल्ला;–खोदितपत्थर;–पीपल;–मेवाडकी प्राचीन इतिहासमूलक खोदित लिपि;–साम्पूसागरोत्पत्तिके प्रवाद-वाक्य;–लक्खाफुलानि;–सार्द्धीयभूखण्डा;–वदनसिंह;–उनकावी रत्व;–प्रतापके स्मरणार्थवेदी;–इन्दावर;–जाट कृषकजाति;–मैरता;–औरङ्गजेबके द्वारा निर्मित मसजिद;–धौंकुलसिंह;–राठौर वीरश्रेष्ठ जयमल;–उनका वीरत्वस्वीकार;–मैरतानगरका वर्णन;–समाधिमन्दिर;–राजाअजित;–दो पुत्रोंद्वारा उनके प्राण-हनन;–उसी सूत्रसे मारवाडमें विद्रोहानलविस्तार;–अजितका परिवार;–राठौरोंमें दत्तक पुत्र ग्रहणसम्बन्धी विचित्र व्यवस्था;–रामसिंह;–सामन्तमण्डलीकी ओर उनका अशिष्टाचार;–आत्म निग्रह;–रामसिंहके साथ वख्तसिंहका युद्ध;–रामसिंहका परा-जय और मैरतीय राजपूतशाखाका ध्वंस;–मैरताके अधीन सिंथिरिके सामन्त;–समरक्षेत्रवर्णन;–रामसिंहका [illegible] राज्यमें महाराष्ट्रोंको बुलाना;–वख्तसिंहका मारवाड राजसिंहासन अधि-कार;–जयपुराधीशका आत्मघात;–उनके पुत्र विजयसिंहका अभिषेक;–जयआप्पा सेंधिया और रामसिंहका मारवाडआक्र-मण;–विजयसिंहका व्याघातदान और पराजय;–उनका नगरमें भागना और शत्रुओंका [illegible] प्रवेशावरोध;–शत्रुओंके डेरेमें हो-कर उनका पलायन;–बीकानेर और जयपुरराजसे उनको सहायता प्रार्थना;–जयपुराधीशका विश्वास घातकता;–[illegible] रियाके सामन्तद्वारा पराजय: सेंधियाका [illegible] ।

२९ न[illegible]

[illegible]

दोनों प्रदेश ही आपके स्वाधीन हैं।" इस व्यंगोक्तिके कारण दोनोंमें झगड़ा बढ़ गया, उसका जो कुछ फल हुआ पाठकोंके जाननेके निमित्त उसको नीचे लिखते हैं।

मारवाड़ेश्वर रामसिंह जिस प्रकार उद्धत प्रकृतिके थे, उसी प्रकार शिष्टाचार हीन थे। अपने अधीनस्थ सामन्त मंडलीके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये इस विषयमें कुछ भी शिक्षित नहीं थे, आहोयाके अधिनायक कुशलसिंह मारवाड़की सामन्त मंडलीमें सबसे श्रेष्ठ और चम्पावत संप्रदायके नेता थे, उनका शरीर छोटा और बलिष्ठ था, तथा वह असभ्य और स्थूल बुद्धिके थे, इस कारण वह नये महाराजके उपहास पात्र बनगये। रामसिंहने उनको "गुर्गजगंडक" अर्थात् घृणित कुत्तेकी उपाधि दी। एक दिन महाराजने कुशलसिंहको स्पष्ट अक्षरोंमें "गुर्गज" कहकर पुकारा। महाराजके इस अपमान जनक पुकारनेसे सामन्त श्रेष्ठने तत्काल उत्तरदिया कि "यह गुर्जा सिंहको काटखानेका साहस रखताहै।"—

देखी; यहांकी मट्टी लाल बालूकी समान है। नदीतटके खेतोंमें बहुत श्रेष्ठ गेहूं और जौ पैदा होते हैं। यहांपर दो एक बबूल और नीमके वृक्ष भी दिखाई दिये। यद्यपि यह ग्राम अब केवल सौ घरोंकी वस्तीहै किन्तु एक समय यह महा समृद्धिशाली था। मैंने यहांपर एक खोदित पत्थरके टुकड़े पर केवल "सोनंगके पुत्र १२२४ संवत्"खुदा हुआ पाया। दुर्दान्त पठान डॉकुओंने सम्पूर्ण प्राचीन कीर्त्तिको बिलकुल नष्ट करदिया है। यह ग्राम एक भट्टी सामन्तका वृत्तिस्वरूप है। अधिवासी लोग नदीके निकट खुदे हुए कुओंसे अपने व्यवहार योग्य जल लेजाते हैं।

२२ वीं नवम्बर।—पीपलनगर चार कोशकी दूरीपर है। यहांकी भूमि काली और बालुकापूर्ण है, सर्वसाधारण उसको धामुनी कहतेहैं। पीपलनगर डेढ सौ घरोंकी वस्ती है। यहांके निवासियोंमें तीन हिस्सेमेंसे एक हिस्सा मनुष्य जैनी हैं, और इस प्रदेशके प्रधान व्यापारी ओसवालजातिके हैं। दो सौ माहेश्वरी बनिये शैवधर्म्मावलम्बी भी रहते हैं। यहां व्यापारका काम बहुत भारी होताहै। यहांके छींटके वस्त्र बहुत प्रसिद्ध हैं; तीन सौ व्यापारी केवल इसी कामको करतेहैं। निमाजके जिन सामन्तकी मृत्युका विवरण ऊपर लिखचुके हैं यह नगर उन्हींके अधीन है। इन निमाजसामन्तके एक सुप्रतिष्ठित पूर्व पुरुषके नामसे पीपलनगरमें जो एक स्मारक मन्दिर बनवायागया था. दुर्दान्त महाराष्ट्रियोंने उसका आधा भाग नष्ट करदिया। मारवाडके इतिहाससे प्रगटहै कि, ईसवी सनके आरंभसे बहुत वर्ष पहिले अवन्तके प्रमार वंशीय अर्थात् [illegible] गन्धर्वसेनने इस पीपलनगरको स्थापन किया था। यहां लक्ष्मीदेवीके मन्दिरमें मैंने एक खोदित पाषाणखण्ड देखा। उसमें गिह्लोट वंशीय रावल उपाधिधारी राजपूत विजयसिंह और दइलक्ष्मीका नाम खुदा है। यह खोदितलिपि सम्राट इतिहासके एक बहुत प्राचीन विषयको बिलकुल समर्थन करतीहै। गिह्लोट लोग चौबीस शाखाओंमें विभक्तहैं. उनमेंसे एक शाखाका नाम 'पिपलिया' है। प्रमारवंशीय प्रमार लोगोंके निकटसे इस पीपलनगरके अधिकारप्राप्त होनेसे ही इस पिपलिया उपाधिकी उत्पत्ति हुई. इस खोदित लिपिसे निःसंदेह यही बात प्रगट होतीहै।

इस स्थानसे [illegible] लेकर [illegible] तक [illegible] बहुतसे कूए हैं। यहांके नाग (सर्प) लगनेसे भी बहुत उत्तम जल है। इस स्थानके साथ पीपल नगरकी प्रतिष्ठाका एक प्राचीन गल्प सुना जाताहै कि, [illegible] [illegible]

नदीके तटसे सिन्धुतक मैं जिस २ स्थानमें गया, उसी २ स्थानमें लक्षफुलानीकी प्रशंसा सुननेमें आई।*

२३ वीं नवम्बर।—माद्रीयनामक स्थान यहांसे पॉच कोशकी दूरीपर है। जानेका मार्ग उत्तम है. किन्तु सूनसान है। ग्राम मध्यमकक्षाका है। इस गॉवमें उत्तम जलवाला एक सरोवर है।

२४ वीं नवम्बर।—भूरुण्डानामक ग्राम आठ कोशकी दूरीपर है। हम ज्यों २ आगे चलते जाते थे प्रकृतिकी दशा भी त्यों २ बदलती जाती थी। मार्ग तरङ्गाकारमें बांधकी समान चलागयाहै और पथरीला तथा रेतीला है। मार्गके निकट उस देशके छोटे २ वृक्ष लगेहैं। मार्ग इस स्थानपर ऐसा ऊंचा होगयाहै कि इसको "गाशुरिपाश नामसे पुकारतेहैं, तथा राजाकी कितनी ही सेना शत्रुओंके आक्रमण निवारण और वाणिज्य शुल्क संग्रहके लिये उस स्थानमें नियुक्त है। मैरताजातीय प्रबल बलशाली कुचासुनके सामान्त गोपालसिंह इस भूरुण्डाके अधीश्वर हैं। यह गांव डेढ सौ घरकी बस्ती है और किसान लोग नगर और ग्रामोंकी समान जाटजातिके हैं।

मैंने भूरुण्डामें सामान्याकारके स्मारक मन्दिर देखे। उनमें एकके ऊपर बदनसिंहका नाम खुदाहै। बदनसिंह कुचासुनके अधीन सरदार थे। मैरताके महासंग्राममें वह स्वदेशके लिये फरासीसी सेनापति डिवाइनके संग बडी वीरताके साथ लडकर स्वर्ग सिधारे। जो लोग राजपूतजातिके स्वाभाविक पैत्रिक गुण—राजभक्ति और स्वदेशहितैषिताकी प्रशंसा करतेहैं, उनके निकट बदनसिंहका नाम बहुत दिनतक ऊंची प्रशंसाका संग्रह करेगा। मारवाडेश्वर राजा विजयसिंहने बदनसिंहसे भूरुण्डा प्रदेश किसी विशेष कारणसे छीनलियाः विवश होकर ठाकुर बदनसिंहने जयपुर राज्यमें जाकर दरबारके अधीश्वरकी शरण ली। जयपुराधीशने राजपूतप्रथाके अनुसार उनको आश्रय देकर अपने अधीनमें नियतकिया। जिस समय ठाकुर बदनसिंह जयपुरमें प्रबल शक्ति सम्पन्न होगये, उसी समय महाराष्ट्रियोंने मारवाडके अङ्गभङ्गसम्बन्धमें उनका

* [illegible] है, [illegible] वृत्तान्त सत्तीक होसकते हैं। [illegible] कि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

राजपुत्रीके साथ हुआ था; उस राजकुमारीके साथ वे रामसिंहकी सहायता करने के लिये पांचसहस्र सेना लेकर आये थे। इनके डेरे राजधानीके बाहर रक्खे गये उस समय एक घटनाके द्वारा रामसिंहकी सिंहासन च्युतिका असली कारण औ राजपूत स्वभावका एक विचित्र लक्षण प्रगट होगया। अर्थात जिस डेरेमें रानी थी, उसकी कनातके ऊपर एक कुलक्षण सूचक काक बैठगया। रानी इस कुलक्षणकी निवृत्तिका उपाय जानती थी, इस कारण तत्काल उसका उद्योग किया। राजपूत वीरोंकी समान राजपूत स्त्रियें भी बन्दूक चलानेमें चतुर होती हैं। सोरजपुत्रीने तत्काल बन्दूक हाथमें ली और उस काकके प्राण वध कर के कुलक्षण दूर करदिया। क्रुद्धस्वभाव रामसिंहने उस बन्दूकका शब्द सुनकर अपना अनादर समझा और तत्त्वानुसंधानके बिना ही बन्दूक छोडनेवाले को अपने सन्मुख लानेकी आज्ञा दी; रानीका नाम बतानेपर भी इनके क्रोधकी शान्ति न हुई। रानीको कटुभाषामें गाली देकर कहा कि "रानीसे कहो कि अभी हमारे राज्यसे निकल जाय और जिस देशसे आई है वहीं चली जाय।" अपने क्रुद्ध स्वामीकी उक्त आज्ञा सुनकर रानी महाराजकी सन्तुष्ट करनेके लिये ही बड़ी विनयके साथ क्षमा प्रार्थना करने लगी

दक्षिणकी ओर आरावलीकी आकाश भेदी शिखरमालाको देखा। पश्चिममें बहुतसी बडी गिरीहुई पृथ्वी और बीच २ में बेलबूटोंसे आच्छादित तरंगाकारसे नीचे ऊंचे समतलक्षेत्र दिखाई देतेहैं इस स्थानकी मट्टी उर्वरा है, किन्तु जल पृथिवीके बहुत नीचे होनेसे खेतीका सुभीता नहीं है। ग्रामोंके पासवाले खेतोंमें ज्वार, मक्का और तिल बहुतायतसे उत्पन्न होते हैं। यह नगर ऊंची भूमिके ऊपर स्थापित है, इस कारण देखनेमें बडा रमणीय है। अत्याचारी औरंगजेबने एक हिंदूमन्दिर विध्वंस करके उसके ऊपर जो एक मसजिद बनवादी है उसकी चोटी चारोंओरके बडे २ हिन्दू मंदिरोंसे ऊंची है। यद्यपि उक्त मुगलसम्राट् सम्पूर्ण हिंदूजातिके-विशेष करके राठौरलोगोंके (जिस राठौर जातिके साहसी राजा यशवन्त और उनके ज्येष्ठ पुत्रको विष देकर मारा तथा अजितको वीस वर्ष तक राज्यच्युत करके सैंकडों राठोरोंके रक्तसे मारवाडको सींचा था) क्रोधके पात्र थे. किन्तु हिन्दूजातिकी सहनशीलता और राजभक्ति इतनी प्रबल है कि एक पत्थर फारसी और हिंदीभाषामें सब प्रकारके अत्याचार करनेका निषेध लिखकर उस मसजिदमें लगा दियाहै। सुनतेहैं कि मारवाडसिंहासनके लोभी धोंकुल सिंहने इन हत्यारे पठानोंकी सहायता की और उनके प्रसन्न करनेके लिये उक्त पत्थरको उस मसजिदमें लगा दिया था। किन्तु अन्तमें वह किस प्रकार ठगागयाथा और उस धनके पठान नायक अमीरखॉने कैसे कठोर चित्त और अकृतज्ञतासे धोंकुलसिंहकी सेनाको मारा था, पाठक गण इस बातको भलीभांति जानते हैं।

मन्दोरके राव दूधाने इस मेरतानगरको बनायाथा और उनके प्रसिद्ध पुत्र मालदेवने मालकोट नामक दुर्ग बनवाया था। * उन्होंने यह तीन सौ साठ ग्राम नगर पूर्ण मेरता प्रदेश अपने पुत्र जयमल्लको प्रदान किया और राठौर जातिके सबसे श्रेष्ठ सम्प्रदायको इस प्रदेशके नामपर मेरतीया उपाधि दीगई। महावीर जयमल मारवाडके नाम अपना नाम अमर करनेके लिये ही उत्पन्न हुए थे। जयमलने युद्धके समय [illegible] साथ [illegible] कार्य नहीं किया उनकी इस [illegible] निर्वासित [illegible] गये थे. [illegible] मारवाडके [illegible] निकाले हुए राठौर राजकुमार जयमल [illegible] मेवाडपतिने उनको बडे आदरके साथ लिया और उन्हें [illegible]

[illegible]

पराजयके विषयमें सूचित करदिया कि केवल शत्रुओंकी गोलन्दाजोंके द्वारा यह पराजय हुई है। भरतीय लोगोंके असीमसाहसी और प्रबल राजभक्त सेनापतियोंके सामन्त शेरसिंहने इस जातीय युद्धके होनेसे पहिले अपने साले उक्त अटारीवाके सामन्तको रामसिंहके विरुद्ध युद्ध करनेसे बहुत रोका, परन्तु अटारीवाके सामन्तने इस बातको किसी प्रकारसे भी नहीं माना, अन्तमें शेरसिंहने व्यङ्ग भावसे कहा कि "बक्तसिंहकी सहायतासे रामसिंहके परास्त करनेकी तुममें जितनी शक्ति है वह किसीसे छिपी नहीं है।" अटारीवाके सामन्तने उसके उत्तरमें कहा कि "और कुछ हो या न हो मैं इस राज्यको अवश्य ही छिनवा दूंगा। इस गर्वभरे उत्तरको सुनकर शेरसिंहने महा क्रोधके साथ प्रतिज्ञा करी कि "मैं भी यथासाध्य तुम्हारी इस इच्छाको अपूर्ण रखनेकी चेष्टा करूंगा।" सत्तारीकी उस भयंकर रणभूमिमें परस्पर खड्गयुद्धके पहिले दोनों वीरोंमें फिर दुबारा मुलाकात नहीं हुई थी।

दक्षिणकी ओर आरावलीकी आकाश भेदी शिखरमालाको देखा। पश्चिममें बहुतसी वडी गिरीहुई पृथ्वी और बीच २ में वेलवूटोंसे आच्छादित तरंगाकारसे नीचे ऊंचे समतलक्षेत्र दिखाई देतेहैं इस स्थानकी मट्टी उर्वरा है, किन्तु जल पृथिवीके बहुत नीचे होनेसे खेतीका सुभीता नहीं है। ग्रामोंके पासवाले खेतोंमें ज्वार, मक्का और तिल वहुतायतसे उत्पन्न होते हैं। यह नगर ऊंची भूमिके ऊपर स्थापित है, इस कारण देखनेमें वडा रमणीय है। अत्याचारी औरंगजेवने एक हिंदूमन्दिर विध्वंस करके उसके ऊपर जो एक मसजिद वनवादी है उसकी चोटी चारोंओरके वडे २ हिन्दू मंदिरोंसे ऊंची है। यद्यपि उक्त मुगलसम्राट् सम्पूर्ण हिंदूजातिके–विशेष करके राठौरलोगोंके (जिस राठौर जातिके साहसी राजा यशवन्त और उनके ज्येष्ठ पुत्रको विष देकर मारा तथा अजितको वीस वर्ष तक राज्यच्युत करके सैंकडों राठोरोंके रक्तसे मारवाडको सींचा था) क्रोधके पात्र थे. किन्तु हिन्दूजातिकी सहनशीलता और राजभक्ति इतनी प्रबल है कि एक पत्थर फारसी और हिंदीभाषामें सव प्रकारके अत्याचार करनेका निषेध लिखकर उस मसजिदमें लगा दियाहै। सुनतेहैं कि मारवाडसिंहासनके लोभी धोंकुल सिंहने इन हत्यारे पठानोंकी सहायता की और उनके प्रसन्न करनेके लिये उक्त पत्थरको उस मसजिदमें लगा दिया था। किन्तु अन्तमें वह किस प्रकार ठगागयाथा और उस धनके पठान नायक अमीरखॉने कैसे कठोर चित्त और अकृतज्ञतासे धोंकुलसिंहकी सेनाको मारा था, पाठक गण इस बातको भलीभांति जानते हैं।

सन्दोरके राव दूधाने इस मेरतानगरको बनायाथा और उनके प्रसिद्ध पुत्र मालदेवने मालकोट नामक दुर्ग बनवाया था। * उन्होंने यह तीन सौ साठ ग्राम नगर पूर्ण मेरता प्रदेश अपने पुत्र जयमल्लको प्रदान किया और राठौर जातिके सबसे श्रेष्ठ सम्प्रदायको इस प्रदेशके नामपर मेरतीया उपाधि देगये। महावीर जयमल मारवाडके [illegible] अपना नाम अमर करनेके लिये ही उत्पन्न हुए थे। जयमलने युद्धके समय [illegible] [illegible] साथ [illegible] कार्य नहीं किया उनकी इस [illegible] [illegible] [illegible] करके भाग गये थे. इस अपराधपर मालदेवने जयमलको मेरतेसे निकाल दिया। निकाले हुए राठौर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उनको बडे आदरके साथ लिया और [illegible] [illegible]

* [illegible]

जीवनशक्ति अत्यन्त दुर्बल होगई ? इन मूलघटनाओंके स्मरण विना इस चिर स्मरणीय क्षेत्रको अतिक्रम करके जाना अवश्य ही असंभवहै । राजा अजितसिंहके हत्याकाण्डका आंशिक विवरण मैं पीछे लिखचुका हूं । साक्षात् नरपिशाचस्वरूप दो सय्यद भ्राताओंने सम्राट् फर्रुख सियरको सिंहासनच्युत करके जिस समय अपने कीडकस्वरूप एक दूसरे मनुष्योंको भारतके सम्राट्आसनपर बैठाया था, उसी समय उन सय्यदोंकी अवलंवित राजनीतिके फलसे अजितसिंह अपने औरस पुत्रके पापरूप कलुषित हाथोंसे शोचनीय दशामें मारेगये थे । अजितसिंह अपने पुत्र अभयसिंहको दिल्लीमें छोड़ अपनी कन्याको (जिसके साथ सम्राट् फर्रुखसियरके विवाहके उपलक्षमें ईष्ट इण्डिया कम्पनीको भारतमें प्रथम भूवृत्ति प्राप्तहुई ।) लौटनेका कारण यह था कि, वह इन दोनों सय्यदभ्राताओंकी घृणित, जघन्य राजनीतिका पक्ष समर्थन करना किसी प्रकारसे भी नहीं चाहते थे। राजा अजितको उस भावसे पडयंत्र जालमें न फँसता हुआ देखकर इसने अपनी स्वाभाविक मूर्ति धारणकी और इनके पुत्र अभयसिंहको बुलाकर कहा कि " तुम यदि अपने पिताका जीवन नष्ट करके हमारी अवलंवित नीतिका अनुसरण करसको तो मारवाडके राज्यसिंहासनपर बैठालदिये जाओगे, अन्यथा मारवाडराज्य नष्ट करदिया जायगा ।" नरपिशाचरूपी उन दोनों सय्यद राक्षसोंने जो उपाय अवलम्बन किया और जिस उद्देशको पूर्ण करनेके लिये यत्न किया. उसके द्वारा राजपूत जातिके स्वभावका एक दूसरा अंश उज्ज्वलरूपसे चित्रित होरहाहै । जब अभयसिंहने अपने पिताका जीवनदीप निर्वाणकरना स्वीकार न किया तब दोनों सय्यदोंने प्रश्न किया कि "मा बापकी शाखा. या जमीनकी शाखा ?" अर्थात् "तुम मातापिताकी शाखा हो वा जन्मभूमिकी शाखा हो ?" हम ऊपर लिखचुके हैं कि मातृभूमि ही राजपूत जातिका सर्वस्व है और उनके लिये वे सब कुछ करसकते हैं । इस कारण अभयसिंहको मारवाडके राजसिंहासनका लोभ आगया । अजितसिंहकी समान साधु राठौर राजपूतके औरससे अभयसिंह और वखतसिंह इन दो नराधमोंने जन्म लेकर सय्यदोंका उद्देश सिद्ध करदिया था यह बात यद्यपि कभी विश्वासमें नहीं आसकती. किन्तु प्रत्यक्ष प्रमाण पूर्ण बदला, इस संदेहको दूर करदेतीहै । मैं राजपूत जातिका बड़ा भारी आदर करनेवाला और उनका प्रकट पक्षसमर्थक हूं. इस कारण मेरी इच्छा नहीं थी कि इन दोनों कलङ्कमय घटनाओंको लिखूं; किन्तु राजपूतोंके चरित्रकी [illegible]

सिंहासनभ्रष्ट रामसिंहने महाराष्ट्रदस्युनेता जयआप्पा संधियाके साथ मिलकर कोटाराज्यपर आक्रमण किया। फिर मेवाडका विध्वंस करके अजमेरमें पहुंचे। इस स्थानपर साहसी राठौर रामसिंहके साथ जयआप्पा संधियाका कुछ विवाद होगया था, किन्तु दोनोंके सौभाग्यसे यह विवाद दूर होगया, दोनों सीमान्त पार होकर संहारमूर्तिसे मारवाडमें घुसे। नवीन मारवाडेश्वर विजयसिंह राजपूत स्वभाव सुलभवीरत्व विक्रम साहस उद्दीपना भूषणोंसे विलक्षणरूपसे भूषित थे। विदेशी डाकुओंके साथ रामसिंहका आगमन समाचार सुनकर वह भी शीघ्र ही मारवाडके सम्पूर्ण सामन्त और अपने अधीनस्थ २००००० दो लाख सेनाको साथ लेकर बडी वीरतासे आगे बढे।

जिस प्रकार दो भिन्न प्रान्तोंसे उत्ताल तरङ्गमाला विस्तारके साथ घोर शब्दसे दौडते हुए दो समुद्रोंके संघर्षणसे भयङ्कर काण्ड संघटित होताहै, इसी प्रकार इन दोनों सेनाओंके साक्षात् दर्शनसे हुआ। जातीय महासंग्राममें जन्मभूमिकी छातीपर विजातीय महाराष्ट्रियोंके आनेसे महावीर राठौर लोगोंका रक्त जिस भयानकरूपसे गरम हो उठा होगा, एकता, उद्दीपना, शौर्य्य, वीर्य्य, विक्रमने उनके हृदयमें जिस पूर्ण शक्तिका सञ्चालन करदिया होगा, उसका सहजमें ही अनुमान होसकताहै। यदि सिंहासनभ्रष्ट रामसिंह अकेले ही मारवाडी सेनाके साथ संग्रामसागरमें कूदते, यदि वह मारवाडका सर्वनाश साधनेके लिये विजातीय महाराष्ट्रियोंको सहायताके लिये मातृभूमिमें न लाते तो इस संग्राममें इतनी उद्दीपना कभी दिखाई नहीं देती। रामसिंहने सिंहासनके लाभकी इच्छासे समरक्तवाही भ्राता आत्मीय, मित्र स्वजातीय सबके प्राणसंहारके लिये जो दुर्दान्त महाराष्ट्रियोंको प्रमत्त करदियाथा, अन्तमें उस सन्तानने ही वीरक्षेत्र मारवाडको ठीक मरुक्षेत्र बनादिया। रजवाडेके प्रत्येक राज्यके अधःपतनका मूल कारण निश्चय ही लुण्ठनप्रिय पैशाचिकस्वभाववाली यह महाराष्ट्र जाति ही है।

न्मदाता पिताके पवित्र जीवनको नष्ट करदिया। जब अजितसिंहके शरीरसे षण रक्त निकलकर उनकी रानीके शरीरसे लगा तो उसकी निद्रा भंग होगई, सने आश्चर्य्यमें भरकर क्या देखा कि, जिस पुत्रको नौ मास गर्भमें रक्खा- ा, जिसके चरित्रके ऊपर उसको विषम सन्देह था उसी नरकके कीडे वक्त- संहको अपने पतिके प्राण संहार करते हुए देखा। रानी पतिवियोगसे उन्मत्त होकर रोने लगीं, उनके रोनेसे निकटके कमरेमें सोये राजपूत रक्षक जाग उठे। व शीघ्रतासे कमरेका द्वार तोडकर भीतर आगये, उन्होंने वहां आकर महाराज अजितसिंहको मृतक पाया।–उनका प्राण शून्य रक्तमें सनाहुआ शरीर शय्याके ऊपर पडा था। रानी पतिके शोकमें उन्मत्त थीं।

पितृघाती वक्तसिंह रक्षकोंके आनेसे पहिले ही महलकी छतके ऊपर भाग गया और भागते समय सब द्वारोंके किवाड बन्द करगया। सब लोग विशेष चेष्टा करके भी प्रातःकालसे पहिले सम्पूर्ण द्वार नहीं तोडसके। प्रातःकाल होनेपर वक्तसिंहने महलकी छतसे बडे भाई अभयसिंहका पत्र आंगनमें फेंककर कहा कि "मैंने अपनी इच्छासे महाराजके प्राण नहीं लिये, किन्तु इस पत्रने मुझको उनके प्राणनाशकी आज्ञा दी थी।" राजपूत लोग बडे भारी राजभक्त हैं, इस कारण जब उन्होंने जाना कि अभयसिंह मारवाडके अधीश्वर हुए, तो और कुछ बात न कहकर उस पितृघातकको ही भक्ति दिखाना स्थिर करलिया। महाराज अजितसिंहकी उस अकालमृत्युमे उनकी चौरासी रानियें उनके शरीरके साथ चितामे जलगई, और इन नश्वर संसारको छोड परलोकको चलीगई अजितसिंह और उनकी रानियोंके चिताधूमसे सम्पूर्ण मारवाड मानो घोर अन्धकारसे ढकगया। महाराज अजितसिंहने प्रजाके हृदयमें जैसा अधिकार पाया था, वैसा और किसी कालमे भारतमें नहीं होगा. उनकी [illegible] चितामे उनके प्रेमी बहुतने पुरुषोंने जीवन विसर्जन किया था! महाराज अजित सिंहकी इस वियोगान्त लीलाने सम्पूर्ण मारवाड प्रजा और मारवाडके आबाल वृद्ध नरनारियोंके हृदयको [illegible] प्रतिध्वनित करदिया। इतिहास इन [illegible] अजितसिंह और [illegible] तक [illegible] होगा। [illegible] पालो [illegible] मदी [illegible] लिखते हैं।–

प्रस्तुत हुए। राठौर राज विजयसिंहकी नस २ में उत्तेजनाका रक्त दौडरहा था, यद्यपि विजयसिंहकी सलाह युद्ध करनेकी थी, परन्तु उनके सहायकारी बीकानेरके महाराजने युद्धसे भागनेका परामर्श दिया। बीकानेरके महाराजने युद्धकी दशा देख कर मन मनमें निश्चय कर लिया कि महाराष्ट्रीय डाकुओंके हाथसे बीकानेरकी रक्षा करनेके लिये भागना ही उचित है। इस महा संकटके समय बक्तसिंहकी समान परमसाहसी सेनापतिकी आवश्यकता थी, किन्तु विजयसिंहकी सेनामें वैसा साहसी और निर्भय चित्त कोई भी नायक नहीं था, इस कारण इस भागनेके प्रस्तावमें अधिक सामन्तोंने सम्मति देदी; यह भागनेका समाचार शीघ्र ही सब सेनामें फैलगया, यहां तक कि शत्रुओंको भी इस बातका पता लगगया। सन्ध्या होते ही बीकानेरके महाराजने सेना सहित अपनी राजधानीका मार्ग लिया। इधर रामसिंह राजपूत और महाराष्ट्रीयसेनाको साथ लेकर विजयसिंहके शिविरकी ओर दौडे। यद्यपि सब सेनाका मेरताकी ओर भागना निश्चय होगया था, परन्तु रामसिंहके सेनासहित आते ही राठौर लोग अपनी २ सेना लेकर अपने २ प्रदेशोंको भाग गये। रामसिंह और महाराष्ट्रनेताने विनाही युद्धके रणक्षेत्रमें अपनी जय पताका फहरादी। भागे हुए राठौर लोग तोपोंको युद्धमें ही छोड गये थे, इस कारण महाराष्ट्रियोंने बडे आनन्दसे जयध्वनिके साथ उनपर अधिकार करलिया। राठौर लोगोंने भागनेसे पहिले शोच लिया था कि भगवान् हमारे और विजयसिंहके विरुद्ध है यदि प्रसन्न होता तो क्या भ्रान्तिसे हम अपने ही पक्षकी सेनाके साथ परस्पर युद्धकरते? इस कारण युद्धसे भागना ही उचित है। यदि यह कुसंस्कार राठौर लोगोंके चित्तमें न घुसता तो निश्चय ही महाराष्ट्रीय लोग जयलक्ष्मीका आलिङ्गन करनेमें समर्थ न होते।

राठौरजातिमें एक विचित्र प्रथा प्रचलित देखीजातीहै। छोटा भाई यदि किसी भिन्न स्वाधीन राज्यमें दत्तक पुत्ररूपसे गृहीत हो तो मारवाडके राजसिंहासनके ऊपर उनके वंशधरोंका स्वत्वाधिकार रहताहै। किन्तु यदि वह पुत्र स्वदेशकी किसी सम्प्रदायके सामन्त द्वारा पोष्य पुत्ररूपसे ग्रहण किया जाय तो उक्त सिंहासनके ऊपर उस पोष्य पुत्र वा उसके वंशवालोंका किसी प्रकारका स्वत्व वा सम्पर्क नहीं रहता, अधीन सामन्तके पोष्य पुत्ररूपसे ग्रहण किये जानेके समय उसका सम्पूर्ण पैतृक स्वत्वाधिकार लुप्त होजाता है। और वह उस सामन्तके स्वत्वसे स्वत्ववान होता है। इस चिर प्रचलित प्रथाके अनुसार ही देवीसिंह चम्पावत सम्प्रदायके नेता महासिंहके पोष्य पुत्र होनेके कारण मारवाडके सिंहासनपर उनके उत्तराधिकारियोंका कुछ भी स्वत्व न रहा।

पितृघातक अभयसिंहके शिरपर जिस समय मारवाडका राजछत्र रक्खा गया, उस समय दिल्लीके यवन सम्राट्की बडी भारी शासनशक्ति बिलकुल छिन्न भिन्न, प्रतापलुप्त, विशाल राज्यके अङ्ग प्रत्यङ्ग खण्ड २ और सिंहासन कांपता था। अवसर पाते ही अभयसिंहने उस समयके सम्राट्के आधीन दूसरे राजप्रतिनिधियोंकी समान बहुतसे प्रदेश अपने राज्यमें मिला लिये थे, इस कारण उसने अपनी शासन शक्तिका चूडान्त निदर्शन रख कर शरीर छोडा अभयसिंहके मरने पर उनके पुत्र रामसिंहके हाथमें मारवाडका राज्यभार सौंपा गया। वक्तसिंह उस समय नागरमें राज्य करता था। भतीजेके राजतिलकके समय राजटीका और अभिनन्दन चिह्नस्वरूप बहुत उपहार द्रव्योंके साथ अपनी पालनकरनेवाली वृद्धधायको जोधपुरमें भेजदिया। पालनेवाली धायोंका रजवाडेमें बडा आदर होता है। रामसिंह राजपूत स्वभाव सिद्ध उग्र प्रकृतिके थे: इस कारण चचाके उस धायको दूतीरूपसे भेजने पर बडे क्रुद्ध हुए और धात्रीसे बोले कि "नये अधीश्वरकी संवर्द्धनाके लिये क्या चचाको दूतरूपसे भेजने कोई और मनुष्य नहीं मिला?" यह कह उसको अपमानके साथ विदा करदिया नागर जोधपुरके अधीन है, इस कारण [illegible] और [illegible] सिंहके दसा होने पर भी [illegible] अवश्य ही [illegible] थे, अत: वक्तसिंहके स्वयं न आने और उपहार [illegible] रामसिंहने उनके [illegible] [illegible]

[illegible]

और इस अंधेरी रातमें उक्त ग्राममें भी घोडेके मिलनेकी संभावना नहीं थी; परन्तु विजयसिंह स्वयं ही घोडेकी खोजमें घूमने लगे।

विशेष अनुसंधान करनेके पीछे एक जाट कृषकसे भेंट हुई, विजयसिंहने अपना असली परिचय छिपाकर उससे निश्चय करलिया कि " वह उनको सूर्यो- दयसे पहिले नागर पहुंचा देगा और उसके बदले पांच रुपये लेगा। " किसान- ने यह भी कहा कि "बाजी साही अर्थात् प्रचलित मुद्रा लूंगा। छद्मवेषी महा- राजने इसको स्वीकार कर लिया। वह जाट किसान शीघ्रही अपने खेतीके कामकी एक साधारण बैल गाडी लेआया। मारवाडके रत्नासनपर बैठनेवाले महाराज विजयसिंह उसके ऊपर बैठे। विजयसिंह बहुत शीघ्र नागरमें पहुंचनेके लिये व्याकुल थे; इस कारण दोनों बैलोंके मध्यमगतिसे दौडनेपर भी महाराज " हांक! हांक " शब्द कहकर गति वृद्धिकी चेष्टा करने लगे। सरलस्वभाव जाटने देखा कि बैल पूरी शक्तिसे दौडरहे हैं। इस कारण विजयसिंहके बारम्बार हांक २ शब्द कहनेसे उसका धीरज जाता रहा; उसने क्रोधके साथ कहा कि हांक! हांक! तुम हो कौन ? इतनी शीघ्रतासे जानेका क्या प्रयोजन है? तुमने बलिष्ठकी इतनी शीघ्रतासे पहुंचनेकी अपेक्षा विजयसिंहको सेनापति मरनाके युद्धमें रक्षा करना शोभनीय है। तुम्हारे व्यवहारसे मालूम होता है कि महाराष्ट्री लोग तुम्हारे पीछे आ रहे हैं। अब वृथा हांक २ शब्द मत करना कारण कि इससे अधिक वेगसे मैं गाडी नहीं लेजा सकूंगा। मारवाडेश्वरने अपनी अवस्था समझकर यद्यपि उसको कुछ प्रत्युत्तर नहीं दिया; परन्तु बीच २ में फिर भी "हांक २ शब्द कहकर विरक्त करने लगे। जाट पहिलेकी समान ही बैलोंको चलाने लगा। जब नागर एक कोसकी दूरीपर रह गया तो प्रभात हो गया, उषादेवी तन्मयी मूर्ति धारण करके दिखाई दी।

न्त नागरमें पहुँचे उस समय वहां वक्तसिंह उपस्थित नहीं थे, उनके आनेकी बात और भतीजेकी कठोरतासे ही वह तत्काल राजधानीमें पहुँचगये। सुनते हैं कि वक्तसिंहने उन दोनों सामन्तोंको शान्त करके कहा कि "मैं मध्यस्थ बनकर तुम्हारे इस विवादको शान्त कर दूंगा। किन्तु अपमानित सामन्तोंने किसी प्रकारसे भी इस बातको नहीं माना और वक्तसिंहके सामने प्रतिज्ञा करी कि "हम कभी स्वामी समझकर रामसिंहका दर्शन नहीं करेगे।" उन्होंने यह भी कहा कि "हम आपके जोधपुरके सिंहासनपर बैठनेमें यथोचित सहायता देंगे और यदि आप हमारी बातको नहीं मानेंगे तो हम सदाके लिये मारवाड छोडकर दूसरे राज्यमें चले जायेंगे।" वक्तसिंहने कुछदिन तक इंग्लेंडेश्वर रिचर्डकी समान आचरण किया, किन्तु उनके भतीजेकी स्वाभाविक उग्रताने शीघ्रही भयानक काण्ड संघटित करदिया।

"मारवाडकी सामन्त मण्डलीमें सबसे श्रेष्ठ कुशलसिंह और कुन्नीरामको चचाने आश्रय दियाहै" इस बातको सुनकर रामसिंहने चचाको फिर पत्र लिखे कि "झालोरका राज्य शीघ्रही लौटादो।" वक्तसिंहने फिर कुछ नम्र शब्दोंमें इसका उत्तर लिखा कि, "मैं अपने स्वामीके विरुद्ध विवाद करनेका साहस नहीं रखता, यदि आप स्वयं यहां आसकें तो मैं अभिषेक जलसे भराहुआ कलश हाथमें लेकर आपसे भेट करूंगा।" उत्तर प्रत्युत्तरके पीछे दोनोंने युद्ध करना स्वीकार किया। मेरता मैदानमें दोनों अपनी २ सेना लेकर मतवाले हाथियोंकी समान पहुंच गये। मारवाडके सम्पूर्ण साहसी सम्प्रदायोंमें मर्त्तीय सम्प्रदायके वीर सबसे अधिक साहसी हैं, यह सब लोग रामसिंहके झंडेके नीचे एकत्रित होगये। रिया, चूदरु, मिथरि, [illegible], भगराज, कोनालुन, अलनिवास, जुसुरि, वकारि, भूरुन्दा, [illegible] हो और चन्द्रावतके सामन्त लोग अपनी २ सेनाके साथ युद्धमें जाने लगे। जोधपुरके अधिकांश सम्प्रदाय राजभक्तिके वशीभूत होकर मर्त्तीय लोगोंमें आमिले; यद्यपि [illegible], निरवी आदिके कई सामन्त शत्रुपक्षमें मिलगये, किन्तु [illegible], गोविन्दगढ़ और भद्राजुन आदिके नेतृ स्थानीय सामन्त इस समय राजभक्तिको न छोड़े। इधर रामसिंहका अशिष्टाचरण याद करके उनका साथ नहीं दिया। दूसरे बड़े सामन्त इस जातीय युद्धमें पड़ना अनुचित समझकर तटस्थ होगये।

उद्धतस्वभाव रामसिंह अपनी असभ्यता और दुर्बुद्धिके कारण पहलेसे [illegible] साहसी सेनाकी सहायतासे सदाको वंचित होगये। [illegible]

प्रतिद्वन्द्वी राठौर लोगोंसे बहुत ही डरते थे। पाठकोंको स्मरण होगा कि, भयके कारण ही ईश्वरीसिंहने जघन्य उपायसे बक्तसिंहके प्राण संहार किये थे, विजयसिंहके सहायता मांगनेपर वह भयभीत होगये और जिस अतिथि धर्म्मको राजपूतजाति सदासे पालन करती चली आरही है उस आतिथ्य धर्म्मके शिरपर लात मार कर विजयसिंहको बन्दी करना निश्चय कर लिया। किन्तु व्यक्ति विशेषकी राजभक्ति और अनुरक्तिसे उनकी वह पापवासना सर्वथा व्यर्थ होगई। सत्यप्रिय इतिहास लेखक 'राजपूत जातिकी समालोचना करनेके अवसर समय २ पर अप्रिय बातें लिखनेको बाध्य है, किन्तु उस राजपूत चरित्रका उज्ज्वलांश कहांतक है इस बातको भी उपरोक्त राजभक्ति और अनुरक्ति भलीभांति प्रगट किये देतीहै। जिस राज्यमें आत्मविग्रहानल प्रज्वलित हो उठे उस राज्यके अधिवासी लोग सर्वथा हिताहित ज्ञान शून्य और आत्मीय मित्र भ्रातृ राजनैतिक सम्बन्ध भूलकर किसी पापके करनेमें भी पराङ्मुख नहीं होते। संसारके प्रत्येक भागकी प्रत्येक जातिमें यह शोचनीय दृश्य दिखाई देताहै। अतः राजपूत जातिमें यह दृश्य न होगा" ऐसी आशा अनुचित है। इंग्लैंड और फ्रांसके आत्मविग्रहानलमें जैसी अत्यन्त भयङ्कर और लोमहर्षण घटनायें घटी थीं, उनको स्मरण करनेपर कौन इस बातको स्वीकार नहीं करेगा" कि आपसकी लडाईके समय अधिवासी लोग विचार बुद्धि शून्य होकर मनुष्यके न करने योग्य कामोंको कर डालतेहैं। हम जिस घटनाद्वारा उस आत्मविग्रहके समय राजपूत चरित्रका प्रशंसनीय अंश प्रगट करना चाहते हैं, उसको नीचे लिखते हैं।

न्त नागरमें पहुँचे उस समय वहां वक्तसिंह उपस्थित नहीं थे, उनके आनेकी वात और भतीजेकी कठोरतासे ही वह तत्काल राजधानीमें पहुँचगये । सुनते हैं कि वक्तसिंहने उन दोनों सामन्तोंको शान्त करके कहा कि "मैं मध्यस्थ बनकर तुम्हारे इस विवादको शान्त कर दूंगा । किन्तु अपमानित सामन्तोंने किसी प्रकारसे भी इस वातको नहीं माना और वक्तसिंहके सामने प्रतिज्ञा करी कि "हम कभी स्वामी समझकर रामसिंहका दर्शन नहीं करेंगे ।" उन्होंने यह भी कहा कि "हम आपके जोधपुरके सिंहासनपर बैठनेमें यथोचित सहायता देंगे और यदि आप हमारी वातको नहीं मानेंगे तो हम सदाके लिये मारवाड छोडकर दूसरे राज्यमें चले जायेंगे ।" वक्तसिंहने कुछदिन तक इंग्लेंडेश्वर रिचर्डकी समान आचरण किया, किन्तु उनके भतीजेकी स्वाभाविक उग्रताने शीघ्रही भयानक काण्ड संघटित करादिया ।

"मारवाडकी सामन्त मण्डलीमें सबसे श्रेष्ठ कुशलसिंह और कुम्भीरामको चचाने आश्रय दियाहै" इस वातको सुनकर रामसिंहने चचाको फिर पत्र लिखे कि "झालोरका राज्य शीघ्रही लौटादो ।" वक्तसिंहने फिर कुछ नम्र शब्दोंमें इसका उत्तर लिखा कि, "मैं अपने स्वामीके विरुद्ध विवाद करनेका साहस नहीं रखता, यदि आप स्वयं यहां आसकें तो मैं अभिषेक जलसे भराहुआ कलश हाथमें लेकर आपसे भेंट करूंगा ।" उत्तर प्रत्युत्तरके पीछे दोनोंने युद्ध करना स्वीकार किया । मेरता मैदानमें दोनों अपनी २ सेना लेकर मतवाले हाथियोंकी समान पहुंच गये । मारवाडके सम्पूर्ण साहसी सम्प्रदायोंमें मेरतीय सम्प्रदायके वीर सबसे अधिक साहसी हैं. यह सब लोग रामसिंहके झंडेके नीचे एकत्रित होगये । रिया, बुडसु, मिथरि, खेजर्ला, भगवर, कोचामुन, अलनिवास, जुसुरि, वकरि, भूरन्डा, दूदो और चन्द्रावतके सामन्त लोग अपनी २ सेनाके साथ युद्धमें जाने लगे । जोधपुरके अधिकांश सम्प्रदाय राजभक्तिके वशीभूत होकर मेरतीय लोगोंमें आमिले, यद्यपि लाम्बू, निम्बी आदिके कई सामन्त वक्तसिंहसे मिलगये किन्तु [illegible], गोविन्दगढ और भद्राजुन आदिके नेतृ स्थानीय सामन्त इस समय तटस्थ होकर रहे । इधर रामसिंहका अभिषेकोत्सव [illegible] नहीं [illegible] । इसी कारण सामन्त इस जातीय युद्धमें लडना अनुचित समझकर तटस्थ हो [illegible] ।

[illegible] और [illegible] सेनाकी [illegible] । [illegible] सांजरकी

प्रतिद्वन्दी राठोर लोगोंसे बहुत ही डरते थे। पाठकोंको स्मरण होगा कि, भयके कारण ही ईश्वरीसिंहने जघन्य उपायसे बख्तसिंहके प्राण संहार किये थे, विजयसिंहके सहायता मांगनेपर वह भयभीत होगये और जिस अतिथि धर्म्मको राजपूतजाति सदासे पालन करती चली आरही है उस आतिथ्य धर्म्मके शिरपर लात मार कर विजयसिंहको बन्दी करना निश्चय कर लिया। किन्तु व्यक्ति विशेषकी राजभक्ति और अनुरक्तिसे उनकी वह पापवासना सर्वथा व्यर्थ होगई। सत्यप्रिय इतिहास लेखक 'राजपूत जातिकी समालोचना करनेके अवसर समय २ पर अप्रिय बातें लिखनेको बाध्य है, किन्तु उस राजपूत चरित्रका उज्ज्वलांश कहांतक है इस बातको भी उपरोक्त राजभक्ति और अनुरक्ति भलीभाँति प्रगट किये देतीहै। जिस राज्यमें आत्मविग्रहानल प्रज्वलित हो उठे उस राज्यके अधिवासी लोग सर्वथा हिताहित ज्ञान शून्य और आत्मीय मित्र भ्रातृ राजनैतिक सम्बन्ध भूलकर किसी पापके करनेमें भी पराङ्मुख नहीं होते। संसारके प्रत्येक भागकी प्रत्येक जातिमें यह शोचनीय दृश्य दिखाई देताहै। अतः राजपूत जातिमें यह दृश्य न होगा" ऐसी आशा अनुचित है। इंग्लेंड और फ्रांसके आत्मविग्रहानलमें जैसी अत्यन्त भयङ्कर और लोमहर्षण घटनायें घटी थीं, उनको स्मरण करनेपर कौन इस बातको स्वीकार नहीं करेगा " कि आपसकी लडाईके समय अधिवासी लोग विचार बुद्धि शून्य होकर मनुष्यके न करने योग्य कामोंको कर डालतेहैं। हम जिस घटनाद्वारा इस आत्मविग्रहके समय राजपूत चरित्रका प्रशंसनीय अंश प्रगट करना चाहते हैं, उसको नीचे लिखते हैं।

स्थान "माताजीका स्थान" इस नामसे विख्यात है। इस स्थानमें आद्याशक्तिका एक मन्दिर और पांचों पाण्डवोंका बनाया हुआ एक कुण्ड है।

सबसे पहिले वक्तसिंहने युद्धकी भेरी बजाई और रामसिंहकी आगे बढनेसे पहिले ही तोपोंके गोले बरसाने लगे। कुछ देर पीछे रामसिंहके गोलन्दाज भी भयानक शब्द करके गोलोंकी वर्षा करने लगे। सारेदिन तोपै हीं चलती रहीं, इस कारण खड्गयुद्ध करनेका किसीको अवसर न मिला। जातीय समरने क्रमसे भयानक मूर्ति धारण करी। इस युद्धमें विदेशी, विधर्म्मी और विजातीय कोई पुरुष नहीं था, केवल भ्राताके विरुद्ध भ्राता और मित्रके विरुद्ध मित्र खडेथे। सबकी नाडियोंमें समभावसे रक्त बह रहा था। सन्ध्या होते ही एक आश्चर्य्य घटनाके द्वारा यह युद्ध बन्द होगया।

रणक्षेत्रके निकट वाजिवा सरोवरके तटपर दादूपन्थी संन्यासीका एक आश्रम है। सुनते हैं कि राजा सूरसिंहने इस आश्रमको बनवाया था। यह आश्रम रणोन्मत्त दोनों पक्षवालोंके ठीक बीचमें स्थापित है। इस आश्रममें बाबा कृष्णदास अपने शिष्योंसहित रहते थे। शिष्यलोग तोपके गोलोंके भयसे भाग गये। परन्तु कृष्णदास शिष्योंके समझाने पर भी वहांसे नहीं भागे, जब दोनों ओरके सैनिकोंने उनसे दूसरे स्थानमें चले जानेका बहुत अनुरोध किया तो उन्होंने कहा कि "यदि तोपके गोलेसे निश्चय ही मेरी मृत्यु होनी लिखी है, तो मैं उसको किसी प्रकारसे नहीं हटा सकूंगा और यदि परमात्माकी वैसी इच्छा नहीं है तो यह तोपके गोले मेरी कुछ हानि नहीं कर सकते।" यह उत्तर सुनकर सब मौन होगये। सारे दिन आश्रममें गोले बरसते रहे। यद्यपि उन गोलोंके लगनेसे कृष्णदासका आश्रम और उद्यान नष्ट भ्रष्ट होगया, परन्तु बाबाजीके शरीरको कुछ हानि नहीं पहुंची और न वह उन गोलोंके गिरनेसे कुछ भयभीत हुए। सन्ध्या होने पर दोनों ओर युद्ध बन्द करदेनेके लिये कहला भेजा। दोनों दलोंने दादूपन्थी संन्यासीकी दैवीशक्तिसे भयभीत होकर युद्ध बंद कर दिया और रणक्षेत्र छोडकर अपने २ डेरोंको चले गये।

दूसरे दिन प्रातःकालसेही फिर जातीय [illegible] आरम्भ करनेके लिये दोनों ओरके सैनिक [illegible] राजा रामसिंहके [illegible] सेना सहित आगे बढकर [illegible] किया। [illegible] धुएँसे आकाशमें [illegible] और [illegible]

दिखाई थी। विजयसिंहने भी उनके साथ उसी प्रकारका व्यवहार किया। उन्होंने घोड़ेपर चढ़कर समाचार भेजा कि " मैं आपके आनेकी बाट देख रहा हूं।" विश्वासघाती ईश्वरीसिंहने भी इस बातका अर्थ भलीभांति समझ लिया। मरतीय सामन्त सनाने समाचार पाते ही अपनी तलवार म्यानमें करली और ईश्वरीसिंहके सन्मुख आकर आदरके साथ प्रणाम किया। जवानसिंहकी यह राजभक्ति मनुष्यके हृदयपर जिस विचित्र भावका उदय करनेमें समर्थ है, उस राजभक्तिने ईश्वरसिंह नर पिशाचके हृदयतकमें उस विचित्र भावका उदय करदिया था। ईश्वरीसिंहने प्रत्याभिवादन पूर्वक सामन्त मण्डलीको लक्ष्य करके कहा कि " इस अभूत पूर्व प्रशंसनीय राजभक्तिको देखो! ऐसे राज सामन्तसे रक्षित राजाके विरुद्ध जय प्राप्त करनेकी आशा वृथा है।

राजपूत जातिके प्रबल शत्रु महाराष्ट्रियोंको मारवाड़ निकाल देनेके लिये ही विजयसिंह उस शोचनीय दुरवस्थाके समय अन्यत्र सहायप्राप्तिकी आशासे स्वयं बाहर निकले थे, किन्तु कहीं भी उनका मनोरथ सिद्ध न हुआ, अन्तमें निराश होकर जिस साहस और सावधानीके साथ बाहर निकले, उसी साहस और सावधानीके साथ नगरमें फिर लौटआये। देखते देखते छः मास और समाप्त होगये, तथापि महाराष्ट्री लोग नागरके भीतर रामसिंहकी जयपताका न फहरा सके। किन्तु रामसिंहका भाग्यचक्र बदल जानेके कारण मारवाड़के अन्यान्य प्रदेशोंको महाराष्ट्रियोंने अपने अधिकारमें करलिया।

दस्युदलके नेता जयआप्पा सेंधियाके साथ मुलाकात करी, रामसिंह अपना राज्य प्राप्त करनेके लिये उनसे परामर्श करने लगे।

रामसिंहके मारवाड छोडते ही उनके चचा वक्तसिंह जयलक्ष्मीका आलिङ्गन करके तत्काल जोधपुरमें पहुंचगये और राजसिंहासन पर बैठकर सम्पूर्ण राज्यमें अपने नामका घोषणापत्र प्रचारित करदिया। कालकी कैसी विचित्र गति है! संसारकी कैसी विचित्र लीला है! पितृघातक वक्तसिंहके शिरपर ही मारवाडका राजछत्र शोभित हुआ! दृढप्रतिज्ञ और चतुर वक्तसिंहने विचारा कि. "रामसिंह जब महाराष्ट्र दस्युदलकी सहायता लेने गयेहैं तब निष्कण्टक राज्य भोगना असम्भव है।" वक्तसिंह पूरे राजनीतिज्ञ और रणपण्डित थे, इस कारण उन्होंने राजनैतिक अवस्था देखनेके लिये क्षणमात्र भी विलम्ब नहीं किया। वह अपने राज्यकी सीमान्तपर अस्त्रोंके साथ समर और महाराष्ट्र दस्युनेता, तथा रामसिंहके श्वशुर जयपुरराज जिससे रामसिंहको किसी प्रकारकी सहयता न देसकें. उसके लिये उपयुक्त उपाय करनेके लिये विजयी सेनासहित अजमेरकी ओर आगे बढे।

जयपुरेश्वर ईश्वरीसिंह कई प्रबल कारणोंसे वक्तसिंहकी सहायता करनेमें असमर्थ थे; किन्तु वह वक्तसिंहके बाहुबल और वीरतासे बहुत ही डरते थे। किं कर्त्तव्य विमूढ होकर ईश्वरीसिंहने वर्तमान विषम संकटावस्थामें साधारण राजपूतोंके अवलम्बित उपायको करनेकी इच्छा की। मृत महाराज अजितसिंहके एक पुत्र उस समय इन्दौरमें राज्यशासन करते थे। उनहींकी एक कन्याके साथ ईश्वरीसिंहका विवाह हुआ था। जयपुरराज उन रानीके महलमें जाकर विपत्तिसे बचनेका परामर्श करनेलगे। ईश्वरीसिंहने अजितसिंहकी शोचनीय हत्याका बदला लेने और रामसिंहके स्वत्वाधिकार प्राप्त करनेमें सहायता करनेके निमित्त रानीसे विशेष अनुरोध किया और वक्तसिंहके प्रेरित उक्त पत्रका उल्लेख करके कहा कि, 'मैं जिस पक्षमें सम्मत हूंगा उसी ओर तलवार चलाना होगा क्योंकि दोनों ओर ही युद्धकी आवश्यकता है। किन्तु वक्तसिंहके विरुद्ध होकर मैं स्वयं [illegible] नहीं करता और यदि मैं पितृहन्ता और अन्यायसे सिंहासन अधिकार करनेवालेकी सहायता करूं तो मनुष्य समाज मुझको धिक्कार देगा।' ईश्वरीसिंहने इन्दौरकी राजकुमारीसे यह भी प्रगट कर दिया कि इस महा संकट कालमें केवल तुम्हीं ही [illegible], उसके पीछे यह निश्चय हुआ कि एक [illegible] और एक [illegible] [illegible]

उस अजमेर दुर्गकी चोटी पर इस समय वृटिश जयपताका फहरारहीहै। यदि राजनैतिक घोषणामें सत्य उक्ति है तो वह पताका समग्र रजवाडेका अधिकार-वृटिश भारतका खजाना भरनेके लिये नहीं उडरहीहै, वरन केवल अति प्राचीन राजपूतराज्योंकी स्वाधीनता और शान्तिरक्षाके लिये, तथा लूटमार अत्याचार और उपद्रवके हाथसे रक्षा करनेके लिये ही बडे अभिमानके साथ फहरारही है।

महाराष्ट्रियोंसे त्यागे हुए रामसिंह राजसिंहासनपर अधिकार और अपनी शासन शक्ति फलानेके लिये विशेष चेष्टा करने लगे। रामसिंहने अपने चचा और उनके पुत्र विजयसिंहको जीतनेके लिये क्रमसे अठारह बार अपने प्राण संशयमें डाले थे। रामसिंहके प्रधान सहायक ईश्वरीसिंह जब परलोक सिधार गये तो वह निर्बल होगये, तब विजयसिंहके प्रस्तावानुसार केवल संबर सरोवर जिसके अर्द्धांशमें मारवाडराज्यका अधिकार था, वह अर्द्धांश और उस सरोवरमें जयपुरपति ईश्वरी-सिंहका जो आधा सत्व था, उसको लेकर जीवनपर्यन्त उसी स्थानपर रहनेको विवश होगये थे।

कि " भिन्नदेशमें तुम्हारा शव भस्महोगा । " इस बातके याद आनेपर वक्तसिंह अपने मन २ में कहनेलगे कि " वास्तवमें मैं अपने राज्यकी सीमांतपर स्थितहूं अब उन सती स्त्रियोंका वाक्य सफलहोना चाहताहै । " उस समय पितृघाती वक्तसिंहके हृदयमें कैसा दृश्य उदय हुआ कैसी अनन्त नरक यंत्रणासे हृदय जलाथा, यह बात अनुमानके बाहर है । वक्तसिंहने सती स्त्रियोंके शाप वाक्य उच्चारण करते २ ही अपना पापकलुषित शरीर छोडदिया । जिस स्थानपर वक्तसिंहका शव भस्मीभूत हुआ था, वहांपर एक स्मारक मंदिर इस समय बना हुआहै । सर्वसाधारणमें इस मंदिरको "बुरोदेवल" अर्थात् पिशाच मंदिरके नामसे पुकारतेहैं ।

राजा वक्तसिंह यदि बडे भाई अभयसिंहकी पापआज्ञाके वशीभूत होकर अपने जन्मदाता पिताका प्राण संहार न करते, तो वह मारवाडकी राजमण्डलीमें एक प्रथम श्रेणीके राजा गिने जासकतेथे। मारवाडमें उनकी समान साहसी राजा एक भी नहीं उत्पन्न हुआ । उनमें जैसी विलक्षण बुद्धि थी वैसी ही वीरता थी । पितृहत्याके पहिले सम्पूर्ण राठौर राजपूत उनको हृदयसे प्यार करते थे । अभयसिंहने जो गुजरातराज्यका अधिक भाग जय करलिया था, वह वक्तसिंह ही उसके प्रधान कारण और सहायकारी थे । दूसरे—गुजरात जय करनेके पीछे अभयसिंहने केवल अकेले वक्तसिंहकी सहायतासे दिल्लीसम्राटके प्रतिनिधि शेर बुलन्दको भयंकर संग्राममें परास्त करदिया था । रामसिंह जब अपनी उग्र प्रकृति, अशिष्ट आचरण और निन्दनीय स्वभावके कारण मारवाडसिंहासनके सर्वथा अयोग्य-पात्र समझे गयेथे, इस दशामें वक्तसिंहके सिंहासन अधिकारकार्यको किसी प्रकारसे अन्याय नहीं कहसकते; विशेष करके मारवाडकी सामन्तमण्डली मारवाडेश्वरकी समान एक राजरक्तधारी और राजनिर्वाचन करनेमें समर्थ है; उस सामन्तमण्डलीने रामसिंहको अयोग्य देखकर उस पदपर वक्तसिंहको अभिषिक्त करके किसी प्रकार भी न्यायका अपमान नहीं किया । मारवाडकी सामन्तमण्डली यह राजनिर्वाचनशक्ति धारण करती चली आती है, और श्रेष्ठ राज्यस्थापनकरनेके लिये यह व्यवस्था बहुत ही प्रयोजनीय है । [illegible] समय मारवाडके सम्पूर्ण सामन्तोंने उनकी [illegible] समर्थन और उनके पुत्र विजयसिंहकी [illegible] लिये प्रतिज्ञा की । [illegible] और [illegible] स्वाधीन राजाओंने भी इस [illegible] समर्थन किया । [illegible] होनेपर सामन्तमण्डली शीघ्र ही उनके पुत्र [illegible] स्थानमें अभिषिक्त करनेमें [illegible] ।

ही अन्तमें उनकी विजय हुई थी। चतुर माधोजीने विचारा कि "राजस्थानके प्रधान २ राज्योंकी इस समय जैसी अवस्था है उसके द्वारा इस प्रदेशमें अपना प्रभुत्व फैलानेका अच्छा अवसर है। ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा, नवीन बलसे उद्दीप्त जातिके भिन्न प्रान्तमें राज्यस्थापन करनेके लिये जितनी सामग्रियोंकी आवश्यकता होतीहै. सौभाग्यलक्ष्मीने मेरे लिये वह सामग्री उपस्थित कर दी है। मारवाडके राजा लोग केवल स्वजातीय मित्र राजगणोंके साथ विषम शत्रुतानल प्रज्वलित करके ही शान्त नहीं है, किन्तु उनके राज्यमें आभ्यन्तरिक जातीय विग्रहअग्नि भी भयङ्कर वेगसे प्रज्वलित होकर उनको क्रम २ से अन्तःशान्यशून्य बनारही है। राजालोग एक दूसरेके ध्वंससाधने और भीतर २ भारतविख्यात महाबली राजपूतजातिकी प्रशंसनीय कीर्तिको लुप्त करनेमें हैं; इस कारण यह सब लक्षण हमारी विजयको सूचित कररहे हैं।"

इस जातीय विग्रह और अभ्यन्तरिक विद्रोहमें नवीन शक्तिशाली उन्नतिशील महाराष्ट्रियोंकी सहायता पानेके लिये रजवाडेके सब राजा लोग इस समय व्यग्र हो उठे। और दुर्भाग्यका परिचय देनेवाली दुर्बुद्धिके वशीभूत हुए उन महाराष्ट्रियोंको बडे आदरपूर्वक अपने २ राज्यमें बुलानेलगे। इसका परिणाम यह हुआ कि सब राजा लोग महाराष्ट्रियोंकी आधीनतारूपी जंजीरमें बंधगये इस कारण सिंधियाकी समान क्षमताप्रिय और नवीन राज्यके स्थापन करनेमें उद्यत व्यक्तिकी आशा अपूर्ण रहनेकी संभावना कहां ? पाठकोंको याद होगा कि उदयपुरके राणाओंने अपने भानजे माधोसिंहके जयपुरके सिंहासनको अधिकारमें करनेके लिये महाराष्ट्रियोंकी सहायता ली; और अन्तमें मारवाडकी समान महाराष्ट्रियोंको निमंत्रित कर देनेके लिये बाध्य हुए थे।

कि दादूपन्थी वृद्ध संन्यासीके बहुतसे शिष्य भी आहार्य्यसंग्रह करनेके समय यमराजके घर सिधारगये। दूसरे दिनका युद्ध भी उसी भयानक मूर्त्तिसे आरंभ हुआ, विशेष करके विजयसिंहके पाँच सहस्र तेजस्वी अश्वारोहियोंने अपने भयानक आक्रमणसे सैंकडों महाराष्ट्रियोंको मार गिराया। यद्यपि विजयसिंहने मारवाडके सम्पूर्ण सामन्तों सहित युद्ध आरंभ करदिया था, यद्यपि उनकी सेनामें वीरता, साहस और उद्दीपना दिखाई देती थी, किंतु शत्रु सेनाकी अधिक संख्या देखकर पराजयकी संभावनासे उन्होंने भागनेका उपाय भी पहिलेसे ही निर्द्धार करलिया था। पहिले और दूसरे दिनकी लडाईमें युद्धकी सामग्री ढोनेवाले सब पशु भलीभाँति रक्षित रहे। तीसरे दिन उन सब पशुओंको जलपिलानेके लिये एक छोटी नदीके तटपर लेगये। जाते समय मार्गमें एक शोचनीय काण्ड घटा विजयसिंहके पक्षकी एक प्रबल बलशाली अश्वारोही सेना महाराष्ट्रियोंकी एक सेनाको विध्वंस करके ठीक उसी समय वहां आ निकली। उन्होंने रामसिंहके पशु समूहके रक्षकोंको गोलियोंसे मार गिराया और भारवाही पशुओंको छीन लिया। दुर्भाग्यके कारण उन्होंने यह नहीं समझा कि, यह हमारे ही पक्षके पशु और रक्षक हैं। यह उस समय भ्रमसे इतने उद्दीप्त होकर बडी वीरताके साथ अपने ही पक्षके वीरोंको मार रहे थे कि उसको देखकर महाराष्ट्रियोंके सैनिक स्तंभित और भयभीत होजानेके कारण इस शुभ अवसर पर आक्रमण करनेके लिये किसी प्रकारसे आगे नहीं बढे। उन मरे हुए वीरोंको विजयसिंहके शिविरमें लानेपर सब ही भयभीत होगये। भ्रमसे उस सेनाके द्वारा अपने ही पक्षके सैनिक मरजानेपर भी विजयसिंहके अधीनस्थ अत्यन्त साहसी राठौर वीर वृन्दने जिस महाप्रतापसे संग्राममें धारण करी थी, जिस उद्दीपना, साहस और वीरताने उनके हृदयमें उत्तेजित कर दिया था, महाराष्ट्री लोग किसी प्रकारसे भी उस उद्दीपना, उस साहस और उस एकताको नष्ट नहीं करसकते थे। परन्तु महाराष्ट्रियोंके सौभाग्यसे एक दारुण कुसंस्कार पैदा हुआ। राठौर जाति सरदारोंके स्वभावमें [illegible] जिस कुसंस्कारके होनेसे आज तक अपना [illegible] उस कुसंस्कारने ही उस उद्दीपना, साहस और एकताको [illegible] भिन्न करदिया। राजा विजयसिंहकी इस समय [illegible] जैसे साहसी थे, वैसे ही [illegible] [illegible]

सामन्त जवानसिंहने राठोर अश्वारोहियोंको दलबद्ध करके पृथ्वीको कम्पित-और सेंधियाके श्रेष्ठ दलको छिन्नभिन्न करदिया । सेंधियाके सैनिक यद्यपि सुविख्यात फरासीसी सेनापति डिवाइनके द्वारा भलीभाँति रणशिक्षित हुए थे, किन्तु राठोर अश्वारोहियोंके अतुलनीय बाहुबलके निकट खडे रहनेमें समर्थ न होकर क्षणमात्रमें नष्ट होगये, और शेष सैनिक प्राणोंके भयसे भागगये। सम्मिलित सेनादलने थोडे कालमें ही जयलक्ष्मीका आलिङ्गन प्राप्त करलिया। सेंधियाने भी कलङ्कका भार लेकर भागती हुई सेनाका अनुसरण किया, और मथुरामें आकर आश्रय लिया। सुनतेहैं इस महासंग्राममें राजपूतोंने सेंधियाकी जो दुर्दशा और हानि की थी. माधोजी बहुत काल तक उसको विस्मृत और अतिपूर्ण न करसके थे। जवानसिंहने महाराष्ट्रियोंके भागनेसे विजयलक्ष्मी प्राप्त करनेके पीछे अजमेरपर द्वितीय बार अधिकार करनेके लिये एक सेनादल भेजदिया। यह कहनेसे अत्युक्ति न होगी कि विजयी सेनादलने विना ही युद्धके अजमेरपर अधिकार करके उसको फिर मारवाडराज्यके अन्तर्भुक्त करदिया। मारवाडेश्वर विजयसिंहने माधोजीके साथ संधि करके प्रति तीन वर्षके पीछे जो बहुतसा धन देना स्वीकार किया था. इस विजयप्राप्तिसे वह सन्धि टूटगई इस तेजस्वी दुर्द्धर्ष साहसी राजपूतजाति-मेवाड. मारवाड अम्बेर आदिके चौहान राठोर लोग यदि एकताकी जंजीरमें बंधे रहें तो विदेशी कोई जाति भी राजवाडेमें किसी प्रकार अपना अधिकार नहीं जमासकती. तङ्गाका युद्ध इस बातकी पूर्ण साक्षी देरहाहै ।

विजयसिंहकी इच्छा थी कि नागरमें पहुँचकर फिर सेनाका संग्रह करेंगे। और सेना लेकर विजातीय महाराष्ट्रियोंके कराल गालसे अपने राज्यकी रक्षा अवश्य करेंगे। किन्तु उस अँधेरी रातमें वह नागरका मार्ग भूलगये, अथवा राहिनके सामंत इच्छापूर्वक अपने प्रदेशमें पहुँचनेके लिये विजयसिंहको राहिनके मार्गपर लेगये। मार्गकी सुध आते ही विजयसिंहने राहिनाधीश्वर लालसिंहको पुकारकर कहा कि, "हम भूलसे इधर आगये, अब नागरकी ओर घोडा फेर दो।" किन्तु शोक! मारवाडेश्वरकी उस आज्ञाको उस समय कौन पालन करता? यद्यपि राजपूतजाति परम राजभक्त है, किन्तु विजयी राजाकी आज्ञा, और पराजित होकर भागे हुए सहायहीन राजाकी आज्ञा कौन समान समझताहै। विजयसिंह जिस समय दो लाख सेनाके साथ युद्धमें पहुँचेथे, उस समय प्रत्येक सामंत मस्तक नवाकर उनकी आज्ञाको स्वीकार करते थे; किंतु इस समय उनका भाग्य लौटगया है, इस कारण लालसिंहने प्रगटमें क्षमाप्रार्थना करके कहा कि,–"मेरा स्थान अब निकट ही आगयाहै, आज्ञा दीजिये कि मैं एक बेर अपने कुटुंबको देखकर सबको साथ लेआऊं।" चतुर विजयसिंहने सामंतके मनका भाव समझकर उस अनुचित प्रार्थनाका कुछ भी उत्तर नहीं दिया और अपना घोडा धीरे २ चला दिया। इधर उस अंधेरी रातमें लालसिंह ठाकुर विजयसिंहको उस अपरिचित मार्गमें छोडकर अपने स्थानको चलेगये। विजयसिंह उस अवस्थामें भी कुछ भयभीत न होकर केवल पांच शिलापोस नामक विश्वासी [illegible] [illegible] साथ कुजवाना नामक स्थानमें पहुंचगये।

कुजवाना नामक स्थानमें निर्भयताके साथ रहना असंभव है; सहसा शत्रुलोग आकर बन्दी करसकतेहैं; यह विचारकर विजयसिंहने उस स्थानको भी छोडदिया, वह घोडे पर सवार होकर नक्षत्रगतिसे चलने लगे. [illegible] पहुंचते ही उनके स्वामीभक्त घोडेने थकावटसे अपने प्राण छोड दिये। भाग्यलक्ष्मीकी कोपदृष्टिमें पडे हुए विजयसिंह विवश होकर अपने एक अनुचरके घोडेपर सवार हुए और बडे वेगसे घोडेको दौडाते हुए [illegible] दुर्गम [illegible] नामक स्थानमें पहुंचे। विजयसिंह विपत्तिमें पडकर फिर [illegible] [illegible] [illegible] लोहकवचधारी सवारोंके [illegible] भागने और रातो दिन विश्राम न मिलनेसे वह घोडा भी चलनेमें असमर्थ होगया। [illegible] उस स्थानसे [illegible] दुर्गम है; इस कारण यही निश्चय हुआ कि यहां कोई [illegible] किये [illegible] [illegible] यथा संभव शीघ्र पहुंचना चाहिये। अनुचर लोगोंके [illegible] [illegible]

राजपूतजातिके स्वार्थपरतारूपी सूर्यको अस्ताचलकी चोटीपर प्राप्त होनेको बाध्य करदिया।

जब राठौर कविकुलके उस संगीतने अम्बरीय सैनिकोंके हृदयमें अपमानाग्नि प्रज्वलित करदी, तब उन्होंने छिपे २ महाराष्ट्रियोंके साथ यह संधिकरी कि जिस समय राठौर वीर महाराष्ट्रियोंके विरुद्ध युद्धक्षेत्रमें अवतीर्ण होंगे, अम्बरीय सेनादल उस समय उनके साथ सम्मिलित न होकर अलग खडा रहेगा और महाराष्ट्र सेना उसके बदलेमें अम्बेर राज्यको विध्वंस नहीं करेगी। राठौर सैनिक युद्ध करनेसे इस षड्यन्त्रका कुछ भी समाचार न जान सके, वह इस विचारमें थे कि तुङ्गाके युद्धके समान यहां भी दोनों सेनादल मिलकर महाराष्ट्रियोंको पराजित कर देंगे। शीघ्रही रणभेरी बजाई गई। कुद्धर्प साहसी राठौरगण स्वभाव सिद्ध तेजसे प्रबल तरंगकी समान फरासीसी सेनापति डिबाइनके अधीनस्थ गोलन्दाज दलको आक्रमण पूर्वक गोलोंकी वर्षा करके सामनेके सब पदार्थोंको विध्वंस करने लगे, उन्होंने अपने आकाशभेदी शब्दसे युद्धस्थलको कम्पायमान कर दिया। किन्तु कुछ देरके पीछे वह सब वीर कृतघ्न जयपुरीय सेनादलकी सहायता न पानेसे बहुत गुणयुक्त महाराष्ट्रियोंकी सेनाद्वारा चारों ओरसे घिर गये, इस कारण उपायान्तर न देखकर असहाय अवस्थामें राठौर वीर रणक्षेत्र छोडनेको बाध्य हुए। विजयलक्ष्मीने महाराष्ट्रियोंका आश्रय लिया।

जाटको पांच रुपये दिये और कहा कि " अवसर आनेपर तुमको इसका उचित पुरस्कार दिया जायगा।" सारीरातके जागे हुए राजा विजयसिंहने नागरमें पहुँचते ही हरसोलाके सामन्तको जोधपुरकी रक्षाके लिये भेजा और मारवाडके सब सामन्तोंको नागरमें एकत्रित होनेके लिये घोषणापत्र प्रचार कर दिया। विजयी रामसिंहने भी महाराष्ट्रियोंके साथ आकर उसीदिन नागर राजधनीको घेर लिया।

परम साहसी विजयसिंहने छः मासतक शत्रुओंके कराल गालसे नागरकी रक्षा करी, महाराष्ट्रसेना नागरके अधिकार करनेमें बिलकुल अशिक्षित थी. इस कारण उन्होंने जब २ विजयसिंहपर आक्रमण किया तब २ हानि उठाई। राजा विजयसिंह स्वजातीय महावीरोंकी समान सब गुणोंसे भूषित और अपने पिता भक्तसिंहकी समान परम साहसी थे, इस कारण उन्होंने शत्रुओंकी यह दशा देखकर जिससे रजवाडेके इतिहासमें उनका नाम अक्षय होजाय ऐसे एक बडेभारी साहसका काम करनेको उद्योग किया। उन्होंने यह विचारा कि "मेरे पास नगरमें जितनी सेनाहै, उससे महाराष्ट्रियोंको भगाना असंभवहै, और मारवाडमें अन्य सेना संग्रह होनेकी आशा भी नहीहै, इस कारण स्वयं ही रजवाडेके राजालोगोंकी सहायता लेनेके लिये बाहर निकलना उचित है। क्योंकि रजवाडेके परम शत्रु महाराष्ट्रियोंके भगानेके लिये इस समय सब ही राजपूत स्वकार्यार्थी राजालोग मेरी सहायता करेंगे।" विजयसिंहके पास नागरमें पांचसौ उष्ट्रारोही बडे साहसी सैनिक वीर थे, उन्होंने उनको और एक सहस्र महाबली शिक्षित राजपूत सैनिकोंको साथ लेकर आधी रातमें नागरसे प्रस्थान किया। चौबीस घंटे बराबर चलनेके पीछे बीकानेर राज्यमें पहुंचे। यद्यपि बीकानेरके स्वामीने इनको बडे आदरके साथ लिया, परंतु इस घोर विपत्तिमें सहायता देनेसे साफ इन्कार करके उनको निराशाके समुद्रमें डुबादिया। विजयसिंह उनके इस व्यवहारसे क्रुद्ध होकर एक और साहसके काममें प्रवृत्त हुए। जयपुरेश्वर ईश्वरीसिंह जो यथा साध्य रामसिंहकी सहायता करते थे, विजयसिंह उनसे सहायता मांगनेके लिये शीघ्रही बीकानेर छोडकर चले गये। जयपुरमें पहुंचकर दूतद्वारा अम्बेरराजसभामें यह समाचार भेजा कि, " मैं इस विपत्तिके समय आपसे सहायता मांगनेकी इच्छासे आया हूं, आशा है कि आप अवश्य सहायता देंगे।"

अम्बेरके सुरसिंह [illegible]

बुद्धिमान थे. उनके पुत्र ईश्वरीसिंह [illegible]

राजपूतजातिके स्वाधीनतारूपी सूर्यको अस्ताचलकी चोटीपर प्राप्त होनेको बाध्य करदिया ।

जब राठौर कविकुलके उस संगीतने अम्बरीय सैनिकोंके हृदयमें अपमानाग्नि प्रज्वलित करदी, तब उन्होंने छिपे २ महाराष्ट्रियोंके साथ यह संधिकरी कि जिस समय राठौर वीर महाराष्ट्रियोंके विरुद्ध युद्धक्षेत्रमें अवतीर्ण होंगे, अम्बरीय सेनादल उस समय उनके साथ सम्मिलित न होकर अलग खडा रहेगा और महाराष्ट्र सेना उसके बदलेमें अम्बेर राज्यको विध्वंस नही करेगी! राठौर सैनिक युद्ध करनेसे इस षड्यन्त्रका कुछ भी समाचार न जान सके, वह इस विचारमें थे कि तुङ्गाके युद्धके समान यहां भी दोनों सेनादल मिलकर महाराष्ट्रियोंको पराजित कर देंगे। शीघ्रही रणभेरी बजाई गई । दुर्द्धर्ष साहसी राठौरगण स्वभाव सिद्ध तेजसे प्रबल तरंगकी समान फरासीसी सेनापति डिबाइनके अधीनस्थ गोलन्दाज दलको आक्रमण पूर्वक गोलोंकी वर्षा करके सामनेके सब पदार्थोंको विध्वंस करने लगे, उन्होंने अपने आकाशभेदी शब्दसे युद्धस्थलको कम्पायमान कर दिया। किन्तु कुछ देरके पीछे वह सब वीर कृतघ्न जयपुरीय सेनादलकी सहायता न पानेसे बहुत गुणयुक्त महाराष्ट्रियोंकी सेनाद्वारा चारों ओरसे घिर गये, इस कारण उपायान्तर न देखकर असहाय अवस्थामें राठौर वीर रणक्षेत्र छोडनेको बाध्य हुए। विजयलक्ष्मीने महाराष्ट्रियोंका आश्रय लिया । सुनते हैं कि राठौर वीर "पर भूमि" अर्थात विदेश और स्वदेशमें समान भावसे नहीं लड सकते, यह पाटनका युद्ध ही उसका प्रमाण है । इस युद्धमें राठौर लोगोंकी ऐसी दुर्दशा हुई थी कि भिखारियोंने उनके अस्त्रादि लूट लिये थे । हम निःशंक होकर कह सकते हैं कि जयपुरियोंके विश्वासघातने ही पाटनके युद्धमें उपरोक्त शोचनीय दृश्य उपस्थित किया ।

इनहीं सामन्तको यह आज्ञा दी थी कि, "मुलाकातके समय विजयसिंहको वन्दी करलेना।" विश्वासी सामन्तने स्वामीके इस अत्यन्त निन्दित और राजपूत जातिको कलङ्कित करनेवाले परामर्शको एकान्तमें केवल अपने जमाईसे कहदिया। जवानसिंहने अपने मनमें निश्चय करलिया कि "विजयसिंहकी रक्षा अवश्य ही करना उचितहै।"

राठौरराज जयपुरकी धर्म्मशालामें ठहरे हुए ईश्वरीसिंहकी मुलाकातकी बाट जोहरहे थे। ईश्वरीसिंह अपना अभिप्राय सिद्धि करनेके लिये सब सामग्रीसे सज्जित होकर धर्म्मशालामें आये। विजयसिंहको इस बातकी कुछ भी खबर न थी कि "नरराक्षस ईश्वरीसिंह वक्तसिंहकी समान विजयसिंहके भी प्राण लेनेका संकल्प करचुके हैं।" विजयसिंहने परम मित्रभावसे आगे बढकर ईश्वरीसिंहको बडे आदरके साथ लिया; दोनों एक आसनपर बैठकर कुशल प्रश्नमें नियुक्त हुए। इधर राजभक्त जवानसिंह अपनी प्रतिज्ञानुसार धीरेसे ईश्वरीसिंहके पीछे जाकर बैठगये। मारवाडके प्रचलित नियमानुसार मेरताके सामन्त श्रेष्ठ राजाके दक्षिण ओर आसन पातेहैं किन्तु मारवाडके वीराग्रगण्य जवानसिंहको पीछे बैठा देखकर ईश्वरीसिंहने कहा कि, "ठाकुर आप पीठपीछे क्यों बैठे ?" जवानसिंहने तत्काल उत्तरदिया कि "महाराज ! आज इसी स्थानपर बैठनेकी आवश्यकता है।" फिर कुछ देरके पीछे विजयसिंहको लक्ष्य करके राजभक्त जवानसिंहने कहा कि "महाराज ! उठिये, शीघ्र चलिये, नहीं तो आपका जीवन वा स्वाधीनता महा विपत्तिमें होंगे। विजयसिंह राजभक्त सामन्तके वाक्यसे ईश्वरीसिंहका चक्रान्त समझ गये, और द्विरुक्ति न करके वहां शीघ्रताके साथ उठे, विश्वासघाती ईश्वरीसिंहने भी उनके पीछे भागनेकी चेष्टा करी, परन्तु आशा व्यर्थ होगई, क्योंकि राजभक्त जवानसिंह उनके पिछाडी सामनेसे अपनी इच्छानुसार सावधानीके लिये बैठ गये थे इस कारण ईश्वरीसिंह उस बाधाको अतिक्रमण करनेमें समर्थ न हुए। ईश्वरीसिंहने पीछे फिरकर देखा कि "जवानसिंह नङ्गी तलवार लिये महाक्रोधमें बैठा है।" भयके मारे उनका शरीर कांपने लगा और विश्वासघातका फल तत्काल मिला हुआ समझकर [illegible] [illegible], [illegible] विक्षिप्त होगया। जवानसिंहने बैठे बैठे [illegible] [illegible] कहा कि, "मरुदेश्वर ! यदि मैं स्वामीका कुछ अनिष्ट हुआ तो तलवार आपके [illegible] [illegible] दूंगा।" फिर विजयसिंहने कहा कि "महाराज ! [illegible] [illegible] मुझे समाचार दीजिये।" सामन्त जवानसिंहने जिस प्रकार [illegible]

इनहीं सामन्तको यह आज्ञा दी थी कि, "मुलाकातके समय विजयसिंहको बन्दी करलेना।" विश्वासी सामन्तने स्वामीके इस अत्यन्त निन्दित और राजपूत जातिको कलङ्कित करनेवाले परामर्शको एकान्तमें केवल अपने जमाईसे कहदिया। जवानसिंहने अपने मनमें निश्चय करलिया कि "विजयसिंहकी रक्षा अवश्य ही करना उचितहै।"

राठौरराज जयपुरकी धर्म्मशालामें ठहरे हुए ईश्वरीसिंहकी मुलाकातकी बाट जोहरहे थे। ईश्वरीसिंह अपना अभिप्राय सिद्धि करनेके लिये सब सामग्रीसे सज्जित होकर धर्म्मशालामें आये। विजयसिंहको इस बातकी कुछ भी खबर न थी कि "नरराक्षस ईश्वरीसिंह वक्तसिंहकी समान विजयसिंहके भी प्राण लेनेका संकल्प करचुके हैं।" विजयसिंहने परम मित्रभावसे आगे बढकर ईश्वरीसिंहको बडे आदरके साथ लिया; दोनों एक आसनपर बैठकर कुशल प्रश्नमें नियुक्त हुए। इधर राजभक्त जवानसिंह अपनी प्रतिज्ञानुसार धीरेसे ईश्वरीसिंहके पीछे जाकर बैठगये। मारवाडके प्रचलित नियमानुसार मेरताके सामन्त श्रेष्ठ राजाके दक्षिण ओर आसन पातेहैं किन्तु मारवाडके वीराग्रगण्य जवानसिंहको पीछे बैठा देखकर ईश्वरीसिंहने कहा कि, "ठाकुर आप पीठपीछे क्यों बैठेहैं?" जवानसिंहने तत्काल उत्तरदिया कि "महाराज! आज इसी स्थानपर बैठनेकी आवश्यकता है।" फिर कुछ देरके पीछे विजयसिंहको लक्ष्य करके राजभक्त जवानसिंहने कहा कि, "महाराज! उठिये, शीघ्र चलिये, नहीं तो आपका जीवन वा स्वाधीनता महा विपत्तिमें होगे। विजयसिंह राजभक्त सामन्तके वाक्यसे ईश्वरीसिंहका चक्रान्त समझ गये. और द्विरुक्ति न करके बड़ी शीघ्रताके साथ उठे, विश्वासघाती ईश्वरीसिंहने भी उनके पीछे भागनेकी चेष्टा करी, परन्तु आशा व्यर्थ होगई. क्योंकि राजभक्त जवानसिंह उनके पिछले दामनपर अपनी इच्छानुसार सावधानीके लिये बैठ गये थे इस कारण ईश्वरीसिंह उस बाधाको अतिक्रमण करनेमें समर्थ न हुए। ईश्वरीसिंहने पीछे फिरकर देखा कि "जवानसिंह नङ्गी तलवार लिये महाक्रोधमें बैठा है।" भयके मारे उनका शरीर कॉपने लगा और विश्वासघातका फल तत्काल मिला हुआ समझकर गला सूख गया, मन विक्षिप्त होगया। जवानसिंहने बडे गर्व और साहसके साथ उस पूर्ण सभामें कहा कि "अम्बेश्वर! यदि मेरे स्वामीका कुछ अनिष्ट हुआ तो तलवार आपके पेटमें भोंक दूंगा।" फिर विजयसिंहसे कहा कि "महाराज! आप घोडेपर सवार होते ही मुझे समाचार दीजिये।" सामन्त जवानसिंहने जिस प्रकार अतुलनीय राजभक्ति

छुड़ाने और महाराष्ट्रियोंको उचित प्रतिफल देनेके लिये अहोयाके सामन्त माहीदासने बड़े साहसके साथ प्रतिज्ञा करी कि "यातो इस युद्धमें जन्मभूमिको बहुत कालके लिये शत्रुओंके कराल गालसे उद्धार करके जातीय स्वाधीनता प्राप्त करेंगे नहीं तो युद्धमें लड़कर प्राण देंगे। यह प्रतिज्ञा करके उन्होंने भीमराजसे सेना आगे बढ़ानेका प्रस्ताव किया, अन्यान्य सम्पूर्ण सामन्त इस प्रस्तावको बड़े आनन्दसे समर्थन करके शत्रुओंकी छातीमें तलवार मारनेके लिये अधीर हो उठे। विशेष करके उस समय एक दल राठोर सेनाने महाराष्ट्रियोंके बोझा ढोनेवाले पशुपालकोंपर आक्रमण करके सब पशु छीन लिये थे; इस कारण राजपूत वीर स्वाभाविक उत्साह, उत्तेजना और आग्रहसे और भी बलिष्ठ दिखाई देने लगे। सब सामन्तोंने भीमराजसे कहा कि–"जिस डिबाइनके अधीनस्थ सुशिक्षित गोलन्दाज दलने पाटनके युद्धमें केवल अपना रणकौशल दिखाकर पराजित करदिया था, वह गोलन्दाज दल इस समय नहीं है, इस कारण इस शुभ अवसरपर समराग्नि प्रज्वलित करनेसे अवश्य ही विजय प्राप्तिकी संभावना है, किन्तु दुर्भाग्यके कारण भीमराज इस प्रस्तावको स्वीकार नहीं करसके। हतबुद्धि भीमराजने खूबचन्दका भेजा हुआ एक पत्र बाहर निकालकर दिखाया, प्रधानमंत्रीने उसमें लिखा था कि "जबतक इसमाईल्बेग न पहुंच जाय तबतक किसी प्रकार शत्रुओंपर आक्रमण न करना।" इसमाईल्बेग उस समय नागरमें थे, इस कारण राजभक्त और निरभिमान्वित प्रथाके ऊपर विशेष सन्मान दिखानेवाले राठोर वीर अनिच्छापूर्वक प्रधानमंत्रीकी उस विषमय फलदायक आज्ञाको पालन करनेमें बाध्य होगये। इस अवसर व्यर्थ ही चलागया। यदि भीमराज प्रधानमंत्रीकी वह

शिविरकी ओर चलने लगे। जयआप्पा सेंधिया उस समय हाथ मुँह धोनेके काममें लगे हुए थे। उनको देख कर दोनों एक दूसरेको बहुत ही कटु वाक्य कहने लगे, उनके सामने पहुँचते ही एकने हिसाबका कागज फेंक दिया और विवाद निवटानेके लिये महाराष्ट्रनेताको मध्यस्थ होजानेकी प्रार्थना करने लगा। क्रमसे दोनोंने जयआप्पा सेंधियाके बहुत निकट जाकर विवादका कारण कहना आरंभ कर दिया। जयआप्पा सेंधिया धीर चित्तसे उस सब विषयको सुन रहे थे, इसी अवसरमें अफगानी प्यादेने, "यह लो नागर!" कहकर जयआप्पासेंधियाके हृदयमें अपनी तलवार घुसेड दी; तत्काल दूसरे राजपूतने भी "यह लो जोधपुर" कहकर अपनी तलवार मारी। दोनों शीघ्रतासे भागे, अफगानी उसी समय पकडकर टुकडे कर दिया गया; किन्तु चतुर राजपूत बहुतसे लोगोंमें जा मिला और सिपाहीकी समान "चोरा चोर!" पुकारता हुआ बेखटके नागरके भीतर पहुँच गया। विजयसिंहने इस समाचारको सुनकर प्रतिज्ञानुसार पुरस्कार तो दे दिया परन्तु, हत्यारेका मुख देखना स्वीकार न किया।

जयआप्पासेंधियाके परलोक सिधारनेपर माधोजी सेंधिया सेनापतिके पद-पर प्रतिष्ठित हुए। महाराष्ट्र सेना पहलेकी समान ही नागरको घेरे रही, यथा-साध्य चेष्टा करके भी दूसरे स्थानोंसे आती हुई सेना और भोजन सामग्री को नागरमें जानेसे न रोक सके। इन महाराष्ट्रियोंको एक स्थानसे दूसरे स्थानमें जानेका पूरा अभ्यास था. इस कारण एक वर्षसे अधिक कालतक एक स्थानपर खाली बैठना उनको अत्यन्त कष्ट दायक होगया। विशेष कर नागरकी अपे-क्षा किसी समृद्धिशाली देशपर आक्रमण करनेसे [illegible] सम्भावना समझकर माधोजी विजयसिंहके साथ सन्धि करनेके लिये [illegible]। विजयसिंहने महाराष्ट्रियोंके [illegible] सूचित कर दी। अन्तमें यह निश्चय हुआ कि [illegible] छोडकर मारवाडसे [illegible] निर्धारित कर दिया [illegible] बदलेमें दुर्गादि [illegible]

उन्माहित हृदयने कहा, "युद्धस्थलमें चलो।" जन्मभूमि और स्वजातिके निमित्त प्राण देनेका संकल्प करके चार सहस्र राठौर वीर घोडोंपर सवार हुए और बहुत शीघ्रतासे युद्धमें पहुंचगये।

महाराष्ट्रियोंके प्रधान सेनापति डिवाइन अस्सी तोपोंको चतुराईके साथ स्थापित करके प्रतीक्षा कर रहेथे, प्राणोंकी ममता छोडकर उन चार सहस्र दृढ प्रतिज्ञ राठौर अश्वारोहियोंको नंगी तलवार हाथमें लिये आता हुआ देखकर डिवाइनकी तोपें जलते हुए गोले उगलने लगीं: किन्तु थोडी देरमें ही "प्राण-नकी बात मत समझना" कहकर उन जलते हुए तोपके गोलोंको अग्राह्य करके वह चार सहस्र साहसी राठौर वीर तोपोंके निकट पहुंच गये। सामनेके प्रत्येक पदार्थको नष्ट भ्रष्ट करके तोपोंकी रक्षा करनेवाले महाराष्ट्रियोंको छिन्न भिन्न करदिया और आकाशभेदी शब्दसे शत्रुव्यूहको भेदकर शत्रुओंका नाश करने लगे। उस भयंकर आक्रमणसे भयभीत हुए महाराष्ट्रीलोग पहिले तोपें छोडकर भाग गये थे, हा शोक! उस समय यदि वहां राठौर पैदल सेनाका एक दल पहुंचकर तोपोंपर अधिकार करलेता तो उस प्रथम आक्रमणमें ही वह चार सहस्र राठौरवीर महाराष्ट्रियोंको पराजित कर देते—तुङ्गाके युद्धकी अपेक्षा मरताका यह समर राठौरोंके वीरत्व यश गौरवको प्रबल रूपसे बढा देता, किन्तु दुर्भाग्यका विषय है कि राठौर पदातिसैनिक सबसे पहिले ही भाग गये थे।

तीसवां अध्याय ३०.

माधोजी सेन्धिया,-राठौर और कछवाहा लोगोंका मिलनः तथा महाराष्ट्रियोंके विरुद्ध युद्धमें उनके साथ इसमाइलबेग और हामदानीका सम्मिलित होना.-तङ्गाका समर,-सेंधियाका पराजय,-राठौरोंका अजमेरपर फिर अधिकार. और करदान सन्धिभंजन;-डिबेनीकी सहायतासे माधोजी सेंधियाका सेनासंग्रह.-जयपुरके सीमान्तमें सम्मिलित राजपूतसेनाका साक्षात.-सम्मिलित राजपूतमित्र राजगणमें जातिविद्वेष.-ग्लानिसूचक संगीतसूत्रसे राठौर लोगोंके साथ कछवाहगणका विच्छेद.-पातनका समरः-जयपुरसेनाके कृतघ्नतासूत्रसे राठौरोंका पराजय.-कछवाह-कविकी कविता,-विजयसिंहका सन्धिबंधन प्रस्ताव.-मारवाडसामन्तोंका उसमें असम्मतिज्ञापन और मारवाडेश्वरद्वारा महा समरायोजन.-कृष्णगढके राठौर सामन्तकी कृतघ्नता महाराष्ट्रियोंके द्वारा मारवाडआक्रमण.-आहोया और आसोपके सामन्तोंकी "जीतेंगे वा प्राण देंगे" ऐसी प्रतिज्ञा.-मेरताके मैदानमें राठौरसेनाका शिविरस्थापन.-महाराष्ट्रसेनाका ,विनाश शुभअवसरका परित्याग -सामन्तमंडली-द्वारा शासनविभागीय राजमंत्रिका शोचनीय फलदायक आदेशपालन -सेनाका शिविर छोडकर भागना -राठौरोंकी वीरता.-उनका नाश -सिङ्ग्ह सम्प्रदायकी कृतघ्नता,-प्रधान मंत्रीका विषपानसे प्राणत्याग -[illegible] साथ रक्षणपालन सन्धिबन्धनसे राजपूतजातिका मनोभाव -[illegible] -[illegible].-[illegible] होकर गमन.-शीतकोट अर्थात मरुक्षेत्र [illegible] -[illegible] यानाका मरुप्रान्तर -[illegible] -[illegible] विवरण -[illegible] न्दिर.-अलनिवास.-रिया -पहाड़ी मार्ग[illegible] -[illegible] द्वारा [illegible] आक्रमण और सामन्तनिधन -गोविन्दगढ.-[illegible] विवरण-तन्मूलकजनश्रुति-(अजमेर) [illegible] वा अजमेरके [illegible] -[illegible] निर्मित [illegible] [illegible].-अजमेर -[illegible] ।

महाराष्ट्र दस्युदलके नेता [illegible] सेंधियाके [illegible] उनके कुटुम्बी माधोजी सेंधिया उस [illegible] सर्व सम्मतिसे [illegible] हुए। माधोजी बडे तेजस्वी पुरुष थे राठौर राजपूतोंके साथ युद्ध करनेमें उनके मनमें भलीभांति निश्चय होगया था कि "[illegible] राजपूत [illegible] नहीं [illegible] । [illegible] गोहियोंको [illegible] [illegible] ही [illegible]

अज्ञात नहीं है, किन्तु मेरा विश्वास यही है कि उनकी यह भविष्यद्वाणी कभी सफल न होगी। *

२८ वीं नवम्बर—उस दिन पांच कोसकी दूरीपर झारोनामक स्थानमें डेरा डालागया। मरता छोडनेके पीछे जिस रणक्षेत्रमें चार सहस्र राठौरवीर जन्मभूमि और स्वाधीनताके लिये बडी वीरताके साथ प्राण न्योछावर करके इतिहासमें अपनी जातिका नाम अक्षय करगये हैं, उनकी उस पवित्र लीलाभूमिको देखते हुए आगे बढे। हम जिस मार्गमें चलरहे थे, यदि उसी मार्गमें चलेजाते तो सीधे दिल्ली पहुंच जाते, इस कारण उस मार्गको छोडकर फिर आरावल्लीको पार किया और अजमेर पहुंचनेके लिये पूर्वप्रान्तके दक्षिणांशमें होकर जलने लगे। मार्ग श्रेष्ठ और मट्टी उत्तम है। यद्यपि ग्रामोंके निकट कृषि-कार्य्यके चिह्न दिखाई देतेहैं, किन्तु गिरिहुई भूमिकी संख्या अधिक है; बल-वृन्द भी दिखाई देतेहैं। बहुत दूरीपर आरावल्लीकी आकाशभेदी चोटी क्रम २ से दक्षिण पूर्वमें हमारे नेत्रोंसे छिपगई और बीच २ में बहुत ऊंचे २ भूखण्ड दृष्टिको रोकने लगे।

दृढ प्रतिज्ञ होउठे। वीर श्रेष्ठ प्रतापसिंहने अपना प्रताप दिखानेके लिये जब महाराष्ट्रियोंकी आधीनता अस्वीकार करी, तब माधोजी सेंधिया संहारमूर्ति धारण करके अम्बेर अधिकार करनेके लिये आगे बढ़े। हम इस बातको ऊपर ही लिखचुकेहैं कि मारवाडेश्वर विजयसिंह भी घोर विपत्तिमें घिरे होनेके कारण अनिच्छासे ही माधोजीके साथ संधि करके मूल्यवान अजमेर प्रदेश और त्रैवार्षिक करदानद्वारा महाराष्ट्रियोंकी अधीनता रूपी शृंखल अपने गलेमें डालनेको बाध्य हुए थे। प्रतापसिंहने देखा कि विजातीय शत्रुदल केवल अम्बेर ही का नहीं मारवाडका भी भयंकर शत्रु है, इस कारण उन्होने शीघ्र ही उन राजपूत जातिके महाराष्ट्रियोंके समूल नष्ट कर देनेकी इच्छासे राठौर लोगोंको युद्धमें सम्मिलित होनेके लिये बुलाभेजा। जातीय एकता फिर पूर्ण रूपसे प्रगट हुई। शुभ अवसर जानकर अजमेर प्राप्तिकी फिर आशासे विजयसिंहने अम्बेरेश्वरकी सहायताके लिये तत्काल राठौर सेना भेजदी। यद्यपि जयपुरपति ईश्वरी सिंहने घोर विपत्तिके समय भी विजयसिंहकी सहायता नहीं की थी, किन्तु पिशाचवृत्तिसे बक्तासिंहको मरवाकर विजयसिंहने भी प्राण लेनेका उद्योग किया था, और इसी कारणसे दोनों राज्योंमें विषम विद्वेषाग्नि बढ़गई थी, तथा दोनों राज्येश्वर एक दूसरेको प्रबल शत्रु समझते थे, किन्तु इस राजपूत जातिगत युद्धमें—सबके लक्ष्यस्थल—और सबके शत्रु महाराष्ट्रियोंके मथन करनेके लिये उस शत्रुताको भूलकर विजयसिंहने परम साहसी, महाबली, राजभक्त सिंहके सामन्त जवानसिंहको सबसे श्रेष्ठ राठौर सेनाके साथ युद्धमें भेज दिया। तङ्गानामक स्थानमें रणोन्मत्त दोनों पक्षके सैनिकोंका साक्षात हुआ (जो "लालसन्तका समर" इस नामसे विख्यात है)। उसी समय सिरदार इसमाइलबेग और हामदानीनामक दो मुसलमानपति दुर्द्धर्ष साहसी राठौरोंके साथ आकर मिलगये। शीघ्र ही भयानक युद्धाग्नि प्रज्वलित होउठी, राठौर सेनाने प्रबल पराक्रम और महा वीरताके साथ शत्रुओंको विध्वस्त करदिया। सिं

[illegible]

एक एक स्थानका दृश्य ढका रहा। उस विचित्र दृश्यके ऊपर जितना २ प्रकाश गिरने लगा, यह "चित्राम" उतना २ ही बदलता हुआ दिखाई देने लगा। सबसे पहिले गंभीर धुएँका परकोटा दिखाई दिया, फिर महल दुर्ग, ऊंची चोटियें आदि रूपसे दिखाई दिया, अब वही सहस्र खण्डोंमें विभक्त अति सूक्ष्म तथा विराटकाय रंगे हुए काचकी समान आकृतियुक्त होगया— क्रमसे वह समस्त रमणीक महल, दुर्ग ऊंची चोटी आदि मानों गलीहुई धातुकी समान शून्य हृदयमें विलीन होगये।

बहुत दिनतक मेरी यही धारणा थी कि इस प्रदेशकी मृत्तिकाके गुणसे ही यह नैसर्गिक दृश्य दिखाई देतेहैं, विशेष करके यह "चित्राम" केवल सज्जी अर्थात् क्षार युक्त इस भूमिमें देखा जाताहै। किन्तु इसके अनन्तर मैंने इस प्रदेशके सब स्थानोंमें इस प्रकारके दृश्य देखे। इस प्रदेशकी मट्टी लवण मिली हुई है, इस कारण उसके द्वारा इस प्रकारके दृश्य उत्पन्न होनेकी संभावना है। किन्तु "सिराब" वा "चित्राम" वा "शीतकोट" वा "देशासुर" दृश्योंमें यह भेद है कि "देशासुर" केवल शीतकालके सिवाय और कभी दिखाई नहीं देता। मैंने सबसे पहले जयपुरमें इस दृश्यको देखा था, बृटिश साम्राज्यके किसी स्थानमें भी मैंने इसको नहीं देखा। जयपुरमें यह पहिले बड़े ऊंचे चौड़े दुर्ग प्राकार वेष्टित और बुर्ज युक्त नगरकी समान हमारे दृष्टिगोचर हुआ। पथ प्रदर्शकने इसको "शीतकोट" कहकर परिचय दिया। किन्तु हमने सहसा उसके वचनमें विश्वास नहीं किया। मैंने इस जीवनमें फिर एक बार इस प्रकारके विचित्र चित्तहारी दृश्यको देखा किन्तु यह दृश्य अतुलनीय है।

राठौर राज्यमें समाचार आया कि; माधोजी सेंधिया बडी भारी सेना लेकर रजवाडा आक्रमण करनेके लिये वडे घमंडसे आ रहे हैं। चिर वीर व्रताव-लम्वी राठौर जाति इस समाचारको सुनकर कुछ भी भयभीत न हुई, वरन दुवारा अपने वाहुवल वीरत्व दिखाने–और अपनी जातिके प्रवल शत्रुदलके मथनेका विशेष सुवीता जानकर आनन्दसे उन्मत्त होगये। मारवाडेश्वर विज-यसिंह विलक्षण राजनीति कुशल थे; उन्होंने विचारा कि महाराष्ट्रियोंको अपने राज्यके भीतर न घुसाकर राज्यके वाहर ही युद्धाग्नि प्रज्वलित करना उचित है। शीघ्र ही जयपुर पतिके पास समाचार भेजागया। अम्वेर और राज-पूतसेनाने दुवारा अपने आकाशभेदी शब्द द्वारा पृथिवीको कम्पित करके अपने२ प्रदेशोंसे युद्धकी ओर प्रस्थान किया। जयपुर राज्यकी उत्तर सीमान्तके पातन नामक नगरमें (तुवारावती) राठौर और जयपुरकी सेना परस्पर मिलकर वडी वीरताके साथ आगे वढनेलगी। उस समय पर राठौर कविकुलने जिन सामरिक संगीतोंसे सेनाको उत्तेजित करदिया था. वह सब संगीत मारवाडमें अवतक सुनाई देतेहैं।

यद्यपि एकताका अमृतमय हार धारणकरनेसे राठौर और जयपुरके सैनिक एक मनुष्यकी समान शत्रुओंके विरुद्ध खडेहुए थे. यद्यपि जातीय गौरव–जातीय सन्मान–जातीय स्वाधीनता और जन्मभूमिके [illegible] सामरिक संगी-तोंने सबहीके हृदय प्रवल उत्साहसे भरदिये थे किन्तु एक सामान्य कारणसे मारवाडके अल्पवयस्क एक कविके एक संगीतने [illegible] राठौर [illegible]-रूपसे तोडदी। तङ्गाके युद्धमें राठौर लोग [illegible] भारी वीरता दिखाकर जयलक्ष्मीका आलिङ्गन प्राप्त करनेमें [illegible] जयपुरके सैनिक [illegible] वीरता नहीं दिखासके थे। इस कारण उक्त मारवाडवासी कविने [illegible] व्यंजक एक संगीत रचना किया। [illegible] संगीत राठौर सेनादलमें गाया [illegible] सैनिकोंने [illegible] समझा। उस संगीतका [illegible]–

"[illegible]"

इसका अर्थ यह है कि [illegible] सेनादलकी रक्षा करी थी। [illegible] तो कहना होगा कि इस संगीतने ही [illegible]

[illegible]

जोड खडी है। यह स्त्री अपने स्वामीके शवके साथ चितामें भस्मीभूत होकर स्वर्गलोकको सिधारी थीं। उस मन्दिरकी दीवापर यह खुदाहै– "१६८९ संवतके (सन् १६३३ ईस्वी) माघकी द्वितीयाको महाराज जशवन्तसिंहने शत्रु (औरङ्गजेब) की सेनाको आक्रमण किया था; उसी समय मेरतीय सम्प्रदायके ठाकुर हरकर्णदास मारे गये थे। उन्हींके स्मरणार्थ संवत १६९७ के माघ मासमें यह स्मारक मन्दिर बनाया गयाहै।"

२९ वीं नवम्बर।–पाँचकोशकी दूरीपर अलनिवासमें डेरा डालागया। मार्गके अर्धबिचमें रियानगर विराजमान है। मेरतीय सम्प्रदायके जिन सर्वप्रधान नेताका विषय हमने कई जगह लिखाहै यह रियाही उन सामन्तकी निवासभूमि है। नगर बडा है, निवासियोंकी संख्या भी अधिक है, नगरके चारोंओर दृढ पत्थरका परकोटा है, उक्त पत्थरको यहांके लोग मसूर कहते है, रियाके वर्त्तमान सामन्तका नाम बदनसिंह है। मारवाडके सर्व श्रेष्ठ आठ सामन्तोंमें यही एक प्रधान हैं। नगर अब भी "शेरसिंहकारिया" इस नामसे पुकारा जाता है। पाठकोंको याद होगा कि, महावीर शेरसिंहने अपने अधीश्वर रामसिंहकी ओरसे वक्तसिंहके विरुद्ध युद्ध करके अपने प्राण न्योछावर किये थे। नगर ऊंची भूमिके ऊपर स्थापित है, इसके ऊपरसे पर्वतमालाके सन्मुखवाले प्रदेशोंका रमणीक दृश्य दिखाई देताहै। नगरसे आरंभ करके सीमान्ततक ऊंची चोटीके पर्वततक बडे २ समृद्धिशाली ग्राम बसे हुए हैं। स्थान २ मे इस प्रदेशके असाधारण बेल बूंटे दिखाई देतेहैं।

आरावली पर्वतवासी दुर्दान्त चरित्र मार्हारलोग कैसे अत्याचारी और क्रूर साहसी हैं, मैंने यहांके बने एक समाधिमन्दिरकी दीवारपर खुदेहुए लेखद्वारा इस बातका विलक्षण प्रमाण पाया। उस लेखकी नकल यह है,– "संवत् १८३६ के (सन् १७७९ ईस्वी) माघकृष्ण तृतीया सोमवारके दिन मार्हारलोगोंके आक्रमणसे नगर रक्षाके लिये भूपालसिंहने युद्ध किया था, ... अपनी स्त्रीकी सतीत्व रक्षा करनेके लिये उसका सिर अपने हाथसे काटकर ... भूमिमें जतन करगये थे।" ... पचासवर्ष पहिले मार्हारजाति इधरके ... निरङ्कुश्य और दुर्दान्त थी, उससे आगे इनके अत्याचार घटतेही गये। ... इस प्रान्तमें जो राठौर सामन्तोंके ग्राम हैं, उनमें एक सामन्त ...

अम्बेरीय सेनाने यद्यपि स्वजातिके उस अपमानका वदला लेनेके लिये इस युद्धमें राजपूत जातिके साथ वैसा अनुचित व्यवहार किया और यद्यपि उक्त संगीतकी रचनासे मनोरथ सफल भी समझ लिया था, किन्तु यथा समयपर उनको इसका प्रतिफल भोगना पडा था, पातनके युद्धमें दोनों जातियोंके बीचमें जो शत्रुताकी आग प्रज्वलित हुई थी, आजतक उन दोनों जातियोंके हृदयमें वह वैसी ही जल रहीहै। हम निःसंदेह यह कह सकते हैं कि आपसका विरोध और जघन्य आचरण ही राजवाडेका अनिष्ट साधन कररहे हैं।

पातनके युद्धके उस शोचनीय पराजयका समाचार और जयपुरी सेनाकी अत्यन्त कृतघ्नताका संवाद जिस समय जोधपुर राजधानीमें विजय सिंहके कर्णगोचर हुआ, उस समय उनके मनमें जिस भावका उदय हुआ था, पाठक मण्डली उसका भलीभाँति अनुमान कर सकती है। विजयसिंह क्षुभित हृदयसे सब सामन्तोंको सभामण्डपमें एकत्रित करके परामर्श करने लगे। बीकानेर और रूप नगरके स्वाधीन नृपति भी इसमें परामर्शके लिये बुलाये गये थे। "जातीय स्वाधीनता विपत्तिके मुखमें गिरी हुई है, इस प्रश्नकी मीमांसा करनेमें सम्पूर्ण सामन्त राठौर मात्र आकर उपस्थित हुए। बहुत सी बातें होनेके पीछे विजय सिंहने कहा कि "इस समय जैसी विपत्तिका सामना है, अम्बेरी सेनाने जैसी कृतघ्नता दिखाई है, शत्रुओंने नई सेनाकी प्राप्तिसे जैसी शक्ति प्राप्त कीहै, विजय प्राप्त करके शत्रुलोग जैसे उत्तेजित हो रहे हैं इन सब बातोंके विचारनेसे मैं यह उचित समझता हूं कि शत्रुओंके वदले माधाजीके साथ पहिले जो संधिबन्धन हुआ था उसका पालन करके जयआप्पाकी हत्याके वदलेमें जो कर देना निश्चित हुआ था, वह देना उचित है तथा जो अजमेर राज्य हमने अपने बाहुबल द्वारा शत्रुओंके हाथसे निकाल लिया था, वह फिर महाराष्ट्रियोंके हाथमें सौंप देना चाहिये।" राठौर जातिके अपमान सूचक इस प्रस्तावसे साहसी सामन्त मण्डलीने उत्तेजित होकर एक स्वरसे कहा. "शत्रुओंके चरणोंपर इस प्रकार गिरनेसे पहिले फिर एक वेर युद्धस्थलमें जातीय गौरवार्जन. जातीय कलंक मोचन और स्वाधीनताके रक्षा करनेकी पूरी चेष्टा करनी उचित है।" वीर सामन्तमण्डलीके उस उत्तेजनामय वक्तृतामें सबको एक मन देखकर विजयसिंहने भी इस बातको स्वीकार कर लिया। शीघ्रही मारवाडके प्रत्येक प्रान्तमें विजयसिंहके नामसे घोषणापत्र प्रचारित करके जातीय स्वाधीनताकी [illegible] होनेके लिये [illegible] युद्ध

जोडे खडी है। यह स्त्री अपने स्वामीके शवके साथ चितामें भस्मीभूत होकर स्वर्गलोकको सिधारी थीं। उस मन्दिरकी दीवापर यह खुदाहै— "१६८९ संवतके (सन् १६३३ ईस्वी) माघकी द्वितीयाको महाराज जशवन्तसिंहने शत्रु (औरङ्गजेब) की सेनाको आक्रमण किया था; उसी समय मैरतीय सम्प्रदायके ठाकुर हरकर्णदास मारे गये थे। उन्हींके स्मरणार्थ संवत १६९७ के माघ मासमें यह स्मारक मन्दिर बनाया गयाहै।"

२९ वीं नवम्बर।—पाँचकोशकी दूरीपर अलनिवासमें डेरा डालागया। मार्गके अर्थबिचमें रियानगर विराजमान है। मैरतीय सम्प्रदायके जिन सर्व-प्रधान नेताका विषय हमने कई जगह लिखाहै यह रियाही उन सामन्तकी निवासभूमि है। नगर बडा है, निवासियोंकी संख्या भी अधिक है, नगरके चारोंओर दृढ पत्थरका परकोटा है. उक्त पत्थरको यहांके लोग मसूर कहते हैं, रियाके वर्त्तमान सामन्तका नाम बदनसिंह है। मारवाडके सर्व श्रेष्ठ आठ सामन्तोंमें यही एक प्रधान हैं। नगर अब भी "शेरसिंहकारिया" इस नामसे पुकारा जाता है। पाठकोंको याद होगा कि, महावीर शेरसिंहने अपने अधीश्वर रामसिंहकी ओरसे बख्तसिंहके विरुद्ध युद्ध करके अपने प्राण न्योछावर किये थे। नगर ऊंची भूमिके ऊपर स्थापित है, इसके ऊपरसे पर्वतमालाके सन्मुखवाले प्रदेशोंका रमणीक दृश्य दिखाई देताहै। नगरसे आरंभ करके सीमान्ततक ऊंची चोटीके पर्वततक बडे २ समृद्धिशाली ग्राम बसे हुए हैं। बीच २ में इस प्रदेशके असाधारण बेल बूंटे दिखाई देतेहैं।

आसपासकी पर्वतवासी दुर्दान्त चरित्र मारिहल्लोग करते अत्याचारी और दुर्दान्त [illegible] है. मैंने यहांके बने एक समाधिमन्दिरकी दीवारपर खुदेहुए लेखद्वारा इस बातका विलक्षण प्रमाण पाया। उस लेखकी नकल यह है— "संवत १८३० के (सन् १७७४ ईस्वी) माघकृष्ण तृतीया सोमवारके दिन मारिहल्लोगोंके आक्रमणसे नगर रक्षाके लिये भूपालसिंहने युद्ध किया था, [illegible] भार्याने सतीत्व रक्षा करनेके लिये उसका शिर अपने हाथसे काटकर [illegible] जलन करगये थे।" * पहलेसमय पहिले मारिहजाति अर्थात् [illegible] निकृष्ट और दुर्दान्त थी, उससे आगे इनके अत्याचार बढतेही गये।

* [illegible] दोनों प्रान्तमें जो सर्दार सामन्तोंके ग्राम हैं, उनमें एक सामन्त [illegible]

अम्बेरीय सेनाने यद्यपि स्वजातिके उस अपमानका बदला लेनेके लिये इस युद्धमें राजपूत जातिके साथ वैसा अनुचित व्यवहार किया और यद्यपि उक्त संगीतकी रचनासे मनोरथ सफल भी समझ लिया था, किन्तु यथा समयपर उनको इसका प्रतिफल भोगना पडा था, पातनके युद्धमें दोनों जातियोंके बीचमें जो शत्रुताकी आग प्रज्वलित हुई थी, आजतक उन दोनों जातियोंके हृदयमें वह वैसी ही जल रहीहै। हम निःसंदेह यह कह सकते हैं कि आपसका विरोध और जघन्य आचरण ही राजवाडेका अनिष्ट साधन कररहे हैं।

पातनके युद्धके उस शोचनीय पराजयका समाचार और जयपुरी सेनाकी अत्यन्त कृतघ्नताका संवाद जिस समय जोधपुर राजधानीमें विजय सिंहके कर्णगोचर हुआ, उस समय उनके मनमें जिस भावका उदय हुआ था, पाठक मण्डली उसका भलीभाँति अनुमान कर सकती है। विजयसिंह क्षुभित हृदयसे सब सामन्तोंको सभामण्डपमें एकत्रित करके परामर्श करने लगे। बीकानेर और रूप नगरके स्वाधीन नृपति भी इसमें परामर्शके लिये बुलाये गये थे। "जातीय स्वाधीनता विपत्तिके मुखमें गिरी हुई है, इस प्रश्नकी मीमांसा करनेमें सम्पूर्ण सामन्त राठौर मात्र आकर उपस्थित हुए। बहुत सी बातें होनेके पीछे विजय सिंहने कहा कि "इस समय जैसी विपत्तिका सामना है, अम्बेरी सेनाने जैसी कृतघ्नता दिखाई है, शत्रुओंने नई सेनाकी प्राप्तिसे जैसी शक्ति प्राप्त कीहै, विजय प्राप्त करके शत्रुलोग जैसे उत्तेजित हो रहे हैं इन सब बातोंके विचारनेसे मैं यह उचित समझता हूं कि शत्रुताके बदले माधोजीके साथ पहिले जो संधिबन्धन हुआ था उसका पालन करके जयआप्पाकी हत्याके बदलेमें जो कर देना निश्चित हुआ था, वह देना उचित है तथा जो अजमेर राज्य हमने अपने बाहुबल द्वारा शत्रुओंके गालमें निकाल लिया था, वह फिर महाराष्ट्रियोंके हाथमें सौंप देना चाहिये।" राठौर जातिके अपमान सूचक इस प्रस्तावसे साहसी सामन्त मण्डलीने उत्तेजित होकर एक स्वरसे कहा. "शत्रुओंके चरणोंपर इस प्रकार गिरनेसे पहिले फिर एक बेर युद्धस्थलमें जातीय गौरवार्जन. जातीय कलंकापनोदन और स्वाधीनताके रक्षा करनेकी पूरी चेष्टा करनी उचित है।" वीर सामन्तमण्डलीकी उस उग्रतेजोमय वक्तामें सबको एक मन देखकर विजयसिंहने भी इस बातको स्वीकार कर लिया। शीघ्रही मारवाडके प्रत्येक प्रान्तमें विजयसिंहके नामसे घोषणापत्र प्रचारित करके जातीय महासंग्राममें सम्मिलित होनेके लिये सेनाको युद्ध

प्रगट हुई, अपने आसनपर अन्य स्त्रीको बैठा देख महाक्रोधके साथ रत्नगिरिपर जाकर अदृश्य होगई। जिस स्थानसे सावित्री अंतर्द्धान हुई थी अकस्मात् उस स्थानपर एक झरना उत्पन्न होगया। वह इस समय "सावित्री झरना" इस नामसे विख्यात है। इस झरनेके निकट ही सावित्री देवीका मन्दिर विराजमान है। पुष्कर तीर्थ यह एक सामान्य दृश्य नहीं है।

पुष्कर सरोवरके पास जो बहुत ऊंचा रेतका स्तूप दिखाई देता है, उसके विषयमें ऐसी जनश्रुति है कि, यज्ञस्थलमें देवदेव महादेव प्रज्वलित आहुति दान करके धतूरा पीनेके कारण अग्निका विना निवारण किये विह्वल चित्तसे अपने स्थानको चलेगये। धीरे २ अग्नि भयंकर रूप धारण करके संसारके जलानेको उद्यत हुई। तब ब्रह्माजीने वहां आकर वालुकाद्वारा अग्निको बिलकुल बुझा दिया। इस कारणसे ही उपत्यकाके मूलमें वालुका पर्वत उत्पन्न हुआ है।

एक और जनश्रुति है कि, कलियुगमें मंदोरके एक राजा शिकार खेलते हुए वहां आपहुंचे; इस सावित्री झरनेमें स्नान करनेसे उनका एक असाध्य रोग दूर होगया। महाराजने जाते समय मार्गकी पहिचानके लिये अपनी पगडी एक वृक्षकी शाखामें बांध दी। वह अपने राज्यसे बहुतसे मनुष्योंको साथ लेकर वहां फिर आये और उनके द्वारा उक्त सरोवर खुदवाया। यहांके ब्राह्मण लोगोंने मुझसे कहाकि "हमारे पूर्वपुरुषोंने उक्त पुरीहर राजाके निकटसे पुष्करतीर्थकी उन्नति साधनके बहुतसे अनुशासनपत्र प्राप्त किये थे। किन्तु मैंने केवल एक ताम्रानुशासन लिपिका फारसी भाषामें अनुवाद पाया। अनेक समयपर अनेक प्रान्तके अधीश्वरोंने देवलों और धर्मशालाओंके व्यय निर्वाहार्थ जितने अनुशासनपत्र दिये हैं; मुझको उनमेंसे बहुतसे अनुशासन पत्रोंकी नकल मिली।

अम्बेरीय सेनाने युद्ध के उस अपमानका बदला लेनेके लिये इस युद्धमें राजपूत उ वैसा अनुचित व्यवहार किया और यद्यपि उक्त संगीतकी रचना सफल भी समझ लिया था, किन्तु यथा समयपर उनको इसका [illegible]गना पडा था, पातनके युद्धमें दोनों जातियोंके बीचमें जो शत्रुताकी [illegible]लित हुई थी, आजतक उन दोनों जातियोंके हृदयमें वह वैसी है। हम निःसंदेह यह कह सकते हैं कि आपसका विरोध और जघन्य ही राजवाडेका अनिष्ट साधन कररहे हैं।

[illegible] शोचनीय पराजयका समाचार और जयपुरी सेनाकी [illegible]घ्नताका संवाद जिस समय जोधपुर राजधानीमें विजय सिंहके कर्ण-[illegible], उस समय उनके मनमें जिस भावका उदय हुआ था, पाठक [illegible]सका भलीभाँति अनुमान कर सकती है। विजयसिंह क्षुभित हृदयसे [illegible]न्तोंको सभामण्डपमें एकत्रित करके परामर्श करने लगे। बीकानेर और नगरके स्वाधीन नृपति भी इसमें परामर्शके लिये बुलाये गये थे। "जातीय [illegible]ीनता विपत्तिके मुखमें गिरी हुई है, इस प्रश्नकी मीमांसा करनेमें सम्पूर्ण [illegible]न्त राठौर मात्र आकर उपस्थित हुए। बहुत सी बातें होनेके पीछे वि[illegible]ने कहा कि "इस समय जैसी विपत्तिका सामना है, अम्बेरी सेन कृतघ्नता दिखाई है, शत्रुओंने नई सेनाकी प्राप्तिसे जैसी शक्ति प्राप्त विजय प्राप्त करके शत्रुलोग जैसे उत्तेजित हो रहे हैं इन सब बा[illegible]चारनेसे मैं यह उचित समझता हूं कि शत्रुताके बदले माधोजीके सा[illegible] जो संधिबन्धन हुआ था उनका पालन करके जयआप्पाकी हत्याके [illegible] जो कर देना निश्चित हुआ था, वह देना उचित है तथा जो अजमेर रा[illegible]ने अपने बाहुबल द्वारा शत्रुओंके गालसे निकाल लिया था, वह फिर [illegible]ष्ट्रियोंके हाथमें सौंप देना चाहिये।" राठौर जातिके अपमान सूचक [illegible]स्तावसे साहसी सामन्त मण्डलीने उत्तेजित होकर एक स्वरसे कहा. "श[illegible]के चरणोंपर इस प्रकार गिरनेसे पहिले फिर एक बेर युद्धस्थलमें जातीय [illegible]ौर्जन. जातीय कलंकापनोदन और स्वाधीनताके रक्षा करनेकी पूरी चेष्टा [illegible]नी उचित है।" [illegible] सामन्तमण्डलीकी उस उग्रतेजोमय [illegible]कतामें सबके एक मत देखकर विजयसिंहने भी इस बातको स्वीकार कर लिया। शीघ्र मारवाडके प्रत्येक प्रान्तमें विजयसिंहके नामसे घोषणापत्र प्रचारित करके जातीय महासंग्राममें सम्मिलित होनेके लिये सेनाकी युद्ध

बहुतसे चिह्न देदीप्यमान हैं। सिंधु नदीके तटपर सिवयानका दुर्ग अलवरकी गुफा और आबू शिखर तथा काशीमें उनके योग साधनके स्थान अबतक विराजमानहैं। यदि ऐसा स्वीकार करलियाजाय कि वास्तवमें वह भारतवर्षके इन सब दूर २ देशोंमें गये थे, तो उनको एक दीर्घजीवीप्रधान संन्यासी कहना उचितहै। विक्रमादित्य और भर्तृहरि प्रमारजातिके थे। कवियोंकी कवितासे प्रगटहै कि "सम्पूर्ण संसार प्रमार राजवंशाधीन" था। यह नागपहाड वा सर्पगिरि अत्यन्त रमणीक और पवित्र दृश्ययुक्त है। सुनते हैं कि सदासे बहुतसे ऋषि, मुनि, यती, संन्यासी इस पर्वतगुफामें आश्रय लेकर योग साधन किया करते थे। ब्राह्मण उन सब पवित्र गुफाओंको यात्रियोंको भलीभांति दिखाते हैं। वह सम्पूर्ण आश्रम इस समय नयनानन्ददायक कानन और निर्झरमालासे सुशोभित है। जिन अगस्त्यमुनिने समुद्र पान किया था, एक झरना उनके नामका भी इस सर्पगिरिपर विद्यमान है।

२ री दिगम्बर।—पुष्करसे अजमेर तीन कोशकी दूरीपर है। हम पुष्कर छोडकर उपत्यकाकी ओर आगे बढे शिखरपर चढनेके समय देखा कि, आकाशभेदी दोनों पर्वत पीतवर्ण आंवलेसे शोभित होकर खडेहैं। इस आंवलेके देखनेसे यह ज्ञात होताहै कि, शिखर हमारी इस आरावल्लीका अंशमात्र है। हम जितना २ शिखरके ऊपर चढते जाते थे उपरोक्त वालुकाशिखर उतना २ ही छोटा होता जाता था। एक छोटी नदी उपत्यकासे बहकर घूमती हुई चली गई है। सहसा हमारे उत्तरकी ओरसे पूर्वप्रान्तके मार्गमें चरण रखते ही शिखरमालाके एक ओरसे "थारबल्लेश्वर" दृश्य दृष्टिगोचर हुआ। यह दृश्य जैसा रमणीक है, वैसा ही विचित्र है हमारे निकटस्थानमें स्थित उस कानननसे विराजआ शिलालेखका खुदाया हुआ बडे सरोवरसे शोभित यह शिवमन्दिर अनिर्वचनीय है। निकट ही एक बहुत ऊंचे पर्वतके ऊपर अजयपालका निर्मित दुर्ग भी नेत्रोंको बहुत आनन्द देताहै। इस पर्वतपर बानरोंके समूह और इनसे अधिक पत्थर देखे जातेहैं।

उसीके दर्शनोंके देखते हुए सन्ध्याके समय अजमेर नगरके भीतर पहुंचे। यहां [illegible] एक समय राजधानी था, किन्तु इसके इतिहास [illegible]

मन २ में कहने लगे कि "महाराष्ट्रलोग अवश्य ही इस युद्धमें विजय प्राप्त करेंगे, इस कारण उनके अत्याचारसे अपनी राज्यरक्षाके लिये विशेष उपाय अवलम्बन करना उचित है।" बहुत सी बातें सोचनेके पीछे बीकानेरके स्वामीने सेनासहित अपने राज्यकी ओर प्रस्थान किया। प्रभात होनेके एक घंटे पहिले ही रणकुशल डिवाइनने राठौर वीरोंको असावधान जानकर अपनी गोलन्दाज सेनासहित भयानक वेगसे आक्रमण किया। उस अकस्मात् आक्रमण और गोलोंके भयङ्कर शब्दोंसे जागकर राठौर भयभीत होगये और उसी दशामें छिन्न भिन्न होकर भागने लगे। सबसे पहिले प्यादे और गोलन्दाज दल शिविर छोडकर मैरताकी ओर भागे। उसके पीछे गङ्गारामविन्दारी और भीमराजसिंगुई महाविपत्ति देखकर प्राणोंके भयसे भाग गये। अहोया और आसोपके दोनों सामन्तोंने शिविरके बहुत दूरवर्ती स्थानमें अपना डेरा डाला था; इस अकस्मात् आक्रमण और अपने पक्षके वीरोंके भागनेका समाचार शीघ्र उनको मिला।

आसोपके सामन्त बहुत अफीम खाते थे; जिस समय यह समाचार वहां पहुंचा उस समय वह अफीमके प्रतापसे गाढी नींदमें शयन कर रहे थे। अहोयाके सामन्तने बडी कठिनाईसे उनको जगाया और शोकके साथ कहा कि, "भाई! शिविरके सबलोग भागगये, केवल हम और तुम अकेले रहगये हैं!" निद्रासे उठे हुए वीरने अभिमानके साथ उत्तर दिया कि, "भय क्याहै? चलो घोडे पर सवार होकर चलें।" दोनों वीरोंने रणभेरी बजाई और अपनी सेनाको लेकर बाहर निकले। बाईस सामन्तोंने एक साथ अफीम मिला हुआ जल पीलिया। डिवाइनके आक्रमणसे केवल प्यादे और गोलन्दाज लोग ही कायर पुरुषोंकी समान युद्धस्थलसे भागगये थे. किन्तु उस समयतक अन्यान्य सामन्तमण्डली युद्धस्थलमें ही थी। अहोया और आसोपके सामन्तोंकी सेनाको रणसज्जित देखकर वह भी अपनी २ सेनाको सजाने लगे। सबसे पहिले साहसी श्रेष्ठ भैरतीय दलके नेता रियाके सामंत और अलनियास, इंगोया, चानोद तथा गोविन्दगढके सामन्त एकत्रित हुए। सब चार सहस्र साहसी राठौर एकत्रित हुए. तब रियाके सामन्तने सबको पुकारकर कहा कि, "भ्रातृगण हम कहां जांय?–इस स्थानमें कोई ऐसा राठौर है, जो इससे अधिक अपना कोई प्रियपात्र इस संसारमें रखता हो? यदि कोई इससे स्त्री पुत्रको अधिक समझता हो तो वह अभी यहांसे चलाजाय।" इस बातको सुनकर सब ही मौन होगये। थोडी देरमें सब राठौरोंने अपने मस्तक पर हाथ रक्खा. तब रियाके सामन्तने

इकतीसवां अध्याय ३१.



अजमेर:–प्राचीनजैनमन्दिर:–अजमेरदुर्ग:–विशालसरोवर:–अन्नासागर:–चौहान राजगणके स्मृतिचिह्न:–अजमेर परित्याग: बुनाई उसका दुर्गप्रासाद:–देवडा:–देवला:–बाणेरा:–राजाभीम:–उनका वंश:–उनके अधिकृत प्रदेश:–दुर्गप्रासादमें गमन:–भीलवारा:–वणिकोंके साथ साक्षात्;–नगरकी श्री वृद्धि:–मंडल:–वहांका सरोवर;–आर्य्य–पुर:–दरबार:–पुरवतोंका विभक्त प्रदेश;–पुरका प्राचीन इतिहास;–मेवाडके राजकुमार:–रश्मि वा रश्मि:–मेवाडके किसानोंद्वारा सम्वर्द्धना:–सुहेलिया:–बुनाशनदी;–मेरता:–बारीश नदीका उत्पत्तिस्थान दर्शन:–उदयसागर:–उपत्यकामें प्रवेश:–उदयपुर:–प्राचीन-आहर:–राणाके पूर्व पुरुषोंका स्मारक मन्दिर:–आहर सम्बन्धी जनश्रुति:–अग्निके उत्पातसे उसकी ध्वंसता प्राप्ति:–प्राचीन ध्वंसावशेष:–रानाके साथसाथ साक्षात:–उदयपुरसे प्रत्यावर्त्तन ।



उठा ले चले। जब यह लोग जा रहे थे, उसी समय प्रधान सामन्तोंकी टटोलमें जाते हुए महाराष्ट्रियोंके कई सैनिक इनको मिलगये, और घायल अहोयाके सामन्तको अनुचरोंसे छीनकर मैरताके प्रधान शिविरमें लेगये।

उसी समय अहोयाके सामन्तकी चिकित्सा करनेके लिये महाराष्ट्रियोंका चिकित्सक आया; साहसी सामन्तने चिकित्सकसे कहा कि "जबतक हमारे अधीनस्थ सब सरदारोंकी चिकित्सा न कीजायगी तबतक मेरी चिकित्सा करनेसे कुछ प्रयोजन सिद्ध न होगा।" साहसी वीरके इस वचनसे महाराष्ट्रियोंका भी हृदय दहल गया, जो कुछ भी हो सहानुभूति प्रकाशक महाराष्ट्री शत्रुओंने सेवा शुश्रूषा करनेमें कोई त्रुटि न की। थोडे दिनोंमें ही सामन्तके सब घाव अच्छे होगये। महाराष्ट्र सेनापतिने उनसे क्षौरकार्य्य और स्नान करनेका अनुरोध किया, सामन्तने उत्तर दिया कि "जबतक मैं अपने प्रभु मारवाडेश्वरका दर्शन न करलूंगा, तबतक इसी दशामें रहूंगा, इस समय मेरी यही प्रार्थना है।" थोडे दिन पीछे राजा विजयसिंह जोधपुर छोडकर राठौरकुल गौरव उन सामन्तकी सम्वर्द्धनाके लिये आये। दोनोंकी मुलाकात होनेपर विजयसिंहने उनके वीरत्व, साहस और स्वदेशानुरागकी बडीभारी प्रशंसा करके उनका कष्ट दूर करदिया। राजाकी प्रसादरूप सन्मानसूचक पोशाक पहरनेसे पहिले सामन्त स्नान करने लगे, दुर्भाग्यसे उनके घावोंमेंसे फिर रक्तकी धारें वहने लगीं और उसीके द्वारा वह प्रशंसनीय वीर इस असार संसारको छोडकर स्वर्ग सिधार गये।

जिस हतभाग्य मंत्री भीमराजने अपनी मूर्खतासे मेरताके युद्धमें यह शोचनीय दृश्य उपस्थित करदिया था वह जब नागरमें पहुँचा तो विजयसिंहने उनको अपमान सूचक पत्र लिखा; अपमानित भीमराजने हलाहल पान करके अपने प्राण छोडदिये। यद्यपि उनके अविचार और कलङ्कसूचक भागनेसे ही राठौरवीर इस युद्धमें पराजित और समूल विध्वंस हुए थे किन्तु सुनते हैं कि प्रधानमंत्री खूबचन्दके दोषसे ही राठौर उस शुभ अवसरपर महाराष्ट्रियोंके समूल नष्ट करनेसे रोके गये थे। खूबचन्द भीमराजकी उन्नतिसे बहुत जलते थे, इस कारण भीमराजके युद्धमें जानेपर प्रधान मंत्रीने सोचा कि 'यदि भीमराज इस युद्धमें महाराष्ट्रियोंको पराजित करके जयमाला धारण करेंगे, तो जयपताका उडाते हुए बडे सन्मानके साथ राजधानीमें प्रविष्ट होंगे, उस समय उनका यश चारोंओर फैल जायगा और मेरा आदर न्यून होजायगा।' यह विचार-

और ऊंची चोटीका महल अबतक विचित्र दृश्य प्रगट कररहा है। उस दुर्गकी चोटी पर इस समय बृटिशपताका फहरारही है।

"विशालतलाव" नामका अजमेरमें एक बहुत बडा सरोवर है। इसकी परिधि चारकोश परिमित है। सुविख्यात विशालदेवने इस विराट जलाशयको बनवाया था। यह जिस प्रकार अजमेर उपत्यकाका परम शोभावर्द्धक है उसी प्रकार लूनी नदीके साथ इसका संयोग होनेसे यह एक विशेष द्रष्टव्य स्थल है। इसके उत्तरके भागमें "दौलतबाग" नामक मनोरम बाग है। दिल्लीपति जहांगीर जिस समय राजपूतोंकी पराजयके लिये आगे बडे उस समय यह बाग निर्म्माण करा-या था। इस बागके जिस मर्म्मर महलमें इंग्लेण्डेश्वर प्रथम जार्जके द्वारा भेजे हुए राजदूत ग्रहण किये गये थे, वह महल इस समय ध्वंस प्राय है और इंग्लेण्डे श्वरके द्वारा उपहारमें दीहुई सवारीपर चढकर दिल्ली-सम्राट जिस मार्गमें वायु सेवन करते थे वह मार्ग भी इस समय लता औषधियोंसे घिरा हुआ है।

उक्त विशाल तलावके आधकोश पूर्वमें अन्नासागर नामका एक दूसरा बडाभारी सरोवर है। सुनते हैं कि विशाल देवके पौत्रने उसको खुदवाकर अपने नामसे विख्यात किया था। विशालदेवके उक्त पौत्र बडे उदार और दाता थे। उन्होंने उस सागरके बीचकी द्वीपाकार भूमिके ऊपर और तटपर बडाभारी महल बनवाया था, उसके द्वारा एक समय उस सागरकी परम रमणीक शोभा थी. किन्तु दुर्द्दान्त पठान उसको विध्वस्त करके सब सामग्री अन्यत्र लेगये। इस सागरके निकटवर्ती शिखरके ऊपर "ख्वाजाकुतब" और अन्यकई मुसलमान पीरोंकी मसजिदें बनीहुई हैं।

भविष्यद्वक्ता ईसायाने उसका उल्लेख करके कहा है कि "विदग्धभूमि नदीमें परिणत होजायगी।" * समालोचकने उसका असली अर्थ यह किया है कि "सिराव असली जलमें परिणत होजायगा।" × सगादियानेकी मरुभूमिकी मृगतृष्णाके विषयमें कुइन्टासकर्टियस लिखगये हैं कि "चार सौ फरलाङ्ग (क) परिमित स्थानमें एक बूंद जल भी दिखाई नहीं देती और ग्रीष्मकालमें यह बालुकाक्षेत्र सूर्य्यकी किरणोंसे इतना गरम होजाता है कि सब पदार्थ दग्धीभूत होजाते हैं। उस समय पृथिवीमेंसे ऐसा धुआं निकलता है कि जिससे वह भूमि गहरे समुद्रकी समान मालूम होने लगती है। भारतीय मरुक्षेत्रके "चित्राम" दृश्यका यही असली वर्णन है। किन्तु सिराव और चित्राम् तथा इसायाके "मरिचिका" "शीतकोट" नामक नैसर्गिक दृश्यसे बिलकुल अलग हैं। यद्यपि यात्रीलोग उस शीतकोट अर्थात् शरत्कालीन महलमें भूलसे रात्रि व्यतीत करनेके लिये जासकतेहैं; किन्तु मैं यह नही समझता कि वह लोग उस दृश्यको देखकर जलपीनेकी इच्छासे वहां जानेकी इच्छा करतेहैं। एक प्रकारसे "शीतकोट" दृश्य ठीक महलकी समान है, इस कारण मरुभूमिके तृष्णातुर लोग वहां क्यों जानेकी इच्छा करेंगे ?

हमने जिस समय इस दृश्यको देखा, उस समय सबसे पहिले एक गहरे धुएँके महलने हमारी दृष्टिको खैंचा, ऐसा मालूम हुआ मानों वह धुएँका महल प्रान्तभागसे उठा हुआ है. क्रम २ से वह धुआं प्रकाशमान और परिवर्तित दृश्यपूर्ण दिखाई देने लगा। क्षेत्रके छोटे २ तिनके बडे २ वृक्षाकार और छोटे २ खैरके वृक्ष मरुभूमिमें उत्पन्न हुए इमली वृक्षकी अपेक्षा दशगुने दिखाई देने लगे। अकस्मात् सूर्य्यकी किरणोंने उस धुएँके महलमें घुसकर रूपान्तर कर दिया और ऐन्द्रजालिकके दण्ड स्पर्शसे मानो, महल, दुर्ग ऊंची चोटियां और वृक्ष एक साथ होगये. केवल बीच २ में रमणीक वृक्षोंके पत्तोंमें

---

* [illegible] ३९, के [illegible] देखो।

× [illegible]

(क) [illegible] ४०० [illegible]

समझते हैं। जुनाईके किसी सामन्तके परलोक सिधारनेपर अभिषेक समय मारवाडेश्वर तिलकदान करते हैं। इस समतल प्रदेशके बीचमें जुनाई दुर्ग-प्रासादका दृश्य परम रमणीय है। आरावलीके पूर्वप्रांतमें जैसे सुंदर तृण उत्पन्न होते हैं, इस प्रदेशमें वह बहुतायतसे होते हैं। पहिले मंदरके पुरीहर राजवंशके एक सामन्त इस प्रदेशके स्वामी थे और अजमेरके चौहान राजको वह कर दिया करते थे। राठोर राजपूतके साथ यहांके आरंभके अधिवासियोंके मिलनेसे पुरीहर मीनानामक एक मिश्रजातिके बहुतसे लोग यहां उत्पन्न हुए थे।

६ दिसंबर।—इस दिन अजमेर और मेवाडके वर्त्तमान सीमान्तमें खारी नदीके पास देवर नामक स्थानमें पहुंचे। अजमेरसे देवर वा देवडा दक्षिणपूर्वकी ओर बीस कोशकी दूरीपर है। सन् १८१८ ईस्वीमें राजपूतानेके बीचमें यह प्रयोजनीय जिला और सीमा तथा मरु प्रदेश संधियाके निकटसे ब्रृटिशगवर्न-मेंटको मिला। यह जिला बहुत बडाहै अर्थात् इसके पूर्व प्रांतमें जुनाश और पश्चिममें आरावलीके बीचमें चालीस कोश परिमित पृथ्वी होगी। देवरसे कृष्णगढराज्यका सीमांत दिखाई देता है। अजमेरकी मृत्तिका वैसी उपजाऊ नहीं है, साधारण शस्य ही अधिक उपजते हैं। इस प्रदेशके सब स्थानोंमें युद्ध, अत्याचार और उपद्रवके चिह्न दृष्टिगोचर होतेहैं।

यद्यपि उक्त दृश्य नवीन और परमानन्द दायक है। किन्तु मैंने हिसारमें इससे पहिले जो परिवर्त्तन और गमनशील मरीचिका देखी थी, वह इसकी अपेक्षा अत्यन्त आश्चर्य दायक थी। हिसारमें मैं अपने एक मित्रके पास मुलाकात करनेके लिये गया था (हा! वह मित्र! इस समय परम धाममें स्थित हैं) उन उदारचित्त और पवित्र हृदय मित्रके अनुरोधसे ही मैं अपने जीवनके इस प्रधान व्रतके अवलम्बन करनेमें अग्रसर हुआ। मेरे उन प्रियमित्र जेमसलैंसडोनका घर फीरोजदुर्गके ध्वंसस्तूपोंमें बना हुआ था, चारों ओर विस्तृत मरुभूमि है और अधिवासियोंमें सिंहकी संख्या अधिक है। उस मकानके छतपरसे मैंने वह दृश्य देखा, वास्तवमें वह जैसा बडा था वैसाही आश्चर्यदायक था। प्रियपाठक! कल्पनाकरो कि एक बडी लम्बी चौडी मरुभूमि है, उसमें चारों ओर दृष्टिका रोकनेवाला कोई पदार्थ नहीं है. दूरपर घोर काली वेष्टनी चारों ओर खडी है, अकस्मात् बालरविकी किरणें उस वेष्टनीके ऊपर गिरते ही मानों ऐन्द्रजालिकके मंत्रपूत दण्ड स्पर्श द्वारा हजारों बडे २ मूर्तियुक्त दृश्य नेत्रोंके सन्मुख आने लगे। एक स्थानपर छोटी २ शिखामाला, कहीं ऊंची चोटीके महल, दृष्टिगोचर हुए, देखते ही देखते वह सम्पूर्ण एक साथ ही अन्तर्द्धान होगये इस देशके निवासी उस दृश्यको "हरिश्चन्द्र राजाकी पुरी" कहतेहैं। हरिश्चन्द्र * सत्ययुगमें भारतवर्षके एक प्रसिद्ध राजा थे यह रमणीक दृश्य किस रूपमें दिखाई दिया था; इस विषयमें इतना ही कह देना यथेष्ट होगा कि छः कोशसे भी अधिक दूरी पर स्थित बहुत पुराने अगरोया × नामक स्थानका दुर्ग, महल. बुर्ज आदिका ज्योंका त्यों दृश्य इसमें दिखाई देता है।

झागेग्राम समृद्धिशाली है और रियाके सर्नाय सामन्तके अधीनस्थ एक सरदार इसका स्वामी है। ग्रामके बाई ओर बहुत निकट एक छोटा सा सरोवर है। सरोवरके तटपर निम्ब वृक्ष पूर्ण एक कानन है, उसके भीतर अधीश्वरके पूर्व एक पुरुषका स्मारक मन्दिर बनाहै। मन्दिरके भीतर उन वीर पुरुषकी मूर्ति अस्त्र शस्त्र लिये घोडेपर सवार है और पास ही उनकी स्त्रीकी मूर्ति हाथ-

---

* [illegible] हरिश्चन्द्र [illegible] है। [illegible]

× [illegible]

वर्त्तमान स्वामीका नाम उनके स्वामीके ही नाम पर है। इनका नाम राजा भीम है, और मेवाडेश्वरका नाम राणा भीम है। × अधीश्वर और सामन्त सम्बन्धके अतिरिक्त दोनों समरक्तवाही और सांसारिक सम्बन्धबन्धनमें बँधे हुए हैं। दुर्भाग्यके कारण ही राजा भीम इस समय बनेडाके सिंहासनपर विराजमान हैं: नहीं तो यही यथा समयपर मेवाडके राजछत्रके नीचे बैठ सकते थे। पूर्वपुरुषोंका द्वारा ही भाग्य परिवर्तित होगया है। पाठकोंको स्मरण होगा कि मुगल सम्राट कुलकलङ्क औरंगजेबके परम साहसी शत्रु राणा राजसिंहके एक समय पर दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। उनमें एकका नाम भीमसिंह और दूसरेका नाम जयसिंह था। भीमसिंह पिताकी आज्ञासे सदाके लिये मेवाड छोडकर मुगलोंकी सेनामें चले गये, और राजपूत सेनाके साथ कन्धारमें जाकर रहने लगे। एक दिन दौडते घोडेकी पीठसे वृक्षकी शाखा पकडनेके कारण घोडेसे गिरकर प्राण छोड दिये, इस बातको हम पीछे लिखचुके हैं। बनेडाके वर्त्तमान राजा उन्हीं भीमसिंहके वंशधर हैं। राजसिंहके पुत्र भीमके बेटे सुराजसिंह मुगल सम्राटके द्वारा विशेष सन्मानित और पुरस्कृत हुए थे। उन्होंने मुगलसेना सहित बीजापुर अधिकारके समय युद्धमें जीवन विसर्जन किया। सुराजके परलोक सिधारनेपर यवन सम्राटने बडा शोक किया। और उनके शिशुपुत्रके लिये राणाके अधिकार भुक्त चार प्रदेश लेकर उनको उस प्रदेशके स्वामी रूपसे अभिषिक्त करदिया था। सुनते हैं कि सुराजसिंह मुगल सम्राटके इतने प्रियपात्र बने थे कि सम्राटने उनके सन्मानके लिये " सुलतान " की उपाधि दी थी। मुगलोंकी शासन शक्तिके नष्ट होजानेपर सुराजपुत्र सरदारसिंह अपने असली स्वामी राणाके साथ मिले। सरदार सिंहके परलोक सिधारनेपर रायसिंह और उनके पीछे हमीर सिंह बनेडाके सिंहासनपर बैठे थे। हमारे मित्र राजा भीमसिंह हमीरके पुत्र हैं। राजा भीमसिंह मेरे आनेका समाचार सुनकर मुझको महलमें लेजानेके लिये एक कोसतक आगे आये और बडे आदरके साथ महलमें लेगये, इन्होंने मेरा सन्मान और सेवा शुश्रूषामें किसी प्रकारकी त्रुटि नहीं की। सामन्त सर्दार अपने २ अधिकृत प्रदेशोंमें किस प्रकारसे रहते हैं? और सामन्त लोग किस प्रकार अपनी शक्तिको काममें लाते हैं, प्रदेशोंकी रीति नीति कैसी है, तीन पीढी [illegible] राजा भीमसिंहके साथ इसी विषयमें बात चीत होती रही। राजा भीम-

घर भी ऐसा नहीं है, जिसके पूर्व पुरुषोंमें किसी एकने इन असीम साहसी पहाडी माहीरोंके द्वारा आक्रान्त होकर जीवन विसर्जन न कियाहो। स्मारक मन्दिरावलीमें कोई न कोई सामन्त इसी कारणसे मरा है, ऐसा देखाजाता है। हम लोगोंके द्वारा जितने उपकार राजपूतानेको प्राप्त हुएहैं उनमें कईसौ ग्रामवासी इन असंख्य पहाडियोंको दमन करके उनको शान्तिप्रिय करदाता बनादेनेका वह बडाभारी उपकार मानते हैं। सुप्रसिद्ध चौहानराज विशालदेव जिनका स्मारकचिह्न आजतक फीरोजके दिल्लीवाले महलमें विराजमान है, उनकी समान हम भी कहसकते हैं कि हमने "माहीरलोगोंको अजमेरके राजमार्गपर जल लानेके कार्य्यमें नियुक्त किया था" और उनके सब अस्त्र शस्त्र छीनकर उदयपुरके राणाके महलमें भेज दिये थे। विशेष करके हमने उन शान्तिभङ्गकारी डॉकुओंको इस समय सर्वसाधारणके शान्ति रक्षक सैनिक वना डालाहै।

रिया और अलनिवासके मध्यस्थलमें लूनी नदी वहती है। इसहीके तटपर डिवाइनकी तोपें कीचडमें फँसगई थीं। अलनिवास एक मैरतीय सामन्तका प्रदेश है। नगर वडा और वहुत प्रजाकी वस्तीका है। इस नगरमें एक और वीरकी कीर्त्ति मेरे दृष्टिगोचर हुई। आपसकी लडाईके समय मेरताके युद्धस्थलमें मैरतीय वीर जिस समय चम्पावत सम्प्रदायके विरुद्ध घोर युद्ध करके विध्वस्त हुएथे उसमें "सोनामल्ल" नामक एक मैरतीय वीर मारेगये थे, उनके स्मरणार्थ एक मंदिर वनाथा।

३० वीं नवम्बर—इस दिन अलनिवाससे तीन कोसकी दूरीपर गोविन्दगढमें पहुंचे। मार्ग साधारण तथा अच्छा था, कोई २ स्थान कठोर होनेपर भी पहिले दिनकी अपेक्षा मृत्तिका अल्प क्लेशदायक ज्ञात हुई। गोविन्दनगर और दुर्ग जोध सम्प्रदायके एक सामन्तके अधिकारमें है। इस नगरके स्थापक गोविंद महाराज उदयके पौत्र थे। स्थूलकाय होनेके कारण सम्राट अकबरने उदयको "मोटा राजा" की उपाधी दी थी। रियाके सामन्त इस सम्प्रदायके नेता हैं और मेडता करदाता नगर इनके अधीन है। कुचाई और मासूदाके दोनों सामन्त भी इस सम्प्रदायके दूसरे नेताहैं। ये दोनों पचास नगरके अधीश्वर हैं। उक्त दोनों सामन्त इस समय अजमेरमें रहते हैं। यद्यपि इस समय ईष्टइण्डिया कंपनी इनका स्वामी है किंतु इन दोनोंमें किसीकी भी मृत्यु होनेपर उनके उत्तराधिकारी जोधपुरमें जाकर महाराजके द्वारा अभिषिक्त होतेहैं। उक्त नगर

पहुँचते ही सबने उठकर आदरके साथ ग्रहण किया, और मुझे राणाके पास ले जाकर सिंहासनके एक ओर बैठा दिया। राजा भीमने इस समय अपने प्रदेश सम्बन्धी तथा सांसारिक सब विषय एक २ करके मुझे सुनादिये. और मुझको भ्राता कह कर सब विषयोंमें परामर्श पूछने लगे। मैंने इस सभास्थानमें अपने प्राचीन मित्र बिदनोरके सामन्तके साथ राजा भीमका जो वैवाहिक सम्बन्धी झगडा था उसको भी तय करादिया। बनेडाके उत्तराधिकारीके साथ बिदनोर सामन्तकी पोतीका शुभ विवाह हुआ। राजा भीमके साथ उनके अधीनस्थ कई सरदारोंका जो भूमि सम्बन्धी झगडा था, मैं बहुतसे हिसाबपत्र लिखित आदेश सनद आदिको पढकर उस सबकी मीमांसा करदेनेको बाध्य हुआ। इनका यह झगडा बहुत कालसे चला आरहा था, इस कारण इसकी मीमांसा परमावश्यक समझी गई। मैं जिसपदपर नियुक्त था, केवल उस पदके कारण मुझको मध्यस्थ स्वीकार नहीं किया था, किन्तु राजा भीमके साथ विशेष मित्रता होनेके कारण उन्होंने मुझसे बहुत अनुरोध किया था। मैं इस बातसे बहुत प्रसन्न हूं कि साधारणकी सुख शान्ति वृद्धि भी होगई. और विवाद भी निबटगया। विदा होनेके समय मेरे मित्र राजा भीम उपहारकी सामग्री सजाकर लाये. मैंने उसको स्वीकार तो कर लिया. परन्तु लिया नहीं। किसी प्रकारका असन्तोष बिना उत्पन्न किये ऐसा किया जासकता है। माननीय बिशप हेबर मेवाडकी यात्राके समय राजा भीमके जिस प्रकार सम्वर्द्धित और सम्मानित हुए थे, मैं उस सब विवरणको सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

धर भी ऐसा नहीं है, जिसके पूर्व पुरुषोंमें किसी एकने इन असीम साहसी पहाडी माहीरोंके द्वारा आक्रान्त होकर जीवन विसर्जन न कियाहो । स्मारक मन्दिरावलीमें कोई न कोई सामन्त इसी कारणसे मरा है, ऐसा देखाजाता है । हम लोगोंके द्वारा जितने उपकार राजपूतानेको प्राप्त हुएहैं उनमें कईसौ ग्रामवासी इन असंख्य पहाडियोंको दमन करके उनको शान्तिप्रिय करदाता वनादेनेका वह बडाभारी उपकार मानते हैं । सुप्रसिद्ध चौहानराज विशालदेव जिनका स्मारकचिह्न आजतक फीरोजके दिल्लीवाले महलमें विराजमान है, उनकी समान हम भी कहसकते हैं कि हमने "माहीरलोगोंको अजमेरके राज-मार्गपर जल लानेके कार्य्यमें नियुक्त किया था" और उनके सब अस्त्र शस्त्र छीनकर उदयपुरके राणाके महलमें भेज दिये थे। विशेष करके हमने उन शान्तिभङ्गकारी डॉकुओंको इस समय सर्वसाधारणके शान्ति रक्षक सैनिक बना डालाहै ।

रिया और अलनिवासके मध्यस्थलमें लूनी नदी वहती है । इसहीके तटपर डिवाइनकी तोपें कीचडमें फँसगई थीं । अलनिवास एक मैरतीय सामन्तका प्रदेश है । नगर बडा और वहुत प्रजाकी वस्तीका है । इस नगरमें एक और वीरकी कीर्त्ति मेरे दृष्टिगोचर हुई । आपसकी लडाईके समय मेरताके युद्धस्थलमें मैरतीय वीर जिस समय चम्पावत सम्प्रदायके विरुद्ध घोर युद्ध करके विध्वस्त हुएथे उसमें "सोनामल्ल" नामके एक मेरतीय वीर मारेगये थे, उनके स्मरणार्थ एक मंदिर बनाथा ।

३० वीं नवम्बर—इस दिन अलनिवाससे तीन कोशकी दूरीपर गोविन्दगढमें पहुंचे । मार्ग साधारण तथा अच्छा था, कोई २ स्थान कठोर होनेपर भी पहिले दिनकी अपेक्षा मृत्तिका अल्प क्लेशदायक ज्ञात हुई । गोविन्दनगर और दुर्ग जोध सम्प्रदायके एक सामन्तके अधिकारमें है । इस नगरके स्थापक गोविंद महाराज उदयके पोते थे । स्थूलकाय होनेके कारण सम्राट अकबरने उदयको "मोटा राजा" की उपाधी दी थी । रियाके सामन्त इस सम्प्रदायके नेता हैं और सोलह बन्दूका नगर इनके अधीन हैं । हुनाड और मारूदके दोनों सामन्त भी इस सम्प्रदायके दूसरे नेता हैं । यह दोनों पचास नगरके अधीश्वर हैं । उक्त दोनों सामन्त इस समय अजमेरमें रहते हैं । यद्यपि इस समय इष्टइण्डिया कंपनी उनकी स्वामी है किन्तु इन दोनोंमें किसीकी भी मृत्यु होनेपर उनके उत्तराधिकारी जोधपुरमें जाकर महाराजके द्वारा अभिषिक्त होतेहैं । उक्त नगर

और इसकी शोचनीय दशा धीरे २ बदलती जातीहै। विध्वंसावस्थामें जो लोग मण्डल छोडकर दूसरे स्थानोंमें भागगये थे, उनमेंसे एक मनुष्यने फिर यहां आकर अपने पैतृक घरके ध्वंसस्तूप खोदे, खोदते २ उसको सुवर्ण और अलङ्कारोंसे भराहुआ एक पात्र मिला। इसके किसी पूर्व पुरुषने उस पात्रको गाड दिया था। नियमके अनुसार यह राणाका हुआ. किन्तु राणाने उसको नहीं लिया। आज मैंने पानसाल और आर्य्याप्रदेशोंमें होकर गमन किया। प्रथमोक्त प्रदेश आजतक शक्तावत लोगोंके अधिकारमें हैं। आर्य्याप्रदेशके विषयमें जो शक्तावत और पुरावत् लोगोंमें विवादकी अग्नि प्रज्वलित हुई, उसका विशेष विवरण अन्यत्र लिखा गयाहै। मेवाडमें यह आर्य्याका दुर्ग सबसे अधिक अमूल्यहै. और इसके अधीनमें ५२००० बावन हजार बीघे भूमि निर्द्धारितहै. इस कारण इसके लाभके लिये विवाद होना न्याय संगत है। यद्यपि आर्य प्रदेश शक्तावत लोगोंके अधिकृत प्रदेशके बीचमें ही स्थित है. परंतु शक्तावत् लोग कहते हैं कि उक्त प्रदेशमें पुरावतोंका कुछ अधिकार नहीं है।

११ दिसंबर।—पुर। मेवाडके बहुत प्राचीन नगरोंमें यह एक प्रधान है और यदि हम जनश्रुतिपर विश्वास करलें तो कहसकते हैं कि, यह नगर राजा विक्रमादित्यके शासनसे बहुत पुराना है। मण्डलसे पुरतक कोठारीवारी नामकी जो नदी बहतीहै। हम लोग उसके पार होकर ढंगीवाके दिन और नाहरगानके निकट होकर पुरावतोंके अधिकृत पीतवास नामके प्रदेशमें होते हुए यहां पहुंचे। पुर एक निःसंदेह पुराना नगर है। राणाके अधिकृत सब नगरोंमें यह एक प्रधान है। जिस साठहजार कोश परिमित स्थानमें मेवाडके राजकुमारगण वास करते हैं यह पुर ठीक उस भूमिके बीचमें स्थापितहै; आरावलीकी शिखर शिखरमाला, उत्तरमें बनेडा और दक्षिणमें गुरलाप्रदेश होती हुई [illegible] चलीगई है; राजा शिवचन्द जिसका अधिकृत था [illegible] प्रदेश इसके पश्चिममें स्थित है। मेवाडके ठीक बीचवाले उस भूखण्डमें राज रक्तधारी राणा वंशके नितान्त लिये उसे निर्द्धारित करके, राणालोगोंने उत्कृष्ट परिचय दिया है क्यों कि यह राजकुमारगण स्वदेश वा विदेशके [illegible] षड्यन्त्रोंके साथ किसी प्रकारका राजनैतिक संबंध नहीं रखते. इस निमित्त ही यह राजवंशधर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ऊपर अभेद्य दुर्ग बनवाना आरंभ किया था। किन्तु यह बडे हीं आश्चर्य्यकी बात है कि दिनमें वह दुर्गका जितना हिस्सा बनवाते थे, रात होनेपर वह सब गिरपडता था; जब प्रतिदिन यही दशा देखी तो उन्होंने पर्वतके दूसरी ओर एक नवीन राज्य स्थापन किया। उसहीका नाम अजमेर है।

अजमेरके स्थापक पालिजातीय चौहान आदिपुरुष अजपालसे आरंभ करके महाबली विशालदेव तक जितने राजा हुए; उनमें माणिकराय एक बहुत प्रसिद्ध योद्धा गिने जातेहैं। "जिस समय वालीदकी सेना गङ्गातटवर्त्ती प्रदेशको जीतनेके लिये आई थी, उस समय अर्थात् हिजरीकी प्रथम शताब्दीमें माणिकराय विजातीय और विधर्मियोंके विरुद्ध बडी वीरताके साथ युद्ध करनेके पीछे स्वर्ग सिधारे थे।" महमूदके उत्तराधिकारी जिस समय फिर आर्य्य क्षेत्र भारतवर्षपर अधिकार करनेके लिये आये, चौहानराज विशालदेव उस समय भारतीय बहुतसे राजाओंके साथ सम्मिलित होकर नेताके पद पर नियुक्त हुए उन्होंने संहार मूर्ति धारण करके यवनोंको भारतवर्षसे मार भगाया था। वीर श्रेष्ठ विशालदेवकी कीर्तिमें एक लोहेका विजयस्तंभ दिल्लीमें गाडा गया वह कीर्तिस्तंभ अबतक उस स्थानमें विराजमान है। खोदित लिपिके द्वारा ज्ञात हुआहै कि, विशालदेव चित्तौराधीश्वर रावल तेजसिंहके समयमें थे। यह तेजसिंह रजवाडेके सबसे प्रधान वीर समरसिंहके प्रपितामह थे समरसिंह दिल्लीके चौहानसम्राटके बहनोई थे। उन्होंने पृथ्वीराजके साथ मिलकर यवनोंके विरुद्ध कग्गरके समरक्षेत्रमें जन्मभूमिस्वाधीनता और आर्य्य गौरवकी रक्षाके लिये युद्ध किया और १३००० तेरह हजार राजपूत सेना सहित बडी वीरताके साथ लडकर प्राण विसर्जन कियेथे। विशालसिंह किस समयके राजा थे. इस विषयमें यह ज्ञात हुआहै कि प्रमार जातिके राजा उदयादित्य सन् १०९६ ईसवीमें परलोक सिधारे उस समय उदयादित्यने विशालदेवके साथ मिलकर यवनोंके विरुद्ध युद्ध किया था. इस कारण विशालदेव ग्यारहवीं शताब्दीमें अजमेरमें राज्य करते थे।

"नागपहाड" वा सर्प गिरि एक दुर्ग यवनोंके द्वारा विख्यात है। जनश्रुति है कि उज्जयनीके अधीश्वर भर्तृहरि जब राज्य छोडकर संन्यासी हुए तब वह सर्पगिरिपर निवास करके योग साधन करते। उनके उस योगसाधन स्थानमें अब भी एक पत्थरकी वेदी बनी हुई है। यात्री लोग भक्तिके साथ उसकी पूजा करते हैं। उज्जयिनीके महाराज विक्रमादित्यके भ्राता भर्तृहरिका नाम भारतके अनेक स्थानोंमें प्रतिध्वनित हो रहा है और उनके गुणगाथ अनेक दूर देशोंमें

नाम "धूलकोट" है । सुनते हैं कि पर्वतकी अग्निके उत्पातसे धूलद्वारा नगर बिल्कुल नष्ट होगया था। वास्तवमें जिस अग्निके उत्पातसे आहर नगर नष्ट हुआ, उसीसे ही उपत्यका नगीवर उत्पन्न हुआ, वा नहीं ? इस बातको केवल भूतत्त्वानुसंधानी विशेष अनुसंधानसे बतासकता है । नगरके मध्यसे प्रधान मार्ग इस बांधके ऊपर होकर चलागया है । उस बांधका जो २ स्थान खोदागयाहै, उसी २ स्थानसे खोदित पाषाणखण्ड और मृत पात्रावली प्राप्त हुईथी, इस कारण पुराने पदक रुपये आदि मिलनेकी आशासे मैंने भी उस बांधके खोदनेकी आज्ञा दी, सौभाग्यसे कई पुरानी मुद्रा सुद्रैंभी मिलीं।उन सिक्कोंके एक ओर किसी पशुकी मूर्त्ति अंकित है; मेरे अनुमानमें वह सिंहकी मूर्त्तिहै । अन्य कई सिक्कोंके ऊपर गधेकी मूर्त्ति बनीहै । सुनते हैं कि विक्रमादित्यके भ्राता गन्धर्वसेन अपने सिक्कोंमें गधेकी मूर्त्ति अंकित करते थे, इस कारण यह सब उन्हींके प्रचलित किये हुए सिक्के हैं सिक्केमें गधेकी मूर्त्ति व्यवहारके कारण इस विषयमें एक बहुत बडा प्रवाद प्रचलित है ।

यह आहर एक बहुत प्राचीन और बहुत बड़ा नगर था, इस बातको सब लोग निःसंदेह होकर स्वीकार करेंगे । इस समय स्मारकमन्दिर परिशोभित इस आहरके चारोंओर जो प्राचीन परकोटा विराजमान है, वह परकोटा भी उसी प्राचीन विध्वंस मन्दिरावलीके उपकरणसे बनाया गया है । कई देवालय प्रधानत जैनमन्दिर आजतक ध्वंसावस्थामें देदीप्यमान हैं यह भी बहुत पुराने हैं । इन मन्दिरोंमें जितनी मूर्त्तियें खुदीहैं, सब उलटी हैं अर्थात मस्तक नीचे और पैर ऊपर हैं महावीर और महादेव दोनोंकी मूर्त्तियें एकत्र रक्खी हैं और दोनों मन्दिर पत्थरपर खुदे हैं । दो खोदित लिपि भी मिली, एक जैनभाषामें है और दूसरी किस भाषामें है इसका अभी पता नहीं चला ।

देखनेकी आशाकी थी, वैसा नहीं पाया। वर्त्तमान समयमें भारतके अन्यान्य प्राचीन प्रधान २ नगरोंकी समान इस प्राचीन अजमेरमें भी दीनता और अशान्तिके चिह्न दिखाई देते हैं। संतोषका विषय है कि बृटिश गवर्नमेंटके अधीन और इस प्रदेशके सुपरेन्टेन्डेण्ट मि० विलडरकी अध्यक्षतामें अजमेरके एक अंशकी क्रमशः शोभा बढाई जाती है। अजमेरके सौदागरोंके लिये एक प्रधान बाजारका राजमार्ग बनाया जारहाहै, इसके समाप्त होजानेपर उन लोगोंका विशेष उपकार होगा। रजवाडेके जितने सौदागर व्यापार सम्बन्धमे अजमेरमें रहते हैं वह सब मेरी अभ्यर्थनाके लिये आये। बृटिश शासन द्वारा निर्भय शान्ति भोग करने और वाणिज्यमें विशेष सुबीता मिलनेके कारण उन्होंने आन्तरिक हृदयसे आनन्द प्रगट किया था। भीलवारेकी उन्नतिके साथ २ अजमेरकी उन्नतिका भी सम्बन्ध है।

मिष्टर वाल्डरके साथ प्रातःकालके भोजनके समय मैंने इसी विषयका परामर्श किया था "कि अजमेर और भीलवारेकी सबसे श्रेष्ठ उन्नति किस प्रकारसे होना सम्भव है ?

बत्तीसवां अध्याय ३२.

राजस्थानकी सामन्त शासनकी रीति।

उपक्रमणिका:—राजस्थानकी शासनविधि:—एशिया और यूरोपकी पुरातन शासनरीतिमें साधारण समानता:—राजपूत जातिकी श्रेष्ठवंशमें उत्पत्ति:—मारवाड़के राठौरगण:—अम्बेरके कछवाहे:—मेवाड़के सिसोदिया:—पदमर्यादाका श्रेणीविभाग:—राजसम्बन्धी अधिकार:—राजधनसंग्रहकी रीति:—बराड खरलकड़।



परब्रह्म परमात्माकी कृपाकटाक्षसे इतने दिनके उपरान्त इस बड़े इतिहासके प्रथमखण्डके शेषभागमें हम एक बड़े कठिन विषयके प्रतिपादन करनेमें आगे बढ़ेहैं वह कार्य इस ग्रंथकी प्राणप्रतिष्ठा है, इस इतने बड़े इतिहासकी अपने जातिके भ्राता राजपूतोंके वंशकी प्राणप्रतिष्ठाकी आवश्यकता है, महागुणी, पंडित टाड साहबके अनुगामी होकर हम उनकेही अवलम्बित किये मूलमंत्रसे इस ग्रंथकी प्राणप्रतिष्ठा करना चाहते हैं. किसी एक प्राचीन राज्यकी किसी जगतविख्यात प्राचीन जातिकी, क्रमानुसार घटनायें समस्त वृत्तान्त, सामाजिक आचार व्यवहार, और धर्मानुष्ठान उस जातिके इतिहासके सारा अंग प्रत्यंग प्राणप्रतिष्ठाके विना प्राणहीन देहकी समान हैं. इतिहासका शिर क्या है? प्रजाशासन रीतिका वृत्तान्त ही इतिहासका प्राण है. इस समय आगे निवासस्थान राजस्थानकी हिन्दुवंशोत्पन्न राजपूतजातिके इतिहासकी जो प्राणप्रतिष्ठा ही अवशेष है. हमको आशा है कि पाठकगण इसको पढ़कर अवश्य लाभ उठावेंगे।

काल इस समय उनकी मसाजिदोंको ग्रास करनेमें प्रवृत्त हुआ है। प्राचीन मंदिरोंकी बनावटके द्वारा यह भलीभाँति प्रगट होजाता है कि वह सब भिन्न २ दो जातियोंके द्वारा बने हैं अर्थात् कुछ भाग स्वाधीन हिंदुओंके द्वारा और कुछ भाग भारत विजेतामुसलमानोंके द्वारा बनाया गयाहै।

अजमेर दुर्गके पश्चिम प्रांतमें एक बहुत ही पुराना जैनमंदिर है। किसी कारणसे यवनोंने इसको नहीं गिरायाहै। इसका नाम "अढाई दिनका झौंपडा" अर्थात् जैनी शिल्पियोंने इंद्रजाल मंत्रकी शक्तिसे इसको ढाई दिनके भीतर बनादिया था इस कारण इसका नाम ढाई दिनका झौंपडा रक्खा गयाहै ऐसी जनश्रुति है। भारतके तीन प्रधान पवित्र स्थानोंमें जैनियोंने जैसे चित्ताकर्षक मंदिर बनवाये हैं, उनके द्वारा जैन शिल्पियोंकी योग्यता भलीभाँति प्रगट होरहीहै। ज्ञात होता है कि यथेच्छ सामग्री मिल जानेके कारण यह मंदिर बहुत शीघ्र तैयार होगया होगा। मंदिरके चारों ओर परकोटा है इस परकोटेका प्राचीनत्व और सरल गठन देखकर मेरा विश्वास है कि, प्रथम भारतविजेता गोरीका सुलतान वंश ही इसका निर्माता है। मंदिरके उत्तरीय भागमें सिंहद्वार और सोपानावली (जीना) विद्यमान है। विशेष परीक्षाके द्वारा मैंने निश्चय करलियाहै कि मंदिर जैनियोंने बनायाहै। प्रवेशद्वारके परकोटेकी दीवारपर अरबी अक्षरोंमें कुरानकी आयतें लिखी हैं। तोरणके ऊपर मैंने संस्कृतके अक्षर भी लिखे देखे, वह अरबी अक्षरोंके साथ मिश्रित और विकृत होगये हैं मंदिरकी बनावट अतिश्रेष्ठ और मनोहर है। तोरण देखनेके पीछे जैनियोंके द्वारा बने हुए मूल मन्दिरको देखनेके लिये मैं आगे बढा। मन्दिर पुराने जैनमंदिरोंकी समान बना। मंदिरका भीतरीभाग खूब लम्बा चौडा है। तीन श्रेणियोंमें विभक्त रमणीक स्तंभोंके ऊपर छत्र स्थापित है। सम्पूर्ण स्तंभ विशेष दर्शनीय और प्रशंसनीयहैं। कमरेके भीतर चालीस स्तंभ विराजमानहैं, किन्तु यह बडे आश्चर्यकी बात है कि सबके बेल बूटेका काम अलग २ है। मेरा विश्वास है कि, तुरकलोगोंने भारतवर्षमें इस गठन प्रणालीको सीखकर यूरोपमें प्रचार किया था

सुनते हैं कि भारत विजेता रोशन अलीकी सेनाके सबसे पहिले इस अजमेरमें युद्धाग्नि प्रज्वलित करने पर चौहान राज मानिकरायने इस युद्धमें जीवनाहुति दानकरी। यवन सेनाने तारागढ नामक दुर्ग विजय कर लिया था दुर्ग जैसा प्राचीन है वैसा ही दृढ है। अजयपाल निर्मित शिखरके ऊपर बडा परकोटा

उंगली देकर कहदेंगे कि सत्ताईस करोड भारतसंतान बृटिश यथेच्छाचार शासनके क्रीत दास हैं । इसी लिये हम कहतेहैं कि शासन शैली ही प्रधान लक्ष्यका स्थलहै।

अनेक लोगोंके हृदयमें यही विश्वासहै कि भारतमें बहुत कालसे यथेच्छाचार शासन प्रचलित होता आरहाहै, मनुष्य जन्मका जो ईश्वरका दियाहुआ प्रधान व्यक्तिगत स्वत्वहै, स्वाधीनभावसे मतवादका प्रकाश, स्वाधीनभावसे चिन्ता और अपनी अवस्थानुसार सत्वका चलानाहै । भारतवासी बहुतकालसे ही इन स्वत्वसे वंचितहैं बहुतोंका यही विचारहै, किन्तु हम साहसके साथ कह सकते हैं कि वह विश्वास—वह विचार सर्वथा भ्रान्त है। भविष्य इतिहास मेघकी समान गंभीर शब्दसे कीर्तन कररहाहै कि भारतमें प्रजाओंका व्यक्तिगत राजनैतिक स्वत्व अधिकताके साथ था और अब भी देशी राज्योंमें वह विद्यमान है। बृटिश भारतके यथेच्छाचार शासन की समान देशी शासनकी शक्ति प्रजाओंके राजनैतिक स्वत्वको लोप ही नहीं करती है वरन इतिहास और भी दिखारहा है कि पश्चिमी जगतने इस समय प्रजामें साधारण स्वतंत्र शासन प्रचलित करके यहांके निवासियोंके बीचमें जो राजनैतिक स्वत्व विभाग कर दिया है उसी पश्चिमी जगत्ने इस समय अवनतिके सागरमें मग्नहुए इस अभागे भारतवर्षसे ही शासन प्रणालीका मूलबीज संग्रह करलियाहै।

प्रयोजनीय अनेक प्राचीन स्मृति चिह्न और द्रव्यादि आविष्कार करनेमें समर्थ होता । दुर्द्दान्त मुगलसम्राट औरङ्गजेब एक पक्षपाती कट्टर मुसलमान था, इस कारण उसने हिन्दुओंके वह सब चिह्न बिलकुल लुप्त और ध्वंस करदिये । प्राचीन सिक्के भी औरङ्गजेबके द्वारा नष्ट होगये । उनमेंसे बहुतसे सिक्के अब भी अनेक स्थानोंमें पृथ्वीके भीतर दबेहुए हैं । विशेष तत्त्वानुसंधानके समय वह अवश्य ही प्रगट होजायँगी । मुगलसम्राटोंमें औरङ्गजेब वीर राजपूतजातिके प्रधान शत्रु थे, इस कारण उन्होंने राजपूतोंके वीरत्व विक्रम प्रताप प्रभुत्व समूल नष्ट करनेके लिये कोई यत्न चेष्टा और उद्योग शेष नहीं रक्खा था । किन्तु वह वीर राजपूतजाति उस साक्षात् नरपिशाच औरंगजेबके घृणित अत्याचार, उपद्रव और उत्पीडनके बदलेमें मुगलवंशको ध्वंस करके फिर उन्नतिके शिखरपर चढगईहै ।

९ वीं दिसम्बर ।—इस दिन बहुत सवेरे ही माणिकरायका दुर्गप्रासाद छोड-कर उदयपुरमें लौटनेके लिये दक्षिण ओर घोडा हांकदिया । अजमेरमें निवा-स करनेके समय मुझे कोटेके अधीश्वरकी मृत्युका समाचार मिला था इस कारण शाहपुरा और बूंदी होकर कोटे जानेका विचार किया, किन्तु एक प्रबल कारणसे वह विचार छोडदेना पडा, अर्थात् यद्यपि मुझे मेवाड छोडे हुए केवल दो ही मास हुए थे, किन्तु मैंने मेवाडके जिस राजनैतिक अनुष्ठानकी सहायता की थी, इस अल्पकालमें ही उसके छिन्न होजानेका उपक्रम होनेसे राणाने शीघ्र ही मुझको राजधानीमें आनेके लिये आग्रहपूर्व निवेदन पत्र भेजा । दो अन्य कारणोंसे भी मेरे कोटाजानेमें विघ्न होगया । पहाडी माहीरजातिको वशवर्त्ती और भीत रखनेके लिये जो दुर्ग प्रस्तुत होरहाहै, उसका देखना और भीलवा-डाके कई सम्प्रदायके सौदागरोंके भीतरी झगडेकी मीमांसा करना इस समय बहुत आवश्यक समझागया, कारण कि भीलवाडेमें वाणिज्यकार्य्य फिर भली-भांति चलनेके लिये मैंने जो विशेष चेष्टा और यत्न किया था उस वणिकम-ण्डलीके झगडेद्वारा उसके व्यर्थ होनेका उपक्रम होगया ।

मार्गमें दो ग्रामोंमें विश्राम लेनेके पीछे हम लोग जुनाई नामक स्थानमें पहुंचे । एक राठौर सामन्त इस जुनाईके अधीश्वर हैं । जुनाई प्रदेश अजमेरके अधीन है, इस कारण सामन्त ब्रिटिशगवर्नमेंटको नियमित कर देनेमें वाध्य है । यद्यपि ब्रिटिशगवर्नमेंट उनकी स्वामी है, और राठौराधीश्वरके साथ उनका कुछ राजनैतिक सम्बन्ध नहीं है, तथापि वह मारवाडेश्वरको विशेष मान्य

विधान देखनेमें नहीं आता। राजपूत राज्यमें भी यही दशा हुई, इसी कारण इतिहासलेखक टाड महोदयको इस देशमें प्राचीनकालका लिखित शासनविधान ग्रंथके आकारमें प्राप्त नहीं हुआ और इस कारणसे ही वह यह लिखगयेहें कि, "राजपूत राज्योंमें किसी समय फौजदारी और दीवानी कार्यविधि वा दंडविधिकी पुस्तक थी अथवा नहीं यही संदेह है ?

कर्नल टाड लिखतेहें कि, "जिस समय बृटिशगवर्नमेंटके साथ रजवाडेके राजागण किसी प्रकारकी सम्बन्धशृंखलामें नहीं बँधेथे, जिस समय हमलोग राजपूतानेका भूवृत्तान्त और इतिहास सामान्यरूपसे जानते थे, उस समयके बहुत काल पहलेसे रजवाडेकी शासनशैलीके सम्बन्धमें मेरे हृदयमें ऊपरवाली धारणाने स्थान पाया था। उस समय में प्रायः ही आनंद प्राप्तिके लिये राजपूतोंमें भ्रमण करता था और उस कारणसे ही अपने भ्रमणका मुख्य उद्देश, उक्त शासन प्रणालीका विवरण, भूवृत्त और इतिहास संकलन करके मैं अपनी गवर्नमेन्टके पास भेजदेता था। मन्टेस्कु, ह्यूम, मिलर, और गिबिन आदि प्रसिद्ध इतिहासवेत्तागण सामन्त शासन प्रणालीके विषयमें जितने अमूल्य ग्रंथ लिखगयेहें, मैंने उन सबके अवलम्बनसे पश्चिमी राज्यकी शासनप्रणालीके साथ राजपूतोंकी सामन्तशासनप्रणालीकी समानता निर्द्धारणके लिये अनेक प्रकारसे यथायोग्य तत्त्वानुसंधान और खोजमें सहायता पाई, किन्तु मैं उस समय संक्षिप्त विवरणके साथ केवल दोनों जातिकी शासनप्रणालीके साधारण सादृश्य निर्द्धारणमें प्रवृत्त हुआ था, उसके उपरान्त ही विख्यात इतिहासवेत्ता हालमका मध्यसमयका इतिहास प्रकाशित हुआ। इस सामन्त शासन प्रणालीका मूलतत्त्व जो इतने दिनतक छिपाहुआ था, उक्त इतिहासके द्वारा वह एक साथ प्रगट होगया। मैंने उक्त इतिहास चित्रके साथ राजपूत समाजके सम्पूर्ण दृश्यमान [illegible] विशद रूपसे तुलना करी है और इतने दिनतक जो सामंत शासन शैली केवल [illegible] [illegible] निवासियों द्वारा बनाईहुई विख्यातथी इस समय वह शासन शैली इस [illegible] [illegible] द्वारा सबसे पहले बनाई गई थी इस बातको दृढरूपसे प्रतिपादन करनेसे [illegible] [illegible] [illegible] भारी आनंद मिलेगा; मैं इस बातको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निर्णय करनेसे मनोरथ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मैं [illegible] [illegible] समाजोंको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इस सामंत शासन प्रणालीके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

न्तने जब एक भी प्रस्तावको स्वीकार न किया, तो वनेडाधीश्वरने देवलके प्रत्यर्पण करनेकी आज्ञा दी। यथार्थ राजपूतवीरकी समान सामन्तने उत्तर दिया कि, "जब तक मेरे शरीरपर मस्तक रहेगा, तबतक देवला प्रदेश पर वनेडापति अधिकार नहीं करसकेंगे।" इस उत्तरसे वनेडाराजने महा क्रुद्ध होकर, शीघ्र ही देवला अधिकार करनेके लिये महाराष्ट्र सेनाका एक दल भेजदिया। देवलाके सामन्त जैसे वीर और साहसी थे, वैसे ही समरकुशल भी थे; उन्होंने बडे साहसके साथ कई मास तक बहुतसे महाराष्ट्रियोंके कराल गालसे देवलाकी रक्षा की थी। उनकी इस वीरताके कारण ही देवला "छोटा नागपुर" नामसे विख्यात हुआ। प्रबल महाराष्ट्रसेनासे जब देवलका बचाना असंभव होगया तो सामन्त अपनी शोचनीय दशासे विचलित होकर कोटेके वकीलद्वारा मेवाडेश्वर राणाको२००००बीस हजार रुपये नजर देकर उनसे उक्त प्रदेशका स्वत्वाधिकार मांगा, किन्तु राणाने उसको स्वीकार नहीं किया, वनेडाराजने देवला अधिकार करलिया। देवला मेवाडका सीमान्त प्रदेश है, इस कारण राणाने उसको अपने अधिकारमें रखना उचित समझकर वनेडाराजसे उसको लेलिया, और इसके बदलेमें दूसरे उपायसे वनेडाराजकी वृत्ति पूर्ण कर दी।

सुप्रसिद्ध महावीर राठौर जयमाल, जो मारवाड छोडकर मेवाड चलेगये थे, उनहीके वंशधर लोग ३६० ग्रामोंसे पूर्ण विदनौर प्रदेशका स्वत्वोपभोग करतेहैं। यह प्रदेश जैसा उपजाऊ है, वैसा ही समृद्धिशाली है। विदनौरके प्रधान सामन्त राजधानीमें मुझसे मिले थे: किन्तु महावारेमें जाना असंभव समझ कर भेंने कप्तान वाघको अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजदिया। प्रधान सामन्तने उनको बडे आदरके साथ विदनौरमें ग्रहण करके सम्बर्द्धना की। कप्तान वाघ राजपूत स्वभावसिद्ध सरल हृदय वृद्ध सामन्तके साथ मृगया और फाग क्रीडामें सम्मिलित हुए थे। फाग उत्सवके समय राजपूतजातिके बिल्कुल सामाजिक स्वाधीनता भोगने-के कारण सुनीति दूर होजाती है। इस कारण उस समय सामन्त स्वेच्छ क्रीडा विहार करते हैं।

८ दिसम्बर।—वनेडा। मेवाडकी सामन्तमण्डलीके अधिकृत प्रदेशोंमें वनेडा-का दुर्गप्रसाद [illegible] है, और वनेडाके अधिनायक भी मेवाडकी सामन्त श्रेणीमें सबसे श्रेष्ठ हैं। वनेडापति केवल [illegible] उपाधि ही पाकर प्रसन्न नहीं हैं, वरन राजोचित सब सम्मानलाभ करते हैं, और अपना [illegible] आदि सब राजोचित व्यवहार करनेके अधिकारी हैं। वनेडाके

मूर्त्तीनिपर बने दिखाई नहीं देते, यह शासन, प्रणाली अपूर्ण अंगवाला एक यंत्रहै।

किन्तु यह सिद्धान्त विशेष तत्त्वानुसंधानका फल नहीं है, इस मन्तव्यको कभी एक साथ संकलित हुआ समझ सकतेहैं। रजवाडेकी वर्तमान शासनशैलीके प्रत्येक दीखनेवाले लक्षणपर तीक्ष्णदृष्टि देनेसे यद्यपि वह पहले साधारण विदित होंगे किन्तु एक समय इस राजवाडेकी शासनशैली सर्वाङ्गसम्पन्न थी, विजातियोंके द्वारा आक्रान्त होकर भी शासनरीतिने अटल भाव धारण किया था, सामन्तोंकी शासनशैलीका जन्म इसी रजवाडेमें हुआ था इन सब बातोंके प्रगट करनेमें वह दीखनेवाले सम्पूर्ण लक्षण पूर्ण सहायताके साधक हैं। जो सामन्त शासनशैलीरूप बीज पहले यूरोपमें गिरा था, वह इस दूरवर्ती देश अर्थात पश्चिमी राज्यमें जो देश सर्वथा अपरिचित था, जिस देशके आचार व्यवहारादि विजेतालोगोंके आचार व्यवहारादिके द्वारा ढक रहेहैं. ऐसे इस रजवाडेमें भी वह सामन्तोंकी शासनप्रणालीका बीज यूरोपमें गया था अथवा नहीं? हम इस राजपूतानेमें इसका खोज करसकते हैं; पूर्वी राज्यमें हमारे जितने स्वजातीय (यूरोपियन) वास करते हैं: वह एशियाकी किसी रीति किसी व्यवस्था अथवा किसी पदार्थके ऊपर घृणित दृष्टि डालते हैं: परन्तु एक ऐसा समय था कि जिस समय इस घृणित दृष्टिके विपरीत दृश्य दिखाई देताथा।"

कर्नल टाडकी यह उक्ति अभ्रान्त और सत्यपूर्ण है, इसके द्वारा उनके उदार हृदयका निःसन्देह परिचय मिलता है। अब यह देखना उचितहै कि वह इस विषम रहस्यको किस प्रकारसे प्रगट करगयेहैं।

सिंह पूर्ण शिक्षित और मिष्टभाषी हैं। उन्होंने आंतरिक सरलभावसे मेरे साथ बातचीत की, इस कारण मैं उनको विशेष प्रिय समझताहूं। मेवाडके राणावंशके साथ उनका बहुत समीपका संबंध होने तथा मुगल सम्राटकी आज्ञानुसार राज-चिह्न धारण और ध्वजा पताका दण्डादि व्यवहारमें शक्ति संपन्न होनेके कारण मेवाडेश्वर उनके प्रभुत्व, क्षमता और सन्मानका द्वेष करते हैं। राणा बनेडा राजके बिलकुल हस्तगत करनेके लिये ही, बनेडाके नीची श्रेणीके सामन्तोंके ऊपर बनेडा राजका प्रभुत्व न्यून करनेकी चेष्टा करनेलगे; देवलाके सामन्तकी ओर राजाका आचरण ही उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। राणा भीमसिंहके साथ बनेडाधीश राजा भीमसिंहकी जो सामान्य शत्रुता थी, उसके दूर करनेमें मैं सफल मनोरथ हुआ। राजा भीमसिंहके केवल उदयपुर नगरहीमें नहीं–प्रासादके सन्मुख त्रिपालियाके बीचमें आनेपर सन्मानसूचक नगाडेकी ध्वनि होती है. तथा राणाके सामने बैठनेपर उनके सेवक उनका चँवर ढुलाते हैं, यही राणाको असह्य होगई थी। अन्तमें निश्चय हुआ कि, "मेवाडके प्रधान शत्रु मुगलसम्राटने बनेडाराजके ऊपर अनुग्रह करके जो चँवर और बाजेआदिकी व्यवस्था करदीहै, राणा अपने शत्रुद्वारा निर्द्धारित उस चँवरका दर्शन वा नगा-डेकी ध्वनिका श्रवण करना न्यायानुसार नहीं चाहते, तब ऐसी दशामें बनेडा-राजके उदयपुरमें आनेपर वह चँवर व्यवहार वा त्रिपालियाके बीचमें नगाडेके साथ प्रविष्ट नहीं होसकेंगे, किन्तु अपने अधिकृत प्रदेशमें वह यथेच्छ व्यवहार करसकेंगे।" यह व्यवस्था ही न्यायसंगत थी और बुद्धिमान राजा भीमने भी अपने ज्ञाति भाई राणा भीमकी प्रसन्नताके लिये इसके स्वीकार करनेमें कुछ आपत्ति न की। यदि राजा भी इसको स्वीकार न करते तो राणा बल प्रकाश-करनेको बाध्य होते।

बनेडाप्रदेशकी वार्षिक आय ८००००) अस्सी हजार रुपयेकी है, इसका आधा भाग बनेडाराजको अधीन सरदारोंसे प्राप्त होता है। सरदारोंमें राठौर ही अधिक हैं। बनेडाके राजा भीम भीलवाडके वाणिज्य स्थानके व्यय निर्वाहार्थ कर दान करते हैं, और नियमित रूपसे उदयपुरमें रहकर राणाके राजकार्य-साधनकी सहायता करते हैं। यह बनेडाप्रदेश अत्याचारी पहाडी लुटेरोंकी निवासभूमिके निकट होनेके कारण अत्याचारोंसे निःसार होगया है। यहांकी भूमि बहुत उपजाऊ है, यथासमय कृषिकार्यद्वारा विशेष श्रीवृद्धिकी संभावना है।

बनेडाप्रासादके प्रधान तल प्रदेशके सामने वाले कमरेमें मनोहर गद्दीपर बैठे हुए राजाके सब अर्धसभ्य नौकर मेरे आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे

प्रगट करनेका बडा प्रयोजन है; किन्तु तर्कनाके साथ उसही रीतिकी समानताका देखना उचित है, क्योंकि अनेक स्थलोंपर सूक्ष्मदृष्टि डालनेपर कुछ भी सादृश्य नहीं दीखता, सामन्त शासन रीतिकी कुछ समानता सहजमें ही दिखाई गई. रोमके साधारण तंत्र शासनकालमें उच्च अधिकारी रक्षकोंके साथ नीची कोटिके निवासियोंका जैसा सम्बन्ध विराजमान था. और बर्बर तथा वीरगण जिस प्रकार आत्मरक्षा और सीमान्त रक्षाके लिये सीमान्तकी भूमि जागीरके निज स्वत्वसे भोग करते थे, इस सामन्त शासन प्रणालीके साथ उसकी कुछ समानता देखी जाती है। किन्तु वह लोग किसी व्यक्ति विशेषका अनुसरण स्वीकार न करके राज्यके लिये उसके करनेमें बाध्य होते थे हिन्दुस्थानकी जिमीदार मंडली और तुरस्कके टिमारियटोंमें प्रचलित भूवृत्तिकी रीतिमें भी एक प्रकारकी समानता देदीप्यमान है। हाइलेंडर और आइरिस जातिकी नाना सम्प्रदाय अपने ऊपरवाले सामन्तोंके अधीनमें युद्धके लिये जाते हैं, किन्तु उनका यह जाना स्वेच्छानुसार नहीं है, उस सामन्त मंडलीके साथ वह लोग समानरक्त सम्बन्धका बन्धन कल्पना करके ही इस प्रकारसे युद्धमें जानेकी इच्छा करते हैं।

विवादसे मैं यहांतक अप्रसन्न हुआ कि, उनके विवादका कारण विना दूर हुए मैंने नगरके भीतर जाना स्वीकार न किया। झगडा करनेवाले दोनों सम्प्रदायोंके प्रतिनिधि जब मेरे डेरे पर आये तो मैंने उनको यथोचित उपदेश करके खूब लताडा। और नगरकी उन्नति रुकजानेसे मैंने शोक प्रकाशित किया। यद्यपि मैंने उनके इस मनोविवादको दूर करके मित्रता करा दी थी, परंतु जबतक नगरकी पूरी उन्नति न हुई, तब तक मैंने उनकी प्रतिज्ञाके ऊपर विश्वास नहीं किया। संतोषका विषय है कि उन्होंने उस प्रतिज्ञाके पालनेका भलीभाँति यत्न किया, और जिस समय बूंदीके राजा स्वर्ग सिधारे, उस समय बूंदी जाते समय मैंने अपनी पूर्वप्रतिज्ञाका पालन किया अर्थात् भीलवाडा देखने गया। बडे आडंबरके साथ मेरी अभ्यर्थना हुई। अधिवासियोंने मुझसे जैसा मंतव्य प्रकाश किया विशप हेबर साहबसे भी वैसाही मंतव्य प्रकाशित किया था। विशप हेबर साहबने उनसे उस समय कहा था कि भीलवाडेको "टाड गंज" की उपाधि देना उचित है। किंतु मेरे अनुरोधसे वह बात रहकर दी गई, क्यों कि मैंने उन लोगोंसे कहा कि "यदि तुम लोग इसका नाम टाड गंज रक्खोगे तो मैं भीलवाडेकी फिर किसी प्रकार सहायता न करूंगा" स्वयं राणाने बात चीतके समय इसका "टाड साहबकी बस्ती" नाम लेकर कहा था; और यदि यह नाम रक्खा जाता तो वह बडे प्रसन्न होते, किंतु मैंने उनके इस मनोरथको पूराकरना अन्याय समझा था।

१० दिसम्बर।—यह स्थान पहिले एक समृद्धिशाली प्रदेशका शीर्षस्थानीय था, परन्तु इस समय विध्वंसप्राय है। इस रमणीक प्राकृतिक दृश्यपूर्ण स्थानको देखनेके लिये उदयपुरका मार्ग छोडकर मण्डलकी ओर चले। मण्डल प्रदेशसे प्रथम जो राजस्व संग्रहीत हुआ था, उसके द्वारा जिस सरोवरके तटपर यह स्थापित है, उसका बांध बन्धन करदिया गया। उस सरोवरके जलसे बहुत लंबे चौडे धान्यक्षेत्र कर्षणका विशेष सुभीता होताहै। उक्त बांधके ऊपर और सरोवरके तटपर जितने बडे २ वृक्ष उत्पन्न हुए थे, महाराष्ट्री और पठानोंने उन सब वृक्षोंको काटकर फेंकदिया और सरोवरके मध्य कृत्रिम द्वीपके ऊपर जो रमणीय मंदिर बना था अत्याचारियोंने उसको भी विध्वंस करदिया। सुनतेहैं कि अजमेरके [illegible] विशालदेवने [illegible] पराजय करनेके स्मरणमें उक्त [illegible] निर्माण कराया था, [illegible] करनेवालोंने उसके [illegible] करदिये। [illegible] और [illegible]

चिह्नित, सामंतोंके आसनोंसे पृथक् और राणाके सिंहासनके सामने ही स्थापित हैं। यह पुरमें वास करनेके कारण उसी नामसे विख्यात हैं; पहिले यह राणा उदय सिंहके पच्चीस पुत्रोंमेंसे पुरुके वंशधर होनेके कारण उसी नामसे विख्यात थे। पुरके आधकोश पूर्वमें नीले पत्थरोंका एक पर्वत विराजमान है। उस पत्थरकी सिलेट बनसकती है; यदि कोई उद्योगी पुरुष चेष्टा करे तो इसके द्वारा बहुत लाभ उठासकता है; इस प्रकारके पत्थर अजमेर और कृष्णगढकी उत्तर सीमान्त तथा मारवाडमें पाये जाते हैं। गुरला और गदरमालाके दो राजकुमार मेरे साथ मुलाकातके लिये आये थे। वह दोनों ही सन्मानके योग्यहैं। उनका अधिकृत प्रदेश जैसा समृद्धिसम्पन्न है, दुर्गभी वैसा ही अभेद्यहै। दूसरेदिन मैंने उन दोनोंके दुर्गको देखकर गमन किया।

१२ दिसम्बर।—बुनाशनदीके तटपर ही रशमि वा रश्मि स्थापितहै। हम मेवाडकी सबसे अधिक उपजाऊ भूमिमें होते हुए बहुत दूरतक चलेगये। यह प्रदेश खास राणाके अधिकारमें है, किसी सामन्तके अधिकारमें नहीं है। इस प्रदेशकी जैसी उन्नति दिखाई देतीहै, उसको श्रेष्ठ उन्नति कहसकते हैं। प्रत्येक ग्रामकी समान इस रशमिकी उन्नति विशेष प्रीतिदायक है। आते समय मार्गमें किसानोंने आनन्दसंगीतसे मेरी अभ्यर्थना करी, प्रत्येक ग्राममें घुसते ही जय-जयकारकी ध्वनि होती थी। पाटल और अन्यान्य नीची श्रेणीके ग्रामीण राजकर्म्मचारी निकटके अनेक ग्रामोंकी कृषकमण्डलीसे घिरकर अभिनन्दनमें नियुक्त हुए और ग्रामीण स्त्रियें भरेहुए पीतलके कलश शिरपरधरे ग्रामके प्रवेश मार्गपर दल बांधकर खडी होगई। उनके मुखपर आधा २ घूंघट पडा था, उन्होंने प्राचीन रीतिके अनुसार मान्यपुरुषोंके सन्मानसूचक गीत गाते २ मेरी अभ्यर्थना करी। इस सन्मानयुक्त अभ्यर्थनामें—कृतज्ञता प्रकाश करनेसे मेरे वृथा गौरवकी कांक्षा पूर्ण हुई, अथवा इसके बदलेमें मेवाडवासी स्त्री पुरुषोंके प्रति मेरे मनमें अकृत्रिम प्रीतिभाव उत्पन्न हुआ, इसका निर्णय पाठकगण स्वयं ही करसकते हैं। वास्तवमें यह दृश्य अत्यन्त मनोहरहै. मैं मेवाडके जिस २ स्थानमें गया, उसी २ स्थानमें यह सामाजिक सम्वर्द्धनाकी रीति दृष्टिगोचर हुई। सिरके ऊपर जलभरा कलश धरेहुए स्त्रियोंने सब स्थानोंमें मेरी सम्वर्द्धना करी थी। इन स्त्रियोंमें प्रधानतः किसानोंकी स्त्रियें और दुहिता थीं; सामन्तोंके अधीनस्थ सरदारोंकी स्त्रियें भी बीच २ में सम्मिलित हुई थीं। किसानोंकी स्त्रियोंमें सर्वाङ्गसुन्दरी कोई नहीं थी. किन्तु साधारणतया उनके नेत्र

टाड साहब ! " हिन्दूप्रथानुसार सम्बर्द्धना सूचक वाक्य प्रतिध्वनित होनेलगे । मैंने प्रत्येक सामन्तसे अलग २ कुशल प्रश्न किया । यह संमिलन–साक्षात्सन्दर्शन प्रीतिसंभाषण कृत्रिम नहींहै; बरन सुदृढ मित्रतामूलक है । राणाने मुझको दूसरे दिन महलमें आनेके लिये अनुरोध करके विदा ली । वह सीधे मार्गसे बराबर महलकी ओर चलेगये, हमलोग ग्रहकी कुदृष्टि निवृत्त करनेके लिये उक्त मार्गको छोडकर दक्षिणके सिंहद्वारसे होते हुए अपने निवासस्थान रामप्यारीके बागमें प्रविष्ट हुए ।"

राजपूत बांधव, उदारचित्त टाडमहोदयने अपना भ्रमण वृत्तांत जिस भावसे वर्णबद्ध कियाहै, हम उसका ज्योंकात्यों अनुवाद लिखते चले आरहे हैं । वह जिस समय मेवाड, मारवाड, और अजमेरमें गये थे, उस समयके साथ वर्त्तमान समयकी तुलना करनेपर, निःसंदेह अनेक स्थानोंकी दशा बदल गईहै । किंतु उनके इस भ्रमणविवरणको पढकर पाठकलोग बहुत सी विनाजानी सत्यघटनाओंको जानसकेंगे । इसमें राजवाडेके भूवृत्तका अधिकांश अङ्कित करदियागया, यह कहना बाहुल्य मात्र है ।

(कर्नेल टाडके मारवाडसे लौटनेका विवरण समाप्त)

ख्यात करनेवाला है, परंतु शासनकी रीति जातिसम्बंधी इतिहासके सर्व श्रेष्ठ गौरवका स्थान है, शासन नीति और राजनीति इनमें नाम मात्रका भेद है वास्तवमें एक हैं, जातिमें प्रधान संग्रहके योग्य, प्रथम शिक्षाके योग्य, तथा यत्नपूर्वक शिक्षाके योग्य क्या वस्तु हैं, राजनैतिक अधिकार, कौन जाति कहांतक सुखीहै, कहांतक शांतिरूप भूषणसे भूषितहै, इस बातको इतिहासमें केवल शासनकी रीति ही सिखातीहै। शासनकी रीति ही जातिका और जाति संबंधी इतिहासका प्राणहै, हम इसी बातकी प्राणप्रतिष्ठा करना चाहते हैं, जिस इतिहासमें शासनकी रीति नहीं लिखी गई वह इतिहास निर्जीव है, इस बातको नीति और इतिहासके ज्ञाताओंने सर्वथा स्वीकार करलिया है।

विश्वविजयी ग्रेटबृटेन-सभ्यताके ऊंचे शृंगपर आरूढहुई बृटिश जातिके हाथमें भारतवर्षकी सत्ताईस करोड प्रजाका भाग्य समर्पित है। किस उद्देशसे करुणामय परमेश्वरने अंग्रेज जातिके हाथमें इन करोडों आर्य संतानका शासन भार सौंपाहै केवल भविष्य इतिहास ही इस बातके प्रगट करनेमें समर्थ है। जिस महादेशकी प्रजा संख्या सत्ताईस करोडहै, उस महादेशको आज बृटिश जाति सत्तरह सहस्र अंग्रेजी सेनाकी सहायतासे प्रबल प्रतापके साथ इच्छानुसारसे शासन करती है, यह क्या सांसारिक इतिहासका अभूतपूर्व उदाहरण नहीं है; बृटिश गवर्नमेन्टकी यह इच्छानुसार शासनरीति क्या भारतवर्षके अनेक भाषा भाषी अनेक धर्मावलम्बी सत्ताईस करोड प्रजाकी राजनैतिक अवस्थाका सम्पूर्ण चित्रजगतके सन्मुख धारण नहीं करती, केवल यह इच्छानुसारकी शासनरीति ही भारतमें बृटिशशासनसे हमारे समाजके पुरुषोंके जातिके सत्त्वाधिकारोंको. भिन्नदेशवासी जातिके नेत्ररूपी दर्पणमें असली मूर्तिसे प्रतिबिम्बित करदेती है इस बातको कौन स्वीकार नहीं करेगा ?

एलफिनष्टोन. म्याकले. मिल मार्शमन. हण्टर लथब्रिज. ह्वीलर. सर ल्यालिसन, आदि पंडितमंडलीके लोग भारतके जिन संपूर्ण इतिहासोंमें बृटिश जातिके विक्रम. वीरत्व. प्रताप प्रभुताईका बखानकर गयेहैं। हम इस बातको अवश्य ही कहेंगे कि वह संपूर्ण इतिहास प्राणशून्य हैं। एक ओर उन सब इतिहासोंको रक्खो और दूसरी ओर चाहे अक्षरोंमें लिखो कि " भारतमें बृटिश जातिका यथेच्छाचारशासन " नीतिज्ञ लोग निर्णय करके कहदेंगे कि यह संपूर्ण इतिहास प्राणरहित मनुष्य मात्र है. प्रजाके राजनैतिक स्वत्वके प्रकाश बिनाके यह सबही मृतक हैं और अंतिम श्वास पटनेके पीछे आंखोंमें

समझीहै उसके द्वारा इस शैलीका मूलअंग चित्रांकित करनेमें मैं समर्थ होसकताहूं, सबसे पहले कौतूहलके वश होकर और उसके पीछे साधारण रीतिसे उस कार्यके पूर्ण करनेवाले बहुत पुराने परम्परासे प्राप्त हुए शासन विधानकी प्रत्येक यथार्थ रीतियें भलीभाँतिसे जाननेके लिये मैंने विशेष चेष्टा करी। केवल यह शासनकी रीति ही नहीं, उसके विषयकी सब घटनाओंके जो सम्पूर्ण बाहरी दृश्य बहुत सामान्यरीतिसे निश्चित होसकते हैं. अथवा जो घटनाएँ उक्त विस्तारवाली शासन प्रणालीके प्रत्येक अंगकी यथार्थ मूर्त्ति प्रगट कर देतीहैं, मैंने उन सबके ऊपर भी विशेष दृष्टि दी थी। यद्यपि उस शासन रीतिके अंग प्रत्यंग इस समय प्रायः छिन्न भिन्न होगयेहैं तथापि वह सहस्रों मनुष्योंसे पूर्ण समाजके प्रत्येक उद्देश प्रत्येक कार्य साधनकी न्याय मूलक व्यवस्था निर्द्धारण करदेतीहै और यह भी निश्चयके साथ कहा जासकताहै कि एक समय यह शासन प्रणाली अपनी सर्वाङ्ग सम्पन्न मूर्ति धारण करनेमें समर्थ हुई थी।

टाडमहोदयकी ऊपर कही उक्तिके एक २ अंशका हम अवश्य ही समर्थन कर सकते हैं परन्तु शिक्षा, ज्ञान, और सभ्यताकी जन्मभूमि भारतमें राजधर्म तथा श्रेष्ठ शासनकी शिक्षामें विशेप शिक्षित क्षत्रिय राजगणोंमें. शासन प्रणालीके सम्बन्धीकी कोई लिखित (कानूनी) विधिकी व्यवस्था नहीं थी दीवानी वा फौजदारी दंडविधिका सर्वथा अभाव था, इस बातको हम सत्य नहीं मानसकते; मनुका राजधर्म और शासन विधान दृढताके साथ प्रमाणित कररहाहै कि समाज सृष्टिके पहले ही सर्वांग सम्पन्न विधानकी व्यवस्था भारतमें प्रचलित हुईथी। महाभारतका राजधर्म पर्व इस बातकी पूर्ण साक्षी देरहाहै कि यहांकी शासनविधि सबसे बढ़ी चढ़ी थी. जिस समय भारतकी पवित्र भूमिपर विजातीय विधर्मियोंके पैर नहीं रक्खे गये थे. उस समय आर्यजाति सर्वथा स्वाधीन भावसे राज्य करती थी. जिस समय ब्राह्मणमंडली राजसभामें पूर्ण प्रभुत्व करनेमें समर्थ थी उस समय निःसन्देह उन मनुके विधानके अनुसार नरपतिवृन्द प्रजा पालन करते थे। भारतके पतन तथा भिन्न धर्मके प्रभुत्व और समयके परिवर्तनके संग २ वह विधिव्यवस्था भी दूसरी मूर्तिमें बदल गईहै। युगधर्मानुसार नवीन नवीन राजनीतिके साथ नवीन २ [illegible] मूर्ति [illegible] मनुकी निर्दिष्ट विधि व्यवस्थानुसार न होकर अनेक [illegible] प्रयोजनके अनुसार उसकी [illegible] व्यवस्थाहै [illegible] आरंभ होगई है. इसी कारणसे भारतके सब [illegible] लिखा शासन

जो अर्द्ध जंगली जातियें किसी एक निर्द्धारित स्थानमें वास न करके सदा अनेक स्थानोंमें घूमती रहती हैं, उनके बीचमें शासनरीतिके जितने प्रधान २ लक्षण दिखाई देतेहैं, उन सब लक्षणोंके साथ स्वाधीन सभ्यजातियोंकी शासन रीतिके प्रधान लक्षण सादृश्यरूपसे विराजमान हैं; समाजकी एक प्रकारकी अवस्थामें सब देशोंके मनुष्योंका अभाव ही एक प्रकारका है बर्बर, तातार, संप्रदाय वा जर्मन जातिवालोंके विभिन्न वर्णकालिडोनियन शाखा, राजपूत जाति वा झारिजा भायाद अर्थात् संसारी भाई चारावाली जाति इन सबके बीचमें ही एक प्रकारसे मूल शासन नीतिके समानता देखी जाती है । यूरोपके प्रत्येक देशमें सामंत शासनकी रीति प्रचलित थी और ककेसस पर्वतसे लेकर भारत महासागर तक उसी प्रकारसे वह शासन रीति कहीं पूर्ण और कहीं अपूर्ण अवस्थामें विराजमान है, यह बात हम विलक्षण रूपसे देखते हैं किंतु सभ्यताके उस आदि जन्मके वृत्तांत तथा प्राचीन स्मृति चिह्नोंके फिर उद्धार कार्यमें मुझसे अधिक परिश्रमी और शिक्षित विभागकारी मनुष्य ही अधिक समर्थ हैं; यद्यपि समयके प्रभाव और विजातीय उत्पीडनके उपद्रवने मेवाडकी प्राचीन शासनरीतिको बिलकुल अंधकारसे ढकदिया है, तथापि उसका मूलरहस्य जान लेना दुःसाध्य नहीं है, उस लुप्त रूप शासन शैलीका पता लगाना परमावश्यक है ।

धूर्त्त महाराष्ट्रियोंके लूट मार उपद्रवोंके साथ मुसलमानोंके अवर्णनीय अत्याचारोंने मिलकर उस शासनरीतिको बिलकुल अंधकारमें डाल दिया है । राजपूत जातिके प्राचीननेता शीघ्र २ इस संसारको छोड रहेहैं, जातित्वभाव शिथिल होरहाहै, तथा जातिके विधान और रीतियें सब इस समय विध्वंस सी हैं । जाति फिर पूर्वावस्थाको प्राप्त होसकतीहै, राजपूतोंका शारीरिक बल फिर प्रबल होसकता है. किन्तु समाजनीति फिर नये प्रकारसे गठित करना उचित है. रजवाडेकी इस समय जैसी विशृंखला अवस्था है, उससे कोई तत्त्ववेत्ता सहसा शासनरीतिके किसी एक प्रयोजनवाले लक्षणद्वारा आकर्षित नहीं होसकता. मैं इस बातको स्वीकार करताहूं. वह तत्त्वानुसंधान करनेवाला देखेगा कि हमारा शासन विधान जैसा शृंखलाबद्ध है, राजपूतोंके शासनकी रीति उसके विपरीत है । वह चारों लक्षण देखकर कह उठेगा कि राजपूतोंकी शासनरीतिके बीचमें जितने लक्षण विराजमान हैं. वह सब ही आकस्मिक कारणोंसे प्रगट हैं । कोई भी शृंखलाबद्ध नहीं है, किसी निर्द्धारित

ऊपर इस बातको लिखआये हैं कि राजपूतानेके सम्पूर्ण राज्योंमें भी उसी प्रकार यह सामन्तोंके शासनकी रीति एक आदि मूल सम्बन्धवाले नरपति समूहोंके साथ निवासियोंके पैतृक सम्बन्धवाले कारणसे ही उत्पन्न हुईहै; रजवाडेके अधिकांश सामन्त सबसे ऊँची श्रेणीके सोलह सामन्तोमेंसे एक चरसेके परिमाणवाली ×भूमिका अधिकारी मनुष्य भी अपना अधीश्वरके साथ समान रक्तबंधनको विख्यात करदेता है। *

स्वाभाविक बीज अनेक देशोंकी चाहें किसी भूमिमें क्यों न बोयाजाय, परन्तु ऊपर श्रेष्ठ मृत्तिकाके विना वृक्ष कभी भी तेजवाला और बलवान नहीं होसकता इंग्लैंडमें यह जो सामन्त शासन प्रणालीका बीज बोया जाकर, समयपर शाखा प्रशाखा और नवीन २ कोंपलोंसे शोभायमान हुआ था, केवल मरसेन जातिका यत्न, चेष्टा और उद्योगही उसका मूल कारण है। मरमेनलोग वह शासन प्रणालीका बीज स्कन्दनेरियासे लाये थे। व दीन और साकासिन तथा उससे पूर्ववर्ती मनुष्योंके द्वारा वह शासन प्रणालीका बीज मध्य एशियासे उस स्कन्दनेरियामें गया होगा, रिचर्डसन्का अनुमानहै कि तातारसे यह स्कन्दनेरियामें प्रचलित हुआ, यद्यपि हमको अनुमान प्रमाणका ही अवलम्बन नहीं करना चाहिये, किन्तु जहां २ आलोचना योग्य विषय प्राचीन जर्म्मनजाति फ्रेंच और वागाथिक जातियोंमें परस्परके आचार व्यवहारकी समानता दिखाई देगी, उसी उसी स्थानमें इसको लिखेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पूर्व जगत्से पश्चिमी जगत्के वहांके निवासियोंके साथ २ ज्ञान और शिक्षाका स्रोत भी प्रवाहित हुआ था, तथा उच्च एशियासे ही मर्शाकाट्टि और केम्ब्रिक लोम्बर्ड जातिने बाहर निकल कर स्कन्देनेरिया फ्रिसलैण्ड और इटलीमें पूर्वरीति फैलाई थी।

मध्य समयकी सामन्त शासन रीतिके विख्यात इतिहास लेखक हालम साहब कहते हैं कि " मूलस्थानसे जागीरदानकी रीति वा सामन्त शासन प्रणाली बनाई गई है; और अनेक देशोंके इतिहासोंमें उस रीतिका अनुरूप किसी प्रणालीके विद्यमान हैं वा नहीं इसकी खोज लेनेके लिये बहुतसे लोग उत्कंठित देखे जाते हैं. यद्यपि जगत्के भिन्न २ देशोंकी रीतिकी समानताके

× [illegible]

* [illegible]